G. K. U.
HARIDWAR LIB.

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

साप्ताहिक

वीर अर्जुन

सन् १९४६ ई. जनवरी से दिसम्बर तक

वीर अर्जुन

सन् १९४६ ई. जनवरी से

दिसम्बर १९४६ तक

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वीर अर्जुन

साप्ताहिक

ILLUSTRATED VIR ARJUN WEEKLY

[वर्ष ११] देहली, सोमवार सौर २ मा सम्वत् २००२, १४ जनवरी १९४६ ई० DELHI, 14th Junvery 1946. [अङ्क ४५]

पुस्तकालय
हरिद्वार

इस अङ्क की कुछ सामग्री

१. ब्रेटनवुड समझौता और भारत
२. सन १९४५ की मुख्य घटनाएं
३. टांग-कटों को वरदान
४. जीवन की झांकियां
५. मुसलिम लीग और कांग्रेस
६. एक महान क्रांतिकारी की याद
७. सुकेत-यात्रा

कहानी, उपन्यास, बालवृद्ध, कविता, लोकवाणी तथा चित्रावलि।

बढ़ चल

[देवराज दिनेश]

बढ़चल, बढ़चल, बढ़चल, बढ़चल, बढ़चल, बढ़चल, आगे।

तुझे तोड़नी होगी आज गुलामी की जंजीरें,
तुझको आज बदलनी साथी यह सोई तकदीरें,
अरे! अभी तक सोच रहा है खड़ा-खड़ा क्या मन में,
जबकि समस्त विश्व लड़ता है दानव बनकर रण में,
क्यों रुकता है, मत रुक, मत रुक, मत रुक, अरे अभागे। बढ़चल०।

दुनियां तुझे पिलाने आई भर कर विष का प्याला,
एक घूंट में पी जा साथी तू तो पीने वाला,
मर न सकेगा, बता अमर कब मर पाया है जग में,
कौन बुझा पाया है अब तक ज्वाला से फिर ज्वाला,
सम्भव विष पीने से तेरी सोई किस्मत जागे। बढ़चल०।

अरे, सिंह-शावक तू भूल गया क्यों अपने बल को?
जो कि शांति से देख रहा है भेड़ों की हलचल को,
तेरी हुंकारें सुनकर वक्षस्थल फट जाते थे,
एक बार फिर वीर चीर चल दुनियां की दलदल को,
एक बार हुंकार शत्रु फिर अपनी सीमा त्यागे। बढ़चल०।

यही समय है चूक न साथी मत कर तू नादानी,
बार बार कब आयेगी फिर बतला सखे जवानी,
तू सैनिक है सैनिक कभी न सुस्ताते देखे हैं,
अरे! कभी क्या सुस्ताने बैठा है नद का पानी,
कभी न उसको बांध सके हैं स्नेह, प्रेम के धागे। बढ़चल०।

जीवन और मरण दोनों हैं एक अनूठी माया,
सखे मृत्यु तो नवजीवन है उससे क्यों घबराया,
बन्दी रह कर जीना भी, बोलो कोई जीवन है?
मानव औ' पशु में बतला फिर अन्तर क्या रह पाया,
बन त प्रलयंकर शंकर रिपु आगे आगे आगे। बढ़चल०।

वार्षिक मूल्य ८)
छः मास का ४)
सम्पादक— रामगोपाल विद्यालङ्कार
कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार
एक प्रति का मूल्य =)

CC-0. Vasishtha Tripathi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

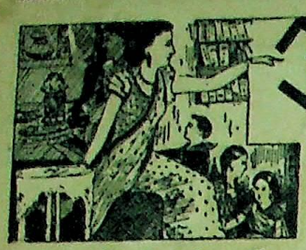

आधुनिका

"स्त्रियों को दोहरी गुलामी से मुक्त होना है"

[अर्धनारीश्वर]

'आपको तो दो प्रकार की गुलामी से मुक्त होना है, एक तो ब्रिटिश सरकार की और दूसरे पुरुष समाज की गुलामी से।' सब्जीमण्डी के एक कन्या विद्यालय में एक कांग्रेसी कार्यकर्ता ने भाषण देते हुए कहा।

वे फिर कहने लगे कि 'ब्रिटिश सरकार ने तो समस्त भारत को गुलाम बनाया है, लेकिन पुरुष समाज भी कम अत्याचारी नहीं है, उसने स्त्री को तो इस दीन हीन स्थिति में कर दिया है कि आज वह स्वयं भी अपने को पुरुष से हीन मानने लगी है। दिल्ली के बहुत से संपन्न घरानों में स्त्रियां मटर की सब्जी पुरुषों के लिए और उसके छिलकों की सब्जी अपने लिए बनाती हैं। वे पूछने पर कहती है कि बढ़िया सब्जी तो पुरुषों के लिए होती है। हमारा तो इसीसे काम चल जाता है। अपने लिए रोटी नहीं बची, तो वे इसकी चिंता नहीं करतीं, दूध तो वे तभी पी पाती हैं जब पुरुषों या बच्चों से किसी तरह बच जाय।'

उनका भाषण जारी था और लड़कियां—आजकल के वातावरण में पली हुई लड़कियां जहां इन बातों को सुनकर विस्मित हो रही थी, वहां पुरुष समाज की निन्दा सुनकर कुछ कुछ मुस्कराहट भी उनके चेहरे पर झलकने लगी थी।

× × ×

एक दूसरा प्रसङ्ग था उसी विद्यालय का। विद्यालय की सभा में भाषण हो रहा था, विषय था राष्ट्रीय जागृति। 'आज हम दो प्रकार की गुलामियों में जकड़ी हुई हैं और हमें गुलाम बनाने वाले वे हैं अंग्रेज और पुरुष समाज। अंग्रेजों ने तो भारत को डेढ़ सौ सालों से गुलाम बनाया है, लेकिन पुरुषों ने तो सदियों से हमें गुलामी में जकड़ रखा है। आपको भी इन दोनों प्रकार की गुलामियों से युद्ध करना होगा। पहले अंग्रेजों से आजादी प्राप्त करनी है और फिर पुरुष-समाज की शृंखलाओं को तोड़ना होगा।"

यह भाषण देने वाली एक महिला थीं। एक महानुभाव भी भाषण देने के लिये वहां उपस्थित थे। उनके भाषण समाप्त करते ही तालियां बजनेसे पूर्व ही बोल उठे — "बहन जी, क्यों, क्या आपके पति आपको कोई कष्ट देते हैं? उनकी उदारता ही है, जो आपको आज समस्त राष्ट्रीय कार्य करने देती हैं। लेकिन", उन्होंने अपनी बात में कुछ और हंसी की पुट मिलाते हुए कहा कि "पिछले दस सालों में उन्हें कितना पारिवारिक सुख मिला है, जो आप उनकी शिकायत करती हैं।"

बात हंसी में रह गई। वे 'जय हिंद' कह कर चली गईं।

× × ×

वे चली गईं लेकिन, अध्यापिकाओं को चर्चा का विषय मिल गया पुरुषों की गुलामी। बातचीत चल पड़ी।

एक अध्यापिका बोली — 'बात तो ठीक है, पुरुष समाज ने तो हमें बहुत सताया है। वह अपने आप सैर सपाटे करता है, सिनेमा जाता है, लेकिन स्त्रियों को घर की चारदीवारी में बन्द रखता है। न हम पढ सकती हैं और न हम रुपया कमा सकती हैं। हमें पुरुषों की इच्छा को सदा मन मार कर पूर्ण करना पड़ता है।'

'लेकिन कहां तो' दूसरी अध्यापिका बोली, शायद किसी पुराने विचार की थी। 'मैं तो जब शहर जाती हूं, तभी यह देखती हूं कि स्त्रियां आजाद हैं। पुरुष कोटपैंट में घूमते अवश्य हैं, लेकिन स्त्रियों के नित नये नये फैशन, नयी-नयी वेश भूषा। कभी-कभी तो हैरान हो जाती हूं कि एक-एक पोशाक २-३०० से कम न होगी। सवेरे शाम वे घूमती हैं मोटरों पर या अपने प्रेमी के साथ हाथ में हाथ मिलाये। मैं सोचती हूं कि इन्हें क्या घर की रोटी भी नहीं बनानी, बच्चे भी नहीं पालने, जो ठीक ऐसे समय में घर से बाहर रहती हैं, जब कि भोजन बनाने का समय होता है।'

'यह ठीक है कि वे स्वतन्त्र हैं, पुरुष उन्हें दबाते नहीं, लेकिन वे तो अपवाद हैं। साधारण नारी समाज की स्थिति तो अत्यन्त दयनीय है। वह तो हमेशा चूल्हे चक्की और बच्चों के टट्टी पेशाब में लीन रहती हैं। उसके लिए जैसे बाहर का संसार है ही नहीं। न वह रुपया कमा सकती हैं, न वह उसका उपयोग कर सकती है। कुछ थोड़ी सी फैशनेबल युवतियों को देखकर यह कल्पना करना भ्रम होगा कि स्त्री स्वतन्त्र है।

(शेष पृष्ठ २२ पर)

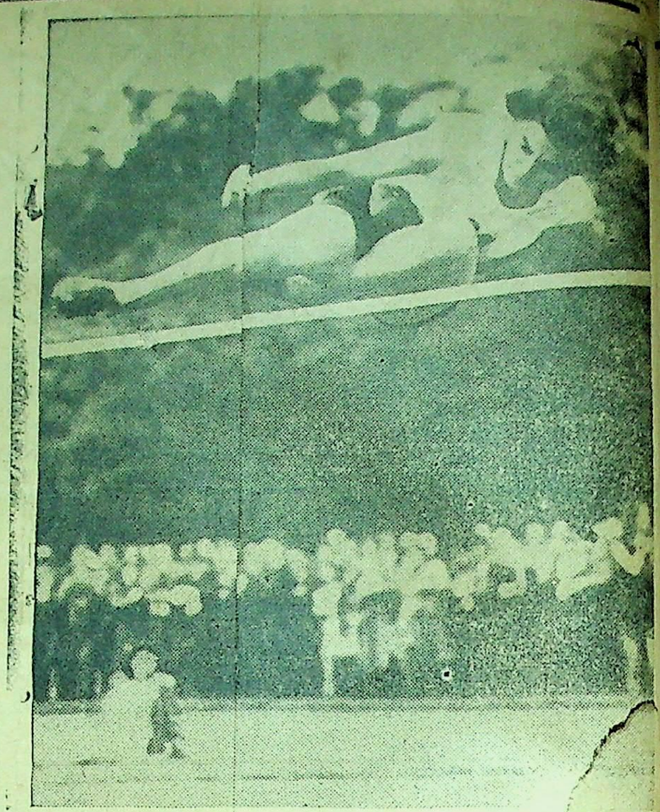

इंगलैण्ड में १९४५ में हुण्ट्री-मनोरंजन संघ में मिस डी० के० गार्डनर ने ५ फीट (१·५२ मीटर) कूद कर रिकार्ड स्थापित किया।

स्त्री देश की सेवा कैसे करे?

म० गांधी के विचार

एक बहन ने पूछा है अपने परिवारिक कार्यों में फंसी हुई एक स्त्री किस प्रकार देश की सेवा कर सकी है? इस का उत्तर देते हुए महात्म गांधी ने कहा है कि एक स्त्री जो अपने परिवार की देखभाल करती है तथा बच्चे का पालन पोषण करती है, वह वास्तव में देश की सच्ची सेवा करती है। यहउसकी उच्च कोटि की देश-सेवा है। उसे और कुछ करने की आवश्यकता नहीं है। किन्तु इस प्रकार के उदाहरण बहुत कम हैं। प्रायः माताएं यह नहीं चाहतीं कि उनके बच्चे देशसेवक बनें। यदि वह लड़का हुआ तो वे चाहती हैं कि किस प्रकार उसे खूब रुपया पैदा करनेवाला रोजगार मिले और अगर वह कन्या हुई तो किस प्रकार उसका ब्याह हो जाय। इस सम्बन्ध में अधिक दोष पतियों का ही होता है इसका फल यह होता है। कि एक स्त्री का समस्त जीवन बच्चा पैदा करने तथा उसके पालन पोषण में ही व्यतीत हो जाता है। जब तक यह रोका नहीं जाता कोई स्त्री देशसेवा नहीं कर सकती। पश्चिम में इसके कृत्रिम उपाय काम में लाये जा रहे हैं, जिनका अनुकरण हमारी शिक्षित स्त्रियां भी कर रही हैं। किन्तु यह ऐसी औषधि है, जो रोग से भी अधिक भयकर है। यदि स्त्री पुरुष अपने पारिवारिक जीवन में आत्म-संयम का पालन करें तो उसकी संताने ही नहीं, किन्तु वे भी देश सेवा के लिये समय निकाल सकते हैं।

विधवा

[श्री लक्ष्मीचन्द्र वाजपेयी]

मेरे हाथों की मेंहदी की लालिमा अभी धूमिल नहीं होने पाई है और मैं विधवा हो गई हूं।

सुहाग सिन्दूर अभी बिल्कुल हरा भरा है। मेरी हंसी से अभी यौवन का पराग फूट रहा है। एडी का स्पर्श करती, नाग की तरह बलखाती वेणी मेरे अनन्त सौंदर्य से व्यंग्य करती इठलाती है। पैरों का गुलाबी महावर अभी फीका नहीं हुआ है। किन्तु मैं विधवा हूं और मेरे वर्जित प्रदेश में आने का साहस न करो तुम।

मेरा हृदय उषाकाल में कोकिल की सुरीली कुहू सुन कर तड़प उठता है। बाल रवि की किरण मालिकाएं जब अपने निर्मल प्यार से कुमुदनी का मुंह चूमती हैं और दूर सुदूर प्रान्त से किसी संगीतमर्मज्ञ का भैरवी राग सितार की गति का सहारा ले मेरे हृदयवीणा के एक एक तार का पुलक स्पर्श करता है, उस क्षण मैं उन्मादिनी की भांति व्यथाविह्वल हो उठती हूं। न, मेरी परवशता पर दया न करो तुम, क्योंकि मैं विधवा हूं।

वसन्त आया और चला गया। सैकड़ों कलियां खिलीं और मुरझा गयीं। मैं खेलने भी न पाई और अकाल ही मुरझा गयी।

मेरे हाथों की मेंहदी की लालिमा अभी धूमिल भी नहीं होने पाई है और मैं विधवा तो हो ही गयी हूं। मेरे वर्जित प्रदेश में आने का साहस न करो तुम।

× लेखक की "ज्वाला" से

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

समाचार-चित्रावलि

श्री भूलाभाई देसाई

आ० हि० फौ० की वकालत में ख्यातिप्राप्त

ब्रिटिश पार्लमेंटरी प्रतिनिधि मण्डल दिल्ली में।

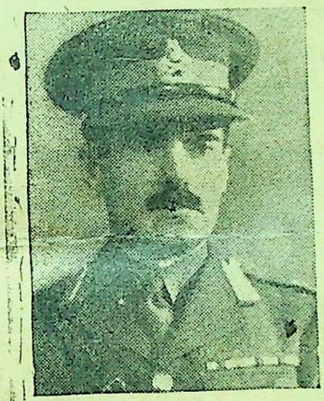

मद्रास के नये गवर्नर लै० जनरल सर आर्चिबाल्ड के० बी० ई०, सी० बी० एम० सी०।

आ० हि० फौ० के तीन प्रथम अधिकारी — शाहनवाज, सहगल, ढिल्लों — गांधी ग्राउण्ड दिल्ली की स्वागत सभा में।

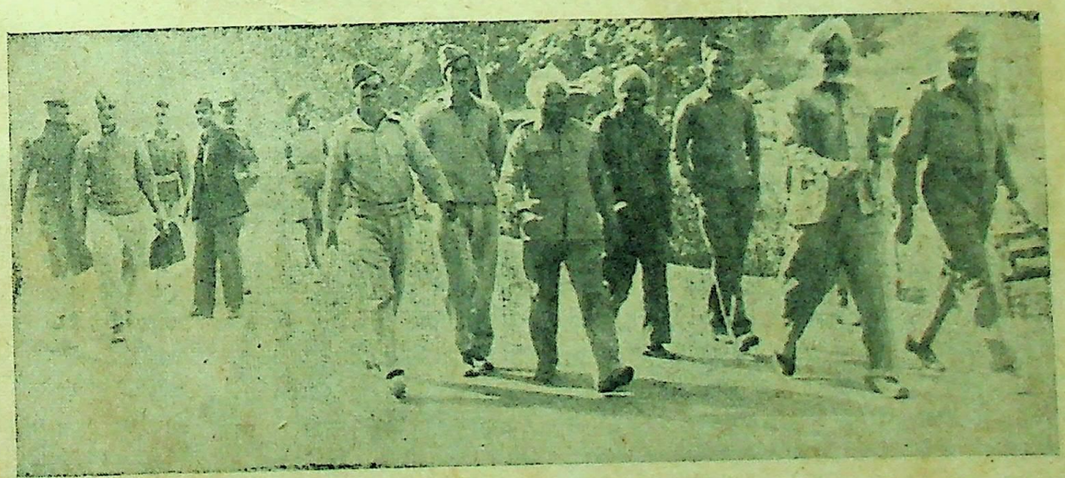

आ० हि० फौ० के अफसर सामूहिक रूप में।

लोकवाणी

टोंक भी एक रियासत है !

टोंक भी हमारी पड़ोसी रियासतों में एक है। वहां भी लोगों में बेदारी पैदा नहीं होने दी जाती। इस रियासत में गांधी टोपी पहने की एक हुक्म के जरिये से मुमानियत है। अगर मैं उस रियासत में जाऊं तो गिरफ्तार कर लिया जाऊंगा !

जमाअतें बनाने पर सख्त पाबंदियों हैं। कोई जमाअत रियासत की इजाजत बगैर नहीं बनाई जा सकती और जब जमायत बनाने की दरख्वास्त दी जाती है तो वह मंजूर नहीं की जाती।

इसी तरह कोई भी चीज छपवाने से पहले उसकी इजाजत लेनी पड़ती है ! भला किस कदर मजाक की बात है। अगर आप शादी का इन्वीटशन कार्ड भी छपवावें तो अच्वल रियासत को इन्वीटशन कार्ड का मजमून दिखाना पड़ेगा, और जब आपका लिखा वो देख लेंगे तब छप सकेगा। बड़े अफसोस की बात है कि इस जमाने में रियासत में इस किस्म के हालत मौजूद हैं। मैं नहीं समझता कि वहां जानवरों की कौनसी किस्म हकूमत करती है।

— जवाहरलाल नेहरू

भाषा गढ़ी नहीं जा सकती

आज श्रीराम और श्रीकृष्ण जीवित हैं तो उसका श्रेय श्री वाल्मीकि और वेदव्यास को है। केवल रोटीके लिये साहित्य नहीं लिखा जाता। अपितु कलाकार तो रोटी बेच कर भी रातके सपने लिखा करता है। भाषा एक ऐसा क्षेत्र है, जिसका जबर्दस्ती निर्माण नहीं हो सकता। न दागकी भाषा पर शस्त्र क्रिया हो सकती है और न सूर तुलसी की कृतियों का आपरेशन किया जा सकता है। साहित्य का निर्माण एक दिनमें नहीं होता शताब्दियोंके भाषा प्रवाहके बाद साहित्य का विकास होता है। एक खिचड़ी भाषा का निर्माण कर तथा कुछ दर्जन लेखकों द्वारा कोई भाषा नहीं चलाई जा सकती। हिन्दीका सारा इतिहास साक्षी है कि उसे कभी कोई राज्याश्रय नही मिला। हिन्दी का निर्माण सन्तों ने किया है। जब उसका प्रसार बढ़ा तो नई भाषा बनाने की बात कही जाती है हमें समझ लेना चाहिये कि भाषा जनपदकी होती है। यह जन-भाषा न गढ़ी जाती है और न मढ़ी जा सकती है।

लेखकोंकी स्वयं स्फूर्त भाषाको राजनीतिज्ञ नहीं बदल सकते। हमें भारत की राष्ट्रभाषा के लिये उत्तर भारतसे कन्या कुमारी तक विभिन्न भाषाओं के कोषों को लेकर चलना होगा। जिस भाषा के ज्यादा शब्द सब जगह समझे जायं वही हमारी राष्ट्र भाषा रह जायगी। वाणी गढ़ने मढ़ने की चीज नहीं है।

— माखनलाल चतुर्वेदी

कोयले का व्यवसाय

भारतवर्ष में कोयले की खानों का काम करने का धन्धा अब से लगभग ८० वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ था। तब से इस व्यवसाय ने भी उन्नति की है। ये आंकड़े से इस बात को सिद्ध करेंगे —

वर्ष	कोयले का उत्पादन दस लाख टनों में
१८६८	०.५०
१९००	६.१२
१९२०	१७.३६
१९३०	२३.८०
१९४०	२५.०६

आजकल हम केवल भारतवर्ष की मांगों की ही पूर्ति नहीं कर रहे अपितु अपने देश से लगभग २० लाख टन कोयला प्रतिवर्ष बाहर भी भेज रहे हैं। ऐसा अनुमान है कि भारतवर्ष में ६०००० मिलियन टन कोयला उत्पन्न किया जा सकता है जिससे केवल २८ मिलियन टन ही निकाला जा रहा है। इस व्यवसाय की उन्नति के लिए अभी काफी क्षेत्र है। इस बात का प्रमाण हमें इससे मिला है कि भारतवर्ष में कोयले की खपत प्रति व्यक्ति केवल ०.०७ टन है जब कि अमेरिका में ४.७५ टन है। इस देश के लिए जहां पर पेट्रोल अधिक मात्रा में नहीं निकलता, कोयला एक ईश्वरीय देन है। प्रत्येक व्यवसाय की प्रगति के लिए कोयला मिलना आवश्यक है अतः अधिक व्यवसायों के विस्तार के लिए कोयले के व्यवसाय में भी विस्तार होना अवश्यम्भावी है। कोयले को कोक में बदलकर जलाने की लकड़ी का जगह में भी उपयोग में लाया जा सकता है। कोयले से अन्य रासायनिक पदार्थ भी बनाये जा सकते हैं और इस तरह से देश का करोड़ों रुपया विदेशों में भेजने से बचाया जा सकता है।

— जयन्तीप्रसाद

ब्रिटेन की साझेदारी

हिन्दुस्तान में मोटर बनाने के लिये लार्ड नफिल्ड की मोटर कम्पनी ने सेठ घनश्याम दास बिड़ला से साझेदारी की है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि ब्रिटेन की विश्वव्यापी तथा विश्व विख्यात इम्पीरियल केमिकल इन्डस्ट्रीज ने टाटा कम्पनी से साझेदारी की है। ये दोनों ब्रिटिश कम्पनियां जानती हैं किभारत में विदेशी रंग तथा मोटरें और विशेषत; ब्रिटिश माल बेंच सकना अब संभव न होगा। भारत के साथ किसी भी व्यापारी में भारतीय पूंजी की अधिक साझेदारी और भारतीय मजदूरों की अधिक नियुक्ति जरूरी होंगी।

इससे भी दिलचस्प यह है कि १६००) की तीन पहिये वाली मोटर गाड़ी बनाने वाली ब्रिटिश पार्लियामेंट के सदस्य मि० डेनिक केडेल ने बम्बई के व्यापारी मि० करीम से साझेदारी की है इसीके लिये मि० केड़ेल हाल में हवाई जहाज से भारत आये थे। यह मोटर तैयार करने के लिये कारखाना इंग्लैंड में ही खुल रहा है लेकिन एक भारतीय व्यापारी की साझेदारी से उम्मीद की गई है कि भारतीय इस कम्पनी की चीजों में अधिक दिलचस्पी लेगो।

ब्रिटेन के जिम्मे भारत का १ अरब २० करोड़ पौंड पावना है। भारतीय उद्योगपतियों ने ब्रिटिश व्यापारियों के साथ साझेदारी की है। इन दोनों बातों का ऐसा असर होगा कि राजनीतिक सौदे और बातचीत में दोनों दल कुछ मुलामियत करेंगे।

— वीर भारत

गहरी राजनैतिक चालें

राजनैतिक चालों में पिछली लड़ाई में अमरीका बेवकूफ बन गया। इस बार वह शुरू से ही सचेष्ट रहा। उसने अपनी शर्तों पर इंगलैण्ड का साथ दिया। इसमें सदेह नहां कि अमरीका ने पूरा साथ दिया और अपना सामान-अपने अस्त्र-शस्त्र और फिर अपनी फौजें भी भेजकर अंत में योरप में इटली और जर्मनी की शक्तियों को कुचल दिया और एशिया में जापान की शक्ति को चकनाचूर कर दिया। फिर भी यह मुख्य प्रश्न और भी उग्र रूप से इन तीनों — इंगलैण्ड, अमरीका और रूस के सामने आज मौजूद था कि संसार में प्रत्येक देश का कौनसा शासन-विधान ठीक माना जावे और कौन बेठीक। इंगलैंड और अमरीका दोनों रूस में एक ही दल — मजदूरकिसान दल — के होने से वहां के शासन-विधान से भी असंतोष प्रकट किया करते हैं और योरप से पोलैंड रूमानिया, यूगोस्लेविया, हंगरी आदि देशों की सरकारों पर तथा एशिया में मंचूरिया कोरिया और शेष चीन के कुछ भागों पर, ईरान के कुछ हिस्से पर, टर्की के कुछ हिस्से पर सोवियट रूस का जैसा प्रभाव है और जैसा हो रहा हैं उसे बिल्कुल पसन्द नहीं करते। इधर रूस ने टर्की की सरकार को फासिस्टी ढङ्ग की कहा तो उसने उत्तर दिया कि उसका ढङ्ग वही है जिसे इंगलैंड और अमरीका दोनों लोकतन्त्रवादी ढङ्ग कहते और मानते हैं। ईरान यह चिल्ला रहा है कि उसके यहां न तो ब्रिटेन की फौजों की जरूरत है और न रूस की फौजों की वह अपना इन्तजाम खुद कर सकता है। पर उसकी यह चिल्लाहट कौन सुनता है। चीन के पैंतालीस करोड़ लोगों के एक मिल जाने और अपनी उन्नति कराने के लिए स्वतन्त्र हो जाने से भी इंगलैंड और अमरीका की वहां फिर ऐसी दाल नहीं गल सकती और न रूस की ही ऐसी पूछ हो सकती है। स्पेन की फ्रैंको की सरकार को भी फासिस्टी कहा जाता है और अब फ्रैंको साहब ईसाई धर्म के रोमन कैथलिक लोगों कों और उनके गुरु पोप महोदय को अपने साथ करने और ऐसी राजनैतिक पार्टी बनाने में लगे हुए हैं जो फासिस्टी न समझी जावे। इस तरह योरप के छोटे-छोटे देशों में जिनमें कुछ तो भारत के एक सूबे की तो बात ही क्या, एक कमिश्नरी के भी बराबर नहीं हैं, जैसी गवर्नमेंट कायम हो रही है उनके अभी अनेक रूप हैं। इनमें हालैंड, बेलजियम के जैसे छोटे देशों के बड़े बड़े साम्राज्य हैं और इंडोनेशिया, जावा आदि में उन्हें ब्रिटेन की भारतीय और गोरों फौजों से तथा अमरीका के इसके विरोध में कोई वास्तविक काम न करने से, भावी शासन विधान का प्रश्न और भी जटिल हो रहा है। अमरीका का शासन-विधान कई बातों में अन्तर्राष्ट्रीय नियमों को जैसा मानता है, इंग्लैंड अपने को उन नियमों का मानने को भी बाध्य नहीं समझता—

— शुभचिन्तक

मतदाता-सूची में भारी गड़बड़ी

सयुक्तप्रांत में मतदाता-सूचियों की गड़बड़ी की शिकायतों का कोई ओर-छोर नहीं है। प्रायः सभी जगह चुनाव संबंधी सूचियां तैयार करने में क्षोभजनक षड़यन्त्र किया गया है। राष्ट्रीय मुसलमानों ने बनारस में दस हजार मुसलिम नामों पर आपत्ति की है, जो युक्तप्रान्तीय असेम्बली के नागरिक निर्वाचन-क्षेत्र के मुसलमान वोटरों के बारे में संशोधित सूची में दिये गये हैं। अब अलीगढ़ की मुसलिमलीगी धांधली का उदाहरण हमारे सामने है। पिछली जनगणना में वहां की मुसलिम जनसंख्या अड़तालीस हजार से कुछ ही ज्यादा थी; लेकिन वहां के मतदाताओं की सूची में दर्ज संख्या ३६७३६ है। जब कि मतदाता बनने में अनेक शर्तें हैं तब अड़तालीस हजार में से छत्तीस हजार से अधिक का मतदाता बन जाना स्वयं यह घोषित करता है कि इसमें जरूर दाल में काला है। जान पड़ता है कि लीग ने इस प्रकार की गड़बड़ी के लिये कोई प्रान्तव्यापी षड़यन्त्र रचा था और सरकारी अधिकारियों को उसे सफल बनाने के लिये साधन बना लिया है।

राष्ट्रीय मुसलमानों ने अपनी दरख्वास्त में कहा है कि या तो ये नाम मृत मनुष्यों के हैं या उनके नाम हैं जिनके पास जायदाद, शिक्षा सम्बन्धी योग्यत आदि नहीं है।

— सैनिक

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

★ वीर ★

अर्जुन

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार ता० १४ जनवरी सन् १९४६ ई०

विश्व-शान्ति का नया नाटक

विश्वशान्ति के लगातार प्रयत्न हो रहे हैं। विविध देशों के राजनीतिज्ञ कभी मिलते हैं, तो कभी सिर्फ बड़ी-बड़ी शक्तियों के सूत्रधारों की कांफ्रेंस होती है। कांफ्रेंस के दिनों में अधिकृत विज्ञप्तियों में समस्त कार्यवाही पर संतोष प्रकट किया जाता है, लेकिन दो चार दिन नहीं बीतते कि स्थान स्थान से असंतोष प्रकट होने लगता है, कांफ्रेंस के निश्चयों पर कठोर आलोचनाएं की जाती हैं और उन्हें अत्यन्त अदूरदर्शितापूर्ण तथा हानिकारक कहा जाता है। कांफ्रेंस की सफलता असफलता के रूप में परिणत हो जाती है। सनफ्रांसिस्को कांफ्रेंस में ऐसा ही हुआ था। बड़ी विज्ञापना और समारोह के साथ यह कांफ्रेंस की गई, प्रायः सभी देशों के विदेशमन्त्री उपस्थित हुए। लेकिन अन्त में एक-एक करके सब बड़े-बड़े विदेशमन्त्री निकल गये। इसके बाद भी कई प्रयत्न हुए और अन्त में मास्को-सम्मेलन हुआ। इस के बारे में भी प्रारम्भ में सफलता की विज्ञप्तियां निकलीं, लेकिन बाद में अमरीका और इंग्लैण्ड में इस कांफ्रेन्स की जो आलोचनाएं निकलीं, उनसे स्पष्ट हो गया कि यह कांफ्रेंस भी असफल रही है, कम से कम महाशक्तियों को सन्तुष्ट नहीं कर पाई।

अब लन्दन में एक और सम्मेलन प्रारम्भ हुआ है। इसमें ५१ मित्र राष्ट्रों के प्रतिनिधि सम्मिलित हो रहे हैं। इस कांफ्रेंस का उद्देश्य ब्रिटिश प्रधानमन्त्री श्री एटली के शब्दों में "पारस्परिक सहयोग और शान्ति-स्थापना" करना है। यह उद्देश्य बहुत अच्छा है और इसके लिये विश्व सुरक्षा कौंसिल की स्थापना अत्यन्त आवश्यक है, जो भविष्य में युद्ध और संघर्ष तथा भूख और गरीबी का नाम भी न रहने दे। श्री एटली ने अपने भाषण में यह विश्वास प्रकट किया है कि इस संयुक्तराष्ट्रीय संस्था को अवश्य सफलता मिलेगी। वस्तुतः परमाणु बम जैसे विध्वंसकारी आविष्कारों के बाद आज विश्व की जनता को यह निश्चय करना है कि वह जीवन या मरण में से किसे चुने? यदि वह संसार में शांति स्थापित करने के उपायों को खोजकर उन पर अमल नहीं करती, तब उसका और समस्त विश्व-संस्कृति का मरण अवश्यभावी है। इसलिए आज यह आवश्यक है कि प्रत्येक राष्ट्र की विदेशनीति का नियंत्रण विश्व-हित के अनुकूल हो।

लेकिन क्या यह संभव होगा? क्या यह कांफ्रेंस सफल होगी? क्या इसका भी वही हाल नहीं होगा, जो इससे पूर्व शांति-प्रयत्नों का हुआ है? संसार का प्रत्येक विचारक चाहता है कि इन प्रश्नों का उत्तर संतोषकारक मिले। लेकिन दुःख यह है कि इस बार भी लक्षण प्रतिकूल सिद्ध हो रहे हैं। अभी मास्को कांफ्रेंस के निर्णयों से असंतोष प्रकट किया जा रहा है। अमेरिका में न संतोष है और न ब्रिटेन में। कुछ सूत्रों से यह भी मालूम हुआ है कि ब्रिटिश राजनीतिज्ञ इस कांफ्रेंस के अखाड़े में पश्चिमी यूरोप के राष्ट्रों का नेतृत्व कर सकने के लिये विशेष प्रयत्नशील हैं। यूरोप के पूर्वीय राष्ट्रों की सहानुभूति रूस की ओर है या उन पर रूस का प्रभाव अधिक है। ब्रिटेन यूरोप के नेतृत्व को अपने हाथ में लेने के लिये पश्चिमी यूरोप का संगठन चाहता है। मास्को कांफ्रेंस ने परमाणु बम के सम्बन्ध में कुछ निश्चय किये थे, लेकिन अमरीकन विदेश सचिव इसलिये लन्दन जा रहे हैं, ताकि वहां जाकर वे उस निश्चय के रूप को बदलवा सकें, क्योंकि अमेरिकन सीनेट उसे उस रूप में स्वीकार करने को तैयार नहीं है। जापान पर नियंत्रण में यदि रूस को सम्मिलित किया गया, तो जनरल मैकार्थर के स्तीफे की धमकी की भी खबर मिली है। टर्की और ईरान की समस्याएं अभी तक वैसी ही उलझी हुई हैं।

इन सब से बढ़ कर पराधीन और दुर्बल राष्ट्रों की समस्या है। आज उनमें स्वाधीन होने के लिये जो बेदारी पैदा हो गई है, वह किसी तरह भी अब शांत नहीं की जा सकती। और उन्हें शान्त किये बिना संसार में शान्ति स्थापित नहीं हो सकती। जब तक वे परतन्त्र हैं, वे संघर्ष करते रहेंगे और जब तक उनका स्वातंत्र्य-संघर्ष जारी है, तब तक संसार में शान्ति-स्थापना असम्भव है। अमेरिकन और ब्रिटिश स्वार्थों में इन्हीं दुर्बल राष्ट्रों पर प्रभाव कायम रखने और उनका शोषण करने के लिये संघर्ष हो सकता है।

इसलिए पहली आवश्यकता इस बात की है कि प्रलोभन की कोई वस्तु किसी के लिए भी न रहे, किसी राष्ट्र ने किसी देश को हथियाया हुआ है, तो वह उसे स्वतन्त्र कर दे। जिस दिन ऐसा होगा, उसी दिन संसार में शान्ति स्थापित होगी, अन्यथा ऐसे हजारों सम्मेलन और हजारों विश्वसुरक्षा-समितियां भी शान्ति स्थापित नहीं कर सकतीं। साम्राज्यवाद युद्ध का मूल है। उसी की जड़ पर कुठाराघात करना सब से पूर्व आवश्यक है। लेकिन आज के विश्वनेता स्वयं अपने साम्राज्य को अक्षुण्ण रखने तथा बढ़ाने की योजनाएं बना रहे हैं। इसलिए हमें सन्देह है कि लन्दन कांफ्रेंस के साथ 'सफल' या 'शानदार' विशेषणों के प्रयोग की बजाय इसे एक और 'असफल प्रयत्न' ही कहा जायगा।

जमींदारी पद्धति

बम्बई की प्रसिद्ध पुनर्निर्माण योजना के पुरस्कर्त्ताओं ने भारत में कृषि की उन्नति के लिए जमींदारी पद्धति को समाप्त करने की सिफारिश की थी। हाल ही में बनारस में होने वाले कृषि-अर्थ-शास्त्र सम्मेलन के सभापति सर मणिलाल नानावाती ने भी इसी विचार को प्रकट करते हुए कहा है कि 'मेरा विश्वास है कि हम भारत की ग्रामीण समस्या को तब तक हल नहीं कर सकते, जब तक हम ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था के आधार और ढांचे को ही बदल न दें। जब तक भूमि पर किसानों का ही पूरा मालिकाना अधिकार नहीं होगा, तब तक कृषि में सुधार होना कठिन है।' इसी आशय के विचार समय समय पर अन्य अर्थ-शास्त्रियों तथा नेताओं द्वारा भी प्रकट किए जाते हैं। इसमें संदेह नहीं कि जब तक किसान को अपनी भूमि पर पूरा स्वत्व नहीं होगा, तब तक वह खेती और उसकी उपज को सुधारने में विशेष रुचि नहीं लेगा। आज उसकी मेहनत का एक बड़ा हिस्सा जमींदार ले लेता है। जब खेत उसकी अपनी मिलकियत होगा, तो वह अधिक मनोयोग से परिश्रम करेगा। इसलिए यह आवश्यक है कि जमींदारी पद्धति का भारत में सदा के लिए खातमा किया जाय।

लेकिन इसका एक दूसरा पहलू भी है, उस दृष्टि से भी जमींदारी पद्धति की समाप्ति की उपयोगिता कम नहीं है। पश्चिमी पंजाब में किये गए 'काश्तकार' के लक्षण के अनुसार पंजाब के प्रधानमन्त्री सर खिजरहयात खां काश्तकार कहाते हैं, लेकिन हल चला कर खून पसीना एक करने वाला हिन्दू काश्तकार श्रेणी को प्राप्त कोई लाभ नहीं उठा सकता। पश्चिमी पंजाब में साम्प्रदायिक समस्याओं को बढ़ाने में मुस्लिम जमींदारों ने विशेष रूप से भाग लिया है। जिस दिन भूमि के वास्तविक अधिकारी किसान हो जायंगे, उस दिन बड़े-बड़े संपन्न मुसलमान उनका अपने स्वार्थों के लिए उपयोग नहीं कर सकेंगे। इसलिए इस जमींदारी पद्धति को जितनी जल्दी हो, समाप्त करना चाहिये। हम यह मानते हैं कि यह कार्य कहने में जितना सरल है, करने में उतना कठिन है। लेकिन इस दिशा में कदम अवश्य उठाया जा सकता है। जमींदारों पर ऐसे नियंत्रण किये जा सकते हैं, जिन से किसानों को उपज का अधिकांश प्राप्त हो सके। पंजाब में काश्तकार का लक्षण भी बदल कर केवल हाथ का काश्तकार किया जा सकता है। जमींदारी प्रथा को क्रमशः समाप्त करने की योजना भी अमल में उठाई जासकती है। जरूरत इस बात की है कि इस संबन्ध में कोई न कोई कदम अवश्य उठाया जाना चाहिये और वह जल्दी उठाया जाना चाहिये।

—०—

पार्लमेण्टरी प्रतिनिधि मण्डल

मजदूर सरकार ने भारत के सम्बन्ध में सबसे पहला काम यह किया है कि भारत की स्थिति की जानकारी के लिए पार्लमेण्टरी प्रतिनिधिमण्डल यहां पहुंच गया है। ब्रिटिश राजनीतिज्ञों ने इसे बहुत महत्वपूर्ण बताया है। प्रतिनिधि-मंडल यहां आवे और भारतीय असंतोष को अपनी आंखों देखले, यह अच्छा ही है, लेकिन आज उसके यहां आने और वापस जाकर रिपोर्ट देने और फिर उस पर पार्लमेंट में विचार करने में जो समय लगेगा, भारत उसकी प्रतीक्षा नहीं कर सकता। आज भी क्या यह जानने की आवश्यकता है कि भारत को उत्तरदायी शासन चाहिये? शासन-विधान बनाने के लिए शीघ्र विधानिर्मात्री सभा संगठित कर के सरकार को यह घोषणा करनी चाहिये कि अमुक समय तक भारतवर्ष की संपूर्ण शासन व्यवस्था भारत की केन्द्रीय धारासभा के आधीन करदी जायगी। और वह समय अत्यन्त निकटवर्ती होना चाहिए।

न्यूनतम वेतन

भारत-सरकार केन्द्रीय असेम्बली में एक बिल पेश कर रही है। इसका उद्देश्य मजदूरों का न्यूनतम वेतन नियत करना है। वस्तुतः आज यह अत्यन्त आवश्यक है कि मजदूरी का न्यूनतम दर नियत कर दिया जाय। भारत अब लगातार उद्योगप्रधान होता जा रहा है और उधर सरकार द्वारा सेनाभङ्ग आदि के कारण यह खतरा है कि मिल मालिक बेकारी का अनुचित उपयोग न करें और मजदूरी की सीमा भी कम न कर दें। आज हमारे जीवन धरातल को ऊंचा करने के लिए भी यह आवश्यक है कि वेतनों का स्टैण्डर्ड ऊंचा किया जाय। इस लिए हम इस बिल का स्वागत करते हैं। लेकिन इसके साथ हम यह भी कहना चाहते हैं कि न्यूनतम वेतनों का निर्धारण करते हुए यह भी अवश्य ध्यान में रखना चाहिए कि हमारा उत्पादन-व्यय इतना न बढ़ जावे कि भारतीय उद्योग धन्धे विदेशी माल की प्रतिस्पर्धा न कर सकें। राष्ट्रहित मजदूर या मिलमालिक किसी भी श्रेणी के हित से अधिक ऊंचा और वांछनीय है।

[सौकर्मेन]

मनुष्य की उन्नति इस पर आश्रित नहीं कि वह कितने अनुभव प्राप्त कर चुका है परन्तु इस पर है कि वह कितने अनुभवों को पचा चुका है।

× × ×

[जौहन रोड]

सब मनुष्य राख से बने हैं परन्तु कुछ सोने की राख से बने होते हैं ?

× × ×

[जिमर मैन]

अपने बटुए और जुबान को बहुत सम्हाल कर खोलो।

× × ×

इतिहास का काम मरने वाली बातों को न मरने देना है।

× × ×

दोजख में भी किसान को जमींदार की खिदमत करनी पड़ेगी क्योंकि जब जमींदार को कड़ाहे में उबाला जावेगा तो भट्टी में आग किसान को ही जलानी पड़ेगी।

× × ×

आज के युग में अकलमंदी इसमें है कि खुदा के सामने आंसू और मजिस्ट्रेट के सामने रुपया लेकर जाओ।

× × ×

अभिमान किस बात का ? शाहंशाह को भी एक दिन फावड़े की थपकी दे कर सुलाया जाता है।

× × ×

पुलिस के सिपाही को न जन्नत में जगह मिलती है, न जहन्नुम में, जन्नत में वह डाके डलवाता है और जहन्नुम में वह शैतान से शराब के लिए लड़ता है।

× × ×

[नैपोलियन]

प्रकृति बहुत ही बलहीन है परन्तु उसके लिये ही जो कि प्रकृति को निश्चय पूर्वक बलहीन मानता है।

× × ×

[कुणाल]

भारत का सूर्य अब ऊपर को चढ़ रहा है इसलिये उसकी परछाईं घटती जा रही है। परछाईं के घटते जाने से ब्रिटेन के साम्राज्यवाद को काफी अंधकार नहीं मिल रहा कि वह अच्छी तरह अपना नंगा नाच-नाच सके।

× × ×

[गांधीजी]

अपराध से घृणा करो, न कि अपराधी से।

× × ×

सच सीधा है परन्तु न्यायाधीश टेढ़े होते हैं।

× × ×

समय भागता है परन्तु मनुष्य चलता है। परन्तु जो मनुष्य भाग सकता है वह नेता है।

× × ×

[मारगेरेट इर्विन]

जिन्हें देवता प्यार करते हैं वह जल्दी मरते हैं।

× × ×

[डा० जैरट ज्योर्सी]

मेरा पूरा विश्वास है कि बंदगोभी और राजाओं में कोई अन्तर नहीं (दोनों में ही सार नहीं होता) और क्योंकि बंदगोभी सस्ती पड़ती है मैंने उस पर ही अपनी खोज आरम्भ करदी है।

× × ×

(एम्बज बीअर्ज)

शादी एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें एक मालिक, एक मालकिन और दो गुलामों का योग दो ही होता है।

× × ×

(जौर्ज हर्बर्ट)

एक मोटा आदमी सोच ही नहीं सकता कि एक पतला आदमी क्या सोचता है।

× × ×

(जोश बिलिंग)

बैल को कभी सींगों से न पकड़ो, उसे हमेशा पूंछ से पकड़ो क्यूं कि जब तुम चाहो उससे छुटकारा पा सको।

× × ×

(जौन डैविडसन)

ऐसा काम करना जिसे करने में साधारण मनुष्य घबराता हो महानता की पहली परिभाषा है।

× × ×

(ट्राट्स्की)

यदि अमेरिका में सिर्फ तीन वर्ष के लिए सोवियट राज्य हो जाय तो वहां के लोग रिगली की मिठाई खाना भूल जांय !

× × ×

(आरसिन हाउसे)

नारी जितने का वायदा करती है उससे कहीं अधिक देती है।

+ + +

(फ्रेंक्लिन)

यदि किसी बात को तीन आदमी गुप्त रखना चाहते हैं तो किन्हीं दो का मर जाना आवश्यक है।

× × ×

ब्रेटनवुड समझौता और रुस

रूस ने अमरीका के राजदूत श्री एवरल हैरीमैन से कहा है कि ब्रेटनवुड समझौते पर हस्ताक्षर करने से पूर्व रूस को अभी और विचार करने की आवश्यकता है। इससे अमरीकन अधिकारी सशंक हो उठे हैं। रूस का विचार हैं कि इस योजना में सम्मिलित हो जाने पर रूस की ऋण सम्बन्धी आवश्यकता पूरी नहीं होती और १ अरब ५० करोड़ पौंड ऋण प्राप्त करने के लिये उसे इंगलैन्ड की भांति अमेरिका से पृथक चर्चा करनी होगी। साथ ही क्योंकि रूस में सरकारी व्यापार प्रणाली के अन्तर्गत समस्त आयात निर्यात विशाल परिमाण पर एक अथवा अधिक वर्षों के ठेकों के आधार पर होता है, इस लिये उसे स्थायी विनिमय की आवश्यकता है जो इस समझौते द्वारा उसे प्राप्त नहीं होता।

रूस द्वारा परमाणुबम तैयार

अफवाहों से प्रतीत होता है कि रूस ने परमाणुबम तैयार कर लिया है। परन्तु इसमें यूरेनियम की न्यूनतम मात्रा प्रयुक्त होगी और इस प्रयोजन के लिये कहा जाता है कि एंगुलर मोमेन्टम के सिद्धान्त का उपयोग किया गया है।

स्पेन पर वक्रदृष्टि

जनरल फ्रांको के विरोधी स्पेनियों को इस समय फ्रांस में इकट्ठा किया जा रहा है। इन्हें अधिक सहायता के अतिरिक्त ब्राडकास्टिंग की सुविधाएं दी जा रही हैं जिससे स्पेनियों को फ्रांको के विरुद्ध भड़काया जा सके। फ्रांस के जो प्रतिनिधि मित्रराष्ट्रीय-असेम्बली में सम्मिलित होने के लिये लन्दन गये हैं, वे ब्रिटिश वैदेशिक विभाग से इस सम्बन्ध में चर्चा करेंगे। स्पेन सरकार ने भी—ऐसा कहा जाता है—फ्रांस आदि देशों से होने वाले इन ब्राडकास्टिंगों में बाधा पहुंचाने के लिये २३ हजार पौंड व्यय करने का निश्चय किया है।

लेबनान में रूसी-रुचि

बीरुत स्थित रूसी दूत ने लेबनान के विदेशसचिव को एक नोट दिया है जिसमें कहा गया है (१) रुस लेबनान की स्वतन्त्रता और उस की शासनसत्ता को स्वीकार करता है (२) लेबनान के सम्बन्ध में ऐंग्लो-फ्रेंच समझौता रूस की जानकारी में नहीं हुआ। (३) रूस लेबनान को यह परामर्श नहीं देता कि वह ऐंग्लो-फ्रेंच समझौते का विरोध करे। परन्तु यदि लेबनान सरकार ने स्वयं ऐसा किया तो रूस लेबनानी सरकार का साथ देगा। (४) रूस लेबनान से कोई मांग नहीं करता, परन्तु वह इस अधिकार की अवश्य मांग करता है कि यदि लेबनान किसी अन्य देश को कोई सुविधा दे तो रूस को भी उसके साथ रखे।

ईरान

ब्रिटेन ने ईरान में तीन राष्ट्रों—रूस, अमेरिका और ब्रिटेन—का एक कमीशन संघटित करने का प्रस्ताव उपस्थित किया है। इसका विचारक्षेत्र है। (१) मित्र-राष्ट्रों के सैनिकों को ईरान से हटाया जाना। (२) राजनैतिक तथा आर्थिक दृष्टि से ईरान में सामान्य स्थिति उत्पन्न करना तथा प्रान्तों में स्वायत्त शासन स्थापित करने की सम्भावना पर विचार।

इस योजना का एक ओर रूस ने विरोध किया है दूसरी ओर ईरानी डिप्टियों ने इस संगठन का विरोध किया है। क्योंकि अमेरिका और ब्रिटेन इस समय रूस के संघर्ष में नहीं आना चाहते; इस कारण ईरानियों को भय है कहीं उन्हें बलि का बकरा न बना दिया जाय। ईरानी चाहते हैं कि रूस हम से सीधी बातचीत करे। अजरबेजान में भी सैन्य संघटन प्रारम्भ हो गया है जिस से रूसी फौजों के हटते ही ईरानी फौजें वहां अधिकार न कर सकें।

जापान में नादिरशाही

जनरल मैकार्थर के आदेशानुसार जापानी मन्त्रिमण्डल में परिवर्तन हो हो रहे हैं। बहुत से पुराने कर्मचारियों के त्याग-पत्र देने की सम्भावना से सरकारी कार्यालयों के कार्य रुक गये हैं।

एक अन्य आदेश से जापानी सम्राट के अंग रक्षकों को हटा दिया गया है। एक और आदेश के अनुसार दो हजार जापानियों पर सिंगापुर में अभियोग चलाये जायेंगे।

चीन में शान्ति

इस समय चीन में साम्यवादी और केन्द्रीय सरकार के प्रतिनिधि चुंगकिंग में समझौता करने में संलग्न हैं। इस में भी अमेरिका अपना हाथ डालने से नहीं चूका। तो भी आशा की जा रही है कि यह समझौता हो जायेगा। इस समझौते के हो जाने पर चीन में युद्ध

(शेष पृष्ठ १९ पर)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

ब्रेटनवुड समझौता और भारत

[श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालङ्कार]

ब्रिटिश सरकार का एक महकमा

भारत सरकार ने एक बार पुनः अपने कार्य से सिद्ध कर दिया कि उसका स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है; वह ब्रिटिश सरकार का एक महकमा मात्र है। एंग्लो-अमरीकी आर्थिक पैक्ट न होने तक भारत सरकार ने ब्रेटनवुड करार को मानने के विषय में कोई तत्परता नहीं दिखाई। पर ज्यों ही ब्रिटेन ने उसको स्वीकार करने का निश्चय कर लिया त्यों ही भारत सरकार को भी आर्थिक संगठन और अन्तर्राष्ट्रीय बैंक की प्राथमिक सदस्यता प्राप्त करने की चिंता सताने लगी। सरकार ने केन्द्रीय असेम्बली की राय लेने की जरूरत नहीं समझी और वाशिंगटन स्थित अपने एजेण्ट जनरल सर गिरिजाशंकर वाजपेयी को उस करार पर २७ दिसम्बर को दस्तखत करने का आदेश दे दिया। भारत सरकार ने यह जानने की भी प्रतीक्षा नहीं की कि रूस आदि राष्ट्रों ने उस करार पर दस्तखत नहीं किए हैं।

महत्व क्यों ?

आर्थिक संगठन और अन्तर्राष्ट्रीय बैंक की प्राथमिक सदस्यता को इतना महत्व क्यों दिया जा रहा है ? राष्ट्र सङ्घ पर भारत ने करोड़ों रु० खर्च किये, क्या भारत की राजनीतिक स्थिति इससे कुछ ऊंची हो गई ? मास्को कांफ्रेंस ने तो यूरोपियन देशों के साथ को जाने वाली सन्धियों पर विचार करने के लिए बुलाई जाने वाली कांफ्रेंस में भारत को बुलाना आवश्यक नहीं समझा है, जब कि इथोपिया को बुलाया गया है। लार्ड वेवल को राजनीतिक क्षेत्र में भारत के वास्ते समानता का अधिकार पाने की चेष्टा न करते देखकर परंतु आर्थिक क्षेत्र में भारत के वास्ते समान स्थिति पाने के लिए व्यग्रता प्रगट कराते हुए देखकर सन्देह होना स्वाभाविक है। भारत के सदस्य होने से ब्रिटेन का एक वोट बढ़ गया है और अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक विषयों में इससे उसका वजन बढ़ जायगा, इसलिये वेवल गवर्नमेंट का यह कार्य विशुद्ध रूप से भारत के हित में नहीं है। सरकारी विज्ञप्ति में आश्वासन दिया गया है कि जब तक पौण्ड ४.०३ डालर पर स्थिर है, उस समय तक रुपये के १८ पेंस पर रहने में कोई हानि नहीं है। यदि कालान्तर में भारत को इससे बाहर रहना हितावह मालूम दे तो वह ऐसा करने के लिये स्वतन्त्र होगा।

वचन भङ्ग

पर धारासभा से सलाह न लेने का दिया कारण लचर और लंगड़ा है। ब्रेटनवुड करार जुलाई १९४४ में बना था, उसके बाद सरकार सर जेरमी रेजमैन द्वारा दिये गए वचन को पूरा करने के अनेक अवसर आए थे। सरकार जानती थी कि ब्रेटनवुड कांफ्रेंस में भारतीय प्रतिनिधियों से जो व्यवहार हुआ था उससे भारत का वह वर्ग भी सन्तुष्ट नहीं है जो अपनी समृद्धि और सम्पदा के लिए उसका आभारी है। तात्कालिक अर्थ-सदस्य सर जेरमी रेजमैन ने वचन दिया था कि असेम्बली की पूर्व स्वीकृति के बिना ब्रेटनवुड कांफ्रेंस के निर्णयों पर भारत की ओर से मान्यता की मुहर नहीं लगाई जावेगी। पर भारत सरकार ने इसकी परवाह नहीं की और वचन भङ्ग करने में जरा भी नहीं सकुचाई।

भारत को डुबोने की चाल

भारत सरकार ने युद्ध-विषयक खर्चों का बटवारा इस तेजी से करना आरम्भ किया है कि करोड़ों पौ० रकमें भारत के नाम जमा की जाती हैं और उसके विरुद्ध नासिक की टकसाल रुपये के नोट छापने में लगी हुई है। लड़ाई समाप्त हुए अनेक मास बीत गए, पर भारत के नाम १५० करोड़ स्टर्लिंग लगभग जमा है और लगभग इसीके करीब नये नोट भी निकाले गए हैं। १४ दिसम्बर को समाप्त होने वाले सप्ताह में करन्सी गंगाजली में स्टर्लिंग सिक्युरिटीज १८ कोटि रुपये के बढ़े और इसी अर्से में २१ कोटि रु० के नोट कागजी रुपये निकले। इस चलन विस्तार के कारण भिन्न-भिन्न बाजारों में तेजी आगई है। इस कारण अनेकों ने सन्देह प्रगट किया है कि यह उपाय करके स्टर्लिंग पावना को इस उद्देश्य से बढ़ाया जा रहा है ताकि बाद में इसको अधिक से अधिक काटा जा सके। एंग्लो-अमरीकी पैक्ट पर ब्रिटिश पार्लमेंट में हुई बहस में मि० चर्चिल ने इस सम्बन्ध में जो कुछ कहा है, वह इस सन्देह को पुष्ट करता है। इस स्थिति में भी हमारे कहने का यह मतलब नहीं है कि यदि भारत अन्तर्राष्ट्रीय बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रानिधि से अलग रहेगा तो उसकी स्थिति सुधर जायेगी। भारत की स्थिति यदि रूस जैसी होती तो निस्सन्देह उसका बाहर रहना लाभदायक हो सकता था। पर उसमें सम्मिलित होने का भी यह अर्थ नहीं है कि अब भारत के हितों की रक्षा की जायगी।

४० करोड़ डालर

ब्रेटनवुड कांफ्रेंस में भारत का कोटा फण्ड और बैंक के लिए अलग-अलग ४० करोड़ डालर नियत किया गया है। भारत को कुल ८० करोड़ डालर या ३० अरब रु० देना होगा। प्रारम्भ में १० अरब रु० देना होगा। भारत यह रकम देने से न हिचकेगा, क्योंकि वह युद्ध-प्रयत्नों में प्रति वर्ष ८०० करोड़ रु० प्रति वर्ष देता रहा है। लेकिन वास्तविक प्रश्न तो ये हैं —

१— ये दोनों करार विश्व में किस सीमा तक चलने और आर्थिक सहयोग को बढ़ावेंगे।

२— इन करारों को स्वीकार करने से भारत को क्या लाभ प्राप्त होगा ? अंतर्राष्ट्रीय स्थिति प्राप्त होने के सिवाय और भी कोई लाभ भी क्या उसको प्राप्त होगा ?

३— अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक संगठन के प्रबन्ध में भारत की प्रभावशाली आवाज होगी ?

बन्द द्वार नीति

पहले के सम्बन्ध में यह स्पष्ट रूप से मानना चाहिये कि आर्थिक और राजस्व के क्षेत्र में बन्द द्वार नीति बरती जा रही है। भारत से पहले फण्ड और बैंक के ब्रिटेन और अमरीका को छोड़ कर कनाड़ा, मिश्र और लिबेरिया ये देश ही सदस्य हुए थे। रूस आदि नौ देश और भी इसके सदस्य हो गये हैं, पर ये भारत के बाद में हुए हैं। इसलिये आर्थिक क्षेत्र में सहयोग बढ़ने का अधिक आशा नहीं की सकती। यदि पर्याप्त संख्या में देश इसके सदस्य नहीं होते, तो यह केवल एक स्वांग भर होगा।

प्रारम्भ में ही फण्ड और बैंक में सम्मिलित होकर निस्सन्देह भारत ने अपने लिये शासन समिति में एक डाइरेक्टर की जगह प्राप्त कर ली है। इस कारण विनिमय और राजस्व-सम्बन्धी अयोग्यताओं से बच जायगा, जो कि इसके सदस्य न होने वाले राष्ट्रों पर लगाई जावेंगी। विनिमय दर घटाई न जा सकेगी, पर यह बात अन्य राष्ट्रों के साथ बराबर लागू होगी। फिर भारत यदि समझे कि उसका इसमें रहना हितावह नहीं है, तो वह फण्ड से बाहर आ सकता है और इसकी वह जब चाहे सूचना दे सकता है और सूचना देने के साथ उसका सम्बन्ध न रहेगा। फण्ड (इण्टरनेशनल मानेटरी फण्ड) और बैंक के प्रबन्ध में भारत की आवाज प्रभावशाली होगी या नहीं, यह भारत सरकार की प्रकृति पर निर्भर है। यदि भारत में जन प्रतिनिधियों के प्रति जिम्मेदार राष्ट्रीय गवर्नमेण्ट होगी तो, उसकी आवाज का भी वजन होगा, इसके अभाव में वह ब्रिटेन के प्रभाव और बल को बढ़ायगा।

सर गिरिजाशङ्कर वाजपेयी

रुपये का भविष्य

फण्ड का उद्देश्य विभिन्न राष्ट्रों की मुद्रा के पारस्परिक मूल्य व विनिमय दर को स्थिर करना है। इस प्रश्न के साथ रुपये के भविष्य का प्रश्न भी जुड़ा हुआ है। भारत सरकार की विज्ञप्ति इस विषय में मौन है कि वह रुपये का बाह्य मूल्य कहां पर स्थिर करना चाहती है। इसके सदस्यों का एक कर्तव्य यह है कि वे अपनी मुद्रा के मूल्य को स्थिर रखें। अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार के लिये रुपये का क्या मूल्य स्थिर किया जाय, यह निश्चय करना भारत के लिये सरल नहीं है। रिजर्व बैंक अपने भण्डार में जमा स्वर्ण का मूल्य जिस दर से (२१ रु० ३ आ० १० पा० प्रति तोला) लगाया है, वह दर न भारत में है और न वह भारत से बाहर। यदि आयात पर विद्यमान प्रतिबन्ध उठा दिये जांय, वे मिल सकते हैं। डालर को वर्तमान रूपी-स्टर्लिंग रेट के बराबर गिन कर रुपये का मूल्य ठहराना खतरनाक है। युद्ध-काल में यह विनिमय दर कायम रही, इसी कारण यह पूर्ण विश्वास से नहीं कहा जा सकता कि मुक्त विनिमय और व्यापार होने पर भी यह विनिमय दर स्थिर रहेगी। मुद्रा स्फीति व फुलाव के कारण भारत ने भारी विपत्ति सही है और कीमतें चीन और मध्यपूर्व के देशों को छोड़ कर भारत में सबसे ज्यादा चढ़ी हैं। सरकार अब तक इस नीति से काम ले रही है कि रुपये की वर्तमान विनिमय दर कायम रहे और कीमतों की चढ़ी ऊंची सतह यकायक नीचे न गिर जाय। वर्तमान स्थिति इस सारे प्रश्न पर नये सिरे से विचार करने की अपेक्षा करती है।

रूपी-स्टर्लिंग गठबन्धन

नई परिस्थिति में स्टर्लिंग-रुपये के गठबन्धन का कोई अर्थ नहीं रहा है, क्योंकि ब्रेटनवुड करार दर सही करने के बाद स्वर्ण मान या डालर मान अपनाना होगा। इसलिये इस विषय पर विचार करना चाहिये कि रुपये को कानूनी तौर

(शेष पृष्ठ २२ पर)

मेला

[श्री आत्माराम]

अगले रविवार को ही तो लगने वाला है मेला, पास पड़ौस के गांव में। बच्चों के उत्साह का क्या कहना ? बड़ी व्यग्रता से एक-एक दिन गिनते हैं। सुबह सवेरे उठते हैं और अनायास ही कह उठते हैं, 'अम्मां, आज चार दिन ही तो रह गये।' और मां सिर हिला कर चुपके से समर्थन कर देती है। नवयुवकों पर भी मेले का उन्माद सा छाया है। छैला लोग हफ्तों से तैयारियों में लगे हैं। कोई दर्जी की मिन्नत कर रहा है। कितनों को धोबी के यहां दो चक्कर लगाने पड़ते हैं और बहुत से रंगीले तो रंगरेज के यहां साफे का रंग पसन्द करने में ही घंटों लगा देते हैं। नवयुवतियों और नवबन्धुओं के मन में भी मीठी हंसी और गुदगुदी का संचार हो रहा है। आस पास के तमाम गांव में कई रोज से तैयारियां हो रही हैं। सब कोई खुश है। उत्साह के साथ काम पर डटे हुए हैं और रविवार तक का कार्य समाप्त कर डालना चाहते हैं।

× × ×

'मां, मैं भी कल रामू के साथ मेले जाऊंगा, सुबह ही जायेंगे, मेरे लिये रोटी तैयार रखना। और हां, मां, पैसे लेकर जाऊंगा।' सब कुछ एक सांस में ही कह कर मुनवा तीर की तरह घर से निकल गया और कल के मेले के उत्साह में खेलते हुए बालकों की टोली में जाकर मिल गया।

कल मेले का नाम सुन कर मां पर वज्र सा टूट पड़ा। दिल में टीस उठी। वेदना आंखों में पानी बन कर छलक आई और जमीन पर चू पड़ी। 'मेरे प्रभु ! कल गांव के प्रायः सभी लोग आबाल वृद्ध मेले में जावेंगे, बड़े उत्साह के साथ। बहिनें अपने भाइयों को लिये हुए। मायें अपने बच्चों को लिये हुए। नवदम्पती अपनी उमंगों को लिये हुए। और मां बाप अपने प्यारे पुत्रों को लिये हुए। लेकिन मेरा मनुआ किस को लेकर जायेगा ? क्या उस की मां उसके साथ जा सकेगी ? तो फिर परसों उसे रोटी कहां से खिलायेगी। एक भी मजदूरी किये बगैर तो उसे दो वक्त अपने लाल को और स्वयं को भूखा रखना पड़ेगा। 'मेले का उन्माद बच्चे को इतना प्रभावित करेगा' का ज्ञान यदि उसे पहिले से हो गया होता तो शायद वह एक दो वक्त का प्रबन्ध कर भी लेती। 'लेकिन, क्या अब बच्चे का दिल तोड़ना होगा ? नहीं, नहीं, उसकी मां अभी जीवित है। मां अपने टुकड़े-टुकड़े कर डालेगी, परन्तु बच्चे की उमंगों का खून न होने देगी।'

× × ×

रात भर बच्चों को नींद कहां ? बार-बार उठ-उठ कर देखते, 'अरी मां, अभी कितना अंधेरा बाकी है ?' राम-राम करके प्रभात की किरण चमकी, बच्चों की आंखों में प्रसन्नता की आभा आई !

'मां ! मां !! चलो, जल्दी करो, रामू के घर वाले सब तैयार हो गये हैं, चलो जल्दी करो !'

'रामू तेरा साथी है बेटा, उन्हीं के साथ चला जा तू भी, मैं जा कर क्या करूंगी !' बच्चा कुछ सहम सा गया।

'मां, सब की मायें जा रही हैं। तू क्यों नहीं चलेगी ?' बच्चा मां की बेबसी को क्या समझता।

'नहीं बेटा, जा तू ही चला जा, सब अपने ही तो जा रहे हैं। जा चला जा। ले ये रोटियां, और ये चार पैसे।' मां ने अपनी महीने भर की बचत 'चार पैसे' बच्चे के हाथ पर रख दिये और दिल थाम कर रह गई।

मेले की उमंग में बच्चे ने मां का ख्याल नहीं किया और तेजी से साथियों में मिल कर मेले की ओर चल पड़ा। मां की आंखों में बच्चे का मेले का दृश्य झलक उठा और साथ ही दो आंसू।

× × ×

रास्ते भर मुनवा उछलता कूदता रामू और उन के घर वालों के साथ चला गया। बीच में सब ने अपनी-अपनी रोटियां खोलीं और खूब मजे से खाई। मुनवा को मेले की खुशी में भूख कहां थी। आधी खाई और आधी पास ही खड़े कुत्ते को देदी और खुश मेले की ओर चल पड़े।

× × ×

थोड़ी ही देर में मुनवा और उस के साथी मेले में खड़े नजर आये। जिधर देखते उधर ही दौड़ने को जी चाहता। तरह-तरह के तमाशे, नाच-रंग हो रहे थे। कहीं रीछ नाच रहा है, तो कहीं बन्दर। कहीं कटपुतली का तमाशा है, तो कहीं बाजीगर का ! कहीं पीपी बज रही है, तो कहीं डुगडुगी। कहीं मिठाई वाले की सदा है, तो कहीं चाट वाले की। घण्टों तक जी भर कर इधर उधर दौड़े। जी भर कर तमाशे देखे। मीलों के चक्कर लगा डाले। मकान का नाम तक नहीं था। 'उमङ्ग और धन की गर्मी थकान नहीं होने देती। अभी तो मनुवा का सब धन उसी का था।

चाट से खूब भरे हुए पत्ते ने मनुवा को अब अपनी ओर खींचा। चट रामू को ले दो पत्ते दो पैसे में लिए और मजे से खा गये। तुरन्त ही एक फूले हुए गुब्बारे को देखकर जी मचल गया और फौरन एक पैसा उसकी भेंट किया। उसे बार-बार फुलाता और खुशी से नाच उठता। उसे क्या ज्ञान था कि ये सब क्षणिक खुशियां हैं। अभी उसका एक चौथाई धन 'एक पैसा' उसकी जेब गर्म किये हुए था, जिसे बच्चा बड़े यत्न से संभाले हुए था। लेकिन एक गर्मागर्म जलेबी वाले की कुदृष्टि का शिकार उसका यह अवशेष धन भी चुक ही गया। अब बच्चा गुब्बारे के साथ उछलता कूदता फिरने लगा।

× × ×

'फट्ट' ! अरे गुब्बारा खतम ! बच्चे की छाती पर बड़ा भारी मुष्टि का प्रहार सा हुआ, जान सी निकल गई उसकी। खिसियाना सा हो गया और वहीं पर घुटने टिक गए उसके।

पास ही लंगूर के तमाशे का शोर हो रहा था। जनसमूह के मुंह से एक दम निकली हुई भारी आवाज ने बच्चे को कुतूहल वश अपनी ओर बुला लिया। क्षण भर के लिए बच्चा अपने शोक को भूल गया कि पास ही खड़े हुए छैला बाबू ने डांट दिया, 'पीछे को रह, देखता नहीं मैले कपड़े लिए हम से रगड़ा जा रहा है।' बच्चे ने फौरन ही अपने कपड़े देखे और साथ ही देखे अपने चारों ओर सबके। अभी तक धन की गर्मी उसको अपने मैले और फटे हुए कुर्त्ते की ओर से उदासीन बनाये हुये थी। वह गर्मी खतम थी। उदासीनता भी खतम हो चली। वास्तव में सबसे मैले थे उसके कपड़े। वह शर्मिन्दा हो उठा और पीछे को खिसक आया। क्षण भर को मां पर क्रोध आया। मेले में घूमते घूमते थकान भी तो बहुत ही चली थी। और सबसे अधिक थकाने वाली तो थी अब उसे उसकी मुफलिसी ! 'दाम तक धन पास रहता है थकान दूर रहती है। जब धन दूर हो जाता है थकान आ घेरती है'। कहते हैं, 'मुफलिसी में आटा गीला'। अचानक भूख ने भी उसे आ दबाया। और कहीं रक्षा का आसरा न देख, शत्रु को निर्बल जान उसने और भी कड़ा प्रहार कर डाला। बच्चा शिथिल हो उठा। इधर उधर के तमाशों में मन बहलाने का व्यर्थ प्रयत्न किया, लेकिन भूख और थकान जैसे शत्रु कब कहीं जमने दे सकते थे ?

अंत में व्याकुल होकर मां को पुकार उठा। जब तक सुख चैन से कटती है मां स्वप्न में याद नहीं आती। और आपत्ति में अनायास ही स्मरण हो उठती है। घर की ओर भाग खड़ा हुआ। तेज दोपहरी ! प्यास और भूख से शिथिल !! ऊपर से सूर्य की प्रचंड किरणें !!! और नीचे से नंगे पांव के लिये पृथ्वी की तपन !!!! चला जा रहा है गिरता पड़ता ! जिस मार्ग को अभी चार घंटे पूर्व पंद्रह मिनट में तैकर डाला था उसी को घंटों में भी नहीं पकड़ पा रहा है अब वह।

× × × ×

'आ गये बेटा ? बहुत जल्दी आये ? क्या लाये मेरे लिये ?

'मां सब कुछ तेरे लिये ही तो लाया हूं' !

'ऐ, तुम गिर कैसे गये बेटा ? दौड़ कर मां ने दरवाजे से बच्चे को उठाया। 'शरीर की तपन' ? सहम गई मां ?

पसीना पूंछा, पानी पिलाया और चारपाई पर लिटा कर पंखा झलने लगी मां। 'बोलो बेटा, बोलो ! क्या होगया है तुम्हें ? मेरे लिये क्या यही लाये हो ?

'ठीक है बेटा, गरीबों को मेले से और मिलता ही क्या ? गरीबों का तो कहीं भी जाओ प्रसाद ही यही है।

और अगले रोज मां शमशान में कह रही थी: —

'ऐ निष्ठुर मेले ! लाखों दुनियां के लाल कल तेरे दर्शन को गये होंगे। लेकिन क्या तुझे दुखिया का लाल ही अच्छा लगा। वह तो देखने में भी भद्दा सा मैले कपड़ों और फटे हाल में था। बड़े बड़े खूबसूरत और नये नये कपड़ों वाले बच्चे भी तो होंगे वहां ? मेरा लाल तो इतना मोटा ताजा भी न था' !

और उत्तर में जैसे कोई कह रहा था:—

पगली ! क्या नहीं जानती ? निर्धनता पाप है ! उसी का दंड तो मिला है तुझे ! निर्धन और मेला ! हा हा हा' .....

———

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री श्री एटली वाशिंगटन में अमेरिकन राष्ट्रपति श्री ट्रुमैन और विदेशमन्त्री जे० बर्न्स के साथ।

१९४५

आशाओं के विपरीत यूरोपियन युद्ध वर्ष के प्रथमार्द्ध से पूर्व समाप्त हो गया और जर्मनी एक पराजित और पराधीन राष्ट्र हो गया। लोगों को तब आशा थी कि युद्ध अभी १८ मास और चलेगा। परन्तु अगस्त में एक दिन प्रातः सामान्य जनता का दिल यह समाचार पढ़ कर कांप उठा कि हिरोशिमा और नागासाकी परमाणुबम के कारण धूल में मिल गये हैं। उस के कुछ ही समय बाद त्रस्त जापान ने भी हथियार डाल दिये। यूरोप के लोगों ने सम्भव है इसे उदीयमान शांति साम्राज्य समझ कर अपने भाग्य को सराहा हो; परन्तु एशिया और अफ्रीका में फिर एक बार भय और आशंका का राज्य स्थापित हो गया।

जनवरी

९ लुजोन में अमेरिकन सेनाएं उतरीं।

२१. जर्मन प्रदेश में सोवियत सेनाएं प्रविष्ट हो गईं।

३०. हिटलर ने जर्मन जनता के नाम एक सन्देश भेजते हुए कहा कि पूर्व के राक्षस का कड़ा प्रतिरोध करो।

फरवरी

४ जनरल मैकार्थर की सेनाएं मनीला में प्रविष्ट हुईं।

१३. 'तीन बड़ों' के सम्मेलन के निश्चय घोषित कर दिये गये।

२४. मिश्र के प्रधानमन्त्री श्री अहमद मेहरपाशा की हत्या कर दी गई।

मार्च

७. १४ वीं सेना माण्डले में प्रविष्ट।

२६. (१) केन्द्रीय असेम्बली में अंतिम युद्ध बजट प्रस्तुत।

(२) लार्ड लायड जार्ज की ८२ वर्ष की अवस्था में मृत्यु।

३०. रूस आस्ट्रिया में प्रविष्ट।

अप्रेल

५. सोवियत रूस ने जापान से की गई संधि को समाप्त कर दिया।

११. ६३ वर्ष की अवस्था में प्रेजिडेण्ट रूजवेल्ट की हृद्गति-रोध से मृत्यु।

२५. अमेरिकन और सोवियत सेनाओं ने जर्मनी में सम्पर्क स्थापित किया।

२६. सानफ्रांसिस्को में मित्र-राष्ट्रों का सम्मेलन

२८. मिलान के निकट एक इटालियन टुकड़ी ने मुसोलिनी की हत्या की।

मई

४ उत्तर पश्चिम जर्मनी, हालैण्ड तथा अन्यत्र जर्मनी का आत्मसमर्पण।

७ अन्तिम रूप से रीम्स में जर्मन सेनाओं का पूर्ण आत्म-समर्पण।

८ बंगाल दुर्भिक्ष कमीशन की रिपोर्ट प्रकाशित।

२४ मि० चर्चिल ने त्याग पत्र दे कर 'अन्तर्वर्ती सरकार' बनाई।

जून

५ ब्रिटेन, अमेरिका रूस और फ्रांस का जर्मनी पर सम्मिलित-नियन्त्रण सम्बन्धी समझौता।

१४. लार्डवावेल ने लन्दन यात्रा के बाद शिमलासम्मेलन की घोषणा की।

१४. ६॥ बाद ब्रिटिशपार्लिमेंट भंग

१५ शिमला-कांफ्रेन्स की प्रारम्भिक तैयारी

२६. सानफ्रांसिस्को सम्मेलन में अन्तिम चार्टर की घोषणा।

जुलाई

५ ब्रिटेन में निर्वाचन आरम्भ।

१०. अनरा मिशन (यू. एन. आर.-आर. ए.) नई दिल्ली में।

१४. शिमला सम्मेलन की असफलता की वायसराय द्वारा घोषणा।

१७. 'तीन बड़ों' का मिलन।

२६. इंगलैण्ड में निर्वाचन-परिणाम घोषित। टोरी दल की असफलता।

अगस्त

१ त्रिशक्ति-सम्मेलन पोट्सडाम (बर्लिन का उपनगर) में समाप्त।

७ परमाणु बम के आविष्कार की घोषणा। हिरोशिमा समाप्त।

८ नागासाकी की भी हिरोशिमा सी दुर्गति।

९ रूस द्वारा जापान के विरुद्ध युद्ध घोषणा।

१५. ब्रिटिश प्रधानमन्त्री ने ठीक मध्यरात्रि में जापान के पूर्ण आत्म-समर्पण की घोषणा की।

१६. द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति की घोषणा।

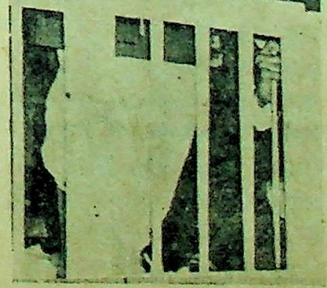

श्री शरतचन्द्र बोस

सितम्बर

२ 'मिसूरी' जलयान पर जापान द्वारा पूर्ण आत्मसमर्पण पत्र पर हस्ताक्षर।

९. १० लाख जापानियों ने नानकिंग में आत्मसमर्पण किया।

११ लण्डन में प्रथमबार विदेशमन्त्री सम्मेलन।

अक्टूबर

२ विदेश-मंत्री सम्मेलन समाप्त।

५ जापानी मन्त्रिमण्डल का त्यागपत्र।

१८ नाजी युद्धापराधियों की सूचि प्रकाशित।

२५ मित्रराष्ट्रीयचार्टर पर हस्ताक्षर

२७ अमेरिकन विदेशनीति की प्रेजिडेण्ट ट्रूमैन द्वारा घोषणा।

नवम्बर

५. आ० हिं० फौ० का प्रथम मुकदमा प्रारम्भ।

१६ डा० सुलतान शरियर द्वारा निर्मित नव-जावानी मन्त्रिमण्डल से संधि चर्चा।

२९ पोटसडाम निर्णयों पर पुनर्विचार के लिये प्रेजिडेण्ट ट्रूमैन की घोषणा।

दिसम्बर

२०. महात्मा गांधी और बंगाल गवर्नर केसी की भेंट।

३ आ० हिं० फौ० का द्वितीय मुकदमा।

६ (i) एंग्लो-अमेरिकन आर्थिक समझौता।

(ii) भू० पू० मिश्री प्रधानमन्त्री श्री नहसपाशा पर बम।

१३ भारत को ब्रिटिश पार्लियामेण्टरी डेलिगेशन भेजे जाने की घोषणा।

१५ आ० हिं० फौ० तृतीय मुकदमा

१८ मास्को में तीन बड़े विदेशमन्त्रियों का सम्मेलन।

२६. विदेशमंत्री-सम्मेलन द्वारा प्रथम मई को शान्ति सम्मेलन के आयोजन का निश्चय।

२७ तीन बड़ी शक्तियों में परमाणु शक्ति-नियन्त्रण समझौता।

२९ हिटलर का उत्तराधिकार पत्र प्राप्त।

———

—जापान के बढ़ई पैर से आरी चलाते हैं। कपड़ा तोल कर बिकता है, रोटी गजों के हिसाब से बेची जाती है। जापान के आचार मीठे होते हैं और मुरब्बे नमकीन।

× × ×

—स्वर्गीय रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा पंडित मोतीलाल नेहरु एक ही दिन पैदा हुये थे।

टांग-कटों के लिए वरदान

[श्री नत्थूमल ओसवाल, चौक कचहरी, सियालकोट]

★

इस लेख के लेखक की एक टांग लकड़ी की है। इसे दोनों कानों से कुछ भी सुनाई नही देता। उसका शरीर दुर्बल है। उसकी आयु ७० वर्ष की है। आज कल उसे पेशाब में शक्कर आती है। परन्तु वह युवकों की तरह साहसी रहा है। उसने अपने जीवन में जो काम किये उन का विरोध होता रहा, पर वह अपने काम में सफल हो गया है। और उसका विरोध भी दूर हो गया है। उसी की कहानी उसके शब्दों में पढिये। इससे पैसा कमाने वाले सेठ लोग, उपकारवृत्ति वाले सज्जन तथा असमर्थ अङ्ग हीन लाभ उठा सकेंगे।

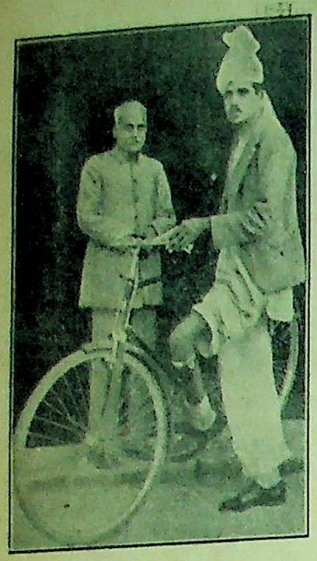

लकड़ी की टांग की सहायता से साइकल पर भी सवार हो सकते हैं।

मैं एक अच्छे व्यापारी घराने से सम्बन्ध रखता हूं। बचपन में ही मेरे सिर पर वज्रपात हुआ। बाजार में चलते हुये एक मजदूर के कन्धे से बजाजी की बड़ी भारी पेटी मेरे नन्हें दुर्बल शरीर पर आ पड़ी। इससे घुटने के नीचे मेरी टांग टूट गई। दो साल पीछे मेरा घाव तो ठीक हो गया, पर टांग तो एक ही रह गई। उन दिनों सुनते थे कि लकड़ी की टांगें बनती हैं; मगर कहां बनती हैं इस का कुछ पता नहीं था। इसी खोज में मैं बम्बई पहुंचा। वहां एक प्रसिद्ध कारखाने में टांग बनाने का आर्डर दे आया। कई महीनों पीछे टांग तो आगई जो देखने में बड़ी सुन्दर थी, पर पहन कर चलने में वह सुखदायी नहीं थी। उस को अपने अनुकूल कराने के लिये मुझे तीन बार बम्बई जाना पड़ा, मगर फिर भी सफलता न हुई। यह मेरी अन्तिम आशा थी, जिस पर पानी फिर गया। वास्तव में टांग बनाना और बात है पर उसे पहना कर तसल्ली से चलने फिरने योग्य बना देना दूसरी बात है, इसे साधारणतया टांग बनाने वाले नहीं जानते। मैं भी बहुत देर तक सुगमता से चल फिर नहीं सकता था। अकस्मात मैंने बाजीगरों को पांव के नीचे ६ इन्च ऊंची लकड़ी बान्ध कर रस्से पर चलते देखा, इसी सिद्धान्त को सामने रख कर मैंने लकड़ी की टांग बनाने के अनुभव किये। इससे मेरा अपना कष्ट दूर हो गया और सहस्रों को मेरी बनाई टांग से लाभ हुआ। अब मैं लाखों दुःखी भाइयों को लाभ पहुंचा सकता हूं।

१९१० में मैंने सराफी का कारोबार जौहरी बाजार, बम्बई में आरम्भ किया। वहां पहली लड़ाई में टांगें कटवा कर आये हुए सिपाही मेरी दुकान के आगे से गुजरते थे, जिनकी लकड़ी की टांग भी बन्धी होती और बगल के नीचे क्रच भी होता और फिर भी असुविधा से चलते थे। मुझे विचार आया कि लकड़ी की टांग लगा कर भी क्रच लगाने का क्या अर्थ। सो इसी विचार में मैंने दो प्रकार की लकड़ी की टांगों का आविष्कार किया और उनका पेटैन्ट प्राप्त कर लिया।

बम्बई के प्रसिद्ध दानवीर हंसराज प्रागजी ठाकुरसी, प्रोप्राईटर मूलजी मारकेट मेरे मित्र थे। वह परोपकार के कामों में लाखों रुपये खर्च करते थे। सेठजी ने कई सहस्र रुपयों की लकड़ी की टांगें निर्धनों को बिना मूल्य देने के लिये मुझ से बनवाई। सेठजी सोच ही रहे थे कि उपकार वृत्ति से इस काम का विस्तार किया जावे, पर दुर्भाग्य से उनका स्वर्गवास होगया।

इसी सिलसिले में बम्बई के प्रसिद्ध पत्र सम्पादक श्री करसटजी (बीरबल) जो हास्य रस के लेख लिखने में अद्वितीय थे मेरे पास आये। उनकी टांग किसी दूसरी फर्म से बनी थी पर उससे उनको कष्ट होता था। बम्बई के दूसरे समाचार पत्रों के सम्पादक जो मेरे भी जानकार थे मुझे कहने लगे कि अगर इन को सुगमता से चलने लायक कर दो, तब आप की योग्यता मानी जायेगी। सो मैंने उनकी टांग फिट करके उन को सुगमता से चलने योग्य कर दिया। इससे समाचार पत्रों में मेरी सफलता की काफी चर्चा रही।

कांग्रेस के भूतपूर्व प्रधान सर दिनशा वाचा के लड़के की टांग बम्बई के एक प्रसिद्ध कारखाने से बनवाई गई थी, पर उससे उनको कष्ट होता था। जब मैंने उनको अपने अनुभव की रीति पर चलाया तो उनका कष्ट दूर हो गया। सर वाचा ने प्रसन्न हो कर मेरा परिचय हर एक्सैलैन्सी लेडी वैलिङ्गटन से कराया। उनकी आज्ञा से मैं उन सिपाहियों में काम करता रहा जो लड़ाई में टांग कट जाने के कारण लकड़ी की टांग लगाते थे पर अच्छी तरह नहीं चल सकते थे। मैं उनको चलने फिरने की विधि बताता था जिससे वह सुगमता से चल सकते थे। परन्तु कई कारणों से मैं १९२९ में बम्बई छोड़ कर स्यालकोट में चला आया।

लाहौर में श्रीमान पंडित ठाकुरदत्त जी शर्मा (अमृत-धारा) ने मुझे बातों ही बातों में कहा कि अपने टांग बनाने और उसके द्वारा सुगमता से चल सकने की इस विधि को अपने साथ ही ले मरोगे क्या? उन्होंने अमृतधारा के वार्षिकोत्सव पर कुछ दुःखी असमर्थ भाइयों के लिये मुझ से टांगें बनवाकर उनको बिना मूल्य प्रदान की।

मैंने कभी कोई विज्ञापन नहीं छपवाया पर ऊपर लिखी बातें समाचार पत्रों में छपती रहीं। इस लिये मेरे पास बाहर से टांगें बनवाने के लिये लोग आते रहे, तब मैंने एक साधारण सा कारखाना बना लिया जो अब तक स्यालकोट में चल रहा है। सारे भारत से बड़ी २ दूर से लोग टांगें बनवाने आते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि अच्छे ढङ्ग से एक बड़ा कारखाना बनवाया जाये, मगर मेरा शरीर दिनोदिन दुर्बल हो रहा है! भारत में कई दुःखी बच्चे और युवक ऐसे हैं, जिनकी टांगें टूट चुकी हैं और किसी की टांग सूख गई है, किसी का पांव टेढ़ा है! मेरे अनुभावों से ऐसे लोग लाभ उठा सकते हैं।

अगर कोई दान-वीर सज्जन उपकारार्थ इस काम को हाथ में लेवे या कोई डी. ए.वी. कालिज, प्रतिनिधि सभा, सर गगाराम ट्रस्ट या दयाल बाग, आगरा आदि कोई सेवा करने वाली संस्था इसे अपने हाथ में ले लेवे तो उन को इस काम के लिये मेरी सेवा बिना कुछ लिए अर्पण है। यह एक निराली प्रकार की संस्था होगी जहां नितान्त असमर्थों को बिना मूल्य टांगें दी जा सकती हों, औसत दर्जे के लोगों को थोड़ी कीमत पर तथा धनी लोगों को पूरे मूल्य पर टांगें आदि दी जासकती हैं और इसी से आय-व्यय पूरी हो सकती है।

परन्तु अगर कोई व्यापारी व्यापार की दृष्टि से इसे अपने हाथ में लेना चाहे तो उस अवस्था में मुझे अपने परिश्रम का कुछ बदला लेना होगा।

आपने एक बन्दूकनुमा चरखा भी बनाया है, जिससे भली भांति सूत काता जा सकता है।

फैन्सी गरम अलवान

तीन गज लम्बा और डेढ़ गज चौड़ा हरएक रङ्ग का बेल बूटादार और साद टिकाऊ मजबूत गरम और सुन्दर। सुबह शाम की सर्दी से बचने के लिए व्यवहार कीजिये। हरएक अलवान के साथ एक डमी सुन्दर रिस्टवाच घड़ी मुफ्त मिलेगी। कीमत १२) पैकिंग डाक खर्च अलग। पैरेगन वाच कं० पो० बाक्स नं. ११४१९ कलकत्ता (A)

श्री गङ्गाजी ब्रह्मचर्याश्रम हरिद्वार

उत्तम दान क्या है? विद्या दान

विद्वानों की देखरेख में अनेक वर्षों से द्विज बालकों को वेद, कर्मकाण्ड, व्याकरण, ज्योतिष वैद्यक आदि की शिक्षा प्रदान करके काशी की परीक्षाएं उत्तीर्ण कराने में अपना विशेष स्थान रखता है। ३० से अधिक ब्रह्मचारी आजकल शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं—उनके स्थान भोजन—वस्त्र पुस्तक आदि का सारा व्यय विद्यालय की ओर से दिया जाता है। यह व्यय दानी महानुभावों पर ही निर्भर है। विद्यालय का कोई अपना स्थान नहीं है। किराये के मकान में ही स्थापित है। देश के धनी—मानी सेठ साहूकारों से प्रार्थना है कि वह अपनी नेक कमाई में से दान देकर यश के भागी बनें। स्थान बनवाने वाले सज्जनों के नाम का पत्थर लगा दिया जायेगा।

दान देते समय इस लोकोपकारी संस्था को न भूलें—इस पते पर भेजें।

पं० रामहर्ष ब्रह्मचारी—काशी वाले, श्री गंगाजी ब्रह्मचर्याश्रम हरिद्वार।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

धारावाहिक उपन्यास —

स र ला

लेखक —
श्री श्रीदेव

[गतांक से आगे]

[३]

उस दिन जब माणिकलाल राधा से यह कह कर दफ्तर को चला गया — 'जैसा तुम चाहोगी वैसा ही होगा, इस समय तो मैं दफ्तर जा रहा हूं --' तब राधा का मन बहुत खिन्न हो गया। वह इतना तो चाहती थी कि उसके सामने कोई मानसिक उलझन न रहे, पर वह उलझन माणिकलाल के जाने से हल हो, ऐसा विचार वह स्वप्न में भी न करती थी।

माणिकलाल जाता हुआ यह भी कह गया था कि सायंकाल तक विचार कर छोड़ना, राधा के लिए यह बिल्कुल नयी बात थी। अधिकांश घरों की तरह राधा के घर का संगठन भी इसी प्रकार बना हुआ था कि राधा अनुभव करती थी और माणिकलाल सोचता था और इस प्रकार दो पहियों पर घर चलता था। अब यह नयी बात हुई कि माणिकलाल ने सोचने का बोझ राधा पर डाल दिया। सधा को यह बहुत ही अस्वाभाविक प्रतीत हुआ। वह माणिकलाल के जाने पर देर तक बैठक के दरवाजे पर खड़ी सोचती रही। बहुत सोचने पर भी जब किसी निश्चय पर नहीं पहुंच सकी तो बिना खाये-पिये ही बिस्तर पर जाकर लेट गयी।

सरला की नींद टूटी तो उसने देखा कि घर में सन्नाटा है। वह आंखें मलती हुई उठी और भाभी की तलाश में चली। सोने के कमरे में जाकर देखा कि राधा आंखें खोले बिस्तर पर पड़ी है। पास बैठ कर सरला ने पूछा — 'भाभी, तुम्हारी तबियत कैसी है? आज तुम सुस्त-सी मालूम होती हो।'

राधा ने रूखे स्वर में उत्तर दिया— 'हां, तबियत कुछ खराब है। सिर में दर्द है और शरीर टूट सा रहा है।'

सरला ने सिर पर हाथ रखते हुए कहा— 'लाओ, सिर दबा दूं।'

राधा ने मुंह दूसरी तरफ फेर कर उत्तर दिया — 'बस रहने दो, सरला! मुझे सिर दबाने की आदत नहीं है। तुम जाकर आराम करो।'

सरला बेचारी राधा के रूखेपन का कारण न जानने के कारण आहत सी होकर वहीं बैठी रही। न कुछ कह सकी और न वहां से उठ ही सकी।

कुछ देर तक राधा उसी प्रकार पीठ किये लेटी रही। लेटी तो रही, परन्तु अपना रूखापन उसे स्वयं ही खटकने लगा। उसे ऐसा अनुभव हुआ कि मानों उसने व्यर्थ में ही सरला पर कोप किया हो। सरला का क्या भाव है — यह देखने के लिये राधा ने करवट बदल कर दृष्टि घुमाई तो देखा कि सरला की आंखों से आंसुओं की धारा बह रही है, जिन्हें वह कपड़े से रोकने का यत्न करती है। आंसुओं को देखकर राधा ने अनुभव किया कि उसके रूखे शब्दों ने सरला के हृदय पर गहरा आघात पहुंचाया है। राधा का कोप जैसा सरला के आंसुओं से घुल गया और वह उठ बैठी और यह कहते हुए कि 'अरे! तू तो रो रही है।' उसके गले में हाथ डाल कर गोद में लिटा लिया। सहानुभूति मिलने से सरला के हृदय पर लगा हुआ बान्ध टूट गया और वह फूट फूट कर रोने लगी। रोते-रोते उसने कहा —

'भाभी! मेरे से क्या कसूर हुआ, जो तुम मुझ से नाराज हो?'

राधा इस प्रश्न का कोई उत्तर न दे सकी। उसे सूझता ही न था कि क्या उत्तर दे? उसका मन डांवाडोल हो रहा था। प्राणजीवन के कहने से सरला के चरित्र पर उसके मन में जो सन्देह का बीज पैदा हुआ था, सरला का भोला चेहरा और उसकी आंखों में छलहीन आंसू को देख कर वह नष्ट होता जा रहा था। राधा सोच रही थी कि क्या इसी सरलहृदया लड़की के सम्बन्ध में प्राणजीवन ने ऐसी कलङ्क से भारी बात कही थी! यह तो नहीं हो सकता। कुछ देर तक तो राधा अपनी विचारधारा में तैरती रही और सरला के प्रश्न का उत्तर न दे सकी। अन्त में, विचारधारा से निकल कर वह किनारे पर पहुंच गयी और सरला से बोली —

'बहन सरला! तेरा कोई कसूर नहीं। कसूर तो मेरा ही था, जो मैंने तुझ पर सन्देह किया।

'सन्देह' शब्द कान में पड़ा तो सरला पर ऐसा असर हुआ कि मानों सौ बिच्छू काट रहे हों। उसके सम्बन्ध में राधा के मन में सन्देह पैदा हो गया है, यह उसकी कल्पना से भी परे की बात थी। वह एकदम राधा की गोद में से सिर उठा कर बैठ गयी और बोली —

'मेरे बारे में सन्देह? यह कैसी बात कही भाभी! वह कैसा सन्देह था?'

राधाने बात को टालते हुए उत्तर दिया 'सरला! जब वह सन्देह रहा ही नहीं, तो अब यह कैसे कहूं कि वह सन्देह कैसा था? यही समझो कि कोई सन्देह नहीं था।

सरला ने आग्रह किया – भाभी, तुम्हें मेरे सर की कसम, बतला दो कि उस सन्देह का क्या रूप था? जब वह रहा ही नहीं तो उसके बतलाने में हर्ज ही क्या?

राधा देर तक न बतलाने पर अड़ी रही और सरला तरह-तरह के साधनों से — कभी अनुनय से, कभी कसम देकर और कभी घुटने छू कर पूछने का यत्न करती रही। अन्त में राधा ने हार मान ली और कहा — 'तू मानती ही नहीं, तो मैं तुझे बतलाये देती हूं। सुबह तुम लोगों के जाने पर प्राणजीवन यहां आया था। वह कहता था कि लोग तरह-तरह की बातें उड़ाते हैं। वह यह भी कहते हैं कि सरला को आधी रात के समय माणिक भाई आश्रम से उड़ाकर ले गये। वह बात तो झूठी थी। तुझे अब उसे सुनकर बुरा न मानना चाहिये। दुनिया है, इसके मुंह को कौन रोक सकता है?'

सरला इस बात को सुनकर रोयी नहीं, विचार में पड़ गयी। उसे स्वामीजी के शब्द और उनका जो उत्तर उसने दिया था, वह याद आने लगे। जब स्वामीजी ने यह कहा था कि 'बेटी!' एक अवस्था आ जाने पर स्त्री को एक ऐसे सहायक की आवश्यकता होती है जिस पर स्त्रीत्व के नाते उसका पूरा दावा हो।' उस समय सरला ने यह विश्वास प्रकट किया था कि महाराज सच्चा भाई भी तो स्त्री की रक्षा कर सकता है। देखिये, माणिक भाई मेरे धर्म भाई हैं। उन्होंने मुझे जितना सहारा दिया है उतना क्या कोई पति दे सकता है?' सरला को अब अनुभव हुआ कि उसने उस समय जो विश्वास प्रकट किया था, उसकी बुनियाद में खोखलापन था। उसके और माणिकलाल के बीच में बहुत सी वस्तुयें थीं — माणिकलाल की स्त्री थी, भाई था, संसार था और संसार की बेलगाम वाणी थी। यह सब वस्तुयें, जब चाहें तब भयानक खाई बन कर उसे अपने धर्म भाई से अलग कर सकती हैं। यह भाव सरला के चित्त में क्षण भर में बिजली की तरह चमक गए और बिजली की तरह ही लुप्त हो गये; क्योंकि उसी समय किसी ने दरवाजे की घण्टी का बटन दबाया। सरला उसे खोलने के लिए दरवाजे पर चली गयी।

दरवाजा खोलकर देखा तो स्तब्ध रह गयी। न जिसके वहां दीखने की आशा थी, और न जिसे वह वहां देखना ही चाहती थी, वही रूप सामने दिखाई दिया। दरवाजे के बाहर भारती खड़ी थी।

पाठकों को स्मरण होगा कि सरला ने आश्रम छोड़ने का निश्चय लछिया नाइन द्वारा भारती की दी हुई धमकी का समाचार सुनकर ही किया था। सरला भारती को अपना सबसे बड़ा विरोधी समझ रही थी। उसे स्वप्न में भी ख्याल न था कि भारती उसका यहां तक पीछा करेगी। सरला दरवाजे के बाहर भारती को खड़ा देखकर ऐसे रह गयी, जैसे उसे काठ मार गया हो। भारती ने उसकी घबराहट को ताड़ लिया और आगे बढ़ कर कन्धे पर हाथ रखती हुई बोली — 'क्या है सरला! मुझे देखकर ऐसे घबरा क्यों गयी हो?'

यह कहकर उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही सरला को साथ लिए हुये बैठक के अन्दर चली गयी। राधा भी सरला के पीछे पीछे बैठक में आगयी थी। वह भी सरला की जुबानी भारती के विषय में काफी जानकारी प्राप्त कर चुकी थी। उसे भारती को देखकर कुछ कम आश्चर्य नहीं हुआ। यह 'मन्थरा' अमङ्गल क्या नया सन्देशा लायी है, राधा और सरला दोनों कांपते हृदय से यह प्रतीक्षा करने लगीं।

भारती ने बैठकर कहा — 'सरला! मैं जानती हूं कि तुम क्या सोच रही हो? तुम सोचती होगी कि मैं तुम्हारी बुराई करने के लिए यहां आई हूं, क्योंकि परसों तक मैं सचमुच तुम्हें दोषी समझती थी। आश्रम से तुम्हारे चले जाने के दूसरे ही दिन मुझे ऐसे प्रमाण

सरला को उसके पिता शिक्षा प्राप्त करने के लिये बम्बई के महिला विद्यालय में दाखिल कर गये थे। विद्यालय के प्रिन्सिपल प्रो० प्राणजीवन ने उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखा। सरला प्राणजीवन को गुरु और बड़ा भाई मानती थी। उसे विवाह के प्रस्ताव से बड़ा मानसिक धक्का पहुँचा, यहां तक उसे विद्यालय के आश्रम में रहना असम्भव प्रतीत होने लगा। वह आधी रात के समय आश्रम छोड़कर चली गई।

माणिकलाल उसे खोज कर अपने घर ले आया। इधर प्राणजीवन ने माणिकलाल की पत्नी को कह दिया कि सरला को माणिकलाल ही भगा लाया है।

मिल गए कि जिससे तुम्हारे विरुद्ध मेरा सारा सन्देह दूर हो गया। मैं तुम्हें सर्वथा निर्दोष समझती हूं और यही बतलाने के लिए मैं तुम्हारे पास आयी हूं। (राधा की ओर देखकर) आप श्रीमती माणिकलाल हैं! (राधा ने सिर झुका कर अनुमति की सूचना दी।) मैं आपको भी सूचना देना चाहती थी कि यदि किसी व्यक्ति की जुबानी भी आप इस घटना के विषय में सरला की बुराई सुनें, तो आप उसे स्वीकार न करें। इस मामले में मुझसे अधिक कोई नहीं जानता। मैं आपको विश्वास दिलाने आया हूं कि सरला इसमें सर्वथा निर्दोष थी।'

सरला और राधा दोनों के लिए ही यह एक प्रसन्नतादायक आविष्कार था। सरला तो अब तक भारती को अपना सबसे बड़ा विरोधी समझती थी। भारती के मुंह से राधा के सामने अपनी निर्दोषिता की घोषणा सुनकर सरला को अकथनीय सन्तोष हुआ। राधा यद्यपि इस समय तक बहुत कुछ शांत हो चुकी थी तो भी उसके मन में अनेक प्रश्न उठ रहे थे। उसने भारती से पूछा — 'मुझे यह सुनकर हर्ष हुआ कि अब तुम सरला को निर्दोष मानती हो। क्या इस सम्बन्ध में मैं कुछ प्रश्न पूछ सकती हूं?'

भारती ने उत्तर दिया — 'हां, अवश्य। पूछो।'

राधा — प्राणजीवन का कहना है कि सरला ने मुझ से विवाह का प्रस्ताव किया। क्या यह असत्य है?'

भारती — 'प्राणजीवन का यह कथन सर्वथा असत्य है। मेरे पास इसके प्रमाण हैं।

राधा ने आगे फिर पूछा — 'सरला को आश्रम से भगाया गया, प्राणजीवन का यह भी आरोप है। क्या यह भी असत्य है?'

भारती — हां, यह भी सर्वथा असत्य है। और इस असत्यता को सिद्ध करने के लिये भी मेरे पास काफ़ी प्रमाण हैं।

राधा — तुमने काफी छानबीन की है, भारतीबाई? क्या मैं उन प्रमाणों को सुन सकती हूं जिनके आधार पर तुमने सरला की निर्दोषिता को मान लिया है।

भारती — नहीं, अभी नहीं, मिसेज माणिकलाल। अभी कुछ दिन तक वह प्रमाण मुझ तक ही रहेंगे। उसके पश्चात मैं उन्हें प्रकट कर दूंगी। हां, इस सम्बन्ध में मुझे भी तुम से दो चार बातें पूछनी हैं। कहिये तो पूछूं?

राधा — हां, पूछो।'

भारती — 'मिस्टर माणिकलाल सरला को लेकर यहां किस समय पहुंचे थे।

राधा — प्रातःकाल। लगभग ७-८ बजे के समय।

भारती — 'मि० माणिकलाल रात को किस समय तक घर पर थे।

राधा — 'वह लगभग ४ बजे तक यहीं थे। उसके पश्चात प्राणजीवन ने दरवाजे पर घण्टी बजाई। उन्होंने दरवाजा खोला और मुझ से कुछ कहे बिना ही बाहर चले गये। जब लौट कर आये तो सरला उनके साथ थी। दरवाजा खोलने के समय प्राणजीवन से उनकी क्या बातचीत हुई, यह मुझे मालूम नहीं।

भारती — क्या आज प्रातःकाल प्राणजीवन ने आपसे कुछ बातचीत की थी?'

राधा — 'हां की थी।'

भारती — 'क्या आपने उससे कहा था कि आपको इस सम्बन्ध में अपने पति पर कोई सन्देह है?

राधा इस प्रश्न से उद्विग्न सी हो गई। बोली, तुम मुझ से यह प्रश्न क्यों करती हो?'

भारती ने उत्तर दिया — 'इसीलिये करती हूं कि प्रो० प्राणजीवन ने शहर में कई स्थानों पर कहा है कि मि० माणिकलाल की पत्नी सरला के आश्रम से जाने में अपने पति को ही दोषी मानती हैं।

राधा क्रोधित होकर बोली — प्राणजीवन बिल्कुल झूठा है। मुझ से तो उसने कहा था कि सब लक्षणों से इस मामले में वह दोषी हैं। मैं उसे इतना झूठा नहीं समझती थी। स्वयं ही तो मेरे मन में सन्देह का बीज डाला और मुझे ही उसके लिये उत्तरदाता ठहरा दिया।

भारती — 'मैं भी पहले प्रो० प्राणजीवन को देवता समझती थी। अनुभव ने मुझे विश्वास दिला दिया है कि वह हंस के पंखों में छुपा हुआ कौआ है। जिस धर्म का वह इतना नाम लेता है वह उसकी दुर्बलताओं का आवरणमात्र है। आपने मुझे जो कुछ बतलाया है, मिसेज माणिकलाल! उसके लिये मैं आपकी आभारी हूं। आगामी रविवार को यह मामला विद्यालय कमेटी के सामने पेश होगा। आशा है, उस में दूध का दूध और पानी का पानी हो जायेगा। तुम उस बैठक में दर्शक रूप से अवश्य आना।

इसके पश्चात भारती ने सरला के गले में हाथ डाल कर कहा — 'सरला बहिन! मैंने अनजाने में तुम्हारे साथ बहुत अन्याय किया है। क्षमा करना। तुम निश्चिन्त रहो। तुम्हारी निर्दोषिता को मैं प्रमाणित करूंगी। सांच को आंच नहीं। तुम पर जो काली घटा आयी है, वह शीघ्र ही उड़ जायेगी।'

भारती और राधा ने देखा कि सरला की आंखों से प्रसन्नता के आंसू बह रहे थे।

भारती अधिक नहीं ठहरी। राधा ने चाय के लिये पूछा तो उसने उत्तर दिया कि मुझे अभी बहुत सा काम है। इस समय नहीं। फिर कभी स्वयं मांग कर आपके यहां चाय पी लूंगी।'

— क्रमशः

सभी कार्यों में
हिन्दीको अपनाइये
पत्रों पर पता
हिन्दी में ही लिखें
नागरी रक्षा समिति देहली

AAA462

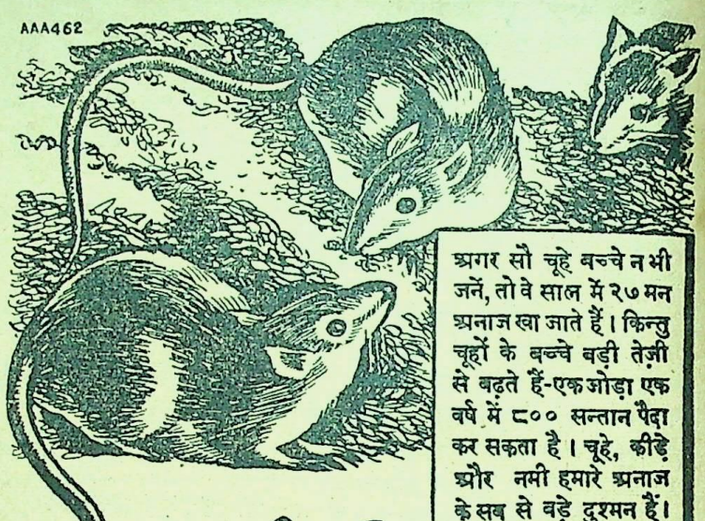

अगर सौ चूहे बच्चे न भी जनें, तो वे साल में २७ मन अनाज खा जाते हैं। किन्तु चूहों के बच्चे बड़ी तेज़ी से बढ़ते हैं-एक जोड़ा एक वर्ष में ८०० सन्तान पैदा कर सकता है। चूहे, कीड़े और नमी हमारे अनाज के सब से बड़े दुश्मन हैं।

कुम्भकर्ण की भूख!

ये आपका १०,००,००० लाख टन अनाज प्रति वर्ष चट कर डालते हैं

अगर चूहों, कीड़ों और नमी से अनाज की बरबादी न हो, तो इतने अनाज से एक वर्ष तक १ करोड़ ८० लाख व्यक्तियों को प्रति दिन आध सेर भोजन दिया जा सकता है। अनाज भरने की वैज्ञानिक रीति का पालन करने से इस बरबादी को रोका जा सकता है। चूहों-कीड़ों तथा सड़ने-गलने से अनाज को बचाने के कुछ सरल नियम यहां दिये जाते हैं।

यह ज़रूर कीजिए

भंडार में भरने से पहले सारे अन्न को साफ़ कर लीजिए और सुखा कर धरिए।

सिर्फ़ साफ़-सुथरे गोदामों में ही अनाज धरिए। दीवारों और फ़र्श को रगड़ कर साफ़ कर लीजिए; दीवारों में सफ़ेदी करवा दीजिए; अनाज रखने से पहले दीवारों और फ़र्श के सूराखों को भरवा दीजिए।

जिन गोदामों में पानी न जाता हो, उन्हें ही भंडार के काम में लाइए।

जिन गोदामों में चूहे न जा सकते हों, उन्हीं में भंडार बनाइए। सीमेण्ट और कांच के टूटे हुए टुकड़े बिलों में भर दीजिए। मोरी के मुंह पर जाली लगा दीजिए। घर के दरवाज़ों को चिपक कर बन्द होना चाहिए।

जहां तक संभव हो, अनाज को ढेर लगा कर धरिए। अगर बोरों में भरना हो, तो बोरे साफ़ होने चाहिएं; फ़र्श से उठे हुए हों और दीवारों से चिपके हुए न हों।

नियमित रूप से अनाज का निरीक्षण कीजिए। सूखे मौसम में रोशनी और हवा के लिए झरोखे खोल दीजिए।

यह मत कीजिए

अच्छे अनाज को गन्दे गोदामों या गन्दे बोरों में या घुन खाए अनाज के पास मत रखिए।

अनाज को सीली हुई हालत में मत भरिए।

गोदाम में या इसके निकट पानी, पुराने बोरे या गन्दा कूड़ा-करकट मत रहने दीजिए।

गोदामों के निकट अनाज साफ़ मत कीजिए।

खरक आबोहवा में चार महीने से अधिक और नम आबोहवा में तीन महीने से अधिक समय तक बोरों में अनाज मत रखिए।

रेल के खुले प्लेटफार्मों पर अनाज को पड़ा मत रहने दीजिए।

अन्न बचाइए-देश की सेवा कीजिए

गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया के फूड डिपार्टमेण्ट, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

मेरे जीवन की झांकियां —

★ घटनापूर्ण तीन वर्ष ★

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

[गतांक से आगे]

कांग्रेस का कैम्प

यह पहली कांग्रेस थी, जिसने जनता के मेले का रूप धारण किया। कांग्रेस प्रतिनिधियों का एक मुख्य डेरा तो था ही, उसके अतिरिक्त कई उप-कैम्प भी थे। महात्माजी का कैम्प सबसे अलग बनाया गया था। उसकी व्यवस्था अन्य डेरों से अलग ही थी। उसके पश्चात प्रत्येक ऐसी कांग्रेस में, जिसमें महात्माजी सम्मिलित हुए एक अलग महात्मा कैम्प बनाने की प्रथा का निरन्तर पालन किया गया।

इस कांग्रेस की एक बड़ी विशेषता यह थी कि मुसलमान समूह रूप से सम्मिलित हुए थे। खिलाफत को कांग्रेस के कार्यक्रम का एक भाग बना लिया गया था।

उन दिनों साधारण मुसलमान कांग्रेस को खिलाफत के नाम से ही पुकारते थे। हम लोगों को खद्दर पहने हुए देखकर मुसलमान तांगे वाले प्रायः पूछा करते थे "क्यों बाबूजी क्या आप भी खिलाफत में काम कर रहे हैं। सुना है, गांधी जी भी आजकल खिलाफत में काम कर रहे हैं।" उस युग के मुसलमान कांग्रेस को खिलाफत का एक छोटा-सा सीगा (विभाग) समझते थे। नेताओं की बात दूसरी है। वह समझते तो ठीक ही होंगे परन्तु शायद अपने मुससमान अनुयायियों को बतलाते यही थे कि कांग्रेस खिलाफत में शामिल हो गई है। अहमदाबाद में मुसलमान उलेमाओं और उनके अनुयायियों का अलग कैम्प था जिसके द्वार पर अर्धचन्द वाला नीला झण्डा फहरा रहा था। मौलाना शौकतअली और मौ० मुहम्मदअली कराची में पढ़े गये फतवे के अपराध में जेल में थे। उनकी अहमदाबाद में अनुपस्थिति ने मुसलमानों के जोश को और भी अधिक भड़का दिया था।

हम लोग एक जुदा कैम्प में ठहरे थे, जिसके केन्द्र पिता जी थे, उसे आर्यसमाजी राष्ट्रवादियों का डेरा कहा जा सकता है। उस डेरे में सैंकड़ों स्त्री-पुरुष ठहरे हुए थे। प्रतिदिन प्रातःकाल और सायंकाल विशेष व्याख्याताओं के व्याख्यान के लिये अन्य डेरों की भांति इस डेरे में भी प्रबन्ध था। दो व्याख्यान मुझे विशेष रूप से याद हैं। एक व्याख्यान पंडित रामभजदत्त चौधरी का था। आप पंजाब के प्रसिद्ध आर्यसमाजी थे और अभी हाल में ही राजनीति में प्रविष्ट हुए थे। दूसरा व्याख्यान श्री स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक का था। स्वामी जी को मैं अपने प्रारम्भिक राजनीतिक शिक्षकों में से मानता हूं। उनकी मनुष्यों के अधिकारों पर लिखी हुई छोटी-सी पुस्तिका ने बाल्यावस्था में मुझे बहुत प्रभावित किया था। स्वामी जी के राजनीतिक व्याख्यान सुनने का मुझे बहुत शौक था। मैंने उनका यह पहला राजनीतिक व्याख्यान सुना। मैं उनकी वक्तृत्व शक्ति से बहुत प्रभावित हुआ। उनके व्याख्यान का निम्नलिखित हिस्सा अभी तक मुझे याद है। —"लोग मुझसे पूछते हैं, स्वामी जी आप सिर के बाल कब कटवाएंगे ? मैं उन्हें जवाब देता हूं अरे, यह तो सिंह की लटाएं हैं। यह तब तक नहीं कटेंगी, जब तक हमारा देश स्वतंत्र न हो जायगा। यह जेल में भी मेरे साथ ही जाएंगी।"

कांग्रेस का वृहद अधिवेशन

अहमदाबाद के कांग्रेस अधिवेशन की कई विशेषताएं थीं। मुख्य मंडप में से कुरसी और मेज को पहली बार देशनिकाला दिया गया। मंच पर और नीचे चटाइयों के ऊपर चादर बिछाई गई थीं। यह इस बात का चिन्ह था कि कांग्रेस कुछ श्रेणियों की न रह कर जनता की चीज बन रही थी। दूसरी विशेषता यह थी कि मंडप में जिधर देखो, सफेद खद्दर ही खद्दर दिखाई देता था। मौलानाओं तक ने खद्दर की ऊंची-ऊंची टोपियें पहन रखी थीं। तीसरी विशेषता थी सरदार वल्लभभाई पटेल के स्वागताध्यक्ष के पद पर से दिये गये भाषण की संक्षिप्तता। इससे पूर्व स्वागताध्यक्ष से यह आशा रखी जाती थी कि कांग्रेस के सभापति को जो कुछ कहना चाहिये, उसे स्वागताध्यक्ष पहले ही कह जायगा। इस पिष्टपेषण से कांग्रेस का समय व्यर्थ में ही नष्ट होता था। सरदार वल्लभ भाई पटेल ने अपना स्वागत-भाषण शायद पन्द्रह मिनट में ही समाप्त कर दिया। इन नवीनता से प्रतिनिधि लोग बहुत ही प्रसन्न हुए। सरदार के के संक्षिप्त भाषण से उनके बारे में लोगों ने जो सम्मति बनाई वह दो तरह की थी। सरदार का असली रूप अभी भारतवासियों के सामने नहीं आया था। कुछ ने कहा — महात्माजी के अनुयायी होने के कारण ही इन्हें स्वागताध्यक्ष बनाया गया है। अपने भाई श्री विट्ठलभाई पटेल जैसी योग्यता इनमें नहीं है, बेचारे क्या बोलते। जो लोग सरदार से कुछ परिचित थे, उन्होंने यह समाधान किया कि वल्लभभाई कर्म प्रधान पुरुष हैं, वाणी-प्रधान नहीं। वह कहते कम और करते अधिक हैं।

इस अधिवेशन के अध्यक्ष पद के लिये देशबन्धु दास का चुनाव हुआ था। वह जेल में थे। उनके स्थान पर सभापतित्व करने के लिये हकीम अजमल खां साहब का निर्वाचन किया गया। हकीम साहब अंग्रेजी नहीं जानते थे। उन्होंने अपना प्रारम्भिक भाषण उर्दू में पढ़ा था। यह कांग्रेस की चौथी विशेषता थी।

महात्माजी डिक्टेटर बने

अहमदाबाद कांग्रेस की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इस के प्रथम और मुख्य प्रस्ताव द्वारा कांग्रेस के डिक्टेटर का कंटीला ताज महात्माजी के सिर पर रखा गया और उसमें भी विशेष महत्वपूर्ण बात यह थी कि वह ताज महात्मा जी ने अपने हाथ से स्वयं अपने सिर पर रखा। इस घटना ने उस समय नैपोलियन की ताजपोशी का दृश्य याद करा दिया। जब सम्राट पद पर आरूढ होने के समय पोप ने नैपोलियन के सिर पर रखने के लिये ताज उठाया तो नैपोलियन ने हाथ बढ़ा कर उसे स्वयं अपने हाथों में लेकर सिर पर रख लिया। महात्मा जी ने वह प्रस्ताव स्वयं ही उपस्थित किया, जिसके द्वारा उन्हें कांग्रेस के सर्वाधिकार समर्पण किये गये थे। महात्मा जी ने उस समय जो भाषण दिया उसके शब्द मेरे कानों में अब तक गूंज रहे हैं। उन शब्दों का श्रोताओं पर जो अद्भुत प्रभाव हो रहा था वह भी मुझे स्पष्ट रूप से याद है। महात्माजी ने जो कुछ कहा, उसका अभिप्राय यह था — देश में स्वराज्य की उत्कट अभिलाषा पैदा हो गई है। देशवासियों को यह भी विश्वास हो गया है कि उनकी इच्छा अहिंसात्मक लड़ाई द्वारा पूरी हो सकती है। मैं अहिंसात्मक लड़ाई का उद्भावक और आचार्य हूं, यह भी संभावना है कि शीघ्र ही सरकार नेताओं की गिरफ्तारी करने वाली है, इन कारणों से मैं प्रस्ताव करता हूं कि स्वराज्य की अहिंसात्मक लड़ाई चलाने के लिए मुझे डिक्टेटर के पूर्णाधिकार दिये जांय और यह भी अधिकार दिया जाय कि मैं अपने उत्तराधिकारी चुन सकूं। मैं विश्वास रखता हूं कि हम एक वर्ष के अन्दर-अन्दर स्वराज्य प्राप्त कर सकते हैं और भारत का सूर्यमंडल में वही ऊंचा स्थान हो सकता है, जिसका वह अधिकारी है, यदि हम अहिंसात्मक भावना से स्वराज्य की लड़ाई लड़ सकें।

जिस समय महात्माजी व्याख्यान दे रहे थे, श्रोता मानो मंत्रमुग्ध हो रहे थे। आत्मविश्वास का जादू मैंने उस दिन देखा। मेरे पास मेरठ के एक वकील और एक धनी व्यक्ति बैठे हुये थे। वह वह आपे से बाहर थे। महात्माजी के एक-एक शब्द पर मानो उनके खून में उबाल आता था। उफ और ओह — इस प्रकार के बेचैनी सूचित करने वाले शब्द बार-बार उनके मुंह से निकलते थे। वह मानो अनुमान कर रहे थे कि स्वराज्य उनकी ओर भगा चला आ रहा है और भारत संसार की चोटी पर बड़े वेग से चढ़ रहा है। महापुरुष का मैस्मरेज्म उनके चेहरे पर उग्र रूप में झलक रहा था। श्रोताओं में से अधिकांश की वैसी ही दशा थी। तब क्या आश्चर्य की बात थी कि वह प्रस्ताव जोश के उमड़ते हुए तूफान में महात्मा गांधी की जय के नारों के बीच स्वीकार किया गया।

इस प्रकार अहमदाबाद कांग्रेस के मुख्य प्रस्ताव द्वारा देश पर गांधीयुग का पूर्ण अधिकार हो गया।

—क्रमशः

फूल की गाथा

उद्यान में लहलहाते रूपवान-फूल इतनी पटुता से अपने रूप को प्रदर्शित कर रहे थे, मानों संसार भर का सौन्दर्य उन्हीं के हिस्से में केवल आया है। रूप के पुजारी अलि-दल ने फूल से जी भर कर प्यार किया। कोकलिया ने अपने सस्वर गले की पंचम तान, फूल की आभा से प्रफुल्ल होकर अर्पित की। फूल इतना हर्ष और सुख पाकर मदमदा उठा।

और वायु के सन-सनाते निर्मम झोंके ने फूल के उन्नत-ललाट को अवनी पर रगड़ दिया। फूल के आभायुक्त चेहरे पर अनेकों जगह खरोंच आगई। दिन पर दिन उसका रूप-कुरूपता में परिणत होने लगा। एक दिन सांझ को उसका रंग लाल से पीला हो चुका था और दूसरे दिन पतझड़ ने उसे शाख से भी अलहदा कर दिया था। फूल के प्रेमियों को दुःख हुआ। आसमान ने उसके लघु जीवन पर आंसू बहाये, जिसे संसार ने प्रातः काल; ओस नाम से पुकारा।

आशा के अनुचर मानव ने, सिसकी लेते हुए कहा — अतरसों से बसंत शुरू है — फिर खिलेगा-फूल ?

— वेद बाली

अमृतसर में हिन्दी-प्रचार

[श्री कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार]

पंजाब में यूनियनिस्ट सरकार हिंदी पर जिस तरह कुठाराघात कर उर्दू का प्रचार कर रही है, उससे पंजाब के निवासी भलीभांति परिचित हैं, लेकिन फिर भी हिन्दी का प्रचार दिनों दिन पंजाब में बढ़ता जाता है। इसके तीन मूल कारण हैं — एक तो हिन्दी की अपनी विशेषता, दूसरे आर्यसमाज का इस सम्बन्ध में विशेष प्रयत्न और तीसरे यूनियनिस्ट सरकार की हिन्दी-विरोधिनी कार्यवाइयों से हिन्दीप्रेमी कार्यकर्ताओं में प्रतिक्रिया। पिछले दिनों पंजाब के अनेक नगरों में इसी प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप अनेक कार्यकर्ता कटिबद्ध होकर हिन्दी-प्रचार के लिये मैदान में आ उतरे हैं।

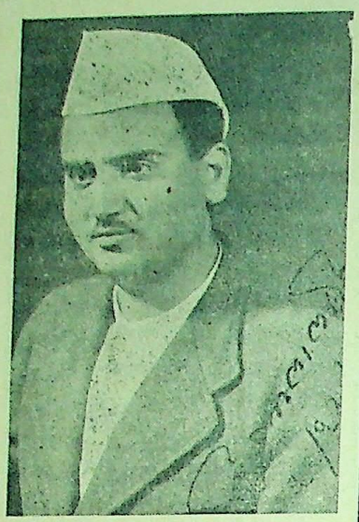

सेठ श्री चिमनलाल

पंजाब के जिन शहरों में हिन्दी के प्रति विशेष उत्साह है, उनमें से एक अमृतसर है। हिन्दी भाषा-प्रचारक-मंडल के नाम से हिन्दीप्रेमी नागरिकों की संस्था इस दिशा में विशेष कार्य कर रही है। इस संस्था के कार्य अनेक प्रकार के हैं। एक ओर जहां इस संस्था की ओर से अनेक स्थानों पर हिन्दी पढ़ाने के लिये अनेक पाठशालाएं खोली जा रही हैं, वहां दूसरी ओर छोटे-छोटे प्रकाशन भी किये जा रहे हैं। हिन्दी की पहली पुस्तक, नन्हें के गीत, हमारा झण्डा आदि ऐसी ही पुस्तकें हैं।

लेकिन इनसे भी मुख्य कार्य यह है कि हिन्दी को व्यवहार की भाषा बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। इसके मार्ग में आने वाली बाधाओं को पार करने के लिये उत्साह की कमी नहीं है। इसके दो एक उदाहरण सुनिये।

पिछले दिनों पंजाब सरकार ने 'पंजाब ट्रेड एम्प्लाईज एक्ट' के मातहत दुकानदारों को कर्मचारियों की उपस्थिति, वेतन आदि के बारे में रजिस्टर रखने का आग्रह किया था। सरकारी कर्मचारी उर्दू या अंग्रेजी जानते थे और इसलिये दुकानदारों को इन्हीं में रजिस्टर रखने के लिये प्रेरित करते थे, लेकिन हिन्दी प्रचार मण्डल के कार्यकर्ता अड़ गये। बहुत संघर्ष के बाद पंजाब सरकार को यह आज्ञा देनी पड़ी कि हिन्दी के रजिस्टर भी दुकानदार रख सकते हैं। मंढल ने इन हिन्दी रजिस्टरों का प्रचार करने के लिये ये रजिस्टर छपवा लिये। जहां उर्दू का रजिस्टर १।) रुपये में बिकता है वहां हिन्दी का सुन्दर छपा रजिस्टर ।॥) में। और अभी शायद उसकी कीमत =) और कम कर दी जाय।

इसके साथ इसी कानून के अनुसार आवश्यक 'ड़ी' फार्म दुकानदारों को उक्त मण्डल द्वारा हिन्दी में छपवाकर मुफ्त दिये जाते हैं। इस पर भी पहले उर्दू प्रेमी सरकारी कार्मचारियों ने नाकभौं सिकोड़ी, लेकिन अन्त में उन्हें झुकना पड़ा।

जब-जब हिन्दी के सम्बन्ध में केन्द्रीय या प्रान्तीय सम्मेलन ने कोई आदेश निकाला, तब-तब उसका अमृतसर में पूर्ण पालन किया गया। एक वर्ष पूर्व एक हिन्दी साहित्य सम्मेलन भी किया गया।

रेडियो और डाकखाने के कर्मचारियों से हिन्दी के सम्बन्ध पर मण्डल को सदा संघर्ष करना पड़ा है। हिन्दी में पते लिखाने और डैड-लैटर आफिस की आलोचना करने की दिशा में विशेष प्रयत्न किया गया है।

अभी दो मास भी नहीं हुए कि इस मण्डल के प्राण सेठ चिमनलाल ने अमृतसर के एक सब पोस्टमास्टर जगन्नाथ तथा गवर्नर जनरल पर ५००) रु० हर्जाने का दावा इसलिये कर दिया है कि पोस्टआफिस ने उनका एक पार्सल हिन्दी में पता लिखा होने के कारण लेने से इन्कार कर दिया था। श्री मदनगोपाल, श्री सोहनलाल और श्री बलराज वकील इस मुकदमे में में निःशुल्क पैरवी करेंगे।

इसी मण्डल ने पंजाब यूनिवर्सिटी की हिन्दी परित्तार्थियों के प्रति उपेक्षा की ओर भी यूनिवर्सिटी का ध्यान खींचने के लिये एक नया आन्दोलन किया है। हजारों परित्तार्थी एक आवेदन-पत्र पर हस्ताक्षर करके परिणाम की तिथि की निश्चित घोषणा करने का अनुरोध यूनिवर्सिटी से कर रहे हैं।

इस मण्डल के जहां अनेक उत्साही कार्यकर्ता हैं, वहां सेठ चिमनलाल का नाम उल्लेखयोग्य है। वे उन हिन्दी प्रेमियों में से हैं, जिन्होंने हिन्दी के प्रचार के लिये अमृतसर में अत्यन्त प्रशंसनीय कार्य किया है। वे कोई लैक्चरार नहीं हैं और न हिन्दी के धुरंधर लेखक हैं। हिन्दी साहित्य के ज्ञान का भी उन्हें गर्व नहीं है। वे केवल हिन्दीप्रेमी हैं और हिन्दी के प्रचार के लिये अथक लगनऔर उत्साह की उनमें कमी नहीं है।

पिकाक दन्त मंजन

दांतों को मोती सा चमकाता है और मसूड़ों को मजबूत बनाता है। पायरिया का खास दुश्मन है।

अपने शहर के दुकानदार से मंगाइये।

ऐजन्टों की जरूरत है

सोल ऐजेन्टस—

ऐनसा ट्रेडिंग कम्पनी चांदनी चौक देहली

२४ घण्टे में कीड़े मर जाते हैं!

सोटा छाप सोटा छाप

दर्द के लिये रामबाण औषध सूखी व गीली खाज, चट्टे, फुन्सी आदि समस्त चर्म रोगों को तत्काल अच्छा करती है। इस औषधि के प्रभाव से हड्डी तक पहुंचे हुए रोग तुरन्त अच्छे होते हैं।

नोगी एण्ड कम्पनी, बम्बई ४.

प्यारी बहिनो!

न तो मैं कोई नर्स हूं, न कोई डाक्टर हूं और न वैद्यक ही जानती हूं, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थी स्त्री हूं। विवाह के एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं लिकोरिया (श्वेतप्रदर) और मासिक-धर्म के दुष्ट रोगों में फंस गई थी मुझे मासिक-धर्म खुलकर न आता था, अगर आता था तो बहुत कम और दर्द के साथ, जिससे बड़ा दुख होता था। सफेद पानी (श्वेतप्रदर) अधिक जाने के कारण मैं प्रतिदिन बहुत कमजोर होती जारही थी, चेहरे का रङ्ग पीला पड़ गया था, घर के कामकाज से जी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पतिदेव ने मुझे सैकड़ों रुपये की औषधियां सेवन कराईं, परन्तु किसी से रत्ती भर लाभ न हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुख उठाती रही। सौभाग्य से एक सन्यासी महाराज हमारे दर्वाजे पर भिक्षा के लिए आये। मैं दर्वाजे पर आटा डालने आई तो महात्मा जी ने मेरा मुख देखकर कहा—बेटी, तुझे क्या रोग है जो इस आयु में ही चेहरे का रङ्ग रुई की भांति सफेद हो गया है? मैंने सारा हाल सुनाया। उन्होंने मेरे पति को अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्खा बतलाया, जिसके केवल १५ दिन के सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगों का नाश होगया। ईश्वर की कृपा से अब मैं कई बच्चों की मां हूं। मैंने इस नुस्खे से अपनी सैकड़ों बहिनों को अच्छा किया है और कर रही हूं। अब मैं इस अद्भुत औषधि को अपनी दुखी बहिनों की भलाई के लिये असल लागत पर बांट रही हूं। इसके द्वारा मैं लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वर ने मुझे बहुत कुछ दे रखा है। एक बहिन के लिये पन्द्रह दिन की दवा तैयार करने पर २॥=) दो रुपये चौदह आने असल लागत खर्च होती है और महसूल डाक अलग है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोग में फंस गई हो तो वह मुझे जरूर लिखें मैं उनको अपने हाथ से औषधि बनाकर वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी। यह मेरा प्रण है कि मैं किसी बहिन से दवा की कीमत अपनी असल लागत से एक पैसा भी ज्यादा न लूंगी।

जरूरी सूचना—मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का ही नुस्खा मालूम है इसलिये कोई बहिन मुझे किसी और रोग की दवाई के लिये न लिखें।

प्रेमप्यारी अग्रवाल, नं० (३०) बुढलाडा, जि० हिसार (पंजाब)।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

कांग्रेस और मुसलिम लीग का भेद

[श्री कृष्णचन्द्र एम० एल० ए०]

वोट क्या है और उसकी कितनी महिमा है ? ब्रिटिश हुकूमत के शुरू के १२० साल तक हिन्दुस्तान की गवर्नमेंट एकदम एकतन्त्री रही । केन्द्र और प्रांत दोनों जगह हुकूमत का यही हाल था। ब्रिटिश हुकूमत के इस लम्बे जमाने में जनता का जो जबरदस्त शोषण हुआ उससे लोगों का खून एकदम चुस गया और जनता खोखली होगई। लोगों की हालत इस कदर गिर गई कि चारों तरफ देश में कङ्गाली, भुखमरी, बेकारी व परेशानी का आतंक छा गया।

ब्रिटिश हुकूमत के शुरू के एकतन्त्री शासन के जमाने में गांव के देहाती व किसान, थानेदार, पटवारी को ही अपना हाकिम समझते थे, थानेदार व पटवारी तहसीलदार को। इस प्रकार हुक्कामबाजी का यह दायरा काफी लम्बा चौड़ा था और हर एक अपने अफसर को हाकिम समझता था। तहसीलदार, क्लेक्टर, कमिश्नर, गवर्नमेंट के सेक्रेटरी गवर्नमेंट मेम्बर, गवर्नर व गवर्नर जेनरल, हुक्मी की जंजीर की यह सब कड़ी थी। यह सब हाकिम जनता के ऊपर बैठकर शासन करते थे। इनमें से कोई भी नीचे निगाह उठाकर रियाया की तरफ नहीं देखता था। रियाया दिन-रात गर्मी व सर्दी में, मेह और आंधी में अपनी जमीन पर, खेती के धन्धों में मरती-खपती रहती थी। इन गरीबों के पसीने की गाढ़ी कमाई से शहरों के रईसों और ज़मीदारों के महल रोशन होते थे या सरकारी हाकिमों की ऐश व अशरत के साधन जुटते थे।

गरीब रियाया की किसी को कोई फिक्र नहीं थी। मिट्टी, ईंट या पत्थर को बराबर भी उनका पूछ नहीं थी। मेहनत करके भूखों मरना ही उसके भाग्य में था। उसके पेट की, उसके कपड़े की, उसके झोंपड़े की व उसके स्वास्थ की किसी को रत्ती भर भी चिन्ता नहीं थी। हुकूमत का काम रियाया से टैक्स वसूल करना और पुलिस के जरिये उस पर रौब जमाना आदि ही था। रिआया की मुसीबत का हाकिमों को कोई ध्यान नहीं था।

ब्रिटिश साम्राज्यशाही के इस जबरदस्त अत्याचार और शोषण को खत्म करने के लिए आखिर कांग्रेस मैदान में आई। इसके बिना रियाया को कहीं कोई खैरियत नहीं दीखती थी। कितनी ही बार हथियार बन्द हुकूमत की शाहनशाही ताकत से इसके लिए कांग्रेस को टक्करें लेनी पड़ीं। इन टक्करों के दौरान में हजारों मर्द और औरतों को जेल यातना, लाठी प्रहार, गोली तथा दूसरी और अनेक तरह की यातनाओं का सामना करना पड़ा। यह टक्कर अभी खत्म नहीं हुई है। लड़ाई जारी है और तब तक चालू रहेगी जब तक कि ब्रिटिश साम्राज्यशाही हिन्दुस्तान से नहीं निकल जाती।

सन् १९३७ में कुछ तब्दीली दिखाई दी। प्रांतों में मन्त्रिमंडल कायम हुये, हुकूमत का नीचे का दायरा देखने को अब भी पहले जैसा ही बना रहा। हां ऊपर गवर्नमेंट में तब्दीली साफ दिखाई पड़ गई। गवर्नमेंट सेक्रेटरी के हाकिम अब सम्राट द्वारा मुकर्रर होममेम्बर या और कोई मेम्बर नहीं रहे बल्कि उनके अफसर अब वह मिनिस्टर बन जिनको गरीब रियाया ने अपनी वोटों द्वारा असेम्बली व कौंसिल के चुनाव में चुन कर भेजा था। इन मिनिस्टरों के ऊपर अब लाटसाहब की हाकिमी नहीं थी बल्कि गरीब रियाया के सामने वह अपने आपको उत्तरदायी समझते थे और उसीको अपना हाकिम मानते थे।

नकशा एकदम बदल गया। हाकिमी का स्रोत कहां है यह दिखलाई पड़ गया। लोग जान गये कि हाकिमी के अधिकार का स्रोत गरीब रियाया और उसकी वोट ही है। मिनिस्टर को अभी कोई बड़े अख्तियारात प्राप्त नहीं थे परन्तु इतने ही से तब्दीली दिखलाई पड़ गई और वोट की महिमा का भी लोगों को आभास हो गया। लोगों को पता तो गया कि हाकिमी का स्रोत रियाया की वोट है। वोट ही में असली ताकत और हुकूमस का अधिकार है। प्रान्त की हुकूमत किसके हाथ में जावे इसका फैसला रियाया की वोटों द्वारा ही होता है।

वोट ही पर प्रान्त की राजगद्दी का दारोमदार है। यही कारण है कि असेम्बली के चुनाव में क्यों इतने लोग और पार्टियां मैदान में आती हैं। नवाब व नवाबजादे, राजे व महाराजे जो न कभी पहले गरीब रियाया के झोपड़ों की तरफ झांकते थे और न रियाया ही पहले जिनको जानती थी, यह सभी चुनाव के मौके पर रियाया की वोट के मांगने वाले होते हैं । मुसलिमलीग भी इन्हीं पार्टियों में से एक है। मुसलिमलीग यद्यपि सन् १९०६ में कायम हुई थी परन्तु अभीतक मुसलिम रियाया उससे वाकिफ नहीं थी। इसका कारण यह है कि मुसलिमलीग ने कभी भी मुसलिम रियाया की न कोई सेवा की और न उसके दुःख दर्द दूर करने की कोई फिक्र की।

मुसलिमलीग में ज्यादातर खान बहादुर, खां साहब, सर, नवाब, नवाबजादे, सरकारी खैरख्वाह, सरकारी खिताबधारी रईस व जमींदार हैं जो अब तक हिन्दू व मुसलिम रियाया के पसीने की गाढ़ी कमाई के बल-बूते पर ऐश, ऐयाशी और मौज करते रहे हैं। अब तक इन रईसजादों को अपनी मुसलिम रियाया की दुःख-दर्द की कोई चिन्ता नहीं थी परन्तु अब जब चुनाव होने को हैं और यह जानते हैं कि गरीब रियाया के ही हाथ में वोट है और उसी वोट के पाने पर सूबे की हाकिमी मिल सकती है; तब यह जरूर तरह-तरह के दावपेंच खेल कर मजहब की दुहाई देकर, इस्लाम के ऊपर खतरे का डर दिखाकर और रियाया को भुलावा देने की कोशिश कर रहे हैं।

कांग्रेस की बात बिल्कुल दूसरी है। देहाती किसान व शहरी मजदूर हिन्दू व मुसलमान कांग्रेस को सब पहले से जानते हैं। उनको पता है कि उनके दुःख-दर्द व उनकी मुसीबत में कांग्रेस ही एकमात्र उनको पूछती और उनके लिये लड़ती रही है। यह भी वह जानते हैं कि कांग्रेस अब चुनाव में यदि उनकी वोट चाहती है तो वह भी इसलिए नहीं कि कांग्रेस उन पर हाकिमी करे बल्कि महज इस लिए कि सूबे की मिनिस्टरी को अपने हाथ में लेकर वह गरीब रियाया की चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान भलाई के लिए नये नये कानून और व्यवस्था जारी कर सके, जैसा कि कांग्रेस मिनिस्ट्री ने पहले दो साल की अपनी मिनिस्टरी में किया ।

हिन्दुस्तान की गरीब रिआया, देहाती किसान, शहरी मजदूर हिन्दू व मुसलमान सब अच्छी तरह जानते हैं कि जब से कांग्रेस ने सूबे की मिनिस्टरी छोड़ दी है तब से उनको तरह-तरह की अनेक दिक्कतों का मुकाबला करना पड़ा है। आज हालत यह है कि लोगों को न अन्न प्राप्त है न खाना और न मिट्टी का तेल।

मुसलिमलीग के नाम पर बड़े-बड़े सरकारी खैरख्वाह नवाब व नवाबजादे जमींदार व रईस मुसलिम रिआया की वोट मांग रहे हैं। मुसलमान किसान समझ लें कि यह लोग सदा से उनकी गाढ़ी कमाई पर मौज उड़ाते रहे हैं। उन्होंने उनकी कभी कोई सेवा नहीं की। कांग्रेस के नाम पर जो मुसलमान उनके वोट मांगते हैं वह कांग्रेस के हुक्म में रह कर मुसलमान व हिन्दू रिआया की दोनों की सच्ची सेवा करेंगे। मुसलिम रिआया और मुसलिमलीग व कांग्रेस के इस बड़े भारी फर्क को अच्छी तरह समझने व समझाने की जरूरत है ताकि वह अपने सच्चे सेवक, व अपने शोषक के भेद को जान व पहचान सकें और खुद उस रस्सी से न चिपटें जो कि उसको फंसाने के लिये फेंकी गई है।

———

संसार में स्तम्भन की केवल पुरुषों के लगाने की एक अद्भुत औषधि "सुइ फन सी" (तरल) की चौथाई शीशी ३॥) रु० में मिलेगी।

—सुइ फन सी—

[SOLUTION]

पुरुषों के लिये केवल बाहर से व्यवहार करने लायक रुकावट की संसार में अद्वितीय तथा अद्भुत औषधि है। लाखों गृहस्थ उसकी मांग कर रहे हैं। जिन पुरुषों का शीघ्र ही वीर्य पतन हो जाता है उनके लिये यह दवा बेजोड़ है। इसके लगाने से अपूर्व शक्ति तथा सामर्थ्य प्राप्त होता है। इस दवा की एक ही शीशी बहुत दिनों तक चलती है। मूल्य पूरी शीशी रुपये १२) चौथाई शीशी रु० ३॥) डा. ख. ॥=) अलग। विस्तृत सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये।

चाइनीज मेडिकल स्टोर
नया बाजार — देहली

हैड आफिस — २८ एपोलो स्ट्रीट, फोर्ट; बम्बई : ब्रांचें - १२ डलहौजी स्क्वायर कलकत्ता : रीची रोड - अहमदाबाद।

— सेलिंग एजन्ट्स—

दी नेशनल मेडिकल स्टोर्स — आगरा।
दी जनरल मेडिकल स्टोर्स — अजमेर।
दी एलाईड केमिस्ट — जयपुर।
श्री सरस्वती स्टोर्स — बीकानेर।
मे. गिरधरदास जानकीवल्लभ — उदयपुर।
वैद्यराज विश्वनाथ त्रिवेदी — मुजफरनगर।
मेसर्स मोहन ब्रादर्स — लश्कर।
मेसर्स खरे ब्रादर्स — उरई।
दी गुजरात मेडिकल स्टोर्स — कानपुर।
दी कौशिक आयुर्वेदिक स्टोर्स — लखनऊ

एक महान क्रान्तिकारी की याद में !

[डाक्टर पी० एस० पञ्चलमूर्ति एम० ए० , शिकागो]

आज से १७ साल पूर्व १५ जनवरी को महान भारतीय क्रान्तिकारी मौलाना मोहम्मद बरकतउल्लाह का निधन हुआ था। अपने प्यारे मुल्क हिन्दुस्तान से हमेशा के लिये निर्वासित इस महान क्रान्तिकारी देशभक्त को नई पीढ़ी के हिन्दुस्तानियों में से बहुत कम लोग जानते होंगे, अधिकांश ने तो उनका नाम भी न सुना होगा, और केवल थोड़े से पुराने देशभक्तों के दिलों में उनकी टिमटिमाती याद बाकी होगी। किन्तु हम विदेशों में बसे हुए हिन्दुस्तानियों की नजरों में वे एक महान् नेता, महान् क्रान्तिकारी, महान् पथ-प्रदर्शक और निर्वासित देशभक्तों के सरताज थे। सैकड़ों ही प्रवासी भारतीय नौजवानों ने उनके चरणों के निकट बैठकर त्याग, आदर्श और देशभक्ति का पहला पाठ पढ़ा था। आज इन उन्नीस वर्षों के बाद हमारे दिलों में उनकी महज धुंधली सी याद बाकी रह गई है।

मौलाना मोहम्मद बरकतउल्लाह विदेशों में निर्वासित क्रान्तिकारी देशभक्तों में सबसे अधिक प्रिय और पूज्य थे। उनके सिर की धवल केश-राशि, सफेद दाढ़ी और झुर्रियां पड़े हुए मुख-मण्डल के बावजूद उनमें जवानों का सा साहस और बच्चों की सी फुर्ती थी। ६५ वर्ष की अवस्था में अपनी मातृभूमि भारत से हजारों मील दूर अमरीका के सानफ्रान्सिस्को शहर में १५ जनवरी सन् १९२८ को उनकी मृत्यु हुई। ब्रिटिश हुकूमत से अपने देश को मुक्त करने का विश्वास लेकर वे पूरे ३० वर्ष तक दुनिया के कोने-कोने में मारे-मारे फिरते रहे।

उनके बाल्य जीवन के सम्बन्ध में इन पंक्तियों के लेखक को अधिक परिचय नहीं है, क्योंकि स्वर्गीय बरकतउल्लाह अपने व्यक्तिगत जीवन को कभी महत्व नहीं देते थे। केवल इतना हमें मालूम है कि अपने प्रारम्भिक दिनों में वे भोपाल के किसी स्कूल में अरबी पढ़ाया करते थे। ३० वर्ष की अवस्था में वे ऊंची शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से इङ्गलिस्तान गये। वहां उन्होंने पहिली बार स्वर्गीय गोपालकृष्ण गोखले का व्याख्यान सुना और उनके निकट परिचय और प्रभाव में आये। कई वर्षों तक वे गोखले को अपना राजनैतिक गुरु मानते रहे और उनके दिये हुए आदेशों का पालन करते रहे, किन्तु अनुभव, व्यावहारिक राजनीति और भारत के नरम देशभक्तों के प्रति ब्रिटिश साम्राज्यवादियों की उपेक्षा-नीति ने उन्हें गोखले से योजनों दूर कर दिया। स्वर्गीय बरकतउल्लाह ने अब अपने लिए क्रान्ति के दुर्गम किन्तु सीधे मार्ग को चुना।

अपने काम के इस नये क्षेत्र में वे अनेक भारतीय हमराहियों के संसर्ग में आये। भारतीय क्रान्ति की आयोजना उन्हें यूरोप, अमरीका और एशिया के समस्त देशों में ले गई। लभगभ १९०५ में उन्होंने जापान से 'नया-इसलाम' नामक एक उर्दू साप्ताहिक पत्र निकाला, जिसकी सैकड़ों प्रतियां वे चुपचाप भारत में भेजा करते थे। वे चाहते थे कि किसी तरह भारतीय मुसलमानों में राष्ट्रीय चेतना जागृत हो। अपने तमाम जोश को 'नया-इसलाम' के कालमों में उंडेल कर वे भारतीय मुसलमानों से अपील करते थे कि इसलाम और अंग्रेजी हुकूमत दोनों का साथ परस्पर विरोधी और लज्जाजनक है। वे अपने हम महजबों को यह समझाते थे कि भारत में ब्रिटिश शासन का इतिहास इसलाम की पराजय, बर्बादी, जिल्लत और गुलामी का इतिहास है। वे उन्हें यह भी समझाते थे कि भारतीय मुसलमानों ने न सिर्फ अपने को ही बर्तानिया का गुलाम बनाया है बल्कि मिस्र, फिलिस्तीन, सीरिया, जजीरतुल, अरब, इराक, ईरान, जावा और सुमात्रा के इस्लामी मुल्कों को भी गुलामी की बेड़ियां पहना दी हैं। इसलिये हिन्दुस्तान के मुसलमानों की आजादी तमाम दुनिया में इसलाम की आजादी साबित होगी। वे लिखते थे कि भारतीय मुसलमानों को इसलाम के सबसे बड़े दुश्मन बर्तानिया को नष्ट करने के लिये कमर बांध कर खड़ा हो जाना चाहिये और इसका रास्ता सिर्फ एक है, और वह यह कि भारतीय मुसलमान अपने हमवतन हिन्दुओं के साथ मिल कर भारतीय क्रांति का संगठन करें।

अमरीका में हिन्दुस्तान गदर पार्टी के वे जनक थे, हालांकि उसके अधिकांश सदस्य सिख थे, फिर भी स्वर्गीय बरकतउल्लाह अन्त तक हिन्दुस्तान गदर पार्टी के एक प्रतिभाशाली, सम्मानित और विश्वसनीय नेता बने रहे। पहले यूरोपीय युद्ध के जमाने में वे इण्डियन रेवोलूशनरी कमिटी (भारतीय क्रांतिकारी समिति) के प्रतिनिधि की हैसियत से मध्य यूरोप के देशों में गये। सन् १९२४ में जब वे सोवियत रूस होते हुए पश्चिमी यूरोप में लौट रहे थे तो वहां उन्होंने न्याय, समता और आजादी की बुनियादों पर कायम की हुई सोवियत रूस की अभूतपूर्व बोलशेविक सरकार का निकट से अध्ययन किया और देखा कि किस तरह — सोवियत के करोड़ों नर-नारी उस महान् स्वप्न को सच्चा बनाने में जी-जान से लगे हुए हैं। वे सन् १९२५-२६ में स्वीजरलैण्ड में रहे और फिर बर्लिन आकर उन्होंने 'अल-इसलाह' अर्थात् 'प्रगति' नामक एक उर्दू पत्र का प्रकाशन शुरू किया। किन्तु धनाभाव के कारण उन्हें अपना यह अत्यन्त उपयोगी काम बन्द कर देना पड़ा। फरवरी सन् १९२७ में वे ब्रुसेल्स में होने वाली 'कांग्रेस अगेंस्ट इम्पीरियलिज्म" (साम्राज्यवाद विरोधी कांग्रेस) में हिन्दोस्तान गदर-पार्टी के बाजाब्ता प्रतिनिधि की हैसियत से शरीक हुए। इस कांग्रेस में स्वर्गीय मौलाना ने दुनिया की दबी हुई, सताई हुई और गुलाम कौमों की आजादी के लिये बड़ी मार्मिक अपील की। इसके बाद नवम्बर में हिन्दुस्तान गदर-पार्टी ने उन्हें अपने वार्षिक अधिवेशन में शामिल होने का निमन्त्रण दिया। वे सान फ्रान्सिस्को गये। अधिवेशन में शरीक हुए और अपने समस्त सहयोगियों से मौत की अन्तिम घड़ी तक ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध निरन्तर संघर्ष करते रहने की अपील की। उनके जीवन का यही अन्तिम सार्वजनिक काम था। इसके बाद वे बीमार पड़े और अपने सैकड़ों भक्तों और अनुयायियों को छोड़ कर ५ जनवरी सन् १९२८ को ६५ वर्ष की अवस्था में, जीवन भर ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध लड़ाई लड़ते हुये इस दुनिया से विदा हो गए। मरते समय अपने कुछ साथियों के सामने उनके अन्तिम शब्द थे — 'तमाम जिन्दगी मैं पूरी ईमानदारी के साथ अपने वतन की आजादी के लिए कोशिश करता रहा। यह मेरी जबर्दस्त खुशकिस्मती थी कि मेरी यह नाचीज जिन्दगी मेरे प्यारे वतन के काम आई। आज इस जिन्दगी से विदा लेते हुए जहां मुझे यह अफसोस है, कि मैं अपनी कोशिशों में नाकामयाब रहा वहां मुझे इस बात की भी तसल्ली है कि मेरे बाद मेरे मुल्क को आजाद करने के लिए लाखों आदमी आज आगे बढ़ आये हैं — जो सच्चे हैं, बहादुर हैं और जांबाज हैं। मैं इत्मीनान के साथ अपने मुल्क की किस्मत उनके हाथों में सौंपकर जा रहा हूं।'

मौलाना बरकतउल्लाह अपनी निर्वासित अवस्था में ही मरे। ६५ वर्ष में त्याग और कष्ट की जिन्दगी ने उन्हें समय से पहले बूढ़ा और अशक्त बना दिया था। उनकी उम्र के यूरोपियन इतने बूढ़े और जर्जर नहीं होते। वे दारुण कष्ट सहते थे पर कभी किसी से उसकी चर्चा न करते थे। अर्थाभाव से कभी-कभी उन्हें फाका करना पड़ता और उनके साथी दो-दो दिन तक यह बात न जान पाते थे। वे चाहते तो ब्रिटिश-सरकार की छत्रच्छाया में सुख पूर्ण जीवन बिता सकते थे, पर उन्होंने मुल्क की आजादी के लिए जीवन पर्यन्त दुःखों का ही स्वागत किया। लेकिन इस तपस्या ने कभी उनके मनमें कोई अभिमान नहीं पैदा किया। वे सदा अपने को एक छोटा सा कर्तव्यरत, क्रांतिकारी समझते रहे।

अविवाहित रहकर सारा जीवन उन्होंने ब्रह्मचर्य से बिताया। मरते समय भी वे एक छोटे से कमरे में रह रहे थे। जहां किसी तरह का कोई फर्नीचर न था। उनकी सेवा शुश्रूषा का भी कोई विशेष प्रबन्ध न था और न ठीक से इलाज करने के लिए ही उनके पास पैसे थे। मृत्यु से केवल चन्द घण्टे पूर्व उन्हें

[शेष पृष्ठ २३ पर]

विधुर का आर्त्तनाद

हम रंडुए अविवाहित आफिस-जीवी जिस घर में रहते हैं,
उसके सभी पड़ोसी शंकित सदा अकारण रह कहते हैं।
'किसी तरह ये जायं यहां से कोई भला आदमी आवे,'
कहें आप ही हम दुखियों का मन यह सुन कैसे सुख पावे।
हम उनको प्रणाम करते हैं उत्तर वे न कभी देते हैं,
अधिक समझ बदमाश नाम वे परिचय का न भूल लेते हैं।
उनकी कृपा बाढ़ पर है हम जिससे दुःख नित्य पाते हैं,
दासी घर में नहीं फटकती दास भड़कते ही आते हैं।
बनिया हमें उधार न देता नहीं रेजगी भी मिलती है,
नोट लिये हम घूम रहे हैं विपद न यह हम से झिलती है।
यह तो एक मित्र का घर है इसीलिये रहने पाते हैं,
खोज और भाड़े के घर हम बस बैरङ्ग लौट आते हैं।
'बीवी है ?' 'ना, नहीं' 'जाइये ! नहीं उठेगा भाड़े पर घर,'
यह सब सुनते-कहते दोनों कान-जीभ पक गईं न इति पर।
हे हिन्दी-प्रेमियो ! आर्यजन ! हे कांग्रेस-कार्यकर्ताओ,
हे अबलाश्रम-संस्थापक-गण ! हमें बचाओ पुण्य कमाओ।
हम हिन्दी के सुलेखक हैं कष्ट हमारा दूर करा दो,
कानी अन्धी लंगड़ी लूली कैसी भी बीवी दिलवा दो।

— महाप्रभु पंचानन्द

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

मेरी सुकेत यात्रा

[श्री पुत्तूलाल वर्मा 'करुणेश']

श्री शुकदेवजी व पांडव बन्धुओं की तपोभूमि सुन्दर-नगर सुकेत राज्य की राजधानी है। यह हिमालय की कांगड़ा-घाटी में समुद्र की सतह से चार सहस्र फीट ऊंचे पर्वत की उपत्यका में ७७ अक्षांश व ३१॥ देशान्तर पर बसा हुआ है। यहां के राजा सेनवंशी डोगरे राजपूत हैं, जिन्हें ब्रिटिश सरकार से ग्यारह तोपों की सलामी का सम्मान प्राप्त है।

राज्य के प्रधान मंत्रीजी का पत्र पा कर ता० १५ जनवरी ४५ को मैं सुकेत के लिये चल पड़ा।

कार्त्तिकी पर्व के कारण गढ़-गङ्गा का मेला चल रहा था, रेलगाड़ी के किसी दर्जे में भी तिल रखने को जगह न थी। कुली लोग सामान उठाने के लिये दो रुपये से कम में तो बात न करते थे। सोचा, आज कुलियों की भी खूब लगी है जैसे 'चैत में चमारों की।'

दिल्ली से चलकर अमृतसर पहुंचा और वहां से गाड़ी बदल कर पठानकोट। इस लाइन पर समतल भूमि का यह अन्तिम स्टेशन है। अब कांगड़ा वैली की नैरो-गेज रेलगाड़ी हिमालय की गोद में बल खाती हुई, लहलहाते पर्वत शिखरों के वक्षस्थल को चीरती हुई, हरे भरे मैदानों और अगम्य गुफाओं की नैसर्गिक छटा का निरीक्षण कराती हुई, भगाये लिये जा रही थी। जैसे मेरठ लाइन में गढ़गङ्गा के यात्रियों के कारण स्थान का अभाव था, वैसे ही कांगड़ा वैली की रेलगाड़ी भी उन डोगरे सैनिकों से ठसाठस भरी थी, जिन्हें ब्रिटिश सरकार ने जापान युद्ध के लिये राज्यों से उधार लिया था व अब उनका हिसाब देकर सेवा-मुक्त कर दिया था, दोनों लाइनों में अन्तर केवल इतना था कि जहां मेरठ लाइन के डिब्बों में जूतमपैजार भी देखने में आ सकता था, वहां वैली रेलगाड़ी के सैनिक सज्जनता पूर्वक नागरिकों को अपने सुरक्षित डिब्बों में बैठालेने की कृपा कर देते थे। रास्ते भर सैनिकों की लच्छेदार बातें सुनने को मिली। कोरे हाथ लौटा देने के कारण प्रायः सभी सैनिक असन्तुष्ट थे। सब के मुख पर दिल्ली में चल रहे आजाद हिन्द फौज के अभियोगों की चर्चा थी। सभी के विचारों का निचोड़ था कि जैसे गुरु इंगलैण्ड के सैनिकों ने चुनाव में मजदूर पार्टी को वोट देकर चर्चिल सरकार को दे पटका, वैसे ही हम चेला भारतीय सैनिक भी चुनाव में कांग्रेस को वोट देकर स्वतन्त्र भारत की स्थापना में अपना कर्त्तव्य पूरा करेंगे।

बात की बात में अनेकों स्टेशन निकल गये। अब ज्वालामुखी स्टेशन आया। यहां से ज्वालामुखी मंदिर तेरह मील दूर है, जहां पर पर्वत शिखर अपने वक्ष से प्रकाश की ज्वालायें उगला करता है, शाक्त भक्त इन्हें ज्वाला माई कह कर पूजा करते हैं और नव दुर्गों में देश के विभिन्न भागों से यात्री लोग आकर अपनी भक्ति भाव का परिचय देते हैं। कहते हैं कि एक बार एक जापानी पर्यटक ने इस स्थान को देख कर यह बतलाया था कि यह शिखर फट जायगा।

अब हम कांगड़ा मंदिर स्टेशन पर आ गये। उषा का मोहक प्रकाश देख कर खिड़की से बाहर सिर निकाला। देखा कि भगवान भास्कर हिमाचलराज के धौलाधार शिखर पर — जो सदैव हिमाच्छादित रहता है — अपनी स्वर्णिम रश्मियों के साथ अठखेलियां कर रहे हैं। अहा, रजतरंजित हिमाच्छादित शिखर पर इठलाती हुई बाल रवि रश्मियों की रक्तिम आभा कैसी सुहावनी प्रतीत हो रही है। सहसा स्वरचित उषा नाम की कविता का एक अंश हृदय से छलक पड़ा।

वह देखो सम्मुख लाल
यह अजब रङ्ग सा छाया है
क्या नभ-मस्तक में ऊषाने
सौभाग्य सिंदूर सजाया है।
या देवासुर संग्रामों का
रण रक्त सिन्धु लहराया है,
अथवा होली की टोली का
फेंका गुलाल उड़ आया है॥
यह किस विरहन की अग्नि
ज्वाल के नव अंगारे टूट पने
या चकवा-चकवी दम्पति देने की
उल्लास फवारे छू भारत सरकार
क्या गगन वाटिका में धा उपस्थित
कुसुम अनूपम जनता भी उस
या किसी दीन करने के लिए तैयार
यह खूनी छाई

यह दृश्य कभी यहां की जाने गई
दूर शिमला शैल के कांग्रेस के अध्यक्ष
धुंधले रूप में देखा था ने महात्मा गांधी
इसके चरणों को चूमती
गाड़ी धुएं के बादल उ
चली जा रही थी।

दृश्य इतना अब
कि ४५३ मील लम्बी
दो रात्रियों का
गया। एक सैनिक बे
हमारी जन्मभूमि
अब नागरौटा स्टे
घाटी का यह आ
यों तो युद्ध से
उन्तालीस मील आगे
रेल जाती थी, कि

पटरियों के लोहे से युद्ध के लिये हथियार तैयार करने की सनक सवार हुई तो इतनी लाइन उखाड़ लेगई।

हां, तो, अब हम नगरौटा स्टेशन पर उतर पड़े, यहां के पर्वत का धरातल समुद्र की सतह से २८९१ फीट ऊंचा है। अभी हमें यहां से इक्यानवे मील मोटर लारी से चलना होगा, तब कहीं सुन्दर नगर के दर्शन होंगे। लारी की खोजकी। अचानक लाहौर विश्व विद्यालय के एक स्नातक महोदय से भेंट हो गई, जो चार दिन के अवकाश में अपने दो सहपाठियों के साथ सुन्दर-नगर जा रहे थे। रास्ते भर इन्होंने हमें पूरी-पूरी सहायता पहुंचाई। इनके प्रति कृतज्ञता न प्रकट करना धृष्टता ही होगी। आगे चलकर पता चला कि यह अकारण कृपा करने वाले सज्जन सुकेतराज्य के प्रधान-सचिव के सुपुत्र नील बाबू हैं।

अब हमारी लारी टेढ़े-मेढ़े ऊंचे-नीचे पहाड़ी मार्ग पर झकोले खाती हुई बढ़ी चली जा रही थी। पालमपुर, पपरौला और बैजनाथ ठहरती हुई जोगेन्द्र नगर आ पहुंची। मंडी राज्य के वर्तमान नरेश सर जोगेन्द्रसेन के नाम पर ही इस बस्ती का नामकरण हुआ है। इधर के नगरों में यह एक अच्छा नगर समझा जाता है। शैल-शिखर से दो भीमकाय लोहे के नलों द्वारा पानी को तीव्रगति से लाकर यहां पर जलीय विद्युत शक्ति उत्पन्न की [illegible] अधि-

श्री पुत्तूलाल वर्मा

ढंग के बने हुए घरों से नगर शोभायमान प्रतीत होता है। यहां से दूसरी लारी पर सवार हुआ और सत्रह मील चल कर सायंकाल चार बजे सुन्दर नगर पहुंचा।

सुन्दर नगर हिमालय की उपत्यका में अंडाकार समतल भूमि में तीन स्थानों पर बसा हुआ है। राजप्रासाद से सन्नद्ध आबादी सुन्दर-नगर नम्बर एक कहलाती है। यहां से उत्तर की ओर लगभग दो मीलपर नम्बर दो व इसी के पास पूर्व की ओर एक पहाड़ी टीले पर सुन्दर नगर नम्बर तीन बसा हुआ है। सड़क के दोनों बाजुओं पर इकहरे, दुमंजले लकड़ी और कच्ची ईंटों के घर बने हुए हैं। राजप्रासाद से लेकर साधारण झोंपड़ों तक सभी के ऊपर स्लेट पत्थर के टाइलों की ढलवां छपें पड़ी हुई हैं। दक्षिण तथा पूर्व की ओर एक व पश्चिम और उत्तर की ओर तीन शिखर दिखाई देते हैं। पहिले शिखर कम ऊंचे, दूसरे पहिले से ऊंचे व तीसरे सबसे ऊंचे हैं। उत्तर की ओर [illegible] ऊंचा शिखर [illegible]

सर आर्देशिर दलाल

आपने भारतसरकार के युद्धोत्तर पुनर्निर्माण विभाग सदस्य के पद से अकस्मात स्तीफा दे दिया है।

को जो रिपोर्ट दी है उसके अनुसार सन १९४२ में तूफान बाढ़ और अकाल से १५२५०० मनुष्य मरे थे।

दमा की दवा

खाते ही लाभ दिखाती है। बीस खुराक की शीशी एक रुपया नमूना मुफ्त मंगाइए। हर प्रकार की अंग्रेजी दवा और इन्जैक्शन हम से मंगाइए।

एम० एल० ओमरे एण्ड कंपनी
हरपालपुर (बुन्देलखण्ड)

संदेश पहेली नं० ४ में ५००) का पुरस्कार

रुकुल कांगड़ी का सर्व श्रेष्ठ
यवन प्राश
न दिमाग फ़ेफ़ड़े वा कमज़ोरी के लिये
ोल एजेण्ट:—रमेश एण्ड कम्पनी, चांदनी चौक, मोती बाजार के सामने।
—बृजलाल चड्ढा, पहाड़गंज दिल्ली। आरोग्य मन्दिर, गोल मार्केट, नई दिल्ली। अमरोहा गेट मुरादाबाद, रावतपाड़ा आगरा, सिपट बाजार मेरठ, कुतुबखाना बरेली और नवज्योति स्टोर्स अजमेर।

भी उत्पन्न किया जाता है। जंगलों में सरैया, चीड़, देवदार आदि वृक्षों के अतिरिक्त अखरोट के वृक्ष भी बहुतायत से पाये जाते हैं। रीठा और तेजपत्र दाल चीनी के वृक्ष भी अधिक हैं और यत्र-तत्र खट्टा के पौधे भी स्वतः उत्पन पाये जाते हैं। उद्यानोंमें आम, केला, अमरूद आड़ू, अलूचा, सेव चकोतरा और माल्टा लगाये जाते हैं। यहां के सभी लोग फूलों की प्रेमी होने के कारण प्रत्येक घर के निकट गेंदा आदि फूल दिखाई देते हैं। यहां के गाय-भैंस नाटे ढांचे के होती हैं।

किंतु मानव वर्ग नाटे से कुछ अधिक लम्बे डील-डौल वाले हैं। पुरुष और स्त्रियां सभी गौरवर्ण, स्वस्थ शरीर और लम्बोतरी मुखाकृति के होते हैं। पुरुष प्रायः सभी पियकड़ होते हैं और मनचली महिलायें भी थोड़ी-सी मस्ती ले लेती हैं। पुरुष कुरता, पैजामा, कोट, टोपी पहिनते हैं। स्त्रियां नीचे पैजामा, ऊपर से खूब घेरदार घाघरा—जिसमें पूरे बाहों का सलूका भी साथ ही सिला रहता है—वे पहिनती हैं, उसके ऊपर दुपट्टा ओढ़ती हैं। राजपूतों में परदा होता है, शेष जातियों में नहीं। यहां सबसे अधिक जन-संख्या कनैतों की है, जो एक प्रकार के राजपूत ही हैं। उस जाति की स्त्रियां खेती-बाड़ी और पशु पालन में पुरुषों का खूब हाथ बढ़ाती हैं। यहां के लोग चोरी और डकैती का नाम नहीं जानते। मैं अपने निवास स्थान पर कभी

पहाड़ सी ढेर जर्मन फाइलों का निरीक्षण करते हुए मित्रराष्ट्रीय-अधिकारी।

ताला नहीं लगाता था और आसपास लोगों का आना जाना भी खूब रहता था, फिर भी मेरा कभी एक पैसे का भी नुकसान नहीं हुआ। जब मैंने सुना कि यहां के लोग चोरी और डकैती का नाम नहीं जानते, तब मुझे लड़कपन में पढ़ी हुई एक याद आगई। किताब में लिखा भारत में अंग्रेज राज्य के काल में एक अंग्रेज देहरादून की सराय में ठहरा। जब वह बाहर को जाने लगा, तब वह यह देखकर आश्चर्यान्वित हुआ कि उसके ताला तो है, किंतु किवारों में और कुंडा नहीं है — ताला तो कहां लगावे। लोगों ने समझा था कि यहां के लोग चोरी डकैती नहीं जानते इसलिये ताले आवश्यकता नहीं। किवाड़ तो पशुओं से रक्षा के लिये लगा दिये चोरी के डर से चोरी के अभ्यस्त पला हुआ बेचारा वह अंग्रेज बड़ी से समझ सका कि क्या यह भी सम्भ कि खुला हुआ माल होने पर भी न हो। तब क्या चोरी और डकैती अंग्रेजी राज्य के दिये हुए तोहफों एक तोहफा नहीं है ? — अ

चम्पादेवी पुरस्कार का नया विषय

श्री हरिश्चन्द्रजी की इच्छा चम्पादेवी पुरस्कार का आगामी "क्या धर्म भारत की उन्नति में सिद्ध हुआ है" नियत किया गया हिंदी लेखकों से प्रार्थना है कि वे जनवरी तक अपने अपने लेख भेजें सुवाच्य हो, और सा० अर्जुन के से बड़े हों। — स

'तपेदिक' और पुराने बुखारवाले हजारों रोगियों को जो 'जबरी'से पूर्ण स्वस्थ होचुके हैं। नया साल मुबारिक हो

लोगों ने मान लिया कि

यह तो एक मित्र का घर है। ...पेदिक" और पुराने बुखार से रोगी को कालके गाल से बचानेवाली यदि कोई खोज और भाड़े के घर हम बस बेरङ्ग ...आसाम-बंगाल की शक्तिशाली महौषधि "जबरी"ही है। कैसे जरा देखि 'बीबी है ?' 'ना, नहीं' 'जाइये ! नहीं उठेगा मैं ...) लाला काशीप्रसाद अग्रवाल दारानगर (इलाहाबाद) (२) यह सब सुनते-कहते दोनों कान-जीभ पक गई ...टोरकीपर सिग्भावली शुगर मिल, पो० बकसर (मेरठ) (३) बाबू रा हे हिन्दी-प्रेमियो ! आर्यजन ! हे कांग्रेस ...ठा मण्डी (देहरादून) (४) बाबू गजपतराय रिटायर्ड सब जज हे अबलाश्रम-संस्थापक-गण ! हमें बचाओ पुण्य ...आदि सैकड़ों सज्जनों का यही कहना है कि बस—आसाम बंगाल हम हिन्दी के सुलेखक हैं कष्ट हमारा दूर करा ...धि एक ऐसी दवा है जो कभी फेल नहीं होती है। जब ही कानी अन्धी लंगड़ी लूली कैसी भी बीबी दिलवा ...नाम एक "ईश्वरीयशक्ति" रख दिया है जो "तपेदिक" जैसे भ — महा ...प्रथम दिनसे ही नष्ट करना शुरू कर देती है। ऊपर सब सज्जनोंके ...किसी से भी पूछ सकते हैं कोई बात छिपी हुई नहीं है। या प

कि किस तरह — से "तपेदिक के रोगियो—अब भी समझो। यदि अपनी प्यारी जान नारी उस महान् स्व...हो तो आज ही 'जबरी' का सेवन शुरू कर दो, और फिर १० दि में जी-जान से लगे...। अन्यथा—यही कहावत होगी कि (अब पछताये क्या होत १९२५-२६ में स्वीजरल...वेत) सैकड़ों हकीम डाक्टर, वैद्य, अपने रोगियों पर सेवन फिर बर्लिन आकर उ...और तार द्वारा आर्डर देते हैं। तार तथा पत्र के लिए थोड़ा लाह' अर्थात् 'प्रगति' न...JAGADHRI) 'जबरी' (जगाधरी) लिख देना काफी पत्र का प्रकाशन शुरू —

धनाभाव के कारण उन्ह...नं० १—अमीरों के लिए जिसमें साथ-साथ ताकत बढ़ानेके अत्यन्त उपयोगी काम ...ं, आदि की मूल्यवान भस्में भी पड़ती हैं। पूरा चालीस पड़ा। फरवरी सन् १९...ना १० दिन के लिए २०) रु० यही जबरी नं० २—जो में होने वाली 'कांग्रेस ...यां हैं, पूरा कोर्स मू० २०) रु० नमूना १० दिन का ६) रु० लिज्म" (साम्राज्यवाद ...र्डर में पत्र का हवाला अवश्य दें।

में हिन्दोस्तान गदर-पा...ा [आसाम] या पंजाब आफिस "जगाधरी"

प्रतिनिधि की हैसियत ...

इस कांग्रेस में स्वर्गीय मौ...

की दबी हुई, सताई हु...

के कोने-कोने में मारे-मारे फिरते रहे।

उनके बाल्य जीवन के सम्बन्ध में इन पंक्तियों के लेखक को अधिक परिचय नहीं है, क्योंकि स्वर्गीय बरकतउल्लाह अपने व्यक्तिगत जीवन को कभी महत्व नहीं देते थे। केवल इतना हमें मालूम है कि अपने प्रारम्भिक दिनों में वे भोपाल के किसी स्कूल में अरबी पढ़ाया करते थे। ३० वर्ष की अवस्था में वे ऊंची शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से इङ्गलिस्तान गये। वहां उन्होंने पहिली बार स्वर्गीय गोपालकृष्ण गोखले का व्याख्यान सुना और उनके निकट परिचय और प्रभाव में आये। कई वर्षों तक वे गोखले को अपना राजनैतिक गुरु मानते रहे और उनके दिये हुए आदेशों का पालन करते रहे, किन्तु अनुभव, व्यावहारिक राजनीति और भारत के नरम देशभक्तों के प्रति ब्रिटिश साम्राज्यवादियों की उपेक्षा-नीति ने उन्हें गोखले से योजनों दूर कर दिया। स्वर्गीय बरकतउल्लाह ने अब अपने लिए क्रान्ति के दुर्गम किन्तु सीधे मार्ग को चुना।

अपने काम के इस नये क्षेत्र में वे अनेक भारतीय हमराहियों के संसर्ग में पराजय, बर्बादी, जिल्लत और गुलामी का इतिहास है। वे उन्हें यह भी समझाते थे कि भारतीय मुसलमानों ने न सिर्फ अपने को ही बर्तानिया का गुलाम बनाया है बल्कि मिस्र, फिलिस्तीन, सीरिया, जजीरतुल, अरब, इराक, ईरान, जावा और सुमात्रा के इस्लामी मुल्कों को भी गुलामी की बेड़ियां पहना दी हैं। इसलिये हिन्दुस्तान के मुसलमानों की आजादी तमाम दुनिया में इसलाम की आजादी साबित होगी। वे लिखते थे कि भारतीय मुसलमानों को इसलाम के सबसे बड़े दुश्मन बर्तानिया को नष्ट करने के लिये कमर बांध कर खड़ा हो जाना चाहिये और इसका रास्ता सिर्फ एक है, और वह यह कि भारतीय मुसलमान अपने हमवतन हिन्दुओं के साथ मिल का निकट से अध्ययन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

[पृष्ठ ६ का शेष]

स्तर पुनर्निर्माण हो सकने की सम्भावना है और तभी ५ करोड़ गृहविहीन चीनियों को कोई आश्रय प्राप्त हो सकेगा।

तिब्बत में अकाल

तिब्बत में युद्धजनित परिस्थितियों के के लक्षण प्रगट शुरू हो गये हैं। इस समय वहां कपड़ा और चाय का नितान्त दुष्काल है। यह सब होते हुए भी वहां पदार्थों के दाम नहीं चढ़े, पर चांदी के दाम अवश्य चढ़ गये हैं।

स्याम

ब्रिटेन के साथ हुए समझौते के अनुसार स्याम को १५ लाख टन चावल भारत, मलाया, हांगकांग, चुंगकिंग तथा पूर्वीद्वीपसमूहों को देना होगा। परन्तु पुराने आंकड़े इकट्ठे करने पर ज्ञात हुआ है कि लड़ाई के पहिले स्याम कभी इतना निर्यात नहीं कर सका। इस वर्ष वहां फसल भी अच्छी होने की आशा नहीं है।

इस शोषण के अतिरिक्त ब्रिटेन ने स्याम पर यह भी दबाव डाला है कि फ्रांस के साथ होने वाले समझौते में उसे फ्रांस को युद्ध-काल में प्राप्त हिन्दचीन के प्रदेश वापिस लौटा देने चाहियें।

जावा और हिन्दचीन

गत सप्ताह अंग्रेजी फौजों ने सेमरांग और सुराबाया पर आक्रमण करके कई जावानियों को गिरफ्तार कर लिया तथा कइयों को गोली से उड़ा दिया। डा० सोकार्नो ने पुनः जावा-प्रजातन्त्र को स्वीकार कर लेने की मित्रराष्ट्रों से अपील की है। ब्रिटिश सरकार इसे भी अनसुना कर के डच सरकार से समझौता कर रही है! डा० वानमूक पुनः इस चर्चा के लिये लन्दन चले गये हैं।

अनाम भी फ्रांसीसी साम्राज्यवादियों से बुरी तरह पीड़ित हो कर पुनः विद्रोह कर उठा है। २०० अनामियों ने सैगोन से १५ मील उत्तर-पूर्व बियेनहोवा में प्रदर्शन किया, परिणामतः ब्रिटिश सेनाओं ने उन पर आक्रमण कर दिया और अनामियों ने वहां के रबर गोदाम को जला दिया जिसमें दो हजार टन रबर था।

प्रवासी भारतीय

बरमा और मलाया में भारतीयों की दुर्दशा के समाचार यदाकदा ही मिल पाते हैं। वहां पर न केवल भुखमरी, बीमारी और राजनैतिक प्रतिबन्धों का राज्य है अपितु उनकी सहायतार्थ जाने वाले मैडिकल-मिशन को भी भारत-सरकार सुविधा नहीं दे रही। इसके विपरीत भारत-सरकार का मलाया स्थित प्रतिनिधि इन की खुशहाली का प्रचार कर रहा है।

आर्देशर दलाल

एक सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार सर आर्देशरदलाल ने वैयक्तिक कारणों से वायसराय की एक्जीक्यूटिव कौन्सिल से त्याग-पत्र दे दिया है। सर दलाल सम्भवतः इस सम्बन्ध में एक वक्तव्य भी देंगे।

रियासती प्रगति

उदयपुर में हुए अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् के अधिवेशन में यह मांग की गई है कि विधान निर्मात्री में रियासतों के चुने हुए प्रतिनिधि जाने चाहिए न कि नरेशों द्वारा नियुक्त। इसके अतिरिक्त पकिस्तान का विरोध किया गया।

रीवां के सम्बन्ध में वहां के महाराजा ने पिछले दिनों स्वायत्त शासन देने की घोषणा की थी। अब भारत सरकार उसमें प्रत्येक प्रकार से बाधा उपस्थित कर रही है। रियासती जनता भी उस प्रतिरोध का सामना करने के लिए तैयार हो रही है।

१५२५०० मनुष्यों की जाने गईं

तामलुक ताल्लुका कांग्रेस के अध्यक्ष श्री सतीशचन्द्र सामन्त ने महात्मा गांधी को जो रिपोर्ट दी है उसके अनुसार सन १६४२ में तूफान बाढ़ और अकाल से १५२५०० मनुष्य मरे थे।

मृत्युओं का ब्यौरा इस प्रकार है —

'नन्दीग्राम थाना, तूफान से पहले जनसंख्या १६५८६६ और मृत्युयें ४५०००;

सुताहाटा — तूफान से पहले जनसंख्या ६७१३६ और मृत्युएं ७००००;

महिषादल — जनसंख्या १३५७०२ और मृत्युएं; १५०००;

तामलुक — जनसंख्या १३२०८५; मृत्युयें १२०००;

मोयन — जनसंख्या ६३६०३; मृत्युएं ८०००;

रिपोर्ट में कहा गया है कि बाढ़, तूफान, सरकारी दमन और जन-विद्रोह इन सब बातों से ताल्लुके का सामान्य आवागमन रुक गया था।

सर आर्देशिर दलाल

आपने भारतसरकार के युद्धोत्तर पुनर्निर्माण विभाग सदस्य के पद से अकस्मात स्तीफा दे दिया है।

काका की कुण्डलियां !

देख जमाना जङ्ग का, ऐसी आई मौज,
बिल्ली से लड़ने लगी, चूहों की इक फौज।
चूहों की इक फौज, बहुत घबराई बिल्ली,
जिस दम नारा लगा, चलो सब चूहे दिल्ली।
कह काका कविराय, लाल पिंजड़े में डाले,
मजबूती से लगा दिये अंगरेजी ताले।
चूहों की सन्तान में फैल गया फिर जोश,
जगह-जगह पर सभा की, खूब दिखाया रोष।
खूब दिखाया रोष, होश में आई नानी,
थी कुछ दूरन्देश वहां इक बिल्ली रानी।
कंह काका कविराय ढोंग फिर एक रचाया,
"न्याय" नाम का चूहों को नाटक दिखलाया।
बिल्ली नाटक कर रही खत्म हुआ इक सीन,
मोटे-मोटे एक दम, चूहे छोड़े तीन।
चूहे छोड़े तीन सुनो काकी के भइया,
नौ सौ चूहे खाय हज्ज को चली बिलइया।
कंह काका कविराय जागते रहना भाई,
कह गये "तुलसी" — "नवन नीच की अति दुखदाई।

— काका (हाथरस)

माचिस के खेल

माचिस का बक्स हर जगह मिल जाता है। बक्स में से तीलियां निकालिये और जादू, कला, तमाशा पहेली आदि १५ प्रकार के अद्भुत और आश्चर्य — जनक खेल जैसे :—

(१) अग्नि बाण चलना, (२) फूल बनाना, (३) सिगरेट बनाना (असली) आदि दिखाकर अपने मित्रादि में मान प्राप्त कीजिये। केवल ।) आने के टिकट लिफाफे में रखकर भेज देने पर हम आपको चित्र, सामान और विधि घर बैठे देंगे।

नोट —पाकिट और स्टेज खेल भी मिल जाते हैं।

प्रो० आर० कृष्णा, ३२६ कटरा नील देहली।

दमा की दवा

खाते ही लाभ दिखाती है। बीस खुराक की शीशी एक रुपया नमूना मुफ्त मंगाइए। हर प्रकार की अंग्रेजी दवा और इन्जैक्शन हम से मंगाइए।

एम० एल० ओमरे एण्ड कंपनी
हरपालपुर (बुन्देलखण्ड)

संदेश पहेली नं० ४ में ५००) का पुरस्कार

गुरुकुल कांगड़ी का सर्व श्रेष्ठ

च्यवन प्राश

दिल दिमाग फ़ेफ़ड़े वा कमज़ोरी के लिये

दिल्ली प्रान्त के सोल एजेण्ट:—रमेश एण्ड कम्पनी, चांदनी चौक, मोती बाजार के सामने।

अन्य एजेन्सियां:—बृजलाल चड्ढा, पहाड़गंज दिल्ली। आरोग्य मन्दिर, गोल मार्केट, नई दिल्ली। अमरोहा गेट मुरादाबाद, गवलमंडी आगरा, सिपट बाजार मेरठ, कुतुबखाना बरेली और नवज्योति स्टोर्स अजमेर।

सोने की गारण्टी के साथ
नये डिजाइन के सादे सोन-मीने और जड़ाऊ

जे व रा त

हमारी दुकान पर मिलते हैं
चांदी और ई० पी० एन० एस० के वर्तन व उपहार देने योग्य वस्तुएं हर समय मिलती हैं।
नोट—हर प्रकार के सोने-चांदी के जेवरात और वर्तन आर्डर देने से भी बनाये जाते हैं।

महालक्ष्मी ज्वेलरी हाउस
चांदनी चौक, फतहपुरी देहली।

आसाम बंगाल का सच्चा जादू

जादू तैल स्त्री वशीकरणका सच्चा चमत्कार, अमीर और शौकीन पुरुषों के सेवनयोग्य, इसकी केवल एक बूंद हो गजब कर देती है। पूरे हालात लिखना सभ्यताके प्रतिकूल है। स्त्री वशीकरणके लिए इससे बढ़कर दूसरा कोई भी जादू नहीं, केवल एक बारकी परीक्षा स्त्री पुरुष दोनोंको आश्चर्यमें डाल देगी। लिखे अनुसार न हो तो मूल्य वापिस मंगा लें। मूल्य प्रति शीशी एक तोला ५) नमूना २) महसूल १) अलग। यह एक आश्चर्य-जनक जादू के समान तेल के रूप में आविष्कार है।

अमृत विलास वाटिका शौकीनोंके लिए उपरोक्त औषधि के साथ इन गोलियों का सेवन होने पर सुहागे जैसा काम करता है। स्त्री-पुरुषोंके जोड़ेका सच्चा आनन्द उठानेके लिए यह दोनों औषधियां बस जादू ही हैं। मूल्य नम्बर १ जिसमें सोना, मोती आदि मूल्यवान भस्में पड़ती हैं। २० गोली १०। रु०, नमूना ५ गोली २॥) रु० यही नं० २, वगैर भस्मोंवाली २० गोली २॥) आसाम, बंगालकी रहस्यमय पुस्तक 'जौहर मुल्क' प्रत्येक पार्सल के साथ मुफ्त। अधिक मांग के कारण अब 'जगाधरी में भी हमारा दफ्तर खुल गया है। आर्डर में पत्र का हवाला अवश्य दें।

पता-इण्डियन स्टोर्स (३) शिलांग (आसाम) या 'जगाधरी' (पंजाब)

जय हिन्द
सन्देश चैरिटेबिल फंड कमेटी द्वारा संचालित

सन्देश पहेली नं० ४ में ५००) का पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार २५०) रु०, द्वि० १५०) रु० और तृतीय ७५) रु०
विशेष सर्वाधिक कूपन पर १५) रु० और प्रथम सही पर १०) रु०

पूर्तियां पहुंचाने की अन्तिम तारीख २० फरवरी १९४६ ई०

१.	बाद	भारतवर्ष के एक नगर का नाम।
२.	पुर	भारतवर्ष के एक नगर का नाम।
३.	लू	एक जिमीकन्द तरकारी का नाम।
४.	न	मित्रता के लिये आवश्यक है।
५.	म	कितने ही इसके लिये मर मिटते हैं।
६.	श	एक फिल्म अभिनेता का नाम।
७.	न	एक दर्शनीय चित्र जो खूब सराहा गया।
८.	स	को अधिक प्रसिद्धि मिली है।

नियमः—१. प्रवेश फीस एक कूपन ।=) आने, चार का १=) और हर पूर्ति पर चार आने। २. उत्तर के लिये -)॥ के टिकिट अवश्य और भेजें अन्यथा उत्तर नहीं दिया जावेगा। ३. पहेली की सील बन्द शुद्ध पूर्ति पांच आदमियों के सामने पंजाब नेशनल बैंक मोदीनगर में रक्खी गई है और उन्हीं के सामने खोली जायगी। ४. मैनेजर का निर्णय अन्तिम तथा मान्य होगा।

नोटः— प्रवेश फीस से बचने के लिये ऐजेन्सी नियमावली मुफ्त जवाबी कार्ड लिखकर मंगवावें। पूर्तियां व फीस भेजने का पताः—

मैनेजर — सन्देश पहेली कार्यालय, बेगमाबाद, जिला (मेरठ) यू० पी०

प्रकाशित होगया ! प्रकाशित होगया ! !

१ लाख २० हजार रुपये के नोबिल पुरस्कार
विजेता विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर की अमर कीर्ति

गीतांजली

का सुबोध हिन्दी अनुवाद
प्रकाशित हो गया।

मूल्य सजिल्द १॥।) तीन प्रतियां मंगाने पर पोस्टेज माफ।
प्राप्तिस्थान—श्री गांधी ग्रन्थागार
C/o—श्री लक्ष्मी आयुर्वेदिक फारमेसी चावड़ी बाजार देहली।

स्त्रियों को शक्ति दायक औषधि

सुन्दरी साथी (रजिस्टर्ड)

स्त्रियों के प्रदर, रक्त प्रदर, ऋतुश्राव, गर्भाशय के रोग, मिटाता है। वन्ध्यत्व को मिटाता है, बच्चे होते हैं। स्त्री का स्वास्थ सुधार देती है, हरेक गांव में दवा वाले लोग बचते हैं।

एजेन्टः—कान्तीलाल आर० पारीख,
दवे केमिकल वर्कस, कालबादेवी रोड बम्बई।

आप इसे बार बार देखना चाहेंगे—
लोग कहते थे—
"मनचली" और "शुक्रिया" को मात करना असम्भव है !
पर—अब
असम्भव भी सम्भव हो गया है !
और आर० सी० तलवाड़ कृत

अलबेली

न केवल—

रमोला

का सर्व श्रेष्ठ चित्र है बल्कि वर्ष का भी सब से मनोरंजक चित्र है — — साथ में
सतीश, सुन्दर, रूपलेखा और हीरालाल

स्क्रीन प्ले० संवादः—
जे० एस० कश्यप

गीतः—
शान्तिस्वरूप-चिटती

भारी भीड़ आकर्षित कर रहा है **मोती** में प्रति दिन ३, ६॥ और ९॥। बजे रात रविवार की सुबह ११ बजे

३।=), २।) और १॥।) की सीटें रिजर्व कराने का समय—मोती में सुबह १०॥ से १ तक—प्लाजा, नई दिल्ली में शाम के ४ से ६ तक

फ्री लिस्ट, कन्सेशन और आधे टिकट ४ सप्ताह के लिये बिल्कुल बन्द

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बाल बन्धु परिषद

चालाक शम्भू

शम्भू अपने मां-बाप का लाड़ला लड़का था। उसकी उमर आठ साल की होगी। वह पाठशाला में भी पढ़ने जाया करता था। वह चालाक था, पर था बड़ा नेक लड़का।

एक दिन सबेरे, शंभू अपने साथी रामू के साथ गली में से गेंद खेलता हुवा पाठशाला जा रहा था। गेंद उछलती हुई, मकान की एक खिड़की के शीशे से जा टकराई जिससे शीशा चकनाचूर हो गया। रामू और शम्भू दोनों को पकड़ लिया गया और उनसे कहा गया— कि शीशे के पैसे दो तब तुम्हें छोड़ा जायगा। शंभू को एक विचार आया और वह बोला — घबराओ मत। मेरे पिता यही काम करते हैं, मैं अभी उन्हें बुला कर लाता हूं। शंभू को जाने दिया गया, पर रामू वहीं बैठा रहा।

शम्भू बाजार में पहुंचा और एक शीशे के काम करने वाले से बोला — हमारे घर में एक खिड़की का शीशा टूट गया है। उसे ठीक कराने के लिये मेरी मां बुला रही हैं, जल्दी चलो!

शम्भू उसे घर पर ले आया और बोला — ये ही हैं; इनसे खिड़की में शीशा लग वालो। पाठशाला को देर होरही है। यह कहते हुए उसने रामू का हाथ पकड़ा और घर से झटपट बाहर निकलकर दोनों भाग निकले।

इधर उसने खिड़की में फिर से शीशा लगा दिया और काम समाप्त करके उजरत मांगने लगा। तब घरवाली बोली — तुम्हारे लड़के ने ही तो यह शीशा तोड़ा है, अब कैसे पैसे मांगते हो जी?

शीशे की मरम्मत करने वाले ने कहा उस लड़के ने तो मेरे से यह कहा था— हमारे घर की एक खिड़की में शीशा लगाना है, मेरी मां ने बुलाया है।

यह बात सुन कर वह दंग रह गई और उसने ताड़ लिया कि नटखट लड़के ने मेरे साथ कितनी सफाई से चाल चली है। टूटे शीशे के स्थान पर नया शीशा तो लग ही चुका था, दोनों शीशा तोड़ने वाले भाग ही चुके थे, शीशा तो अब वहां लगवाना ही था — झगड़ा मोल न लेते हुये आखिरकार उसकी मजदूरी देकर उससे पिण्ड छुड़ाया।

और काफी देर तक रह-रहकर उस लड़के की चतुराई पर आश्चर्यित होकर सोच विचार चला और शंभू की इस बात को भुलाया न जा सका।

— पुष्पन

कामना

नहीं चाहता वायु-यान मैं
नहीं चाहता मोटर कार,
नहीं चाहता जीत अलेक्सन
बन जाऊं एम. एल. ए. यार।
नहीं चाहता धन के भरे
खजाने मुझ को मिल जाए।
नहीं चाहता आने वाली,
आफत मेरी टल जाऐ।
यहि चाहता मेरे भगवन्,
देश धर्म पर मर जाऊं
अपना शीस कटा कर के भी
आजाद भातर कर जाऊं।

— शुभचन्द्र

सब कुछ खाओ मगज न खाओ

एक रोगी डाक्टर के पास आया डाक्टर साहब ने उसकी नाड़ी देख कर नुसखा लिख दिया।

उस आदमी ने पूछा — इस दवा पर मुझे क्या खाना चाहिए?

डाक्टर — दूध चावल खाना।

रोगी — दाल आदि खाऊं या नहीं?

डाक्टर — थोड़ी सी खालो तो कोई हान नहीं।

रोगी — यदि थोड़ी सी मेथी की भाजी खाऊं तो कोई हरज तो न होगा?

डाक्टर — नहीं।

रोगी — यदि आलू उबाल कर, बैंगन घी में पकाकर और कद्दू घी में तलकर खाऊं तो कोई डर तो नहीं?

डाक्टर — नहीं।

रोगी — यदि कोई दूध में पकाई चीज, जैसे खीर, साबूदाना आदि खाऊं तो शायद कुछ हानि नहीं?

डाक्टर — नहीं।

रोगी — यदि कोई फल, जैसे नारंगी, सेब, नासपाती आदि खाऊं तो कोई डर की बात तो नहीं?

डाक्टर — नहीं।

रोगी — यदि मुहं का जायका बदलने के लिए पान, बिस्कुट आदि खाएं तो?

भला डाक्टर साहब कहां तक सहते आखीर उन्हें क्रोध आगया और उन्होंने झल्लाकर कहा — सब कुछ खाओ, मगर डाक्टर का मगज न खाओ।

— अग्निहोत्री।

पहेलियां

उसके मुंह को खोल,
गले में तीर चुभाते आप।
लेकिन वह उफ नहीं करती,
रहती है चुपचाप।
(दवात)
— चरनजीतलाल

मुख्य घरों में मेरा नाम,
बड़े लोगों का हूं मैं धाम।
प्रथम कटे हल बन जाता,
मध्य कटे मल बन जाता।
(महल)
— रामप्रसाद

तीन अक्षर का मेरा नाम,
आती हूं पहियों के काम।
अंत कटे रव कहलावें,
पूर्व कटे वह कहलावें।
(रबड़)

तिमिर-तिरोहित हुआ
फैलने लगा उजाला।
ग्रामीणों औ' कृषिकों ने,
अपने शस्त्रों को संभाला।
(सुबह)
— शिवचरनसिंह रत्न

बच्चों का दिल बहलाऊं मैं,
उनका साथी कहलाऊं मैं।
किस्से और कहानी लाऊं,
उन्नति पर पहुंचाऊं मैं।
(वीर अर्जुन)

जल गया, पर जला न इक तागा।
घर वाले पकड़े गये,
घर खिड़की से भागा।
(मछली, जाल, पानी)

एक चिड़िया चंचलदार,
जिसके बच्चे नौ हजार।
(आग की चिनगारी)
— जगदीशलाल

बालबन्धुओं से

बहुत से बाल बन्धु अपनी अनेक रचनाएं एक पृष्ट में ही लिखकर भेज देते हैं। इससे यह कठिनता होती है कि यदि एक रचना प्रेस में देनी हो तो दूसरी रचना का फिर उपयोग नहीं हो सकता। इसलिए चुटकुले, कहानी या कविता आदि अलग-अलग पृष्टों पर लिखें और प्रत्येक पर अपना पता भी अवश्य लिखें।

— सम्पादक

क्या आप जानते हैं?

इंगलैंड में इतनी बड़ी दुरबीन है कि सुई की नौक उससे कई फुट मोटी दिखाई देती है।

× × ×

रूस सबसे बड़ा मुल्क है।

× × ×

एटम बम की चमक को १०० मील दूर बैठी अन्धी लड़की ने भी देखा था।

— सुलतानसिंह

अपनी जिन्दगी में स्टारफिश (मछली) लगभग ५ करोड़ अन्डे देती है। किन्तु और बड़ी मछलियां इसके बहुत से अंडों को नष्ट कर देती हैं।

× × ×

एक चींटी अपने जबड़ों में अपने वजन का ३००० गुना बोझ उठा सकती है। यदि मनुष्य में भी इसी प्रकार की शक्ति होती तो वह २२५ टन का वजन आसानी से उठा सकता।

— श्रीचन्द

बालबन्धु-समाचार

मोखरा (रोहतक)

यहां बालबन्धु परिषद स्थापित होगई है। १५ बन्धु इसके सदस्य हैं। २६ जनवरी को आजादी दिवस के दिन राष्ट्रीय कविताओं की प्रतियोगिता होगी।

बीकानेर

दिसम्बर में बीकानेर बाल-बन्धु-परिषद की स्थापना हुई और दीनदयाल शर्मा के सम्पादकत्व में हस्तलिखित पत्रिका भी प्रकाशित हुवा करेगी। जो बन्धु, पत्रिका के लिए अपनी रचनाएं भेजना चाहें वे इस पते पर भेज सकते हैं।

ब्रजविहारीलाल शर्मा
सेक्रेटरी बाल-बन्धु-परिषद
जेल का कुंवा बीकानेर

अफीम बन्द हो जायेगी?

चौधरी रामराय जी लिखते हैं—

मैं बीस साल से अफयून ४० तोले खाता था इसलिये मैंने ठेका अफीम ९६००० रु० सालाना पर ले रखा था ताकि मुझे अच्छी अफयून खाने के लिये मिलती रहे। मैंने अपने धन, शरीर का नाश होते देख कर डा० ऋषिराम मण्डी कोटफत्ता की वलैत टिकियां मंगाकर ८ दिन में आनन्द के साथ अफीम छोड़ दी। छोड़ते वक्त या बाद में कोई तकलीफ नहीं हुई। मैं एक रईस कई गांवों का मालिक हूं। जनता के लाभ के लिये यह इश्तहार देता हूं। जो भाई इस बुरी बला को छोड़ना चाहते हों वे जितने तोले माहवार अफीम खाते हों कीमत टिकिया दुगने रुपये का खत लिखकर वी० पी० मंगा लें।

पता—डा० ऋषिराम शर्मा अफयून छुड़ाऊ अस्पताल मंडा कोटफत्ता (स्टेट पटियाला)

"दोहरी गुलामी से मुक्त होना है"

[पृष्ठ २ का शेष]

'नहीं, नहीं, मैं तो यह नहीं मानती। हमारे पिताजी साधारण स्थिति के हैं, लेकिन मैं जानती हूं कि मां जो चाहती हैं, घर में होता वहीं है। पिताजी कमाते हैं, घरके ऊपरी काम काज करते हैं, पर चलती घरमें मां की है। बच्चों के लिए घर में कपड़ा कैसा खरीदना है, शादी में क्या क्या खर्च करना है, सब्जी कौनसी बनानी है, महरी और कहार कौन सा रखना है, आदि सभी बातों में मां की चलती है।'

"तब तो तुम्हारी मां बहुत जबर्दस्त होगी।" दूसरी सहेली ने हसते हुए कहा।

'और कहां? सभी घरों में मैं यही देखती हूं। तुम्हारी मां का हाल क्या मैं नहीं जानती? उस दिन पहुंच ही गई, पिता जी घर में कहीं से लाल किनारे की धोती ले आये थे। तुम्हारी मां बिगड़ रही थीं, यह किनारी मुझे पसन्द नहीं, क्यों लाये! घर घर यही हाल है।"

तीसरी सहेली ने फिर कहा 'अरे कहां की बात कहां ले गई। बात तो स्त्री-स्वातंत्र्य की चल रही थी।'

"हां हां, मैं कह रही थी कि स्त्री परतन्त्र है ही नहीं। उच्च शिक्षित संपन्न वर्ग में तो वही पुरुष पर शासन करती है और निम्न समाज में भी वह पुरुष की चेरी नहीं है। वह पुरुष के साथ कंधे से कंधा भिड़ा कर खेती करती है, मजदूरी करती है, परदा वह नहीं करती। पैसा वह कमाती है, तब वह पुरुष से बहुत दबती भी नहीं है। यह तो सिर्फ मध्यम श्रेणी की कुछ स्त्रियां हैं, जो आज कुछ परतंत्र कही जा सकती हैं। लेकिन उनमें भी आज स्वतन्त्रता और समानता को लोग स्वीकार करने लगे हैं। उनके शिक्षण पर अब कम व्यय नहीं किया जाता, उनके वेश विन्यास और तरह-तरह की मांगों पर किसी तरह लड़कों से कम खर्च नहीं किया जाता।"

बात आगे भी चलती रहती, यदि स्कूल की छुट्टी न हो जाती और लड़कियां घर जाने के लिये हलचल न मचा देतीं।

ब्रिटेन में हजारों तलाक?

ज्ञात हुआ है कि १९३९ के पश्चात् ब्रिटिश लड़कियों ने ६४८१२ अमेरिकन १७६०१ कैनेडियन, ६४६१ आस्ट्रेलियन, ३९१० न्यूजीलैण्ड वासी ८६०० पोलिश और ७४०० फ्रेंच सैनिकों से विवाह कर लिया है। जिन मित्र सैनिकों से ब्रिटिश लड़कियों की शादी हुई, उनकी संख्या लगभग १ लाख ३६ हजार है। बहुत से विवाह टूटने की आशंका उत्पन्न हो गई है, जो ब्रिटिश अधिकारियों को व्यग्र किये हुए है।

ब्रेटनवुड समझौता और भारत

[पृष्ठ ७ का शेष]

पर स्टर्लिंग से जोड़े रखने में कोई लाभ है? रुपया-स्टर्लिंग गठबन्धन का अर्थ है कि आर्थिक क्षेत्र में भारत ब्रिटेन का अनुसरण करे, जैसे भारतीय पत्नी-ब्रिटिश पति का अनुसरण करे, चाहे भारत का उस में हित हो या न हो। युद्ध-काल में भारत पर मुद्रा स्फीति का बोझ लादने के लिए स्टर्लिंग-रूपी गठबन्धन का जैसा दुरुपयोग किया गया है, वह सर्व विदित है। कोई भी राष्ट्रीय गवर्नमेण्ट इसकी पुनरावृत्ति न होने देगी।

स्टर्लिंग पावना

रुपये के भविष्य के साथ स्टर्लिंग पावने का सवाल भी जुड़ा हुआ है। भारतीय प्रतिनिधियों के भगीरथ प्रयत्नों के बावजूद ब्रेटनवुड कान्फ्रेन्स ने युद्ध-कालिक कर्ज को फण्ड से बाहर ही रखा। एंग्लो-अमरीकी आर्थिक पैक्ट ने भी भारत के पक्ष को हानि पहुंचाई है। अमरीका से ब्रिटेन को जो कर्जा मिला है, उसमें से डालर का कुछ ब्रिटेन भारत का कर्ज चुकाने दे देगा, यह आशा नहीं की जा सकती। एंग्लो-अमरीकी करार वस्तुतः ऐसा करने से रोकता है। इसलिये स्टर्लिंग पावने के सम्बन्ध में लन्दन में होने वाली बातचीत भारत के लिये दोहरी कठिन सिद्ध होगी। भारत सरकार की विज्ञप्ति में यद्यपि आश्वासन दिया गया है कि 'यह कल्पना करने का कोई कारण नहीं है कि समझौते के द्वारा सन्तोषजनक व्यवस्था न हो सकेगी।' इस आशा में भारत साझीदार होता, यदि भारत में राष्ट्रीय गवर्नमेण्ट होती। उसके अभाव में ज्यादा की आशा नहीं की जा सकती।

डालर

अन्तर्राष्ट्रीय फण्ड और बैंक के लिये भारत का कोटा ८० करोड़ डालर है। भारत को ये डालर ब्रिटेन से प्राप्त करने हैं और अगले पांच साल में संयुक्तराष्ट्र अमरीका से खरीदी जाने वाली मैशीनरी और प्लाण्ट के वास्ते भी डालर ब्रिटेन से प्राप्त करने हैं। ब्रिटेन पर्याप्त मात्रा में डालर न होने का बहाना नहीं कर सकता। सर जान एण्डरसन ने ब्रिटेन का बजट पेश करते हुए विगत जुलाई में कहा था कि संयुक्तराष्ट्र के अन्दर ब्रिटेन का स्वर्ण डालर सिक्यूरिटीज मिला कर ३५० करोड़ डालर जमा है। इसमें भारत का पर्याप्त मात्रा में भाग होगा। भारत अपने भाग को पाने का दावा कर सकता है। भारत की तात्कालिक जरूरतों को पूरा करने के लिये यह आवश्यक है। ब्रिटेन-वुड करार को स्वीकार करने से भारत को क्या यह लाभ प्राप्त होगा?

महान बाजीकरण व परमपौष्टिक

अनंगप्रभा याकुती

केसर, कस्तूरी वगैरह कीमती, पौष्टिक व स्वास्थवर्धक वनस्पतियों के योग से बनी हुई यह याकुती पौरुष हीनता, शीघ्र पतन व स्वप्नदोष को मिटा कर पतली धातु को गाढ़ा करती हैं, और शुद्ध रक्त व वीर्य पैदा करके जवां मर्दी और पूर्ण पुरुषत्व प्राप्त करती हैं, फी शी० रु० १०) दस।

अनंगप्रभा तैल— इन्द्री की कमजोरी नसों की शिथिलता, वक्रता दूर करता है फी तो० १५) आधा तो० ७॥)

मदनमंजरी फार्मेसी हेड आफिस — जामनगर (काठियावाड़)

देहली—जमनादास एंड कं० चांदनी चौक | इन्दौर—बाम्बे एजन्सी बोजांकेट मार्केट
जैपुर—राधेश्याम रामेश्वरदयाल चांदपोल | धार — लक्ष्मी स्टोर्स सदर बाजार
उज्जैन—डा. एल. पी. भार्गव पटनी बाजार | जोधपुर-रामनाथ मांगीलाल कटला बाजार

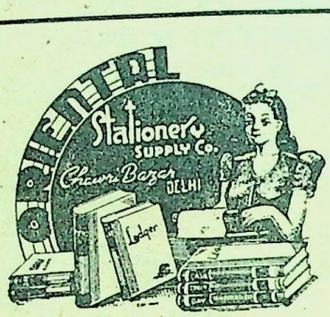

हर प्रकार की स्टेशनरी केश, लेजर हिसाब किताब के रजिस्टर, रजिस्टर मुलाजमीन, रबर की मोहरें व छपाई के लिए हमारी सेवाएं प्राप्त कीजिए।

ओरियंटल स्टेशनरी सप्लाई

चावड़ी बाजारर, देहली।

अद्वितीय आकर्षक मूंगफली तेल मूंगफली बीजा एवं रेडी तेल की सप्लाई के लिये:—

रामजीलाल मोदी एण्ड को०

वरंगल (निजाम स्टेट)

टेलीग्राम BHANU फोन नं० १०१

पंडित डी० गोपालाचार्लु का

जीवामृतम्

बदन को ताकत देने वाला और वीर्य वर्द्धक उत्तम बलकारक टानिक

यह खून को शुद्ध करके शरीर में उसकी वृद्धि करता है तथा शरीर, मस्तिष्क और स्नायु का आश्चर्य रूप से निर्माण करता है। स्त्री पुरुष व बालक सब उमरों के इसका प्रयोग कर सकते हैं।

एजेन्ट चाहिए।

सोल एजेन्ट:—ऐनसा ट्रेडिंग कं० भागीरथ पैलेस के पीछे चांदनी चौक, देहली

मुसाफ्फिये आज़म

खून फसाद के सब रोगों को दूर करता है

जो लोग खून की बीमारी जैसे आतशक, चकत्ते, फोड़े, फुन्सियां, खुजली या किसी और खून की बीमारी में फंसे हुए हों वे शर्बत मुसफ्फियेआज़म मंगाकर इस्तेमाल करें। थोड़ी सी खुराकें इन बीमारियों को दूर करने के लिये काफी होती हैं। कीमत १ शीशी (२० खुराक) एक रुपया।

पता:—हमदम दवाखाना, लालकुआं पो० ब० नं० ७० देहली

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

महान क्रांतिकारी की याद में !

[पृष्ठ १६ का शेष]

दो-चार साथी उनके पास पहुंच सके थे, पर अंतिम समय तक उनका धीरज ज्यों का त्यों कायम रहा। उन्हें केवल एक ही दुःख था कि वे एशिया की भूमि में मरने के बजाय अमरीका में मर रहे हैं; किंतु साथ ही साथ उन्हें यह भी सन्तोष था कि मौत के समय उनके सर पर यूनियन जैक नहीं फहरा रहा है। यह एक बड़े दुर्भाग्य की बात है कि वे उस महत्वपूर्ण ग्रन्थ को पूरा न कर सके जिसमें भारतीय-आजादी के लिए उनके अपने संस्मरण दर्ज होते। केवल उसके दो-तीन अध्याय ही वे लिख पाये थे कि मौत उनकी इस योजना के बीच में आकर खड़ी हो गई और भारतीय साहित्य, एक गौरवपूर्ण और कीमती ग्रन्थ से अपने भण्डार को सजाने से वंचित रह गया।

जब मौलाना बरकतउल्लाह की मौत का समाचार हिन्दुस्तान एसोसियेशन आफ सेण्ट्रल यूरोप (मध्य यूरोप की हिन्दुस्तान समिति) के दफ्तर बर्लिन पहुंचा तो वहां फौरन एक शोक-सभा की गई। एसोसियेशन के अनेक सदस्य स्व० मौलाना से परिचित थे। शोक-सभा में बोलने वालों में न सिर्फ हिंदुस्तानी ही थे बल्कि तुर्क, ईरानी, जर्मन, रूसी, अफगान आदि भी थे। छै देशों के प्रतिनिधियों ने उस सभा में भाग लिया। सभी ने स्वर्गीय मौलाना को त्यागव्रती और बलिपन्थी शहीद कहकर उनकी स्मृति में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। आजादी के नाम पर मर मिटने वाले इस वीर की सभी ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की।

सोवियत रूस के प्रतिनिधि ने तमाम गुलाम एशियाई देशों की आजादी की लड़ाई के लिए सोवियत देश की हमदर्दी प्रकट की। उसने ऐलान किया कि — 'भारत की आजादी की लड़ाई के साथ सोवियत को पूरी हमदर्दी है। आजादी की लड़ाई में काम आने वाले सभी शहीदों की सोवियत इज्जत करता है और सोवियत देश के प्रतिनिधि की हैसियत से मैं मोहम्मद बरकत उल्लाह की स्मृति में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।'

एसोसियेशन के सभापति के अंतिम शब्द थे — 'यह सच है कि एक महान् क्रांतिकारी की मृत्यु हो गई। किन्तु यह भी सच है कि क्रांति जीवित है और सदा जीवित रहेगी।'

———

फिल्मस्टारोंकी तरह त्वचा की रक्षा कीजिये!

साधना बोस

"मैंने अपनी त्वचाकी निगरानी का काम लक्स टॉयलेट साबुन पर सौंप दिया है"—यह सौंदर्यवती साधना का कहना है। नहानेका यह खुशबूदार साबुन वह हमेशा इस्तेमाल करती है। उसका तेज फेन उसकी त्वचा सुकोमल, मृदु और निष्कलंक रखता है। अपनी त्वचा की निगरानी के लिये बहुत सी फिल्म-स्टार लक्स टॉयलेट साबुन ही पर निर्भर रहती हैं।

लक्स टॉयलेट साबुन

LTS. 119-111-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

इस अ

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि०

अधिकृत पूंजी		१०००००) रु० (दस-दस रुपये के हिस्सों में)
अदाशुदा पूंजी		५१०७० रु०
डिवीडेन्ड	सन् १९४४	१० रु० सैकड़ा
डिवीडेन्ड	सन् १९४५	१० रु० सैकड़ा

थोड़े से और हिस्से बिक्री के लिए निकाले गए हैं। एक हिस्सा केवल १०) का है। ५) प्रार्थना पत्र के साथ और ५) प्रार्थना पत्र स्वीकार होने पर देने होंगे।

आप भी—

('वीर अर्जुन' समाचार पत्र की स्वामी संस्था)

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० देहली

के हिस्सेदार बनिए।

शेयरों के लिए आवेदन पत्र हम से मंगालें।

मैनेजिंग डाएरेक्टर—

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि०, श्रद्धानन्द बाजार, देहली

विजय पुस्तक-भंडार
देहली की
जीवनदायिनी सामयिक पुस्तकें

१—जीवन चरित्र—

श्री सुभाषचन्द्र बोस की जीवनी

(सम्पादक—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति)
(लेखक—श्री रमेशचंद्र आर्य)

यह कांग्रेस के भूतपूर्व राष्ट्रपति का प्रामाणिक और पूरा जीवन-चरित्र है। ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। पुस्तक के अंत में श्री सुभाष बाबू के विचारों का संग्रह भी है। मूल्य ॥=)

महर्षि दयानंद—ले० श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति मूल्य १॥)

पं० जवाहरलाल नेहरू—ले० पं० इंद्र विद्यावाचस्पति, मूल्य ॥।)

२—राजनैतिक साहित्य—

जीवन संग्राम—ले० श्री ० इंद्र विद्यावाचस्पति मूल्य १)

चीन का स्वाधीनता युद्ध—ले० श्री पं० कृष्णचंद्र जी विद्यालङ्कार मूल्य १)

३—अन्य पुस्तकें—

आनुपातिक प्रतिनिधित्व (Single Transferable Vote) (निर्वाचन सम्बंधी नियम) ले० श्री पं० महावीर जी त्यागी मूल्य ।)

वर्तमान राष्ट्रपति
मौलाना अबुलकलाम आज़ाद

यह वर्तमान राष्ट्रपति श्री मौलाना अबुलकलाम आज़ाद की जीवनी है जिसे श्री रमेशचन्द्र जी आर्य स्वर्गवासी ने बड़े परिश्रम के साथ लिखा है। इसके पढ़ने से यह भली भांति प्रकट होजाता है कि मौलाना साहब की राष्ट्रीयता दूध की तरह स्वच्छ है और वह अपने मार्ग पर दृढ़ चट्टान की तरह अटल हैं। मूल्य ॥=)

डाक व्यय ।-) मिलने का पता:— विजय पुस्तक भंडार श्रद्धानंद बाजार देहली।

"मैं भूल न सकूं"
[सम्पादक श्री जयंत]

श्रीयुत श्रीनाथसिंह जी, श्री वात्स्यायन 'अज्ञेय' श्री काका कालेलकर जी, कवि सम्राट् श्री अयोध्यासिंह जी उपाध्याय 'हरिऔध' श्री रत्नकुमारी जी माथुर, श्रीमती होमवती जी, श्री विष्णुप्रभाकर जी, श्रीयुत देवीदत्त जी शुक्ल तथा श्री पहाड़ी आदि प्रसिद्ध साहित्यिकों उपन्यास और कहानी लेखकों की शिक्षाप्रद सच्ची कहानियों का संग्रह। प्रत्येक कहानी ऐसी है जिसे एकबार पढ़कर भूलना कठिन है। मूल्य केवल १) डाक व्यय ।-)

मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण
ले० श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति (चार भाग)

यह वह पुस्तक है जिसमें मुगलों के साम्राज्य की स्थापना और नाश का इतिहास कहानी से भी अधिक मनोरंजक भाषा और रीति से दिया गया है। १७ वीं सदी में भारतवर्ष में जो विशाल राज क्रांति हुई उसका इससे अच्छा वर्णन मिलना कठिन है। हुमायूं अकबर, जहांगीर, शाहजहां औरंगजेब, राणा प्रताप, शिवाजी, छत्रसाल, गुरु गोविन्दसिंह आदि वीरों के चित्र और चरित्र पुस्तक में ओत प्रोत मिलेंगे। मूल्य १म.२ य. भाग ३) तथा ३ य.४थ. भाग १॥) चारों भागों का मू.४॥) डा. व्यय अलग।

सात भावपूर्ण एकाँकी नाटकों का संग्रह

"एकांकिका"
ले० चन्द्रकिशोर जैन बी० ए०

यदि आप विचारों में संदेशपूर्ण, पढ़ने में कहानी की तरह दिलचस्प, भावों के घात-प्रतिघात से पूर्ण, जीवन की ज्वाला और ज्योति से भरपूर, विवाह व्योहारों उत्सवों पर खेलने और कला पूर्ण उपहार देने के लिये मनोवैज्ञानिक, सरल और ओजस्वी एकांकी नाटक चाहते हैं तो आज ही "एकांकिका" की प्रति मंगाइये। मूल्य २) डाक व्यय ।=)।

विजय पुस्तक भण्डार (वीर अर्जुन कार्यालय के ऊपर) श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

"मैं इन दो विशेष कारणों से नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदने के पक्ष में हूं:—(१) यदि हम जन साधारण के रहन-सहन में उन्नति चाहते हैं तो राष्ट्रीय निर्माण की योजनाओं को कार्यरूप देना आवश्यक है। इस कार्य में जनता में बचत का अभ्यास बड़ा ही उपयोगी सिद्ध होगा। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये अभी से जनता में बचत की महत्ता का प्रचार होना चाहिये ताकि अनुकूल समय आने पर यह बचत सौभाग्यशाली हिन्दुस्तान के निर्माण के काम में लाई जा सके। (२) ये नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स पूर्णतया सुरक्षित ही नहीं बल्कि आजकल की परिस्थिति में अच्छी आय भी देते हैं। मूल और ब्याज के लिये सरकार उत्तरदायी है और इन सर्टिफ़िकेट्स पर ४-१/६% प्रति वर्ष साधारण ब्याज मिलता है जिस पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।"

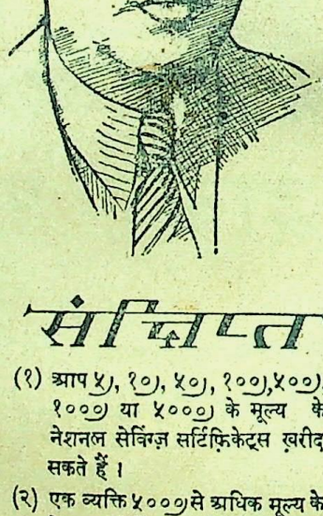

Nalini Ranjan Sarkar

नलिनी रंजन सरकार
भूतपूर्व मेम्बर वाईसरायज़ एग्ज़िक्यूटिव कौन्सिल,
भूतपूर्व फ़ाइनैन्स मिनिस्टर बंगाल,
प्रेज़ीडेण्ट हिन्दुस्तान कोआपरेटिव इन्श्योरेन्स सोसाइटी लिमिटेड।

संक्षिप्त विवरण

(१) आप ५), १०), ५०), १००), ५००), १०००) या ५०००) के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) एक व्यक्ति ५०००) से अधिक मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफ़िकेट्स नहीं ख़रीद सकता। ये इतने उपयोगी हैं कि इनका राशन करना ही उचित समझा गया है। हां दो व्यक्ति मिलकर १०,०००) के सर्टिफ़िकेट्स मोल ले सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है।

(४) इस प्रकार अवधि पूरी होने पर ४-१/६% वार्षिक ब्याज मिलता है।

(५) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।

(६) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते हैं। (५) का सर्टिफ़िकेट १-१/२ वर्ष पश्चात ही भुनाया जा सकता है) परन्तु वास्तविक लाभ इसी में हैं कि १२ वर्ष से पहिले इन्हें न भुनायें।

(७) जिनकी बचत थोड़ी है वह १), ॥), ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्पस ख़रीद सकते हैं। ५) के स्टैम्पस जमा होने पर एक नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट मिल जायेगा।

(८) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्पस डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकृत एजेण्टों अथवा सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

आप अपनी बचत से ५०% लाभ उठाइए

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिये।

श्री० पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिये 'अर्जुन प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली से छापकर प्रकाशित किया।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वीर अर्जुन

साप्ताहिक

ILLUSTRATED VIR ARJUN WEEKLY

११ अङ्क ४६]

श्री शान्तिकुञ्ज पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी

इस अङ्क की कुछ सामग्री

१ — भारत सरकार का नोट आर्डिनेंस

२ — हिंसा अहिंसा विवेचन

३ — नदियों के उच्छृंखल प्रवाह पर वैज्ञानिकों का नियंत्रण

४ — उदयपुर अधिवेशन का संदेश

५ — पुत्रियों को उत्तराधिकार

कहानी, उपन्यास, बालपृष्ठ, कविता, लोकवाणी तथा चित्रावलि।

देहली, सोमवार २१ जनवरी १९४६

DELHI, 21th January 1946.

वार्षिक मूल्य ८)

६ मास का ४)

सम्पादक— रामगोपाल विद्यालङ्कार

कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार

एक प्रति का मूल्य ≡)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

आधुनिका

"अब कहिये कि स्त्रियों की अक्ल कम होती है"

अर्धनारीश्वर

"मैं तो पहले ही कहती थी। मेरी बात मान लेते तो आज यह दिन देखना न पड़ता।" एक संभ्रान्त कुल की महिला अपने पति से कह रही थी। ठीक ऐसे समय मैंने उनके घर में प्रवेश किया।

पतिदेव ने शायद मुझे देखा नहीं था। वे बोले — 'सवाल तो यह है कि अब क्या किया जाय? पूरे पांच हजार रु० का सवाल है।' उनकी आवाज में कुछ घबराहट या बैचैनी स्पष्ट थी।

पत्नी मुझे आते देखकर खड़ी हो गई। कुछ मुस्कराहट का भाव चेहरे पर लाती हुई बोली — "नमस्ते, आइये, बैठिये।" उनके चेहरे पर दुःख व क्षोभ के भाव अब भी झलक रहे थे।

पतिदेव भी मेरी ओर मुखातिब हुये और कुर्सी मेरे आगे करते हुए बोले — आइये।

मैं बैठ गया। दोनों पति पत्नी अच्छे स्वभाव के हैं। मध्यम श्रेणी के हैं। मिलनसार हैं। मेरे अच्छे परिचित हैं। मैंने पूछा — क्या बात हो रही है। पत्नी मुझे देखकर बोली — भाई जी, अजीब परेशानी है। घर में ५०००) रु० के नोट पड़े हैं। कोई ५००) का है, तो कोई १०००) रु० का। मैंने कितना कहा कि कुछ बनवालें। लेकिन यह मानते ही न थे। अब सोच रहे हैं क्या किया जाय?

"अजी क्या करता? चीजें इतनी मंहगी हैं कि क्या लिया जाय, क्या नहीं?" पतिदेव कुछ लज्जित से स्पष्ट प्रतीत हो रहे थे।

"मैंने कितना कहा कि मेरे लिए एक कण्ठहार बनवा दें, लेकिन किसी तरह तैयार नहीं हुए। जब कहती, तब यह अखबार का विज्ञापन दिखा देते कि अभी कुछ मत खरीदो। चीजें सस्ती होंगी।"

"हां, यह तो मैं अब भी कहता हूं कि चीजें सस्ती होंगी।"

"चीजें तो सस्ती होंगी, लेकिन पैसा भी तब बचेगा क्या? अब इन नोटों को कौन पूछेगा? पांच दिन में किसी तरह निकाल सको, तो ठीक, अन्यथा ये ५०००) रु० गये समझिये।"

"हां, यह तो मैं भी सोच रहा हूं।"

पत्नी को शायद खयाल न रहा कि दूसरे आदमी के सामने अपने पति की तीव्र आलोचना नहीं करनी चाहिये। कहने लगी — भाईजी, अजी, जब मैं कहती तब यह जवाब मिलता कि औरतों की अक्ल छोटी होती है। तुम क्या जानों बाजार की बातें। मैं कण्ठहार के लिए कहते-कहते थक गई। लेकिन अब मालूम हो रहा है कि मेरी बात न मानने का क्या परिणाम निकलता है। औरतों की अक्ल छोटी होती है या मर्दों की?"

"मेरी हालत विचित्र थी। पति पत्नी के इस विवाद में कहां से आ पड़ा। न जाते बनता था, न ठहरते। चुप मार कर सुनता रहा। पतिदेव या तो बहुत धीरज रखने वाले थे और अपनी भूल समझ रहे थे अथवा मेरे सामने अपने सम्मान की रक्षा करना चाहते थे, संभव है, उन्हें यह भी भय हो कि कोई कटोर बात कहने पर ऐसा उत्तर न मिल जावे, जिससे उन्हें लज्जित होना पड़े। बोले —

मैं तो चाहता था कि रुपये बैंक में जमा करदूं। लेकिन तुम्हारे कारण ही तो जमा नहीं करा पाया था। तुम्हीं तो रोज 'भ्राताजी की हट्टी' चलने का इरादा करती थी। बैंक में जमा करा देता तो —

"हां, हां, पर कभी बाजार गये तो नहीं। बातें बना रहे हो, सच कहना कि किसी दिन चलने को तैयार भी हुए? जब कहती, तब कोई न कोई बहाना। आज चाय पार्टी है, आज सिर-दर्द है। अब मुझी पर दोष लगा रहे हैं? साफ मान लीजिये कि गल्ती थी, मैं कोई सजा तो नहीं दूंगी, दे भी नहीं सकती।"

मैं बोल पड़ा— 'सजा जरूर दीजिये, दो दिन रोटी मत बनाइये; लेकिन सजा देने से आपका कण्ठहार क्या बन जायगा बहनजी?"

कण्ठहार नहीं बन सकेगा, यह विचार शायद विवाद की गर्मी में वे भूल गई थीं, अब फिर चिन्ता ने इन्हें आ घेरा। उनका चित्त उदास हो गया। क्रोध का स्थान अनुनय ने ले लिया। बोली — अब भी किसी तरह कोशिश हो सके, तो कीजिये न सही ३० तोले का, २५ तोले का सही। पर बनवा जरूर दीजिये। किसी तरह ५०००) रुपये के नोट ४०००) में भी बिक जावें।"

"हां, हां मैं जरूर प्रयत्न करूंगा।" पत्नी के अनुनय का प्रत्यक्ष प्रभाव पति पर पड़ाता था। वे बोले — तुम क्यों चिन्ता करती हो, इसके लिये जो कुछ करना होगा, करूंगा।

"करोगे सच?" मैं बोला — तीन चार दिन कड़ी मिहनत करनी पड़ेगी। रिजर्व बैंक पर धक्के खाने पड़ेंगे, कभी पुलिस इन्स्पैक्टर के यहां, तो कभी मजिस्ट्रेट के यहां। न जाने कितनी रिश्वत देनी पड़े, कितनी परेशानी हो और फिर भी कहीं अधिकारियों को संतुष्ट न कर सके, तो जेल की हवा —

पत्नी इसकी कल्पना भी न कर सकती थी। जेल की बात सुनते ही अत्यन्त करुण शब्दों में बोली — न न, जाने दीजिये। मुझे नहीं चाहिये कण्ठ-हार! आप किसी ऐसी वैसी आफत में न पड़ें। कण्ठहार न बनेगा, तो क्या होगा? कितनी स्त्रियों के पास ऐसे कण्ठ-हार हैं?

मैं हंस पड़ा उनका यह भाव-परि-वर्तन देख कर और बात खतम करने के इरादे से बोला — चलो भाई, बाजार की रौनक देख आवें।

पुत्रियों को उत्तराधिकार

[श्रीमती फूलकुमारी]

अखिल भारतीय महिला सम्मेलन हैदराबाद की अध्यक्षा श्रीमती हंसा मेहता ने अपने भाषण में बताया है कि भारतीय महिलाओं को राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के समान अधिकार मिलने चाहिये। इस समानता से उनका तात्पर्य अवसरों की समानता से है और यह समानता नारियों के आत्मविकास के लिए अत्यावश्यक है। स्त्रियों को नागरिकता के पूर्ण अधिकार स्वतन्त्र रूप से प्राप्त होने चाहिये। अज्ञान को दूर करके उन्हें शिक्षित बनाया जाना चाहिये। उन्हें ज्ञान प्राप्त करने, पद अथवा सम्मान प्राप्त करने, मताधिकार प्राप्त करने पर अवकाश प्राप्त करने और आर्थिक सुरक्षा प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार होना चाहिये। आगे चलकर उन्होंने कहा कि लड़कियों को पिता की सम्पत्ति पर भी पुत्रों की भांति अधिकार होना चाहिये, विवाह सम्बन्धी विषय पर भी उन्होंने पर्याप्त प्रकाश डालते हुए कहा कि विवाह लड़का और लड़की दोनों की इच्छा से होना चाहिये। जातीयता तथा प्रांतीयता की उसमें अड़चन नहीं होनी चाहिये। निर्दयता आदि कारणों के होने पर विवाह-विच्छेद का भी अधिकार होना चाहिये। इसके अतिरिक्त एक और अधिकार, जो स्त्रियों को मिलना चाहिये, वह संतान उत्पत्ति को सीमित रखने का अधिकार।

जहां तक उन्होंने ज्ञान, पद अथवा सम्मान, मताधिकार, अवकाश और

श्रीमती हंसा मेहता

आर्थिक सुरक्षा प्राप्त करने के बारे में कहा है, वहां तक समाज को नारी को समानाधिकार स्वीकार करने होंगे और करने ही चाहिये। इसके मार्ग में जो भी कानूनी प्रतिबन्ध है उन्हें दूर कर दिया जाना चाहिये।

भारत में नारियों की दशा वास्तव में शोचनीय है, परन्तु श्रीमती हंसा मेहता की इस दशा को सुधारने की हार्दिक इच्छा और अभिलाषा होने से भी पूर्णतया उनके विचारों से प्रत्येक व्यक्ति सहमत हो सकता है, इसमें संदेह है। यह मतभेद केवल दृष्टिकोण के अंतर के कारण है। उन्होंने यह नहीं विचार किया कि हम भारतीय हैं; भारतीय सभ्यता संस्कृति और आदर्श निश्चित रूप से अंग्रेजी संस्कृति आदि से बहुत बढ़-चढ़ कर हैं, इसको आज पश्चिम के रहने वाले बड़े-बड़े विद्वानों ने भी मान लिया है।

श्रीमती हंसा मेहता ने पिता की सम्पत्ति में लड़कियों को भाग मिलना चाहिये ऐसा विचार प्रकट किया है, यदि इस विचार का विरोध किया जाय तो कुछ —बहिनों को सम्भव है भला प्रतीत न हो। परन्तु जब हम गम्भीर दृष्टि से विचार करते हैं तो हृदय में अनुभव होने लगता है कि बहिन हंसा मेहता की इस मांग से भाई और बहिन के परस्पर प्यार का अन्त हो जायगा। आज हिन्दू समाज में बहिन अपने भाई पर जो न्यौछावर करती है और घर-घर 'युग-युग जीवो भैय्या' की मीठी तान सुनाई देती है। कोई भी बहिन अपने इस स्वार्थ विक भाई बहिन के प्रेम को मिटाने के लिये प्रस्तुत न होगी। जरा विचारिये जब आप अपने भाई की बराबर हिस्सेदार

(शेष पृष्ठ २२ पर)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

समाचार-चित्रावलि

सरदार पटेल

गृह युद्ध बिना पाकिस्तान असम्भव है।
राम स्वामी मुदालियर

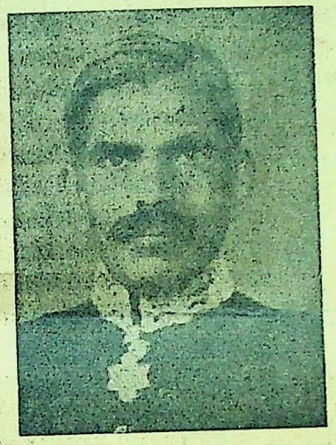

मित्र राष्ट्रीय असेम्बली में यूक्रेनी प्रतिनिधियों ने आपको भारत का सच्चा प्रतिनिधि मानने से इनकार कर दिया है।

प्रेजीडेण्ट ट्रूमैन

प्रशान्त के द्वीपों के पार अमेरिका अपना कब्जा रखेगा। यह घोषणा आपने की।

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित

२३ जनवरी को शीघ्र भारत लौट रही हैं।

महाराजा त्रावनकोर

आपने अमेरिकन ढंग के प्रजातन्त्र की स्थापना की घोषणा त्रावनकोर-रियासत के लिये की है।

५१ मित्रराष्ट्रों के नवीन संयुक्त राष्ट्र संगठन के नियोजक कमीशन की लन्दन में बैठक।

लोकवाणी

पाकिस्तान का अर्थ गृहयुद्ध

मुस्लिमलीग को केन्द्रीय असेम्बली के सभी स्थानों पर सफलता मिली और वह विजयदिवस मना कर यह सन्तोष करले कि उसे पाकिस्तान मिल गया। पाकिस्तान देना ब्रिटिश सरकार के हाथ में नहीं है। पाकिस्तान प्राप्त करना है तो हिन्दू और मुसलमानों को लड़ना ही होगा। गृह-युद्ध अवश्यम्भावी है।

अब कांग्रेस मुस्लिमलीग के पास नहीं जाने वाली है। कांग्रेस ने कई बार लीग से समझौता करने की चेष्टा की किन्तु प्रत्येक बार कांग्रेस के आग्रह को ठुकरा दिया गया। अब कांग्रेस ने निश्चय कर लिया है कि जब तक लीग अपनी नीति में परिवर्तन नहीं करेगी तब तक कांग्रेस लीग से कोई बातचीत नहीं करेगी। वह जो कुछ चाहती है उसे वह शक्ति प्रयोग कर ले सकती है।

हम शासनव्यवस्था को अपने हाथ में लेने के लिये दृढ़ निश्चय कर चुके हैं। अब हम ब्रिटेन की बातों पर विश्वास नहीं कर सकते। ब्रिटेन को अपनी कार्यवाई से यह सिद्ध करना होगा कि वह शासन-व्यवस्था का भार भारतीयों को सौंपना चाहता है। हम शिमला की भूल की पुनरावृत्ति नहीं करने वाले हैं। जब जेल से छोड़ने के बाद हम लोगों को शिमला बुलाया गया तब हम लोगों को ऐसा विश्वास हुआ कि सैनिक-वाइसराय वस्तुतः हम लोगों से समझौता करना चाहते हैं। ऐसा बताया जाता है कि वे समझौते के लिये तैयार थे, किन्तु ब्रिटेन से उन पर दबाव डाला गया। ऐसी परिस्थिति में उन्हें इस्तीफा दे देना चाहिए था। किन्तु उनमें और अन्य राजनीतिज्ञ-वाइसरायों में कोई विशेष अन्तर नहीं है। इनमें इतना ही है कि ये कम बोलते हैं।

— सरदार पटेल

अहिंसा का प्रतीक चरखा

अपनी रक्षा के लिये जनता ने जब कभी सशस्त्र फौजों का प्रयोग किया, उसका परिणाम यही हुआ कि उसकी परतंत्रता के बंधन मजबूत होते गए। तथाकथित रक्षक ही उत्पीड़क बन गए। लेकिन उस अहिंसा में, जिसका प्रतीक चरखा है, स्त्रियों तथा पुरुषों को स्वतन्त्रता-संग्राम में समान अधिकार प्राप्त है। शर्त केवल यह है कि कते हुए सूत का प्रत्येक धागा स्वराज्य-यज्ञ की भावना से भरा होना चाहिए और उसके साथ यह दृढ़ भावना होनी चाहिए कि यदि चरखे के विरुद्ध आक्रमण हुआ तो लोग अपने प्राण देकर भी उसकी रक्षा करेंगे।' — गांधीजी

हिन्दू-मुस्लिम समस्या

हिन्दुओं और मुसलमानों में आखीर क्या मतभेद है? दोनों स्वतन्त्रता की मांग करते हैं। मुसलमान पाकिस्तान भी चाहते हैं जिसकी स्पष्ट व्याख्या अभी होनी बाकी है। पाकिस्तान का मर्म स्पष्टतया समझे बिना हिन्दू देश के विभाजन से सहमत नहीं हो सकते। लीग आत्म निर्णय के सिद्धांत की स्वीकृति की मांग रही है। कांग्रेस उसे प्रदान करती है। किन्तु लीग कुछ और चाहती है। श्री जिन्ना पाकिस्तान में इन प्रान्तों का समावेश करना चाहते हैं:- आसाम जहां मुसलमान केवल ३० प्रतिशत हैं, सारा बंगाल जिसका पश्चिमी भाग हिन्दू-प्रधान है और सारा पंजाब जिसका दक्षिणी और पूर्वी भाग हिन्दू-प्रधान है।

मुसलमानों के लिए आत्म-निर्णय अस्वीकार नहीं किया जा सकता। पर साथ ही साथ, यह हिन्दुओं के लिये भी तो अस्वीकृत नहीं किया जा सकता। अब वादविवाद पाकिस्तान और अखण्ड हिन्दुस्तान के बीच नहीं रहा वह तो मुसलमानों के लिए आत्म-निर्णय हो और हिन्दुओं के लिए नहीं' इस में सम्बन्ध है। क्या आसाम, पंजाब और बंगाल के बहुसंख्यक हिन्दू पाकिस्तान में जुड़ने के लिए बाध्य किये जायेंगे जिसकी मांग लीग कर रही है?

समस्यायें अवश्य हैं, पर वे सुलझ सकती हैं। यदि दो दल सहमत नहीं होते तो क्या मध्यस्थता नहीं हो सकती? क्या ग्रेट ब्रिटेन या संयुक्त राष्ट्र उसका हल नहीं कर सकते? पुरानी पड़ी बातों को यदि प्रोत्साहन नहीं देना है तो दोनों दलों को कह देना चाहिए कि या तो परस्पर सहमत हो जाओ अन्यथा संयुक्त राष्ट्रों के निर्णय को स्वीकार करना ही होगा।

— घनश्यामदास बिड़ला

ब्रिटिश सरकार का बहाना

ब्रिटिश सरकार यह बहाना बनाती है कि यदि वह भारत छोड़ कर चली जायगी तो यहां साम्प्रदायिक दंगे होंगे। किन्तु हमने इस बहाने की पोल दक्षिण पूर्वी एशिया में खोल दी, जहां हम लोग सभी भारतीय बिना किसी प्रकार का पारस्परिक संघर्ष किये लगातार युद्ध करते रहे। हम सभी भाई-भाई की भांति रहते थे।

यहां तक कि अछूत भी हमारे साथ एक ही टेबल पर बैठकर खाते थे। हमने यह सिद्ध कर दिया कि अंग्रेजों को अनुपस्थितिमें हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न ही नहीं रहता।

—कै० शाहनवाज

स्वाधीनता-दिवस प्रतिज्ञा

[२६ जनवरी के लिए]

"हम लोगों का विश्वास है कि संसार के सभी लोगों के समान ही हमारा यह जन्म सिद्ध अधिकार है कि हम स्वतंत्र हों, तथा अपने परिश्रम के फलों का उपभोग करें एवं जीवन के आवश्यकीय पदार्थों को प्राप्त करें, जिससे कि हमें भी विकास का समुचित सुअवसर प्राप्त हो। हम यह भी मानते हैं कि यदि कोई सरकार लोगों को इस अधिकार से वंचित करती है तथा उनको सताती है तो लोगों को यह अधिकार है कि वे इसे बदल दें या नष्ट कर दें। ब्रिटिश सरकार ने केवल भारतीयों की स्वाधीनता ही नहीं छीनी है, बल्कि इसने जन साधारण को खूब लूटा भी है तथा भारत को आर्थिक, राजनैतिक आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक विचार से बर्बाद भी कर दिया है। इस कारण हमारा विचार है कि भारत को ब्रिटेन से सम्बन्ध तोड़ लेना चाहिये और पूर्ण स्वराज्य अर्थात स्वाधीनता प्राप्त करनी चाहिये।

"हम मानते हैं कि स्वाधीनता प्राप्ति का सब से प्रभावोत्पादक मार्ग हिंसा का ही है। भारत ने शांति पूर्ण तथा वैध उपायों से स्वराज्य मांग का बहुत बड़ा भाग तय किया है तथा आत्म निर्भरता एवं बल प्राप्त किया है, और इन्हीं साधनों का अवलम्ब करके ही वह स्वतंत्रता प्राप्त करेगा।

"आज हम फिर से भारतको स्वाधीन करने की प्रतिज्ञा करते हैं और गम्भीरता पूर्वक यह निश्चय करते हैं कि स्वाधीनता-युद्ध को तब तक अहिंसा पूर्ण रीति से आगे बढ़ाते जायेंगे, जब तक पूर्ण स्वराज्य न प्राप्त करलेंगे।

"हमारा विश्वास है कि साधारणतः अहिंसा पूर्ण आन्दोलन और विशेषतः अहिंसा पूर्ण प्रत्यक्ष कार्यवाही की तैयारी के लिये आवश्यक है कि महात्मा गांधी द्वारा बताये गये तथा कांग्रेस द्वारा स्वीकृत रचनात्मक कार्यक्रम को पूरा किया जाय, खास कर साम्प्रदायिक एकता की स्थापना तथा छुआछूत को हटाना बहुत आवश्यक है। इस कारण हम प्रतिज्ञा करते हैं कि धर्म अथवा जाति का बिना किये बिना हम पारस्परिक सद्भावना बढ़ाने का यत्न करेंगे। हम उन को को अज्ञानान्धकार तथा दरिद्रता निकालेंगे जो सदा उपेक्षित रहे हैं। उन लोगों के स्वार्थों की सभी प्रकार रक्षा करेंगे जो पिछड़े और दबाये हैं। हमको मालूम है कि हम लोग अंग साम्राज्यवाद को नष्ट करना चाहते। मगर हमारा अंग्रेजों से कोई झगड़ा रार नहीं है; चाहे वह सरकारी आ हों अथवा गैर सरकारी। हम जानते कि हरिजन तथा सवर्ण हिन्दू का विभेद है, उसे हटाना ही होगा। हिन्दुओं को अपने दैनिक आचरण इस भेदभाव को मार भगाना होगा। इस प्रकार का आचरण अहिंसा के पालन में बाधक हो जाता है। हमारा धर्म भ ही दूसरा हो, परन्तु आपसी सम्बन्ध हम सब भारत माता के ही पुत्र हैं एक दूसरे के साथ एक राष्ट्रीयता त एक ही राजनैतिक तथा आर्थिक स्वा से बन्धे हुए हैं।

"चर्खा और खादी हमारे रचनात्म कार्यक्रम के एक प्रधान अंग हैं, ह कारण भारत के सात लाख गांवों पुनर्जीवन देने तथा जनता की अ दरिद्रता को दूर करने के अभिप्राय हम खादी छोड़ कर दूसरा कोई वस्त्र नहीं पहनेंगे और जहां तक हो सकेगा, गांव में हाथ की बनी वस्तुओं का ही प्रयोग करेंगे तथा दूसरों को भी ऐसा ही कर को कहेंगे। हम अपनी शक्ति सामर्थ्य के अनुसार रचनात्मक कार्यक्रम का कोई न कोई अंश पूरा करने का प्रयत्न अवश्य करेंगे।

"हम अपने उन सहस्रों सह-कर्मियों के प्रति कृतज्ञतापूर्ण श्रद्धा प्रगट करते हैं, जिन्होंने पिछली स्वाधीनता की लड़ाई में भाग लिया तथा उसके लिये अपमान सहे और अपने प्राण तथा धन का बलिदान किया। उनके बलिदान हमें सदा कर्तव्य की प्रेरणा देते रहेंगे और हम लोग तब तक उससे विमुख न होंगे, जब तक उद्देश्य प्राप्त न हो ले।

"हम ८ अगस्त १९४२ को स्वीकृत अ० भा० कांग्रेस कमेटी के प्रस्ताव को पुनः स्वीकृत करते हैं। इस प्रस्ताव द्वारा यह मांग की गई है कि भारत तथा संसार की शान्ति तथा स्वाधीनता के विचार से, भारत से ब्रिटिश सत्ता को शीघ्रातिशीघ्र विदा हो जाना चाहिये

आज हम फिर से यह प्रतिज्ञा करते हैं कि कांग्रेस की नीति तथा उद्देश्य को अनुशासन पूर्ण ढंग से पालन करेंगे तथा कांग्रेस के आदेश पर स्वाधीनता संग्राम में लड़ने के लिये सदा कटिबद्ध रहेंगे।"

राजेन्द्रबाबू

देशरत्न बाबू राजेन्द्रप्रसाद के बारे में वही व्यक्ति लिखने का प्रयास कर सकता है जिसके पास सोने की कलम और शहद की स्याही हो। उनमें गजब की प्रतिभा ही नहीं साथ-साथ मृदुलस्वभाव की मिठास भी है। उनका आदर्श-चरित्र, आत्म-ज्ञान और आत्म-त्याग उन्हें अन्य सभी नेताओं से व्यक्तिगत रूप से भारतीयों का अधिक प्रिय-पात्र बना देता है। वे महात्मा गांधी के ठीक वैसे ही अनुयायी हैं, जिस तरह जान महात्मा ईसा के अनुयायी थे।

— सरोजनी नायडू

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

★ वीर ★

अर्जुन

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार ता० २१ जनवरी सन् १९४६ ई०

नेताजी

आगामी २३ जनवरी को देश के नेताजी वीरवर श्री सुभाष का जन्मदिन है। आज हमारा यह दौर्भाग्य है कि जब भारतीय राष्ट्र उनकी वीर कृतियों को जानकर उनका स्वागत करने को उत्सुक था, वे हममें विद्यमान नहीं हैं। उनकी लोकप्रियता उनके देहान्त-समाचार के बाद भी भारतीयों में उनके जीवित रहने के अगाध विश्वास से प्रकट होती है। स्वयं म० गांधी ने यह दृढ़ विश्वास प्रकट किया है कि नेताजी जीवित हैं। उनका यह विश्वास, हम अपने लाखों पाठकों के अन्तस्तल के साथ मंगलमय भगवान से प्रार्थना करते हैं, सत्य सिद्ध हो और वे फिर यथाशीघ्र सुअवसर पाकर हमारे बीच में सम्मिलित हों। श्रीसुभाष की उत्कट देशभक्ति, अनथक लगन और अद्भुत कार्य क्षमता किसी भी राष्ट्र के लिए गौरव की वस्तु हो सकती है। हमें भी श्री सुभाष पर गर्व है। हम उनके ५०-वें जन्म दिन पर फिर मंगलमय भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वे जहां कहीं भी हों, सकुशल हों और शीघ्र भारत आकर राष्ट्र का नेतृत्व पुनः करें। और यदि राष्ट्र के दुर्भाग्य से वे जीवित न हों, तो परम भगवान उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति दें तथा हम भारतीयों में उस उद्देश्य के लिए दृढ़ संकल्प तथा भक्ति की भावना उत्पन्न करें, जिनके लिए उन्होंने अपना समस्त जीवन उत्सर्ग कर दिया।

रियासती समस्या के चार अंग

देशी राज्य प्रजापरिषद् के अधिवेशन के बाद ही नरेन्द्रमंडल के अधिवेशन और उसमें वायसराय के भाषण के कारण इन दिनों रियासतों की समस्या जनता के सामने कुछ अधिक स्पष्टता के साथ उपस्थित हुई है। रियासती समस्या पर विचार करने के लिए उसके चार पहलुओं पर विचार आवश्यक है। वे चार पहलू हैं— रियासती प्रजा, राजा, ब्रिटिश सरकार और ब्रिटिश भारत अर्थात भारतीय प्रजा।

रियासती प्रजा की स्थिति आज स्पष्ट है। उसकी हालत बहुत दयनीय है, राजाओं के निरंकुश शासन के कारण आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक आदि सभी क्षेत्रों में वह अवनत है। इस स्थिति से बचने का एक ही उपाय उसकी दृष्टि में है रियासतों में उत्तरदायी शासन की प्राप्ति। और इसी के लिए वह सब रियासतों में आंदोलन कर रही है। इस दिशा में विविध रियासतों में कुछ प्रयत्न भी हो रहे हैं। स्थान स्थान पर धारासभाओं की स्थापना की जा रही है, लेकिन यह प्रगति इतनी धीमी है कि प्रजा को उससे संतोष नहीं हो सकता।

रियासती समस्या का इससे भी पेचीदा और अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग है रियासतों के राजा। राजाओं की स्थिति जहां अत्यन्त दयनीय है, वहां वह निन्दनीय भी है। एक ओर तो वे प्रजा के साथ सहानुभूति प्रदर्शित नहीं करते और उन्हें उसका उचित अधिकार भी नहीं देते। वे अपने ऐश आराम तथा निरंकुश शासन में किसी तरह की कमी नहीं करना चाहते। अपनी दुर्बल स्थिति के कारण ब्रिटिश भारत की वैधानिक प्रगति से भी वे भयभीत हैं और इसी लिए उन संधियों के कागजों के साथ चिपटे रहना चाहते हैं, जिनका वस्तुतः कभी कोई मूल्य रहा ही नहीं। ब्रिटिश सरकार ने जब जरूरत समझी है, इन कागजों को रद्दी की टोकरी में फाड़ फेंका है और राजाओंको गद्दी से उतारने और निर्वासित करने से वह कभी नहीं चूकी। फिर भी अतीत गौरव के स्मृतिचिन्हों को, जिनमें उन्हें 'लन्दन-सरकार का मित्र' लिखा गया है, वे अपने हृदयतल से चिपटाये हुए हैं, और भारत सरकार को सर्वोच्च सत्ता मानने से इन्कार करते हैं, मानो ब्रिटिश सम्राट् के साथ मित्रता का वह कागज उनकी प्रत्येक प्रकार से रक्षा करेगा। इन सब कारणों से राजाओं पर प्रजा क्षुब्ध है और उसे आज राजभक्ति की शपथों के बावजूद यह स्पष्ट करना पड़ा है कि यदि राजा लोग नहीं सम्भलेंगे, तो उनके भविष्य के लिये वह कतई जिम्मेवारी नहीं ले सकती। लेकिन दूसरी ओर उनकी स्थिति अत्यन्त दयनीय भी है। नरेन्द्र मण्डल में एक राजा ने यह स्पष्ट कहा था कि अन्य देशों के स्वामी अपने मन्त्री स्वयं चुनते हैं, परन्तु रियासतों में उनको मंत्री किसी और शक्ति द्वारा 'सप्लाई' किये जाते हैं। महाराज रीवां यदि अपनी रियासत में कोई सुधार करना चाहते हैं, तो भारत सरकार का पोलिटिकल डिपार्टमेंट उसमें टांग अड़ा देता है। इस स्थिति से राजाओं की स्थिति अत्यन्त दयनीय है। उन्हें भी इस हालत से छुटकारा मिलना चाहिए। लेकिन राजा प्रजा के सहयोग से ही अपना प्रभाव बढ़ा सकते हैं।

रियासती समस्या का तीसरा अंग भारतीय या असली अर्थों में ब्रिटिश सरकार है। १८५७ से पूर्व तक उसकी नीति रियासतों को ब्रिटिश राज्य में आत्मसात करने की रही, लेकिन उसके बाद यह नीति बदल कर रियासतों को अपने शासन का एक दृढ़ स्तंभ बनाने की हो गई है। यद्यपि पिछले कुछ वर्षों से वायसराय आदि उच्च अधिकारी रियासतों में सुशासन आदि की सलाह देने लगे हैं, लेकिन वस्तुतः उनकी इच्छा रियासतों को अपने निरंकुश शासन के लिए सहायक बनाने की है। इसीलिए वे बराबर रियासती राजाओं के प्रति अपनी जिम्मेवारियों को निबाहने तथा राजाओं के स्वार्थों की रक्षा का आश्वासन देते हैं और छोटी छोटी रियासतों को प्रांतों में न मिलाकर बड़ी रियासतों में मिलाने की सलाह देते हैं, ताकि बड़ी रियासतें संतुष्ट रहकर समस्त भारत की वैधानिक प्रगति में बहुत दूर तक साथ न दें। सरकार राजाओं को बहुत अधिक आगे भी नहीं बढ़ने देना चाहती, इसी लिये पोलिटिकल विभाग का कड़ा शिकंजा भी कसे रहती है।

भारत की वैधानिक उन्नति के लिए समस्त प्रांतों व रियासतों का सहयोग अनिवार्य है। भारत न तो पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में बट सकता है और न वह रियासतों की पृथक सत्ता को सहन कर सकता है। इसलिए ब्रिटिश भारत की प्रजा चाहती है कि रियासतों में उत्तरदायी शासन स्थापित हो और वे संघ-सरकार के प्रान्तों के समान ही अंग हों तथा राजा लोग अपने प्रतिनिधि भेज कर विधाननिर्मात्री सभा या संघ की धारासभाओं में भारत की प्रगति में बाधक न बन सकें। इसके लिए जहां रियासती प्रजा को राजनैतिक अधिकार प्राप्त होने चाहिये, वहां ब्रिटिश भारत राजाओं को भी सरकार के फौलादी पंजे से मुक्त करना चाहता है।

रियासती समस्या के ये मुख्य अंग हैं, जिन पर विचारकों और नेताओं को विचार करना चाहिए। राजा अपना कर्तव्य पूर्ण करेंगे या नहीं, उनमें इतना आत्मबल है या नहीं, यह उनका दृष्टिकोण है, लेकिन रियासती प्रजा का कर्तव्य स्पष्ट है। उसे अपना आन्दोलन लगातार बढ़ाते जाना चाहिये और राजाओं पर यह स्पष्ट कर देना चाहिये कि सर्वोपरि सत्ता भारतीय जनता के हाथ में ही रहेगी और राजाओं को उसका सहयोग प्राप्त करने के लिए विवश होना पड़ेगा। यदि वे ऐसा न करेंगे, तो उनका भविष्य उज्ज्वल नहीं है। राजा क्या इस सत्य को नहीं समझेंगे?

—०—

सरदार पटेल की स्पष्टोक्ति

सरदार पटेल भारतीय नेताओं में अत्यन्त तेजस्वी हैं। उनके हृदय में जहां पं० जवाहरलाल नेहरू की सी आग है, वहां संगठनशक्ति की भी उनमें अद्भुत क्षमता है। उन्होंने पिछले दिनों राजनीति के अनेक प्रश्नों पर जिस स्पष्टता के साथ विचार प्रकट किये हैं, वह अत्यन्त अभिनन्दनीय है। पाकिस्तान के प्रश्न पर उन्होंने गृहयुद्ध तक की सम्भावना प्रकट करके अत्यन्त साहस का काम किया है। उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया है कि हम शिमला में धोखा खा चुके और अब मुस्लिम लीग के आगे उतना भी कभी झुकने को तैयार नहीं हैं। ऐसी स्पष्टोक्ति करने का साहस साधारणतः कांग्रेसी नेताओं में नहीं है। वे सदा मुसलमानों से डरते हैं, यद्यपि उनका यह भय किसी भी प्रकार मुसलमानों को अपनी ओर आकृष्ट नहीं कर सका। अब समय आ गया है कि हम स्थिति की तीव्रता से डरें नहीं, बल्कि साहस के साथ उसका मुकाबला करें।

प्रान्त और केन्द्र

'इस समय भारत में अन्न की स्थिति विशेष अच्छी नहीं है,' यह चेतावनी देते हुए भारतसरकार के खाद्यसदस्य सर ज्वालाप्रसाद श्रीवास्तव ने उन सब प्रयत्नों का उल्लेख किया है, जो भारत में अन्न स्थिति के सुधार के लिए किये जा रहे हैं, लेकिन इससे भी अधिक आवश्यक वह चेतावनी है, जो उन्होंने विभिन्न प्रान्तों को दी है। वे कहते हैं कि किसी भी प्रांत को यह नहीं सोचना चाहिये कि हमारा अन्न हमारी संपत्ति है। वह अन्न सारे भारत का है। वस्तुतः आज प्रान्तों में स्वार्थसाधना की भावना लगातार बढ़ रही है और इसका मुख्य कारण जहां प्रांतों के पूर्ण उत्तरदायी शासन और उनके पृथक् अस्तित्व पर जोर दिया जाना है, वहां उसके साथ समस्त भारत की एकता और केन्द्र को अधिक शक्तिशाली बनाने पर कोई जोर नहीं दिया जाना भी है। हमारे राजनीतिक नेता भी आत्म-निर्णय के मोहक सिद्धान्तों की चर्चा में बह जाते हैं और केन्द्रीय संगठन की उपेक्षा कर जाते हैं। यह भावना आज थोड़े से मुसलमानों को भले ही आकृष्ट करले, लेकिन वस्तुतः यह अन्त में हानिकर ही सिद्ध होगी।

इटली में ब्रिटेन की चालें

यूरोप के विविध देशों में ब्रिटिश राजनीतिज्ञ किस प्रकार की चालें चल रहे हैं, यह 'शिकागो ट्रिब्यून' के एक समाचार से स्पष्ट होता है। इसमें लिखा है "इटली में अपनी सैनिक स्थिति का उपयोग ब्रिटिश अधिकारी अपने आर्थिक स्वार्थों की रक्षा के लिए कर रहे हैं।"

दिल्ली में उपस्थित राष्ट्रनेता — श्री गोविन्दवल्लभ पन्त, सरदार पटेल, पं० जवाहरलाल नेहरू और आचार्य कृपलानी

एक अमेरिकन अधिकारी के शब्दों में ब्रिटिश लोग इटली को 'भूमध्य सागर का भारत बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। इसके लिए वे जिब्राल्टर तक की इटालियन केबल पर अधिकार कर रहे हैं, इटली का शीशा आदि ब्रिटेन भेज रहे हैं, युद्ध समाप्ति के कारण जो सम्पत्ति इटलियन नागरिकों को वापस देदी जानी चाहिये थी, उसपर अधिकार कर रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इटली को आर्थिक दृष्टि से इंगलैण्ड का उपनिवेश बनाने की योजना तेहरान या काहिरा में ही बना ली गई थी। ब्रिटिश अधिकारी भी अंग्रेजी व्यापारिक कम्पनियों के एजेण्ट प्रतीत होते हैं।' यह समाचार जहां ब्रिटिश चाल को स्पष्ट करता है, वहां अमेरिकनों की ब्रिटेन के रुख पर आशंका भी प्रकट करता है।

ट्रावन्कोर में नये सुधार

ट्रावनकोर के राजा ने अपनी रियासत में नये शासन-सुधारों की घोषणा की है। इनका पूर्ण स्वरूप अभी तक हमारे सामने नहीं है, लेकिन संक्षिप्त समाचार से यह अवश्य प्रतीत होता है कि धारासभा में सभी सदस्य निर्वाचित होंगे। एक भी सदस्य राज्य द्वारा मनोनीत नहीं होगा, और चुनाव वयस्क मताधिकार के आधार पर होगा। धारासभाओं का राजा, राजपरिवार, बाह्य मामलों और सेना आदि को छोड़कर प्रायः सभी शासन सम्बन्धी कार्यों पर नियंत्रण होगा। इस समस्त विधान में राजा और दीवान की क्या स्थिति है, यह अब तक प्राप्त अपूर्ण विवरण से स्पष्ट नहीं हुआ। लेकिन यह निश्चित है कि ट्रावनकोर राज्य ने बहुत बड़ा कदम उठाया है और उसका यह प्रयत्न अभिनन्दनीय है। वयस्क मताधिकार, सौ फीसदी निर्वाचित सदस्य, अमेरिकन प्रैजिडैण्ट की सी दीवान की स्थिति आदि इसकी विशेषताएं हैं। क्या अन्य रियासतें भी इस ओर कदम बढ़ावेंगी ?

—xxxx—

परमाणु शक्ति का दूसरा पहलू

जब सब देशों के वैज्ञानिक परमाणु शक्ति के आविष्कार के लिए एक दूसरे से होड़ लगा रहे हैं, तब डा० केनेथ वाकर नामक प्रसिद्ध वैज्ञानिक ने संसार को एक नई चेतावनी दी है। उनका कहना है कि रेडियो की सक्रिय शक्तियां शरीर के जीवित तंतुओं पर महान प्रभाव डालती हैं। और वे पुंस्त्व शक्ति को नष्ट कर देती हैं। यदि हमने प्रकृति पर विजय भी प्राप्त करली, लेकिन अपनी शक्ति को नष्ट कर लिया, तो वह वास्तविक उन्नति नहीं होगी। एक ओर आज ब्रिटेन आदि देशों में जन-संख्या बढ़ाने के लिए प्रयत्न किये जा रहे हैं, दूसरी ओर यदि पुंस्त्व शक्ति नष्ट हो जाय, तो सब प्रयत्न व्यर्थ ही जायेंगे।

नौकरी दिलानेकी शानदार व्यवस्था !

भारत सरकार के श्रमविभाग के अधिकारियों ने बेकारी की समस्या की गुरुता को समझने और उसे दूर करने के प्रयत्न की अपने सतर्कता का दावा किया है। इसी लिए उसने एक एम्प्लौयमैण्ट एक्सचेंज आफिस भी खोल रखा है, जिसकी चर्चा भारत सरकार की विज्ञप्तियों में बड़े गर्व से की जाती है। लेकिन इस विभाग की असफलता उसके निम्न आंकड़ों से स्पष्ट हो जायगी। सप्लाई, युद्ध, डाकखाना तथा हवाई सर्विस से ६०००० आदमी मुक्त हुए और उन में से २०००० ने इस विभाग में अपना नाम रजिस्टर कराया। अबतक इस विभाग के २२ दफ्तर खुल चुके हैं। अधिकारियों की इच्छा है कि फरवरी ४६ के अन्त तक ७१ दफ्तर खुल जावें। लेकिन इसकी कार्यक्षमता देखने के लायक है। मिल मालिकों ने इस विभाग से ५५३२९ जगहों के लिए आदमी मांगे; लेकिन उन्हें कुल ५६७८ आदमी दिये जा सके हैं अर्थात् उनकी केवल १० फी सदी जरूरत पूरी की जासकी है। यह है इस विभाग की कार्यक्षमता का उदाहरण।

मित्रराष्ट्रीय असेम्बली

लन्दन में हो रही मित्र-राष्ट्रीय असेम्बली में सदस्य गण मीठी मीठी चिकनी चुपड़ी बातें शान्ति और स्वतंत्रता के सम्बन्ध में बघार रहे हैं। आर्थिक तथा सामाजिक समिति की प्रथम बैठक में सर रामास्वामी मुदालियर ने मानवाधिकार पर लम्बा चौड़ा व्याख्यान दिया। सुरक्षासमिति में परमाणु शक्ति को शान्ति-स्थापन के लिए प्रयोग में लाने की चर्चा की गई। अन्तर्राष्ट्रीय सैनिक संगठन की योजना भी प्रस्तुत कर दी है, जिसका निर्णय इसी सप्ताह हो जायेगा। सुरक्षा समिति के पांच स्थायी राष्ट्र रूस, फ्रांस, ब्रिटेन, चीन और अमेरिका अपनी अपनी सेनाएं देंगे।

इस असेम्बली का प्रधान मंत्री चुनने के लिये 'तीन बड़ों' में अच्छी खासी कशमकश चल रही है। ब्रिटेन द्वारा प्रस्तावित नाम पर रूस सम्भवतः विरोधी रुख ग्रहण कर लेगा।

ब्रिटेन अपने अफ्रीकन प्रदेश संयुक्त मित्रराष्ट्रीय ट्रस्टीशिप के आधीन करने को तैयार हो गया है।

अमरीका व ग्रीस में हड़ताल

अमेरिका की १६ रियासतों के २ लाख बिजली के मजदूरों ने हड़ताल कर दी है। इस से पूर्व विभिन्न उद्योगों के ४ लाख मजदूरों ने हड़ताल कर दी थी। इन की मांग है कि उन्हें प्रति घण्टा १५ सेण्ट मिलना चाहिये।

ग्रीस में पाइरेस बन्दरगाह पर ३ लाख मजदूरों ने हड़ताल कर दी है। घरेलू नौकरों ने भी वेतन न बढ़ने की दशा में हड़ताल की धमकी दी है।

ईरान

प्रधान मंत्री हकीमी ने ईरान मजलिस (धारा सभा) में घोषणा की है कि ईरान की समस्या को मित्र राष्ट्र असेम्बली में उपस्थित किया जायेगा। परन्तु ब्रिटेन इसे उपस्थित करने को अनिच्छुक है।

यह भी अफवाह है कि हकीमी ने ईरान के शाह को अपना त्याग-पत्र दे दिया है।

रूस की देखादेखी अंग्रेजों ने भी ईरान में हलचल प्रारम्भ कर दी है।

हमारे पूर्व में

हिन्दचीन में खाद्य और वस्त्र का अत्यन्त अभाव हो रहा है। केवल २ दिन में ही इनोई में ४०० व्यक्ति मर गये। यही अवस्था रही, तो वर्ष भर में लाख आदमियों के मर जाने की आ है।

जावा में इस समय भी लड़ाई है; पेदाँग पर ब्रिटिश और डच ने आक्रमण कर दिया है। मेदान में यही अवस्था है।

मित्रराष्ट्रीय असेम्बली में जाव सम्बन्ध में डच प्रधान-मन्त्री ने मात्र उल्लेख किया है, निश्चित घोषणा नहीं की।

बंगाल में आक्रमण

पिछले दिनों चटगांव के सात हजारीगांव पर सिविल पायोनि फौज के तीनसौ सैनिकों ने हमला दिया। उन्हों ने स्त्रियों के साथ बलात्क किया, ५६ घरों पर पैट्रोल छिड़क आग लगाई तथा सम्पत्ति लूटी। व्यक्ति को जलती आग में फेंक दि कई व्यक्ति घायल हुए।

४२ की याद

उड़ीसा के कोरापुत जिले की अग आन्दोलन के सम्बन्ध में दमन की क बहुत रोमांचक है। एक को फांसी दे गयी, २५ व्यक्ति पुलिस की गोली शिकार हुए, २ लाठी चार्ज से मर तथा ३२ आजीवन कारावास भुगत हैं।

लोगों की सम्पत्ति लूटी गई, उ कपड़े उतार कर आग की भेंट कर गये। स्त्रियों को भी इस में लपेट लि गया। कांग्रेस की एक मोटर तथा हजार धनराशि अभीतक वापिस नहीं गई।

अधिकारियों की उपेक्षा और कठोर के कारण कोरापुत जेल में ५० बन्दियों की मृत्यु हो गई। जेल में २ बन्दियों के रहने योग्य स्थान में बन्दी घुसेड़ दिये गये।

१९०० व्यक्ति गिरफ्तार किये इसमें ११ नजरबन्द कर दिये गये ५६० पर आरोप लगाये गये। प्रदर्शन हुए। ३२४ बार लाठी हुआ। दो बार के गोली काण्ड में रौण्डफायर किये गये। अदालतों ११२०० रुपये जुर्माना किया गया में से ९७३१ रुपये वसूल किये गये।

तीन व्यक्तियों को पेड़ पर उ लटका कर बेंतों और लाठियों से गया। १२ स्त्रियों के साथ बलात्क किया गया।

(शेष पृष्ठ २० पर)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

भारत सरकार का नोट-आर्डिनेंस

[अर्थशास्त्र का एक विद्यार्थी]

आजाद हिन्द फौज के मुकदमे से देश में जितनी हलचल नहीं मची, उससे कहीं ज्यादा घबराहट और बेचैनी सरकार के नये नोट-सम्बन्धी आर्डिनेन्स से हो गई है। इस आर्डिनेंस के अनुसार सरकार ने एकाएक १२ जनवरी १९४६ को ५००), १०००) रु० या उससे अधिक ऊंचे नोटों की कानूनी स्थिति को समाप्त कर दिया है। इसके अनुसार अब इन नोटों से किसी किस्म का व्यवहार और लेनदेन नहीं हो सकेगा। इसी आर्डिनैन्स में यह सूचना भी दी गई है कि जिन लोगों के पास इस प्रकार के नोट हैं, वे १० दिन में रिजर्व बैंक से वापस ले सकते हैं। १०० रु० के नोट बदस्तूर जारी रहेंगे।

उद्देश्य

इन आर्डिनैन्स का उद्देश्य भारत सरकार ने अपनी विज्ञप्ति में यह बताया है कि 'सरकार का यह खयाल है कि चोर बाजार की बड़ी भारी पूंजी बड़े नोटों की शक्ल में है।' इससे समस्त बाजार में हलचल सी मच जाती है। 'सरकार यह भी जानती है कि सार्वजनिक हित के इन शत्रुओं — चोरबाजार के व्यापारियों के विरुद्ध कोई सख्त कार्यवाही करने की मांग जनता बहुत समय से कर रही है। चोर बाजार के व्यापारी न केवल बाजार में उथल-पुथल ही नहीं करते, बल्कि वे 'अपनी आमदनी छिपाकर इनकमटैक्स की आमदनी से भी बचते हैं और इस तरह राष्ट्रीय आय में अपना उचित भाग नहीं देते।' ऐसी सब बातों की जानकारी सरकार और टैक्स लगाने वाले अधिकारियों को हो जाय, इस उद्देश्य से यह आर्डिनैंस जारी किया गया है। इसका परिणाम सरकार तथा साधारण जनता दोनों के लिये उत्तम होगा। सरकार ने अपनी विज्ञप्ति में यह विश्वास भी प्रकट किया है कि 'इस आर्डिनैंस से साधारण ईमानदार नागरिक को किसी विशेष असुविधा का सामना नहीं करना पड़ेगा।'

चोर बाजार और रिश्वत

सरकार ने जो उद्देश्य बताया है, उससे सब सहमत होंगे। इसमें सन्देह नहीं कि चोर बाजार के व्यापारियों ने अत्यन्त अनुचित उपायों से पैसे का उपार्जन किया। जब बंगाल में लाखों आदमी भूखे मर रहे थे, तब भी चोर-व्यापारी लगातार लाभ उठा रहे थे। इन लोगों को जनता से कोई सरोकार न था, लोग कितने कष्ट में हों, बाजार में किसी चीज के दर्शन नहीं हो पाते थे। अनाज, कपड़ा, गुड़, तेल, चीनी कागज और ब्लेड आदि सभी चीजें आते ही न जाने किस तहखाने में पहुंच जाती थीं। सरकार ने इसे रोकने के लिये बीसियों प्रयत्न किये, किन्तु इन व्यापारियों के आगे उनकी कोई न चली। उनके सभी प्रयत्न बेकार सिद्ध हुए। सरकार की अनुभवशून्यता और त्रुटिपूर्णता के कारण भी ये प्रयत्न सफल नहीं हुए। शायद सरकार की नीयत भी केवल युद्ध-संचालन की ओर थी और साधारण जनता के लाभ और सुविधाओं का कोई उसे खयाल न था।

चोर बाजार के व्यापारी ही नहीं, सरकारी कर्मचारियों ने भी रिश्वत के रूप में लाखों करोड़ों रु० जमाकर रखे हैं। वस्तुतः इस महायुद्ध के जो दो महान अभिशाप इस देश में फल लाये हैं, उनमें यह आर्थिक अनैतिकता बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। चोर बाजार की प्रवृत्ति साधारण जनता तक फैल गई, है, यह हमारा स्वभाव सा बनता जा रहा है। कांग्रेस कमेटी के दर्शक टिकट या सिनेमा के टिकट भी चोर बाजार की चीजें बनते जा रहे हैं। अभी हाल में रिजर्व बैंक के बड़े नोटों को भुनाने के फार्म तक भी, जो मुफ्त में मिलते हैं, १००)रु. तक में बिके। आर्थिक अनैतिकता का दूसरा रूप रिश्वत है। जो कर्मचारी किसी दफ्तर में गया, उसने अपनी जेबें भरने की ठानी। भारतसरकार के बड़े ऊंचे अफसरों तक पर लाखों रु० की रिश्वत के इलजाम लगाने से लोग नहीं चूकते। ५०-१०० रु० पाने वाले कर्मचारी भी हजारों रु० के मालिक बने हुए हैं। कोई परमिट, या लाइसैंन्स लेने के लिए जाओ, तो पहले कर्मचारी की जेब भरो, सप्लाई डिपार्टमैंट हो नहीं, राशन और कन्ट्रोल, सिविलसप्लाई आदि महकमों में भी रिश्वत आदि का बाजार खूब नरम रहा। सरकारी कर्मचारियों ने जिन अनुचित उपायों से अपने खजाने भरे हैं और जनता को जो अपार कष्ट दिया है, उसके अनुभव भुक्तभोगी भली-भांति जानते हैं। ऐसे लोगों से भी उनका रुपया लेने की आवश्यकता है। इस नये आर्डिनैंस में यद्यपि रिश्वतखोरों का नाम नहीं, तथापि उन पर भी इसका भारी प्रभाव पड़ेगा।

आर्डिनैंस अपूर्ण

इसमें सन्देह नहीं कि अनुचित मुनाफाखोरों और रिश्वतखोर कर्मचारियों से जनता को कोई सहानुभूति नहीं है। उन्हें जितना दण्ड मिले, कम है, लेकिन इस आर्डिनैंस का रूप और प्रभाव उससे कहीं अधिक व्यापक

तुम जगा रहे थे भाग्य हमारे !

हे विद्रोही, हे सेनानी, जननायक ! जयकार तुम्हारा,
भूल नहीं पायेगा भारत सदियों तक उपकार तुम्हारा।
भूल नहीं पायेंगे सदियों तक भी तुम्हें तुम्हारे दुश्मन,
उन्हें करेगा युग-युग तक आतंकित छायाकार तुम्हारा।
घिरी हुई थी काली रजनी, बादल में थे छिपे सितारे,
नहीं सूझता था कुछ भीषण झंझा के झोंकों के मारे।
मेघों में थे वज्र कड़कते, मृत्यु बरसती थी अम्बर से,
अन्धकार के पथ पर तब तुम जगा रहे थे भाग्य हमारे।
फटा निशा का भीषणतम तम, ऊषा का आलोक सुनहला —
अराकानयोमा पर छाया; वह प्रभात था पहला पहला।
जब निराश भारत माता के उर में आशा-किरणें फूटीं,
रक्त रंगे अपने कर लखकर जब हत्यारे का दिल दहला।
बजा कूच का शंख, शम्भु के गण जैसे सैनिक मतवाले,
अपने से सौगुने सैन्य से भी निर्भय हो लड़ने वाले।
बढ़े शत्रु-शोणित के प्यासे – जिससे तोड़-फोड़ कर रख दें —
लगे देश के कारागृह पर पशुबल औ पूंजी के ताले।
अहे शक्ति के स्रोत ! बढ़े तुम जब आगे कर में झंडा ले,
लगे दौड़ने लंगड़े, लूलों ने कर में हथियार संभाले।
अन्धे लगे देखने, कंजूसों ने खोली अपनी थैली,
नहीं हुए जो कभी, दिखाए करके तुमने काम निराले।
जब प्रभात में जाग्रत ऊषा अराकानयोमा पर आती,
हमें दीख पड़ती है तब तब वही तुम्हारी चौड़ी छाती।
वहां तुम्हारे कर में होता है सुविशाल तिरङ्गा झण्डा,
वह वीराकृति वहां दीखती दो पल को, बस फिर छिप जाती।
जब पूरब से मंद समीरण पश्चिम को बहता है आता,
वह कुछ अद्भुत जोशीली सी गंध साथ है अपने लाता।
रक्त हमारा कह देता — यह भारतीय शोणित की खुशबू;
चित्र कोहिमा औ इम्फल का आंखों के आगे आ जाता।
आता है तब ध्यान कि जब ये बर्मा के बादल बरसाती,
दिन-दिन रात-रात भर बरसें, नदियां उफन उफन थीं आतीं।
मिट्टी के गिरि गिर गिर जाते, तब मुट्ठी भर अन्न सहारे,
वह आजाद हिन्द सेना थी पल पल आगे बढ़ती जाती।
घना अंधेरा, बीहड़ जंगल, कांटे पत्थर रोक न पाए,
मानों एक एक सैनिक में प्रलयंकर भगवान् समाये।
तभी दीख पड़ते हैं सहसा घनाच्छन्न अम्बर के नीचे,
देख रहे हैं दो ज्वलन्त दृग जादू की सी दृष्टि बिछाये।
इन्हीं दृगों की इसी दृष्टि ने फूंक जलाई थी वह ज्वाला,
आजादी की — जिसका सुन्दरतम लख कर आलोक निराला।
जिस पर अपने पंख जलाने, औ' करने प्राण निछावर,
बन बैठा था एक एक हिन्दुस्तानी पतंग मतवाला।
सुलग रही है अब तेजी से तुमने जो फूंकी चिनगारी,
धधका है दावानल, होगी भस्म पाप की दुनिया सारी।
ऊंची उठी जा रही लपटें, फैला है सब ओर उजाला,
देखो थर थर कांप रहे हैं इस प्रकाश में अत्याचारी।
छोड़ अहिंसा का पागलपन तुमने प्रतिहिंसा व्रत ठाना,
एक बार पहिना फिर तुमने वीरों का केसरिया बाना।
एक बार फिर कर दिखलाया तुमने भारत के हित जौहर,
केवल तुम जैसों के बस का है भारत आजाद कराना।
शक्ति हीन औ' शौर्य हीन जन सारा देश बना है कारा,
नहीं विजय की लाली देखी सन् सत्तावन जब से हारा।
आज गुलामी की लज्जा से दबे जा रहे शीश हमारे,
किन्तु तुम्हारी स्मृति से ऊंचा हो जाता है भाल हमारा।
चर्चा व्यर्थ पराजय की है स्वयं सिकन्दर भी था हारा,
नैपोलियन और हिटलर का भी असमय में छिपा सितारा।
इन वीरों के किन्तु पराक्रम तुच्छ विजय से बहुत बड़े हैं,
लिखा जायगा सदा इन्हीं के साथ वीर ! शुभ नाम तुम्हारा।

— "विराज"

है, जितने की कल्पना सरकार ने अपनी विज्ञप्ति और आर्डिनैंस में प्रकट की है।

चोरबाजार के व्यापारी और रिश्वतखोर सरकारी कर्मचारियों ने, यह कोई जरूरी नहीं कि बड़े नोट अपने घरों में ही रख लिये हों। उन्होंने १००) रु० के नोटों में भी लेनदेन किया हो, बड़े नोटों से सोना चांदी खरीद या जायदाद की हो अथवा कम्पनियों के शेयर लिए हों। यह सब बातें बहुत संभव है। इसलिए बड़े नोटों को गैरकानूनी करा देने से सरकार का यह उद्देश्य पूर्ण होगा, इसमें सन्देह करने के पर्याप्त कारण हैं।

जनता को कष्ट

दूसरी ओर इस आर्डिनैन्स से जनता को बड़ा कष्ट होगा। भारतीयों में आज भी बैंक में अपना रुपया रखने की प्रवृत्ति पूरी तरह घर नहीं कर पायी। हजारों व्यापारी अपने पास रुपये रखते हैं। कारोबार के लिए भी और संचय की दृष्टि से भी। युद्धकाल में बैंकों पर विश्वास जनता को न रहा हो, यह बहुत संभव है और इसलिए लोगों ने अपने पास नोट रख लिये हों।

संपन्न घरानों की स्त्रियों ने भी नोट अपने पास रख छोड़े होंगे। इसके अनेक उदाहरण इन दिनों अखबारों में पढ़ने को भी मिले हैं। करांची से एक वृद्ध महिला के यह समाचार सुनते ही हृदय-गति रुकने का समाचार प्रकाशित हुआ है। इस युद्ध-काल में हजारों अशिक्षित किसानों तथा दूसरे लोगों ने भी रुपया कमाया है। वे बैंक के कारोबार से वाकिफ नहीं हैं। वे अपनी तिजोरियों में रुपया रखते हैं। मध्यमश्रेणी में ऐसे लोगों की संख्या कम नहीं है, जिसने अपनी जन्मभर की कमाई एक दो या चार बड़े नोटों में परिणत करली है।

फार्म की जटिलता

सरकार ने बड़े नोट भुनाने के फार्मों में इतने विस्तार की बातें पूछी हैं, उनकी ठीक जानकारी दे सकना सिर्फ ईमानदार आदमियों का ही काम नहीं, वह तो चतुर, और चालाक लोगों का ही काम है। फिर इस फार्म को प्राप्त करने के लिए तथा उसे सही सिद्ध करने के लिए जो तरीका है, वह बहुत कठिन है। प्रत्येक प्रार्थी को फार्म की तीन कापियों पर हस्ताक्षर करने होंगे। लेकिन प्रार्थी को प्रमाणित करने के लिए किसी बैंकर, वैतनिक मजिस्ट्रेट या पुलिस इंस्पेक्टर आदि का प्रमाण-पत्र लेना होगा। यह प्रमाणपत्र लेना सहल काम नहीं है। उन लोगों को पहले ही इतना काम है कि वे यह नई आफत मोल लेना पसन्द नहीं करेंगे। स्त्रियां इन तक कैसे पहुंचेगी? मजिस्ट्रेटों के अर्दली तक अपना हिस्सा लिये बिना किसी को अन्दर नहीं जाने देते।

इस फार्म में स्थान, निवास, पेशा वेतन, आदि के बारे में जो विस्तृत सूचनाएं मांगी गई हैं, उनका पूर्ण करना आसान काम नहीं है। बैंक में रुपये क्यों नहीं रखे गए? किससे इतने ऊंचे नोट लिए गये? किस प्रकार ये रुपये कमाए गए, किस व्यापार में और किस वर्ष ये नोट आए? आदि बातों की याददाश्त रखना और विस्तृत जानकारी देना संभव नहीं है। इसका परिणाम यह होगा कि या तो प्रार्थी उचित अधिकारियों को रिश्वत आदि से संतुष्ट करने का प्रयत्न करें अथवा रुपये से हाथ धो बैठें।

बहुत कम अवधि

बड़े नोट भुनाने के लिए केवल १० दिन दिए गये हैं, जो बहुत कम हैं। गांवों के जमीदारों तक अखबार ही नहीं पहुंचते, वे कैसे नियत समय में इन आर्डिनेंसों को जानकर अपने हजारों रु० को बचा सकेंगे।

गंभीर परिणाम

ये सब कठिनाइयां तो केवल व्यक्तिगत हैं, लेकिन इसके परिणाम वस्तुतः सार्वजनिक और देशव्यापी हैं। भारत सरकार ने लोकमत की मांग को ठुकराकर पिछले वर्षों में अंधाधुन्ध करोड़ों रु० के नोट निकाले। इनका उद्देश्य केवल भारतीय व्यापार की रक्षा नहीं था। ब्रिटेन को पिछले वर्षों में २० अरब रु० का माल बिना नकद मूल्य लिये चुकाया गया। उसके लिए सरकार नोट पर नोट निकालती रही। इसका परिणाम यह हुआ कि भारत में जहां युद्ध नहीं लड़ा गया, पदार्थों के मूल्य चार गुना तक बढ़ गये, जब कि इंगलैंड में मूल्य सिर्फ पौने दो गुने बढ़े। इसी कारण चोर बाजार की तरक्की हुई, यदि मूल्य इतने अधिक न बढ़ते तो इसमें सन्देह था कि चोर बाजार इतना पनपता। इसका अर्थ यह है कि ने जो माल हिन्दुस्तान से लिया, कागजी मूल्य सरकार ने हमें दिया आज हमें यह भय है कि इ आर्डिनेंस के कारण कमसे कम ७५ रु० के नोट ऐसे होंगे, जो भुनाये न सकेंगे। और इस तरह सरकार इतनी जिम्मेदारी से बहुत सरलता से जायगी।

उद्योग-धन्धे

आखिर इस रुपये का क्या हो यदि सरकार यह रुपया न ले, तो इस महान राशि को, जो चोर बाजा व्यापार और रिश्वतों के रूप में लो पास जमा है, देशके उद्योग धन्धे लगाते। लेकिन अब इसका एक भाग बरबाद जायेगा और उद्योगध के काम न आ सकेगा। नोट भुनाने बहुत कम मियाद और ज्ञातव्य बातो जटिलता आदि के कारण बहु रुपया बरबाद जावेगा। इंग्लैंड में या ज्यादा ऊंचे पौंड के नोट गै नूनी करार दिये गये थे, लेकिन भुनाने के लिए कोई समय नियत किया गया था। उस समय इतने और पेचीदे प्रश्न भी नहीं पूछे गये बेलजियम आदि देशों में सब नोट रद्दी कराए गये थे, वहां की स्थिति भिन्न थी। यह भी कि जर्मनी ने वहां अपने नोट लाखों करोड़ों की तादाद में बांट दिये। ऐसी भी स्थिति भारत में नहीं है। शत्रुओं ने जाली नोटों का प्रसार किया।

बाजार में अविश्वास

सरकार के इस प्रकार के आकस्मि आक्रमण का एक परिणाम यह होगा लोगोंका कारोबार तथा बैंक नोटों पर श्वांस उत्पन्न हो जायगा। १०००) नोटों का मूल्य ही ६-७०० रु. नहीं या जारहा, १००) रु. के नोट भी बहु बिकने लगे हैं। लोगों को अब जा जायदाद तथा सोने चांदी के कारोबार भी शंका होने लगी है। ऐसी स्थि बाजार के लिए बहुत चिन्ता है।

सरकार समझती है कि ऐसा से इन्कमटैक्स की बहुत वसूली हो जा लेकिन लोगों में अफवाह है कि सरक खजाने में जितना माल जायगा, उ एक बड़ा भाग इन्कमटैक्स के कर्मचारि को भी मिलेगा, क्यों कि दुर्भाग्य से कार का यह विभाग भी अपनी रिश्व खोरी के लिए बहुत बदनाम है।

पूजा-गीत

समय रण अभियान का फिर कौन पूजा-गीत गाऊं?
मंद स्वर, भींगे नयन-जल —
सूख, अब 'जय हिन्द' बोले!
कोटि डग के कूंच-रव से,
दहल दिल्ली आज डोले!
राष्ट्र—नेताजी! कहो फिर रक्त का टीका चढ़ाऊं?
उदित रवि हो कब गगन से —
सान्ध्य-आंचल अस्त- छिपता!
इन अडिग, उन्नत पगों पर —
कोटि युग का काल झुकता!
देव! मङ्गलमय तुम्हीं फिर देव कैसा मैं मनाऊं?
तुम अभय! तुम अमर विजयी!
पुण्य-पथ के तुम सुलेखा!
अलस पलकें खोल, इस पल,
कौन सबल स्वराज्य देखा!
तुम स्वराज्य स्वयं सखे! फिर कौन, किसको, मैं बताऊं?
उष्ण ऊषा के अधर-सी
रक्त की तेरी ललाई!
सींच कर, आजाद-सेना-
वल्लरी — तूने बढ़ाई!
चतुर्दिक तुम दीप्त फिर क्यों ज्योति तेरी में समाऊं!
एकता की भग्न-वीणा
— वरद कर में जब उठाई!
"हम सभी हैं एक" रवि —
रथ से उठी आवाज आई!
हिन्द ही सेना तुम्हारी तब कहो क्यों मैं न आऊं?
दर्द- आहत- स्नेह-उर भर-
आरती, मैंने संजोई!
चीख मौन, सुभाष!
कितनी भारती दृग मींच रोई!
सिसकते कंकाल सोते फिर कहो इनको जगाऊं?
× × × ×
समय रण अभियान का फिर कौन पूजा-गीत गाऊं?
— 'शलभ'

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

★ हिंसा अहिंसा विवेचन ★

शास्त्रीय दृष्टि से

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

★

१. अहिंसा शब्द का अर्थ

जब तक शब्दों का प्रयोग अपने परिमित और निश्चित क्षेत्र में रहे, तब तक उनके अर्थ समझने में अधिक उलझन नहीं होती, परन्तु ज्यों ही हम उसके वास्तविक अर्थ पर तरह-तरह के खोल चढ़ाने लगते हैं, या उन पर नये-नये बोझ लादने लगते हैं, त्यों ही वह समस्या के रूप में परिणत हो जाते हैं, उनकी तरह-तरह की व्याख्यायें होने लगती हैं, और धीरे-धीरे एक-एक शब्द पर कई-कई शास्त्र बन जाते हैं। आचार्य लोग सूत्र बनाते हैं, टीकाकार टीका करते हैं, और अन्त में भाष्यों और महाभाष्यों की नौबत आजाती है। "अहिंसा" शब्द को बहुत समय से ऐसी ही परिस्थितियों में से गुजरना पड़ रहा है। वह उन शब्दों में से है, जिनके अर्थों में समय और परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन होते आये हैं। अहिंसा शब्द जिन भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में प्रयुक्त हुआ है, और आवश्यकतानुसार क्षेत्र के अनुसार ही भावपरिवर्तन किया गया है, वह मुख्य रूप से चार हैं —

(१) अभिधा।
(२) धार्मिक।
(३) दार्शनिक।
(४) राजनीतिक।

हम अहिंसा शब्द के ठीक अभिप्राय तक पहुंचने के लिये चारों क्षेत्रों में हिंसा और अहिंसा शब्दों के भाव-परिवर्तनों पर एक सरसरी दृष्टि डालते हैं।

'अहिंसा' का अभिधेय अर्थ

'अहिंसा' का शब्दार्थ है, न हिंसा अर्थात् हिंसा से विपरीत।

हिंसा का धात्वर्थ है, हनन, या जान से मारना, वध करना (हिंस हिंसायाम् — चुरादि; उसके विपरीत 'वध न करने' को 'अहिंसा' कहते हैं।

वैदिक साहित्य में हन तथा हिंस धातु का प्रयोग प्रायः अपने अभिधेयार्थ में आया है। अथर्ववेद के निम्नलिखित मन्त्र में वह प्रयोग स्पष्ट है —

तयार्बुदे प्रणुत्रामिन्द्रो हन्तु वरं वरम्।
अमित्राणां शचीपतिर्मनीषां मोचि कश्चन।
११।१९।

हे वीर, शक्तिशाली इन्द्र (सेनापति) परास्त शत्रुओं के मुखिया लोगों को चुन-चुन कर (हन्तु) मार दे, कोई उन में से बचने न पाये।

इस मन्त्र में 'हन' धातु का प्रयोग मार डालने के अर्थ में किया गया है। इसी प्रकार 'मा हिंस्यात्सर्वभूतानि' आदि वाक्यों में 'मा हिंस्यात्' का स्पष्ट अर्थ यही है कि "जान से मत मारो।"

इस प्रकार हिंसा और हनन का धात्वर्थ और सादा अभिधेय अर्थ 'जान से मारना' और अहिंसा और अहनन का अर्थ है 'जान से न मारना।'

धार्मिक साहित्य में

वैदिक साहित्य में 'हनन' 'वध' और 'हिंसा' आदि पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग उनके मौलिक और सरल जान से मारना इस अर्थ में किया जाता था। उसके पश्चात् ब्राह्मण और स्मृति-ग्रन्थों के समय में उनका प्रयोग कुछ विस्तृत अर्थों में होने लगा। मनुस्मृति का एक श्लोक है —

धर्म एव हतो हन्ति
धर्मो रक्षति रक्षितः
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो
मा नो धर्मो हतो वधीत्।

हम धर्म का हनन करें, तो वह हमारा हनन करता है। इस कारण धर्म का हनन नहीं करना चाहिये — ताकि मारा हुआ धर्म हमें न मारे।

इस में हन् धातु का प्रयोग जिस अर्थ में किया गया है, वह उसके मौलिक-अर्थ से बहुत विस्तृत और भिन्न है। यहां 'हनन' का अभिप्राय है 'विरुद्ध आचरण करना।' इस तरह 'धर्म एव हतो हन्ति' का अभिप्राय हुआ "धर्म के विरुद्ध आचरण करने से मनुष्य को दुःख प्राप्त होता है।"

इस प्रकार कहीं-कहीं वध तथा 'हिंसा' शब्दों का प्रयोग कुछ विस्तृत अर्थों में होने लगा, परन्तु सामान्य रूप से उसका प्रयोग मूलार्थों में ही होता रहा। स्मृति-ग्रन्थों के अध्ययन से प्रतीत होता है कि उन में 'हनन' या 'हिंसा' मात्र को अधर्म या पाप नहीं माना गया। मनुस्मृति में धर्म के जो दस लक्षण या अंग बतलाये गये हैं, उनमें 'अहिंसा' का नाम नहीं है। धर्म के दस अंग निम्नलिखित हैं —

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं
शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्यासत्यमक्रोधो
दशकंधर्म-लक्षणम्।

इन अङ्गों में अक्रोध का परिगणन हैं, अहिंसा या अहनन का नहीं। उसका कारण है। स्मृतियों में आत्मरक्षा और दण्ड के तौर पर शारीरिक 'दण्ड' तथा 'वध' का स्पष्ट विधान है।

मनुस्मृति के कुछ उद्धरण हमारे इस आशय को स्पष्ट कर देंगे। दण्ड की महिमा बतलाते हुए मनु ने कहा है —

दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वाः
दण्ड एवाभिरक्षति
दण्डः सुप्तेषु जागर्ति
दण्डं धर्मं विदुर्बुधाः।

दण्ड प्रजा का शासन करता है, वही उनकी रक्षा करता है। जब मनुष्य सोते हैं, तब दण्ड जागता है। जानकार लोग दण्ड को धर्म का रक्षक होने के कारण धर्म नाम से पुकारते हैं।

उस दण्ड की व्यवस्था मनु ने निम्नलिखित की है —

वाग्दण्डं प्रथमं कुर्या-
द्धिग्दण्डं तदनन्तरम्
तृतीयं धनदण्डन्तु
वधदण्डमतः परम्।

दण्ड चार प्रकार का है। वाणी का दण्ड, उसके पश्चात् धिक्कार का दण्ड, तीसरा धन अर्थात् जुर्माने का दण्ड, और चौथा वधदण्ड अर्थात् मृत्यु दण्ड।

वधदण्ड अन्तिम दण्ड है, परन्तु वह है राजधर्म का एक आवश्यक भाग।

आगे चलकर दण्डविधान में मनु ने शारीरिक दण्ड का अनेक अपराधों के प्रसंग में विधान किया है। यथा —

यःकामात्दूषयेत्कन्यां
स सद्योवधमर्हति।

जो किसी कुमारी कन्या पर बलात्कार करे, उसका तुरन्त वध होना उचित है।

क्षत्रियों के परस्परयुद्ध में मारने को नियमित करार दिया गया है। उसके नियम बना दिये गये हैं — परन्तु यह मान लिया गया है कि युद्ध करना क्षत्रिय का धर्म है, और युद्ध में विजयी होने के लिए वध करना (मारना) आवश्यक होने से धर्म का अङ्ग है। मनु के दो श्लोक इस अभिप्राय को स्पष्ट कर देंगे।

आहवेषु मिथोऽन्योन्यं
जिघांसन्तो महीक्षितः
युध्यमानाः परं शक्त्या
स्वर्गं यान्त्यपराङ्मुखाः।

शासक लोग युद्ध में अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार डटकर लड़ने, और एक दूसरे का वध करने की चेष्टा करते हुए स्वर्ग को प्राप्त करते हैं।

रण में प्रहार के नियम भी हैं —

न कूटैरायुधैर्हन्या—
द्युध्यमानो रणे रिपून्
न कर्णिभिर्नापि दिग्धै-
र्नाग्निज्वलनतेजनैः।

कोई योद्धा शत्रु को गुप्त अस्त्रों से न मारे, और न ही तीखी धारवाले, जहर के बुझे हुये और जलते हुए फलक वाले तीरों से शत्रु का वध करे।

मारने के अन्य भी बहुत से नियन्त्रणात्मक नियम बनाये गये हैं, जिनका अभिप्राय युद्ध की भीषणता और क्रूरता को रोकना है। मनुस्मृति के उपर्युक्त उद्धरणों से दंड और युद्ध के सम्बन्ध में धर्म-शास्त्रों का मत स्पष्ट हो जाता है। उनके अनुसार केवल 'वध करना' 'मारना' या 'हिंसा करना' पाप नहीं है। इतना ही नहीं, उनमें दण्ड के लिये, और युद्ध में शत्रु और आततायी को शारीरिक कष्ट देना यदि आवश्यक हो तो मारना राजधर्म का आवश्यक अङ्ग बतलाया गया है।

— क्रमशः

———

१९४४ के परिणाम

हिन्दुस्थान

ने सफलता की एक और मंजिल पूर्ण की

❀ उन्नति पर प्रकाश ❀

चालू बीमा	३२ करोड़ से ऊपर
कुल पूंजी	६ करोड़ ८९ लाख से ऊपर
प्रीमियम की आय	१ करोड़ ५० लाख से ऊपर
दावे का भुगतान (१९४४)	३७ लाख ८० हजार से ऊपर
नया कारोबार (१९४४)	१० करोड़ रुपये से ऊपर

हिन्दुस्थान को आपरेटिव इन्श्योरेंस सोसायटी लि०

हेड आफिस—हिन्दुस्थान बिल्डिंग्स, कलकत्ता।
देहली ब्रांच—हिन्दुस्थान बिल्डिंग्स, न्यू देहली।

दिमाग की गर्मी

[श्री राजेन्द्र सक्सेना]

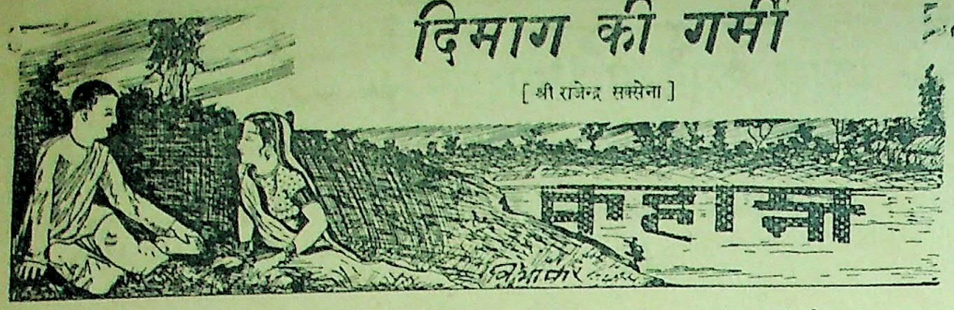

पात्र

रामी — एक जवान मजदूरनी
नन्दू — रामी का पति
रहमत — ठेकेदार का आदमी
दुलारी — एक अन्य मजदूरनी,, मजदूर, ठेकेदार, मिस्त्री, पुलिस इन्सपेक्टर, कांस्टिबल आदि।

स्थान — संयुक्तप्रान्त के एक नगर में बनता हुआ एक मकान।

समय — शाम के चार बजे

(परदा उठने पर मकान के दाहिनी ओर की दीवार बनने का दृश्य दिखाई देता है। नीचे से दीवार के ऊपरी सिरे तक दो बल्लियां तिरछी गड़ी हुई हैं, जिन पर लकड़ी के तख्ते कसे हुए हैं। ऊपर तक जाने के लिये ये सीढ़ी का काम देते हैं। रामी सिर पर चूने से भरा हुआ तसला लेकर ऊपर चढती हुई दिखाई देती है। नीचे पत्थर ढोने का कार्य बन्द किये हुये नन्दू उसे एक टक देखता है। रामी की उम्र सत्रह-अठारह वर्ष की है। वह एक लंहगा और ओढनी पहने हुए है। लहंगा कई स्थान से फट गया है। उसी प्रकार ओढनी भी। रंग सांवला है, और शरीर का प्रत्येक अंग सुडोल, है। उचित अनुपात लिए हुये। नन्दू घुटने तक मैली धोती और मैली कमीज पहने हुये है। और सिर पर बेतरतीब बढ़े हुए बाल हैं। वह युवक है किन्तु आंखों में निराशा और चेहरे पर पीलापन है। रामी खाली तसला लिए हुये उतरती है। नन्दू उसके पास आ जाता है। रामी जब नीचे आती है, उसका दम फूल जाता है। अपने कुछ आगे बढे हुए पेट को वह एक हाथ से सहलाती है।)

नन्दू — कैसा जी है तेरा ? सुबह ही कहा था मैंने तो, काम पर न चल, पर कौन सुने मेरी ?

रामी — (कुछ कहने के लिये सांस भर कर चुप रह जाती है।)

नन्दू — क्या बात है·····

रामी — मेरा जी मितलावे है। कुल्ली करूंगी।

नन्दू — तू घर चली जा।

रामी — अब क्या करूंगी जाकर एक आध घड़ी की बात और है। सूरज तो नीचे आ गया है फजल में जमादार नागा कर देगा।

नन्दू — (जमादार की बात सुन कर घबराये स्वर में) चल जल्दी कुल्ली करले।

(रामी और नन्दू कोने में स्थित पाइप पर जाते हैं। रामी पानी निकाल कर कुल्ला करती है फिर ओढ़नी से मुंह पोंछ कर नन्दू के पास लौट आती है। चूने से भरा हुआ तसला उठाकर वह मचान पर चढ़ने की चेष्टा करती है, पर नन्दू उसके हाथ से तसला लेकर स्वयं मचान पर चढ़ जाता है। रामी नन्दू के तसले में फिर चूना भर लाती है और नन्दू उसे ऊपर लेजाता है। कुछ देर यही क्रम रहता है, इसी बीच दुलारी नन्दू के पास आती है। वह अधेड़ उम्र की स्त्री है। आंखों में काजल लगा हुआ है। गाल पिचके हुये पीलापन लिये हैं। हाथ में खाली तसला है)।

दुलारी — तू यहां क्या कर रहा है नन्दू ? मिस्त्रीजी वहां तुझे पुकार रहे हैं। पत्थर कौन लावेगा ?

नन्दू — क्यों ? बदरी और किसना कहा गये ?

दुलारी — (इठलाती हुई) मैं क्या जानूं ?

नन्दू — तो जाकर कहदे मिस्त्री से — मैं नहीं आता।

दुलारी — (आंखें मटका कर) मिस्त्रीजी कहते थे — जमादार से आज तेरी सिकायत करेंगे।

नन्दू — (दृढ़ता से) जा-जा-देख-लूंगा जमादार को भी।

दुलारी — (आश्चर्य की मुद्रा से, सहम कर) अच्छा।

(दुलारी चली जाती है। दूसरी ओर से रहमत प्रवेश करता है। रहमत तीस-बत्तीस वर्ष का पुरुष है। चेहरे पर बलदी हुई घनी मुंछें हैं। वह एक धुला हुवा चुस्त पायजामा और कमीज तथा वास्कट पहने हुये है। सिर पर साफा और हाथ में चमड़े से गुथा हुआ छोटा सा बेंत है। चूने के ढेर के पास रामी के समीप एक क्षण को वह ठिठकता है। आसपास के मजदूर सलाम करते हैं। नन्दू उसी प्रकार मुंह बाये हुये खड़ा रहता है —)

रहमत — (नन्दू के पास आकर रोब जमाते हुए) क्यों बे नन्दू के बच्चे दो घंटे से कहां था ? मिस्त्री तेरी शिकायत करता था।

नन्दू — यहीं तो था।

रहमत — झूठ बोलता है साला !

नन्दू — देखिये साब गाली-वाली मत दीजये।

रहमत — तू बड़ा हरामखोर है बे।

(रहमत दूसरी ओर चल देता है। शोर सुनकर आसपास के मजदूर नन्दू के पास इकट्ठे हो जाते हैं। नन्दू उसी प्रकार उच्च स्वर में बोलता है। दुलारी कोने में खड़ी होकर चुपचाप सुनती है —)

नन्दू — देखा जमादार आदमी को आदमी नहीं समझता। दिनभर जी तोड़-कर मेहनत करते हैं उस पर गालियां खाते हैं। यह जमादार बड़ा शैतान है शैतान। सबकी चुगली करता है ठेकेदार से। मजूरी भी इसी ने कम करादी है सबकी —

(अन्य मजदूर सुनकर केवल सिर हिलादेते हैं पर कोई कुछ नहीं बोलता है)

नन्दू — (उत्साहित होकर) दिन-भर मेहनत करने पर चार आने मिलते हैं — चार आने में क्या होता है ?

(सब चुप रहते हैं। दुलारी तेजी से एक ओर चली जाती है। कुछ देर बाद आगे — आगे बीड़ी फूंकता हुवा रहमत और पीछे-पीछे दुलारी आते दिखाई देते हैं। मजदूर अपना-अपना काम करने लगते हैं। नन्दू तसले में पत्थर भर कर चल देता है। रामी चूना लेकर मचान पर जाती है। रहमत उसकी प्रतीक्षा में चूने के ढेर के पास खड़ा रहता है)

रहमत — (रामी के लौटने पर) क्या हाल है तेरा रामी ?

(फिर धीरे-धीरे रामी के पास आ जाता है)

रामी — (चुप)

रहमत — बड़ी मगरूर है, बोलती तक नहीं।

(रामी उसी प्रकार तसले में चूना भर कर मचान पर चढ़ने लगती है। रहमत बीड़ी के टुकड़े को जोर से जमीन पर फेंकता है, फिर धीरे-धीरे रामी के पीछे-पीछे मचान पर चढ़ता है। रामी उधर से उतरती हुई दिखाई देती है। रहमत बीच रास्ते में खड़ा हो जाता है रामी बच कर निकलना चाहती है। रहमत अपनी अंगुलियों से उसकी ठोढ़ी ऊपर उठाता है। रामी क्रोधित हो उसके सिर में एक थप्पड़ लगाती है। रहमत का साफा नीचे गिरता है। रहमत क्रोधित हो रामी पर लात से प्रहार करता है। रामी लुढ़कती हुई नीचे गिरती है। रहमत कुछ बुदबुदाता हुआ ऊपर चढ़ देता है एक मजदूर दौड़कर इसकी सूचना नन्दू को देता है। नन्दू दौड़ता हुआ आता है और चेतनाशून्य रामी के समीप बैठ जाता है)

नन्दू — रामी ! ओ रामी !!

रामी — (उसी प्रकार अचेत पड़ी रहती है)

नन्दू — (रामी का शरीर हिलाते हुये) यह तो बेहोश हो गई।

(इसी समय ऊपर से रहमत उतरता हुवा दिखाई देता है। नन्दू सहसा उठकर दिवार के पास पड़ा हुआ फावड़ा उठा कर लाता है और पीछे से ताककर उसके कुन्दे का रहमत पर प्रहार करता है। रहमत लड़खड़ा कर गिरता है। नन्दू जोर से अट्टहास करता है। आस पास के मजदूर स्त्री-पुरुष सब उसे घेर लेते हैं। एक व्यक्ति दौड़कर ठेकेदार को सूचना देता है। कुछ समय में ठेकेदार प्रवेश करता है।

ठेकेदार — (एक हाथ पतलून की जेब में डालते हुये तथा दूसरे से गले में बंधे हुये मफलर को ठीक करता हुआ) रहमत, अरे रहमत !

(रहमत तबतक उठकर खड़ा हो जाता है। उसके सिर से रक्त बह रहा है। जिस में कपड़े सने हुये हैं —)

रहमत — (ठेकेदार के पास आ-कर) सरकार ?

(स्वर धीमा है)

ठेकेदार — क्या बात है रहमत, नन्दू ने तुम्हें क्यों मारा है ?

रहमत — (उसी स्वर में) सर-कार, यह मजदूरों को बरगला रहा था कि काम पर मत लगो। ठेकेदार बेईमान आदमी है। मैंने उसे रोका तो इसने — देखिये सरकार ····· (कहता-कहता रुक जाता है)

(रामी तबतक उठ खड़ी होती है। नन्दू उसी के पास चुपचाप खड़ा है)

ठेकेदार — अच्छा इसकी यह हिम्मत। तुम अस्पताल जाओ रहमत मैं इसे देख लूंगा।

(मजदूर एक-एक करके चुपचाप खिसक जाते हैं। रहमत धीरे-धीरे एक ओर चला जाता है। ठेकेदार नन्दू के पास आता है)

ठेकेदार — क्यों बे बदमाश अभी तुझे जेल की हवा खिलाता हूं (साथ वाले पुरुष से) भीखू जा, थाने से दरोगा जी को तो बुला ला।

(भीखू चल देता है ठेकेदार के इशारे से दो आदमी नन्दू को पकड़ लेते हैं। रामी ठेकेदार के पास आकर कहती है —) [शेष पृष्ठ २२ पर]

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

धारावाहिक उपन्यास —

स र ला

लेखक —
श्री श्रीदेव

[गतांक से आगे]

[४]

भारती के जाने पर सरला एक प्रकार से निश्चिन्त सी हो गयी, परन्तु राधा की चिन्ता घटने की जगह बढ़ गयी, क्योंकि भारती के जाते ही उसे ध्यान आया कि माणिकलाल को अब तक दफ्तर से वापिस आजाना चाहिये था। उसके दफ्तर से वापिस आजाने का समय लगभग साढ़े पांच बजे था और अब पौने छः — छः बज चुके थे। राधा ने अपना विचार सरला से प्रकट करते हुए कहा — 'सरला ! तेरे भाई अब तक नहीं आये। नित्य का समय तो हो चुका। मुझे चिन्ता हो रही है।'

सरला — 'ऐसी चिन्ता की क्या बात है, भाभी ! दफ्तर में देर हो गयी होगी; भाई आते ही होंगे।' सरला निश्चिन्त थी क्योंकि उसे उस बातचीत का बिल्कुल पता न था जो दफ्तर जाने से पूर्व पति पत्नी में हुई थी।

राधा को अब वह सब कड़वी बातें याद आरही थीं जो उसने माणिकलाल से कही थीं। उस समय जो व्यंगबाण उसने माणिकलाल पर छोड़े थे, वह लौट कर अब अपनी ही छाती में लग रहे थे। निर्दोष पति पर उसने कैसा कलंक लगाया। धूर्त प्राणजीवन की बहकाहट में आकर उसने कैसा अनर्थ किया — यही सब सोच सोच कर उसके हृदय में अनुताप की ज्वाला उठने लगी। अब उसकी यही इच्छा थी कि माणिकलाल जल्दी से जल्दी लौटे और राधा उसके सामने अपना अनुताप प्रकट कर दे। साथ ही हम यह भी देख आये हैं कि माणिकलाल और राधा की जोड़ी समवाय सम्बन्ध से जुड़ी हुई थी। अत्यन्त विशेष कारण को छोड़ कर दोनों साथ ही रहते थे। माणिकलाल किसी क्लब में नहीं जाता था और राधा कभी अड़ोस-पड़ोस में जाकर न बैठती थी। दफ्तर के अतिरिक्त प्रायः सारा समय माणिकलाल परिवार के साथ ही बिताता था। चौपाटी पर घूमने जाते तो साथ, शाम को सिनेमा जाते तो साथ और कहीं मित्र बन्धुओं के यहां मिलने जाते तो भी साथ ही जाते थे।

माणिकलाल समय का बहुत पाबन्द था। सब काम समय पर करना उसका नियम था और समय उलंघन अपवाद था। सरला की निश्चिन्तता को भंग करते हुए राधा ने कहा 'सरला, ! तुझे मालूम नहीं आज मुझ से एक बहुत बड़ी भूल हो गयी। मुझ में एक बड़ा दोष है कि जब कभी मुझे गुस्सा आ जाता है तो होश ठिकाने नहीं रहते। जो मुंह में आता है, बोल देती हूं। आज उनके दफ्तर जाने से पहिले न जाने मैंने क्या-क्या कह दिया। मेरा दिल कांप रहा है।'

सरला — 'तो क्या कोई ऐसी बात कह दी थी जिससे भाई के आने में देर हो जाय।'

राधा ने काऊच पर से उठते हुए कहा — 'सरला ! मैं क्या कहूं। मुझे तो डर लगता है कि वह इस समय आयेंगे भी या नहीं ?'

सरला — 'ऐसा मत कहो, भाभी ! भाई ऐसी भूल करने वाले नहीं हैं। छोटी सी बात पर रुष्ट होकर घर न आंय, ऐसा नहीं हो सकता। अब आते ही होंगे। मैं चाय तैयार करती हूं। बच्चों के स्कूल से वापिस आने का भी समय हो रहा है। यह कह कर सरला चाय बनाने रसोई में चली गयी। राधा दरवाजे की चौखट पकड़ कर माणिकलाल की प्रतीक्षा करने लगी। प्रतीक्षा करते-करते लगभग आधा घण्टा हो गया। राधा के मन में तरह-तरह के विचार उठ रहे थे। उसे अपने व्यवहार पर और अकारण किये हुए क्रोध पर ग्लानि पैदा हो रही थी। बीच-बीच में यह सोच कर दिल धड़क उठता था कि मन की विक्षुब्धता के कारण कहीं किसी दुर्घटना में न फंस गये हों। इसी बीच में बच्चे स्कूल से वापिस आगये। सरला उन्हें चाय पिलाने लगी। अब तो राधा का जी बहुत घबराने लगा और वह नीचे जाकर सेठ के दफ्तर से उस दफ्तर में टेलीफोन करने का विचार करने लगी जहां माणिकलाल काम करता था। उसी समय उसने अनुभव किया कि सीढ़ियों पर कोई आदमी चढ रहा है। वह बड़ी आशा से पांव की आहट सुनने लगी। आहट कुछ हल्की मालूम होती थी, फिर भी आशा के बल से राधा की कल्पना ने पैरों की उस आहट को कुछ भारी बना दिया और उसकी आंखें माणिकलाल की प्रतीक्षा करने लगीं। कल्पना-कल्पना ही निकली। आने वाले व्यक्ति के ऊपर आने पर मालूम हुआ कि वह माणिकलाल नहीं, माणिकलाल के दफ्तर का चपरासी है।

चपरासी की शक्ल देखकर राधा का दिल एकदम बैठ गया। उसने अनुभव किया कि यह तो शुभ लक्षण नहीं है। चपरासी के पास आने पर उसके कुछ कहने से पहले ही राधा ने पूछा—'बाबू नहीं आये।'

चपरासी ने उत्तर दिया—'वह तो रेल से कल्याण की ओर चले गये।'

राधा के मुंह से जो शब्द निकला वह चीख के समान था—'कब चले गये ?'

चपरासी ने उत्तर दिया—'७बजे, बोरी—बन्दर से जो लोकल ट्रेन जाती है, उसमें बैठ कर गये।' यह कह कर उसने कुर्ते की जेब में से एक कागज का टुकड़ा निकाला, और राधा के हाथ में देते हुए कहा—'जाते हुए यह दे गये थे। मैं सीधा स्टेशन से ट्राम द्वारा यहीं आ रहा हूं। राधा ने कांपते हुए हाथों से पर्चा लेकर पढ़ा। पढ़ते समय लेख की पंक्तियां मानों कागज पर चक्कर काट रही थीं। कागज पर लिखा था —

'तुम्हारी इच्छानुसार मैं इतवार तक के लिये जा रहा हूं। इतवार को सत्यासत्य का निर्णय भी हो जायेगा और सम्भवतः सरला की संरक्षा के लिये हमारे सहारे की आवश्यकता भी न रहे। कोई चिन्ता मत करना। मैं सुरक्षा में रहूंगा। सरला के मामले में जो कुछ करना चाहिये, वह करता रहूंगा — माणिकलाल।'

पत्र दफ्तर के सादे कागज पर लिखा हुआ था और खुला ही चपरासी के हाथ में दे दिया गया था। यह उस विषाद का सूचक था जो राधा के निर्मूल आरोप भरी बातों से माणिकलाल के मन में पैदा हुआ था। राधा ने क्रोध के समय यह भाव प्रकट किया था कि वह माणिकलाल और सरला को इकट्ठा नहीं देख सकती। माणिकलाल ने उसका यह उपाय किया कि जब तक सरला का घर में रहना आवश्यक है तब तक के लिये घर से अपने आप को अलग कर लिया। हम देख आये हैं कि राधा क्रोध में चाहे कुछ कह दे पर वह माणिकलाल की अलहदगी को सर्वथा नहीं सह सकती थी न यही बर्दाश्त कर सकती थी कि उसके पति पर किसी तरह का कोई कष्ट आये। यदि भारती के मुंह से सरला की निर्दोषता का समर्थन सुन कर राधा का क्रोध शान्त होकर पश्चात्ताप के रूप में परिणत न हो गया होता तो भी वह माणिकलाल का घर से जाना किसी प्रकार भी न सह सकती परन्तु अब तो दशा ही दूसरी थी। उस पत्र को पढ़ कर उसे ऐसा अनुभव हुआ जैसे उसने अपने हाथ से अपनी सबसे प्यारी चीज को धक्का दे दिया हो वह खड़ी न रह सकी। हाथों से सिर पकड़ कर देहली पर ही बैठ गयी। उसी समय सरला दरवाजे पर बातचीत की आवाज सुनकर रसोईघर से आयी। राधा को देहली पर बैठा देखकर उसने हाथों का सहारा देते हुए कहा — 'भाभी ! यहां क्यों बैठती हो। चलो, अन्दर काऊच पर चलो।'

रात के समय राधा बिस्तर पर नहीं सोयी। काऊच पर ही लेट गयी ताकि घण्टी बजने पर तत्काल दरवाजा खोल सके। उसे माणिकलाल के आने की आशा थी, ऐसा पूरा तो नहीं कह सकते। यदि आशा और निराशा को तोल कर देखा जाता तो शायद निराशा का ही पड़ला भारी रहता। परन्तु फिर भी सहज मनुष्य स्वभाव के अनुसार राधा अपने आपको यह मानने के लिये मजबूर कर रही थी कि सरला ठीक कहती है। वह रात के समय किसी समय घर पर अवश्य आ जायेंगे।

राधा देहलीज से उठती हुई बोली 'सरला, मुझसे बड़ा अपराध हो गया।'

सरला — 'क्या हुआ, भाभी ! क्या भाई अभी देर में घर आयेंगे ?'

राधा — 'कब आयेंगे; पता नहीं। यह देख। इस कागज में क्या लिखा है ?'

राधा ने कागज का टुकड़ा सरला के हाथ में पकड़ा दिया। सरला उसे पढ़ कर अजीब चक्कर में पड़ गयी। वह उसकी पंक्तियों के अर्थ पूरी तरह न समझ सकी। पत्र में लिखा था — 'तुम्हारी इच्छानुसार जा रहा हूं।' भाभी ने ऐसी इच्छा क्यों की ? आगे लिखा था कि 'सरला को संरक्षा के लिये हमारे

(शेष पृष्ठ १४ पर)

सरला को उसके पिता शिक्षा प्राप्त करने के लिये बम्बई के महिला विद्यालय में दाखिल कर गये थे। विद्यालय के प्रिन्सिपल प्रो० प्राणजीवन ने उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखा। सरला प्राणजीवन को गुरु और बड़ा भाई मानती थी। उसे विवाह के प्रस्ताव से बड़ा मानसिक धक्का पहुँचा, यहां तक उसे विद्यालय के आश्रम में रहना असम्भव प्रतीत होने लगा। वह आधी रात के समय आश्रम छोड़कर चली गई।

माणिकलाल उसे खोज कर अपने घर ले आया। इधर प्राणजीवन ने माणिकलाल की पत्नी को कह दिया कि सरला को माणिकलाल ही भगा लाया है।

नदियों के उच्छृंखल प्रवाह

[श्री विद्यासागर

एक ओर तो हमारे देश में बाढ़ आदि से करोड़ों वर्ग फुट जल व्यर्थ बह जाता है और साथ ही जन-धन को क्षति पहुंचा जाता है; तो दूसरी ओर इस देश के करोड़ों निवासी जलाभाव के कारण अपने दैनिक कार्य तक चलाने में असमर्थ हैं। खेतीबाड़ी के लिये तो पानी मिलना दूर रहा, पानी पीने के लिये भी तरसते हैं। सचाई यह है कि इस देश को पानी देने के मामले में प्रकृति ने कतई कंजूसी नहीं की। फिर भी कहीं तूफान आ जाते हैं, कहीं सूखा पड़ जाता है। वस्तुतः हमारी इस जल-संपत्ति के वितरण का आजतक प्रबन्ध नहीं किया गया।

इसके विपरीत १५ मार्च १९४५ को उड़ीसा सरकार ने कटक में एक बाढ़ सम्मेलन का आयोजन किया था। इस सम्मेलन में सदस्यों ने जो विचार प्रगट किये उसका सारांश यह था — 'अधिक मात्रा में जल का होना एक पाप है। यदि अत्यधिक मात्रा में पानी आ ही जाय तो केवल यही करने की आवश्यकता है कि सुव्यवस्थित बहाव से उस पानी को समुद्र तक जाने दिया जाय।' सदस्यों की इन मिथ्याधारणाओं के कारण ही सम्पूर्ण राजस्थान, मध्य-भारत के बहुत से प्रदेश, पूर्वी रियासतें, सिन्ध और पश्चिमी पंजाब के अनेक स्थान प्यासे पड़े हुए हैं जब कि उनके पड़ौस में ही विशाल जलराशि अबाध-गति से समुद्र की ओर दौड़ी चली जा रही है।

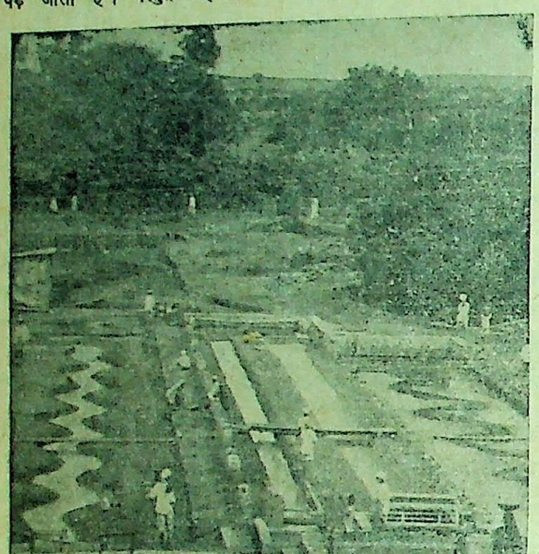

नदी के तिर्यक्-प्रवाह के प्रभाव का अध्ययन।

क्रियात्मक रूप में न सही, कम से कम सरकार की मशीनरी ने इस पर विचारना अवश्य आरम्भ किया है। इस सम्बन्ध में विविध योजनाएं बनायी जा रही हैं और परीक्षणात्मक कार्य भी प्रारम्भ किये गये हैं।

कुछ प्रस्तुत योजनाएं

उड़ीसा में आने वाली बाढ़ों से जनता को बचाने के लिये यह सुझाव उपस्थित किया गया है कि बड़े बड़े जल-कुण्डों का निर्माण किया जाय और इस प्रकार नदियों में बहने वाले जल का नियन्त्रण और संचय किया जाय। इससे सस्ती विद्युत प्राप्त की जा सकती है तथा जहाजों के आवागमन के योग्य मार्ग बना कर व्यावसायिक स्तर ऊंचा उठाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त नदियों के साथ बहकर आने वाली मिट्टी के प्रश्न पर भी विचार किया गया है।

इसी प्रकार की योजना सिन्ध के लिये तैयार की गई है। १९४२ में सिन्धु-नदी पर लायड-बांध बांधा गया था। यह बांध संसार का सब से बड़ा बांध है। फिर भी सिन्ध की लाखों एकड़ भूमि प्यासी है। अब सिन्ध सरकार ने सिन्ध-नद पर दो नये बांध तैयार करने की योजना बनाई है जिससे ५० लाख एकड़ भूमि के सींचे जाने की आशा की जाती है। इन बांधों को तैयार करने में ८ वर्ष का समय और ३५ करोड़ रुपया खर्च होने की आशा की जाती है।

उपेक्षित राजस्थान और पश्चिमी पंजाब

पानी को ऊपर उठा कर अभी तक राजस्थान पहुंचाने का प्रयत्न नहीं किया गया। पश्चिमी पंजाब के सिन्धुनद के पार के प्रदेशों में जल की बड़ी विकट समस्या है। बरसात के दिनों में बरसाती नालों का पानी सारे प्रदेश में प्रलय सी मचा देता है, परन्तु शेष वर्ष में वहां के निवासियों को पीने के लिये भी पानी मिलना दुर्लभ हो जाता है। दाजल तथा उसका निकटस्थ प्रदेश और तौंसा आदि स्थानों में यद्यपि लोग छोटे छोटे जल-कुण्डों में पानी इकट्ठा अवश्य करते हैं; परन्तु सारा जल ६ मास के लिये भी पर्याप्त नहीं होता। शेष मासों में पानी का एक अच्छा खासा व्यवसाय होता है, क्योंकि पानी दूर-दूर से बेचने के लिये लाया जाता है। यदि वहां पहाड़ियों को बांधकर जल-संचय किया जाय तो न केवल वहां के निवासी तृप्त हो जायेंगे अपितु भूमि के उत्पादन में इस समय की अपेक्षा २०० गुना वृद्धि हो सकती है। प्राकृतिक दृश्यावलियां झुंगे में मिलेंगी।

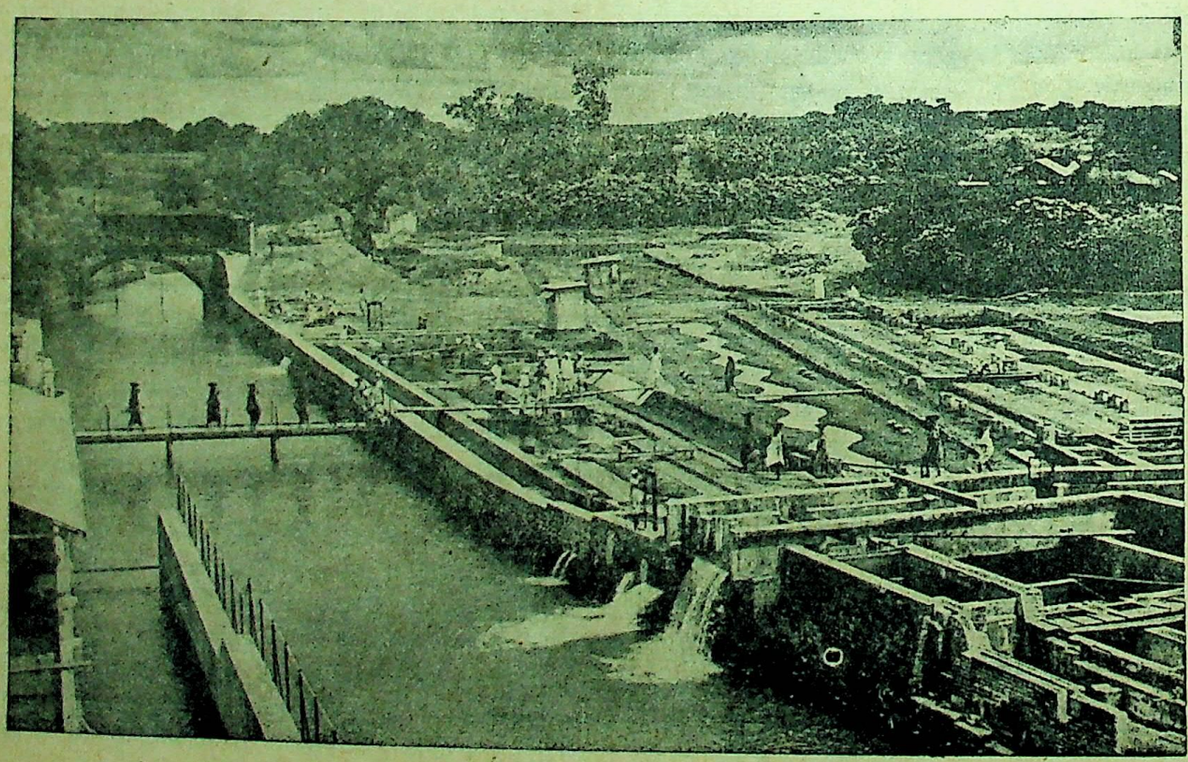

पूना की प्रयोगशाला का एक दृश्य।

CC-0. Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

पर वैज्ञानिकों का नियन्त्रण

विद्यालङ्कार]

दिल्ली की समस्या

गत कुछ समय से दिल्ली में पानी की कमी का दिल्ली-निवासी अनुभव कर रहे हैं, जब कि यमुना उन के पास बहती है। विशेषतः ऊपर की मंजिलों में रहने वाले लोगों को शिकायत है कि ऊपर के नलों में पानी नहीं चढ़ता। गरमियों के दिनों में नई दिल्ली में जलाभाव के कारण विशेष कठिनाई अनुभव की जाती है। इसी कारण इस समस्या की ओर भी सरकार का ध्यान गया है।

परीक्षणात्मक प्रयत्न

पूना की भारतीय जलीय-अनुसन्धान प्रयोगशाला में केन्द्रीय सरकार की ओर से जल को बांध कर अपने प्रयोग में लाने के लिये कुछ परीक्षण किये गये हैं। इनका सविस्तार वर्णन प्रयोगशाला की १९४४ की वार्षिक रिपोर्ट में किया गया है।

यह अनुभव किया जाता है कि ग्रीष्मकाल में यमुना अपनी धार छोड़ कर मार्ग बदल लेती है, इस तथ्य को दृष्टि में रखते हुए १९४४ में २२ परीक्षण किये गये। इन में से १० तो आधार भूत सिद्धान्तों को दृष्टि में रख कर किये गये और १२ प्राप्त तथ्यों के आधार पर किये गये। इन परीक्षणों में कृत्रिम जलधाराओं पर निम्नस्तर के बांध अथवा ऊंचे बांध निर्माण करके सापेक्ष प्रभाव का अध्ययन किया गया। यह अनुभव किया गया कि ऊंचे स्तर का बांध बनाने पर परिस्थिति वैसे ही रहेगी। परन्तु यदि निम्न स्तर का बांध बनाया गया तो पम्पिंग स्टेशन में सर्दियों में भी नल अपना काम जारी रख सकेंगे। इसके अतिरिक्त इन परीक्षणों के अनुसार नदियों के मार्ग को ठीक करने, पुलों के नीचे की भूमि की काट-छांट की रोक-थाम और रेत के नियन्त्रण आदि समस्याओं पर अध्ययन किया गया।

१९४४ के प्रथमार्द्ध में ताप्ती, नर्मदा और साबरमती नदियों की बाढ़ ने सूरत-रांदेर सड़क तथा सूरत नगर की दीवार को पर्याप्त क्षति पहुंचाई थी। इस प्रकार की दुर्घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिये तथा बाढ़ की रोक-थाम के लिये इन परीक्षणों के आधार पर कुछ सुझाव उपस्थित किये गये हैं। इसी वर्ष में ही उक्त केन्द्र नेभूमि की काट-छांट, पुलों के नीचे की भूमि की काट-छांट, नदियों के मार्ग को ठीक करने, रेत के नियन्त्रण, एक स्थान पर वर्षा के पानी के सिमटने, बांध, जल-भण्डार आदि से सम्बद्ध बहुत से विषयों पर परामर्श उपस्थित किये।

अन्य भी अनेक समस्याओं पर बिना प्रयोगात्मक परीक्षण किये अनेक सुझाव तथा परामर्श उपस्थित किये गये हैं और उनके विवरण भी तैयार किये गये हैं। इन में बम्बई में जल-संचय-योजना, दामोदर नदी की बाढ़ रोकने तथा सिंध की राइस नहर में और सक्खर में सिन्ध नदी में सुदृढ़ इमारतों के आसपास नीचे की भूमि की काट छांट सम्बन्धी समस्याएं भी सम्मिलित हैं।

चित्र परिचय —

पूना की प्रयोगशाला में नदियों के छोटे संस्करण तैयार किये गये और उनमें जलप्रवाहित करके परीक्षण किये गये।

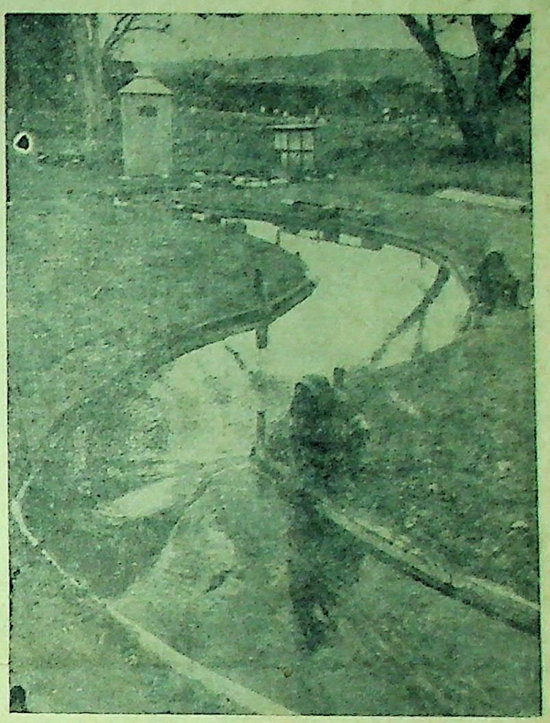

हुगली नदी का छोटा संस्करण।

पीछे की ओर एक बांध बनाया गया है।

(पृष्ठ ११ का शेष)

सहारे की आवश्यकता न रहेगी।' भाई ने ऐसा क्यों लिखा ? सरला ऐसे प्रश्न राधा से पूछना चाहती थी परन्तु उसके चिन्ताग्रस्त दुःखी चेहरे को देख कर पूछने की हिम्मत न हुई केवल इतना कहा — 'मैं तो उस पत्र का कुछ भी अभिप्राय न समझ सकी। भाई को इस तरह हम लोगों को अकेले छोड़ कर नहीं जाना चाहिये था।'

राधा ने काऊच पर बैठ कर दोनों हाथों से अपना मुंह ढक लिया और सिसक-सिसक कर रोने लगी। सरला पास बैठ कर दिलासा देने लगी — 'भाभी ! रो मत। भाई कहीं दूर नहीं गये होंगे। रात में अवश्य आ जायेंगे।'

राधा आंसुओं में से बोली — 'सरला ! तू अपने भाई को नहीं जानती। इन्हें जल्दी गुस्सा नहीं आता परन्तु जब कोई बात उन्हें चुभ जाय तो उसे जल्दी भूलते भी नहीं। मैंने उन्हें आज बहुत कड़वी बात कह दी थी। पता नहीं; अब क्या होगा ?'

इस समय तीनों बच्चे भी बैठक में आगये थे। छोटी लड़की वरदा मां के गले से लिपट कर कह रही थी — 'मां ! मैं अब तुम्हें न रोने दूंगी। बापू बहुत बुरे हैं जो तुझे रुलाते रहते हैं। वह आयेंगे तो मैं उन से खूब लड़ूंगी।

इसी तरह देर तक यह प्रसङ्ग रहा। धीरे धीरे राधा का मन कुछ शान्त हुआ तो उसे कुछ ख्याल आया कि दफ्तर का चपरासी अभी दरवाजे के बाहर खड़ा है। उसे अन्दर बुलाकर राधा ने जिरह की —

राधा — 'बाबू दफ्तर से कितने बजे उठे ?

चपरासी — 'छः बजे के बाद उठे। दफ्तर का काम पूरा करके चिट्ठी लिखते रहे।'

राधा — 'फिर कहां गये ?'

चपरासी — 'बोरिवन्द स्टेशन पर।'

राधा — 'कहां का टिकट लिया ?'

चपरासी — 'यह मैं नहीं देख सका क्योंकि मैं टिकट घर से दूर ही खड़ा रहा। वह मुझे वहीं खड़ा रहने को कह गये थे। जब प्लेट-फार्म पर जाने लगे तब मुझे यह चिट्ठी देकर घर भेज दिया।'

राधा — 'क्या कुछ और भी कहा था ?'

चपरासी — 'और कुछ नहीं कहा था। यह मैंने बाहर से ही देखा कि वह कल्याण जाने वाली लोकल ट्रेन में बैठ गये। जब ट्रेन चलदी तब मैं इधर चला आया।

राधा ने उससे अधिक प्रश्न नहीं किये। उसे इससे अधिक कुछ मालूम भी नहीं था।

हाथ का इशारा पाकर चपरासी चला गया। उसके जाने के पश्चात राधा और सरला में देर तक किंकर्तव्यता पर परामर्श होता रहा, जिसका परिणाम कुछ भी नहीं निकला। क्यों कि जब यही पता नहीं चल सका कि माणिकलाल कहां गये तो उन्हें वापिस लाने का उद्योग कैसे किया जाता ? बोरिबन्दर से कल्याण तक कई बस्तियों में माणिकलाल के मित्र और बन्धु रहते थे। दादर में उसका चचेरा भाई रेलबाबू था, तो घाटकूपर में उसका ममेरा भाई कपड़े की दूकान करता था। मित्र तो कई बस्तियों में फैले हुए थे। राधा यह निश्चित नहीं कर सकी कि वह किसके पास गये होंगे ? हां सरला के इस वाक्य ने उसे कुछ ढ़ाढस अवश्य दिया 'भाभी ? रो मत। भाई कहीं दूर नहीं गये होंगे। रात में अवश्य आ जायेंगे।

— क्रमशः

---

२४ घण्टे में कीड़े मर जाते हैं !

सोटा छाप सोटा छाप

दर्द के लिये रामवाण औषध सूखी व गीली खाज, चट्टे, फुन्सी आदि समस्त चर्म रोगों को तत्काल अच्छा करती है। इस औषधि के प्रभाव से हड्डी तक पहुंचे हुए रोग तुरन्त अच्छे होते हैं।

नोगी एण्ड कम्पनी, बम्बई ४.

आंद्वितीय आकर्षक मूंगफली तेल मूंगफली बीजा एवं रेडी तेल की सप्लाई के लिये:—

रामजीलाल मोदी एण्ड को०

वरंगल (निजाम स्टेट)

टेलीग्राम BHANU फोन नं० १०१

आहार स्वादिष्ट और भरपेट रहे लेकिन उसका शक्तिदायी होना भी आवश्यक है!

इसके बढ़िया शक्तिदायी चीजें कौनसी हैं इसकी जानकारी हरएक स्त्रीको होनीही चाहिये। डालडा कुक बुक (अंग्रेजी) में आहार के बारेमें जानकारी बातें और १९० से अधिक आहारोंका बयान किया गया है। आपके पास इसकी एक कापी होनीही चाहिये। Dept. A350 P. O. Box No. 353, Bombay के पतेपर चार आने के पोस्टल स्टाम्प भेजिये।

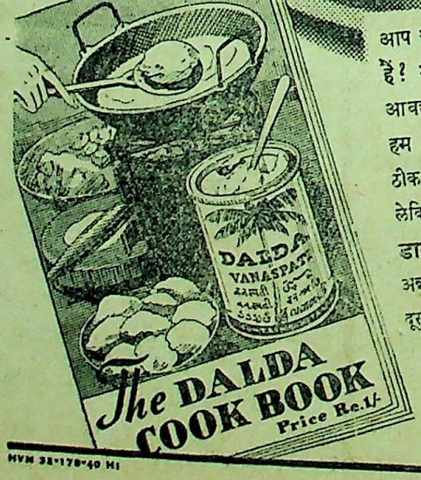

आप जब अपने परिवारके लिये आहार बनाती हैं तब क्या इस ओर ख्याल रखती हैं? भोजन केवल स्वादिष्ट रहनेसे काम नहीं चलता; उसका शक्तिदायी होना भी आवश्यक है। चंद आहार कई औरोंसे अधिक शक्तिदायी होते हैं, तो कई—जो हम हररोज खाते हैं—बिलकूल शक्ति नहीं देते। यह हमारी तन्दुरुस्ती के लिये ठीक नहीं—ना, हानिकारक होनेकी भी संभावना है; खास करके बच्चोंके लिये। लेकिन भोजन अधिक उत्साहदायी बनाना मुश्किल नहीं। एक सरल मार्ग है डालडा का इस्तेमाल करना। उसमें, प्रकृति के बढिया शक्तिदायी तथा जरूरी, अन्नांश पाये जाते हैं। इसके अलावा डालडा से आहार में जो स्वाद आती है वह दूसरी कोई चीज नहीं ला सकती। आप स्वयं अनुभव कीजियेगा।

पोषक-तत्व संपन्न **डालडा** स्फूर्ति के लिये

HVM 38-178-40 HI

HINDUSTAN VANASPATI MANUFACTURING CO., LTD.

CC-0. Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

उदयपुर अधिवेशन का सन्देश

[ले० — श्री हरिभाऊ उपाध्याय]

पं० जवाहरलाल नेहरू

अ० भा० देशी राज्य लोक परिषद् का अधिवेशन कई दृष्टियों से महत्व रखता है। जिस जगह पंडाल बनाया गया था उसके सामने का प्राकृतिक दृश्य बड़ा मनोहर व सुंदर था, सूर्यास्त के बाद बिजली की बत्तियां उसमें चित्ताकर्षक तारों की तरह बहुत सुहावनी लगती थी। दे० रा० प्र० परिषद का जल्सा शायद ही इतनी सुन्दर जगह इससे पहले कहीं हुआ हो फिर उदयपुर का राजघराना भी तो बड़ा ऐतिहासिक है। महाराणा-प्रताप की इस नगरी में ही देशी राज्य में पहली बार इस अधिवेशन का होना बहुत मौजूं रहा। फिर सभापति थे राणाप्रताप से ही स्वतन्त्रता व स्वाधीनता के वीर पुजारी पं० जवाहरलाल जी। सारे हिन्दुस्तान की प्रायः तमाम नाम लेने लायक रियासतों के कोई ५०० प्रतिनिधियों ने पहली ही बार उदयपुर में एक स्वर से अपने अधिकारों की आवाज बुलन्द की। इतने थोड़े समय में उदयपुर जैसे एक तरफ बसे हुये नगर में बरफीले जाड़ों में, वहां के सेवकों ने दिन-रात एक करके अच्छा स्वागत प्रबन्ध किया था। ५० हजार से ऊपर की भीड़ ने, जो टिकट खरीदकर वहां गई थी, अपने उत्साह से बता दिया कि मेवाड़ अब जग गया है और उसकी

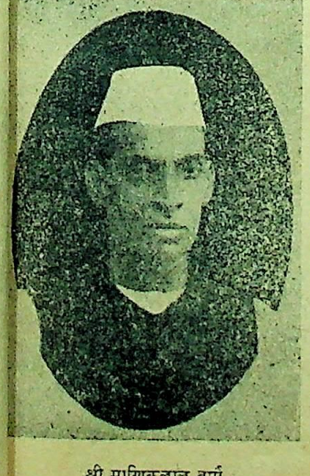

श्री माणिक्यलाल वर्मा

जागृति की यह लौ समय के साथ बढ़ती ही जायगी। इसके पहले इतना संगठित व प्रतिनिधि अधिवेशन कहीं नहीं हुआ था।

विधान निर्मात्री सभा

इतनी जल्दी-जल्दी में व सख्त सर्दियों में यह अधिवेशन इसलिये किया गया था कि आने वाली विधान-सभा में देशी रियासतों के जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधि ही लिए जायें। यह ख्याल किया जाता है कि ब्रिटिश भारत के प्रांतों में चुनाव खतम हो जाने के बाद ही विधान- सभा संगठित की जायगी जिसमें सारे भारत के प्रतिनिधि हिन्दुस्तान का विधान बनावेंगे। ब्रिटिश भारत में तो चुनाव द्वारा वहां के प्रतिनिधि आ ही जायेंगे — लेकिन देशी राज्यों का क्या हो? एक ओर से राजा लोग यह

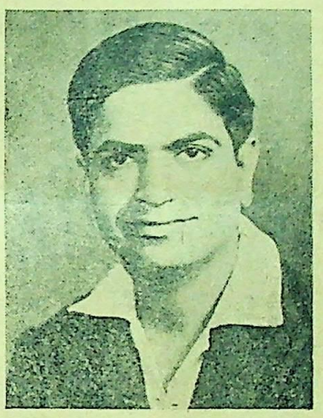

मोहनलाल सुखाड़िये

दावा करते हैं कि हमारी रियासतों में हम ही प्रजा के प्रतिनिधि हैं। दूसरी ओर से जनता बरसों से आवाज बुलन्द कर रही है कि नहीं, प्रजा के चुने प्रतिनिधि ही जनता का सच्चा प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। तीसरी ओर ब्रिटिश या भारतीय सरकार ने अभी अपना साफ रुख प्रकट नहीं किया है। अभी अभी वायसराय ने सिर्फ इतना कहा है कि 'देशी राज्यों के प्रतिनिधि रहेंगे। इससे यह साफ नहीं होता कि राजा रहेंगे या प्रजा के चुने प्रतिनिधि रहेंगे, इससे कम से कम इतना जरूर संकेत मिलता है कि उनकी निगाह में 'राजा लोग' ही आवश्यक रूप से प्रतिनिधि नहीं माने जाएंगे। किन्तु रियासतों की जनता को तो अपनी राय साफ-साफ दे देनी थी और इस अधिवेशन में उसने दी भी।

मताधिकार

रियासतों में एक और भी पेंच है। अलग अलग रियासतों में अलग अलग तरह की धारासभाएं हैं। कहीं मताधिकार ज्यादा व्यापक है तो अधिकार कम हैं, कहीं अधिकार ज्यादा हैं तो मताधिकार कम। कहीं प्रजामण्डल के प्रतिनिधि ज्यादा तदाद में पहुंच गये हैं तो कहीं थोड़े — से ही हैं। ऐसी हालत में यदि इन धारासभाओं के नेताओं में प्रजा के से प्रतिनिधि विधान- सभा में लिये जायं तो वे जनता के वास्तविक प्रतिनिधि नहीं कहे जासकते। तब क्या प्रजामण्डलों के सीधे वोट से प्रतिनिधि लिये जायें? तो ऐसा करने से प्रजामण्डल के बाहर क्षेत्रों के लोग प्रतिनिधित्व से वंचित रह जाते हैं। यह न्यायोचित न होगा। अतः उदयपुर अधिवेशन ने यही मांग की है कि व्यापकता में मताधिकार से चुने हुए प्रतिनिधि विधान- सभा में लिये जायें।

तीन ध्वनियां

इस अधिवेशन में जो भी भाषण या प्रस्तावादि हुए उन सब में मुख्यतः तीन ध्वनियां सुनाई पड़ती थीं। उत्तरदायी शासन व नागरिक स्वतन्त्रता, विधान सभा में पूर्वोक्त प्रकार के प्रतिनिधि, राजाओं की प्रतिगामी व दमनकारी रीति-नीति। इनके अलावा महात्माजी के बताये बहुमुखी रचनात्मक या राष्ट्रनिर्माण कारी कार्यक्रम पर भी जोर दिया गया। दक्षिण की एक छोटी रियासत में औंध में वहां के राजा साहब ने स्थापना ग्राम पंचायतों के संगठन का प्रयोग किया है। वह कुछ अंश तक सफल भी हुआ है। इस की ओर ध्यान दिलाते हुए भी एक प्रस्ताव पास किया गया है जो मेरी राय में बहुत महत्वपूर्ण व जरूरी है। सच्ची प्रजासत्ता अब तभी निभ सकती है विकसित या मजबूत हो सकती है जब कि उसकी बुनियाद ठेठ नीचे से उठाई जाय अर्थात ग्राम — पंचायतों से ही प्रजासभा के राज्य प्रणाली का शिक्षण लोगों को

श्री हरिभाऊ उपाध्याय

दिया जाय व उसका अनुभव कराया जाय।

इस अधिवेशन से देशी रियासतों के प्रजामण्डलों की जिम्मेवारी बहुत बढ़ जाती है। उन्हें न केवल अपना संगठन मजबूत व व्यापक ही बनाना है बल्कि विधान सभा के लिए उनके सच्चे प्रतिनिधि चुने जा सकें इसके लिए जनता को अभी से तैयार करना चाहिए। उत्तरदायी शासन की मांग को दुहराने या फैलाने की अपेक्षा भी इस समय यह सबसे ज्यादा जरूरी काम है।

राजाओं से

एक ओर देशी राजा आजकल जहां ब्रिटिश भारत की आजादी के सुर में सुर मिलाते दीखते हैं, तहां अपनी प्रजा को पूरे शासनाधिकार तो ठीक, कहीं कहां प्रजामंडल तक को बनने देने व राजनैतिक काम न होने देने की कोशिश करते देखे जाते है। ये दोनों प्रवृत्तियां एक दूसरे से मेल नहीं खातीं। अब तो यह सवाल खाली जनता को सन्तुष्ट करने का ही नहीं रह गया है, बल्कि इसमें उन्होंने विलम्ब, गफलत या लापरवाही की, तो खुद उनकी हस्ती के भी रहने न रहने का भी हो जायगा, व होता जा रहा है। अतः हमारे राजा-महाराजा गण को समय रहते ही चेत जाना चाहिए।

———

महान वाजीकरण व परमबौष्टिक

अनंगप्रभा याकुती

केसर, कस्तूरी वगैरह कीमती, पौष्टिक व स्वास्थ्यवर्धक वनस्पतियों के योग से बनी हुई यह याकुती पौरुष हीनता, शीघ्र पतन व स्वप्नदोष को मिटा कर पतली धातु को गाढ़ा करती हैं, और शुद्ध रक्त व वीर्य पैदा करके जवां मर्दी और पूर्ण पुरुषत्व प्राप्त करती हैं, फी शी० रु० १०) दस।

अनंगप्रभा तैल— इन्द्री की कमजोरी नसों की शिथिलता, वक्रता दूर करता है फी तो० १५) आधा तो० ७॥)

मदनमंजरी फार्मेसी हेड आफिस — जामनगर (काठियावाड़)

देहली—जमनादास एंड कं० चांदनी चौक | इन्दौर—बाम्बे एजन्सी बोजांकेट मार्केट
जैपुर—राधेश्याम रामेश्वरदयाल चांदपोल | धार — लक्ष्मी स्टोर्स सदर बाजार
उज्जैन—डा. एल. पी. भार्गव पटनी बाजार | जोधपुर-रामनाथ मांगीलाल कटला बाजार

साहित्य परिचय

• परिचय के लिये प्रत्येक पुस्तक की दो-दो प्रतियों का आना आवश्यक है, अन्यथा केवल प्राप्ति स्वीकार किया जायगा। —सम्पादक

जयहिन्द — ले श्री पं० सत्यदेव विद्यालंकार। सोलएजेण्ट — मारवाड़ी पब्लिकेशन्स ४० ए हनुमान रोड, नई दिल्ली। मूल्य १॥) रु०

आज समस्त भारत में आजाद हिन्द फौज और उसके नारे 'जयहिन्द' की गूंज व्याप्त हो गई है। पिछले सालों श्री सुभाषचन्द्र बसु ने पूर्वी देशों में भारतवर्ष को स्वतन्त्र कराने के लिए जो महान संगठन किया था, उसके गौरव को हम अभी तक नहीं समझ पाये हैं, और सच बात तो यह है कि उसकी पूरी कहानी सिलसिलेवार ठीक ढंग से अभी तक मालूम नहीं हो पाई है। लेकिन जो कुछ भी मालूम हुआ है, वह कम महत्वपूर्ण नहीं है उससे भी मालूम हो सकता है कि भारतीय अपने राष्ट्र के नाम पर क्या कर सकते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में विद्वान लेखक ने अपनी ओजस्विनी भाषा में भारतीय स्वातन्त्र्य के उसी महान प्रयत्न की कहानी लिखी है। आजाद हिन्द सरकार का संगठन कैसे हुआ, उसकी सेना कैसी थी व्यवस्था कैसी थी, स्त्रियों ने किस प्रकार राष्ट्रीय स्वातंत्र्य के लिए सब सुखों का बलिदान कर सेना संगठित की, राष्ट्रप्रेम की भावना का किस तीव्रता के साथ प्रचार हुआ, आजाद हिन्द फौज के अंग्रेजी सेनाओं के साथ कौन कौन से युद्ध हुए। कैसे असफलता का सामना करना पड़ा आदि सब बातों का वर्णन लेखक ने सिलसिलेवार किया है।

इस पुस्तक की एक और भी विशेषता है। भारत में आतंकवादी आन्दोलनकारियों ने ब्रिटिश राज्य को पलटने के लिए भारत में जो छोटे बड़े प्रयत्न किये, उनका भी संक्षेप से वर्णन किया गया है। आज भले ही हम उन्हें भूल जावे। लेकिन भारतीय स्वातंत्र्य के इतिहास में उन वीरों की कहानी सदा अमर रहेगी।

आजाद हिन्द फौज का संगठन जर्मनी और इटली में भी हुआ था, उसकी कहानी अभी तक अंधकार में ही है। वह कहानी लिखने की सामग्री प्रकाश में नहीं आई। हमें आशा है कि इस पुस्तक के आगामी संस्करण में लेखक भविष्य में प्राप्त होने वाली सामग्री का भी उपयोग कर के उसे और भी पूर्ण बनाने का प्रयत्न करेंगे। आजाद हिन्द सम्बन्धी १६-२० चित्रों ने इस पुस्तक की उपयोगिता और सौंदर्य को और भी बढ़ा दिया है।

— कृष्ण

श्री स्वाध्याय — (हेमंतांक) — सम्पादक श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी, । प्रकाशक — स्वाध्याय सदन, सोलन (शिमला हिल्स)। मूल्य ३॥)

स्वाध्याय, ज्योतिष तथा प्राचीन संस्कृति का प्रचारक यह त्रैमासिक गत पांच वर्षों से निकल रहा है। पत्र-पत्रिकाओं की बाढ़ में श्री स्वाध्याय अपनी कोटि का एक पत्र है। अध्यात्म प्रेमियों को जहां इसमें अध्ययन तथा विचार की सामग्री मिलती है, वहां ज्योतिष प्रेमियों के लिये भी कम पठनीय लेख नहीं होते। इसके संपादक श्री हरदेवजी स्वयं ज्योतिष के पंडित हैं। प्रस्तुत अङ्क में सनातन-धर्म और वैदिकधर्म सृष्टि का आदि धर्म लेख विद्वत्तापूर्ण हैं। ज्योतिष सम्बन्धी लेखों में फलित ज्योतिष की चर्चा रहती है। व्यापारी भी इसमें विभिन्न वस्तुओं के भाव आदि की भविष्यवाणी से लाभ उठाते हैं। इसी अङ्क में माघ की तेजी-मन्दी, व्यापारिक तेजी-मन्दी और ज्योतिष, तीन मास का भविष्य प्रकाश, त्रैमासिक राशिफल शीर्षकों के विभिन्न ज्योतिषियों के लेख हैं। इन में विश्वास रखने वाले व्यापारी इन से लाभ उठा सकते हैं।

पिछले दो तीन अङ्कों से सर्वसाधारण के लिये भी कुछ लेख दिये जाने लगे हैं। प्रस्तुत अङ्क में होलिका दहन, ये आंखें क्या कहती हैं, भारतीय मैषज्य विज्ञान के चमत्कार आदि इसी तरह के लेख हैं।

हमें आशा है कि स्वाध्याय प्रेमी, व्यापारी तथा सर्वसाधारण इस विद्वत्ता पूर्ण पत्र से लाभ उठावेंगे। — कृष्ण

गड़-बड़ दोहावली — (हास्य-रस) ले० — पं० आत्माराम शोख। प्रकाशक — अग्रवाल बुक डिपो, खारी बावली, दिल्ली। पृष्ठ २४ : मूल्य — चार आना।

लेखक का उपनाम 'शोख' अहिन्दी है, जिसका अर्थ है — चंचल। लेखक की चलती चंचल कलम ने कोई-कोई कलाम तो, कमाल का पेश किया है। कुछ दोहे है, ऐसे —

या जगती में आय कर,
कर लीजे दो काम।
छल, फरेब से धन कमा,
झूंठ बोल कर नाम॥

× × ×

कहा लाभ है भजन सौं,
काये मचावे शोर।
व्याधा सब मिट जायगी,
पर धन लाओ चोर॥

× × ×

इंडियन लेडी इश्क में,
बढ़ गई दो-दो हाथ।
जाय वह देशी छोड़ कर,
अमेरिकन के साथ॥

यह तो थे कुछ दोहे। कुण्डलियों का भी एक नमूना —

धर्म-सभा में जाय के,
खूब मचावें शोर।
आंख बचा कर झट से,
जूता लावें चोर॥
जूता लावें चोर बनें —
फिर ग्यानी-ध्यानी!

चहकती हुई इस प्रकार की इसमें सामग्री है। अशुद्धियां पढ़ने में खलती हैं।

यथार्थ-प्रकाश — लेखक — श्री १०८ दंडी स्वामी रामतीर्थ जी महाराज। प्राप्य स्थान — ला० मुरारीलाल सोनि, मुहल्ला सोनियां, लुधियाना। पृष्ठ १६० : मूल्य एक रुपया।

लेखक ने धर्म पर चिन्तन करते हुए प्रचलित कुरीतियों से बच कर अपने ढंग से धर्म की खोज की है। धर्म प्रेमियों के लिये पुस्तक, अध्ययन का महत्व रखती है और उस पहलू पर विचार करने के लिये प्रेरित करती है, जिस पर धार्मिक जन-समाज की जाती ही नहीं। जैसे — स्त्रियों के तो पतिव्रत-धर्म है पर पुरुषों के मन-माना क्रम। यह पुस्तक अ असाधारण परिश्रम का फल है। य प्रकाश की महत्ता इस लिये और अधिक है कि न लेखक के विचार पौराणिक हैं और न आर्य-समाजी। उ अपना ढंग है, अपनी विचारधारा और धर्म के प्रति उसका अपना मध्य नया दृष्टिकोण है। देखने में पु साधारण-सी लगती है। विचारों श्रृंखलता नहीं है पर पाठक को ले की चुभने वाली विचार धार अपनी खींचती है, इसी कारण लेखक प्रयास में असफल नहीं हुआ है।

— बालमुकुन्द

सभी कार्यों में
हिन्दी को अपनाइ
पत्रों पर पता
हिन्दी में ही लि
नागरी रक्षा समिति देहली

प्यारी बहिनो

न तो मैं कोई नर्स हूं, न कोई डाक्टर हूं और न वैद्यक ही जानती बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थी स्त्री हूं। विवाह के एक वर्ष बाद दुर्भा से मैं लिकोरिया (श्वेतप्रदर) और मासिक-धर्म के दुष्ट रोगों में फंस गई मुझे मासिक-धर्म खुलकर न आता था, अगर आता था तो बहुत कम दर्द के साथ, जिससे बड़ा दुख होता था। सफेद पानी (श्वेतप्रदर) जाने के कारण मैं प्रतिदिन बहुत कमजोर होती जारही थी, चेहरे का पीला पड़ गया था, घर के कामकाज से जी घबराता था, हर समय चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पतिदेव ने सैकड़ों रुपये की औषधियां सेवन कराईं, परन्तु किसी से रत्ती भर लाभ हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुख उठाती रही। सौभा से एक सन्यासी महाराज हमारे दर्वाजे पर भिक्षा के लिए आये। मैं दू पर आटा डालने आई तो महात्मा जी ने मेरा मुख देखकर कहा— तुझे क्या रोग है जो इस आयु में ही चेहरे का रङ्ग रुई की भांति सू हो गया है ? मैंने सारा हाल सुनाया। उन्होंने मेरे पति को अपने पर बुलाया और उनको एक नुस्खा बतलाया, जिसके केवल १५ दिन के से करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगों का नाश होगया। ईश्वर की कृपा से मैं कई बच्चों की मां हूं। मैंने इस नुस्खे से अपनी सैकड़ों बहिनों को अ किया है और कर रही हूं। अब मैं इस अद्भुत औषधि को अपनी बहिनों की भलाई के लिये असल लागत पर बांट रही हूं। इसके द्वारा लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वर ने मुझे बहुत कुछ दे रखा है। बहिन के लिये पन्द्रह दिन की दवा तैयार करने पर २॥।=) दो रुपये आने असल लागत खर्च होती है और महसूल डाक अलग है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोग में फंस गई हो तो वह मुझे जरूर मैं उनको अपने हाथ से औषधि बनाकर वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दू यह मेरा प्रण है कि मैं किसी बहिन से दवा की कीमत अपनी असल से एक पैसा भी ज्यादा न लूंगी

जरूरी सूचना—मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का ही नुस्खा मालू इसलिये कोई बहिन मुझे किसी और रोग की दवाई के लिये न लिखें।

प्रेमप्यारी अग्रवाल, नं० (३०) बुढलाडा, जि० हिसार (पंजाब)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

पंजाब की चिट्ठी

पंजाब में साम्प्रदायिकता का दौर

आजाद हिंदफौज के श्री शाहनवाज-सहगल, ढिल्लों के स्वागत अभिनन्दन समारोहों के बाद लाहौर में सार्वजनिक जीवन में साम्प्रदायिक मनोवृत्तियों का प्रदर्शन होने लगा।

अभी गुरुगोविन्दसिंहजी के जन्म दिन के उपलक्ष्य में सिक्खों— विशेषतः अकालियों ने जलूस-आदि के प्रदर्शन किये। कांग्रेस को हिन्दू जमात कहने पर जोर दिया, परन्तु साथ ही साथ राष्ट्रीयता के प्रबल वेग को रोकने में असमर्थ होते हुये सिक्ख जनता में राष्ट्रीयता के नाम पर लोकप्रिय होने के लिए सरदार बहादुर आदि के खिताब छोड़ने का आंदोलन भी चलाया। इस प्रसङ्ग में स० ब० उज्जलसिंह ने अपने मुकाबले के कांग्रेसी उम्मीदवार को हराने के लिए खिताब भी छोड़ दिया।

कुछ दिन पूर्व लाहौर के बाजारों में मुस्लिम लीगी झंडों और पाकिस्तानी नारों द्वारा सैण्ट्रल एसेम्बली में मुसलिमों की विजय के उपलक्ष्य में 'फतेह योम' मनाया गया। मुसलिम बाजारों और मुसलमान दुकानदारों और फेरी वालों तक की दुकानें भी सजाई गई। रात को दीपमाला भी की गई। कहीं कहीं हिन्दू दुकानदारों ने स्वयं कांग्रेसी तिरंगे झन्डे लगाकर उनका जवाब देने की कोशिश की।

लोड़ी का त्योहार — यह त्यौहार पंजाबी त्यौहार है, परन्तु इस दिन मि० जिन्ना के लाहौर पधारने और पंजाब एसेम्बली के निर्वाचनों की धूमधाम के कारण इस त्यौहार को भी हिन्दू त्यौहार का रूप दिया गया, यद्यपि किसी हिन्दू संस्था ने इस दिन विशेष प्रदर्शन नहीं किये, परन्तु इस त्यौहार को हिंदू नगर निवासियों ने ही ज्यादातर मनाया। मुसलिम यूनियनिस्ट सरकार ने दफ्तरों में छुट्टी भी नहीं की।

लाहौर में ब्रिटिश पार्लमेंटरी डेलीगेशन

१ जनवरी की निश्चित तिथियों में ब्रिटिश पार्लमेंटरी डैलीगेशन लाहौर पहुंचा। मुसलिम लीगी, कांग्रेसी प्रतिनिधियों के अलावा लाहौर में यूनियनिस्टपार्टी के प्राइम मिनिस्टर तथा अकालियों के नेताओं ने लाहौर तथा अमृतसर में भी विशेष मुलाकातें की। यहां की विविध पार्टियों से भेंट मुकालात करने के बाद डैलीगेशन के मेम्बरों में से मि० गोडफ्रे निकल्सन ने पंजाब की विविध राजनैतिक पार्टियों के विषय में कहा कि ये सब एक दूसरे के विरुद्ध विष उगलने में और गाली देने में एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश में हैं।

डैलिगेशन ने सैण्ट्रल जेल और लाहौर के लालकिले में नजरबन्द तथा भगतसिंह षड्यन्त्र के कैदियों से भी भेंट की।

पंजाब के आवभगत करने के स्वभाव की सब ने सराहना की।

श्रीमती सरोजनीदेवी लाहौर में

१३ जनवरी को श्रीमती सरोजनीदेवी ने लाहौर के बालकराम मैडीकल कालेज में एनाटमी और फिजियालौजी ब्लाक का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर भाषण करते हुये श्रीमती सरोजनी नायडू ने स्वर्गीय सर गङ्गाराम और उनके परिवार के दान की प्रशंसा की और अपने संस्मरण का जिक्र करते हुए कहा कि जब मैं छोटी थी तो सर गंगारामजी ने मुझे 'तुम बहुत अच्छी लड़की हो' कहा था। जब मैं बड़ी हुई देश सेवा के काम में लगी तो उन्होंने 'तुम स्त्री जाति की एक अच्छी सेविका हो' कह कर मुझे आशीर्वाद दिया था।

निर्वाचनों की गर्मी

हिन्दू निर्वाचक मंडलों में कोई विशेष चहलपहल नहीं। अमृतसर के म्युनिसिपल निर्वाचन में भी कांग्रेसी उम्मीदवार जीत रहे हैं। इधर झंग लायलपुर के इलाके में भी देवराजजी सेठी को शांतिनारायण हिन्दू सभा उम्मीदवार के साथ सख्त मुकाबला करना पड़ रहा है। डाक्टर गोपीचन्द भार्गव और सर मनोहरलाल का निर्वाचन संघर्ष तनातनी की हालत में हैं। इस यूनिवर्सिटी सीट के कुल ग्रेजुएट वोटर १६०० हैं — इनमें से ६०० वोटर लाहौर के हैं, शेष बाहर के हैं। सर मनोहरलाल को मुसलिमलीग, यूनियनिस्टपार्टी तथा सरकारी नौकरी में काम करने वालों का समर्थन प्राप्त है। डा० गोपीचन्द भार्गव मैदान में पीछे आए — इसलिए कुछ मामला कठिन सा दिखाई देता है। मुसलिम सीटों तथा सिक्ख सीटों के सम्बन्ध में इलेक्शन की गर्मी— लड़ाई झगड़ों तथा हाथापाई तक पहुंच रही है। मि० जिन्ना के लाहौर आने से यह गर्मी और भी बढ़ गई है। १३ जनवरी को इस्लामियां कालेज में मि० जिन्ना ने भाषण दिया। खाकसारों के अल्लामा मशरकी भी वहां उपस्थित थे। उन्होंने भाषण करना चाहा— मुसलिमलीगियों ने उन्हें घेर लिया, वह बेहोश भी होगए, पुलिस के आश्रय से बचे। इसी प्रकार सिक्ख सीटों के निर्वाचन से भी अकाली हाथापाई करने में संकोच नहीं कर रहे। १४-१-४६ की सायंकाल को लाहौर में खबर फैल गई कि मि० जिन्ना पर आक्रमण किया गया। कई बाजार बन्द होगए — रेडियो पर इस खबर का प्रतिवाद करना पड़ा। अहरारियों, यूनियनिस्टों और मुसलिमलीगियों और खाकसारों का पारस्परिक संघर्ष किसी भी समय तीव्र हो सकता है। इस बार के निर्वाचनों में रोहतक में यूनियनिस्टों को पहले की भांति सफलता नहीं होगी, कांग्रेस भी कई सीटें जीत लेगी। इसीलिये इस बार पंजाब में कांग्रेसी मुसलिम सिक्ख कोएलीशन बनने की ज्यादा सम्भावना है। हिन्दू सभा इन आंदोलनों में विशेष भाग नहीं ले रही।

१५०००) का दान

श्री देवीदयालजी चंडोक ने, जो कि प्रादेशिक व आर्य प्रतिनिधि दोनों सभाओं को मिलाने का आन्दोलन चला रहे हैं आजाद हिन्द फौज के तीनों वीरों — श्री शाहनवाज सहगल आदि को और दिल्ली को निमन्त्रण देकर १५०००) की थैली आजाद हिन्दफौज के लिए भेंट की।

हर प्रकार की स्टेशनरी केश, लेजर हिसाब किताब के रजिस्टर, रजिस्टर मुलाजमीन, रबर की मोहरों व छपाई के लिए हमारी सेवाएं प्राप्त कीजिए।

ओरियंटल स्टेशनरी सप्लाई कं.

चावड़ी बाजारर, देहली।

शुक्रवार १८ जनरी से आरम्भ

नव युग चित्रपट लिमिटेड को नव घोषणा —

दि न-रा त

दिग्दर्शक :—

शौरी दौलतावदी

भूमिका में :—

परेश बनर्जी, सुलोचना चटर्जी
वसन्त थेगड़ी, दार काश्मीरी,
साथ में
स्नेहप्रभा प्रधान

निरन्जन प्रकाशन

समय
४, ७, १०

रविवार को
सुबह ११ बजे

कुमार सिनेमा दिल्ली में

सीट बुक कराने का समय सुबह ११ से १ और शाम को ४ बजे से ६ तक
रेट दर ३।=) २।) १।।।) १=)

जय हिन्द

लेखक —
सुप्रसिद्ध हिन्दी पत्रकार
श्री सत्यदेव विद्यालङ्कार

महान् क्रान्तिकारी देशभक्त सुभाषचन्द्र बोस की आजाद हिन्द सरकार, आजाद हिन्द फौज तथा वीर महिलाओं की झांसी की रानी रेजीमेण्ट आदि के इतिहास के सम्बन्ध में सबसे सस्ती और सबसे बढ़िया पुस्तक। १८५७ के अंग्रेजों के विश्वासघात और तब से अब तक के क्रान्तिकारी आन्दोलन के ब्यौरे के साथ साथ लाल किले के मुकद्दमे का विवरण भी शामिल कर दिया गया है। अनेकों चित्र भी दिये गये हैं।

अपने लिये एक प्रति आज ही मंगा लें।

मूल्य १॥)
डाक से १।।।)

एजेण्टों, पुस्तक विक्रेताओं और अधिक मंगाने वालों को कमीशन।

[पृष्ठ ६ का शेष]

श्रीमती अरुणा और पटवर्धन का पत्र

श्रीमती अरुणा आसफअली और श्री अच्युत पटवर्धन ने मौलाना अब्दुल-कलाम आजाद को एक पत्र संयुक्त रूप से किसी अज्ञात स्थान से लिखा है। इसमें उन्होंने लिखा है कि कांग्रेस कार्य-समिति के गत अधिवेशन में स्वीकृत अहिंसा-सम्बन्धी प्रस्ताव में जहां तक गत तीन वर्षों की घटनाओं का सम्बन्ध है, पूर्ण रूप से विचार नहीं किया गया है। प्रस्ताव में जो यह बताया गया है कि कांग्रेस नेताओं के गिरफ्तार कर लिये जाने के बाद जनता ने बिना किसी नेतृत्व के एकाएक और एक साथ विद्रोह कर दिया, यह पूर्ण सत्य नहीं है। बम्बई में विभिन्न प्रांतों के दर्जन से अधिक उत्तरदायी पदाधिकारी थे, इनमें गांधीवादी भी थे; इन लोगों तथा अन्य सहयोगियों के साथ हम लोग ऐसी संस्था बनाने के उत्तरदायी हैं जो १९४२ के प्रस्ताव को कार्यरूप में परिणत करने के लिये आदेश भेजती थी। इसी उद्देश्य से भारतीय कांग्रेस समिति के नाम से रेडियो पर भी घोषणा करती थी। जनता ने हमें सहयोग दिया, और जनता ने एक बार क्रांति मचा दी। सरकार के पास सब तरह के साधन होते हुए भी जनता को कुछ समय के लिये सफलता मिली। यातायात के साधनों को नष्ट करने, सामाजिक बहिष्कार करने तथा ब्रिटिश राज को अन्य तरह से क्षति पहुंचाने के लिये विशेष ढंग से आदेश भेजे गये थे, ये आदेश धीरे धीरे दूर दूर तक फैल गये।

अहिंसा के सम्बन्ध में कांग्रेस की नीति अधिकतर रहस्यपूर्ण है। कांग्रेस ने भी इसे केवल इस के क्रियात्मक ढंग पर ही स्वीकृत किया है। हम गांधीजी की व्याख्या का आदर करते हैं, परन्तु उसे समझने में असमर्थ हैं। कांग्रेस के नाम पर दिये जाने वाले आदेशों में हमने अहिंसा का पूरा पूरा ध्यान रखा है, परन्तु सैनिकों और पुलिस के अकारण आक्रमण से परिस्थिति कभी कभी जटिल हो जाती थी।

—०—

बच्चों को बलवान, तन्दुरस्त, और सुन्दर बनाने के लिये,

मिनर्वा ग्राईप वॉटर

सन्देश पहेली द्वारा संचालित वीर पहेली नं० १ में १०००) रु० का नकद पुरस्कार जीतिये।

विशेष पुरस्कार :— महिलाओं को दो कूपन भेजने पर एक कूपन मुफ्त मिलेगा।

पूर्तियां व फीस पहुंचने की अन्तिम तारीख १५ मार्च १९४६

१. गु ल ग न
२. — त न
३. — — नी
४. — — — र
५. — — रा
६. दि न ता त
७. — — — वाली
८. स — —

नियम :— १. ऊपर खाली स्थान में फिल्मचित्रों के नाम भरने हैं। २. प्रवेश फीस दो कूपन तक की १) रु० और उसके पश्चात हर पूर्ति पर।) आने। ३. पहेली भेजते समय उत्तर के लिये -) के टिकट और भेजें अन्यथा उत्तर नहीं दिया जावेगा। ४. पहेली की सील बन्द शुद्ध पूर्ति पांच आदमियों के सामने पंजाब नेशनल बैंक मोदीनगर में रख दी गई है और जनता के सामने लिफाफा खोला जावेगा। ५. मैनेजिंग डाइरेक्टर का निर्णय अन्तिम व मान्य होगा।

नोट :— प्रवेश फीस से बचने के लिये ऐजन्सी नियमावली मुफ्त जवाबी लिफाफा लिख कर मंगवावें। पूर्तियां व फीस भेजने का पता :—

मैनेजर — सन्देश पहेली कार्यालय, बेगमाबाद (मेरठ)

१०००) रु० का इनाम जीतिये।

पूर्तियां पहुंचने की अन्तिम तिथि २४-२-४६ है।

पहला इनाम – ६००) (सही हल पर) दूसरा इनाम – ३५०) (एक व दो गल्ती पर) २५) का विशेष पुरस्कार उसको मिलेगा जिसकी पूर्त्ति सर्व प्रथम आयेगी। १५) और १०) के दो इनाम सबसे ज्यादा पूर्त्तियां भेजने वाले को मिलेंगे।

संकेत बायें से दायें :— (१) सुन्दर (३) सच्चाई से देना चाहिये (४) शोभा। (६) बड़ों की बताई ठीक ही होती है। (८) कीचड़। (१०) इसके द्वारा पानी टंकी में पहुंचाया जाता है। (११) होगी फकीर लगाते हैं।

संकेत ऊपर से नीचे :— (१) रास्ता। (२) इसके आगे भेद लेने की सभी कोशिशें बेकार होती हैं। (५) रेखा। (७) बिना हिलाये काम नहीं देता। (९) बेरहम तांगे वाले इसका बहुत प्रयोग करते हैं।

नियम :— प्रवेश फीस एक पूर्त्ति की १) है। इसके बाद प्रत्येक पूर्त्ति की ॥) है जो मनीआर्डर या इण्डियन पोस्टल आर्डर (बिना क्रास) द्वारा भेजें। मनीआर्डर की रसीद साथ में नत्थी करके भेजें। इनाम की रकम कम या ज्यादा आने पर घट बढ़ भी सकती है। एक व्यक्ति को केवल एक ही इनाम मिलेगा। मैनेजर का निर्णय अन्तिम तथा कानूनन मान्य होगा। सब प्रकार के अदालती झगड़े मुरादाबाद की ही Low Courts में तय होंगे और कहीं नहीं। सही हल वह माना जावेगा जो हमारे मुहरबन्द हल से हूबहू मिलता होगा। सही हल के लिये =) ज्यादा आने जरूरी हैं अन्यथा हल नहीं भेजा जावेगा। पूछताछ के लिये जवाबी कार्ड भेजें। पूर्त्तियां तथा फीस भेजने का पता :—

"विश्व पहेली" नं० ९, बावरयानस्ट्रीट, मुरादाबाद यू० पी०

आसाम बंगाल का सच्चा जादू

जादू तैल स्त्री वशीकरणका सच्चा चमत्कार, अमीर और शौकीन पुरुषों के सेवनयोग्य, इसकी केवल एक बूंद ही गजब कर देती है। पूरे हालात लिखना सभ्यताके प्रतिकूल है। स्त्री वशीकरणके लिए इससे बढ़कर दूसरा कोई भी जादू नहीं, केवल एक बारकी परीक्षा स्त्री पुरुष दोनोंको आश्चर्यमें डाल देगी। लिखे अनुसार न हो तो मूल्य वापिस मंगा लें। मूल्य प्रति शीशी एक तोला ५) नमूना २) महसूल १) अलग। यह एक आश्चर्य-जनक जादू के समान तेल के रूप में आविष्कार है।

अमृत विलास वाटिका शौकीनोंके लिए उपरोक्त औषधि के साथ इन गोलियों का सेवन होने पर सुहागे जैसा काम करता है। स्त्री-पुरुषोंके जोड़ेका सच्चा आनन्द उठानेके लिए यह दोनों औषधियां बस जादू ही हैं। मूल्य नम्बर १ जिसमें सोना, मोती आदि मूल्यवान भस्में पड़ती हैं। २० गोली १०) रु०, नमूना ५ गोली २॥) रु० यही नं० २, वगैर भस्मोंवाली २० गोली २॥) आसाम, बंगालकी रहस्यमय पुस्तक 'जौहर मुल्क' प्रत्येक पार्सल के साथ मुफ्त। अधिक मांग के कारण अब 'जगाधरी में भी हमारा दफ्तर खुल गया है। आर्डर में पत्र का हवाला अवश्य दें।

पता-इण्डियन स्टोर्स (३) शिलांग (आसाम) या 'जगाधरी' (पंजाब)

मुसफ्फिये आज़म

खून फसाद के सब रोगों को दूर करता है

जो लोग खून की बीमारी जैसे आतशक, चकत्ते, फोड़े, फुन्सियां, गंज; खुजली या किसी और खून की बीमारी में फंसे हुए हों वे शर्बत मुसफ्फियेआज़म मंगाकर इस्तेमाल करें। थोड़ी सी खुराकें इन बीमारियों को दूर करने के लिये काफी होती हैं। कीमत १ शीशी (२० खुराक) एक रुपया।

पता:-हमदम दवाखाना, लालकुआं पो० ब० नं० ७० देहली।

कश्मीर के पहाड़ों की बर्फीली चोटियों की तरह कश्मीर की सुन्दरियों के काले, लम्बे केश अपना उदाहरण नहीं रखते — जुल्फे कशमीर हेयर ऑयल–विभिन्न फलों और मूल्यवान जड़ी बूटियों से निर्मित है जो बालों को प्राकृतिक काला रङ्ग प्रदान करता है। बड़ी शीशी १॥) छोटी ॥=)

कश्मीर परफ्यूमरी बवर्स कुतब रोड, देहली

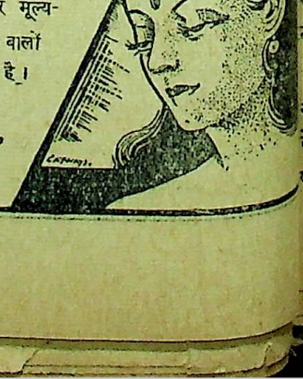

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

बाल बन्धु परिषद

नन्नी-बहिन

[श्री उमेश]

'भैया मैं भी तेरे साथ चलूंदी'

'तू मेरे साथ चलेगी' यह कह कर गोपी मुस्कराया। बहन ताड़ गई और बोली—

'देख, आद तो मेरे उदले तपड़े हैं, तप्पल नई-नई है।'

'जा तो अम्मा से इकन्नी मांग ला। मैं तांगा ले आता हूं, फिर हम दोनों तांगे में चलेंगे'

'तू धूत बोलता है'

तू तो एसे ही समझा करती है। 'मैं तांगा तो ले आऊं'

नन्नी मुन्नी बहन गोपी भैया की बातों में आ गई। मां से इकन्नी मांग लाई। खिड़की के पास खड़ी होकर देखने लगी। भैया तांगा लेकर आएगा। लेकिन गोपी अपने साथियों के साथ चल दिया। तांगा लेकर न आया। बहन ने देखा तो मचल गई। इकन्नी फेंक दी और सीढ़ियों से जल्दी-जल्दी उतरने लगी।

गोपी घर से दूर पहुंच चुका था। स्कूल के मैदान में आंख मिचोली होने लगी। साथियों ने उसे खूब सताया। बार-बार चोर बनाया तो वह साथियों को ढूंढता-ढूंढता हार जाता, पर कोई साथी न आता। गुस्से से मुंह लाल हो गया। पेट में भूख ने उपद्रव मचाया। बार-बार झल्ला उठा। साहस छूटने लगा पर साथियों ने पीछा न छोड़ा। घर जाने न दिया।

× × ×

सूर्य ने आकाश की गुलामी से छुटकारा पाना चाहा परन्तु बिना रक्त बहाये कौन आजाद हुआ है? आकाश और सूर्य में महायुद्ध हुआ। आकाश पराजित हुआ। अंग-प्रंग पर रक्त झलकने लगा। सूर्य विजयी की भांति अकड़ता चला; लाल आकाश पर अंधेरे ने घर कर लिया। चिड़ियों ने चों-चों की और अपने अपने घोंसले में जा छिपी। गोपी के साथी भी घर की ओर चल दिए। सब खुश-खुश अपने अपने घर पहुंच गए। गोपी मार्ग ही में था। उसकी हार का दुःख उसे सता रहा था। वह अपना क्रोध किस पर उतारे, फिर सोचा ये सब बहन की करतूत है। उसने आते समय क्यों टोका? नहीं तो मैं कभी न हारता। सारे साथियों के सामने लज्जित न होता? आज वो उसकी चोटी खींच कर दो चपत जरूर लगाएगा। फिर वह उसे कभी न टोकेगी। आगे को कान हो जायेंगे।

यही सोचता-सोचता गोपी घर की सीढ़ियों पर चढ़ा; पर वहां कुछ और ही देखने को मिला। नन्नी-मुन्नी बहन खटोले पर पड़ी थी और उसके माथे पर पट्टी बंधी हुई थी। वो बार बार रो रही थी। मां गोपी को देखते ही बरस पड़ी। दो चांटे लगाए। अगर वह बहन को अपने साथ लेजाता तो बहन कभी सीढ़ियों पर से न गिरती; उसके माथे पर इतना चोट न आती। गोपी कोने में मुंह दिए रोने लगा। उसको अपने पिटने का इतना दुःख न था जितना बहन की चोट का। मां ने बताया बहुत खून बहा है। रेशम भरा, खून जब कहीं बन्द हुआ। गोपी ने बहन का दिल कभी न दुखाया था। पर आज यह क्या हो गया! वही तो उसकी अकेली नन्नी-मुन्नी बहन है, जो भइया दूज को अपने नन्हे से अंगूठे से टीका करती है और कहती है— लाओ भइया उठिया।

गोपी को उसकी तोतली बातें याद आ रही थीं। वह बहन को प्यार करना चाहता था। उसका मन कर रहा था कि बहन को अपनी गोद में ले जाये और चीज दिलाकर लाए; परन्तु नन्नी-मुन्नी बहन खटोले पर पड़ी अपने भइया को रोता देख रही थी। भइया अपनी बहन के पास जाना चाहता पर उसको चारों ओर से चाची, ताई, नानी ने घेर रक्खा था। भाई सोच रहा था कि अपनी बहिन तक वह कैसे पहुंच सके? कैसे अपनी बहन को प्यार करे? आंखे देखती थी, मन दौड़ता था पर वो न जी पाता था।

—

पहेलियां

काला है पर कौवा नहीं,
पेड़ चढ़े पर बन्दर नहीं।
कमर पतली औ' चीता नहीं?

(सांप)

— चन्द्रकिशोर

नहीं हाथ नहीं पांव, नहीं रोम रेखा,
मनुष्य की क्या चले, ईश्वर ने नहीं देखा।

(हीआ)

— आशालता

तीन अक्षर का मेरा नाम,
घर घर में है मेरा धाम।
आदि कटे तो केश बनूं,
मध्य कटे तो मन बनूं।

(दिवाल)

बन में मेरा जन्म हुआ,
वहीं हुआ निर्माण।
बारह वर्ष रही मैं जल में,
जल ही मेरा धाम।

(नाव)

— सरलादेवी

जाग-जाग

भारत अब तो तू जाग जाग।
फूंकार प्रलय की मार नाग॥
कब तक सोयेगा, सो मत रे।
मां कहती है तू उठ जा रे॥
सदियां बीतीं युग चला बीत।
कब तक गाएगा अश्रु गीत॥
भारत अब तो तू जाग-जाग।

— पथिक

हो जाने पर भी
रहता कम नहीं
ई इसी में है कि
छले दिनों अना-
क कर की गई है
ी पर अपव्यय न
जनाओं के लिये
। युद्ध की समाप्ति
सम्बन्धी योज-
य वाले मनुष्य के
योग की भी पूरी
वश्यकता होगी और
नेशनल सेविंग्ज़
ीद कर ही अपनी
देश की उन्नति
सकता है।"

श्री गङ्गाजी ब्रह्मचर्याश्रम हरिद्वार

उत्तम दान क्या है? विद्या दान

विद्वानों की देखरेख में अनेक वर्षों से द्विज बालकों को वेद, कर्मकाण्ड, व्याकरण ज्योतिष वैद्यक आदि की शिक्षा प्रदान करके काशी की परीक्षाएं उत्तीर्ण कराने में अपना विशेष स्थान रखता है। ३० से अधिक ब्रह्मचारी आजकल शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं—उनके स्थान भोजन—वस्त्र पुस्तक आदि का सारा व्यय विद्यालय की ओर से ही दिया जाता है। यह व्यय दानी महानुभावों पर ही निर्भर है। विद्यालय का कोई अपना स्थान नहीं है। किराये के मकान में ही स्थापित है। देश के धनी—मानी सेठ साहूकारों से प्रार्थना है कि वह अपनी नेक कमाई में से दान देकर यश के भागी बनें। स्थान बनवाने वाले सज्जनों के नाम का पत्थर लगा दिया जायेगा।

दान देते समय इस लोकोपकारी संस्था को न भूलें—इस पते पर भेजें।

पं० रामहर्ष ब्रह्मचारी—काशी वाले, श्री गंगाजी ब्रह्मचर्याश्रम हरिद्वार।

गुरुकुल कांगड़ी का सर्व श्रेष्ठ

च्यवन प्राश

दिल दिमाग फ़ेफ़ड़े वा कमज़ोरी के लिये

दिल्ली प्रान्त के सोल एजेण्ट:—रमेश एण्ड कम्पनी, चांदनी चौक, मोती बाजार के सामने।

अन्य एजेन्सियां:—बृजलाल चड्ढा, पहाड़गंज दिल्ली। आरोग्य मन्दिर, गोल मार्केट, नई दिल्ली। अमरोहा गेट मुरादाबाद, राजपूताना आगरा, सिपट बाजार मेरठ, कुतुबखाना बरेली और नवज्योति स्टोर्स अजमेर।

अपने ही भाई के पेन

[पृष्ठ ६ का शेष]

श्रीमती अरुणा और पटवर्धन का पत्र

श्रीमती अरुणा आसफअली और श्री अच्युत पटवर्धन ने मौलाना अब्दुल-कलाम आजाद को एक पत्र संयुक्त रूप से किसी अज्ञात स्थान से लिखा है। इसमें उन्होंने लिखा है कि कांग्रेस कार्य-समिति के गत अधिवेशन में स्वीकृत अहिंसा-सम्बन्धी प्रस्ताव में जहां तक गत तीन वर्षों की घटनाओं का सम्बन्ध है, पूर्ण रूप से विचार नहीं किया गया है। प्रस्ताव में जो यह बताया गया है कि कांग्रेस नेताओं के गिरफ्तार कर लिये जाने के बाद जनता ने बिना किसी नेतृत्व के एकाएक और एक साथ विद्रोह कर दिया, यह पूर्ण सत्य नहीं है। बम्बई में विभिन्न प्रांतों के दर्जन से अधिक उत्तरदायी पदाधिकारी थे, इनमें गांधीवादी भी थे; इन लोगों तथा अन्य सहयोगियों के साथ हम लोग ऐसी संस्था बनाने के उत्तरदायी हैं जो १९४२ के प्रस्ताव को कार्यरूप में परिणत करने के लिये आदेश भेजती थी। इसी उद्देश्य से भारतीय कांग्रेस समिति के नाम से रेडियो पर भी घोषणा करती थी। जनता ने हमें सहयोग दिया, और जनता ने एक बार क्रांति मचा दी। सरकार के पास सब तरह के साधन होते हुए भी जनता को कुछ समय के लिये सफलता मिली। यातायात के साधनों को नष्ट करने, ... यहां चाहेंगे कि जितनी पास, और हो सके तो उसी शहर अथवा गांव में उनकी कन्या की शादी हो तो अच्छा है। इन सब कठिनाइयों को सन्मुख रखते हुए यदि श्रीमती मेहता जिस चार्टर की योजना हो रही है, उसमें सब नारियों के बदले अविवाहित तथा आश्रित कन्याओं को यह अधिकार दिलाने का प्रयत्न करें तो श्रेयस्कर होगा।

दिमाग की गर्मी

[पृष्ठ ८ का शेष]

शर्मा — हुजूर इसे माफ करदें यह तो··· यह तो··· (उसकी आंखों में आंसू आ जाते हैं)

नन्दू — (सक्रोध) तू घर जा रामी।

(पुलिस इंस्पेक्टर दो कानिस्टेबिल लेकर प्रवेश करता है)

पुलिस इन्स्पेक्टर — (ठेकेदार से हाथ मिलाते हुये) हेल्लो मिस्टर खन्ना!

ठेकेदार — हेल्लो! 'यू हेव कम, हीयर इज दी बगर' (नन्दू की ओर इशारा करता है)

पुलिस इन्सपेक्टर — (नन्दू की ओर देखकर उपेक्षा से) क्यों बे साले, तुझे भी रोटियां लग गईं। दिमाग की सारी गरमी उतार दी जायगी (एक कानिस्टेबिल की ओर मुड़कर) लगाओ हथकड़ी।

[कानिस्टेबिल नन्दू के हाथों में हथकड़ी पहना देता है। नन्दू चुप रहता है। मजदूर अत्यन्त डरे हुये अपना-अपना काम करने लगते हैं। ठेकेदार और पुलिस इंस्पेक्टर एक दूसरे की ओर कुछ मुस्कराकर देखते हैं। नन्दू रामी की ओर देखता है, और रामी पुलिस इंस्पेक्टर की ओर देखती है। परदा गिरता है।]

—०—

पंडित डी० गोपालाचार्लु का

जीवामृतम्

बदन को ताकत देने वाला और वीर्य वर्द्धक उत्तम बलकारक टानिक यह खून को शुद्ध करके शरीर में उसकी वृद्धि करता है तथा शरीर, मस्तिष्क और स्नायु का आश्चर्य रूप से निर्माण करता है। स्त्री पुरुष व बालक सब उमरों के इसका प्रयोग कर सकते हैं। एजेन्ट चाहिये।

सोल एजेन्ट:—ऐनसा ट्रेडिंग कं० भागीरथ पैलेस के पीछे चांदनी चौक, देहली

जाड़ा भगाने का आसान तरीका

'मिलर की चाय'

पीजिए।

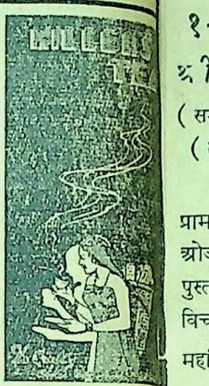

'मिलर की चाय' की एक प्याली पीने से सारा जाड़ा भाग जाता है और सारे शरीर में चुस्ती आ जाती है। इसका जायका व खुशबू भी सर्वोत्तम है। और चायों से सब तरह से अच्छी और सस्ती है।

सब-एजेन्सी व आर्डर बुक कराने के लिए निम्न लिखित पते पर पत्र-व्यवहार करें या स्वयं तशरीफ लायें:—

टेलीफोन नं० २३६८

पैरेडाइज़ एण्ड कम्पनी,

(चीफ एजेण्ट—एस. मिलर टी कम्पनी)

हौज काजी, (थाने के सामने) दिल्ली

पिकाक दंत मंजन

दांतों को मोती सा चमकाता है और मसूड़ों को मजबूत बनाता है। पायरिया का खास दुश्मन है। अपने शहर के दुकानदार से मांगिये।

ऐजन्टों की जरूरत है

सोल ऐजेन्टस—

ऐनसा ट्रेडिंग कम्पनी चांदनी चौक देहली

१९४६ की सर्वोत्तम भेंट

पृष्ठ १५० चित्र २० **जय हिन्द** मूल्य १॥) डाक से १॥)

लेखक सुप्रसिद्ध हिन्दी पत्रकार श्री सत्यदेव विद्यालंकार

महान क्रान्तिकारी नेता श्री सुभाषचन्द्र बोस की आजाद हिन्द सरकार और आजाद हिन्द फौज के साथ-साथ १८५७ से १९४२ तक के क्रान्तिकारी आन्दोलन का पूरा इतिहास

पहिला संस्करण समाप्त होकर दूसरा संस्करण भी हाथों-हाथ बिक रहा

कम से कम २५ प्रति मंगाने पर कमीशन।

मारवाड़ी पब्लिकेशन्स, ४० ए. हनुमानरोड, नई दिल्ली

दिलशाद ग्लास वर्कस

की बनाई हुई

खाली बोतलें, पौवे, अद्धे, हर प्रकार की शीशियां चिमनियां, ग्लास आदि खरीदिये। विशेष जानकारी के लिये सूचीपत्र तलब करें।

सोल ऐजेन्टस

मित्तल एण्ड कम्पनी,

खारी बावली देहली।

डेअरी विशेषांक!

उद्यम

प्रकाशित हुआ!

★ आकर्षक मुखपृष्ठ, सुन्दर चित्र, व्यंग चित्र महिलाओं तथा विद्यार्थियों के उपयुक्त दूध सम्बन्धी जानकारी इस अङ्क में देखिये।

★ खालिस और सस्ता दूध कहां मिलेगा? इस प्रश्न का उत्तर डेअरी में पढ़िये। इस डेअरी अङ्क में जानवरों की हिफाजत और देखभाल तथा व्यवसाय सम्बन्धी सम्पूर्ण व्यवहारोपयोगी जानकारी दी गई है।

★ इस लाभदायक व्यवसाय को कोई भी अल्प पूंजी में आसानी से कर सकता है। फिलहाल इस धंधे को करने वालों अथवा करने की इच्छा रखने वालों को प्रस्तुत डेअरी विशेषांक से काफी सहायता मिलेगी।

★ आज ही उद्यम का वार्षिक मूल्य रु० ५-८-० भेजकर ग्राहक बनिये। आपको डेअरी अङ्क अवश्य ही मिलेगा। उद्यम मासिक, धर्मपेठ, नागपुर।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

विजय पुस्तक-भंडार
देहली की
जीवनदायिनी सामयिक पुस्तकें

१—जीवन चरित्र—

श्री सुभाषचन्द्र बोस की जीवनी
(सम्पादक—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति)
(लेखक—श्री रमेशचंद्र आर्य)

यह कांग्रेस के भूतपूर्व राष्ट्रपति का प्रामाणिक और पूरा जीवन-चरित्र है। ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। पुस्तक के अंत में श्री सुभाष बाबू के विचारों का संग्रह भी है। मूल्य ॥=)

महर्षि दयानंद—ले० श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति मूल्य १॥)

पं० जवाहरलाल नेहरू—ले० पं० इंद्र विद्यावाचस्पति, मूल्य ॥।)

२—राजनैतिक साहित्य—

जीवन संग्राम—ले० श्री पं० इंद्र विद्यावाचस्पति मूल्य १)

चीन का स्वाधीनता युद्ध—ले० श्री पं० कृष्णचंद्र जी विद्यालङ्कार मूल्य १)

३—अन्य पुस्तकें—

आनुपातिक प्रतिनिधित्व (Single Transferable Vote) (निर्वाचन सम्बंधी नियम) ले० श्री पं० महावीर जी त्यागी मूल्य ।)

वर्तमान राष्ट्रपति
मौलाना अबुलकलाम आजाद

यह वर्तमान राष्ट्रपति श्री मौलाना अबुलकलाम आजाद की जीवनी है जिसे श्री रमेशचन्द्र जी आर्य स्वर्गवासी ने बड़े परिश्रम के साथ लिखा है। इसके पढ़ने से यह भली भांति प्रकट होजाता है कि मौलाना साहब की राष्ट्रीयता दूध की तरह स्वच्छ है और वह अपने मार्ग पर दृढ़ चट्टान की तरह अटल हैं। मूल्य ॥=) डाक व्यय ।-) मिलने का पता:— विजय पुस्तक भंडार श्रद्धानंद बाजार देहली।

"मैं भूल न सकूं"
[सम्पादक श्री जयंत]

श्रीयुत श्रीनाथसिंह जी, श्री वात्स्यायन 'अज्ञेय' श्री काका कालेलकर जी, कवि सम्राट् श्री अयोध्यासिंह जी उपाध्याय 'हरिऔध' श्री रत्नकुमारी जी माथुर, श्रीमती होमवती जी, श्री विष्णुप्रभाकर जी, श्रीयुत देवीदत्त जी शुक्ल तथा श्री पहाड़ी आदि प्रसिद्ध साहित्यिकों उपन्यास और कहानी लेखकों की शिक्षाप्रद सच्ची कहानियों का संग्रह। प्रत्येक कहानी ऐसी है जिसे एकबार पढ़कर भूलना कठिन है। मूल्य केवल १) डाक व्यय ।-)

मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण
ले० श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति (चार भाग)

यह वह पुस्तक है जिसमें मुगलों के साम्राज्य की स्थापना और नाश का इतिहास कहानी से भी अधिक मनोरंजक भाषा और रीति से दिया गया है। १७ वीं सदी में भारतवर्ष में जो विशाल राज क्रांति हुई उसका इससे अच्छा वर्णन मिलना कठिन है। हुमायूं अकबर, जहांगीर, शाहजहां औरंगजेब, राणा प्रताप, शिवाजी, छत्रसाल, गुरु गोविन्दसिंह आदि वीरों के चित्र और चरित्र पुस्तक में ओत प्रोत मिलेंगे। मूल्य १म.२ य.भाग ३) तथा ३ य.४थ.भाग १॥) चारों भागों का मू.४॥) डा.व्यय अलग।

सात भावपूर्ण एकाँकी नाटकों का संग्रह
"एकांकिका"
ले० चन्द्रकिशोर जैन बी० ए०

यदि आप विचारों में संदेशपूर्ण, पढ़ने में कहानी की तरह दिलचस्प, भावों के घात-प्रतिघात से पूर्ण, जीवन की ज्वाला और ज्योति से भरपूर, विवाह व्योहारों उत्सवों पर खेलने और कला पूर्ण उपहार देने के लिये मनोवैज्ञानिक, सरल और ओजस्वी एकांकी नाटक चाहते हैं तो आज ही "एकांकिका" की प्रति मंगाइये। मूल्य २) डाक व्यय ।=)।

विजय पुस्तक भण्डार (वीर अर्जुन कार्यालय के ऊपर) श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

"युद्ध समाप्त हो जाने पर भी राष्ट्रीय बचत की महत्ता कम नहीं हुई। राष्ट्र की भलाई इसी में है कि उस बचत को जो पिछले दिनों अनावश्यक व्यय को रोक कर की गई है अब निरर्थक सामग्री पर अपव्यय न करके उत्पादक योजनाओं के लिये सुरक्षित रखा जावे। युद्ध की समाप्ति पर राष्ट्रीय निर्माण सम्बन्धी योजनाओं में थोड़ी आय वाले मनुष्य के सहयोग की भी पूरी आवश्यकता होगी और वह नेशनल सेविंग्ज़ ख़रीद कर ही अपनी तथा देश की उन्नति कर सकता है।"

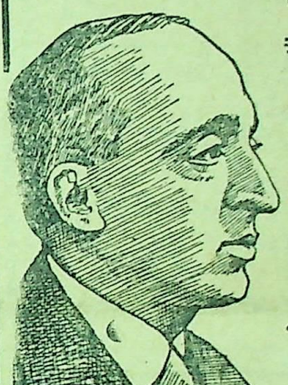

सर होमी. पी. मोदी, के. बी. ई.
डायरैक्टर टाटा सन्स लिमिटेड,
भूतपूर्व मेम्बर वाईसरायेज़ एग्ज़ैकिटिव कौन्सिल,
चेयरमैन सेन्ट्रल बैंक आफ़ इंडिया लिमिटेड।

संक्षिप्त विवरण

(१) आप ५), १०), ५०), १००), ५००), १०००) या ५०००) के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) एक व्यक्ति ५०००) से अधिक मूल्य के नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स नहीं ख़रीद सकता। ये इतने उपयोगी हैं कि इनका राशन करना ही उचित समझा गया है। हां दो व्यक्ति मिलकर १०,०००) के सर्टिफ़िकेट्स मोल ले सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है।

(४) इस प्रकार अवधि पूरी होने पर ४-१/६% वार्षिक ब्याज मिलता है।

(५) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।

(६) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते हैं। (५)का सर्टिफ़िकेट १-१/२ वर्ष पश्चात ही भुनाया जा सकता है) परन्तु वास्तविक लाभ इसी में है कि १२ वर्ष से पहिले इन्हें न भुनायें।

(७) जिनकी बचत थोड़ी है वह १), ॥), ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्पस ख़रीद सकते हैं। ५) के स्टेम्पस जमा होने पर एक नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट मिल जायेगा।

(८) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्पस डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकृत एजण्टों अथवा सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

आप अपनी बचत से ५०% लाभ उठाइए

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिये।

कौंसिल का चुनाव लड़ने के लिये स्वास्थ्य वर्द्धक औषधियों का

जाड़े में सेवन कीजिये

(१) भारत-ओज—प्रकृति प्रदत रूप और जवानी की रक्षा के लिये सर्वोत्तम महौषधि है। पुराने अजीर्णरोग एवं दाम्पत्य प्रेम से सून्य व्यक्तियों के लिये इसका बहुत अच्छा असर है।

(२) स्वर्णबसंतमालती—जीर्णज्वर, क्षय कास सूतिका दौर्बल्य के लिये प्रमाणित।

(३) च्यनप्राश—यक्ष्मा, कास, श्वास तथा बुढ़ापे की कमजोरी का दूर करने में सर्वश्रेष्ठ औषधि है।

(४) बसन्त कुसुमाकर—सर्वविधि प्रमेह बुद्धि वर्धक कामदं

(५) मदनानन्दमोदक—वीर्य वर्धक रसायन वीर्य स्तम्भक

(६) ब्राह्मरसायन (७) मकरध्वज बटी

(८) मकरध्वज (९) सुपारीपाक

-मैनेजिंग डाइरेक्टर-

कविराज पं० हरिदत्त जोशी काव्य स्मृति, सांख्यतीर्थ
दी भारत आयुर्वेदिक फार्मेसी लि० जयपुर

बसन्त इस वर्ष जल्दी आ गया!

क्योंकि मधुर **र मो ला**

बसन्त सी उल्लास पूर्ण और ग्रीष्म सी उत्तेजक!

उसके सनसनीखेज नए गाने सुनिए — उसके अनूठे और आकर्षक नृत्य देखिए — उसका मधुर प्रणय अनुभव करिए

तलवाड़ प्रोडक्शन्स कृत संगीतमय चित्र

अलबेली

कलाकार :—

★ सतीश,
★ सुन्दर,
★ रूपलेखा,
★ हीरालाल,

स्क्रीन प्ले० संवाद :—
जे० एस० कश्यप

गीत :—
शान्तिस्वरूप-चिटती

भारी भीड़ आकर्षित कर रहा है **मोती** में प्रति दिन ३, ६॥ और ९॥ बजे रात

३।=), २।) और १॥।) की सीटें रिजर्व कराने का समय — मोती में सुबह १०॥ से १ तक — प्लाजा, नई दिल्ली में शाम के ४ से ६ तक

रविवार की सुबह ११ बजे फ्री लिस्ट, कन्सेशन और आधे टिकट ४ सप्ताह के लिये बिल्कुल बन्द

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि०

अधिकृत पूंजी		१००००० रु० (दस-दस रुपये के हिस्सों में)
अदाशुदा पूंजी		५१०७० रु०
डिवीडेन्ड	सन् १९४४	१० रु० सैकड़ा
डिवीडेन्ड	सन् १९४५	१० रु० सैकड़ा

थोड़े से और हिस्से बिक्री के लिए निकाले गए हैं। एक हिस्सा केवल १०) का है। ५) प्रार्थना पत्र के साथ और ५) प्रार्थना पत्र स्वीकार होने पर देने होंगे।

आप भी—

('वीर अर्जुन' समाचार पत्र की स्वामी संस्था)

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० देहली

के हिस्सेदार बनिए।

शेयरों के लिए आवेदन पत्र हम से मंगालें।

मैनेजिंग डाएरेक्टर—

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि०, श्रद्धानन्द बाजार, देहली

श्री० पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिये 'अर्जुन प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली से छापकर प्रकाशित किया।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वीर अर्जुन

साप्ताहिक

ILLUSTRATED VIR ARJUN WEEKLY

११ अङ्क ४७]

इस अङ्क की कुछ सामग्री

१ — भारत और अमरीका का व्यापारिक सम्बन्ध

२ — हैदराबाद निजाम का नया षडयंत्र

३ — जुकाम की प्राकृतिक चिकित्सा

४ — रुड़की का वह नरक !

५ — हिंसा अहिंसा विवेचन

६ — सुकेत यात्रा

कहानी, उपन्यास, बालपृष्ठ, कविता, लोकवाणी तथा चित्रावलि ।

देहली, सोमवार २८ जनवरी १९४६

१६ माघ सम्वत् २००२

DELHI, 28th January 1946.

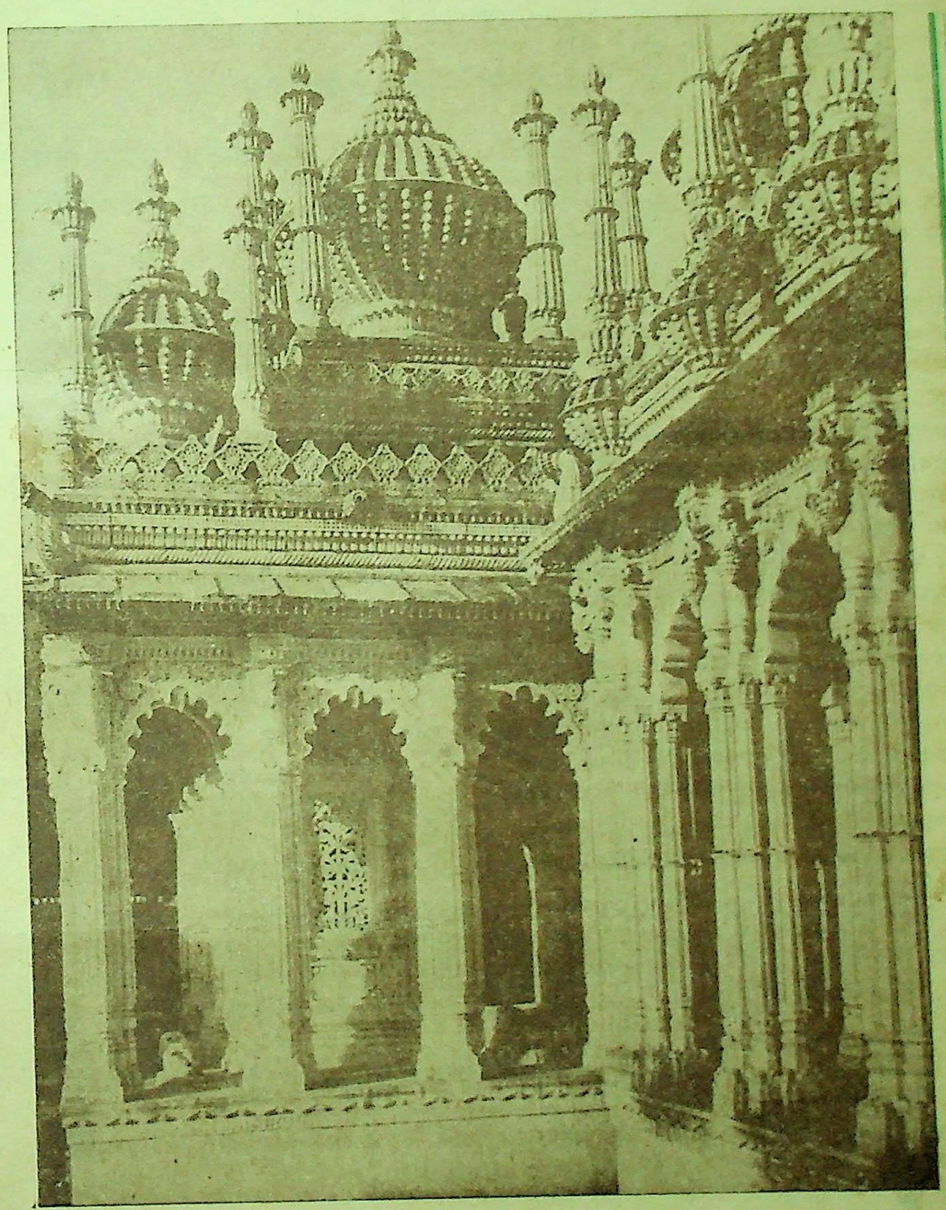

जूनागढ स्टेट (काठियावाड) में बीबी लाड्रे बू की समाध

वार्षिक मूल्य ८)

६ मास का ४)

सम्पादक— रामगोपाल विद्यालङ्कार, कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार

एक प्रति का मूल्य ≈)

आधुनिका

पत्नी का चुनाव कैसे करें ?

[श्री रामकुमार अग्रवाल]

छम-छम करती हुई जब नव-वधू घर में प्रवेश करती है तो क्या बच्चा, क्या बूढ़ा, क्या दोस्त, क्या रिश्तेदार सभी उसका आदर सत्कार करने को तैयार हो जाते हैं — क्यों ? क्योंकि उसके पति ने 'पत्नी को चुनाव' की परीक्षा में पास कर दिया है। और ठीक भी है न मालूम बेचारे पति को कितनी मिन्नतों, कितनी दुवाओं, कितनी खोज और छूढ़भाल और कितनी माथा-पच्ची करने के बाद आज मनचाही मुराद मिली है। यही उसके लिए आदर्श है। भले दूसरे लोग यह कहें कि इसकी तो नाक टेढ़ी है, यह तो मुंह बिचकाती है लेकिन उसके लिए यही सब कुछ है। हर एक मनुष्य का आदर्श भी भिन्न होता है।

प्रश्न है, चुनाव में किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। कुछ लोगों का कहना है कि बस आपस में प्रेम होना चाहिए, यही काफी है, लेकिन बहुधा यह देखा गया है कि यह प्रेम झूठा निकल जाता है। सुंदर-सुंदर मुखड़ा, इकहरा बदन, मृदुल मुस्कराहट आदि देखकर पहले तो पति महोदय लट्टू हो जाते हैं और समझने लगते हैं कि बस हम दोनों का प्रेम अमिट है लेकिन जो चीज चमकती है, वह हमेशा सोना ही नहीं हुआ करती ! सुन्दर मुखड़ा भोंडा हो सकता है, रुपया पैसा भी आता जाता रहता है, मुस्कराहट में भी गुस्से का आभास हो सकता है, मीठी बोली भी कर्कश हो जाती है। यह सब चीजें क्षणिक हैं, समय के साथ टल जाती हैं, लेकिन बचती क्या चीज है — उत्तम शिक्षा और शुद्ध चरित्र, जो जीवन तक साथ देती है। इसलिये मेरा कथन तो यह है कि मनुष्य को इन दो बातों पर अवश्य ध्यान रखना चाहिये। इनके बाद अपनी रुचि का खयाल करना चाहिये।

अब देखिये कि किस किस तरह के लोगों को रुचि व आदर्श हैं। फैशन के पुजारी हैं। थोड़ा बहुत कवि हृदय भी रखते हैं। आपकी जीवन संगिनी अवश्य कोई इन्द्र की अप्सरा होनी चाहिये। जरा भी फैशन में त्रुटि हुई तो मानों आप पर गाज गिर पड़ेगी। लेकिन आपने कभी यह नहीं सोचा कि उस फैशन को निभाने के लिये आपकी जेब में पैसे कितने हैं ? फैशनेबल स्त्री की इच्छा रखना तो साधारण बात है लेकिन यह भी समझ लेना चाहिये कि उसको सुन्दर और कीमती साड़ियों की जरूरत होगी, आभूषण चाहियेंगे और घूमने फिरने की स्वतंत्रता। घर की चारदीवारी उसके लिये, जेल है क्योंकि वह तो घूमना चाहेगी ताकि दूसरे उसे देखें और उसकी प्रशंसा करें। क्लब और सोसाइटी उसके प्राण हैं।

यह हैं मिस्टर 'ख'। बहुत बड़े विद्वान हैं। शायद किसी यूनीवर्सिटी में थीसीस लिख रहे हैं। आपके लिये कम से कम एम.ए. पास बहू चाहिये। इससे कम पढ़ी स्त्री तो उनके भावों तक को न समझ सकेगी, फिर उनकी संगिनी बनना तो दूर रहा। लेकिन बेचारों ने यह न सोचा कि घर में वह एक मिनट न रुक सकेगी और आये दिन उनको विद्वानों की गोष्ठी की आवश्यकता होगी। पति से कोई विशेष सम्बन्ध न होगा क्योंकि उसकी साथी पुस्तकें होंगी। घर से उन्हें कोई मतलब न होगा क्योंकि उन्हें तो साप्ताहिक या मासिक पत्र-पत्रिका में लेख लिखने से फुरसत ही कहां होगी।

पत्नी का स्थान घर है और वह गृह को स्वर्ग या नर्क जो चाहे बना सकती है। यदि आप चाहते हैं कि आप अपने गृह में एक अपूर्व सुख और शांति का अनुभव कर सकें तो पत्नी का चुनाव करते हुए निम्नलिखित बातों पर अवश्य विचार कर लें।

एक योग्य गृहिणी बनने के लिये कन्या का शिक्षित होना अत्यवाश्यक है। शिक्षा केवल पुस्तकों की ही नहीं चाहिये उसे गृहकार्यों में निपुण होना चाहिये उचित ढंग से खाना बनाने की उसमें सर्व प्रथम योग्यता होनी चाहिये, चाहे कोई अमीर हो या गरीब, सभी पत्नियों के लिये यह नितांत आवश्यक है। इस के साथ-साथ उसे गृहसम्बन्धी और सब कार्यों में जैसे सीना पिरोना, घर की देख भाल बच्चों का पालन पोषण उनकी प्रारम्भिक शिक्षा आदि में निपुण होना चाहिये, इसके साथ-साथ उसे धार्मिक शिक्षा भी दी गई हो, जिससे कि उसमें चरित्र की दृढ़ता आ सके और वह शील स्वभाव तथा कर्त्तव्यपरायण बन सके। लेकिन मेरी एक बात पर अवश्य ध्यान दीजियेगा। वह समय चला गया, जब स्त्री अपने पति की उंगली पर नाचती थी। अब स्त्रियां भी अपनी एक सत्ता समझने लगी हैं और यह अच्छा ही है, देशकी उन्नति का सूचक है। इस लिए आवश्यकता इस बात की है कि आप यह देख लें कि जो लड़की आपकी भावी पत्नी होने वाली है, वह आपको चाहती भी है या नहीं। आज के समाज में इसपर बहुत कम लोग ध्यान देते हैं।

———

सेना से मुक्त स्त्रियों को लन्दन में टेलिफोन का काम सिखाया जारहा है। चित्र में एक स्त्री स्विच बोर्ड पर अभ्यास कर रही है।

श्रीमती ट्रूमैन और उनकी सुपुत्री मार्गरेट

अमेरिका के 'प्रथम परिवार' की देवियों से भारतीय रानियां, और सेठानियां क्या सीखें !

[जगदीश प्रसाद माथुर सं० 'मीरा']

अमेरिका के संयुक्त राज्यों के प्रधान की धर्म-पत्नी श्रीमती ट्रूमैन अपने पतिदेव के राजकीय कार्यों में पूरा पूरा भाग लेती हैं। श्री. ट्रूमैन उनको अपनी 'प्रमुख परामर्शदात्री' कहते हैं।

श्रीमती ट्रूमैन अपने पति के प्रधान पद तक पहुंचने से पहले भी उनके कामों में सदा सहायक रही हैं। अमेरिका की शासन-सभा ने एक बार श्री. ट्रूमैन को 'युद्ध के खर्चे की जांच करने वाली समिति' का अध्यक्ष बनाया था। तब भी श्री. ट्रूमैन ने अपनी अर्द्धांङ्गिनी को अपने कर्मचारियों में एक क्लर्क बनाया और नियमित रूप से काम करवाया था। वास्तव में उस समय वे अपने देश के एक विश्वस्त कार्य के कारण स अधिक व्यस्त व्यक्ति थे। पढ़ी-लिखी ने अपने पति की नियमानुसार क्लर्क कर काम किया।

स्वतन्त्र भारत में भी बड़े बड़े वैधानिक महाराजा बन कर ही रह स उनमें से जो राष्ट्र से समझौता क चलेंगे, वे अपने राज्यों में अपनी छ छाया में स्थापित की हुई जननिर्व शासन-सभाओं के 'प्रधान' भी र अस्तु, श्रीमती ट्रूमैन की भांति भा महारानियों को भी अभी से सब के राज-काज में अपने पतियों की मित वैधानिक सहायक बनने की तायें और अनुभव प्राप्त करने चाहि

संयुक्त राज्य अमेरिका के 'प्र की गृह-स्वामिनी उनकी 'डाक' के विभागों के बहुत बढ़े हुये कामों को पेक्षय अधिक दक्षता से निबटाती साथ ही अन्य अनेक प्रकार के 'का राज-काजों की लिखा-पढ़ी में भी और 'राष्ट्र' के पति की खूब सह करती हैं।

ट्रूमैन दम्पती के एक ही है। उनकी वह सुपुत्री मैरी इक्कीस बसन्त देख चुकी है। मा राजधानी में स्थापित, 'ज्यार्ज वाशि विश्वविद्यालय' में पढ़ती है। करुठ ध्वनि' की शास्त्रीय शिक्षा प्रमुख रूप से प्राप्त कर रही है। आकांक्षा एक दिन रेडियो द्वारा समूचे राष्ट्र को अपने संगीतामृ प्लावित करने की है। सार्वजनिक सभा में वह जा चुकी है।

ट्रूमैन और उनकी सुपुत्री मि खूब बजाते हैं। दोनों साथ-साथ भी हैं। (शेष पृष्ठ २२ पर)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

समाचार-चित्रावलि

श्री शरत् और श्री आसफअली

केन्द्रीय असेम्बली में कांग्रेस दल के नेता और उपनेता

सुभाषचन्द्र बसु

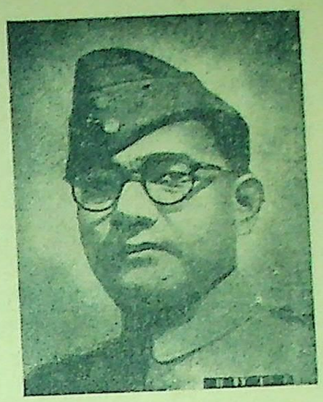

आपकी जन्मतिथि समस्त देश में २३ जनवरी को मनाई गई।

कस्तूर बा

आपकी दूसरी बरसी २२ जनवरी को मनाई गई।

रिजर्व बैंक के सामने नोट भुनाने वालों की भीड़।

अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालयों में नाजी नेताओं की सुनाई।

लोकवाणी

गाजर

सुन्दरता बढ़ाने के गुण की दृष्टि से गाजर अपना सानी नहीं रखती । गाजर खाने से रक्त बढ़ता और शुद्ध होता है, शरीर के चमड़े पर मुलायमियत आती है, चेहरा चमकने लगता है, स्वास्थ्य, स्फूर्ति और सौन्दर्य सहज ही प्राप्त होते हैं । इसमें प्राकृतिक चीनी होने के कारण यह बच्चों के शरीर में रक्त, मज्जा, मांस, अस्थियों आदि का निर्माण करती और पुष्टि लाती है । गाजर खाने से कब्ज टूटता है । वर्षों का संचित जीर्ण मल भी निकलता है । ये लाभ तभी प्राप्त हो सकते हैं, जब हम थोड़ी बहुत गाजर कच्ची और छिलके सहित खायें । उसका छिलका निकाल डालने से फुजला जाता रहता है और वह दस्तावर न रह कर काबिज हो जाती है । गाजर खाते समय उसके नीचे के भाग को जिसे गाजर की हड्डी कहते हैं, फेंकना ठीक नहीं, उसे भी खा डालना चाहिये । गाजर रोटी के साथ या फलों के स्थान पर भर पेट खाई जा सकती है । शाक बनाते समय भी गाजर का छिलका नहीं फेंकना चाहिये ।

गाजर का रस भी बड़ा ही गुणकारी है । इससे मस्तिष्क तरोताजा रहता है और शरीर में वीर्य की वृद्धि होती है । नाजुक रोगियों जैसे संग्रहणी, आंतों का क्षय, निमोनिया आदि से पीड़ितों के लिये गाजर का रस अमृत सदृश है । चर्म तथा गुर्दे की बीमारियों में भी विशेष लाभदायक है । कद्दू-कस की सहायता से रस निकाल कर प्रतिदिन दवा के रूप में रस पीया जा सकता है ।

गाजर का हलवा बना कर खाना गाजर खाने का ठीक तरीका नहीं ।

— लोकवाणी

पंजाब हिन्दी सम्मेलन

हर साल दस-बीस प्रस्ताव पास कर लेना ही तो सम्मेलन के जीवित रहने का प्रमाण नहीं हैं । किसी ठोस और स्थायी कार्यक्रम को पंजाब प्रान्तीय सम्मेलन हाथ में ले तभी जनता में उसके प्रति आदर और प्रेम जागृत होगा । पंजाब विश्वविद्यालय की हिन्दी परिक्षाओं में हर साल ६००० के लगभग हिन्दी के परीक्षार्थी उत्तीर्ण होते हम देखते हैं, जिन में अधिकांश छात्राएं होती हैं । परीक्षा देने के बाद इनका हिन्दी से कोई सम्बन्ध नहीं रह जाता । सम्मेलन यदि प्रयत्नशील हो तो इनमें से कुछेक से हिन्दी-प्रचार और प्रसार में सहयोग ले सकेगा । जनता के सामने कोई कार्यक्रम नहीं है और इसलिए जो शक्तियां उपयोगी हैं वे सुस्त पड़ी हैं । मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है कि इस दिशा में सम्मेलन के अधिकारी एक दम अकर्मठ हैं । शायद वह चाहते हैं कि सम्मेलन निष्क्रिय ही बना रहे ताकि न विशेष कार्यक्रम हाथ में होगा न अधिक धन की उसे जरूरत पड़ेगी और न मेरे जैसा हठधर्मी उनसे कहेगा कि आखीर आपने व्यवसाय द्वारा जनता की जेब से इतना पैसा कमाया है उसमें से कुछ हिन्दी के हित में भी दीजिये । धन के साथ शायद वह अपने समय का अपव्यय भी बचाना चाहते हैं । वह सस्ते-सस्ते में ही सम्मेलन जैसी आदरणीय संस्था के ऊंचे पदाधिकारी बने रहना चाहते हैं ।

मैं बहुत स्पष्ट शब्दों में पंजाब सम्मेलन के अधिकारियों से पूछता हूं कि क्या उनकी वर्तमान निष्क्रियता ऐसी नहीं है, जिसके करण मुझ जैसे व्यक्ति को उन पर क्रोध आए ? सम्मेलन के निष्क्रिय रहने से एक और भी हानि है — वह यह है कि हिन्दी का आंदोलन गलत हाथों में पड़कर सांप्रदायिक रूप पकड़ता जा रहा है और यह भी देखा जा रहा है कि कुछ स्वार्थी लोग हिन्दी के नाम पर हिन्दी-प्रेमियों से धन एकत्रित करके अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं ।

— हरिकृष्ण प्रेमी

मजदूरों की दर्दनाक हालत

उच्च श्रेणी के आदमियों की अपेक्षा मजदूरों की हालत और भी दयनीय है । यह सत्य है कि सैनिक शासन ने भारतीय मजदूरों की मजदूरी एक डालर प्रति दिन के हिसाब से कर दी है, किन्तु जब एक प्याला चाय के लिये ३० सेंट देने पड़ते हों तो भारतीय मजदूर की आमदनी तीन प्याले चाय की कीमत के बराबर हुई ।

बैंकाक-रंगून रेलवे बनाने में लगलभ ८०,००० भारतीय मजदूर काम आये । सम्भवतः भारतीयों को यह बात नहीं मालूम है । उन बेचारों के परिवार बिना भोजन इत्यादि के मलाया में इधर-उधर मारे-मारे फिर रहे हैं ।

मलाया में रहने वाले जितने लोग हैं उनमें सबसे अधिक कष्ट में भारतीय ही हैं । बहुत से भारतीय अभी तक अंग्रेजी फौजी अधिकारियों की देखभाल में हैं और उन्हें बहुधा पूछताछ करने के लिये बुलाया जाता है । इसके अलावा बहुत से भारतीय ऐसे भोजन पर अपना निर्वाह कर रहे हैं जो बिल्कुल नहीं के बराबर है । वे परिवार भी जो युद्ध से पूर्व बड़े आराम से रहते थे आजकल तबाही में दिन बिता रहे हैं ।

— ए० डी० मणि

रियासतों में वैधानिक प्रगति

— नवाब भोपाल की घोषणा —

नरेन्द्र-मण्डल के चांसलर नवाब भोपाल ने १८ जनवरी शुक्रवार को नरेन्द्र मण्डल में रखे गये इस प्रस्ताव पर — रियासतें देश की इस भावना के साथ हैं कि भारत को अविलम्ब ही पूर्ण पुष्ट तथा विकसित स्थिति प्राप्त हो जानी चाहिये और वे भारत की वैधानिक समस्या के हल करने में सब सम्भव योग देगी — भाषण करते हुए कहा — कि न्याय, सहिष्णुता और सहयोग का यह अनुरोध है कि हम प्रत्येक भारतीय के लक्ष्य को अपना ही उद्देश्य समझें । क्या हम में से कोई ऐसा है जो इस देश को ब्रिटिश लोगों से मुक्त, महान व सम्मानित रूप में देखना नहीं चाहता ? भारत की वैज्ञानिक उन्नति में हम किस प्रकार योग देंगे इसका ठीक-ठीक रूप नहीं बतलाया जा सकता । क्योंकि भारत के अन्तिम रूप के विषय में कोई विचार नहीं दिया गया है । फिर भी हम यह प्रतिज्ञा करते हैं कि हम भारत के वैज्ञानिक प्रश्न को हल करने में उचित व न्याय्य आधार पर पूर्ण सहयोग देंगे ।

नरेन्द्र मण्डल की ओर से मुझे निम्न सुधार सम्बन्धी घोषणा करने का अधिकार दिया गया है । इन सुधारों का उद्देश्य यह है कि रियासतों में इस प्रकार का विधान लागू किया जाय जिसके अनुसार शासक लोग अपने अधिकारों को वैज्ञानिक तरीके पर अमल में ला सकें, पर वह रियासत की अखण्डता तथा शासक राजवंश की सत्ता को कोई क्षति पहुंचाने वाला न हो । प्रजा से निकट सम्पर्क स्थापित करने के लिये लोक प्रिय धारासभाओं की स्थापना की जानी चाहिये जिसके अधिकांश सदस्य निर्वाचित हों । यह स्वीकार कर लिया गया है कि उक्त आधार पर रियासतों के जो विस्तृत विधान तैयार किये जायेंगे उन में प्रत्येक रियासत की विशेष परिस्थितियों का ध्यान रखा जायगा । बहुत सी रियासतों ने पहले ही ऐसे कानून बना दिये हैं जिनके अनुसार उन प्रदेशों के अंदर व्यक्ति की सम्पत्ति या शरीर की सुरक्षा तथा कानून के शासन की गारण्टी दी गई है । इस सम्बन्ध में संक्षिप्त तथा स्पष्ट शब्दों में स्थिति के स्पष्टीकरण के लिये उन रियासतों में निम्न आवश्यक अधिकारों की स्थापना का सुझाव रखा गया है जहां वे अभी तक प्रदान नहीं किये गये हैं —

(१) गैर कानूनी तरीके से किसी व्यक्ति को उसकी स्वतन्त्रता से वंचित नहीं किया जाय और न ही उसकी सम्पत्ति या निवास को जब्त या उसके पृथक किया जाय ।

(२) प्रत्येक व्यक्ति को यह अधिकार मिले कि वह 'हेबियस कार्पस' प्रार्थनापत्र प्रविष्ट कर सके । यह अधिकार युद्ध, विद्रोह या भीषण आन्तरिक अव्यवस्था के समय स्थगित किया जा सकता है ।

(३) यदि कानून और नैतिकता के विरुद्ध उद्देश्य न हो तो प्रत्येक व्यक्ति को स्वतन्त्र सम्मति प्रकाशन, मिलने-जुलने तथा बिना सैनिक-वर्दी व शस्त्रों के शक्ति पूर्वक एकत्र होने का अधिकार हो ।

(४) अपने धर्म के अनुपालन व प्रचार तथा विचार की स्वतन्त्रता प्रत्येक व्यक्ति को मिले; बशर्ते कि वह सार्वजनिक व्यवस्था तथा नैतिकता के विरुद्ध न हो ।

(५) धर्म, जाति या विश्वास के भेद भाव के बिना कानून की दृष्टि में सब व्यक्ति समान समझे जांय ।

(६) धर्म, जाति या विश्वास के कारण किसी व्यक्ति को सार्वजनिक नौकरियां सम्माननीय एवं अधिकार पूर्ण पद तथा किसी व्यापार के लिये अयोग्य न समझा जाय ।

(७) बेगार बिल्कुल न रहे ।

रियासतों का शासन निम्न सिद्धान्तों के आधार पर होगा । वे सिद्धान्त उन रियासतों में कठोर रूप से क्रियान्वित किये जांय जहां वे अभी तक चालू नहीं हैं ।

(१) न्याय का कार्य निष्पक्ष एवं योग्य व्यक्तियों के हाथ में हो तथा वे शासन क्षेत्र में कार्य न करते हों । रियासत व प्रजाजन के बीच उठ खड़े हुए झगड़ों को निपटाने के लिये निष्पक्ष पंच की उचित व्यवस्था की जाय ।

(२) रियासतों के शासन अपनी अपनी रियासत में शासनव्यय तथा व्यक्तिगतव्यय को पृथक-पृथक रखें और व्यक्तिगतव्यय में साधारण मालगुजारी की उचित प्रतिशकता से अधिक न लें ।

(३) टैक्सों को न्याय विधि से लगाया जाय तथा लगान का एक निश्चित व बड़ा भाग जनता के लाभार्थ दिया जाय, मुख्यतः राष्ट्र निर्माण के कार्यों में लगाया जाय ।

मुस्लिमलीग किन की ?

यू. पी. असेम्बली के लिए जिन लोगों को मुस्लिमलीग ने टिकट दिया है, उनमें से कुछेक नामों की जानकारी अत्यन्त मनोरंजक है —

खां० ब० रुकनुद्दीन, खां० ब० अबेदुर्रहमान, खां० ब० बदरुद्दीन, खां० ब० अब्दुस्समी, खां० सा० चौ० अहमदुल्ला, खां० ब० मुहममद नजीर, खां० सा० मुहमदगनी, नवाब सैयद अजीज रसूल, नवाब सर मुहमदयूसफ, नवाब नवाजिश अलीखां, नवाब जमशेद अली खां, महराज कुमार महमूदाबाद ।

— एक समाचार

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वीर अर्जुन के ग्राहकों से

कृपया पत्र-व्यवहार करते समय या मनीआर्डर भेजते समय अपना ग्राहक नम्बर लिखना न भूलें अन्यथा आपकी आज्ञा-पालन करने में व्यर्थ की देरी होगी, क्योंकि हजारों ग्राहकों में से आपका नाम बिना ग्राहक संख्या के तलाश करना असम्भव है। —मैनेजर

★ वीर ★
अर्जुन
अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्
सोमवार ता० २८ जनवरी सन् १९४६ ई०

अपनी भाषा और हम

अभी म० गांधी ने मद्रास में कार्यकर्ता-सम्मेलन में राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि सभा का कार्यक्रम अंग्रेजी की बजाय तामिल या हिन्दुस्तानी में छपना चाहिए था। हिन्दुस्तानी न जानने वाले कार्यकर्ताओं की भर्त्सना करते हुए उन्होंने कहा कि "वह जमाना गुजर गया है, जब मैं अंग्रेजी बोला करता था। अब तो मैंने अंग्रेजी केवल अंग्रेजों और विदेशियों के लिये ही रख छोड़ी है। मैं जानता हूं कि आप लोगों को अंग्रेजी में अच्छी तरह समझा सकता हूं, लेकिन आपको अपनी टूटी फूटी हिन्दुस्तानी में ही समझाऊंगा।" इससे दो एक दिन पूर्व दूसी नामक स्थान में अंग्रेजी में मान-पत्र देने वालों को भी डांटते हुए गांधीजी ने कहा कि 'जो कुछ कहना हो, हिन्दुस्तानी में कहो या तैलगू में। तुम अंग्रेजी जानते हो, यह अच्छी बात है, लेकिन उसका सर्वत्र प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं।' म० गांधी यह विचार समय समय पर प्रकट करते रहे हैं, लेकिन इन दिनों वे इस प्रश्न पर और भी अधिक जोर देने लगे हैं।

वस्तुतः भाषा का प्रश्न जैसा महत्वपूर्ण है, उतना ही राष्ट्र के नेता उसकी उपेक्षा करते रहे हैं और इसी कारण अपनी मातृभाषा के प्रति प्रेम और श्रद्धा की बड़ी भारी कमी हम में है। सरकार तो अंग्रेजी का प्रचार करती ही है। उसकी सारी मशीनरी और सारे महकमे अंग्रेजी का प्रचार करते रहते हैं। आज हमारे दुर्भाग्य से अंग्रेजी हमारे जीवन में इतना घर कर गई है कि प्रत्येक सार्वजनिक कार्यकर्ता, चाहे वह अंग्रेजी न भी जानता हो, अपना वक्तव्य अंग्रेजी में देने का प्रयत्न करता है। हमारी व्यापारिक संस्थाओं में ही नहीं, सामाजिक और सार्वजनिक संस्थाओं में भी सारा कारोबार अंग्रेजी में होता है। हमारे घरों के नाम तक अंग्रेजी में लिखे जाते हैं, दुकानों तक पर के साइनबोर्ड—नाइयों और धोबियों तक के भी साइनबोर्ड—अंग्रेजी में लिखे जाते हैं। मानो हमारे देश की अपनी कोई भाषा ही नहीं है। आर्यसमाज और सनातनधर्म सभा हिन्दी प्रचार का दावा करती हैं, लेकिन उनके चिट्ठी लिखने के कागज तथा पत्रव्यवहार भी अंग्रेजी में ही होते हैं।

कांग्रेस के कार्यकर्ता तो इस दिशा में और भी पिछड़े हुए हैं। वे देशभक्त हैं और इसके लिए त्याग करने में भी वे आगे बढ़े हुए हैं, लेकिन राष्ट्रीयता और देशप्रेम का अर्थ केवल राजनैतिक स्वतंत्रता नहीं है, इस सत्य को उन्होंने अभी तक हृदयंगम नहीं किया। राष्ट्रीयता का अर्थ केवल राजनैतिक स्वतंत्रता नहीं है, अपने संस्कृति सभ्यता से प्रेम भी राष्ट्रीयता के लिए अनिवार्य है। भारत के राजनैतिक नेताओं में म० गांधी ने इस सचाई को सबसे पहले और सबसे अधिक गहराई के साथ महसूस किया है। वे २५-३० साल से हिन्दी के प्रचार के लिये प्रयत्न कर रहे हैं, लेकिन अभी तक कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने इस सत्य को नहीं समझा-इसी लिए गांधीजी को अत्यन्त खिन्न होकर पिछले दिनों कांग्रेस कार्य कर्ताओं को बहुत खरी खोटी सुनाने के लिए विवश होना पड़ा है।

लेकिन क्या अब भी कांग्रेसी कार्यकर्ता अपनी भाषा के प्रेम को महत्व देंगे? केवल भाषा का प्रश्न ही नहीं, हमारे समस्त जीवन में से अंग्रेजियत को निकालने की जरूरत है। आज हमारा रहन-सहन ऊंचा करने की कसौटी ही अंग्रेजी सभ्यता को अपनाना दीखती है। जापान अपनी संस्कृति को अपना कर भी इतना शक्तिशाली हो सकता है, तो हम भी अपनी भाषा, अपनी संस्कृति और अपने धर्म तथा रहन-सहन को अपना कर ऊंचा हो सकते हैं। राजनैतिक स्वतन्त्रता तो केवल शरीर की स्वतन्त्रता है, हृदय और मस्तिष्क की स्वाधीनता उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है। इसको हम भूल जाते हैं। हमें सदा आयर्लैण्ड के स्वाधीनता-संग्राम के पुरोहित श्री डि वेलरा के इन शब्दों को स्मरण रखना चाहिये कि "यदि मेरे सामने अपनी मातृभाषा की रक्षा तथा देश की राजनैतिक स्वतंत्रता के बीच में से चुनाव का प्रश्न हो तो मैं अपने देश की भाषा को चुनूंगा, क्योंकि मैं जानता हूं कि यदि अपनी भाषा मेरे पास रहेगी, तो मैं उसी के बल पर राष्ट्र की स्वाधीनता को भी प्राप्त कर लूंगा।"

श्री सुभास को राष्ट्र की श्रद्धांजलि

गत २३ जनवरी को समस्त देश भर में श्री सुभास चन्द्र बसु को जिस समारोह के साथ श्रद्धांजलि अर्पित की गई, वह भारत के इतिहास में अभूतपूर्व है। श्री सुभास ने राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिये आजाद हिन्द सरकार का जो संगठन किया था, उसने वस्तुतः भारत को आत्मशक्ति का विश्वास दिला दिया है। इतना शक्तिशाली संगठन सचमुच असाधारण था। इस समारोह ने दूसरी बात यह भी प्रकट की है कि आज भारत स्वतंत्रता के लिये जितना आकुल है, उतना इससे पूर्व नहीं था। आज वह इसके लिए कटिबद्ध हो चुका है। वह स्वतंत्रता लेकर रहेगा। वह अहिंसा के गीत गाता था, लेकिन आज वह कहने लगा है कि यदि हिंसा की जरूरत पड़ी, तो वह उससे भी पीछे नहीं रहेगा। इस भावना के मूर्तरूप श्री सुभास बाबू को राष्ट्र ने अत्यन्त आदर व श्रद्धा के साथ श्रद्धांजलि दी है।

राजाओं की कसौटी

गतांक में हमने रियासती समस्या की चर्चा करते हुए राजाओं की आलोचना की थी कि वे अपना कर्तव्य नहीं समझते और अपनी प्रजा की स्थिति को सुधारने का कोई प्रयत्न नहीं करते। यह हर्ष की बात है कि नरेन्द्रमण्डल के चांसलर नवाब भोपाल ने उक्त मंडल की ओर से कुछ सुधारों की घोषणा की है। प्रजा के मौलिक अधिकार स्वीकार करने के साथ साथ राजाओं के व्यक्तिगत व्यय को पृथक् रखने, टैक्सों को न्यायानुकूल लगाने और बेगार खतम करने तथा लोकप्रिय धारा-सभाएं स्थापित करने आदि की घोषणा की गई है। जहां तक घोषणा और शब्दावली का संबन्ध है, वहां तक पूर्ण संतोष न होते हुए भी यह कहा जा सकता है कि आगे एक बड़ा कदम अवश्य उठाया गया है। लेकिन इस प्रकार की घोषणाओं का प्रभाव तभी पड़ेगा, जब राजा उसपर अमल भी करेंगे। अभी तक भरतपुर, बीकानेर सिरोही तथा उदयपुर आदि रियासतों में प्रजाकी प्रवृत्तियों आदि के दमन के होते हुए हम भोपाल नवाब की घोषणा का स्वागत करते हुए कोई विशेष प्रसन्नता प्रकट नहीं कर सकते। राजाओं का कर्तव्य है कि वे एकदम अपने यहां दमनसंबन्धी कानूनों को रद करने की घोषणा करें और नागरिक अधिकारों की स्थापना करें। शाब्दिक घोषणा के बाद अमल में देर होने से इसका कोई प्रभाव जनता पर नहीं पड़ेगा और असंतोष ज्यादा उग्र-रूप धारण कर लेगा। तब राजाओं को और भी अधिक विषम स्थिति का सामना करना पड़ेगा। घोषणा पर तत्काल अमल ही राजाओं की वास्तविक कसौटी है।

विश्व शान्ति या ..... ?

लन्दन में अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा कौंसिल की स्थापना की गई है। यह कौंसिल समस्त विश्व में शान्ति स्थापित करने और किसी सदस्य राष्ट्र पर आक्रमण होने की अवस्था में उसकी रक्षा करने की दृष्टि से बनाई गई है। विवादास्पद प्रश्नों का भी यह कौंसिल निपटारा करेगी। लेकिन स्थिति यह है कि कौंसिल के बड़े सदस्य आपस में ही लड़ रहे हैं। विश्वसुरक्षा की बजाय स्वार्थ-साधन की भावना ही अधिक दृढ़वती है। प्रत्येक सदस्य अपना अपना दांव लगाने की फिक्र में है। रूस यदि ईरान और टर्की में अपनी नई चालें चल रहा है, तो ब्रिटेन ग्रीस और जावा आदि में। सुरक्षा कौंसिल में यदि ब्रिटेन के संकेत पर ईरान अपना प्रश्न छेड़ता है, तो रूस जावा और ग्रीस का सवाल उठा रहा है। वस्तुतः शीशों के मकान में बैठकर दूसरे पर पत्थर फेंकने का प्रयास हो रहा है। दोनों ही दुर्बल राष्ट्रों की कमजोरी का अनुचित लाभ उठा रहे हैं। देखें, इस संघर्ष का क्या अन्त होता है? आज स्थिति यह है कि विजेता राष्ट्र अपने स्वार्थों में समन्वय स्थापित नहीं करेंगे, तो विश्वशान्ति असंभव हो जायगी।

नई केन्द्रीय असेम्बली

सन् १९३४ के १२ साल बाद जनता ने जिस नई केन्द्रीय असेम्बली का संगठन किया है, उसकी बैठकें इस सप्ताह प्रारंभ हो गई हैं। इस तरह एक दीर्घकाल बाद केन्द्रीय असेम्बली के सदस्य वर्तमान प्रश्नों पर लोकमत का प्रतिनिधित्व करने लगे हैं। इस असेम्बली की बैठकें अभी चार दिन ही हो पाई हैं और इनमें से तीन दिन सरकार को पराजय का मुख देखना पड़ा। दो दिन स्थगित प्रस्तावों पर और एक दिन असेम्बली के अध्यक्ष-चुनाव में। चुनाव के सिलसिले में सरकार ने एक-एक वोट लेने के लिये जो परिश्रम किया, उसे देखते हुए आश्चर्य जरूर होता है। कांग्रेस पार्टी की जीत का स्पष्ट अर्थ यह है कि आज मुस्लिम लीग और सरकारी सदस्य मिल कर भी राष्ट्रीय लोकमत को नहीं परास्त कर सकते। हम श्री मावलंकर को उनकी विजय पर बधाई देते हैं और आशा करते हैं कि वे प्रेजिडैण्ट पटेल की परिपाटी अपनाते हुए इस ऊंचे पद का भी राष्ट्रीय युद्ध के लिये प्रयोग करेंगे।

सिंध में हिन्दुओं की दशा

श्री जिन्ना ने अपने एक भाषण में कहा है कि पाकिस्तान हिन्दुओं के लिये भी लाभप्रद होगा। लेकिन श्री शामदास गिड़वानी द्वारा दिये निम्नलिखित आंकड़े स्पष्ट करेंगे कि सिंध के पाकिस्तानी

शासन में हिन्दुओं की क्या स्थिति होगी। "पिछले मंजलगाह-आन्दोलन में सिंध सरकार की रिपोर्ट के अनुसार १४२ हिन्दू कतल किये गये, १० हिन्दू जिन्दा जला दिये गये, १६४ घर जला दिये गये और ४६७ घर लूटे गये। सिन्ध में अराजकता के कारण ५४०० हिन्दू-परिवारों को गांव छोड़ कर शहरों में बसना पड़ा। यदि एक घर की कीमत १०००) रुपये भी हो तो ५४,००,००० रुपये की क्षति हुई। ८६०० एकड़ जमीन पर मुसलमानों ने जबर्दस्ती कब्जा कर लिया। इस जमीन की कीमत २७३००० रुपये होगी। अभूतपूर्व बाढ़ के कारण १७००० घरों को हिन्दू लोगों ने छोड़ दिया। इनकी कीमत एक करोड़ रुपये होगी। लेकिन सिंध सरकार ने उन्हें केवल ८०००) रुपये की सहायता दी।" इसलिये वे यह मांग करते हैं कि यदि भारत सरकार मुसलमानों को पाकिस्तान देने के लिये तुल गई हो, तो सिंध में हमें कराची, हैदराबाद और थरपारकर जिलों में 'हिन्दुस्थान' देना चाहिये।

जर्मनी से भारत की क्षतिपूर्ति

पिछले दिनों ६ नवम्बर से २१ दिसम्बर तक पेरिस में जर्मनी से क्षतिपूर्ति करने के प्रश्न पर विविध राष्ट्रों की एक कांफ्रेंस हुई थी। सभी योद्धा राष्ट्रों ने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि इस युद्ध में उनकी बहुत क्षति हुई है, इसलिये उन्हें जर्मनी से ज्यादा हरजाना दिया जाय। कांफ्रेंस ने यह निश्चय किया कि युद्ध व्यय, संपत्ति का विध्वंस और जननाश की कसौटियों पर किसी राष्ट्र की क्षति स्वीकार की जाय। रूस को जर्मन युद्ध से सबसे अधिक क्षति उठानी पड़ी है, यह सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया और इसके अनुसार उसे ५० फीसदी हरजाना जर्मनी से लेने का अधिकार दिया गया। याल्टा-सम्मेलन में यह निश्चय किया गया था कि जर्मनी पर क्षतिपूर्ति के लिये अधिकतम बोझ ५ अरब पौंड लादा जा सकता है। अभी यह यह मालूम नहीं हो सका कि जर्मनी से कुल कितनी रकम क्षतिपूर्ति के रूप में ली जायगी। पेरिस कांफ्रेंस ने केवल क्षतिपूर्ति का अनुपात नियत किया है और इसके अनुसार ब्रिटेन, अमेरिका और फ्रांस को २८,२८,१६ प्रतिशत के अनुपात से हरजाना मिलेगा। जर्मनी के बड़े-बड़े कारखानों तथा जहाजों को भी २७.८,११.८ और २२.८ के अनुपात से बांटा जायगा। भारत को इस क्षतिपूर्ति में केवल २ और २.६ फीसदी हरजाना मिलेगा। वस्तुतः यह भारत के साथ बहुत अन्याय है। इसका मुख्य कारण यह है कि क्षति गणना की जो कसौटियां रखी गई थीं, वे अत्यन्त त्रुटिपूर्ण हैं। भारत एक दरिद्र देश है, वह ब्रिटेन और अमरीका की तरह से विपुल मात्रा में व्यय कर भी नहीं सकता था। लेकिन अपनी कुल राष्ट्रीय आय का बहुत बड़ा अंश — ब्रिटेन और अमरीका से कहीं ज्यादा अनुपात में — उसने युद्ध पर व्यय किया। भारतवर्ष ने स्वयं भूखा नंगा रह कर, बंगाल के दुर्भिक्ष में ३०-३५ लाख नागरिकों की आहुति दी, उसका पेरिस कांफ्रेंस ने कोई खयाल नहीं किया। वस्तुतः भारत को अपनी आर्थिक स्थिति और जीवन धरातल को देखते हुए युद्ध के लिये जो त्याग करना पड़ा है, वह किसी भी देश से अधिक है, लेकिन उसकी परवा न करके केवल रकम को देख कर यह निर्णय किया गया है। भारत ने अपना सर्वस्व तक युद्ध पर लगा दिया है। प्रे० रूजवेल्ट ने क्षति के लिये बलिदान को कसौटी माना था, यदि उस कसौटी को स्वीकार किया जाता, तो रूस के बाद शायद भारत को ही स्थान मिलता। लेकिन हम तो परतंत्र न हैं?

निजी घर बनाओ

प्रायः प्रत्येक राष्ट्र की पुनर्निर्माण योजना में घर बनाने को बहुत महत्व दिया जा रहा है। यूरोप के युद्ध-ग्रस्त राष्ट्रों में तो मकानों की समस्या है ही, भारत जैसे उन राष्ट्रों में भी, जहां युद्ध का प्रभाव मकानों पर नहीं पड़ा, कम विषम नहीं है। भारत एक दरिद्र देश है, यहां मकानों की स्थिति न केवल अपर्याप्त है, बल्कि वे स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अत्यन्त निराशाजनक है। जनसंख्या जिस तेजी से बढ़ रही है, मकान उससे बहुत कम अनुपात में नये बने हैं। १६३१ में ३४ करोड़ जनसंख्या थी, जो १० वर्ष बाद बढ़कर ३६ करोड़ हो गई, लेकिन इन दस वर्षों में मकान ६॥। करोड़ से केवल ७॥ करोड़ हुये। इसका अर्थ यह हुआ कि आज प्रति ५११६ व्यक्तियों के पीछे १००० घर हैं। प्रति १००० में से भी ६०० घर ऐसे हैं, जिहें घर कहना इस शब्द के साथ मजाक करना है। इसलिये सरकार का कर्तव्य है कि शीघ्र ही मकानों के निर्माण की ओर ध्यान दे। युद्ध काल में यों भी इमारती सामग्री न होने के कारण मकान नहीं बने। लेकिन समस्या का एक दूसरा पहलू भी है। केवल मकान बनाने से भी यह समस्या हल नहीं होती। जरुरत इस बात की है कि लोगों के अपने-अपने घर हों और इसके निर्माण की योजनाओं में मध्यवित्त लोगों को अपने-अपने घर बनाने की सुविधा मिलनी चाहिये। किराये के लिये मकान बनाने की प्रवृत्ति को निरुत्साहित करना चाहिये। इसलिये सब योजनाओं में किसी भी एक व्यक्ति को एक से अधिक प्लाट न देने की व्यवस्था होनी चाहिये। अपने निजी घर रखने से जीवन का मान बढ़ेगा, किराये पर अधिक व्यय नहीं होगा। म्यूनिसिपल कमेटियां और जिला बोर्ड तथा पंचायतें आदि इस दिशा में विशेष प्रयत्न कर सकती हैं। हाउसिंग कोआपरेटिव सोसाइटियों का संगठन करके विशेष प्रयत्न हो सकता है। दस बारह वर्ष तक किराया देकर कोई एक व्यक्ति अपने मकान का स्वयं मालिक हो सकता है। अगर कुछ वर्षों तक इस योजना पर सभी स्थानों में अमल हो, तो शीघ्र ही समस्त राष्ट्र की सम्पत्ति बहुत अधिक बढ़ जायगी।

केन्द्रीय असेम्बली

२१ जनवरी से नव निर्वाचित केन्द्रीय असेम्बली का प्रथम बजट-अधिवेशन प्रातः से आरम्भ हो गया। प्रथम दिन लगभग आधा दर्जन अनुपस्थित सदस्यों के अतिरिक्त, हाऊस पूरा भरा हुआ था। मुस्लिम लीग पार्टी के सदस्यों ने जिन्ना कैप कहलाने वाली टोपियां पहन रखी थी। कांग्रेस पार्टी के सदस्य गांधी टोपी पहिने हुए थे और उन्हों ने विरोधी कैम्पों के तीन ब्लाक घेर रखे थे।

अब तक सरकार को तीन बार हारना पड़ा है। प्रथम दिन ही श्री रंगा का स्थगित प्रस्ताव बिना मत विभाजन के पास हो गया, जिस में भारत सरकार की इस लिये निन्दा की गई कि उसने युद्ध-समाप्ति के बाद भी ब्रिटिश सरकार को जावा व हिन्दचीन की स्वतन्त्रता के दमन में सहयोग देने से इनकार नहीं किया। प्रस्ताव के पक्ष में श्री जिन्ना का भाषण बहुत सुन्दर रहा।

एक और स्थगित प्रस्ताव बिना मत विभाजन के पास हो गया। यह प्रस्ताव श्री मोहनलाल सक्सेना ने उपस्थित किया था जिस में सरकार द्वारा १६४४ के आर्डिनैंस नं० ३ के अनुसार नजरबन्दों को न छोड़ने के कारण सरकार की निन्दा की गयी थी।

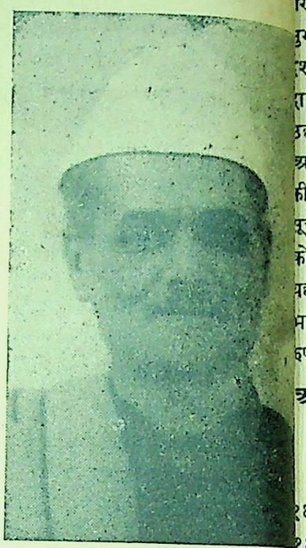

श्री मावलंकर

तीसरी बार सरकार की हार असेम्बली के अध्यक्ष के निर्वाचन पर हुई। कांग्रेस के प्रतिनिधि श्री गणेश वासुदेव मावलंकर थे और मुस्लिमलीग तथा सरकारी पक्ष की ओर से सर कावस जहांगीर थे। मावलंकर को ६६ तथा श्री जहांगीर को ६३ वोट मिले।

बम्बई में गोली

श्री सुभाषचन्द्र वसु के ५० वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में बम्बई में विशाल जलूस निकाला गया। इसे तितर बितर

(शेष पृष्ठ १६ पर)

सुभाष बाबू के जन्म दिवस पर दिल्ली की सभा का एक दृश्य

पं० नेहरू के पास श्री सहगल भी बैठे हैं

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भारत और अमरीका का व्यापारिक सम्बन्ध

[श्री युगलकिशोर गुप्त, एम० ए०, बी० एल०]

एक संवाद एजेन्सी को विश्वस्त सूत्र से यह पता चला है कि युक्तराष्ट्र अमेरिका की सरकार ने भारत-सरकार को पत्र भेजा है, जिसमें यह सुझाव पेश किया गया है कि दोनों देशों के प्रतिनिधि उभयपक्ष को लाभ-दायक एक व्यापारिक संधि करने के उद्देश्य से वार्ता आरंभ करें। हमें पूर्ण आशा है कि दोनों देशों के स्वार्थों की रक्षा करते हुए एक ऐसी संधि का सूत्रपात हो सकता है, जिसमें दोनों देशों को लाभ हो। निम्नांकित आंकड़ों से यह प्रकट होगा कि गत ८ वर्षों में ब्रिटिश भारत ने संयुक्तराष्ट्र अमेरिका से कितने रुपयों की वस्तुएं आयात कीं।

अमेरिकन वस्तुओं का भारत में आयात

वर्ष	आयात का मूल्य
१९३६-३७	७.४५ करोड़ रुपये
१९३७-३८	१२.८८ ,,
१९३८-३९	९.७८ ,,
१९३९-४०	१४.९२ ,,
१९४०-४१	२७.०१ ,,
१९४१-४६	३४.६१ ,,
१९४२-४३	१९.०१ ,,
१९४३-४४ (केवल ११ मास)	१६.६९ ,,

उपर्युक्त आंकड़ों से प्रकट है कि यद्यपि गत महायुद्ध के पूर्व शान्तिकाल में भारत संयुक्तराष्ट्र अमेरिका से प्रायः दस करोड़ रुपये वार्षिक की वस्तुएं मंगाया करता था, युद्धकाल के आरम्भ में अमेरिका से आयात की मात्रा ३४ करोड़ रुपये तक पहुंच गई। इसका मुख्य कारण यह था कि दिसम्बर १९४१ तक ब्रिटेन अपनी रक्षा में तल्लीन था और जो कलकारखाने भारत को माल निर्यात किया करते थे वह युद्ध सामग्री बनाने लगे। ब्रिटेन की इस परिस्थिति का लाभ उठाकर संयुक्तराष्ट्र अमेरिका ने भारत को अधिक मात्रा में माल निर्यात करना आरम्भ कर दिया। परन्तु यह अवस्था देर तक न चल सकी और पर्ल हार्बर की दुर्घटना के उपरांत संयुक्तराष्ट्र अमेरिका को भी युद्धक्षेत्र में उतरना पड़ा और यही कारण था कि सन् १९४२-४३ और सन् १९४३-४४ में संयुक्तराष्ट्र अमेरिका अधिक मात्रा में माल निर्यात न कर सका। परन्तु फिर भी युद्ध के पूर्व की अपेक्षा ५० प्रतिशत अधिक मूल्य का माल निर्यात करता था। अब भारतीय बाजार में संयुक्तराष्ट्र अमेरिका के दो प्रबल प्रतिद्वन्दी जापान और जर्मनी आगामी कुछ वर्षों तक औद्योगिक दृष्टि से मृत ही समझे जायेंगे, इसलिए संयुक्तराष्ट्र अमेरिका में युद्धकाल में जो औद्योगिक उन्नति हुई है उसको अक्षुण्ण रखने के लिये उस देश की सरकार इस बात की इच्छुक है कि संयुक्तराष्ट्र अमेरिका का माल अधिक से अधिक मात्रा में भारत, चीन, और सुदूरपूर्व में बिके।

कुछ देशों को शत्रुराष्ट्र घोषित कर देने के और ब्रिटेन की विवशता के कारण युद्धकाल में आयात के जो आंकड़े हैं, हम उनके आधार पर भविष्य की रूपरेखा निश्चित नहीं कर सकते। इसलिये सन् १९३६-३७ से हम उनका परिमाण लाख रुपयों में दे रहे हैं।

अमेरिकन कांग्रेस में श्री एटली भाषण दे रहे हैं।

लाख रुपयों में

	१९३६-६७	१९३७-३८	१९३८-३९
रसायनिक द्रव्य	१३	१७	२०
तांबा	१२	२६	१६
रुई	८	२२१	३७
औषधि	२३	२८	२६
लोहे का इमारती सामान	२३	२६	२२
वैज्ञानिक औजार	८२	९४	८८
लोहा और इस्पात	७	४४	२५
मशीनरी	१०१	१३६	२११
मोटर और उनके पुर्जे	१६५	२६३	१६५
खनिज तेल	८६	१२४	६८
तम्बाखू और सिगरेट	४३	४२	४८
सौन्दर्य प्रसाधन	१८	२०	२३

उपर्युक्त आंकड़ों पर दृष्टिपात करने से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि भारत की युद्धोत्तर पुननिर्माण के लिये हमें उपर्युक्त वस्तुओं में प्रायः सभी का अधिकाधिक मात्रा में आयात करना होगा। जब तक कि भारतीय कलकारखाने इन चीजों को टिकाउ और सस्ते रूप में नहीं बना सकते। हां भारतीय रुई के संरक्षण के लिये रुई का आयात तो हमें पूर्णरूपेण बन्द कर देना होगा। तम्बाखू और सौन्दर्य प्रसाधनों पर भी कड़ी नजर रखनी होगी और यह चेष्टा करनी होगी कि भारत में वर्जिनिया तम्बाकू की फसल उपजाई जाये। जब तक भारत के निम्न स्तर के लोगों की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती, भारतीय फैशन की तितलियों द्वारा क्रीम, पाउडर इत्यादि का प्रयोग बन्द कर देना चाहिये। इतना ही नहीं, जब व्यापारिक वार्ता आरम्भ हो तो हमारी वर्तमान या भविष्यत् राष्ट्रीय सरकार के प्रतिनिधि संयुक्तराष्ट्र अमेरिका के प्रतिनिधियों को भली भांति समझा दें कि इस समय भारत सौंदर्य वृद्धि की ओर ध्यान नहीं दे सकता, उसे पहले तो अधिक से अधिक नर कंकालों के पेट की ज्वाला को शान्त करना होगा। इसलिये देश को स्वार्थ में अन्य वस्तुओं पर आयात में काफी कमी करनी होगी।

अब हमें देखना है कि इन आठ वर्षों में भारत ने संयुक्तराष्ट्र अमेरिका को कितना निर्यात किया है।

भारत द्वारा संयुक्तराष्ट्र अमेरिका को निर्यात

	निर्यातकामूल्य
१९३६-३७	१८.३६ करोड़ रु०
१९३७-३८	१८.२६ ,,
१९३८-३९	१३.८९ ,,
१९३९-४०	२४.४२ ,,
१९४०-४१	२५.९० ,,
१९४१-४२	४६.५९ ,,
१९४२-४३	२७.७९ ,,
१९४३-४४ (केवल ११ मास)	३६.३१ ,,

उपर्युक्त आंकड़ों से यह स्पष्ट है कि गत महायुद्ध के पूर्व भारत द्वारा संयुक्तराष्ट्र अमेरिका को निर्यात की मात्रा में कमी आ रही थी। परंतु युद्धारंभ होते ही भारत अधिकाधिक मात्रा में संयुक्तराष्ट्र अमेरिका को माल निर्यात करने लगा, परन्तु जब युद्ध की गति तीव्र हो गई और जापान द्वारा युद्धघोषणा होने के कारण प्रशान्त महासागर और अतलान्तक महासागर के जहाजी रास्ते पनडुब्बियों की अधिकता के कारण खतरनाक हो गये तो निर्यात की मात्रा में भी कमी आ गई।

युद्धोत्तर काल में भारत संयुक्त राष्ट्र अमेरिका को नया निर्यात कर सकता है इसका आभास गत महायुद्ध के पूर्व उस देश को हम विभिन्न वस्तुएं किन मात्राओं के निर्यात किया करते थे उसके आंकड़ों से स्पष्ट हो जायगा।

भारत द्वारा संयुक्त राष्ट्र अमेरिका को निर्यात की व्याख्या

	१९३६-३७	३७-३८	३८-३९
	(लाख रुपयों में)		
रुई	८७	७१	४१
फल मेवे तरकारियां	१०३	११३	१११
मवेशी की खाल	१६१	१६७	१५१
कच्चा जूट	१५९	१८५	६७
गनी (टाट)	८६५	८२७	६७०
लाख	१०२	६८	५०
चाय	४३	३८	४७
ऊन	६५	४३	५०
अबरक	२८	४०	१३

इस नकशे से यह प्रकट है कि हमारी सब से प्रमुख निर्यात जूट या टाट है और चूंकि भारत जितना जूट या टाट तयार करता है उन सबका प्रयोग नहीं कर सकता। इसलिये आगामी व्यापारिक वार्ता में भारतीय टाट के संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में आयात के लिये विशेष सुविधा प्राप्त होनी चाहिये। रुई का निर्यात तो हमें बन्द ही करना पड़ेगा। भारत में नग्नता निवारण के लिये भारत में ही सब रुई का प्रयोग होना आवश्यक है। यद्यपि फल और तरकारियों की खपत भारत में ही होने की काफी गुंजायश है फिर भी कुछ वर्षों तक हम इनका निर्यात जारी रख सकते हैं।

भूधर

— अनिलकुमार

ये अचल नील धूमिल भूधर !
सदियों के गड़े उजड़ पत्थर !
कैसा है रे इनका जीवन ।
बरसों से निशिदिन मूक वदन,
योगी से स्थिर-साधना मगन ।
देखा करते बस एक गगन,
ये अचल नील धूमिल भूधर ।

सदियों के गड़े उजड़ पत्थर,
पर इनमें भी मृदुता का घर ।
जिससे झरते हैं कल झर-झर,
फेनिल-चल-तरल सरित् निर्झर ।
इनका जीवन परहित तत्पर,
पर दिखते केवल जड़-पत्थर ।
ये अचल नील धूमिल भूधर !

मत कहो इन्हें ये भूधर हैं,
ये तो पर के हित भू पर हैं ।
इस बाह्य जगत के पत्थर हैं,
पर अन्तर से कोमल तर हैं ।
उन्नत मस्तक उत्तुङ्ग शिखर !
ये अचल गीत धूमिल भूधर ।

इनके उर का यह स्रोत तरल,
मरु में भी चला रहा है हल ।
इनके जीवन पर पौधे पल,
कृषि का जीवन कर सुफल-सफल ।
दे रहे नाज हो रहे अमर !
ये अचल नील धूमिल भूधर !

ये उजड़े एकाकी जड़वत,
इनका तन-मन-जीवन उन्नत ।
ये तो साधना सक्त शिव-रत,
पर मानव तुम स्वारथी विनत !
गिर गये महा मानव होकर ?
तुम से भी देखो उज्वलतर ।
सदियों के गड़े उजड़ पथर !
ये अचल नील धूमिल भूधर !

कवि की अभिलाषा

— देवर्षि सनाढ्य

मेरे गीतों का एक रूप
जग के सब बन्धन तोड़-तोड़
माया-ममता को छोड़-छोड़
नभ की छाती को फोड़-फोड़
चमके बिजली सा, सूरज
मेरे गीतों का एक रूप

मेरे गीतों का एक रूप
महलों का काला दिल विदार
धनिकों का उन्मद मद उतार
सिखलाए करना अमिट प्यार
देखें वे भी तो करुणा
मेरे गीतों का एक रूप

मेरे गीतों का एक रूप
कृषकों की उन झोपड़ियों में
छप्पर की टूटी कड़ियों में
वस्त्रों की लड़ियों-लड़ियों में
फूंके जागृति का धवल शङ्ख
मेरे गीतों का एक रूप

मेरे गीतों का एक रूप
फावड़े लिये मजदूरों को
विश्रांति-रहित उन शूरों को
सीले से घर को — घूरों को
दिखलादे संसृति की अनीति
मेरे गीतों का एक रूप

मेरे गीतों का एक रूप
सदियों से जकड़ी माता को
सदियों से पकड़ी माता को
सदियों से अकड़ी माता को
कर दे पल में बन्धन-विहीन
मेरे गीतों का एक रूप

मित्र राष्ट्रों की सेनाएं भारत में इतने दिन तक रह गईं कि उनकी क्षुधापूर्ति के लिये लाखों गायें बकरिया और भेड़े जबह की गई । इस लिये यह संदिग्ध है कि भारत भविष्य में मवेशियों की खाल का निर्यात कर सकेगा । भारत में नागरिक जनता को जूते की मांग भी अभी तक काफी है । इसलिये संयुक्त राष्ट्र अमेरिका से किसी सुविधाजनक व्यवहार की आवश्यकता नहीं है । इसी प्रकार भारत में ऊनी कपड़ों की अभी अत्यधिक मांग है और हमें निर्यात की आवश्यकता नहीं पड़ेगी । यदि जरूरत है तो भारतीय लाख चाय और अबरक के निर्यात की मात्रा में वृद्धि की । भारत में अभी इन चीजों की जितनी आवश्यकता है, उससे कहीं अधिक पैदावार है और भारत सरकार का यह कर्त्तव्य होगा कि संयुक्त राष्ट्रीय बाजार में इन की बिक्री के लिये सुविधाजनक शर्तें उस देश के प्रतिनिधियों से मालूम करे ।

लेकिन कोई भी समझौता होने के पूर्व हमें इस बात को नहीं भूलना चाहिये कि हमारे गौरांग महाप्रभुओं ने अपने चचेरे भाई अमेरिकनों को भारत में वह सुविधायें दे रखी हैं जो भारतीयों को अमेरिका में प्राप्त नहीं । अमेरिकन नागरिक को भारत प्रवेश के लिये पूर्ण अधिकार है । वह भारत में जितने वर्ष तक उसकी इच्छा हो, ठहर सकता है और स्वच्छन्द और स्थायी रूप से भारत में व्यापार या उद्योग स्थापित कर सकता है और तुर्रा यह कि भारतीय उद्योगों को जितना संरक्षण प्राप्त होता है उससे कहीं अधिक अमेरिकन उद्योगों को मिल सकता है । इसके विपरीत भारतीयों को अमेरिका में नाम मात्र की भी स्वच्छन्दता नहीं है । चूंकि भारतीयों की गणना निषिद्ध क्षेत्र के निवासियों में होती है इसलिये उन्हें अमेरिका में नागरिक बन कर स्थायी रूप से निवास करने की आज्ञा नहीं है । तदुपरान्त भारत और संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका के बीच कोई पारस्परिक व्यापारिक और जहाजरानी की संधि न होने के कारण भारतीय व्यापारिक भी अस्थायी यात्रियों में गिने जाते हैं और इसी प्रकार उस देश में स्थायी रूप से व्यापार या उद्योग नहीं कर सकते ।

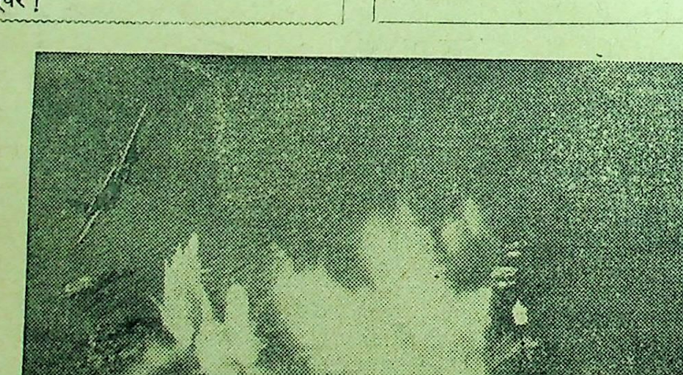

राकेट का शिकार एक जलयान

इसलिये भारत और संयुक्त अमेरिका में कोई व्यापारिक संधि होने पूर्व संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के प्रतिनिधि को भारत सरकार के प्रतिनिधियों आश्वासन देना चाहिये कि एक निश्चित समय के भीतर अमेरिकन कांग्रेस ऐसा कानून पास कर देगी, जि भारतीयों को स्थायी रूप से उस देश निवास करने व्यापार या उद्योग करने कोई अड़चन नहीं पड़ेगी । इन शर्तों स्वीकृति के बाद ही व्यापारिक वार्ता आरंभ हो सकता है । यदि अमेरिक भारतीयों को नागरिक अधिकार प्राप्त हो सकते तो व्यापारिक बात उस समय तक स्थगित कर देना च जब तक कि भारत में राष्ट्रीय सरकार न स्थापित हो जाये ।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मछलीपट्टम की समस्या

हैदराबाद निजाम का नया षडयंत्र

"अंतिम मनुष्य और रुपये तक लड़ेंगे"

पाठकों ने पत्रों में निजाम मछलीपट्टम और कोकोनाडा के बन्दरगाहों को हथियाने की कुचेष्टा के समाचार पढ़े होंगे। इस सम्बन्धी रहस्य और इतिहास का ठीक ज्ञान प्रवासी भारतीयों की समस्या और अर्थशास्त्र के विशेषज्ञ डा० लक्ष्मसुन्दरम को है। डा० साहब मछलीपट्टम में पैदा हुए हैं। इस लेख की तथ्य-सामग्री भी उनकी कृपा से प्राप्त हुई है।

निजाम हैदराबाद

हैदराबाद निजाम की भूख बरार पर अपनी सैद्धान्तिक राज्यसत्ता स्थापित कर नहीं मिटी, यद्यपि इससे वे प्रिंस आव वेल्स जैसी उपाधि प्रिंस आव बरार अपने उत्तराधिकारी के लिये पाने में अवश्य सफल मनोरथ हुए। मुझे अपने मित्र डाक्टर लंकासुन्दम् से मालूम हुआ है कि सन् १९४३ में, हो न हो बल्कि सन् १९३६ से निजाम के खैर-ख्वाह मछलीपट्टम हथियाने के स्वप्न देख रहे हैं। जिन प्रसिद्ध वैधानिक नियम विशेषज्ञ सर वाल्टर मान्कटन के इस सिलसिले में निजाम के पक्ष को मजबूत करने के लिये लंदन से हवाई जहाज द्वारा नई दिल्ली आजाने की खबर है उनके उपस्थिति में स्वर्गीय सर अकबर हैदरी ने डाक्टर साहब से मछलीपट्टम की निजाम और भारत सरकार में हुई संधियों में क्या स्थिति है इस पर प्रकाश डालने को कहा। इसपर डाक्टर साहब ने प्राप्त सामग्री की छानबीन कर स्वर्गीय सर अकबर हैदरी को एक स्मरण पत्रक दिया।

नई दिल्ली में पिछले एक महीने के भीतर निजाम के व्यापार मन्त्री नवाब मेहदीयार जग, सूचना और राजनीतिक कार्यमंत्री (सेक्रेटरी) मोइन नवाज जंग और उस्मानिया विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर आये हैं। इनमें से पिछले महानुभाव अभी यहीं है। उधर लंदन में इस सिलसिले में पिछले दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में निजाम के दोस्त खा० ब० दोस्त मुहम्मदीन ने ब्रिटिश बोर्ड आव ट्रेड के अध्यक्ष सर स्टाफोर्ड क्रिप्स से बातचीत की।

प्रारम्भ में सिर्फ मछलीपट्टम की चर्चा थी। परन्तु निजाम को, मेरा विश्वास है बाद को यह मालूम हो गया होगा कि सिर्फ मछलीपट्टम लेना व्यर्थ है क्योंकि इससे निजाम की सीमा १०० मील दूर है। परन्तु गोदावरी नदी पर होकर निजाम राज्य में नावें आ जा सकती हैं। इसी लिये ऐसा जान पड़ता है कि निजाम मछलीपट्टम — निजाम राज्य की सीमा — को कोनाडा त्रिकोण, जिसमें प्रायः ३०० वर्ग मील ब्रिटिश आंध्र देश की भूमि आ जाती है, चाहते हैं। यह त्रिकोण न हड़पने में सफल होने पर निजाम राज्य की सीमा से मछलीपट्टम तक 'गलियारे' की समस्या आपसे आप हल हो जायगी। साथ ही इससे निजाम की प्रतिष्ठा भी बढ़ सकती है। सम्राट जार्ज की तरह ये अपने को सम्राट उस्मान शाह और अपनी सरकार को निजाम सम्राट की सरकार कहला सकेंगे। यह कानी का ब्याह रचना है।

"ढाई करोड़ लड़ेंगे"

डा० लक्ष्मसुन्दरम एम० ए०, पी० एच० डी०

पहिली अंग्रेजी कोठी

मछलीपट्टम विषयक ईस्ट इंडिया कम्पनी और निजाम के सम्बन्ध, डाक्टर लंकासुन्दरम के अनुसार, कम्पनी और निजाम में हुई १८०१ और १८६० की संधियों में बताये गये हैं। इस के पूर्व के सम्बन्धों पर डाक्टर साहब ने मदरास से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'त्रिवेणी' के १९२८-२९ के अंकों में 'ब्रिटिश बिगनिंग्स इन आंध्र देश' शीर्षक लेख में प्रकाश डाला है। इस में लिखा है कि पूर्वीय तट पर अंग्रेजों की पहिली कोठी मछलीपट्टम में सन् १६११ में गोल कुन्डा के तत्कालीन सुलतान कुतुब शाह अब्दुल्ला की आज्ञा से बनी। इसके बाद भी ब्रिटिश व्यापार की सुविधा के लिये समय समय पर सुलतान फर्मान और कौल (वचन) देते रहे। पहिला फर्मान १६३३-४ में कप्तान जायस को दिया गया। कप्तान कौगन के गोलकुन्डा पहुंचने पर १९ वीं जुलाई १६३८ को एक दूसरा फर्मान देकर इसकी पुष्टि कर दी गयी।'

गोलकुन्डा का यह हाल था उधर हैदराबाद में, फ्रांसिसियों का प्रभाव था। धीरे-धीरे वैमनस्य बढ़ता गया। अन्त में कोन्डूर में लड़ाई हुई, जिसमें फ्रांसीसी और निजाम पराजित हुए। बहुत दिनों तक घेरे में रहने के बाद मछलीपट्टम पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। १७५९ में सलाबत जंग ने और १७६६ में मुगल बादशाह ने एक फर्मान द्वारा उत्तरी सरकार अंग्रेजों को दे दिया। १७८८ में एक खरीते में निजाम ने कप्तान कीनवे को गंटूर सरकार भी समर्पित कर दिया। इसके बाद अंग्रेज समस्त उत्तरी सरकारों के स्वामी बन गये।

यह बात ध्यान देने की है कि कर्नल फोर्ड के अनुरोध पर नवाब सलाबत जंग ने ईस्ट इंडिया कम्पनी को १४वीं मई १६४९ को मछलीपट्टम सरकार ही नहीं, जिसमें आठ जिले थे, बल्कि निजामपट्टम सरकार और कोन्डवेड और अकुलमांड के जिले भी इनाम में दे दिये। इस इनाम के बदले में किसी तरह का पेशकश (कर) देने की चर्चा तक नहीं है। एटकिसन के अनुसार 'यह उसी तरह की सनद थी जैसी फ्रांसीसियों को दी गयी थी'। तत्कालीन मुगल सम्राट शाह आलम ने अपने १२ वीं अगस्त १७६५ के फर्मान में बिना किसी प्रकार के परिवर्तन इन शर्तों की पुष्टि कर दी। १२ नवम्बर १६६६ को संधि में फिर मछलीपट्टम और दूसरे जिले सरकारों को देने की बात स्वीकार की गई, पर साथ ही यह शर्त भी रखी गई कि अगर निजाम को कम्पनी के सैनिकों की आवश्यकता न हुई तो कम्पनी निजाम को तीन किस्तों में पांच लाख रुपया वार्षिक देगी।

१७६६ की त्रिदल संधि

२३ मई १७६८ को त्रिदल संधि में जिसमें ईस्ट इंडिया कम्पनी, निजाम और कर्णाटक के नवाब वलीजाह भी सम्मिलित थे, पूर्व संधियों का अधिक स्पष्टीकरण किया गया। इसकी प्रथम धारा में यह कहा गया है कि उल्लिखित सरकार हमेशा कम्पनी की सम्पत्ति और अधिकार में रहेगी। चौथी धारा में कहा गया है उक्त सरकारों के जमीदारों इत्यादि पर कम्पनी की सर्वोच्च सत्ता होगी।

डा० पट्टाभिसीतारमैया

दसवीं धारा में यह कहा गया है कि एक वार्षिक भुगतान स्वीकार कर निजाम हाल में प्राप्त कर्णाटक बालाघाट की दीवानी कम्पनी को समर्पित करते हैं। यद्यपि इस में यह कहा गया था कि इसकी पुष्टि बादशाह करेंगे, पर ऐसा हुआ नहीं मालूम होता।

टीपू के विरुद्ध समझौता

४ जुलाई १७९० को ईस्ट इंडिया कम्पनी, निजाम और पेशवा माधवराव में हुई आक्रमणात्मक और रक्षणात्मक संधि में कहा गया था कि मैसूर के हारने पर टीपू सुलतान के राज्य के जो भाग निजाम को दिये जायेंगे, उन में रहने वाले पोलिगर या जमींदारों से निजाम पेशकश कुन्डी ले सकेंगे। २२ वीं जुलाई १७९९ को हुई मैसूर संधि में इसकी पुष्टि कर दी गई।

मालका यातायात

१२ वीं अक्टूबर १८०० को निजाम और कम्पनी में साधारण और स्थायी बचाव सम्बन्धी जो संधि हुई उस में पहिली बार यद्यपि सीमित परन्तु स्पष्टता पूर्वक निजाम राज्य के माल के ब्रिटिश राज्य से होकर आने जाने का उल्लेख है। संधि की चौदहवीं धारा में कहा गया है।

'गल्ला और खाने पीने और पहिनने की वस्तुएं और सहायक सेना के

(शेष पृष्ठ १५ पर)

मां नहीं आई

[श्री पद्मनाभ तैलङ्ग]

'उ थो बाबूदी, छबेला हो गया,' छुन्नू ने मच्छरदानी को ऊपर उठाते हुए कहा —

'हां, हो तो गया सवेरा बाबूजी ! आजी बऊ बड़ी देर की उठ बैठी,' पलंग की दूसरी ओर से छुन्नू के बड़े भाई मुन्नू ने मेरे बिस्तरे पर आक्रमण करते हुए कहा —

'तो तुम लोग भी चले जाओ उनके साथ। मुझे व्यर्थ दिक मत करो' मैंने डांटते हुए कहा।

'आज जो अम्मा आयगी न ! क्यों मुन्नू, तल पली होंगी न कोटा से,' छुन्नू ने उत्सुकता पूर्वक कहा।

और क्या बाबूजी भी तो कहते थे कोटा से एक एक दिन छोड़ के तो गाड़ी चलती है। कल शाम को बीना आ गई होंगी। क्यों बाबूजी अम्मा बीना में कहां सोई होंगी ?' मुन्नू ने मेरी छाती पर सवार होते हुए पूंछा।

'तुम्हारे सिर' मैंने बिगड़ कर कहा।

'तुम तो बुद्धू ठहले। लेलगाड़ी में छोईं होंगी ओल कहां। अपन भी तो लेलगाड़ी में छोये थे,' छुन्नू ने अपनी तीक्ष्ण बुद्धि का परिचय देते हुए कहा।

करता क्या ? आखिर बिस्तरों का मोह त्यागकर उठ बैठा। रातभर खटमलों का सामना किया। सुबह-सुबह जरा नींद लगी तो ये शैतान आ धमके। आज तो उनकी अम्मा का आगमन हो रहा था न। बेवकूफों को न जाने कहां से उनके आने की बास आ गई थी। दोनों के दोनों भाई उसके स्वागत की तैयारी में न जाने कब से सजे बैठे थे। रात को स्वप्न में कितनी बार उनका आगमन देख चुके होंगे। वाह छुन्नू पत्र डाले और अम्मा न आयें। उसने चिट्ठी में भी तो लिख दिया था — अम्मा फौरन चली आओ। परसों नहीं तो आज आवेगी। फिर उसके पास होने का समाचार सुनकर कहीं वे रुक सकती है। उन्हें संग की क्या जरूरत। अम्मा क्या हमारे समान छोटी हैं। लेलगाड़ी में तो आना है। बस, घरसे तांगा में बैठकर लेलगड़ी में जा बैठेंगी ओल फौलन घर।

रेलगाड़ी में बैठना दालभात का कौर जो ठहरा। कोई कितना समझावे पर वे कब मानने वाले। किसीकी सुविधा असुविधा से उन्हें क्या सरोकार। कोई साथ आयगा तो उसे छुट्टी लेने में दो तीन दिन सहज ही लग जायंगे। वाह छुट्टी लेने में दो तीन दिन — छुन्नू मुन्नू को छुट्टी मिलने में कब अधिक समय लगा — 'गुलूजी, आज हमाली अम्मा आयंगीं। हमें स्टेशन जाना है। छुट्टी दे दो।' गुलूजी ने कह दिया — जाओ। बस छुट्टी मिल गई। अब समझाओ उन्हें। फिर अपने रवाना होने की पहले से कोई सूचना भी तो भेजेगीं। लेकिन उन गधों के सिर में आवे तब न। वहां तो दोनों के दोनों भाई पहले से ही छुट्टी लेकर सजे बैठे थे। कपड़ों में साबुन लगा बैठा था।

अम्मा के सामने स्टेशन क्या मैले कपड़ों में जाने लगे। और फिर उनकी अम्मा क्या ऐसी वैसी अम्मा थीं ? मुन्नू के लिए मोटरगाड़ी लायेगी, पुस्तकें रखने के लिये बस्ता, एक छोटी सी बांसुरी और छुन्नू के लिये उसने — भी तो लिख दिया था — हमाले लिये तंवल की तीमली, हवाई जहाद; पैती औल एक छीछ।

'सीस तेरे लिये आयगी कि मेरे लिये ? स्लेट पर ग गनेश का तो लिखते बनता नहीं। देखा बाबूजी इन्हें सीस की क्या जरूरत ? मालूम भी है तीसरी क्लास में सीस से लिखाते हैं,' मुन्नू ने बीच में टोकते हुए कहा।

'चल खुद तो लेंपू छला है। परछाल पैली में फेल हो गया,' छुन्नू ने मेरा हाथ पकड़ते हुए कहा।

'अपनी तो कह श्यामू की नकल करके गचट्टी नंबर पास हुआ और चला शेखी मारने,' छुन्नू के गाल पर मुन्नू ने चपत जमाते हुए कहा और देखते-देखते दोनों एक दूसरे से भिड़ पड़े।

मैंने कहा — चलो स्टेशन जाने का किस्सा तो खतम हुआ जेठ की दुपहरी में खुद परेशान होते और मुझे भी करते। फिर आजकल गाड़ी आने का कोई निश्चित समय भी तो नहीं है। कभी एक घण्टे लेट तो कभी दो घंटे। बैतो कहां कड़ी दोपहरी में तपस्या करते।

मैं निश्चिन्तता से खाना खाकर दोपहर को कुछ आराम करने को लेट रहा। मुश्किल से आध घंटा भी न व्यतीत हुआ होगा कि अचानक दोनों के कोलाहल से मेरी नींद उचट गई। घंटे भर से छुन्नू और मुन्नू दोनों लापता थे। आजी बऊ मुहल्ले भर में ढूंढ़ आई। पर दोनों भाई नदारद। मैंने लाख समझाया आजांयगे घर घंटे दो घंटे में। जांयगे कहां ? पर आजीबाई कब मानने चलीं।

'वाह छोटे छोटे बच्चे, जेठ की दुपहरी, नंगे पैर, आजकल मिलीटरी की लारी चलती हैं। देखते नहीं — रामू का बाप जिंदगी से हाथ धो बैठा ? अभी उन बच्चों की उमर ही क्या है ? झपाटे में आजांय तो लेने के देने पड़ जांय। उजबक सरीखे तो चलते हैं — ऊपर को मुंह करके। कौन जाने स्टेशन का रास्ता मालूम है कि नहीं ? भूल से दूसरा रास्ता रख लेवें तो न जाने कहां के कहां मारे-मारे फिरें।'

'अच्छा तो है थोड़ा उजड्डपन का मजा भी तो मिले' मैंने क्रोधपूर्वक कहा।

'चलो तुम्हें क्या। गर्मी का मौसम ठहरा। कहीं लू लग जाय तो अभी ये सब बातें भूल जाओ' मेरी मां ने मुझे फटकारते हुए कहा।

'तो कहा किसने था कि जांय', मैंने सिरसे पसीना पोंछते हुए कहा।

'चले गये तो क्या हुआ। सभी को अपनी मां से मिलने की बेचैनी रहती है। अभी उनकी उमर ही क्या है। पहला-पहला तो मौका है उन्हें अपनी मां से अलग रहने का।' मेरी मां ने उत्तर देते हुए कहा।

आखिर साईकिल उठाई और स्टेशन की तरफ चल पड़ा। गुस्सा तो इतना आ रहा था मिलने दो दुष्टों को। ऐसी मरम्मत करूंगा कि छठी का दूध याद आजायगा। अम्मा-वम्मा सब भूल जायगी। ऐसा कैसा उजड्डपन, मुंह उठाया और निकल पड़े। अरे गाड़ी तो आ गई। फिर रहे होंगे मारे-मारे। भीड़ में अच्छों-अच्छों का तो ठिकाना लगता नहीं। स्टेशन है कि पर्व का मेला। निकलने तक को जगह नहीं। रेलयात्रा में इतनी परेशानी फिर भी इतनी भीड़। मिलीटरी वालों के धक्के और गालियां खाते जाते हैं। फिर भी मुखमरों की तरह मरे जा रहे हैं।

मुन्नू और छुन्नू — यहां कहां होंगे प्लेटफार्म पर। वहाँ मुसाफिरखाने में तो वहीं जा बैठे। खाली तो हो गया प्लेट-फार्म। यहां होते तो दिखाई नहीं दे

'अरे रमेश, तुम्हें छुन्नू और तो नहीं देखे स्टेशन पर।'

'नहीं, क्यों क्या स्टेशन आये

'हां दोनों के दोनों सटक गये पूछे ताछे। आज जो उनकी अम्म रही थीं न। वहां मां बिचारी बैठीं थीं। मुंह में अन्न का दाना नहीं गया।'

'फिर भाभी साहब आ तो गईं। उन्हीं के साथ घर चले गये

'अपने मन से ! आने-जाने कोई सूचना भी तो हो। छोकड़ों उनके आने का न जाने कहां से हो गया। कल से उनकी आवाज जमीन आसमान एक किये हुए चलो वहां मुसाफिर खाने में तो आवें।'

'प्लेटफार्म पर नहीं — मुसाफिर में नहीं। फिर आखिर गये तो कहां।

'आइये बाबू साहब — घर रहे हैं क्या ? तांगा खाली है।'

'अरे जुम्मन छुन्नू और मुन्न नहीं दिखे तुम्हें।'

'सवेरे-सवेरे तो आये थे घर कहते थे स्टेशन चलना है बीना गाड़ी पर। दस बजे से मिलीटरी के चक्कर में पड़ गया। अभी छूटा। दो रुपयों की मजदूरी में टिकाई। कुछ कहो तो मारने तो

'अरे यहां कहीं स्टेशन के आस तो नहीं दिखे ?'

'अजी बाबू साहब। आइये बैठो तो। घोड़ा है कि शेर बबर। मिल सेठ जी की तो लार टपक रही है पाने को। लेकिन हुजूर क्या बेचने लिये है। हजार की तो बात क्या लाख दे। अल्लाताला ने औलाद नाम से महरूम रक्खा तो अपने यही औलाद सही। दो साल के से तो इसे पाला है। आइये न साहब। खड़ा रह बहादुर। अभी चलते हैं घर।'

'बैठो रमेश, मैं साइकिल से रास्ते आता हूं। कहीं उन्होंने सदर रास्ता रख लिया हो।'

'आप बैठिये मैं जाता हूं इस से।'

'बाबू साहिब आपका बैठना तो सदर की तो बात क्या दिन भर में शहर की खाक छान डालें। सारी उ इसी पेशे में तो बिता दी है। पु पुस्त का पेशा है। आजकल के छोक की तरह नहीं कि चाबुक पकड़ने का तमीज नहीं और चले टांगा चलाने हुजूर ये भी एक हुनर है हुनर।'

'टिक-टिक-टिक, चल मेरे शेर टिक-टिक-टिक। इस रास्ते नहीं इस से। चलना बाबू — टन-टन-टन।

[शेष पृष्ठ २३ पर]

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

धारावाहिक उपन्यास—

स र ला

लेखक—
श्री श्रीदेव

[गतांक से आगे]

सरला की रात दूसरी ही विचार धारा में कटी। राधा ने प्राणजीवन के किये हुए आरोप और उनके असर में राधा द्वारा माणिकलाल पर किये गये आक्षेपों की स्मृति बार-बार दिमाग में आकर विप्लव मचा रही थी। वह सोचती थी कि ऐसा निर्मूल दोष भी क्या किसी पर लगाया जा सकता है? और फिर क्या यह भी सम्भव है कि ऐसे निर्मूल आरोप को मान लिया जाय। राधा को माता के समान ही समझ कर सरला ने संकट में उसका सहारा लिया था। यदि राधा बहकावट में आकर ऐसे झूठे अपवाद को सच मान सकती है तो शेष दुनिया क्यों न मान लेगी? इसी विचार-शृंखला के साथ चलता-चलता दिमाग अन्त में अपने आप से प्रश्न पूछता था—क्या सचमुच स्वामीजी का कहना ठीक है? क्या स्त्री चिरकाल तक एकाकी जीवन व्यतीत नहीं कर सकती? क्या अन्त में मुझे शादी करनी पड़ेगी?'

यहां तक पहुंच कर विचारों का प्रवाह रुक जाता था। उसकी आन्तरिक आंखों के सामने अपनी भाभी (चम्पा) का कातर चित्र खिंच जाता था। हृदय पूछता था कि क्या विवाह का यही अन्त है? क्या स्त्री को पति से ऐसा ही संरक्षण मिलता है?

कभी जाग्रत में, कभी स्वप्नावस्था में सरला बिस्तर पर पड़ी-पड़ी विचार-समुद्र के इसी मन्थन में लगी रही। कब उसकी स्वप्नावस्था समाप्त हुई, और गहरी नींद ने उसे घेर लिया—इसका उसे कुछ पता न चला।

× × ×

माणिकलाल जब टिकटघर पर टिकट लेने के लिये पहुंचा तो वह स्वयं नहीं जानता था कि कहां का टिकट लेगा। वह केवल इतना ही निश्चित कर सका था कि अशरण सरला को कुछ दिन के लिये घर में शरण देने का एक यही उपाय है कि मैं घर में अनुपस्थित रहूं। वह कहां जाय और दिनचर्या कैसी बनाये, इन प्रश्नों का उत्तर वह नहीं सोच सका था। टिकटबाबू ने पूछा—'कहां का टिकट?'

कोई निश्चित उत्तर न होने के कारण टर्मिनस का टिकट मांग लिया। कहा—'कल्याण का'।

टिकट लेकर माणिकलाल गाड़ी में जा बैठा। गाड़ी चल दी तो माणिकलाल के दिमाग ने भी प्रगति की। ज्यों-ज्यों गाड़ी स्टेशन से आगे और घर से दूर बढ़ने, लगी त्यों-त्यों माणिकलाल का जी घबराने लगा। यह समय तो उसका परिवार में जाकर सुखपूर्वक आराम करने का था। इस समय वह घर से दूर चला जा रहा है, यह अनुभूति उसे चिन्तित करने लगी। मन में प्रश्न उठा कि क्या इस तरह घर छोड़ कर जाना ठीक है? हृदय से उत्तर मिला—'क्यों नहीं? राधा ने बात ही ऐसी कड़वी कही थी और बेचारी सरला की भलाई के लिये आवश्यक भी प्रतीत होता है कि घर से कुछ समय तक अलग रहा जाय।'

फिर मन ने पूछा—'राधा ने विक्षोभ की दशा में कोई कड़वी बात कह दी, क्या उसका यह अभिप्राय था कि तुम घर से चले जाओ? राधा को तो तुम जानते ही हो कि वह स्त्री है, उसकी भावनायें उग्र हैं। वह क्रोध में कुछ भी कह जाती है। उसके उस समय के शब्दों का अभिधेय अर्थ लेना तुम्हारी भूल नहीं है तो क्या है?'

हृदय ने समाधान किया—'यदि तुम अब यूं ही घर लौट गये और राधा ने फिर वही बात दुहरायी तो क्या होगा?'

मन ने समझाया कि 'क्या तुम राधा को नहीं जानते! वह अब तक क्रोध में कहे गये अपने वाक्यों पर पछता रही होगी। वह तुम्हारे बिना इतना समय भी चैन से नहीं गुजार सकी होगी। वह दरवाजे पर खड़ी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही होगी।'

हृदय मन की इस तर्कना पर कुछ देर के लिये चुप हो गया, क्यों कि यह तर्कना उसे स्पर्श कर गयी। राधा दरवाजे पर खड़ी होगी और जब देर तक देखेगी कि जिसकी वह प्रतीक्षा कर रही है, वह नहीं आया तो घबरा जायेगी। आंखों से आंसू बहने लगेंगे और यदि रात तक निष्फल प्रतीक्षा जारी रही तो राधा आधी पागल हो जायेगी। ऐसी-ऐसी कल्पनाओं से माणिकलाल का हृदय व्याकुल हो उठा। उसे एकदम ख्याल आया कि मैं ऊहापोह में लगा हुआ हूं और गाड़ी मुझे घर से दूर ही दूर लिये जा रही है। यह ठीक नहीं। इस गाड़ी को थोड़ी देर के लिये छोड़ कर और मन को स्थिर करके तब गाड़ी में बैठना चाहिये। इतने में स्टेशन आगया। माणिकलाल ने बाहर मुंह निकाल कर देखा तो भायकाल का स्टेशन। वह भी उतरने वाले मुसाफिरों की भीड़ में शामिल होकर प्लेटफार्म पर आगया।

स्टेशन से बाहर आकर माणिकलाल सोचने लगा कि अब किधर जाना चाहिये? ख्याल आया कि मलका के बाग में चल कर कुछ देर विचार करना ठीक है। बाग का बाहर का द्वार अभी खुला था। अजायबघर के सामने के घास के मैदान में बैठ कर माणिकलाल फिर से मन और हृदय के बाद विवाद को दुहरा बस पर सवार हो गया। इस समय उसका हृदय मन की आज्ञा में चल रहा था।

चर्नीरोड के जंकशन पर वह बस पर से उतर गया और घर की ओर कदम बढ़ाया। उस समय उसका हृदय फिर उग्रता से काम करने लगा। राधा के कहे हुए कड़वे वचन याद आने लगे। दिल पूछने लगा कि क्या तुम्हारा कोई मान नहीं है और क्या यह सम्भव नहीं कि घर में घुसने पर राधा फिर वही बातें दुहराये और फिर तुम्हें भावनाओं के भंवर में डाल दे। इस विचार-परम्परा का असर यह हुआ कि माणिकलाल ताराबाग के बड़े दरवाजे में घुस कर सीधा चर्नीरोड के स्टेशन पर जाकर बेंच पर बैठ गया और सोचने लगा।

बहुत देर तक उसके मन में विचार संघर्ष चलता रहा। ज्यों-ज्यों रात गहरी होती जाती थी त्यों-त्यों एक स्थिर सी अनुभूति उसकी अन्तरात्मा में जाग्रत हो रही थी कि उसे इस समय घर में होना चाहिये था। सब विरोधी युक्तियों से यह अनुभूति प्रबल होती जाती थी। आधी रात समीप आ जाने पर अनुभूति इतनी प्रबल हो उठी कि उसने अपने पक्ष में एक अकाट्य युक्ति भी तलाश करली। युक्ति यह थी कि कम से कम यह तो देखना ही चाहिये कि मेरे घर पर न जाने का राधा पर क्या असर हुआ है? वह इस पर सन्तुष्ट है या पछता कर दुःखी हो रही है। अनुभूति की इस युक्ति से बहुत सहारा मिला और अधिक विचार न कर के माणिकलाल बेंच से उठ कर घर की ओर चल दिया।

रात के लगभग १२ बजे होंगे जब राधा ने दरवाजे की घण्टी की आवाज सुनी। वह आधी नींद में थी। झटपट उठ बैठी और कांपते हुए हाथों से दरवाजा खोल दिया।

— क्रमशः

सरला को उसके पिता शिक्षा प्राप्त करने के लिये बम्बई के महिला विद्यालय में दाखिल कर गये थे। विद्यालय के प्रिन्सिपल प्रो० प्राणजीवन ने उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखा। सरला प्राणजीवन को गुरु और बड़ा भाई मानती थी। उसे विवाह के प्रस्ताव से बड़ा मानसिक धक्का पहुँचा, यहां तक उसे विद्यालय के आश्रम में रहना असम्भव प्रतीत होने लगा। वह आधी रात के समय आश्रम छोड़कर चली गई।

माणिकलाल उसे खोज कर अपने घर ले आया। प्राणजीवन के बहकाने से उसकी स्त्री को अपने पति पर संदेह होगया और उसने पति से कुछ बुरा भला कहा। माणिकलाल घर छोड़ गया।

पंडित डी० गोपालाचार्लु का

जी वा मृ त मू

बदन को ताकत देने वाला और वीर्य वर्द्धक उत्तम बलकारक टानिक।

यह खून को शुद्ध करके शरीर में उसकी वृद्धि करता है तथा शरीर, मस्तिष्क और स्नायु का आश्चर्य रूप से निर्माण करता है। स्त्री पुरुष व बालक सभी उमरों के इसका प्रयोग कर सकते हैं। एजेन्ट चाहिये।

सोल एजेन्ट:—ऐनसा ट्रेडिंग कं० भागीरथ पैलेस के पीछे चांदनी चौक, देहली।

जुकाम की प्राकृतिक चिकित्सा

[डा० मंगूलाल वर्मा, दर्यागंज दिल्ली]

आजकल जुकाम और खांसी के कारण बहुत लोग परेशान हैं। इनसे बचने के लिये निम्नलिखित नियमों का पालन करेंगे तो इन रोगों के साथ और भी अनेक रोगों से सदैव के लिए छुटकारा हो जायगा। जुकाम अधिक आहार विहार के अनियम के कारण ही होता है। जब मनुष्य अधिक आहार करता है तो पाचन शक्ति निर्बल होकर आमाशय व आंतों में एक प्रकार की जोश लाने वाली दुर्गन्ध पैदा हो जाती है और सारे शरीर में फैल जाती है। इसे विजातीय द्रव्य के नाम से पुकारते हैं। इसी का एक रूप नजला या जुकाम है जो शरीर के भिन्न-भिन्न भागों में अपने असर से कष्ट देने वाला हो जाता है, किसी के छींकें आती हैं, गलाजत मुंह से गिरती है। अगर चिकित्सा न की जाय, तो खांसी दुःख देने लगती है और असावधान रहने से किसी-किसी के फेफड़े भी खराब हो जाते हैं। अन्त में क्षय तक नौबत आ जाती है। इस रोग से बचने के लिये निम्नलिखित उपायों का अवलम्बन करना चाहिये।

(१) उचित मात्रा में शुद्ध सादा भोजन समयानुसार करें। दाल इत्यादि कम खाये परन्तु हरे शाक सादा रीति से बने हुए बगैर मिर्च मसाले खायें। शक्ति के अनुसार फलों का सेवन करें। भोजन चबाचबा कर खायें और घी से चुपड़ी हुई रोटी खायें।

(२) शुद्ध वायु में टहलने का अभ्यास करें। अपनी शक्ति से अधिक काम न करें। मल-मूत्र इत्यादि वेग को किसी कारण न रोकें। पेट को साफ रखने का यत्न करते रहें।

(३) नित्य प्रति प्रातः ताजे पानी से, जाड़ों में एक बार स्नान भी अवश्य किया करें, पानी को ज्यादा गरम न करें तो उचित होगा।

(४) वस्त्र भी शुद्ध रखें। यदि आप उपर्युक्त नियमों का पालन करेंगे तो, मेरा विचार है आप कभी रोगी नहीं होंगे।

चिकित्सा

यदि किसी को जुकाम, नजले, खांसी की शिकायत होती है तो निम्नलिखित उपाय करने चाहिये, सिर्फ एक समय भोजन बिना घी के खायें, अगर दाल का शौक हो मय छिलके के मूंग की दाल से रोटी खांय। दिन में दो या तीन बार नाक में ठण्डा पानी स्वांस के साथ लेवें और सिनक दें। भाफ का एक स्नान सारे शरीर का, खास कर मुंह को भी लेकर करें। फिर पसीना पोंछ कर ठण्डे पानी से स्नान करके तौलिया से पानी पोंछ कर अन्दर स्नान लेवें। दो तीन बार ऐसा करने से जुकाम चला जायगा।

अगर किसी को पुराना जुकाम खांसी है तो कुछ दिन निम्नलिखित उपाय के करने से वह भी न रहेगा। हर एक चौथे दिन सूर्य स्नान और उदर स्नान किया जाय परन्तु यह ध्यान रहे कि ऊदर स्नान कम से कम दिन में दो बार करना जरूरी हैं, सूर्य स्नान चौथे दिन काफी होगा। सूर्यस्नान की विधि यह है—तीन चार केले के नये पत्ते लेवें और उनको कपड़े से पोंछ कर रोगी को सूरज के सामने मुंह करके लिटा दे। एक ढीला कुरता पहनकर फिर एक केले का पत्ता रोगी के सिर और मुंह पर ढंक दे। पैर, पेट और हाथ केले के पत्तों से ढांप दे। यह ख्याल रहे कि जिस स्थान पर पत्ते ढांपें वहां कपड़ा भी हों आध घण्टा या एक घण्टा ऐसा करें। बाद को पसीना पोंछ कर बड़ा उदर स्नान करें। खांसी जुकाम वाले को घी, दही, दूध, मिठाई कभी न खानी चाहिये और न स्त्री भोग ही करना चाहिये।

———

२४ घण्टे में कीड़े मर जाते हैं!

सोटा छाप सोटा छाप

दर्द के लिये रामबाण औषध सूखी व गीली खाज, चट्टे, फुन्सी आदि समस्त चर्म रोगों को तत्काल अच्छा करती है। इस औषधि के प्रभा से हड्डी तक पहुंचे हुए रोग तुरन्त अच्छे होते हैं।

नोगी एण्ड कम्पनी, बम्बई ४.

विजय पुस्तक-भंडार
देहली की
जीवनदायिनी सामयिक पुस्तकें

१—जीवन चरित्र—

श्रीसुभाषचन्द्र बोस की जीवनी
(सम्पादक—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति)
(लेखक—श्री रमेशचंद्र आर्य)

यह कांग्रेस के भूतपूर्व राष्ट्रपति का प्रामाणिक और पूरा जीवन-चरित्र है। ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। पुस्तक के अंत में श्री सुभाष बाबू के विचारों का संग्रह भी है। मूल्य ॥=)

महर्षि दयानंद—ले० श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति मूल्य १॥)

पं० जवाहरलाल नेहरू—ले० पं० इंद्र विद्यावाचस्पति, मूल्य ।॥)

२—राजनैतिक साहित्य—

जीवन संग्राम—ले० श्री पं० इंद्र विद्यावाचस्पति मूल्य १)

चीन का स्वाधीनता युद्ध—ले० श्री पं० कृष्णचंद्र जी विद्यालङ्कार मूल्य १)

३—अन्य पुस्तकें—

आनुपातिक प्रतिनिधित्व (Single Transferable Vote) (निर्वाचन सम्बंधी नियम) ले० श्री पं० महावीर जी त्यागी मूल्य ।)

वर्तमान राष्ट्रपति
मौलाना अबुलकलाम आजाद

यह वर्तमान राष्ट्रपति श्री मौलाना अबुलकलाम आजाद की जीवनी है जिसे श्री रमेशचन्द्र जी आर्य स्वर्गवासी ने बड़े परिश्रम के साथ लिखा है। इसके पढ़ने से यह भली भांति प्रकट होजाता है कि मौलाना साहब की राष्ट्रीयता दूध की तरह स्वच्छ है और वह अपने मार्ग पर दृढ़ चट्टान की तरह अटल हैं। मूल्य ॥=) डाक व्यय ।-) मिलने का पता:— विजय पुस्तक भंडार श्रद्धानंद बाजार, देहली।

"मैं भूल न सकूं"
[सम्पादक श्री जयंत]

श्रीयुत श्रीनाथसिंह जी, श्री वात्स्यायन 'अज्ञेय' श्री काका कालेलकर जी, कवि सम्राट् श्री अयोध्यासिंह जी उपाध्याय 'हरिऔध' श्री रत्नकुमारी जी माथुर, श्रीमती होमवती जी, श्री विष्णुप्रभाकर जी, श्रीयुत देवीदत्त जी शुक्ल तथा श्री पहाड़ी आदि प्रसिद्ध साहित्यिकों उपन्यास और कहानी लेखकों की शिक्षाप्रद सच्ची कहानियों का संग्रह। प्रत्येक कहानी ऐसी है जिसे एकबार पढ़कर भूलना कठिन है। मूल्य केवल १) डाक व्यय ।-)

मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण
ले० श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति (चार भाग)

यह वह पुस्तक है जिसमें मुगलों के साम्राज्य की स्थापना और नाश का इतिहास कहानी से भी अधिक मनोरंजक भाषा और रीति से दिया गया है। १७ वीं सदी में भारतवर्ष में जो विशाल राज क्रांति हुई उसका इससे अच्छा वर्णन मिलना कठिन है। हुमायूं अकबर, जहांगीर, शाहजहां औरंगजेब, राणा प्रताप, शिवाजी, छत्रसाल, गुरु गोविन्दसिंह आदि वीरों के चित्र और चरित्र पुस्तक में ओत प्रोत मिलेंगे। मूल्य १म.२य. भाग ३) तथा ३ य. ४र्थ. भाग १॥) चारों भागों का मू.४॥) डा. व्यय अलग।

सात भावपूर्ण एकाँकी नाटकों का संग्रह
"एकांकिका"
ले० चन्द्रकिशोर जैन बी० ए०

यदि आप विचारों में संदेशपूर्ण, पढ़ने में कहानी की तरह दिलचस्प, भावों के घात-प्रतिघात से पूर्ण, जीवन की ज्वाला और ज्योति से भरपूर, विवाह व्योहारों उत्सवों पर खेलने और कला पूर्ण उपहार देने के लिये मनोवैज्ञानिक, सरल और ओजस्वी एकांकी नाटक चाहते हैं तो आज ही "एकांकिका" की प्रति मंगाइये। मूल्य २) डाक व्यय ।=)।

विजय पुस्तक भण्डार (वीर अर्जुन कार्यालय के ऊपर) श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

★ हिंसा अहिंसा विवेचन ★

शास्त्रीय दृष्टि से

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

★

[गतांक से आगे]

दार्शनिक साहित्य में

हिंसा या हनन मात्र के साथ जो पाप की भावना का सम्बन्ध हुआ, वह दार्शनिक साहित्य में हुआ। उसका साहित्यिक सूत्र पातंजल योगदर्शन में मिलता है। योगदर्शन में 'अहिंसा' को यमों में प्रथम स्थान दिया गया है, और अन्य यम नियमों की भांति उसका भी बहुत बड़ा विस्तार कर दिया गया है। उस विस्तार का थोड़ा सा अनुमान निम्न-लिखित विवरण से मिल सकेगा —

योगदर्शन में अहिंसा की प्रतिज्ञा का यह अभिप्राय लिया गया है—मुमुक्षु 'किसी प्राणी का हनन नहीं करूंगा।' ऐसी प्रतिज्ञा करे।

अहिंसा का अर्थ

'अहिंसा' का शब्दार्थ योगदर्शन में बहुत विस्तृत हो गया है। मुमुक्षु जब अहिंसा की प्रतिज्ञा करता है, तो वह उस में जाति, देश, काल और परिस्थितियों के भेद को भुला देता है। इतना ही नहीं। हनन करने वाला, कराने वाला, अनुमोदन करने वाला, सभी योग की दृष्टि से अपराधी माने जाते हैं। वह हिंसा क्रोध में आकर बदले की भावना से की जाय, धन या यश के लोभ से की जाय अथवा अज्ञान वश की जाय, योग में बाधक ही समझी जायगी। बुराई की मात्रा में भेद हो सकता है, परन्तु है वह सब मोक्ष में विघ्न रूप ही। टीकाकारों ने दार्शनिक अन्वेषण को और भी अधिक बारीकी तक पहुंचाते हुए सत्य अहिंसा आदि यमों को मानस, वाचिक कायिक इन तीन भेदों में बांट कर मुमुक्षु की साधना को अधिक विस्तृत कर दिया है।

बौद्ध और जैन धर्मशास्त्रों में अहिंसा की जो व्याख्या की गई है, वह इसी दार्शनिक व्याख्या से मिलती जुलती है। परन्तु पहले इसके कि हम बौद्ध या जैनधर्म के अहिंसावाद के सम्बन्ध में कुछ लिखें, एक बात स्पष्ट रूप से समझ लेनी चाहिये। योगदर्शन में बतलाई गई साधना केवल उन व्यक्तियों के लिए थी, जो संसार से विरक्त होकर मोक्ष की तलाश में लग जाना चाहते थे। योगदर्शन का प्रथम सूत्र है 'योग-श्चित्तवृत्तिनिरोधः' और अन्तिम सूत्र है —

'पुरुषार्थशून्यानां गुणानां प्रति प्रसवः कैवल्यं स्वरूप प्रतिष्ठा वा चिति शक्तिरिति।'

योगदर्शन में चित्तवृत्ति निरोधात्मक योग का स्वरूप बतलाया गया है, जिसका फल कैवल्य (मोक्ष अथवा निर्वाण) है। कैवल्य का अभिप्राय है पुरुषार्थशून्य गुणों का जन्म, जिसका अभिप्राय स्पष्ट है कि पुरुषार्थ की अवस्था गुजर जाने पर कैवल्य की प्राप्ति होती है। इहलोक, या इस संसार का जब तक संसर्ग है, तब तक ध्यानयोग का प्रारम्भ नहीं होता। कर्मयोग और ध्यानयोग में बहुत भेद है कर्मयोग मनुष्य के ऐहिक जीवन से संबन्ध रखता है, उसका मुख्य अंग ही पुरुषार्थ हैं, पर ध्यानयोग मनुष्यों को कैवल्य — अर्थात् पुरुषार्थशून्यता — की ओर ले जाता है। अहिंसा का सार्वभौम महाव्रत उसी ध्यानयोग का एक अंग है। अहिंसा शब्द के अर्थ का जो रूपान्तर होता रहा है, उस पर विचार करते हुए उपर्युक्त भेद को भुलाना नहीं चाहिये।

बौद्ध और जैन धर्मों में अहिंसा

भारतवर्ष में अहिंसा को अधिक विस्तृत रूप में प्रकट करने और उसको धर्म का प्रधान अंग बनाने की उत्तर-दायिता बौद्ध धर्म और जैन धर्म की है। इन दोनों में ही धर्माचार्यों — भिक्षुओं और अर्हतों के लिए जो कठोर नियम बनाये गये थे। उनमें अन्यतम 'अहिंसा' भी थी। यह भी ध्यान में रखने योग्य बात है कि बौद्ध धर्म की साधना का लक्ष्य निर्वाण है। निर्वाण का अभिप्राय वही है, जो कैवल्य का है। इस संसार से मुक्ति को ही कैवल्य, निर्वाण मोक्ष आदि भिन्न-भिन्न नामों से पुकारा जाता है। यह स्पष्ट है कि इस संसार में जीवित रहने और यहां से मुक्त होने में भेद है। दोनों के साधन और नियम भी एक से नहीं हो सकते। राज्य कर्मचालन कर्मसन्यास से नहीं, कर्म योग से ही हो सकता है। धर्माचार्यों ने जो साधन व्यक्तिगत निर्वाण या कैवल्य के लिए बतलाये, वह इस लोक के सामाजिक या राष्ट्रीय जीवन में प्रयुक्त नहीं हो सकते।

कौन सी हिंसा पाप है ?

हमने यह देखा कि हिंसा या हनन मात्र को पाप कहना अशास्त्रीय भी है, अव्यावहारिक भी। जो व्यक्ति संसार से विरक्त होकर मोक्ष या निर्वाण की खोज में निकल पड़ते हैं, उनके लिए ही योगदर्शन अथवा बौद्ध ग्रन्थों में सार्वभौम महाव्रतों का विधान है अन्यथा पाप और पुण्य की व्यवस्था यह है कि दूसर को यदि हम शारीरिक या मानसिक कष्ट काम क्रोध लोभ या मोह के वशीभूत होकर देते हैं तो वह पाप है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि यदि अपने स्वार्थ के लिये अथवा बदले के भाव से दूसरे को कष्ट दिया जाता है, तो वह अधर्म है, परन्तु यदि राष्ट्र के हित की रक्षा के लिये, दण्ड के तौर पर, या आततायी को रोकने के लिये दूसरे पर प्रहार करना पड़े तो वह अधर्म नहीं है, प्रत्युत वह राष्ट्र के लिये आवश्यक होने के कारण धर्म ही है। धर्म और अधर्म की विवेचना करते हुए विवेक को दूर रख देना उचित नहीं। जो भोजन एक रोगी के लिये अपथ्य है, वह एक नीरोग व्यक्ति के लिये पथ्य हो सकता है। जो क्रिया एक ब्रह्मचारी के लिये महा पाप है, वही एक गृहस्थ के धर्म पालन के लिये आवश्यक समझी जाती है। सारांश यह कि धर्म अधर्म के विवेचन में गाय, बकरा और गधे को एक ही लकड़ी से हांकना उचित नहीं है।

निजाम हैदराबाद का नया षडयन्त्र

[पृष्ठ ६ का शेष]

लिये बड़ी आवश्यकतानुसार आवश्यक संख्या में उंगर घोड़े और ऊंट, आज कल की तरह ही, तटकर से मुक्त रहेंगे।

१८०२ की व्यापारिक संधि

इस विशेष व्यापारिक संधि का उद्देश्य संधि के शब्दों में दो दलों में निर्बाध और दृढ़ व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करना था। इसमें इन दो सरकारों के व्यापारिक सम्बन्ध नियमित किये गये हैं। इसमें यह कहा गया है। "हैदराबाद और ब्रिटिश राज्य में अबाध रूप से सब वस्तुएं आ जा सकेंगी। सभी स्थानों और सर्वदा के लिये इस तरह की वस्तुओं पर उनके मूल्य का पांच प्रतिशत से अधिक निर्यात कर न लिया जायेगा।

१८६० की पूरक सन्धि

२६ वीं दिसम्बर १८६० में रानी विक्टोरिया और निजाम में हुई पूरक संधि में सभी पूर्व संधियों की शर्तों की पुष्टि की गयी। साथ ही इसमें निम्न शर्तें भी जोड़ी गयीं :—

आठवीं धारा। जहां-जहां गोदावरी नदी या इसकी सहायक नदियां ब्रिटिश और निजाम राज्य की सीमाओं को जोड़ती हैं वहां इन नदियों पर होकर आने जाने वाले माल पर किसी प्रकार का तट कर या और कर न लिये जायेंगे।

१८७५ का संशोधन

भारत सरकार के लिखने पर अपने पत्र संख्या ६१७ ता० २६ मार्च १८७५ में १८०२ की संधि में आंशिक परिवर्त्तन करना स्वीकार कर लिया। इस संधि को कुछ बदल कर निजाम ने ब्रिटिश सीमा में नमक न भेजना स्वीकार कर लिया, यद्यपि उस समय इतना नमक निकलता ही न था कि राज्य के बाहर भेजा जाय।

१८८३ का अफीम समझौता

२६वीं अक्टूबर १८८३ के अफीम सम्बन्धी समझौते में यह कहा गया था कि भारत सरकार का इन्दौरस्थित अफीम एजेण्ट, हैदराबाद की सरकार की ओर से, उतनी चुंगी लगायेगा जितनी ब्रिटिश सरकार निश्चित करेगी और बाद को हैदराबाद का रेजीडेण्ट यह चुंगी रद्द कर देगा। चुंगी की दर के बारे में यह तय किया गया था कि अगर १४० पौंड की पेटी पर ब्रिटिश सरकार ६०० रुपये से कम भी चुंगी लगायेगी तो भी बिना निजाम की पूर्व सहमति ६०० रुपये से कम चुंगी न ली जायेगी।

रेल समझौता

२७ दिसम्बर १८८५ और १६ मार्च १८८७ को हुए रेल समझौतों में यह कहा गया है कि निजाम राज्य में रेल बनाने के सिलसिले में निजाम सरकार को सारा सामान आयात और दूसरे करों से मुक्त सामान मिलेगा।

नयी सूझ

ऊपर दी गयी संधियों या समझौतों में कहीं यह शर्त नहीं दिखाई पड़ती कि मछलीपट्टम या उत्तरी सरकार ईस्टइंडिया कम्पनी को नियत समय के लिये पट्टे पर दिये गये थे। यह बात है जहां तक वैधानिक प्रश्न है। निजाम से हुई संधि के पहिले मछली-पट्टम और उत्तरी सरकार पर किसकी राजसत्ता थी, यह असंदिग्ध नहीं है। ऊपर १७६८ की त्रिदल संधि में यह हम स्पष्ट देखते हैं कि 'उल्लिखित सरकारें हमेशा कम्पनी की सम्पत्ति और अधिकार में रहेंगी।' यद्यपि यह भी सही है कि नवम्बर १७६६ की संधि में कम्पनी की ओर से यह कहा गया था कि जब निजाम को सैनिक सहायता की आवश्यकता न रहेगी, कम्पनी रु० ५ लाख वार्षिक देगी। व्यापारिक संधि से स्पष्ट है कि निजाम और ब्रिटिश भारत के व्यापारिक सम्बन्ध का आधार — गल्ला, नमक, अफीम रेल बनाने के सामान को छोड़ कर — सभी तरह के माल पर उसके मूल्य का ५ प्रतिशत शुल्क है।

उत्तरी सरकारें और मछलीपट्टम कम्पनी को हमेशा के लिये निजाम को इसलिये देने पड़े थे कि वे दुर्बल थे।

(शेष पृष्ठ १७ पर)

मेरी सुकेत यात्रा

[श्री पुत्तूलाल वर्मा 'करुणेश']

★

[गतांक का शेष]

निश्चय हुआ कि ऊपर से नीचे की ओर चला जावे अतः सर्व प्रथम श्री महामायाजी के मंदिर पर पहुंचा जो सबसे ऊंचे टीले पर बना हुआ है। यह महामायाजी राज्य की कुल देवी हैं। राजा और प्रजा सभी इन्हें भक्ति भाव से पूजते हैं। मूर्तियां विशाल और भव्य हैं और श्री शेषशायी भगवान की मूर्त्ति तो मुझे केवल यहीं देखने को मिली। चैत्र की नवदुर्गों में यहां बहुत बड़ा मेला लगता है जिसमें पहाड़ी लोग दूर दूर से आकर अपने भक्तिभाव का परिचय देते हैं। इसी अवसर पर राज्य के प्रबन्ध से एक प्रदर्शनी लगती है व अनेकों प्रकार के शारीरिक खेलों का आयोजन किया जाता है। गाय-बैल आदि जानवरों के क्रय विक्रय के लिये यह मेला बहुत प्रसिद्ध है। इसी मंदिर के पास एक दूसरा छोटा मंदिर भगवान दत्तात्रेय का है व निकट ही एक सींकचों का कटघरा बना हुआ है जिसके भीतर से एक सिंह दहाड़ता रहता है। इन सब स्थानों के आसपास की भूमि का मैंने अपने दृष्टि-कोण से निरीक्षण किया और फिर राज महल के पिछवाड़े के उद्यान, सुंदर बाग में आ गया। यहां से क्लब गार्डन और चीफगैस्ट हाउस गार्डन का निरीक्षण करता हुआ राजपथ पर आ निकला। फिर बैंडस्टैंड, सुप्रीमकोर्ट, अस्पताल हाईस्कूल और दोनों अतिथि-गृहों की भूमि देखता हुआ श्री शुकदेव वाटिका में आ गया। वाटिका की परिक्रमा करता हुआ जब पहाड़ के ऊपर की ओर चलने लगा तो एक गुफा व गुफा के द्वार पर लगे हुए शिलालेख पर दृष्टि पड़ी। उस गुफा को देखकर व शिला लेख को पढ़कर जो असीम आनंद प्राप्त हुआ उसे शब्दों में व्यक्त करना सम्भव नहीं है। मन-मयूर थिरक-थिरक कर नाचने लगा। अहा, यह वही तपस्थल है जहां पर बैठकर श्री शुकदेवजी ने तप किया था और जहां पर महाभारत युद्ध के पश्चात् राजऋषि पांडव बन्धुओं ने अपने जीवनके शेष दिन तपश्चर्या में बिताये थे व जिनकी सोती हुई अमर आत्मायें अद्यावधि मानवता को एक मूक संदेश दे रहीं हैं। निश्चय ही ऐसे देवर्षि और राजर्षि वीर तपस्वियों को अपने अंचल में तप करते हुए देखकर जहां पर्वतराज हिमालय व यहां के नागरिकों को देव दुर्लभ आनंद प्राप्त हुआ होगा व अपने को बड़भागी माना होगा वहां ऐसे सुरम्य प्राकृतिक दृश्य समन्वित स्थान को पाकर इन महान तपस्वियों ने भी अपने भाग्य को कम न सराहा होगा। अहा! कैसे रहे होंगे वे सुंदर सोने के दिन और चांदी की रातें जब हमारे यह बाल और वृद्ध तपस्वी इन स्फटिक शिलाओं पर आसन जमाकर सांजलि

भगवान भास्कर के आगमन के उपलक्ष में बधाई देते हुए अर्द्धस्फुटित नेत्रों से ब्रह्म तेज से आभाषित मुख मंडल की अनुपम छटा को बढ़ाते हुए उनका स्वगत करते थे और उनके अघमर्षणादि मंत्र प्रेरित जल-कण स्वर्ण किरणों की प्रतिभा से मोती के समान चारों ओर बिखरते हुए संसार की आधि-व्याधि को नाश करते थे। इस गुफा में से एक सुरंग हरिद्वार तक जाती है, जिसमें होकर श्री शुकदेव जी हरिद्वार गंगास्नानार्थ जाया करते थे। यदि इस स्थान और हरिद्वार के बीच एक सीधी रेखा खींची जावे तो यह डेढ़ सौ मील लम्बी होगी। इतनी लम्बी सुरंग कहीं अन्यत्र भी है या नहीं यह संदेहास्पद ही है। गुफा के ऊपर एक गोलाकार बृहतकाय टीला है। कहते हैं कि जब यह टीला अपने मूल स्थान से नीचे की ओर खिसकने लगा तो भीम ने अपने बाहुबल से उसे वहीं थाम दिया। भीम के हाथ के पंजे के निशान अब तक उस शिला पर स्पष्ट दिखाई देते हैं और अब भी यही प्रतीत होता है कि यह टीला बस गिरने ही वाला है।

दूसरे दिन नर्सरी के लिये उपयुक्त भूमि का वैज्ञानिक अनुसंधान किया और तीसरे दिन उन सब फलोद्यानों को देखा जिनमें वैज्ञानिक परिवर्तन और परिवर्द्धन करना है।

सब कुछ देखने-भालने के बाद प्रधान मंत्री महोदय से निवेदन किया कि इन सब स्थानों की नापतौल (सर्वे) करा दीजिये ताकि डिजाइन तैयार किये जा सकें। राज्य का सर्वेयर छुट्टी पर था। अतः मैंने सोचा कि शुकदेव वाटिका की सर्वे मैं स्वयं कर लूं व डिजाइन बनाकर महाराजा साहिब को दिखलाकर नमूने के तौर पर अपने कार्य का परिचय दे दूं व अपने घर की राह लूं। और शेष स्थानों की सर्वे राज्य द्वारा आने पर दिल्ली से ही डिजाइन करके भेज दूं। मैंने ऐसा ही किया। महाराजा साहिब व सबको शुकदेव वाटिका का मेरा बनाया हुआ डिजाइन बहुत पसंद आया। अतः मुझे आज्ञा हुई कि कम से कम राजप्रसाद के सामने के मैदान व प्रांगण के डिजाइन तो अभी ही किये जाइयेगा। यह भी किया। जब मैं प्रांगण की सर्वे करने गया तो वहां तीन राजकुमार और बड़ी राजकुमारी टहलते दिखायी दिये। युवराज अस्वस्थ होने के कारण अनुपस्थित थे मैंने बड़े राजकुमार से पूछा — क्या आप पढ़ते हैं ? उत्तर मिला, हां। फिर मैंने पूछा क्या पढ़ते हो ? उन्होंने मुसकराकर उत्तर दिया, सब कुछ मुझे यह उत्तर और कहने का ढंग बहुत पसंद आया। सोचा, "होनहार बिरवान के होत चीकने पात" तब तक अंतःपुर से महाराजा साहिब पधारे। अभिवादन और कुशल क्षेम के बाद उन्होंने उस डिजाइन की बड़ी प्रशंसा की अनेकों आवश्यक बातें हुईं। मैंने अनुभव किया कि महाराज बड़े ही मिष्टभाषी, धर्मपरायण और प्रजा प्रिय नरेश हैं। अन्त में आपने हरिपुरा में बनने वाले महलों के दृश्योद्यान का डिजाइन भी अभी बना देने की चर्चा की। उसे भी पूरा किया और राजपथ को सीमेंट से बनाने का डिजाइन भी दे दिया। हिल-स्टेशन बनने की सम्भावना पर भी विचार विमर्ष हुआ। यदि डह से आगे तीन मील का रास्ता बिलासपुर राज्य बनादे तो दिल्ली से सरहिंद और वहां से रोपड़ तक रेल में आकर शेष मार्ग मोटर लारी द्वारा तय किया जा सकता है और तब इस मार्ग से दिल्ली से सुकेत ५४४ मील की अपेक्षा केवल २२५ मील रह जायगा। उस दशा में निवासस्थान आदि की सुलभ और सस्ती सुविधायें मिल जाने पर प्राकृतिक दृश्य और स्वास्थ्यवर्धक जल वायु के प्रेमी यात्री निश्चय ही उस तपोभूमि में प्रवासार्थ आया करेंगे और तब राज्य को आय का एक नवीन साधन, वहां की जनता को नये व्यापार और आगंतुक यात्रियों को नया हृदयोल्लास और नव जीवन प्राप्त होगा, इसमें शक ही क्या है।

शेष कार्यों को भविष्य के लिये छोड़ तारीख ८ दिसम्बर को पुनः उसी मार्ग से जिससे आया था—दिल्ली के लिये चल पड़ा। ज्वालामुखी रोड़ स्टेशन पर के डिब्बे में बुद्ध नाई घुस रेल भागी जा रही थी, पहाड़ी ऊबड़ड़ मार्ग होने से धक्कों के कारण हलुआ हुआ जा रहा था, और यह बुद्ध नाई जी अपने पैने उस्तरे द्वारा हुए हाथों से लोगों के गालों की करने में तल्लीन थे। क्या मजाल कि उस्तरे की आहट भी अनुभव हो। पहाड़ों पर भी कैसे-कैसे चतुर पड़े हुए हैं।

सभी कार्यों में
हिन्दीको अपनाइ
पत्रों पर पता
हिन्दी में ही लि
नागरी रक्षा समिति देहली

अफीम बन्द हो जायेगी

चौधरी रामरत्न जी लिखते हैं—

मैं बीस साल से अफयून ४० खाता था इसलिये मैंने ठेका ६६०००) रु० सालाना पर ले रखा ताकि मुझे अच्छी अफयून खाने के मिलती रहे। मैंने अपने धन, शरी नाश होते देख कर डा० ऋषिराम म कोटफत्ता की वलैत टिकियां मंगाकर ८ में आनन्द के साथ अफीम छोड़ छोड़ते वक्त या बाद में कोई तकलीफ हुई। मैं एक रईस कई गांवों का मा हूं। जनता के लाभ के लिये यह इश्त देता हूं। जो भाई इस बुरी बला को छोड़ चाहते हों वे जितने तोले माहवार अ खाते हों कीमत टिकिया दुगने रुपये खत लिखकर वी० पी० मंगा लें।

पता—डा० ऋषिराम शर्मा अफयून हु अस्पताल मंडा कोटफत्ता (स्टेट पटियाल

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

साहित्य परिचय

परिचय के लिये प्रत्येक पुस्तक की दो-दो प्रतियों का आना आवश्यक है, अन्यथा केवल प्राप्ति स्वीकार किया जायगा। —सम्पादक

नया रोजगार — ले. श्री गोपाल प्रसाद व्यास। प्रकाशक—नवयुग साहित्य सदन, इन्दौर। मूल्य ३)।

मैं इसे साद्योपान्त पढ़ गया। जो बात जिस ढंग पर लेखक कहना चाहता था, खूब कह दी। इस में हास्य रस ओंत प्रोत है। कविता का विषय सामयिक होने से रोचकता भी अक्षुण्ण है। हिन्दी के कई हास्यप्रधान लेखकों के लेख तथा कवियों की कविता में जो अक्खड़पन या भद्दापन आजाता है, वह व्यासजी की कविता में नहीं आने पाया। मैं इस सुन्दर संग्रह पर लेखक को बधाई देता हूं।

— इन्द्र विद्यावाचस्पति

साहित्य रत्न भंडार, आगरा करीब एक दशक से हिन्दी में आलोचनात्मक साहित्य प्रकाशित कर रहा है। इस दिशा में उसका प्रयत्न वस्तुतः प्रशंसनीय और अनुकरणीय है। पिछले दिनों उसने तीन पुस्तकें अलोचनार्थ भेजी हैं—

हिन्दी एकांकी
लिपिविकास और
साहित्य वातायन

हिन्दी एकांकी के लेखक हैं प्रो० सत्येन्द्र एम. ए.। एकांकी नाटकों का प्राचीन संस्कृत साहित्य में भी अभाव नहीं था, लेकिन आज का हिन्दी एकांकी साहित्य अंग्रेजी व बंगला का अनुकरण है। एकांकी नाटकों ने बहुत कम समय में अपना स्थान हिन्दी-साहित्य में बना लिया है। इसलिये अब उनपर आलोचनात्मक दृष्टि डालने की आवश्यकता भी थी। श्री प्रो. सत्येन्द्र एम. ए. ने इस कमी को पूरा किया है।

प्रस्तुत पुस्तक में हिन्दी नाटकों का संक्षिप्त इतिहास देते हुए हिन्दी के अनेक एकांकीकारों की कला की आलोचना की गई है और फिर तात्विक दृष्टि से एकांकी नाटकों के सम्बन्ध में विवादास्पद प्रश्नों को उठा कर उनकी विवेचना की गई है। अन्त में कुछ उत्कृष्ट एकांकियों की विशेष रूप से आलोचना की गई है।

कहीं कहीं आलोचना सीमा से अधिक बढ़ गई है। एक कलाकार पर विविध आलोचकों के मत देने की बहुत कम आवश्यकता थी। लेखक शायद पुस्तक लिखते समय यह भूल गये हैं कि उनके साधारण पाठक अंग्रेजी नहीं जानते। अंग्रेजी नाटकों के उदाहरण या बीच बीच के अंग्रेजी शब्द हिन्दी-साहित्य के विद्यार्थी में पुस्तक के प्रति अरुचि पैदा कर देंगे। इसीतरह एकांकीकार नाटकों में श्री हरिकृष्ण प्रेमी के नाटकों की कोई आलोचना न देना भी खटकता है। ये दो एक त्रुटियां होते हुए भी हिन्दी-साहित्य के विद्यार्थियों से हम साग्रह अनुरोध करेंगे कि वे इस पुस्तक का अध्ययन करें। इससे उनकी न केवल ज्ञानवृद्धि होगी, बल्कि नाटकों का आलोचनात्मक दृष्टि से अध्ययन करना सीखेंगे। पुस्तक का मूल्य १॥) रु० है।

लिपिविकास — लेखक श्री राममूर्ति मद्दरोत्रा। मूल्य ॥।)

संसार के इतिहास में लिपियों का विकास कैसे हुआ, यह वस्तुतः एक मनोरंजक प्रश्न है। आदिकाल में मनुष्य विविध संकेतों और चित्रों के द्वारा अपने भाव प्रकट करता था। उस के बाद वह विभिन्न श्रेणियों तथा मार्गों की यात्रा करता करता वैज्ञानिक नागरी लिपि तक कैसे पहुंचा, यही सब कहानी लेखक ने इस पुस्तक में दी है। विदेशी विद्वान फिनिशियन लिपि को ब्राह्मी का पूर्व रूप मानते हैं। विद्वान लेखक ने इसका खण्डन करते हुए ब्राह्मी लिपि से देवनागरी लिपि के विकास का क्रम दिखाया है। देवनागरी लिपि की श्रेष्ठता तथा सौन्दर्य भी प्रतिपादित किया है।

श्रद्धेय गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा ने इस विषय पर भारतीय प्राचीन लिपि माला नामक बहुत विद्वत्तापूर्ण ग्रन्थ लिखा है। उसकी पूर्ण सहायता से यह पुस्तक लिखी गयी है। इस लिये इस पुस्तक की उपयोगिता असंदिग्ध है।

साहित्य वातायन — लेखक श्री शिवनन्दनसिंह। मूल्य १।)

पुस्तक पुस्तक में लेखक के साहित्य-सम्बधी १४ लेखों का संग्रह है। इनमें प्रेमकाव्य, रहस्यवाद, प्रगतिवाद आदि अनेक हिन्दी साहित्य की धाराओं तथा अनेक कलाकारों पर प्रकाश डाला गया है।

गीतांजलि — ले०- श्री रवीन्द्रनाथ टागोर। प्रकाशक — श्री गांधी ग्रन्थागार, लक्ष्मी आयुर्वेदिक फार्मेसी, चावड़ी बाजार दिल्ली। मूल्य १॥।) सजिल्द।

गीतांजलि विश्वसाहित्य की एक अमर रचना है, जिस पर आज से ३२ साल पूर्व विश्वकवि श्री रवीन्द्र को सवा लाख रुपये का नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ था। इस काव्य पर भारत गर्व कर सकता है। संसार की सभी भाषाओं में इस अमर काव्य के अनुवाद हुए हैं। हिन्दी में भी अनुवाद हुए थे, परन्तु वे अब दुर्लभ हैं। इस लिये प्रकाशक का नया प्रयत्न हिन्दी पाठकों की दृष्टि से बहुत प्रशंसनीय है। अनुवाद सरल और सुन्दर हुआ है।

हिन्दी साहित्य में छायावाद नाम की काव्यधारा का मूल स्रोत भी रवीन्द्र की गीतांजलि है। इस दृष्टि से भी इसका महत्व कम नहीं है। आशा है, प्रत्येक हिन्दी पुस्तकालय में इसकी एक प्रति अवश्य रहेगी।

सुहागरात की कहानियां — ले०- श्री व्यथित हृदय। प्रकाशक — भार्गव पुस्तकालय गयाघाट, बनारस। मू० ३)

जीवन की सबसे मधुर स्मृति सुहागरात होती है। उसी को मध्यबिन्दु मान कर लिखी गई कहानियों में सरसता और आकर्षण का होना स्वभाविक है। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक की नौ कहानियां हैं। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि सब कहानियां सुखान्त हैं। सुहागरात, लाल चूनरी, रूप की रानी आदि कहानियां दुखान्त हैं, उनके द्वारा पाठक के हृदय में समवेदना की अनुभूति को जाग्रत करने में विशेष सफलता हुई है।

कहानियों में अनेक दोष भी हैं। वे आवश्यकता से अधिक लम्बी हो गयी हैं। अनेक कहानियों का कथावस्तु बहुत सुन्दर है, परन्तु उनके अनावश्यक लम्बेपन के कारण उसमें सजीवता और तीव्रता की कमी हो गई है। प्रायः प्रत्येक कहानी में प्रकृति वर्णन की पुरानी परिपाटी ने कहानी को और भी लम्बा कर दिया है। यदि लेखक इस कमी को दूर कर सकें, तो हमें निश्चय है कि उनकी कहानियां और भी सुन्दर और आकर्षक हो उठेंगी। लेखक की सूझ और प्रतिभा में कमी नहीं है, सिर्फ लेखन शैली में कुछ परिष्कार की जरूरत है। —कृष्ण

[पृष्ठ १५ का शेष]

जब उन्होंने इनपर अधिकार किया था वे सबल थे। अगर आज ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रदत्त हिज एक्सलटेड हाइनेस उपाधिकारी निजाम उस्मान अलीशाह यह समझते हैं कि वे नवाब सलाबत जंग से अच्छी स्थिति में हैं तो वे बल अजमा देखें। डाक्टर लंकासुन्दरम कहते हैं कि आंध्र अंत तक लड़ेंगे और कार्य समिति के सदस्य डा० पट्टाभि सीतारमैया अंतिम आंध्र और अंतिम रुपये तक लड़ेंगे। इन महानुभावों को यह नहीं पता है कि उत्तरी प्रांतों के पन्द्रह करोड़ हिन्दीभाषी उनसे एक कदम आगे जाने को तैयार बैठे हैं। इसका कारण हमारा सारा इतिहास है। डा० लंकासुन्दरम ने मुझ से कहा कि कहीं लौटने वाले अस्त्र बूमरैंग की तरह इससे निजाम को ही हानि न हो। अगर निजाम की विपरीत बुद्धि रही तो निजाम का 'चौबे से' 'दुबे' बनना ध्रुव है।

— फणीद्र वाजपेयी

संसार में स्तम्भन की केवल पुरुषों के लगाने की एक अद्भुत औषधि "सुइ फन सी" (तरल) की चौथाई शीशी ३॥) रु० में मिलेगी।

-सुइ फन सी-

[SOLUTION]

पुरुषों के लिये केवल बाहर से व्यवहार करने लायक रुकावट की संसार में अद्वितीय तथा अद्भुत औषधि है। लाखों गृहस्थ उसकी मांग कर रहे हैं। जिन पुरुषों का शीघ्र ही वीर्य पतन हो जाता है उनके लिये यह दवा बेजोड़ है। इसके लगाने से अपूर्व शक्ति तथा सामर्थ्य प्राप्त होता है। इस दवा की एक ही शीशी बहुत दिनों तक चलती है। मूल्य पूरी शीशी रुपये १२) चौथाई शीशी रु० ३॥) डा. ख. ॥=) अलग। विस्तृत सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये।

चाइनीज मेडिकल स्टोर
नया बाजार -- देहली

हैड आफिस — २८ एपोलो स्ट्रीट, फोर्ट; बम्बई : ब्रांचें - १२ डलहौजी स्क्वायर कलकत्ता : रीची रोड - अहमदाबाद।

— सेलिंग एजन्ट्स—

दी नेशनल मेडिकल स्टोर्स — आगरा।
दी जनरल मेडिकल स्टोर्स — अजमेर।
दी एलाईड केमिस्ट — जयपुर।
श्री सरस्वती स्टोर्स — बीकानेर।
मे. गिरधरदास जानकीवल्लभ — उदयपुर।
वैद्यराज विश्वनाथ त्रिवेदी — मुजफरनगर।
मेसर्स मोहन ब्रादर्स — लश्कर।
मेसर्स खरे ब्रादर्स — उरई।
दी गुजरात मेडिकल स्टोर्स — कानपुर।
दी कौशिक आयुर्वेदिक स्टोर्स—लखनऊ।

स्व० श्रीमती चम्पादेवी

'अर्जुन' के पाठक श्रीमती चम्पादेवी के नाम से भली-भांति परिचित होंगे। उनके पुत्र श्री हरिश्चन्द्र जी ने उन्हीं की स्मृति में निबंधों पर एक पुरस्कार जारी किया है। गत १७ जनवरी को उनकी प्रथम वर्षी थी। उनके जीवन परिचय के लिए निम्नलिखित कविता दी जा रही है

द्विज वंश श्रेष्ठ अवतंश बुलाकी दास महात्मा मानी,
थे नगर गाजियाबाद निवासी धनिक प्रतिष्ठित दानी।
कालान्तर में हुआ पुत्र पर कुछ दिन में वह शांत हुआ,
जिसके कारण अधिक हृदय पर शोक जनित आघात हुआ।
सब कुछ होते नहीं पुत्र था बड़ी मनसी चिन्ता भारी,
ज्वालाजी के जात देने को कहे सकल तब नर-नारी।
जन सम्मति से जात दिये वे हुई कामना परिपूर्ण,
गृह में उतरी स्वर्ग परी वह सकल सिद्धि मां अन्नपूर्ण।
घर-घर उत्सव हुआ नगर में देवी के पादार्पण पर,
मानो अद्भुत वस्तु मिली नर सुखी सम्पदा आने पर।
शुक्ल पक्ष के शशि समान वह लगी दिनो दिन-बढ़ने जब,
लालन पालन हुआ चाव से पाई सुखमय यौवन तब।
द्वादश वर्षीया होने पर चिन्ता हुई पिता मानस,
पाणिग्रहण कर्म करने को चले खोजने वर साहस।
मिले महात्मा मूलचंद जी 'बल्लभगढ़ पुर' अधिवासी,
पाणि ग्रहण हुआ उनसे शुचि सुखी हुए जन पदवासी।
जिस दिन से पति गेह पधारी लाई साथ सिद्धि राशी,
वित्त पूर्ण तब हुआ गेह शुचि सुखी हुए सब पुर वासी।
चम्पादेवी ख्यात हुई देवी तुल्या जनपद भीतर,
दान, धर्म की मूर्तिमयी साक्षात सती प्रति रुपावर।
एक दिवस की बात नगर में आये आंखों के डाक्टर,
रोगी सब एकत्र पर नहीं पास था पैसा कर।
चिंतित होकर सभी लोग तब गये गेह चम्पादेवी,
नेत्र शुल्क नर मांग किये धन देवी वह जनता सेवी।
खुशी हुए सब लोग दिए आशीष सती की जय होवे,
पुत्र, पौत्र गृह बढ़े धान्य सौभाग्य सदा अक्षय होवे।
इसी तरह की अन्य गाथा देवी की हम गाते हैं,
नारी-गण को शिक्षा देगी शास्त्र यथा बतलाते हैं।
एक समय पति देव हुए ज्वराक्रान्त अतिशय निशदिन,
लगे कुवाच्य कथन करने वे देवी को अधमाधम गिन।
तब शास्त्र मयी बोली! यानी सुखदा प्रिय सन्तोषमयी,
देव! हृदय क्षण धैर्य धरें! मैं सदा सुहागिन शांतमयी।
विधवा होती है वह नारी नहीं पतिव्रत जो जानी,
सदा सुहागिन है जगती जो धर्म पालना निज जानी।
अतः हृदय विश्वास करें! निज रहते नही मरेंगे! आप,
पति चरणों की दासी हूं! कब सता सकेगा! मुझको ताप।
उक्त कथन पालन में ही वह, अपने आप पधार चली,
औ' सती धर्म की शुभ गाथा को ख्याति हेतु भुवि छोड़ चली।
भगवान! प्रार्थना है मेरी भारत नारी हों ऐसी,
सती धर्म की मर्यादा को रखें सरित वेला जैसी।

(ईश)

क्या बांझों के सन्तान हो सकती है?

हां — अवश्य — कैसे?

यह मालूम करने के लिये आज ही अपना पता लिखा हुआ एक लिफाफा भेज कर आसाम बङ्गाल का अद्भुत चमत्कार देखें। सन्तान होने की पूरी गारण्टी होगी।

पता — राय साहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड बैंकर्स (३) शिलांग (आसाम) या पंजाब आफिस—"जगाधरी"।

"बचत का स्वभाव डालिये"

सर आदमजी हाजी दाऊद

मैनेजिंग डायरैक्टर आदमजी हाजी दाऊद कम्पनी लिमिटेड, डायरैक्टर यूनाईटेड कमर्शियल बैंक लिमिटेड।

"उनके कल्याण की दृष्टि से जनता में नियमपूर्वक बचत करने के स्वभाव को प्रोत्साहन देना चाहिये। मुझे आशा है नेशनल सेविंग्ज़ मूवमैन्ट इस उद्देश्य की पूर्ति में कार्यसाधक सिद्ध होगी। इससे जनता में न केवल अपनी स्थिति के अनुसार नियमपूर्वक बचाने का सङ्कल्प दृढ़ होगा बल्कि रहन-सहन का ढंग भी उन्नत होगा और उनका रुपया भी सुरक्षित रहेगा। यही कारण है कि मैं पूर्ण रूप से नेशनल सेविंग्ज़ मूवमैन्ट के पक्ष में हूं।"

Adamjee Hajee Dawood

संक्षिप्त विवरण

(१) आप ५), १०), ५०), १००), ५००), १०००) या ५०००) के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) एक व्यक्ति ५०००) से अधिक मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफिकेट्स नहीं ख़रीद सकता। ये इतने उपयोगी हैं कि इनका राशन करना ही उचित समझा गया है। हां दो व्यक्ति मिलकर १०,०००) के सर्टिफिकेट्स मोल ले सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है।

(४) इस प्रकार अवधि पूरी होने पर ४-१/६% वार्षिक ब्याज मिलता है।

(५) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।

(६) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते हैं। (५) का सर्टिफ़िकेट १-१/२ वर्ष पश्चात ही भुनाया जा सकता है) परन्तु वास्तविक लाभ इसी में हैं कि १२ वर्ष से पहिले इन्हें न भुनायें।

(७) जिनकी बचत थोड़ी है वह १), ॥), ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्पस ख़रीद सकते हैं। ५) के स्टैम्पस जमा होने पर एक नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट मिल जायेगा।

(८) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्पस डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकृत एजण्टों अथवा सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

आप अपनी बचत से ५०% लाभ उठाइए

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिये।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

[पृष्ठ ६ का शेष]

ने के लिये पहले तो अश्रु गैस का प्रयो- किया गया, बाद में भीड़ पर लाठी, र्ज किया गया। लाठी जार्ज के फल- रूप एक दुर्जन के लगभग व्यक्ति घायल गये। इस में ३० महिलाओं का क जत्था भी था जो अन्त तक डटा हा। अन्त में इस जलूस पर पुलिस के ोली चलाने से १४ आदमी मर गये ौर ६५० के घायल हो गये। पुलिस ने सौ बार से अधिक गोली चलाई। जलूस ौर गोली के कारण दिन के अधिक भाग ं बम्बई का सारा यातायात बन्द रहा। ६ मिलों में हड़ताल रही।

लाहौर में पुलिस ने स्कूल के विद्या- र्थियों पर लाठी चार्ज किया। दिल्ली में ान्तीय कांग्रेस की ओर से विराट सभा हुई।

अगस्त आन्दोलन में दिल्ली

दिल्ली प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी द्वारा तैयार की गई अगस्त आन्दोलन की रिपोर्ट के अनुसार अगस्त १९४२ के उपद्रवों में पुलिस और फौज की गोलियों से १५० से ऊपर व्यक्ति मर। गये भरे हुए व्यक्तियों की लाशों को इरविन अस्पताल के अधिकारियों ने गुप्त रूप से जहां-तहां खत्म कर दिया। घायलों के साथ भी उनका सलूक बहुत निन्दनीय था। घायलों को रक्त के इंजक्शन नहीं दिये गये और इसका कारण यह था कि विद्रोही इस प्रकार की चिकित्सा का अधिकार नहीं रखते।

२००० से ऊपर व्यक्ति जिन में कई सौ महिलाएं भी शामिल थीं, गिरफ्तार हुए और उन पर या तो मुकदमे चलाये गये या बिना मुकदमा चलाए नजरबन्द रखे गये। कैदियों के साथ पुलिस और जेल अधिकारियों का सलूक बहुत खराब था। ३० सितम्बर को दिल्ली जेल में राजनीतिक बन्दियों पर लाठी चलाई गई जिससे बहुत से घायल हुए। पुलिस ने तब कुछ राजनीतिक बन्दियों के विरुद्ध जेल अधिकारियों पर हमला करने के आरोप में मुकदमा चलाने का फैसला किया। सरकार ने इस मामले की कोई जांच नहीं की, क्योंकि पुलिस और जेल अधिकारियों ने निहत्थे लोगों पर वार किये।

कुछ नजरबन्दों को लाल किले की काल कोठरियों में बन्द रखा गया और उनसे गुप्त बातें मालूम करने के लिये तरह-तरह की यातनाएं दी गईं। लाहौर जेल में महिलाओं को वास्तव में घसीटा गया और कोठरियों में बन्द रखा गया।

दिल्ली प्रान्तीय हिन्दी सहित्य सम्मेलन

दिल्ली प्रन्तीय हिंदी साहित्य सम्मेलन का दूसरा वार्षिकोत्सव ८, ९, १०, मार्च शुक्र, शनि, और रवि को गांधी ग्राउण्ड में होगा। अधिवेशन के सभा-

श्रीमती अरुणा आसफअली

१९४२ से आप लापता थीं और सरकार ने आपकी संपत्ति को जब्त करने करने के बाद उनकी गिरफ्तारी के लिए ५०००) रु० का इनाम घोषित किया हुआ था। अब सरकार ने उनका वारंट रद कर दिया है और वे कलकत्ते से वायुयान द्वारा दिल्ली आ रही हैं।

पति पद के लिये अलवर नरेश, दरभंगा नरेश, सेठ जुगलकिशोर बिड़ला, श्री बालकृष्ण शर्मा नवीन, श्री सेठ गोविन्द दास के नाम प्रस्तुत किये गये हैं जो कि मत-संग्रहार्थ प्रचरित कर दिये गये हैं।

भारत में विलास-सामग्री

लन्दन स्थित 'नवनिर्मित आवश्यक सामग्री विभाग' के प्रधान श्री पी. सी. चौधरी ने पत्र प्रतिनिधियों को बताया है कि 'भारत को भेजे जाने वाली बहुत सी विलास की वस्तुएं अभी तक ब्रिटिश बाजारों में नहीं आयी हैं और जब तक विदेशों की मांगें पूरी नहीं हो जाती स्थानीय बाजारों में भेजी भी नहीं जायेंगी। १९४६ की भारत की आवश्यकताओं में ३,००,०० साइकिलें भी हैं। इनमें से अधिकांश रवाना की जा चुकी हैं। जून से पहले तक १, ५०,०० भेजदी जायेंगी। इस के अतिरिक्त मशीनें, बिजली का सामान, तथा अन्य लोहे व इस्पात का सामान भी भेजा है।'

डिगाल का त्यागपत्र

डिगाल-मन्त्रिमण्डल के डाइरेक्टर ने घोषित किया है कि फ्रेंचसरकार के प्रधान जनरल चार्ल्स डिगाल ने स्तीफा दे दिया है। उनके स्तीफे का कारण यह समझा जा रहा है कि सेना के बजट पर, खाद्यनियंत्रण पर तथा वैधानिक कमीशन के सुझावों पर डिगाल का सोशलिस्टों तथा कम्युनिस्टों से मतभेद था। अब आपके स्थान पर ६१ वर्षीय सोशलिस्ट श्री फेलिक्सगौई फ्रेंच सरकार के नये अध्यक्ष चुने गये हैं।

स्पेन

कुछ समय से गत गृह-युद्ध के परिणामस्वरूप स्पेन के निवासियों को आर्थिक और सामाजिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। उनकी स्थिति को सुधारने के लिये फ्रेंको सरकार ने एक 'कृषि और श्रमिक सुधार योजना, प्रस्तुत की है। इस योजना के अन्तर्गत अधिक भूमि में खाद्यान्न उत्पन्न किया जायेगा, नये जंगल लगाये जायेंगे। बड़े बड़े स्टेट छोटे विभागों में विभक्त कर दिये जायेंगे। नवीन सड़कें और रेलवे लाइनें बनाई जायेंगी। लगभग २,४७,००० एकड़ भूमि कृषि योग्य बनादी जायगी।

फ्रांको सरकार के विरुद्ध स्पेन से बाहर मित्रराष्ट्रीय आदेशों से संगठित तथा प्रजातन्त्रीय सरकार को ब्रिटेन, फ्रांस और रुस मित्रराष्ट्रीय असेम्बली का सदस्य बनाने के लिये योजनाएं तैयार कर रहे हैं।

ग्रीस में षडयन्त्र

ग्रीस में इस समय राजतन्त्रवादियों की हलचल जोर पकड़ रही है। कलामाटा बन्दरगाह पर इन लोगों ने कब्जा कर के अपने ३२ साथियों को जेल से छुड़ा लिया तथा २०० नागरिकों को गिरफ्तार कर लिया। पोलोपोनिसिस में १५ हजार उपद्रवी राजतन्त्रवादियों की संख्या का अनुमान है। इन लोगों ने अपना चिन्ह 'एक्स' बना लिया है। ग्रीस के प्रधान मंत्री थेमीस्टोकल्स सोफोलिस ने इन लोगों को आत्म-समर्पण करने का आदेश दे दिया है, अन्यथा उन पर ग्रीस की फौजें आक्रमण कर देंगी। विद्रोहियों ने 'अल्टीमेटम टुकरा दिया है तथा सरकारी फौजों ने इनकी सफाई प्रारम्भ कर दी है।

टर्की में वैधानिक परिवर्तन

इस समय तक टर्की में वस्तुतः धारासभा में केवल एक ही दल था। अब कुछ सदस्य विरोधी पक्ष की ओर झुकते जा रहे हैं। टर्की में इस समय दो राजनीतिक दृष्टिकोण हो गये हैं। एक तो प्रगतिवादी, जिनका मत है कि टर्की राजनीतिक प्रौढता को प्राप्त हो गया है और वहां पार्लमेण्टरी प्रजातन्त्रीय पद्धति स्थापित हो जानी चाहिये। दूसरा पक्ष इसका विरोध कर रहा है। इस प्रजातन्त्रीय दल का नेतृत्व भूतपूर्व प्रधानमन्त्री जलाल बयार करेंगे इस दल को अपने कार्यक्रम पर गृह-विभाग की स्वीकृति लेना अनिवार्य होगा।

अरब देशों की गुटबन्दी

मिश्र के शाह फारूख तथा अरब के शाह इब्नसऊद की सिकन्दरिया में मुन्तजा महल में भेंट में निश्चय किया गया कि अरब राज्यों को आर्थिक दृष्टि से एक करने के उपाय और अरब देशों को एक 'रक्षात्मक गुट' में शामिल करने के लिये विचार किया गया। फिलस्तीन के यहूदी प्रश्न पर विचार किया गया। तथा ट्रान्सजोर्डन को स्वतन्त्र कर देने के लिये शीघ्र कार्यवाही करने की ब्रिटिश सरकार ने जो घोषणा की है उसके परिणामस्वरूप मध्यपूर्व की स्थिति पर विचार किया।

सारावाक ब्रिटिश कब्जे में

उत्तर बोर्नियो स्थित प्रदेश सारावाक अबतक एक स्वतन्त्र देश था। पर अब ब्रिटिश सरकार की फौजों ने उस पर कब्जा कर लिया है। ब्रिटिश उपनिवेश इस सम्बन्ध में योजनाएं तैयार कर चुका है कि सारावाक को कौन सा उपनिवेश पद दिया जाय। शासन कार्य के लिये एक ब्रिटिश रेजीडेंट की नियुक्ति की शीघ्र सम्भावना है।

इस प्रदेश की जनसंख्या ५,००,००० है, और यहां की ३,००,००० एकड़ भूमि में रबड़ के बगीचे हैं।

मलाया विभक्त

ब्रिटिश सरकार ने एक श्वेत-पत्र प्रकाशित करके मलाया-राज्यों को दो भिन्न-भिन्न शासन-व्यवस्थाओं के अन्दर बांट दिया है। इस के अनुसार सिंगापुर उपनिवेशन तथा मलाया राज्यसंघ पृथक पृथक हो जायेंगे। मलाया राज्यसंघ में नौ मलायन रियासतें तथा पिनांग और मलक्का के प्रदेश होंगे।

जापान

जापानी मन्त्रिमण्डल के सब पार्लमेण्टरी उपसचिवों (जो मन्त्रियों के नीचे उन के सहायक होते हैं) तथा प्रिवी कौन्सिल के सदस्यों ने प्रधानमन्त्री शिदेहारी को अपने स्तीफे दे दिये हैं, ताकि निर्वाचनों में अधिकारी निष्पक्ष रह सकें।

आपके पढ़ने योग्य सामग्री

१ सचित्र कोक शास्त्र मूल्य २।)
२ मुगल बादशाहों की रंगीन रातें मूल्य २)
३ प्रेम और जीवन अर्थात् पति पत्नि रहस्य २)
४ नारंगियां २)
५ शहरों के पर्दे में २)

ऊपर लिखी हुई पुस्तकों के नाम से ही आप अन्दाज कर सकते हैं, कितनी मनोरंजक हैं। डाक खर्च अलग।

बहुरूप दर्शक मूल्य ॥।=)।
एक आश्चर्य जनक चीज है, जिस में लाखों तरह की तसवीरें बनती हैं। एक मनोरंजक खेल है। डाक खर्च अलग। पता :—
बी० एस० एन्ड० सन्स सराय मिहीलाल, अलीगढ़।

बच्चों को बलवान, तन्दुरस्त, और सुन्दर बनाने के लिये,

मिनर्वा ग्राईप वॉशर

विज्ञान-वार्ता

खेतों और बगीचों में क्रांति

अवांछित घास आदि नष्ट करने के लिए रासायनिक द्रव्य : फलों के उत्पादन का नियंत्रण :

सन् १९४५ में ब्रिटेन में अनाज के १३,००० एकड़ खेतों में मैथोक्सोन नामक एक रासायनिक द्रव्य की प्रक्रिया की गयी, एक एक एकड़ भूमि पर आध आध पौंड मैथोक्सोन की प्रक्रिया की गयी। इसका फल यह हुआ कि उन खेतों में पैदा हुए गेहूं, जई और जौ के साथ अवांछित उदभिज अर्थात् घास आदि प्रायः बिलकुल पैदा नहीं हुई जो अनाज के खेतों में साधारणतः बहुत पैदा होती है।

मैथोक्सीन से अवांछित उद्भिज्ज नष्ट हो गये। गेहूं और जई पर उसका कोई कुप्रभाव नहीं पड़ा। हां, कहीं कहीं जौ की बालें कुछ विरूप हो गयी थीं। अब हमें उन्हें निकालने का बहुत अच्छा साधन प्राप्त हुआ है। अनाज के खेतों में से अवाँछित उद्भिज्जों को यन्त्रों से निकालना कभी व्यवहार्य नहीं हुआ है। मैथोक्सोन का आविष्कार सन् १९४० में ब्रिटिश रसायन विज्ञान वेत्ताओं और जीव विज्ञान वेताओं ने किया। हम आशा कर सकते हैं कि अब इसका व्यापक उपयोग किया जायगा और अनाज की उपज में उससे लाभ होगा।

इस उद्भिज-नाशक रासायनिक द्रव्य के अतिरिक्त बहुत से ऐसे भी द्रव्यों का आविष्कार किया गया है, जिनके विभिन्न उपयोग हैं। इनमें एक रासायनिक द्रव्य ऐसा है जिससे घास के मैदानों में उगने वाले अवांछित पौधे तो नष्ट हो जाते हैं पर घास पर कोई कुप्रभाव नहीं पड़ता। कुछ रासायनिक द्रव्यों के उपयोग से पेड़ों में फूल लगने और फलों के पलने के समय का नियंत्रण किया जा सकेगा, ऐसी आशा है। ठीक समय पर इन द्रव्यों को फलों के पेड़ों पर छिड़कने से उसमें फूल लगने का समय १० से २० दिन तक आगे बढ़ाया जा सकता है। इस प्रकार इस समय को आगे बढ़ाने से बड़ा लाभ है। कभी कभी फलों के पेड़ों में लगे हुए फूल बसंत ऋतु के पाले से नष्ट हो जाते हैं। अतः फूल लगने का समय कुछ और बढ़ा देने से वे इस प्रकार नष्ट न होंगे। जिन स्थानों पर पहले से ठंडक के कारण फल पैदा नहीं किये जाते थे उनमें भी एक रासायनिक द्रव्य का उपयोग करके फल पैदा किये जा सकते हैं। एक रासायनिक द्रव्य के छिड़काव से फल पेड़ों पर से अकाल में गिर तो नहीं पड़ते यह सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि इस द्रव्य के उपयोग से कितना लाभ हो सकता है। अन्य द्रव्य के उपयोग से फल उचित समय पर पेड़ों से गिराये जा सकते हैं। इससे उन्हें तोड़ने के समय की बचत हो सकती है। एक अन्य रासायनिक द्रव्य द्वारा बिना बीज के टमाटर और गुठली के बिना फल पैदा किये जा चुके हैं।

ऐसे ही अनेक रासायनिक द्रव्य (बनस्पतिक हारमोन) हैं, जिनके उपयोग से फलों के उत्पादन में क्रांति की जा सकती है।

(कालीमल)

फर्ज अदा करने के दो ही तरीके हैं, या तो अधिक पैदा करो और या पहले से कम खर्चो।

—•—

अल्हड़ दोहावली

कोटि कोटि संग्रह किया, जोड़ा लाख हजार,
सब धन कागज हो गया, जब रूठी सरकार।
कागज धन को देखि के, अल्हड़ दीन्हा रोय,
गुप छुप अंसुवा ढारता, देखिन लेवें कोय।
विधना अरु सरकार की, एक ही सी गति जान,
उनके चलते ना किया, रे मूरख तैं दान।
अब छिप-छिप रोवत फिरे, चोट नाट ज्यों रोय,
सिसक-सिसक दुख की भरी, मुख आंचल ते गोय।
जिन नोटन को देखि के, फूला नहीं समाय,
अल्हड़ अब उनकी व्यथा, काटि काटि हिय खाय।
रे धन पति भय्या सुनो, अल्हड़ रहा बताय,
उन नोटन को गोलकर, चूरन लेऊ बनाय।
वामे सुलफा डारि कै, थोड़ी भंग के साथ,
छिप छिप दम खैंचत रहो, मिटें सभी संताप।

— 'अल्हड़'

स्त्री का स्थान घर की चार दीवारी में है

सब यही कहा करते हैं। परन्तु इन दो लड़कियों की कहानी देखिये जिन्होंने इस बात को मानने से इन्कार कर दिया और पुरुषों के बराबर की आजादी चाही।

नवयुग का नृत्य-गीत-सुसज्जित सामाजिक

दि न-रा त

कलाकार :—

स्नेहप्रभा ★ सुलोचना चटर्जी ★ परेश बनर्जी ★ वसन्त थेगड़ी

डायरेक्टर :— शो री दौ ल ता ल्वी —

रिकार्ड तोड़ सफलता प्राप्त कर रहा है

कुमार में रोज ३, ६॥ व ९॥ बजे रात को

रविवार को विशेष शो सुबह ११ बजे

एडवान्स बुकिंग ११ से १ और ४ से ६ बजे तक

बलधारा

का उदय

पब्लिक को सूचना दी जाती है कि डा० बलदेव शर्म्मा आयुर्वेदाचार्य शास्त्री बी० ए० एम० एन० एम० एस०, (बर्लिन) एम० आई० पी० ए० (वीयना) (सुपुत्र पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य अमृतधारा) भूत पूर्व मैनेजिंग डायरेक्टर व चिकित्सक अमृतधारा फार्मेसी लिमिटिड लाहौर।

जो स्वयं अपने हाथों से बीस साल तक अमृतधारा कार्यालय में अमृतधारा तथा अन्य सम्पूर्ण औषधियां तैयार करते रहे हैं।

बलधारा

(सौ दवाइयों की एक दवा)

जनता की सेवा में रखते हैं। यह सब प्रकार की अन्दर व बाहर की पीड़ा नाशक, पाचन विकारों के लिये रामबाण, जख्म, चोट, सूजन, डंग इत्यादि के लिये फर्स्ट एड, रोग कीटाणु तथा उन से उत्पन्न होने वाले रोगों की अद्वितीय औषधि है। हाथ कंघन को आरसी क्या। पब्लिक को आमन्त्रण है कि वह नये आविष्कार की भली प्रकार परीक्षा करें।

मार्केट में पहुंच गई है

मूल्य	पूरी	शीशी २),	महंगाई १)	कुल	३)
,,	आधी	,, १)	,, ॥)	,,	१॥)
,,	नमूना	,, =)।	,, ≡)	,,	॥-)

नोट १ — शीशी का साईज़ देखें। डब्बी के साईज़ से धोखे में न आएं।

नोट नं० २ — बलधारा फार्मेसी में अमृतधारा फार्मेसी के तमाम पुराने कर्मचारी काम कर रहे हैं, जिन्होंने अपने पुराने मालिक पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य की नौकरी छोड़ने पर मजबूर हो कर इकट्ठे ही वहां से त्याग पत्र दे दिये।

विज्ञापक :— मैनेजर बलधारा फार्मेसी रेलवे रोड, लाहौर

देहली और यू० पी० के सोल एजेण्ट :—

हरनारायण गोपीनाथ खारी बावली, देहली।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ईश्वर अच्छा ही करता है

एक व्यापारी था। वह प्रायः मेलों जाकर अपना माल बिक्री करता था। दिन की बात है कि वह मेले से अपना ल बेच कर अपने घर वापिस आ रहा । उसके पास पर्याप्त धन भी था।

वापिस आते-आते बीच में ही मूसला र मेंह पड़ने लगा। व्यापारी ने अज्ञानता- ईश्वर को बहुत कुछ बुरा भला कहा र अब मैं घर कैसे पहुंचूंगा यह परम ता से उसकी शिकायत थी।

सहसा उसको एक ठग मिला और दूक दिखाकर बोला — जो कुछ तेरे स माल-मसाला हो इधर रख! नहीं बन्दूक से शूट कर दूंगा।

व्यापारी भी कच्ची कौड़ियों का खेला आ नहीं था। उसने हिम्मत न हारी ौर बातों का उत्तर लातों से दिया।

ठग, लातों का उत्तर बन्दूक से देना ाहता ही था कि उसके बन्दूक चलाने र भी बन्दूक नहीं चली। कारण यह था के वर्षा के कारण बारूद भीग गई थी। ब तो ठग के रहे-सहे होश भी हवा हो ये और व्यौपारी को छोड़ अपने प्राण कर तुरन्त भाग गया।

व्यापारी बारूद के भीगने की बात ान कर वर्षा का अत्यधिक महत्व समझ या और सहसा उसके मुंह से निकल ड़ा — 'ईश्वर जो कुछ करता है अच्छा ी करता है।' — हरनारायण

मूर्ख माली

बात बहुत पुरानी है। एक गांव में एक माली रहता था। उसका एक छोटा सा फलों का बाग था। वह फलों को बेचकर अपना गुजारा करता था। वह बड़ा मूर्ख पर भोला-भाला आदमी था।

एक दिन संध्या के समय एक चोर उस माली के बगीचे में फल चुराने के लिए घुसा और एक बड़े से तरबूज को तोड़ने लगा। इतने में संयोगवश माली वहां आ निकला।

माली को देख कर चोर भयभीत हो गया पर शीघ्र ही माली को उलझाने का एक उपाय सूझा। माली ने भी उसे देख लिया और 'कौन है रे यहां' ऐसा कहते-कहते चोर के पास आ पहुंचा। चोर बोला—'हे भक्त! क्या यही भूलोक है? और क्या यहां के ही रहने वाले भूलोक वासी कहलाते हैं?' मूर्ख माली ने सोचा कि यह आदमी तो कोई बड़ा देवता है। मालूम पड़ता है कि देवलोक से सीधा ये यहां मेरे बगीचे में आकर उतरा है।

बाद में हाथ जोड़ कर माली बोला— 'हां,' देवता! यही भूलोक है। मैं भी भूलोक वासियों में से एक हूं। इतना कहकर चोर को कई बार प्रणाम किया और जाते समय, माली ने कुछ मीठे तरबूज देवता की भेंट चढ़ाये। चोर उन्हें लेकर वहां से खिसक गया। —पुष्पन

बाल बन्धु परिषद

राष्ट्रीय-गीत

बढ़ चल बढ़ चल हिन्दुस्तान
कैसा दुशमन, कैसी फौज,
कैसा दरिया, कैसी मौज।
चल अय आंधी, उठ तूफान,
बढ़ चल बढ़ चल हिन्दुस्तान।
किस की गद्दी, किसका ताज,
किस की धरती, किस का राज।
जग में जनता, जन सुलतान,
बढ़ चल बढ़ चल हिन्दुस्तान।
कन्धे से कन्धे को जोड़,
परवशता के बन्धन तोड़।
चल जैसे आजाद इन्सान,
बढ़ चल बढ़ चल हिन्दुस्तान।
उलझे, बिखरे गेसू देख,
दुखियारों के आंसू देख।
कर भूके नंगों का ध्यान,
बढ़ चल बढ़ चल हिन्दुस्तान।
तलवारों की धारें चूम,
जख्मो की बरखा में झूम।
कर खूंनी जल में स्नान,
बढ़ चल बढ़ चल हिन्दुस्तान।
झन झन झन झन बोला रन,
सन की गोली सन सन सन।
सर ऊंचा कर, सीना तान,
बढ़ चल बढ़ चल हिन्दुस्तान।
— शमीम

बाल-वीर-प्रतिज्ञा

हम आगे कदम बढ़ायेंगे,
दुश्मन को मार भगायेंगे।
सुन्दर-सुन्दर कलियां चुन-चुन,
भारत का भाल सजायेंगे।
आपस की फूट मिटायेंगे,
पतितों को गले लगायेंगे।
पथ भूले भटके मानव को,
हम सीधी राह-दिखायेंगे।
कृषकों के दुःख मिटायेंगे,
भूखो के प्राण बचायेंगे।
असहाय अनाथों की खातिर,
हम अपनी जान गवायेंगे।
हम बालक हैं अनजान नहीं,
छोटे हैं पर बेजान नहीं।
प्रण है प्यारा जितना हमको,
उतनी प्यारी यह जान नहीं।
माता के बन्धन तोड़ेंगे,
अन्यायों का घर फोड़ेंगे।
टूटी आजादी की लड़ियां,
हम मरते-मरते जोड़ेंगे।
— प्रशान्त

भारत!

क्या भूल गया?
तेरी हूंकारों से,
कांपता था संसार,
क्या भूल गया?
वह महानता,
वह यश,
वह विचार,
वह वीरता।
वह धीरता।
क्या भूल गया?
सत्य सा शस्त्र,
अहिंसा सा अस्त्र।
वह अटलता,
वह सफलता।
क्या भूल गया?
तुझे बढ़ना है—
लड़ना है।
सागर सा,
उमड़ना है—
घुमड़ना है।
क्या भूल गया?
— शरतचन्द्र

१००
(दस-दस
५१
४४ १०
४५ १०
...केवल १

पहेलियां

[१]
तीन वर्ण का मेरा नाम
आता हूं आखों के काम
अन्त कटे से काज कराता
मध्य कटे से समय बताता
आदि कटे से जल रह जाता

[२]
पैर कटे से बनता कौआ
सिर काटो तो हाथी
कमर काट के काज बनालो
मैं हूं सबका साथी
— राजेन्द्र

[३]
भीं भीं भीं भीं करता जाता
नहीं किसी का मन बहलाता
पलक मारते ही भग जाता
हमको थप्पड़ है लग जाता

[४]
तुझ में मैंने दुनियां देखी
नहीं झाड़ता है तू शेखी
सारी नदियां नाले बहते
हम तुम सब उसमें ही रहते
— शम्भुप्रसाद

[५]
पांच वर्ण का मेरा नाम
उलटा सीधा एक समान
पहले दो से नया नाम
अंतिम दो पेड़ों की खान

[६]
एक तमाशा देखा प्रातः
नाच उलट के घोड़ा खात
— रामप्रसाद

उत्तर — १. काजल, २. कागज, ३. मच्छर, ४. नकशा, ५. नवजीवन, ६. चना

क्या आप जानते हैं?

१. संसार का सबसे गहरा सागर पैसिपिक महासागर है जिसकी गहराई ३५४०० फीट है।

२. संसार के सबसे बड़े स्टेशन का नाम शिकागो है जो कि उत्तरी अमेरिका में है।

...सबसे बड़ा जहाज ठह- ... जो आस्ट्रे-

...देहली

सरदार पटेल

...द्यालङ्कार
...ालङ्कार

एक प्रति का मूल्य

पं० भास्करानन्दजी

ब्रिटिश गायना में — आर्यसमाज का प्रचार

करीब दस वर्ष हुए, श्री पं० भास्करानन्दजी ब्रिटिश गायना में वैदिक-धर्म के प्रचार के लिए गये थे। वे अब भारत में वापस आ गये हैं।

जिस समय श्री भास्करानन्द अटलांटिक महासागर के इस किनारे आये थे उस समय ब्रिटिश गायना में आर्यसमाज न तो व्यवस्थित था और न ही ठीक तरह आयोजित था। किन्तु क्योंकि आपका यहां आगमन हुआ आप अध्यवसाय के साथ समाज के लिये कार्य करने लगे और छः महिने के अन्दर ही एक विशाल जन समूह के सन्मुख जौर्जटाउन में आपने अमेरिकन-आर्यन-लीग की, जो कि इन देशों के लिये अखिल आर्य-समाज आन्दोलन की केन्द्रीय तथा सर्वाधिकारी सभा है, स्थापना की जो, कि आपकी अवैतनिक सेवाओं के फल स्वरूप इस समय ब्रिटिश और डच गयाना, ट्रिनिडाड तथा अन्य वेस्टइ-इन्डीज के द्वीपों में आर्यसमाज तथा उससे सम्बन्ध रखने वाली संस्थाओं के धार्मिक, सामाजिक तथा विद्या सम्बन्धी सब कार्यों का केन्द्र बन गया है।

आपके अथक परिश्रम के कारण आज अमेरिकन-आर्यन-लीग ब्रिटिश गयाना, डच गयाना और ट्रिनिडाड में शृंखलाबद्ध आर्यसमाजों के केन्द्रों की शिरोमणि सभा है। नियमित रूप से ब्रिटिश गयाना में [illegible] के खेतों समाजें, उम्भिज्जों को यन्त्रों से [illegible]लना कभी व्यवहार्य नहीं हुआ है। मैथोक्सोन का आविष्कार सन् १९४० में ब्रिटिश रसायन विज्ञान वेत्ताओं और जीव विज्ञान वेताओं ने किया। हम आशा कर सकते हैं कि अब इसका व्यापक उपयोग किया जायगा और अनाज की उपज में उससे लाभ होगा।

इस उद्भिज-नाशक रासायनिक द्रव्य के अतिरिक्त बहुत से ऐसे भी द्रव्यों का आविष्कार किया गया है, जिनके विभिन्न उपयोग हैं। इनमें एक रासायनिक द्रव्य ऐसा है जिससे घास के मैदानों

[पृष्ठ २ का शेष]

श्रीमती ट्रूमैन की गृह-सज्जा में भव्यता, सफाई और उपयोगिता का समावेश है। अमरीकी 'प्रधान' के अध्ययन कक्ष में बड़ी सादगी मिलती है। श्रीमती ट्रूमैन की बैठक बड़ी और 'प्रकाशवान्' है!

अमरीका के इस प्रमुख और विशाल 'श्वेत-गृह' में सिर्फ सुपुत्री मार्गरेट का कमरा ही आधुनिक ठाठ-बाट के सामानों से सजा है। इसमें वह अपने कालेज के साथियों और सहेलियों का आतिथ्य करती हैं। सारी आधुनिक सजावट के बीच भी दीवारों के चित्र पारिवारिक गांव के भू-दृश्यों की हरीभरी याद को लिए लटक रहे हैं। मार्गरेट का मधुर बचपन वहीं बीता था।

संसार की सबसे बड़ी शक्ति संयुक्त राज्य अमरीका के 'प्रधान' पद पर पहुंच कर भी ट्रुमैन और उनका परिवार अपने मातृ प्रदेश में अपना घर और घरेलू ममता पूर्ववत् रखते हैं।

रहे हैं। ५,००० से अधिक मनुष्यों को आपने नियमित रूप से आर्यसमाज में प्रविष्ट कराया।

पिकाक दंत मंजन

दांतों को मोती सा चमकाता है और मसूड़ों को मजबूत बनाता है। पायरिया का खास दुश्मन है। अपने शहर के

मुख आंचल तें गाय।
फूला नहीं समाय,
काटि काटि हिय खाय।
अल्हड़ रहा बताय,
चूरन लेऊ बनाय।
ड़ी भंग के साथ,
मिटें सभी संताप।
— 'अल्हड़'

ड़ते यह सहज ही अनुमान किया जा कता है कि इस द्रव्य के उपयोग से तना लाभ हो सकता है। अन्य द्रव्य उपयोग से फल उचित समय पर ड़ों से गिराये जा सकते हैं। इससे उन्हें तोड़ने के समय की बचत हो सकती है। एक अन्य रासायनिक द्रव्य द्वारा बिना बीज के टमाटर और गुठली के बिना फल पैदा किये जा चुके हैं।

ऐसे ही अनेक रासायनिक द्रव्य (बनस्पतिक हारमोन) हैं, जिनके उपयोग से फलों के उत्पादन में क्रांति की जा सकती है।

(कालीमल)

फर्ज अदा करने के दो ही तरीके हैं, या तो अधिक पैदा करो और या पहले से कम खर्चो।

—•—

आपके सारे परिवार के लिए सर्वोत्तम पेय

मिलर

'मिलर की चाय'

चाय

अगर आप अपना स्वास्थ्य कायम रखना चाहते हैं तो सदा 'मिलर की चाय' ही इस्तेमाल किया करें।

क्योंकि

'मिलर की चाय' और तमाम चायों से सर्वश्रेष्ठ है। इससे जीवन का सच्चा आनन्द व स्फूर्ति प्राप्त होती है, दिन भर की थकावट को दूर करके दिल व दिमाग में ताजगी पैदा करती है। जायके व खुशबू में भी सर्वोत्तम है।

सब-एजेन्सी व आर्डर बुक कराने के लिए निम्न लिखित पते पर पत्र-व्यवहार करें या स्वयं तशरीफ लायें:—

पैरेडाइज़ एण्ड कम्पनी,
(चीफ एजेण्ट-एस. मिलर टी कम्पनी)
हौज काजी, (थाने के सामने) दिल्ली।

टेलीफोन नं० ५३९८

"सन्देश पहेली नं० ४ में ५००) पुरस्कार नकद जीतिये"

स्त्रियों को शक्ति दायक औषधि

सुन्दरी साथी (रजिस्टर्ड)

स्त्रियों के प्रदर, रक्त प्रदर, ऋतुश्राव, गर्भाशय के रोग, मिटाता है। बन्ध्यत्व को मिटाता है, बच्चे होते हैं। स्त्री का स्वास्थ सुधार देती है, हरेक गांव में दवा वाले लोग बचते हैं। कीमत फी बोतल १।=) तीन बोतल से आराम होता है इनका मूल्य ३।।।) । दिल्ली एजेन्ट:—कान्तीलाल आर० पारिख, दवे केमिकल वर्कस, कालबादेवी रोड बम्बई।

कशमीर के पहाड़ों की बर्फीली चोटियों की तरह कशमीर की सुन्दरियों के काले, लम्बे केश अपना उदाहरण नहीं रखते — जुल्फे कशमीर हेयर ओयल—विभिन्न फलों और मूल्यवान जड़ी बूटियों से निर्मित है जो बालों को प्राकृतिक काला रङ्ग प्रदान करता है। बड़ी शीशी १।।) छोटी ।।।=)

कशमीर परफ्यूमरी वर्क्स कुतब रोड, देहली।

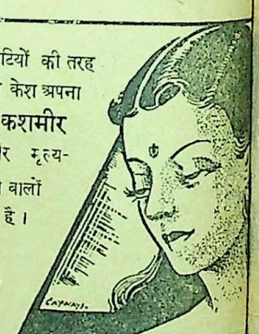

कांगड़ी का सर्व श्रेष्ठ

वन प्राश

ाग फ़ेफ़ड़े वा कमज़ोरी के लिये

श एण्ड कम्पनी, चांदनी चौक, मोती बाजार के सामने।

पहाड़गंज दिल्ली। आरोग्य मन्दिर, गोल मार्केट, नई दिल्ली। अमरोहा गेट मुरादाबाद, रावतपा ना बरेली और नवज्योति स्टोर्स अजमेर।

Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

मां नहीं आई

(पृष्ठ १० का शेष)

...ही है — सुनती नहीं — क्या जान-...री है। बाजू से अरे भाई अपनी ...री से। बढ़ाओ भैया रास्ते में क्यों ...ड़ा दिया।'

'इतना बड़ा रास्ता तो पड़ा है बड़े ...या। निकाल लो न बचाके। हां ...या, जरा किनारे से।'

'क्यों तांगा वाले — बीना वाली ...ड़ी से हमारी अम्मा तो नहीं आईं ?'

'अले मुन्नू —देख वो हैं पीछे ...मन चाचा का तांगा — उछ में बैथीं ...गी अपनी अम्मा। क्यों चाचा आ ...ईं हमाली अम्मा ?'

'हम बताते हैं तुम्हारी अम्मा को,' ...ंगे से कूद कर मैंने कहा। 'बाबूजी अम्मा नहीं आईं', एक ओर से छुन्नू और दूसरी ओर से मुन्नू ने दौड़ कर मुझ से चिपटते हुए कहा।

सर्वत्र निस्तब्धता छाई हुई थी। आकाश में प्रचण्ड मार्तण्ड अपनी समस्त शक्ति द्वारा भूमण्डल को जलाये डाल रहा था; लेकिन अम्मा के आगमन की उत्कंठा में जेठ की इस दुपहरी का कोई कोई मूल्य न था। धूप से झुलसे हुए उन गुलाबी चेहरों पर पसीने की बून्दे धीरे-धीरे सघन होती जा रही थीं मानों मेरे मौन को देख कर उनके हृदय के अखण्ड विश्वास की साक्षी देती हुईं मुझ से पूंछ रही हों — बाबूजी क्या सचमुच में मां नहीं आईं !

———

सन्देश चैरिटेबिल फंड कमेटी द्वारा संचालित

सन्देश पहेली नं० ४ में ५००) का पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार २५०) रु०, द्वि० १५०) रु० और तृतीय ७५) रु० विशेष पुरस्कार द्यर्वाधिक कूपन पर १५) और प्रथम सही पूर्ति भेजने वाले को १०) पूर्तियां पहुंचाने की अन्तिम तारीख २० फरवरी १९४६ ई०

१.	— — — बाद	भारतवर्ष के एक नगर का नाम।
२.	— — पुर	भारतवर्ष के एक नगर का नाम।
३.	— — लू	एक जिमीकन्द तरकारी का नाम।
४.	— न	मित्रता के लिये आवश्यक है।
५.	— म	कितने ही इसके लिये मर मिटते हैं।
६.	— — श	एक फिल्म अभिनेता का नाम।
७.	— — न	एक दर्शनीय चित्र जो खूब सराहा गया है।
८.	— — — — स	को अधिक प्रसिद्धि मिली है।

नियमः—१. प्रवेश फीस एक कूपन ।=) आने, चार का १=) और हर पूर्ति पर चार आने। २. उत्तर के लिये -)॥ के टिकिट और भेजें अन्यथा उत्तर नहीं दिया जावेगा। ३. मैनेजर का निर्णय अन्तिम तथा कानूनन मान्य होगा।

पताः—मैनेजर, सन्देश पहेली कार्यालय, बेगमाबाद, जिला (मेरठ) यू० पी

अद्वितीय आकर्षक मूंगफली तेल मूंगफली बीजा एवं रेडी तेल की सप्लाई के लिये:—

रामजीलाल मोदी एण्ड को०

वरंगल (निजाम स्टेट)

टेलीग्राम BHANU फोन नं० १०१

हर प्रकार की स्टेशनरी केश, लेजर हिसाब किताब के रजिस्टर, रजिस्टर मुलाजमीन, रबर की मोहरों व छपाई के लिए हमारी सेवाएं प्राप्त कीजिए।

ओरियंटल स्टेशनरी सप्लाई कं.

चावड़ी बाजारर, देहली।

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि०

अधिकृत पूंजी १०००००) रु० (दस-दस रुपये के हिस्सों में)

अदाशुदा पूंजी ५१०७० रु०

डिवीडेन्ड सन् १९४४ १० रु० सैकड़ा

डिवीडेन्ड सन् १९४५ १० रु० सैकड़ा

थोड़े से और हिस्से बिक्री के लिए निकाले ग... ...स्सा केवल १०) का है। ५) प्रार्थना पत्र के साथ और ५) प्रार्थना पत्र स्वीकार होने प...

आप ...)

('वीर अर्जुन' समाचार ... देहली

श्री श्रद्धानन्द पब्लि...

के हिस्सेद...

शेयरों के लिए आवेद...

मैनेजिंग ...

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स ...

सरदार पटेल

...वालङ्कार

...ालङ्कार

एक प्रति का मूल्य ...

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

घोषणा
भारत-सरकार के
इनामी बांड
चौथी लाटरी के नतीजे

पंच वर्षीय ब्याज रहित प्राइज (इनामी) बांड्स १९४५ की चौथी छमाही लाटरी के नतीजे, जो १५ जनवरी, ११४६ को सुन्दरबाई हंसराज प्राग जी हाल, क्वीन्स रोड बम्बई में निकाली गई थी, आम सूचना के लिये प्रकाशित किये जाते हैं।

—१०० रु० वाले बांड—

इनाम जीतने वाले बांडों के नम्बर

	सेरीज़ ए०	सेरीज़ बी०	सेरीज़ सी०	सेरीज़ डी०
इनाम ५०,००० रु०	०८१३४६	०६९८५९	०९११३९	०२०८२४
२०,००० ,,	०२७७६७	०३११६२	०००५७९	०९८७७४
२०,००० ,,	०६८४७७	०७०६७५	०४९२५६	००८६२१
५,००० ,,	०३१२५८	०३५७७८	०२९३८८	०६६७९७
५,००० ,,	०१२६२८	००३८८४	०३६१३१	०८६३७१

—१० रु० वाले बांड—

इनाम जीतने वाले बांडों के नम्बर

इनाम	सेरीज़ ए ए	सेरीज़ ए बी	सेरीज़ ए सी	सेरीज़ ए डी	सेरीज़ ए ई	सेरीज़ ए एफ	सेरीज़ ए जी	सेरीज़ ए एच	सेरीज़ ए जे	सेरीज़ ए के	सेरीज़ ए ल	सेरीज़ ए एम	सेरीज़ ए एन
२,५०० रु०	०९९०८८	०१६५८९	०६५२०५	०६५३५५	०४६१०४	०३३८५६	०३७४८३	०१६०२४	०६७९२९	०११७४०	००२६०१	००८०१५	०८६७५३
१,२५० ,,	०३२६४०	०४१११३	०२८६२३	०२१९२२	०९९३६२	०४६४२०	०८१४४९	०९३२८८	०७७०४५	०१२६२६	००१५८७	०५९७१७	०५०९६४
१,२५० ,,	०२०३७५	०८२३१२	०९५१०६	०४०७५२	०३३५८२	०९३७६८	०१०१२७	०९१४२१	०५५१०३	०८४७७४	०५५३१०	०२७४४१	०७८६९१
५०० ,,	००७४०७	०४१०१५	०९३६६०	०५५११७	००५११९	००२३१९	०८५८४२	०१३३५८	०७६०८१	००७७१२	०८२०८९	०३११५९	०८७४३६
५०० ,,	०९१३४७	०५७१७१	०४३२०६	०४७९४४	०९०५०१	०११४६०	००१५१६	००२९५७	०६८००४	०१६१८९	००५५१३	०८२७७७	०२५३८०
५०० ,,	०५९२०८	०१०३५७	०७७६२५	०८०४४४	०६७०५६	०१९४६३	०१०२३९	००१२९२	०४८६११	०५१९४१	०९८७२९	००६०९०	०४४२४३
५०० ,,	००८५८१	०१२१२७	०२७५८९	०८६७५६	०३२३५३	०००९४४	००१७३१	०४२९८४	०१६७००	०२६०५०	०९८५०७	०३१२२४	०६१४५७
५०० ,,	०६७४०१	०२३७८६	०१८९४१	००३७१९	०१३९२५	०२२७०३	०९०२१९	००२८५१	०९८२८०	०२३४७९	००७२९२	०३८५४४	०३७३६७
२५० ,,	०८३३६०	०३३०९५	०१८४०६	००५६५६	०७८४९७	०७७३८०	०२१८११	००६७८२	०६१५५३	०८०३२८	०५१०३१	०४३०१६	०७
२५० ,,	०००८९०	००८१०८	०७०२३५	००८२४५	०४८१३४	०७१४०४	०७१६१७	०५६४८०	०४४९४६	०३१७०२	०६१३६०	०३७३८५	०९
२५० ,,	०७१६७७	००२९२७	०४१३०९	०४३५८०	०७३६३४	०३५०१३	०२६४८४	०९५७३३	०२१४०५	०७५५७५	०९९५५०	०८४४६७	०१०
२५० ,,	०४४९११	००२०३३	०१५३३२	०३६०४१	००८८२६	०१५२९९	०१५५६१	०३०७८९	०८५७६०	०६४१४४	०८७१६८	०६९२२३	०१६
२५० ,,	०२९९९०	०१८०८९	०५९४११	०१०११०	०४६७८९	०५७२५६	०४५९५७	०८२३४६	०२१०६४	०९०७२०	०९०६५४	०२८२१९	०३३
२५० ,,	०३४०४४	०३९०५६	००१९४९	०४८१०१	०६०२८२	०२२५३३	०८२३५९	०९५८६५	०८७२२८	०९५९६६	००६२७४	०८९३१५	०७२४५१
२५० ,,	०२२१६२	०७०७३९	०३६६६५	०४२२५१	०१६६३६	०६६५५६	०९७७३९	०८९१६७	०३३४९७	०२२९३३	०८४५३७	०४६०००	०३०१४५
२५० ,,	०९९२६०	०८७८१५	०५६९१०	०६२७२५	०३८१३८	०८०७५५	०३२३९८	०९०८७६	०४७८६३	००६६८९	०७३९५५	०७०२५४	०८१८१८
२५० ,,	००२७६४	०५२८३४	००६९४७	०८१९१७	०४३१८६	०२६१२७	०७३१४२	०६३४३४	०८९६३५	०१८९९८	०६११७७	०३८४२८	०६०३९५
२५० ,,	०४५५६३	०९५१४६	०४०१५७	०४००९३	०३७३५६	०७२९०९	०८६२९६	०१२७१०	०५७८९८	००९८८६	०७२५३७	०२७८१४	०४९३११

पिछली लाटरियों में निकले हुए इनाम जिनकी रकम ता० १५ जनवरी, १९४६ तक वसूल नहीं की गई

वसूल न किए गए इनामों का विवरण

लाटरी की तारीख	बांड की कीमत	इनामी बांड का नम्बर	इनाम की रकम
१५-७-१९४४	रु० १०	एए ०७००९८	२५०)
		एए ०८६१६०	२५०)
		एबी ०५९९९३	२५०)
		एसी ०६२९११	२५०)
		एएफ ०३६७९९	२५०)
		एएच ०८५४९९	२५०)
१५-१-१९४५	रु० १००	सी ०१७१९८	२,५००)
	रु० १०	एए ०७६०७२	२५०)
		एए ०६५४१७	२५०)
		एबी ०७९७३८	२५०)
		एबी ०७१३७९	२५०)
		एबी ०६२८९३	२५०)
		एसी ०२७६२७	२५०)
		एसी ०६४३९६	२५०)
		एई ०१३४२८	२५०)
		एई ०९३१३५	२५०)
		एएफ ०२४५५४	२५०)

वसूल न किए गए इनामों का विवरण

लाटरी की तारीख	बांड की कीमत	इनामी बांड का नम्बर	इनाम की रकम
१५-१-१९४५	रु० १०	एए ०९१६०५	२५०)
		००९८३८	२५०)
		०४६१६८	५००)
		०१४७१६	२५०)
		०२०९४७	२०,०००)
		०२९२२५	२५०)
		०४३१७९	५००)
		०५७१९९	२५०)
		०४१६५८	२५०)
		०५४१२०	२५०)
		०३१५२२	२५०)
		०५९०६३	२,५००)
		०११३३४	१,२५०)
		००००५४	१,२५०)
		०६१२०५	५००)
		०६३४९८	५००)
		००६११६	५००)
		०५४८६६	५००)
		००६२००	२५०)
		०००३३४	२५०)
		०८५२४१	५००)
		०७५९९६	२५०)

वसूल न किए गए इनामों का विवरण

लाटरी की तारीख	बांड की कीमत	इनामी बांड का नम्बर	इनाम की रकम
१३-७-१९४५	रु० १०	एएफ ०७५३७७	२५०)
		एएफ ०९६८९५	२५०)
		एएफ ००२१०८	२५०)
		एएफ ०७३७१२	२५०)
		एजी ०२०२१८	५००)
		एएच ०३०६२८	५००)
		एएच ००११००	२५०)
		एएच ०११०६९	२५०)
		एजे ००१३१५	१,२५०)
		एजे ०६१३०५	५००)
		एजे ०७१६६२	५००)
		एजे ०१०२०५	२५०)
		एजे ०७७४११	२५०)
		एजे ०८८७७४	२५०)
		एके ०७००६५	५००)
		एएल ०६६३०७	२,५००)
		एएल ०५७८२६	२५०)
		एएल ००९४८८	२५०)
		एएम ०३७४१०	२५०)
		एएम ००१९८७	२५०)
		एएन ०१०११४	५००)
		एएन ०२००९३	२५०)

व्यापक उपयोग किया जायगा और अनाज की उपज में उससे लाभ होगा।

इस उद्भिज-नाशक रासायनिक द्रव्य के अतिरिक्त बहुत से ऐसे भी द्रव्यों का आविष्कार किया गया है, जिनके विभिन्न उपयोग हैं। इनमें एक रासायनिक द्रव्य ऐसा है जिससे घास के मैदानों

अनुमान किया जा
इस द्रव्य के उपयोग से
लाभ हो सकता है। अन्य द्रव्य
के उपयोग से फल उचित समय पर
पेड़ों से गिराये जा सकते हैं। इससे
उन्हें तोड़ने के समय की बचत हो सकती
है। एक अन्य रासायनिक द्रव्य द्वारा
बिना बीज के टमाटर और गुठली के
बिना फल पैदा किये जा चुके हैं।

ऐसे ही अनेक रासायनिक द्रव्य
(बनस्पतिक हारमोन) हैं, जिनके उपयोग से फलों के उत्पादन में क्रांति की जा सकती है।

(कालीमल)

फर्ज अदा करने के दो ही तरीके हैं, या तो अधिक पैदा करो और या पहले से कम खर्चो।

—•—

इण्डिया द्वारा प्रकाशित
AAA 523
के लिये 'अर्जुन प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली से छापकर प्रकाशित किया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

वीर अर्जुन साप्ताहिक

ILLUSTRATED VIR ARJUN WEEKLY

[११] देहली, सोमवार २३ माघ सम्वत् २००२, ४ फरवरी १९४६ ई० DELHI, 4th February 1946 [अङ्क ४८]

कांग्रेस के पार्लमेण्टरी कार्यक्रम के सूत्र-संचालक

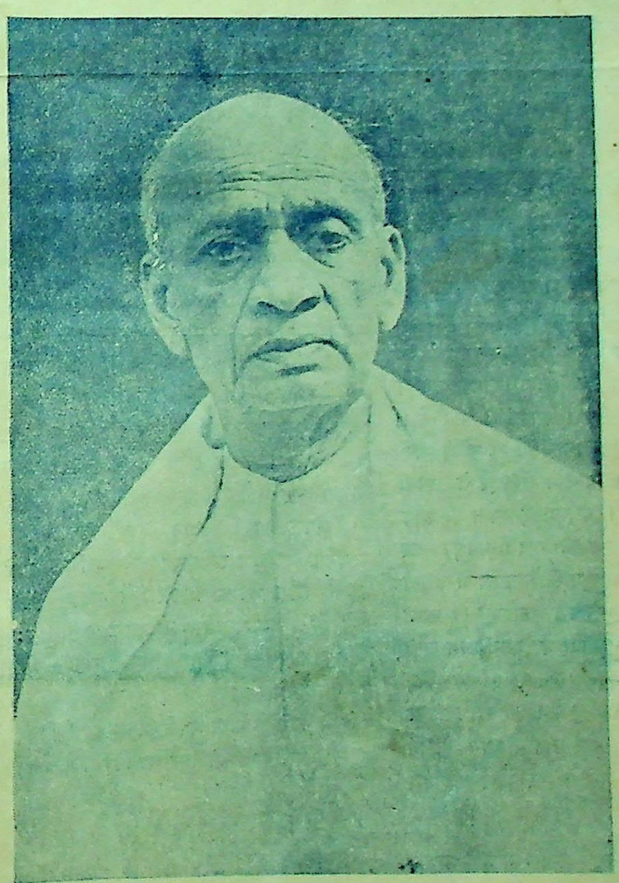

सरदार पटेल

इस अङ्क की कुछ सामग्री

१— भारतीय धारासभा और उसके अभिनेता

२— ब्रिटिश मजदूर मंत्रिमंडल की असमर्थता

३— डी० ए० वी० कालेज अजमेर

४— नोट की कीमत

६— हम ही अपने बालकों के दुश्मन हैं

७— स्वाधीनता की प्रतिज्ञा लेने वालों से

कहानी, उपन्यास, बालपृष्ठ, कविता, लोकवाणी तथा चित्रावलि।

वार्षिक मूल्य ८) सम्पादक— रामगोपाल विद्यालङ्कार कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार एक प्रति का मूल्य ≈)

मास का ४)

आधुनिका

पुरुष क्या दरअसल दूध के धोये हैं ?

[श्रीमती सुशीला देवी दीक्षित]

'वीर अर्जुन' के प्रेमी पाठक व पाठिकाओं के सामने मैंने 'ऐसी नारियों का क्या हो ?' शीर्षक, से एक जलती हुई समस्या पेश की थी। लेकिन २० वीं सदी में नारी व पुरुष में परस्पर प्रतिद्वन्द्विता की एक ऐसी बाजी लगी हुई है, जिससे जिन्दगी की एकस्वरता हवा हो चुकी है ! जीवन की मिठास में कड़ुआहट सी महसूस हो रही है। आज गृहस्थी का कोई सा भी मसला हो, जीवन की कोई सी भी उलझन हो, उस ग्रन्थि को खोलने के बजाय परस्पर दोषारोपण व अंगुलि निर्देश ही आज का एकमात्र लक्ष्य है।

दरअसल सच पूछा जाय तो नारी और पुरुष की जिन्दगी की कटुआहट के विष-वृक्ष का बीज पश्चिम से मोल लिया गया है ! पाश्चात्य-शिक्षा का दीवाना पुरुष, कर्जनकट मूंछों और कोट-पैन्ट के साहेबी रोब में खुद को भूल बैठा है। यहीं तक भी अगर बात रहती तो भी ठीक था, लेकिन उसने पश्चिमी-सभ्यता के रंगीन परों में, भारतीय नारी को तितली की भांति फुदकना सिखलाया। नारी के दिल में पाउडर व पोमेड की प्यास पैदा की, क्लबों की सैर कराई। उनकी पीठ ठोक-ठोक कर उसे प्लेट फार्म पर ला खड़ा किया। उसकी सुमधुर स्वीचों पर तालियां पिटवाईं। गोरी-गोरी मेमों के गाउन की चुस्ती में, पवित्र भारतीय ललना के नग्न सौन्दर्य से अपनी आंखे सेंकी। पश्चिमी सभ्यता की आड़ में उसके यौवन को खूब छिप-छिप कर देखा, नशे की खुमारी के उतार में उसकी आंखों ने देखा कि उसकी जिन्दगी की हरी-भरी दुनियां में आग लग चुकी है और उस पर तारीफ यह कि इस भयानक आग को बुझाने के लिये फायर ब्रिगेड बुलाने के बजाय आग किसने लगाई, इसी मसले पर जोरों के साथ वाद-विवाद किया जा रहा है !

आज की नारी के खिलाफ, पुरुष की शिकायत है कि लिपस्टिक की लाली में खासी लेडी बनो, आज की फेशनेबल ललना जब कभी राह से गुजरती है तो बेचारा पुरुष उसकी ओर आकर्षित होता ही है।' मैं उन पुरुषों से पूछती हूं कि अगर पुरुष सुन्दरता की ओर आकर्षित होता है तो उसका यह आकर्षण वासनाजन्य ही क्यों है ? श्रद्धा या शक्तिजन्य क्यों नहीं ? सुन्दरं के आकर्षण में 'शिवं' और 'सत्य' की कमी क्यों है ? दर असल हकीकत तो यह है कि पश्चिम की गन्दगी में गर्क पुरुष की आंखों में नारी के रूप को तिल तिल, पी जाने की वासनाजन्य प्यास जोरों के साथ लहरें ले रही है। पुरुष अपनी इसी कमजोरी को नारी के सिर थोपने में व्यर्थ प्रयत्नशील है। पुरुष की विलासिता रूपजन्य मोह व प्रेम के झूठे वायदों, का इससे बढ़कर और कौनसा सार्टिफिकेट हो सकता है !

इतिहास कहता है कि मुगल कालीन जमाने में युद्ध में कैद की हुई बादशाह की बेगमें जब शिवाजी के सामने लाई गईं तो उनकी अलौकिक सुन्दरता को देख महाराज शिवाजी की नजरों में जो मातृत्व का पवित्र भाव पैदा हुआ, वैसी भव्य भावना आज के बेचारे पुरुष के आकर्षण में पैदा क्यों नहीं होती ?

जंगल की आग तभी तक भयानक रूप धारण करती है, जबकि उसके आसपास चारों ओर सूखे झाड़ खड़े हों। अगर उसे कोई खाद्य नहीं मिले तो अपने आप आग शांत हो जाती है। यह सभी जानते हैं ? पुरुष और थोड़े से संयम से काम लें तो मैं समझती हूं कि नारी खुद ही राह पर आ जायेगी।

लोग नारी पर पुरुष को आकृष्ट करने के लिए फैशन करने का आरोप करते हैं, लेकिन दूसरों के दोष देखने के पहिले अपने खुद का घर भी देख लेना ज्यादा उपयुक्त होता है। 'दिया तले अंधेरा' वाली कहावत अभी पुरानी नहीं हुई है, प्रत्येक बात कहने का तरीका होता है ! फर्ज कीजिये पुरुषों के समान ही अगर 'नारी' भी ये शिकायत करे कि —

'प्रातः संध्या के बजाय प्रतिदिन सेफ्टीरेजर से डाढ़ी मूछों की सफाई, पूरे आदम कद आइने के सामने घंटों चारु केशविन्यास, चमचमाते पेटेन्ट लेदर शू, लेटेस्ट डिजाइन के सुन्दर सिल्कन सूट व टाई 'कोई' खुद को तृप्त करने के लिये पहनता है या···?'

मैं समझती हूं यह कटु सत्य कहने के साथ ही साथ किस पुरुष का हृदय गुस्से से लाल नहीं होगा ? हृदय में कौनसी भावनाएं लहरें लेंगी ?

नारी का हृदय, स्वभावतः ही कोमल प्रेमल व सुकुमारतम प्रवृत्तियों का आगार है। सेवा व साधना की वह प्रतीक है। त्याग व तपस्या की मूर्त भावनाएं उसकी प्रकृति-प्रदत्त विरासत है। प्रेम की दुनिया में जब हिंस्र पशु भी अपना वैर भाव भूल जाते हैं तो बेचारी 'नारी' किस बाग की मूली है ! पुरुष के थोड़े से प्रेम के बदले वह सौगुना प्रेम उसके चरणों पर उड़ेलने को आतुर रहती है। बशर्ते कि पुरुष उसके प्रेम के पाने के पहिले उसे अपना प्रेम प्रदान करने का त्याग करने पर आमादा हो !

'ऐसी नारियों का क्या हो' शीर्षक लेख में गोरों द्वारा सताई हुई बाला के लिये बहिन अनामिका पूछती है — 'क्या उन शिक्षित बहन का अकेले रहना उचित था ? 'मैं इसके लिए पड़ोस का ही उदाहरण रखती हूं —

'मेरे पड़ोस में ही मिस···रहती हैं। समाज की नजरों में अभागिनी ईश्वरीय कोप की शिकार। घर से गरीब। पांच छः महीने हुए हैजे में माता-पिता-भाई सभी चल बसे। सिर्फ वही एक बची हैं ! जीवन की नैया को जैसे-तैसे खेते हुये गरीबी की गोद में पली बाला आज खून के आंसू रोती हैं··· उसे तो अकेले ही रहना है ! इस बाला के लिये समाज क्या फतवा देता है ? क्या वे भी अपने आप को बलिदान करदे या स्वावलंबी बन अपनी जीवन नैया को साहसपूर्वक खेती रहे ? बजाय उस समाज के जिसमें उसके खून के आंसुओं की बारिश की सादगी पर बरबश रीझ जाने वाले 'जीव' मौजूद हों !

बहिन अनामिका आगे चलकर स्त्री रक्षा का एक हल और पेश करती हैं कि — 'स्त्रियों को पुरुषों की अपेक्षा अधिक त्याग करना होगा, तभी उनकी रक्षा होगी' मैं तो चाहती हूं कि आदिकाल से भारतीय नारी त्याग की प्रतिमूर्ति है, प्रतीक है, नारी के रोम रोम से निकलती हुई त्याग की प्रतिध्वनि क्या बहरे समाज को नहीं सुनाई देती ? प्राचीन काल की सती प्रथा नारी के त्याग की चरम सीम है। वर्तमान में भी पति के देहान्त के बाद प्रियतम की स्मृति में अपने आप को तिल-तिल कर मिटा डालना ही तो उसने सीखा है ! पुरुष का त्याग उसके मुकाबले में नगण्य है ! बताइये, पुरुष समाज नारी से और कौन से त्याग की अपेक्षा रखता है ?

ब्रिटेन के महिला सैन्य दल की स्त्रियां अब टेलिफोन विभाग का काम सीख रही हैं।

कुछ अनुभूत सत्य

★ संसार की सबसे प्रबलतम शक्ति है, स्त्री के आंसू।

★ जो पुरुष स्त्री पर कब्जा रख सकता है, वह सारे राष्ट्र पर भी कब्जा रख सकता है।

★ स्त्री एक अति मनोहर तंतु वाद्य है। अनुराग उस वाद्य के बजाने का धनुष है और पुरुष उस वाद्य का कलाकार है।

★ पुरुष दिमाग से अधिक कार्य लेते हैं और स्त्रियां हृदय से।

★ स्त्री अपने आप से जितनी सच्ची रहती है, उससे अधिक वह अपने पति से सच्ची रहती है और यह सत्य मालूम न होने के कारण ही पुरुष बेईमानी का दोष उसे देते हैं।

★ स्त्रियां निसर्गतः लहरी और पागल सी होती हैं, किन्तु परिस्थिति उन्हें विनयशील बनाती है।

★ जिस पुरुष की स्त्री कभी किच-किच नहीं करती, उसके लिये पृथ्वी स्वर्ग के समान है।

★ नखरेबाज और चंचल स्त्री से यदि आप आदर चाहते हैं तो उससे आदर पूर्वक वर्ताव छोड़ दें।

★ स्त्री की परख — उसके हाव भाव से अवलोकन से, वर्ताव से हास्य से और कृति से होती है।

★ यदि कोई ऐसा समझता है कि मैं किसी स्त्री का निर्णय और निश्चय शक्ति से या युक्ति से बदल सकता हूं तो वह मूर्ख है।

★ उच्छृंखल स्त्रियां अपनी प्रदर्शन शीलता के कारण सुख से वंचित होती हैं और अभिमान के कारण पति के प्रेम से परे रहती हैं।

(मराठी से)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समाचार-चित्रावलि

एंग्लो अमेरिका ऋण समझौते पर हस्ताक्षर करते हुए (बायें से दांये) — लार्ड कीनिज, लार्ड हैलिफैक्स, मि० बायरन्स, मि० विन्सन

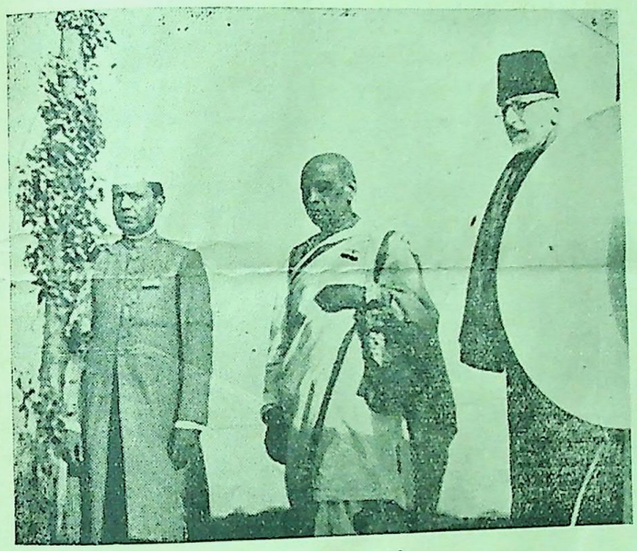

मौलाना आजाद, सरदार पटेल और श्री आसफअली स्वाधीनता की प्रतिज्ञा लेते हुए।

हाजी मौलाबख्श

सिन्ध में आपने ४ मुस्लिम सीटें प्राप्त की हैं। सम्भवतः आप कांग्रेस के साथ रहेंगे।

केन्द्रीय असेम्बली में कांग्रेसी सदस्यों का श्री मावलंकर के सभापति चुने जाने के बाद लिया गया ग्रुप फोटो

[संग्रहकर्ता — श्री जयन्त]

लोकवाणी

[अप्टन सिंक्लेयर]

— पचास मील की चाल से चलने वाला पीछे मुड़कर नहीं देखता। तुम्हारा वास्ता सामने आने वाली चीजों से है, जो बीत गया, सो बीत गया — या मैं कहूं कि जो बीत गये वह बीत गये।

— कार्य, शब्दों से अधिक ऊंची आवाज में बोलता है।

— यदि युवकों का यह कर्तव्य समझ लिया जाय कि वह अपने को बूढ़ों के लिए बलिदान करते जांय तो संसार में उन्नति कैसे हो?

— तुमको यह बात भयानक लगती है, क्योंकि इसका अर्थ है संघर्ष और तुम वह नहीं चाहते — तुम क्यों चाहो? इस काम के लिये वही लोग उपयुक्त हैं जिनके हृदय लोहे के बने हैं — वह लोग जो दबाये और कुचले गये हैं, जेलों में डाल दिये गये हैं और भूखे रखे गये हैं। इसी प्रकार वर्ग क्रांति को बुलावा देता है, वह हमें जेलों में डालता है, हमें सड़ने देता है। हम वहां पड़े काले-काले विचारों की दुनिया में रहते हैं। सभी बोलशेविकों की शिक्षा जेलों में हुई है और अब हमारे मालिक भी अमरीका में यही दोहरा रहे हैं।

— एक ऐसी स्त्री को खोजो जिसको तुम सचमुच प्यार करते हो, और जो तुम्हारे कार्य में सहायक बनना चाहती हो; तब तुम उसके साथ रह सकते हो। तुम्हें किसी पादरी से विवाह की आज्ञा प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं।

— 'आंचल' से

× × ×

[माइकल शोलोखोव]

— हमारे पूर्वजों ने इसके लिये अपना खून बहाया है; और यही कारण है कि हमारी जमीन की मिट्टी काली है।

(नोट— काली मिट्टी सबसे बढ़िया समझी जाती है — संग्रह कर्ता)

— एक प्रतिक्रियावादी कभी भी किनारे नहीं पहुंचता, वह गोबर के उपले की तरह थपेड़े खाता रहता है।

— दस्ताने पहन कर क्रांति नहीं की जा सकती।

('डौन फ्लोज होम टू दी सी' उपन्यास से।)

× × ×

[सीता चौधरी]

— जीवन भार को अश्रुओं की जिस माला में गूंथ रही हूं वह आसानी से नहीं टूटेगी।

— 'नाइट करेंट' से

[नाओमी जैकब]

— हास्य बहुत लाभदायक औषधि है।

— जो जितना अधिक प्रेम करता है, उसके पास उतने ही कम अस्त्र होते हैं।

— 'कैप आफ यूथ' से

\+ \+ \+

[कार्ल सैंड बर्ग]

— यदि परिस्थितियें बन चुकी हैं तो कोई उजड्ड आदमी या मूर्खाचार्य भी युद्ध आरम्भ कर सकता है।

— युद्ध मन्त्रि-मण्डल कभी लड़ा नहीं करता।

— धनवानों का युद्ध गरीबों की लड़ाई होता है।

— 'स्टार्म ओवर दी लैंड' से

जौन गाल्जवर्दी]

प्रेम शीशी के कमरे में पैदा किया गया गुलाब नहीं है, बल्कि जंगली फूल है, जो ऊषा की किरण से जन्म पाया है; जंगली बीज से फूटा है, जंगली हवा के झोंके से सड़क किनारे खिला है। वह एक जंगली पौधा है, जो कि यदि किसी वाटिका में उग आता है तो पुष्प कहलाता है; और यदि वह उस वाटिका से बाहर उत्पन्न होता है तो हम से वह झंखाड़ कहलाता है; उसे चाहे फूल कहो या झंखाड़, उसका रंग और उसकी गंध जंगली ही होते हैं!

— यदि छटा की ही सुन्दरता का माप रखा गया है तो गुण और चैतन्यता को गोली मार देनी चाहिये।

— 'मैन आफ प्रायर्टी' से

[विलियम गौन्ड के विचार]

कविता, अपनी चरम सीमा पर, सदा ही अनंत के साथ सम्बन्धित रहती है। यह गद्य का ही काम है कि घटनाओं का प्रदर्शन करे और आचार-व्यवहार को चित्रित करे। उपन्यास, नाटक और कहानी लिखने वाला इसी काम को क्रियात्मक रूप देता है।

— कला को अपने से अन्य किसी महान साधना का साधन अवश्य बनना पड़ता है।

— वह इतनी सुन्दर थी, जितनी कि एक स्वर्ण पर्वत की, स्फटिक सागर पर पड़ती परछाई।

— कला के कार्य में सदा परमानन्द प्राप्त होता है।

— कला मेहनत की खुशी का चित्र है।

— 'प्रीराफेलाइट ड्रीम' से

हिन्दी-हिन्दुस्तानी

हिन्दी और हिन्दुस्तानी प्रश्न का हल करने के लिए राष्ट्रीय दृष्टिकोण से विचार की आवश्यकता है, न कि संकुचित साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से।'

हिन्दी शब्द हमें अमीर खुसरो से मिला है। कुरान मजीद के अनुवादक द्वारा इसका उपयोग किया जाता था और प्रत्येक दृष्टि से यह हिन्दुओं को मुसलमानों का एक [illegible] है। मुसलमानों को इस शब्द के उपयोग पर किसी प्रकार की भावुक आपत्ति नहीं करनी चाहिये। उर्दू दां लोगों ने मुगलों के शासन-काल में एक व्यवहारिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए इसे एक सामान्य ज्ञान बनाया और हिन्दी में फारसी और अरबी के शब्द डाल दिये। उर्दू हिन्दी की पुत्री है। वास्तव में इन दोनों को दो भिन्न भाषायें ख्याल करना भूल है – वे एक ही चीज के दो रूप हैं।

यद्यपि मैं गांधीजी का बहुत प्रेमी तथा अनुयायी भी हूं, किन्तु भाषा के मामले पर उनके विचार मेरे से मेल नहीं खाते। मैं केवल उसी भाषा को राष्ट्र-भाषा मानता हूं, जिसकी जड़ें जनता के हृदयों तक की गहरायी में जमी हुयी हों। राजनीतिक प्रयोजन के लिये किसी भाषा को नहीं थोपा जा सकता। साम्प्रदायिक मेल के लिए हिन्दी साहित्य को समाप्त कर देने का निश्चय किया गया, जो सचमुच हमारे लिए बहुत बड़ी हानि थी।

हिन्दी ही इंगलिश का स्थान ले सकती है। बंगाल, गुजरात, पंजाब और महाराष्ट्र की जनता हिन्दी से सहज ही मेल पैदा कर सकती है। वह गालिब की भाषा को नहीं समझ सकती।

— पुरुषोत्तमदास टन्डन

'कल के राष्ट्रीय जीवन में कोई भारतीय तबतक अपना कोई स्थान न बना सकेगा, जबतक वह राष्ट्र-भाषा न जान ले। राष्ट्र को शक्तिशाली बनाने का केवल एक ही उपाय है — देश भर में हम राष्ट्र-भाषा को अपना माध्यम बना लें। यह कथन सर्वथा असत्य है कि अंग्रेजों के आने से पहिले इस देश में कोई राष्ट्रीय माध्यम नहीं था। भारत में सदैव उसकी संस्कृति की एक राष्ट्र-भाषा संस्कृत रही है तथा सभी समयों में आपसी बोलचाल की अन्य भाषा भी रही हैं। किसी समय यह अपभ्रंश कहलाती थी। अब यह हिन्दी-हिन्दुस्तानी है। हिन्दी में देश में प्रचलित सामान्य शब्दों का बहुत बड़ा भंडार है। नागरी लिपि को देशकी ६५ प्रतिशत पढ़ी-लिखी जनता समझती है। यदि कोई अतिरिक्त ज्ञान के रूप में उर्दू अथवा फारसी लिपि को सीखना चाहे, तब वह ऐसा कर सकता है। किन्तु राष्ट्र का माध्यम एक मात्र नागरी हिन्दी हो सकती है, जिसमें संस्कृत का प्राधान्य है। एकता और संस्कृत दोनों के धरातल के लिये यह एक आधारभूत तथ्य है।

— श्री कन्हैयालाल मुन्शी

हिन्दुस्तान का प्रश्न पहले

हिन्दुस्तान आज इतनी तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है जितना कि वह पहले कभी नहीं बढ़ा। हम ब्रिटेनवासियों को यह चीज महसूस कर लेनी चाहिये कि देर करने का अब समय नहीं। हिन्दुस्तान का प्रश्न सबसे ऊपर रखा जाना चाहिये।

— श्री डेवीज

गांधी विचार-माला

कहा जाता है द्रौपदी को नग्न करने की चेष्टा की गई थी, परन्तु भारत को नंगा कर दिया गया है और वह अपने लज्जा ढकने के लिये प्रार्थना कर रहा है। वह प्रार्थना कर रहा है कि विदेशी शोषण के अन्तर्गत उसकी गुलामी की लज्जा उसे स्वाधीनता प्रदान करके ढक दी जाय।

"यदि ईश्वर ने हमारे बीच फिर अवतार लिया तो हम हिन्दुस्तानी समझ सकेंगे तथा उसके भाषण का अनुवाद तामिल और तेलगू में करने के लिए नहीं कहेंगे।

— गांधीजी मद्रास में

काश्मीर रियासत

जिस काश्मीर का सतरहवां भाग सोना चांदी, कोयला, पेट्रोलियम, हीरा आदि २३ तरह के खनिज से भरपूर है, जहां रेशम, ऊन, चांदी और लकड़ी की चित्रकारी के बेमिसाल काम होते हैं और जिसकी भूमि बादाम, फलों और फूलों से लदी हुई है, वहां के नब्बे प्रतिशत लोग कंगाल और पीड़ित हैं। काश्मीर की सन् १९३८ में आबादी ३६, ४६, २४३ थी इनमें मुसलमान २८, १३, ६३६ हिन्दू ७, ३६, २२२ सिक्ख ५६, ६६२ और अन्य ४१,००० थे।

राज्य की आय रु० २,४७, २७,००० और खर्च २,४५, ७७,००० रुपये बताया गया है। आयपर खर्च का रुपये प्रति सैकड़ा, मदवार औसत इस प्रकार है:—

राजा और उनका परिवार	१६	प्रति सैकड़ा
फौज	१०	"
शिक्षा	१०	"
चिकित्सा	३॥	"
कृषि	६	"

— रामेश्वरदयाल तोतला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

★ वीर ★

अर्जुन

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार ता० ४ फरवरी सन् १९४६ ई०

भीषण अन्न-संकट

अभी लोग बंगाल के दुर्भिक्ष और उसके भयंकार विनाश की करुणाजनक बातों को भूले नहीं हैं कि नये दुर्भिक्ष की अफवाहें कानों में पड़ने लगी हैं। अनेक स्थानों से लगातार अन्न-संकट के समाचार भी आने लगे हैं। मेवाड़ में लोगों के घास व पशुओं की लाशों पर गुजारा करने की खबरें भी लोग पढ़ रहे हैं। कांग्रेस कार्यसमिति के सदस्य डा० प्रफुल्लचन्द्र घोष ने अनेक जिलों का दौरा करने के बाद बताया है कि मार्च मास से तामलुक डिवीजन के अधिकांश भाग तथा मिदनापुर जिले में भीषण अकाल प्रारम्भ हो जायगा। इस वर्ष उक्त क्षेत्रों में फसल का छठा भाग भी उत्पन्न नहीं हुआ। युक्तप्रांत में भी स्थिति अत्यन्त विकट है। सरकार साधारण स्थिति की कमी चिन्ता नहीं करती और जब तक विपत्ति बिल्कुल सिर पर नहीं आ जाती, वह हाथ पैर नहीं हिलाती। लेकिन पिछले दिनों वह भी चिंतित हो इधर उधर दौड़ धूप करने लगी है। यही इस बात का प्रमाण है कि स्थिति कितनी विषम है। युक्तप्रान्त में इस मास के प्रारम्भ से राशन नगरों में एक पाव की जगह २ छटांक गेहूं राशन कर दिया गया है। दो छटांक मिश्रित आटा भी मिला करेगा। दिल्ली में भी राशन में कमी किये जाने की सम्भावना है। दक्षिण पश्चिम भारत में समुद्री तूफानों और सूखा पड़ने के कारण खाद्य वस्तुओं की और भी अधिक कमी हो गई है। पंजाब में भी इस वर्ष वर्षा नहीं हुई। चने के तो आज दर्शन दुर्लभ हो गये हैं। अनाज के दाम भी आज लगातार बढ़ रहे हैं। युद्ध समाप्त हो गया है, आने जाने के साधन और मार्ग खुल गये हैं, तथापि भारत में अनाज नहीं आ रहा है! इसका कारण यह बताया गया है कि विश्व भर में अन्न की कमी हो गई है।

युक्तप्रान्तीय गवर्नर के सप्लाई विभाग के परामर्शदाता श्री पैडले ने एक वक्तव्य में बताया है कि समस्त संसार में अन्न की कमी है। इंग्लैण्ड में भी राशन की मात्रा कम करने का प्रस्ताव विचाराधीन है। भारत सरकार ने कुछ समय पूर्व अपने खाद्य सैक्रेटरी सर राबर्ट हचिंस को विमान से वाशिंगटन इसलिए भेजा था कि वह वहां मित्र-राष्ट्रीय अन्न-भंडार से भारत के लिये सहायता प्राप्त कर सकें, लेकिन वहां से वे कोरे हाथ वापस आ गये हैं। अब श्री ज्वालाप्रसाद श्रीवास्तव के नेतृत्व में एक और डेपुटेशन लन्दन और वाशिंगटन जा रहा है। यह डेपुटेशन वहां जाकर फिर भारत के लिये अन्न प्राप्त करने की कोशिश करेगा। कह नहीं सकते कि इस प्रयत्न में कहां तक सफलता होगी।

युद्ध समाप्त हो गया है, पिछली फसलें यूरोप के अनेक राष्ट्रों में उत्पन्न नहीं हो सकीं, भारत में इस वर्ष दुर्दशा है, लेकिन यह कहकर भारत सरकार हाथ पर हाथ धरकर बैठे तो नहीं रह सकती। यदि विदेशों से अन्न मिल जावे, तो ठीक है; अन्यथा इस संबन्ध में उसे और अधिक सतर्क होने की आवश्यकता है। इसके लिये हमें पिछले अनुभवों से भी लाभ उठाना चाहिए।

इस सम्बन्ध में सबसे प्रथम यह निश्चय करना चाहिये कि आज से भारत से एक दाना भी विदेशों को नहीं जायगा। गत वर्षों में सरकार इस ओर बहुत समय तक उदासीन रही। आज तो यह निश्चय अभी से करने की आवश्यकता है। दूसरा कदम इस ओर यह उठाना चाहिये कि जितने विदेशी सैनिक आज भारत में मौजूद हैं, उन्हें तत्काल ही — इन्हीं दो एक सप्ताहों में भारत से रवाना कर देना चाहिए। अन्न-संकट के लक्षण दीख रहे हैं, उन्हें उसी तरह क्षुद्र नहीं समझना चाहिए। सरकार जिस विजय दिवस की योजना बना रही है, उस दिवस तक भी ब्रिटिश और अमरीकी सेनाओं को रोकने की आवश्यकता नहीं है। पिछले दिनों एक समाचार प्रकाशित हुआ था कि जून तक सब अमरीकन सेनाएं भारत से रवाना हो जायेंगी। इतने समय तक भी उन्हें क्यों रोका जाय? कोशिश यह होनी चाहिये कि एक एक अमरीकन सैनिक को इसी मास में वापस भेज देना चाहिए। एक अमेरिकन सैनिक का भोजन साधारण भारतीय से अधिक होता है। इसी तरह ब्रिटिश सैनिकों को जहाजों में खटमल होने के नाम पर, जैसा कि पिछले दिनों एक समाचार में बताया गया था, भारत में अधिक समय तक नहीं रहने देना चाहिये। भारत की अपनी गोरी सेनाओं को भी जल्दी से जल्दी दो तीन मास की छुट्टी देकर विलायत भेज देना चाहिये। इस बात पर हम विशेष बल इसलिये देना चाहते हैं कि एक एक विदेशी सैनिक को मिलने वाले भोजन से दो दो भारतीयों की प्राण रक्षा अच्छी तरह हो सकती है।

पिछले अनुभव में एक बात और भी आयी थी। बङ्गाल दुर्भिक्ष में ३०-३५ लाख आदमियों के काल कवलित हो जाने के ८-१० मास बाद बंगाल के विभिन्न विभागों से हजारों टन की तादाद में सरकारी गोदामों में सड़े हुए अनाज को फिकवाने या नीलामी में बेचने के समाचार प्राप्त हुए थे। जब सरकार व्यापारियों पर चोर बाजार में अन्न छिपा कर नफाखोरी का इलजाम लगा रही थी, तब वह स्वयं लाखों टन अनाज अपने भण्डारों में जमा किये हुए थी। इसे उसने हवा भी न लगने दी। लाखों आदमियों के मरने के बाद यह अन्न फेंक देना पड़ा, क्योंकि यह पशुओं के खाने लायक भी न रहा था। इस बार ऐसी गलती न होनी चाहिए और सरकार को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए कि वह किसी तरह भी अनाज का एक दाना भी व्यर्थ में न रोक रखेगी। इन बातों पर ध्यान देकर हम कुछ प्रयत्न अन्न-संकट के निवारण की दिशा में कर सकेंगे।

नैतिक दुराचार का खतरा

अ० भा० महिला-सम्मेलन की सभानेत्री श्रीमती हंसा मेहता ने कुछ दिन पूर्व भारत सरकार द्वारा संगठित महिला सैन्य-दल पर अत्यन्त गम्भीर आरोप लगाए थे। उन्होंने कहा था कि 'एक सवाल जो सबको चिन्तित कर देता है, वह है महायुद्ध के समय स्थापित होने वाला महिला सहायक सैन्यदल। इस दल में बाज औरतें अवैध बच्चे पैदा कर चुकी हैं और इनमें हर पांच औरतों में से एक बुरी बीमारी का शिकार बन चुकी है।' राजकुमारी अमृतकौर ने भी इस दल के बारे में ऐसे ही गम्भीर आरोप किये हैं। वे कहती हैं कि इस दल की स्त्रियों में भारी दुराचार की अफवाहें बड़े जोरों पर और लगातार जारी हैं। विभिन्न सूत्रों से ऐसी बातें सामने आ रही हैं।' इन महिलाओं पर प्रतिवर्ष दो करोड़ रु० तो केवल वेतनों पर व्यय होता है। सरकार ने इस दल को भंग करने का निश्चय किया है। अब इस दल की स्त्रियों को किस किस स्थान पर नियुक्त किया जायगा अथवा उन्हें बिलकुल बरखास्त कर दिया जायगा, यह हम नहीं जानते। लेकिन यह निश्चित है कि इनमें से वे स्त्रियां, जो चरित्र संयम के सम्बन्ध में मर्यादा का उल्लंघन कर चुकी हैं, समाज में आकर भी अनैतिकता का प्रचार न कर सकें, इसकी कोई व्यवस्था तो अवश्य होनी चाहिए। केवल इसी दल का ही प्रश्न नहीं, अन्य भी अनेक सरकारी महकमों में बड़े ऊंचे वेतन देकर स्त्रियों को आकृष्ट किया गया है। वहां उनकी स्वच्छन्दता और जीवन धरातल ऊंचा होजाने के साथ-साथ संयम की मर्यादा के पालन की ओर शिथिलता भी बढ़ी है। इसका प्रभाव साधारण भारतीय समाज और उसके चारित्रिक धरातल पर पड़े बिना न रहेगा। समाज के नेता क्या इस गंभीर प्रश्न पर विचार करेंगे?

वायसराय का नया आश्वासन

वायसराय ने असेम्बली में अपना भाषण देते हुए कोई महत्वपूर्ण घोषणा नहीं की। उन्होंने केवल अपनी पुरानी घोषणा को दुहराया मात्र है कि वे भारत के राजनैतिक दलों के सहयोग से अपनी शासन-परिषद का फिर से संगठन करने का प्रयत्न करेंगे। अगर इस में वे सफल हो गये, तो असेम्बली के आगामी अधिवेशन से पूर्व ही इस कौंसिल का संगठन कर लेंगे और वे आगामी अधिवेशन में अनेक महत्व-पूर्ण रचनात्मक प्रस्ताव भी पेश कर सकेंगे। उन्होंने यह आशा भी प्रकट की है कि 'उस समय तक विशेषाधिकारों के प्रयोग से, जिन का प्रयोग उनकी इच्छा के अनुकूल नहीं है, छुट्टी मिल जायगी। जहां तक इस भावना का सम्बन्ध है, हम उसका स्वागत करते हैं, लेकिन उसपर भारत-सरकार कहां तक अमल करती है, यह देख कर हम किसी तरह संतोष प्रकट नहीं कर सकते। नई शासन समिति के संगठन के अभाव में भी तो वे अनेक प्रश्नों पर असेम्बली के निर्णय तक प्रतीक्षा कर सकते थे। लेकिन भारतीय मत को सरकार ने कभी महत्व ही नहीं दिया। ब्रैटनवुड समझौते में सरकार असेम्बली का मत लेकर भी सम्मिलित हो सकती थी। इसी तरह वायसराय की नई कार्य समिति की चर्चा भी सारहीन है। शिमला में भी वायसराय ने प्रयत्न किया था, सिर्फ मि० जिन्ना के इन्कार के बाद वह असफल होगया। अब भी मि० जिन्ना ने यह स्पष्ट कर दिया है कि वे वायसराय की इस प्रस्तावित कार्य-समिति में सम्मिलित नहीं होंगे। सरकार को पहले यह स्पष्ट करना चाहिये कि वह किसी प्रकार की साम्प्रदायिकता को सहन नहीं करेगी, लेकिन सरकार ही तो स्वयं इसको प्रोत्साहन देती है और जब तक उसकी यह नीति जारी है, तब तक इस प्रकार की बातें केवल कोरा आश्वासन मात्र हैं।

केवल आडम्बर

संयुक्त राष्ट्रीय सुरक्षा कौंसिल ने रूस और ईरान के विवादास्पद प्रश्न पर स्वयं कोई निर्णय न देकर यह स्पष्ट कर दिया कि वह भी पिछले निर्जीव राष्ट्रसंघ की ही पुनरावृत्तिमात्र है। इस अधिवेशन में सबसे अधिक महत्वपूर्ण मामला कौंसिल के सामने यही था और उस पर स्वयं कोई फैसला न करके कौंसिल ने अपनी नपुंसकता सिद्ध करदी है। रूस ईरान के

मामले में हस्तक्षेप करके ज्यादती कर रहा था, इसलिए ईरानी प्रतिनिधियों का हस्तक्षेप की मांग करना सर्वथा उचित था। लेकिन कौंसिल ने न केवल उस प्रश्न पर स्वयं कोई निर्णय देने से इन्कार कर दिया, बल्कि रूस व ईरान की आपसी बातचीत पर कोई नियंत्रण रखने का प्रस्ताव भी अस्वीकृत कर दिया। दोनों राष्ट्र आपस में बात करलें, यह टाल-मटोलो फैसला पुराने राष्ट्र संघ की ही याद दिलाता है, जब कि बलवान राष्ट्र के विरुद्ध दुर्बल राष्ट्र की कभी अपील नहीं सुनी जाती थी। अगर यही नीति कौंसिल की रहनी है तो फिर इस सुरक्षा कौंसिल के आडम्बरपूर्ण और सफेद हाथी के से खर्चीले आयोजन की आवश्यकता ही नहीं है।

मातृभाषा और हम

पिछले दिनों म० गांधी मातृ-भाषा के समर्थन और अंग्रेजी के विरोध में जो विचार व्यक्त कर रहे हैं, वे बहुत महत्वपूर्ण हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वे इस प्रश्न को भी हरिजन या ग्रामोद्योग की तरह से अत्यन्त महत्वपूर्ण बना रहे हैं। उन्होंने कस्तूरबा वाचनालय का शिलान्यास करने से इसलिए इन्कार कर दिया कि उस पर लेख अंग्रेजी भाषा में था। अपनी भाषा के प्रति इतना उत्कट प्रेम हम लोगों में कहां है? हमारे अपने कांग्रेसी नेताओं और कांग्रेस कमेटियों के दफ्तरों में अंग्रेजी भरी हुई है। वे हिन्दी अखबारों तक को अंग्रेजी में सूचनाएं देती हैं। हम सब सार्वजनिक विशेषकर राष्ट्रीय और सामाजिक संस्थाओं से यह अनुरोध करते हैं कि वे हिन्दी को अपना मुख्य कार्यक्रम बना लें, अपने साइन बोर्ड और अपने दफ्तरी कागज सब को शीघ्र से शीघ्र हिन्दी या हिन्दुस्तानी में करलें। इस पर होने वाले व्यय और असुविधा के मुकाबले में अंग्रेजी की दासता से मुक्ति बहुत अधिक महत्वपूर्ण है।

जोधपुर में

जोधपुर के कुछ समाचारों के अनुसार श्री जयनारायण व्यास और श्री मथुरादास माथुर आदि स्थानीय नेताओं को धारासभाओं के चुनाव में खड़ा होने या मत देने के अधिकारों से वंचित कर दिया गया है, उनके टेलीफोन कनेक्शन काट डाले गये हैं और 'राजस्थानी' पत्र के लिये कागज देने से इन्कार कर दिया गया है। अभी कुछ दिन पूर्व नरेन्द्रमंडल के चांसलर नवाब भोपाल ने नई सुधार नीति को अपनाने की घोषणा की थी। जोधपुर के अन्य समाचार बताते हैं कि वह घोषणा अभी तक शाब्दिक ही है, राजा उसे गंभीरता से अमल में लाने को तैयार नहीं। राजनैतिक अभियोगों में कैद की सजा पाने पर मताधिकार से वंचित करना कोई अर्थ नहीं रखता। ब्रिटिश भारत तक में ऐसा नहीं होता। इसी तरह टेलीफोन का कनक्शन काट देना क्षुद्र-हृदयता का सूचक है। जोधपुर के महाराजा क्या इन प्रश्नों की ओर स्वयं ध्यान देंगे?

सिरोही नरेश की दुर्गति

सिरोही के राजा पिछले दिनों मर गये। वे अपने जीवन काल में समस्त प्रजा के लिए एक समस्या थे, प्रजा के सुख दुःख की उन्हें चिंता न थी। मरने के बाद भी वे प्रजा के और अपने संबंधियों के लिए परेशानी की हालतें पैदा कर गये। उच्च राजपूत वंश में जन्म लेकर एक हिन्दू राज्य के सर्वोच्च अधिकारी होते हुए राजा की लाश दिल्ली की कबर में दफनाई जाय, यह सचमुच दुःख का विषय है। नरेन्द्र-मण्डल के सदस्यों में किसी तरह का भ्रातृभाव हो, तो वे इस प्रश्न को हाथ में लेकर अपने पद की रक्षा कर सकते हैं। उनकी लाश सिरोही तक नहीं जाने दी गई। एक ओर यह शोचनीय स्थिति जहां दुःखदायक है, वहां रियासती राजाओं और प्रजा के लिए शिक्षाप्रद है। प्रजा के हित से गाफिल राजा कभी अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा नहीं कर सकते और वे प्रजा में अपने प्रति प्रेम और विश्वास का संपादन नहीं कर सकते। यदि किसी लोकप्रिय राजा के साथ ऐसी घटना होती, तो समस्त राज्य में प्रभावशाली आन्दोलन फैल जाता और प्रजा को अपने महाराज के अन्तिम दर्शन करने का अवश्य सौभाग्य प्राप्त होता! लेकिन सिरोही नरेश का अपना समस्त जीवन और दीर्घकाल तक राज्य उन्हें जनता में प्रिय नहीं बना सका। क्या राजा और प्रजा इससे शिक्षा लेगी?

फैशन परस्तों से

"एक प्रस्तर प्रतिमा को चमकाने के लिये बाह्य लेपों और पालिश की आवश्यकता होती है, मनुष्य को नहीं, जिन्हें प्रकृति ने स्वयं ही सुन्दरता प्रदान की है।" इन शब्दों में गांधीजी ने भारतीय महिलाओं से अपील की है कि वे क्रीम, लिपस्टिक, पाउडर आदि का उपयोग न किया करें। आजकल वस्तुतः शृंगार सामग्री पर प्रतिवर्ष भारत में कई करोड़ रुपया व्यय हो जाता है। यह किसी समय उपयोगी हो सकता है, लेकिन आज जब कि जीवनोपयोगी वस्तुओं का भी अभाव है, तब इन वस्तुओं पर यथासम्भव कम व्यय करना ही चाहिये। लेकिन वे शिक्षित स्त्रियां भी, जो राष्ट्रीय और देशभक्त होने का दावा करती हैं, शृंगार सामग्री का अधिक उपयोग करती हैं। क्या वे इधर ध्यान देंगी?

केन्द्रीय असेम्बली

केन्द्रीय असेम्बली के अध्यक्ष श्री मावलंकर के चुन लिये जाने के बाद सोमवार को वायसराय लार्ड वावेल का भाषण हुआ। इस भाषण में नवीनता कुछ भी न थी। केवल मात्र नई कौन्सिल के बनाने के सम्बन्ध में निर्देश किया गया था। इस का भी मि० जिन्ना ने अपनी आदत के अनुसार विरोध कर दिया है। वायसराय के भाषण में कांग्रेस पार्टी अनुपस्थित रही।

इस सप्ताह ब्रेटेनवुड समझौते तथा भारत की खाद्य-समस्या पर विचार किया गया। ब्रेटेनवुड समझौते में भारत के सम्मिलित होने के प्रश्न पर विचार करने तथा सभा को रिपोर्ट देने के लिये ६ सदस्यों की समिति नियुक्त करने का प्रस्ताव केन्द्रीय असेम्बली में बिना मत-विभाजन के पास हो गया। प्रस्तावके दूसरे अंश पर, जिस में असेम्बली से बिना सलाह लिये इस समझौते में भारत सम्मिलित घोषित करने पर भारत सरकार की निन्दा की गई थी, सरकार के विरुद्ध प्रस्ताव पास कर दिया।

खाद्य समस्या पर कांग्रेसी सदस्य श्री मिनु मसानी ने बोलते हुए कहा कि 'यदि सरकार खाद्य-सामग्री का प्रबन्ध नहीं कर सकती, तो स्तीफा दे दे।' लीग प्रवक्ता ने भी इस पर सरकार की आलोचना की। खाद्य-सेक्रेटरी श्री वी० आर० सेन ने खाद्य-समस्या की विकटता को स्वीकार करते हुए यह कहा कि सरकार सीधे खलिहानों से अनाज ले लेने, उत्पादकों पर कर लगाने, राशनिंग को और अधिक व्यापक बनाने, कीमतों पर पूर्ववत कन्ट्रोल जारी रखने तथा वर्तमान राशन की मात्रा में कमी करने की योजनाएं रखती है।

खाद्य स्थिति के विवाद के बीच में दीवान चमनलाल (कांग्रेस) ने बहादुर गढ़ कैम्प में आ० हि० फौ० बन्दियों से हुए दुर्व्यवहार पर एक स्थगित प्रस्ताव रखा जो 'टाक आऊट' हो गया।

एक अन्य प्रस्ताव द्वारा सरकार की निंदा की गई कि वह इण्डियन सिविल सर्विस तथा इण्डियन पुलिस सर्विस में योरोपियन भरती कर रही है।

हमारी खाद्य समस्या

भारत सरकार खाद्य- के सेक्रेटरी सर राबर्ट हचिंग्स वाशिंगटन इस लिये गये थे कि महायुद्ध विजेता राष्ट्रों की 'संयुक्त खाद्य समिति' से भारत के लिये दस लाख टन चावल और पांच लाख टन गेहूं प्राप्त कर सकें। परन्तु उन्हें कहा गया कि प्रथम तो आप की मांग बहुत अधिक है और दूसरा आपको अपनी मांग ब्रिटेन के प्रतिनिधि द्वारा करनी चाहिये। उन्हें यह भी सुझाया गया कि आप गेहूं और चावल मिला कर साढ़े सात लाख टन से अधिक की मांग न करें। आप यदि पौने चार लाख टन मागेंगे तो शायद आपको तीन लाख टन मिल सकेंगे। इस इनकारी के बाद खाद्य सदस्य सर ज्वालाप्रसाद श्रीवास्तव एक और डेपूटेशन अमेरिका और ब्रिटेन ले जा कर अपनी भाग्य-परीक्षा करना चाहते हैं। स्थिति यह है कि भारत में गेहूं, चना की फसल अनावृष्टि के कारण बिगड़ गई है। कनाडा में इस वर्ष गेहूं की उत्पत्ति गत वर्ष की अपेक्षा २७ प्रतिशत कम हुई है। यूरोप के युद्ध विनष्ट देश भूखे मर रहे हैं, उत्तरी चीन में अन्न संकट फैल रहा है।

आसाम और सिन्ध

आसाम और सिन्ध में चुनाव समाप्त हो गये। आसाम में कांग्रेस को १०८ सीटों में से ६० सीट प्राप्त हो गई हैं। इस लिये वहां कांग्रेस मन्त्रीमण्डल बनने की सम्भावना है। इसी सम्बन्ध में मौ० आजाद ५ या ६ फरवरी को आसाम पहुंच रहे हैं। आसाम के अवतक के प्रधान मन्त्री सर मोहम्मद सादुल्ला सम्भवतः ३ फरवरी को अपना त्याग-पत्र दे देंगे।

सिन्ध की कुल ६० सीटो में कांग्रेस २२, लीग २७, सैयद-समूह ४, मौलाबख्श-समूह ४, यूरोपियन ३ प्राप्त कर चुके हैं। मौलाबख्श समूह कांग्रेस का साथ देगा, ऐसी पूरी आशा है। सैयद ग्रुप जिस ओर झुकाव दिखायेगा, उसी का मन्त्रि मण्डल बन सकेगा। यह अनुमान है कि सैयद समूह लीग का साथ देगा।

रेडियो की उर्दू पक्षपातिनी नीति

हिन्दीभाषियों की मांग है कि रेडियो पर हिन्दीभाषियों के लिये कुछ पुरोगम होने चाहियें। परन्तु रेडियो अधिकारी जानबूझ कर हमेशा उसे उर्दू के साथ उलझा देते हैं। इसी नीति के कारण सर अकबर हैदरी ने अ० भा० रेडियो की नीति पर रेडियो-समिति के

[शेष पृष्ठ २० पर]

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

भारतीय धारासभा और उसके अभिनेता

मावलङ्कर — बैथल — बोस

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

[१]

केन्द्रीय असेम्बली के सभापति

श्रीयुत मावलङ्कर

२४ जनवरी के सायंकाल नई भारतीय धारासभा ने बन्दरगाह से अपना लंगर खोल दिया और पांच वर्ष की समुद्रयात्रा प्रारम्भ करदी। सभापति के चुनाव के साथ उसकी जीवन-यात्रा शुरू हो गई। आइये, उसे समाचारपत्रों की गैलरी में बैठ कर देखें कि वह कैसी है, उसके मल्लाह कैसे हैं, और जो सज्जन उसमें सवार हैं, उनकी गतिविधि क्या है?

सभापति

हम सभापति से आरम्भ करते हैं। यों तो प्रत्येक सभा का सभापति उसका प्रधान व्यक्ति और संचालक समझा जाता है, परन्तु केन्द्रीय धारासभा के सभापति का व्यक्तित्व विशेष महत्व रखता है, वह न केवल देश के अधिक व्यापी लोकमत का निशान है, वह भावी शासन विधान के लिये मार्ग का निर्माता भी है। फिर वर्तमान सभापति श्रीयुत गणेश वामनराव मावलंकर तो बड़े विकट समुद्रमन्थन का परिणाम हैं। उन पर मित्र और शत्रु, दोनों की आंखें हैं। मित्र उनकी सफलता के लिये हार्दिक शुभकामना कर रहे हैं, और विरोधी स्वभावतः छिद्रान्वेषण के लिये आंखों पर सूक्ष्मवीक्षण यंत्र लगा रहे हैं।

देखने में श्री मावलकर उतने महाराष्ट्रीय नहीं मालूम देते, जितने गुजराती। यदि नाम पर महाराष्ट्र की छाप न होती तो सामान्यरूप से देख कर उन्हें गुजराती ही कहा जाता। अब हम कह सकते हैं कि वह गुजरातीनुमा महाराष्ट्रीय हैं। गोरा, लम्बा, नाजुक-सा छरैरा बदन, गम्भीर और समझदार आंखें; विनयपूर्ण शर्मीला सा चेहरा — यह नये सभापति का बाह्यरूप है। शरीर से नीचे तक सफेद खादी — चेहरे के शान्त भाव को और भी अधिक शान्त बना रही है। ऐसे हैं, असेम्बली के सभापति, जो असेम्बली के जीवन में अपूर्व संघर्ष के पश्चात् गद्दी पर विराजमान हुए हैं। जिस समय असेम्बली के हाल में युद्ध का ढोल बज रहा था, कांग्रेस मुस्लिमलीग और सरकार के सेनापति आदेश पर आदेश निकाल रहे थे, छिप लोग अपनी-अपनी सेनाओं की व्यूह रचना में लगे हुए थे, उस समय यदि एक व्यक्ति ऐसा प्रतीत होता था कि वह बिल्कुल शान्त है, और उसे चुनाव के परिणाम से कोई वास्ता नहीं, तो वह गणेश वामनराव मावलकर ही था। जब चुनाव के पश्चात् सभा के नेताओं ने उन्हें बधाई दी, तब सभापति ने जो उत्तर दिया, वह अत्यन्त संक्षिप्त, परन्तु भावपूर्ण था, यही गुण है, जो

असेम्बली में कांग्रेस पार्टी के नेता

श्री शरतचन्द्र बोस

केन्द्रिक धारासभा जैसी सभा के सभापति को सफल बना सकते हैं। जब सभा के गोल भवन में जोश और दुर्भावनाओं का तूफान उमड़ रहा हो, उस समय जो सह्याद्रि की चट्टान की तरह अचल रह सके, वही आदर्श सभापति कहला सकता है। जो कुछ इतने समय में देखा, उसके आधार पर कहा जा सकता है कि श्रीयुत मावलंकर को असेम्बली के सभापतित्व में अपूर्व सफलता होगी।

सरकारी दल का नेता

सभापति के पश्चात् रिवाज के अनुसार हमें सरकारीदल के नेता पर एडवर्ड बैंथाल की चर्चा करनी चाहिये। भारत की अधूरी और अवास्तविक राजनीति में सर बैंथाल को "लीडर आव दि हाउस" (सभा के नेता) कहा जाता है। है तो यह शब्दशास्त्र का उपहास ही, कि एक ऐसा व्यक्ति, जो चुनाव द्वारा सभा में न आकर अपनी नौकरी के कारण सभा में बैठ रहा हो, जिसके हाथ में मुश्किल से सभा के तिहाई मत हों, और जिसके शासन पर सप्ताह में दो तीन की औसत से निन्दा के प्रस्ताव पास हो रहे हों, वह 'लीडर आव दि हाउस' के शानदार पद से सुभूषित किया जाय। परन्तु दासता चीज ही ऐसी है कि उसमें शब्दों का कोई मूल्य नहीं रहता। जो जनता का पूज्यदेव हो, उसे विद्रोही; जिसके अनुयायी नगण्य हों वह नेता; जो गुलामों का गुलाम हो वह महाराजाधिराज और जो किसी प्रश्न पर भी सभा के बहुमत को एकत्र न कर सके; उसे एक पराधीन देश में सभा का नेता कहा जाता है। इसी न्याय के अनुसार सर एडवर्ड बैंथाल भारत की केन्द्रीय धारासभा के नेता हैं।

देखने में आप खासे लम्बे-चौड़े व्यक्ति हैं। चेहरा बहुत रोबीला तो नहीं, पर चतुरतापूर्ण अवश्य है। जब बोलते हैं तो दोनों हाथों से सामने की टेबल को छूते रहते हैं, जिससे प्रतीत होता है कि शायद आपको अपने दफ्तरी डैस्क के छिन जाने का भय लगा हुआ है। मध्यम दर्जे के वक्ता हैं। पहले सुना था कि आप नीति की चालों में बहुत निपुण हैं, परन्तु पहली चाल में आपको ऐसी भद्दी मात मिली है कि यदि आप एक पराधीन देश की धारासभा के नेता न होते तो १९४६ की २४वीं जनवरी के मध्यान्होत्तर १ बजे से पूर्व ही नेता के पद और नौकरी से बर्खास्त हो गये होते, परन्तु अब तो यही कह कर चुप हो जाना पड़ता है कि "आगे-आगे देखिये होता है क्या?" इतनी भविष्यवाणी इस समय भी की जा सकती है कि सर एडवर्ड बैंथल असेम्बली के इतिहास में कोई मीठी स्मृतियां नहीं छोड़ जायेंगे। लार्ड बेवल की लोकप्रियता पर सर एडवर्ड राहु का कार्य करेंगे।

केन्द्रीय असेम्बली के लीडर

श्री बैंथाल

श्री शरच्चन्द्र बसु

यह निश्चय से नहीं कहा जा सकता कि असाधारण पुरुष का उत्तराधिकारी होना सौभाग्य की बात है या दुर्भाग्य की। दोनों पलड़ों का बोझ लगभग बराबर ही है। असाधारण महापुरुष का उत्तराधिकारी प्रायः प्रारम्भिक लाभ प्राप्त कर लेता है। ऊंचा चढ़ने की बहुत सी सीढ़ियां, जो अन्य व्यक्तियों को प्रयत्न करके चढ़नी पड़ती हैं, उसे नहीं चढ़नी पड़तीं। वह अपनी चढ़ाई की यात्रा बहुत ऊंचे से आरम्भ करता है। परन्तु यह लाभ दूर तक उसका साथ नहीं देता, क्योंकि उसे जिस नपने से नापा जाता है, वह असाधारण रूप से बड़ा हो जाता है। उसका बड़प्पन अपने पूर्ववर्ती महापुरुष की ऊंचाई से नापा जाता है। जितनी ऊंचाई पाकर अन्य व्यक्ति बड़ा मान लिया जाता, उतनी ऊंचाई पर पहुंच कर वह छोटा ही रहता है, क्योंकि दर्शक लोग कहते हैं "अजी यह क्या है? इसके पिता जी इससे कहीं बड़े थे।"

श्रीयुत शरच्चन्द्र बसु ने भी एक नरकेसरी का उत्तराधिकार प्राप्त किया है। वह उस गद्दी पर बैठे हैं, जिसे पं० मोतीलाल नेहरू अलंकृत कर चुके हैं। पं० मोतीलालजी ने असेम्बली में विरोधीदल के नेता की शान को बहुत ऊंचा कर दिया था। वह मनुष्य के स्वभावसिद्ध राजा थे, उनकी शान को अनुभव करने के लिये उनकी मूर्ति को देख लेना मात्र पर्याप्त था। मुझे वह समय याद आते हैं जब पं० मोतीलालजी की राजसी ठाठ वाली मूर्ति असेम्बली में प्रवेश किया करती थी। सिर पर दूध जैसी सफेद गान्धी टोपी, टोपी के नीचे उसी रंग का रोबीला चेहरा, खद्दर का विशुद्ध वेश, उसी के रङ्ग से मिलता हुआ धवल दुकूल, और वह गर्वीली अदा — देखते ही जी चाहता था खड़े होकर जोर का जयकारा बोल दें। उस मूर्ति का असर इतना व्यापी था कि सरकारी कुर्सियों पर बैठे हुए गोरे सदस्य भी अनायास ही आधे खड़े हो जाते थे, मित्रों को पूरा भरोसा था कि असेम्बली में नेहरू जी बैठे हुए हैं, और सरकारी सदस्यों के दिल रात-दिन धकधकाते रहते थे कि न जाने मि० नेहरू शतरंज की कौनसी चाल चलायें कि हमें मात मिल जाय।

ऐसे नरकेसरी की गद्दी है, जिस पर श्रीयुत शरच्चन्द्र बसु को बैठने का अव-

सर मिला है। प्रत्येक हितैषी के दिल में प्रश्न उठता है कि क्या वह पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकेंगे ?

श्रीयुत वसु एक ऐसे महापुरुष के भाई हैं, जिसने अपना नाम संसार के राणा प्रताप, गेरीबाल्डी माइकेल कौलेन्स जैसे स्वाधीनता के परवानों में लिखा दिया है। यह उनकी पहली विशेषता है।

वह एक योग्य वकील है, और अभ्यस्त वक्ता हैं। उनका डील डौल, विशाल और चेहरा भव्य तथा प्रतिभा-सूचक हैं। मिलने जुलने में सादा और सामान्य रूप से हंसमुख है। यह सब गुण पार्टी के एक नेता के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं। इन गुणों के अतिरिक्त एक और गुण है, जिसका होना धारासभा के किसी भी दल के नेता के लिये अनिवार्य है। वह है, जोड़ तोड़ करने की योग्यता। असेम्बली में दो मुख्य दल हैं - सरकार और कांग्रेस। उनके बीच में दो दल और हैं — लीग और सरकार द्वारा निर्वाचित सदस्य। मत विभाजन के समय विजय प्राप्त करने के लिए इन मध्यस्थ मतों में से अपने लिए काफी अनुकूलता प्राप्त करना आवश्यक है। तभी सफलता मिल सकती है। यह कार्य जोड़ तोड़ की शक्ति के बिना असम्भव है। इसके लिए पार्टी के नेता में दूर-दर्शिता, चतुरता और लचकीलेपन की आवश्यकता है। उसे कल के दुश्मन को आज मित्र बनाना पड़ता, और आज के मित्र से कल लड़ना पड़ता है। यह बुद्धि और स्वभाव के लचकीलेपन के बगैर सम्भव नहीं। क्या बाबू शरच्चन्द्र वसु में इन गुणों की पर्याप्त मात्रा विद्यमान है ?

इस प्रश्न का पूरा उत्तर तो समय देगा, परन्तु जो कुछ सुना और २४ जनवरी को देखा है, उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि इस प्रश्न का उत्तर 'हां' में ही मिलेगा, 'नकारात्मक' उत्तर की कोई सम्भावना नहीं।

केवल आंखों पर जो प्रभाव पड़ता है वह निम्नलिखित है। बाहिर की शान में कांग्रेसदल के वर्तमान नेता पं० मोतीलाल जी से कुछ न्यून और श्रीयुत भूलाभाई देसाई से कुछ अधिक हैं। बोलने में यद्यपि उनमें श्रीयुत भूलाभाई वाला प्रवाह नहीं है तो भी वाक्य परिमार्जित हैं, भाषा जोरदार है और कहने का ढङ्ग प्रभावयुक्त है। कुछ समय के पश्चात् उनकी वक्तृत्व शक्ति असेम्बली की शान पर चढ़ कर चमक उठेगी, ऐसी आशा है। यों एक बात सन्तोष से कही जा सकती है, सभापति के चुनाव के मामले में आपने एक बड़े मौके का काम किया। आपने यह समाचार कि कांग्रेस दल ने श्रीयुत मावलङ्कर को सभापति के लिए निर्वाचित किया है, मि० जिन्ना को टेलीफोन द्वारा दिया, स्वयं मिलकर नहीं। मि० जिन्ना का जितना लिहाज किया जाय, दिमाग उतना ही बिगड़ता है। श्रीयुत वसु ने यह नहले पर दहला लगा दिया कि उनकी खिदमत में हाजिर न होकर टेलीफोन से खबर दी। यह भविष्य के लिए बड़ा शुभ लक्षण हैं, जिस पर मैं श्रीयुत वसु को बधाई देता हूं।

———

युद्ध-प्रयाण

तू बढ़ा, पैर आगे संभार।

रुकना अब तेरा काम नहीं,
सुख-वैभव की परवाह नहीं,
हो जाय कहीं गुमराह नहीं,
इतना तू करता चल विचार।
तू बढ़ा, पैर आगे संभार॥

घबराना आज नहीं मग में,
आंधी, तूफान, बवंडर में,
झंडा लेकर कंपित कर में,
गाता चल मां के गीतचार।
तू बढ़ा, पैर आगे संभार॥

यह मार्ग अहा ! सुन्दर कितना,
अब याद आ गया है सपना,
चुंडा हमीर का मर मिटना,
राणा प्रताप की खड्ग धार।
तू बढ़ा, पैर आगे संभार॥

जब निकल पड़ा, रुकना कैसा,
जब चल निकला, थकना कैसा,
फिर चिन्ता क्या, और भय कैसा,
यह मन में क्या लाया विकार ?
तू बढ़ा, पैर आगे संभाल॥

—'केशवदेव मिश्र 'कमल'

मैं फूल खिलाने वाला हूं !

मस्ती ले आया हूं, मैं हंसने और हंसाने वाला हूं।
मैं आया ऊषा संग लिये चिर युवती औ' भोली-भाली,
और संध्या अमर, असुर, नर सबको मुग्ध बना देने वाली,
जो सबको शान्ति प्रदान करे रजनी तारोहारों वाली।
मैं इन सबको लेकर आया, मुझको उजड़ा संसार मिला,
है एक — डाल पर — पात नहीं, है नहीं एक भी फूल खिला,
जादू से इस मृत उपवन को मैं देखो दूंगा अभी जिला।
निष्ठुर सरदी ने छीन लिये हैं जिनसे फूलों के छत्ते,
निर्मम पतझर ने लूट लिये जिनके सारे कोमल पत्ते,
उन सारी नंगी औ' सूनी सी बनी भिखारिन डालों पर —
मैं पात सजाने वाला हूं, मैं फूल खिलाने वाला हूं।

× × ×

कोमल पत्तों से अभी-अभी सज जायेगी डाली-डाली,
मुस्करा उठेगी लता-लता सुन्दर सुरभित सुमनों वाली,
मंजरित आम की डालों से फिर कूकेगी कोयल काली।
इतना ही बस नहीं, साथ मेरे अनंग भी है आया,
नव आशाएं, अरमान नये, मैं नव उमंग भी हूं लाया,
मैं हास लास का हूं प्रेमी, मैं रास रंग भी हूं लाया।
मादक औ' मोहक बन कर मैं सारी दुनिया में छाया हूं,
मैं युवक-युवतियों के उर में कुछ प्यास जगाने आया हूं,
मैं प्यास जगाने वाला हूं, मैं आग लगाने वाला हूं।

× × ×

युवको, मैं यौवन का प्रतीक, कुछ युवकों जैसी बात करो,
निष्क्रिय होकर बैठो, इससे तो अच्छा कुछ उत्पात करो,
यह रात गुलामी की है इसको आजादी की प्रात करो।
तुम राह चलो आजादी की चाहे फिर खून बहाना हो,
चाह फिर सिर कट जाना हो, वापिस फिर कभी न आना हो,
मरते दम हाथों में झण्डा, होठों पर वही तराना हो,
आजाद हिन्द के वीरों ने जिसको इम्फाल में गाया था,
मैं ही वह यौवन हूं, जिसने उन सबको जोश दिलाया था।
मैं जोश दिलाने वाला हूं, मैं जोश बढ़ाने वाला हूं

× × ×

सबसे प्यारे वे वीर मुझे जो समरांगण के बीच मरें,
जो अपने प्राण गंवा कर भी औरों की भारी पीर हरें
जो अपनी नई जवानी से उज्वल आदर्श लकीर करें।
ये रति, यौवन, ऊषा, संध्या, सुन्दर रजनी तारों वाली,
ये लता-सुमन, ये विकसित वन सारे उपवन शोभाशाली
उन पर अर्पित, जिनके शोणित ने समर भूमि को दी लाली,
उनकी स्मृति में वन-वन में मैं नव सुमन खिलाने वाला हूं।
बलि होने वालों के ऊपर मैं भी बलि जाने वाला हूं।
मस्ती ले आया हूं, मैं हंसने और हंसाने वाला हूं।

— विराज

चरण-ध्वनि

चरण-ध्वनि किसकी निराली !

आज यौवन की सरिस से, आ रहा मधु गान कैसा ?
थी युगों से साधना रत, आज टूटा ध्यान कैसा ?
कह रहे संदेश प्रिय का, डोलते तरुपात डाली।
चरण-ध्वनि किसकी निराली !

आज की सी रूप छाया, द्वार मेरे डोलती है।
तृप्ति का दे घूंट प्रतिपल, गांठ जी की खोलती है !
मिलन का सन्देश प्रतिपल, दे रही है सान्ध्य लाली।
चरण-ध्वनि किसकी निराली !

शून्य में कुछ रूप का, कुछ रंग का अरमान कैसा ?
जीर्ण इस मेरी कुटी का, स्वप्न देखा मान कैसा ?
हो गए वरदान मुझ को, विश्व के अभिशाप आली।
चरण-ध्वनि किसकी निराली !

— लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रिटिश मजदूर मंत्रिमण्डल की असमर्थता

[श्री वेदव्रत वेदालङ्कार]

प्रथम विश्व युद्ध (१६१४–१६१८) के बाद यह विचित्र बात देखने में आती है कि संसार के राजनीतिक रंगमंच पर से लिबरलिज्म (उदारवाद) लुप्तप्राय हो जाता है। रूस की बोल्शेविक क्रांति की सफलता से उत्पन्न आशाओं और आशंकाओं के परिणाम स्वरूप कुछ काल के लिए संसार में केवल दो ही दलों के लिये स्थान रह गया। एक तो संगठित हुए पूंजीवाद के लिये और दूसरे संगठित हुए समाजवाद के लिये। थोड़े-बहुत अन्तर से ये दो दल प्रायः प्रत्येक जागृत देश में दृष्टिगोचर होते हैं। इंगलैण्ड की राजनीति में यह संघर्ष अनुदार दल और मजदूर दल के बीच दिखाई देता है। एक समय के प्रसिद्ध और प्रभावशाली लिबरल दल का अस्तित्व नाम मात्र को रह जाता है। स्वाभाविक था कि मजदूर दल से वह सब आशायें लगाई जायें जिनका सम्बन्ध प्रगतिशील और क्रांतिकारी समाजवाद के साथ जुड़ा हुआ है।

किन्तु ब्रिटिश मजदूर दल के क्रमिक विकास और इतिहास पर दृष्टिपात करने से सहज ही यह ज्ञान हो जाता है कि अब तक यह दल इन आशाओं को पूर्ण करने में समर्थ नहीं हुआ है। ब्रिटेन के श्रमिक वर्ग की अवस्था में यत्र-तत्र कुछ सुधार करवाने से अधिक प्रगतिशीलता और क्रान्तिकारिता अब तक इस दल ने प्रदर्शित नहीं की है।

सन् १६०८ तक तो हम ब्रिटिश मजदूर आन्दोलन को ब्रिटिश लिबरल के पिछलग्गू के रूप में ही पाते हैं। तब तक इसकी घृणा या विरोध के वास्तविक पात्र लिबरल परम्पराओं और प्रवृत्तियों के नवीन पूंजीपति न होकर अनुदार परम्पराओं और प्रवृत्तियों के पुराने भूमिपति थे तब इनका प्रयत्न लिबरल दल की सहायता से श्रमिक वर्ग के लिये कुछ सुधार व सुविधायें प्राप्त करने मात्र तक सीमित था। बाद में इनका प्रयत्न लिबरल दल के पीछे लग कर कुछ सीटें प्राप्त करना मात्र रहा। यह देख कर आश्चर्य नहीं करना चाहिये कि १८६७ में शेफील्ड के मजदूरों ने एक लिबरल कारखानेदार को अपना प्रतिनिधि बनाया था। लिबरल कारखानेदार व पूंजीपति प्रसन्न थे क्योंकि ब्रिटिश ट्रेड यूनियन आंदोलन की दिलचस्पी राजनीति में बहुत कम है। उस काल में सोशल डिमोक्रेटिक फेडरेशन और इण्डिपेण्डेण्ट लेबर पार्टी आदि कुछ संगठनों ने एक स्वतंत्र श्रमिक राजनीति की स्थापना का प्रयत्न किया, किन्तु सफलता नहीं हुई। सिडनी वेब, बीट्रिस वेब, एच. जी. वेल्स, बर्नार्ड शा आदि साहित्यिक आन्दोलनकारियों ने फेबियन सोसायटी द्वारा जिस समाजवाद को इंगलैण्ड में प्रचारित करने का प्रयत्न किया वह भी क्रांतिकारी न होकर विकास का पक्षपाती था। वह कार्लमार्क्स के विश्व-क्रांति और वर्ग युद्ध के सिद्धान्तों के विरुद्ध था। बल्कि वह साम्राज्यवाद की ओर कुछ झुकाव और कोमल भावना लिये हुए था। ब्रिटिश मजदूर आंन्दोलन यद्यपि फेबियन समाजवाद का भी अनुगामी नहीं बना, किन्तु उस के साहित्य ने जिस स्वतंत्र मजदूर राजनीति और बौद्धिक समाजवाद का आधार रखा वह ब्रिटिश मजदूर दल के स्वरूप के सर्वथा अनुकूल थे।

१६०५ में कारखानों की हड़तालों और १६१३ में कारखानों, रेलों और ट्रान्सपोर्ट के मजदूरों के परस्पर गठबन्धन से इंगलैण्ड के श्रमिक वर्ग में एक वर्ग-भावना प्रस्फुटित हुई, जो प्रथम विश्व युद्ध की राष्ट्रीय उत्तेजना में भी यत्किञ्चित् बनी रही। लिबरल परम्परा वाले मजदूर नेता काल क्रम से समाप्त हो रहे थे। पार्लमेंट के लिये निर्वाचन योग्यता आसान हो जाने और महिलाओं को भी मताधिकार हो जाने से मजदूर दल की राजनीतिक शक्ति बढ़ रही थी। दल की चुनाव-मशीनरी को भी झाड़पोंछ कर अधिक प्रभावोत्पादक बनाया गया, ताकि अपने पक्ष में पड़ने वाली वोटों के अनुपात में सीटें भी प्राप्त की जा सकें। परिणामस्वरूप पार्लमेंट में मजदूर दल की संख्या वृद्धि होने लगी। प्रथम विश्व युद्ध की संयुक्त सरकार में मजदूर दल को भी सम्मिलित किया गया। युद्ध के बाद दल की शक्ति और बढ़ी।

किन्तु यह शक्तिवृद्धि मजदूरदल की आन्तरिक योग्यता, उत्कृष्टता व प्रगतिशीलता की इतनी द्योतक नहीं थी, जितनी

मजदूर दल के प्रमुख नेता

सर स्टेफर्ड क्रिप्स

संसार में उत्पन्न नवीन भावनाओं और आशाओं की प्रतीक थी। यह नहीं भूलना चाहिये कि यह शक्तिवृद्धि लिबरलिज्म के मूल्य पर हो रही थी। अनियंत्रित व्यक्तिगत सम्पत्ति और उद्योग की स्वतंत्रता के आधार पर संगठित पूंजीवादी जगत् में अब जिन दो दलों में संघर्ष चल रहा था उन में से एक का भार इंगलैण्ड में मजदूर दल के कंधों पर पड़ा। किन्तु हमारी सम्मति में, अपनी पारम्भिक परम्पराओं, मनोवैज्ञानिक संस्काओं, अपने इतिहास और स्वरूप से मर्यादित मजदूर दल इस भार का सुचारु रूप से वाहन करने में समर्थ नहीं हुआ।

रूस की बोल्शेविक क्रान्ति की सफलता ने इंग्लैण्ड के भी श्रमिक वर्ग और मध्यम श्रेणी के कुछ लोगों में क्रान्ति के प्रति कुछ दिलचस्पी उत्पन्न की। क्रान्तिकारी रूस के दमन में इंगलैण्ड की

मजदूरदली प्रथम प्रधान मंत्री

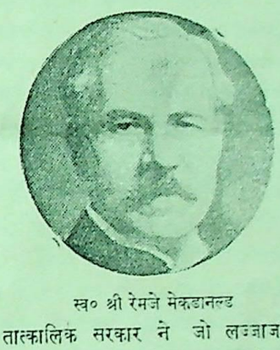

स्व० श्री रेमजे मेकडानल्ड

तात्कालिक सरकार ने जो लज्जाजनक भाग लिया था, उसके विरुद्ध असंतोष का वातावरण बन रहा था। एक छोटे से कम्यूनिस्ट दल का निर्माण भी हुआ। किन्तु संगठित मजदूर दल का प्रमुख मार्ग उस समय भी क्रमिक विकास और सुधारवाद से ऊपर नहीं उठ सका। उसका प्रयत्न सुधारक दल के साथ मिल कर श्रमिकों के जीवन मान को बढ़ाने तक ही सीमित था। केवल कोयला-खानों के राष्ट्रीयकरण की झीणी सी आवाज उठाई गई।

१६२२ में मजदूर दल पार्लमेण्ट में प्रमुख विरोधी दल बना। १६२४ में उसे अपना मंत्रिमण्डल बनाने का भी सुयोग प्राप्त हो गया। किन्तु अब भी वह इसके लिये लिबरल दल की सहायता पर आश्रित था। उसके अर्थमंत्री स्नौडन द्वारा पेश किया गया बजट पूर्ववर्ती लिबरल बजटों से कोई विशेषता नहीं रखता था। प्रथम मजदूर सरकार ने यह क्षमता प्रकट नहीं की कि वह देश की सिविल सर्विस को पुरानी लकीर से निकाल कर अपने पीछे लगा ले वह स्वयं उसके लौहपाश में जकड़ी रही। केवल एक उल्लेखनीय कार्य

ब्रिटेन के प्रधान मंत्री

श्री एटली

मजदूर सरकार ने किया था। वह था रूस की बोल्शेविक सरकार की स्वीकृति पर जाने की मुहर लगाना। प्रथम मजदूर सरकार केवल ६ मास तक शासन कर सकी।

ब्रिटिश मजदूर दल की दुर्बलता १६२६ में जनरल हड़ताल के सम्बन्ध में फिर देखने में आई। दल का वामपार्श्व तो शायद मोर्चा लेने के लिये सन्नद्ध था, किन्तु दल में वास्तविक शक्ति की अधिष्ठात्री देवता ट्रेड यूनियन कांग्रेस के लिये यह केवल एक बन्दर-घुड़की ही थी। इसीलिये हड़ताल सफल नहीं हो सकी। इसके बाद कम्यूनिस्टों को मजदूर दल से निकाल दिया गया। इण्डिपेण्डेण्ट लेबरपार्टी का समाजवादी कार्यक्रम भी दबाया गया। रूस के प्रति व्यवहार में भी पूर्वापेक्षा रूक्षता आ गई। क्रांति की भावना पर उसी सुधार की पुरानी मृदु भावना ने प्राधान्य पाया।

१६२६ के निर्वाचन में इंगलैंड के मतदाताओं ने फिर एक बार मजदूर दल को अवसर प्रदान किया। इस दल का पार्लमेंट का २८८ सीटों पर कब्जा हो गया, द्वितीय मजदूर मंत्रिमण्डल बना, किन्तु फिर वही बात देखने में आई कि मजदूर दल के प्रमुख पार्लमेंटरी नेता लिबरल कारखानेदारों और बैंकरों के प्रभाव में हैं। मैकडानल्ड, थामस और स्नौडन प्रत्येक महत्व पूर्ण बात में अपने सिद्धान्तों के बजाय विरोधी दल का मुख देखते थे और उस द्वारा संचालित होते थे। वे सरकार चलाने के लिये मंत्री बनते हैं, न कि उसे पलटने या बदलने के लिये। परिणामस्वरूप १६३१ में विदेशी ऋण के प्रश्न पर द्वितीय मजदूर सरकार समाप्त हो जाती है। बैंकरों की कुटिल नीति ने मजदूर मंत्रिमण्डल को असफल कर दिया। वस्तुतः देखा जाये तो मैकडानल्ड-स्नौडन के सिद्धान्त परीक्षा काल में जुबानी जमाखर्च से अधिक साबित नहीं हुए। बैंक आव इंगलैंड का चिरप्रतिज्ञात राष्ट्रीयकरण करते हुए आत्मविश्वास उनका साथ छोड़ गया।

[शेष पृष्ठ १६ पर]

महेन्द्र और अंजलि

[ले० — श्री धूमकेतु] [अनु० — श्री सुदर्शनाकुमारी]

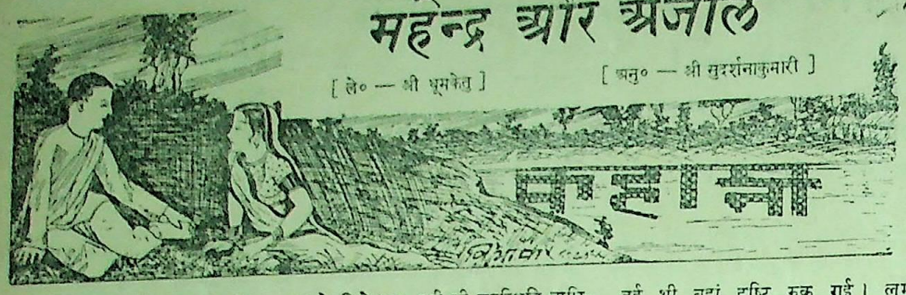

ध्यान के समय आकाश में स्वच्छंद रूप से विचरती एकाध छोटी बदली कुछ समय तक संस्मरणीय बनी रहती है। इस का सौन्दर्य एक चिरस्थायी स्मृति अंकित कर जाता है।

किसी-किसी स्त्री का स्वरूप भी ऐसा ही संस्मरणीय होता है।

वैसे तो शरीर में विशेष रूप से सुन्दर कहने योग्य कुछ दृष्टिगोचर नहीं होता। परन्तु यह सौन्दर्य शरीर का नहीं, जितना वातावरण का होता है। इस प्रकार का प्राकृतिक माधुर्य बहुतेरी स्त्रियों में नहीं मिलता, परन्तु जिन में होता है, उनके काव्यदेह में छुपी हुई ध्वनि की भांति — अर्द्ध स्पष्ट अर्द्ध अस्पष्ट—होता है। कुछ स्त्रियां सुन्दर दिखाई देती हैं — यह सही है, तो भी वस्तुतः सुन्दर होती नहीं। इनका एक मात्र देह होता है — और वातावरण नहीं। जिस प्रकार कुछ स्त्रियां लम्बी होती हैं, इन में केवल लम्बाई होती है — और रेखा का सौन्दर्य नहीं होता, उसी प्रकार कुछ स्त्रियां गजब की सुन्दर लगती हैं, तो भी उनमें सौन्दर्य नहीं होता। सौन्दर्य आकाश-कुसुम जैसा होता है; स्वप्नसृष्टि सा मनोहर: व्यवहार में अस्पृश्य। इस का स्पर्श नहीं किया जा सकता — तो भी इसके बिना जिया भी नहीं जा सकता। ऐसी स्त्रियों में सुन्दर देह — यह तो गौण होता है, अपितु उत्तम प्रकार की गगनगामी कल्पनाओं के समान इन्हें समझने के लिये मनुष्य को वातावरण तैयार करना पड़ता है। उन्मत्त यौवन के कारण आया हुआ स्त्री का सौन्दर्य—कदाचित यह मदिरा जैसा काम करता है; अच्छी प्रकार भरे हुए मांसल अङ्गों का सौन्दर्य पुरुष के लिये कदाचित् पाश हो सकता है; सादा सरल, सौन्दर्य — इस का आकर्षण अधिक स्थायी हो सकता है; परन्तु ध्वनिकाव्य की भांति जिस ओर देखो वहीं केवल माधुर्य से वातावरण को भर देता है — निसर्गसिद्ध विश्वमोहिनी रूप तो किसी-किसी को ही मिला होता है।

अंजलि को ऐसा ही वातावरणमय विश्वमोहिनी रूप मिला था।

कदाचित् बहुतेरे, इसमें सादी सरलता देखेंगे — और रूप न देख पायेंगे। परन्तु जिन्हें दृष्टि मिली है, उनके लिये इस स्त्री की उपस्थिति अधिकांश इच्छाओं की शामक — और मानव-स्वरूप में रहने वाली अचिंत्य सौन्दर्यभाव की उद्बोधक होगी। इसे तुम स्त्री रूप में कला कह सकते हो, जिस के चरणों में मनुष्य अपनी सामान्यता प्रकट करने में शरमाता है, असामान्यता का उपासक होने की प्रेरणा पाता है।

इस का मौन इस की वाणी इतने अधिक मोहक थे; स्मित-गंभीरता इतने अधिक अर्थ भरे थे: इसके हृदय का भाव बदल सकता था, परन्तु इसके चेहरे पर की एक विशिष्ट सौन्दर्य-मुद्रा स्थिर रहती थी।

अकस्मात अंजलि की दुर्घटना ने बिजली के आघात के समान महेन्द्र को स्तब्ध बना दिया। अभी तो दो घड़ी पूर्व 'अभी आती हूं !' कर के अंजलि गई; परन्तु वापिस नहीं लौटी और एक मोटर दुर्घटना की शिकार हो गई, यह जब महेन्द्र ने पहले-पहल सुना तो टेलिफोन उसके हाथों में ही रह गया, और वातावरण में गूंजते 'अभी आती हूं !' ये शब्द ही आकाश में उसकी आंख के सामने खड़े हो गये। घड़ी भर तो वह दिङ्मूढ की भांति 'अभी आती हूं, अभी आती हूं !' ये शब्द मानो भाग्य के वज्रलेख हों — मानो अंजलि को न भूल सकने योग्य वचन हों — उसी भांति धीमी मंद आवाज में लगभग अचेतन अवस्था में बोलता रहा 'अभी आती हूं अभी ?'

× × ×

अंजलि के जाने की रात महेन्द्र को भली-भांति याद थी। निरभ्र आकाश में कार्तिकी पूर्णिमा का चन्द्र रजत के समान चमक रहा था। विशाल उद्यान का पिछला भाग नदी के किनारे पर पड़ता था — वहां जाकर वह खड़ा हो गया। सामने के कांठे में पारद प्रवाह जैसा छोटा सा झाल था, नदी दो सीधी ऊंची चट्टानों से नीचे ठीक तले तक गिर कर निर्मल शांतधारा रूप में बह रही थी।

नीचे के भाग में दूर तक दृष्टि डालें तो वहां घास-पात के झुके होने से विरल, अस्पष्ट जंगल में सर्पाकार बहती नदी अपना मार्ग बना रही है — यह चांदनी से झिलमिलाता पानी बता देता है। ऊपर निःसीम आकाश हंस रहा था, नीचे पृथ्वी। महेन्द्र वहां आकर खड़ा हो सामने के किनारे पर जहां दुर्घटना हुई थी वहां दृष्टि रुक गई। लम्बा, अकेला सीधा मार्ग चला जाता देखा। कोई भी कुछ भी न था। केवल चांदनी, नदी, जलधारा, ऊंची चट्टानें, वृक्ष-सम्पूर्ण प्रकृति चेतनामय होकर 'अभी आती हूं !' इन अन्तिम शब्दों का मानो प्रतिघोष कर रही थी। भारी हृदय से धीमे शांत पगों से, महेन्द्र बहुत देर रात में, अपने बङ्गले में जाने के लिये पीछे घूमा; वहां पूर्ण सुनसान हो गया था। नीली हरियाली घास गुपचुप खड़ी थी। और वह गम्भीर शान्ति के अनुरूप धीमे-धीमे डगों से चल रहा था।

अत्यन्त नीली घास के बीच में से होकर वापिस लौटा। वह अपने जाने चल नहीं रहा था केवल उसकी परछाईं ही हिल रही थी — इतनी धीमी, मंद, विचारमग्न, शांत गति से वह सरक रहा था — उसके आस-पास गम्भीर शांति थी; नदी के प्रतिघोष से भरी, वातावरण की सर्जक।

वह बंगले के पास आया।

जो व्यवस्था अंजलि ने की थी, वही व्यवस्था अभी तक वैसी की वैसी थी। द्वार पर कमललता लटक रही थी; अन्दर गलीचे पर शुद्ध लाल चन्दन की चौकी पर नटराज अपना नृत्य कर रहा था। वातावरण का जो सौन्दर्य अंजलि के सान्निध्य में अनुभव होता, लगभग वही सुन्दरता — परन्तु देह-हीन — उसने अनुभव की। महेन्द्र ने ठीक अन्तिम सीढ़ी पर से खड़े होकर अन्दर की ओर दृष्टि डाली।

द्वार पर नतमस्तक दो पहरेदार शोक युक्त चेहरों से शांत — अत्यन्त शांत खड़े थे। दीवार पर पड़ रही छाया के अतिरिक्त इनके अस्तित्व का लेशमात्र भी चिन्ह न था। इनके गालों पर ताजे आंसुओं की धार चल रही थी।

महेन्द्र ने अन्दर दृष्टिपात किया।

मंद — लगभग आकाश गंगा के प्रकाश जैसी रोशनी में अन्दर का खण्ड शान्त पड़ा था।

महेन्द्र ने एक अंगुली से इशारा किया। प्रतिमा मानो सजीव हो उठी हो, इस भांति पहरेदार समीप आकर खड़ा हो गया।

'बाई — अन्दर हैं ?'

आश्चर्य मुग्ध दृष्टि से द्वारपाल अपने मालिक को देखने लगा। उसकी वाणी बन्द हो गई, इन्हें क्या उत्तर दे समझ न सका।

'जी नहीं, बा·····ई·····', आगे नहीं बोल सका।

'तो·····तो····· समझ गया' महेन्द्र ने उत्तर दिया, 'बाई अन्दर नहीं हैं····· मगर·· है, ऐसा समझना। समझ गये ?'

'जी हां !'

'और मैं — अब इधर नहीं रहूंगा। सामने बंगली में मुकाम रखूंगा, समझ गये ?'

'जी हां'

'मगर एक बात की गफलत कभी नहीं करना····· बाई नहीं है — मगर सब वैसे ही ढंग से — जैसे आज मौजूद है····· रखना। अदब भी पहले ही रखना। हां····· ?'

'जी जनाब !'

वातावरण मानो थरथरा उठा हो उसे सम्भालता। हुआ महेन्द्र धीमे शांत पगों से पीछे लौट गया !

× × ×

अंजलि और महेन्द्र — दोनों का इतिहास रसीला था।

वे दोनों विवाहित थे और साथ रहते थे, ऐसा नहीं था। महेन्द्र एक समय शिमला में एक हास्पिटल देखने गया। वहां की एक नर्स की रूपराशि ने इस पर ऐसा जादू कर दिया, कि उसके बाद उसकी दोनों गोल आकाशी रंग की आंखों को अपने हृदय में से निकाल फेंकने के लिये उसने आकाश पाताल एक कर दिया — परन्तु प्रेम और थोर का कांटा एक सरीखे होते हैं। जितना निकालने का प्रयत्न करो उतना ही अधिक अन्दर घुसता है। महेन्द्र ने शिमला का नाम छोड़ दिया — परन्तु नर्स की आंखों ने उसके हृदय में स्थिर स्थान प्राप्त कर लिया।

उसे नर्स के नाम की भी खबर नहीं थी, नर्स को उसके प्रेम की खबर न थी। तो भी दोनों एक दूसरे को बहुत बार मिले हों ऐसा दोनों को प्रतीत हुआ था। एक घड़ी भर की इस बात को कई दिन हो गये।

इस प्रकार दिन पर दिन निकलते चले गये। हम तो इस बात को पागलपन कहेंगे — और यह मोहयुक्त पागलपन में से उत्पन्न होते हुए भी, इस बौद्धिक पागलपन में इसका हृदय उलझना नहीं चाहिए था। विश्व के साधारण जीवन-व्यवहार को, स्वप्न अथवा पागलपन कहने से लोग गुस्सा होते हों तो, उनके सन्तोष के लिये इसे बुद्धिमता से पूर्ण पागलपन कहेंगे में कोई झगड़ा नहीं है; बाकी परिणाम की दृष्टि से इससे अधिक अच्छा नाम इसे नहीं दिया जा सकता। महेन्द्र की यह पागलपन से भरी इच्छा पगली

[शेष पृष्ठ १५ पर]

CC-0. Vasishtha Tripathi Kanchi Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

धारावाहिक उपन्यास —

स र ला

लेखक —
श्री श्रीदेव

[गतांक का शेष]

[५]

हमने गोपालकृष्णसिंह, चम्पा और मुन्ना को धर्मशाला से टेक्सी द्वारा तारा-बाग के लिये रवाना होते देखा था। गोपालकृष्णसिंह तारा बाग में प्राणजीवन से मिलने के लिये सरला के साथ जा चुका था। वहां जाकर माणिकलाल का घर तलाश करने में देर न लगी। उस घर का दरवाजा खटखटाया तो अन्दर से आकर बच्चे ने सूचना दी कि बापू, मातु श्री और सरला बहन दादर गये हैं, जहां विद्यालय कमेटी के अध्यक्ष स्वामीजी का आश्रम है। अधिक पूछताछ करने पर बच्चे ने यह भी बतलाया कि वह आश्रम शिवाजी पार्क में है।

लगभग ८ बजे का समय था। रविवार के दिन प्रातः काल ८ बजे से कमेटी की वह बैठक होने वाली थी, जिसमें सरला के विषय पर विचार होने वाला था। समय से पूर्व ही माणिकलाल और राधा, सरला को लेकर वहां पहुंच गये थे।

स्वामीजी के आश्रम पर कमेटी की बैठक के लिये खासे विधि-विधान के साथ तैयार की गयी थी। जिस कमरे में स्वामी जी की बैठक थी, उसे न्यायालय का रूप दिया गया था। उसमें कमेटी के सदस्यों के अतिरिक्त केवल वही लोग जा सकते थे, जिन्हें साक्षी के तौर पर बुलाया गया था। साथ के कमरे में उन लोगों के बैठने का प्रबन्ध किया गया था, जिनसे पूछताछ होने वाली थी। शेष महानुभाव जो केवल दर्शक माने गये, उनके बैठने का प्रबन्ध दरी बिछा कर बरामदे में किया गया था।

जिस समय गोपालकृष्णसिंह और चम्पा-आश्रम में पहुंचे, उस समय कमेटी के सदस्य तथा मामले से सम्बद्ध अन्य लोग अपने-अपने स्थान पर पहुंच चुके थे। माणिकलाल, चम्पा और सरला बैठक के पास वाले कमरे में बिठाये गये। आश्रम के द्वार पर पहुंच कर गोपाल-कृष्णसिंह ने अपना परिचय न देते हुए वहां की सब व्यवस्था के सम्बन्ध में प्रश्न किया तो उसे मालूम हुआ कि सरला कमरे के अन्दर है और प्राणजीवन कमेटी के सामने पेश हो चुका है। गोपालकृष्ण-सिंह और चम्पा ने परस्पर परामर्श करके निश्चय किया कि बरामदे के ही एक कोने में बैठ कर चुपचाप कमेटी के निश्चय की प्रतीक्षा करें। इस सम्बन्ध में पति-पत्नी की आपस में जो बातचीत हुई, वह लिख देनी आवश्यक है।

गोपालकृष्णसिंह ने चम्पा की ओर देख कर धीमे स्वर में कहा— 'अब क्या कहती हो? क्या सरला को बाहर बुला कर उसे अपने आने की सूचना दी जाय।'

चम्पा—'तुम तो जानते ही हो कि मैं सरला को मिलने के लिये कितनी अधिक अधीर हूं, विशेष रूप से इस संकट में तो उसे मेरी गोद की बहुत ही अधिक आवश्यकता है, परन्तु इस समय उसके सामने सबसे पहला कर्तव्य यह है कि वह अपनी निर्दोषता सिद्ध करे। यदि हम लोगों से मिलने की उलझन में पड़ गयी तो वह इस समय के कर्तव्य से चूक जायेगी, इससे मेरा तो विचार है कि अभी उसे अपने आने की सूचना न दी जाय।

गोपालकृष्णसिंह — 'तुम्हारा विचार तो ठीक है, पर यह भी तो सम्भव है कि अपना पक्ष सिद्ध करने में उसे हमसे भी कोई मदद मिल सके।'

चम्पा — 'यह सम्भव नहीं है। उलटा विघ्न पड़ने की सम्भावना है।'

गोपालकृष्णसिंह — 'अच्छा तो चलो। बरामदे के उस हिस्से में बैठें, जहां से हम आने जाने वालों को देख सकें परन्तु उनकी दृष्टि हम पर न पड़ सके।

इतना परामर्श करके दोनों बरामदे में ऐसे स्थान पर लगकर बैठ गये, जहां कमरे में आने जाने वालों की दृष्टि सामान्य रूप में न पड़ सके।'

स्वामीजी का कमरा आज विशेष रुप से कमेटी की बैठक के योग्य बनाया गया था। कमरे के आधे भाग में खूब मोटा गद्दा बिछा हुआ था, जिस पर चांदी के समान सफेद चादर आस्तीर्ण थीं, गद्दे के सदर स्थान पर एक परिष्कृत मृग-छाला शोभायमान थी, और उस पर न्यायालय के अध्यक्ष की हैसियत से स्वामीजी महाराज आसीन थे। स्वामीजी के दोनों ओर समकोण बनाती हुई पंक्तियों में विद्यालय कमेटी के सदस्य बैठे हुए थे, स्वामीजी को छोड़ कर शेष ८ सदस्य उपस्थित थे। ३ सदस्य विशेष कारणों से उपस्थित नहीं हो सके थे।

बैठक के प्रारम्भ में मंत्री ने तीन पत्र पढ़कर सुनाये। मंत्री के पास सबसे पूर्व सरला के सम्बन्ध में प्रो० प्राणजीवन की दी हुई रिपोर्ट प्राप्त हुई थी, वह पहले सुनाई गई। फिर सरला का बयान पढ़ा गया और अन्त में मामले के सम्बन्ध में भारती का भेजा हुआ विस्तृत विवरण पेश किया गया।

तीनों पत्र सुनने के पश्चात समिति सदस्यों ने प्राप्त हुए विवरणों के रूप से ही बयान लेने का निश्चय करके सबसे प्रथम प्राणजीवन को बुलाया। साक्षियों तथा अभियोग से सम्बद्ध व्यक्तियों के लिये समिति के आसन के सामने दरी चांदनी बिछी हुई थी। प्राणजीवन ने कमरे में घुस कर सदस्यों को मुस्करा कर ऐसे ढंग से नमस्कार किया, जैसे उनके नमस्कार का उत्तर दिया हो। यह प्राण-जीवन के सार्वजनिक जीवन का एक भाग था कि वह प्रायः किसी को पहले नमस्कार नहीं करता था, और यदि कभी परिस्थितिवश करना ही पड़े तो कुछ मुस्करा कर, और सिर का इशारा करके ऐसे ढंग से करता था कि मानों दूसरे के नम्र अभिवादन का उत्तर देने की कृपा कर रहा हो।

अध्यक्ष ने, यथा स्थान बैठ जाने पर प्राणजीवन से कहा —

"प्रो० प्राणजीवन, कमेटी के मन्त्री ने आश्रमसम्बन्धी दुर्घटना के विषय में आप को भेजा हुआ विवरण कमेटी के सामने रखा है। उसी विषय में दो और विवरण प्राप्त हुए हैं जो आपके विवरण से बहुत कुछ मिलते हैं। हम लोग चाहते हैं कि आप आश्रम के शुभनाम को कलंक लगाने वाली इस घटना के बारे में अपना विस्तृत वक्तव्य हमारे सम्मुख दें, ताकि हम सत्य पर पहुंच सकें।"

प्राणजीवन ने पूछा — "क्या अपना वक्तव्य देने से पूर्व मैं दो अन्य विवरणों को सुन सकता हूं।"

अध्यक्ष — "अभी उसकी आवश्कता नहीं। पहले आप कमेटी को जो कुछ बतलाना चाहते हैं, निरपेक्ष भाव से बतला दीजिये। उसके पश्चात दूसरे पक्ष पर आपका मत ले लिया जायगा। सरल सत्य से अधिक बलवान सत्य कोई नहीं। हम आपसे वही सुनना चाहते हैं।"

प्राणजीवन — "अस्तु जैसे आपकी इच्छा। आप विद्यालय के उज्ज्वल और पवित्र नाम को कलंकित करने वाली इस घटना के सम्बन्ध में सरल सत्य सुनना चाहते हैं, तो सुनिये। विद्यालय-समिति के महामान्य अध्यक्ष, और धर्म परायण सदस्यों के सम्मुख प्रभु को साक्षी मानकर मैं सरल और पूर्ण सत्य ही प्रकाशित करूंगा। मुझे इस बात का असीम दुःख है कि यह काली घटना ऐसे दो व्यक्तियों से सम्बन्ध रखती है, जिन में से एक को मेरी शिष्या होने का और दूसरे को मेरा भाई होने का सौभाग्य प्राप्त था। मैं अपने अन्दर सदा ईश्वरीय प्रेरणा का अनुभव करता हूं, जिसके कारण मेरा विश्वास है कि जो व्यक्ति मेरे संग में आये, उसमें धार्मिक भावना जागृत होनी चाहिये। स्फटिक को मणि के पास रखिये, वह मणि का रङ्ग ले लेगी। मैंने उन दोनों व्यक्तियों को स्फटिक समझा था, पर खेद है कि वह मृतपिण्ड सिद्ध हुए। मुझे लज्जा के साथ कहना पड़ता है कि गत वार को रात्रि के १२ बजे के लगभग महिला-विद्यालय के आश्रम से माणिकलाल नाम के एक सज्जन ने — जिसे सज्जन शब्द से विशेषित करते मुझे संकोच प्रतीत होता है — सरला बाई को भगा लिया — और अपने घर पर रख लिया है।"

प्राणजीवन ने अपनी प्रथम रिपोर्ट में केवल सरला के भगाने और सम्भवतः आत्महत्या करने का उल्लेख किया था, माणिकलाल की चर्चा इसमें नहीं थी। इस समय दृढ़ निश्चय के साथ माणिक-लाल द्वारा सरला के अपहरण का प्रति-पादन सुन कर कई सदस्य चौंक गये। स्वामीजी को भी प्राणजीवन के इस साहस पर विस्मय हुआ। कमेटी के अन्यतम सदस्य सेठ छोगमल चोखानी पर तो प्राणजीवन की धार्मिक भावना और निर्भय प्रतिपादन का ऐसा जबर्दस्त प्रभाव पड़ा कि वह न्यायाधीश या जूरी का पद छोड़ कर कुछ समय के लिये भक्तराज की कोटि में आ गये, और सिर हिलाते हुए बोले —

"धर्मावतार ने जो कुछ कथन किया, वह सर्वथा सत्य है। माणिकलाल जैसे पापियों ने संसार को गन्दा कर रखा

सरला को उसके पिता शिक्षा प्राप्त करने के लिये बम्बई के महिला विद्यालय में दाखिल कर गये थे। विद्यालय के प्रिन्सि-पल प्रो० प्राणजीवन ने उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखा। सरला प्राणजीवन को गुरु और बड़ा भाई मानती थी। उसे विवाह के प्रस्ताव से बड़ा मानसिक धक्का पहुँचा, यहां तक उसे विद्यालय के आश्रम में रहना असम्भव प्रतीत होने लगा। वह आधी रात के समय आश्रम छोड़कर चली गई।

उधर सरला के पिता श्रीगोपालकृष्ण यह खबर सुनकर अपनी पत्नी चम्पा को लेकर सरला की तलाश को बम्बई पहुंच गये।

CC-0. Gurukul K

है। यह लोग कलियुग के रावण हैं —

अभी चोखानीजी का उद्गार जारी था कि अध्यक्ष ने टोक दिया। "ठहरिये, अभी आप लोगों के सम्मति देने का समय नहीं आया। पक्ष-विपक्ष सुनकर ही आप लोगों को व्यवस्था देनी चाहिये।"

अध्यक्ष के कहने से सेठजी चुप तो हो गये, पर होठों को हिलाकर चुपके से इतना और कह डाला — "बात तो यही सच है — बाकी अब लीपा-पोतो करनी हो तो करते रहो।"

अध्यक्ष ने मन्त्री को आदेश दिया — "सरला बाई को बुलाया जाय।"

मन्त्री स्वयं दूसरे कमरे में जाकर सरला को बुला लाया, सरला को अन्दर आते हुए उसके माता पिता ने भी देखा प्राणजीवन अध्यक्ष का इशारा पाकर एक ओर बैठ गया और सरला उस स्थान पर बैठी, जहां पहिले प्राणजीवन बैठा था। बैठने से पूर्व सरला ने सब सदस्यों को हाथ जोड़कर नमस्कार किया।

मन्त्री ने सरला को सम्बोधन करके कहा "सरला बाई, आश्रम से आधी रात के समय चली जाने के सम्बन्ध में आपने जो बयान मेरे सम्मुख दिया था, वह मैंने कमेटी के सदस्यों को सुना दिया है, क्या आप उसे कुछ घटाना या बढ़ाना चाहती हैं? सरला, जो इससे पूर्व कभी इसी तरह कभी अभियुक्त को श्रेणी में नहीं आई थी और अभियुक्त के तौर पर इतने व्यक्तियों के सामने बैठने के कारण मन व्याकुल हो रहा था, कांपते हुए स्वर से बोली, "मुझे उस दुःख जनक घटना के विषय में और कुछ भी नहीं कहना है, मुझे जो कुछ कहना था कह चुकी।"

अध्यक्ष ने आज्ञा दी कि माणिकलाल भाई को बुलाया जाय। मन्त्री बाहर जाकर माणिकलाल को बुला लाया। बैठ जाने पर स्वामीजी ने माणिकलाल से कहा, "माणिकलाल भाई, महिला आश्रम से सरलाबाई के आधी रात के समय चले जाने के सम्बन्ध में प्रो० प्राणजीवन ने आप पर जो अभियोग लगाया है उसे आप सुन लीजिये।" मन्त्री ने अध्यक्ष का इशारा पाकर प्राणजीवन का वह बयान पढ़ सुनाया, जो उसने समिति के सामने दिया था। माणिकलाल ने उसे शान्ति से सुना। फिर कहा—इससे पूर्व मन्त्री महोदय के सम्मुख प्रो० प्राणजीवन का जो बयान हो चुका है, वह भी सुना दिया जाय। अध्यक्ष की आज्ञा पाकर मन्त्री ने वह बयान भी सुना दिया। इन दोनों बयानों को समिति के सब सदस्यों के सामने सुनकर सरला की मानसिक दशा बहुत ही अद्भुत हो गई। वह जानती थी कि प्राणजीवन के लगाये हुए आरोप सर्वथा-मिथ्या हैं तो भी उनके सुनने मात्र से उस पर मानों लज्जा का पहाड़ टूट पड़ा। वह भूमि में गड़ी जा रही थी। माणिकलाल ने दोनों बयान अत्यन्त धीरता पूर्वक सुने। अध्यक्ष के यह पूछने पर कि "कहो माणिकलाल भाई, अपने पर लगाये गये आरोप के सम्बन्ध में तुम क्या कहना चाहते हो, माणिकलाल ने उत्तर दिया, "भगवन्! मैं प्राणजीवन से कुछ प्रश्न पूछने की आज्ञा चाहता हूं।" स्वामीजी ने कहा "हां, यह तुम्हारा अधिकार है। प्रश्न पूछ सकते हो।"

तब माणिकलाल और प्राणजीवन में निम्नलिखित प्रश्नोत्तर हुए —

माणिकलाल — "प्रो० प्राणजीवन महोदय, आपके पहले बयान में यह बतलाया गया है कि सरलाबाई आश्रम से चली गई, और सम्भवतः समुद्र में डूब मरीं। उस बयान में आत्महत्या की कल्पना के पक्ष में सबूत भी दिया गया है। वह सबूत आपने पुलिस में भी भेजा है। दूसरे बयान में आपने सरलाबाई को भगा ले जाने का आरोप मुझ पर लगाया है। यदि इस आरोप को सच मान लिया जाय तो पहले बयान में आत्महत्या के पक्ष में पेश किये गये प्रमाण का क्या होगा?"

— क्रमशः

नोट की कीमत

[श्री मन्नन]

भूखा बंगाल,
नंगा बंगाल,
फुटपाथोंशें पर ला सड़तीं
लुटती
मां-बहिनों की अस्मत,
चिथड़ों में
अस्थि के ढांचे,
कंकाल,
तड़फते मनुज गात्र,
बच्चों के रुंड मुंड रुलते,
लड़ती थी,
गीधों की जमात,
यह दर्द भरी,
हम करुण कथा,
नित पढ़ते थे अखबारों में।
मजबूर
खून के कुछ आंसू
पीकर,
केवल रहजाते थे
हम खुद,
भूखे प्यासे नंगे,
चाहते,
पर कहां दे पाते थे।
धन।
कहाँ?
अरे वह समागया,
सेठों की मोटी तोंदों में
अन्न! अन्न!
अरे जा छिपा कहीं
इनके तहखानों कोठो में,
रोटी! रोटी!
केवल रोटी,
चिल्लाया भूखा बंगदेश
पर दया कहां,
ये नर पिशाच,
चांदी सोना खाने वाले,
पत्थर-दिल,
धन की तृष्णा में,
कर बैठा इतना घृणित काम
इनकी तृष्णा-ज्वाला में जल,
श्मशान बने,
वीरान बने
रे उजड़ गये
रे उजड़ गये
बंगाल देश के नगर ग्राम
प्रतिध्वनित,
एक था चीत्कार,
भूखा बंगाल,
नंगा बंगाल,
यह दर्द भरी,
हम करुण कथा
पढ़ते थे नित अखबारों में।
मैं दर्द भरे,
घायल दिल से,
मानवता की लज्जा रखने,
इन पूंजीपति
पाषाणों से,
याचना
दया की भीख मांग
था निकल पड़ा,
चन्दा करने
सामने,
सेठ की कोठी थी,
जो इसी युद्ध में अभी-अभी
बंगाल देश का खून चूस,
फूटे खंडहर से महल बनी,
मैं गया वहीं,
बोले लाला
'कहिए कैसे कृपा की है।
बोला,
'नित सुनते होंगे,
रेडियो अवश्य ही सेठ साहब,
'हां, हां' बीच ही बोल पड़े,
'सोने का भाव पिचाणु है,
शंका कैसी,
लाओ गहणा,
मैं दूंगा चोखे दाम उठा।
बींध गया तीर से लगे मुझे,
विष-बुझे
कर्ण-कटु शब्द-बाण
पीगया
अनल अपमान घूंट,
साहस बटोर फिर बोल पड़ा,
सोना कैसा? गहणा कैसा?
आया हूं मैं चन्दा लेने
भूखा बंगाल,
नंगा बंगाल,
ये खबरे ऐसी दर्द भरी,
पढ़ते होंगे अखबारों में।
वे उबल पड़े,
थे क्रुद्ध अति,
मुंह रक्त टमाटर लाल, लाल
चन्दा। चन्दा
किस किस को दूं,
कल आये गौशाला वाले,
क्या समझा?
वहां गढ़ी हुई,
रुपयों की कोई खान बड़ी?
फिर एक दस का नोट फेंक,
बोले,
कैसे इन्कार करूं,
तुम परिचित और पड़ौसी हो,
मैं आहत सा,
अपना मुंह ले,
चुपचाप उठा और लौट पड़ा।
इस तरह,
मान-मर्यादा खो
मुश्किल से केवल सौ रुपये,
पूंजीपतियों के इस दुर्ग से,
था मांग-मांग रे जुटा सका।

× × × ×

१२ जनवरी ४६,
रेडियो शाम को बोल उठा
यह दिल्ली है,
खबरें सुनिये
हकुमते आलिया भारत ने
एक खास हुक्म शाया करके
कर दिया रद्द है चलन आज
सौ से ऊपर सब नोटों का,
कहर टूटा
पड़ गई गाज
लुट गया। हायरे डूब गया
रो उठा सेठ,
गिर पड़ा आज मूर्च्छित होकर।
नोटों का बंडल लिए हुए,
आ रहे बैंक से बाढ से थे,
मिल गये सेठ,
वे चीख उठे,
लुट गया, हायरे डूब गया,
लाखों पर पानी फिरा आज,
होगये रद्द फार्म मेरे,
कागज के कोरे टुकड़े हैं
कीमत
अब कहां एक धेला
कीमत! कीमत!
मैं गर्ज उठा
अब भी बाकी क्या है कीमत
लेचुके जान,
पैंतीस लाख,
अब और अधिक क्या चाहते हो
रो उठा सेठ,
रो उठा सेट,
मैं लज्जित हूं,
अब क्षमा करो,
अपने पापों से आज स्वयम्
लुट गया हायरे डूब गया
था पागल वह,
दोनों हाथों
अपना सर उसने पीट लिया।

———

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

डी० ए० वी० कालेज अजमेर

[श्री रामगोपाल विद्यालङ्कार]

★

कालेज के प्रधानमन्त्री एवं प्राण

पं० जियालाल

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के उदयपुर अधिशन से लौटते हुए एक दिन अजमेर में भी ठहरना पड़ा। उदयपुर और दिल्ली के बीच की रेल व्यवस्था ही कुछ ऐसी है कि एक पूरा दिन व्यर्थ में खराब हो जाता है, चाहे वह रेल में खराब कर दें, चाहे अजमेर में बिता दें। मैंने दूसरा मार्ग ही पसन्द किया। सोचा, इस यात्रा में अजमेर के कुछ मित्रों से भेंट मुलाकात का भी लाभ हो जायगा। इसलिए मैं और मेरे साथी अजमेर में उतर पड़े।

आर्यसमाज अजमेर में डेरा डाला। डी० ए० वी० कृषि-औद्योगिक कालेज अजमेर के प्रधान मन्त्री कर्मवीर पडित जियालालजी से मुलाकात हुई। वे उत्साह और लगन के धनी हैं। डी० ए० वी० कालेज के लिए तो उन्होंने नौकरी और घरबार छोड़ कर एक प्रकार से संन्यास ही ले लिया है। करने के लिए कालेज की कार्य और पड रहने के लिये समाज भवन है। वैसे घर का शान्दार मकान है, उच्च-पदस्थ लड़के हैं, मगर उन्हें इससे कोई मतलब नहीं। पंडितजी से पूर्व परिचय था ही, इस लिए खूब दिल खोलकर मुलाकात हुई। आपने कालेज देखने का प्रस्ताव रखा, हमने झट स्वीकार कर लिया। दुपहर का समय निश्चित हो गया। १०-१२ आदमियों का समुदाय था। एक बजे के करीब एक शानदार लारी, जिसे रेल का फर्स्ट क्लास सैलून ही कहना चाहिये, हमें कालेज ले चलने के लिये आ पहुंची। लारी के चारों ओर कालेज की वर्तमान प्रवृत्ति और भावी योजना संक्षिप्त, किन्तु आकर्षक रीति से चित्रित की हुई थी। पूछने पर मालूम हुआ कि यह विशाल काय अनुपम लारी कालेज के लिये अखिलभारतीय दौरा करके दान प्राप्त करने के लिए निर्मित की गई है।

कुछ मिनट लारी की यात्रा करने के बाद हम कालेज पहुंचे। यद्यपि कालेज भवन अभी आधा भी नहीं बन पाया है, जितना भी बना है, बहुत भव्य और प्रभावोत्पादक है। अबतक लगभग ३ लाख रुपया इसमें लग चुका है। वीतराग स्वर्गीय स्वामी सर्वदानन्दजी महाराज के करकमलों से इसकी नींव रखी गई थी और वर्तमान डूंगरपुर नरेश ने इसका शिलान्यास किया था। इस भव्य भवन में गत साढ़े तीन साल से क्लासें चल रही हैं। इंटरमीजिएट तक आर्ट और कामर्स दोनों की शिक्षा दी जा रही है। कामर्स, नागरिक शास्त्र, हिन्दी आदि ऐसे विषयों का चयन किया गया है, जिनका शिक्षण अजमेर के किसी दूसरे कालेज में नहीं और कृषि-शास्त्र का शिक्षण तो सिवाय इस कालेज के अजमेर मेरवाड़ा प्रांत भर में कहीं नहीं होता।

कालेज पाटरी वर्क्स का एक दृश्य।

प्रधान-मन्त्री श्री पंडित जियालालजी से मालूम हुआ कि इस संस्था का उद्देश्य केवल किताबी शिक्षा न देकर जनता के वास्तविक अभावों की पूर्त्ति करना और उन चीजों को आरम्भ करना, है जो कि यहां नहीं है और जिनका अभाव प्रान्त में बुरी तरह खटकता है। उनका संकेत मेडीकल और इंजीनियरिंग कालेजों की तरफ था। इनके लिए वे प्रयत्न और लिखा पढ़ी भी कर रहे हैं, लेकिन युद्ध-कालीन कठिनाइयों के कारण उन्हें वे साधन अभी तक उपलब्ध नहीं हो सके हैं।

इसके अतिरिक्त कालेज का मुख्य कार्य कृषि-औद्योगिक विकास करना है। इस सम्बन्ध में कालेज की ३० लाख रुपये की योजना है। कृषि और विभिन्न कारखानों के लिये लैंड एक्वीजीशन एक्ट के अनुसार ३०० बीघा जमीन प्राप्त की जा रही है और इसकी बहुत कुछ कठिनाई हल भी हो चुकी है। कालेज में साबुन, तेल, चीनी मिट्टी के बर्तन आदि बनने के कार्य आरम्भ भी हो चुके हैं और यह वस्तुएं बाजार में अपनाई भी खूब जारही हैं। कालेज की प्रयोग शाला में सस्ते और अच्छे दंतमंजन, वेजलीन आदि के निर्माण और फल-संरक्षण के परीक्षण भी आरंभ होगये हैं। इन छोटी छोटी योजनाओं के अतिरिक्त कांच के कारखाने, सफेद-सीमेंट बनाने के कारखाने, विशाल पाटरी फैक्टरी खोलने की विस्तृत योजनाएं हैं।

प्रधान मन्त्रीजी से बातें करने और योजनाओं पर दृष्टिपात करने से मालूम हुआ कि वे एक औद्योगिक नगर की सृष्टि करके कारखानों का एक जाल-सा बिछा देना चाहते हैं, जिसमें दुनियां भर के छोटे बड़े सारे उद्योग-धन्धे उचित रूप से समाविष्ट हों। इसके लिए 'आर्यन इन्डस्ट्रीज' के नाम से एक रजिस्टर्ड समिति का निर्माण भी हो गया है, जो द्रुतगति से अपने कार्य संचालन और इस पवित्र उद्देश्य की पूर्त्ति में संलग्न है। डाक्टर विष्णुकुमार कौशल पाटरी विभाग के अध्यक्ष हैं, जो कि बहुत बड़े पैमाने पर शीघ्र ही कार्य आरम्भ करने वाले है। इस कालेज से बड़ी बड़ी आशाएं हैं।

———

व्यापार कक्षा।

कालेज की प्रयोगशाला का एक दृश्य।

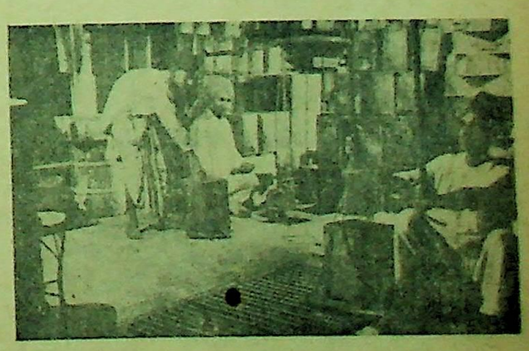

कालेज का साबुन का गोदाम।

जर्मन युद्ध में मित्र-राष्ट्रों की क्षति

युद्ध व्यय

अमेरिका	२,००,००,०००००	डालर
इंगलैण्ड	६०,००,००,००,०००	,,
फ्रान्स	१३,००,००,००,०००	,,
भारत	१,१०,००००००	,,

जनक्षति (मारे गये)

अमेरिका	१८७०००
ब्रिटेन	३६८०००
भारत	६०००

* पेबिस कांफ्रेन्स में उपस्थित आंकड़े

गांधीजी के निजी सेक्रेटरी—श्री प्यारेलाल

[श्री उमाशङ्कर शुक्ल]

"क्या आप हमें अपना फोटो दे सकेंगे ?"

"क्यों ?"

"मुझे काम है। मैंने आप पर एक छोटा सा लेख लिखा है और जिस अखबार में मैंने आप का लेख लिख कर भेजा है, उस अखबार के संपादक ने मुझे लिखा है, कि अच्छा हो प्यारेलाल जी का फोटो मिल सके। इसलिये ही मैं आप से फोटो मांग रहा हूं"—मैंने कहा !

"यह तो ठीक है, पर तुम को मालूम होना चाहिये कि मेरे पास मेरा कोई फोटो नहीं है और फोटो तो मरने के बाद छापा जाता है"—इस प्रकार महात्मा गांधी के प्राइवेट सेक्रेटरी श्री प्यारेलाल ने कहा और वे बापू की कुटिया में तेजी के साथ मुसकराते हुये घुस गये। बहुत कोशिश की, उनका फोटो प्राप्त करने में, परंतु अब तक तो नहीं प्राप्त हो सका है और न जाने कब तक उनका फोटो मिले। यों तो अखबारों में उनके कई फोटो गांधीजी के साथ छपा करते हैं, पर उनका अकेला फोटो नहीं दिखाई देता।

स्व० महादेव भाई देसाई के पश्चात् आप ही महात्माजी के प्रमुख प्राइवेट सेक्रेटरी हैं। आप की सहायता के लिये और भी कई सज्जन हैं, क्योंकि गांधीजी का इतना काम होता है कि सिर्फ एक ही प्राइवेट सेक्रेटरी से काम थोड़े ही चल सकता है। बहुत कम पाठकों को पता होगा कि डा० सुशीला नायर श्री प्यारेलालजी की बहिन हैं, जो गांधीजी के स्वास्थ्य की देखभाल किया करती हैं। पहले मैं समझता था कि प्यारेलालजी गुजरात प्रांत के होंगे, क्योंकि वे गुजराती भाषा इतनी अच्छी बोल और लिख लेते हैं कि मालूम नहीं होता कि प्यारेलालजी गुजरात के न होंगे। किन्तु वे हैं पंजाब के।

प्यारेलालजी ने 'हरिजन' के हिन्दी संस्करण 'हरिजन-सेवक' का संपादन किया था। यद्यपि उन्होंने बहुत ही कम लेख लिखे थे, परन्तु जो कुछ भी लिखा था वह शास्त्रीय ढङ्ग से गंभीरतापूर्वक लिखा था। प्यारेलालजी अंग्रेजी के अच्छे विद्वान हैं और समय-समय पर गांधीजी के भाषणों की जो विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित होती है, वह प्यारेलालजी ही लिख कर संवाददाताओं को दे दिया करते हैं। आजकल उन्होंने समाचार-पत्रों के लिये 'साप्ताहिक चिट्ठी' के रूप में कुछ लिखना प्रारम्भ किया है, जिसमें गांधीजी की हलचलों का विस्तृत रूप से वर्णन होता है। प्रेस प्रतिनिधियों को गांधीजी-सम्बन्धी समाचार अक्सर इन्हीं से ही मिला करते हैं। जब कोई गांधीजी से मिलने आते हैं, उस समय श्री प्यारेलालजी वहीं बैठते हैं और यदि महत्वपूर्ण बात हुई तो नोट करते जाते हैं। आप स्वावलम्बन खूब पसन्द करते हैं। छोटे-मोटे काम वे स्वयं ही अपने हाथों से कर लिया करते हैं। एक दिन अपने छोटे से कमरे में बैठे हुए वे अपनी किताबों तथा अखबारों को

श्री प्यारेलाल

छांट-छांट कर रख रहे थे। मैं उनके पास पहुंचा और कहने लगा कि कमरे में आ सकता हूं। उन्होंने कहा हां-हां आ सकते हैं बशर्ते कि मेरे काम में हाथ बटा सकें। उनके कमरे में आप को ऊंचे दर्जे का चमचमाता हुआ फरनीचर न मिलेगा, किन्तु आप को मिलेंगे पांजरे के छोटे-छोटे से खोखे, जिनमें अनेकों पुस्तकें तथा फाइलें रखी रहती हैं।

उनका बात करने का अपना ढङ्ग है। कोई अगर अनजान आदमी देख ले तो यह नहीं कह सकता कि यही प्यारेलाल हैं क्योंकि वे इतने सरल और सादे रहते हैं। अब तक तो मैंने उन्हें एक कमीज पहने ही देखा है और जब वे सेवाग्राम रहते हैं तो खुले सिर रहते हैं और जब बाहर जाते हैं तो खादी टोपी पहन लेते हैं। गांधीजी की डाक आप ही देखते हैं। अधिक होने पर रामप्रसादजी भी उनकी सहायता करते रहते हैं। प्यारेलालजी के बारे में किसी को कुछ विशेष मालूम नहीं सिवाय इसके कि वे गांधीजी के मुख्य प्रायवेट सेक्रेटरी हैं। मालूम भी कैसे हों-वे अपने बारे में तनिक भी किसी को नहीं बताते, इस डर से कि कहीं कोई उनके बारे में कुछ लिख न दे। गांधीजी के साथ रहते हैं। एक बात और। आपको सायकल चलाना उतनी अच्छी तरह से नहीं आता। पायडल पर से तो बैठ नहीं सकते। कहीं ऊंची जगह से वे सायकल पर बैठते हैं या फिर पीछे के पीटपट से।

आप समय के बड़े ही पाबंद हैं। जो, जिस समय करना है उसी समय करते हैं। आश्रम के छोटे से लेकर बड़े तक उन्हें चाहते हैं। अगर बाहर से कोई यात्री आता है और वह गांधीजी से मिलना चाहता है तो पहिले उसे प्यारेलालजी से मिलना होता है। पहले वे उस सज्जन से पूछते हैं कि गांधीजी से कौन सा काम है, क्योंकि गांधीजी का समय बहुत ही मूल्यवान होता है। प्यारेलालजी नहीं चाहते कि उनका समय फालतू मुलाकातों में जाय। अगर मिलने वाले का सचमुच जरूरी काम हो तो प्यारेलालजी समय निकाल कर गांधीजी से मुलाकात करवा देते हैं, अन्यथा नहीं। अगर मिलने वाले साधारण बातों के बारे में जानना चाहते हैं तो प्यारेलालजी उन्हें कह देते हैं कि आपको अमुक प्रश्न का उत्तर मश्रूवालाजी से मिलेगा। और अमुक प्रश्न का उत्तर जाजूजी से मिलेगा। गांधीजी ने स्वयं इतना लिख दिया है कि अगर उनके विचार कोई पढ़ले तो उसके प्रश्नों का उत्तर मिल जाय। फिर भी लोग उन्हें तंग किया करते हैं।

प्यारेलालजी अपना समय भी फजूल नहीं जाने देते। यहां तक कि कभी कभी अखबार वालों को भोजन करते समय भी खबरें बताते जाते हैं। गांधीजी के वक्तव्य वे ही अकसर निकाला करते हैं। प्यारेलालजी सेवाग्राम आश्रम के एक मौन तपस्वी हैं जिन्होंने सब कुछ बापू के चरणों में समर्पित कर दिया है और उनकी सेवा करने का अटल व्रत लिया है। स्व. महादेव भाई देसाई से भी उन्होंने खूब सीखा है और उन्हीं के पदचिन्हों में वे चल रहे हैं। ईश्वर उन्हें चिरायु करे।

हर प्रकार की स्टेशनरी केश, लेजर हिसाब किताब के रजिस्टर, रजिस्टर मुलाजमीन, रबर की मोहरों व छपाई के लिए हमारी सेवाएं प्राप्त कीजिए।

ओरियंटल स्टेशनरी सप्लाई कं.

चावड़ी बाजार, देहली।

प्यारी बहिनो !

न तो मैं कोई नर्स हूं, न कोई डाक्टर हूं और न वैद्यक ही जानती हूं, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थी स्त्री हूं। विवाह के एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं लिकोरिया (श्वेतप्रदर) और मासिक-धर्म के दुष्ट रोगों में फंस गई थी मुझे मासिक-धर्म खुलकर न आता था, अगर आता था तो बहुत कम और दर्द के साथ, जिससे बड़ा दुख होता था। सफेद पानी (श्वेतप्रदर) अधिक जाने के कारण मैं प्रतिदिन बहुत कमजोर होती जारही थी, चेहरे का रङ्ग पीला पड़ गया था, घर के कामकाज से जी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पतिदेव ने मुझे सैकड़ों रुपये की औषधियां सेवन कराईं, परन्तु किसी से रत्ती भर लाभ न हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुख उठाती रही। सौभाग्य से एक सन्यासी महाराज हमारे दर्वाजे पर भिक्षा के लिए आये। मैं दर्वाजे पर आटा डालने आई तो महात्मा जी ने मेरा मुख देखकर कहा—बेटी, तुझे क्या रोग है जो इस आयु में ही चेहरे का रङ्ग रुई की भांति सफेद हो गया है ? मैंने सारा हाल सुनाया। उन्होंने मेरे पति को अपने ढेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्खा बतलाया, जिसके केवल १५ दिन के सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगों का नाश होगया। ईश्वर की कृपा से अब मैं कई बच्चों की मां हूं। मैंने इस नुस्खे से अपनी सैकड़ों बहिनों को अच्छा किया है और कर रही हूं। अब मैं इस अद्भुत औषधि को अपनी दुखी बहिनों की भलाई के लिये असल लागत पर बांट रही हूं। इसके द्वारा मैं लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वर ने मुझे बहुत कुछ दे रखा है। एक बहिन के लिये पन्द्रह दिन की दवा तैयार करने पर २॥=) दो रुपये चौदह आने असल लागत खर्च होती है और महसूल डाक अलग है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोग में फंस गई हो तो वह मुझे जरूर लिखे मैं उनको अपने हाथ से औषधि बनाकर वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी। यह मेरा प्रण है कि मैं किसी बहिन से दवा की कीमत अपनी असल लागत से एक पैसा भी ज्यादा न लूंगी

जरूरी सूचना—मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का ही नुस्खा मालूम है इसलिये कोई बहिन मुझे किसी और रोग की दवाई के लिये न लिखें।

प्रे मप्यारी अग्रवाल, नं० (३०) बुढलाडा, जि० हिसार (पंजाब)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

महेन्द्र और अंजलि

(पृष्ठ १० का शेष)

थी, जिस स्त्री के नाम की भी इसे खबर नहीं थी — वह विवाहित है या नहीं इस विषय में भी जिसे ज्ञान नहीं और वह इसके प्रेम को स्वीकार करेगी या नहीं इस बात का कुछ ज्ञान नहीं — उस स्त्री के नाम के बिना केवल आंख-मात्र से दिनों के बाद दिनों तक संस्मरण में रखना — यह अशक्य काम महेन्द्र ही कर सकता है। क्योंकि इस सौंदर्य पागलपन में न उलझा होता तो यह समुद्र का तैराक होने के लिये अथवा हिमालय के पहाड़ी शिखरों का सौंदर्य वहां जाकर देखने जैसी किसी अन्य कल्पना में रमता होता।

× × ×

अचानक इस स्त्री से महेन्द्र की भेंट हो गई। वह आगरा गया था — ताजमहल देखने के लिए। ताजमहल देखने के लिए दूसरी टोली भी इसी समय आ चढ़ी और इसमें वह नर्स भी थी। दोनों ने एक दूसरे को आमने सामने देखा। नर्स ने हिम्मत की — 'मैंने तुम्हें कहीं देखा है।'

महेन्द्र ने उत्तर दिया, 'मैंने भी ?'

'कहां पर ? दार्जिलिंग में ?'

'नहीं, वहां तो मैं गया ही नहीं'

'तो ?'

'बताऊं ? — शिमले में··· हास्पिटल में मैंने तुम्हें देखा था। तुम्हारा नाम ?'

'अंजलि'

इतने में साथ के लोगोंने शोर मचाया :

'चलो विभावरी !'

'अंजलि या विभावरी ?' महेन्द्र बोला।

'तुम्हारे लिए अंजलि — उसके लिए विभावरी !'

'मतलब ?'

उत्तर में नर्स ने अपना पता दिया और शीघ्रता से बाहर चली गई।

\+ + +

केवल आंखों का ही स्मरण था। उसमें नाम की और वृद्धि हो गई।

फिर तो महेन्द्र पुनः शिमला गया। विभावरी को मिला। यह विवाहित थी — और अपने पति को रात्रि के समान अनेक गुप्त रहस्यों से भरी लगती थी। इसकी आंखों में नीलाकाश जैसी अतल गहराई थी। हृदय, आकाश जैसा ही निःसीम; स्वतन्त्रता, विचरती बदली जैसी; उर्मि, साध्यरंग जैसी; कल्पना, अकेले विहार करते विहङ्गम जैसी; ये बोलती तो मानों वस्तु को बिना देखे उसके अन्दर की बात कहती हो; इसकी स्वच्छ शोभित दन्तावलि एक दिवस में हजारों मंदहास प्रकट करती। इसकी प्रत्येक बात में अतल गहराई थी। यह मनुष्यों से भी अधिक वस्तुओं में रस लेती। इसके साथ बात करते हुए शब्दों को समझने के लिये वातावरण को पकड़ने के लिये तैयार रहना चाहिये। इसकी अधिकांश बातें बालकपने की सीमा तत्वज्ञान का अन्त जैसा होती; इसके तत्यवान का अन्त, सौंदर्यदृष्टि का प्रारम्भ आत्माभिमुख सीढ़ी का प्रथम सोपान जैसा होता। इसका पति इसकी बात समझता नहीं; ये उसे नहीं समझती। इसी लिये इस स्त्री का नाम विभावरी रखा था; ये रात्री जैसी भयंकर थी। वैसे ही रहस्यमयी थी। गगन जैसी गोल नीले रंग की इसकी आंखों की मोहनी से अलिप्त होकर अपनी वैराग्य वृत्ति अथवा अरसिक वृत्ति वह प्रकट कर चुका था। परन्तु महेन्द्र अंजलि को और अंजलि महेन्द्र को, दोनो एक दूसरे को, अधिकसे अधिक निकट आकृष्ट कर रहे थे।

और अन्त में सामदाम — इन चारों में से एक अथवा चारों उपाय प्रयोग कर के अंजलि और महेन्द्र बिना विवाह किये एक साथ रहने के लिये चल दिये। ये दोनों एक दूसरे के लिये थे — और दूसरे पति के जीवन में जैसे अंजलि आकस्मिक रूप में थी, उसी भांति अंजलि के जीवन में दूसरा पति आकस्मिक रूप में था। इस बौद्धिक पागलपन के साथ कोई भी युगल इस घटना को सामने रख कर जीवन को जंगल में परिणत कर देता। दूसरा कोई इस घटना को मोहयुक्त पागलपन के साथ सम्बद्ध देख कर तत्काल उसका तिरस्कार कर के स्त्री के जीवन को जंगल में परिणत कर देता। केवल मात्र जिन को जीवन में दृष्टि मिली है — ऐसा ही नया युगल सांगोपाग जीवन नौका हांक सकता है।

× × ×

यह दुनियां में हमेशा से होता रहा है कि मोह की प्याली में रखी शराब को पी लेने के बाद तरङ्ग चली जाती है — कल्पना मर जाती है — रस बह जाता है – मिथ्या बुद्धिवाद जाग उठता है। यह बुद्धिवाद पहले जहां काल्पनिक सौंदर्य था, वहां अब वस्त्रविहीन पृथ्वी का मान कराता है; बाद में नित्य जीवन क्रम का बौद्धिक पागलपन प्रकट होजाता है। और यह होने पर पुरुष और स्त्री — पुरुष और स्त्री रूप में मिटकर घर सम्भालने वाले ताला और कुंजी बन जाते हैं। रस भरे उर्मिमय जीवन में से बुद्धिमय मैत्री में — और उससे भी अधिक उच्च — जो है तो अकथनीय परन्तु एक दूसरे के सान्निध्य से अनुभव किया जा सकता है, ऐसे अज्ञेय प्रदेश में प्रवेश करने के बदले, बहुत से युगल मोह और पुरानी लीक — इन दो में ही जीवन की समाप्ति कर देते हैं। प्रथम को ये प्रेम मानते हैं जो कि शुद्ध रूप से नशा है। दूसरे को ये जीवनरस मानते हैं जोकि वस्तुतः बौद्धिक पागलपन है।

परन्तु किसी समय — कभी किसी समय-सृष्टि के लिये एक दूसरे से युगल मिल जाते हैं — अचानक, उनकी दुनियां में अदृष्टपूर्व सुन्दर वातावरण उत्पन्न हो जाता है।

महेन्द्र और अंजलि एक दूसरे के लिये थे। और उनके संसर्ग से जो वातावरण उत्पन हुआ वह सौंदर्य से भरपूर था। शरीर — मन — बुद्धि — सभी एक ही वस्तु को मानो समझते थे; जीवन में थोड़ी भी कर्कशता उत्पन्न हो, थोड़ा भी विसंवाद प्रतीत हो – ऐसा स्वर तो था ही नहीं।

× × ×

बहुत सी आकाशी कल्पनाएं खोटी होती हैं, तो भी असुन्दर नहीं प्रतीत होती; बहुत सी मनोहरी कलाकृतियां समझ में तो नही आती, परन्तु हृदय तरंग को जगा सकती हैं; प्रकृति में बहुतेरे मनोरम स्थान रहने योग्य नहीं होते, तो भी इनका निरन्तर निवास स्मृति में बना रहता है; जीवन की बहुतेरी सुन्दर वस्तुओं को भूलना आवश्यक होता है, परन्तु इनको भूलने का प्रयत्न ही इन की याद को अधिक ताजा रखता है। अंजलि के स्मृतिमात्र रह जाने पर भी महेन्द्र उसे भूल नहीं सका। भूलने का प्रयत्न भी नहीं कर सका।

किसी समय अजेय माने जाने वाले दिक् और काल भी मनुष्य के हाथ से पराजय स्वीकार कर लेते हैं।

आज वही मनोहारी शान्त चान्दनी खिली है: आकाश हंस रहा है: पृथ्वी हंस रही है सम्पूर्ण सृष्टि इसी हास्य में नहा रही है।

महेन्द्र हमेशा के नियमानुसार अपनी बंगली के पास की गली में घूम रहा है।

और अचानक, आज अंजलि का मृत्युदिन है — यह याद करके विशाल घास से आच्छदित मैदान में से होकर अपने बंगले की ओर जाने के लिये निकला।

ये वहां पहुंचा।

दो शान्त सीधे तने पहरेदार खड़े थे। जो दिया हमेशा जलता था वह दीवानखाने में मन्दप्रकाश कर रहा था। सभी व्यवस्थित था — था वैसा ही था — कोई वस्तु अस्तव्यस्त न हुई थी। कोई वस्तु अपने स्थान से खिसकी न थी। जिस स्थिति में एक वर्ष पहले दीवानखाना छोड़ा गया था, उसी स्थिति में वह आज भी था।

पास खड़े पारिजात के वृक्ष के फूल अपनी धीमी और शांत परिमल फैला रहे थे। रजनीगन्धा के फूल की सुगन्ध लेकर पवन लहरें विचर रही थीं।

महेन्द्र धीमे डगों से ऊपर चढ़ा।

आश्चर्यमुग्ध पहरेदार और गुलाब के फूल — दोनों इन पुरुष को निहार रहे थे। आकाश के ताराओं की भांति मोगरे के कुसुम, उसे अन्दर जाते देख रहे थे — और धीमे श्वास में दूसरे अनेक फूलों के कान में कह रहे थे :

'ये कहां जाता है ? जिसे देखने जाता है वह बाई — रूप की राशि तो — अपनी सुगंध में गहरी निद्रा लेती है !'

महेन्द्र अन्दर गया।

घर का प्रत्येक खण्ड — प्रत्येक कोना — मानो उनकी आंख हों; सामने ताकते हुए देख रहे थे। वहां उसकी कुरसी — जिस भांति इसने अन्तिम समय जाते हुए थोड़ी तिरछी छोड़ी थी उसी प्रकार पड़ी थी। टेबल का अर्द्ध खुला खाना किसी की राह देख रहा था। अपने अन्तर को बताने के लिये किसी के मृदुस्पर्श की आशा रखे — एक पुस्तक, बीच में रखे महेन्द्र के फोटो सहित — टेबल पर खुली पड़ी थी। कोने में — एक स्थान पर जाते-जाते अंजलि द्वारा फेंका गया शाल अस्त व्यस्त एक कोच के ऊपर से नीचे लटक रहा था।

महेन्द्र अत्यन्त धीमे पगों से आगे बढ़ा।

[शेष पृष्ठ २३ पर]

महान बाजीकरण व परमपौष्टिक

अनंगप्रभा याकुती

केसर, कस्तूरी वगैरह कीमती, पौष्टिक व स्वास्थवर्धक वनस्पतियों के योगसे बनी हुई यह याकुती पौरुष हीनता, शीघ्र पतन व स्वप्नदोष को मिटा कर पतली धातु को गाढ़ा करती है, और शुद्ध रक्त व वीर्य पैदा करके पूर्ण पुरुषत्व प्राप्त कराती हैं, फी शी० रु० १०) दस।

मदनमंजरी फार्मेसी हेड आफिस — जामनगर (काठियावाड़)

देहली—जमनादास एंड कं० चांदनी चौक | जोधपुर एजेंट-रामनाथ मांगीलाल गांधी
जैपुर—राधेश्याम रामेश्वरदयाल चांदपोल | गनेशीलाल श्यामलाल कटला बाजार
उज्जैन—डा. एल. पी. भार्गव पटनी बाजार | और श्रीकृष्ण बद्रीदास चूड़ीधर बिल्डिंग

ब्रिटिश मजदूरदल की असमर्थता

[पृष्ठ ६ का शेष]

इससे इंगलैंड के मतदाताओं को जो निराशा और झुंझलाहट हुई, उसका परिणाम यह हुआ कि १६३१ में चुनाव में मजदूर दल के सदस्य २८८ के स्थान पर केवल ५२ चुने गये।

१६३२ की लेबर कान्फ्रेन्स में यह आवाज बुलन्द की गई कि अब सुधार-नीति से कुछ अधिक क्रान्तिकारी और स्वतंत्र कार्यक्रम पर ध्यान दिया जाना चाहिये। इण्डिपेण्डेण्ट लेबर पार्टी की इस आवाज को भी सुना गया कि देश का आर्थिक संगठन योजनापूर्वक होना चाहिये और उसके लिये उत्पादन के मुख्य साधनों पर राज्य का स्वामित्व स्थापित किया जाना चाहिये। मांग की गई कि बैंक आफ इंगलैंड व अन्य ज्वायण्ट स्टाक बैंकों, कोयला, विद्युत, रेलों, कृषियोग्य भूमि आदि को सीधा राज्य के स्वामित्व या संचालन में ले आना चाहिए। द्वितीय विश्व-युद्ध से पूर्व अनेक मजदूर नेता यह कहते हुए सुने जाते थे कि अब हमें निरपेक्ष बहुमत प्राप्त किये बिना शासन का उत्तरदायित्व नहीं सभालना चाहिए।

द्वितीय विश्व-युद्ध का घनघोर संकट आने पर मजदूर दल फिर देश की संयुक्त सरकार में सम्मिलित हो गया। इस बार मजदूर-दल के नेता अनुदारदल के कुचक्र में न फंसने के लिये अधिक सतर्क थे। मजदूरदल के स्वरूप और नेतृत्व में भी अनेक परिवर्तन हो चुके थे। प्रतिगामी अनुदारदल की कुटिल नीति को भांप कर, युद्ध समाप्त होने से पूर्व ही, मजदूर-दल संयुक्त सरकार से पृथक् हो गया। युद्ध के बीच में ही चुनाव हुआ। देश ने भारी बहुमत से तीसरी दफा मजदूर-दल के सिर पर विजय का सेहरा बांधा। मजदूरदल की यह विजय अपूर्व और निरपेक्ष थी। मैं यह लिखने के लिये बाधित हूं कि मजदूरदल की यह शानदार विजय भी दलरूप में उसके किसी कर्तृत्व के कारण नहीं हुई थी; अपितु कुछ नवीन आशाओं और ऐतिहासिक शक्तियों की विजय थी, जिन्हें मजदूरदल के अतिरिक्त और कोई संगठित साधन प्राप्त नहीं था। यह देखना शेष है कि तृतीय मजदूर सरकार की क्या गति होती है।

× × ×

नवीन सरकार के सम्मुख, स्वाभाविक रूप से, सर्वोपरि प्रश्न था युद्ध में विजय प्राप्त करना। युद्ध विजय का श्रेय मजदूर सरकार ने चर्चिल सरकार से चुरा लिया। युद्ध समाप्ति के बाद मजदूर सरकार का वास्तविक परीक्षा काल प्रारम्भ होता है। तीन प्रमुख समस्याएं सन्मुख थीं — अपने देश का पुनर्निर्माण, ब्रिटिश साम्राज्य की युद्धोत्तरकालीन व्यवस्था, और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति।

संकीर्ण राष्ट्रीय स्वार्थों और वर्ग स्वार्थों पर संगठित मजदूरदल का देश के पुनर्निर्माण पर सर्व प्रथम और सर्वाधिक ध्यान देना स्वाभाविक था। देश के वाणिज्य-व्यवसाय, भवन निर्माण और कोयला-खानें आदि राष्ट्रीय महत्व के कार्य सर स्टाफर्ड क्रिप्स, एन्यूरन बेवन, सर बेन स्मिथ आदि योग्य, उत्साही, सिद्धान्ती और सूझ-बूझ वाले व्यक्तियों को सौंपे गये। सामाजिक न्याय और लोकहित की अनेक योजनायें बनाई जा रही हैं! प्रथम समस्या के हल करने में तृतीय मजदूर मन्त्रि-मण्डल अवश्य पूर्वापेक्षया अधिक कटिबद्ध और अग्रसर प्रतीत होता है, हालांकि इस पर सम्मति बनाने व प्रकट करने का समय अभी नहीं आया है।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का विभाग दल के जबर्दस्त व्यक्ति और शक्तिशाली ट्रेड यूनियन आन्दोलन के नेता बेविन ने सम्भाला है। देखना है कि वह वैदेशिक विभाग की अनुदार और साम्राज्यवादी परम्पराओं में पली स्थिर सिविल सर्विस से पिण्ड छुड़ा कर कहां तक ऊपर उठ सकता है। अब तक का उसका रिकार्ड पूर्ववर्ती विदेश मंत्रियों के रिकार्डों से बहुत भिन्न नहीं है। इण्डोनेशिया, इण्डोचाईना, चीन, ईरान, मध्यपूर्व, तुर्की, मिश्र, ग्रीस, स्पेन, रूस और परास्त जर्मनी व जापान के सम्बन्ध में ब्रिटेन की जो नीति अब तक प्रकट हुई है, वह अनेक बातों में निश्चित रूप से प्रतिगामी है। प्रत्येक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन और समस्या में मजदूरदली ब्रिटेन समाजवादी रूस से मोर्चा लेता हुआ दृष्टिगोचर होता है। संयुक्तराज्य अमेरिका से प्राप्त ऋण ने मजदूर सरकार के पैरों में एक और बेड़ी डाल दी है। हम यह नहीं कहना चाहते हैं कि रूस प्रगतिशीलता, क्रान्ति, न्याय और विश्वशांति का ठेकेदार है। किन्तु इतना स्पष्ट है कि ब्रिटिश मजदूर मंत्रीमण्डल अपनी वैदेशिक नीति में संकीर्ण राष्ट्रीय स्वार्थों और साम्राज्य स्वार्थों से प्रेरित होकर, द्वितीय विश्वयुद्ध में उत्पन्न व उन्मुक्त अनेक नवीन ऐतिहासिक शक्तियों, प्रवृत्तियों व आशाओं के पूर्ण विकास के मार्ग में बाधक हो रहा है। यदि यही कार्य चर्चिल व ईडन करते तो, निःसन्देह मजदूरदल के बाबदूक भेड़िये उन्हें खा जाते। चर्चिल दल को परमात्मा का धन्यवाद करना चाहिये कि वह उनके कार्य मजदूरदल से करा रहा है।

ब्रिटिश साम्राज्य के सम्बन्ध में मजदूर सरकार की प्रगति अब तक शाब्दिक मायाजाल और सहानुभूति प्रदर्शन तक ही सीमित है। भारत-मंत्री पेथिक लारेन्स वृद्ध और शक्तिशून्य हैं। लार्ड की नवीन उपाधि वृद्धावस्था में च्यवनप्राश के बजाय पोस्त का ही काम करेगी। कालानियल मंत्री सूझबूझ से शून्य जाहिल हैं। उपनिवेश तो कामनवेल्थ के सदस्य हैं। उनका तो प्रश्न ही नहीं, भारतवर्ष और अन्य आधीन स्वदेशों के सम्बन्ध में चिन्ता करने की अभी मजदूरदल के आला नेताओं को फुर्सत नहीं है। उनके सम्बन्ध में तो अभी जानकारी प्राप्त करने और सद्भावना जाग्रत करने के प्रयत्न हो रहे हैं। एक पार्लमेंटरी गुडविल मिशन भारत का दौरा कर रहा है। क्या विडम्बना है! हाल में न्यूयार्क में एक प्रेस प्रतिनिधि से भेंट करते हुए मजदूर सरकार के प्रमुख और प्रभावशाली मंत्री हर्बर्ट मारिसन ने, लगभग चर्चिल की ही शब्दावली में, स्पष्ट कह दिया है कि हम ब्रिटिश साम्राज्य का दीवाला निकालने के लिये मंत्री नहीं बने हैं। भविष्य के गर्भ में चाहे कुछ ही छिपा हो, इतना स्पष्ट है कि साम्राज्य के सम्बन्ध में अनुदारदल और मजदूरदल में इतना ही अन्तर है जितना चर्चिल की बदनाम घोषणा में और हर्बर्ट मारिसन के ताजा वक्तव्य में। भारतवर्ष यदि रह-रह कर ब्रिटिश मजदूरदल से आशायें लगाता है तो इस के कारण उसकी अपनी असहायावस्था और आशावाद हैं, न कि उस दल की प्रगतिशीलता।

× × ×

मजदूरदल की असफलताओं और उससे निराशाओं की यह शृंखला अकारण या आकस्मिक नहीं है। इसे समझने के लिये हमें मजदूरदल के निर्माण के इतिहास, संगठन और स्वरूप को जानना चाहिये। इन पर हम आगामी लेख में यत्किंचित् प्रकाश डालने का प्रयत्न करेंगे।

———

१६४४ के परिणाम

हिन्दुस्थान

ने सफलता की एक और मंजिल पूर्ण की

❀ उन्नति पर प्रकाश ❀

चालू बीमा	३२ करोड़ से ऊपर
कुल पूंजी	६ करोड़ ८६ लाख से ऊपर
प्रीमियम की आय	१ करोड़ ५० लाख से ऊपर
दावे का भुगतान (१६४४)	३७ लाख ८० हजार से ऊपर
नया कारोबार (१६४४)	१० करोड़ रुपये से ऊपर

हिन्दुस्थान को आपरेटिव इन्श्योरैंस सोसायटी लि०

हेड आफिस—हिन्दुस्थान बिल्डिंग्स, कलकत्ता।
देहली ब्रांच—हिन्दुस्थान बिल्डिंग्स, न्यू देहली।

आपके सारे परिवार के लिए सर्वोत्तम पेय

मिलर

'मिलर की चाय'

चाय

अगर आप अपना स्वास्थ्य कायम रखना चाहते हैं तो सदा 'मिलर की चाय' ही इस्तेमाल किया करें।

क्योंकि

'मिलर की चाय' और तमाम चायों से सर्वश्रेष्ठ है। इससे जीवन का सच्चा आनन्द व स्फूर्ति प्राप्त होती है, दिन भर की थकावट को दूर करके दिल व दिमाग में ताजगी पैदा करती है। जायके व खुशबू में भी सर्वोत्तम है।

सब-एजेन्सी व आर्डर बुक कराने के लिए निम्न लिखित पते पर पत्र-व्यवहार करें या स्वयं तशरीफ लायें:—

पैरेडाइज एण्ड कम्पनी,

टेलीफोन नं० ५३६८ (चीफ एजेण्ट— एस० मिलर टी कम्पनी)

हौज काजी, (थाने के सामने) दिल्ली।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

हम ही अपने बालकों के दुश्मन हैं !

[श्री भागीरथ शर्मा, इन्दौर]

भारत में राजनीतिक प्रश्नों की हम चर्चा करते हैं, आर्थिक और धार्मिक प्रश्नों पर हम विचार करते हैं, मजदूरों और स्त्रियों के शक्तिशाली आन्दोलन हमारा ध्यान आकृष्ट करते हैं, लेकिन मासूम बालकों की ओर, जो हमारे सबसे अधिक लाडले हैं और, जिन पर देश का भविष्य निर्भर है, कोई ध्यान नहीं देता। इसी शोचनीय दशा की ओर लेखक ने ध्यान खींचा है।

आज के हिन्दुस्तान में मनुष्य के बचपन की याने बालक की स्थिति बड़ी दयनीय है। यहां राजकीय प्रश्न विचारणीय है, आर्थिक और धार्मिक प्रश्नों पर विचार किया जाता है, किंतु बालक का प्रश्न मानों कोई प्रश्न ही नहीं है। राजकीय संस्थाएं कहती हैं कि राजनीति में अन्याय हो रहा है, मजदूर दल आवाज उठा रहा है कि हमारा दम घोटा जा रहा है, किसान सभाएं कहती हैं कि किसानों के साथ अन्याय हो रहा है, स्त्री परिषदें अपनी स्वतंत्रता के खतरे में पड़ जाने की आवाज को बुलन्द कर रही हैं किन्तु एक प्रसिद्ध शिक्षण शास्त्रिणी के शब्दों में 'आज तक ऐसा किसी ने नहीं कहा कि बच्चे के साथ अन्याय हो रहा है, अत्याचार हो रहा है।'

सचमुच वस्तुस्थिति ही ऐसी है। स्त्रियों, मजदूरों और किसानों के पास अपने प्रति हो रहे अन्यायों का विरोध करने के लिये उनकी अपनी बुलन्द आवाज है, जनता का समर्थन प्राप्त करने के लिये जोशीले भाषण और क्रान्तिकारी गानों का आकर्षण है, और है रेडियो, लाउड स्पीकर तथा चन्दे द्वारा प्राप्त धन राशि। किन्तु यहां तो बालकों के पास विरोध प्रकट करने का साधन केवल रुदन है। आंखों से निकले हुए आंसुओं के द्वारा वे अपनी स्थिति प्रौढ़ को समझाने का प्रयत्न करते हैं। आंसुओं के सिवाय इन निरीह बालकों के पास और है ही क्या ? जब प्रौढ़ के अत्याचारों में वृद्धि हो जाती है तब बालक अपनी रुग्णावस्था या मृत्यु द्वारा उसका प्रगटीकरण करता है।

जन्म के साथ ही

बालक के साथ इन अन्यायों की शुरुआत उसके जन्म के साथ ही हो जाती है। जन्म के समय नवजात शिशु की अपेक्षा प्रसूता का अधिक ध्यान रक्खा जाता है, उसकी अधिक सम्भाल की जाती है। तब शिशु के सम्बन्ध में तो सिर्फ इतना ही देखा जाता है कि वह जीवित है या नहीं। किंतु जन्म के समय एक नये संसार में प्रवेश करने वाले शिशु के लिये इस नये वातावरण की हवा और प्रकाश अनुकूल होगा या नहीं ठण्ड या गरमी उसके अनुकूल होगी या नहीं, स्नान करने, उठाने या लेने के समय प्रौढ़ के कठोर और रुखे हाथों का स्पर्श शिशु का अत्यन्त कोमल शरीर सहन कर सकेगा या नहीं ? आदि बातों पर कोई ध्यान नहीं देता। बालक पेशाब करके गद्दी को खराब न करदे, इस स्वार्थ भावना के कारण मोम कपड़ा बालक के नीचे बिछाया जाता है, किंतु फूल से भी कोमल बालक के लिये वह अनुकूल होगा या नहीं इस ओर तो ध्यान दिया ही नहीं जाता।

पुत्र जन्म के बाद कई बाहरी दिखावे कर प्रौढ़ अपनी भावुकता को शांत करता है। नव-शिशु के आगमन की खुशी में बन्दूकें छूट रही हैं, बाजे बज रहे हैं मिठाइयां बांटी जा रही हैं, पड़ोसी, मित्र और सगे-सम्बन्धी नव शिशु को देखने के लिए आ रहे हैं, काफी चहल-पहल मच जाती है, घर में एक मेला सा लग जाता है। एक ओर यह अपनी ख्वाहिश पूरी करने का मजमा लग रहा है, दूसरी ओर एक अंधकार और अपर्याप्त हवा वाले कमरे में पड़ा हुवा नव बालक अपने आपको इस दुःखमय वातावरण में आया हुआ महसूस करता है। बाजों और बन्दूकों की कर्कश आवाज तथा उपस्थित लोगों का कोलाहल उसके कोमल कान कैसे सहन करते होंगे ? इस पर कोई ध्यान नहीं देता। जन्म से पहिले वह एक अखण्ड शांति के वातावरण में था, किंतु उसके लिए इस तरह प्रतिकूल वातावरण रच कर उसका स्वागत किया जाता है। इस रचना में प्रौढ़ की अपनी इच्छाओं की पूर्ति निहित है, अपनी स्वार्थ साधना है, बालक का कोई ध्यान नहीं ! प्रौढ़ का यह सब नाटक क्या है ? बालक के प्रति यह अन्याय है।

नव शिशु की यह प्रारंभिक असम्हालता उसमें 'जन्म-भय' उत्पन्न करती है और यही 'जन्म-भय' बालक में पीछे हट (साइकिक रिगरेशन) की भावनाएं पैदा करता है। फलतः बालक रोतला, चिड़चिड़ा और डरपोक बनता है। बाल मनोविज्ञान के ताजे पृष्ठ यह बताते हैं कि ऐसा बालक खड़ा होना और चलना देर से सीखता है, उसके दांत देर से आते हैं और मातृ दूध छुड़ाने में काफी समय लगजाता है। वह प्रायः ऊंघा करता है, नींद में चमकता है, परिस्थिति से दूर भागता है और रक्षण मांगता है। बालक के प्रारम्भिक जीवन की ये विकृतियां प्रौढ़ की देन हैं।

प्रौढ़ के निरंकुश शासन में बालक की छोटी से छोटी आवश्यकताएं ठुकरा दी जाती हैं। कपड़ा पहनने में बालक अपनी सुविधा की बलि देकर प्रौढ़ की पसन्दगी और शान को सहन करता है।

इसी तरह नहाने, दूध पीने, सोने और प्रौढ़ों द्वारा उठाये जाने आदि अपनी दैनिक क्रियाओं में बालक, प्रौढ़ के कई अन्यायों के घूंट प्रतिदिन पीता है। यहां तक कि उसे अपनी जन्म देने वाली मां के हाथों जहर (अफीम) भी प्रतिदिन पीना पड़ता है। अशिक्षित माताएं अपने अपने बच्चों की चंचलता को फूटी आंखों भी नहीं देखना चाहतीं। वे उन्हें सदा सुदी सा पड़ा रहना देखना पसन्द करती हैं। इसीलिये वे अपने बच्चों को प्रतिदिन अफीम खिलाती हैं। असहाय बालक के प्रति मानव के इस भयंकार अन्याय और कुकृत्य के लिए कोई सजा नहीं है।

इस समय तक बालक लगभग वर्ष का हो जाता है, अब वह चीजों को उठाने रखने लगता है, थोड़ा बोलने लगता है।

एक वर्ष के बाद

चीजों को उठाने और रखने की प्रवृत्ति द्वारा बालक अपनी हलचल पर काबू (मूविंग-कण्ट्रोल) और अपने हाथों में वस्तु को पकड़ सकने की शक्ति को दृढ़ करना चाहता है किन्तु प्रौढ़ को बालक की इस विकासिक प्रवृत्ति में तोड़-फोड़ के दर्शन होते हैं, जिससे यह बालक की उस प्रवृत्ति में रुकावट डालता है। प्रौढ़ का इस समय का यह अवरोध बालक में दब्बूपन और निष्क्रियता का निर्माण करता है।

बालक को जलदी चलता हुआ देखने की अपनी लालची मनोवृत्ति के कारण प्रौढ़ उसे गाड़ी देता है और उसके सहारे बालक को जल्दी चलना सिखाने का प्रयत्न करता है। किंतु चलने से सम्बन्धित आवश्यक अंगों की पूर्व तैयारी न होने के कारण प्रौढ़ के इस व्यवहार से बालक को बड़ा कष्ट होता है। यह अप्राकृतिक साधन और यह अस्वाभाविक प्रयत्न बालक में शारीरिक विकृति को पैदा कर देता है, जो किन्हीं बालकों में तो जीवन पर्यन्त पाई जाती है।

चलने की शक्ति एक प्राकृतिक शक्ति है। इसे बिना अप्राकृतिक साधनों के ही विकसित होने देना चाहिये। किंतु बालक का युगों का शत्रु प्रौढ़ उसे प्रकृति माता की सुव्यवस्था और सुशासन में नहीं रखता। उन्नत कहे जाने वाले राष्ट्रों में तो शिशुओं को उनके प्राकृतिक भोजन (मातृ-दूध) से भी वंचित रखकर अप्राकृतिक दूध की व्यवस्था की जाती है अपने बच्चों के प्रति इतनी निर्दयता तो बिल्लियां और कुत्तियाँ भी नहीं करतीं।

बालक की तुतलाहट उसकी एक बड़ी विवशता है। अतः ऐसे बालक के सामने तो स्पष्ट उच्चारण उपस्थित करना चाहिये, ताकि वह उसे ग्रहण कर सके। किन्तु प्रौढ़ उसकी यह तुतलाहट सुनकर आनन्द में विभोर हो जाता है। शिशु के साथ आमोद करता हुआ वह स्वयं भी शिशु के शब्दों को तुतलाकर दुहराता है फलतः बालक को शुद्ध उच्चारण करने को मिलता ही नहीं है और उसकी यह विवशता उसके जीवन के साथ बंध जाती है। प्रौढ़ का यह क्षणिक आमोद कितना भयंकर है इस ओर आज तक किसी ने ध्यान दिया ?

अंगों की पुष्टता और उन पर अपना अधिकार प्राप्त कर लेने के बाद बालक अपने निज के कार्यों में प्रौढ़ के अवलम्बन से मुक्त होना चाहता है। वह स्वयं अपने हाथों दूध पीना, कपड़े पहिनना और जूते पहिनना चाहता है। किंतु अपनी व्यवस्था का ध्यान रखते हुए प्रौढ़, बालक की इस स्वाधीनता में अवरोध डालता है। स्वयं दूध पीने से बालक कप फोड़ देगा या दूध कपड़े पर डाल कर कपड़ा गंदा कर डालेगा, इस ओछी वृत्ति से प्रेरित होकर माता स्वयं बच्चे के गले में दूध डाल देती है तब बालक उसे पीता है; दूध की तरह नहीं, दवा की तरह; खुशी से नहीं, अन्याय को सहन कर। सौभाग्य से यदि कहीं बालक को अपने हाथों दूध पीने की सुविधा मिली भी, तो दूध का बर्तन इतना बड़ा होगा कि जिसे बालक सुविधा से उठा न सके किंतु, सदा से कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता आया बालक इससे निराश नहीं होता, वह उसी बर्तन को उठाने का प्रयत्न करता है और दो-चार बार की लड़खड़ाहट के बाद आखिर उसे उठा ही लेता है। अपनी इस सफलता पर उसे इतनी ही खुशी होती है, जितनी एक प्रसिद्ध विजेता को।

बालक की जरूरतें

अपनी प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति का प्रौढ़ ने सदा ध्यान रखा है। उसकी प्रत्येक आवश्यक वस्तु घर में मौजूद है किन्तु बालक की आवश्यकता मानों कोई आवश्यकता ही नहीं, घर में मानों उसका कोई अस्तित्व ही नहीं। प्रौढ़ का अपना बैठक का कमरा है, पुस्तकालय है, कपड़े टांगने की व्यवस्था है, चीजें रखने के लिए पेटी है किन्तु बालक के लिए इतने बड़े घर में एक कोना भी सुरक्षित नहीं है। प्रौढ़ के अपने आमोद-प्रमोद के सभी साधन घर में मौजूद हैं और बालक के लिए मौजूद हैं सभी प्रकार की बंदिशें।

घर की सारी व्यवस्था और सजावट

CC0. Gurukul C...

प्रौढ़ अपना ध्यान रखकर करता है। उसकी बैठक के कमरे में बड़े २ कीमती सोफे और बड़ी-बड़ी आलमारियां हैं किंतु बालक के लिये एक छोटी मामूली कुर्सी किसी धनिक के कमरे में भी नहीं देखी गई। दीवालों पर बड़े-बड़े ऊंचे चित्र लगे हैं, किन्तु बालक की दृष्टि का ध्यान रखकर लगाये गये चित्र कहीं नहीं देखे गये। चित्र ही क्या, पीने का पानी भी इतनी ऊंचाई पर रखा जाता है कि बालक स्वयं लेकर नहीं पी सकता। इस कठिनाई के कारण बालक को कई बार तो प्यासा रह जाना पड़ता है, क्योंकि आज की माताएं इतनी सीधी नहीं हैं कि वे बालक की बार-बार की पानी की मांग को सहर्ष पूरी करती जांय। मैंने कई बालकों को इस कठिनाई का हल यों करते देखा है, वे चुपचाप पड़ोसियों के घर जाते हैं और पानी पी आते हैं या हौज के नीचे लगे हुए नल को खोल कर पानी पी लेते हैं अथवा प्रौढ़ की आंख बचाकर अपने घरों में पड़े हुए लोटे या ग्लासों में बचे हुए पानी को पी लेते हैं। कौन जाने वह पानी केवल उनकी प्यास ही बुझाता होगा या स्वास्थ्यप्रद भी होगा ?

अपने बच्चे भी अछुत !

कई धर्मान्ध घरों में तो बालक की स्थिति अछूत की सी है। वहां उसे खाने पीने की छू जाने वाली चीजों से दूर रक्खा जाता है और चूंकि वह अछूत है घर के देवमंदिर की सीमा में भी पैर नहीं रख सकता। दादाजी पूजन कर रहे हैं. प्रसन्न वदन बालक किलकारियां मारता हुआ अपनी किसी प्रसन्नता को व्यक्त करने के लिये दादाजी की ओर दौड़ता आ रहा है, दादाजी दूर से ही चिल्लाते हैं — "दूर रह अभी मुझे मत छूना, मैं पूजन कर रहा हूं।" दादाजी की ही कर्कश आवाज से बालक की सारी प्रसन्नता न जाने कहां चली जाती है, वह एक लोह की प्रतिमा सा वहीं खड़ा रह जाता है। प्रौढ़ का यह व्यवहार क्या है ? मानव के विशुद्ध बचपन का असहनीय अपमान !

काश ! पुजारीजी की खुली आंखें इस अपमानित सच्चे बाल-देवता को परख पातीं। इनके एसे उपेक्षित जीवन से प्रौढ़ यह आशा करता है कि ये उत्तम नागरिक बनें, समाज सेवी बनें, देश भक्त बनें, विज्ञानवेत्ता बनें। यह आशा कितनी फलवती होती है इसे अपनी आंखों ही देख लेता है।

आज के ये ही बालक कल के नागरिक होंगे। संसार के समस्त राजनैतिक सामाजिक और आर्थिक सूत्र इनके हाथों में होंगे। अतः इस बात से तो इन्कार किया ही नही जा सकता कि बालक की उन्नति राष्ट्र की उन्नति है।

बालक की उपेक्षा बहुत हो चुकी समय की मांग है कि अब संसार बालक की ओर मुड़े। बालक का सर्वांगीण विकास ही एक नयी सृष्टि की रचना कर सकता है।

स्वाधीनता की प्रतिज्ञा लेने वालों से

[श्री प्रभुदास गांधी]

सोलहवीं बार हम स्वाधीनता की प्रतिज्ञा ले चुके। देश भर के जिस जिस कोने में लोगों ने मुर्दा बन कर जिंदगी बिताना नापसंद किया है वहां बड़ी सावधानी के साथ यह प्रतिज्ञा दोहराई गई। हमने कहा, हम आजाद रहेंगे हमें गुलाम बने रहने का कोई कारण नहीं, हमारा जन्म गुलाम बने रहने के लिये हरगिज नहीं हुआ है। हमने कसम खाई कि हम जूझेंगे, जूझते ही रहेंगे जब तक अपनी भारत माता की बेड़ियां तोड़ न देंगे, मरेंगे फना हो जायेंगे पर हमारा कदम पीछे न हटेगा। हमने घोषणा की कि हमतो अपनी जान खपाने के लिये तुले हुए हैं उसमें दूसरों का बुरा करने का इरादा रत्तीभर नहीं है, हम किसी को सताना नहीं चाहते, एक अंग्रेज तकको छूना नहीं चाहते। हम तो उन परिंदों की तरह हैं जो अपने पिंजड़े से छूटना ही चाहते हैं। पिंजड़े वालों से हमें कोई अदावत नहीं है। हमने फिर से प्रतिज्ञा की कि भारत माता को पूर्ण स्वतंत्रता दिलाने के लिये हम लगातार कुछ न कुछ उद्यम करते रहेंगे, सुस्त न बैठेंगे, अपने महान नेता, गांधीजी के बताये हुए सोलह सत्रह कामों में से एक न एक काम जितना बन पड़ेगा, करेंगे। हमने स्वीकार किया तोड़-फोड़ में हमें अपनी स्वाधीनता नहीं दिखती, जोड़ने और बनाने में ही हमें अपनी सच्ची तरक्की दिखती है। हमने दोहरा दोहरा कर अपना संकल्प पक्का किया कि हम अपने भाइयोंसे एका साधेंगे पड़ौसियों को अपनायेंगे और सबसे पहिला काम भूखों को, खाना खिलाने नंगों को कपड़ा देने अपढ़ों को पढ़ाने तथा अछूतों को अपने साथ लेने का करेंगे। और इस बात का हमने तो निश्चय कर लिया कि हमारे लिये इस प्रतिज्ञा का जीता जागता स्वरूप होगा आजादी की वर्दी पहिनना। हमने यह बात मान ली कि आजादी की इस वर्दी को हम थोड़ा बहुत रोज बनायेंगे उसके लिये सूत कातेंगे और इस तरह शांत सुथरे और जोरदार समाज की मजबूत नींव डालेगें।

लेकिन क्या यह सारा उत्साह केवल २६ जनवरी के कुछ घंटों के लिये ही था ?

हमारी इस बात में दोहरा-दोहरा कर प्रतिज्ञा लेने में ठोसपन है और इसका सबूत हमारे पास है।

हम जो स्वाधीनता की प्रतिज्ञा लेते हैं वह मन का ऊफान नहीं है। चलते फिरते किसी जल्से में जा बैठा वहां की गरम गरम लेक्चरबाजी सुनी जिससे हमारे दिमागमें सनक सवार हो गई और हमने कसम खाली यह ऐसी बात नहीं है। हमारे गुरुजनों ने खूब सोच समझ कर महीनों पहिले से इसका एक-एक शब्द लिखा होता है। और इस प्रतिज्ञा को दोहराने वालों और इसे न दोहराने वालों में जोरदार कशमकश लगातार चलती रहती है। एक ओर वे होते हैं जो अपना सिर उठाकर व सीना तान कर चलना चाहते हैं और जो मौत से खेलने तथा अपना घरबार मटियामेट करा देने से नहीं डरते। दूसरी ओर वे हैं जो दूसरों को चित गिराकर उनके सीने पर सवार होजाना चाहते हैं और जो इस भारी गलतफहमी में हैं कि गैरों का घर उजाड़ने में ही अपनी तरक्की है। उधर जातियों का गुट्टभी इस दिनके लिये अपने नाखूनों को पैना बनाता रहता है। एक शिकारी जिस तरह अपने शिकार को फांसने केलिये जाल बिछाता है इसी तरह परदेशी सरकार के बंदे भी इस स्वातंत्र्य दिन की परछांई तक को मसल देने के लिये अपनी सारी ताकत से तुले रहते हैं।

अभी अभी का ताजा किस्सा है। कहानी नहीं है। सच्ची बात है। सुनी सुनाई बात नहीं, व देखी हुई बात है। हमारा दूधिया जो आश्रम की बालिकाओं के लिये डेढ़ दो मील की दूरी से सुबह शाम साइकल से दूध लाता है कुछ दिन से नहीं आया वह अच्छा समझदार आदमी है उसका सिर धौला हो गया है, मूछें भी सफेद हैं, गाल कुछ पटके हैं माथे पर सिकुड़न आ गई है, पचास साठ के बीच की उमर होगी उसकी पर स्वास्थ्य अच्छा है। चमड़ी पर झुर्रियां नहीं हैं। नवजवान की तरह चट से साइकल पर सवार होता है और तेजी से भाग दौड़ करता है। बोलने में उसकी आवाज जमी हुई है और ऊंचे से नहीं बोलता। नाम है उसका श्रीकृष्ण। हम लोग कहते हैं कि 'चलो श्रीकृष्ण ही हमें दूध पहुंचा रहे हैं।' खैर, मैं अपनी बात पर आऊं। चार पांच दिन पहिले शाम को श्रीकृष्ण दूध देने नहीं आया। उसका जबरू लड़का आया और दूध देकर चुपचाप जा रहा था, तब बात की बात में हममें से किसीने उसके सिर पर जखम देख लिया। पूछा, तो मुस्कराते हुए बताया कि आज गांव में जरा सा मुकाबला हो गया था।

'अरे भाई कैसा मुकाबला, बात क्या हुई ?'

'कुछ नहीं, हमारे रिस्तेदार हमसे रंजिश रखते हैं। आज लाठियां उछल गईं। एक जमीन के टुकड़े की बात थी। भाई बिरादरों में ऐसा तो होता रहता है।

'लाठी की चोट है। और सिर पर तुमने पट्टी भी नहीं लगाई ? तुम हमारे दवाखाने में क्यों नहीं आये ? वैद्यजी से मरहम पट्टी करा देते ?'

'अजी ऐसी कोई बात नहीं मुझे तो ये तीन चार चोट ही पड़ी है। ज्यादा नहीं पड़ी बुड्ढे को ज्यादा लग गई है।'

'श्रीकृष्ण की तो उम्र ज्यादा है उसे तो पकी हड्डी पर चोट भी सख्त आ गई होगी।

'हां, जी, खोपड़ी में से काफी खून गया है। पर कोई बात नहीं पट्टी बंध गई, कुछ दिन उन्हें खाट में पड़ा रहना पड़ेगा। उठ तो बैठेगा।

'अच्छा यह तो बताओ, लड़ाई कैसे, हुई तुमने लाठी से अपना सिर बचाया था रे !'

[शेष पृष्ठ २२ पर]

गुरुकुल कांगड़ी का सर्व श्रेष्ठ
च्यवन प्राश
दिल दिमाग फ़ेफ़ड़े वा कमज़ोरी के लिये
दिल्ली प्रान्त के सोल एजेण्टः—रमेश एण्ड कम्पनी, चांदनी चौक, मोती बाजार के सामने।
अन्य एजेन्सियांः—बृजलाल चड्ढा, पहाड़गंज दिल्ली। आरोग्य मन्दिर, गोल मार्केट, नई दिल्ली। अमरोहा गेट मुरादाबाद, रावतपाड़ा आगरा, सिपट बाजार मेरठ, कुतुबखाना बरेली और नवज्योति स्टोर्स अजमेर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

पंजाब की चिट्ठी

पंजाब में फिर उत्साह की लहर

विदेशी वेशभूषा का बहिष्कार : हिन्दी प्रेम

कई दिनों से लाहौर का दयालसिंह कालेज बन्द है। कारण यह है कि कालेज के राष्ट्रवादी विद्यार्थियों ने कालेज पर राष्ट्रीय झण्डा लहराया। इस पर कालेज में पढ़ने वाले लगभग २०० मुसलमान लीगी विद्यार्थियों ने प्रतिवाद किया। यह मामला इस हद तक पहुंच चुका है कि दोनों पक्षों में हाथापाई न हो जाय इसलिये कालेज के ट्रस्टियों ने फिलहाल कालेज को बन्द कर दिया है। इस घटना में यह बात विशेष महत्व की है कि राष्ट्रीय झंडा लहराने वाले विद्यार्थियों का नेता मि० सलीम राष्ट्रवादी मुसलमान है। मुसलीमलीगी विद्यार्थी राष्ट्रीय झण्डा इस लिये उतरवाना चाहते हैं कि दयालसिंह कालेज के ट्रस्ट डीड में इस कालेज को असाम्प्रदायिक और राष्ट्रवादी नीति पर चलाने का उल्लेख है। मुस्लिमलीगी विद्यार्थियों का कहना है कि कांग्रेस हिन्दु संस्था है, उसका झण्डा तिरङ्गा भी सैक्शनल — या साम्प्रदायिक झण्डा है। इसलिये वसीयत के अनुसार यह झण्डा नहीं लहराया जाना चाहिये। दोनों पक्षों के भाव उत्तेजित हैं। सुना गया है दोनों पक्ष इसके लिये सब कुछ करने को उतारू हैं। कुल विद्यार्थी लगभग १००० हैं — २०० मुसलिमलीगी विद्यार्थियों के लिये कालेज को बन्द करना कहां तक उचित है — यह स्वयं स्पष्ट है।

सुभाष दिवस और स्वाधीनता दिवस

२३ जनवरी और २६ वनवरी के दिन लाहौर में सार्वजनिक सभाओं और दीपमालाओं के दिन थे। दोनों दिनों में लाहौर की जनता ने दिल खोल कर सजावट और बिजली प्रदर्शन द्वारा सुभाषबोस के प्रति श्रद्धा और स्वाधीनता दिवस के लिए उत्कण्ठा प्रकट की। एक दो अवसरों पर स्कूलों और कालेजों में छुट्टी कराने के सिलसिले में विद्यार्थियों और लाठी पुलिस में संघर्ष भी हो गया। विशेषतया डी० ए० वी० मिडिल स्कूल के सामने लाठी पुलिस की मार से कई विद्यार्थी आहत हुए। विद्यार्थियों द्वारा उत्तर में की गई ईंट पत्थर वर्षा से कुछ सिपाही भी नाम मात्र के जख्मी हुए। एक दो स्थानों पर रात को दीपमाला जलूस में मुस्लिमलीगियों और राष्ट्रवादियों में हाथापाई होने लगी थी, परन्तु पुलिस के आ जाने से मामला शांत हो गया। झंडा लहराना तथा स्वाधीनता की प्रतिज्ञा सार्वजनिक सभाओं में की गई। सारा शहर तिरंगे में रंगा हुआ था।

सुभाष जन्म दिवस की सभा में मोरी दरवाजे के बाहर—मिसेज अहसान कादिर के भाषणों ने जनता को विशेष रूप से प्रभावित किया। मिसेज अहसान कादिर ने राजनैतिक गुलामी तथा पर्दे की गुलामी को एक साथ तिलांजलि देकर जिस समय नेताजी के चित्र का भावनापूर्ण भाषण के साथ उद्घाटन किया, उस समय हजारों की संख्या में उपस्थित जनता ने उत्साह जोश तथा जयहिंद के नारों से आकाश को गुंजा दिया। इन्हीं समारोहों के सिलसिले में मुसलिमलीगी विद्यार्थियों ने मिसेज एहसान कादिर की मोटर को रोक कर उन्हें मुस्लिमलीग में सम्मिलित होने को भी कहा, परन्तु मिसेज एहसानकादिर ने साम्प्रदायिक संस्थाओं को राष्ट्र के लिए हानिकर कहकर उन्हें भी कांग्रेस में सम्मिलित होने को कहा मिसेज एहसानकादिर सर अब्दुलकादिर की पुत्रवधू हैं।

कौंसिल आफ स्टेट का उपनिर्वाचन

रा० ब० रामशरणदासजी की मृत्यु के कारण रिक्त हुए स्थान के लिये उनके पुत्र लैफ्टिनैंट रूपचन्द उम्मीदवार थे। उनके मुकाबले में डा० गोकुलचन्द नारङ्ग भी खड़े हुये थे। श्री रूपचन्द ७ वोटों से चुने गये हैं। उन्होंने कोउन्सल आफ स्टेट में कांग्रेसपार्टी का साथ देने का वचन दिया है।

लाहौर स्वदेशी आंदोलन

भारतवर्ष के बड़े-बड़े शहरों में स्वदेशी वेशभूषा तथा स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग की दृष्टि से लाहौर सबसे पीछे है, परन्तु सुभाषचन्द्र बोस जन्मदिवस, स्वाधीनतांदिवस, तथा आजादहिंद फौज के आंदोलन ने लाहौर के वातावरण में भी स्वदेशी आंदोलन को प्रगति दी है। कांग्रेस के तिरंगे झण्डों के बैजों के साथ-साथ लाहौर की शिक्षित स्कूल कालेज की लड़कियों में खद्दर तथा स्वदेशी वस्त्र पहनने की प्रवृत्ति बढ़ने लगी है। तिरंगे झण्डों ने तिरंगे दुपट्टों और तिरंगी चुन्नियों का रूप ले लिया है। सैकड़ों लड़कियां इसको अपना रही हैं। सुभाष बोस जन्म दिन के जलूस में नकटाइयों और हैटों के उतारने की चहल पहल थी। पंजाब नैशनल बैंक में तिरंगा झंडा लहराते हुए जनरल मैनेजर ने स्वदेशी प्रयोग करने का प्रतिज्ञापत्र भरा और बैंक में स्वदेशी वस्तु प्रयोग करने की घोषणा की।

हिन्दी आन्दोलन

पंजाब में विशेषतः लाहौर में इन

श्री इन्द्र वेदालङ्कार

दिनों कालेजों तथा शिक्षणालयों में हिन्दी आंदोलन विशेष बल पकड़ रहा है। लाहौर के कालेजों की एक केन्द्रीय हिन्दी समिति बनी है। इसके प्रधान श्री प्रो० इन्द्र एम० ए० वेदालंकार दयालसिंह कालेज हैं। इस समिति द्वारा लाहौर के विविध कालेजों में सम्मेलनों तथा साहित्यिक अभिनयों द्वारा हिन्दी का प्रचार किया जा रहा है। २७-१-४६ को इस समिति की ओर से प्रो० वेदव्यासजी के सभापतित्व में "सेवा पथ" नाटक का अभिनय किया गया। लाहौर के प्रतिष्ठित हिंदी लेखक तथा प्रेमी भी इसके सम्मिलित हुए। नाटक का अभिनय करने वाले लाहौर के विविध कालेजों के छात्र और छात्राएं थीं आशा है इस समिति द्वारा लाहौर के कालेजों के वातावरण में हिन्दी साहित्य का प्रवेश हो सकेगा। 'सेवापथ' का अभिनय प्रथम प्रयास होने पर भी प्रशंसनीय तथा सफल था।

कैमिस्ट्री का हिन्दी भाषण द्वारा शिक्षण

इस समय तक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में भी हिन्दी भाषा द्वारा कैमिस्ट्री तथा फिजिक्स का शिक्षण होता था। अब इधर लाहौर में डा० रघुवीर ने इस दिशा में लाहौर के कालेजों में यत्न करना शुरू किया है। २२ जनवरी को इन्होंने कैमिस्ट्री के प्रोफेसरों तथा विद्यार्थियों के सामने इंडियन कैमिकल टक्निोलोजीनल पर व्याख्यान देकर यह बात सिद्ध की है कि कैमिस्ट्री का शिक्षण हिन्दी परिभाषाओं द्वारा भी हो सकता है।

यदि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संचालक पंजाब के शिक्षणालयों का इस विषय में मार्ग प्रदर्शन कर सके, तो दोनों को लाभ हैं। इस के लिए गुरुकुल के कैमिस्ट्री के उपाध्यायों के व्याख्यान लाहौर के शिक्षणालयों में विशेष रूप से उपयोगी हो सकते हैं।

—०—

१०० वर्ष का रंगीन कलेण्डर

मुफ्त! बिल्कुल मुफ्त

यह १०० वर्ष का अत्यन्त ही सुन्दर तिरंगा कलेण्डर उन व्यक्तियों को मुफ्त भेजा जायेगा जो अपने शहर या निकट वर्तीय १४ पर्दे लिखे वैद्यों हकीमों [illegible] के पूरे २ नाम पते बंद लिफाफे में लिख कर भेजेंगे।

वेकार सखा प्रेस, शिकोहाबाद पूर्वी

जोहर आबे हयात

कै, दस्त, बदहजमी, हैजे के लिये रामबाण है। दर्द पेट और दर्द गुर्दा नयी पुरानी पेचिस और दर्द दांत और कान के लिए सर्वोत्तम है। मूल्य १॥) डाक व्यय प्रथक।

विक्टोरिया मैजिक बाम – हर प्रकार के दर्द, गठिया, नमूनिया के लिए मुफीद है। ज्वर को ५ मिनिट में उतारती है। मूल्य १॥)। बिच्छू के काटने की दवा एक मिनिट में आराम। सांप के काटे की दवा मुफ्त लिफाफा आने पर भेजी जाती है। देशी विलायती दवाखाना (ए) रेलवे रोड़, रोहतक।

सूचना

२ साधारण लिखी-पढ़ी स्त्रियों की आवश्यकता है जो प्रातः ८ से १२ बजे तक रोगी स्त्रियों से बातचीत कर सकती हों— वेतन अच्छा। पत्र तथा मिलने का पता—

डा० प्रेमी, (उदर, बांझपन तथा हिस्टीरिया के चिकित्सक) ताजमहल होटल फतेहपुरी देहली।

नोटः—गरीबों तथा विद्यार्थियों को दवा मुफ्त

दिलशाद ग्लास वर्कस

की बनाई हुई

खाली बोतलें, पौवे, अद्धे, हर प्रकार की शीशियां, चिमनियां, ग्लास आदि खरीदिये। विशेष जानकारी के लिए सूचीपत्र तलब करें।

सोल एजेण्ट—

मित्तल एण्ड कम्पनी,

खारी बावली, देहली।

देहली में विजय सप्ताह

४ से ९ मार्च तक

अपने झण्डे लहराईये

[पृष्ठ ६ का शेष]

निम्न सदस्यों के साथ विचार किय। (१) डा० जाकिर हुसेन (२) डा० ताराचन्द (३) माननीय रा० ब० श्रीनारायण मेहता (४) श्री अब्दुर्रइमान सिद्दीकी। इस समिति में हिन्दी पक्षपाती कोई सज्जन नहीं हैं। दोनों हिन्दू सदस्य घोर हिन्दुस्तानी के पक्षपाती हैं। तो भी उक्त समिति के परामर्श के अनुसार हिंदी साहित्य-सम्मेलन, हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा तथा अंजुमन -ए- वतन की सम्मति ली जायेगी। तथा शब्द तालिकाओं पर विचार करने के लिये उक्त संस्थाओं, विद्यालयों तथा साहित्यिकों के पास उन के विचार जानने के लिये भेजी जायेंगी।

हिन्दी से हिन्दुस्तानी

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा का नाम बदल कर हिन्दुस्तानी प्रचार सभा रख दिया है। सभा द्वारा संचालित परीक्षाओं में बैठने वाले छात्रों को अपने प्रश्नपत्रों का उत्तर देवनागरी अथवा उर्दू-लिपि में लिखने की सुविधा दे दी जायगी।

भारत और अमेरिका

श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित ने अमेरिका से लौटने के बाद कराची में जनता को सम्बोधित करते हुए कहा — "अमेरिकन भारत की स्थिति से नितान्त अनभिज्ञ हैं। उन्हें केवल प्रोपैगेण्डात्मक समाचार मिलते हैं जो कि स्थिति को ठीक विपरीत दिशा में उपस्थित करते हैं। जब उन्हें ठीक स्थिति बताई जाती है तो वे सहायता करने की इच्छा प्रगट करते हैं। परन्तु वे अपने कार्यों से सरकार को हिलाने में असमर्थ हैं। अमेरिका प्रजातन्त्री होते हुए भी जनता की आवाज वैदेशिक सम्बन्धों में प्रायः नहीं सुनी जाती। अमेरिका की जनता चाहती है कि जावा, मलाया, एशिया में जो कुछ हो रहा है वह रुक जाय, परन्तु अपनी इच्छाओं की पूर्त्ति कराने का उन में दम नहीं है।

जावा और हिन्दचीन

डा० वानमूक जावा में वापिस लौट आये हैं और अपने साथ ब्रिटिश दूत सर आर्चिवाल्ड क्लार्क केर को साथ ले आये हैं। साथ ही एक पन्द्रह सूत्री योजना थैले में बन्द करके लाये हैं, पर थैला अभी खुला नहीं। इनके लौटने की पहली देन जावानियों को यह मिली है कि ब्रिटिश कमाण्डर क्रिस्टिसन ने कुछ आदेश जारी किये हैं। उनके अनुसार राजनीतिक नारे लगाना, उत्तेजक साहित्य प्रकाशित करना निषिद्ध कर दिया है। परिणामतः डच लोग अत्यन्त निश्चिन्त हो गये हैं।

तो भी डा० सुल्तान शहरयार ने समझौते के लिए बातचीत करना मान लिया है। पर अभीतक डा० वानमूक की ओर से उन्हें निमन्त्रण नहीं मिला।

उत्तरी हिन्दचीन में इस वर्ष डेढ़ लाख टन अन्न की कमी रहेगी। पिछले दो सालों के अकालों से यहां की जनसंख्या ८० लाख से घट कर ६० लाख रह गई है।

जापान

जनरल मैकार्थर ने जापानी सरकार को आदेश दिया है कि वह अपनी मुद्रा के मूल्य ह्रास कराने की नीति को निम्न उपायों द्वारा समाप्त कर दे। (१) अपने खर्चों को कम करदें (२) घाटों को जापानी जनता की चालू बचत से पूरा करे तथा (३) बैंक आफ जापान तथा अन्य बैंकों के द्वारा घाटों वाली अर्थ व्यवस्था से बचे।

एक अन्य आदेश द्वारा लाइसेंस युक्त वेश्यावृत्ति को समाप्त करने को कहा है। जनरल मैकार्थर और रूसी नेताओं के बीच काफी कशमकश चल रही है। जिसने गम्भीर रूप धारण कर लिया है।

सखालिन और कुराल द्वीप

रूस ने सखालिन और कुरील द्वीप पर यह कह कर अधिकार कर लिया है कि याल्टा-सम्मेलन के गुप्त निर्णयों के अनुसार ये जापानी द्वीप रूस को दे दिये गये थे।

अमेरिकन विदेशमन्त्री ने घोषित किया है सखालिन द्वीप के दक्षिणी भाग तथा कुरील द्वीप समूह को रूसी अधिकार में सौंपने की अन्तिम पुष्टि के लिए एक शांतिसंधि होनी आवश्यक है।'

ईरान में नया मन्त्रिमंडल

श्री गवमसुल्तानेह को मजलिस ने ईरान का नया प्रधानमन्त्री चुन लिया है। आप के पक्ष में ५३ और आप के प्रतिद्वन्दी श्री हुसैन पिरनिया के पक्ष में ५१ वोट आये थे। इनका झुकाव रूस से समझौता करने की ओर अधिक है।

अजर बेजान प्रान्त ने अपनी स्वतंत्रता घोषित करने के बाद से अपनी सेना का संगठन प्रारम्भ कर दिया है और अपने टिकट जारी कर दिये हैं। तथा ईरान के अन्य प्रान्तों में निर्यात पर प्रतिबन्ध लगा दिये हैं। रूस ने ईरान के उत्तरी प्रांतों—अजरबेजान— आदि की रेलें केन्द्रीय सरकार को सौंप दी हैं।

स्पेन

फ्रांस में कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट और कैथोलिकों में जो त्रिदलीय समझौता हुआ है उसकी एक महत्वपूर्ण धारा के अनुसार फ्रांस ने स्पेन से अपने कूटनीतिक सम्बन्ध तोड़ दिये हैं।

फ्रांस से दो नौकाओं में बैठकर स्पेन पर २४ सशस्त्र व्यक्तियों ने उतरने का प्रयत्न किया। उनमें से कुछ गिरफ्तार कर लिए गये हैं कुछ भाग गये हैं।

जनरल फ्रांको ने एक भेंट में कहा है कि वे हिटलर तथा मुसोलिनी की नीति अथवा राजनीतिक विचारों के कभी पोषक नहीं रहे। स्पेन प्रजातन्त्र की ओर बढ़ रहा है और अमरीका से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना चाहता है।

मित्रराष्ट्रीय असेम्बली

पर्याप्त खींचातानी के बाद मित्रराष्ट्रीय असेम्बली के प्रधान मन्त्री नारवे विदेशयंत्री ट्रिगबीलाह चुन लिये गये हैं।

सुरक्षा कौंसिल में ईरान का मामला उपस्थित हुआ, और ईरानी प्रतिनिधि सैयद ताकिजादेह ने अपने लम्बे भाषण में रूस द्वारा ईरानी प्रार्थनाओं को बार-बार ठुकराने तथा अजरबेजान में ईरान की फौजों के प्रवेश को रोकने का आरोप लगाया। तथा २ मार्च तक रूसी फौजों के हटा लिये जाने पर जोर दिया। रूसी प्रतिनिधि श्री विशिन्स्की ने कहा कि ईरान और रूसी सरकारों में सन्धिचर्चा हुई थी। पर ईरानी सरकार की उपेक्षा के कारण चर्चा आगे नहीं बढ़ पाई। अन्त में सर्वसम्मति से यह निश्चय हुआ कि दोनों देश आपसी विचार-विमर्श द्वारा झगड़े को सुलझा लें।

———

चश्मा छोड़ अंजन।

हर प्रकार की आंखों की कमजोरी पड़वाल, राहे, जाला और अव्वल दर्जे के सफेद मोतिया को आराम करता है।

(स्कूल के लड़के लड़कियों को फ्री)

पता:— डा० प्रेमी, ताजमहल होटल, १. फतेहपुरी, दिल्ली।

बच्चों को बलवान, तन्दुरस्त और सुन्दर बनाने के लिये

मिनर्वा ग्राईप वॉशर

सन्देश पहेली द्वारा संचालित वीर पहेली नं० १ में

१०००) प्राप्त करें

विशेष पुरस्कार:— महिलाओं को दो कूपन भेजने पर १ कूपन मुफ्त

अन्तिम ता० १५ मार्च १९४६

१. — — — न
२. — — न
३. — — नी
४. — — — र
५. — — रा
६. — — — त
७. — — — वाली
८. स — —

नियम:— (१) खाली स्थानों में तीन वर्ष के आये हुए फिल्म चित्रों के नाम भरने हैं। (२) प्रवेश फीस दो कूपन तक की १) रु० और उसके पश्चात हर पूर्ति पर ।) आने। (३) उत्तर के लिये -)॥ के टिकिट और भेजें अन्यथा उत्तर नहीं दिया जावेगा। (४) मैनेजिंग डाइरेक्टर का निर्णय अन्तिम व मान्य होगा।

पता:— मैनेजर—सन्देश पहेली कार्यालय, वेगमाबाद (मेरठ), यू० पी०

अद्वितीय आकर्षक मूंगफली तेल मूंगफली बीजा एवं रेडी तेल की सप्लाई के लिये:—

रामजीलाल मोदी एण्ड को०

वरंगल (निजाम स्टेट)

टेलीग्राम BHANU फोन नं० १०१

मुसफ्फिये आज़म

खून फसाद के सब रोगों को दूर करता है

जो लोग खून की बीमारी जैसे आतशक, चकत्ते, फोड़े, फुन्सियां, गंज, खुजली या किसी और खून की बीमारी में फंसे हुए हों वे शर्बत मुसफ्फियेआज़म मंगाकर इस्तेमाल करें। थोड़ी सी खुराकें इन बीमारियों को दूर करने के लिये काफी होती हैं। कीमत १ शीशी (२० खुराक) एक रुपया।

पता:—हमदम दवाखाना, लालकुआं पो० ब० नं० ७० देहली।

अद्भुत न्याय

एक धनवान मनुष्य था। उसके एक बहुत छोटा लड़का था। जब वह मनुष्य मरने के करीब हुआ तो उसने अपने एक विश्वासपात्र मित्र को बुलाया और अपनी सम्पत्ति तथा पुत्र को उन्हें सोंपते हुए कहा — 'मित्र। मेरा अन्तिम काल निकट है। यह दो लाख की सम्पत्ति तथा पुत्र तुम्हें सांपता हूं। जब यह बालिग हो जाय तब इस सम्पति में से तुम जितना चाहो इसे दे देना और बाकी तुम रख लेना।' यह कहकर वह मर गया।

जब पुत्र १८ वर्ष पार कर गया, तब उस मनुष्य ने उसे ५०००)रु० देकर टाल दिया और कहा कि तुम्हारे बाप ने कहा था, जितना तुम चाहो उतना इसे दे देना।' उसने अदालत में मुकद्दमा दायर कर दिया।

जब न्यायाधीश ने उस मनुष्य से दर्याफ्त किया कि क्यों उसने उसे केवल ५०००)रु० दिया। तो उसने वही बात दुहराई जो लड़के के बाप ने कही थी। उसे सुन कर न्यायाधीश ने कहा — ठीक तो है 'इसके बाप ने कहा था जितना तुम चाहो, उतना इसे दे देना। आपकी इच्छा १ लाख में से९५०००)रु० लेने की है अर्थात आप उतने रुपये चाहते हैं, वही आप पुत्र को दे दीजिये बाकी ५०००)रु० आप लीजिये। वह बेचारा अपना सा मुंह लेकर रह गया।

— सतीश

फूट का फल

एक तालाब में बहुत से मेंढ़क रहते थे। उनमें से एक मेंढ़क बहुत घमंडी और क्रोधी था। वह बिना कारण ही छोटे-छोटे मेंढ़कों को तंग किया करता था। जब सब मेंढ़क उससे तंग आ गये, तब उन्होंने उसे तालाब से बाहर निकाल दिया। तब वह घमंडी मेंढ़क पास की हरी-हरी घास में जा कर सो गया। वहीं पर एक सांप भी सो रहा था। उसने मेंढ़क को पकड़ लिया। जब मेंढ़क की आंख खुली तो उसने अपने को सर्प के मुख में पाया। यह देख कर मेंढ़क बहुत घबराया। उसने सांप से कहा 'महाराज मुझे छोड़ दीजिये! मैं आपको बहुत से मेंढ़क ला दूंगा, आप तालाब पर चलें।' सांप ने मेंढ़क को अपनी पीठ पर बैठा लिया और तालाब पर चला गया।

मेंढ़क ने वहां सांप को बहुत से छोटे-छोटे मेंढ़क पकड़ कर दिये। तीन चार दिन में सब समाप्त हो गये, तब सर्प ने उस मेंढ़क को भी खाना चाहा। मेंढ़क ने सांप से बहुत प्रार्थना की कि वह उसे छोड़ दे' परन्तु सांप ने उसकी एक न सुनी। तब मेंढ़क ने कहा 'हाय; आपस में फूट करके मैं शत्रु से जा मिला, इसी कारण मेरे सब मित्र व सम्बन्धी मारे गये, अब मेरा भी अन्त है।' तभी सर्प ने उसे निगल लिया।

— सुरेश

लो फिर वसंत आई

[रजा महंदी अलीखां]

सरसो की खेतियों ने
पहने हैं जर्द चोले
आई हवा जो ठंडी
खुश हो के फूल बोले
लो फिर वसंत आई

खुश बाग में है माली
निखरी है डाली-डाली
चों-चों से पंछियों ने
आवाज ये निकाली
लो फिर वसंत आई

क्यों चांद मुस्कराया
रंग इसको जर्द भाया
प्यारी वसंत ऋतु को
गीत उसने ये सुनाया
लो फिर वसंत आई

इस ऋतु का हर नजारा
है स्वर्ग से भी प्यारा
खुश हो के आज इक-इक
बच्चा यही पुकारा
लो फिर वसंत आई

माता की सीख

जा बेटा जा युद्ध-भूमि में,
शत्रु मान मिटाने को।
जा बेटा जा निज माता के,
मस्तक तिलक लगाने को।
तू जा बेटा समराङ्गण में,
विजय-ध्वजा फहराने को।
जा बेटा जा भारत मां को,
बन्धनहीन कराने को।
जा कर बेटा युद्ध-भूमि में,
मेरी कोख लजाना ना।
आगे बढ़ते रहना रण में,
पीठ अरे दिखलाना ना।
तू बेटा जब समराङ्गण से,
विजय लाभ कर आयेगा।
तब ही हां तब ही तू मेरा,
वीर पुत्र कहलायेगा।

— श्रीचन्द

बाल-बन्धु-समाचार

सरगोधा

चरणजीतलाल जी बग्गा द्वारा घोषित समस्या पूर्ति 'आगे बढ़े चलो' का पुरस्कार मण्डावा (जि० जयपुर) के पुष्करलालजी पुरोहित को उनकी सर्व-श्रेष्ठ रचना पर भेज दिया गया है!

छात्रो

सब समझो शाला अपना घर,
अपना घर भाई अपना घर।
नित शाला पढ़ने आओ,
आओ न जाओ इससे डर।
डर कर कभी न भग तुम जाओ,
जाओ निज गृह खुश होकर।
गुरू तुम्हारे पिता तुल्य हैं,
छात्र यहां के भ्रातावर।
खो देते हैं समय अमूल्य वे,
जो न पढ़ते यहां आकर।
चार दिनों का है यह बचपन,
बचपन गए जवानी सर पर।
सीखो नित नव बातें प्रतिछन,
फिर लग जायेगा सोच फिकर।
लो वृद्ध जनों की सच्ची शिक्षा
और आज्ञा सर आंखों पर।
वरना मांगे मिले न भिक्षा,
भटको चाहे भाई दर दर।
पढ़ लिखकर विद्वान कहाओ,
भूल न जाओ प्रिय गुरुवर।
निज कर्तव्य सदा निभाओ,
न भूल चुकाओ मां का कर।

— देवीलाल

भारत-रत्न

भारत के वीर रत्न,
बढ़ते जाना, कर यत्न।
हमारी तुम ही हो शान,
हमारी तुम ही हो जान।
आगे बढ़ोगे तुम,
पीछे चलेंगे हम।
भारत के वीर रत्न,
बढ़ते जाना, कर यत्न।

— प्रेमी भाई साहब

खोज की बातें

मध्य भारत में एक ऐसा अनोखा पेड़ है जिसके अन्दर बिजली भरी हुई है। यदि तुम उसकी एक भी पत्ती छूलो तो वैसा ही जोरदार धक्का लगेगा जैसे कि बिजली के करेन्ट का। इसके पास जीव जन्तु नहीं फटकते। वैज्ञानिकों के लिये अभी तक यह एक समस्या है।

× × ×

अमरीका में एक आदमी है जिसका नाम ब्रासिड है। उसकी एक आंख नीली और एक भूरी है।

× × ×

भृंग (भंवरा) के १३००० चक्षु और रानी मधुमक्खी के ६००० होते हैं

— बल्लभदास

पहेलियां

[१]

आदि कटे से मल हो जाता
अन्त कटे से 'थोड़ा' काम
मध्य कटे से कल बनता हूं
बोलो मित्रो मेरा नाम

— वेदव्रत

[२]

तीन वर्ण का मेरा नाम
आता हूं खाने के काम
मध्य कटे से हाथ कहाता
आदि कटे से सार रह जाता
अन्त कटे रह जाता कसा
नाम बताओ मेरे सखा

— राजेन्द्र

[३]

जो इन चार अक्षर में रहता
है वह कांग्रेस का नेता
प्रथम दो तो धान कहाता
सब मिल कर है रत्न कहाता

— रामप्रसाद

[४]

पानी जैसा पतला, पताशा जैसा मीठा

— युगराज

[५]

नन्हे मियां लाल रंग में
कर देते हैं रंग भंग में
खुजलाते ही रह जाते हैं
नहीं उन्हें हम पाते हैं। *

— शम्भुप्रसाद साह

बाल-सेना

आजाद हिन्द फौज की बाल-सेना के छोटे-छोटे सिपाही छाती में सुरंगे बांध कर अंग्रेजी टैंकों के मार्ग में लेट जाते थे और अपना जीवन बलिदान करके टैंकों को नष्ट कर देते थे।

हंसो और हंसाओ

एक समय एक अंधा, एक बहरा, एक लंगड़ा और एक नगा जा रहा था। अचानक बहरे ने कहा कि कुछ आवाज सुनाई दे रही है, चोर लगते हैं। अन्धे ने कहा — दिखाई भी ऐसा ही देता है। लंगड़े ने कहा — कि चलो भाग चलें। नंगे ने कहा — तुम तो बातों बातों में रह जाओगे और मुझे लुटवा दोगे।

— शान्तिकुमार

× × ×

पुत्र — पिताजी, यह किस चीज का खेत है?

पिता — बेटा, यह तम्बाकू का खेत है।

पुत्र — तो पिताजी, 'इसमें बीड़ी सिगरेट कब लगेंगी।'

— सुलतानसिंह

* उत्तर — १. कमल, २. कसार, ३. जवाहर, ४. शरबत, ५. खटमल।

CC0. Gurukul

स्वाधीनता की प्रतिज्ञा लेने वालों से

(पृष्ठ १८ का शेष)

'नहींजी! यही तो बात थी, लाठी न मेरे पास थी न बुड्ढे के पास। हमतो निहत्थे ही आ रहे थे। बुड्ढे के सिर पर पहिले आठ दस चोटें पड़ गईं मैं पहुंचा तो मुझे भी तीन चार लगी। इतने में लोग इकट्ठे हो गये और मामला बढ़ने से रुक गया। मैंने हाथों से थोड़ा बहुत बचाया।'

इतना कह कर वह साइकल पर सवार हो, चला गया। हमें भी अपने काम की जल्दी थी, हम अपने अपने काम में उलझ गये। चार पांच दिन तक हमें फुरसत नहीं थी कि हम अपने दूधिया की बात तक पूछ लें। उसे देखने जाने की बात तो अलग रही। संस्था का काम हो या रोजगार, हम तो अपनी घड़ी देखेंगे, कागज लौटते रहेंगे, कहते सुनते रहेंगे, पर जनसंपर्क की हमें फुरसत कहां। मन की बात मनही में धरी रहेगी। सुबह से शाम और शाम से सुबह रोज के ढर्रे में चलते रहेंगे। उस दिन के पांच छः दिन बाद अपने आंगन में ही टहल रहे थे। तब हमने श्रीकृष्ण को देखा और उसकी चोट की बात याद आ गई। उसे रोक कर हम लोगों ने उससे बातचीत की, स्वास्थ्य का हाल पूछा। वह बोला।

'अब बिल्कुल ठीक है। कोई फिकर की बात नहीं।'

'चोटें भर गईं सब! कितनी चोट आईं थीं?

'आईं थीं अच्छी आई थीं, दस बारह घाव तो गहरे पड़े थे, पन्द्रह सोलह लाठियां बरसी होंगी। सारा सिर खून से रंग गया था।'

'फिर तुमने दवाई क्या की?

दवाई क्या होती! दवाई कुछ नहीं, हम लोग देहात में दवाई नहीं करते।'

'तो क्या इतने दिन जखम को खुला छोड़ दिया? मवाद नहीं पड़ा?'

'नहीं मवाद नहीं पड़ सकता। शराब जो लगा दी थी।'

'क्या शराब में रुई को भिगो कर बांधी, कि रुई जलाकर उससे जखम भर दिया और ऊपर से शराब छिड़क दी?'

'नहीं शराब से पूरा सिर भिगो लिया और शराब पी भी ली, ऊपर से पट्टी बांध ली।'

'अब तो पट्टी खुलवाओ, वैद्यजी को दिखाओ।'

'नहीं, रोज शराब छिड़की जाती है और पीता भी हूं। छः बोतल आईं हैं।'

'अच्छा तुम्हारी दवाई ही है शराब हमें तुम दूध पिलाओ और खुद शराब। यह अच्छा नहीं' हममें से एक बोला वह हंस दिया और चलने लगा तो दूसरे ने पूछा—

'तुम पुलिस के पास गये क्या?'

'हम तो नहीं गये, वह खुद आई थी, पर हमने उसकी दाल नहीं गलने दी। उसने तो बहुत पूछताछ की और अपनी जेब भरनी चाही पर हमने कहा हमारे यहां कोई किस्सा ही नहीं हुआ। किसी का खून-ऊन हो जाता तो तुम्हारे पास आते। भाई-भाईयों में जरा गरमा गरमी तो होती ही रहती है। हमारी कोई शिकायत नहीं। पुलिस बेचारी कोरे हाथ लौटी।

यह चोट भी अब साफ हो जावेगी। हम क्यों बेकार में बात बढ़ावें। हमरी तो जिंदगी ही ऐसी है।'

वह साईकल पर सवार हो कर चला गया। मैं तो चकित रह गया। कितनी शान! कितनी बहादुरी! कितनी क्षमावृत्ति! कितनी समझदारी! हमारे सात लाख देहात ऐसे सपूतों से भरे पड़े हैं और फिर भी यह आजाद नहीं होता, गुलाम ही गुलाम है यह कौन मानेगा? भगवान वह दिन कब देगा, जब ये करोड़ों हीरे चमक उठेंगे।

हमारा देश सजीव है, प्राणवान है। इसका जीवन इसके उत्सवों में छिपा है। गरमी के दिनों की दिनभर की लूओं से मुर्झाई हुई फूलवाड़ी जैसे शाम को फौवारे की सींचाई से खिल जाती है वैसे हमारा बूढा देश उत्सव और त्यौहारों को मना कर उत्साह से भर जाता है। हमारे सामाजिक त्यौहारों में होली और दिवाली का स्थान ऊंचा है। धार्मिक त्यौहारों में दशहरा है। प्रकृति के स्वागत में शरद्पूर्णिमा और बसंतपंचमी मनाई जाती है। तीर्थयात्रा के उत्सव हैं कार्तिकी पूर्णिमा और रथ-यात्रा। अपने महात्माओं के स्मरण रामनवमी और श्रीकृष्णाष्टमी हम मनाते हैं और आकाश के साथ का अपना सम्बन्ध न भूलने के लिये मकर-संक्रान्ति और सूर्यग्रहण-चन्द्रग्रहण के बड़े-बड़े पर्व हमारे यहां मनते हैं। न मालूम कितने युगों से ये उत्सव चले आ रहे हैं। किस जमाने में इनका आरम्भ हुआ किसने इन्हें चलाया और इसका असली तरीका क्या था? यह सारी छानबीन करने का काम इतिहास के पंडितों का है। जनता के हृदय में ये सब त्यौहार अमिट हैं। नदी का पानी जैसे रोज नया ही होता है वैसे ये उत्सव भी युग-युग से हम लोगों के लिये नये हैं।

पुराने त्यौहार और उत्सवों की तरह, जब से हमने पृथ्वी के गोले पर अपने महान राष्ट्र का भव्य-स्थान समझा है तब से हमारे यहां नये उत्सव और नये-नये विशेष दिन मनाने का उत्साह बढ़ा है। अप्रैल की छटी और तेरहवीं तारीख, अगस्त की आठवीं तारीख, जनवरी का छब्बीसवीं तारीख, आदि दिन जनता के हृदय से कभी हट नहीं सकते और न तिलक दिन, गांधी दिन, नेहरू दिन, सुभाष दिन जैसे वीर पूजा के दिन भुलाये जा सकते हैं। जब तक हम गुलाम रहेंगे तब तक हमारे लिये गुलामी की जंजीरें तोड़ देने वाले दिन ही उत्सव के सच्चे दिन रहेंगे।

जब तक गुलामी टलती नहीं है, जब तक जालिम का जुवा हमने फेंक नहीं दिया है तब तक दूसरे उत्सव अंतःकरण को पीडा पहुंचाते रहेंगे। केवल राष्ट्रीय उत्सव ही अंतःकरण को प्रफुल्लं कर सकेंगे। गंगा-मेला में जाकर और गंगा न्हा कर हममें जो स्फूर्ति पैदा न होगी वह राष्ट्रीय-उत्सव में शामिल होने से हमें मिलेगी।

इन राष्ट्रीय उत्सवों में भी सबसे बढ़कर यदि कोई है तो वह है स्वातंत्र्य दिन।

मैं इसे अभय-उत्सव कहूंगा। यह दिन है जब हम लोग ऊपरले डर को झाड़ देने का निश्चय करते हैं। 'हम नहीं डरेंगे, नहीं दबेंगे, हम आगे और आगे चलेंगे और चलेंगे। इसी एक गूंजसे हम लोगों ने अपना हृदय भर लिया है। हमें हथियार नहीं चाहिये, हमें भाप बिजली की शक्ति नहीं चाहिये। हमें परमाणु शक्ति भी नहीं चाहिये हमें चाहिये केवल निदरता और पूरा अभय।

'दिल्ली चलो'

भारतीय स्वतन्त्रता-संघर्ष की रोमाँचकारी गाथा

नेताजी के संघर्षमय जीवन, सुदूरपूर्व में दिये गये, उनके समस्त भाषण तथा आजाद हिंद फौज के शानदार कारनामों व मुकदमे का पूरा विवरण।

ले०—दैनिक वीर अर्जुन के सम्पादक

आनन्द विद्यालंकार तथा हरिश्चंद्र

कीमत २) डाकखर्च ।)।

आर्डर के लिए लिखिए—पी० बी० २६४ वीर अर्जुन दिल्ली।

पिकाक दंत मंजन

दांतों को मोती सा चमकाता है और मसूड़ों को मजबूत बनाता है। पायरिया का खास दुश्मन है। अपने शहर के दुकानदार से मांगिये।

ऐजन्टों की जरूरत है

सोल ऐजेन्टस—

ऐनसा ट्रेडिंग कम्पनी चांदनी चौक देहली

सफेद बाल काला

इस आयुर्वेदिक सुगन्धित तेल से पके बाल जड़ से काले हो जाते हैं। यदि स्थायी काले न रहें, तो मूल्य वापसकी शर्त लिखा लें। थोड़े पके के लिए २) बिलकुल के लिये ४) का तेल मगावें।

पता:— आर्यवर्त औषधालय

नं० १५ पो० सेखपुरा (मुंगेर)

लोकप्रीय प्रमोद बीड़ी

हर जगामें एजन्सी देनेकी है.

भाईलालभाई गीरधरभाई पटेल एन्ड कंपनी

६६ आफीस:-खास बजार, अमदावाद, फेकटरी-गोदाया

पंडित डी० गोपालाचार्लु का

जीवामृतम्

बदन को ताकत देने वाला और वीर्य वर्द्धक उत्तम बलकारक टानिक।

यह खून को शुद्ध करके शरीर में उसकी वृद्धि करता है तथा शरीर, मस्तिष्क और स्नायु का आश्चर्य रूप से निर्माण करता है। स्त्री पुरुष व बालक सभी उमरों के इसका प्रयोग कर सकते हैं। एजेन्ट चाहिये।

आयुर्वेदाश्रम—मदरास.

सोल एजेन्ट:—ऐनसा ट्रेडिंग कं० भागीरथ पैलेस के पीछे चांदनी चौक, देहली।

कशमीर के पहाड़ों की बर्फीली चोटियों की तरह कशमीर की सुन्दरियों के काले, लम्बे केश अपना उदाहरण नहीं रखते — जुल्फे कशमीर हेयर ओयल—विभिन्न फलों और मूल्यवान जड़ी बूटियों से निर्मित है जो बालों को प्राकृतिक काला रङ्ग प्रदान करता है।

बड़ी शीशी १॥) छोटी ॥।=)

कशमीर परफ्यूमरी वर्क्स कुतब रोड़, देहली।

[पृष्ठ १५ का शेष]

बाहर खड़े पहरेदार धड़कते दिल से इसका हिलना-डुलना देख रहे थे। थोड़ी देर में वह आगे जाने के बदले खड़ा हो गया।

कुछ देखा हो ..... इस भांति एक घड़ी भर वह शान्त खड़ा रहा। और उसकी दृष्टि अन्दर शयनकक्ष के द्वार पर जा रुकी थी। देर बाद इसका माथा सहज ही नीचे झुका — सहज और थोड़ा सा मंदहास्य की एक रेखा उसके चेहरे पर दिखाई दी। उसके बाद तुरन्त दो डग पीछे हटा।

और इसे देख रही हजारों छोटी छोटी वस्तुओं के बीच में से होकर, धीमे शांत पगों से जैसा आया था वैसे वापिस लौटा। और पहरेदारों के पास आकर खड़ा हो गया।

एक वर्ष पूर्व जैसे बोला था — लगभग वैसी ही आवाज में उसने पूछा — 'बाई अन्दर है ?'

'जी जनाब ! बाई तो.....' पहरेदार आगे नहीं बोल सका।

'हां समझ में आया। बाई अन्दर है, बाई हाजिर है ऐसा समझना, ऐसा ही समझ कर सब सजावट रखना।'

'जी जनाब !'

'समझ गये ? — बाई नहीं है — मगर अन्दर है !'

'जी !'

वह शांत डगों से आगे बढ़ा ! तुरंत पीछे घूमा — कुछ कहने के लिये। 'और कल परसों एक लड़का आवेगा कल परसों नहीं तो किसी दिन — सात आठ वर्ष का लड़का आयेगा। उसको हमारे पास लाना।'

'जी !'

'लड़का आयेगा — किसी दिन — समझ गये ?'

'जी !'

'उसको हमारे पास लाना।'

'जी !'

पहरेदार पीछे घूम गया। मंद सुगंध गुलाब के फूलों के बीच में से होकर हरियाले मैदान पर शान्त नीरव पगों से महेन्द्र चला जा रहा था — जैसे स्वप्न में हो, निद्रावस्था में हो।

× × ×

'आज बाई की मालिक के साथ कुछ न कुछ बात हुई — ऐसा मालूम होता है।'

धीमी आवाज में पहरेदार बात कर रहे थे।

'क्यों ?'

'मालिक बोला लड़का आने वाला है — यह लड़का बाई के प्रथम पति का है — और आज बाई ने मालिक को दर्शन देकर इसकी सिफारिश की प्रतीत होती है।'

'क्या मालूम ?'

'कुछ इशारे से — बाई से मालिक की बातचीत हुई — निश्चित।'

'क्या मालूम क्या हुआ !'

हजारों फूल महेन्द्र को चले जाते देख रहे थे और धीमी मंद आवाज में मानों एक दूसरे से कह रहे थे — 'कुदरत अपने सिवाय — सौन्दर्य और सुगन्ध किसी दूसरे को नहीं देती। उस बाई को ये दोनों साथ देने में हुई भूल के कारण ही उसे यह मिला — स्वप्निल पागलपन। इसी कारण अपने पास ही वह आ जाय — जिस प्रकार अपनी सुगंध में वह बाई गुप्त रीति से निद्राधीन है उसी प्रकार।

हरियाले घास के मैदान में होकर अपनी उसी चाल की ओर — नदी की तरफ वह चला जा रहा था।

× × ×

उस रात गुलाब की पत्ती-पत्ती रजनी के अश्रु भार से झुक गई थी।

सभी कार्यों में
हिन्दीको अपनाइये
पत्रों पर पता
हिन्दी में ही लिखें
नागरी रक्षा समिति देहली

२४ घण्टे में कीड़े मर जाते हैं !

सोटा छाप सोटा छाप

दर्द के लिये रामबाण औषध सूखी गीली खाज, चट्टे, फुन्सी आदि समस्त चर्म रोगों को तत्काल अच्छा करती है। इस औषधि के प्रभा से हड्डी तक पहुंचे हुए रोग तुरन्त अच्छे होते हैं।
नोगी एण्ड कम्पनी, बम्बई ४.

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि०

अधिकृत पूंजी १०००००) रु०
(दस-दस रुपये के हिस्सों में)
अदाशुदा पूंजी ५१०७० रु०
डिवीडेन्ड सन् १९४४ १० रु० सैकड़ा
डिवीडेन्ड सन् १९४५ १० रु० सैकड़ा

थोड़े से और हिस्से बिक्री के लिए निकाले गए हैं। एक हिस्सा केवल १०) का है। ५) प्रार्थना पत्र के साथ और ५) प्रार्थना पत्र स्वीकार होने पर देने होंगे।

आप भी—
('वीर अर्जुन' समाचार पत्र की स्वामी संस्था)
श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० देहली
के हिस्सेदार बनिए।
शेयरों के लिए आवेदन पत्र हम से मंगालें।
मैनेजिंग डाएरेक्टर—
श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि०, श्रद्धानन्द बाजार, देहली

CC0. Gurukul K

विजय पुस्तक-भंडार
देहली की
जीवनदायिनी सामयिक पुस्तकें

१—जीवन चरित्र—

श्रीसुभाषचन्द्र बोस की जीवनी
(सम्पादक—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति)
(लेखक—श्री रमेशचंद्र आर्य)
यह कांग्रेस के भूतपूर्व राष्ट्रपति का प्रामाणिक और पूरा जीवन-चरित्र है। ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। पुस्तक के अंत में श्री सुभाष बाबू के विचारों का संग्रह भी है। मूल्य ॥=)

महर्षि दयानंद—ले० श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति मूल्य १॥)

पं० जवाहरलाल नेहरू—ले० पं० इंद्र विद्यावाचस्पति, मूल्य ॥।)

२—राजनैतिक साहित्य—

जीवन संग्राम—ले० श्री ० इंद्र विद्यावाचस्पति मूल्य १)

चीन का स्वाधीनता युद्ध—ले० श्री पं० कृष्णचंद्र जी विद्यालङ्कार मूल्य १)

३—अन्य पुस्तकें—

आनुपातिक प्रतिनिधित्व (Single Transferable Vote) (निर्वाचन सम्बंधी नियम) ले० श्री ० महावीर जी त्यागी मूल्य ।)

वर्तमान राष्ट्रपति
मौलाना अबुलकलाम आजाद

यह वर्तमान राष्ट्रपति श्री मौलाना अबुलकलाम आजाद की जीवनी है जिसे श्री रमेशचन्द्र जी आर्य स्वर्गवासी ने बड़े परिश्रम के साथ लिखा है। इसके पढ़ने से यह भली भांति प्रकट होजाता है कि मौलाना साहब की राष्ट्रीयता दूध की तरह स्वच्छ है और वह अपने मार्ग पर दृढ़ चट्टान की तरह अटल हैं। मूल्य ॥=) डाक व्यय ।-) मिलने का पता— विजय पुस्तक भंडार श्रद्धानंद बाजार देहली।

"मैं भूल न सकूं"
[सम्पादक श्री जयंत]

श्रीयुत श्रीनाथसिंह जी, श्री वात्स्यायन 'अज्ञेय' श्री काका कालेलकर जी, कवि सम्राट् श्री अयोध्यासिंह जी उपाध्याय 'हरिऔध' श्री रत्नकुमारी जी माथुर, श्रीमती होमवती जी, श्री विष्णुप्रभाकर जी, श्रीयुत देवीदत्त जी शुक्ल तथा श्री पहाड़ी आदि प्रसिद्ध साहित्यिकों उपन्यास और कहानी लेखकों की शिक्षाप्रद सची कहानियों का संग्रह। प्रत्येक कहानी ऐसी है जिसे एकबार पढ़कर भूलना कठिन है। मूल्य केवल १) डाक व्यय ।-)

मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण
ले० श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति (चार भाग)

यह वह पुस्तक है जिसमें मुगलों के साम्राज्य की स्थापना और नाश का इतिहास कहानी से भी अधिक मनोरंजक भाषा और रीति से दिया गया है। १७ वीं सदी में भारतवर्ष में जो विशाल राज क्रांति हुई उसका इससे अच्छा वर्णन मिलना कठिन है। हुमायूं अकबर, जहांगीर, शाहजहां औरंगजेब, राणा प्रताप, शिवाजी, छत्रसाल, गुरु गोविन्दसिंह आदि वीरों के चित्र और चरित्र पुस्तक में ओत प्रोत मिलेंगे। मूल्य १म.२ य. भाग ३) तथा ३ य. ४थ. भाग १॥) चारों भागों का मू.४॥) डा. व्यय अलग।

सात भावपूर्ण एकाँकी नाटकों का संग्रह
"एकांकिका"
ले० चन्द्रकिशोर जैन बी० ए०

यदि आप विचारों में संदेशपूर्ण, पढ़ने में कहानी की तरह दिलचस्प, भावों के घात-प्रतिघात से पूर्ण, जीवन की ज्वाला और ज्योति से भरपूर, विवाह व्योहारों उत्सवों पर खेलने और कला पूर्ण उपहार देने के लिये मनोवैज्ञानिक, सरल और ओजस्वी एकांकी नाटक चाहते हैं तो आज ही "एकांकिका" की प्रति मंगाइये। मूल्य २) डाक व्यय ।=)।

विजय पुस्तक भण्डार (वीर अर्जुन कार्यालय के ऊपर) श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

डेअरी विशेषांक ! **उद्यम** प्रकाशित हुआ !

★ आकर्षक मुखपृष्ठ, सुन्दर चित्र, व्यंग चित्र महिलाओं तथा विद्यार्थियों के उपयुक्त दूध सम्बन्धी जानकारी इस अङ्क में देखिये।

★ खालिस और सस्ता दूध कहां मिलेगा ? इस प्रश्न का उत्तर डेअरी अङ्क में पढ़िये। इस डेअरी अङ्क में जानवरों की हिफाजत और देखभाल तथा दुग्ध व्यवसाय सम्बन्धी सम्पूर्ण व्यवहारोपयोगी जानकारी दी गई है।

★ इस लाभदायक व्यवसाय को कोई भी अल्प पूँजी में आसानी से कर सकता है। फिलहाल इक धंधे को करने वालों अथवा करने की इच्छा रखने वालों को प्रस्तुत डेअरी विशेषांक से काफी सहायता मिलेगी।

★ आज ही उद्यम का वार्षिक मूल्य रु० ५-८-० भेजकर ग्राहक बनने वालों को डेअरी अङ्क अवश्य ही मिलेगा। उद्यम मासिक, धर्मपेठ, नागपुर।

श्री गङ्गाजी ब्रह्मचर्याश्रम हरिद्वार
उत्तम दान क्या है ? विद्या दान

विद्वानों की देखरेख में अनेक वर्षों से द्विज बालकों को वेद, कर्मकाण्ड, व्याकरण ज्योतिष वैद्यक आदि की शिक्षा प्रदान करके काशी की परीक्षाएं उत्तीर्ण कराने में अपना विशेष स्थान रखता है। ३० से अधिक ब्रह्मचारी आजकल शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं—उनके स्थान भोजन—वस्त्र पुस्तक आदि का सारा व्यय विद्यालय की ओर से ही दिया जाता है। यह व्यय दानी महानुभावों पर ही निर्भर है। विद्यालय का कोई अपना स्थान नहीं है। किराये के मकान में ही स्थापित है। देश के धनी-मानी सेठ साहूकारों से प्रार्थना है कि वह अपनी नेक कमाई में से दान देकर यश के भागी बनें। स्थान बनवाने वाले सज्जनों के नाम का पत्थर लगा दिया जायेगा।

दान देते समय इस लोकोपकारी संस्था को न भूलें—इस पते पर भेजें।
पं० रामहर्ष ब्रह्मचारी—काशीवाले, श्री गंगाजी ब्रह्मचर्याश्रम हरिद्वार।

जय हिन्द
राष्ट्र का भविष्य स्वस्थ और बलिष्ठ बच्चों पर निर्भर है
इसके लिए हमारा अनुरोध है
कि
आप अपने नौ निहालों
को

लाल-शर (Regd.)
(लाल शरबत)
पिलाइये

डाबर (डा० एस० के० बर्मन) लिमिटेड
पो० ब० नं० ५५४, कलकत्ता।
अस्थायी प्रधान कार्यालय—वैद्यनाथ देवघर (एस० पी०)

श्री० पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिये 'अर्जुन प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली से छापकर प्रकाशित किया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

ILLUSTRATED VIR ARJUN WEEKLY

वर्ष १२] देहली, सोमवार १६ चैत्र सम्वत् २००२, Delhi DELHI, 1st April 1946. [अङ्क ४]

गीत

नयनों के गीले लघुकण से
जीवन का मोल करूंगी मैं !

इस में असीम अवसाद छिपा
ये दीन-हीन के धन कुबेर,
ये अमर सृष्टि की लघुता में
विधि आक्षेपों को रहे टेर,

इन सरल-सरल दृग मधुकण में
चल तो व्यापार करूंगी मैं !

मानवता के विस्तृत उर की
ये गूंथ रहे आंसूलड़ियां !
बेचैन सलोने खोज रहे
तेरे मिलने की पल-घड़ियां !

इन पलकों के मोती कण से
चल तो शृंगार करूंगी मैं !

पुतली में तेरी छवि अंकित,
पलकों में तेरे पद की गति,
परछाईं दृढ़ रही अविरत,
सपने में बन बन कर जागृति।

पुलकों के सागर से भर-भर
मानस की प्याली दूंगी मैं !

तू मुझ में चित्रित रहा सदा
करुणा-विवाद का कर रहस्य,
मैं उस असीम की सीमा में
नित ही करती हूं क्रय-विक्रय !

मुझ से क्या पूछ रहे परिचय
तेरा ही परिचय दूंगी मैं !

— सुश्री इन्दुदेवी

वार्षिक मूल्य ८)
छः मास का ४)

सम्पादक— रामगोपाल विशालहार
इन्द्रचन्द्र विशालहार

एक प्रति का मूल्य ≈)

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आधा इनसान

"मजिस्ट्रेटों की लड़कियां भी ..... !"

[अर्धनारीश्वर]

'मजिस्ट्रेटों की लड़कियां भी मजदूरों की गोद में' ये शब्द थे ट्राम में बैठे हुए 'क' नामक एक मुसाफिर के। वह पढ़ा लिखा नहीं है, शायद अपना हस्ताक्षर करना भी नहीं जानता। इसलिए अपने विचारों को वह परिष्कृत भाषा में नहीं कह सकता और न सुनने वाले ही इसकी उससे आशा करते थे।

'क्या बात है?' एक साथी ने मुझ से पूछा। 'कौन से मजिस्ट्रेट की बात हो रही है?'

'अरे नहीं, कोई मजिस्ट्रेट नहीं। तुम्हें तो हमेशा ही दूसरी बातें सूझती हैं?'

'तब फिर बात क्या हो रही है।' उसी मित्र ने अत्यन्त उत्सुकता से पूछा।

'क' शायद समझ गया कि उसकी बात का दूसरा अर्थ लगाया गया है। अपनी बात को स्पष्ट करने का प्रयत्न करते हुए वह बोला—मैं ऐसी पढ़ी लिखी अमीर लड़कियों की कोई शिकायत नहीं करता। मुझे तो यह देखकर दुःख होता है कि हमारे लीडर स्वराज की बातें करते हैं, अखबारें निकालते हैं और बड़े-बड़े लैक्चर देते हैं, जलूस निकालते हैं, लेकिन रोजमर्रा दिनदहाड़े होने वाली इस अन्धेरगर्दी की ओर उनकी नजर भी नहीं जाती।'

'कौन सी अन्धेरगर्दी?' उसी उत्सुकता से मेरे मित्र ने पूछा। अब दो तीन और भी सामने बैठे हुए व्यक्ति इस बात चीत में दिलचस्पी लेने लगे थे।

'क' शायद अपनी बात स्पष्ट न कर पा रहा था। मैंने उसकी सहायता का निश्चय किया।

'अजी देखते नहीं हो। यह सामने क्या हो रहा है?' ट्राम में आने वाली दो चार संभ्रान्त महिलाओं की ओर मैंने अंगुली करते हुए कहा।

वे महिलाएं स्वच्छ परिधान पहने हुए थीं, सुशिक्षित जान पड़ती थीं और चेहरे से कुलीन और शालीन भी। ट्राम में बड़ी भीड़ थी। भले आदमियों के साथ-साथ अवांछनीय व्यक्ति भी ट्राम में खड़े हुए थे, जो उन महिलाओं को ट्राम में चढ़ते देखकर जगह देने की बजाय अधिक फैल कर खड़े हो गये। स्वभावतः उन स्त्रियों को अन्दर आने के लिए पर्याप्त संघर्ष करना पड़ा। कभी किसी से टकराते हुए, किसी के कंधे से छूते हुए तो किसी की बाहों के नीचे से निकलते हुए वे दो फीट आगे बढ़ सकीं। आगे भी बैठने की जगह न थी। लोग पहले तो स्त्रियों को जगह दे भी देते थे, लेकिन अब वह भावना भी नष्ट हो चुकी थी। मेरे जैसे पढ़े लिखे बाबू स्त्रियों का सम्मान कहां करते हैं? हम में से एक भी न उठा।

लेकिन वह 'क' जो शायद एक मिल में ठेलों का काम करता है, एक दम अपनी सीट छोड़ कर खड़ा हो गया। वह अशिक्षित था, तो क्या, लेकिन था भारतीय संस्कृति से संस्कृत। एक स्त्री उसकी जगह बैठ गई। दो दूसरी स्त्रियां भी किसी तरह घिस-पिस कर बैठने लगीं। जगह न थी। पास ही बैठे हुए एक आदमी से, जो चेहरे से भला आदमी मालूम नहीं होता था, वह बिलकुल सट कर बैठी। क्या करती? दूसरा कोई उपाय भी न था। ट्राम के झटके के साथ वह आदमी उसके ऊपर आ जाता। देखने वाले देख रहे थे कि ऐसे समय उसके चेहरे पर शरारतभरी मुस्कराहट प्रकट हुए बिना न रहती थी। हम सब विवश थे, उसे कुछ कह न सकते थे।

उसी 'क' ने जिसका हृदय महान् था और जो नारी जाति के प्रति अपना सम्मान दिखाकर शिक्षित बाबुओं को लज्जित कर चुका था, यह देखकर मुझ से कहा कि — 'मैं कहता था न कि मजिस्ट्रेटों की लड़कियां भी मजदूरों की गोद में बैठ जाती हैं। हम में न हया है न शर्म। हम न उनके लिए कुछ तकलीफ उठा सकते हैं और न वे स्त्रियां ही अपनी इस बेइज्जती को कुछ समझती हैं। मैं तो समझता हूं कि स्वराज हम पीछे लेंगे, पहले अपनी बहू बेटियों की इज्जत करना तो सीखें।' यह आवाज उसके दिल की आवाज थी। स्पष्ट मालूम होता था कि उसके दिल में बहनों का अपमान देखकर एक सच्चा दर्द है।

'लेकिन करें तो क्या! लोग तो ट्राम में बैठेंगे ही। भीड़ के दिन हैं। स्त्रियों को कौन आने के लिए कहता है?'

'पुरुष पैदल नहीं जा सकता और स्त्रियों को हम पैदल चलने के लिए कहें। वाह अजीब बात कही है।' मेरे मित्र बोले।

'अजी क्यों इलाज नहीं है! ट्राम वालों को चाहिये कि दो सीटें सिर्फ स्त्रियों के लिए नियत करदें। वहां पांच स्त्रियां बैठें या पन्द्रह, वे गुण्डों की शरारतों से तो बच सकेंगी, आपस में बैठी या खड़ी चली जायेंगी, गुण्डों की टांगों, कन्धे या छाती से रगड़ तो नहीं खायेंगी।' वही 'क' बोला—बात सोलह आने ठीक थी। पर बाबू लोगों को यह आसान सा इलाज भी नहीं सूझता।

मेरा स्टेशन आ गया था। मैं मन ही मन उस अशिक्षित परन्तु महान् हृदय की सूझ और उससे बढ़ कर दिल की प्रशंसा करते करते नीचे उतर गया।

फैशन का नूतन रूप

युवराज्ञी एलिजाबैथ नूतन प्रकार के फैशनेबल हैट पहने हुए हैं।

जापान में नई सन्तति

अमेरिकन सैनिकों के कारनामे

जापान में अमेरिकन सैनिकों को जापानी युवतियों से भविष्य में किसी तरह का सम्बन्ध न रखने की हिदायत दी गई है। यह भय किया गया है कि अमेरिकन सैनिक जापान में वहां की युवतियों से अधिकाधिक सम्पर्क कायम कर रहे हैं। इसे अमेरिकन युवतियां अत्यन्त भय, शंका और क्रोध से देख रही हैं। वे नहीं चाहती कि जापान की जनसंख्या बढ़ाने में अमेरिकन नागरिक कुछ भी भाग लें।

यह भी मालूम हुआ है कि जापान में इस समय १४००० जापानी गर्भवती युवतियां आगामी मई में प्रसवकालीन सुविधाओं की मांग कर रही हैं। इन सन्तानों के पिता अमेरिकन सैनिक हैं, जो गत अगस्त में जापान के हथियार रख देने पर वहां पहुंचे थे।

६ महीने में ६ बच्चे

एक जार्जियन नीग्रो महिला ने ६ मास में ६ बालक पैदा करने का रिकार्ड पेश किया है। पिछले मई में उसने एक साथ चार बालक पैदा किये। लेकिन वे मर गये। अब नौ मास बीतते-बीतते उसने एक साथ दो और बच्चे पैदा किये हैं।

पहले घर में तो पूछ लूं!

[रामकुमार अग्रवाल]

सच तो यह है कि बीवियां अपने पति के दोस्तों को अपना दुश्मन समझती हैं। एक तरफ से बीवी खींचती है, दूसरी ओर से दोस्त। ऐसी रस्साकशी के बीच में जो पड़ता है, उसी का दिल जानता है। खैर दोस्तों को तो किसी तरह नाराज किया और मनाया जा सकता है, मगर ये बीवियां — बस इनसे भगवान बचाये।

वास्तव में मेरे सभी मित्रों को इन बीवियों ने मुझसे छीन लिया है। आज वक्त काटने के लिये मैं हर एक के घर हो आया, पर सब के घर से एक ही जवाब मिला कि 'नहीं चल सकते।' इस मित्र छिन जाने पर अब मैं अपने 'जय' और 'प्रताप' ऐसे मित्रों को छोड़ने को तैयार नहीं हूं, परन्तु हाय! वे भी इस वर्ष विवाहित होने जा रहे हैं और मुझे डर है कि वे भी अब मेरे बुलाने पर घर से दौड़े न आवेंगे।

कहने को आप भले ही उन्हें अबला कहलें। कुछ लोग सबला भी ठीक ही कहते हैं, परन्तु मैं इन्हें बला कहता हूं। वास्तव में बीवियां एक बला हैं। इस बला से छुटकारा पाने के लिये कुछ लोग तलाक दे बैठते हैं, पर यह गलत तरीका है। जिन्हें बीवी का एक बार चसका लगा, वह बिना बीवी के नहीं रह सकते। तलाक देने पर भी दूसरी बीवी कहीं से छत फाड़ कर आ टपकती है।

वास्तव में बीवियों के बारे में सबसे बड़ी कठिनाई की बात तो यह है कि वे डिक्टेटरशिप पसन्द करती हैं। जरा भी उनके एकतंत्र शासन पर आघात पहुंचा कि बस बरस पड़ीं। वह तो पतियों से पूर्ण आत्मसमर्पण चाहती हैं। उनका उठना बैठना, आना जाना,

[शेष पृष्ठ २२ पर]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समाचार-चित्रावली

मौ० आजाद

आप मुस्लिमलीग को युक्त प्रान्त मन्त्रि मण्डल में दो स्थान देने को तैयार हैं

श्री हंसा मेहता

आप भारतीय स्त्रियों की ओर से मन्त्रिमिशन से मिलेंगी।

श्री मीर अलीबुन्दे तालपुर

आपकी सहायता से ही सिन्ध मन्त्रि-मण्डल बच गया है।

श्री गुलामहुसैन हिदायतुल्ला

आपका मन्त्रि मण्डल समाप्त होते होते बच गया है।

ब्रिटिश मन्त्रि मिशन की प्रथम प्रेस कान्फ्रेंस

दायीं ओर से जलसेना मन्त्रि सर ए० वी० अलैग्जेण्डर, लार्ड पथिक लोरेन्स और स्टैफर्ड क्रिप्स सामने बैठे हैं।

श्री गोविन्दवल्लभ पन्त

आप के नेतृत्व में युक्तप्रान्त मन्त्रि-मण्डल बनेगा।

दीवान बहादुर एस. पी. सिंह

पंजाब असेम्बलीमें आप स्पीकर चुने गये हैं

लोकवाणी

ब्रिटिश मिशन से

१—भारत को तुरन्त ही अधिकार मिलें। वह देरी बर्दाश्त नहीं कर सकता। २ — अल्पमतों के अधिकारों की रक्षा के लिये कांग्रेस उचित 'सेफ गार्ड्स' स्वीकार करने को तैयार है। लेकिन मि० जिन्ना की पाकिस्तान की योजना स्वीकार नहीं की जा सकती। ३ — यदि अधिकार सौंप दिये जावें, तब इससे किसी प्रकार की गड़बड़ होगी, ऐसी संभावना कांग्रेस नहीं करती। ४ — अगले कुछ सप्ताहों में भारतीय समस्या आपसी समझौते से सुलझने का ब्रिटेन को अन्तिम और सब से बड़ा मौका है। ५ — यदि अधिकार तत्काल दे दिये गये, तब ब्रिटेन व भारत के बीच की वर्त्तमान कड़ुआहट दूर हो दोनों देशों में दोस्ती स्थापित हो सकती है। ६ — जहां तक अन्तर्राष्ट्रीय और विदेशी नीति का सम्बन्ध है स्वतन्त्र भारत सदैव विश्वशांति का पक्ष लेगा। उसकी नीयत किसी पर हमले की नहीं ७ — स्वतन्त्र भारत की अपनी सेना होगी, जो कि देश की आन्तरिक बाहिरी सुरक्षा के लिये जिम्मेवार होगी। लेकिन वह दूसरे राष्ट्रों के समान कोई बड़ी सेना न बनायेगा, क्योंकि किसी दूसरे देश पर हमले की उसकी नीयत नहीं। ८ — स्वतन्त्र भारत सब राष्ट्रों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाये रखने की चेष्टा करेगा। — सरदार पटेल

भोजन नष्ट मत करो

इतना भोजन परोसवा लेना कि जूठन छोड़नी पड़े, मेरे विचार में जंगलीपन और अविवेक की निशानी है। आज के कठिन समय में तो मुझे इसमें निर्दयता दीखती है, क्योंकि आजकल तो किसी को भरपेट खाने का अधिकार नहीं। मैं मानता हूं कि थाली को साफ करके उठने में बहुत विवेक और सभ्यता है। इससे समय बचता है और जिन्हें बरतन साफ करने पड़ते हैं, उनकी मेहनत बचती है।

अगर कोई किसी की थाली में जरूरत से ज्यादा परोस दे तो खाना शुरू करने से पहले ज्यादा परोसी चीज को एक साफ बरतन में रख देना चाहिये। मेरे विचार में यह विवेक है। और मेरी राय में तो यह है कि मेजबान वही और उतना ही दे, जितना और जो उसे रुचे। बहुत समझ से काम लेने वाले तो अपने मेहमान की जरूरत को पहले से ही जान लेते हैं, और फिर उसी के मुताबिक सब चीजें उसे परोसते हैं।

ये खून के तिलक

आजकल खून से खत लिखने और तिलक करनेकी एक हवा-सी चल पड़ी है। मैं तो इस रिवाज को बिलकुल कुरुचिपूर्ण समझता हूं। अपना खून देने में कोई तकलीफ तो होती नहीं। आजकल तो ऐसे सब काम बिना तकलीफ दिये किये जा सकते हैं। जब बहुत सा खून दिया जाता है तब खून देने वाला कमजोर हो जाता है, लेकिन अपना लहू निकालकर तिलक करने या लहू की बून्दों को गिराकर उससे सही करने में न तो बहादुरी है, न त्याग और न कष्ट सहन। सिर्फ बेहद मूर्खता है। इसका त्याग करना इष्ट ही नहीं, बल्कि इसे बन्द करना धर्म है। इसका सरल से सरल तरीका यह है कि किसी भी नेता को इस जङ्गली रिवाज के वश न होना चाहिये।

— गांधीजी

पशु पक्षियों की भाषाएं

प्रोफेसर नियाजी पशु पक्षियों की बोली के विशेषज्ञ हैं। उन्होंने अपनी बात-चीत के सम्बन्ध में यह प्रगट किया है:

बन्दरों की एक टोली को आपस में लड़ाना मेरे लिये बायें हाथ का खेल है। मेरी एक आवाज से कौओं की एक बड़ी भीड़ यहां इकट्ठी हो सकती है। केवल आवाज को सुन मैं बता सकता हूं कि पशु या पक्षी नर हैं या मादा! जानवरों व पक्षियों की बहुत सी बातों को मैं समझ सकता हूं और बतला सकता हूं कि वह क्या चाहता है या अपने साथियों को क्या हुक्म दे रहा है। लेकिन पूरे तौर पर बात समझ लेने के लिये अधिक परीक्षणों और समय की आवश्यकता है। प्रायः प्रत्येक गरमी के मौसम में किसी एकान्त पहाड़ी स्थान में जाकर पशु-पक्षिओं की भाषासम्बन्धी अन्वेषण करता हूं। एक-एक कर बहुत से जानवरों व पक्षियों की भाषाओं को सीखने तथा उनके रिकार्ड तैयार कराने में सफल हो जाऊंगा। रिकार्ड में इन बोलियों के भर जाने के बाद पशु-पक्षियों की भाषा थोड़े अभ्यास के बाद समझने लायक चीज हो जावेगी। अन्य भाषाओं के समान ही इन्हें सीखा व पढ़ा जा सकेगा। केवल खोज और होने की आवश्यकता है।

मनुष्यों की बोलचाल के जिस प्रकार विभिन्न डायलैक्ट (प्रांतीय बोलियां) हैं, उसी प्रकार पशु और पक्षियों की भाषा में समानता होते हुए भी एक स्थान से दूसरे स्थान के पशु की भाषा में भिन्नता है। उदाहरण के तौर पर युक्त प्रान्त के पशु-पक्षियों में नर जिस प्रकार बोलता है, पंजाब में मादा की कुछ उससे मिलती आवाज है।'

— हिन्दी मिलाप

आक्रमणकारी हननीय है !

यूरोपियन असोसियेशन ने निर्णय किया है कि कलकत्ता तथा अन्य स्थानों में दंगा हो जाने की अवस्था में रक्षात्मक संगठन किये जायें। इन संगठन-स्थानों में पर्याप्त संख्या में राइफल, गोली आदि रखी जायेंगी। इन रक्षा-स्थानों पर ४८ घण्टे चल सकने लायक खाद्यसामग्री तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं का भी प्रबन्ध रहेगा।

यह प्रबन्ध ब्रिटिश सिविलियनों द्वारा उनकी व्यक्तिगत हैसियत से किया जा रहा है तथा प्रत्येक ब्रिटिश सिविलियन को बता दिया गया है कि जान पर खतरा आने की हालत में वे गोली चलाकर हमलावर को मार सकते हैं। इस सिलसिले में ताजीरात हिन्द के कानूनों से भी ब्रिटिश सिविलियनों को अवगत कर दिया गया है।

स्पष्टीकरणार्थ उदाहरण

उदाहरणार्थ ताजीरात हिन्द की दफा १०० का स्पष्टीकरण इस प्रकार किया गया है —

(१) यदि आप देखते हैं कि एक आदमी लोहेकी छड़, तलवार अथवा छुरी से दूसरे पर हमला कर रहा है, तो आप हमलावर को मार सकते हैं। मृत्यु अथवा खतरनाक चोट ऐसी स्थिति में असम्भावित नहीं है।

(२) आप देखते हैं कि एक स्त्री को जमीन पर पटक दिया गया है और उसके साथ बलात्कार करने की कोशिश की जा रही है। आप यदि इस आततायी को मार डालें, तो आपने कोई अनुचित कार्य नहीं किया।

(३) एक भीड़ ने आपको घेर लिया है, आप पर खतरनाक हमला किया जानेवाला है, बच निकलने का और कोई उचित रास्ता आप नहीं पा रहे हैं और आप पुलिस की मदद ले सकने की स्थिति में भी नहीं है, तो आप आक्रमणकारियों की हत्या कर सकते हैं।

(४) एक भीड़ ने आपको दूर से घेर लिया है, आपके ऊपर ईंट-पत्थर फेंके जा रहे हैं और भागने या पुलिस की मदद लेने का कोई जरिया आपके पास नहीं है, तो आप हमलावरों को मार सकते हैं।

(५) यदि कोई आदमी भीड़ द्वारा हमला करने के बाद एक घर में छिप गया है और उस घर को उपद्रवकारियों ने घेर लिया है तथा भागे हुए व्यक्ति को पकड़ने के लिये वे उस घर के दरवाजे और खिड़कियां तोड़ रहे हैं आत्म-रक्षा के अधिकार का उपयोग करते हुए उपद्रवकारियों को मारा जा सकता है अन्यथा भागे हुए व्यक्ति के प्राणों पर खतरा है।

ताजीरात हिन्द की दफा १०३ का स्पष्टीकरण इस प्रकार किया गया है —

(६) एक भीड़ ने एक सरकारी गल्ला-दुकान पर हमला किया। पहरा देनेवाले दरबान को चोट पहुंचायी या मार डालने की धमकी दी गयी तथा अनाज के बोरे उठा लिये गये तो आप आक्रमणकारियों की हत्या कर सकते हैं, क्योंकि वे डाका डाल रहे थे।

(७) गिरजाघर पर भीड़ ने हमला किया और चौकीदार को अशक्त बनाकर वहांका सामान, फर्नीचर आदि जबर्दस्ती उठा ले गये तथा सड़क पर ले जा कर उनमें आग लगा दी, तो आप उन पर गोली चला सकते है क्योंकि वे डाका डाल रहे हैं।

(८) भीड़ ने सरकारी गल्ला-दुकान पर हमला किया तथा आग लगा दी तो आप आक्रमणकारियों को मार सकते हैं।

(९) एक लाई० एम० सी० ए० होस्टल पर भीड़ने आक्रमण किया तथा उसमें रहनेवालों को पीटा, कुछ को खदेड़ा तथा दूसरों को मार डालने की धमकी दी तथा वहां की कीमत चीजों को तहस-नहस करके इमारत में आग लगा दी। आप इनको मार सकते हैं, क्योंकि वे मानव-निवासस्थानमें आग लगा रहे हैं तथा डाकाजनी कर रहे हैं।

(१०) एक स्टीमर पर भीड़ने हमला किया और उसमें आग लगा दी। आप हमलावरोंको मार डालिये।

किन्तु व्यक्तिगत आत्म-रक्षाका अधिकार आपको इसकी इजाजत नहीं देता कि एक मोटरकारके बोनेटके नीचे जलता हुआ कम्बल रखकर आग लगाने की कोशिश करनेवाली भीड़के साथ मार डालने या खून करने या हत्या कर डालने सरीखे कोई व्यवहार करें।

(११) यदि कोई भीड़ आपका हैट यां नैकटाई छुड़ा ले तो आप मार नहीं सकते किन्तु अपनी उस सम्पत्ति की रक्षा करते हुए यदि प्राण पर खतरा आ जाता हैं तो आप हमलावरका कत्ल कर सकते हैं (यहां उदाहरण १,६ तथा ४ की सङ्केत किया गया है।)

(१२) यदि एक भीड़ दूकान की खिड़कियों पर पत्थर फेककर कांचके पेन्सको तोड़ फोड़ डालती है। तो आप आत्म-रक्षाके अधिकार का प्राणान्तक उपयोग नहीं कर सकते। शरारतियों को पीट-पाटकर भगा दीजिये।

———

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

चम्पादेवी पुरस्कार

क्या धर्म भारत की उन्नति में बाधक है, विषय पर श्री वेदव्रत वेदालंकार को २५) पुरस्कार दिया गया है।

आगामी विषय पुरस्कारप्रदाता श्री हरिश्चन्द्र की इच्छानुसार यह रखा गया है —

भारतीय क्रान्ति की सफलता के लिए हिंसा आवश्यक है या अहिंसा? आशा है हिन्दी लेखक १० मई तक इस विषय पर लेख भेज देंगे।

— सपादक

★ वीर ★

अर्जुन

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार ता० १ अप्रैल सन् १९४६ ई०

ध्येय की स्पष्टता

आज जब भारत में ब्रिटिश मंत्रिमंडल का मिशन आया हुआ है, तब यह स्वाभाविक है कि भारत के भावी विधान के संबन्ध में विभिन्न श्रेणियां और पार्टियां अपने-अपने स्वार्थों की रक्षा में सन्नद्ध हो रही हों। अभी तक यह मालूम नहीं हो सका है कि स्वयं ब्रिटिश मिशन क्या प्रस्ताव लेकर भारत आया है। इस संबन्ध में जो वक्तव्य प्रकाशित हो रहे हैं, वे इतने अस्पष्ट और बहुर्थक हैं कि उनसे कोई परिणाम नहीं निकाला जा सकता। कभी बहुसंख्यकों के मार्ग में अल्पसंख्यकों द्वारा बाधा न डाले जाने की बात कही जाती है, तो कभी अल्पसंख्यकों को संतुष्ट करने का वायदा किया जाता है। देश का यह दुर्भाग्य है कि भारत का एक प्रबल अल्पसंख्यक संप्रदाय आज अराष्ट्रीय और देशद्रोही नेतृत्व के चक्र में है, जो किसी तरह न तो युक्ति और तर्क का आश्रय लेना चाहता है और न राष्ट्रीयता के सिद्धान्त पर ही उसकी कोई आस्था है। मुस्लिमलीगी नेता दो विधान-निर्मात्री परिषदों की मांग कर रहे हैं और एक ओर जहां वे बजट में सरकार का साथ देकर तथा विदेशी वस्तुओं की मुसलमानों द्वारा ज्यादा खपत आदि बताकर ब्रिटिश मिशन को प्रलोभन दे रहे हैं, वहां खून बहाने की धमकियां भी दी जाने लगी हैं।

आज मुस्लिम लीग ही देश में एक भारी समस्या नहीं है। रियासतें भी इस दिशा में एक नया गम्भीर प्रश्न पेश कर रही हैं। अभी ट्रावनकोर के प्रधान मंत्री सचिवोत्तम सर सी० पी० रामस्वामी अय्यर ने रियासतों का दृष्टिकोण उपस्थित करते हुए कहा है कि जब ब्रिटिश भारत ब्रिटिश सरकार से स्वतन्त्र होगा, तब रियासतों की ब्रिटिश सरकार से की हुई संधियां भी रद्द हो जायंगी और ब्रिटिश भारत की तरह रियासतें भी स्वतंत्र हो जायंगी। ब्रिटिश सरकार की सर्वोपरि सत्ता भारत की केन्द्रीय सरकार में हस्तान्तरित नहीं होगी, इसके लिए रियासतें ब्रिटिश भारत की सरकार से समान स्थिति के आधार पर स्वतंत्ररूपेण नई संधियां करेंगी। रियासतों की यह स्थिति सिद्धान्ततः यदि स्वीकार करलें, तो क्या व्यावहारिक दृष्टि से इसमें कठिनाइयां पैदा नहीं होंगी? क्या हैदराबाद या कोई अन्य रियासत अपनी नई मांगे पेश करके केन्द्रीय सरकार को दुर्बल करने का प्रयत्न नहीं करेगी! हमारी सम्मति में भारत सरकार ही सर्वोपरि सत्ता रहनी चाहिये, क्यों कि ब्रिटिश सरकारने जो संधियां रियासतों से की थीं वे तभी कर सकी थीं, जबकि वह भारत विजय कर चुकी थी। इसलिए रियासतों की सत्ता को सर्वथा समान मानने के दावे को स्वीकार करना अनुचित होगा। जिस तरह अल्पसंख्यक जातियों के हितों की रक्षा का उचित आश्वासन दिया जाता है, उसी तरह राजाओं को यह आश्वासन दिया जा सकता है कि राजाओं को गद्दी से उतारने के लिए भारत सरकार जोर नहीं देगी। प्रांतों की तरह उनकी — बड़ी रियासतों की आन्तरिक मामलों में स्वतन्त्र सत्ता मानी जायगी, इससे अधिक नहीं।

कांग्रेस को आज विविध समस्याओं का सामना करना है, वह किसी तरह भूलभुलैयां में न फंस जावे, इसलिये उसके सामने अपना उद्देश्य स्पष्ट रहना चाहिए। और वह उद्देश्य है भारत की स्वतन्त्रता और अखण्डता। उद्देश्य के मार्ग में आनेवाली कठिनाइयों से विचलित न होकर सब समस्याओं का वीरतापूर्वक सामना करना चाहिए।

अन्न समस्या का समाधान

[श्री महावीर त्यागी एम. एल. ए.]

युक्तप्रांत में हमेशा से ही अन्न की बहुतायत रही है, यहां के लोग केवल अपने गुजारे के लिये ही अन्न उत्पन्न नहीं करते, बल्कि हर साल १२ लाख ३२ हजार मन गेहूं, २८ लाख मन चना और २२ लाख ६० हजार मन ज्वार बाजरा दूसरे प्रांतों को भेज देते हैं। केवल चावल की कमी रहती है, जो बाहर से पूरी की जाती है। पर इसके साथ ही लाखों एकड़ जमीन ऐसी है कि जिस पर गन्ना या कपास बोया जाता है, जो अधिकांश बाहर जाता है।

फिर भी हमें यह पाठ पढ़ाया जा रहा है कि तुम्हारी जनसंख्या इतनी बढ़ गई है कि युक्तप्रान्त की भूमि से उसका भरण पोषण नहीं हो सकता। मानो महायुद्ध की तमाम मृतक आत्माओं ने यू० पी० में आकर जन्म ले लिया है। यह कहना कठिन है कि वास्तव में प्रांत की अन्न संबन्धी परिस्थिति क्या है। यह कहा जा रहा है कि 'भयंकर अकाल पड़ने वाला है और सरकारी गोदामों में केवल १५-२० दिन का ही गल्ला रह गया है।'

हाल ही में एक सरकारी विज्ञप्ति भी छपी है कि उन जिलों के किसानों से कि जहां अन्न की पैदावार वहां की आवश्यकता से अधिक होती है, उन की फसल का १८ प्रतिशत अन्न जबरदस्ती खरीद कर सरकारी गोदामों में भर दिया जावेगा। और कई जिले के कलक्टरों को हुक्म भी जारी हो चुके हैं कि वह पटवारियों द्वारा तमाम खेतों का तखमीना लगाकर उन पर लाल झण्डियां लगवादें और किसानों पर हुक्म तामील करदें कि बिना सरकारी कर्मचारियों की आज्ञा के वह अपनी फसल न उठा सकेंगे।

यह विज्ञप्ति जितनी धांधलीबाजी की है उतनी ही भयावनी भी है। यदि 'अंधेरनगरी चौपट राज' वाली कहावत अभी तक केवल कहावत ही थी, तो आज यू. पी. में वह एक वास्तविकता बन गई है। इस विज्ञप्ति के अनुसार जिस किसान ने गेहूं कम बोये हैं, शायद इस आशा पर कि गन्ना बेच कर गेहूं खरीद लूंगा,' उसे भी अपनी फसल का १८ फीसदी सरकारी गोदाम में जमा करना पड़ेगा और उसे भी कि जिसकी फसल, खुश्की, ओला, या जंगली जानवरों द्वारा उजड़ चुकी है। जिस घर में अपने परिवार का पेट भरने लायक भी अन्न न हो उससे जबरदस्ती सरकारी गोदाम के लिये अन्न लिया जायगा तो वह परिवार कैसे गुजारा करेगा? फिर हर गांव में कम से कम ½ आबादी ऐसी भी होती है कि जो स्वयं तो खेती नहीं करती, खेती करने वालों की मजदूरी या ऐसी दस्तकारी करते हैं कि जो किसानों के काम आती है जैसे हल ठीक करना, कपड़ा बुनना, हजामत बनाना, पानी भरना, रखवाली करना, डंगर चराना आदि। इनके घर भी दो वक्त चूल्हा जलना जरूरी है। फिर 'सब धान पांच पसेरी' कैसे बिक सकते हैं, सबसे १८ फीसदी अन्न कैसे वसूल हो सकता है? प्रथम तो हमें जबरिया-नाज वसूल करने से सैद्धान्तिक मतभेद है, पर सैद्धान्तिक बहस छोड़कर हम एक सीधा सवाल यह पूछना चाहते हैं कि जिसके पास अपने पेट भरने लायक अन्न नहीं है, वह दूसरे का पेट भरने के लिये अपना अन्न कैसे दे सकता है। आई० सी० एस० वालों को जिन्होंने लखनऊ में बैठकर यह विज्ञप्ति निकाली है इतनी चेतना होनी चाहिये थी कि वह केवल उन्हीं परिवारों से अन्न वसूल करने की बात करते कि जिन के पास अपने और अपने लगुवों (मजदूर-दस्तकारों) के गुजारे से अधिक नाज होता।

दूसरा प्रश्न यह है कि किसके खेत में कितना नाज पैदा हुआ, इसकी खबर पटवारी जी देंगे। यह स्कीम शहर वालों का पेट भरने के लिये बनी है या पटवारियों का? कितनी लूट मचेगी, कितना अन्याय या जुल्म होगा इसका अन्दाजा सेक्रेटरियेट वालों को नहीं हो सकता। पटवारियों से फसल का तखमीना पूछना ऐसा ही है कि जैसे 'बिल्ली को दूध की रखवाली पै बिठा देना।' सरकारी गोदामों में सौ दो सौ मन गल्ला सड़ा हुआ रखा है; हजार मन गेहूं खरीद कर उसमें सड़ा हुआ मिला दिया, बस इसकी डाक्टरी करादी, सब कन्डम हो गया। अच्छा-अच्छा निकाल कर बेच लिया, सड़ा हुआ हिफाजत से गोदाम में रख लिया- ताकि अन्न की दूसरी खेप आवे तो उसे भी 'कण्डम' कराने में आसानी रहे। मुनाफा खोरी का यह हाल है कि २० मन का चावल खरीद कर उसी हाथ उसी दुकान पर और उसी गाहक को कि जिससे खरीदा था, ४०) फी मन के भाव यही सरकार बेच रही है। दुनिया भर में कहीं इतनी धींगामस्ती सरकार की तरफ से नहीं होती।

इस प्रांत में शहरी और ग्रामीण आबादी का औसत १० : ९० का है। आज तक प्रांत की सरकार ने जो कन्ट्रोल और राशनिंग आदि किया है, वह केवल शहर के दस व्यक्तियों के लिये किया है, गांव के ९० तो मानो किसी प्रकार का टैक्स ही नहीं देते; उनकी किसी को फिक्र ही नहीं है। शहर में बिजली भी जले, और गैस के हण्डे भी, फिर भी मिट्टी का तेल बांटते वक्त शहरवालों को ज्यादा मात्रा में दिया जावे? गांव वाले अन्धेरे में रहें। कपड़े की जितनी गांठें कारखानों से आवें वे सब पहिले शहरवालों में बांटी जावें, गांव वाले कफन तक को तरसें? चीनी की दुकानें शहरवालों के लिये हों और गांव वालों को अपना कोल्हू चला कर गुड़ बनाने तक की इजाजत न मिले।

जैसे कि किसी मूर्ख ने रोजाना अन्डा देने वाली मुर्गी का पेट इसलिये चीर दिया था कि उसे बहुत से अण्डे एक साथ चाहियें थे; इसी तरह नौकरशाही आज ग्रामीण जनता का पेट चीर रही है। अन्न की बहुतायत किसानों से छीन कर शहर में लाने से नहीं हो सकती। इस के लिये रचनात्मक कार्यों की आवश्यकता है। अन्न पर कन्ट्रोल करने से पहले धरती और बैलों पर कन्ट्रोल होना जरूरी है। लाखों एकड़ धरती पड़ी हुई है जिस पर न तो जमींदार खुद खेती करता है और न किसी दूसरे को

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

करने देता है, उसपर किसी का कोई कन्ट्रोल नहीं है। फिर बैलों की समस्या है, इस लड़ाई में इतनी गाय भैंस काट डाली गई हैं कि बीस वर्ष तक हिन्दुस्तान में बैलों की कमी पूरी नहीं हो सकती। यदि अन्न की बहुतायत चाहते हो तो पहिले बैलों पर कन्ट्रोल बिठाओ, जबरिया अन्न वसूल करने से पहिले जबरिया बैल प्राप्त करके किसान को सस्ते दाम पर बैल दो। आजकल एक जोड़ी बैल हजार हजार रु० में आ रहे हैं। हल और फाली पर कन्ट्रोल करो। किसान को जो खेती के काम के लिये लोहे की जरूरत है पहिले लोहे को जबरिया हासिल करके किसानों को सस्ती दवाई और सस्ता खाद और बहुतायत से पानी दो और खेती करने के यन्त्र ट्रैक्टर वगैरा दो और करोड़ों रु० लगाकर किसानों के और खेतीहर मजदूरों के मकान बनवाओ और उनमें मिली जुली या सहयोगी फार्म के ढंग की खेती कराओ, जो नुकसान हो उसे उस मुनाफे से पूरा करदो कि जो चार वर्ष से सरकार खा रही है। सरकारी व्यापार में मुनाफे की दर कम से कम ३० प्रतिशत तो है ही। यदि इस स्कीम को कन्ट्रोल वाले कमिश्नर साहिब अस्वीकृत करे तो दूसरी तरकीब यह हो सकती है कि तुरन्त एक कानून द्वारा माल गुजारी नकद न लेकर अन्न में ली जाने लगे। मालगुजारी का औसत खेत की पैदावार का १५ प्रतिशत तो है ही, काफी नाज सरकारी खजाने में आजावेगा। सरकारी नौकरों को वेतन भी कुछ नकद और कुछ खुराक के तौर पर दिया जा सकता है। जन साधारण के लिए सार्वजनिक भोजनालय (किचन) खुल सकते हैं और सरकारी नौकरों को मजबूर भी किया जा सकता है कि उनके परिवारों को सार्वजनिक 'किचन' में भोजन करना होगा।

परन्तु यह सब रास्ते अंग्रेजी दफ्तरों के लालफीतों से बाहर के हैं; यह वास्तव में लाल क्रान्ति के रास्ते हैं। जब तक हम लालफीतों के जंजाल से बाहर निकल कर क्रान्तिकारी ढंग से नया निर्माण न करेंगे, समाज लकीर का फकीर बना रहेगा और हम रिवाज और कानून के फन्दे में फसे रहेंगे।

———

वनस्पति घी को रंगो

जब जब वनस्पति घी में रंग मिलाने का प्रश्न उठाया गया है, तब तब न केवल सरकार द्वारा उपेक्षा की गई है अपितु इस घी के व्यवसायियों और निर्माताओं द्वारा यह युक्ति उपस्थित की जाती रही है कि रंग क्योंकि विषैले होते हैं इसलिये खाद्य पदार्थों में रंग मिलाना अभीष्ट नहीं है। पर हम सरकार का ध्यान इस ओर आकृष्ट करना चाहते हैं कि इस देश में प्रति वर्ष लाखों पौण्ड रंग खाद्य पदार्थों द्वारा मनुष्य के पेट में पहुंच जाता है। हलवाइयों की मिठाइयों में और बाजार में बिकने वाले शर्बतों तथा स्क्वैशों में रंगों की प्रचुर मात्रा विद्यमान रहती है। शर्बतों में तो रंग अत्यधिक मात्रा में उपस्थित रहता है; यह मात्रा निर्दिष्ट सीमाओं को भी लांघ जाती है। इस के अतिरिक्त जो वनस्पति घी असली घी के नाम से बेचा जाता है, उसे भी रंगा जाता है। यदि वे सब रंग मनुष्य के शरीर के लिये घातक हैं तो सरकार अन्य भोज्य पदार्थों में उन का निषेध क्यों नहीं करती? पर स्मरण रखना चाहिये कि रासायनिक दृष्टि से वनस्पति घी और शर्बतों में काम में आने वाले रंग एक ही वर्ग के हैं। क्या आने वाली सरकारों से हम आशा करें कि सार्वजनिक स्वास्थ्य को दृष्टि में रखते हुए वनस्पति घी के अधिकाधिक प्रयोग की रोकथाम करेंगे तथा इस प्रयोजन के लिये उसमें रंग मिलाने के कानून बनायेंगी।

———

आलइण्डिया रेडियो की हिन्दुस्तानी

आजकल आलइण्डिया रेडियो की भाषा की चर्चा बहुत सुनाई देती है, रेडियो के संचालक अपनी सफाई में कहते हैं कि हम हिन्दी या उर्दू का प्रयोग नहीं करते, हम तो हिन्दुस्तानी भाषा का प्रयोग करते हैं। अब आप जरा रेडियो की हिन्दुस्तानी के नमूने देखिये। २६ मार्च की रात को देहाती प्रोग्राम में शकुन्तला का "डिरामा" सुनाया गया था, उस डिरामा के कुछ शब्द मैंने नोट किये हैं। राजा "दुषयन्त" शिकार खेलता-खेलता "आशरम" की जमीन पर पहुंच जाता है। "दुरबासा जोगी" "आशरम" में आकर पुकारता है "शकुन्तला" जब वह नहीं बोलती तो जोगी "शराप" देता है। शकुन्तला की सखी जोगी को जाकर "परनाम" करती है, और माफी मांगती है, जब दुषयन्त चला जाता है तो शकुन्तला "बेकल" हो जाती है। जब शकुन्तला गौतमी के साथ राजा के दरबार में पहुंचती है तब चोबदार राजा को खबर देता है कि दो औरतें "दरबार में आना चाहती हैं। जब राजा "दुषयन्त" शकुन्तला को नहीं पहिचानता तो अपने "दीवान" को हुक्म देता है कि इसे दरबार से निकाल दो।

यह है हिन्दुस्तानी भाषा और हिन्दी शब्दों के उच्चारण का नमूना, और इन्हीं हिन्दी शब्दों की हत्या का नाम बुखारिस्तान में हिन्दुस्तानी रखा गया है।

— एक श्रोता

ब्रिटिश-अमेरिका समझौता

ब्रिटेन और अमेरिका के बीच उधार-पट्टा, उसकी वापिसी, अवशिष्ट सम्पत्ति व आपसी युद्धसम्बन्धी आर्थिक दावों के अन्तिम निबटारे के लिये ६ सूत्री समझौता हो गया है। इस समझौते के अनुसार दोनों देशों के उधार पट्टा सम्बन्धी सभी कर्जे, जिनका निबटारा नहीं हुआ, रद्द हो जायेंगे तथा ब्रिटेन को अपने यहां पड़ी समस्त अवशिष्ट अमरीकन सेना व जलसेना की सामग्री मिल जायगी। इसी प्रकार अमरीका ब्रिटेन को ६७२ डाकोंटा लड़ू विमान तथा ६७१ और भी विमान पट्टे पर देगा। इसी प्रकार युद्ध काल में ब्रिटेन में बनी 'पाइप लाइन' के खर्चे का भी निबटारा कर लिया गया है। किन्तु ब्रिटेन अमरीका से प्राप्त सामग्री अन्य देशों को अमरीका की अनुमति के बिना नहीं दे सकेगा।

ग्रीस में ब्रिटिश सेना

ग्रीक प्रधानमन्त्री म० थेनीस्टोक्लेस सोफोलिस ने कल घोषित किया कि ३१ मार्च को चुनाव समाप्त होने के बाद ग्रीक सरकार ब्रिटेन से यह प्रार्थना करेगी कि वह आन्तरिक सुरक्षा की दृष्टि से ब्रिटिश सेनाओं को ग्रीस में रखे।

ट्रान्सजोर्डन-स्वतन्त्र देश?

ब्रिटिश वैदेशिक कार्यालय ने घोषित किया है कि ट्रांसजोर्डन एक स्वतन्त्र मुस्लिम राज्य स्वीकार कर लिया गया है। दोनों देशों ने एक सन्धिपत्र पर भी हस्ताक्षर कर दिये हैं।

यह देश १६१४-१५ के प्रथम महा-युद्ध के बाद राष्ट्रसंघ की ओर से एक संरक्षित राज्य के रूप में ब्रिटेन को सौंपा गया था। नयी सन्धि के परिणाम स्वरूप ट्रान्सजोर्डन पर से ब्रिटिश नियन्त्रण समाप्त हो गया है। विश्वास किया जाता है कि सन्धि की धाराओं में निम्न राजनीतिक मुद्दे हैं।

१. ट्रांसजोर्डन को स्वतन्त्र किया जाय और ब्रिटेन व ट्रांसजोर्डन की सरकार में स्थायी शान्ति व मैत्री स्थापित रखी जाय।

२. कूटनीतिक प्रतिनिधियों का आदान प्रदान।

३. दोनों में से कोई भी देश तीसरे देश के प्रति ऐसा बर्ताव नहीं करेगा, जो दोनों की आपसी मित्रता के विरुद्ध हो।

४. देश में शान्ति व्यवस्था का दायित्व ट्रांसजोर्डन पर होगा।

५. ट्रांसजोर्डन को मित्रराष्ट्रीय संघ का सदस्य बनाने में सहयोग।

संधि में निम्न सैनिक धाराएं हैं :—

१. दोनों में से किसी भी देश के युद्धग्रस्त होने पर पारस्परिक सहायता तथा ट्रांसजोर्डन द्वारा अपने प्रदेश में से ब्रिटेन को यातायात की सुविधा।

(२) किरकुक (ईराक) से हैफा (फिलस्तीन) तक जाने वाली तेल की पाइप लाइन की ट्रान्सजोर्डन में सुरक्षा के लिये ब्रिटिश सेनाओं की सुविधा।

(३) ट्रान्सजोर्डन के सैनिकों की शिक्षा व्यवस्था।

ईरान की समस्या

गत कुछ दिनों से रूस से आने वाले समाचारों से प्रतीत होता है कि लाल सेना — जिस में टैंक, तोपें और लारियां हैं — पूर्व और पश्चिम से कालक्रिन पहुंच रहे हैं। यह स्थान तेहरान से ६० मील पश्चिम में सड़कों के संगम पर एक नगर है। वहां से सेना १२० मील उत्तर पश्चिम स्थित पहलनी बन्दरगाह को जा रही है। यहां से आशा की जाती है सेनाएं रूसी बन्दरगाह बाकू चली जायेंगी।

परन्तु लन्दन क्षेत्रों का कहना है कि मास्को और तेहरान का समझौता पूर्णता तक नहीं पहुंचा। रूसी प्रस्ताव — ईरानी समस्या को १० अप्रैल तक स्थगित कर दिया जाय — का यह अर्थ लगाया जा रहा है कि रूस यह आशा करता है कि तेल की रियायतों, अजरबेजान और ईरान सरकार के पुनः संगठन सम्बन्धी चर्चा का नाजुक दौर उसके सन्तोषजनक ढंग पर पूरा हो जायेगा।

रूसी-ईरान समझौता नहीं हुआ है इसके पक्ष में दो युक्तियां हैं, एक तो ईरान ने इसका समर्थन नहीं किया है न हीं सुरक्षा कौंसिल में उपस्थित रूसी प्रस्ताव का समर्थन किया है।

स्पेन और फ्रांस में तनातनी

'पाइरेनीज सीमा पर फ्रांस की ओर जिस किसी घटना को उत्तेजना दी जायगी उसे स्पेन द्वारा अनधिकृत कर दिया जायेगा।' इस प्रकार का निर्णय कल फ्रैंको की अध्यक्षता में हुई मन्त्रि-मण्डल की एक बैठक में किया गया।

[शेष पृष्ठ १६ पर]

CC0 Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

ईरान व रूस का संघर्ष

[श्री दीनदयालु शास्त्री]

★

हमारा पड़ोसी ईरान आज रूस की प्रबल सेनाओं से क्षतविक्षत हो रहा है। यही ईरान किसी जमाने में एक भारी साम्राज्य का मालिक था। हमारे देश की भान्ति वह भी एक संस्कृति व सभ्यता का प्रवर्तक था। आज से कई हजार वर्ष पूर्व ईरान में जरथुस्त्र नाम के ऐसे महात्मा हुए थे जिनकी तपस्या भक्ति व वैराग्य की सर्वत्र धाक थी। इन्ही महात्मा जरथुस्त्र के शिष्य या पैरोकार आज अग्निपूजन पारसियों के नाम से हमारे देश में निवास करते हैं। समय आया धार्मिक क्षेत्र के साथ साथ ईरान के राजनैतिक क्षेत्र में भी प्रगति की ओर एक विशाल साम्राज्य का निर्माण किया जिसकी तूती अफगानिस्तान से लेकर यूनान तक सारे पश्चिमी एशिया में बोलती थी। गये जमाने में इसी ईरान के सम्राट डेरेयस ने यूनान द्वारा योरप के विजय करने की ठानी थी किन्तु इसमें वह असफल रहा था। इसके बाद भी समय समय पर इतिहास में ईरानी साम्राज्य के उत्थान व पतन के हम वर्णन पढ़ते हैं। ईसा की सातवीं सदी में इस्लाम ने यहां पहुंच कर ईरान की संस्कृति व सभ्यता को अरबी जामा पहनाया और सदा के लिये पहले व बाद के ईरान को बदल दिया। इस्लाम से ईरान की पृथक सत्ता पर्यात दिन के लिये समाप्त हो गयी थी किन्तु इसका साम्राज्यवाद में भी बना रहा था। इसी साम्राज्य के कर्णधार नादिर शाह ने अठारहवीं सदी में पंजाब के रास्ते आकर हमारी राजधानी दिल्ली को नष्ट करने का उपक्रम किया था।

जारशाही रूस

ऐसा लगता है कि नादिरशाह के साथ ही ईरान का साम्राज्य खण्डित होने लगा था। उसके पड़ोसी टर्की व रूस प्रबल हो रहे थे और मौका पाकर उसका अंगभंग करने में लगे थे। आज के टर्की का पूर्वीय प्रदेश दो शताब्दी पूर्व ईरानी शाहों के कब्जे में था, समय पाकर वीर तुर्कों ने ईरान से वह प्रदेश हड़प लिया। जारशाही रूस इस विषय में टर्की से अधिक सचेत रहा और ईरानी सेनाओं को हरा कर केस्पियन समुद्र के पूर्वी व पश्चिमी अंचलों में अवस्थित विशाल प्रदेशों को ईरान से छीनने में सफल हुआ था। आज के तुर्कमानिस्तान, दागिस्तान, अजरबेजन व जार्जिया प्रदेश अठारहवीं सदी में ईरान साम्राज्य के अंग थे। अब वे रूसी प्रदेश हैं। रूस की इस झड़प को ब्रिटेन उन दिनों सदा सशंक दृष्टि से देखता था अतः उचित मौका देखकर वह ईरान की मदद भी करता था। ब्रिटेन की इस मदद के कारण दो एक बार रूस ने कैस्पियन के पश्चिमी प्रदेशों से किनारा भी कर लिया था किन्तु बाद में वह पुनः वहां आधमका तब से आजतक वह इन प्रदेशों का मालिक बना हुआ है।

रूस ब्रिटेन का समझौता

ईरान के उत्तरी प्रदेशों को रूस द्वारा हड़पे जाते देखकर ब्रिटेन बाद में अधिक सशंक रहा और अगले सौ सवा सौ साल तक वह रूस से मिल कर ईरान के अंगभंग व शोषण में प्रवृत्त हुआ। इन दोनों की सम्मिलित योजना के परिणाम स्वरूप सन् १९०७ में ईरान तीन पृथक भागों में बंट गया। कहने को वह अब भी स्वतंत्र देश था किन्तु यथार्थ बात यह थी कि उसके अवशिष्ट उत्तरी प्रदेश में जिसमें राजधानी तेहरान भी शामिल थी रूस की तूती बोलती थी और दक्षिणी प्रदेश में जहां समुद्री व्यापार कायम था ब्रिटेन मनमानी करने में स्वतंत्र था। केवल मध्य ईरान में जो रेत व पहाड़ों का समूह मात्र है ईरानी सरकार शासन के लिये जिम्मेदार थी। रूस व ब्रिटेन के इन प्रदेशों को अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में प्रभाव क्षेत्र कहा जाता था यद्यपि यथार्थ में उन्हें अधिकृत प्रदेश कहा जाना चाहिये। ईरान की यह दुर्दशा सन् १९१८ तक बनीरही। इस साल रूसी क्रान्ति के एक नेता ट्राट्स्की ने जो विदेशी मामलों को देख रेख के लिये जिम्मेदार थे, ऐलान किया कि हम सोवियत के आदर्शों के अनुसार ईरान में कोई अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं करना चाहते अतः उत्तरी ईरान में ही अपनी आर्थिक व राजनैतिक सुविधाओं को तिलांजलि देते हैं। अब से इस प्रदेश में ईरान की सरकार जैसा चाहे प्रबन्ध करने में स्वतंत्र है। सम्भवतः ब्रिटेन दक्षिणी ईरान में अपने विशिष्ट अधिकारों को त्यागने के लिये रजामन्द न होता किन्तु रूस की स्पष्ट घोषणा का वह कुछ इलाज न करसका और अपनी सेनाओं को सन् १९१८ में ही दक्षिणी ईरान से हटाने को विवश हुआ। इस प्रकार सन् १९१८ में सोवियत नीति के कारण ईरान पूर्ण स्वतंत्र राष्ट्र बन सका।

स्टालिन की नीति

वही ईरान आज सन् १९४६ में उसी सोवियत रूस की नवीन नीति के कारण क्षत विक्षत हो रहा है। हर कोई राजनीतिज्ञ जानता है कि सन् १९१७-१८ में सोवित यूनियन का आरम्भ था। राजनीति का प्रारम्भ आदर्शवाद पर आश्रित होता है अतः उन दिनों के सोवियत सर्वेसर्वा लेनिन आदर्शवादी थे। वे जारशाही से प्राप्त रूस को आन्तरिक दृष्टि से संभालने में लगे थे। रूस के बाहर क्या होता है इसकी न तो उन्हें चिन्ता थी और सम्भवतः न सामर्थ्य ही। उनके वर्तमान अनुयायी स्टालिन सोवियत रूस को आन्तरिक दृष्टि से पूर्ण व समर्थ समझते हैं। इस युद्ध ने यह स्पष्ट भी कर दिया है कि स्टालिन के रूस में जारशाही रूस से आन्तरिक भेद नहीं है। वह तो भिन्न-भिन्न जातियों से बना हुआ एक ऐसा संगठन है जिसे बाहर की शक्तियां कुचल नहीं सकतीं। आन्तरिक शक्ति जान लेने के साथ ही स्टालिन को यह भी पता है कि सन् १९४१ में रूस के पड़ोसियों की मदद से जर्मनी ने उस पर हमला किया था। अब पांच वर्ष बाद विजयी होने के बाद यथार्थवादी स्टालिन यह चाहता है कि भविष्य में किसी तरफ से रूस पर हमला न हो। योरप के अपने पड़ोसी फिनलैंड, पोलैंड; हंगरी व रूमानिया को अपना बना कर, अपने स्वार्थ की सरकारें वहां बना कर स्टालिन निश्चिन्त हो गया है। अभी बहुत काल तक योरप में रूस को कुचलने वाली कोई शक्ति पैदा न होगी यह स्टालिन जानता है। रह गया एशिया यहां टर्की, ईरान व चीन द्वारा उस पर हमला हो सकता है। इन में ईरान सर्वाधिक असमर्थ है अतः वहां अपने को प्रबल बनाना स्टालिन का मुख्य उद्देश्य है। उत्तरी ईरान में हो रही सभी रूसी कार्यवाहियां इसी उद्देश्य से हो रही हैं।

अजरबेजान

अठारहवीं सदी में रूस ने ईरान से कैस्पियन समुद्र के पश्चिम का अजरबेजान प्रदेश हथियाया था। यह प्रदेश तुर्क आबादी का है और मिट्टी के तेल व पैट्रोल का प्रमुख केन्द्र है। इसकी राजधानी बाकू में मजदूरों के निवास के लिये जो योजना सोवियत सरकार ने बनाई है वह सभी देशों के लिये अनुकरणीय है। इस रूसी अजरबेजान के दक्षिण में ही ईरानी अजरबेजन अवस्थित है। संस्कृति, भाषा व राजनैतिक दृष्टि से रूस व ईरान में आजकल बटे हुए दोनों अजरबेजान प्रदेश एकत्र होने चाहिये। एक संगठन में होने चाहिये यदि ईरान में रहें तो कमजोर ईरान से इन प्रदेशों का पैट्रोल कोई भी तीसरी महाशक्ति प्राप्त कर सकती है। यदि रूस में रहें तो अजरबेजन के दोनों भागों के तुर्क जहां एक प्रबल राष्ट्र में समा जाते हैं वहां उनका पैट्रोल भी रूस के पास बना रह सकता है। पिछले दिनों ईरानी अजरबेजान में प्रांतीय स्वतन्त्रता का जो आन्दोलन था वह इसी एकीकरण के आधार पर आश्रित था, रूस का इसमें इशारा व मदद थी यह स्पष्ट सी बात है। रूस अपने जातिबन्धुओं को अन्य प्रदेश में रहने दे यह उचित नहीं है लिहाजा उन्हें विदेशी सरकार से मुक्त कराना और पुनः उन्हें समय पाकर अपने में मिला लेना रूस को अभीष्ट था और वही उसने प्रकारांतर से किया भी। ऐसा करने में अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि से रूस सम्भवतः गलती पर था किन्तु तरीका ठीक न होते हुए भी रूस का ऐसा चाहना व करना स्वभाग्य निर्णय व जातिगत न्याय की दृष्टि से स्वाभाविक है।

कैस्पियन सागर

आज तो सभी रूसी सेनायें अजरबैजान को भी याद करके राजधानी तेहरान व ईरान के कैस्पियन समुद्रवर्ती प्रदेश को हथियाने में लगी हैं। जातिगत दृष्टि से इस प्रदेश में न तुर्क बसते हैं और न रूसी अपितु ईरानी बसते हैं अतः रूस का इन प्रदेशों में पहुंचना न्यायानुमोदित नहीं है। फिर भी रूसी सेनाएं आपे से बाहर होकर इन प्रदेशों में पहुंच रही हैं इसका कारण है कमजोर ईरान से रूस को भय। कमजोर ईरान से मार्ग पाकर कोई विदेशी शक्ति कैस्पियन सागर पर कब्जा न कर ले यह आशंका रूस को ऐसा करने में बाधित कर रही है। रूस का जिसकी लाठी उसकी भैंस के तरीके को अपनाना हमारी राय में तो ठीक नहीं है किन्तु जिस रूस के पास कैस्पियन समुद्र का तीन चौथाई भाग है वह शेष एक चौथाई को अपने शत्रुओं के लिये खुला छोड़ दे इसे स्टालिन कभी नहीं गवारा कर सकता। समूचे कैस्पियन को हथियाना और अपने पड़ोसी ईरान में अपने पक्ष की सरकार बनाना तथा उसे मजबूत रखना यथार्थ उद्देश्य है। अमेरिका के बाद पैट्रोल की निकासी में रूस संसार में सर्वोपरि है। रूस का यह पैट्रोल कैस्पियन सागर के चारों ओर विद्यमान है। इस सागर का जो पार्ट रूस के हाथ में है वह तो सुरक्षित है किन्तु ईरानी कैस्पियन का पैट्रोल किसी विदेशी शक्ति को न मिल जाय यह चिन्ता रूस को सताती है। आज की दुनियां में पैट्रोल का मालिक ही प्रबल है इसे रूस भली भांति जानता है अतः येन-केन प्रकारेण उत्तरी ईरान के पैट्रोल को वह हथियाना चाहता है। ईरान में रूस के प्रवेश का

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

साहित्य सब वादों स स्वतन्त्र है

[श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन']

रवि ठाकुर के महान् व्यक्तित्व एवं उनकी महत्तर साहित्य साधना ने सब भारतीय भाषाओं के साहित्य की गति-विधि को प्रभावित किया है। हिन्दी भाषा के तत्कालीन काव्य-कहानी-उपन्यास साहित्य पर भी रवि ठाकुर का प्रभाव पड़ा है। विदेशी साहित्य से जो हमारा सम्पर्क इधर बढ़ा, रूसी, फ्रेन्च, जर्मन, इङ्गलिश-साहित्य से जो हमारा सम्पर्क हुआ, उसने भी हमारी विचारधारा को प्रभावित किया। इस प्रकार गत पच्चीस वर्षों से अपनी हिन्दी-भाषा के साहित्य में हम एक विशेष प्रकार की विस्तार-रुचि को प्रविष्ट होते देख रहे हैं। इस विज्ञान-युग के नये विचारों और चमत्कारों ने भी हमें अछूता नहीं छोड़ा है। और इन सबके अतिरिक्त हमारे साहित्य-निर्माण पर प्रभाव पड़ा है उस एक लंगोटी वाले व्यक्ति का, जिसके एक-एक चरण-निक्षेप ने देश की चेतना को अधिकाधिक उद्दीप्त एवं उद्बुद्ध किया है। हमारे देश का यह युग गान्धी-युग के नाम से विख्यात है। इस युग में हमने शताब्दियों की अपनी शृङ्खलाओं को — रूढ़िमूलक, अविचारपूर्ण प्राणान्तक धार्मिक एवं सांस्कृतिक शृङ्खलाओं को खण्डित होते देखा है। खण्डित होते समय की — उनकी झनझनाहट ने हमारे मन एवं हृदयों में एक अभिनव सिहरन उत्पन्न की है। हमारे प्राण-पखेरू ने अपने अनिमेष नयनों से असीम आकाश को नापने और अपनी शताब्दियों के पिंजरा-बद्ध, किंतु अब उन्मुक्त पङ्खों से दिगदिगान्त को अतिलंघित करने साहस किया है। और आज के हमारे साहित्य में इस उड़ान की अस्पष्ट किंतु निश्चित आकुलता के दर्शन हो रहे हैं। हमारे साहित्य पर, हमारे काव्य, उपन्यास, कथा-साहित्य पर, गांधी निबन्ध एवं आलोचना-साहित्य पर, गान्धी के महामहिम व्यक्तित्व की, उनकी प्रचण्ड कर्मठता की, उनके सनातन किन्तु नित नव सिद्धान्तों की

श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

अमिट छाप पड़ी है! गान्धी के सहस्र-सहस्र अजस्र बलिदानों ने देश को अयुत वरदान दिये हैं। हमारा साहित्य भी गांधी के वरदानों का प्रसाद प्राप्त कर रहा है। भारतवर्ष के जन-समूह को, भारत के आबाल-वृद्धों को, भारत की नारियों को, भारत के विभिन्न धर्मावलम्बी जनों को, भारतवर्ष के तृण-पल्लवों, रजकणों एवं यहां तक कि अनिलाम्बर को गांधी ने विद्रोही बनाया। हिन्दी भाषा के साहित्य में जो आशावादितापूर्ण विद्रोह की अभिव्यक्ति है, वह गांधी की देन है। जिस अणोरणीयान् महतो महीयान् परम तपस्वी नरोत्तम गांधी ने 'जी हां' कहते रहने वाले इस देश को 'कदापि !!!' कहने का दुर्दमनीय साहस प्रदान करके मानव समाज के इतिहास में एक अघटित पूर्ण अद्भुत राष्ट्रीय क्रांति की ज्वाला प्रज्वलित की, उसका प्रभाव हिन्दी-साहित्य पर कैसे न पड़ता? आज उस प्रभाव का बिम्ब आप अपने साहित्य के प्रत्येक अङ्ग पर देख सकते हैं।

साहित्य में युग-धर्म का वही तत्व श्रेयस्कर है, जो शाश्वत, सनातन, चिर-कल्याणकर होता है। मानव एक युग का नहीं, युग-युग का, कल्पों एवं मन्वन्तरों का, संचित सांस्कृतिक प्रतीक है। अतः साहित्यकारों को युग विशेष के क्षणिक आवेश से पूर्णतः अभिभूत नहीं होना चाहिये। आज इस प्रेशन के उठाने की मैं कोई आवश्यकता अनुभव नहीं करता कि साहित्यिक कृतियों का निर्माण सोद्देश्य हो, उद्देश्य को, लक्ष्य को लेकर हो, अथवा निरुद्देश्य हो। वास्तव में तो बात यह है कि सोद्देश्य और निरुद्देश्य ये शब्द ही भ्रांति उत्पादक हैं।

मेरा सदा से विचार रहा है और आज भी है कि साहित्य किसी वादविशेष की सीमाओं में आबद्ध नहीं

(पृष्ठ १८ का शेष)

यह भी कारण है इसे वहां के समाचार पत्रों ने खुल्मखुल्ला स्वीकार किया है। ईरान में रूस का प्रवेश विरोधियों को अखरता है यह ठीक है। उसका यहां प्रवेश धींगामस्ती पर निर्भर है यह भी सत्य है किन्तु शत्रु के हाथ में जाने की अपेक्षा ईरान रूस के हाथ में रहे यह भी स्टालिन के लिये आवश्यक है। और इसी दृष्टि से वह उसे हथिया भी रहा है। देखना केवल यह है कि सभ्य-संसार का दुनियां की रक्षा के लिये भी सुरक्षा कौंसिल ईरान व रूस के संघर्ष को किस रूप में शांत करती है।

मैं बन्दी क्यों ?

मैं बन्दी हूं पर हूं स्वतन्त्र, आजादी मेरा ध्येय रहा,
स्वातन्त्र्य युद्ध में मर मिटना, सत्वर मेरा उद्देश्य रहा।

मुझको मानव से द्रोह नहीं, पर हूं विद्रोही शासन का;
उसके कटु अत्याचारों का, उसके मिथ्या विद्यायन का।

लोहे की कीलों से जो मेरे, अंग-अंग को छेद रहे;
वे क्या जाने मेरे शोणित की लहरों में क्या भेद भरे।

जो आज जेल, कालापानी, फांसी के तख्ते दिखा रहे;
वे क्या जाने भारत के वीरों को वे मरना सिखा रहे।

जो अत्याचारों की चक्की में आज हमें हैं पीस रहे।
वे अनजाने ही पनप रही, इस क्रान्ति बेल को सींच रहे।

जिनके शासन का बोझ किसानों, मजदूरों पर अड़ा हुआ;
उनके विरुद्ध मैं आज द्रोह करने को सत्वर खड़ा हुआ।

मैंने इस क्रूर गुलामी से जकड़े जीवन में क्या देखा?
भारत की जर्जर छाती पर, अगणित अभिशापों का लेखा!

मैंने वस्त्रों से हीन शीत में सिकुड़ रहे मानव देखे;
शोषण के बल पर इठलाते अत्याचारी दानव देखे।

क्षुधा और बेचैनी से शिशुओं का दम घुटते देखा;
रोटी के टुकड़ों पर नारी के यौवन को लुटते देखा।

मैंने देखी प्रासाद और महलों में होती रंगरलियां;
मैंने देखी असहाय दीन-हीनों की जलती झोपड़ियां;

मैंने पूंजीपति शासन में, पूंजी को ही पुजते देखा;
मजदूरों और किसानों के घर का दीपक बुझते देखा।

मैंने निरीह नर-झुण्डों पर लाठी-डण्डे पड़ते देखे;
मैंने अकाल पीड़ित जन के कंकाल कहीं सड़ते देखे।

मैंने देखा है भूखों को कुत्तों का झूठा भी खाते;
मैंने देखा है धनिकों को वैभव में इतरा, इठलाते।

मैंने कुत्तों की मौत अरे, इन्सानों को मरते देखा,
बेकारी से पीड़ित युवकों को आत्मघात करते देखा।

मैंने जो देखा देख देख, मेरा शोणित तप्त हुआ;
मैंने शासन से टक्कर ली, जब और न मुझ से जब्त हुआ।

मैंने अगस्त-आन्दोलन जैसे पृष्ठ अनेकों उलट दिये:
मैंने युवकों में शौर्य फूंक, शासन के सांचे पलट दिये।

तब मुझको व्याघ्र समझ शासन ने बन्द सीखचों में डाला;
पर मेरे कार्यों ने युवकों को बना दिया है मतवाला।

मुझको जीवन से प्रेम नहीं, मरने की कुछ परवाह नहीं;
मेरा शरीर है लौह-युक्त, मेरे सीने में आह नहीं।

मेरे पीछे मेरे मित्रों को है मेरा सन्देश वही;
'भारत-भू पर तुम मिट जाना' मेरी गाथा का शेष यही।

मेरे मित्रों को मार्ग आज मेरा बलिदान दिखायेगा;
जो आज हमें सिखलाते हैं, उनको भारत सिखलायेगा।

हिन्दू, सिख, मुस्लिम, ईसाई, कर आज तिरंगा झण्डा लें;
बढ़े चलो स्वातन्त्र्य-मार्ग पर कांग्रेस की छांह तले।

'जय भारत-भू' 'जय हिन्द' और 'जय नेताजी' की बोल बढ़ो;
भारत-भू के भूखे किसान, सीने के बख्तर खोल बढ़ो।

मैं बन्द सींखचों में, फिर भी है, इतना मुझको श्रेय रहा;
मैं बन्दी हूं पर हूं स्वतन्त्र आजादी मेरा ध्येय रहा।

— देवकीनन्दन तैलङ्ग

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

मुस्कान — एक कला

[श्री शंकरदेव विद्यालङ्कार]

★

मुस्कराना भी एक कला है। जिस तरह सब लोग हंसना नहीं जानते उस तरह मुस्कराना भी नहीं जानते। इसमें मनुष्य के हृदय की कोमलता और आकर्षण छिपा है। चार्ल्सश्वेब अमेरिका के प्रसिद्ध धनकुबेर एन्ड कार्नेगी से प्रतिवर्ष १० लाख डालर वेतन में पाते थे। वे अपनी इस सफलता का कारण अपनी मोहक मुस्कान को बताते थे। निस्सन्देह उनकी मुस्कान में सुन्दरता और आकर्षण था। कहते थे कि मेरी मुस्कान की कीमत १० लाख डालर से भी कहीं अधिक है। विश्वविख्यात अभिनेत्री मेरी पिकफर्ड से भी जब उसकी सफलता का कारण पूछा गया, तो उसने अपनी मुस्कान और प्रसन्नता ही कही। जब वे अपने पति डगलस से सम्बन्ध विच्छेद कर रही थी, तो भी उसके मुख पर वही मुस्कान और शान्ति रहती थी, यद्यपि वे दिन उसके लिये अत्यधिक दुःख से भरे हुए थे। इसी तरह एक प्रसिद्ध व्यापारी ने लिखा है कि मैं अपने व्यापार के लिये सामान्य-शिक्षित परन्तु सदा मुस्कराने वाली लड़की को ज्यादह पसन्द करूंगा बजाय उसे फिलासफी के डाक्टर के जिसके मुख में सदा गम्भीर और उदासीनता प्रतीत होती हो। इस विषय में चीन में भी एक सुन्दर कहावत प्रचलित है कि जिस व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कान न रहती हो उसे कभी भी दुकान नहीं खोलनी चाहिये।

निस्सन्देह मुस्कान भगवान की अनुपम कृति है, अनेकों कवियों और प्रेमियों ने उसके महत्व को आंका है। उसमें सहज सौन्दर्य और आकर्षण को केन्द्रित कर धरा है। जब हम बच्चों की रह-रह के आने वाली मुस्कान को देखते है तभी हमें यह ज्ञान होता है कि संसार दिन और रात के फेर के सिवाय भी कुछ चीज है। यह कठिन संसार भी सौन्दर्य से पूर्ण है। यह दुखद जीवन भी जीने के योग्य है।

स्त्री और पुरुष

मुस्कराती हुई स्त्री भगवान की सृष्टि में सर्वोच्च वृत्ति कही जाती है। वह इसी मुस्कान से मनुष्य को मोहित कर लेती है। क्योंकि उसमें उसकी सहज सुन्दरता और स्वाभाविकता होती है। परन्तु जब वह किसी को नहीं चाहती, तो उसके सम्मुख मुस्कराना छोड़ देती है। वह उस से संकुचाती है। उसे भूलभुलैया में डाल कर अपने से दूर करना चाहती है।

स्त्रियां स्वभाव से इमानदार होती हैं। यदि वह पुरुष से यह नहीं कह पाती कि मैं तुमसे प्रेम नहीं करती हूं, तो वह उदासीन हो मुंह लटकाये हुये बैठ जाती है। वह दूसरे प्रेमी को देखकर मुस्कराती है और उसे जताना चाहती है कि मैं तुम से प्रेम करती हूं। परन्तु मनुष्य उस की इस दीर्घ प्रक्रिया से असन्तुष्ट हो उसे निर्दय तथा सहानभूतिशून्य समझता है; परन्तु यह ठीक नहीं। वह सीधे ढंग से कहना ही नहीं जानती। इस लिये पुरुष को उसे क्रूर न समझना चाहिये। यदि वह पुरुष की तरह सीधे जवाब ही देदे, तो वह नारी ही न रहेगी। वह अपनी मुस्कान की कीमत को जानती है। वह उसी मुस्कान से अपने प्रेम का प्रदर्शन करती है और उसके अभाव से घृणा को व्यक्त करती है। जिस तरह दिन के होने पर कमल मृदुरश्मियों के प्रकाश में खिल जाते हैं और रात में बन्द हो जाते हैं, उसी तरह वह अपने अधर-पल्लवों को प्रेम में खोलती है और अन्यथा बन्द कर लेती है।

परन्तु जब कोई मनुष्य तुम्हारे से प्रेम नहीं करता है, तो वह तुम्हें देख कर मुस्कराता है। कुछ लोग उस मुस्कराहट को देख कर उसे प्रेम का प्रतिदान समझ लेते हैं। परन्तु वह तुम्हारी दीनता को देख कर तुम्हारे पर व्यंजना में मुस्कराता है। वह तुम्हारे हृदय पर चोट करना चाहता है। उसे प्रेमी को सताने में मजा आता है। इसलिये वह बार-बार मुस्कराता है। निस्सन्देह उसकी मुस्कान कुटिलता और तीव्र व्यंजना से पूर्ण होती है। उसमें सहानभूति का नाम नहीं होता।

भिन्न-भिन्न मुस्काने

सभी मनुष्यों की मुस्कानें अलग-अलग होती हैं। वे उनकी भावनाओं को सूचित करती है। बुद्धिमान पुरुष सदा प्रसन्न रहते है। उनके मुख पर हमेशा मुस्कान होती है। जार्ज बनार्ड शाह सदैव मुस्कराते रहते हैं। उनकी होठों को देख कर यह प्रतीत होता है कि मानों वे अपने से ही खेल रहे हों। प्रत्येक व्यक्ति फोटो को देख कर यही सोचता है कि वह हंसमुख हमारे साथ भी बात-चीत करे। परन्तु दुखित व्यक्तियों में मुस्कान का अभाव होता है। फ्रांस के अमर साहित्यकार रूपो का जीवन दुख से भरा हुआ था। उसके बारे में कहते हैं कि वह जीवन में दो बार ही मुस्कराया था। वह दुखित कवि जो गम्भीर चिन्तन में रत हो अन्तर्ज्ञान अथवा भगवान की आवाज की प्रतीक्षा में होता है, वह कभी मुस्कराता नहीं है। परन्तु वह जिस सौन्दर्य का हृदय में साक्षात्कार करता है वह उसके काव्य के द्वारा प्रकट हो जाता है। फिलासफर इसलिये मुस्कराता है कि बाद में रोये। क्योंकि जब वह लोगों को दुखित होते देखता है तो उसे उनके अज्ञान पर हंसी आती है, परन्तु जब उसे यह पता लगता है कि मेरे समाधानों को दुनिया अपना न सकेगी, तो वह दुखित हो रो पड़ता है।

राजनीतिज्ञ की मुस्कान बड़ी भयंकर होती है। क्योंकि वह तभी मुस्कराता है जब उसकी कार्यसिद्धि होती है। उसमें ईर्षा की भावना छिपी होती है। वह तुम्हारे पर अपना अधिकार करना चाहता है। मूर्ख को मुस्काना नहीं आता। क्योंकि वह जंगली होता है। यदि वह मुस्कराता भी है, तो वह निरर्थक होता है। वह मुस्काने की जगह ठहका मार के हसता है। मूर्ख मनुष्य जब लोगों को हंसते हुए देखता है तो हंसी का कारण बिना समझे ही-ही-ही करके हंसने लग जाता है! फिर वह जब अपने घर में आता है तो पुनः उसके कारण को समझ कर हंसता है। तब उसे फिर वही लोगों की हंसी याद आती है और खिलखिला कर हस पड़ता है। इस प्रकार मूर्ख मुस्काना नहीं जानता और वह एक बात पर तीन बार हंसता है। पागल प्रायः कम ही मुस्काते हैं। उन्हें हंसना ही पसन्द होता है, वह भी बादल की तरह गरजते हुए। उसके हंसने का कोई कारण नहीं होता। जब उसके मन में कोई तरंग आ जाये वह जोर से हंस पड़ता है। खपती लोगों की मुस्कान भी दर्शनीय होती है। वह अपनी उपेक्षा करने वाले लोगो को बच्चा समझता है। उसकी लोगों के प्रति उपेक्षा होती है और अपने विशाल ध्येय का अभिमान होता है।

गरीब की मुस्कान उसकी निर्धनता को प्रकट करती है। परन्तु भिखारी की मुस्कान आंखों में होती है। उसमें भीख प्राप्ति की आशा छिपी होती है। शासकों की मुस्कान में उपेक्षा और रौब होता है। महात्माओं की मुस्कान शीशे की तरह पारदर्शक होती है - उसमें उनकी दया, प्रेम और हृदय की शान्ति छिपी होती है। वकील प्रतिपक्ष की बेवकूफी युक्तियों को सुनकर मुस्काता है। परन्तु जज अभियोक्ताओं की धूर्तता पर आनन्द से मुस्काता है। कलाकार प्रकृति के सौन्दर्य की ओर अपने प्रदर्शन की सफलता को देखकर मुस्काता है। इसी तरह सभी प्रकार के लोगों की अलग अलग मुस्कान होती हैं

मुस्कान को समझिये

जब कभी बाजार में कोई व्यक्ति सायकिल से गिर जाता है, तो लोग उसे देखकर मुस्काते। वह स्वाभिमान को चोट लगती है परन्तु वह भी अपनी हार नहीं मानना चाहता। इसलिये वह भी प्रत्युत्तर में मुस्कराता है और यह जताना चाहता है कि तुम्हारी मुस्कान से मेरा अपमान नहीं हुआ है। मैं भी उन्हीं व्यक्तियों में से एक हूं जो आये दिन खुले बाजार में सायकिल से गिर जाते हैं।

वक्ताओं को अपने भाषणों पर अभिमान होता है, सुधारकों को अपनी योजनाओं पर और सम्पादकों को अपने अग्रलेख पर। वे लोग जिस किसी को भी मिलते हैं, अपने भाषण की, योजना की अथवा अपने अग्रलेख की तारीफ करते हुए नहीं उकताते। भले ही वह व्यक्ति उनकी बातों को न समझता हो और भले ही उनकी रचना सम्मान के योग्य न हो। वे लोग अपने श्रोताओं की मुस्कान पर अपनी कीमत को नापने लगते हैं। परन्तु उस मुस्कान में उनके प्रति उपेक्षा और अरुचि का भाव भी छिपा होता है।

निस्सन्देह मुस्काना एक कला है। उसे अच्छी तरह समझिये। उसका ठीक समय पर प्रयोग कीजिये। यदि सभी लोग मुस्काने को जानते होते, तो आज दुनियां में इतनी कलह न होती। जर्मन सेनापति हिन्डनबर्ग के बारे में कहा जाता है कि उसकी भयंकर मूछें युद्ध की घोषणा थी। मैं समझता हूं कि यदि वह अपनी उन मूंछों को कटवा कर अपने चेहरे पर कुछ मुस्कान लाने की कोशिश करता तो वह विश्व शांति में कुछ न कुछ अवश्य सहायक होता। यही नहीं मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि यदि उस जैसे भयंकर लोग कुछ और भी कोशिश करते और अपने चेहरे पर सन्धि की मुस्कान बनाये रखते, शायद उन्हें शांति का नोबल पुरस्कार भी मिल जाता। खैर जो भी हो। आपने मेरा लेख पढ़ लिया है। यदि ठीक तरह न पढ़ा हो, तो एक बार और पढ़ जाइये। यही नहीं, अपने मूर्ख मित्रों को भी पढाइये। आप मुस्कान के महत्व को समझिये और ठीक तरह से मुस्कराइये। यह न हो कि आप मेरा लेख पढ़ने के बाद भी मुस्काने में मूर्ख ही रह जायें।

———

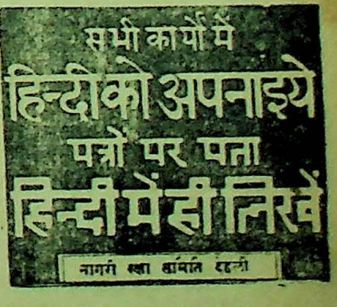

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

★ कहानी ★

इंपा छाप ब्रांडी

श्री नारायण हरि आप्टे

सारे संसार में या हिन्दुस्तान में नहीं तो कम से कम केवल महाराष्ट्र में जो पांच लाख पचपन हजार पांचसौ पचपन बेकार हैं; — यह मेरा अपना अनुमान है, जन गणना के आंकड़े नहीं — उनमें से मैं भी एक हूं। मेरा नाम है बेकारदत्त। पचीसवें वर्ष में बी० ए० पास करने के बाद बहुत समय तक नौकरी की दर्खास्तें भेजने पर भी जब नौकरी नहीं मिली और माता-पिता से और दर्खास्तें भेजने के लिए डाक-खर्च के पैसे मांगने में भी शर्म मालूम होने लगी तो एक दिन मैं महाराष्ट्र के विशाल नगर पूना जा पहुंचा। वहीं किसी प्रसगवश उद्योगदेव इं०पा० के साथ मेरी मैत्री हो गयी। हम दोनों एक ही मकान और एक ही ढाबे के सदस्य हो गये। दोनों ही पेट के लिए कुछ उद्योग करने के लिए जुट पड़े।

उद्योगदेव इं० पा०!

उद्योगदेव तो किसी का नाम हो सकता है पर इं० पा० क्या है? स्वयं उद्योगदेव ने यह इं० पा० अपने नाम के साथ जोड़ लिया था। लोग उसे इं० पा० ही कहते थे। मैंने उससे इसका रहस्य पूछा तो उसने हंसकर कहा, इं० पा० का अर्थ है इंटर पास। मेरे नाम के साथ यह उपाधि है।

मैं आश्चर्य से उसके मुंह की ओर ताकने लगा। उसने कहा, इंटर पास होना कोई पराक्रम नहीं है। किन्तु इतनी विद्या पेट भरने के लिए अपर्याप्त है यह अनुभव होते ही मुझे बड़ी विरक्ति हुई। मैं सोचने लगा, खैर जाने दो मैंने क्या सोचा यह तुमसे क्या कहूं। ईसब नीति की पूंछ-कटी गोदड़ी की कहानी तुम्हें मालूम ही है, उसकी पूंछ कट गयी थी। उसे बहुत बुरा लगा। इसलिए उस कटी पूंछ का गुणगान करने के लिए उसने एक बड़ी सभी बुलाई। हम शिक्षितों के भी पूंछें लग जाती हैं। उससे हमारे जीवन का प्रश्न सहज होने के बजाय क्या अधिक कठिन नहीं हो जाता? पर क्या हम उस पूंछ को काट फेंकते हैं? नहीं। नौकरी की भीख मांगते हुए सबसे पहले उस पूंछ का ही जिक्र करते हैं, मानों वही सबसे मुख्य है। वह तो भिक्षा पात्र है। किसी का तांबे का है, किसी का टीन का है। फिर उसे छिपाया क्यों जाय।

उसका यह वर्णन मुझे मर्म-स्पर्शी लगा फिर भी मैं उससे सहमत नहीं हुआ। मैं कुछ बोला नहीं। मेरे मौन को सहमति सूचक समझ कर उसने फिर कहा, यही देखो। मैंने यहां पूना में आकर नौकरी के लिये व्यर्थ बहुत हाथ-पांव मारे। अन्त में घूम घूम कर अखबार बेचने का काम ही करना पड़ा। मुझे क्या अनुभव मिला जानते हो? मैं इंटर पास हूं फिर भी नौकरी न करके स्वावलम्बन से ही जीवन में सफलता पाने के लिए मैंने संकल्प किया है, यह बताने पर मेरे अखबार ज्यादा मात्रा में खपने लगें। मैं उद्योगी पुरुष जो हूं। लोगों को बड़ा कुतुहल होने लगा। मन ही मन मुझे यह सब अच्छा नहीं लगता, पर क्या किया जाय। इसलिए अपने ही अभिमान को सदा जाग्रत रखने के लिए मैंने उद्योगदेव इं० पा० नाम रख लिया। और लोगों के विनोद के लिए एक सामग्री जुट गयी। यह मजे की बात नहीं है? यह कहकर उसने मेरी पीठ थपथपा दी।

अभिप्राय यह कि इं० पा० भी मेरी ही तरह परिस्थिति के शामियाने में सूख जाने के लिए लगा हुआ एक वयातीत तरुण है। सूखे केले का कुछ मूल्य है पर सूखे तरुणों का?

मुझ में और उद्योगदेव इं० पा० में एक भारी अन्तर है। मैं हतबुद्धि, उद्विग्न और निराश था और इं० पा० था ठीक इससे उलटा। वह खूब हंसता, दौड़-धूप करता और नयी नयी मित्रताएं पैदा कर मानापमान की परवा किये बिना आगे-आगे बढ़ता जाता और ठोकरें खाता। इतनी दौड़-धूप और उद्योग के बाद भी उसकी आमदनी नाममात्र की थी। केवल पचीस रुपये मासिक। अखबार बेचने वाले को और क्या मिलता! किन्तु फिर भी वह आनन्द में था।

इस बात पर मुझे आश्चर्य होता। एक दिन मैंने झुंझलाकर कहा, इंपा तुम्हें परिस्थिति से, इस कठोर जीवन से क्या जरा भी झुंझलाहट नहीं होती?

कमरे के भीतर चारपाई पर बैठे बैठे इंपा जरा हंसा, बोला, तुम्हारा यह प्रश्न पागलपन का प्रश्न है। आग पकड़ने का अभ्यास करने वाले के हाथ क्या जला नहीं करते?

'फिर तुम सदा आनन्द और उत्साह में कैसे रहते हो?'

'जरा नशापानी करता हूं —'

'नशापानी! तुम्हें तो कभी सिगरेट पीते भी नहीं देखा, इंपा!' मैंने आश्चर्य के स्वर में, कहा।

उसने सहज भाव से उत्तर दिया, 'हां। पर बीच-बीच में मौज आने पर जरा ब्रांडी पी —'

बात समाप्त होने से पहले ही मानों मैं आकाश से गिरा। 'क्या कहते हो, ब्रांडी,' मैंने और भी अधिक आश्चर्य से कहा, 'इंपा, तुम इस व्यसन में कैसे पड़ गये। सारे जीवन को मिट्टी कर देने वाला दारू का यह व्यसन तुम जैसे दरिद्र से कैसे निभेगा।' मैं जरा आवेश में आगया था, इसलिए बीच में ही रोककर इंपा ने कहा, जरा ठहरो। एक ही वार में मुंह की सारी स्टीम मत खत्म कर डालो। गरीबी की आग न जलाये इसीलिए गरीब को नशेपानी की जरूरत है। बढ़ई, लुहार, और कारखाने के मजदूर शराब पसन्द करते हैं, यह बात नहीं, किन्तु विस्मृति के लिए, परिस्थिति, बुरे दिन और जीवन कलह को भुलाने के लिए गरीब मजदूर और क्या करे, बताओ। तुम्हारे पेट में जब भूख की आग जलती है, भयानक चिन्ता के भूत आंखों के चारों ओर नाचते हैं, तो तुम क्या करते हो। खिन्न होकर झुंझलाते हो, अपने ही भीतर जलते हो। मुझसे यह नहीं होता इसीलिए मैंने नशा करना सीखा है।

'लेकिन, भैया, इस थोड़ी सी आमदनी में यह तुमसे निभेगा कैसे?'

'यही तो मजा है।' कह कर वह अपना अखबारों का बाक्स बगल में दबा कर घर से निकल गया।

मैं सोच-विचार में पड़ गया। इंपा इतना सीधा-सादा है सदा प्रयत्नशील, सदा घुमक्कड़ और सतत उद्योगी जीव है। उसे देख कर मुझे आश्चर्य होता है, और वहीं इंपा शराब पीता है! मैं उसके साथ रहता हूं इसलिए लोग मुझ से क्या कहेंगे, शराब पीना हराम है। ठीक है; लेकिन हृदय की व्यथा को दबाने के लिये — और इसी समय मुझे शंका हुई, इंपा क्या सचमुच शराब पीता है। उसके साथ एक ही मकान में रहते आज चार महीने हो गये हैं किन्तु एक भी दिन वह नशे में चूर नहीं हुआ। उसके मुंह से भी किसी दिन शराब की बू नहीं आई। शराब का व्यसन इस प्रकार लोगों की नजरों से बचाकर क्या चल सकता है।

मैंने उसका पीछा करने का निश्चय किया।

मेरा यह निश्चय उसने लक्ष्य कर लिया या नहीं, कौन जाने। एक दिन उसने हंसते हुए कहा, मेरे साथ बहुत रहते हो, पर सावधान रहना। शराबी बन जाओगे। गुण नहीं पर बुराई लग जायगी, समझे।

आश्चर्य यह कि आठ दिन तक निरंतर सूक्ष्म दृष्टि रखने पर भी इंपा को शराब पीते नहीं पकड़ सका। ख्याल हुआ, शायद इंपा अपने आपको शराबी कह कर मुझे उल्लू बनाता है। फिर सोचा, ऐसा कलंक अपने आपको लगा कर उसे लाभ क्या है?

एक बार छुट्टी के दिन घूमते हुए मैंने इंपा को सब हाल सुनाया। वह अपने स्वभाव के अनुसार खूब हंसा, बोला, यही तो मजा है, क्यों न?

इतने ही में तरुण लड़की हम लोगों के समीप से साइकिल पर सवार होकर निकली। इंपा की उससे जान-पहचान होगी। कारण, वे दोनों ही एक दूसरे को देख कर हंसे। मुझे यह कुछ अच्छा नहीं लगा।

मेरा यह भाव लक्ष्य कर इंपा ने बायें हाथ की कुहनी से मेरा ध्यान खींच कर कहा, क्या सोच रहे हो, यह लड़की कौन है? जिमखाने के उस बैंकर को जानते हो न। यह उसी की कन्या है। इंटर में पढ़ रही है। होश्यार है और प्रेमी स्वभाव की है। कैसी लगती है?

मैंने कहा, तुम्हारी उससे जान-पहचान है?

इंपा ने कहा, 'जरूर। जान-पहचान ही नहीं, हम दोनों एक दूसरे को प्यार करते हैं।'

'इंपा!' मैंने आश्चर्य से कहा।

'चौंको नहीं, मेरा उससे विवाह होने वाला है। झूठ नहीं कह रहा हूं, मैंने उसे हृदय से वरण कर लिया है।'

'और उसने?'

'यह अभी जानना है। पर इसकी मुझे इतनी चिन्ता नहीं। वह मुझे मिलेगी यह मैं जानता हूं।' उसने दृढ़ आत्मविश्वास के साथ कहा।

'इंपा, मुझे तुम्हें देख कर दुःख होता है,' मैंने सदय होकर कहा, 'अपनी स्थिति को मत भूलो। व्यर्थ आशा में पड़ कर अपना जीवन मिट्टी कर डालोगे। वह धनी की कन्या है और तुम रास्तों पर खड़े हो कर अखबार बेचने वाले। तुम्हारा और उसका मेल क्या?'

इंपा ने जरा भी निराश न होकर कहा, लेकिन मैं हूं इं० पां० उद्योगदेव। स्वावलम्बन से ऊपर चढ़ कर देखता हूं। प्रतिष्ठा धंधे के ऊंच-नीच पन में नहीं —'

'लेकिन तुम्हारा उससे इतना आर्थिक अंतर जो है।'

(शेष पृष्ठ १३ पर)

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

हमारा स्वराज्य (३)

क्या भारत में अनेक राष्ट्र हैं !

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

★

राजनैतिक कार्यकर्ताओं और राजनीति में दिलचस्पी रखने वाले प्रत्येक पाठक से हम यह अनुरोध करेंगे कि वह इस लेखमाला का अवश्य अध्ययन करे । इससे आज की राजनैतिक समस्याओं को समझने और स्वतंत्र सम्मति बनाने में उन्हें पर्याप्त सहायता मिलेगी ।

आज से २० वर्ष पहले, जब भारतवासी अंग्रेज सरकार से स्वाधीनता की मांग करते थे, तब सरकार के समर्थक उत्तर दिया करते थे कि भारत में कोई राष्ट्र ही नहीं है, और स्वाधीनता का अधिकार केवल राष्ट्र को है, इस कारण भारतवासियों को स्वाधीन शासनाधिकार मांगने का कोई अधिकार नहीं है।

आज, जब भारतवासियों ने अपनी कुर्बानियों की अकाट्य दलील से सिद्ध कर दिया है कि हम एक राष्ट्र हैं, और स्वराज्य हमारा अधिकार है तब भारत में ऐसे लोग भी उभर आये हैं, जिनका दावा है, कि हम एक अलग राष्ट्र हैं, इस कारण हमें स्वतन्त्र शासन का अलग अधिकार मिलना चाहिये, और क्योंकि स्वतन्त्र शासनाधिकार एक अलग देश में ही सम्भव है, इसलिये भारत का एक बड़ा टुकड़ा काट कर हमारे हवाले कर दिया जाय। मुस्लिम-लीग ने १९४० में और सिक्खों की संस्था ने १९४६ में यह दावा किया कि मुसलमान और सिक्ख अलग राष्ट्र हैं, इस कारण उन्हें भारत में ही 'पाकिस्तान' और 'सिक्खस्तान' नाम के स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने का अधिकार दिया जाय इनमें सिक्खों का दावा मुस्लिम लीग के जवाब में किया गया है, उसे हम केवल उपेक्षा की दृष्टि से भी देख सकते हैं, परन्तु राजनीति का इतिहास बतलाता है कि किसी भी प्रवृत्ति की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये, चाहे वह देखने में कितनी ही छोटी हो। स्वयं मुस्लिम-लीग का दावा भी एक जबानी दावा ही था, जो समय व्यतीत होने पर पाकिस्तान नाम के लम्बे चौड़े गम्भीर होने के रूप में परिणत हो गया। इसी प्रकार सिक्खों का दावा प्रारम्भ में केवल एक हल्की सी चीज प्रतीत होती है — परन्तु यदि उसके परिणामों पर पहले से विचार न किया जाय तो वही भयंकर रूप धारण कर सकता है।

सारांश यह कि स्वराज्य प्राप्त होने की आशा उत्पन्न होने के साथ ही यह प्रश्न उठ गया है कि क्या भारत में एक से अधिक राष्ट्र हैं ? दूसरा राष्ट्र होने का मुख्य दावा मुस्लिम लीग ने किया है। लीग का कहना है कि मुसलमान एक अलग राष्ट्र हैं, इस कारण उन्हें पाकिस्तान नाम का अलग राज्य बनाने के लिये भारत का लगभग चौथाई हिस्सा काट कर दे दिया जाय। सिक्खों का दावा मुसलमानों के दावे से ही उत्पन्न होता है, इस कारण हम पहले मुसलमानों के दावे की ही परीक्षा करेंगे।

सिद्धान्त-दृष्टि से

पहले हम इस प्रश्न पर सिद्धान्त रूप से विचार करेंगे कि क्या भारत के मुसलमान एक अलग "राष्ट्र" कहे जा सकते हैं ?

इस प्रश्न का उत्तर देने से पूर्व हमें एक और प्रश्न का उत्तर तलाश करना होगा ? वह प्रश्न मौलिक है। प्रश्न यह है कि मुसलमान-राष्ट्रीयता का आधार क्या है ?

क्या इस्लाम मुसलमान राष्ट्रीयता का अधिकार है। यदि ऐसा है तो पृथ्वी के सब मुसलमानों का एक ही राष्ट्र होना चाहिये था। वास्तविक बात यह है कि मुसलमान, तुर्क, ईरानी, इराकी, अफगान आदि अनेक राष्ट्रों में बंटे हुए हैं। भिन्न देशों में और भिन्न राज्यों में रहने के कारण उनकी राजनीतिक सत्ता बिलकुल भिन्न है। उनमें से कोई भी समुदाय दूसरे के अधीन रहने या उसमें अपनी सत्ता को खो देने के लिले तैयार नहीं होगा। इससे स्पष्ट है कि धार्मिक एकता राष्ट्रीय एकता का आधार नहीं है।

ईसाई धर्म के मानने वाले लोग अनेक राष्ट्रों में बंटे हुए हैं। अलग राष्ट्र का भाव, और उस भाव से उत्पन्न होने वाला संघर्ष जितना तीव्र ईसाई धर्म के अनुयायियों में है, दूसरों में नहीं है। स्पष्ट है कि एक धर्म, मत या सम्प्रदाय एक राष्ट्रीयता का आधार नहीं हो सकता। एक ही धर्म के अनुयायी राजनीतिक हिताहितों की दृष्टि से अनेक राष्ट्रों में बंटे हुए, और अनेक धर्मों के अनुयायी एक से राजनीतिक हिताहितों की दृष्टि से एक राष्ट्रीयता में गुंथे हुए दिखाई देते हैं, जिससे सिद्ध होता है कि धर्म राष्ट्रीयता का आधार नहीं है, केवल इस कारण कि वे मुसलमान हैं, भारत के ५० करोड़ निवासी भारतीय राष्ट्र से अलग नहीं हो सकते।

चीन और जापान के निवासियों का धर्म बहुत कुछ एक सा है। दोनों ही देशों में बौद्ध और शिण्टो धर्म का प्रचार है। गत शताब्दी में कुछ हिस्सा ईसाई मत ने भी बांट लिया है। यह धार्मिक समानता न तो चीनी और जापानी लोगों को एक राष्ट्र के रूप में परिणत कर सकी, और न ही उनके पारस्परिक राजनीतिक संघर्ष को नर्म कर सकी।

मुस्लिम लीग भारत के मुसलमानों को अलग राष्ट्र मान कर पाकिस्तान की मांग पेश करती है, परन्तु असली प्रश्न तो यह है कि भारत के मुसलमान अलग राष्ट्र ही कैसे हैं ? यदि मुसलमान होने के कारण ही भारत के मुसलमानों को एक अलग राष्ट्र के सदस्य मान लिया जाय तो दुनिया भर के मुसलमानों को एक ही राष्ट्र का सदस्य मान कर सब मुसलमान राज्यों को मिलना देना पड़ेगा।

यह बात सर्वथा स्पष्ट है कि केवल एक धर्म के अनुयायी होने के कारण भारत के मुसलमान पृथक 'राष्ट्र' नहीं माने जा सकते।

ऐतिहासिक दृष्टि से

भारतवर्ष के मुसलमानों को अलग राष्ट्र माना जा सकता है या नहीं, इस प्रश्न पर ऐतिहासिक दृष्टि से विचार करें, तो हमें इस परिणाम पर पहुंचने में कुछ भी कठिनाई नहीं होगी कि भारत के मुसलमान न 'राष्ट्र' के रूप में आये न उन्होंने 'राष्ट्र' बन कर भारत के प्रांतों पर राज्य किया, और न पृथक 'राष्ट्र' के सदस्य होकर यहां के निवासी बने।

पहले, भारत में मुसलमानों के प्रवेश पर दृष्टि डालिये। प्रारम्भिक मुसलमान आक्रमणकारी न यहां किसी मुसलमान साम्राज्य के विस्तार के लिये आये और न कोई मित्रराष्ट्रीय झण्डा गाड़ कर खड़े हुए। हर एक मुसलमान आक्रमणकारी ने अपनी अलग व्यक्तिगत हैसियत से फौजें इकट्ठी करके भारत पर हमला किया, और अपने गिरोह के नाम पर राज्य की स्थापना की। शहाबुद्दीन गौरी से लेकर अहमदशाह अब्दाली तक एक भी ऐसा मुसलमान आक्रमणकारी नहीं आया, जिसने जीत, लूट या हुकूमत कायम करने के अतिरिक्त किसी दूसरे उद्देश्य की घोषणा की हो या कोई दूसरा प्रयत्न किया हो। इस्लाम या शिक्षित राष्ट्र की स्थापना का तो उन लोगों को स्वप्न भी नहीं आया। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि पठान, तातार, तुर्क, मुगल और अफगान जाति के सेनापतियों ने एक दूसरे के पीछे भारत पर आक्रमण किये, जिनमें नवागन्तुकों में पहले से आये हुए मुसलमानों को उखाड़ फेंकने का यत्न किया। वह आपस में कटते-मरते और नई-नई सल्तनतें बनाते रहे। यहां सल्तनत स्थापित कर लेने पर भी प्रत्येक मुसलमान शासक को सबसे अधिक युद्ध मुसलमान विद्रोहियों से ही करने पड़े। वह जीतने और भारत में बस कर राज्य करने आये थे। मुसलमान राष्ट्र बनाने या हिन्दुस्तान के टुकड़े करने नहीं आये थे। यद्यपि वह किसी समय पर सारे भारतवर्ष को जीतने में सफल न हुए, तो भी भारत के निवासी बनने में सफल हो गये। राजवंश बदलते रहे, परन्तु मुसलमान भारत के बन कर भारतवर्ष में बस गये। अलग राष्ट्र की भावना भी उनमें नहीं थी, अलग धर्म की भावना थी और वह उन में से कइयों से अनुचित सख्तियें और अत्याचार भी कराती थी, परन्तु वह भावना कभी राष्ट्रीयता के भेद के रूप में परिणत नहीं हुई। मुसलमान बादशाह अपने को हिन्दुस्तान का हिन्दुस्तानी बादशाह ही मानते थे, हिन्दुस्तान से अलग पाकिस्तान की कल्पना भी उनके दिमाग में नहीं आई थी। उनमें अकबर और जहांगीर जैसे उदार और सहिष्णु बादशाह भी हुए, और अलाउद्दीन और औरंगजेब जैसे धर्मान्ध बादशाह भी — परन्तु उनमें से किसी ने राष्ट्रीयता की दृष्टि से अपने को हिन्दुस्तान से अलग करने की चेष्टा नहीं की।

उन लोगों की इसी प्रवृत्ति का यह परिणाम हुआ कि उस समय के हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे से निरन्तर प्रभावित होते रहे। धर्म के क्षेत्र में मुसलमानों का सूफी सम्प्रदाय हिन्दू प्रभाव का परिणाम था, हिन्दुओं के कबीर, दादू, नानक आदि सन्तों पर इस्लाम का असर स्पष्ट दिखाई देता है। क्रिया-प्रतिक्रिया का सिद्धांत इतनी अच्छी तरह काम करता दिखाई देता है कि मित्रराष्ट्र की कल्पना के साथ उसका मेल ही नहीं हो सकता।

भाषा और साहित्य के क्षेत्र में भी हिन्दुओं और मुसलमानों का आदान प्रदान बराबर चल रहा था। मुसलमानों ने अपनी पश्तो, तुर्की, तातारी, फारसी आदि भिन्न-भिन्न भाषायें छोड़ीं और हिन्दुओं ने अपनी प्राकृति और ब्रज भाषा का मोह त्यागा — जिसके फलस्वरूप हिन्दू मुसलमानों की एक सम्मिलित भाषा — हिन्दी अथवा उर्दू — का जन्म हुआ। वक्ता और प्रान्त के भेद से वह हिन्दी या उर्दू के नाम से निर्दिष्ट होती रही, परन्तु वास्तविक दृष्टि से वह एक ही वस्तु थी, उसका निर्माण एक ही सांचे पर हुआ था और वह सांचा एक राष्ट्रीयता का बिल्कुल स्पष्ट चिन्ह था।

वेष पर भी पारस्परिक क्रिया का प्रभाव हुआ वह भी अत्यन्त स्पष्ट है। मुगलकालीन चित्रों को देखकर हिन्दुओं और मुसलमानों में भेद करना कठिन प्रतीत होता है। बादशाह अकबर और महाराज मानसिंह को चित्रों का मिलान कीजिये या बादशाह शाहजहां और छत्रपति शिवाजी के पिता शाहजी महा-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हिन्दी पत्रकारों से

स्व० गणेशशंकर विद्यार्थी

[श्री बनारसीदास चतुर्वेदी]

स्व० गणेशशङ्कर विद्यार्थी

"हमारे देश का एक चमकता हुआ सितारा चला गया, लेकिन उसकी चमक तो बाकी है और मुल्क को रोशन करती है और उसकी गरमी मुरझाये हुए दिलों को जिन्दा करती है तो रंज क्या ?"

ये शब्द श्री पंडित जवाहरलाल जी नेहरू ने स्वर्गीय गणेशशंकरजी विद्यार्थी के जीवन चरित्र की भूमिका में लिखे थे, और यंग इंडिया में महात्मा गांधी जी ने कहा था।

"गणेशशंकर विद्यार्थी को ऐसी मृत्यु मिली जिस पर हम सब को स्पर्धा हो। उसका खून अन्त में दोनों मजहबों को आपस में जोड़ने के लिये सीमेन्ट का काम करेगा, वह मरे नहीं आज वह तब से कहीं अधिक सच्चे रूप में जीवित हैं।"

जिनके विषय में देश के सर्वमान्य नेता जवाहरलाल जी तथा विश्ववंद्य महात्मा जी के उपर्युक्त विचार हों उन अमर शहीद गणेशशंकर जी के बारे में साधारण लेखकों या सम्पादकों की सम्मति का मूल्य ही क्या हो सकता है, उनकी स्मृति की रक्षा तो स्वाधीन भारत ही विधिवत् कर सकेगा, हां स्वार्थ की दृष्टि से हम पत्रकार भी कुछ कर सकते हैं।

१. स्व. गणेशशंकर जी का विस्तृत जीवन चरित्र, (हिन्दी तथा अंग्रेजी में)

२. उनके निबन्धों, टिप्पणियों तथा भाषणों का संग्रह।

३. उनके विषय में लिखे गये संस्मरणों का संग्रह।

यदि ये तीन कार्य हम लोग कर सकें तो उससे केवल हिन्दी पत्रकारों का ही नहीं हिंदी साहित्य तथा हिन्दी जगत का भी विशेष हित होगा। निस्सन्देह हम सब के लिये यह कलंक की बात है कि पन्द्रह वर्षों में भी हम यह श्राद्ध कार्य नहीं कर पाये। इस कलंक की कालिमा तब और भी गहरी हो जाती है जब हम सोचते हैं कि गणेश जी द्वारा प्रोत्साहित हिन्दी पत्रकारों की संख्या काफी बड़ी है और प्रभाव तथा साधनों के खयाल से वे कुछ नगण्य भी नहीं।

देश के स्वाधीन होने पर हमारे सामने सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न तो होगा अन्न वस्त्र का, पर शारीरिक भोजन के बाद मानसिक भोजन का सवाल भी उठेगा, और बिना किसी संकोच के हम कह सकते हैं कि गणेशजी के लेखों और टिप्पणियों में जितनी ओजप्रद, सात्विक और स्फूर्तिदायक साहित्य हमें मिल सकता है उतना शायद ही किसी आधुनिक हिन्दी लेखक की रचनाओं में मिलेगा। क्या उन चीजों को छांट कर बाहर निकालना कोई असम्भव कार्य है।

प्रान्तीय सरकारों की स्थापना के बाद शिक्षा प्रसार विभाग भी पुनर्जीवित होंगे; क्या संयुक्त प्रांत, बिहार अथवा मध्यप्रदेश के शिक्षाप्रसार विभाग इस कार्य को अपने हाथ में नहीं ले सकते ? यदि सोवियट सरकार रूसी लेखकों की रचनाओं की लाखों प्रतियां छपा सकती हैं तो हमारी सरकारों को भी ऐसा करने में कोई आपत्ति न होनी चाहिये। यदि श्रद्धेय टंडन जी आचार्य नरेन्द्र देवजी और श्री सम्पूर्णानन्दजी से अनुरोध किया जाय तो बड़ी आसानी से यह कार्य हो सकते हैं।

राल्फ फाक्स के शहीद होने सात महीने के भीतर ही उसके प्रशंसकों उसकी स्मृति में एक ग्रन्थ छपवा दि था पर बन्धुवर देवव्रत जी के सिवाय लोगों में से अन्य किसी ने गणेशजी प्रति अपने साहित्यिक कर्तव्य का पा नहीं किया। उस अमर शहीद का पन्द्र पुण्य तिथि के अवसर पर हम लज्जा सिर झुकाते हैं।

———

राज की आकृतियों की तुलना कीजिये। आप उनमें शायद ही कोई भेद कर सकें। अंग्रेजी सरकार की भेद नीति का असर होने से पूर्व भारत के प्रत्येक प्रांत के हिन्दू और मुसलमान निवासियों की वेष-भूषा लगभग एक-सी ही थी। विवाह आदि संस्कारों और त्योहारों में दोनों ही धर्मों के मानने वालों का सहयोग उनकी सामाजिक या आर्थिक श्रेणियों की दृष्टि से होता था। उसी सामाजिक स्थिति के हिन्दू और मुसलमान सब अवसरों पर आपस में बन्धुभाव से मिलते थे। क्या शहरों और क्या गांवों में उनके सामाजिक जीवनों पर धर्म भेद का किसी प्रकार का भी विषैला असर नहीं होता था। इस समय हिन्दुओं और मुसलमानों के मध्य में भेद भाव की जो गहरी खाई दिखाई दे रही है, वह डेढ़ सौ वर्ष के विदेशी शासन की कृति है। अंग्रेजी सरकार ने अपने शासन की सहूलियत के लिये साम्प्रदायिक भिन्नता को अधिक से अधिक बढ़ाने का यत्न किया जिसका परिणाम यह हुआ कि स्थूल दृष्टि से देखने वाले को आज हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे के शत्रु प्रतीत होते हैं। वस्तुतः आज भी वह एक राष्ट्र के अंग हैं।

हमारा मूलमंत्र

एक देश, एक राष्ट्र और एक शासन-विधान यह हमारे स्वराज्य का मूलयंत्र है। देश में न एक से अधिक राष्ट्र रह सकते हैं, और न भविष्य में रहेंगे।

———

पंडित डी० गोपालाचार्लु का

जी वा मृ त मू

बदन को ताकत देने वाला और वीर्य वर्द्धक उत्तम बलकारक टानिक। यह खून को शुद्ध करके शरीर में उसकी वृद्धि करता है तथा शरीर, मस्तिष्क और स्नायु का आश्चर्य रूप से निर्माण करता है। स्त्री पुरुष व बालक सभी उमरों के इसका प्रयोग कर सकते हैं। एजेन्ट चाहिये।

आयुर्वेदाश्रमम्—मदरास.

सोल एजेन्ट:—ऐनसा ट्रेडिंग कं० भागीरथ पैलेस के पीछे चांदनी चौक, देहली।

रेगोप्लेन-पतिन-मार

रजिष्टर्ड

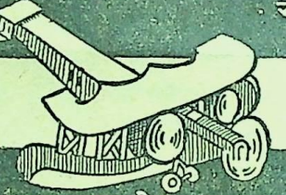

TRADE MARK REGISTERED

रवाने का

उत्कृष्ट व स्वादिष्ट तम्बाकू

बदलदास लक्ष्मीनारायण, बम्बई, कलकत्ता, बनारस

च्यवनप्राश और हाईपो

-- च्यवनप्राश --

आयुर्वेद का प्रसिद्ध रसायन है, किन्तु इसे हर वैद्य ठीक ढंग से नहीं बना सकता। यही कारण है कि बाजारू च्यवनप्राश रोगी को अधिक लाभ नहीं देता। हमारा च्यवनप्राश ताजे 'आमलों' द्वारा शुद्ध शास्त्रीय विधि से तैयार किया जाता है अतः पूरा गुणकारी है। आज ही आर्डर देकर परीक्षा कीजिये।

मूल्य १॥।=) पाव, ६॥) सेर

- च्यवनप्राश हाईपो -

इस च्यवनप्राश में कुछ नवीन रासायनिक पदार्थ डालकर च्यवनप्राश हाईपो तैयार किया गया है। पुरानी खांसी, नजला व अन्य बीमारियों में रामबाण है।

मूल्य ३।) पाव

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी (हरद्वार)

देहली प्रान्त के सोल एजेन्ट--रमेश चन्द को चांदनीचौक, मोती बाजार के सामने।

मुरादाबाद--अलंकार चिकित्सालय, गंगरो। गेट। मेरठ--वैद्य धर्मप्रकाश सपट बाजार।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

आ० हि० फौज का बीजारोपण कहां और कैसे ?

[श्री विजयरत्न मजूमदार]

श्री सुभाषचन्द्र बोस

डलहौजी, मुझे पसन्द थी, प्रिय थी। अब मुझे डलहौजी से श्रद्धा है। डलहौजी मेरे लिए मधुर स्वप्न है। किन्तु क्यों? डलहौजी और अन्य पहाड़ी स्थानों में कोई विशेष अन्तर नहीं। वही आकाश सी ऊंचाई, हिमाच्छादित चोटियां। वही चक्करदार पहाड़ी रास्ता और ऊबड़ खाबड़ पगडन्डियां। सब कुछ समान, तो भी एक विशेषता लिए हुए। १९३७ की हेमन्त ऋतु में मैं एक लक्ष्यहीन और अदम्यहीन गठिया रोग से पीड़ित प्रौढ़ बंगाली यात्री था। विजयदशमी के उपरान्त ज्वालामुखी से पठानकोट लौटने पर मुझे डलहौजी आने के लिए एक स्नेहशील और आग्रहपूर्ण निमन्त्रण मिला। डलहौजी के लिए पठानकोट से साठ मील तक ऊपर हिमालय की श्रेणियों में मोटर का रास्ता था। एक युरोपीय साथी और मैंने तीस रुपये में एक टैक्सी भाड़े पर ली और प्रायः ९ बजे जलपान कर चल पड़े। ठीक मध्यान्ह में हम डलहौजी जा पहुंचे।

श्रीयुत सुभाषचन्द्र बसु उस समय डलहौजी में विश्राम कर रहे थे। यह वह काल था जब देश के कांग्रेसी नेता सुभाष बाबू में, जो उस समय बंगाली साहित्य में प्रवेश करने की चेष्टा कर रहे थे, रुचि लेने लगे थे।

मध्यान्ह के भोजन के बाद हम डाक्टर धर्मवीर के घर, जहां सुभाष ठहरे थे और मैं भी, बंगाली साहित्य की श्रेष्ठता पर विचार विनियम करने लगे। सुभाष बाबू हमारी पितामही और प्रपितमहियों द्वारा कही और प्रसारित दन्तकथाओं की प्रशंसा में भरपूर थे। उन्होंने कहा — 'मैं इन किस्से कहानियों कहावतों और दन्तकथाओं को पसन्द करता हूं। इससे मनुष्य की कल्पना शक्ति को बिना किसी विघ्न बाधा के देखे अनदेखे नगरों, देशों तक पहुंचने की प्रेरणा मिलती है। उसकी कल्पना पहाड़ियों, बादलों, समुद्रों और विशाल सपाट मैदानों के ऊपर दौड़ती हुई चली जाती है। स्वप्न संसार में विचरण करने और स्वप्न देखने से मनुष्य में जिस आनन्द रस का संचार होता है, वह सराहनीय है।'

संयोगवश, कदाचित दुर्भाग्यवश मैं भिन्न विचार रखता था। मैंने स्पष्ट कहा, 'चिर सम्मानित रहें हमारे पूर्वज लेकिन नवपल्लवों का; परदेशों की सुवर्णकेशी गुलाब पंखड़ियों समान राजसुन्दरियों की कथाओं द्वारा वे कुछ भी लाभ नहीं कर गये हैं। इसके स्थान पर मैं अलीबाबा और चालीस चोर और एक दिन का सुलतान आबू हुसैन को पसन्द करूंगा। उसमें पौरुष है। कुछ मानवीय कार्यकलाप है।'

सुभाष बाबू ने तुरन्त सहमति प्रकट करते हुए कहा, 'ठीक तो है।'

मुझे प्रेरणा मिली, 'रवि बाबू हमारे साहित्य के छात्रपति हैं। उनकी देन महान है। गुण और संख्या दोनों में ही। उनका तरुण साहित्य भी श्रेष्ठ है। किन्तु वे बालकों के विकास के लिए राजकुमारियों और उनकी प्रेमकथाओं का प्रसार नहीं करते। बल्कि तरुणों के सम्मुख वे सदा पौरुषिक, मानवीय और अन्वेषणमयी घटनाओं को रखते हैं।' उदाहरणार्थ 'वीर पुरुष' को मैंने तुरन्त सुभाष बाबू को सुना दिया।

साहित्य के साथ-साथ व्यक्तिगत चर्चा भी चलती जा रही थी। सुभाष के होठों पर मुस्कराहट थी। बादलों का एक झुण्ड आसपास की पहाड़ियों पर छाता जा रहा था। ऐसा प्रतीत होता था मानों वर्षा हुई की हुई। परन्तु नहीं। रंग बिरंगी छवि दिखलाकर घन-सुन्दरियां इधर उधर भाग लुक ओझल हो गयीं और धूप चमकने लगी। इसी प्रकार धूप छांह की आंखमिचौनी प्रतिपल चलती रही, और सुभाषचन्द्र, स्वप्नदर्शियों के छत्रपति गूढ़ चिन्तन में निमग्न हो गये। मैं सिगरेट फूंकने लगा। बहुत देर बाद अकस्मात सुभाष बोले, ध्वनि में व्यंग था, 'तुम गठिया रोग की शिकायत करते हो लेकिन क्या बिना चावल के नहीं रह सकते? जिगर की शिकायत भी है और धूआंधार सिगरेट भी पी जा रही है। तुम सचमुच व्यर्थ जीव हो! तुम जानते हो मैंने वर्षों से चावल छोड़ दिया है और धूम्रपान नहीं करता।'

'जानता हूं श्रीमान। किन्तु इतने त्याग की आशा आप मुझसे क्यों करते हैं?'

सुभाष आगबबूला हो गये, 'या ईश्वर! तुम इसे त्याग कहते हो। मनकी तनिक सी दृढ़ता से इन बुराइयों से छुटकारा पाया जा सकता है। अन्यथा मुझे पूरा विश्वास है, एक नहीं सौ विधान बाबू (डाक्टर विधान चन्द्र राय) तुम्हारे गठिया को दूर करने में सफल नहीं हो सकते।'

डाक्टर राय तो सचमुच ही मुझे निराश कर चुके थे। इतना ही नहीं वे मेरे गठिया रोग से पिंड छुड़ा युरोप चले जा चुके थे। कविराज भी अज्ञात हो गये थे। और हकीम जी भी कई शर्बत परीक्षण कर लापता हो गये थे। परन्तु गठिया अभी जीवित था।

सुभाषचन्द्र ने पूछा, 'क्या शिवाजी महाराज पर कोई पुस्तक बता सकते हो।'

हां, बता सकता हूं। श्री गिरीश चन्द्र घोष का नाटक 'छत्रपति शिवाजी' बहुत अच्छा है। निश्चय ही श्रेष्ठ। परन्तु अप्राप्य और जब्त।'

'जब्त।' सुभाष चिल्ला उठे। 'तुम नहीं सारे बंगाली साहित्यिक निकम्मे हो। मुझे स्मरण नहीं कि इस जब्ती का कोई विरोध किया गया हो।'

'क्षमा हो सुभाष बाबू! सत्य बिलकुल विपरीत है। पत्रों और सभाओं द्वारा प्रबल विरोध हुआ था परन्तु असफल। गिरीश बाबू का छत्रपति शिवाजी कलकत्ते के दो रंगमंचों पर एक साथ खेला गया था। जनता उन्मत्त हो उठी थी। बंगाली मंच अपनी पूर्णता पर था, किन्तु अब वे दिन जो चिरस्मरणीय हैं। नाटकों का खेला जाना निषेध हो गया और पुस्तक जब्त।'

सुभाष ने कहा, 'देखो। नयी असेम्बलियां बन रही हैं। हम अपनी खोयी निधि को पुनः प्राप्त करने के लिए अथक परिश्रम करेंगे। परन्तु क्या और किसी ने शिवाजी महान के जीवन पर लिखने की चेष्टा नहीं की। तुमने स्वयं क्यों नहीं की! तुम्हारे पास भी तो लेखनी.....'

सुभाष सीधे बैठ गये। निश्चल गम्भीर, भरी आवाज में बोले, 'एक दिन अवश्य आयेगा। मैं पूर्ण विश्वास और दृढ़ता के साथ कहता हूं कि हिन्दुस्तानियों को शिवाजी महाराज से प्रेरणा लेनी होगी। स्वाधीनता संग्राम में उनके बताए पदों पर चलना होगा। और वह दिन दूर भी नहीं। यह प्रायः निश्चित है। विदेशी सत्ता को छोड़ने के लिए हमें महाराष्ट्रियन ढंग अपनाना ही होगा।'

'अहिंसा अथवा हिंसा द्वारा' मैंने जानना चाहा।

'जैसा चाहो समझो। मैंने अपना मत स्पष्टतः ही प्रकट कर दिया है। शिवाजी, शिवाजी, महान शिवाजी। शिवाजी ही हमारा आदर्श होना चाहिये। हमारा लक्ष्य हमारा पथप्रदर्शक और अग्रणी नेता होना चाहिये। तुम साहित्यिकों का कर्तव्य है कि शिवाजी के जीवन और उनके आदर्शों का प्रतिपादन करो और उनका प्रचार करो।'

मैंने कुछ दबे स्वर में कहा, 'मैं संदेश (एक बंगाली मिठाई) की घटना पर एक मजेदार रचना रच सकता हूं। जिसकी महायता से शिवाजी केद से निकल भागे थे। सचमुच वह घटना मेरी रुचि की होगी। उसमें बहुत सा विनोद और हास्य.....'

'विनोद कहां था दादा?' सुभाष गंभीर थे, 'यही तो उचित उत्तर था। ईंट का जवाब पत्थर से। शैतान को बेवकूफ बनाने की आवश्यकता थी और यह 'आवश्यकता' पूरी की गयी। महाराजा का एक उच्च लक्ष्य था जिस तक उन्हें पहुंचना था। लक्ष्य महान था। जीवन धारा से ओतप्रोत। मुक्त करना था देश को विदेशी सत्ता से और उसके अत्याचार से। उन्हें निश्चय ही ऐसा करना था।'

मैंने स्वीकार कर लिया। परन्तु कौन जानता था। कौन अनुमान कर सकता था कि वह समय तीव्र गति से आ रहा है जब बंगाल की भूमि में बंगाली माता-पिता की संतान यह शिवाजी, महान मुगल साम्राज्य से भी कहीं अधिक पराक्रमी और शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य के शान्ति और व्यवस्था स्थापन करने वाले दूतों की आंखों में धूल झोंक कर दिनदहाड़े ब्रिटिश साम्राज्य के दूसरे विशाल नगर कलकत्ता से लापता हो जायगा? क्या उस समय किसी की कल्पना इतनी उड़ान लगा सकती थी। एलगिन रोड पर सुभाष का पैत्रिक-गृह दिनरात कड़े पहरे में में रहता था। शिकारी कुत्ते हर समय चौकन्ने रखे जाते थे। विलियम का किला समीप था। लाल बाजार किला सतर्क था। शस्त्रागार समीप था और श्री बचिल के कथनानुसार भारत में पहले कभी से भी कहीं अधिक 'सफेद सैनिक' मौजूद थे। परन्तु हमारे शिवाजी अज्ञात हो गये। सब के मुंह पर एक थप्पड़ लग गया।

एक सुप्रभात में कलकत्ता, बंगाल, नहीं, नहीं, सारा राष्ट्र, वायसराय से लेकर भिकारी तक श्री सुभाष के लापता हो जाने का समाचार सुन अचम्भित रह गया। सारा नगर तरह-तरह की अफवाहों से गूंज उठा। लेकिन सब गुपचुप होती थीं बातें। कुछ ने विचार प्रकट किया. सुभाष बाबू सन्यासी होकर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हिमालय में चले गये हैं। कुछ ने काना-फूंसी की, अंग्रेजों ने अपने 'शत्रु नम्बर एक' का 'निधारा' कर दिया।

वसु परिवार के कुछ सदस्यों ने मुझे बतलाया कि बचपन से ही सुभाष में ध्यानमग्न होजाने की आदत थी। वे तरुणावस्था में एक बार हिमालय चले भी गये थे। तरह-तरह की बातें सुनने में आ रही थीं। कुछ लोगों ने तो अपनी आंखों से एलगिन रोड नंबर ३८-२ के मकान की छत पर जापानी वायुयान को उतरते देखा था जो सुभाष बाबू को यात्री बना उगते सूर्य के देश को उड़ गया था। क्या आप इन आंखों देखी घटनाओं पर अविश्वास करने का साहस कर सकते हैं?

उस समय दो तीन फौजदारी और एक दिवानी मामला सुभाष बाबू के विरुद्ध चल रहा था। तिथियां बराबर बदली जा रहीं थीं। सुभाष अस्वस्थ थे। विचित्र रोग था वह जिसका डाक्टरी प्रमाणपत्र भी उपस्थित था। जज भी तिथियां बदलने में असंतुष्ट नहीं थे। शायद इस आशा में एक न एक दिन सुभाष अपना दण्ड प्राप्त करने अवश्य आयेंगे। परन्तु वे इससे पहले ही अज्ञात हो गये। कचहरी में उनके विरुद्ध मामले द्रौपदी की कभी न समाप्त होने वाली साड़ी की तरह अभी भी चालू हैं!

पाठक इस अज्ञात यात्रा की कल्पना कर सकते हैं। कलकत्ते से पंजाब। तब सीमाप्रान्त होते हुए अफगानिस्तान से मनुष्यहीन प्रदेश होते हुए सोवियत रूस। रूस से जर्मनी। शक्तिशाली और सर्वज्ञ ब्रिटिश साम्राज्य के सतर्क यंत्र इन पदचिन्हों का तनिक भी पता न लगा सके। सुभाष धूर्तों को बेवकूफ बना कर चला गया।

एक दुखान्त घटना स्मरण हो रही है। कलकत्ते के एक सिने गृह में श्री चैतन्य का जीवन चरित्र दिखलाया जा रहा था। सुभाष बाबू की माता चित्र को देखने गयी थीं। एक अंधेरी रात को जब सारी पृथ्वी निद्रामग्न था, निमाई ने अपनी माता शचि और सुन्दर यौवना पत्नी को छोड़ कर चुपचाप गृह त्याग दिया। सुभाष बाबू की माता अकस्मात चिल्ला उठीं 'ओह मेरा निमाई कहां है?' सारे दर्शक एक स्वर से पुकार उठे 'सुभाष बाबू की जय' मेरे कानों में अभी तक माता का क्रन्दन गूंज रहा है। 'कहां है मेरा सुभाष।' यह प्रश्न तो हम सब भी करते हैं, 'कहां है हमारा सुभाष?

मैं अपनी बात छोड़ आया। सुभाष ने विनीत स्वर में कहा, 'दादा यह मेरा व्यक्तिगत निवेदन है तुमसे और कह देना बंगाल के साहित्यिकों से कि शिवाजी महाराज के प्रेरणापथ और महान जीवन का प्रचार करें। कृपा कर इस कार्य को स्वयं पूरा करो। दूसरों को प्रेरित करो। मैं भी कलकत्ता आकर इस दिशा में हर सम्भव सहायता दूंगा।'

'यह अवश्य हो जायगा। मैंने तुरंत आश्वासन दिया।

इतने में डाकिया डाक का थैला लेकर आन पहुंचा। चिट्ठियां, पार्सल, पत्र पत्रिकाएं आदि क्या कुछ न था। मैंने 'ट्रिब्यून' उठा लिया। इतने में सुभाष ने पूछा, 'विजय बाबू का देहान्त कब हुआ।'

'प्रायः एक मास हुआ।' मेरा उत्तर था।

'कलकत्ता कारपोरेशन में उनका स्थान रिक्त है और विजय बाबू की जगह पर अध्यक्षपद के लिये वह निमन्त्रण आया है।' इतना कह सुभाष फिर पत्र पढ़ने में लग गये।

माननीय विजयकुमार वसु मेरे मित्र थे। वे सुभाष बाबू को पराजित कर १६२६ में कलकत्ते के मेयर निर्वाचित हुए थे। विजय बाबू यथार्थ में मनुष्य थे। सौजन्यता की साक्षात मूर्ती थे। एक भोज में उसी संध्या समय उनसे भेंट हुई थी जिस रात वे संसार से चल बसे थे। अन्त अकस्मात ही आया था। मैं उस समय अपने स्वर्गवासी मित्र की याद में इतना चिन्तानग्न हो गया कि सुभाष बाबू कब कमरे से बाहर चले गये, मैं यह जान ही न सका। दूसरे कमरे में डाक्टर धर्मवीर थे। उसमें से अंग्रेजी और न जाने कितनी भाषाओं में दी जाने वाली बधाइयों की गूंज आ रही थी। मुझे आश्चर्य हो रहा था। इतने में डाक्टर धर्मवीर ने आकर समाचार प्रकट किया। सुभाष बाबू भी बरांडे में आकर बैठ गये।

सुभाषचन्द्र, महात्मा गांधी द्वारा राष्ट्रपतिपद के लिये मनोनीत किए गये थे।

एक शुभ समाचार

मैंने सुभाष से पूछा 'क्या अब भी कलकत्ता कारपोरेशन का अध्यक्षपद स्वीकार करोगे।'

'क्यों नहीं।'

'कांग्रेस का अध्यक्षपद राष्ट्र द्वारा प्रदान सबसे बड़ा सम्मान है। क्या कारपोरेशन का कार्य शोभनीय होगा?'

'उसमें अशोभनीय क्या है?'

'यहां मेरा मतभेद है।'

'हठ के लिए क्षमा करना। मैं समझता हूं आजकल राजनीति को सामाजिक कार्यों में अधिक महत्व दिया जाने लगा है और यही कारण है कि डा० विधानचन्द्रराय और श्री सतीशचन्द्र घोष प्रभृति व्यक्तियों को कारपोरेशन में स्थान नहीं मिलता। भले ही मैं भूल में होऊं किंतु मेरा विश्वास है कि कारपोरेशन को डा० राय की सेवाओं की अत्याधिक आवश्यकता है। उनकी उपेक्षा के कारण ही उन्होंने उसे त्याग दिया और सम्भवतः अब वे आना पसन्द न करेंगे। मुझे डाक्टर राय के कारपोरेशन में आने से तनिक भी ऐतराज नहीं और न ही उनके साथ मिलकर किसी क्षेत्र में कार्य करने में असुविधा होगी। परन्तु उनको अवश्य ही ..... से सम्बन्ध नहीं रखना चाहिये।'

यह अप्रत्याशित था। सुभाष ने जिस व्यक्ति का नाम लिया वह 'पांच बड़ों' में से एक थे और सी० आर० दास के समय में सुभाषदल के प्रमुख व्यक्ति थे। मुझे एक ठेस लगी। सुभाष ने कहा शायद तुम जानते नहीं, मैंने डा० राय को बहुत से पत्र लिखे थे कि वे उनसे अपना सम्बन्ध तोड़ दें।'

मैंने कहा, 'डाक्टर राय मुझसे राजनीतिक विषय पर वार्तालाप तो नहीं करते किन्तु इतना तो मैं भी जानता हूं कि वे हर प्रकार की गुटबन्दी के सर्वथा विरुद्ध हैं।'

'परन्तु महाशय! हम हर प्रकार के व्यक्तियों के साथ घनिष्ठता नहीं रख सकते।'

एकएक सुभाष ने विषय बदल दिया। सामने की पहाड़ी चोटी पर दृष्टि रखते हुए सुभाषी, बोले, 'मेरा मिशन है कि कलकत्ते में कलकत्ते सा ही शानदार मकान बनवाया जाय। वह अपने आप में पूर्ण और अद्वितीय हो। उसी में एक रंगमंच हो, रंगशाला हो, एक हाल, पुस्तकालय, और व्यायमशाला हो और हो एक विशाल खुला प्रांगण जिसमें हम अपनी राष्ट्रीय सेना का शिक्षण और संचालन कर सकें।'

एक क्षण रुक कर सुभाष कहते चले, 'वह कांग्रेस भवन होगा। प्रान्तीय कांग्रेस दफ्तर भी उसी में होगा। राष्ट्रीय सेना के लिए कलकत्ते में कम से कम एक लाख स्वयंसेवकों की सेना बनायी जायगी। उनका संघटन किया जायगा। पूर्ण सैनिक शिक्षण होगा। उसी भवन में उन्हें रखा जायगा, वहीं भोजन व्यवस्था होगी और वहीं उनकी शिक्षा दीक्षा। उनको प्रत्येक स्थिति के लिए तैयार रखा जायगा।' सुभाष फिर एक क्षण रुक कर बोले, 'जब तक मैं कारपोरेशन में नहीं घुस जाता कलकत्ते में ऐसा कर पाना तनिक कठिन होगा। मेरी योजना तैयार है, पूर्ण है। यहां तक कि चंदे के लिए अपील भी लिखी जा चुकी है। जल्दी ही इस सम्बन्ध में और जानोगे।'

मैंने सफलता की शुभकामना प्रकट की। इस दिशा में मेरा अनुभव नहीं के बराबर था। सेनगुप्त के निधन के बाद से बीस परिवार और विशेषतः सुभाष और शरतचन्द्र को कारपोरेशन में प्रायः ही बहुमत प्राप्त है। वे आसानी से अपनी योजना, चाहे वह कुछ भी क्यों न हो पूरी कर सकते हैं।

डाक्टर धर्मवीर आ गये। चाय की सूचना मिली। भीतर की ओर जाते जाते हुए सुभाष बाबू ने कहा, 'लेकिन दादा। शिवाजी महाराज के आदर्शों का प्रचार करना न भूलना। यदि गिरीश बाबू के नाटक की एक प्रति प्राप्त कर सको तो कृपा कर मुझे देना। कांग्रेस भवन का कार्य जब मैं आरम्भ करूंगा तो तुम्हें सहायता देनी होगी। है न!'

'अवश्य। निश्चय ही।'

मिर्गी का २४ घण्टों में खात्मा। तिब्बत के सन्यासियों के हृदय का गुप्त भेद, हिमालय पर्वत की ऊंची चोटियों पर उत्पन्न होने वाली जड़ी बूटियों का चमत्कार, मिर्गी हिष्ट्रीया और पागलपन के दयनीय रोगियों के लिये अमृत दायक। मूल्य १०॥) रुपये डाकखर्च पृथक।

पता—एच. एम. आर. रजिस्टर्ड मिर्गी का हस्पताल हरिद्वार।

महान बाजीकरण व परमपौष्टिक

अनंगप्रभा याकुती

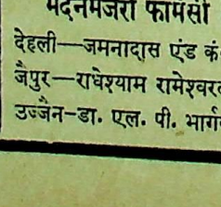

केसर, कस्तूरी वगैरह कीमती, पौष्टिक व स्वास्थवर्धक वनस्पतियों के योगसे बनी हुई यह याकुती पौरुष हीनता, शीघ्र पतन व स्वप्नदोष को मिटा कर पतली धातु को गाढ़ा करती है, और शुद्ध रक्त व वीर्य पैदा करके पूर्ण पुरुषत्व प्राप्त कराती हैं, फी शी० रु० १०) दस।

मदनमंजरी फार्मेसी हेड आफिस — **जामनगर (काठियावाड़)**

देहली—जमनादास एंड कं० चांदनी चौक
जैपुर—राधेश्याम रामेश्वरदयाल चांदपोल
उज्जैन—डा. एल. पी. भार्गव पटनी बाजार
जोधपुर एजेंट-रामनाथ मांगीलाल गांधी
गनेशीलाल श्यामलाल कटला बाजार
और श्रीकृष्ण बद्रीदास चूड़ीधर बिल्डिंग

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

जेल से बाहर आने के बाद

[श्री जयन्त]

कौन किसका ?

स्टेशन से कुछ ही दूर चलने पर मुझे इम्पीरियल होटल में जगह मिली। होटल के सेहन में दो सिख बैठे शराब पी रहे थे। 'यान वी दयो पाप्पा जी।' एक ने कहा (जुबान के लड़खड़ाने के कारण सरदार साहब 'ज' की जगह 'य' कह रहे थे) मैंने सुना और सोचता हुआ 'दुनियां सचमुच वैसे ही चल रही है, लड़ाई और महंगाई का कुछ भी असर दुनियां पर नहीं पड़ा, अपने कमरे में पहुंच गया। मुंह हाथ धोकर खाना खाया और दो एक बहुत आवश्यक पत्र लिखने के बाद सो गया। पत्र लिखने के बाद एक बार ख्याल भी आया कि इसे कल सेंसर के पास भेजना होगा परन्तु तभी याद आया कि अब मुझे उसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिये।

एक मित्र को लिखा था -- 'पता नहीं नूरमहल में कब तक रहना होगा और सबसे बड़ी समस्या तो यह है कि मैं किसी को जानता भी नहीं। वहां क्या करूंगा, क्या खाऊंगा, जीवन यापन कैसे होगा — यही समस्यायें तंग कर रही हैं (१) इस समय जेब में सिर्फ ग्यारह रुपये हैं।

'सुना करता था बाबा जी (स्वामी श्रद्धानन्द जी) कभी जालन्धर में वकालत करते थे, कभी यहां उनकी जायदाद थी, घोड़े गाड़ियां थीं, कोठी थी और आज मैं इसी जालन्धर में आ गया हूं। सुना करता था मेरे पूर्वज कभी तलवन गांव में रहा करते थे; कल वहां जा पहुंचूंगा। इसी पुण्य-भूमि में आज मैं निर्वासित होकर आया हूं।'

'अधिक नहीं लिखा जाता। मुझे अपने पर क्रोध आ रहा है, पंजाब सरकार पर क्रोध आ रहा है, सकल विश्व पर क्रोध आ रहा है — यह बन्धन, यह निर्वासन और यह सभ्यता की बीसवीं सदी।'

और अगले दिन सुबह ही उन लोगों से मिलने चल दिया जो कि दूर के मेरे सम्बन्धी थे और जिनसे कुछ सहायता पाने की आशा लेकर मैं जालन्धर आया था।

पहले मैं लाला हंसराज एम० एल० ए० की कोठी पर गया परन्तु पता चला कि वह डलहौजी ही रहते हैं। वहां से एक अन्य रिश्तेदार का पता लगाता हुआ उनके घर गया तो पता लगा कि वह फिरोजपुर गये हुए हैं। तीसरे रिश्तेदार के पास जाने पर उनसे मुलाकात हुई तो उन्होंने तलवन के एक दो सज्जनों को पत्र लिखने का वायदा कर पीछा छुड़ाया। चौथे रिश्तेदार ने तो नौकर से कहला ही दिया कि वह घर पर नहीं हैं। मकान के नीचे की दुकान पर एक साहब ने कहा भी, 'अजी साहब, अभी तो मैंने उनको घर में जाते हुए देखा है।' दुबारा मैंने अपना नाम और पूरा परिचय लिखकर उनके पास भिजवाया तो जवाब आया कि वह, 'आज नहीं मिल सकते। कहते हैं कल तशरीफ लाइयेगा।'

खून के रिश्ते के इस जोश पर सोचता हुआ करीब ग्यारह बजे फिर होटल आया।

'खोटा पैसा और नालायक दोस्त वक्त काम पर आते हैं' सुना करता था। मेरी जेब में उस समय एक खोटा पैसा पड़ा था, यानी एक अपरिचित व्यक्ति का पता जो कि मुझे रेल में एक साहब ने दिया था। उस पते के बारे में होटल वाले से पूछा तो उसने कहा कि वह पास ही है। वहां जाकर देखा कि दुकान पर तिरङ्गा झंडा लगा हुआ है। वह महाशय भी मिले, जिनसे कि मुझे मिलना था। उनकी मार्फत जिनसे मिलना था वह थे पं० मूलराज। तब पता लगा कि पं० मूलराज जिला जालन्धर के सबसे जोशीले कार्यकर्ता और एकमात्र मेहनती नेता हैं। उनसे मिला; जरा से ही परिचय से उन्होंने मुझे अपना लिया। और विश्वास दिलाया कि वह मेरे लिए उचिततम प्रबन्ध करेंगे। उन्होंने खाना खिलाया और तब मुझे कहा कि मैं तलवन न जाकर बिलगा जाऊं। बिलगा तलवन का रेलवे स्टेशन और उससे सिर्फ चार मील दूर है। बिलगा गांव भी बड़ा है और वहां का वातावरण भी राजनीतिक है। वह जिले का सब से चेतन गांव है, वहां पर कांग्रेस का भी बहुत जोर है। वहां मुझे सब प्रकार की सुविधायें मिलेंगी।

पं० मूलराज से बिलगा के कुछ कांग्रेस कार्यकर्ताओं के नाम पत्र लेकर मैं होटल आया। पं० जी ने मुझे नूरमहल वाली लारी में बैठाने के लिये एक महाशय को भी साथ कर दिया था।

बिलगा में

नूरमहल से बिलगा तक कुछ तांगे में आना पड़ा। पहले दिन ही बारिश हुई थी इस कारण आधे से अधिक रास्ता मुझे तांगे से उतर कर ही चलना पड़ा क्योंकि तांगे का घोड़ा कीचड़ में चलने का अभ्यस्त नहीं था। बिलगा की सीमा में आने पर, पानी से भरे तालाब, कच्चे-पक्के मकान, सलवारें पहने स्त्रियां और पगड़ी बांधे किसान दिखाई दिये। कुछ लगा जैसे मैं एक स्वप्न सा देख रहा हूं और वह स्वप्न भी काफी सुन्दर था। पूछता पूछता चौधरी संतासिंह के मकान पर गया।

चौधरी संतासिंह बिलगा कांग्रेस कमेटी के प्रधान और बहुत जोशीले कार्यकर्ता हैं — यही परिचय कुछ पं० मूलराज ने उनका दिया था। उनके घर जाने पर पता चला कि चौधरी साहब किसी चर्खा-बुनाई स्कूल में होंगे। मेरी लिस्ट में तीन और नाम थे जिन्हें मैंने रास्ते में ही रट लिया था। वह थे ला० जगन्नाथ, मुनीम निरंजनदास और पं० बनारसीदत्त। चौधरी साहब की बुढ़िया माता ने सामान अपने घर में रखाया और दो तीन ही मिनट में देशी बूरा का शरबत बना कर ले आई। कुछ तो जो तांगे वाला साथ आया था उसीने उस शरबत के साथ न्याय किया वह करीब पांच गिलास शरबत पी गया। मुझ से एक गिलास से अधिक नहीं पीया गया मैं उसका अभ्यस्त नहीं था और कुछ ऐसा पीना भी पसन्द नहीं था।

पतली बेतरतीब बनी बहुत सी गलियों में से होता हुआ मैं एक खद्दरधारी युवक के साथ बनारसीदास बलदेवचन्द की दुकान में लाया गया और वहां मैंने पं० मूलराज की चिट्ठी उन लोगों को दी। कुछ ही मिनट में मेरे मेजबानों ने मुझे संभाल लिया। कुछ ही देर में चौधरी संतासिंह भी वहां आ गये!

× × ×

बिलगा पहुंचने के अगले दिन ही मैंने 'किसी' को पत्र लिखा था —

'यह एक छोटा सा कस्बा है। कुछ हमख्याल मिल गये हैं। मुझे इन्होंने जो आदर-सम्मान दिया है वह अपूर्व है। वे सब कल से ही मेरे लिये अच्छी से अच्छी प्रबन्ध व्यवस्था के प्रयत्न में लगे हैं।

'रात बहुत जोर की बारिश हुई, बादल गरजते रहे, बिजली चमकती रही, मूसलाधार पानी पड़ता रहा। एक बजे रात तक प्रकृति के इस तांडव को देखता रहा। बिलकुल वैसा ही तूफान मेरे हृदय भी उठा हुआ था।

'सुबह जब नहाने-निबटने गया तो मुझे लगा जैसे मेरा कोई स्वप्न सत्य हो रहा था। यदि पाबन्दी न होती तो मैं इस जीवन का कितना आनन्द ले सकता था। बकरियों के झुण्ड चले जा रहे थे। गाय-भैंसों वाले अपने खेड़ लेकर 'तिक तिक··· हैं-हैं!' ललकारते जंगलों की ओर चले जा रहे थे। इधर, उधर चारों तरफ स्त्री-पुरुष, खेतों और पगडंडियों, कुओं और रहटों पर दीख रहे थे। रात की बारिश के पानी से जगह जगह छोटी-छोटी तलैयें बन गई थीं, गलियें और सड़कें कीचड़मय हो गई थीं। मोर क्षितिज में उठते बादलों को देख देख पुकार पर पुकार दे रहे थे। कीकर की दातुन चबाता करीब तीन मील घूम आया। कहीं छोटी छोटी कनक खड़ी थी और कहीं चरी खड़ी थी। एक जगह बेली से उतार उतार कर एक माली करेले बेच रहा था। गांव के बाहर वाला तालाब रात भर में दो सीढ़ी चढ़ गया है। छोटे छोटे लड़के उसमें छलांगें लगा रहे थे।

'इन दो दिनों में ही बहुत से अनुभव हुए हैं। इस बड़े कारागार में आकर, आंख खोल कर, बहुत उत्सुकता से देखा कि गत तीन वर्षों में दुनिया कितनी बदली है। लगता है दुनिया पहले से अधिक व्यस्त है, पहले से अधिक अमीर हो गई है। संसार का मानचित्र कितना बदल चुका है परन्तु जैसे भारतवासियों पर उसका कुछ भी असर नहीं।

'ट्रेन में बहुत से लोगों की बात चीत सुनी। मेरे खद्दर के कपड़े देख कर प्रायः सभी ने मुझ से राजनीति पर बात चीत करनी चाही परन्तु मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि वह बातचीत खाली रेल का सफर पूरा करने के लिये थी, इसी लिये मैंने उसमें बहुत कम हिस्सा लिया। एक बात सोच कर मुझे बड़ी हंसी आई — मुझे जो नोटिस दिया गया है उसमें लिखा गया है कि धार्मिक के अतिरिक्त और किसी प्रकार की सभा-मीटिंग में शामिल नहीं हो सकता। ट्रेन में छः घंटे तक जो मीटिंग होती रही, सरकार की आलोचना, कांग्रेस की नीति, दमन, शोसलिज्म, कम्युनिस्ट, फासिज्म आदि विषयों पर जो चर्चा चलती रही उसमें शामिल न होने की इच्छा रखने पर भी मैं शामिल था, सोच रहा था कि यदि सरकार अपनी आज्ञा का अर्थ समझती है तो उसे मुझे ट्रेन में ही गिरफ्तार कर लेना चाहिये था। नोटिस में यहभी लिखा है कि मैं कोई राजनैतिक कार्य न करूं, सोचना है कि मैं करूं या न करूं, वह काम तो होगा ही, लोगों का यह जान लेना कि सरकार ने मुझे इसलिये नजरबन्द किया है कि उससे जनता को सुरक्षा और शान्ति को खतरा है, क्या मेरा प्रचार नहीं करेगा? सरकार जो चाहती है वह तो तभी हो सकता जब कि वह मुझे किसी ऐसे स्थान में सदाके लिए रख देती कि मैं किसी भी इन्सान के सम्पर्क में न आ सकता।

———

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इम्पा छाप ब्रांडी

[पृष्ठ १० का शेष]

इंपा ने बीच में ही कहा, 'तुमने शायद आधुनिक कहानियां नहीं पढ़ीं। पढ़ते तो मेरी आशा कल्पना तुम्हें इतनी निःसार नहीं लगती।'

'तुम उन्हें क्या सच मानते हो?'

'और क्या? वही तो यथार्थवादी साहित्य कहा जाता है। लोगों का कहना है कि उनमें समाज का सच्चा और सजीव चित्रण किया जाता है।'

'लोग तो बहुत कुछ कहते हैं। तुम इस व्यर्थ बकवाद को सच क्यों मानते हो।'

इंपा ने उत्तर दिया, 'तुम्हीं बताओ, फिर मैं जीऊं कैसे, यदि मन में ऐसी आशा कल्पना न करूं तो क्या करूं?'

मैं विचार में पड़ गया। इंपा ने फिर कहा, 'तुम निरे बुद्धू हो। मनुष्य का जीवन इतना कष्टमय है कि उसमें उत्साह, उद्योग, आत्मोन्नति इनके बल पर प्रायः कोई भी यशस्वी या लखपति नहीं हो सकता, फिर भी उनकी गुण-गरिमा गायी जाती है या नहीं! यही बात मेरे सुखद कल्पनाराज्य की है। मैं खूब जानता हूं कि मेरी आशाएं मेरी कल्पना कभी सत्य नहीं होंगी। धनिक की कन्या मुझ गरीब को नहीं मिलेगी, यह मैं जानता हूं। तब भी इस नीरस जीवन के समाधान के लिये ऐसा एकाध शराब का प्याला पी लूं, इसके सिवाय और उपाय कोई नहीं।'

'शराब का प्याला?'

'हां, शराब का प्याला। गरीब की आशाएं और कल्पनाएं मदिरा का पात्र ही हैं। मेरी ब्रांडी ऐसी कोई मनकी सुखद कल्पना हो है। अनुभव से मैंने यह ब्रांडी पीना सीखा है। किसी धनिक की रूप-सी, कन्या मुझे मिले यही मेरी एकमात्र कल्पना नहीं है। और भी बड़ी-बड़ी कल्पनाएं मैं करता हूं। अखबार बेचते समय 'प्लाट बिकाऊ है' का बोर्ड देखकर मैं क्षण भर ठहर जाता हूं और मुहूर्त्तभर में मन ही मन कल्पना के राज्य में वह प्लाट खरीद कर उस पर पत्थर का एक उत्कृष्ट प्रासाद खड़ा कर लेता हूं। एक बूढ़ा पेन्शनर मुझ से अखबार खरीदता है, मैं उसे यों ही अखबार बेचने नहीं जाता। लगे हाथ उसे सन्तानहीन और धनसम्पन्न मान कर मन ही मन उसका दत्तकपुत्र बनने का समारम्भ कर लेता हूं। तुम्हें हंसी आती है, मुझे भी आती है किन्तु ऐसी सुखद कल्पना में हृदय का क्रन्दन नहीं सुन पड़ता। असली ब्रांडी खरीद कर नशा करने की अपनी सामर्थ्य नहीं। इस लिये क्या करें? ऐसी ही कोई सुखद कल्पना करके अपने को भुला डालें। तुम्हें कैसी लगती है यह कल्पना?'

मैं केवल उसकी ओर ताकता रह गया।

———

स्वप्नदोष निवारक

इसके सेवन से वीर्य क्षीणता, नसों की कमजोरी, कब्ज रहना, मन्दाग्नि, कमर की पीड़ा तथा स्वप्नदोष आदि सर्व प्रकार के वीर्य विकार नष्ट होकर बल, वर्ण तथा वीर्य की वृद्धि और पुष्टी होती है। मू० १ डि० २॥)

गंगेरवाल ट्रेडिङ्ग कं० अलीगढ़ यू०पी०

आपके सारे परिवार के लिए सर्वोत्तम

मिलर

'मिलर की चाय'

चाय

अगर आप अपना स्वास्थ्य कायम रखना चाहते हैं तो सदा 'मिलर की चाय' ही इस्तेमाल किया करें।

क्योंकि

'मिलर की चाय' और तमाम चायों से सर्वश्रेष्ठ है। इससे जीवन का सच्चा आनन्द व स्फूर्ति प्राप्त होती है, दिन भर की थकावट को दूर करके दिल व दिमाग में ताजगी पैदा करती है। जायके व खुशबू में भी सर्वोत्तम है।

सब-एजेन्सी व आर्डर बुक कराने के लिए निम्न लिखित पते पर पत्र-व्यवहार करें या स्वयं तशरीफ लायें:—

पैरेडाइज एण्ड कम्पनी,

टेलीफोन नं० ५३६८ (चीफ एजेण्ट— एस० मिलर टी कम्पनी)

हौज काजी, (थाने के सामने) दिल्ली।

कमला फार्मेसी कनखल [हरिद्वार] का

==अंगूरोल==

स्वास्थ्य वर्धक सर्वोत्तम स्वादिष्ट पेय

कमला फार्मेसी में सब आयुर्वेदिक औषधियां वैद्य धर्मदत्त भूत पूर्व प्रिंसिपल आयुर्वेदिक कालेज गुरुकुल कांगड़ी की देख रेख में तैयार होती हैं। एजेन्टों की सब जगह जरूरत है।

देहली एजेन्ट--जगदीश फार्मेसी चांदनीचौक (मोती बाजार के सामने)

मशहूर अनुभूत इलाज

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

आज से ही शुरू कीजिए, सर्वत्र मिलता है।

जीर्णज्वर, शरीर के अन्दर, बाहर या हथेली तलुवों और आंखों की असह्य जलन, मूत्रमार्ग में आग सी जलन, भोजन के बाद पेट में जलन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कठिन अपच, नियमित कोष्ठबद्धता, रक्तविकार, अशक्ति, नियमित शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं शिथिलता.

इन शिकायतों पर यह बहुत काल से परीक्षित, जड़ी बूटियों के योग से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढा बालक वृद्ध, पुरुष स्त्री सभी के लिये लाभदायक है तथा इस सीमा तक हानिरहित है कि कोमलांगी स्त्रियों को गर्भावस्था के समय निस्संकोच सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके शीतल, पाचक और शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

एजेन्ट चाहिए, शर्तों के लिए लिखिये।

पर्ल कम्पनी
आयुर्वेदीय औषधी
कारखाना
बम्बई २७

१९४४ के परिणाम

हिन्दुस्थान

ने सफलता की एक और मंजिल पूर्ण की

❀ उन्नति पर प्रकाश ❀

चालू बीमा	३२ करोड़ से ऊपर
कुल पूंजी	६ करोड़ ८९ लाख से ऊपर
प्रीमियम की आय	१ करोड़ ५० लाख से ऊपर
दावे का भुगतान (१९४४)	३७ लाख ८० हजार से ऊपर
नया कारोबार (१९४४)	१० करोड़ रुपये से ऊपर

हिन्दुस्थान को आपरेटिव इन्श्योरैंस सोसायटी लि०

हेड आफिस—हिन्दुस्थान बिल्डिंग्स, कलकत्ता।

देहली ब्रांच—हिन्दुस्थान बिल्डिंग्स, न्यू देहली।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ठगी भी एक कला है !

[श्री अशोककुमार]

संसार की प्रसिद्ध कलाओं में ठगी भी एक कला है । कई बार ठग भी ऐसे-ऐसे काम कर बैठते हैं कि दांतों तले अंगुली दबानी पड़ती है। कुछ एक उदाहरण देखिये —

[१]

बम्बई शहर में बिजली की गाड़ियां चलती हैं । इन गाड़ियों में लड़कियां ही डाके डालती हैं । जब वह सम्पन्न व समृद्ध मनुष्य को देखती हैं तो उससे कहती हैं कि तुम मुझे इतने रुपये दे दो वरना मैं यह कहकर कि तुमने मुझे बेइज्जत किया है शोर मचाऊंगी बेचारा आदमी इज्जत जाने के भय से उसे रुपये दे देता है और पिण्ड छुटाता है।

एक दफा बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी के ला कालेज के प्रिंसिपल एक बिजली की गाड़ी से यात्रा कर रहे थे। एक लड़की उनके पास आई और रुपये देने को कहा । उस बेचारी को यह कहां पता था कि यह ला कालेज के प्रिंसिपल हैं। उन्होंने इशारा करके कहा कि मुझे लिख कर दो, मैं बहरा होने के कारण सुन नहीं सकता। उसने लिखकर दे दिया। तब वह पढ़ कर चुपचाप बैठे रहे। लड़की ने फिर मांगा पर वह बोले ही नहीं । अन्त में लड़की ने स्टेशन पर पहुंचने पर ही शोर मचाया। प्रिंसिपल साहब ने कहा उसका उत्तर मैं कोर्ट में दूंगा । कोर्ट में पहुंचने पर प्रिंसिपल साहब ने वह कागज दिखाया, लड़की तो ६ मास की सजा हुई।

[२]

उसी बिजली की गाड़ी का ही किस्सा है। एक मनुष्य शाल ओढ़े गाड़ी में बैठा था। एक लड़की ने उससे भी रु० मांगे। पर वह चुप-शाप बैठा रहा। आखिर स्टेशन पर पहुंचने पर लड़की ने शोर मचाया। वह आदमी गुस्से से खड़ा हो गया व शाल उतार के फैंक दी। देखा तो उस आदमी के हाथ ही न थे। फिर मालूम हुआ कि वह गूंगा भी है। वह भला उसे कैसे बेइज्जत करता। लड़की को एक साल की सजा हुई। उसने अपने बयान में कहा, मैंने इस प्रकार से २॥ लाख रुपये कमाये हैं।

[३]

एक व्यक्ति गाड़ी में बैठा कहीं जा रहा था। एक स्टेशन से एक स्त्री गाड़ी पर चढ़ी। रास्ते में जब वह मनुष्य सो रहा था तो उसने ट्रङ्क में से एक बहुमूल्य हीरा निकालने के लिये उसे क्लोरोफार्म सुंघाकर बेहोश करना चाहा पर अचानक गाड़ी झटके से रुक गई वह जग गया और स्त्री को पकड़ लिया । स्त्री को २ वर्ष की सजा हुई।

[४]

एक स्त्री एक जोहरी की दुकान पर गई। वहां उसने एक ५,०००) रु० का हीरा पसन्द किया। और उससे रख लेने को कहा।

कुछ देर पीछे वह एक शहर के प्रसिद्ध डा० के पास गई, उससे कहा मेरा लड़का पागल हो गया है, जब देखो तब कहता है मेरे ५,०००) रु० दो, क्या आप उसे ठीक कर देंगे। डा० ने कहा क्यों नहीं ? स्त्री ने दो घण्टे बाद उसे लाने का वायदा किया।

फिर वह स्त्री दुकान पर पहुंची, हीरा लिया व जौहरी से कहा आप मेरे साथ एक आदमी कर दीजिये अमुक डाक्टर से रुपये दिलवा दूंगी। जौहरी ने हीरा दे दिया और आदमी उसके साथ कर दिया।

आदमी को लेकर वह डाक्टर के पास पहुंची। आदमी को बाहर खड़ा कर वह अन्दर गई। बोली, मैं उसको ले आई हूं बाहर खड़ा है अभी उसको आपके पास भेजती हूं। डाक्टर को ५०) रु० फीस देकर कहा कि मैं ३ घन्टे तक आऊंगी। लौट कर उस आदमी से कहा — जाओ डाक्टर साहब से मांग लो। फिर एक मोटर से वह कहीं रवाना हो गई। उधर आदमी जब डाक्टर साहब के पास पहुंच कर रुपये मांगने लगा। तो डाक्टर ने कहा कि अभी देता हूं, कुछ देर ठहर जाओ और वह अपनी मशीन से उसके दिमाग की परीक्षा करने लगा। उस आदमी ने कहा आप मेरे ५,०००) रु० दीजिये, मैं कोई पागल तो हूं नहीं। मैं अमुक जौहरी का नौकर हूं। अभी आपकी स्त्री हमारे यहां से एक ५,०००) रु० का हीरा ले गई है, वह रुपये मुझे दे दीजिये और मैं जाऊं। डाक्टर ने पूछा 'तुम क्या उस स्त्री के पुत्र नहीं ?' उसने मुझ से कहा था कि तुम उसके पागल पुत्र हो। उस मनुष्य ने कहा कि उस स्त्री ने कहा था कि आप उस स्त्री के पति हैं।

अन्त में दोनों को पता चला कि वह स्त्री उन्हें ठगकर भाग गई है। पुलिस में रिपोर्ट की गई पर वह आज तक नहीं पकड़ी गई।

× × ×

ऊपर के चार किस्से आपने अचला कही जाने वाली नारियों के पढ़े हैं। १६ वर्ष से कम आयु के बालक-बालिकाओं के भी मनोरंजक किस्से सुनिये।

[५]

दिल्ली की घटना है। एक आदमी अपने १२ साल के लड़के को पीटे ही जाता था। सामने से एक सेठजी गुजर रहे थे। उन्होंने कमर में रुपये बांध रखे थे। इस बात का उनको पहले ही पता था। जब सेठजी पास से गुजरे तो वह लड़के को और जोर से पीटने लगा। सेठजी ने उस आदमी से कहा, भाई इतना क्यों पीटते हो और वे लड़के के पास चले गये। लड़का उन्हें अपने पास आया देख चिपट गया। पर वह आदमी तो भी पीटता ही गया। इधर वह लड़का सेठजी की कमर में से रुपयों की गांठ खोलता रहा। गांठ खुलने से सेठजी को धक्का तो मालूम पड़ रहा था पर उन्होंने समझा यह तो लड़के को पीटने से धक्का लग रहा है। अंत में जब गांठ खुल गई व रुपया उसके हाथ आ गया तो कुछ देर पहले आदमी पीटना बन्द करके चला गया। उसके कुछ दूर पहुंचते ही लड़का झट से भाग गया। बेचारे सेठजी मुंह ताकते रह गये।

[६]

दिल्ली ट्राम यात्री यह तो अवश्य जानते होंगे कि जब यात्री उतरता है तो लड़के उससे टिकट मांगते हैं। वही टिकट भोले-भाले यात्रियों को बेच कर अपना उल्लू सीधा करते हैं।

× × ×

ऊपर आपने ठगी के बच्चों के किस्से पढ़ लिये हैं अब जरा पुरुषों को भी देखिये।

[७]

दिल्ली की घटना है। लालकिले के सामने फुव्वारे की । दो आदमी एक सेठ को पीट-पीट कर मरे बाजार में उसकी जेब से रुपया निकाल रहे थे। सामने दो मनुष्यों ने एक टूटी-फूटी मशीन ले रखी थी वे उसे घुमा रहे थे। सेठजी बचाओ, बचाओ पुकार रहे थे। जब आदमी उन्हें बचाने को दौड़े तो सामने वाले आदमियों ने कहा कि छुड़ाओ मत। हम फिल्म कम्पनी में काम करते हैं और सेठजी की फिल्म खींच रहे हैं। आदमी हट गये। सबने सोचा बड़ा मनोरंजक फिल्म है, जब बनेगा तो अवश्य देखेंगे। इधर सेठजी तो चिल्लाते रहे पर उन्हें छुड़ाने कोई न गया। फिल्म जो बन रही थी । जब वे आदमी रुपया छीन चुके तो सामने वाले आदमी आपस में बातें करने लगे। यहां तो फिल्म ठीक नहीं बनती चलो कुछ दूरी से खींचें। दूसरे ने अनुमोदन किया और वे भीड़ में मिल गए। इधर रुपया छीनने वालों ने उनको अच्छी तरह रस्से से बांधा और चलते बने। पीछे एक आदमी ने सेठ से पूछा कि तुम कौन सी कम्पनी में काम करते हो। सेठ ने रोते हुए कहा कि भाई मेरे तो सचमुच में रुपये छिन गये और तुम मजाक बनाते हो अन्त में सत्यता को जानने के लिये उन फोटो खींचने वाले आदमियों को ढूंढा गया पर वे न मिले। अन्त में लोगों को सेठ जी पर विश्वास आया व उनके बन्धन खोले गए। न तो आज तक वे आदमी मिले न सेठजी के रुपये।

[८]

भटिंडे की घटना है । एक गाड़ी में और अनेकों यात्रियों के साथ दो ठग भी यात्रा कर रहे थे। अन्त में भटिंडे में जब गाड़ी खाली हुई तो दोनों ठग अन्त तक इस विचार से बैठे रहे कि यदि कोई यात्री सामान भूल गया हो तो उठा लें । पर दोनों को मालूम नहीं था कि वे दोनों ठग हैं व किसी का माल दबाने की फिराक में हैं। अन्त में सब आदमी जब चले गए तो उन दोनों ने देखा कि एक बसंती रंग का बड़ा सा ट्रंक रखा है। दोनों उसको लेना चाहते थे पर लेते हुए डरते थे कि कहीं यह दूसरे का न हो । दोनों आधे घण्टे तक बैठे रहे तत्पश्चात एक ठग ने हिम्मत करके वह ट्रंक उठा लिया और चलने लगा । दूसरा ठग भला माल को यों क्यों जाने देता, उसने झगड़ा शुरू किया — यह ट्रंक मेरा है तू क्यों

[शेष पृष्ठ २२ पर]

प्रकाशित होगये प्रकाशित होगये

विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के दो अमूल्य ग्रन्थ

१. गीतांजलि— नोबेल पुरस्कार से पुरस्कृत सुबोध हिन्दी अनुवाद मूल्य सजिल्द १॥।)

२. त्याग का मूल्य— उपन्यास सम्राट् स्वर्गीय प्रेमचन्द जी के शब्दों में "यह रवि बाबू का सर्व श्रेष्ठ उपन्यास है" ४०० पृष्ठ, दो रंगा टाइटिल । मूल्य सजिल्द ५) मात्र ।

नोट—बुकसेलरों को विशेष सविधाएं ।

पता—श्री गांधी ग्रन्थागार,
चावड़ी बाजार, देहली ।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

साहित्य सब वादों से स्वतन्त्र है

[पृष्ठ ८ का शेष]

किया जा सकता। प्रगतिवाद या युग धर्मवाद, या श्रेणीवाद अथवा विचार-विशेषवाद का प्रतिपादक साहित्य ही साहित्य है — ऐसा सोचने वाले अपने ऊपर और अन्यों पर भी अन्याय करते हैं।

यह कहना कि विचार, विशेष का प्रतिपादक होने के कारण गोर्की ही साहित्यकार है और उक्त विचार-विशेष का प्रतिपादक न होने के कारण रवीन्द्र ठाकुर साहित्य-स्रष्टा नहीं है, ये केवल हठधर्मी ही है, वरन् एक अविचार भी है। सत साहित्य वह है जो मानव के कल्याण-साधना में सहायक हो सके और यह कहना कि श्रेणी-चेतना-प्रेरक साहित्य ही मानव-कल्याण-साधना में समर्थ है तो, यह एक ऐसा सिद्धान्त है जो मानव-कल्याण को अत्यन्त सीमित परिधि में आबद्ध कर देता है। श्रेणी-चेतना को उभारने वाला साहित्य भी सद् साहित्य हो सकता है परन्तु इसके विपरीत, मानव को केवल आर्थिक श्रेणी में आबद्ध न करके जो साहित्य मानव के व्यक्तित्व को ऊंचे स्तर पर उठाने की प्रेरणा प्रदान करे, वह भी सत्साहित्य है ही। यदि अपने दुराग्रह के कारण हम इस स्पष्ट सत्य को स्वीकृत नहीं करते तो हम अपने साहित्यको लाभान्वित, परिष्कृत बहुमुखी एवं प्राणयुक्त बनाने में समर्थ न होंगे।

आखिर, इस द्विपद मानव को और उसके कल्याण को किसी भी युगधर्म के वाद-विवाद-विशेष के चौखटे में कैसे जकड़ा जा सकता है —

"चिर जीवन, इक जनम
में कैसे बांध्यो जाय?
जिमि अनन्त आकाश यह
अञ्जलि बीच समाय?"

जिस मानव की जड़ें इतनी गहरी हैं कि मन्वन्तर भी उसकी थाह पाने के लिये इस काल-अर्णव में डुबकी लगाते सकुचाते हैं, उस मानव को और उसके कल्याण को आप एक युग के क्षणिक धर्म में सीमित करेंगे — ऐसी भूल न कीजिये। प्रथम तो इसलिये कि आप ऐसे कर न सकेंगे — अर्थात् आपके प्रयत्न निष्फल होंगे, व्यर्थ होंगे। द्वितीय, इस कारण भी कि ऐसे अदूरदर्शितापूर्ण प्रयत्न मानव का अकल्याण करेंगे। स्मरण रखिये, आज का विज्ञान, भुजा उठा कर उच्चस्वर से यह घोषित कर रहा है कि भौतिक जगत् में भी इतिनैश्चित्य का सिद्धान्त लागू नहीं होता है। ऐसी अवस्था में चेतन जगत् में, साहित्यिक निर्माण के सदृश अज्ञेय प्रेरणामूलक विषय में, युग-वाद के इतिनैश्चित्य को समाविष्ट करने का प्रयत्न करने का प्रयत्न केवल उपहासास्पद ही हैं, वरन् अहितकर भी है।

निःसन्देह, मैं युग धर्म की आवश्यकताओं को अपने साहित्य में अभिव्यक्त होने देने का प्रबल पक्षपाती हूं। साहित्य को मैं निर्माण के स्वान्तः सुखाय विसृष्ट होने के सिद्धान्त को मानते हुए भी, यह भी मानता हूं कि सुसंस्कृत, गहन अनुभूतिशील, मैत्र, करुण सहित्यकार का अन्तःकरण युग की आवश्यकताओं को प्रकट किये बिना सुखानुभव कर ही नहीं सकता। परन्तु "युग-धर्म युग-धर्म" कह कह कर अपने मस्तिष्क को, अपने हृदय को, अपने विचारों को, अपनी भावनाओं को विकृत करने की आवश्यकता नहीं है। मैं एक अत्यन्त साधारण, अत्यन्त दुर्बल द्विपद प्राणी हूं। पर आज मेरे मन में प्रश्न उठता है — क्या हिंसा-उद्दीपनात्मक अभिव्यक्ति मानव-समाज की कल्याणसाधना कर सकेगी? मैं स्वयं अहिंसा के सिद्धान्त का पालन करने में अपनी नितान्त असमर्थता अनुभव करता हूं। फिर भी गत भूमण्डल-व्यापी महा-युद्ध की विभीषिकाओं का किञ्चित्मात्र ज्ञान प्राप्त कर लेने के उपरान्त मैं पूछ उठता हूं — क्या यही मुक्ति का, मानव कल्याण का, जन-गण-मङ्गल का मार्ग है? क्या हिरोशिमा की दानवता की ओर मानव को ले जाना ही श्रेयस्कार है? क्या घृणा, विद्वेष, ईर्षा, मत्सर, हिंसा के आधार पर इस मानव का उद्बोधन करना ही युग धर्म है? नैतिक दृष्टया मैं दुर्बल जन इन प्रश्नों का क्या उत्तर दूं? आप स्वयं सोचिये, स्वयं विचार कीजिये; चार्ल्स रीड के शब्दों में, अपने आत्म-चिन्तन के गहन कूप में अपने प्रश्न-घट को विचार-रज्जु में फंसा कर डालिये और देखिये कि उस कुएं से कौनसा जल निकलता है — विद्वेष का उबलता हुआ खारा पानी या अनुद्वेगकर शान्ति का शीतल जल?

आज हमारे साहित्य-स्रष्टाओं के सम्मुख ये प्रश्न होने चाहियें। — — हम कैसा साहित्य-निर्माण करें? मानव को उन्नत करने का? तो उन्नति क्या है? और हमारे साहित्य-निर्माता अपने हृदय-अर्णव-मन्थन में तल्लीन होकर, उत्तर अमृत के घट को ऊपर लाने का और उस अमृत से मानवता को जीवन-दान देने का प्रयत्न करें। सभ्यता, उन्नति, विकास, प्रगति ये अच्छे शब्द हैं। प्रेरणादायक भी हैं। किन्तु वास्तविक अर्थ समझे बिना इन शब्दों से जो प्रेरणा मिलेगी वह अशुद्ध, अमङ्गलकारिणी एवं नाशक होगी। पृथ्वी भर के विचारकों के ग्रन्थों का मनन कर लीजिये — और आप पायेंगे कि उन्नति एवं सभ्य मानव की परिभाषा वही है और एकमात्र वही है जो आपके देश के मन्त्रद्रष्टा ऋषियों ने पुराकाल में और गान्धी ने इस काल में हमारे सामने रक्खी है। मानव – उन्नति का एक मात्र मानदण्ड है — मनोविकारों पर आधिपत्य प्राप्त कर सकने की क्षमता। एक मानव उसी सीमा तक उन्नत एवं सभ्य है, जिस सीमा तक उसने अपने मनोविकारों को, अपने काम को, क्रोध को, लोभ को, मद को, मत्सर को, घृणा को, विद्वेष को अपने अधीन कर लिया है। इसी प्रकार एक समाज, एक राष्ट्र उसी सीमा तक सभ्य कहा जा सकता है, जिस सीमा तक उसने सामूहिक रूप से अपने विकारों को संयत एवं उन्नत करना सीखा है। क्योंकि अन्ततोगत्वा इसी तरह मानव ऊंचा उठता है, इसी तरह मानव-समाज उठता है, इसी तरह एक राष्ट्र ऊंचा उठता है। और सोचिये, यदि मानव-उन्नति का यह मान-दण्ड ठीक है, यदि मनोविकारों का संयत एवं उन्नत करना ही मानव-सभ्यता एवं मानव-कल्याण की एकमात्र साधना है, तो फिर सत्साहित्यकार मनोविकारों को, निम्न स्तर पर लुढ़काने वाले विकारों को, उभारने वाला साहित्य कैसे निर्मित कर सकता है? दूसरे शब्दों में, घृणा, विद्वेष एवं हिंसा-वृत्ति मूलक साहित्य का निर्माण, युगधर्म किंवा किसी वाद के नाम पर कैसे उचित ठहराया जा सकता है कि सत्साहित्य स्रष्टा इन मनोविकारों का, इनके द्वारा उत्पन्न सामाजिक एवं वैयक्तिक उलझनों का, यथावत् सुन्दर, हृदयग्राही वर्णन नहीं करेगा। — नहीं। साहित्य में इनको स्थान तो रहेगा ही। क्योंकि इनके बिना मानव-का या, मानव-समाज का सम्मुख लाया ही नहीं जा सकता। परन्तु मानव कल्याणकारी साहित्य में सदा इन दुष्परिणामों से जन-समूह को सचेत रहने का सन्देश मिलते रहना चाहिये। *

* द्वितीय दिल्ली प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति पद से दिये गये भाषण का एक अंश।

———

पिकाक दंत मंजन

दांतों को मोती सा चमकाता है और मसूड़ों को मजबूत बनाता है। पायरिया का खास दुश्मन है। अपने शहर के दुकानदार से मांगिये।

ऐजन्टों की जरूरत है

सोल ऐजेन्टस—

ऐनसा ट्रेडिंग कम्पनी चांदनी चौक देहली

अद्वितीय आकर्षक मूंगफली तेल मूंगफली बीजा एवं रेडी तेल की सप्लाई के लिये:—

रामजीलाल मोदी एण्ड को०

वरंगल (निजाम स्टेट)

टेलीग्राम BHANU फोन नं० १०१

स्त्रियों की शक्ति दायक औषधि

सुन्दरी साथी (रजिस्टर्ड)

स्त्रियों के प्रदर, रक्त प्रदर, ऋतुस्राव, गर्भाशय के रोग, मिटाता है। बन्ध्यत्व को मिटाता है, बच्चे होते हैं। स्त्री का स्वास्थ्य सुधार देती है, हरेक गांव में दवा वाले लोग बचते हैं। कीमत फी बोतल १।=) तीन बोतल से आराम होता है इनका मूल्य ३।॥) । दिल्ली एजेन्टः—कान्तीलाल आर० पारिख, दवे केमिकल वर्कस, कालबादेवी रोड बम्बई।

२४ घण्टे में कीड़े मर जाते हैं!

सोटा छाप सोटा छाप

दर्द के लिये रामबाण औषध सूखी गीली खाज, चट्टे, फुन्सी आदि समस्त चर्म रोगों को तत्काल अच्छा करती है। इस औषधि के प्रभाव से हड्डी तक पहुंचे हुए रोग तुरन्त अच्छे होते हैं।

नोगी एण्ड कम्पनी, बम्बई ४.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

[पृष्ठ ६ का शेष]

मंत्रि-मण्डल में फ्रेंच स्पेनिश सम्बन्ध पर विचार-विमर्श हुआ और फ्रेंच जनता के कुछ वर्गों द्वारा स्पेन के प्रति अख्तियार किये गये रुख के विरुद्ध चेतावनी देने का निश्चय किया गया। यह नोट फ्रेंच सरकार को भी दिये जाने का निश्चय किया गया।

यहां के राजनीतिक क्षेत्र में कहा जा रहा है कि स्पेन सरकार को संदेह करने का पर्याप्त कारण मिलता है कि फ्रेंच कम्युनिस्ट स्पेन और फ्रांस की सीमा पर निर्वासित स्पेनों को मिला कर दुर्घटना करा देने की तैयारी करा रहे हैं। स्पेन के पत्रों में हाल में ही इस आशय की खबरें छपी हैं कि फ्रेंच कम्युनिस्टों को इतना भय है कि सत्ता और शक्ति उनके हाथ से निकल जायगी। इसलिये वे अन्तर्राष्ट्रीय उपद्रव खड़ा कर देना चाहते हैं और उपद्रव में उन्हें रूस की भी मदद मिलेगी।

राजस्वबिल का प्रथम वाचन

अन्तर्कालीन राष्ट्रीय सरकार न बनने देने के लिये गत सप्ताह लीग तथा वायसराय की शासन परिषद के बीच जो निन्दनीय समझौता हुआ था उसका परिणाम आज राजस्व बिल पर विचार करने विषयक प्रस्ताव पर मत लिये जाते समय प्रगट हो गया। लीगी तथा सरकारी सदस्यों ने मिल कर मत दिये। ६७ मत पक्ष में तथा ५६ विपक्ष में आने से राजस्व बिल पर विचार करने का प्रस्ताव स्वीकृत हो गया। इस प्रकार वर्तमान विधान के विरुद्ध अपना विरोध प्रगट करने के लिये राजस्व बिल को ठुकराने में कांग्रेस का साथ देने की गत दस वर्षों की अपनी नीति को लीग ने त्याग दिया है।

परन्तु सर आर्चिबाल्ड रोलैण्डस ने कांग्रेस दल की इस आलोचना के गुरुत्व को अनुभव किया कि बजट में गरीब करदाता को पर्याप्त सुविधा नहीं पहुंचाई गई है और बहस का उत्तर देते हुए करों में इन छूटों की घोषणा की। अब १ जुलाई से पोस्टकार्ड ३ पैसे के बदले २ पैसे का हो जायेगा। मिट्टी के तेल पर कर में प्रस्तावित कमी को दूना कर दिया गया है। दियासलाई पर कर इस तरह लगाया जायेगा कि निकट भविष्य में बाजार में दो पैसे का एक डिब्बा बिकने लगेगा। सुपारी पर एक आना प्रति पौण्ड आबकारी कर घटा दिया जायेगा और तटकर में भी कमी होगी। फिल्मों पर कर घटा कर तीन पाई कर दिया जायेगा।

पंजाब के गैरजमींदारों के साथ अन्याय

ब्रिटिश मंत्री-मिशन के सामने एक आवेदन पत्र प्रस्तुत किया जा रहा है। उसमें कहा गया है कि पंजाब में कानूनी तौर पर जमींदार माने जाने वाले हिन्दू, मुसलमान और सिक्खों की संख्या १,००,४७,००० है जबकि गैर जमींदारों की संख्या १,०२,३७,००० है, दोनों में केवल कुछ लाख का ही अन्तर है। किन्तु प्रांतीय असेम्बली में प्रतिनिधित्व की दृष्टि से उनमें अंतर बहुत बड़ा है क्योंकि संख्या में इस थोड़े से अंतर के होने पर भी प्रादेशिक निर्वाचन क्षेत्रों का बटवारा इस प्रकार किया जाता है कि १५७ प्रादेशिक निर्वाचन क्षेत्रों में से केवल ३७ ही गैर जमींदार चुने जा सकते हैं। यह बहुत बड़ा अन्याय है।

मौ० आजाद की संघ-योजना

मौ० आजाद ने एक योजना लीग के चौ० खलीकुज्जमां की दी है। इस नए विधान के अनुसार केन्द्र में कम से कम विभाग रहेंगे और वे वैकल्पिक और अनिवार्य दो जगह बांटे जा सकेंगे। संघ के प्रत्येक सदस्य को संघ में रहने या अलग हो जाने का अधिकार रहेगा।

मालूम हुआ है कांग्रेस कार्य-कारिणी ने इस योजना को स्वीकार किया है और जब मौलाना आजाद ब्रिटिशमंत्रियों से भेंट करेंगे तो वह यह योजना भी पेश करेंगे। वैकल्पिक विषय वे होंगे जिन्हें केन्द्र के हवाले करना या न करना संघ में शामिल होने वाले इकाइयों की इच्छा पर निर्भर रहेगा और अनिवार्य विषय वे हैं जिन्हें हर हालत में केन्द्र के हवाले करना ही पड़ेगा। यदि कोई इकाई बहुमत से निश्चय कर लेगी कि केन्द्र से अलग हो जाए — तो उसे इसकी अनुमति मिल जाएगी। मौ० आजाद का मत है कि मुस्लिम दृष्टिकोण से यह योजना पाकिस्तान की अपेक्षा कहीं बेहतर है। इससे मुस्लिम प्रान्तों को पूर्ण स्वतन्त्रता मिल जाती है और वे केन्द्र में शामिल होकर अपने उन सहधर्मियों की भी रक्षा कर सकते हैं जो गैरमुस्लिम इकाइयों वाले प्रदेश में आबाद हैं। चौ० खलीकुज्जमां ने अभी कोई उत्तर नहीं दिया वह सम्भवतः मि० जिन्ना से सलाह करने के बाद उत्तर देंगे। असेम्बली के लीगी सदस्यों की बहुसंख्या का मत है कि सभा में हमारी संख्या एक तिहाई है, इसलिये ६ मंत्रियों में से ३ हमारे होने चाहिये, बाकी ६ चाहे हिन्दुओं को दिये जाएं या कांग्रेसी मुसलमानों को।

प्रान्तीय चुनाव

प्रान्तों में जो चुनाव हो रहे हैं। अभी तक के परिणामों के अनुसार विभिन्न दलों की स्थिति इस प्रकार है :

बंगाल — मुस्लिमलीग ७६, कांग्रेस ७०; यूरोपियन २४; स्वतन्त्र ११; एंग्लो इण्डियन ४; कम्युनिस्ट २; हिन्दूमहासभा १; कृषक प्रजा २। (कुल स्थान २५०)।

मध्यप्रान्त — कांग्रेस २०; मुस्लिमलीग ३, यूरोपियन १; एंग्लो इण्डियन १। (कुल स्थान-११२)।

मद्रास — कांग्रेस १३२; मुस्लिमलीग २०; यूरोपियन ७; स्वतन्त्र ५; राष्ट्रवादी १। (कुल स्थान-२१५)।

बम्बई — कांग्रेस १२५; मुस्लिमलीग ६; यूरोपियन ६; स्वतन्त्र ४; एंग्लो इण्डियन २; कम्युनिस्ट १; रेडिकल डेमोक्रेट १; हिन्दूसभा १। (कुल स्थान-१७५)।

भागीरथी गंगा

डाइरेक्टर बा० माणिकलाल का यह एक धार्मिक खेल है। स्त्री पुरुष दोनों के देखने योग्य है। कोरोनेशन थ्येटर में परेडग्राउण्ड में दिखलाया जा रहा है।

"जय हिन्द" मुफ्त

प्रत्येक भारतीय के घर में इस गौरवशाली पुस्तक को पहुंचाने के लिये हम इसे मुफ्त बांट रहे हैं। आप सभी लोग एक-एक कार्ड लिखकर मुफ्त मंगालें।
पता—मधुर मन्दिर हाथरस यू० पी०

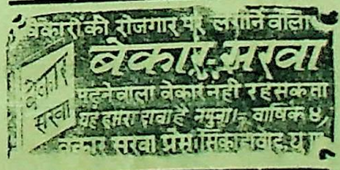

मुसाफ्फिये आज़म

खून फसाद के सब रोगों को दूर करता है

जो लोग खून की बीमारी जैसे आतशक, चकत्ते, फोड़े, फुन्सियां, गंज; खुजली या किसी और खून की बीमारी में फंसे हुए हों वे शर्बत मुसाफ्फियेआज़म मंगाकर इस्तेमाल करें। थोड़ी सी खुराकें इन बीमारियों को दूर करने के लिये काफी होती हैं। कीमत १ शीशी (२० खुराक) एक रुपया।
पता:—हमदम दवाखाना, लालकुआं पो० ब० नं० ७० देहली।

निरस —
उद्विग्न —
अशांत---

क्या आप निर्बल हैं? सांसारिक सुख से वंचित हैं? तो इसका एकमात्र उपाय—

झीन सीन गोल्ड
-- टानिक पिल्स --

ताकत, बल, पौरुष व धातु-पुष्टि की बेजोड़ स्वर्ण-मिश्रित गोलियां अवश्य व्यवहार करें।

'झीनसीन' में अनेक शक्ति-वर्द्धक तत्वों के अतिरिक्त शुद्ध सोना भी है। इनमें बल और पौरुष बढ़ाने की तथा धातु-पुष्ट कर स्वप्नदोष व जातीयदुर्बलता मिटाने की अपूर्व शक्ति है। 'झीनसीन' के सेवन से आपकी खोई हुई शक्ति उत्साह, उमंग तथा पुरुषत्व फिर से प्राप्त होगा। मूल्य ५) प्रति शीशी डाक खर्च ।।=) अलग।

विस्तृत सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये

चाइनीज मेडिकल स्टोर
नया बाजार — देहली।

हैड आफिस—२८ एपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई। ब्रांचें—१२ डलहौजी स्क्वायर, कलकत्ता : रीची रोड—अहमदाबाद।

— सेलिंग एजन्ट्स —

दी नेशनल मेडिकल स्टोर्स — आगरा।
दी जनरल मेडिकल स्टोर्स — अजमेर।
दी एलाईड केमिस्ट — जयपुर।
श्री सरस्वती स्टोर्स — बीकानेर।
मे. गिरधरदास जानकीवल्लभ—उदयपुर।
वैद्यराज विश्वनाथ त्रिवेदी—मुजफ्फरनगर।
मेसर्स मोहन ब्रादर्स — लश्कर।
मेसर्स खरे ब्रादर्स — उरई।
दी गुजरात मेडिकल स्टोर्स — कानपुर।
दी कौशिक आयुर्वेदिक स्टोर्स—लखनऊ।
दी वर्मा मेडिकल स्टोर्स — शिकोहाबाद।
मे० भारीवाल ब्रादर्स — जोधपुर।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पंजाब असेम्बली

२० मार्च को पंजाब असेम्बली का अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। मुस्लिमलीग के खिजरविरोधी आंदोलन के कारण तीसरा मुसलमान मंत्री नहीं मिलता था। अब मुजफ्फरगढ़ के मि० हुसेनबर्क मंत्री नियत किये गये हैं और चौधरी लहरसिंह जाटों की ओर से।

२० मार्च को असेम्बली में स्पीकर का निर्वाचन होना था। मुस्लिम लीगियों की शरारतों को रोकने के लिये असेम्बली हाल पर पुलिस का विशेष पहरा था। लाठी पुलिस सशस्त्र पुलिस भी तैनात थी। पंजाब पुलिस के बड़े अफसर मि० मौर्टन भी स्वयं उपस्थित थे। सिपाहियों में अधिकांश संख्या हिन्दू और सिक्ख सिपाहियों की थी। इस तैयारी को देख कर मुस्लिमलीगी जलूस असेम्बली की ओर नहीं आया। असेम्बली के स्पीकर का निर्वाचन प्रारम्भ हुआ। मुस्लिमलीग ने मि० बरकतअली का नाम पेश किया। कोएलीशन पार्टी ने दीवान बहादुर एस.पी.सिंह का नाम पेश किया। मि० बरकतअली को ७६ सम्मतियां मिलीं। श्री एस० पी० सिंह ६१ सम्मतियों से स्पीकर नियत किये गए। असेम्बली की विविध पार्टियों ने उन्हें बधाई दी परन्तु मुस्लिमलीग के पराजित उम्मीदवार मि० बरकतअली ने शिष्टाचार तथा प्रथा को ताक में रखकर दीवान बहादुर सिंह को बधाई तक न दी।

इस असेम्बली में कांग्रेसी पार्टी की सफेद गांधी टोपी और मुस्लिमलीगियों की काली जिन्ना टोपियों के साथ अकालियों की नीली पगड़ियां विशेष रूप से चमक रही थीं। यूनियनिस्ट मुसलमानों के तुर्रे कहीं-कहीं दीखते थे।

स्त्री सदस्याओं में सिक्ख कांग्रेसी महिलाएं स्वदेशी साड़ी पहिने हुए थी। मुसलमान लीगी महिलासदस्याओं ने असेम्बली प्रवेश के साथ-साथ पर्दे को तलाक दे दिया था।

२१ मार्च को श्री भीमसेन सच्चर ने बजट पेश किया। समयाभाव के कारण सम्मिलित मंत्रि मंडल बजट में कोई नई रंगत न ला सका। यथापूर्व फाईनैन्स डिपार्टमैण्ट द्वारा तैयार किया हुआ बजट पेश किया। बजट पर बहस जारी है। ४६ लाख की बचत घोषित की गई।

अमृतसर में हड़ताल

होली के मौके पर अमृतसर में मुस्लिमलीगी मुसलमानों और हिन्दू-सिक्खों में दंगा हो गया। दो हिन्दू और एक सिक्ख मारा गया। मुसलमानों ने कई दुकानदारों को लूटा पुलिस के स्थानीय मुसलमान अधिकारियों तथा हस्पताल के सरकारी कर्मचारियों ने

पंजाब की चिट्ठी

पंजाब असेम्बली का बजट अधिवेशन

जख्मी सिक्ख, हिन्दुओं के साथ लापर्वाही का व्यवहार किया। इस के प्रतिवाद में अमृतसर के हिन्दू सिख दुकानदारों ने हड़ताल करदी। कई दिन बाजार बन्द रहे। आखिर २१ मार्च को स्थानीय डिप्टी कमिश्नर ने हिन्दू सिखों की मांगों को पूरा करने का विश्वास दिलाया। स्थानीय मुसलमान पुलिस अफसर की तब्दीली भी करदी। जांच का प्रबन्ध किया गया। तब कहीं हिन्दू सिख नेताओं ने हड़ताल खुलाई। इसी सिलसिले में अमृतसर के समीप जंडियाला गुरू से भी मुस्लिमलीगी मुसलमानों ने हिन्दुओं पर हमला किया। दुकानें लूटीं। मकान जलाए परन्तु स्थानीय पुलिस अफसर के यत्न से मामला संभाल लिया गया। कई मुसलमान गिरफ्तार किये इन्हीं दिनों श्री हरगोविन्दपुर में वहां के मुसलमानों ने गोकशी करने की बात उठाकर अशान्ति का वातावरण पैदा कर दिया है। जिले के पुलिस अफसरों ने उस शहर के सम्बद्ध हिन्दु मुसलमानों की जमानतें मांगली हैं। इसी प्रकार से पंजाब के अन्य स्थानों से भी मुस्लिमलीगी मुसलमानों द्वारा, सम्मिलित मन्त्रि मण्डल को बदनाम करने के लिये, शरारत करने के समाचार आ रहे हैं। इन दिनों पंजाब असेम्बली के अधिवेशन के अवसर पर मुसलमानों को साथ देने के लिये संगठित करने के लिये मि० जिन्ना भी यहां आये थे। परन्तु उनकी भी कुछ न चली। अब सम्मिलित एसेम्बली पार्टी का मन्त्रि मण्डल स्थिर हो गया है। आशा की जा रही है कि बजट पास होने के साथ-साथ कुछेक मुस्लिमलीग भी मैम्बर युनियनिस्ट पार्टी में मिल जायें।

एम० ए० विद्यार्थियों की भूख हड़ताल

लाहौर के एम० ए० तथा एम० एस० सी० परीक्षा में बैठने वाले विद्यार्थियों ने परीक्षा की तिथि अप्रैल के प्रथम सप्ताह से जून में करने की प्रार्थना की। कारण यह बताया जाता है कि उनकी पढ़ाइयां पूरी नहीं हुई थीं और उनसे फीसें पूरी लेली थीं। विद्यार्थियों ने भूख हड़ताल करदी, वायस चांसलर ने भी समझाया परन्तु किसी की न चली। इस बीच में पुलिस ने १३ विद्यार्थी गिरफ्तार भी किये। इसपर हड़तालियों की संख्या बढ़ने लगी। आखिर सिण्डीकेट ने २३ मार्च को विद्यार्थियों की मांग स्वीकार कर परीक्षा की तिथियां अप्रैल और जून दोनों नियत करदीं। यदि अप्रैल में कोई परीक्षार्थी न आये तो वही पर्चे जून में दे दिये जायेंगे। इस पर विद्यार्थियों ने भूखहड़ताल खोल दी।

विद्यार्थियों की हड़ताल कमेटी ने इस विजय के उपलक्ष में रविवार की मीटिंग में होस्टलों में दीपमाला मनाई। और एम० ए० विद्यार्थियों को अप्रैल के परीक्षा न देने की एकता के नाम पर अपील की। दोष पूर्ण शिक्षा पद्धति के कारण आए दिन इस प्रकार की घटनाएं राष्ट्र के युवकों अनियंत्रण का पाठ पढ़ा रही हैं।

श्रीमती अरुणा आसफअली

२४ मार्च को लाहौर में आईं। स्टेशन पर जनता ने स्वागत किया। १४४ दफा के कारण सार्वजनिक सभा तथा जलूस नहीं निकले। ब्रैडलाहाल में तथा लाहौर छावनी में भाषण करते हुए श्रीमती अरुणा ने स्वर्गीय सरदार भगतसिंह द्वारा चलाए गए 'इंकलाब जिन्दाबाद' के नारे का महत्व प्रकट कर जनता को उसके पूर्ण करने की प्रेरणा की कम्युनिस्टों को देशद्रोही और मि० जिन्ना के मुस्लिमलीगियों भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन का शत्रु घोषित किया।

२४ मार्च से लाहौर में चावलों का राशन तथा कंट्रोल शुरू हो गया है।

उद्यम

एक अङ्क देखिये और उद्यम की उपयुक्तता तथा लोकप्रियता पर विश्वास जमा लीजिये।

देश की आवश्यकता और अपना कर्तव्य

★ अपने घर के सामने कितनी भी कम खुली जगह क्यों न हो; किन्तु वहां साग-सब्जी लगाइये।

★ एकाध उत्तम हस्तव्यवसाय सीखकर अपने पैरों पर खड़े होना सीखो, जिससे आत्मविश्वास में दृढ़ता और आमदनी में वृद्धि होगी।

★ सिर्फ स्वदेशी माल का ही उपयोग कीजिये, जिससे देशी उद्योगधंधों की वृद्धि होकर परोक्ष में आपका भी फायदा होगा।

★ उद्यम मासिक में हर एक परिवार की आवश्यकताओं की जानकारी प्रकाशित होने के कारण दिन-ब-दिन मांग बढ़ती जा रही है। आज ही वार्षिक मूल्य रु० ५-८-० भेजकर ग्राहक बन जाइये। उद्यम मासिक, धर्मपेठ,नागपुर

राजरत्न श्री रामजी भाई कमाणी

श्री रामजी भाई का जन्म एक सामान्य घराने में हुआ था। उनका कुटुम्ब धनसपन्न न होने पर भी संस्कार संपन्न था। स्कूली शिक्षा साधारण होने पर भी अपने प्रबल पुरुषार्थ से उन्होंने जो उत्कर्ष साध्य दिया वह हमारे देशवासियों के लिये एक सजीव बोधपाठ है। कलकत्ता की गलियों में एल्युमिनियम के बर्तनों की फेरी लगाने वाले एक काठियावाड़ी नवयुवक के साथ आजके कमाणी मैटल इन्डस्ट्रीज लि० के मालिक और भारत के मुख्य उद्योगपति श्री रामजी भाई की तुलना की जावे तो कौन कह सकता है कि वे दोनों एक ही हैं। श्रीरामजी भाई कमाणी की यह महान् साधना है।

श्री रामजी भाई कर्मठ हैं। देश को स्वावलंबी बनाने के लिये उन्होंने औद्योगिक क्षेत्रमें जो स्थापनाएं की हैं वे स्तुत्य हैं। रामजी भाई की राष्ट्रीय प्रवृत्तियों से गुजरात काठियावाड़ भलीभांति परिचित है। अपने बढ़ते हुए व्यापारको ठुकराकर देशकी पुकार सुनकर राष्ट्र सेवामें कूद पड़ना श्री कमाणी जैसे वीर पुरुषों का ही काम है। आपने अमदेली प्रांत में विस्तृत पैमाने पर जो खादी कार्य आरम्भ किया उससे समस्त प्रान्तमें खादी ही खादी दिख पड़ती थी। अहमदाबाद की महासभा का पण्डाल और सारा नगर इसी खादी से सजाया गया था।

श्री रामजी भाई एक अच्छे कृषि निष्णात भी हैं। उनका 'रामबाग' उनकी एक अनुपम कृति है। उनका शिक्षाप्रेम अनुपम है। उन्होंने बड़ौदा राज्य में अनेक स्थानों पर जो जनसेवाएं की, उसके सन्मान में बड़ौदा नरेश श्रीमंत सया जी राव ने उन्हें 'राजरत्न' के पदसे सुशोभित किया।

आपकी योग्यता बहुविध है। वे अपने ज्ञान अनुभव और धनका दूसरों को लाभ देने के लिये सदैव तत्पर रहते हैं। उनके कई दान सुविदित हैं। फिर भी में गुप्तदान देनाही विशेष पसंद करते हैं।

आप जैनगुरुकुल व्याबर वार्षिकोत्सव के संचालन के लिए इस वर्ष सभापति मनोवीत किये गये हैं।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

बाल बन्धु परिषद

गधेराम मारे गये !

एक खेत था। खेत के पास एक झोंपड़ा रहता था। वहीं किसान का झोंपड़ा था। झोंपड़े के पास एक मुर्गा रहता था। गधा और मुर्गा आपस में मित्र थे। दोनों घंटों बातें करते थे। शाम हो गई थी। सूरज भी जल्दी-जल्दी अपने घर की ओर जा रहा था। गधा और मुर्गा आपस में बातें कर रहे थे।

गधे ने कहा, "कुकड़ूं जी! आज मनोहर दिन है। कैसी सुन्दर शाम है? चारों तरफ शान्ति है। कहीं भी शोर नहीं। कैसा भला मालूम होता है? आओ कहीं सैर को चलें!"

पास की झाड़ियों से खड़खड़ की आवाज आई। मुर्गे ने एक दम अपनी गर्दन तान ली, चौकन्ना होकर इधर-उधर देखने लगा।

गधे ने पूछा, "कुकड़ूं जी! क्या बात है! इतना घबरा क्यों रहे हो? जवाब भी नहीं देते?"

मुर्गा बोला, गधे राम! जरा सावधान रहो। पास की झाड़ी से खड़खड़ की आवाज आती है। वहां कोई जंगली जानवर जरूर है।"

गधा भी होशियार हो गया। इतने में मुर्गा बहुत जोर से कूकड़ूं कूं कुकड़ूं कूं चिल्लाने लगा।

मुर्गा बोला, गधे राम, चले जाओ। वह देखो भेड़िया आ रहा है।"

भेड़िया खेत में भोजन की तलाश में छिपा हुआ था। छिपकर गधे पर हमला करना चाहता था। मुर्गे का शोर सुनकर वह भाग निकला। भेड़िये ने सोचा — शोर सुनकर कहीं किसान न आ जाये। भेड़िया दुम दबाकर जाने लगा।

भेड़िये को दुम दबाकर भागते देख गधा भी उसके पीछे चल दिया। घमंडी मूर्ख गधा मन में खुश हो रहा था कि भेड़िया उससे डर गया। मन में सोचा भेड़िये को बहुत दूर भगा कर आऊंगा।

मुर्गे ने समझाया — गधे राम! घमंड न करो। भेड़िये के पीछे मत जाओ। वह तुम्हें खा जायेगा।

गधेराम ने एक न सुनी। बड़ी शान के साथ भेड़िये के पीछे चलते ही गये। भेड़िया जब खेत से बहुत दूर पहुंच गया तो उसने पीछे मुड़कर देखा। पीछे गधा था। आस-पास कोई भी न था। भेड़िया गधे पर एक दम झपटा और मार गिराया। भेड़िया गदहे की खाल नोच-नोचकर खाने लगा। खाते-खाते गा रहा था—

होते हैं जो घमंडी,
उनका होता ऐसा हाल।
आज के दिन तो गदहे की,
खाऊं नोच-नोचकर खाल॥

— खद्दरज

यह घर है

जिसे राम ने बनाया था।
यह चूहा है।
जो उस घर में रहता था।
जिसे राम ने बनाया था।
यह पपी है।
जो उस पूसी पर झपटा था।
जो उस चूहे पर झपटी थी।
जो उस घर में रहता था।
जिसे राम ने बनाया था।
यह पूसी है।
जो चूहे पर झपटी थी।
चो उस घर में रहता था।
जिसे राम ने बनाया था।

— दयाकुमारी

वरदान दो

मर सकूं मैं देश-हित वरदान दो।
होऊं सदा मैं हिन्द में वरदान दो॥
हिन्द की जो गोद में पैदा हुआ हूं मैं,
तो मुझे उसके लिये अभिमान हो॥
हिन्द की आजादी को मैं ला सकूं।
इसकी गुलामी काटना ही शान हो॥
जन्मभूमि-भक्त होऊं मैं सदा।
दिल में मेरे देश का अरमान हो॥
होऊं शहीदे-वतन मैं इस हिन्द का।
हे प्रभु मेरी यही बस आन हो॥
'स्वाधीन' झंडा हिन्द का ऊंचा उड़े।
मां अब मुझे तुम भारती वरदान दो॥

— सुरेन्द्र कुमार भारतीय

उत्तर सोचो

एक टोकरी के अन्दर ३१२४ फूल आते हैं, एक शहर में जितने मंदिर हैं, उतने ही फूल हर मंदिर में चढ़ाने से पांच टोकरी फूलों की आवश्यकता होती है। बताओ शहर में कितने मंदिर हैं?

एक गड़रिये के पास ६४०० भेड़ें हैं, प्रतिवर्ष १०० पीछे १० भेड़ें बढ़ जाती हैं, तो तीन साल के अन्त में उसके पास कितनी भेड़ें हो जायेंगी?

एक लड़के की वर्तमान आयु उसके उसके पिता की दो तिहाई है। परन्तु बीस वर्ष पूर्व उसके पिता की आयु से दुगुनी थी, तो बताओ उन दोनों की वर्तमान आयु क्या है?

उत्तर — १२५ मंदिर ८४१८ या ८५१६१ भेड़ें ६०, ४० वर्ष।

— अज्ञात

हां, हंसना तो जरा

एक व्यक्ति ने अपने साथी से पूछा — 'क्यों भाई सरकार ने राशन कम क्यों कर दिया?'

'अनाज की कमी के कारण।'

'मेरे से सलाह लेते तो मैं एक सरल उपाय बता देता, जिससे राशन घटाने का प्रश्न ही नहीं उठाता।'

'उपाय बताओ तो?'

'समस्त पाचक चूर्णों और पेटेन्ट दवाओं की बिक्री सरकार बन्द कर देती।

— मनोहरलाल

× × ×

दो किसानों ने सोचा कि हम ईख शामिल होकर बोएं उन में से एक ने कहा कि मेरा लड़का तो ईख में से एक गन्ना तोड़ेगा। दूसरे ने कहा मेरा दो। पहिले ने कहा दो क्यों तोड़ेगा?

दूसरे ने कहा—अच्छा

बस इसी बात पर झगड़ा हो गया। यहां तक नौबत आई कि लाठी चली और दोनों सख्त घायल हुए। रिपोर्ट होने पर थानेदार आया। उसने पूछा कि किस बात पर लड़ाई हुई? उन्होंने कहा, ईख के ऊपर।

थानेदार ने कहा ईख कहां है दिखाओ?

किसानों ने कहा कि सरकार अभी तो बोई भी नहीं है

थानेदार — अबे बोई है नहीं और लड़ाई करली।

किसानों ने कहा तारीफ तो यही है।

× × ×

एक ड्राइवर ने सेठजी से कहा— सेठजी कार में पैट्रोल निबट गया है, इसलिये मौटर अब आगे नहीं जासकती।

सेठजी — अरे आगे नहीं जा सकती तो पीछे ही ले चलो।

× × ×

सुरेश — मित्र इंगलिश भाषा बहुत बुरी है।

दीनेश — कैसे!

सुरेश — खाने को कहते हैं ईट और जीतने को कहते हैं कन्कर

— गेंदालाल

× × ×

एक मुसाफिर सड़क पर जा रहा था, रास्ते में उसने एक दूसरे मनुष्य से पूछा, जो उसी सड़क पर से गुजर रहा था।

मुसाफिर! — भाई यह सड़क किधर को जाती है।

मनुष्य! (मुसाफिर से) भाई सड़क ने किधर को जाना है? यह तो यहीं रहती है।

× × ×

प्रेम — पिताजी, आपके लिये मैं एक शुभ-समाचार लाया हूं।

पिताजी — (चकित होकर प्रेम से गोद में लेकिर —) बेटा क्या?

प्रेम — आपको मेरे लिये नई पुस्तकें लाने की आवश्यकता नहीं। कारण कि मैं फिर उसी श्रेणी में हूं और पुस्तकें वही पढ़ूंगा।

— ज्योति

× × ×

प्रश्न-पहेली

साढ़े चार अक्षर का मेरा नाम,
आदि अन्त में 'द' आता काम।
पहले दो से मैं बना दया,
अन्तिम से मैं गोपाल — पिता।
ऋषि हूं भारत का मशहूर,
रहता हूं इस दुनियां से दूर।
(दयानन्द)

— वीरेन्द्र प्रताप

रंग बिरंगी हूं पर फूल नहीं
पेड़ पर चढ़ता पर बन्दर नहीं
लम्बा है पर रस्सा नहीं
काटता है पर कुत्ता नहीं
(सांप)

— किरीट चन्द्र

आसमान में रस्सी बांधी,
उस पर नाचे नारी।
उड़ते जीव पकड़ कर मारे,
वह नारी हत्यारी।
(मकड़ी)

— राजेन्द्र

काली कुतिया, धोली पूंछ,
बता तो बता, नहीं मां से पूछ।
(सुई)

— प्रभाकुमारी

क्या आप जानते हैं?

(१) भारत में लगभग १५ करोड़ एकड़ भूमि बेकार पड़ी है।

(२) भारत में लगभग ७५ फी सदी मनुष्य खेती करते हैं।

(३) भारत में मवेशियों की संख्या संसार के मवेशियों से लगभग एक तिहाई है।

(४) इटली के प्रसिद्ध वैज्ञानिक मारकोनी ने ही रेडियो का अविष्कार किया था।

(५) भारत की आबादी दुनियां की आबादी से ½ है।

(६) एडीसन ने ही फिल्म जगत का निर्माण किया था।

— ज्योतिप्रकाश

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

"पहले घर में तो पूछ लूं"

[पृष्ठ २ का शेष]

फिरना सभी उनके 'हाई कमांड' के अनुसार होना चाहिए। तभी तो यह बात है कि यदि कभी भी मित्र से सिनेमा चलने को कहा, तो उसका पहला प्रश्न यही होता है कि पहले घर में तो पूछ लूं। और मजे की बात तो यह है कि इस निरंकुश शासन के आदी पतियों को भी इस गुलामी में मजा आने लगता है।

बीबियां अपनी शक्ति का प्रयोग दो प्रकार से करती हैं। कुछ तो गांधीजी की भेड़ बकरियों की तरह अहिंसक होती हैं। उनका सबसे बड़ा हथियार आंसू रूपी सत्याग्रह है। और एक मित्र हैं कि पत्नी की आंखों में आंसू देखे कि चांदी की कटोरी लिये तैयार रहते हैं, लेकिन कुछ बीबियां इस हथियार की सार्थकता में अब सन्देह करने लग गईं, क्योंकि जिन्ना के नक्षत्र में पैदा हुई कुछ बीबियां ऐसी भी होती हैं जो बेलन, झाड़ू अन्यथा कर्कश वाणी का प्रयोग खूब जानती हैं। ऐसी बीबियां ऐटम बम की तरह खतरनाक विस्फोटक एवं घातक होती हैं।

पर इसकी चर्चा का अर्थ है कि ऐसी देवियों के घरों में मेरा प्रवेश बिलकुल बन्द हो जाय, इसलिये इसकी अधिक चर्चा नहीं करूंगा।

ठगी भी एक कला है

(पृष्ठ १७ का शेष)

लिये जाता है। पहले ने कहा यह मेरा है। दोनों झगड़ा करने लगे। भारी भीड़ एकत्र हो गई और पुलिस भी आई। दरोगा आया। दरोगा हाल सुना सुन कर वह बड़े अचम्भे में पड़ा कि ट्रंक किसका है। उसने दोनों से चाबी पूछी। भला उन के पास चाबी कहां से आती। चोरी का माल जो था। दोनों ने कहा कि खो गई। इससे दरोगा को चोरी का सन्देह हुआ। पर उसने फिर पूछा कि ट्रंक में क्या क्या माल है। वे भला क्या बताते, पर मरता क्या न करता? दोनों ने बताया। एक ने कहा कपड़े थे। दूसरे ने कहा जेवर। अन्त में ट्रंक खोला गया। लोग भय के मारे पीछे हट गए। उसमें एक मुर्दा निकला। दोनों ठगों को १४-१४ वर्ष का काला पानी मिला। दुब्बेजी चौबे होने गए थे, पर हो गए छब्बेजी।

अर्जुन के पाठकों को और भी किस्से मालूम होंगे। आशा है कि वह इस प्रकार के किस्से अर्जुन में प्रकाशित करवाएंगे।

मासिक रुकावट

बन्द मासिक धर्म रजोलीना दवाई के उपयोगसे बिना तकलीफ शुरू हो नियमित आता है, ऋतुकी फर्याद दूर होती है। यह दवा गर्भवती को उपयोग न करावें कीमत रु० ४), तुरन्त फायदे के लिए तेज दवाई कीमत रु० ६) पोस्टज अलावा। गर्भाकुश—दवा के सेवन से हमेशा के लिए गर्भ नहीं रहता, गर्भ निरोध होता है, मासिकधर्म नियमित होगा, विश्वसनीय और हानि रहित है। की० ४) पो० अलावा

पता:—दुग्धानुपान फार्मेसी जामनगर ५, देहली एजेण्ट—जमनादास कं० चाँदनीचौक अजमेर—मेहता बदर्स नयाबाजार

सन्तोषजनक रीति से कपड़े धोने के लिये

काका ब्राण्ड साबुन

★ लम्बा ★ जुड़वां तथा
★ टिकियां ★ चूरा

कारपोरेटेड इण्डस्ट्रीज

प्रो० जे. भूपेन्द्र एण्ड कं०

तारदेव, ट्राम जंकशन भादरण भुवन, बम्बई ८।

बहनजी !

अभिमान करने योग्य ही चीज है यह। त्वचा की कांति—सौन्दर्य बढ़ाकर उसकी निरोगिता को रखने के लिए

एक्ला टॉयलेट स्नो

यह एक अद्वितीय साधन है शरीर की त्वचा में प्रवेश कर उसे सुस्वस्थ तथा सुन्दर बनाये रखने वाले प्रसाधन विशेषों में "एक्ला स्नो" अपना सानी नहीं रखता। इसके लिये तो जहां देखो वहां, वही वह नजर आता है।

★ ★

नोव्हा कम्पनी, माहिम, मुंबई

विजय पुस्तक-भंडार

देहली की

जीवनदायिनी सामयिक पुस्तकें

१—जीवन चरित्र —

श्री सुभाषचन्द्र बोस की जीवनी

(सम्पादक—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति)
(लेखक—श्री रमेशचंद्र आर्य)

यह कांग्रेस के भूतपूर्व राष्ट्रपति का प्रामाणिक और पूरा जीवन-चरित्र है। ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। पुस्तक के अंत में श्री सुभाष बाबू के विचारों का संग्रह भी है। मूल्य ॥=) डाक व्यय ।-)

पं. जवाहरलाल नेहरू की जीवनी

[तृतीय संस्करण]

(ले०— पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति)

इस पुस्तक में इन प्रश्नों का उत्तर मिलेगा : —

पं० जवाहरलाल जी क्या हैं?
वह जो कुछ भी हैं, वह कैसे बने?
वह क्या चाहते और क्या करते हैं?

इन प्रश्नों के उत्तर में भारत के इस महापुरुष का सारा चरित्र आजाता है। भाषा, लेख शैली और भाव के विषय में कुछ लिखना अनावश्यक है। इतना ही बताना पर्याप्त है कि इसमें लेखक की सब विशेषतायें विद्यमान हैं। और १९४५ तक की पं० जी के जीवन की प्रायः सारी ही घटनाओं का वर्णन आगया है।

मूल्य केवल १।) डाक व्यय ।=)

२—राजनैतिक साहित्य—

जीवन संग्राम—ले० श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति मूल्य १)

आनुपातिक प्रतिनिधित्व (Single Transferable Vote) (निर्वाचन सम्बंधी नियम) ले० श्री पं० महावीर जी त्यागी मूल्य ।)

वर्तमान राष्ट्रपति

मौलाना अबुलकलाम आजाद

यह वर्तमान राष्ट्रपति श्री मौलाना अबुलकलाम आजाद की जीवनी है जिसे श्री रमेशचन्द्र जी आर्य स्वर्गवासी ने बड़े परिश्रम के साथ लिखा है। इसके पढ़ने से यह भली भांति प्रकट होजाता है कि मौलाना साहब की राष्ट्रीयता दूध की तरह स्वच्छ है और वह अपने मार्ग पर दृढ़ चट्टान की तरह अटल हैं। मूल्य ॥=) डाक व्यय ।-)

महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र

ले०—श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति

महर्षि का यह जीवन चरित्र अपने ढङ्ग का पहिला है सब उपलब्ध सामग्री के आधार पर ऐतिहासिक तथा प्रामाणिक शैली पर ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। सत्यार्थ प्रकाश के महत्व पर विशेष प्रकाश डाला गया है।

मूल्य केवल १।) डाक व्यय ।=)

"मैं भूल न सकूं"

[सम्पादक श्री जयंत]

श्रीयुत श्रीनाथसिंह जी, श्री वात्स्यायन 'अज्ञेय' श्री काका कालेलकर जी, कवि सम्राट् श्री अयोध्यासिंह जी उपाध्याय 'हरिऔध' श्री रत्नकुमारी जी माथुर, श्रीमती होमवती जी, श्री विष्णुप्रभाकर जी, श्रीयुत देवीदत्त जी शुक्ल तथा श्री पहाड़ी आदि प्रसिद्ध साहित्यिकों उपन्यास और कहानी लेखकों की शिक्षाप्रद सच्ची कहानियों का संग्रह। प्रत्येक कहानी ऐसी है जिसे एकबार पढ़कर भूलना कठिन है। मूल्य केवल १) डाक व्यय ।-)

सात भावपूर्ण एकाँकी नाटकों का संग्रह

"एकांकिका"

ले० चन्द्रकिशोर जैन बी० ए०

यदि आप विचारों में संदेशपूर्ण, पढ़ने में कहानी की तरह दिलचस्प, भावों के घात-प्रतिघात से पूर्ण, जीवन की ज्वाला और ज्योति से भरपूर, विवाह व्योहारों उत्सवों पर खेलने और कला पूर्ण उपहार देने के लिये मनोवैज्ञानिक, सरल और ओजस्वी एकांकी नाटक चाहते हैं तो आज ही "एकांकिका" की प्रति मंगाइये। मूल्य २) डाक व्यय ।=)।

विजय पुस्तक भण्डार (वीर अर्जुन कार्यालय के ऊपर) श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

उत्तर भारत के सर्वश्रेष्ठ पत्र

वीर अर्जुन

— का —

आजाद हिन्द विशेषांक

अप्रैल १९४६ के द्वितीय सप्ताह में वैशाख संक्रान्ति के अवसर पर अपूर्व तैयारियों के साथ प्रकाशित हो रहा है।

इस अङ्क में हम हिन्दी पाठकों को स्वाधीनता के सम्बन्ध में एक ठोस, उपयोगी और मनोरंजक सामग्री प्रदान करेंगे। आजाद हिन्द विशेषाङ्क में निम्न लिखित विषयों पर प्रामाणिक और सुन्दर लेख, कविताएं एवं अनेक रंगीन चित्र व कारटून आदि का समावेश रहेगा।

१९४२ के स्वातन्त्र्य युद्ध की कहानी
भारत के विविध राजनैतिक दल और स्वाधीनता संग्राम
मुस्लिम लीग और साम्प्रदायिक समस्या
रूस, ब्रिटेन और अमरीका का संघर्ष
आजाद हिन्द फौज
राष्ट्रीय स्वातन्त्र्य-युद्ध
गांधीवाद और स्वातन्त्र्य संग्राम
स्वातन्त्र्य यज्ञ के अमर शहीद
विविध देशों के स्वातन्त्र्य-आन्दोलनों पर एक दृष्टि
स्त्रियों का स्वातन्त्र्य-युद्ध में भाग
राजनीति में हिंसा का स्थान
भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम के सेनानी

एजेन्टों के वर्तमान आर्डरों को देखते हुए यह कहना कठिन है कि हम इसकी मांग को पूरा कर सकेंगे या नहीं!

विज्ञापनदाताओं के लिए यह अलभ्य अवसर है। विज्ञापन के लिए स्थान हमारे पास सीमित है। अतः उन्हें पेशगी छपाई सहित अपने आर्डर शीघ्रतम भेजकर अपना स्थान शीघ्र रिजर्व करा लेना चाहिए। विशेषांक २०×३० ४ पेजी साइज के लगभग १०० पेज का रहेगा। इसका मूल्य होगा केवल १) रुपया। विज्ञापन दर आदि एवं अन्य जानकारी के लिए लिखिए—

जनरल मैनेजर—
वीर अर्जुन, दिल्ली।

श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि०

अधिकृत पूंजी — १०००००) रु०
(दस-दस रुपये के हिस्सों में)
अदाशुदा पूंजी — ५१०७० रु०
डिवीडेन्ड सन् १९४४ — १० रु० सैकड़ा
डिवीडेन्ड सन् १९४५ — १० रु० सैकड़ा

थोड़े से और हिस्से बिक्री के लिए निकाले गए हैं। एक हिस्सा केवल १०) का है। ५) प्रार्थना पत्र के साथ और ५) प्रार्थना पत्र स्वीकार होने पर देने होंगे।

आप भी—
('वीर अर्जुन' समाचार पत्र की स्वामी संस्था)
श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० देहली
के हिस्सेदार बनिए।
शेयरों के लिए आवेदन पत्र हम से मंगालें।

मैनेजिंग डाइरेक्टर—
श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि०, श्रद्धानन्द बाजार, देहली

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

रजि० नं० एल० ४६००

युद्ध--चित्रावली

परमाणु-बम के विस्फोटन के बाद रेडियो-सक्रियता को मापते हुए

रैडार द्वारा नियन्त्रित सर्च लाइट

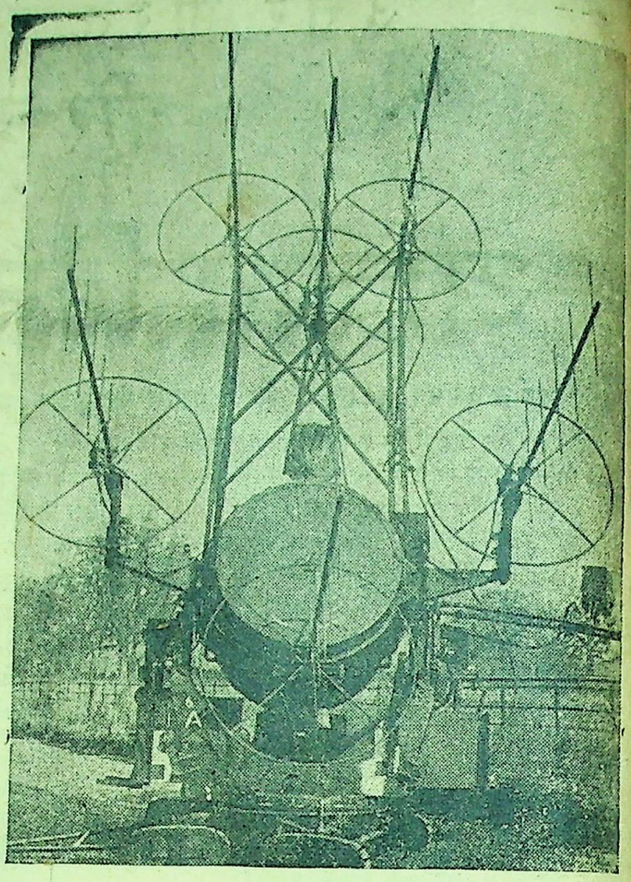

रैडार द्वारा शत्रु वायुयानों के आगमन की सूचना मिलते ही सारे आकाशमण्डल को प्रकाश से प्रकाशित कर देते हैं।

बच्चों को वैज्ञानिक शिक्षण देते हुए।

श्री पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिये 'अर्जुन प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली से छापकर प्रकाशित किया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

वीर अर्जुन

साप्ताहिक

ILLUSTRATED VIR ARJUN WEEKLY

वर्ष १२] दिल्ली, सोमवार १४ आश्विन सम्वत् २००३, DELHI, 30th September 1946. [अङ्क २६]

प्रतिकालय
कांग्रेस

राष्ट्रदेव चिरायु हों

[विराज]

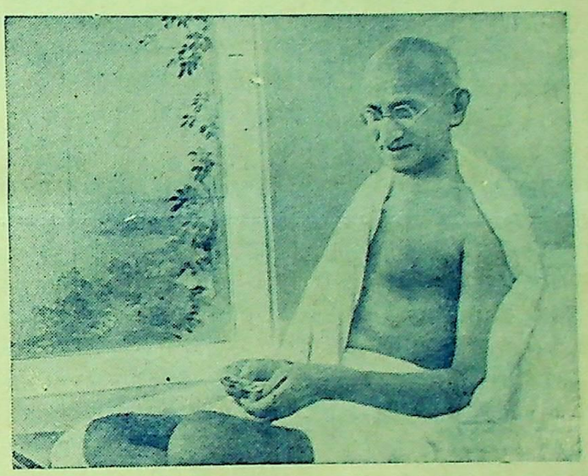

जुग जुग जलती यह जोत रहे!
तूफान प्रकम्पित है सागर;
भीषण भवरें हैं पग पग पर;
हैं प्रलयङ्कर ऊंची लहरें;
यह युग युग की नौका जर्जर;
प्रतिकूल प्रचण्ड पवन चलता;
हैं चट्टानें जल के अन्दर;
हैं जूझ रहे जल से मांझी;
हो श्याम उठा है पर अम्बर,
हो उठीं दिशाएं सब काली।
इन धुंधली किरणों को लखकर—
जैसे तैसे वांछित पथ पर—
बढ़ता जन-जीवन पोत रहे!
जुग जुग जलती यह जोत रहे!

झरता यह करुणा स्रोत रहे!
उत्तप्त मरुस्थल यह निर्जन;
रवि है अविराम अनल वर्षण
करता रहता; जल जल उठते
हैं पीड़ा से मिट्टी के कन;
कोमल लतिकाएं झुलस चलीं,
है सूख रहा शाद्वल-उपवन;
कर रहे निरन्तर श्रम माली
विकसित हों कुछ अनमोल सुमन;
प्रतिशोध, द्वेष ले लू चलती;
करने को उसका ताप हरण—
इसके शीतल रस का कन कन—
जनमन में ओतप्रोत रहें!
झरता यह करुणा स्रोत रहे!!

वार्षिक मूल्य ८) सम्पादक— रामगोपाल विद्यालङ्कार एक प्रति का मूल्य ≈)
छः मास का ४) इन्द्रचन्द्र विद्यालङ्कार

CCO. Gurukul Kangri Coll

संसार की सबसे अधिक दुःखी स्त्री

[लेखिका--हेलोन मौस्सिरकी]

[पाठक इस लेख में संसार की सब से अधिक दुःखी स्त्री का हाल पढ़ें और अपने घरों की ओर दृष्टि डालें। देखें कि क्या भारतीय नारी के विषय में भी यह सत्य नहीं है ? -- सम्पादक]

तीन वर्ष तक मेरे पति जापान में पोलिश मिनिस्टर बन कर रहे। इस काल में मैंने जापानी औरतों को समझने का प्रयत्न किया। उड़ती हुई रंग बिरंगी तितलियों की तरह अपनी चमकीली किमोनो की पोशाक पहने हुए ये सुन्दर और दिल को लुभानेवाली औरतें हमेशा प्रसन्न प्रतीत होती थीं। चाहे कोई सुन्दर फूल हो और चाहे कोई भयंकर दुर्घटना हो – वे प्रत्येक वस्तु के बारे में एक जैसी मधुर मुस्कराहट से बातचीत किया करती थीं। मैंने सोचा कि क्या कभी यह सम्भव हो सकता है कि इन्हें किसी प्रकार का कोई कष्ट हो ही न !

धीरे-धीरे मैं यह जानने लगी कि इनकी मुस्कराहट के पीछे हृदय के समस्त भावों की शृङ्खला छिपी हुई है। मैंने शीघ्र ही यह पहचान लिया कि जापानी स्त्री के लिये– जो कि संसार के सबसे अधिक दुःखी प्राणियों में से एक है– सबसे बड़ा गुण यही है कि वह प्रत्येक दुःख और प्रत्येक कष्ट को मुस्कराहट के साथ सहन कर सके।

जीवन के प्रारम्भिक क्षणों से ही जापानी लड़की को इस उज्ज्वल और शृंगारिक बाह्य प्रसन्नता का अभ्यास करवाया जाता है। बचपन के आदि से ही उसे पुरुषों की रुचि के अनुसार झुकना सीखना पड़ता है, क्योंकि वह पुरुष के लिये एक दासी या खेलने का सुन्दर खिलौना समझी जाती है। उसके हाथ की या उसके मस्तिष्क की एक-एक क्रिया बनावटी और कृत्रिम होती है। किंतु यह सब कुछ उसको अपने जीवन के इतने आदिम काल में सीखना होता है कि यह उसका दूसरा स्वभाव ही बन जाता है। मैंने पांच साल की छोटी-छोटी लड़कियों को इस विषय में इतना अधिक सुनिपुण देखा है कि यह भान ही नहीं होता कि इस चिर-साध्य कला को सीखने में उन्हें कुछ समय भी लगा होगा।

जापानी पुरुष यह तो चाहते हैं कि उनकी पत्नी अपने घरेलू कर्तव्यों का, शिष्टाचार का, फूल को सजाने और सुन्दर व्यवहार का ज्ञान प्राप्त करे, पर वे यह कभी नहीं चाहते कि वह बुद्धिमान बने। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि वे यह चाहते हैं कि बिना किसी चूंचरा के उनकी आज्ञा का पालन किया जावे। इसलिये लड़की की सारी शिक्षा का उसके मन पर यह असर पड़ता है कि वह पुरुष से हीन है और पुरुष की जायदाद का एक ऐसा हिस्सा है जिस पर उसका अपना भी कोई अधिकार नहीं।

जब उसकी शादी होती है— और जब तक वह एक गेशा (नर्तकी) न बन जाए तब तक विवाह ही एकमात्र ऐसा जीवन है जबकि है– जबकि कानून की दृष्टि में स्त्री को कोई स्थिति प्राप्त होती है। वह अपने पति को तलाक नहीं दे सकती, और वह उसको चाहे जब तलाक दे सकता है और उसके अपने परिवार में वापिस भेज सकता है। 'स्त्री को त्याग देना' एक कानूनी मुहावरा बना हुआ है। यदि वह 'त्याग दी' गई है, क्योंकि वय निस्सन्तान है— जो कि तलाक के अधिकांश कारणों में से अन्यतम है– तो वह समाज से बहिष्कृत समझी जाती है। दोष सदा उसी के मत्थे मढ़ा जाता है। वैज्ञानिक परीक्षा के द्वारा पति की नपुंसकता की बात का तो कोई स्वप्न भी नहीं ले सकता।

चाहे अमीर हो, चाहे गरीब, जापानी स्त्री सदैव एक दासी ही है। प्रातः काल सबसे पहले उसे उठना पड़ता है और रात को सबसे अन्त में सोना पड़ता है। जब उसका पति किसी पार्टी से विलम्ब करके घर पहुंचता है तो वह घर की देहली पर नम्रतासे घुटने टेक कर और उसका स्वागत करके अपने आपको उपकृत समझती है। उसके मुख पर कभी अप्रसन्नता का भाव दिखना तक न चाहिये। बड़े से बड़े अमीरों के घर में भी पत्नी अपने हाथ से अपने पति को प्रातराश परोसती है और स्नान करते समय उसकी मालिश करती है। सर्दियों में जापान के फर्श बिल्कुल बर्फ जैसे ठण्डे होते हैं, परन्तु पति की उपस्थिति में वह गद्दे पर नहीं बैठ सकती। जब वह पति के साथ कहीं सैर करने जा रही हो तो सामान के बण्डल उठाये, अपने और अपने पति के बीच में कुछ व्यवधान रख कर, उसे पीछे-पीछे चलना होता है।

अपने पर्वतीय भ्रमण में इस सम्बन्ध की मैंने एक घटना देखी : हम सबके सब यूरोपियन थे और एक जापानी पति पत्नी का जोड़ा था। सर्दी बड़ी कड़ाके की पड़ रही थी। मेरे पति ने मुझको अपने कोट में लपेट लिया। औरों ने भी ऐसा ही किया। परन्तु जापानी पति ने सर्दी के मारे कांपती हुई अपनी पत्नि की रत्ती भर भी परवाह नहीं की। पत्नी ने अपने कन्धों से अपना शाल उतार कर अपने पति की गर्दन के चारों तरफ डाल दिया पर पति ने उसको 'धन्यवाद' का एक शब्द तक भी नहीं कहा।

जापानी स्त्री को अपने बच्चों से भी पूरा आनन्द प्राप्त करने में बाधा होती है, क्योंकि कानून के अनुसार उन बच्चों पर अधिकार उसके पति का है। राजदूत कुरुसु, जो वर्तमान युद्ध के शुरू होने पर वाशिंगटन में विशेष रूप से नियुक्त होकर आये थे, एक बार मुझसे कहने लगे— 'कि मेरी १२वीं वर्षगांठ पर मेरी मां ने मुझे सर्वोत्तम किमोनो पहनाया और एक छोटी सी वेदी के पास मुझे ले गई।'

'और कहने लगी– 'आज तक मैंने तुम्हारी रक्षा की है और तुम्हारे चरण-चिन्हों का पथ-प्रदर्शन किया है। अब तुम १२ वर्ष के हो गये हो। अब तुम्हें अपनी चिन्ता अपने आप करनी चाहिये। तुम जानते हो कि तुम्हारा अपने देश के प्रति, अपने परिवार के प्रति और अपने प्रति क्या कर्तव्य है। यदि इनमें से किसी एक की भी तुमने अवहेलना की तो तुम यह भी जानते हो कि उस समय तुम्हें क्या करना चाहिये।" इन शब्दों के साथ वह नीचे झुकी और मेरे सामने तश्तरी में हाराकिरी (जापानी आत्महत्या) का खंजर पेश किया।'

कुरुसु ने कहानी बड़े श्रद्धाभाव से सुनाई और इससे पढ़ने वाले प्रभाव से वे बिल्कुल अनभिज्ञ रहे। बारह साल तक ही जापानी माता को अपने बच्चे का पालन करने की आज्ञा है। जिस क्षण से बच्चा परिपक्वता की ओर जाने लगता है, उसी क्षण से माता की कोई आवश्यकता नहीं समझी जाती। किसी स्त्री का आदर करने, उसका कोट या बैग पकड़ने, या बैग पकड़ने, या उसके सामने थोड़ा-सा शिष्टता का प्रदर्शन करने से उसकी मनुष्यता की शान को धक्का लगता है। एक बार एक जापानी जैण्टिलमैन ने एक दुभाषिये के द्वारा मेरे प्रति कुछ सम्मान प्रदर्शित करने का प्रयत्न किया। इस पर उस दुभाषिये ने अपना मुंह इस तरह छिपा लिया जैसे कि उसे प्राणांतक वेदना हो रही हो। अन्त में किसी तरह इससे मुक्ति पाने का रास्ता तो उसने निकाल लिया परन्तु अपने मालिक के इस अनुचित व्यवहार के प्रति अपनी असहमति प्रकाशित करने से वह न रह सका।

जापानियों की दुनियां मनुष्य के साथ इतनी अधिक पूर्णरूपेण सम्बद्ध है कि उसमें सेवा करने के और बच्चे पैदा करने के सिवाय स्त्री का कोई स्थान है ही नहीं। प्रसूति के समय भी शिष्टाचार का यही तकाजा है कि वह कोई अशोभन व्यवहार न कर सके और न ही मुंह से किसी प्रकार की कोई ध्वनि निकाल सके।

केवल एक स्त्री है जिसको कि कुछ स्वतन्त्रता प्राप्त होसकती है—और वह है नर्तकी। जापानियों की यह एक पुरानी प्रथा है कि वे किसी नर्तकी या रखैल को अपने घर में रख लिया करते हैं। कई बार तो एकदम विवाहोपरान्त ही किसी स्त्री को रखैल बना कर घर में डाल लेते हैं। उसको अपना साथी बनाते हैं, और व्यापार के विषय में वादविवाद करते उससे सम्मति लेते हैं और उसको इस प्रकार की मित्रता की भी आज्ञा देते हैं जिससे कि उनकी पत्नी प्रायः वंचित रहती है। बहुत समय नहीं बीता कि घर के एक पार्श्व में इस तरह की वेश्या रहा करती थी और दूसरे पार्श्व में पत्नी। आजकल नर्तकियां इतने खुलेआम नहीं रखी जातीं किंतु पत्नी को उसका अस्तित्व स्वीकार करना पड़ता है और उसके बच्चों का पालन करने के लिये बाधित होना पड़ता है।

जो जापानी स्त्री कहीं बाहर विदेश में रहती है वह सौभाग्यशाली है, क्योंकि वहां उसके पति को कुछ न कुछ स्वतन्त्रता देनी ही पड़ती है। वह शीघ्र ही उस जीवन की आदी हो जाती है, पर जब उसे पुनः जापानी ढंग का जीवन स्वीकार करना पड़ता है तो बिचारी बड़ी तंग और परेशान होती है।

टोकियो में उच्च पद की एक ऐसी स्त्री से मेरा परिचय था, जो दस साल विदेश में रह कर फिर जापान लौटी थी। वह मुझसे प्रायः इतर-जापानियों की तरह गम्भीरता से बातचीत किया करती थी।

वह मुझसे कहा करती थी कि अपने सम्बन्धियों के बजाय आपके अधिक निकट हूं। मैं इस जीवन को सहन नहीं कर सकती। जो कुछ मैं मन में सोचती हूं उसे मुंह पर नहीं ला सकती।

[शेष पृष्ठ २३ पर]

जानने योग्य

(१) आईने या दर्पण को कभी धूप में न रक्खो; वह धुंधला हो जायगा और उसकी कलई निकल जायगी।

(२) चाकू, कैंची, उस्तरा, ब्लेड वगैरा को कभी गरम न करो, न गरम पानी में दो; उनका पानी उतर जायगा।

(३) कपड़ों को हमेशा धूप में सुखाने के बजाय, छांह में सुखाना अच्छा है। उनका कस बना रहेगा।

(४) जूतों को पानी में गलाना न करो; चमड़ा सड़ जायगा।

(५) साबुन अगर गीला और पिलपिला हो तो उसे कभी धूप में न सुखाओ; इससे साबुन के अन्दर का तेल किरकिरा हो जायगा। साबुन को हमेशा छांह में सुखाओ।

(६) पीने के पानी या खाने की चीजों को कभी खुला न रक्खो। हवा में उड़ने वाले रजकण, कंडे-मकोड़े और मक्खियां उन्हें गन्दा कर देंगी।

(७) फोटू, तसवीर या कोई भी रङ्गीन चीज धूप में न रक्खो, उनका तेज व रङ्ग उड़ जायगा। -- विनोद

अ० भा० कां० कमेटी के कुछ दृश्य

राष्ट्रनेता मंच पर परस्पर विचारमग्न बैठे हैं।

राष्ट्रपति पं० नेहरू का महिला स्वयंसेविकाओं द्वारा स्वागत

कांग्रेस स्वयंसेवकों का एक दल

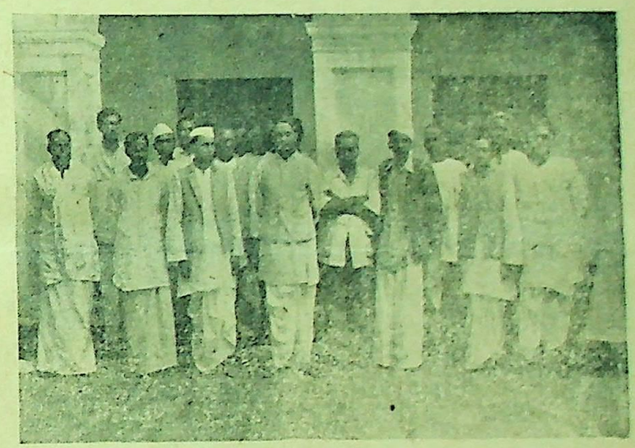

कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के प्रमुख कार्यकर्ता

श्री स्टालिन ने बताया है कि निकट भविष्य में युद्ध की कोई संभावना नहीं है।

मौ० आजाद संभवतः भारत सरकार की ओर से मध्यपूर्व जाने वाले प्रतिनिधिमण्डल के अध्यक्ष होंगे।

डा मुंजे हिन्दू महासभा के स्थानापन्न सभापति नियत किये गये हैं।

CCO, Gurukul Kangri Coll

सत्य और अहिंसा के प्रतीक गांधी

[ले० — श्री सत्यरंजन मुखर्जी]

२ अक्टूबर १८६९ भारत के ही नहीं, विश्व के इतिहास में अपना अनुपम महत्व रखता है। यह वह दिन था, जिस दिन भारत का नहीं विश्व का महात्मा भासित एवं शोक ग्रस्त मानवता को शांति और मुक्ति का पाठ पढ़ाने उतरा। उसने भारत की दासता की उन जंजीरों को ढीला किया जो ब्रिटिश साम्राज्यवाद द्वारा सदा के लिए कस दी गई थी। इनको ढीला बनाने के लिये उसने सैनिक सहाय्य नहीं प्राप्त किया किंतु उसका आत्मबल ही हजारों शस्त्रास्त्र-सज्जित सेनाओं से अधिक बलशाली है, जिसके सहारे वह विद्युत गति के साथ इस गुरुतर कार्य को पूर्ण बना सका। वह महात्मा ही है, जिसने अपने अमर संदेश द्वारा हमें अपनी पराधीनता की अनुभूति करायी। हजारों नहीं लाखों शुष्क चेहरों से रक्ताभा छलक पड़ी। विश्व के कोने-कोने में जहां कहीं भी भारतीय थे वहाँ सर्वत्र ही उसने अपना यह अमर संदेश पहुंचाया कि तुम पराधीन देश के अधिवासियों में से हो। उसकी वाणी में ऐसा ओज था जिसने प्रत्येक भारतीय के उर में अपनी दासता के प्रति घृणा के भाव भर दिये, एक समय से सोया हुआ भारतीय हृदय जागृत हो उठा और अपनी दासता के बंधनों को दृढ़ता से जकड़ा हुआ देख मुक्ति पाने के लिए तिलमिला उठा। आज भारत जैसा विशाल देश अपने इसी महात्मा से नूतन स्फूर्ति प्राप्त कर बड़ी सजधज से विश्व के रंगमंच पर आ डटा है। आज भारत के इसी महात्मा के मुखारविन्द से निकलने वाले एक-एक शब्द को हृदयंगम करने के लिए समस्त संसार स्तब्ध-सा खड़ा प्रतीत होता है।

हाई स्कूल की परीक्षा पास कर महात्मा गांधी बैरिस्टरी के लिये इंगलैंड गये। इंगलैंड जाते समय इनकी माता ने इनसे तीन प्रतिज्ञायें करवायीं— १. शराब न पीना, २. मांस न खाना तथा ३. परस्त्री को माता समझना। गांधीजी की सत्यनिष्ठा तथा गुरुजन आज्ञा पालन का इस बात से पता चलता है कि वहां इन्होंने तीनों बातों का पालन किया।

१८९३ में वह एक दीवानी के मुकदमे के सिलसिले में दक्षिणी अफ्रीका गये। संत जन वैसे भी कोमल चित्त होते हैं। वहां के भारतीयों के अपमानपूर्ण जीवन ने इनके कोमलहृदय में एक गहरी ठेस दी। उन्हें स्वयं ही जातिगत अपमानों का शिकार होना पड़ा। आपने अकाट्य अस्त्र तो तब पाया, जब कि आपका वहां भीषण अपमान हुआ।

वर्तमान युग कूटनीति, हिंसा और युद्धों का युग है। किन्तु भारत के इस मनस्वी महात्मा ने अपनी सत्याग्रह रूपी ढाल द्वारा इन तमाम विनाशक नीतियों और शस्त्रास्त्रों को नाकामयाब सिद्ध कर दिया है। उन्होंने युद्ध की एक नैतिक समानता पा ली है। आपने अपनी इस नैतिकता को संगठित कर शक्ति संपन्न बना ऊपर उठाया है।

डाँडी कूच

१२ मार्च १९३० का स्वर्णिम प्रभात था जबकि भारत के इस सरताज ने डांडी कूच किया। सारा विश्व चित्र लिखित-सा खड़ा देख रहा था। उसे आश्चर्य हो रहा था कि क्या नमक कर हटाने भर के लिये किया जाने वाला महात्मा का वह प्रयास शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य की कमर तोड़ सकेगा? स्वयं महात्माजी के अनुयायियों को भी भविष्य का पता न था। वे सब के सब मन्त्रमुग्ध से हो इस महापुरुष के संकेत पर, भविष्य से अपरिचित किसी अज्ञात दिशा की ओर खींचे चले जा रहे थे। वे सब के सब खाली हाथ थे। उनके साथ न तो सेना थी और न शस्त्र, न गोलियां थीं और न मशीनगनें, यदि कुछ था तो महात्मा द्वारा भरा हुआ साहस, अतुल विश्वास तथा कर्तव्य परायणता। उन्होंने अपने इस अहिंसात्मक युद्ध को सफल बनाने के लिए मोर्चे नहीं खोदे थे और न बनायी खाइयाँ; किन्तु रेणुकामय भूमि में सबसे आगे बैठा था उनका नेता एक वस्त्रधारी, नग्नपद, कृशगात किन्तु दैवी शक्ति सम्पन्न, पैसे पर पैर रखे हुए, बकरी के दुग्ध तथा फलाहार पर निर्भर एवं परमशक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्यवाद के भव्य-भवन को ढहाने के लिये कृत संकल्प महात्मा।

सारा सभ्य संसार नतमस्तक हो उसके समक्ष वंदना कर रहा था, किन्तु उसने तो प्रथम से ही 'सुखदुःख समंकृत्वा, लाभालाभौ जयाजयौ' के अमर संदेश से अपने रोम-रोम को भर लिया था। भारत का यह महात्मा जहां कहीं भी गया, यश और विभूति उसके पीछे-पीछे दौड़ी। मानवता उसकी सीखों और उच्च विचारों की आभारी बन बैठी। उनकी हरेक मुसकान कुलिश को भी कुसुम बना देने की क्षमता रखती है। उनकी बातचीत का एक-एक शब्द उनके हृदय के अंतस्तल से निकला हुआ, एकदम शुद्ध तथा कृत्रिमता विहीन होता है। वह विश्व से नहीं मिले, किन्तु विश्व को अपने में मिला लिया। यही कारण है कि कांग्रेस से अलग होने पर भी कांग्रेस उन्हीं के निर्दिष्ट मार्ग का अनुसरण करती है।

महात्माजी के सिद्धांतों का प्रमुख अंग लक्ष्य तक पहुंचने का मार्ग एवं अंत है। जहां तक लक्ष्य का सम्बन्ध है, वह कृतसंकल्प हैं कि वहां तक पहुंचने के लिए जो भी मार्ग हो, सीधा हो ताकि प्रत्येक दूरदर्शी पथिक अपने अंत को साफ-साफ देख सके और साहस के साथ बढ़ सके। यदि भारत को आज अहिंसात्मक प्रयोगों द्वारा आजादी मिलती हो तो उनका एकमात्र उत्तर यही होगा कि मैं ऐसी आजादी का एक छोटे-से-छोटा टुकड़ा लेने को तैयार नहीं। इसका अर्थ यह हुआ कि अपने अन्त को शीघ्र ही प्राप्त कर लेने के लिये वह अपने निर्धारित मार्ग से विचलित होने को तैयार नहीं। अंत तक पहुंचने का जरिया भी उनके लिये उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि स्वयं अंत।

दरिद्रनारायण की सेवा

महात्माजी के कार्यों का एक अन्य प्रमुख अङ्ग भी सर्वथा भुला देने के योग्य नहीं। गोलमेज परिषद् लन्दन में उन्होंने ओज भरे शब्दों में कहा था — 'करोड़ों भूखों द्वारा विदेशी सत्ता से प्राप्त की जाने वाली स्वतन्त्रता के जो भी बाधक हैं वे संशोधित किये जाने योग्य हैं, यदि ऐसा न हुआ तो उन्हें अनिवार्य रूप में या तो सुधार देना पड़ेगा या बदल देना होगा।' महात्माजी के इन शब्दों में भूख तथा गरीबी से पीड़ित करोड़ों भारतीयों की आहें छिपी पड़ी हैं। उन्होंने करोड़ों भारतीयों की कठिनाइयों को समझा तथा उनके दैनिक जीवन का स्पष्ट रूप दृष्टिगोचर कराने के लिये वस्त्र का एक टुकड़ा ही लपेटा। इसमें सन्देह नहीं कि यदि करोड़ों भारतीयों का भाग्य पलटा तो उन्हें केवल तभी सन्तोष होगा और वह मानवता के एक बड़े अङ्ग को ऐसी ही भौतिक तथा आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त करते हुये देखने के लिये जीवित रहेंगे।

कोई भी व्यक्ति महात्माजी के कार्यों को भली भांति तब तक नहीं समझ सकता जब तक कि वह सर्वसाधारण और उनके (महात्माजी) मध्य के घनिष्ट सम्बन्धों को भलीभांति समझ न ले। वह राजनीतिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में गांवों की ओर उतरे तथा अपने बड़े से बड़े प्रयोगों करने में भी उन्होंने हमेशा ही गांवों अपने दृष्टिगत रखा। उन्होंने दीन के लिये जो कुछ भी किया, सर्वोपरि है

संग्राम का नेतृत्व

१९४२ का युद्ध वह महान् संघर्ष जिसमें पांचवीं बार महात्माजी ब्रिटिश साम्राज्यवाद से मोर्चा लेने के लिये डटे। इसके पूर्व उन्हें छोटी मोटी सफलतायें भी प्राप्त हो चुकी थीं। उनका प्रथम युद्ध असहयोग आन्दोलन के रूप में हुआ था। इसने अपने अन्तिम लक्ष्य पहुंचने का मार्ग तैयार किया। बारदोली सत्याग्रह ने इस मार्ग को मजबूत बनाया ताकि तृतीय युद्ध के लिये तैयार होने वाला दल आसानी से इस अहिंसात्मक मार्ग पर चल सके। सेना सुसज्जित हो चुकी थी, मार्ग पहले ही बन चुका था और महात्मा अपनी सेना को धर्मनिष्ठा तथा अहिंसात्मक कवच से सजा कर डांडी की ओर ले चला। हाथ में शांति का प्रतीक दण्ड धारण किये हुये, दुर्बल भारत की एक मात्र आकांक्षा, एक वृद्ध धारी महात्मा ने पौने दो सौ मील की लम्बी यात्रा पन्द्रह दिनों में पैदल तय की सारा विश्व उसके पदचिन्हों को चूमता चल पड़ा। उसके कार्यों को बच्चों का खेल कहकर हंसते हुये विरोधियों ने उनके अतुलित पराक्रमों को देखा। तत्कालीन वायसराय इरविन को नग्न पद महात्मा के चरणों पर झुकना पड़ा और परिणाम स्वरूप हुआ गांधी-इरविन पैक्ट।

मि० चर्चिल को इस समझौते से कितना दुःख हुआ था, इसका पता उनके इस कथन से चलता है — 'इस एक समय के वकील के घिनौने तथा अपमानजनक कार्य, जो अब एक विद्रोही फकीर बना है तथा सम्राट के प्रतिनिधि से बराबर की शर्तों पर समझौता करने के लिये अर्धनग्नावस्था में ही वायसराय के राज भवन की सीढ़ियों पर लम्बे डग रखता हुआ चढ़ रहा है।'

वायसराय की तो बात ही क्या, बल्कि में वही मि० चर्चिल थे और थी उनकी सरकार, जिसने क्रिप्स को भारत के इस घिनौने महात्मा के साथ समझौता करने को भेजा, जो एक माने में अपने प्रस्ताव को लेकर इसी अर्धनग्न विद्रोही फकीर के पास स्वीकृति की भीख मांगने आये थे।

महात्मा जी जब गांधी-इरविन पैक्ट के अनुसार गोल मेज परिषद् में कांग्रेस के एक मात्र प्रतिनिधि के रूप में भाग लेने के लिये चुने गये तब उनके मार्ग में नानाप्रकार की कठिनाइयां उपस्थित की गयीं। फिर भी उन्होंने एक सत्याग्रही की भांति उन तमाम कठिनाइयों का मुकाबला किया। गोल मेज परिषद् से महात्मा

[शेष पृष्ठ २० पर]

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

'वीर अर्जुन' में धारावाही उपन्यास

पाठकों को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि 'अर्जुन' के २८ आश्विन (१४ अक्टूबर) के अंक से गुजराती के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री इन्द्र बसावड़ा का "गंगा ना नीर" उपन्यास हिंदी में धारावाही रूप से प्रकाशित होगा। पाठक धैर्य से प्रतीक्षा करें।

----सम्पादक

★ वीर ★
अर्जुन
अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्
सोमवार १४ आश्विन सम्वत् २००३

राष्ट्रदेव चिरायु हों

भारत के राष्ट्रपितामह विश्ववंद्य म० गांधी के ७८ वें वर्ष में प्रवेश करने पर हम समस्त अर्जुन परिवार और उसके लाखों पाठकों की ओर से उनका अभिनन्दन करते हैं और मंगलमय भगवान् से उनके चिरायुष्य की प्रार्थना करते हैं।

गत वर्ष भी राष्ट्र ने अपने इस महान् देव का अभिनन्दन किया था, लेकिन आज और गत वर्ष में अन्तर है। गत वर्ष हम यह कल्पना भी न कर पाये थे कि हमारा यह नंगा फकीर अपने आत्मबल से हमें कहां तक आगे ले जा चुका है। आज हम अपनी नयी स्थिति को समझने लगे हैं। आज भारत की हमारी सरकार अपनी स्वतंत्र विदेशी नीति का निर्धारण कर रही है, जो ब्रिटेन की नीति से सर्वथा स्वतंत्र होगी, आज मौ० आजाद पश्चिम एशिया जाने वाले प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व करेंगे, यह कौन सोचता था। आज हम जो कुछ हैं, उसका एकमात्र श्रेय म० गांधी के बलिदान व नेतृत्व को है। अभी महात्माजी का जीवनोद्देश्य पूर्ण नहीं हुआ। भारत स्वतंत्र नहीं हुआ, मानवता अब भी कराह रही है। इसलिए हमें विश्वास है और मंगलमय भगवान की अपार दया हमारे इस विश्वास को पुष्ट करेगी कि वे अपने महान् उद्देश्यों में सफल होंगे।

म० गांधी का तपःपूत शरीर और महान् आत्मा आज संसार के आश्चर्य-विस्मय का कारण बना हुआ है। उनके नेतृत्व में भारत संसार की एक महाशक्ति बनकर रहेगा, अस्पृश्यता का कलंक नष्ट हो जावेगा, साम्राज्यवादी लिप्सा ईर्ष्या और संदेह के वातावरण में सुधार होगा और मानव का दृष्टिकोण बदल जायगा तथा भारतीय आध्यात्मिक संस्कृति पाश्चात्य संस्कृति पर विजय पावेगी, इन महान् आशाओं को लिये हुए हम विश्व-शांति के महान् देवता का पुनः अभिनन्दन करते हैं।

भारत की नई वैदेशिक नीति

भारत सरकार के उपाध्यक्ष और विदेश मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने २६ सितम्बर को विदेश नीति के सम्बन्ध में जो घोषणा की है, उसके महत्व की ठीक-ठीक कल्पना करने में कुछ समय लगेगा, क्योंकि उस नीति के क्रियान्वित होने पर जो महत्वपूर्ण परिणाम निकलेंगे, उनमें अभी कुछ समय अवश्य लगेगा। लेकिन उस नीति के विविध देशों में होने वाले उसके अनिवार्य परिणामों के अतिरिक्त भी उस घोषणा का एक और बहुत बड़ा महत्व है। और वही भारत की दृष्टि से सबसे अधिक उल्लेखनीय है। पिछले १५० सालों से भारतवर्ष की विदेशी राजनीति का कोई अर्थ न था। वस्तुतः उसकी अपनी कोई नीति भी न थी। वह ब्रिटेन का वशवर्ती था और उसकी विदेशी नीति ही भारत की वैदेशिक नीति थी। ब्रिटेन का शत्रु भारत का शत्रु था-- यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि भारत को उससे शत्रुता करनी पड़ती थी, भले ही उसने उसका कुछ बिगाड़ा न हो। १९१४ और १९३९ में जर्मनी और ब्रिटेन का युद्ध हुआ, भारत की जर्मनी से कोई दुश्मनी न थी, लेकिन भारत ने भी जर्मनी से युद्ध घोषणा कर दी। पिछले युद्ध के बाद संधि सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि केवल ब्रिटेन का बल बढ़ाने के लिए ही वहां पहुंचे थे। इस युद्ध के बाद होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भी भारत के प्रतिनिधियों का कोई पृथक अस्तित्व न था, वे सिर्फ ब्रिटिश प्रतिनिधियों की हां में हां मिलाने का कार्य करते थे। भारत स्वतन्त्र न था, उसकी अपनी कोई नीति न थी। आज भारत कानूनी तौर पर स्वतंत्र न हो, तो भी पंडित जवाहरलाल नेहरू ने नई स्वतंत्र वैदेशिक नीति की घोषणा करके यह स्पष्ट कर दिया है कि भारत का भी एक अपना दृष्टिकोण है और वह ब्रिटिश वैदेशिक विभाग से सम्बद्ध और उसके अधीनस्थ का दृष्टिकोण नहीं है। ब्रिटेन का नीति से उसकी नीति सर्वथा असम्बद्ध और स्वतंत्र होगी। इस एक घोषणा से ही भारतवर्ष स्वराज्य के पथ पर बहुत आगे निकल गया है, जिसकी कल्पना शायद लार्ड वैवल ने तब भी न की होगी जब वे अन्तःकालीन सरकार बनाने के लिए कांग्रेस को निमंत्रण दे रहे थे। पं० नेहरू की यह घोषणा इस बात का भी स्पष्ट प्रमाण है कि सरकारी दुर्ग पर अधिकार करके कैसे आगे बढ़ा जा सकता है।

पं० नेहरू की घोषणा के दो महत्वपूर्ण अंग हैं। एक ब्रिटेन से सम्बंध तथा दूसरे अन्य सीमावर्ती देशों से। ब्रिटेन के बारे में प० नेहरू को आशा है कि भारत मंत्री का कार्यालय शीघ्र ही समाप्त हो जायगा। यही कार्यालय भारत की पराधीनता का सबसे प्रधान गढ़ है, जिसके द्वारा ब्रिटेन भारत पर अपनी दुरभिसंधियां लादता है। इसके नष्ट होने का स्वाभाविक परिणाम यह होगा कि भारत की स्थिति स्वतंत्र उपनिवेश की हो जायगी और गवर्नर जनरल की स्थिति एक वैधानिक शासक की। भारत में एक ब्रिटिश दूत रखने के समाचार से भी पं० नेहरू की इस आशा को पोषण मिलता है।

किसी देश की स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए सीमावर्ती राष्ट्रों से अपना सम्बन्ध दृढ़ रखना आवश्यक है। पं० नेहरू ने अपनी घोषणा में इधर विशेष ध्यान देने और प्रत्येक देश में विशिष्ट दूत या प्रतिनिधि रखने का निश्चय किया है। एशियायी मुस्लिम देशों में मौ० आजाद के नेतृत्व में सौहार्द सम्बन्ध के लिए प्रतिनिधि मण्डल भेजने का प्रस्ताव बहुत सुन्दर है। इससे इन राष्ट्रों को भारत की आकांक्षाओं को समझने और उनके साथ सम्मिलित होने में ही सहायता नहीं मिलेगी, बल्कि इससे मुस्लिमलीगियों की इस धारणा का भी खण्डन हो जायगा कि इस्लाम एक पृथक राष्ट्रीयता का द्योतक है। रूस के साथ मित्रता, बरमा व इण्डोनीशिया की स्वाधीनता की आकांक्षाओं से सहमति आदि विचारों का परिणाम कुछ समय बाद प्रकट होगा।

भारत की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की एक बहुत बड़ी विशेषता यह है कि वह विश्व-शान्ति में सबसे अधिक सहायक है। छल छिद्र, कूटनीति से रहित निःस्वार्थ मानवता का हित ही भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के मूल सिद्धान्त हैं। इन सब के प्रचार के कारण और इनका दृढ़तापूर्वक समर्थन करके भारत समस्त अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में असाधारण महत्व प्राप्त कर लेगा, यह कल्पना आज की जा सकती है। अन्य सब बड़े राष्ट्रों के कुछ न कुछ स्वार्थ हैं और आज रूस भी इससे बचा नहीं है। भारतवर्ष ही एक ऐसी शक्ति है, जिसका उद्देश्य मानवता की स्वतन्त्रता है, जो किसी भी राष्ट्र को पराधीन नहीं देखना चाहता, जो किसी का शोषण सहन नहीं करता। ऐसा निस्वार्थ राष्ट्र ही संसार का नेतृत्व कर सकता है। सब छोटे छोटे राष्ट्र तो उसका नेतृत्व स्वीकार करेंगे ही, बड़े-बड़े राष्ट्र पारस्परिक प्रतिस्पर्धा के कारण विश्व का नेतृत्व नहीं कर सकेंगे। इस तरह प० नेहरू की वैदेशिक नीति की घोषणा अनेक दृष्टियों से बहुत महत्वपूर्ण है।

——

गृहविहीनों की समस्या

आज की एक बड़ी समस्या है युद्ध-ग्रस्त और गृहविहीन नागरिकों को विभिन्न देशों में बसाना। अनेक देशों की जन-संख्या बहुत अधिक घनी है, वहां उन्हें बसाया नहीं जा सकता। लेकिन दुःख की बात यह है कि जिन देशों में आबादी कम है, वे भी उन्हें बसाने के लिए तैयार नहीं। पिछले दिनों विश्व राष्ट्र संघ ने सब देशों से पूछा था कि वे कितने-कितने आदमियों को बसा सकते हैं। उसके कार्यालय में केवल २३ उत्तर प्राप्त हुए हैं और वे सभी निराशाजनक हैं। आइसलैण्ड, कोस्टारिका और साल्वादोर ने किसी भी प्रवासी को बसाने से इन्कार कर दिया है। पनामा इस सम्बन्ध में अभी तक कोई निश्चय नहीं कर पाया। आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैण्डने दो साल तक किसी भी गैर-ब्रिटिश को बसाने से इंकार कर दिया है। दक्षिण अफ्रीका ५,००० से अधिक युद्ध अनाथों को शरण देने को तैयार नहीं है। कनाडा सिर्फ कनाडा वासियों के निकट सम्बन्धियों को बसावेगा, जबकि अमरीका जर्मनी से आने वाले ३८४० व्यक्तियों को प्रतिमास अनुमति पत्र देगा। पेरु सिर्फ इन्जिनीयरों का स्वागत करना चाहता है। ब्राजील ५०० से अधिक निराश्रितों को एक महीने में लेने को तैयार नहीं। रूस से अभी तक कोई उत्तर नहीं मिला। यह स्थिति स्पष्ट बता रही है कि अन्तर्राष्ट्रीय मानवता की भावना पैदा होने में अभी बहुत देर है। आस्ट्रेलिया की आबादी प्रति मील एक भी नहीं है, फिर भी वह निराश्रित जनता के लिए दरवाजे नहीं खोलता। यही स्थिति अन्य देशों की है।

लीग से समझौता मत करो

लार्ड वेवल के निमंत्रण पर मि० जिन्ना का दिल्ली आगमन, उनसे दो बार बातचीत तथा म० गांधी और प० नेहरू की वायसराय से भेंट के समाचारों ने अन्तःकालीन सरकार में लीग के सहयोग के प्रश्नको फिर से उठा दिया है। जब तक मि० जिन्ना पाकिस्तान पर आग्रह करते हैं, मन्त्री-मण्डल के संयुक्त उत्तरदायित्व को स्वीकार नहीं करते, एक भी राष्ट्रीय मुस्लिमको भाग न लेने पर आग्रह करते हैं, तब तक कांग्रेस से लीगका समझौता होना असंभव है और वस्तुतः आज कांग्रेस और लीग के दृष्टिकोण में पूर्व और पश्चिम का अन्तर है। लीग को सम्मिलित करने के लिए कांग्रेस को झुकना पड़ेगा, अपने सिद्धान्तों और अपने राष्ट्रीय स्वरूप को छोड़कर। और ऐसा करना कांग्रेस की अत्यन्त अप्रतिष्ठा का कारण होगा। हमें विश्वास है कि कांग्रेसी नेता ऐसा कोई कदम न उठावेंगे जिससे कांग्रेस की जरा भी अप्रतिष्ठा हो और ऐसा करने के कारण जो भी मांग में कठिनाइयां आवेंगी, उनका मुकाबला वे साहस के साथ करेंगे।

CCO, Gurukul Kangri C...

कांग्रेस का नया अध्यक्ष ?

पं० जवाहरलाल नेहरू के कांग्रेस-पद से त्याग-पत्र देने के बाद फिर से नये चुनाव का प्रश्न उपस्थित हो गया है। इस अवसर पर बहुत संभवतः कई प्रस्ताव पेश होंगे। लेकिन उन प्रस्तावों पर विचार करते समय व्यक्ति की अपेक्षा सिद्धांत को हमें अधिक महत्व देना चाहिए। आज भारत जिस ऊंची स्थिति पर पहुंच गया है, उसका श्रेय म० गांधी और उनके अनुयायी नेताओं को है। इस लिए आज भी यह आवश्यक है कि उसी विचार दिशा और पद्धति के अनुसार अभी कुछ समय तक और कार्य किया जाय, ताकि म० गांधी को अपने कार्यक्रम में पूर्ण स्वतन्त्रता मिल सके और वे एक निश्चित नीति के अनुसार गाड़ी को आगे खींच सकें। सफलता के पास आने पर यह स्वाभाविक है कि विभिन्न विचार दिशाओं का संघर्ष हो और सभी विचारक अपने-अपने कार्यक्रम को अपनाने पर बल दें। लेकिन आज हमारे पारस्परिक विचार संघर्ष का परिणाम बुरा भी हो सकता है। इस लिए आज कांग्रेस के अध्यक्ष-पद का चुनाव करते समय यह आवश्यक है कि अध्यक्ष ऐसा व्यक्ति हो, जो म० गांधी की नीति का समर्थक हो, अन्तःकालीन सरकार के प्रमुख नेताओं और उनकी विचार दिशा से पूरा मेल खाता हो। संयुक्त प्रांत में जो स्थिति आज है, वैसी स्थिति केन्द्र के सम्बन्ध में न हो। फारवर्ड ब्लाक कांग्रेस सोशलिस्ट या अन्य सभी दल अध्यक्ष पद के लिए नाम प्रस्तुत करते समय इस बात का ध्यान रखेंगे, तो अच्छा होगा।

———

वर्तमान नेतृत्व

अ० भा० कांग्रेस कमेटी ने पिछले दिनों दो निश्चय करके यह सिद्ध कर दिया है कि आज भी राष्ट्र का नेतृत्व म० गांधी के हाथ में है। अन्तःकालीन सरकार बनाने के विरोध में केवल १२ मत आये। अन्तःकालीन सरकार के सदस्यों को कार्यसमिति में भाग न लेने के प्रश्न पर जो मत-विभाजन हुआ, उसने यह और स्पष्ट कर दिया कि राष्ट्र पुराने नेताओं के साथ है। मौ० आजाद ने विरोध में भाषण देकर सदस्यों में बुद्धि-भेद जरूर पैदा किया, और समस्त सोशलिस्ट सदस्यों ने भी प्रस्ताव के विपक्ष में वोट दिये, फिर भी ८० से अधिक मत विरोध में न आ सके। यह मत-विभाजन देश की आवाज स्पष्ट करता है कि कांग्रेस की वर्तमान नीति पर और अधिक समय तक श्रद्धा के साथ चलने की आवश्यकता है।

—

भारत की स्वतन्त्र वैदेशिक नीति की घोषणा

२६ सितम्बर को एक प्रेस-कान्फ्रेंस में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने घोषित किया कि विदेशों में तथा ब्रिटिश साम्राज्यान्तर्गत देशों में कूटनीतिक प्रतिनिधियों की नियुक्ति के लिये एक वैदेशिक सर्विस के निर्माण की योजना प्रस्तुत की जा चुकी है। कूटनीतिक पदों पर नियुक्ति के लिये भारत को ३०० व्यक्तियों की आवश्यकता है, जब कि केवल ५० ही ऐसे व्यक्ति उपलब्ध हैं, जिन्हें इस विषय में आवश्यक अनुभव हैं। ये योजनाएं शीघ्र ही स्वीकृति के लिये मन्त्रिमण्डल के समक्ष उपस्थित की जायेंगी। पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति प्राप्त करने के लिये उपयुक्त पग उठाना भारत के लिये आवश्यक है।

विदेशी मामलों में भारत एक स्वतन्त्र नीति का पालन करेगा। वह सत्ता हस्तगत करने की दृष्टि से गुटबन्दी में सम्मिलित न होगा। कहीं भी जातीय पक्षपात से काम लिया जावेगा, भारत वहां उसका विरोध करेगा।

'पूर्वी अफ्रीका के तीन उपनिवेशों की ३ धारासभाओं में जो प्रवास बिल पेश किए गए हैं, उनसे भारत तथा उक्त उपनिवेशों में भारतीयों में अनेक आशंकाएं पैदा हो रही हैं। सर महाराजसिंह के नेतृत्व में एक भारतीय शिष्टमंडल उक्त उपनिवेशों के भारतीयों, अफ्रीकनों व यूरोपियनों के साथ बातचीत कर रहा था, भारत सरकार उस मिशन की रिपोर्ट की प्रतीक्षा में है।

सीलोन:—'दुर्भाग्य से पिछले पर्याप्त समय से सीलोन के साथ हमारे सम्बन्ध बिगड़े हुए हैं। हम ने सीलोन की जनता व सरकार के साथ सीधा सम्पर्क स्थापित करने का प्रयास किया है। मैं सीलोन जाऊंगा। कब? यह मैं अभी नहीं कह सकता।

बर्मा:—मेजर जनरल आंग सान के नेतृत्व में स्थापित होने वाली बर्मा सरकार का हम स्वागत करते हैं। और वह इस आशा से कि इससे बर्मा शीघ्र ही स्वाधीन हो जायगा तथा हमारी सरकार और नवीन बर्मा सरकार के आपसी सम्बन्ध मैत्री पूर्ण व सम्मानपूर्ण होंगे। बर्मा के नए गवर्नर ने कुछ भारतीयों पर से जो मुकद्दमे उठा लिए हैं, उसके लिए मैं उनका आभार मानता हूं।

लंडन का वैदेशिक कार्यालय नहीं

'भविष्य में हमें दो काम करने होंगे। एक तो यह कि हमें अपने अत्यधिक राजनैतिक प्रतिनिधि रखने होंगे और दूसरे उनके साथ सीधा सम्पर्क रखना होगा। हमारे सभी प्रतिनिधियों को निर्देश यहां से मिलेंगे, लंडन के वैदेशिक कार्यालय से नहीं।

रूस के साथ भी

'हम सबसे पहिले अपने राजनैतिक प्रतिनिधि चीन और अमरीका भेजेंगे। हमें रूस की सरकार के साथ विचार-विनिमय करके अपना एक राजनैतिक प्रतिनिधि रूस भी भेजना होगा।

नेहरू की विदेश-नीति एक दृष्टि में

★ एशिया, अफ्रीका तथा अन्य देशों में उपनिवेशों की सत्ता का अन्त कर देना हमारी नीति है।

★ लन्दन का इण्डिया - आफिस समाप्त हो गया ही।

★ बर्मा में मेजर जनरल आंगसान की अध्यक्षता में बनी नयी सरकार का भारत स्वागत करता है।

★ पश्चिमी एशिया के देशों में मौलाना अबुल कलाम आजाद के नेतृत्व में एक सद्भावना मिशन भेजा जानेवाला है।

★ इसी प्रकार का एक मिशन पश्चिमी और पूर्वी यूरोप में भी भेजा जायेगा। श्री वी० के० कृष्णा मेनन सम्भवतः इस मिशन के सदस्य होंगे।

★ अन्तःकालीन सरकार वर्तमान इण्डोनेशियन प्रजातन्त्र को क्रियात्मक दृष्टि से स्वीकार करती है। इस सरकार को उनके स्वातन्त्र्य-युद्ध के साथ पूर्ण सहानुभूति है।

★ पश्चिमोत्तर सीमाप्रान्त की समस्याओं को नये ढङ्ग से सुलझाया जायेगा।

अभी तक यह निश्चित तो नहीं हुवा कि अमरीका व चीन जाने वाले राजनैतिक प्रतिनिधियों को क्या कहा जायगा, मगर शायद वे भारत के राजदूत कहे जायंगे।

यूरोप में भारतीय मिशन

'भारत फ्रांस आदि यूरोप के देशों के साथ भी सम्पर्क स्थापित करेगा। हम पता लगायेंगे कि यूरोप के देशों की सरकारें हमारे साथ कौन-कौन से प्रतिनिधियों का विनिमय करना पसन्द करेंगी। रूस व एशिया की देशों के साथ भी यही होगा।

पश्चिमी एशिया का मिशन

'अन्तःकालीन सरकार मौलाना अबुलकलाम आजाद के नेतृत्व में मिश्र, ईरान, और इराक आदि पश्चिमी एशिया में एक सद्भावना मिशन भेजने का इरादा रखती हैं।

श्रीकृष्ण मैनन

"यूरोप जाने वाले मिशन के सदस्यों में इंडिया-लीग के प्रधान श्री कृष्णा मैनन उसके एक सदस्य अवश्य होंगे। वे रूस भी जायंगे या नहीं, यह बाद में निश्चित होगा।

हाईकमिश्नर का दफ्तर

"लन्दन स्थित हाईकमिश्नर के दफ्तर का अब तक राजनैतिक मामलों से कोई ताल्लुक न था। वह तो वेतन तथा पेन्शन आदि मामलों से सरोकार रखता था। लेकिन अब इस दफ्तर को पहले की अपेक्षा ज्यादा महत्वपूर्ण काम करना होगा।

इंग्लैंड से विरोध

"अतीत काल में अनेक अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में भारतीय प्रतिनिधि ब्रिटिश प्रस्तावों का विरोध करते रहे हैं। ऐसा मौका भी आ सकता है, जबकि भारत किसी भी देश की और यहां तक इंग्लैंड की भी वैदेशिक नीति के खिलाफ होजाय।

पेरिस सम्मेलन

"भारत सरकार ने पेरिस सम्मेलन में भेजे गए अपने प्रतिनिधियों में परिवर्तन करना उचित नहीं समझा। वे प्रतिनिधि कैसे भी क्यों न हों, किन्तु उनको हिदायतें यहीं से लेनी होंगी।

दूत के बदले दूत

"यदि हम वाशिंगटन और नानकिंग में अपना दूत भेजना चाहते हैं, तो वे भी अपना दूत नई दिल्ली भेजेंगे। आस्ट्रेलिया सरकार अपने भारत स्थित हाईकमिश्नर को दूत बनाने को तैयार है। अतएव स्वाभाविकतया आस्ट्रेलिया में हमारा जो प्रतिनिधि जायगा, वह भी दूत ही होगा।

इंडोनेशिया

"इण्डोनेशियन प्रजातन्त्र के साथ हमारी पूरी सहानुभूति है। यद्यपि हमने वहां की नवीन सरकार को बाकायदा स्वीकार नहीं किया, फिर भी क्रियात्मक रूप से हमने उसे स्वीकार कर लिया है। इण्डोनेशिया और ईरान के मामले में हमारी नीति ब्रिटिश नीति से नहीं मिलती।

भारतीय सेनाओं का विदेशों में प्रयोग

'किसी भी देश की स्वाधीनता को कुचलने के लिए भारतीय सेनाओं को भेजने के हम विरुद्ध हैं। हमें यह आश्वासन दिया गया है कि सम्पूर्ण भारतीय सेनाएं इंडोनेशिया से वापिस बुलायी जारही

[शेष पृष्ठ १९ पर]

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बापू के प्रति

[श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान]

वह कौन ? एक मुट्ठी भर का
अधनंगों सा बूढ़ा फकीर
जिसके माथे पर तेज,
जिसकी आंखों में पीर ।

जिसकी वाणी में शक्ति, भेद
जो कुलिश कपाटों को जाती;
जिसके अन्तर का प्रेम देख
असि-धारा कुण्ठित हो जाती ।

वह गांधी हम सब का बापू
वह अखिल विश्व का प्यारा है;
वह उनमें से ही एक जिन्होंने
आकर विश्व उबारा है ।

हैं बुद्ध सुखी, उनमें अपने ही
परम धर्म का ज्ञान देख;
है ईसा खुश बलिदान देख,
पैगम्बर खुश ईमान देख ।

राष्ट्रदेव !

[लि० — श्री रामेश्वरदयाल अग्रवाल]

निर्जन पथ है मैं हूं निर्जन
कुछ खोया सा कुछ भूला सा

बापू ! मुझे आज शक्ति दो । मैं मनुष्य की बनाई हुई सारी सीमाओं का उल्लंघन करना चाहता हूं । बापू ! मुझे वह हिम्मत दो कि मैं पहाड़ों से टक्कर ले लूं और महा-सागरों का मंथन कर डालूं, फिर भी मैं न घबराऊं । आज मेरी अन्तर्ज्वाला धांय-धांय करके धधक रही है और मैं बड़ा बैचेन हो रहा हूं । कलकत्ते का हा-हाकार, भारतवर्ष में अन्न वस्त्र का अभाव, राशन और कहीं घूंस-खोरी, चोरबाजार यह सब यहां देखने को मिलते हैं । मुझे तो इन सब से दूर और अति दूर ले चलो, जहां भाई-भाई के खून का प्यासा न हो; अन्न-वस्त्र की कमी न हो; सबको समानता का पूरा-पूरा अधिकार हो, जहां असत्य, कपट, लोभ का नाम भी न हो, जहां राजाओं की निरंकुशता और शाहंशाहवाद मुझे निगलने के लिए अपना मुंह न फैलावे और अमीरों की वेदी पर बेकसों और गरीबों को जीवन-होली न खेली जाती हो ।

राष्ट्रदेव ! मुझे वह दिन भी अच्छी तरह याद है, जब आप बम्बई में जिन्ना के निवास स्थान पर एक महान खेल खेलने गये थे । मुझे वह भी याद है कि तुम्हें चर्चिल ने नंगा फकीर कह कर संबोधन किया था, मगर आप फिर भी विचलित नहीं हुये । आप अडग रहे और अपनी टेक नहीं छोड़ी ।

बापू ! हम बहुत पीछे रह गये और तुम आगे ही बढ़ते चले । तनिक सहारा दो; तुम हमारे गुलाम और निर्धन देश के नायक हो । हमारे अभिमान हो, गौरव हो, बुझते हुये घरों के टीम-टीमाते हुये दीपक हो, स्पन्दन हो, आदि हो, अन्त हो । तुम्हारे संदेश में ईश्वर का पवित्र उपदेश है, ईशु की दया है और बुद्ध की प्रेरणा है ।

मेरे मन मंदिर के देव ! अगर आज तुम किसी स्वतंत्र देश के नेता होते तो दुनिया के भाग्य विधाता कहलाये जाते । संसार की सभ्यता को निगलने वाले, मानवता का संहार करने वाले राष्ट्रों का कभी का अंत आ गया होता । तुमने अपना भाग्य हम अभागों के साथ जोड़ दिया । यह वह अभागे हैं, जो जी नहीं रहे उनके जीवन को जीवन कहना जीवन की हंसी करना है ।

बापू ! आज सारा भारत वर्ष आपकी जयन्ती मनाने की तैयारी कर रहा है । क्यों नहीं, अपने बापू की जयन्ती मनावे ? आपने भारत को वह मार्ग दिखलाया कि जिसकी खिल्ली सब कोई उड़ा रहे थे । लोग कहते थे कि कहीं सत्य, अहिंसा, और चर्खे से स्वराज्य मिला है । लेकिन आपने जो बात असंभव थी उसे संभव करके दिखला दिया है । आज जन लोगों को हुल्लड़ खोर विद्रोही गैर जिम्मेवार कहा जाता था वे लोग अन्तःकालीन सरकार की बागडोर अपने हाथों में लेकर भारत का शासन सूत्र चलाने लगे हैं । आप दिल्ली में बैठे बैठे भारत के भाग्य का इतिहास लिख रहे हो ? यह सब आपके सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह और चर्खे की ही तो देन है !

बापू ! तुम्हारा गांधीवाद, लेनिन से कम नहीं । तुम प्रजातंत्र के विचारों में अब्राहम लिंकन से पीछे नहीं हो । इटली के गेरीबाल्डी और इंगलैण्ड के क्रोम-वेल के समान सच्चे स्वदेश प्रेमी हो । किन्तु यह न भूलना कि अब भी तुम पराधीन देश के नेता हो । वह स्वर्ण अवसर अब शीघ्र आयगा कि जब तुम स्वतंत्र भारत के नेता कहलाओगे ।

दुनिया के सारे पराधीन, शोषित और दुर्बल राष्ट्रों का भविष्य तुम्हारी हार-जीत के साथ बंधा हुआ है । आज भारतवर्ष में भी नये युग का प्रभात उगने लगा है । लोगों में नया उत्साह, नई उमंगें, नई तरंगें और फिर से नया जोश देखने में आने लगा है । परन्तु देवाधिदेव ! मेरे पास तो सिवाय धधकती हुई अन्तर्ज्वाला के और बचा ही क्या है ! जो आपको इस जयन्ती के शुभ अवसर पर अर्पण कर सकूं ।

बापू ! आशा अमर है, क्रान्ति अमर है, स्वतंत्रता अमर है, और वह हमारा बूढ़ा बापू भी आज अमर है और सदा रहेगा । हम बापूमय हैं और बापू हमारे में है ।

———

बापू

[गोपालदास 'नीरज']

शत कोटि बार तुमको प्रणाम !
चिर विश्व वन्द्य बापू प्रणाम !!

तुम सत्य अहिंसा के पूजक, तुम मानवता के अमर ध्येय !
तुम जीवन के चिर अजर गान, वांछित स्वतन्त्रता के सुश्रेय ॥

हे कर्मवीर, हे कर्मधीर, हे कर्मनिष्ठ — घनश्याम पूर्ण ।
त्यागी, अनुरागी, वैरागी, हे मर्यादापति राम पूर्ण ॥

तुम प्रातकाल की प्रथम किरण, ऊषा के तरुण सु-अरुण हास !
आगमन देख जिसका जग से, भागता गहन निशि तम-विलास ॥

तुम अटल हिमांचल से महान, जिसके उन्नत वक्षस्थल पर ।
टकरा टकरा कर चूर हुईं — आंधियां शिलायें — प्रलयङ्कर ॥

तव चरित बना नर-काव्य-सरल, क्रम कार्य सकल युग कर्म बना,
बलिदान बना, इतिहास और चिर ध्येय अमर युग धर्म बना ॥

हिल उठी तुम्हारी बंक-भ्रकुटि, हिल उठे विश्व के सिंहासन ।
खुल उठा तुम्हारा तृतीय नेत्र, खुल उठे बेड़ियों के बन्धन ॥

पग-धूलि पड़ गई जहां-वहां शतकोटि 'जवाहर' निकल पड़े ।
संकेत हो गया जिधर-उधर, शतशत शहीदवर उछल पड़े ॥

तुम वह मनुजत्व कि देख जिसे, देवत्व लाज से गड़ जाता ।
तुम वह अस्तित्व कि देख जिसे, अमरत्व स्वयं पर शर्माता ॥

तुम वह जीवन के पंथ, कि जिसके आगे कोई राह नहीं ।
तुम वह वरदान जिसे पाकर, रहती फिर मन में चाह नहीं ॥

तुम वह पंथी युग-जीवन के, जिनके पग तल में जल रहती ।
तुम वह सेनापति यौवन के, जिनके कर में हलचल रहती ॥

हे राजहीन ! हे ताजहीन ! चिर नृपति-नृपति तुमको प्रणाम !
शत कोटि बार तुमको प्रणाम, चिर विश्व-वन्द्य गांधी प्रणाम !!

बापू के प्रति

[ओंकारसिंह 'निर्भय']

वह एक व्यक्ति —
पर लिये हुए अपने उर में,
जो कोटि-कोटि का मुक्ति-भार;
पीड़ित जनता का करुण प्यार,
जिसके स्वर-स्वर में छिपी हुई
युग-परिवर्तन की महा शक्ति !
— वह एक व्यक्ति !

वह एक व्यक्ति —
पर छिपा हुआ उसमें अनेक —
ऋषि-मुनियों का विश्वास विरल,
श्रद्धा-सागर, परितोष विमल
जिसमें छल-छल छलका करती
जन-जन, हरिजन की प्रेम-भक्ति !
— वह एक व्यक्ति !

वह एक व्यक्ति —
जो नव आशा की प्रथम रश्मि,
ऊषा की सतरङ्गी सुषमा;
दिनकर की तेजयुक्त गरिमा,
वह प्राची का दिनमान और—
पश्चिम सन्ध्या-नभ की विरक्ति !
— वह एक व्यक्ति ।

CCO, Gurukul Kangri C

हिन्दीभाषी देश के रेडियो पर उर्दू का आधिपत्य

आंखें खोलने वाले आंकड़ों से रेडियो-नीति पर नया प्रकाश

अखिल-भारतीय रेडियो की लगभग १२ वर्ष पुरानी हिन्दी-विरोधी नीति में तब तक समुचित सुधार होने की कोई सम्भावना नहीं प्रतीत होती जब तक सामान्यतः सभी सरकारी विभागों में, प्रचलित साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व के साथ-साथ, भाषा-सम्बन्धी प्रतिनिधित्व की भी सर्वत्र व्यवस्था नहीं हो जाती। अ० भा० रेडियो आज हिन्दू मुस्लिम आनुपातिक प्रतिनिधित्व का प्रश्न नहीं रहा, अपितु हिन्दी-उर्दू आनुपातिक प्रतिनिधित्वका प्रश्न हो गया है,जिसकी अवहेलना सम्बद्ध रेडियो-अधिकारी एक दशक से भी अधिक समय से जानबूझकर करते चले आ रहे हैं। केवल हिन्दू होने के नाते कोई व्यक्ति हिन्दी का प्रतिनिधि नहीं कहा जा सकता और न कोई उर्दू भाषी ही, दूसरी भाषा की भांति हिन्दी में 'डिपार्टमेंटल' परीक्षा पास करने का प्रमाणपत्र प्राप्त करके, हिन्दी की ओर से साधिकार बोलने का दावा कर सकता है। किन्तु इसके विपरीत, हिन्दी, आज एक लम्बी अवधि से रेडियो-विभाग में, उक्त दोनों प्रकार के स्वयंभू हिन्दी-प्रतिनिधियों के हाथ का खिलौना बनी आ रही है। अगर राष्ट्रभाषा हिन्दी की पोषक संस्थाओं ने समय रहते सतर्कता से काम न लिया तो वे रेडियो-व्यवस्था में हिन्दी के सच्चे प्रतिनिधियों के लिए कभी भी स्थान प्राप्त न कर सकेंगी और हिन्दी-हितों की अब की तरह सदा छीछालेदर होती रहेगी।

अ० भा० रेडियो के व्यवस्था-विभाग में, जिसमें इस समय एक डायरेक्टर-जनरल और तीन या चार डिप्टी डायरेक्टर-जनरल हैं, कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं जो हिन्दी की बारहखड़ी भी जानता हो, जब कि उनमें से दो या तीन व्यक्ति उर्दू के अच्छे ज्ञाता हैं। इन चोटी के अधिकारियों के बीच अल्पसंख्यकों की भाषा उर्दू को लगभग ६० प्रतिशत प्रतिनिधित्व प्राप्त हैं, जबकि भारत की लोक-प्रिय राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रतिनिधित्व शून्य के बराबर है।

अ० भा० रेडियो में उर्दू का कितना बोलबाला है, तथा हिन्दी का किस प्रकार गला घोटा जारहा है, इसकी कलई नीचे दी हुई हिन्दुस्तानी रेडियो-स्टेशन डायरेक्टरों की नाम-सूची तथा उनके भाषा-ज्ञान से अपने आप खुल जाती है—

उर्दू पक्षपाती डायरेक्टर

डायरेक्टर	स्टेशन	प्रथमभाषा
(१) जेड०ए०बुखारी	बंबई	उर्दू
(२) एस०एन० चिब	कलकत्ता	उर्दू
(३) रशीद अहमद	दिल्ली	उर्दू
(४) जे० के० मेहरा	लखनऊ	उर्दू
(५) के० एस० मलिक	लाहौर	उर्दू (+ पंजाब)
(६) नियाजी	पेशावर	उर्दू (+ पश्तो)

इसके अतिरिक्त, भारत के प्रत्येक रेडियो-स्टेशन पर हिन्दी-उर्दू के आनुपातिक प्रतिनिधित्व की क्या अवस्था है, इस पर प्रकाश डालने के लिए अ० भा० रेडियो के दिल्ली स्टेशन का विवरण देना पर्याप्त होगा। अन्य रेडियो-स्टेशनों पर हिंदी-उर्दू की खिचड़ी कैसी पक रही है, उसके नमूने का अनुमान दिल्ली स्टेशन को टटोलने के बाद अपने आप लगाया जा सकता है।

दिल्ली स्टेशन

(१) दिल्ली-स्टेशन डायरेक्टर-श्री रशीद
,, ज्वाइंट ,, – उमाशङ्कर
,, असिस्टेंट ,, – महमूद निजामी

इन अधिकारियो में से कोई भी व्यक्ति हिन्दी वर्णमाला के खटक्कि्रा तक भरना नहीं जानता। इनके अतिरिक्त हिन्दुस्तानी प्रोग्रामों के समन्वय के लिए दो विशेष अफसर हैं–उनके नाम श्रीमती मसानी तथा श्री अदवानी हैं; किन्तु हिंदी के नाम पर इन्हें काला अक्षर भैंस बराबर है। इनके बाद प्रोग्राम-संचालकों (प्रोग्राम-एग्जीक्यूटिव) का नम्बर आता है जिनके नाम सर्वश्री (१) अन्सार नासरी, (२) ताजुद्दीन, (३) इकबाल-सिंह तथा (४) लतीफ हैं। इन्होंने हिंदी का नाम कहीं से भले ही सुन रखा हो, किंतु इन्हें यह शायद ही मालूम होगा कि देवनागरी लिपि, दाएं से बाएं या बाएं से दाएं किधर को लिखी जाती है।

श्री एम० कुद्दूस प्रोग्राम-निरीक्षक है, किंतु वे केवल उर्दू ही लिख पढ़ सकते हैं।

(२) क — प्रोग्राम असिस्टेंट (हिन्दुस्तानी बातचीत)
(१) श्री इजाज बटालवी
(२) श्री जिया जालंधरी

ख — प्रोग्राम असिस्टेंट (नाटक)
(१) श्री शमशेर बतरा
(२) श्री जहूरुद्दीन

ग — प्रोग्राम असिस्टेंट (संगीत)
(१) श्री ए० एल० माइनी
(२) श्री के० सी० नाग
(३) श्री इस्मत जफर

घ—प्रोग्राम असिस्टेंट (बच्चों का प्रोग्राम)
(१) श्री कुलदीपसिंह वेदी

ङ — प्रोग्राम असिस्टेंट (स्त्री-उप-विभाग)
(१) कु० कृष्णा अहूजा

ऊपर लिखे हुए नवों प्रोग्राम असिस्टेन्ट हिन्दी के नाम पर कोरे हैं। वे अपने विद्यार्थी-जीवन में भी हिन्दी का 'श्रीगणेशायनमः' तक नहीं पढ़े। किंतु, कुमारी अहूजा को छोड़कर इन सब प्रोग्राम-असिस्टेंटों को उर्दू का चोखा ज्ञान है। दूसरे शब्दों में, प्रोग्राम-असिस्टेंटों में उर्दू को लगभग ७८ प्रतिशत तथा हिंदी को शून्य प्रतिशत प्रतिनिधित्व प्राप्त है।

(३) अ० भा० रेडियो में लगभग २० कलाकार हैं, जिनमें केवल ३ व्यक्ति हिन्दी जानते हैं। इनमें एक व्यक्ति हिन्दी-सलाहकार के पद पर है। बाकी ८५ प्रतिशत कलाकार उर्दू के ज्ञाता तथा पक्षपाती हैं

(४) देहाती प्रोग्राम––

इस उप-विभाग के बड़े अधिकारी चौधरी सुल्तान खां हैं तथा देहाती ब्राडकास्ट की जिम्मेदारी श्री हाफिज सईद पर हैं। इन दोनों व्यक्तियों में से किसी से हिन्दी जानने की आशा करना भूल है।

(५) सैनिक प्रोग्राम––

इसउप विभाग के उच्च अधिकारी सर्वश्री अय्यास अंसारी तथा अरशाद महमूद हैं। आप दोनों को हिंदी की हवा तक नहीं छू निकली है।

[६] विदेशी ब्राडकास्ट सर्विस

इस उप-विभाग में ३० अफसर तथा अन्य मातहत कर्मचारी हैं। इनमें से केवल दो व्यक्ति हिन्दी जानते हैं, शेष २८ व्यक्ति या तो उर्दू पढ़े हैं, या पंजाबी या पश्तो।

[७] समाचार-अनुवाद

अंग्रेजी से हिंदुस्तानी में समाचार तैयार करने के लिए यहां पर १० हिन्दुस्तानी पत्रकार हैं जो उर्दू पत्रों से चुन-चुन कर बुलाये गये हैं। उन्हें यह तक मालूम नहीं हिन्दी किस चिड़िया का नाम है। ये ही अपने आका को खुश रखने के लिए समाचारों को फारसी जामा, अरबीका कमरबन्द तथा मनगढ़न्त शब्दों की फैजी टोपी पहनाते रहते हैं।

उक्त आंकड़ों से यह परिणाम निकलता है कि अ० भा० रेडियो द्वारा हिंदी की उपेक्षा अपनी चरम सीमा पर पहुंच गयी है। पिछले दिनों की बात है कि "रामायण के रचयिता तो (गोस्वामी) तुलसीदास थे, किन्तु 'रामचरित मानस' किसने लिखा ?" इस खोजबीन में आधे गुलिस्तां को तोते की तरह रट कर सुना डालने वाले, अ० भा० रेडियो के अधिकांश कर्मचारियों के सिर में दर्द हो उठा, किन्तु पहेली फिर भी हल न हुई। अतः हिन्दी के साथ न्याय चाहने वाले व्यक्तियों तथा हिन्दी-हितों की रक्षक तथा पोषक संस्थाओं–– विशेषकर हिन्दी साहित्य सम्मेलन, को चाहिए कि वे अ० भा० रेडियो के डिप्टी डायरेक्टर जनरल तारा-चन्द के रिक्त स्थान पर, अपनी ओर से एक सुयोग्य हिन्दी प्रतिनिधि को मनोनीत करके, उसे नियुक्त करने के लिए अधिकारियों से अनुरोध करें। उनकी यह मांग रेडियो में हिंदी की वर्तमान दुरवस्था देखते हुए, केवल न्यायापूर्ण ही नहीं वरन् अनुपेक्ष्य भी होगी। किंतु कांटों का ताज पहनने को भेजने से पहले हिंदी-प्रतिनिधि में निम्न योग्यताएं अवश्य होनी चाहिएं–

(१) उसकी प्रथम भाषा हिन्दी हो तथा वह हिन्दी साहित्य का मर्मज्ञ हो।

(२) हिंदी-जगत उसे सम्मानपूर्ण दृष्टि से देखता हो और वह हिंदी हित-रक्षा में कोई ठोस कार्य कर चुका हो।

(३) उक्त सुयोग्य प्रतिनिधि पदाधिकार के प्रलोभन से प्रेरित होकर नहीं अपितु हिंदी-हित-रक्षा का बीड़ा उठाकर मैदान में उतरने के लिए उद्यत हो। इस अवस्था में, इस स्थान के लिए किसी आई० सी० एस० पदाधिकारी को मनोनीत करना खतरे से खाली नहीं, क्योंकि वह हिन्दी के लिए संघर्ष मोल लेने की अपेक्षा अपनी व्यक्तिगत उन्नति का मार्ग प्रशस्त करने की ओर ही अधिक ध्यान देगा। इस संकटमय क्षेत्र में तो वही व्यक्ति उतर सकता है जो मि० बुखारी से लोहा लेने के लिए चौबीसों घंटे अपनी जेब में अपना त्यागपत्र लिख कर डाले रहे।

(४) इसके साथ ही उस व्यक्ति को सरकारी नौकरी का परिपक्व अनुभव तथा सरकारी फाइलों की छानबीन करने का पेचीदा ढंग भी मालूम होना चाहिए। वह आंकड़े जुटाने में प्रवीण हो तथा हिंदी-प्रभाव और प्रचार क्षेत्र का व्यापक तथा प्रमाणिक ज्ञान रखता हो। इसके अलावा वह हिंदी पत्रकार जगत के निरन्तर सम्पर्क में भी रह चुका हो। यदि उस प्रतिनिधि में ऊपर बतायी गयी योग्यताएं नहीं, तो मैं समय रहते चेतावनी दे देना चाहता हूं कि अ० भा० रेडियो में पहुंच कर भी उसकी कुछ दाल न गल सकेगी। उस प्रतिनिधि को रेडियो विभाग में उसी प्रकार अपनी एक-एक ईंट जमाने के लिए सन्नद्ध रहना चाहिए। जिस प्रकार पिछले वर्षों में सूचना-विभाग में हिंदी की हित-रक्षा के लिए सफल प्रयास किया गया है।

———

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

[गतांक का शेष]

– ३ –

नया वार्डर कुछ पढ़ा लिखा था। उसकी शक्ल सूरत में भी अक्खड़पन कम था, परन्तु था हैडवार्डर साहब का खास गुर्गा। उसने दूसरे दिन प्रातःकाल न केवल चाय गिलास ही रास्ते में रोक दिया, दोपहर के बारह बजे चाबियों का गुच्छा लेकर हमारी कोठरियों को बन्द करने के लिए भी आ गया। वह दो घन्टे जेल के अधिकारियों की छुट्टी के थे, उस समय वह लोग अपने-अपने घरों को खाना खाने के लिये जाते थे। नियमों के अनुसार उस समय सारा दिन बद हो जाना चाहिये, परन्तु अभी तक हम चार पढ़े-लिखे कैदियों को बन्द नहीं किया जाता था। उस दिन नये वार्डर साहब हैडवार्डर का परवाना लेकर चाबियों का मार्शल ला लगाने के लिये आ पहुंचे। इस आफत को टालने के लिए हम लोगों ने सैयद साहब को अपना लीडर बनाया। वह कोठरी के दरवाजे के बाहर खड़े होकर बड़ी लापरवाही से कैंची का सिगरेट पी रहे थे। वार्डर ने उन्हें कोठरी में जाने को कहा तो दो-तीन बार तो उन्होंने बिलकुल अनसुना कर दिया। जब उसने अपने हुक्म को जोर से दोहराया तो सैयद साहब ने डांट कर पूछा 'क्या वारंट लाये हो ?' उसने रोब में आकर जवाब दिया— 'जनाब मेरे पास कोई वारंट तो नहीं है,हां हैडवार्डर साहब का हुक्म है ?' सैयद साहब ने बड़ी लापरवाही से अन्तिम फैसला सुना दिया कि 'भाई, तुम्हें शायद मालूम नहीं कि हम लोगों को दोपहर के वक्त बन्द करने के लिये जेलर साहब के दस्तखतों वाला वारन्ट चाहिये। उसके बगैर हमें बन्द नहीं किया जा सकता, कल वारन्ट लेकर आना।'

वार्डर लाचार था। बहुत अच्छा कह कर चुप हो गया, जिससे हमारी उस समय की मुसीबत टल गई। जब वार्डर पहरा देने दूर निकल गया तो हमारी कान्फ्रेंस बैठी, जिसमें नये संकट के निवारण पर विचार होता रहा। अन्त में संकट निवारण का काम जनाब सैयद साहब के ही सुपुर्द किया गया।

हम सब लोग अपनी-अपनी कोठरियों में जा बैठे। जब वार्डर टहरता हुवा उधर से निकला तो सैयद साहब ने उसे आवाज देकर अपनी कोठरी में बुला लिया और प्रेमपूर्वक पास बैठाकर बातचीत करने लगे। सैयदों की आम मुसलमानों में वही स्थिति है जो हिन्दुओं में ब्राह्मणों की। जेलके प्रायः सभी मुसलमान सिपाही और नम्बदार हमारे नौजवान दोस्त का आदर करते थे। वार्डर से बातचीत करते हुए सैयद साहब ने उससे पूछा कि भाई, तुम्हारी आंखों में खुमारी-सी मालूम होती है। क्या रात सोये नहीं ? वार्डर ने उत्तर दिया— आपने ठीक समझा है। सैयद साहब, कल रात जागते ही कटी। बात यह है कि मुझे थियेटर देखने का शौक है। यह सुन कर कि पत्थर वाले कुंए पर ईश्वर भक्ति का खेल हो रहा है, मैं भी देखने के लिये चला गया, लेकिन वहां इतना शोर था कि टिकिट की चवन्नी भी बरबाद हुई और रात को नींद भी खराब गई, कुछ भी पल्ले न पड़ा। सैयद साहब को अपनी मुख्य बात टेकने का सहारा मिल गया। बोले यह तो ठीक नहीं हुआ भाई, कहो तो कुछ ऐसा इन्तजाम करें कि तुम ईश्वर भक्ति का खेल खूब अच्छी तरह देख सको।

तब तो बड़ी इनायत होगी सैयद साहब ! मुझे थियेटर का बहुत ही शौक है।

'अच्छा देखेंगे, कल इसी समय पूछना।' यह कह कर सैयद साहब ने उस समय की बातचीत बन्द कर दी। इस तरह एक दिनकी मोहलत मिल गई। इसी बीच में हमने पूरा कार्यक्रम तैयार कर लिया। अगले दिन वार्डर ने बन्द होने की कोई बात नहीं कही और सैयद साहब से थियेटर देखने की बाबत पूछा। उत्तर में सैयद साहब ने उसे बतलाया कि पास की कोठरी में जो पंडित साहब रहते हैं,वह दिल्ली के बहुत बड़े आदमी हैं। उनके जरा से इशारे से तुम गद्दों पर बैठकर थियेटर देख सकते हो। तुम उनसे जाकर कहो, तुम्हारा काम हो जायगा। तब वह मेरे पास आया। मैंने एक कागज के टुकड़े पर 'अर्जुन' के मैनेजरके नाम एक चिट्ठी लिख दी, उसमें मैंने गोलमाल भाषा में यह इशारा दे दिया कि पत्रवाहक और इसके एक मित्र को अपने साथ ले जाकर ईश्वर-भक्ति का खेल दिखाने का प्रबन्ध कर देना। शाम के समय वार्डर साहब 'अर्जुन' प्रेस में पहुंचकर मैनेजर से मिले। मैनेजर ने तीन आदमियों का पास मंगा लिया, और अपने चपरासी के साथ वार्डर और उसके साथी को थियेटर में भेजकर ठीक स्थान पर बिठला दिया।

वार्डर तो मानों बहिश्त में पहुंच गया। कहां चवन्नी के धक्के और कहां कौच पर बैठ कर सिगरेट का धुंआ उड़ाना और बिलकुल पास से ऐक्ट्रेसों को देखना। अगले दिन जब वह ड्यूटी पर आया तो बिलकुल बदला हुआ आदमी था। बहुत झुक कर मुझे सलाम किया, और सैकड़ों धन्यवाद दिये। अन्त में कहा कि आपका तो बहुत बड़ा कारखाना है और शहर में बहुत बड़ा मान है। मेरे भाई की नौकरी कहीं लगवा दीजियेगा।

वह वार्डर महीना भर चक्कियों की ड्यूटी पर रहा, शायद ही कोई दिन ऐसा गया हो जब वह शाम के समय अर्जुन कार्यालय में हमारी चिट्ठी पहुंचाने या हमारे घर से कोई चीज लाने न गया हो। और उधर हैड वार्डर साहब बिलकुल निश्चिन्त थे कि इन मूजी कैदियों के सब रास्ते मैंने बन्द कर रखे हैं।

[४]

एक दिन बड़ी उलझन पैदा हो गई जिसमें मैं व्यक्तिगत रूप से बुरी तरह से फंस गया था। उसमें भी मेरा उद्धार सैयद साहब की सूझ ने ही किया। घटना यूं हुई। दोपहर के बारह बजे, जब अधिकारा लोग घरों को चले जाते थे तब जेल के कुछ वार्डर हम लोगों के पास बातचीत के लिए इकट्ठे हो जाते थे। वह समय मनोरंजन का समझा जाने लगा था। हमारे बंगाली पड़ोसी शतरंज के अच्छे खिलाड़ी थे। उधर एक सिख नम्बरदार को भी शतरंज का बहुत शौक था। हमारी चार कोठरियों में से किसी एक में प्रतिदिन बारह और दो के बीच में शतरंज का अखाड़ा जमने लगा। उस दिन अखाड़ा मेरी कोठरी में जम रहा था। क्या देखते हैं कि शहर के एक मजिस्ट्रेट हैड वार्डर के पीछे आये और मेरी कोठरी के सामने खड़े हो गये। उनके पीछे पीछे भागकर आते हुए जेलर और एसिस्टैंट जेलर भी दिखाई दे रहे थे। सब लक्षणों से प्रतीत होता था कि मजिस्ट्रेट का यह दौरा खास इसी उद्देश्य से कराया गया था कि हम लोगों को जेल मैनुअल के चक्कर में फंसाया जाय। मजिस्ट्रेट ने मेरे कमरे के सामने आकर पूछताछ करनी शुरू कर दी। इस कोठरी में कौन रहता है ? क्या हो रहा है ? क्या यह कैदियों के खुले रहने का समय है ? इत्यादि प्रश्न पूछे गये और उनके उत्तर मजिस्ट्रेट की डायरी में नोट कराये गये। उस समय खां साहब (जेलर) और हैड वार्डर मेरी ओर ऐसी आंखों से देख रहे थे मानों कि कोई किला फतह कर लिया हो। काफला चला गया तो हम लोग परामर्श के लिये बैठे। सैयद साहब ने निम्नलिखित आशय का एक वक्तव्य अपनी चुस्त उर्दू में दिया :–

आप लोग इन मामलों में बिलकुल नये हैं। आप से यह परिस्थिति न संभाली जायगी। आप परामर्श छोड़कर मेरी बात मानें। आप की कोठरी में जितनी भी ऐसी चीजें हैं, जिन पर आपत्ति की जा सके, आप वह मुझे दे दीजिये। मैं इन मूजियों से निबट लूंगा।

यदि सैयद साहब की प्रतिभा और सूझ पर हमारा पूरा विश्वास न जम चुका होता तो मैं उनके प्रस्ताव को स्वीकार न करता, पर अब तक की घटनाओं ने सिद्ध कर दिया था कि वह जेल के नहले पर दहला है। इस कारण उनकी सलाह एकदम मानली गई और मेरे पास किताब, कपड़ा और खाने का जो भी ऐसा सामान था जिस पर जेल वाले आपत्ति उठा सकते थे, सब सैयद साहब की कोठरी में पहुंचा दिया। शतरंज तो एकदम ही नम्बरदारों द्वारा जेल से बाहर पहुंचा दिया गया था।

मजिस्ट्रेट को गये अभी दस मिन्ट भी न गुजरे होंगे कि तलाशी का परवाना लेकर एक असिस्टेन्ट जेलर हैड वार्डर और कई वार्डरों के साथ मेरी कोठरी पर आ धमके। मैं उनके स्वागत के लिए कोठरी के बाहर पहले ही से तय्यार खड़ा था। असिस्टेन्ट जेलर ने बड़ी शान से कहा—'प्रोफेसर साहब, आप की तलाशी का हुक्म है।'

मैंने लापरवाही से उत्तर दिया— 'दिखाइये, हुक्म को पढ़कर मैंने आंख के इशारे से उन्हें कोठरी की तलाशी लेने का अनुमति दे दी। बेचारों ने बड़ी महनत की। एक-एक कपड़ा झाड़ कर देख लिया—कोने की मिट्टी तक कुरेद डाली, परन्तु शतरंज न मिला और न कोई और ही आपत्तिजनक चीज हाथ लगी। तब तो खिसियाने होकर मेरे पास आये और पूछने लगे कि शतरंज कहां है ? मैंने उत्तर दिया—यह जानना आपका काम है, मेरा नहीं। एक मजे की बात यह थी कि जिस समय मजिस्ट्रेट साहब जेल के अन्दर घुसे थे उस समय मैं एक मुलाकात के सिलसिले में दरवाजे पर ही था। व्यक्तिगत रूप से मेरी सफाई के लिये यह काफी था। इस तरह निराश से होकर हैड वार्डर ने पैंतरा बदला, उसने असिस्टेन्ट जेलर से कहा कि साथ की कोठरी की तलाशी लीजिये। मालूम हुवा है कि सामान उसमें रखा गया है। असिस्टैन्ट जेलर इस सलाह को मानकर सैयद साहब के दरवाजे पर पहुंचा तो देखा कि सैयद साहब कम्बल पर लेटे हुए किताब पढ़ने में दत्तचित्त हैं। सैयद साहब ने सब सामान फर्श पर रख कर उस पर चटाई डाल ली थी और उस पर कम्बल डालकर आराम से लेट गये थे। उस समय असिस्टैन्ट जेलर से उनकी जो बात-चीत हुई, वह उन्हीं का हिस्सा थी। अपनी याददाश्त से मैं उसका आशय नीचे लिखता हूँ।

असिस्टन्ट जेलर—

CCO, Gurukul Kangri Collection

मेरे जीवन की झांकियां

जेल जीवन की दीक्षा (२)

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

★

'सैयद साहब, जरा बाहर तशरीफ लाइये। मैं आपकी कोठरी की तलाशी लूंगा।'

सैयद साहब—(लेटे ही लेटे) क्या आपके पास मेरी तलाशी का कोई कानूनी वारन्ट है?

'जी, उसकी जरूरत नहीं? मैं खुद वारन्ट हूं। आप बाहर आजाइये।'

'कानूनी वारन्ट के बगैर आपकी बात का कौड़ी भर भी दाम नहीं है। आप मेरी तलाशी नहीं ले सकेंगे।'

'आप को तलाशी देनी पड़ेगी। आप खुद न उठेंगे तो मेरे आदमी आपको उठा देंगे।'

'आप और आपके आदमी अगर मुझे हाथ लगायेंगे तो यहां लाशें बिछ जायंगी। आप सीधी तरह यहां से चले जाइये नहीं तो अच्छा नहीं होगा।'

इतना कह कर सैयद साहब ने मुंह दूसरी तरफ कर लिया। इस ठंडे दिमाग और हिमाकत के सामने जेल की फौज को हार माननी पड़ी। हारे हुओं के आन्तिम हथियार 'देख लेंगे, मजा चखा देंगे' इत्यादि प्रसिद्ध वाक्यों द्वारा अपनी झेंप को मिटाते हुए असिस्टैन्ट जेलर साहब दल-बल सहित ड्योढ़ी की ओर रवाना हो गये। उनके जाने पर मैंने सैयद साहब से पूछा कि भाई! तुम्हारी एक बात समझ में नहीं आई, अगर वह तुम्हें हाथ लगाते तो लाशें कैसे गिर जातीं। तुम्हारे पास ऐसा कौनसा तोप-खाना था। सैयद साहब ने उत्तर दिया कि यह गोदड़ और किसी जबान को समझते ही नहीं। गोदड़ लाठी से डरता है और किसी चीज से नहीं। फिर चाहे वह लाठी कागज की ही हो।

(५)

इस तरह जेल के अधिकारियों और जेल के पुराने पखेरुओं की कृपा से पहले महीने में हमें जेल जीवन की प्रारम्भिक दीक्षा प्राप्त होती रही। यदि उस समय दिल्ली की जेल इतनी गन्दी न होती और वहां का खाना ऐसा बदबूदार और रद्दी न होता तो शायद हमें अपने जेल के मित्रों की विशेष सहायता न लेनी पड़ती। परन्तु मैंने जेल में जाकर देखा कि वहां का मानसिक और भौतिक दोनों तरह का ही वातावरण बिल्कुल गन्दा था। अब्दुलरशीद के जनाजे के समय जो दंगा हुवा था, उसके १०० सौ से अधिक अपराधी अभी जेल में थे। उन पर हत्या और दंगे के मुकद्दमे चल रहे थे। जेल के अधिकारियों की मानसिक दशा यह थी कि उन पेशी वाले कैदियों को शाही महमानों की तरह रखा जाता था। उनके खान-पान और मुलाकातों पर कोई विशेष प्रतिबन्ध न था। इधर साधारण कैदियों के लिये जो भोजन बनता था, उसे खाना तो अलग, देखना और सूंघना भी उद्वेगकारी प्रतीत होता था। देखें तो मक्खियों की भरमार और सूंघे तो घोर दुर्गन्ध खा के बीमार हो या भूखे रहें, हमारे सामने यही समस्या थी। इस समस्या को हल करने के लिये जो उद्योग करना पड़ा उसने हमें बहुत-सी शिक्षा दी। उस सिलसिले में जेल के अधिकारियों और कैदियों के सम्बन्ध में जो अनुभव हुये उनसे मैंने यह अनुभव प्राप्त किया कि जिन्हें कानून निर्दोष समझता है और कानून की रक्षा का बोझ जिनके कंधे पर डालता है वह कितने कमीने और अपराधी मनोवृत्ति के व्यक्ति हो सकते हैं। साथ ही जिन्हें कानून अपराधी करार दे कर जेल में डाल देता है, उनमें मनुष्यता का और सहृदयता का ऊंचा भाव विद्यमान हो सकता है। यहीं पर मैंने इस सचाई को भी अनुभव किया कि हमारे आजकल के जेल अपराधों को रोकने या कम करने के साधन नहीं हैं, प्रत्युत अपराधों की शिक्षा देने के शिक्षणालय हैं। मेरे मन में उन अनुभवों को लेखबद्ध करने का जो विचार उस समय उत्पन्न हुआ था, वही मेरे 'अपराधी कौन?' नामक उपन्यास के रूप में प्रकट हुआ। इस उपन्यास की मौलिक कल्पना मैंने जेल में ही कर ली थी।

मैं दिल्ली जेल में लगभग सवा महीने तक रहा। उस समय इस जेल का जो समूहरूपी असर मेरे मन पर पड़ा वह मेरे उस वर्णन से विदित हो सकता है जो मैंने जेल से आने पर कलकत्ते की 'अमृतबाजार पत्रिका' में किया था। मैंने अंग्रेजी में दिल्ली जेल को (Varitable Hell) इस विशेषण से विशेषित किया था। वस्तुतः वह बीसवीं शताब्दि का घोर नरक था।

———

वैद्यरत्न
पं० डी० गोपालाचार्लू
का
जीवामृतम
स्त्री पुरुष और बालकों में पौरुष, बल और चेतना शक्ति का संचार करने के लिए अर्धशताब्दी से विख्यात है
आयुर्वेद आश्रमम लि०
टी० नगर, मद्रास।
उत्तर भारत के लिए चीफ स्टोकिस्टस्
ए न सा ट्रे डिं ग कं०
चांदनी चौक, दिल्ली।

सन्यासियों की गुप्त बूटियां
इस पुस्तक में सैकड़ों ऐसी जड़ी बूटियों के गुप्त रहस्य प्रकट किये गये हैं, जिनसे सन्यासियों की धाक जमी हुई है। हालांकि इनमें से अधिकांश बूटियां आपको जंगल, खेत बागीचों और पंसारियों की दुकानों पर भी मिल सकती हैं, जिनसे आवश्यकता पड़ने पर स्त्रियां भी सिर से पांव के नख तक के सभी रोगों का इलाज घर में ही कर लिया करेंगी। इस पुस्तक को पढ़ लेने के बाद आप इस युग के धन्वन्तरि समझे जायेंगे। रोगियों का तांता बधा रहेगा। कुछेक बूटियों की सूची—
लाख-लाख रु० के प्रयोग—(१) ऐसी बूटी कि जिसकी लकड़ी कान में लगा देने से सर्प काटे का विष मुख द्वारा निकल जाता है, (२) वह बूटी जिससे गूढ़ गर्भ ५ मिनट में निकल जाता है, (३) मधुमेह की अक्सीर बूटी, (४) दुबले पतले आदमी को मोटा ताजा बना देने वाली बूटी, (५) सात दिन में नपुन्सक को मर्द बनाने वाली बूटी, (६) दमे की अद्भुत बूटी, (७) वह बूटी-जिसके रस में अंगुली डुबाने से तत्काल ज्वर उतर जाता है, (८) गर्भ रोक बूटी, (९) उपदंश को ७ दिन में मिटाने वाली बूटी, (१०) निमोनियां की बूटी, (११) वह बूटी जिससे बन्ध्या के पुत्र पैदा हो। ऐसी ही सैकड़ों बूटियों का वर्णन इसमें है, जिनसे चमत्कार दिखा कर आप सिविल सर्जनों को दंग कर सकते हैं। मूल्य २॥) डाकखर्च ।=)
पता—रसायन फार्मेसी (५) संगरिया (बीकानेर)

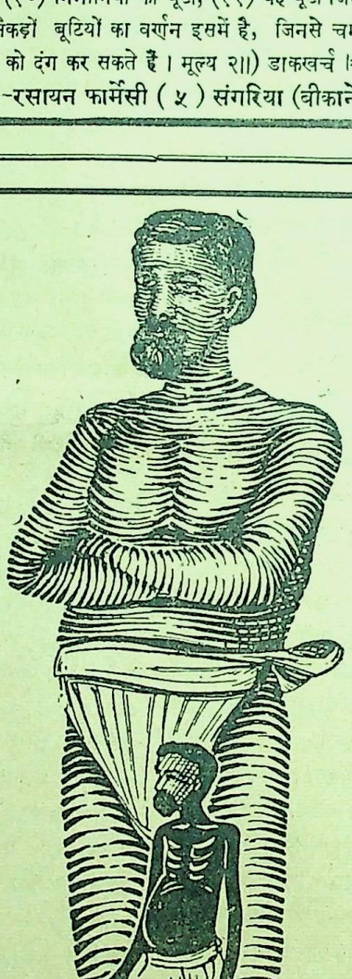

जूडी-ताप
(REGD.)
बुखारों की बेजोड़ दवा
डाबर (डा० एस० के० बर्मन) लिमिटेड
पो० बक्स न० ५५४ कलकत्ता

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

निहत्थे शिकारी

[एक वनचर]

[गतांक से आगे]

बच्चे को इस प्रकार खींचना वस्तुतः उसे मृत्यु के मुंह में धकेलना था। यह सोचा गया कि बच्चे को एक बांसों के स्ट्रैचर पर बांध कर कंधों पर ले जाया जाय। पर यह भी तो सम्भव न था। नीचे हाथी थे, ऊपर पहाड़ी पर एक भी बाँस न था। स्ट्रैचर कैसे बने? लाचार उसे यों ही उठाकर ले चलना पड़ा। अपने स्थान तक पहुंचने के लिये बीच में चार बार घाटियों को लांघने के लिये ऊपर नीचे चढ़ना और उतरना पड़ता था। इसका मतलब था, हर बार अपने को हाथियों के हाथ में सौंपना। लाचार एक युक्ति सोची गयी। दल को दो भागों में विभक्त कर दिया गया। एक दल को बच्चे सहित आगे को भेज दिया। बच्चे के चीत्कार को दबाने के लिये पीछे रहे दल ने भयंकर शोर मचाना शुरू किया। अपनी सारी शक्ति लगा गले को फाड़ कर इन लोगों ने जङ्गल के सम्पूर्ण वातावरण को प्रकम्पित कर दिया। हाथियों का अपना गर्जन और चीत्कार इस शोर में मिलकर एकाकार होता जा रहा था।क्रोध के मारे चट्टानों पर बार-बार आक्रमण करने पर उन अडिग चट्टानों पर किया गया वार चींटी के पाद-प्रहारों से अधिक घातक सिद्ध नहीं हुआ। जब प्रथम दल दो घाटियों को पार करके पहाड़ की चोटी पर पहुंच गया तो हाथी स्वयं अपने स्थान से घूम गये।

हम लोग समझे बला टल गई। सिंहला दल भी हमारे साथ आ मिला। हम लोग अपनी विजय से प्रसन्न होकर आगे बढ़ने लगे। अन्धकार बढ़ रहा था, इसलिये हमारे न दीखने की सम्भावना से भी हम प्रसन्न थे। तीसरी घाटी को हम लोग पार कर रहे थे कि अचानक पीछे से भगदड़ की आवाज आयी। हमारा शत्रु फिर हमारे सिर पर आ पहुंचा था। हम लोगों ने अभी ऊपर चढ़ना प्रारम्भ ही किया था कि यह आफत फिर सिर पर आ पहुंची। एक बार फिर हमारे सामने यमराज अपना मुंह बाये आ खड़ा हुआ। पसीने से लथपथ, होश हवास का पता नहीं, बच्चे के बोझ से थके हुए;पर सारा परिश्रम तो एक मिनट में ही बेकार होने को था। इस विभीषिका के समय हमारे नास्तिक मनों में न जाने कहां से भगवान आ खड़ा हुआ। एक नये उत्साह का संचार हुआ अपनी सारी शक्ति बटोर कर बच्चे को आठ कंधों पर डाल कर पहाड़ी की ओर भागना शुरू किया और किसी भी प्रकार उसे चोटी के ऊपर ले जाने का संकल्प कार्यान्वित करना प्रारम्भ किया। पहाड़ी की आधी ऊंचाई तक पहुंच चुके थे, ऐसी सकरीली पग-डण्डी से गुजर रहे थे दोनों ओर ढलान थी। एक ओर नीचे गुस्से के मारे पागल हुए हाथी किसी भी क्षण हमें मिट्टी में मिला देने को उतारु थे तो दूसरी ओर भयंकर रूप से गहरा— जिसका तल भी नहीं दीखता था — खड्ड था।

'हे भगवान्!' अचानक ही एक साथी सबसे आगे था, चिल्लाया। सब लोग चौंक कर रुक गये। नयी विपत्ति से हमारे हृदय सहम गये। उस डेढ़ फुट की पगडंडी पर बीचों-बीच कुछ ऊपर की ओर उठा हुआ एक पौदा था, जिस पर जङ्गली मधुमक्खियों का छत्ता था। मक्खियों के विश्राम में जरा सा भी खलल पहुंचा कि उन्होंने हमारे पर हल्ला बोला। दूसरी ओर अंधकार बिना निमन्त्रण पाये बढ़ता ही आ रहा था। उस विकट समय में भी किसी साथी की समझ बूझ पर पत्थर नहीं पड़े थे। सम्भवतः दो या तीन सैकंड में एक दूसरे की ओर देखकर बिना कुछ बात किये दो साथी उस पौधे के नीचे लेट गये और धीमे से सरक कर पौधे के दूसरी ओर जा खड़े हुए, वहां से रस्सा हमारी ओर बढ़ा दिया। बच्चे पर उस रस्से को लपेट कर उसे लिटा कर हम स्वयं भी लेट गये, धीमे धीमे रस्सा दूसरी ओर खींचा जाने लगा, पीछे से हमारा धक्का था, सुविधा पूर्वक पार हो गये। चोटी के ऊपर ऊपर हम लोग चल रहे थे, नीचे हमारे शत्रु।

अन्धकार बढ़ चला था, रास्ता तक दीखना कठिन हो चला। बगल में लटकायी छः सैल की लम्बी टार्च ने काम दिया। उसे ज्यों ही जलाया, तो हाथी एक भयंकर चीत्कार के साथ पीछे की ओर भागे। अनायास ही हाथी भगाने का टोटका हाथ लगा। इसी के सहारे अंधेरे में खोजते खोजते मचान के नीचे आ पहुंचे। इस समय रात के लगभग दस बज रहे थे। उसी पेड़ की जड़ में रस्सों से बच्चे को बांध दिया और एक आराम की सांस लेकर पेड़ के ऊपर चढ़ गये, यहां हमने बहुत बड़ी मात्रा में छोटे बड़े पत्थर इकट्ठे कर रखे थे।

प्रतिदिन इस मचान पर रात्रि को सोते समय शान्ति का साम्राज्य छाया रहता था, कभी कभी बीच में किसी जन्तु की आवाज यद्यपि शांति भंग कर देती थी। पर आज तो हमारी सारी दुनियां में ऐसा कोलाहल था मानो प्रलय साक्षात रूप में आ प्रगट हुई हो। बच्चे के चीत्कारों से, हथिनी की चिंघाड़ से हाथियों के अनर्गल रौरव से, हमारी चिल्लाहट से जंगल आतंकित होउठा था। इस सम्पूर्ण कोलाहल में कभी शेर की गर्जना, गीदड़ों की हुंआ हुंआ, काकड़ों का कर्णकटु चीत्कार भी आ सम्मिलित होते थे। अपने पागलपन में हाथी जो कुछ सामने पाते उसे उखाड़ फेंकते, पैरों से अच्छी प्रकार रौंदते। सरदार हाथी पागल हो कर कभी तो अपने दांतों को पेड़ों की जड़ों में धंसाता, कभी व्यर्थ ही चट्टानों पर जा मारता और चोट खा कर चिल्लाता चिंघाड़ता पीछे लौट आता। सामूहिक रूप से हाथी उस नुकीली पहाड़ी पर हमला कर के उसके कण कण को धूल में मिला देने का अथक प्रयास कर रहे थे। उसके ऊपर पंहुच कर अपने उसी नन्हें परन्तु प्यारे बच्चे को छुड़ाने के लिये कुछ भी करने को तैयार थे। ऊपर हम बैठे थे, नीचे पेड़ की जड़ में बंधा बच्चा अपनी रक्षा के लिये मां को बुला रहा था, बिलकुल नीचे नाले में उसके रक्षक थे।

अचानक एक शेर – सामान्य नहीं परन्तु असामान्य– दहाड़ता हुआ वहां आ पहुचा। हम लोग चौंके; शेर के हाथों यह बच्चा हमारे देखते देखते मारा जाय? हमारा शिकार और यह ले जाय? असम्भव था, एक गुस्से की लहर हम लोगों में दौड़ गयी। हाथी भी अपने इस सदा के शत्रु के हाथों में अपने बच्चों को चले जाने दें, यह उनके लिये भी असाध्य था। पता नहीं किस दैवीय शक्ति से सारे के सारे हाथी पहाड़ी पर चढ़ दौड़े शेर ऊपर की ओर उछला. हम लोगों ने ताक कर एक शिला उस के सिरपर दे मारी। निशाना ठीक बैठा उसने बन्दूक की गोली से बढ़कर काम किया। शेर उलट कर नीचे गिरा, एक शिला पर जा कर उसका सिर टकराया थोड़ी देर तो बेहोश सा पड़ा रहा, पर अगले ही क्षण संभला। इसी बीच हाथी भी उसकी ओर लपके, गुर्राता हुआ घायल शेर मैदान छोड़ कर भागा। सम्भव था कि शेर और मुकाबला करता परन्तु जमीन पर पटकी खाते समय उसे जिस तीव्र चौंधिया देने वाले टार्च के प्रकाश का सामना करना पड़ा उससे घबड़ा गया।

अब, हाथियों ने पहाड़ी के ऊपर तक आने की तरकीब खोज निकाली थी। सब ने सब बच्चे के निकट पहुंच गये थे। यदि एक झटका उन रस्सियों में लगता तो उनका टूटना अवश्यम्भावी था। हथिनी ने अपनी सूंड बच्चे पर डाल दी थी, उसे वह खींचना ही चाहती थी। थोड़ी देर के लिये किंकर्तव्य विमूढ़ता सी छा गई। सारी आशाओं पर पानी पड़ने वाला था। यह अन्तिम प्रयास था, जिसकी सफलता और असफलता पर हमारे शिकार का भविष्य निर्भर था। पत्थर और शिलायें प्रायः हमारे पास चुक गई थी, एक टार्च और दो तीन भालों के अतिरिक्त कुछ शेष न था। ऐसे ही समय दो साथियों ने जान पर खेलने का निश्चय किया। उनकी कमर और बगल में मोटे मोटे रस्से बांध दिये गये। हाथों में भाले दे कर रस्सों से उन्हें नीचे की ओर लटका दिया। धीमे धीमे रस्से नीचे की ओर चलने शुरु हुए,जब ठीक हाथियों की पीठ के ऊपर वे दोनों पहुंच गये तो रस्से थाम लिये गये। एक...दो...तीन... के साथ हथिनी के माथे पर दो भालों ने एक साथ वार किया और ऊपर से पानीके पड़े ने। हथिनी को अचानक चिंघाड़ के साथ भगदड़ मच गई। हम लोगों ने भी परिणाम की बिना प्रतीक्षा किये साथियों को इतना ऊपर खींच लिया कि हाथियों की सूंड के पंहुच के बाहर हो जांय। इस भयानक परन्तु अत्यन्त साहसिक कृत्य का परिणाम यह हुआ कि दो तीन हाथी तो उस भगदड़ के परिणामस्वरूप पहाड़ी से नीचे की ओर लुढ़क गये, शेष कराहते, चिल्लाते वापिस नाले की ओर भागे, ऐसे भागे कि फिर लौटने का नाम नहीं लिया।

सारी रात शेर और हाथियों के साथ युद्ध करते बीती। एक भी पलक मारे बिना जब हाथियों के झुण्ड से छुटकारा पा कर कुछ ऊंघने की तैयारी में हुए तो जंगली मुर्गे ने प्रभाती स्वर में हमारी

[शेष पृष्ठ १६ पर]

[हम अपनी छुट्टियों का उपयोग जंगल में घूम-घूम कर करते थे। इसी शौक के कारण जंगल में एक पहाड़ी की नुकीली चोटी पर वट-वृक्ष पर हम लोगों ने मचान भी बांध लिया। इस मचान पर बैठकर रातों हम शिकार की प्रतीक्षा किया करते, परन्तु असफल होकर अपने स्थानों को लौट जाते। एक दिन जंगल में घूमते घामते पहाड़ियों के नीचे हमने एक हाथियों का झुण्ड देखा। हमारी शैतान बुद्धि जाग उठी, शोर मचाकर और केवल पत्थरों की बौछार करके हमने हाथियों को तो मार भगाया, पर पीछे एक हथिनी अपने नवप्रसूत बच्चे के साथ रह गई। वह भी हमारे आक्रमण का सामना न कर सकने के कारण भाग गई। बच्चे को रस्से से बांधकर हम पहाड़ के ऊपर खींच लाये और अपने मचान की ओर ले चले]

CCO, Gurukul Kangri C...

गांधी जी

म० गांधी से महत्वपूर्ण भेंट

जातपांत, हिन्दी हिन्दुस्तानी और सत्यार्थप्रकाश पर चर्चा

[ले० —श्री धर्मदेवजी]

[पं० धर्मदेवजी वेदवाचस्पति हिन्दी के उत्साही कार्यकर्ता, समाज-सुधारक तथा एक दृढ़ आर्यसमाजी हैं। वे जातिभेद-निवारक संघ के उपाध्यक्ष, हिन्दी रक्षा-समिति के प्रधान और 'सार्वदेशिक' के सम्पादक हैं। आपने म० गांधी से अपनी मुलाकात इन्हीं दृष्टियों से की थी। बातचीत बहुत खुलकर हुई। उसी भेंट का इस लेख में वर्णन है। पाठकों के लिए उनकी बातचीत उपयोगी और रोचक होगी। इसलिए वह नीचे दी जाती है :—]

प्रणाम करने के पश्चात् मैंने पूज्य महात्माजी से पूछा कि आपको स्मरण है कि यरवदा जेल में मैंने आप से भेंट की थी, क्या आप पहचानते हैं? उन्होंने कहा—खूब अच्छी तरह से।

मैंने उन से पूर्व जाति भेद निवारक संघ की चर्चा करते हुये (जिसकी नियमावली उनके पास भेजी जा चुकी थी) उसके व्रत-पत्र (सदस्यता फार्म) आदि का वर्णन किया और उनका आशीर्वाद मांगा। उन्होंने कहा: मेरे आशीर्वाद की पृथक् आवश्यकता ही क्या है? वह तो जैसे कि लिख चुका हूं प्रत्येक शुभ आन्दोलन के साथ विद्यमान ही है। मैंने कहा– यह तो आपकी निरभिमानिता है। आप जैसे महात्माओं का आशीर्वाद लोग चाहते हैं। आपकी इससे पूर्ण सहमति तो है? उन्होंने कहा कि मेरी इससे पूर्ण सहमति है। मैं तो अब और भी आगे जाता हूं और कहता हूं कि जन्म से भंगियों तक के साथ उच्च जाति वालों को विवाह कर लेना चाहिये।

हिन्दी और हिन्दुस्तानी

इसके पश्चात् मैंने अपनी 'हमारी राष्ट्र भाषा' पुस्तक का जिक्र करते हुये (जिसकी प्रति पहले भिजवा चुका था) केन्द्रीय हिन्दी रक्षा समिति के उद्देश्य तथा कार्य से जो डाकखानों में हिन्दी के साथ अन्याय को दूर करने के लिये किया जा रहा है, महात्माजी को परिचित कराया। इस पर उन्होंने आश्चर्य प्रकट किया कि हिन्दी के साथ इस प्रकार का अन्यायपूर्ण व्यवहार होता है। उसके बाद मैंने कहा कि आपने अब जिस हिन्दुस्तानी का प्रचार प्रारम्भ कर रक्खा है, उसमें आपका उद्देश्य शुद्ध और यह होगा कि सरल हिन्दी को अपनाया जाये, पर इसका परिणाम हिन्दुस्तानी के नाम पर उर्दू का प्रचार हो रहा है। पं० जवाहरलालजी जैसे मान्य नेता और श्री हरिभाऊ उपाध्याय जैसे हिन्दी के अच्छे लेखक भी उर्दू शब्दों से भरी हुई भाषा का प्रयोग करने लगे हैं। इसके उदाहरण मैंने पं० जवाहरलाल जी के ७-९-४६ के ब्राडकास्ट भाषण और हरिभाऊ उपाध्याय जी के पं० जवाहरलालजी की आत्म-कथा के हिन्दी अनुवाद से दिये। मैंने कहा कि आपको यद्यपि उर्दू का अच्छा अभ्यास नहीं, तो भी आप उर्दू शब्दों के प्रयोग का पर्याप्त यत्न करते हैं। हमें तो यह प्रवृत्ति अच्छी प्रतीत नहीं होती। आप जो यह कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति हिन्दी-उर्दू भाषाओं और देवनागरी अरबी दोनों लिपियों को सीखे यह अव्यवहार्य है। अपनी प्रान्तीय भाषा, राजभाषा अंग्रेजी के अतिरिक्त दोनों भाषाओं को सीखने में काफी कठिनाई सर्वसाधारण को उपस्थित आयेगी।

वे कहने लगे– इसमें हानि भी क्या है? मैंने कहा इसमें हानि की सम्भावना यह है कि मुसलमान तो आपकी हिन्दी सीखने की बात को मानेंगे नहीं। हिन्दू आप पर अधिक श्रद्धा के कारण उर्दू सीखना शुरू कर देंगे, जिस का परिणाम बुरा निकलने की आशा है, क्योंकि कुछ समय बाद उर्दू जानने वालों की संख्या अधिक हो जायेगी, क्योंकि इस आधार पर फिर उर्दू के राष्ट्रभाषा होने का दावा किया जायेगा।

महात्माजी ने कहा कि आर्यसमाजियों को ऐसे डरना तो नहीं चाहिये। उर्दू हिन्दी का मुकाबला क्या कर सकेगी? लिपियों के विषय में भी यही बात है। क्या तुमने कभी यह देखा है कि देवनागरी लिपि को जानने वालों की संख्या क्या है और उर्दू लिपि को जानने वालों की कितनी? मैंने उत्तर दिया। यह लगभग ७०प्रतिशत तक और २० प्रतिशत तक है। तब उन्होंने कहा फिर इनका मुकाबला ही क्या है, जिसमें डरने की बात हो। साथ ही देवनागरी लिपि की अपनी वैज्ञानिक शुद्धता और महत्व है, जिसके कारण उर्दू, रोमन लिपि आदि उसका मुकाबला नहीं कर सकती। मैंने कहा कि मैं दक्षिण में बहुत वर्ष रहा हूं और कर्णाटक आदि भाषाओं का मुझे ज्ञान है। इन सब भाषाओं में संस्कृत शब्द बहुत अधिक हैं, अतः संस्कृतनिष्ठ हिन्दी ही राष्ट्र भाषा हो सकती है, जिसकी कसौटियां मैंने 'हमारी राष्ट्र भाषा' से पढ़ कर सुनाई। मैंने यह भी कहा कि महात्माजी, आप क्षमा करें, हम लोगों का यह विचार है कि आप अनजाने मुसलमानों की उर्दू के स्थान पर हिन्दुस्तानी शब्द के प्रयोग की चाल में फंस गये हैं। अ० भा० मुस्लिम शिक्षा सम्मेलन में जुलाई सन् १९३७ में पास किया गया प्रस्ताव मैंने उन्हें सुनाया जिससे महात्माजी को आश्चर्य हुआ। मैंने पुनः निवेदन किया कि आपको हिन्दुस्तानी शब्द की जगह सरल हिन्दी शब्द का ही प्रयोग करना चाहिये। महात्माजी ने बताया कि अब भी बहुत से मुसलमान मुझ से बहुत चिढ़ते हैं और कहते हैं कि गांधी बड़ा दुष्ट है, हिन्दुस्तानी का नाम लेकर यह हिंदी और देवनागरी लिपि का ही प्रचार चाहता है। वह हिन्दुस्तानी का नाम लेता है, उर्दू का नहीं। उसके भाषण में संस्कृत के ही शब्द अधिक होते हैं। इस सम्बन्ध में उन्होंने नागपुर की एक सभा का निर्देश किया, जहां कईयों ने इस तरह की बातें कहीं थीं। महात्माजी ने कहा मैं यह चाहता हूं कि लोग हिंदी व उर्दू में पत्र व्यवहार करें अंग्रेजी में नहीं। यह अंग्रेजी का मोह तो जाना ही चाहिये। मैंने कहा–यह तो अच्छी बात है कि आप अंग्रेजी का मोह लोगों से छुड़ा रहे हैं, पर उसके स्थान में हिन्दी का प्रचार पूर्ववत् आपको करना चाहिये। हिन्दुस्तानी नाम भ्रमजनक है और उसके नाम पर उर्दू का ही प्रचार हो रहा है। यह खेद की बात है।

साकार या निराकार राम?

इसके पश्चात् मैंने 'रामधुन' के विषय को लेते हुए कहा कि हम सब आपके इस कार्य के लिये कि इस नास्तिकता के युग में आप प्रार्थना सभादि द्वारा आस्तिकता का प्रचार कर रहे हैं अत्यन्त कृतज्ञ हैं और इसे आपका एक बड़ा उपकार मानते हैं, पर हम उनमें कुछ ऐसे परिवर्तन चाहते हैं, जिससे सब आस्तिक भाग ले सकें। उदाहरणार्थ मैंने कहा कि मैं आपकी प्रार्थना-सभा में गत रविवार ८ सितम्बर को सम्मिलित हुआ था और उसमें पहले भी कई बार सम्मिलित हो चुका हूं किंतु जहां उपनिषद् गीता श्लोकों के पाठादि में आनन्द से सहर्ष भाग लेता हूं, वहां आपकी 'रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम' इस रामधुन में मैं अपनी

पं० धर्मदेवजी

अन्तरात्मा के अनुकूल भाग नहीं ले सकता। मैं उस समय गायत्री जपादि करता रहता हूं। महात्माजी ने हंसते हुए कहा कि यह तो अच्छी बात है कि तुम गायत्री जप करते हो, मैंने कब सब को रामधुन गाने के लिए बाधित किया है पर मैंने यह अवश्य कहा है कि मेरा तात्पर्य इस भजन में राम से दशरथ पुत्र राम का नहीं, किंतु सर्वव्यापक निराकार परमेश्वर का है। मैंने कहा– आप ऐसा कहते जरूर हैं और आपके हरिजन में इस आशय के लेख भी लिखे थे, जिनको मैंने ध्यान पूर्वक पढ़ा है। किन्तु यदि राम को 'रमन्ते योगिनो स्मिन्' अथवा 'रमते सर्वेषु भूतेषु' इस व्युत्पत्ति के अनुसार ईश्वर के हजारों नामों में से एक मान भी लिया जाये, तो भी रघुपति, राघव, सीताराम के विशेषण तो निराकार ईश्वर पर घट ही नहीं सकते, अतः यह स्पष्टतया दशरथ पुत्र रामचन्द्रजी का ग्रहण है। मैंने यह भी स्पष्ट किया कि हम आर्य लोग भी रामचन्द्रजी के लिये बड़े आदर का भाव रखते हैं और मैंने स्वयं उनकी प्रशंसा में भजन बनाये हैं, पर परमेश्वर के स्थान पर उनका स्मरण हम नहीं कर सकते। क्यों न आप, 'अशरण शरण शान्ति का धाम एक सहारा तेरा नाम', इस प्रकार के भजन को, जिसको ताल के साथ रामधुन की तरह ही गाया जा सकता है और जिसमें सब आस्तिक बिना किसी संकोच के सम्मिलित हो सकते हैं, अपनायें अथवा यदि राम-नाम ही आपको प्रिय है तो क्यों न वर्तमान रामधुन में इस प्रकार का परिवर्तन कर लें कि 'जगपति सब में व्यापक राम, पतित पावन निर्मल राम।'

उन्होंने कहा कि मैं तो राम से सर्वव्यापक ईश्वर का ही ग्रहण करता हूं, दशरथ पुत्र राम का नहीं। शेष रघुपति, राघव, सीतापति ये विशेषण सर्वव्यापक व निराकार राम (ईश्वर) पर कैसे लग सकते हैं,

[शेष पृष्ठ १६ पर]

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

चवन्नी वाले — ले० श्री संतोष-नारायण नौटियाल; प्रकाशक — श्री मदनमोहन बी० ए० निष्काम प्रेस, मेरठ। मूल्य १॥)

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक की १६ कहानियों का संग्रह है। कुछ कहानियों के शीर्षक यह हैं — चवन्नी वाले, श्रेष्ठ कौन, सुहागरात, दो रूप, मंगला का व्रत, बांके, और पत्र जो कभी न खुलेंगे। लेखक अपने आस-पास की घटनाओं का बारीकी के साथ आंखें खोलकर निरीक्षण करता है, यह इस पुस्तक की कई कहानियों से प्रतीत होता है। इसीलिए अनेक कहानियों में वस्तुस्थिति का वर्णन सुन्दर बन पड़ा है। चवन्नी वाले में लफंगों का चित्र, सुहागरात में देवेन्द्र की चिन्ता, आंख का शहतीर में लारी के यात्रियों का वर्णन आदि वस्तुतः स्वाभाविक हैं। लेकिन 'नया लेखक' 'उनका नाम' आदि कुछ कथाओं में अस्वाभाविकता भी है। बांके और दो रूप में आजकल के बाबू क्लास के पतन का चित्रण खींचा है, वह अत्यन्त सजीव और मनोरंजक है, लेकिन अन्त में इसे पढ़कर पतन के प्रति विरक्ति पैदा हो, इसकी ओर लेखक ने ध्यान नहीं दिया। फिर भी कहानियां अच्छी हैं।

नरक का कीड़ा — ले० श्री अरुण। प्रकाशक और मूल्य वही।

इस पुस्तक में भी लेखक की १६ कहानियों का संग्रह है। कहानियों में कथानक की कौतूहल प्रधानता न होते हुए भी हृदय में विभिन्न भावों के संघर्ष का चित्रण करने का प्रयत्न किया गया है।

— कृष्ण

खून की होली — (खंड-काव्य) कवि – श्री रामकुमार चतुर्वेदी; प्रकाशक – ज्वाला कार्यालय, हाथरस। मूल्य आठ आना : पृष्ठ ३२।

४६' १२ जनवरी को ग्वालियर स्थित जीवाजीराव काटन मिल में हुई मजदूरों की हड़ताल और उस पर हुए रक्तपात की पृष्ठभूमि पर सुकवि ने अपने विचार सुन्दर ढंग से दृश्य रूप में उपस्थित किये हैं। कवि की वाणी में शक्ति है, पर प्रकाशक द्वारा कलाकार की सुन्दर रचना को भौंडे रूप में पाकर थोड़ा दुःख होता है। जिस प्रकार, कवि द्वारा आरोपित मिल मालिकों ने मजदूरों का शोषण किया था, ठीक उसी तरह प्रकाशक ने ३२ पृष्ठों की अपरिष्कृत छपित पुस्तिका का मूल्य आठ आने रखकर पाठकों का शोषण किया है। नवोदित कवि की कला का भविष्य सुन्दर दिखता है।

— एस० भारद्वाज

श्री श्रवणनाथ ज्ञान-मंदिर हरद्वार, का द्वि-वार्षिक विवरण — जब से महन्त

साहित्य परिचय

◆ परिचय के लिये प्रत्येक पुस्तक की दो-दो प्रतियों का आना आवश्यक है, अन्यथा केवल प्राप्ति स्वीकार किया जायगा। —सम्पादक ◆

शान्तानन्दजी श्रवणनाथ हरिद्वार की इस प्रसिद्ध संस्था के गद्दीनशीन हुए हैं तब से उन्होंने इसके धन का सदुपयोग लोक-कल्याणकारिणी प्रवृत्तियों में करके इस संस्था की ख्याति को भारत-व्यापक बना दिया है। प्रस्तुत विवरण संस्था के जून सन् १९४४ से मई १९४६ तक दो वर्ष के कार्यों का है। इससे ज्ञात होता है कि वाचनालय, पुस्तकालय, सभा-भवन और श्रवणनाथ पार्क आदि पुराने कार्यों को आगे बढ़ाने के अतिरिक्त, इन दो वर्षों में महन्त शान्तानंदजी ने श्रवणनाथ आयुर्वेदिक पाठशाला, श्रवणनाथ धर्मार्थ औषधालय और श्रवणनाथ साधु महा-विद्यालय इन तीन नये कार्यों को अपने हाथ में लिया। ये तो हुए श्री श्रवणनाथ ज्ञानमन्दिर की ओर से निरन्तर चलने वाले कार्य; इनके सिवाय महन्त शान्तानन्दजी ने इन दो वर्षों में मनसादेवी तथा चण्डीदेवी मन्दिरों का जीर्णोद्धार वीरभद्र के पुल का निर्माण और हनुमान-गढ़ी का पक्का फर्श बनवाने के भी कार्य किये।

अधूरी नारी — ले० श्री उदयराज-सिंह। प्रकाशक — श्री राजराजेश्वरी-साहित्य मन्दिर, सूर्यपुरा, शाहाबाद (बिहार)। पृष्ठ संख्या २६८। मूल्य २॥)

यह एक मौलिक सामाजिक उपन्यास है, जिसमें इस प्रश्न का उत्तर देने का यत्न किया गया है कि नारी की पूर्णता कैसे और किससे होती है। उपन्यास का आधार दो नारियां हैं, जिनमें एक तो वेश्या की कोख से जन्म लेकर भी पुराने हिन्दू विचारों की ओर पुराने रीति रिवाजों पर आचरण करने वाली है; और दूसरी सर्वथा नवीन आचार-विचार की है जो सर्वत्र स्वच्छन्दतापूर्वक विचरने, किसी बन्धन में न बंधने और नाचरंग तथा सैर-सपाटे आदि में ही जीवन की सार्थकता मानती है। लेखक ने दिखलाने का यत्न किया है कि दोनों ही नारियां अधूरी हैं। एक ने बार बार विवाह की प्यास लगने पर भी विवाह नहीं किया और दूसरी विवाह करके भी गृहस्थ-बन्धन में अपने को न बांध सकने कारण सुखी नहीं हुई। अन्त को पहली ने तो अपना जीवन लोक-सेवा पर समर्पित करके और एक बालक को गोद लेकर अपनी वासनाओं की तृप्ति का मार्ग खोज निकाला, परन्तु दूसरी जीवन भर अतृप्त ही भटकती रही।

कहानी का लक्ष्य तो ऊंचा है, परन्तु कथा में उसका प्रवाह जैसा चाहिये था वैसा नहीं बन सका। यह रचना सम्भवतः लेखक का प्रथम प्रयास है। परन्तु आशा होती है कि वह इस दिशा में सफल हो सकेंगे।

गुलाम गोआ — लेखक श्री श्यामविजय पाण्डेय। मिलने का पता— अभिनव-प्रकाशन, ४६६ जनरलगंज, कानपुर। पृष्ठ संख्या ५०। मूल्य आठ आना।

भारत के पश्चिमी तट पर अवस्थित पुर्तगीज राज्य गोआ के विषय में पिछले दिनों समाचार पत्रों में खासी चर्चा हुई है। म० गान्धी प्रभृति भारतीय नेता उसे भारत का ही अंग बतला कर उसके निवासियों को वैसे ही स्वराज्य का अधिकारी बतलाते हैं जैसे के ब्रिटिश भारत के निवासी हैं, परन्तु वहां के पुर्तगीज शासक उसे भारत का अंग तक नहीं मानना चाहते और दावा करते हैं कि गोआ निवासियों को पूर्ण नागरिक स्वतन्त्रता के अधिकार प्राप्त हैं। प्रस्तुत पुस्तिका उसी गोआ के विषय में है। उसमें इस प्रदेश का संक्षिप्त इतिहास, यह किस प्रकार पुर्तगीज शासन में गया, वहां की वर्तमान अवस्था, वहां का प्राकृतिक सौन्दर्य और वहां की जनता की दरिद्रता तथा परतंत्रता आदि विषयों का मनोरंजन वर्णन है। घण्टा-आधा घण्टा तक पढ़ने की यह एक मनोरंजक सामग्री है।

— रामगोपाल

आर्य्यमित्र — [आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त-प्रान्त का साप्ताहिक मुख पत्र] सम्पादक — श्री पं० हरिशंकरजी शर्मा। वार्षिक मूल्य ५ रु० और एक प्रति का डेढ़ आना। लखनऊ।

बारह वर्ष पश्चात् 'आर्यमित्र' को एक बार पुनः प० हरिशंकरजी की प्रतिभा उत्साह और उमंग लगन भरे सहयोग का योग मिला है। सम्पादकीय 'मेरा निवेदन' से यह स्पष्ट है कि सम्पादक खायेगा अपने घर और कार्य करेगा पत्र का, इस निष्काम सेवा और महान् त्याग के लिये शर्माजी बहुत-बहुत बधाई के पात्र हैं।

आर्यमित्र का रंग-रूप बदल गया है। होने वाले परिवर्तनों में छपाई से लेकर वाचन-सामग्री तक में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ है। प्रथम अंक में ही श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' का सर्व श्रेष्ठ गीत और पं० बनारसीदास चतुर्वेदी, वासुदेवशरण अग्रवाल, नारायण स्वामी, प० धर्मदेव, श्रीराम शर्मा [सं०–विशाल भारत], डा० रामचरण, महेन्द्र बाबू गुलाबराय, हरिमोहनलाल श्रीवास्तव आदि विद्वानों और लेखकों के पठनीय लेख और आर्य-सामाजिक जगत की हलचलों का परिचय आदि सामग्री को सुसज्जित रूप में उपस्थित किया गया है।

इस सहयोगी का सत्कार करते हैं और आर्यमित्र में नव-प्राण-संचार हो यह तो प्रसन्नता की बात है; पर देखो घोड़ा घाससे यारी करके कितने दिन जीवित रहता है और उसकी चाल में किसी प्रकार का अंतर नहीं आता !

— बालमुकुन्द

विजयगढ़ निवासी

भारत विख्यात वैद्यराज बांकेलाल गुप्त प्राणाचार्य्य
भूतपूर्व मैनेजिंग प्रोप्राइटर धन्वन्तर औषधालय
एवं भूतपूर्व सम्पादक धन्वन्तरि
ने

प्राणाचार्य्य भवन

नामक एक वृहद संस्था २००००० दो लाख के मूल धन से स्थापित की है जिसके लिमिटेड होने के लिये कागजात तैयार हो रहे हैं। शीघ्र ही लिमिटेड हो जायगी। शेयर प्रायः सब बिक चुके हैं। इस संस्था में आयुर्वेदीय, पेटेन्ट और नवीन प्रणाली से प्रस्तुत औषधियां, वैद्यक पुस्तकें, प्रवास मंजूषा चित्र आदि के अतिरिक्त उक्त वैद्यराज जी के सम्पादकत्व में "प्राणाचार्य्य" नामक आयुर्वेदीय उच्च कोटि का सचित्र मासिक पत्र एवं साप्ताहिक पत्र शीघ्र ही प्रकाशित होगा। अभी से ग्राहक बनने से मासिक का ४) वार्षिक और साप्ताहिक का ६) वार्षिक मूल्य लिया जायगा। सर्व साधारण को खेरीज और चिकित्सकों एवं औषधि विक्रेताओं को थोक भाव का सूचीपत्र शीघ्र मंगा लेना चाहिये।

एजेण्टों की आवश्यकता है

व्यवस्थापक — **प्राणाचार्य भवन, विजयगढ़ जि० अलीगढ़**

CCO, Gurukul Kangri C...

महात्मा गांधी से महत्व-पूर्ण भेंट

[पृष्ठ १४ का शेष]

इसमें कुछ रहस्य है जिनको फिर कभी बताऊंगा, क्योंकि प्रार्थना का समय हो रहा है।

सत्यार्थप्रकाश

मैंने कहा कि अभी तो मैंने सत्यार्थ प्रकाश के विषय में भी आप से बात-चीत करनी थी, जिसके लिये आपके दिल्ली से जाने से पूर्व एक बार फिर अवश्य मिलना चाहता हूं, जिस पर महात्मा जी ने भी यह कहते हुये कि इस प्रकार के संवाद में मुझे भी आनन्द आता है पर अब प्रार्थना का समय होने के कारण फिर कभी २१-२२ सितम्बर के बाद बातचीत करूंगा, तुम जो साहित्य चाहते हो वह दे सकते हो। मैंने अपनी सत्यार्थप्रकाश की सार्वभौमता (यूनिवर्स-लिटी आफ दी सत्यार्थप्रकाश) महर्षि दयानन्द एण्ड सत्यार्थप्रकाश तथा श्री पं० रामचन्द्र जी द्वारा सकलित कुरान में अन्य मतावलम्बियों के लिये अति कठोर वाक्यों का संग्रह, सत्यार्थप्रकाश में १४वें समुल्लास में उद्धृत कुरान की आयतें और उनका उल्था सत्यार्थप्रकाश आन्दोलन का इतिहास (हितैषी जी कृत) तथा सार्वदेशिक में प्रकाशित सत्यार्थप्रकाश के चतुर्दश समुल्लास का तुलनात्मक अनुशीलन शीर्षक लेखों की प्रति और अनेक सुप्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वानों द्वारा की गई इस्लाम की आलोचनाओं का संग्रह इत्यादि भेंट करते हुये पूज्य महात्मा जी को कहा कि आपका भी यह विचार प्रतीत होता है कि सत्यार्थप्रकाश चतुर्दश समुल्लास में इस्लाम की आलोचना बहुत कठोर है, किन्तु तुलनात्मक दृष्टि से अन्य आलोचकों के ग्रन्थों को देखने पर मैं इस परिणाम पर पहुंचा हूं ऋषि दयानन्दकृत आलोचना न केवल शुद्ध भाव से लिखी और युक्तियुक्ति है बल्कि अन्यों की अपेक्षा नरम भी है। इस बात को मैंने अपनी लेखमाला में जो सार्वदेशिक में प्रकाशित हुई दिखाया है जिसको मैं चाहता हूं आप भी अवश्य पढ़ें। (उदाहरण के रूप में मैंने उन्हें इनसाइक्लोपीडिया आफ रिलिजन एण्ड एथिक्स भाग ८ में से मुहम्मडनिज्म विषयक लेख से जो प्रो० मार्गोलियथ डी० लिट् का लिखा हुआ है निम्न अंश सुनाये :-- कि मदीना के अत्याचारी के रूप में मुहम्मद का जीवन प्रमुख डाकू का जीवन है, जिसकी राजनीति व अर्थशास्त्र लूट का माल हथियाना व बंटवारा ही था। वह स्वयं अत्यन्त निरंकुश व असंयत था, और अपने अनुयायियों में भी वह इन्हीं गुणों को उत्साहित करता था।

इस विषयक शेष बातचीत अगले अवसर के लिये – जो उनके दिल्ली से प्रस्थान से पूर्व होगी – स्थगित की गई क्योंकि प्रार्थना के लिये अनेक नर-नारियां महात्माजी की कुटी के बरामदे में एकत्रित हो गये थे। महात्माजी ने सारी बातचीत के समय बड़ा प्रेम और हर्ष प्रगट किया।

संसार में स्तम्भन की केवल पुरुषों के लगाने की एक अद्भुत औषधि।

—सुइ फन सी—

Solution

पुरुषों के लिए केवल बाहर से व्यवहार करने लायक रुकावट की संसार में अद्वितीय तथा अद्भुत औषधि है। लाखों गृहस्थ इसकी मांग कर रहे हैं। जिन पुरुषों का शीघ्र ही वीर्य पतन हो जाता है, उनके लिये यह दवा बेजोड़ है। इस के लगाने से रुकावट सम्बन्धी अपूर्व शक्ति तथा सामर्थ्य प्राप्त होता है। इस दवा की एक शीशी बहुत दिनों तक चलती है।

मूल्य शीशी रुपये १२) डाक. ख. ॥≡) अलग।

विस्तृत सूचिपत्र मुफ्त मंगाइये।

चाइनीज मेडिकल स्टोर

नया बाजार——देहली।

हैड आफिस——एपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई। ब्रांचें—१२ डलहौजी स्क्वायर, कलकत्ता: रीची रोड-अहमदाबाद।

—सेलिंग एजेन्ट्स—

दी नेशनल मेडिकल, स्टोर्स--आगरा।
दी जनरल मेडिकल स्टोर्स--अजमेर।
दी एलाईड केमिस्टस-जयपुर।
श्री सरस्वती स्टोर्स—बीकानेर।
मे. गिरधरदास जानकीवल्लभ--उदयपुर।
वैद्यराज विश्वनाथ त्रिवेदी-मुजफ्फरनगर।
मेसर्स मोहन ब्रादर्स—लश्कर।
मेसर्स खरे ब्रदर्स—ढरई।
मे० गोपीलाल चिरंजीलाल—श्रीमाधोपुर।
दी गुजरात मेडीकल स्टोर्स—कानपुर।
दी वर्मा मेडिकल स्टोर्स--शीकोहाबाद।
मे० धारीवाल ब्रदर्स--जोधपुर।

निहत्थे शिकारी

[पृष्ठ १३ का शेष]

विजय-गाथा का गान प्रारम्भ कर दिया। एक साथी ने अपना जो गान प्रारम्भ किया तो सूर्य की प्रथम किरणों के दर्शन के साथ समाप्त हुआ।

उस गान का अभिप्राय यह था कि मेरे विजयों की दुन्दुभि चारों दिशाओं में बज उठी, उस दुन्दुभि को सुन कर मेरी प्रेयसि ऊषा भागी हुई चली आयी। पर, मेरे निकट बधाई देने वाले जनसमूह को देख कर लजा गई और उस लज्जा के मारे उसका मुखमण्डल लाल हो उठा।

उस जनसमूह की बधाईयों में मुझे अपनी प्रेयसि की ओर ध्यान देने का अवसर ही नहीं प्राप्त हुआ, वह रूठकर चली गई। इस लिये हे मेरे गीत! मेरी प्रेयसि को जाकर अच्छी प्रकार सुना दे कि विजय के गर्व में भी मैं उसे भूला नहीं हूं।

उस गर्वभरे प्रातः काल हम भी अपने शिकार को ले कर कालेज की ओर चल दिये।

[आगामी अङ्क में समाप्त]

मिर्गी का २४ घण्टों में खात्मा। तिब्बत के सन्यासियों के हृदय का गुप्त भेद, हिमालय पर्वत की ऊंची चोटियों पर उत्पन्न होने वाली जड़ी बूटियों का चमत्कार, मिर्गी हिस्टीरिया और पागलपन के दयनीय रोगियों के लिये अमृत दायक। मूल्य १०॥) रुपये डाकखर्च पृथक।

पता—एच. एम. आर. रजिस्टर्ड मिर्गी का हस्पताल हरिद्वार।

FOR BETTER LIGHT CHEAP PRICE and DURABILITY: BUY

Sole Distributors: for Sind, Baluchistan and Rajputana, MIRPURKHAS ELECTRIC SUPPLY CORP. LTD. WOOD STREET, KARACHI.

MYSORE

Stockists:-

BINANI ELECTRIC STORES

M. GANDHI ROAD, KARACHI.

T.B. टी बी. तपेदिक बड़ा भयंकर रोग है

इस रोग के भयंकर कीटाणु (जर्म) नवयुवकों तथा नवयुवतियों के ही रक्त के प्यासे होते हैं और थोड़े ही दिनों में रोगी को काल के गाल में पहुंचा देते हैं। रोगी के मरने के पश्चात भी कुटम्ब में किसी न किसी को अपना शिकार बनाते ही रहते हैं, इस दुष्ट रोग के जर्मों को नष्ट करनेवाली यदि कोई औषधि है तो वह आसाम बंगाल की शक्तिशाली महौषधि "जबरी" ही है। जिसने परमात्मा की कृपा से सैकड़ों-हजारों ऐसे-ऐसे रोगियों को भी काल के गाल से बचा दिया, जिनको "एक्सरे" (X Ray) आदि के बाद डाक्टरों, हकीमों, वैद्यों ने जवाब दे दिया था। यह सब उस परम-पिता परमात्मा की कृपा और भारत के पूज्य ऋषियों के रक्त से सींचे हुए आयुर्वेद शास्त्र का चमत्कार है। जब ही तो लोगों ने इसका नाम औषधि नहीं, बल्कि काल के गाल से बचानेवाली "ईश्वरीय शक्ति" रख दिया है। आप इन ही कालमों में अनेक रोगियों के प्रशंसापत्र देख चुके हैं। अब अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं रही।

T.B. टी.बी. "तपेदिक" और पुराने ज्वर के रोगियों-

अब भी समझो—यदि आप अपनी प्यारी जान को बचाना चाहते हैं तो तुरन्त "जबरी" का सेवन शुरू कर दो। अन्यथा फिर वही कहावत होगी—कि अब पछताए क्या होत है—जब चिड़ियां चुग गईं खेत—सैकड़ों हकीम, वैद्य, डाक्टर, अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार द्वारा आर्डर देते हैं। तार या पत्र-व्यवहार के लिए थोड़ा-सा पता "जबरी" (जगाधरी) Jabri (Jagadhri) लिख देना ही काफी है। मूल्य इस प्रकार है—

"जबरी" स्पेशल नं० १ अमीरों के लिए जिसमें साथ-साथ ताकत को बढ़ाने के लिए सोना, मोती, अभ्रक आदि की मूल्यवान भस्में भी पड़ती हैं। मूल्य पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन के लिए २०) रु०। "जबरी" नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान जड़ी बूटियां हैं। पूरा कोर्स २०) रु०। नमूना १० दिन के लिए ६) रु० महसूल आदि अलग हैं। आर्डर में पत्र का हवाला तथा नं० १ या नं० २ साफ-साफ लिखें। तुरन्त आर्डर देकर रोगी की जान बचालें १० दिन में ही अद्भुत चमत्कार दिखाई देगा।

पता—राय साहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस ऐण्ड बैंकर्स (३) शिलांग (आसाम) या पंजाब आफिस "जगाधरी"

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

स्त्री शिक्षण-संस्थाओं में घोर अनैतिकता !!

महान् विचारक की गम्भीर चेतावनी

[ले० — श्रद्धेय डा० भगवानदास]

श्री भगवानदासजी

जिन शिक्षणसंस्थाओं में बालिकाएं तथा महिलाएं शिक्षा प्राप्त करती हैं, उन में से अधिकांश में निन्दनीय घटनाओं की बाढ़ सी आ गई है। उनके सम्बन्ध में तरह तरह की कहानियाँ हर रोज सुनने को मिला करती हैं। प्राइवेट बातचीत तक में प्रायः इनका जिक्र आ जाता है। समाचार-पत्रोंमें इनघटनाओं के समाचार अक्सर छपा करते हैं। कभी कभी तो बिना नाम और गांव दिये स्पष्ट भाषा में इनका प्रत्यक्ष उल्लेख किया जाता है और कभी बनावटी हास्य के साथ परीक्षा रूप में। कुछ दिन पहले, एक दैनिक ने अपने साप्ताहिक संस्करण में 'किन्हीं विद्यार्थियों' द्वारा तीव्र कटु भावना से लिखित एक लेख प्रकाशित किया था, जिसमें लेखिका ने एक ऐसे शिक्षक या बदनाम प्रोफेसर के इस कथन का स्वतः सुनकर यह उद्धरण दिया था 'मैं प्रत्येक सुन्दर लड़की का रस लेता हूं।' एक लेखक ने बम्बई के एक बालिका विद्यालय का स्वानुभाव बताया कि उस स्कूल का प्रधानाध्यापक अपनी वेतन-वृद्धि के लिए न केवल दूसरी छात्राओं से वरन स्वयं अपनी लड़की तक से, उसकी अनिच्छा एवं विरोध की परवाह न करते हुए, वेश्यावृत्ति करवाता था। जिन व्यक्तियों की भावनाएं जरा भी कोमल होंगी और जो सीधा-साधा स्वच्छ जीवन पसन्द करते है वे इन बातों को पढ़कर सिहर उठेंगे। किंतु यह गन्दगी दिन-दूनी रात-चौगुनी हमारे चारों ओर बढ़ती ही चली आ रही है तथा हमारी 'उंह, जाने भी दो' की रीति, जो साधारणतः वर्ती जाती है, इस गन्दगी के सर्वतोमुखी प्रभाव का विस्तार करने में सहायक बन रही है।

शुतुरमुर्ग-सी, तूफान आने पर अपना सिर बालू में छिपा लेने की यह थोथी नीति अत्यन्त घातक है। यह विष, जो प्रत्यक्षतः नहीं दिखता, अन्धकार में चुपके-चुपके हमारे सारे सामाजिक जीवन को विषैला किये जा रहा है। प्रथम मानसिक व्यभिचार के आवरण में आकर यह यौन संक्रामक रोग घृणित शारीरिक व्यभिचार का रूप धारण कर अपना फैलाव करने लगता है। समाचार पत्रों द्वारा ऐसे अपराधों का भण्डा-फोड़ स्वागत तथा प्रोत्साहित करने योग्य है।

मानवता के हित चाहने वाले व्यक्तियों को इस पर जोर देना चाहिए कि ऐसे निन्दनीय अपराधों की खुली जांच हो राजनीतिक वातावरण की शुद्धि के लिये हजारों व्यक्तियों ने जेल की यातनाएं सही और सैकड़ों फांसी पर लटक गये, तो क्या जीवन के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण नैतिक वातावरण की शुद्धि के लिए सौ व्यक्ति जेल की अथवा उससे भी कठोर कोई यातना नहीं सह सकते! वासना के गुलामों की निंदा करने वाले सभी व्यक्ति को कानूनी कार्यवाही का भी मुकाबला साहस के साथ करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

यह भयानक संक्रामक रोग

यह भयानक संक्रामक रोग मानव-जीवन के मूल को ही विषमय बनाये डाल रहा है तथा सारे समाज में मानसिक विकार, स्नायु दौर्बल्य तथा ऐसे ही अन्य खतरनाक बीमारियों का प्रसार कर रहा है। अतः इसे जड़ से ही नेस्तनाबूद कर डालने के लिए जोरदार सार्वजनिक आंदोलन होना चाहिए। प्रत्येक शिक्षक या शिक्षाशास्त्री के विरुद्ध, जिस पर गहरा सन्देह हो या जिसके विरुद्ध अफवाहें वजनदार होती जा रही हों, खुले तौर पर जांच की जानी चाहिए। नैतिक वातावरण की स्वच्छता का यही एकमात्र रास्ता है। छात्राओं को पथ-भ्रष्ट करने के कुकृत्य के विरुद्ध, इस नैतिक युद्ध को सफल बनाने के लिए कानून कायदों में परिवर्तन करने की भी जरूरत पड़ सकती है। बालिकाओं की पवित्रता नष्ट करने वाला कोई भी नारकीय व्यक्ति बचकर नहीं जाना चाहिए, भला उन पापियों पर क्या रहम करना, जिन पर युवक-युवतियों का पवित्र भार तथा देख-रेख का महत्वपूर्ण अधिकार सौंपा जाता है; फिर भी वे नृशंसतापूर्वक इस विश्वास की हत्या कर डालते हैं तथा इन होनहारों को पथ भ्रष्ट कर देते हैं।

> "राजनैतिक वातावरण की शुद्धि के लिए हजारों व्यक्तियों ने जेल की यातनाएं सहीं, सैकड़ों फांसी पर लटक गये, तो क्या जीवन के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण नैतिक वातावरण की शुद्धि के लिए कुछ भी व्यक्ति जेल की अथवा उससे भी कठोर कोई यातना नहीं सह सकते।" — लेखक

ऐसे पशु तुल्य मनुष्य कभी दया के पात्र नहीं हो सकते।

कुछ ही दिन पहले ब्रिटिश पार्लमेंट (हाउस आव कामन्स) में एक प्रश्न किया गया था, जिसमें पूछा गया था—'इंगलैंड में इन दिनों जो विवाह हो रहे हैं, उनमें से ६० प्रतिशत में 'नववधुएं' विवाह-वेदी पर उपस्थित होने के समय गर्भवती होती हैं। अगर सरकार इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति से परिचित है तो इस अत्यधिक विस्तृत अनैतिकता का और अधिक विस्तार न होने देने के लिए क्या वह कोई कदम उठायेगी? प्रधान-मंत्री ने इस कटु सत्य को स्वीकार किया और कहा कि सरकार इस विषय में कार्यवाही कर रही है।

चरित्र-भ्रष्टता का दण्ड

प्राचीन नीतिकारों द्वारा निर्धारित पुरातन दंड-प्रणाली एक विशेष विचार-धारा के पृष्ठ-पोषकों को भले ही 'असभ्य प्रणाली' मालूम पड़े, किन्तु अन्य व्यक्ति उसे नैतिक वातावरण में सुधार होने तक के लिए एक अस्थायी आवश्यक कार्यवाही के रूप में सदैव न्यायोचित कहेंगे। प्रत्येक 'सभ्य' देश में बलपूर्वक निरोधन का व्यवहार, संक्रामक तथा छुआ-छूत का रोग रोकने के लिए किया जाता है। इसी प्रकार चर्मरोग में बर्तुलाकार दाद्दने की क्रिया की जाती है। प्राचीन नीतिकारों की सम्मति में ऐसे यौन अपराधियोंको पाखाने के गढ़ों में ढकेल देना तथा कुछ पाखाना उसे खिलाकर उसका सिर उड़ा देना चाहिये क्यों न उस पशु को, जिसने कहा था कि 'मैं प्रत्येक सुन्दर लड़की का रस लेता हूं' मनुष्य के पाखाने का ही 'रस' चखाया जाये? ऐसे घृणित शब्द निकालने वाला मुंह क्या सुअर के मुंह से अच्छा कहा जा सकता है? तभी ऐसे कमीने समझ सकेंगे कि भ्रष्टाचार का नतीजा क्या होता है और किस प्रकार उनके यौन-व्यभिचार जख्म उनके शेष जीवन भर, एक कोमल

[शेष पृष्ठ १८ पर]

चार कहानियां
तिरंगा टाइटिल
७ इक रंगे चित्र

मां का स्वर्ग मूल्य २)

लेखक व चित्रकार—

जयन्त

(भूतपूर्व प्रधान-सम्पादक साप्ताहिक वीर अर्जुन व सम्पादक "मैं भूल न सकूं" कहानी-संग्रह)

प्राप्ति स्थान—

प्रकृति-पुरुष, कला-मन्दिर,

आर्यनगर, ज्वालापुर (जि० सहारनपुर)

CCO, Gurukul Kangri C...

राष्ट्र-प्रतीक

(श्री ठाकुर शङ्करसिंह साहित्यालङ्कार)

★

[गतांक से आगे]

कान्ता –जी, हां। (कुछ उत्तेजित हो कर) मैं जानना चाहती हूं, उन अभागों का क्या अपराध था ? जो आपके एक ही इसारे पर, हमेशा के लिये, इस दुनिया से उठा दिये गये।

मि० सेन– उन्होंने जानबूझ कर कानून भङ्ग किया था।

कान्ता – और मानवी कानून भङ्ग करे, वह ?

मि० सेन – मानवी कानून।..... याने ?

कान्ता – याने आप। दानवी कार्य किया है, आपने पिताजी !

(सेन की भृकुटि तन कर कपाल में रेखायें पड़ जाती हैं।)

मि० सेन –कान्ता !

कान्ता – जी हां। नदी के किनारे तभी तक किनारे हैं, जबतक कि वह अपना प्रवाह न बदले। अपनी स्वार्थ-रक्षा निमित्त, जबरदस्ती किसी कानून को जनता पर लादना, मानवता के प्रति अन्याय है।

मि० सेन–राजद्रोह किसी भी दशा में क्षम्य नहीं है।

कान्ता – राजद्रोह (घृणा की हंसी हंसती है।) बन्द पिंजरे में एक स्वच्छन्द पक्षी, जब फड़फड़ा कर बाहर निकलना चाहता है तो वह विद्रोह करता है ? दूसरे स्वाधीन पंछियों की भांति यदि वह भी अपना जन्मसिद्ध अधिकार मांगता है तो कानून भंग करता है ? (कुछ तन कर बैठती हुई) मैं पूछती हूं। उस पंछी की आजादी हड़पने का आपको क्या अधिकार है ?

(इन वाक्यों से मि० सेन कुछ प्रभावित हो उठते हैं।)

मि० सेन — मजबूरी थी, कान्ता ! अपने पद से ऐसा करना, मेरा कर्तव्य था। मेरी जगह यदि तुम होती·····?

कान्ता — (वाक्य पूर्ति के प्रथम ही) — तो सब से पहिले इस्तीफा देती।

मि० सेन — ठीक है। परन्तु ऐसा करना, सरकार के साथ गद्दारी होती।

कान्ता — और नौकरशाही का ताज पहन कर, अपने ही भाइयों पर गोली चलाना; देश के साथ गद्दारी नहीं है ?

मि० सेन – (रूखे स्वर से) कान्ता ! तुम्हें मालूम होना चाहिए कि तुम अपने पिता के साथ बातें कर रही हो।

कान्ता — जानती हूं पिताजी ! इसका मुझे भी दुःख है। (एक लम्बी सांस भर कर) परन्तु आप से बातें करते समय मैं अपने को राष्ट्र की पुत्री समझ रही हूं।

मि० सेन – (सदय होकर) देश के प्रति तुम्हें प्रेम है, यह जानकर मैं प्रसन्न हूं। परन्तु स्वतंत्रता प्राप्त करने का जो तरीका प्रयोग में लाया जा रहा है, वह क्या उचित है ?

कांता — तरीका कैसा भी हो। किंतु उद्देश्य तो उचित और स्पष्ट है।

मि० सेन — लोग केवल आवेश में ही बढ़ रहे हैं। परिणाम की ओर नहीं देखते। कांग्रेस की तो यह नीति नहीं है।

कान्ता – आजादी चाहती है, लाल-लाल और गरम-गरम खून। वैसा ही खून जिससे फ्रांस की धरती और रूस का आकाश लाल हो गया था। स्वाधीनता की देवी यों ही प्रसन्न नहीं होती पिताजी ! उसके भक्त लक्ष्य को ही देखते हैं; परिणाम को नहीं।

मि० सेन – यदि वह खून ही चाहती है तो सन् सत्तावन का खून क्या कम था ! जलियांवाले बाग का लहू क्या लाल और गर्म नहीं था ? भगतसिंह बिस्मिल और चन्द्रशेखर जैसे सैकड़ों युवकों का रक्त इस योग्य नहीं था ?

कांता – था क्यों नहीं। परन्तु देश के कुछ गद्दारों ने उसे सफल न होने दिया। लेकिन फिर भी उन शहीदों का रक्त व्यर्थ ही न गया। उसी खून ने हमें आजादी के द्वार पर लाकर खड़ा कर दिया है।

मि० सेन – ठीक है, परन्तु देश की स्थिति अभी ऐसे आंदोलनों के उपयुक्त नहीं है। जनता को अपना खूनी इरादा बदल देना चाहिये।

कान्ता – यह तूफानी इरादा तब तक नहीं बदला जा सकता, जब तक कि भारत में उदय होने वाले चांद-सितारों के नीचे, हम खुल कर स्वतन्त्रता की सांस न लें।

(दूर पर 'इन्कलाब:जिन्दाबाद' और 'भारत-छोड़ो' के नारे सुनाई पड़ते हैं। कान्ता तड़प कर उठती हुई खिड़की के पास पहुंच जाती है। वह देखती है — सामने की सड़क पर, डा० सतीश के नेतृत्व में एक विशाल जलूस शान्त भाव से सिटी कोतवाली की ओर जा रहा है। इसमें अधिकांश कान्ता के ही सहपाठी और सखियां हैं। सब से आगे राष्ट्रीय केतन लिए हुए, सतीश बड़े सुन्दर प्रतीत हो रहे हैं। 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा। झण्डा ऊंचा रहे हमारा।' मधुर स्वरों में गाती हुई, कान्ता की सखियां साक्षात् दुर्गा-सी दिखाई पड़ रही हैं। वह रोमान्चित हो उठती है और पुलकित नेत्रों से देखती हुई, आत्मविस्मृत हो जाती है। मि० सेन भी उसके पीछे आकर खड़े हो जाते हैं।)

मि० सेन — कान्ता ! सतीश ने यह क्या किया !

कान्ता — (सड़क की ओर ही देखती हुई) उन्होंने बहुत अच्छा किया है।

मि० सेन — बहुत अच्छ !!

कान्ता — (उसी दशा में) हां।

मि०सेन — लेकिन इसका परिणाम ?

कान्ता — यह सब वे जानते हैं। (एक हल्की-सी टीस भरी आह निकल जाती है)

मि० सेन — (अनुनय से) अच्छा होता; यदि तू उन्हें समझा सकती।

कान्ता — (मुड़कर) क्षमा करें, पिताजी ! एक नौजवान को अपने कर्तव्य से विमुख करना मैं अनुचित समझती हूं।

(कान्ता द्वार की ओर बढ़ती है। सेन सिहर उठते हैं।)

मि० सेन — कहां चली, बेटी ?

कान्ता — (रुकती हुई) जहां मेरे अन्य भाई और बहिनें हैं।

मि० सेन — (सभीत) यह मैं क्या सुन रहा हूं, कान्ता !

कान्ता — आप बहुत ठीक सुन रहे हैं।

मि० सेन — जिला मजिस्ट्रेट की पुत्री और बागियों के साथ ?

कान्ता — (कपाल पर घृणा की रेखायें बना कर) यह पद आप ही को मुबारिक हो। मुझे इससे नफरत है। एक भारतीय की लड़की कहलाने में ही मुझे गर्व है।

(कान्ता पुनः गमनोद्यत होती है। सेन झपट कर उसका मार्ग रोक कर खड़े हो जाते हैं।)

मि० सेन — (सामने की दीवार पर लगे हुए एक बड़े पेन्टिंग को लक्ष्य करके) कान्ता उधर देख — तेरी माता को मरे आज पन्द्रह वर्ष हो रहे हैं। तब से तू ही इस नीरस जीवन का सहारा रही है।

(कान्ता चुप रहती है। अपनी मां की स्मृति में वह करुणार्द्र हो उठती है।)

मि० सेन — इतनों वर्षों की मेरी साधना जब फलीभूत होने जा रही है; तब तू रूठ रही है। (अश्रु छलक आते हैं) बेटी ! बुढ़ापे में इस अभागे को छोड़कर न जाओ।

कान्ता — (कुछ रुंधे कण्ठ से) यह मोह-मदिरा पिला कर मुझे बेहोश न बनाइये, पिताजी !..... आज देश के लाखों अभागे नर-नारी और मासूम बच्चे गुलामी के लोह-पञ्जों में फंसे हुए, छटपटा रहे हैं। उन्हें खाने को दाने और सोने को फुट-पाथ पर भी स्थान नसीब नहीं होता। मेरे अच्छे पिता ! मैं उसी महायज्ञ में योगदान करने जा रही हूं; जिसकी आहूतियां, भारत के स्वर्ण प्रभात में किरणें बन कर चमकेंगी।

(जाने को बढ़ती है।)

मि० सेन — भगवान् के नाम पर दया करो, कान्ता ! तुम्हारे शरीर को मैंने जन्म दिया है। उस पर मेरा अधिकार है !..... मैं तुमसे उसकी भिक्षा मांग रहा हूं, बेटी !

(सेन आंसू बहाते हुए हाथ फैला कर, कान्ता के सामने घुटने टेक देते हैं। कान्ता की आंखों से भी बेबसी के दो आंसू ढलक पड़ते हैं।)

कान्ता — मानती हूं, परन्तु आपसे भी कहीं ज्यादा इस शरीर पर राष्ट्र का अधिकार है। उसकी सम्पत्ति उसी के काम आने दीजिये।

(पुनः 'इन्कलाब : जिन्दाबाद' और 'भारत छोड़ो के' नारे सुनाई पड़ते हैं। कान्ता अधिक रोमाञ्चित हो जाती है।)

कान्ता — वह देखिये। गुलामी की बेड़ियों को काट फेंकने वाली घोर गर्जना मेरा आह्वान कर रही है। साम्राज्यवादी दुर्ग की दीवारें कांप रही हैं। हटिये, मुझे जाने दीजिये।

मि० सेन — (कम्पित स्वर में) हर्गिज नहीं।

[सेन खड़े होकर कान्ता के दोनों कन्धे पकड़ लेते हैं। क्षण भर के लिये वह असमञ्जस में पड़ जाती है। परन्तु शीघ्र ही उसका दृढ़ संकल्प दुविधा पर विजय पा जाता है और वह कोमलता त्याग कर, कठोरता का आश्रय लेती है। अपने वृद्ध पिता को बलपूर्वक हटाती हुई विद्युत-वेग से द्वार के बाहर हो जाती है। सेन की करुणा भरी बिल-बिलाहट का उसपर कोई असर नहीं होता। सेन 'कान्ता ! कान्ता !!' चिल्लाते हुए, धम्म से कोच पर बैठ जाते हैं। फिर तुरन्त उनका ध्यान कान्ता और उसके कार्य-परिणाम की ओर जाता है। उनकी आत्मा कांप उठती है और घबराकर पोर्च में रखी हुई कार की ओर बढ़ जाते हैं।]

(पर्दा गिरता है)

तीसरा दृश्य

स्थान–सिटी कोतवाली के सामने वाली सड़क।

समय–सवा नौ बजे।

[जुलूस कोतवाली के समीप पहुंच चुका है। बीच में कतार बद्ध छात्राएं तथा उनको घेरे हुए सब छात्र हैं। इनके आस-पास अन्य जनता चल रही है। अधिकांशतः सारे छात्र और छात्राएं मेडिकल कालेज के ही हैं। सब के चेहरों पर एक अपूर्व कान्ति और जोश झलक रहा है। सहसा भीड़ को चीरती हुई, कान्ता अपनी सखियों में आ मिलती है। 'मिस सेन' को देखते ही सबकी

[शेष पृष्ठ २२ पर]

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पाठकों का अपना अपना दृष्टिकोण

बीकानेर का अलग झण्डा

बीकानेर में एक 'प्रजासेवक संघ' की स्थापना हुई है। इसका उद्देश्य 'बीकानेर नरेश्वर' के द्वारा दिये गये शासन-सुधारों को पूरी तरह चलाना है। इसकी कार्य प्रणाली सर्वथा शान्तिमय और वैधानिक रहेगी। इसके एक परिपत्रक से मालूम होता है कि यह संघ बीकानेर को भविष्य में बनने वाले संघराज्य की स्वतंत्र इकाई मानना चाहता है। और अपने लिए एक पृथक निजी झण्डा भी रखना चाहता है। इस झण्डे के समर्थन में उसकी यह दलील है कि 'यह भी असंभव है कि ५०० वर्षों से जिस केसरिया कसूमल झण्डे को हमने अपना रखा है, उसका हमें कोई ध्यान न रहे। यह हमारे ऐक्य का प्रतीक और स्वतंत्र भारत में हमारी गौरवमयी सत्ता का प्रधान चिन्ह है।'

हमें यह समझ नहीं आता कि एक-एक रियासत और एक-एक प्रान्त अगर अपना-अपना झण्डा अलग-अलग रखने लगे, तो देश में जो अव्यवस्था फैल जायगी, उसे किस तरह रोका जा सकेगा। बीकानेर के शासक भी इस झण्डे की पृथकता के हामी हैं और हमें भय है कि वे और उनके साथी प्रजासंघ वाले यह नहीं जानते कि संघविधान में सम्मिलित होने वाले प्रान्तों की कोई पृथक स्वतंत्रपूर्ण सत्ता नहीं होगी। वे अधिकांश मामलों में स्वतंत्र रहेंगे, परन्तु उनकी अन्तिम सत्ता केन्द्र में ही रहेगी और इसीलिए पृथक झण्डों का कोई अर्थ नहीं। भारतवर्ष एक देश है, वह देशों का समूह नहीं है और उनके किसी अंग को पृथक झण्डा रखने नहीं दिया जा सकता। ब्रिटिश मंत्रिमिशन ने भी पाकिस्तान को असंभव और अक्रियात्मक माना है, तो एक-एक गांव या एक-एक जिले भर की रियासतों को अलग झण्डा लगाने की अनुमति कभी नहीं दी जा सकती।

प्रजासेवकसंघ अपने झण्डे को ऐक्य का प्रतीक मानता है। में ऐक्य क्या समस्त राजस्थानियों में भी ऐक्य की भावना यह झंडा पैदा कर सकेगा? फिर इस प्रकार के शब्दजाल का क्या अर्थ है?

बीकानेर] — एक वकील

आर्यसमाज राजनीति में भाग ले

इस समय आर्यजगत में एक विचार धारा प्रबल वेग से उठी हुई है कि आर्यसमाज का वर्तमान संगठन सामूहिक रूप से यदि वर्तमान राजनीति में भाग नहीं लेगा तो आर्यसमाज का इतिहास कलंकित होगा। कराची सम्मेलन का अवसर इस सम्बन्ध में निर्णय के लिये उपयुक्त रहेगा। निम्नलिखित प्रस्ताव विचारार्थ सम्मेलन में पेश होना चाहिए:—

'आर्यसमाज का वर्तमान संगठन राजनीतिक कार्यों के लिये अधिक उपयुक्त है। देश की वर्तमान परिस्थितियां हमें बाधित करती हैं कि हम अपनी गोलमाल नीति छोड़ कर स्पष्ट हो जावें। पूर्ण स्वराज्य प्राप्ति तक यदि आर्यसमाज वर्तमान राजनीति से उदासीन रहे तो चक्रवर्ती साम्राज्य के उपदेश ब्रह्म और क्षत्र के अवतार ऋषि दयानन्द के साथ हम विश्वासघात करने वाले होंगे। आर्यसमाज के वर्तमान संगठन को समाजों, प्रतिनिधि सभाओं और सार्वदेशिक सभा की स्पष्ट रूप से राजनीतिक क्षेत्र में अवतीर्ण होना चाहिए। कांग्रेस के साथ जहां तक हम अपने सिद्धांत और शक्ति के अनुसार सहमत हों, वहां तक हम साथ रहें। परन्तु जिस बात से हम भारतीय संस्कृति की हानि समझें, उस सम्बन्ध में हम अपनी आवाज जनता के सामने रख कर अपना मत संग्रह करें।

धार्मिक तथा शिक्षा सम्बन्धी कार्यों के लिये आर्यसमाज की वर्तमान संगठन शैली अत्यन्त अनुपयुक्त और असन्तोषप्रद है, अतः उन कार्यों के लिये सार्वदेशिक सभा पृथक विधान तैयार करे। धार्मिक तथा विद्या सम्बन्धी कार्य (वेदभाष्य, वेद प्रचार, गुरुकुल आदि) उसके सुपुर्द करके तत्सम्बन्धी समस्त संपत्ति उस संगठन को दे देवें।

बरेली] — आचार्य विश्वश्रवाः

यू० पी० में वैद्य बनाम हकीम

कांग्रेस मन्त्रिमण्डल के विरुद्ध प्रचार करने में लीगी पत्र निराधार तथा अनर्गल प्रवादों का आश्रय लेने में नहीं चूकते। कुछ समय पूर्व अनेक लीगी पत्रों ने छापा कि सरकार द्वारा संचालित बोर्ड आव इण्डियन मेडिसिन आर्थिक सहायता देने में वैद्यों के साथ पक्षपात करता है और हकीमों को सहायता देने में आनाकानी करता है। सरकार के एक प्रवक्ता ने मुझे बताया कि प्रांत में रजिस्टर्ड वैद्यों की संख्या ८००० है और हकीमों को २०००, किंतु हकीमों को यूनानी चिकित्सा की उन्नति के लिए पिछले ३ वर्षों में ५३ हजार रुपया दिया गया, जब कि संख्या में चौगुने होने पर भी वैद्यों की आयुर्वेद की उन्नति के लिए इसी अवधि में केवल ७२ हजार रुपया मिला!

लखनऊ] — जानकार

हवाई कम्पनियां और शस्त्रों का व्यापार

श्री सम्पादकजी,

पिछले दिनों प्रान्तीय सरकारों ने रेलों से छुरे, तमंचे आदि की यातायात पर देख-रेख प्रारंभ की है। अनेक शहरों में तमंचे व छुरों आदि के कई बक्स मिले भी हैं। यह देखकर इनके व्यापारी चौकन्ने हो गये हैं और वे कोई नये तरीके सोच रहे हैं। अभी बम्बई में ओरियंटल एयरवेज लि० के नाम से मुस्लिम लीगियों द्वारा एक हवाई कम्पनी बनाई गई है। विभिन्न शहरों में अन्य भी अनेक वायुयान कंपनियां बनाई गई हैं। हमें भय है कि छुरे तमंचों के साँप्रदायिक व्यापारी इन वायुयानों का प्रयोग इन हथियारों के इस्तेमाल के लिए न करें। इसलिए पुलिस और प्रान्तीय सरकारों को इन हवाई कम्पनियों की गति विधि पर सतर्कता के साथ निरीक्षण करना चाहिए।

अहमदाबाद] — एक गृहदृष्टि

मुस्लिम उपाधिकारी

लीगी समाचार पत्रों का दावा है कि देश के बहुत से मुसलमानों ने लीग की उपाधि-त्याग सम्बन्धी आज्ञा का पालन किया है। सीमाप्रान्त में इनके लिये गये निम्न आंकड़ों से पता लग जाता है कि ये दावे कितने झूठे और गलत हैं।

उपाधियां	उपाधिधारी	उपाधि त्यागनेवाले
सी० आई० ई०	५	कोई नहीं
ओ० बी० ई०	७	२
ए० बी० ई०	२०	४
खानबहादुर	६७	१३
खानसाहब	१७२	२०
कुल	२७१	३८

उपर्युक्त आंकड़ों से स्पष्ट हो जाता है कि सीमाप्रान्त में २७१ उपाधिधारियों में केवल ३८ मुसलमानों ने ही लीग के आदेश का पालन किया है। इसका अर्थ यह है कि इस प्रान्त में लीग के कहने पर केवल १४ फीसदी लोगों ने ही उपाधि त्यागी है। इनमें बहुत से ऐसे हैं जो दो-दो तीन-तीन उपाधियां रखते हैं। इस पर यह कह देना कि मुस्लिम जनसाधारण ने लीग के कहने से धड़ाधड़ उपाधियां त्याग दी हैं, बिल्कुल ही गलत और असत्य है। अन्य प्रांतों की भी परिस्थिति इसी प्रकार की है।

कानपुर] — तीक्ष्ण दृष्टि

फूडराशन कमेटी सहसपुर

राशन की तकलीफ सब जगह है। हमारे यहां राशनकमेटी के कुछ कारनामे इस प्रकार है। सहसपुर में कपड़े की पर्ची देते समय प्रत्येक पर्ची पर दो-चार पैसे लिये गये। अब तैल, चीनी, सूजी की दशा यह है कि इस हल्के के सदस्य फकीर मोहम्मद बजाज ने जो जनगणना भेजी, उसमें पूरे दो-तीन गांवों की जनगणना राशन कार्यालय तक भी न पहुंची। नतीजा यह निकला कि लगभग ६०० हिन्दू गणना में कम रहे। अब पिछले कोटे के समय शबरात का कारण बताकर मुसलमानों को ४ छटांक प्रति व्यक्ति के हिसाब से और हिन्दू को २ छटांक के हिसाब से चीनी मिली। इस मास में रक्षाबन्धन तक तो को टालने ही में ढील-ढाल रक्खी, अब चीनी, तैल, सूजी ता० १७ को लाई गई, ता० १९ को ठीक जन्माष्टमी के दिन बांटते समय ६०० व्यक्तियों की समस्या सामने रखकर निश्चय किया गया कि त्यौहार का स्पेशल कोटा व बचत सब को ४ छटांक के ही हिसाब से दी जावे। ता० २० को जब चार-चार मील से कोटा लेने के लिए आये तो उनको कहा गया कि चीनी ईद के लिए मुसलमानों के लिए रोकी जायगी।

— बाबूलाल वर्मा

—:-*-:—

दमा निवारक
श्वासकासारि अवलेह
दमा, श्वास, खांसी, जुकाम, कफ, सर्दी, हरनी, छाती व गले की जलन वगैरह की शर्तिया दवा डि० रु० २)
मदन मंजरी फार्मेसी-जामनगर
देहली- जमनादास कं० चांदनी चौक
आपके शहर में हमारे एजेंट से खरीदें

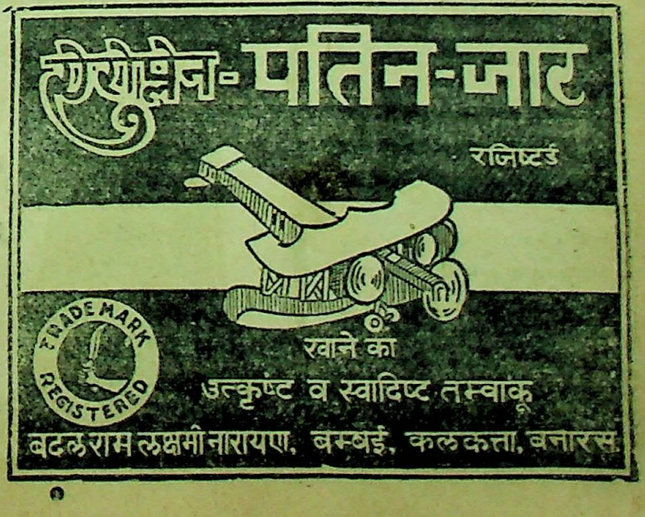

स्त्री शिक्षण-संस्थाओं में घोर अनैतिकता !!

[पृष्ठ ६ का शेष]

भावना वाले मस्तिष्क में चुभे कांटे के समान, सदा हरा बना रहता है।

शुतुरमुर्ग की नीति घातक

सोवियट रूस में कम्यूनिस्ट-विरोधियों का चुपचाप खात्मा कर दिया गया। कुछ वर्षों तक तो क्रूरतापूर्वक यह 'सफाई' चलती रही। अब सारा देश नये तरीकों तथा रास्तों का महत्व समझ गया है। बोल्शेविज्म का स्वरूप परिष्कृत हो गया है तथा शुद्ध और ग्राह्य समाजवाद के रूप में उनसे अपना स्थान स्थिर कर लिया है। खाद्यान्न के बीज बोने से पहले कुल्हाड़ी और कुदाल, हल और फावड़े से झाड़ीझङ्काड़ और कांटे आदि को नष्ट कर जमीन साफ कर ली जाती है। ठीक यही तरकीब इस घृणित पाप के शिकार व्यक्तियों के सम्बन्धियों तथा मित्रों एवं शिक्षण-संस्थाओं के प्रबन्धकों और आम जनता को भी अमल में लानी होगी।

एक बार जहां वासना के कीड़ों को यह बोध हो गया कि जनता उनकी कुत्सित भावना के पीछे हाथ धोकर पड़ गयी है, फिर वे अपने कुकृत्य रोकने की चेष्टा अपने-आप करने लगेंगे। समस्त बालिकाओं को उनके माता-पिता तथा शिक्षिकाओं द्वारा इन नीच पुरुषों की काली करतूतों के प्रति चेतावनी दे दी जानी चाहिए, ताकि वे फुसलाकर और मीठी-मीठी बातों में बहकाई जाकर शिक्षण-विषयक भ्रमण, कला या नृत्य या नाट्याभिनय की आड़ में ऐसी जगह न ले जाई जा सकें, जहां कामुकता के दानवों की वासना के आक्रमण का मुकाबला करने में वे असहायावस्था में पड़ जायें। लड़कियों को यह हिदायत भी कर देनी चाहिए कि कोई भी व्यक्ति यदि उनके साथ जरा भी सन्दिग्ध आचरण करे, तो वे अविलम्ब इसकी शिकायत जाने बूझे शिक्षक अधिकारियों तथा अपने अभिभावकों से कर दें। सतीत्व पर आक्रमण करने वाले इन मानव-देह-धारी कुत्तों का मुकाबला करने तथा उनका अङ्ग-भङ्ग कर देने की शिक्षा भी बालिकाओं को दी जानी आवश्यक है।

भ्रष्ट-चरित्र व्यक्तियों से शिक्षा संस्थाओं को शुद्ध करने का एक तरीका यह भी है कि संस्था के प्रबन्धक समस्त छात्राओं तथा शिक्षक-शिक्षिकाओं से आमतौर पर गुप्त लेकर निर्णय करें कि किस व्यक्ति का आचरण भ्रष्ट है। यदि सन्दिग्ध व्यक्ति (या सहायिका अथवा कुटनी के रूप में महिला) को स्टाफ में रखे जाने के खिलाफ बहुमत है तो उसे अविलम्ब सदा के लिए छुट्टी दे दी जानी चाहिए। प्रेमी और प्रेमिकाएं गन्धर्व और अप्सराएं, अश्लील सिनेमा, कामुक थियेटर और शराब-कबाब के होटलों की अपनी भयङ्कर तथा कुत्सित दुनिया में ही रहें तो ज्यादा अच्छा।

सहशिक्षा खतरनाक

अन्त में, दो शब्द सह-शिक्षा के सम्बन्ध में भी कहना आवश्यक प्रतीत होता है। अवश्य ही पर्दा-प्रथा को उठा देना और बालिकाओं को शिक्षित बनाना चाहिए। किंतु, तदर्थ सह-शिक्षा ही एक मात्र साधन नहीं कही जा सकती। आधुनिक सह-शिक्षा में भारतीयता की गन्ध तक नहीं है। प्राचीन नीतिकार कह गये हैं कि स्त्री-शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है; किन्तु इसके साथ ही उन्होंने यह भी कह दिया है कि 'पुरुष को अधिक समय तक अपनी माता, बहन या पुत्री के पास भी नहीं रहना चाहिए; भावनाएं अत्यन्त तरल होती हैं, तथा बुद्धिमान से बुद्धिमान व्यक्ति का भी गढ़े में गिर सकना असम्भव नहीं है।' ब्रिटेन में पुत्री के साथ पिता के तथा बहिन के साथ भाई के व्यभिचार-सम्बंध के मुकद्दमे अक्सर पेश होते रहते हैं (माननीय जज डार्लिङ्ग का १० जनवरी १९१९ का फैसला देखिये)। पार्लमेंट ने ऐसे अपराधों के लिए खास कानून बनाये हैं।

भारतीय नीतिकार का मत अंग्रेजी भाषा की एक कविता की दो पंक्तियों में बड़े अच्छे ढंग से उतर आया है, यद्यपि इसमें वह गम्भीरता तथा पवित्रता नहीं है --

'पुरुष अग्नि है तथा नारी घी; जब ये दोनों पास-पास रहेंगे, तब वासना की आग सी भड़केगी ही।' बालकों तथा बालिकाओं की सह शिक्षा भारत में तभी सफल हो सकती है, जब उसका दायरा सीमित कर दिया जाय। वास्तविक तथा तुलनात्मक दृष्टि से छोटे गुरुकुल तथा 'गुरु के कौटुम्बिक गृहों' में यह सह-शिक्षा दी जानी चाहिए, जहां शिक्षक, प्रबन्धक तथा प्रधान ऐसे विवाहित नर-नारी हों, जिसके अपने बच्चे विद्यार्थियों में शामिल हों तथा जो इन पर हार्दिक एवं वास्तविक वात्सल्य रख सकें। ऐसी पितृत्व, मातृत्व की वात्सल्य भावना से ओत-प्रोत सह-शिक्षक अपने छात्र-छात्राओं के सुरुचिपूर्ण विवाह-सम्बन्ध में भी सहायक बन सकेंगे। इन सह शिक्षकों के परामर्श के अनुसार विवाह तथा काम-विज्ञान विषयक कुछ अच्छी पुस्तकें (जो अब प्राप्त हो गयी हैं) पढ़ने के उपरान्त ये छात्र-छात्राएं विवाह करेंगे।

'भेड़ों के समान शिक्षा' की जो सह-शिक्षा प्रणाली आज भारत में प्रचलित है, वह नैतिकता की दृष्टि से अत्यन्त हानिकारक है, अतः समाज के लिए भी वह कम घातक नहीं। जो समाज अपने नौनिहालों के चरित्र की पवित्रता पर ध्यान नहीं रखता, वह सतीत्व और ब्रह्मचर्य की महत्ता नहीं समझता, न वह पतिव्रत-धर्म पारस्परिक सहयोग तथा विश्वास का मूल्य ही आंक पाता है, अतः ऐसे समाज का पतन और नर्क की ओर जाना अनिवार्य है।

बरसाती रोगों के कुछ इलाज

हमारे देश में बरसात व बरसात के बाद खुजली और मलेरिया का विशेष प्रकोप रहता है। अतः हमारी कुछ अनुभूत औषधियां सेवन कर इन रोगों से अपनी रक्षा कीजिए।

मलेरिया बटी
मौसमी बुखार का शर्तिया इलाज है। मूल्य १॥) तोला

दाद का मरहम
इसके लगाने से दाद का नामोनिशां नहीं रहता। मूल्य १) शीशी

पामाहर
खुजली और चम्बल की अचूक दवा है मूल्य ।=) शीशी

भीमसेनी मलहम
सब तरह के जख्मों की अचूक दवा। इसके लगाने से जख्म तुरन्त अच्छा होता है। मूल्य ॥) शीशी

मस्कीटोल
रात को इसके लगाने से मच्छर पास नहीं आते। मूल्य ।=) शीशी

मृदुरेचनी
हलके जुलाब के लिए। मूल्य ॥-) तो

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी (हरिद्वार)

स्त्री की कमर टूट जाती है

अगर स्त्री का मासिक धर्म ठीक समय पर न आये या मासिक के दिनों में दर्द हो या माहवारी कम या ज्यादा आती हो तो इस तकलीफ से स्त्री की कमर में बहुत दर्द होता है। ऐसी को एक शीशी दवा कोरस सेवन करा देनी चाहिए। इस दवा के खाने से मासिक धर्म की सब खराबी ठीक हो जाती है। फिर हर महीना बिना किसी कष्ट के ठीक मात्रा में मासिक धर्म होने लगता है। हजारों स्त्रियाँ इस दवा से लाभ उठा रही हैं। एक शीशी दवा कोरस की कीमत दो रुपया आठ आना २॥) है। नीचे लिखे पते से पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा मंगा लीजिए।

पारसल खर्च ॥-) लगेगा।

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना
हिन्दी आफिस नं० ३४, दिल्ली !

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

राष्ट्र पितामह के चरणों में समस्त विश्व की श्रद्धांजलि

गांधीजी बन्धन-मुक्त जीवन के मंत्र-दाता हैं। असाधारण धर्मभावना और कर्म तेज के कारण कोटि-कोटि मनुष्यों पर उनका प्रभाव है। ऐसे सूक्ष्म और पावन जीवन के विरल उदाहरणों से लोग सदैव शक्ति और प्रेरणा पायेंगे और उनमें सत्य की झांकी देखेंगे।

— सर राधा कृष्णन्

× × ×

गांधीजी राजनैतिक इतिहास में एक अद्वितीय व्यक्ति है। उन्होंने पीड़ित लोगों के स्वातन्त्र्य-संघर्ष के लिए एक बिलकुल नये और मानवीय साधन का आविष्कार किया है और उस पर भारी यत्न और तत्परता से अमल भी किया है।

-- अलबर्ट आइन्स्टीन

× × ×

गांधीजी केवल राष्ट्रीय इतिहास के ही नायक नहीं है बल्कि समस्त पाश्चात्य जनता के हित के लिए उसने ईसा-मसीह के सन्देश को भी पुनर्जीवन दिया, जो अब तक उपेक्षित या प्रवन्चित रहा। उन्होंने अपना नाम मानव-जाति के साधु-सन्तों में अंकित कर दिया है। उनकी मूर्ति का उज्ज्वल आलोक भू-मण्डल के कोने-कोने में प्रविष्ट हो गया है।

— स्व० रोम्या रोल्यां

× × ×

राजनीति और अर्थशास्त्र के क्षेत्र में, अहिंसामय आध्यात्मिकता के वे एक मात्र देवता हैं। बुद्ध के पश्चात् भारतीय इतिहास में गांधीजी से अधिक महान या समान भी कोई नैतिक-शक्ति कल्पना में भी नहीं आ सकती।

— डा० भगवानदास

× × ×

प्रतिभाशाली का एक सर्वोत्तम लक्षण शेली के शब्दों में यह है कि वह 'भविष्य को वर्तमान में पकड़ लेता है और उसके विचार फूल के भी बीज रूप होते हैं जिनसे बाद में जाकर फल पकते हैं।' इन्हीं अर्थों में गांधीजी एक चारित्र्य क्षेत्र की प्रतिभा है। उनका प्रभुत्व कोई सत्ता पास न होते हुए भी, दुनिया पर किसी भी पुरुष से अधिक है।

— सी० ई० एम० जोड

× × ×

गांधीजी का नाम उनके जीवनकाल में ही एक व्यक्ति का पर्यायवाची न रह कर हमारे वर्तमान दुःखी संसार के लिए आदर्श जीवन का पर्यायवाची बन गया है।···गांधीजी ने अपने चुने हुए मार्ग पर चलने का जो आग्रह रखा है उससे, मुझे यहां यह कहते हुए प्रसन्नता होती है कि दूसरों के साथ मुझे भी संसार में बढ़ते हुए अत्याचार का अजेय और अडिग दृढ़ निश्चय के साथ पूर्ण प्रतिरोध करने का साहस प्राप्त हुआ है।

— श्रीमती पर्ल एस० बक

× × ×

महात्माजी मुख्यतया एक धार्मिक मनुष्य हैं। प्रार्थना उनके सब कार्यों का सार है। सत्याग्रही के लिए, जो सत्य के लिए मरना खपना धर्म समझता है, सब से पहली आवश्यकता इस बात की है कि वह परमात्मा में विश्वास करे, जिसका स्वरूप है सत्य और प्रेम।

-- दीनबन्धु सी० एफ० ऐन्ड्रूज

× × ×

जिन उद्देश्यों के लिए वे लड़ते हैं उनके लिये यद्यपि वे सर्वस्व उत्सर्ग करने के लिए तैयार रहते हैं, किन्तु परिस्थिति की मानव भूमि को नहीं भुलाते, अपने मस्तिष्क का संतुलन कभी नहीं खोते, घृणा के वशीभूत नहीं होते और अत्यन्त कठिन प्रसङ्गों में भी अपना मृदु विनोद कायम रखते हैं।

— जनरल स्मट्स

× × ×

वह दुर्बल और क्षीणकाय हैं, परन्तु उसकी महान् आत्मा ने संसार को कंपा दिया है। विस्मृत और तिरस्कृत प्रेम ने, अपुरस्कृत और अपमानित शारीरिक परिश्रम ने, इस पुरुष की गर्जना में अत्याचार के विरुद्ध चुनौती की आवाज उठाई है। जीवन मंत्र पढ़ने वाला जादूगर जो धरती माता के अत्यन्त निकट है, उस मनुष्य से बढ़कर कौन पुरुष है, जिसके हृदय में देशभक्ति की ज्वाला इतने जोर से धधक रही हो? सत् की खोज में वह एकचित् है। सब सांसारिक सुखों को वह तिलांजलि दे चुका है। इस मनुष्य की आत्मा से बढ़कर किसकी आत्मा पूर्ण हो सकती है? वह दुख और कष्ट के अनंत-दुर्गम पथ का पथिक है।

— जापानी कवि योन नागूची

× × ×

गांधी हमारे युग की महान् आत्मा है। वह मुक्त मानवता का प्रतीक है। नव जागृत समाज का और विश्व के भविष्य का वह अग्रदूत है। हम जो ईसा मसीह की छाया के नीचे खड़े हैं, भक्ति-भाव से उस पुरुष-श्रेष्ठ को प्रणाम करते हैं।

— स्टीफेन हाव हाउस

× × ×

वह एक दुबला-पतला मनुष्य ही है, किन्तु आश्चर्यकारी है, स्थितप्रज्ञ है, बल्कि अवतार ही है, जिसने राजनीति को धर्म की उच्चता पर पहुंचा दिया है।

— डा० पट्टाभिसीतारमैया

× × ×

गांधीजी ने हिन्दुस्तान को अपनी कमर सीधी करना सिखाया, अपनी आंखें ऊपर करना सिखाया और सिखाया अविचल दृष्टि से परिस्थितियों का सामना करना।

-- लार्ड सैम्युएल

× × ×

महात्मा गांधी ने हमें सिखाया है कि अगर हम मौत और विनाश पर भरोसा रक्खेंगे तो वे हमारी बाट देखते रहेंगे। उन्होंने हमें सिखाया है कि अगर हम अपनी अन्तरात्मा को जागृत कर लें तो जीवन और स्वतन्त्रता हमारे होकर रहेंगे।

— डा० राजेन्द्रप्रसाद

भारत की स्वतन्त्र वैदेशिक नीति की घोषणा

[पृष्ठ ६ का शेष]

हैं। इंडोनेशिया से काफी भारतीय फौजें वापिस आ चुकी है। नवम्बर के अन्त तक शेष फौजें भी वहां से लौट जायंगी।

हमारी नीति का सार

'हमारी नीति का सार यह है कि समूचे एशिया तथा अफ्रीका आदि सभी स्थानों पर औपनिवेशिक राज्य खत्म कर दिया जाना चाहिए। वर्णभेद का भी अन्त कर दिया जाना चाहिए। सब जातियों को एक समान अवसर दिया जाय, और कानूनी तौर से कोई अन्तर नहीं होना चाहिए। एक देश का दूसरे देश पर प्रभुत्व तथा एक देश द्वारा दूसरे देश के शोषण का भी अन्त कर दिया जाना चाहिए।

भारत कार्यालय का अन्त

लंदन में भारत का जो प्रतिनिधि रहेगा, वह भारत और इंग्लैंड के आपसी सम्बन्धों के बारे में काम करेगा। जो कुछ भी हो भारत-कार्यालय का अंत होकर रहेगा। कब? यह मैं अभी नहीं कह सकता।

पांडुचेरी व गोआ

'पांडुचेरी के फ्रेंच गवर्नर यह घोषित कर ही चुके हैं कि यहां के लोग ही यह निर्णय कर सकते हैं कि उन्हें भारत के साथ मिलना चाहिए या नहीं। भारत के स्वाधीन होते ही गोआ की समस्या सुलझ जायगी। लेकिन भारत सरकार अभी इस प्रश्न को अपने हाथ में नहीं ले रही।

सीमांत नीति

'भारत सरकार अपनी सीमान्त नीति का निर्धारण करते हुए अफगानिस्तान की सरकार से भी परामर्श करेगी। मैं शायद अगले महीने सीमाप्रान्त का दौरा करूंगा। खान अब्दुलगफ्फार खां मेरे साथ होंगे। मैं ईपी के फ़क़ीर से भी मिलूंगा। आज से ८ वर्ष पूर्व मैं उनके साथ पत्र-व्यवहार कर चुका हूं।

मिश्र तथा अरबलीग संगठित भारत के पक्ष में

भारतीय लेखक डा० कृष्णलाल श्रीधरानी ने पिछले दिनों मिश्र के प्रधानमंत्री श्री सिदकी पाशा तथा वफ्द नेता श्री नहस पाशा से भेंट की है। प्रधानमंत्री ने कहा: 'मेरा विश्वास है कि भारत के वर्तमान कलह का एकमात्र समाधान भारत का संगठित रहना है।' श्री नहसपाशा ने कहा: 'भारत के लिये संगठित होना सब समस्याओं का सर्वोत्तम समाधान है।'

अरबलीग के महामंत्री श्री आजमपाशा ने यूनाइटेड प्रेस के प्रतिनिधि को बताया ..... कि पं० जवाहरलाल नेहरू अत्यन्त उदार मनोवृत्ति वाले सहनशील और विश्व बन्धुत्व में विश्वास करने वाले हैं। निस्सदेह सभी भारतीय मुसलमानों को नेहरूजी से संतोष होगा। इसमें मेरी इच्छा भारतीय मुसलमानों को दुःखी करने की नहीं है, किंतु हमारा यह विश्वास है कि वहां के मुसलमानों को सब के साथ शान्ति पूर्वक रहना चाहिये। आपने कहा कि भारत के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने की अरबों की इच्छा नहीं है। यह समस्याएं उन्हें स्वयं ही हल करनी हैं।

५००) इनाम

प्रेम वशीकरण यन्त्र

इस यंत्र को अपने पास रक्खें, आपकी प्रेयसी कैसी ही कठोर और जिद्दी क्यों न हो वह आपके काबू में हो जावेगी। प्रेम पथ के सभी कष्टों को दूर कर प्रेम सम्बन्ध जोड़ने में मदद करता है। एक बार परीक्षा करें—झूठी साबित करने वाले को ५००) इनाम। मूल्य प्रति यन्त्र २) तीन का ५) वी० पी० खर्च अलग।

पता—

एम० एल० शाह साहब,

पोस्ट बक्स २४३ कानपुर।

सत्य और अहिंसा के प्रतीक गांधी

[पृष्ठ ४ का शेष]

सर्वथा खाली हाथ स्वदेश लौटे। इरविन के वचनों का अन्त हो चुका था। विलिंगडन की सत्ता जोर पकड़ रही थी। पंडित नेहरू, सीमांत गांधी तथा शेरवानी और टण्डन सभी काल कोठरियों में ठूंस दिये गये थे। देशवासियों के उरों में एक ज्वाला जल रही थी। यद्यपि महात्मा जी इसे शान्त कर सकते थे, किन्तु वह असफल रहे। १९३२-३३ का आन्दोलन प्रारम्भ हुआ और नौकरशाही ने ताण्डव-नृत्य दिखाना प्रारम्भ किया। ४ जनवरी १९३२ को निरंकुश नौकरशाही के टुकड़खोरों ने पुनः महात्माजी को जेलों में ठूंस दिया। वास्तव में महात्माजी को अपने राजनीतिक जीवन में जितनी कठिनाइयों को सहना पड़ा है, उतनी शायद ही किसी अन्य राजनीतिज्ञ के कभी दिमाग में आई हों! उनका जीवन प्रायः ही ऐसा रहा है कि वह जेलों के कपाटों से बाहर आते, विद्युतगति से काम करते, एक समस्या पर विचार करते कि दूसरों के सामने पेश हो जाती और शीघ्र ही वह जेल की कराल कोठरी के अन्दर फेंक दिये जाते।

पूना का उपवास

सितम्बर १९३२ में, यरवदा जेल में महात्माजी का मृत्यु पर्यन्त उपवास आरम्भ हुआ। आपने रैमजे मैकडानल्ड को अपने उपवास के कारणों से अवगत कराते हुये लिखा था – 'मेरा आर्हे उस सर्वशक्तिमान् तक पहुंचेगी.....मैं हिन्दुओं को सुषुप्त विचारधारा को जागृत करने के लिये एक महान प्रयास करूंगा और मेरा यही प्रयास ब्रिटिश सरकार को भी जागृत बनायेगा।' महात्मा जी ने हरिजनों का अलग चुनाव करने की बातक ब्रिटिश-नीति को भलीभांति समझा जिसका अर्थ था हिन्दू-जाति को पतित और पिछड़ी हुयी बनाना। जेल में होते हुए भी उन्होंने अपना ऐसा चमत्कार दिखाया जिससे ब्रिटिश सरकार भारतीय नौकरशाही, हिन्दू सम्प्रदाय तथा कांग्रेस सभी सिहर उठे। उनके मृत्यु पर्यन्त उपवास के निश्चय ने वास्तव में ही परम शक्ति का सिंहासन जा हिलाया जिसके परिणाम स्वरूप हिन्दू विभाजन का ब्रिटिश कानून रद्द हो गया।

१९३५ का विधान ब्रिटिश सरकार की एक चाल थी। उसका उद्देश्य था भारत की पराधीनता की जंजीरों को और भी दृढ़ता से कस कांग्रेस को उसके अंदर डाल बहिष्कृत कर देना। महात्मा जी की कुशाग्र बुद्धि से यह चीज छिपी न रह सकी। कांग्रेस ने धारासभाओं में जाने का निश्चय कर इस विधान की जड़ को ही कमजोर बना देना तय किया। महात्मा जी यद्यपि धारासभाओं से बाहर रहे, किन्तु एक सतर्क कमाण्डर की भांति वह कांग्रेस के हर कदम का दूर से ही निरीक्षण करते रहे।

महात्माजी का जीवन भारतीय इतिहास में अपना कितना महत्व रखता है, सर्वज्ञात है। भारतीय इतिहास में नूतन युग के शिलाधार वही हैं। उनके जीवन ने भारत में ब्रिटिश शासन के अंतर्गत तरह-तरह के रद्दोबदल होते देखे हैं। दक्षिणी अफ्रीका में प्रथम बार जब महात्माजी ने अपना सत्याग्रह प्रारंभ किया, उस समय लार्ड हार्डिंज भारत के वाइसराय थे। इनके बाद चेम्सफोर्ड, रीडिंग, इरविन, विलिंगडन, लिनलिथगो, वेवल आदि प्रभृति वाइसराय आये तथा गये, किन्तु महात्माजी आज भी उसी उत्साह के साथ भारतीय स्वतंत्रता की ओर ले जाने वाले मार्ग पर धर्मरूपी रथ पर सवार अहिंसा के अश्व जोते हुये द्रुत गति से बढ़े चले जा रहे हैं।

———

नक्कालों से सावधान

चित्रकूट की श्वास-दमा की अचूक जड़ी

(हिमल्यास हर्ब ग्जिस्टर्ड)

श्री १०८ महात्मा सिद्ध बाबाजी की सौ वर्ष से विश्व विख्यात अनुभव सिद्ध असली जड़ी केवल एक मात्रा ता० १०-१०-४६ आश्विन की रात्रि को सेवन करके सदैव के लिये निरोग हो जाइये।

नोट—वृन्दावन, गुरुकुल वैदिक विश्व विद्यालय से श्री गौतम शास्त्री जी ने लिखा है कि इस जड़ी से ११ रोगियों को दवा पर ९ रोगियों का उपयोग सफल हुआ, रोगी निरोग हो गये। पता–श्री सिद्ध बाबा सेवा आश्रम, पो० चित्रकूट यू० पी०

सिद्धयोगेन्द्र कवच

(गवर्नमेंट रजिस्टर्ड)

इस अद्भुत शक्तिशाला तथा देवी-शक्तिसम्पन्न कवच को केवल धारणमात्र से मनोवांछित फल प्राप्त होता है। इससे नौकरी, संतान, धन की प्राप्ति, व्यापार से लाभ, मुकदमे, रेस, लौटरी में जीत, कठोर से कठोर हृदय वाला स्त्री या पुरुष आपके वश में होकर आपका आज्ञाकारी हो जायगा और कठिनसे कठिन रोगों और नवग्रहों से छुटकारा होकर भाग्योदय होता है। बेफायदा साबित करने से १००) रु० इनाम। मूल्य तांबा २॥) रु० चांदी का ३) रु० सोने का स्पेशल का मूल्य १५) रु. पता–श्री महाशक्ति आश्रम मुहल्ला सालीमपुर ..हरा, पो० बाकीपुर पटना।

श्वेतकुष्ट वनौषधि

महात्मा प्रदत्त श्वेतकुष्ट (सफेदी) की दवा से तीन दिन में पूरा फायदा। यदि सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों, विज्ञापनदाताओं की दवा से निराश हो चुके हों तो इसे लगा कर आराम हावें। १५ दिन की दवा का मूल्य २॥)।

सफेद बाल काला

इस तेल से बालों का पकना रुक कर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे तो दूना मूल्य वापिसी की शर्त लिखा लें। यह तेल सिर के दर्द व सिर में चक्कर आना आदि को आराम कर आंख की रोशनी बढ़ाता है। एकाध बाल पका हो तो २॥) आधा पका हो तो ३॥) और कुल पका हो तो ५) का तेल मंगवा लें। एजेण्टों की हर जगह आवश्यकता है।

स्तम्भक वटी

एक गोली शाम को खा लें और इसके अद्भुत चमत्कार को देखें। एक घण्टे तक स्तम्भन कर गजब ढा देगी। १६ गोली १)।

पता—अखिल किशोर राम

नं० १०७ कतरी सराय (गया)

अफीम बन्द हो जायेगी!

चौधरी रामराय जी लिखते हैं—

मैं बीस साल से अफयून ४० तोले खाता था इसलिये मैंने ठेका अफीम ९६०००) रु० सालाना पर ले रखा था। ताकि मुझे अच्छी अफयून खाने के लिये मिलती रहे। मैंने अपने धन, शरीर का नाश होते देखकर डा० ऋषिराम भण्डारी कोटफत्ता की बनैत टिकियां मंगाकर ८ दिन में आनन्द के साथ अफीम छोड़ दी। छोड़ते वक्त या बाद में कोई तकलीफ नहीं हुई। मैं एक रईस कई गांवों का मालिक हूं। जनता के लाभ के लिये यह इश्तहार देता हूं। जो भाई इस बुरी बला को छोड़ना चाहते हों वे जितने तोले माहवार अफीम खाते हों कीमत टिकिया दुगने रुपये का खत लिखकर वी. पी. मगा लें।

पता – डा० ऋषिराम शर्मा अफयून छुड़ाऊ अस्पताल मंडी कोटफत्ता (स्टेट पटियाला)।

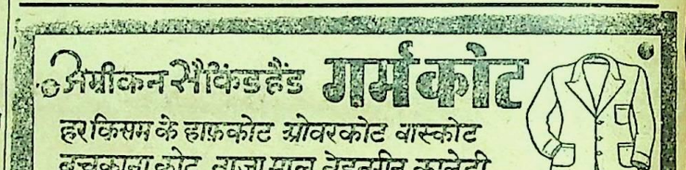

सास दयालु रहती है जब आप टाम्को कोकोनट हेयर आयल व शेम्पू का व्यवहार करती हैं।

दी टाटा आयल मिल्स कम्पनी लिमिटेड,

TH. 6036

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जय बोल !

[राष्ट्रकवि श्री मैथलीशरण]

खुली है कूटनीति की पोल,
महात्मा गांधी की जय बोल !
नया पन्ना पलटे इतिहास,
हुआ है नूतन वीय विकास।
विश्व, तू ले सुख से निःश्वास,
तुझे हम देते हैं विश्वास।
आत्म-बल धारण कर अनमोल,
महात्मा गांधी की जय बोल।
देखकर वैर, विरोध, विनाश,
पड गया है नीला आकाश।
किन्तु अब पशु-बल हुआ हताश,
कटेगा पराधीनता — पाश।
उठा ईश्वर का आसन डोल,
महात्मा गांधी की जय बोल !

घड़ी के अनुसार

[श्री माधोसिंह]

गांधीजी समय पालन की दृष्टि से अपना एक भी क्षण अकार्थ नहीं बिताते। नित्य के काम का एक समय-पत्रक वह नित्यप्रति बनाते हैं, और एक-एक मिनट की पाबन्दी रखते हैं। अपना सारा समय वह घड़ी के काटे पर बिताते हैं, और जिस काम को जितना समय आवश्यक है, उतना ही वह उसमें देते हैं।

कई वर्ष पूर्व गांधीजी अहमदाबाद के पास साबरमती नदी के तटपर आश्रम बनाकर रहते थे। अहमदाबाद से यह आश्रम लगभग चार मील दूर है। उस समय नगर में एक सभा थी, जिसमें गांधीजी का प्रवचन होने वाला था। जिन लोगों ने सभा का प्रबन्ध किया था वे गांधीजी को सभा होने के समय पर, तांगा लेकर बुलाने को आने वाले थे। सभा का समय होने में थोड़ी-सी देर थी। गांधीजी तैयार होकर बुलाने वालों की प्रतीक्षा कर रहे थे। परन्तु न कोई आदमी आया, न कोई तांगा 'क्या होगा ?' गांधीजी सोचने लगे, किन्तु समय तो बीता जा रहा था। गांधीजी ने तुरन्त अपने साथी को बुलाया और कहा —

'एक साइकिल तैयार रक्खो। थोड़ी देर में कोई न आवेगा तो मैं स्वयं साइकिल पर चढ़कर सभा में पहुंच जाऊंगा। ठीक समय पर पहुंचना तो चाहिए ही।'

जब गांधीजी ने देखा की कोई भी उन्हें बुलाने को नहीं आया और प्रतीक्षा करने के लिये पर्याप्त समय भी नहीं है, तो वे साईकिल पर चढ़ सभा-स्थान की ओर चल दिये।

सभा-स्थान में प्रबन्ध करने वाले सब कह रहे थे :

'अजि ! यह प्रबन्ध का कार्य तो समाप्त हो चूका, अब गांधीजी को लेने के लिये तो कोई जाओ !'

सामने देखा तो गांधीजी साईकिल से उतर कर खड़े हो गये हैं। लोगों ने मारे लज्जा के मुंह नीचा कर लिया।

कहीये, सभा में गांधीजी ने सबसे पहले क्या कहा होगा ? उन्होंने कहा :

मेरे भाइयो ! तुम्हारा साहस प्रशंसनीय है, पर तुम्हारी सबसे बड़ी कमजोरी है—काल को न पहचानना। यदि तुम ठीक घड़ी पर काम करना सीखलो तो तुम जीवन में कभी असफल ही न हो !

गांधीजी के दर्शन

[श्री उमेश]

'यह किसका चित्र है ?'

'श्रीकृष्ण भगवान का।'

'और वह ?'

'पूज्य गांधीजी का।'

'गांधीजी हमें कतई पसंद नहीं।'

मां ने पूछा—'क्यों ?'

'उससे तो यह कृष्णजी वाला चित्र लाख दर्जे अच्छा है। देखो न मां—नीले, पीले, हरे कपड़े पहिने, हाथ में बांसुरी लिए गैया के पास खड़े कितने अच्छे लगते हैं; और तुम्हारे गांधीजी ? हाथ में लाठी, नंगे बदन, बकरी की ओर देख रहे हैं, ऐसा लगता है जैसे कोई भिखारी बाबा हों।'

'धत्त पगली कहीं की। ऐसा नहीं कहा करते।'

'क्यों ?'

'वह पूज्य है ?'

'पूज्य कैसे होते हैं ?'

'जो दुनिया में अच्छे-अच्छे काम करें।'

'वह अच्छे-अच्छे काम क्या करते हैं ?'

'कभी झूठ नहीं बोलते।'

'कभी भी ?'

'हां ! यहां तक कि जब वह स्कूल में पढ़ते थे तो इंस्पेक्टर ने कक्षा की परीक्षा लेने के लिए एक प्रश्न बोला। प्रश्न इनके समझ में न आया और चुपचाप बैठे रहे। मास्टरजी ने संकेत कर बताया कि आगे वाले लड़के से उत्तर उतार करके दिखा दो, पर इन्होंने यह ठीक न समझा और नकल करके सवाल न दिखाया। मास्टर इनकी मूर्खता पर बहुत रुष्ट हुये परन्तु वह अपने सत्य से न डिगे,न नकल की।'

'हूं यह भी कोई बात है ? मैं भी कभी नकल नहीं करती।'

'बोलती अधिक है, सुनती कम है।'

'तो तुम बताओ भी !'

'बता तो रही हूँ तू सुने भी !'

'अच्छा तो अब बीच में न बोलूंगी।'

'उस दिन नकल न करने की भावना का उनके मन पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने कभी भी अपने जीवन में दूसरों की नकल करने का प्रयत्न न किया। जो दूसरे करते हैं, यह आवश्यक नहीं की वह भी स्वयं वही करें। वह सर्वसाधारण आदमियों से बिलकुल अलग जान पड़ते हैं। दूसरों के दुःख से दुखी होकर वह चाहते हैं कि दुनिया में शांति रहे, कोई किसी का शत्रु न हो, सब मित्र बनकर रहें।'

मां ने गांधीजी की इतनी विशेषतायें चंद्रा को बताईं। वह यही सोचती रही कि वह पूज्य गांधीजी को एक बार अवश्य देखेगी।

× × ×

महात्मा गांधी की ७८ वीं जयन्ती का मेला देशभक्तों बड़ी धूम-धाम से मनाने का आयोजन किया। चन्द्रा अपनी मां के साथ उनके दर्शन करने गई। उसने देखा कि वह हरिजन बस्ती में

बच्चों के साथ हंस-बोल रहे हैं, उनको प्यार कर रहे हैं। कुछ उनके आगे पीछे घूम रहे हैं और अपने नन्हे-नन्हे हाथों से उन्हें फूलों की मालाएं पहिना रहे हैं। वह सब बहुत प्रमुदित थे और गांधीजी भी।

चन्द्रा सोचती रही कि जिन भंगियों से हमारी गली-मुहल्ले वाले घृणा करते हैं, दुर-दुर करके बात करते हैं, यदि एक बार उनसे छू जायें तो तीन बार नहायें, उन्हीं हरिजनों के बीच गांधीजी इतनी अच्छी तरह पेश आ रहे हैं। चंद्रा का मन करा कि वह भी उनके पास पहुंच कर उनके कान में कहे 'क्या तुम मेरे साथ भी खेलोगे ?'

हम नन्हें गांधी !

हम नन्हें नन्हें गांधी।
युग में परिवर्तन लाने को,
बढ़ चले आज बन आंधी।
हम हैं सत्य-अहिंसा-वादी,
हमको है प्रिय चरखा-खादी;
हमने आजादी पाने को,
आज तपस्या है साधी।
कष्टों को हंस-हंस झेलेंगे,
आगी-पानी से खेलेंगे;
जननी को सुख से करने को,
आज कमर हमने बांधी।
हम नन्हें नन्हें गांधी !

—कृष्णकान्त

बापू की कहानी

[श्री चिरतन]

कई साल पहले की बात है। दक्षिणी अफ्रीका का नाम तो तुमने भूगोल की पुस्तक में पढ़ा ही होगा। पिछले दिनों छापे में छपा था, संभवतः तुमने सुना हो कि जहां अभी हिन्दुस्तानीयों का,वहां भी सत्याग्रह चला था। एक बार दक्षिणी-अफ्रीका में एक भारतीय बैरिस्टर गया था। उसने वहां पर एक टालस्टाय फार्म नामक एक संस्था प्रारंभ की। कई स्त्री, पुरुष, विद्यार्थी आदि वहां रहते थे और अपना काम करते थे। अब बैरिस्टर को विद्यार्थी लोग प्रेम से बापू कहते थे।

एक दिन विद्यार्थीयों का एक दल घूमने को गया। लगभग सात मील पर नान्दा नामक एक प्रचंड जलप्रपात था। जब यह लोग रवाना हुये तब 'बापू' फार्म में नहीं थे। लड़कों ने जल-प्रपात के पास खाना पकाया, खेलने लगे और आनन्द में सारा दिन बिताया। लेकिन लौटते समय देर हो गई। सूर्यास्त हो चला और गहरा अंधकार पृथ्वी पर छाने लगा। अब तक तो अम्बर स्वच्छ था, पर अब बर्षा हो गई। कई लड़के तो बहुत छोटे थे। जो बड़े थे उनकी जिम्मेदारी बढ़ गयी वे घबराये। अब क्या करें मार्ग तो दिखाई भी नही देता ? सब लोग मार्ग भूल गये। इतने में कई लड़कों ने देखा कि कोई आदमी इस अंधेरे में आ रहा है। पहले तो सब घबराये, लेकिन जब वह आदमी पास आया तो समझे कि कोई सहायक होगा।

वह आदमी जब पास आया तो बोला: 'कैसे हो भाई ! थक गये क्या ?' विद्यार्थियों ने स्वर पहचाना। तुरन्तु दौड़कर सब उनके पास पहुंच गये। वह तो उन लोगों के स्नेही बापू थे।

बापू ने सबसे छोटे दो लड़कों को तो उठाकर अपने कन्धे पर रख लिया, और अन्य सब विद्यार्थियों को साथ ले शीघ्र घर पहुंच गये।

आप लोग अब पहचान गये होंगे कि वही बापू आज सारे हिन्दुस्तान के बापू बन चुके हैं।

राष्ट्र-प्रतीक

[पृष्ठ १० का शेष]

बांछें खिल उठती है। उत्साह दूना बढ़ जाता है। कांता अपने कालेज तथा बाहरी क्षेत्र में मिस सेन के नाम से ही प्रख्यात है। कानों में मिस सेन शब्द की ध्वनि पहुंचते ही डा० सतीश का हृदय आह्लादित हो उठता है। वे अपने में एक अनिवर्चनीय सुख तथा एक विचित्र शक्ति संचार होने का अनुभव करते हैं। विलायत जाने के पूर्व वे भी इसी कालेज के छात्र थे।

सामने ही चांदी के कुछ टुकड़ों पर बिकी हुई, नौकर शाही फौज के तीन दस्ते खड़े हैं। इनमें पहिला लाठीधारी, दूसरा घुड़सवार तथा तीसरा हथियार बन्द जत्था है। इनसे कुछ आगे पिस्तौल से सुसज्जित कप्तान साहब खड़े हैं।

कप्तान — (आगे बढ़कर) मि० सतीश ! भीड़ को तितर-बितर कर दीजिये; वर्ना मुझे बाध्य होकर, जाब्ता अमल में लाना होगा।

डा० सतीश — (सरलता से) शौक से।

कप्तान -- देखिये, मैं कह रहा हूं।

डा० सतीश -- जी हां, मैं खूब सुन रहा हूं।

कप्तान -- आखिर, आपका मकसद क्या है ?

डा० सतीश — कोतवाली भवन पर राष्ट्रीय झण्डा फहराना।

कप्तान — ऐसा हर्गिज नहीं हो सकता !

डा० सतीश -- तो रोकिये न ?

कप्तान — (आवेश से) डाक्टर मानिये। मैं आपको मौका दे रहा हूं।

डा० सतीश — (दृढ़ता से) इस कृपा के लिये धन्यवाद। परन्तु आपकी बात मानने को हम मजबूर हैं, कप्तान साहब !

(कप्तान के मौन संकेत से लाठियां तन उठीं। नेता सतीश ने उग्र घोष किया — 'वीरो। इन्क्लाब' सारी भीड़ का गगनभेदी नाद गूंज उठा — 'जिन्दाबाद' दूसरे ही क्षण तड़ातड़ लाठियां बरसने लगीं। अहिंसा के पुजारी देशभक्त, लाठी के प्रहार सहते हुए आगे बढ़ते ही गये। कप्तान बोखला गया। उसका दूसरा इशारा घुड़सवारों की ओर हुआ। बिजली की भांति कड़क कर असहाय निहत्थी भीड़ पर, अश्व दौड़ पड़े। फूल सी कोमल युवतियां घोड़ों की गर्दनों से झूल गईं। उनके सुकुमार शरीर क्षतविक्षत होने लगे। खून की होली मच गई। सतीश ने स्थिति गम्भीर देखकर, छात्रों को आदेश दिया कि वे छात्राओं को भीड़ से हटा कर स्वयं बलि के लिये तैयार रहें)

एक युवक -- (लड़कियों से) बहिनों ! अब आप लोग अलग हो जांय।

दूसरा युवक — उचित है। शीघ्रता कीजिये।

एक युवती — (युवकों से) क्यों, क्या साहस छूट गया ?

दूसरी युवती -- यदि ऐसा ही था तो क्या हमें यहां सड़कों पर नचाने लाये थे ?

(सहसा नागिन सी फुफकारती हुई कान्ता बीच में आ जाती है।)

कांता — (युवकों से) भाइयो ! हम उन्हीं नारियों की सन्तान हैं; जिन्होंने लपलपाती अग्निशिखाओं को चूम कर जोहर किया था। आप लोग हमारी चिंता न करें। समय कम है आगे बढ़ो।

[युवकों में अपार जोश उमड़ पड़ता है। पुनः भीषण सिंहनाद हुआ— 'इन्क्लाब जिंदाबाद। बढ़े चलो।' और क्षण भर में भीड़ कोतवाली भवन से जा सटती है। छत से लगे हुए बिजली के खम्भे के सहारे, सतीश तेजी से ऊपर चढ़ने लगते हैं। कप्तान घबरा उठता है। उसके मना करते-करते, सतीश झंडे सहित ऊपर पहुंच जाते हैं। कप्तान मजबूर हो जाता है और उसका पिस्तौल धारी हाथ तन जाता है। एक बार पुनः मना करके, पिस्तौल की नली आग उगल देती है। 'वन्दे मातरम्' की ध्वनि के साथ सतीश का शरीर नीचे गिरता है और झन्डा छत पर। परन्तु दूसरे दृश्य से कप्तान चौंक उठता है। उसी क्षण उसे चपलासी कौंधती हुई कांता छत पर दिखाई पड़ती है। उसके मुख से चीख निकलती है — 'मिस सेन। और वह हत बुद्धि हो जाता है। किंतु तुरत ही उसे व्यथाग्रसित हांफते हुए मि० सेन बगल में खड़े दिखाई पड़ते हैं। बेटी को उस जगह देख कर, बाप का हृदय रो उठता है। वे पूरी शक्ति से निषेध करते हैं —

'कांता, रुको।' परन्तु तब तक कांता के कोमल हाथ तिरंगे झंडे को भवन पर फहराने का गौरव प्राप्त कर चुकते हैं। सेन कप्तान से पिस्तौल लेते हुए, कम्पित कर से कांता को लक्ष्य बनाते हैं। एक, दो और तीन के साथ ही गर्जना करता हुआ पिस्तौल हाथ से छूट पड़ता है और मस्तक झुक जाता है। धीरे-धीरे अश्रु-पूरित नेत्रों को ऊपर उठाते हुऐ सेन देखते हैं -- 'असंख्य बलिदानों को अपने अंक में समेटे, राष्ट्र का प्रतीक वह तिरंगा आकाश में गर्व से फहरा रहा है और नीचे उनके हृदय का टुकड़ा कांता छटपटा रही है।' इस समय मि० सेन की निष्क्रिय आंखों में एक विशेष चमक है तथा हाथ, जेब में लगे हुए पेन की ओर बढ़ जाता है।] ---यवनिका पतुन

[समाप्त]

२८ वर्ष की प्रचलित
असली मुग़ली जन्म घुट्टी नं. ५५५
जन्म के समय अमृततुल्य लाभदायक है, जन्म से ५ साल तक कुल बीमारियों की एक दवा। सब जगह बिकती है। लेकिन नकली से बचें।
हकीम जे. पी. कथूरिया एण्ड सन्स. देहली.

दमा और पुरानी खांसी वालो — नोट कर लो !

(अब चूके — तो फिर साल भर पछताओगे)

हर साल की तरह से इस साल भी हमारी जगत विख्यात दवा 'चित्रकूट वटी' के एक हजार पैकट आश्रम में मुफ्त बांटे जावेंगे, जो (शर्द पूर्णमासी) ता० १० अक्टूबर को एक ही खुराक खीर में खाने से सदा के लिये इस दुष्ट रोग से छुटकारा मिल जाता है। जो रोगी समय पर यहां आश्रम में न आ सके वह सदा की तरह से १॥) रु० विज्ञापन आदि खर्च मनीआर्डर से भेज कर मंगालें। वी० पी० नहीं भेजा जाता है। पारसाल देर होने के कारण सैंकड़ों ग्राहकों के मनीआर्डर वापिस कर देने पड़े थे इस लिये इस साल अभी से सूचना दी जाती है। तुरन्त मगा कर रख लें और ठीक समय पर सेवन करके पूरा लाभ उठावें। पता—

रायसाहब के० एल० शर्मा रईस आश्रम (३) 'जगाधरी' (पंजाब)

संतान होने की दवा

जिस स्त्री के सन्तान न होती हो केवल ७ रात तक मशहूर दवा मुहाफिज औलाद खिलाओ। इन सात रात में स्त्री के बदन के अन्दर का हिस्सा ठीक ऐसी हालत में आ जाता है कि आठवीं रात ..... स्त्री को गर्भ रह जाता है। इस औषधि की वजह से आज हजारों बहिनों की गोद में बच्चे खेल रहे हैं। जिस स्त्री को सन्तान न होती हो वह नीचे के पते पर पत्र लिख कर दवा मुहाफिज औलाद की १ शीशी वी० पी० पार्सल द्वारा मंगालें। १ शीशी काफी है जिसका मूल्य दो रुपया आठ आना २॥) है पारसल पर ॥-) महसूल लगेगा।

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४ देहली

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

संसार की सबसे अधिक दुःखी स्त्री

[पृष्ठ २ का शेष]

छोटे से छोटा निर्णय भी मैं उनकी बिना आज्ञा के नहीं कर सकती। यह तो बड़ी पागल सा बना देने वाली और दिल में चुभने वाली बात है। यदि मेरे बच्चे यहां न होते मैं कभी लौट कर यहां न आती।'

जापानी शिक्षा-नियंत्रण के कारण जब कभी वह बात करती थी तो आन्तरिक विद्रोह के होते हुए भी उसके होठों पर हमेशा एक मुस्कराहट खेलती रहती थी।

सास बनने का आनन्द

केवल एक ही आनन्द है जिसकी कि जापानी पत्नी आशा कर सकती है और वह यह कि वह किसी तरह सास बन जाय। जब पुत्रवधू के रूप में उसे एक नौकरानी मिल जाती है तो संसार के प्रति अपने क्रोध का बदला उस बिचारी पर निकालने में वह बिल्कुल दया नहीं दिखाती। मुझे एक अपनी तरुण सहेली की याद है जो इतनी पीली और परिश्रांत दिखती थी कि मुझे उसको अपनी सभाल रखने के लिये चेतावनी देनी पड़ी।

उसने कहा—'जी! मैं बीमार नहीं हूं। केवल इतनी बात है कि मुझे पूरी नींद नहीं मिलती। मेरी सास अपना शरीर सहलाने के लिये रोज रात को कई-कई बार जगाती है, और ठीक सवेरे ६ बजे मुझे उसका नाश्ता भी तैयार करके देना पड़ता है।' जापान में मालिश इतनी सस्ती है कि हरेक आसानी से करवा सकता है। इस तरह जापानियों की स्वतःसिद्ध परम्परा प्राप्त उदासी का मुझे यह दूसरा उदाहरण मिला।

पूर्ण मुक्ति-आत्म-हत्या में

जापानी औरत की पूर्णमुक्ति तो केवल आत्म-हत्या में ही है। किंतु इस अन्तिम और निराशाजनक रूप से उग्र कर्म में भी उसे अपनी स्वतंत्र इच्छा का उपयोग करने का अधिकार नहीं है। आत्म-हत्या के केवल कुछ खास प्रकार है जिनका कि उपयोग वह कर सकती है। वह अपने आपको पानी में डुबा सकती है, ज्वालामुखी में छलांग मार सकती है, हाराकिरी की योग्यता उसमें नहीं मानी जाती। यदि वह अपने पति के साथ मरने का सौभाग्य प्राप्त करना चाहती है तो इसके लिये भी उसे पति की आज्ञा प्राप्त करनी चाहिये।

जब मुझे ये सब बातें पता लगी तब मैं जान पाई कि सुन्दर और मुस्कराती हुई जापानी औरत, मेरे ज्ञान में, क्यों सबसे अधिक दुःखी है। जिन राजनीतिज्ञों को विदेशों के विचित्र रीति रिवाजों से पाला पड़ता है उनको सिखाने के लिये जो एक जापानी की पुस्तक तैयार की गई थी, उस पुरानी और आश्चर्यजनक पुस्तक के एक बाक्स में इस सबका कारण बड़ी सुन्दरता से और सक्षेप से रख दिया गया है। उस वाक्य में चेतावनी के तौर पर कहा गया है: 'विदेशियों द्वारा स्त्रियों के प्रति विशिष्टता या सम्मान के भाव को मनुष्यता का पतन नहीं समझा जाता, और न ही घृणा की दृष्टि से देखा जाता है; बल्कि इसके ठीक विपरीत, वहां यह आवश्यक कर्तव्य है।'

[अनु० पवित्राकुमारी विद्याविभूषता]

फिल्म स्टार

बनने के इच्छुक शीघ्र लिखें, कुछ पढ़ा होना आवश्यक है।
रंजीत फिल्म आर्ट कालेज 18 रावीरोड (V. D.) लाहौर।

पञ्जाब युनिवर्सिटी द्वारा नियत
हिन्दी रत्न, भूषण तथा प्रभाकर
हिन्दी परीक्षाओं की
पाठ्य पुस्तकें
तथा सर्वोत्तम सहायक पुस्तकों (कुञ्जियों) के लिये -
स्मरण रखिये। सूचीपत्र मुफ्त
पाल एण्ड कम्पनी
हस्पताल रोड, अनारकली लाहौर॥

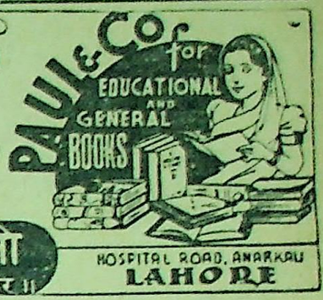

स्त्री रोगों की निपुण चिकित्सिका

लेडी डाक्टर **कविराज आर. रानी** ही हैं

आप किसी भी स्त्री रोग में ग्रस्त हों तो निम्नलिखित पते पर मिलिये। वे आपको उसी समय ठीक कर देंगी। इसके अतिरिक्त उनकी तैयार की हुई औषधि 'आशा' एक ऐसी औषधि है जोकि स्त्री के आन्तरिक बाह्य रोगों को दूर करके सन्तान योग्य बना देती है और उसका मूल्य केवल १०) रु० है। डाक व्यय पृथक होगा। औषधालय—

लेडी डाक्टर—**कविराज आर. रानी**

गली नं० १ अर्जुन नगर निकट शाहालमी अड्डा लाहौर।

स्त्री को श्वेत प्रदर

स्त्री को श्वेत पानी की बीमारी भयानक होती है। इस बीमारी को ल्युकोरिया भी कहते हैं। इस बीमारी से पीड़ित होने वाली स्त्री के गुप्त शरीर से समय असमय श्वेत रङ्ग का बदबूदार पानी या लेस निकलता है और धीरे-धीरे उस स्त्री के यौवन को समाप्त कर देता है। उसकी कमर, नाफ, नले, पेट, बल्कि सारे शरीर में दर्द होने लगता है। माहवारी अर्थात् मासिक धर्म भी खराब हो जाता है। यह रोग बड़ा भयानक है। स्त्रियों को इसमें लापरवाही नहीं करनी चाहिए।

श्वेत पानी को रोकने की विधि

नवयुग की जांच से अब पूरी तरह साबित हो चुका है कि इस श्वेत पानी की बीमारी को समूल नष्ट करने की सबसे बढ़िया विधि यह है कि बीमार स्त्री को केवल एक शीशी औषधि 'रोक' सेवन करा दी जाय। इस औषधि के सेवन से ठीक तीसरे दिन श्वेत पानी की बीमारी बिल्कुल ठीक हो जाती है। हजारों वैद्य, डाक्टर, हकीम इस औषधि को रोगियों पर सेवन कराके ख्याति प्राप्त कर रहे हैं। यदि आवश्यकता हो तो:—

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४, दिल्ली

के पते पर पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा औषधि 'रोक' की एक शीशी मंगा लीजिये। एक शीशी का मूल्य ३) तीन रुपया डाक व्यय ॥-) आना है। हर धर्म की स्त्रियां सेवन कर सकती हैं।

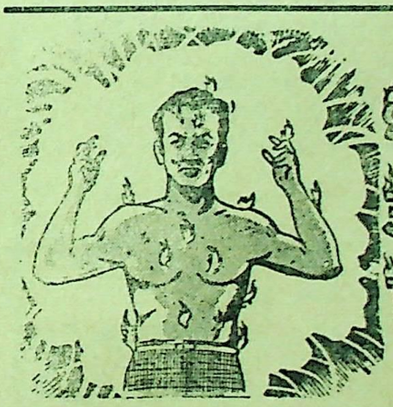

शारीरिक उष्णता के लिये...

मशहूर अनुभूत इलाज

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

आज से ही शुरू किजिए, सर्वत्र मिलता है।

जीर्णज्वर, शरीर के अन्दर, बाहर या हथेली तलुवों और आंखों की असह्य जलन, मूत्रमार्ग मे आग सी जलन, भोजन के बाद पेट मे जलन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कठिन अपच, नियमित कोष्ठबद्धता, रक्तविकार, अशक्ति, नियमित शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं शिथिलता.

इन शिकायतों पर यह बहुत काल से परीक्षित, बड़ी बूटियों के योग से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढा बालक वृद्ध, पुरुष स्त्री सभी के लिये लाभदायक है तथा इस सीमा तक हानिरहित है कि कोमलांगी स्त्रियों को गर्भावस्था के समय निस्संकोच सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके शीतल, पाचक और शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

एजेन्ट चाहिए, शर्तों के लिए लिखिये।

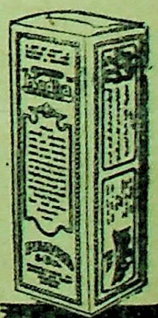

पर्ल कम्पनी
आर्योषधी कारखाना
बम्बई २७

आवश्यकता

★ चित्रकला सीखने के इच्छुक या अधूरे विद्यार्थी बिना किसी फीस व छात्रवृत्ति पर

★ कमर्शियल आर्ट व आयल पेंटिंग के अभ्यासी व जानकार उचित वेतन पर

कला निकेतन, सरदारीमल मैंशन बाग बेगम समरू, चांदनी चौक देहली।

गुदड़ी में लाल

पुराने ख्यालात के लोग इश्तहार देना पाप ख्याल करते हैं इसलिये उनके सोने से भी जनता कोई लाभ नहीं उठा सकती। हमारे हकीम साहब की खानदानी सैकड़ों बरस से सीना व सीना चली आने वाली बिजली की तरह काम करने वाली औषधियां केवल थोड़े से लोगों को लाभ पहुंचाया करती थीं। हमने मुद्दतों मजबूर करके इनसे इश्तहार देने की आज्ञा इस शर्त पर कि किसी औषधि की तारीफ न की जाय प्राप्त की है ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग लाभ उठा सकें। इस फिजूल इश्तहारी तारीफों को छोड़ कर पाठकों को सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित औषधियों को आजमा कर चमत्कार देखें। हर दवाई के साथ यह गारंटी है कि यदि लाभ न हो तो हलफिया लिख कर मूल्य वापस मंगालें और यह जड़ी बूटियां काफी मेहनत लागत से पर्वतों से लाई जाती हैं और केवल लागत पर बांटी जाती हैं। अब जिस रोग के लिये दरकार हो मंगालें'

नं० १ मरदाना व जनाना कमजोरी, स्वप्नदोष व प्रमेह के लिये ४० खुराक। कीमत ५॥)

नं० २ शीघ्रपतन के लिए १२ पुड़िया कीमत ५॥) तथा १ पुड़िया ॥)

नं० ३ तिली (तैल) अजीब कायाकल्पकारी शक्ति वाला कीमत ६॥)

नं० ४ पायोरिया--दांतों से खून व पीप का आना, हिलना आदि मुकम्मिल व अचूक इलाज कीमत २॥)

नं० ५ सफेद कोढ़ (फुलबहरी) की अद्भुत (अजीब) बूटी। मामूली दागों के लिये ५) रु० ज्यादा के लिये ४०) रु०तथा कुल जिस्म के लिये ११०) रु० कीमत है।

नं० ६ संग्रहणी ((पेचिस) नई व पुरानी की अचूक दवा कीमत ४॥)

नं० ७ औरतों के ऋतु की बहती नदी को एक दम रोकने की दवा कीमत ४॥)

नं० ८ बन्द ऋतु—दो मिनट में खोलना कीमत ५।)

नं० ९ बर्थ कन्ट्रोल (सन्तान होना बन्द करना) कीमत ४॥)

नं० १० ऋतु का सख्त दर्द दवाई देते ही गायब और फिर उमर भर न हो। कीमत ३॥)

नं० ११ दर्द गुर्दा फौरन ठीक करके जड़ से उखेड़ने वाली औषधि कीमत ४)

नं० १२ पथरी को निकाल कर मसाना व गुर्दा को साफ करने वाली औषधि। कीमत ३॥)

नं० १३ प्रदर (सफेद पानी) की दवा। कीमत २॥)

नं० १४ आतशक व उसका गठिया ७ दिन में गायब। नई हो या पुरानी। कीमत ३॥)

नं० १५ सुजाक पहली खुराक में ही आराम और सात रोज में जड़ से खतम। कीमत ३॥)

व्यापार चलाइये या घर में काम लाइये

(जर्नल से आये माहिर की ईजादें)

नं० १—दूध, रबड़ी, खोवा, खीर, पेड़े, कलाकन्द आदि को मुद्दत तक खराब न होने देने वाला मसाला। कीमत १)

सस्ता दूर्दूदूर और रबड़ी भेजिये या वहां से मंगा कर लाभ उठाइये।

नं० २—बनी हुई दाल, अचार, तरकारी, गोश्त, सालन, आटा, मिठाई, चटनी, हलवा, दही आदि को खट्टा या खराब होने से बचाने वाला मसाला होटलों हलवाइयों व घरों,विवाह शादियों व दावतों के लिये नायाब मसाला। कीमत १॥)

नं० ३—शर्बती फलों के रस,मुरब्बे वगैरह को सालों खराब न होने देने वाला मसाला। कीमत २)।

हर दवाई व मसाले वगैरह का महसूल डाक व पैकिंग वजिम्मे खरीदार होगा। जवाब मंगाना हो तो जवाबी कार्ड लिफाफा या टिकिट भेजिये। माल ताजा व असली होने की गारंटी है।

सोल एजेन्ट — बराये हिन्दुस्तान—

दी प्रीमियर ट्रेडिंग कं०, चावड़ी बाजार, देहली।

The Premier Trading Co. Chawari Bazar Delhi.

मर्द के पेशाब के बाद

सफेद बूँद

यदि किसी पुरुष को पेशाब करने के पहले या पेशाब करने के बाद सफेद रंगका पानी आता हो तो यह बहुत भयंकर बात है। इसे प्रमेह का रोग कहते हैं। धरे-धीरे यह रोग बढ़ जाता है तो आदमी पौरुषहीन हो जाता है। उसकी शक्ति समाप्त हो जाती है। इस वास्ते जिन पुरुषों को यह शिकायत हो या स्वप्नदोष होता हो तो इस भयंकर रोग से लापरवाही नहीं करनी चाहिये।

प्रमेह का रोग केवल ७ दिन में नष्ट हो जाता है

और केवल ३॥) खर्च होंगे। "जौहरे आजम" इस रोग के लिये अक्सीर प्रमाणित होती है। केवल एक शीशी दवा "जौहरे आजम" से बड़े बड़े पुराने रोगी स्वस्थ हो गए। "जौहरे आजम" प्रमेह के रोग का सबसे अच्छा इलाज है। जिन लोगों को आवश्यकता हो—

मैनेजर,जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं०३४दिल्ली

के पते पर पत्र लिखकर "[illegible]आजम" की एक शीशी वी० पी० द्वारा मंगा लें। एक शीशी का मूल्य ३॥) [illegible]या आठ आना है पार्सल का खर्च ॥-) लगेगा।

[टेलीफोन नं० ६२६८]

LTS. 143-111-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

श्री पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिये 'अर्जुन प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली से छाप कर प्रकाशित किया।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वीर अर्जुन साप्ताहिक

ILLUSTRATED VIR ARJUN WEEKLY

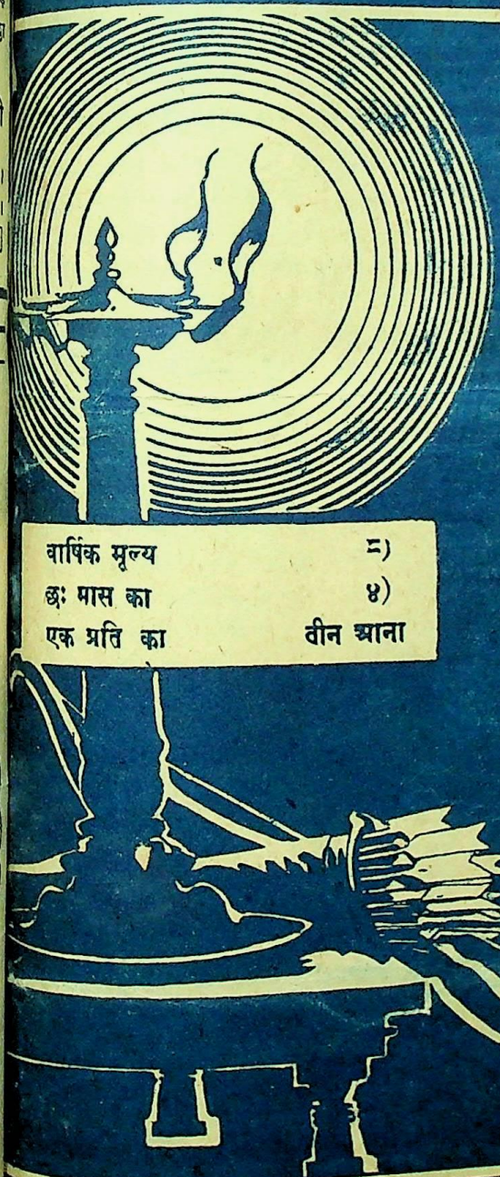

वार्षिक मूल्य	८)
छः मास का	४)
एक प्रति का	तीन आना

सेनानी से

तुम हो अमर, वीर सेनानी!

भारत मां के लौहिक बन्धन; तुमने हथकड़ियां तड़का दीं!
कांप उठा रणदेव भयानक; तुमने वह विद्युत कड़का दी!
जीवन का सन्देश तपस्या; मरणपर्व, जागा, बलिदानी!

तुम हो अमर, वीर सेनानी!

क्रान्ति-भैरवी सुना सुना कर; तुमने सोया राष्ट्र जगाया!
आजादी हासिल करने को; रक्तदान का पाठ पढ़ाया!
"रक्तदान, बस रक्तदान ही", की पुकार कर रही जवानी!

तुम हो अमर, वीर सेनानी!

महानाश के अन्धकार में; स्वतन्त्रता की ज्योति जगाई!
उठा ऐक्य का प्रलय बवण्डर; प्राणों में वह आग लगाई!!
कण कण आज पुकार रहा है; "रहे अमर तेरी कुरबानी!"

तुम हो अमर; वीर सेनानी!!

— लक्ष्मीप्रसाद मिश्र,

अङ्क ३०

वर्ष १२

8th September 1946 DELHI

सम्पादक— रामगोपाल विद्यालङ्कार, कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार

सोमवार २१ आश्विन सम्वत् २००३ देहली

चित्रशाला

क० लक्ष्मी व क० सहगल

विवाह उचित या अनुचित ?

पिछले दिनों कर्नल सहगल और कर्नल लक्ष्मी के विवाह के समाचार प्रकाशित हुए थे। इस सम्बन्ध में हमारे पास बीसियों पत्र आये हैं। हम उनमें से कुछ पत्रों का अत्यन्त संक्षेप से यहां आशय दे रहे हैं। यह पत्र देने का उद्देश्य केवल दो व्यक्तियों की चर्चा नहीं है। इसका उद्देश्य वस्तुतः इन दो प्रसिद्ध व्यक्तियों की आड़ में उस महत्वपूर्ण सामाजिक समस्या पर विचार करना है, जो आज शिक्षित समाज में सार्वजनिक रूप धारण कर रही है।

कर्नल लक्ष्मी तथा कर्नल सहगल के पाणिग्रहण के बारे में आपकी विज्ञप्ति पढ़ते ही मैं शोक सागर में डूब गई। न जाने क्यों कर्नल सहगल के लिये सारी श्रद्धा पर पानी फिर गया। मेरे दिल में एक प्रकार से उथल-पुथल मची हुई है और वह उस समय मिटेगी, जब कर्नल सहगल अपने विचार बदल लेंगे।

आज मैं यह लिखने में नहीं झिझक सकती कि कर्नल साहिब एक बेगुनाह पर अत्याचार कर रहे हैं। आज कनल साहिब उस नारी पर अत्याचार कर रहे हैं, जिसने कि इन्हें देवताओं की तरह पूजा, जिसने कि ईश्वर से इनके प्राणों की भिक्षा मांगी और आज तक मांगती जा रही है। क्या कभी उन्होंने सोचा कि उनकी शादी के बाद उस नारी पर क्या गुजरेगी, जिसने कि प्रण किया है कि वह अगर शादी करेगी तो सहगल के साथ, अन्यथा सारा जीवन अविवाहित रहेगी ?

मैं केप्टिन लक्ष्मी को एक आदर्श महिला मानती हूं, परन्तु वे इस प्रकार की शादी करके अपने इन सब उज्ज्वल कार्यों पर, जो आज तक उन्होंने देश के लिये किये हैं, एक कलंक लगा लेंगी।

मैं खुद केप्टिन लक्ष्मी से पूछना चाहती हूं कि अगर जिस प्रकार की घटना में वे खुद हाथ बटा रही हैं, वे खुद ही इस घटना की शिकार होतीं तो उस समय क्या करती ? मैं सोचती हूं कि केप्टिन लक्ष्मी एक महिला हैं और वे खुद उस महिला के दुःखित हृदय का अनुमान लगा सकती हैं और इतना सोचने के बाद अपना कार्य वे स्थिर कर सकती हैं।

आज कर्नल साहिब हमारे नेता हैं। नेता वही हो सकता है जो जनता के लिये अपने सारे हितों को अग्नि में जला दे। प० जवाहरलाल नेहरू और नेताजी त्याग के आदर्श उदाहरण हैं। नेताजी तो देश के लिए ही आजन्म ब्रह्मचारी हैं।

सागर] — एक जैन महिला

× × ×

कनल सहगल और कर्नल लक्ष्मी का जीवन व्यक्तिगत न रह कर सामाजिक सा हो गया है। यूं तो प्रत्येक व्यक्ति ही समाज का एक अंग है परन्तु जिसको समाज ने उच्च स्थान दिया है उससे एक आदर्श जीवन की आशा की जाती है। देश को इन दोनों पर गौरव है।

भारतीय नारी का आदर्श बहुत ऊंचा है। जब वह एक बार किसी को हृदयेश्वर मान लेती है तो पर-पुरुष का विचार भी पाप समझती है। जिसने युद्धकाल में सदैव अपने भावी पति के जीवन के लिए मंगल-कामना की और जिसकी प्रार्थना और शुभेच्छा ने ही सहगल को सब आपत्तियों से सुरक्षित रक्खा क्या उसकी घोर तपस्या का यही फल है ?

मेरठ छावनी] — राजस्नेह

× × ×

मैं यह समाचार सुनकर स्तब्ध रह गया। मैं इन दोनों मान्य नेताओं को क्या कहूं ? मैं तो इतना ही कहना चाहता हूं कि यदि वे दोनों सचमुच परस्पर स्नेह व प्रेम सूत्र में बंधे हैं, तो यह प्रेम विवाह परिणय की बजाय भाई-

दूसरा पत्र आगामी अङ्क में

बहन के सम्बंध में परिणत होना चाहिए। इस रूप में भी वे देश की सेवा कर सकते हैं। आज प्रेम ने वासना का रूप ले लिया है, यह अनुचित है।

दिल्ली] — रघुवीरशरण

× × ×

श्रीमान् सम्पादकजी,

सादर अभिवादन।

किसी भी संघ या दल अथवा सोसायटी के सब मेम्बर और पदाधिकारी परस्पर भ्रातृ-सम्बन्ध से सम्बन्धित हो जाते हैं। यह संघ तथा दल का अटल और अचल सिद्धान्त है।

अतएव कनल सहगल साहब और कर्नल लक्ष्मी में भ्रातृभाव ही शुभसूचक है, और वैवाहिक प्रस्ताव अशुभ।

बाग्दत्ता कन्या को अब यही उचित है कि वह अब अपने आजन्म कुमारी रहने के व्रत का पालन कर। नारी जाति को इससे शिक्षा लेनी चाहिये कि वह पुरुषों के साथ किसी भी क्षेत्र में कार्य न करें, अन्यथा इस प्रकार बड़ी अशान्ति और विषम समस्यायें उत्पन्न हो जावेंगी।

कर्नल लक्ष्मी को चाहिये कि बाग्दत्ता कन्या से क्षमा मांगें और बाग्दत्ता कन्या अपनी मान हानि का दावा करें, तथा जनता को चाहिये कि वह 'कर्नल' पद से सहगल साहब को मुक्त करदें।

मुजफ्फरनगर] — विष्णुकुमारी सिन्हा

× × ×

आजाद हिंद फौज की कर्नल लक्ष्मी तथा कर्नल प्रेमकुमार सहगल के होने वाले विवाह के विषय में पाठकों को अपने विचार प्रकट करने का अवसर देकर अर्जुन के सम्पादकजी ने समाज की बड़ी सेवा की है, क्योंकि इनके विवाह के प्रश्न में अनेकों सामाजिक प्रश्न सम्मिलित हैं।

लक्ष्मी ने अनेक कष्ट उठाकर नेताजी की आजाद-हिन्द फौज के साथ अंग्रेजों के विरुद्ध भारत की आजादी के लिए अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिये मोर्चा लिया था, अब क्या वे ही लक्ष्मी एक कन्या के अधिकार, एक बाग्दत्ता कन्या का अधिकार कर्नल सहगल के रूप में छीन लेने को तैयार हैं ? क्या वे स्त्री होकर भी स्त्री के हृदय की पुकार को नहीं सुन सकतीं ? आज स्त्रियां समाज में, कौंसिल में समान अधिकार प्राप्त करने के लिये लड़ रही हैं। उन्हें पुरुषों के बराबर लोहा लेना है। परन्तु स्त्री का स्त्री के प्रति यह कैसा अनाचार है ? वे पुरुषों के बराबर अधिकार लेने वाली स्त्रियां अपनी ही जाति के अधिकार छीनती हैं ? यदि रूप सौन्दर्य का लोभी पुरुष इससे अनुचित लाभ उठाये तो इसमें दोष किसका ?

क्या कर्नल सहगल एक शक्तिहीन कन्या को दिये हुवे वचन छोड़कर अपनी निरकुशता का परिचय नहीं दे रहे ?

दिल्ली] — कृष्णा भटनागर

× × ×

श्री के० सी० चौधरी लाहौर से लिखते हैं कि दोनों को नेताजी के भारत में प्रकट होने तक प्रतीक्षा करनी चाहिए और इस सबंध में उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए।

एक दूसरे भाई जालंधर की कन्या को सलाह देते हैं कि वह अपना व्रत तोड़ दे और किसी अन्य योग्य युवक के साथ विवाह करले। अनेक युक्तियों में से उनकी प्रबल युक्ति यह है कि जब कोई अस्थिर विचार पुरुष किसी दूसरी स्त्री से परिणयसूत्र में बंध जावे तो उसके कर दाम्पत्य सुख की प्राप्ति [illegible] नहीं है।

एक तीसरे भाई भी उस कुमारी अन्यत्र विवाह करने की सलाह देते सगाई को तोड़ना बुरा अवश्य है इसकी जिम्मेवारी उस पर न होकर सहगल पर है, इसलिए इसमें रत्ती भर भी अपराध न होगा।

× × ×

मैं कर्नल सहगल और कैप्टन से निवेदन करूंगा कि वह अपनी कुर्बानी, और राष्ट्र द्वारा अर्पित का दुरुपयोग न करें। वह राष्ट्र उत्तरदायी व्यक्ति हैं और उनकी कृति का कोमल हृदय तरुण तरुणियों पर जो प्रभाव पड़ेगा उसे भी सोच लें।

मेरठ] — भुवनेन्द्रसिंह

× × ×

सरकार कन्यादान करेगी

श्रम-मन्त्री श्री जगजीवनराम महिला सहायक सेना की १० हजार महिलाओं भविष्य के बारे में बहुत चिन्तित है। महिलाएं शीघ्र ही नौकरी से हटायी जाने वाली हैं। इनकी शिक्षा इतनी नहीं है कि ये शिक्षा का कार्य नहीं कर सकतीं। इनका आरामतलबी का जीवन इन्हें अच्छी नर्स भी न बनने देगा। अतएव श्री जगजीवनराम ने इनके लिए यह योजना बनायी है कि इन्हें गृहकार्य की शिक्षा देकर अच्छा गृहस्थ बना दिया जाय। इनकी शादी का प्रबन्ध सरकार करेगी तथा इनसे शादी करने वालों का सास भी सरकार ही होगी, किन्तु दहेज कुछ भी न दिया जायगा।

—

जर्मनी में तलाकों की बाढ़

बर्लिन की अदालतों में जर्मन स्त्रियों की ओर से तलाक के लिये दी जाने वाली अर्जियों की बाढ़ आ गई है। मित्र अधिकारी इनका निर्णय करने के लिये अतिरिक्त जज नियुक्त कर रहे हैं। इन अर्जियों की संख्या अब २६,००० हो गई है, जो युद्धकाल में हुए नगर में विवाह की संख्या से ४,००० अधिक है। तलाक मांगने का एक कारण यह बताया गया है कि नई अवस्थाओं के अनुरूप जर्मन स्त्रियों को बनने में बड़ी कठिनाई हो रही है।

आवश्यकता

★ चित्रकला सीखने के इच्छुक या अधूरे विद्यार्थी बिना किसी फीस व छात्रवृत्ति पर

★ कमर्शियल आर्ट व आयल पेंटिंग के अभ्यासी व जानकार उचित वेतन पर

कला निकेतन, सरदारीमल मैंशन बाग बेगम समरू, चांदनी चौक देहली।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

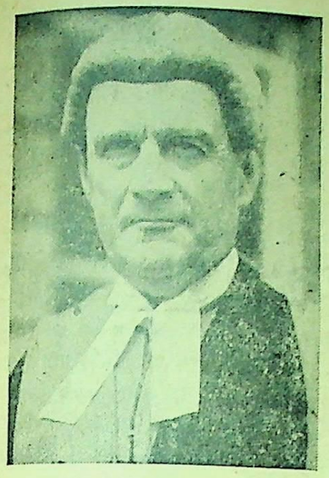

नूरेम्बर्ग में नाजी अभियुक्तों को सजा सुनाने वाले न्यायाधीश लार्ड लारेंस

कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर संभवतः अभिषिक्त होने वाले आचार्य कृपलानी

कांग्रेस व लीग समझौते के लिए अत्यन्त प्रयत्नशील नवाब भोपाल

मेरठ में कांग्रेस स्वागतसमिति के प्रमुख कार्यकर्त्ता

उपप्रधान

श्री कृष्णचन्द्र शर्मा एम. एल. ए.

प्रधानमन्त्री

ला० सरयूप्रसाद

उपाध्यक्ष

श्रीमती कमला चौधरी

पंडाल इन्चार्ज

पं० रामस्वरूप

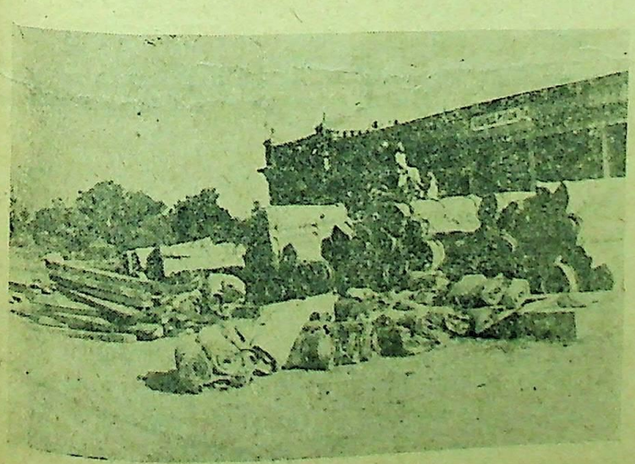

पंडाल की तैयारियों का एक दृश्य

स्वागताध्यक्ष चौ०रघुवीरनारायणसिंहने फोटोग्राफर को देखते ही घूंघट कर लिया

लोकवाणी

सभ्यता का नाश

बीस वर्ष से अधिक का समय हो गया, मुझे हिन्दुस्तान के फैशनेबुल समाज में या सरकारी विभाग में जाने का बहुत कम अवसर मिला है। हिन्दुस्तान में मेरी सारी आयु सच्चे हिंदुस्तानियों में व्यतित हुई है। पर पिछले वर्ष मैंने किसानों को कुछ लाभ पहुंचाने की दृष्टि से, युक्तप्रांत सरकार के 'अधिक अन्न उपजाओ' आन्दोलन में उसके विशेष परामर्शदाता का अवैतनिक पद स्वीकार कर लिया था। उसकी वजह से मैं एक नये संसार में पहुंच गई। वहां चारों ओर विचित्र इन्सान थे। हरेक दूसरे से बढ़कर अंग्रेज दिखने का प्रयत्न कर रहा था। मैंने निराश दृष्टि से अपने कार्यालय में कार्यकर्त्ताओं की ओर देखा। हर ओर मिल का कपड़ा था। बुरी प्रकार से कटी बिलायती पतलून के भीतर कमीज घुसाई हुई, भयंकर गर्मी में भी विलायती टङ्ग के कोट और पांवों में बाटा के चुस्त जूते? पर यहीं तक अन्त न था। जब मैं उनके नाम पूछने लगी, तो सब 'मिस्टर' थे। मि० वर्मा, मि० शर्मा, मि० गुप्ता आदि और जब वह किसी अन्य की चर्चा करते, तब भी मि० अमुक ही की बात करते थे। इसके बाद 'हुजूर-हुजूर' करते हुए चापलूस चपरासी और प्यादे आये और मेरी परेशानी की हद हो गई।

परेशानी दोनों ओर थी। जब मैंने 'मिस' या 'मैडम' कहलाने से मना किया, तो वह विदेशियों की भांति हिन्दुस्तानी संबोधन ढूंढने लगे, और जब मैं पत्र लिखवाने लगी और मि० काटकर 'श्री' या 'साहब' लिखवाने लगी, तो कई पृष्ठ पुनः टाइप कराने की आवश्यकता हुई। विदेशी आदत इतनी गहरी जम चुकी थी कि एकदम निकल नहीं सकती थी।

कुछ दिनों पश्चात मैं पश्चिमी युक्त प्रांत की लम्बी-यात्रा पर निकली। अब नई मुसीबतें आड़े आईं। सब स्थानों पर इन्सपेक्टरों के बङ्गले और सर्किट हाउस, हिन्दुस्तान में बने होने पर भी, अंग्रेजी ढङ्ग से सुसज्जित थे। पुराने बदबूदार सोफे और कुर्सियां, ढेर-की-ढेर मेजें, बड़े-बड़े फैशनदार पलंग जिनके ऊपर की ओर सीखों वाला या दूसरे ढंग का किनारा था, जिससे रात की गर्मी में बांहें सिर की ओर फैलाई भी नहीं जा सकती थीं, और मई और जून की रातें पर्याप्त गर्म थीं। फर्श पर बदबूदार दरियां बिछी थीं, जिनमें वर्षों की धूल और गन्दगी भरी पड़ी थी। खिड़कियों में तार की जाली, स्वच्छन्द वायु को आने से रोकती थी, और सब से बुरी चीज तो वे लड़खड़ाते कमोड थे, (जो लोग विलायती ढंग से बैठना पसंद नहीं करते, वह समझ सकेंगे कि ऐसे कमोडों के स्मरण से ही रात की निद्रा बिगड़ जाती है) जो हर एक स्नानागार में रखे थे। यह स्नानागार रहने के कमरे के पास ही होता है और रसोई घर के बारे में तो जितना कम कहा जाय, उतना ही अच्छा है। क्या अब वह समय नहीं आ गया है, जब बोलचाल में, पहले के वस्त्रों और रहने के ढंग में घुसे हुए ये अनुचित रिवाज अंग्रेजी सरकार के साथ ही समाप्त कर दिये जायं। अन्ततोगत्वा तो यह सब अंग्रेजी सरकार की ही विरासत है न?

— मीरा बहन

कांग्रेसी मंत्री, साहब नहीं

एक कांग्रेस-सेवक पूछते हैं:

'क्या कांग्रेसी प्रधान उस साहबी ठाट से रह सकते है, जिस ठाट से अंग्रेज रहते थे? क्या वह अपने घरेलू कामों के लिये भी सरकारी मोटरों आदि का उपयोग कर सकते हैं?'

मेरी दृष्टि से तो दोनों प्रश्नों का एक ही उत्तर हो सकता है। यदि कांग्रेस को लोक-सेवा की ही संस्था रहना है तो प्रधान-वर्ग साहब लोगों की भांति नहीं रह सकता, और न सरकारी साधनों का उपयोग घरेलू कामों के लिए कर सकता है।

— महात्मा गांधी

निरालाजी को न भूलिये

निरालाजी के सम्बन्ध में गत सप्ताह जो क्लेशदायक समाचार आये थे, वे हिंदी जगत के लिए शर्मनाक हैं। हिन्दी साहित्य उनका ऋणी है और वे आर्थिक दुरवस्था के कारण इस शोचनीय स्थिति को पहुंच गये, इसका दायित्व किसपर है? निरालाजी उन्माद रोग से ग्रस्त हैं। उनके पुत्र तथा परिवारवाले उनकी भरसक चिकित्सा कराने के लिए सचेष्ट हैं, किन्तु उनकी आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं कही जा सकती कि वे कवि का यथोचित उपचार करा सकें। बंगला भाषा के प्रख्यात कवि नजरुल इस्लाम के क्षयग्रस्त होने पर बंगाल सरकार उन्हें सैनिटोरियम भेज दिया था और उनका २०० रु० मासिक की वृत्ति बांध दी थी। असेम्बली के बजट अधिवेशन में अर्थ और शिक्षा मन्त्री सम्पूर्णानन्द ने भी ऐसी ही किसी निधि के सम्बन्ध में घोषणा की थी। कवि निराला के उपचार के लिए यदि वैसी ही व्यवस्था न की गयी तो उसका उद्देश्य ही व्यर्थ होगा।

— संसार

(एक सूचनानुसार इस समय श्री निरालाजी उन्नाव में प्रसिद्ध साहित्यिक श्रीमती सुमित्रा सिन्हा के वासस्थान 'युग-मंदिर' में विश्राम कर रहे हैं।

पत्रों में अपने सम्बन्ध में प्रकाशित समाचारों के विषय में निरालाजी ने अपने को दुरुस्त बताते हुए आश्चर्य प्रगट किया। उन की चेष्टाओं से प्रगट हो रहा था कि वह पागल नही हुए हैं पर हां विरक्त से और परेशानीसे अवश्य हैं।)

कलकत्ते का गवर्नमेंट हाउस

कलकत्ते के गवर्नमेंट हाउस को लार्ड वेलेसली ने बनवाया था। उसे तड़क-भड़क और राजसी ठाट-बाट बहुत पसन्द था। इसको बनवाने में उसने इतना रुपया पानी की तरह बहाया कि ईस्ट इंडिया कंपनी के डायरेक्टरों को बीच में पड़कर उसे रोकना पड़ा। वह स्थान ही दावत खिलाने, स्वागत करने और गार्डन-पार्टियों के लिये बनाया गया है। 'एटीकेट' के जितने बन्धन, जितनी पाबन्दी से भारतीय वायसराय या प्रांतीय गवर्नरों के यहां बर्ते जाते हैं, उतना संसार के किसी और स्थान में नहीं मिलेगा। यहां के मुकाबले में बंकिघम पैलेस और विन्डसर कौंसिल में ब्रिटिश सम्राट का जीवन तक तमाशा मात्र है। किसी दावत वाली रात को, गवर्नमेंट हाउस के प्रत्येक हाल में लपलपाती हुई बत्तियां, जगमगाते हुए वस्त्रों में अर्दलियों की अगणित कतार, अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित शरीर-रक्षक और उनकी लपलपाती पोशाक और ए० डी० सी०, सेक्रेटरी तथा अफसरों के बड़े जलूस का नेतृत्व करते हुए लाट साहब और उनकी लेडी साहब का जलूस —यह सब एक ऐसा दृश्य उपस्थित करते हैं जो संसार के किसी भी स्थान पर नहीं दिखाई पड़ेगा।

— अभ्युदय

सिनेमा अधःपातका कारण

खबर है कि युक्तप्रांतीय सरकारने सब जिलोंके मजिस्ट्रेटों को आज्ञा दे दी है कि स्कूल-कालेज आदि किसी शिक्षा संस्था के पास कहीं भी सिनेमा घर बनाने की अनुमति न दी जाय। हमें यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई और इसके लिए हम अपनी सरकारको हृदय से बधाई देते हैं। सिनेमाके कारण युवक युवतियों का चरित्र कितना बिगड़ गया है और बिगड़ रहा है, इसकी कल्पना भी करना कठिन है। ऐसा मालूम होता है कि यदि यही अवस्था बनी रही तो देश में सुखमय गार्हस्थ्य जीवन नामकी कोई चीज ही न रह जायगी। अवश्य ही सिनेमा से समाज का उपकार भी हो सकता है, पर होता नहीं है। कारण चित्रपट बनाने वाले लाभ चाहते हैं और लाभ होता है गन्दे कामुकतापूर्ण चित्रों वैसे ही गीतों तथा उससे भी खराब अभिनय से। यही हो रहा है। समाज का हित चाहने वालों के सामने यह एक समस्या है कि अधःपतनके इस कारण से समाज कैसे बचाया जाय।

— संसार

'हम काँग्रेस के साथ हैं'

हमने अपनी एकता और स्वतंत्रता की रक्षा के लिये अंग्रेजी हथियारबन्द पुलिस से लम्बे समय तक लड़ाई की है। हमें हिन्दुओं और सिक्खों से कोई द्वेष नहीं है। हमारी लड़ाई अंग्रेजों से है। हमें आशा है कि केन्द्र में कांग्रेस द्वारा उत्तरदायित्व संभालने पर और पं० जवाहरलाल नेहरू के विदेश मंत्री तथा सरकार के अध्यक्ष होने की अवस्था में पड़ोसी कबीलों से भाई चारे के सम्बन्ध कायम करने के लिये पूरे प्रयत्न किये जायेंगे। मुझे विश्वास है कि उनकी आर्थिक अवस्था को सुधारने, उनको शिक्षित करने और उनकी अवनत अवस्था को उन्नत बनाने का पूरा प्रयत्न किया जायेगा।'

कबीलों का कोई भी ऐसा व्यक्ति जो स्वाभिमानी और देश भक्त हो, कबाइली प्रदेश से प्रेम करता हो, जो इस्लाम की सच्ची शिक्षा को समझता हो और जिसे स्वतंत्रता प्यारी हो, ब्रिटेन द्वारा समर्थित ऐसी मुस्लिम लीग का साथ नहीं दे सकता जो अपने देश की गुलामी की जंजीरों को मजबूत करने पर तुली हुई है।

यदि कोई सच्चा मुसलमान किसी राजनैतिक संस्था से सहयोग कर सकता है, तो वह कांग्रेस से कर सकता है, जो त्यागी देशभक्तों की संस्था है और हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिये कठिन प्रयत्न कर रही है। मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि सब कबाइली लोग पूरी तरह कांग्रेस साथ है।

— इपीका फकीर

चम्पादेवी पुरस्कार का नया विषय

उक्त पुरस्कार के प्रदाता श्री हरिश्चन्द्रजी ने आगामी पुरस्कार के लिए निम्नलिखित विषय प्रस्तुत किया है—

"वर्तमान विश्वव्यापी युद्ध और भारतीय जनता का नैतिक पतन।"

२५ अक्टूबर तक इस विषय पर जो लेख आ जायेंगे, उन्हीं को पुरस्कार प्राप्ति योगिता में रखा जायगा।

आशा है, हिन्दी लेखक इस महत्व पूर्ण प्रश्न पर प्रकाश डालने वाला लेख भेजेंगे। लेख 'वीर अर्जुन' के डेढ़ पृष्ठ से बड़ा न हो। पुरस्कार सम्बन्धी अन्तिम निर्णय सम्पादक करेंगे। यह पुरस्कार २५) का है।

— सम्पादक

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

'वीर अर्जुन' में धारावाही उपन्यास

पाठकों को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि 'अर्जुन' के २८ आश्विन (१४ अक्टूबर) के अंक से गुजराती के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री इन्द्र बसावड़ा का "गंगा ना नीर" उपन्यास हिंदी में धारावाही रूप से प्रकाशित होगा। पाठक धैर्य से प्रतीक्षा करें।

संम्पादक

★ वीर ★
अर्जुन
अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार २१ आश्विन सम्वत् २००३

संयुक्तदलीय सरकार अभी नही

पिछले दिनोंके घटनाचक्र ने मुस्लिम-लीग के नेताओं की स्थिति को अत्यन्त दयनीय बना दिया था। यद्यपि लीगी नेता प्रत्यक्ष संग्राम की धमकी देते रहे, तथापि वे अपनी आन्तरिक कमजोरी से परिचित थे। ठीक ऐसे समय नवाब भूपाल ने उनकी डूबती नैया को संभालने के लिए संधि-दूत के रूप में दिल्ली के राजनैतिक मंच पर प्रवेश किया। मिलने वाले समाचारों से ज्ञात होता है कि संधि-चर्चा सफल होने जा रही है और मुस्लिम लीग भी अन्तःकालीन सरकार में सम्मिलित हो जायगी। अगर इन समाचारों का अर्थ यह है कि मुस्लिमलीग अब ईमानदारी से देश की उन्नति में हाथ बटायेगी और स्वराज्य की प्रगति में कांग्रेस की सहायक बनेगी, तो हम इस समाचार का स्वागत करेंगे और किसी भी अन्य भारतीय से अधिक इस प्रयत्न में सफलता की कामना करेंगे। लेकिन यदि हमारे इन प्रश्नों का उत्तर 'नहीं' में है, तो हमें संदेह है कि मुस्लिमलीग के अन्तःकालीन सरकार से सहयोग का अभीष्ट फल निकलेगा।

समय-समय पर अनेक प्रजातंत्र राष्ट्रों में संयुक्तदलीय सरकारों का निर्माण होता रहा है। युद्धकाल में ब्रिटेन में ही संयुक्त-दलीय सरकार बनी थी। जब-जब देश पर संकट आवे, तब-तब सभी दल मिलकर एक सूत्र में संगठित हो जाते हैं और आने वाले संकट का मुकाबला करते हैं। आज भारत पर भी असाधारण संकट है, ब्रिटिश सरकार का जुआ वह उतार नहीं सका है। अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति आज भी अनुकूल नहीं है। इसलिए यहां संयुक्त-दलीय सरकार बनने की स्थिति है और भारत के सब दलों को मिलकर एक संयुक्त सरकार बना लेनी चाहिए।

इस युक्ति में बल है, इसमें सन्देह नहीं, लेकिन संयुक्तदलीय सरकार बनाने के मूल में जो भावना काम करती है, क्या वह भावना भी भारत में विद्यमान है? इसका उत्तर दिये बिना हम प्रस्तुत प्रश्न का निर्णय नहीं कर सकते। संयुक्त दलीय सरकार बनने के लिए यह आवश्यक है कि सभी दलों के आधार-भूत उद्देश्य भी एक हों और उनका मुख्य दृष्टिकोण एक हो। दुर्भाग्य से भारत में यह स्थिति नहीं है। यहां मुस्लिमलीग और कांग्रेस दोनों के उद्देश्य परस्पर विपरीत हैं। कांग्रेस राष्ट्र को एक और अखण्ड मानती है, हिन्दू और मुसलमान दोनों उसकी सम्मति में एक राष्ट्र हैं। इसके विपरीत लीग भारत के दो टुकड़े करना चाहती है, वह हिन्दुओं और मुसलमानों को अलग-अलग राष्ट्र मानती है। आज लीग और लीगी अखबार कांग्रेस को घोर शत्रु के रूप में देखते हैं, उनसे यह आशा नहीं की जा सकती कि वे सरकार में सम्मिलित होते ही खिलाड़ी की स्पिरिट अपना लेंगे और एक प्राण होकर भारत की उन्नति में लग जावेंगे। हमें भय है कि उनकी आज की कांग्रेस-विरोधी प्रवृत्ति अन्तःकालीन सरकार में बल पाकर और भी अधिक प्रभाव शाली हो जायगी। शासन-चक्र में प्रविष्ट होकर वह सांप्रदायिकता को नही छोड़ सकेगी। यदि ऐसा ही हुआ, तो अन्तःकालीन सरकार में लीग का सहयोग लाभ की अपेक्षा अधिक हानिकर होगा। केन्द्रीय सरकार जिस प्रेम व सहयोग की भावना से एक मन होकर काम कर रही है यह भावना नष्ट होकर परस्पर संदेह, द्वेष और विरोधी संगठनों से अन्तःकालीन सरकार अत्यन्त असमर्थ हो जायगी। आपसी झगड़ों से वायसराय को अपनी मनमानी करने का अवसर मिल जायगा। और इस तरह आज की सरकार जिस कार्यशीलता के साथ अपनी गौरववृद्धि कर रही है, उसके अभाव में वह अत्यन्त पंगु हो जायगी।

इन्हीं सब बातों को देखते हुए हम वर्तमान कांग्रेसी नेताओं से यह कहना चाहते हैं कि जब तक उन्हें लीगी नेताओं की सद्भावना पर विश्वास न हो जाय, तब तक वे संयुक्तदलीय सरकारके आकर्षण में न पड़ें।

विदेशों पर अन्न की निर्भरता

प्रो० एन० सी० रंगा ने पिछले दिनों एक वक्तव्य में देश को यह चेतावनी दी थी कि विदेशी राष्ट्रों से भारत अन्न की कोई आशा न करे। यूरोप के संकटापन्न देशों को तो वे अनाज देंगे, लेकिन वे भारत की आवश्यकता पूर्ण करने की कोशिश नहीं करते। यह वक्तव्य इन अंकों से और भी स्पष्ट होता है। अगस्त मास में सं० रा० अमरीका ने ८ लाख ७५ हजार टन अनाज बाहर भेजा था। लेकिन भारत को सिर्फ ८७००० टन अनाज भेजा गया था। ब्रिटिश साम्राज्य के देशों को, जिनमें जर्मनी का ब्रिटेन द्वारा अधिकृत प्रदेश भी सम्मिलित है, २,४६,००० टन अनाज भेजा गया है। अमेरिका द्वारा अधिकृत प्रदेशों को १,४७,००० टन अन्न मिला। इन सब बातों को देख कर राजेन्द्र बाबू की स्वावलम्बन की सलाह पर अमल करना ही उचित है।

अन्न-उत्पादन में बाधाएं

कांग्रेसी शासन से पहले की संयुक्त प्रान्त की गैर जिम्मेवार सरकार द्वारा नियत जैद अनाज फसल कमेटी की सिफारिशों का परिणाम अत्यन्त निराशाजनक निकला है। इस कमेटी ने अप्रैल से जून तक सब्जी या अन्य छोटी-छोटी फसलों को पैदा करने की सलाह दी थी। इस पर अमल भी किया गया था, लेकिन अब कृषिमंत्री ने बताया है कि यह योजना बिल्कुल असफल हुई है और सरकार को ५-६ लाख रु० की क्षति हुई है। इसी तरह उस समय की 'अधिक अन्न उपजाओ' योजना भी सफल नहीं हो सकी। कृषि मंत्री तो निकट भविष्य में भी बहुत आशावादी नहीं है। इसके दो कारण हैं, जिस जमीन पर खेती की जा सकती थी, उस पर किसान खेती करने लगा है। बाकी पड़ती जमीन पर खेती करना उसके बस की बात नहीं है। उसे कृषि-योग्य बनाने के लिए लाखों रुपये की जरूरत पड़ेगी। सिंचाई का प्रबन्ध भी अत्यन्त असन्तोषजनक है। कुल कृषियोग्य भूमि के पच्चीसवें भाग से अधिक भूमि पर सिंचाई की व्यवस्था नहीं है। किसानों के पास इतने बैल भी नहीं हैं कि वे सारी भूमि को जोत सकें। ऐसी स्थिति में जल्दी अधिक से अधिक अन्न-उत्पादन की आशा नहीं की जा सकती।

करोड़ों रु० की सामग्री का ध्वंस

बम्बई के अंग्रेजी साप्ताहिक 'लिंक्टज' के कथनानुसार अंग्रेज वायु-अफसर बहुमूल्य युद्ध सामग्री जान-बूझ कर नष्ट कर रहे हैं। हजारों कीमती और एकदम नये विमान, एक हजार बहुत कम चली हुई मोटरगाड़ियां और सन्दूक में बन्द के बन्द ३ हजार नये ग्लाइडर चूर चूर कर दिये गये। अत्यन्त शक्तिशाली आधुनिकतम विमान जिन्हें भारतीय चालकों को चलाने का सौभाग्य भी न प्राप्त हुआ था, जलाने की लकड़ी की तरह चीर दिये गये। बिजली की मशीनों की सहायता से उनके इञ्जनों में छेद ही छेद कर दिये गये। 'यण्डर बोल्ट' और 'बोफाइटर' जैसे दो-दो लाख रुपयों के सर्वधातुमय विमान तोड़-तोड़ कर धातु के ऐसे ढेलों में परिणत कर दिये गये, जिनका दाम मुश्किल से १००) होगा। पानागढ़, दमदम, इलाहाबाद, कचरापाड़ा तथा अन्य अड्डों से मारवाड़ी व्यापारियों ने करोड़ों रुपये का माल मिट्टी के मोल खरीदा। एक व्यापारी ने दस करोड़ रुपये के इञ्जन की धातु ४ लाख रुपये में खरीदी। जब अमेरिन सेना भारत से जाने लगी तो भारत सरकार के विमान विभाग के डाइरेक्टर सर फ्रेडरिक टिम ने उनकी सारी युद्ध-सामग्री खरीद ली। इसका दाम उधार-पट्टे में हिंदुस्तान के खाते में लिखा गया। वह सामग्री भारतीय जनता के हाथ बेची जाने को थी, पर इसे भी रद्दी के ढेर में फेंक दिया गया। एक ओर तो विमान विभाग द्वारा हजारों विमान नष्ट-भ्रष्ट किये जा रहे थे और दूसरी ओर इसी विभाग द्वारा विदेश में ३ करोड़ रुपये के १६ विमानों का आर्डर दिया गया। क्या इस तोड़-फोड़ के निम्न कारणों की कल्पना करना स्वाभाविक नहीं होगा। यदि यह सब विमान और आधुनिक युद्ध-सामग्री भारतीयों के हाथ लगती तो भारतीय सेना भी अंग्रेजी सेना से टक्कर ले सकती। यदि यह सब युद्ध-सामग्री साबुत रहती तो अगले ४-५ वर्षों तक भारत को इंग्लैण्ड या और कहीं से कुछ मांगने की जरूरत न पड़ती। साथ ही इन सामग्रियों द्वारा हिंदुस्तान में ही नये शस्त्रास्त्र के कारखाने खुल सकते। क्या युद्धमंत्री सरदार बलदेवसिंह इस गंभीर आरोप की जांच करके वस्तुस्थिति पर प्रकाश डालेंगे?

रियासतों की अस्थिर मति

रियासतों की समस्या आज तक भी स्पष्ट नहीं हुई। ऐसा मालूम होता है कि रियासतों के राजा अभी तक स्थिति को स्पष्ट रूप से या तो समझ नहीं पाये हैं अथवा वे जान-बूझ कर अनजान बने हुए स्थिति को और अधिक उलझाने का यत्न कर रहे हैं। ब्रिटिश भारत की प्रगति में रियासतें शुरू से ही बाधक रही है और अब शायद मुस्लिमलीग की आड़ में वह फिर कुछ गड़बड़ करना चाहती हैं। यह ठीक है कि ट्रावन्कोर और बड़ोदा के प्रतिभाशाली दीवानों ने सर सुलतान अहमद के इस मत का तीव्र खण्डन किया है कि यदि लीग विधान परिषद में सम्मिलित नहीं होती, तो रियासतें भी उसमें सम्मिलित न हों, तथापि राजाओंकी अनिश्चित गतिविधि संदेह अवश्य पैदा करती है। वे अब तक भी विधान-परिषद के सदस्यों का निर्वाचन नहीं कर पाईं और न अपने घोषित सुधारों पर अमल कर रहीं हैं। लेकिन उन्हें यह स्मरण रखना चाहिए कि जिस तरह रियासतों की बाधाओं के बावजूद ब्रिटिश भारत लगातार उन्नति करता गया है, उसी तरह भविष्य में भी वह आगे बढ़ता जावेगा, परन्तु अपनी प्रतिगामी नीतियों का दुष्परिणाम रियासतों को अवश्य भोगना पड़ेगा।

अंतःकालीन सरकार और उसकी समस्याएं

अन्तःकालीन सरकार में लीग को सम्मिलित करने के लिये जो चर्चा चल रही है, कहा जाता है कि यदि वह आशाजनक रही तो निकट भविष्य में पं० जवाहरलाल नेहरू, मियां मुहम्मदअली जिन्ना तथा नवाब भोपाल की एक संयुक्त बैठक होगी।

बङ्गाल सरकार ने केन्द्रीय सरकार के मार्ग में नया रोड़ा अटकाया है। केन्द्रीय सरकार ने जूट का मूल्य-नियन्त्रण इस लिये करना चाहा था जिससे जूट उत्पादक को लाभ हो, पर बङ्गाल की सरकार ने जूट के गोरे व्यापारियों के दबाव से मूल्य-नियन्त्रण उठा लिया है। केन्द्रीय सरकार द्वारा नियन्त्रण का बिहार, उड़ीसा और आसाम जैसे जूट उत्पादक प्रान्तों ने स्वागत किया है। यदि बङ्गाल सरकार हठ पर अड़ी रही तो विदेशी व्यापारी तो इसका लाभ उठायेंगे आंतरिक जूट व्यवसाय को क्षति पहुंचेगी। यह भी ज्ञात हुआ है कि बङ्गाल सरकार इस सम्बन्ध में फेडरल कोर्ट में अपील करने वाली है।

केन्द्रीय सरकार द्वारा कबीलेवालों के प्रति नयी नीति अपनाने से वायसराय द्वारा नियंत्रित राजनीतिक विभाग में घबराहट उत्पन्न हो गयी है। यद्यपि इस परिवर्तन का कबीले वालों तथा ईपी के फकीर ने स्वागत किया है। पं० नेहरू द्वारा कबीली क्षेत्रों में जाने के समाचार से तो यह विभाग अत्यन्त विक्षुब्ध हो उठा है। इसलिये इस विभाग ने राजनीतिक विभाग से वेतन पाने वाले लोगों को भड़काना प्रारम्भ किया है तथा उन्हें लीगियों के सम्पर्क में आने को निर्देश दिया गया है।

भारत सरकार की ओर से श्री वी. के. कृष्णमेनन पिछले दिनों रूस के विदेश मंत्री मोलोतोव से मिले थे। इस भेंट का प्रयोजन यह था कि रूस तथा भारत में राजनीतिक सम्बन्धों की स्थापना की जा सके। इस चर्चा में खाद्यान्न के सम्बन्ध में विचार हुआ था। मोलोतोव ने कहा बताते हैं हम खाद्यांत द्वारा भारत की सहायता करने को इच्छुक हैं, पर रूस में सूखा पड़ जाने के कारण शीघ्र सहायता नहीं कर सकते।

ईरान में विद्रोह

ईरान सरकार की लगभग १७० फौजी लारियां, जिनके साथ टैंक और वायु-यान हैं, राजधानी से दक्षिण ईरान के शहर शीराज को रवाना हो गई है जिसे पिछले सप्ताहांत से ही कशकाई कबीले के लोगों ने घेर लिया है। कशकाई कबीले के लड़ाकू लोगों के पास जो घुड़सवार हैं, बन्दूकें, मशीनगनें और टैंक तोड़ तोपें काफी हैं। उनकी संख्या दूसरी कबीलों के लोगों के सहित

जो हमले में शामिल हैं, २०००० के लगभग है।

ईरान की खाड़ी के किनारे पर स्थित बन्दरगाह बूशायर की बाहरी हदों पर लड़ाई होने की खबर है जहां सप्ताहांत में खाड़ी के किनारे के प्रदेश के अरब कबीले घुस आये थे और जिन्होंने तेहरान से सम्बन्ध रखने वाले टेलीग्राफ के तार काट दिये थे। खाड़ी के पास के अधिक छोटे बन्दरगाह गानावेह और बन्दर रिग में भी कबाली घुस गये हैं। दक्षिणी ईरान के सब कबीलों के लड़ाकू आदमी इस कबाइली क्षेत्र में कशकाई लोगों के साथ मिल रहे हैं।

ईरान के प्रचारमंत्री कुमार मुजफ्फर फीरोज ने घोषणा की है कि अनावश्यक रक्तपात बचाने के प्रधान-मंत्री श्री बनाम सुल्तानेह ने विद्रोही कबीले के नेता श्री नासिर क्वाशाकी से सीधे बातचीत आरंभ कर दी है।

ब्रिटेन के वैदेशिक दफ्तर ने अस्वीकार किया है कि ब्रिटेन किसी भी प्रकार की शास्त्रास्त्र सहायता कबीलों को दी। मास्को रेडियो ने अपनी एक रेडियो आलोचना में कहा कि यह विद्रोह ब्रिटिश दलालों के षड़यन्त्र का परिणाम है।

सोवियत द्वारा तुर्की को नोट

सोवियत सरकार द्वारा २४ सितम्बर को तुर्की के पास एक नोट भेजा गया है जिस में बतलाया गया है कि तुर्की की सरकार ने दर्रा-दानियाल और बोसफोरस की रक्षा में रूस को साझीदार बनने से इन्कार करके कृष्णसागर के देश को इस क्षेत्र में सुरक्षा की गारण्टी देने से रोक दिया है।

जलडमरूमध्य पर केवल कृष्णसागर की शक्तियों का नियन्त्रण होने के रूसी प्रस्ताव को ठुकरा कर तुर्की ने वर्तमान सोवियत तुर्की सन्धियों का उल्लंघन किया है। कृष्णसागर के तट की रक्षा करना रूस के लिये आवश्यक है, परन्तु इससे तुर्की के अधिकारों पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

२४ अगस्त को तुर्की द्वारा भेजे गये पत्र के अनुसार तुर्की की सरकार रूस के तीन प्रथम प्रस्तावों पर विचार करने के लिये तैयार है। (१) इस जलमार्ग से सम्पूर्ण देशों के व्यापारिक तथा यात्री जहाज जा सकें। (२) यह जलमार्ग कृष्णसागर के बाहर की शक्तियों के युद्ध पोतों के लिये सदा खुला रहे। (३) कृष्णसागर के बाहर की शक्तियों के युद्धपोत विशेष अवस्था के अतिरिक्त इस मार्ग से गुजरने न दिये जांय।

तुर्की की वर्तमान सन्धियों में इस बात को स्वीकार किया गया है कि इस जलमार्ग के सम्बन्ध में कृष्णसागर की शक्तियों को विशेषता प्राप्त है। रूस कृष्णसागर में अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को स्वीकार नहीं कर सकता।

रूस का विश्वास है कि दोनो देशों के साधन मिलकर ही स्वतन्त्र जहाजरानी तथा जलडमरुमध्य की सुरक्षा का आश्वासन दे सकते हैं। इन प्रस्तावों का तुर्की की स्वतन्त्रता और अधिकारों पर कोई असर नहीं पड़ेगा? अगर तुर्की ने कृष्णसागर से बाहर की किसी शक्ति की सहायता से जलडमरूमध्य का सैनिकीकरण आरंभ किया तो वह कृष्ण सागर की शक्तियों की सुरक्षा के हित के सर्वथा विरुद्ध होगा।

तुर्की ने रूस को सूचित किया है कि इस नोट से उसके दृष्टिकोण में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। मालूम हुआ है कि ब्रिटेन और अमेरिका तुर्की का समर्थन करेंगे। यह भी ज्ञात हुआ है कि तुर्क सीमाओं पर रूस किलेबंदी कर रहा है।

दो नाजी नेता—जिन्हें फांसी पर लटकाया जायेगा

गोयरिंग
(जर्मन वायुसेना के भूतपूर्व प्रधान सेनापति)

रिबनट्राप
(भूतपूर्व जर्मन विदेशमन्त्री)

नाजी नेताओं को दण्ड

मित्रराष्ट्रों के अधिकारियों ने अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में २१ जर्मन नेताओं पर मुकद्मे चलाये गये थे। इस न्यायालय ने निम्न दण्डों की घोषणा की है:

गोयरिंग, रिबनट्राप, कीटल, काल्टेन ब्रुनर, रोजनबर्ग, फ्रांक, फ्रिक, जूलियस, स्ट्राइखर, साकल, जोडल, सीस इन्क्वार्ट, मार्टिन बोरमैन (अनुपस्थित) को फांसी पर लटका कर मृत्युदण्ड दिया जायेगा।

हैस, फंक और रेडर को आजन्म कारावास का दण्ड दिया गया है।

शीराज और स्पीयर को २०-२० वर्ष न्यूराथ को १५ वर्ष और डोयनिट्ज को १० वर्ष कारावास का दण्ड दिया गया है।

शाख्ट, वानपापेन और फ्रिट्ज को मुक्त कर दिया गया है।

फांसी का दण्ड १६ अक्टूबर को दिया जावेगा।

गोआ सरकार—दमनपथ पर

समाजवादी नेता डाक्टर राममनोहर लोहिया, जो गोआ के स्वातन्त्र्य आन्दोलन के सम्बन्ध में वहां जा रहे थे, कोलम में गिरफ्तार कर लिये गये और प्रायः टैंजियर भेज दिये गये। आपके साथ यात्रा करने वाले ट्रेन के उस डब्बे के सभी यात्रियों को, जिनमें पूना कांग्रेस कमेटी की मन्त्रिणी श्रीमती शान्तानायक, पूना के पत्रकार श्री आर० वी० पण्डित तथा श्री योगेन्द्रसिंह भी थे, ट्रेन से उतार लिये गये और रातभर हिरासत में रखे गये। इनमें श्री आर० वी० पण्डित को छोड़कर और सभी आदमियों को दूसरे दिन सुबह गोआ से बाहर भेज दिया गया। श्री आर० वी० पण्डित पुलिस द्वार नजरबन्द कर रखे गये हैं।

डच-इण्डोनेशिया सन्धि वार्ता

इण्डोनेशियाई प्रजातन्त्रीय सरकार तथा डच अधिकारियों के बीच ब्रिटिश स्पेशल कमिश्नर लार्ड किलर्न की मध्यस्थता से चलने वाली आगामी वार्ता सम्भवतः रविवार से प्रारम्भ होगी।

युगोस्लाविया पर अणुबम ?

गत मास जब अमरीकी वायुयानों को घेर कर उतारने के प्रश्न पर अमरीका तथा युगोस्लाविया के बीच कूटनीतिक तनातनी हुई थी तो उड़न किले वायुयानों के चार दस्तों को परमाणु बम लेकर यूरोप भेजने की योजनाएं बनाई गई थीं।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

क्या यही फिलिपाइन की स्वतन्त्रता है ?

[ले० — श्री एण्ड्रयूज]

गत ४ जुलाई को फिलीपाइन के इतिहास में एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटना घटित हुई है,वह यह है कि अमेरिका द्वारा उसकी स्वतन्त्रताकी घोषणा। अमेरिका की कांग्रेस ने एक अर्से तक विचार करने लेने के बाद ही अपने उपरोक्त निर्णय को व्यक्त किया है। इसके पूर्व कि फिलिपाइन सम्बन्धी अन्य बातों पर प्रकाश डाला जाय,यह जान लेना आवश्यक है कि उसे मिली हुई,अथवा अमेरिका सरकार द्वारा दी गयी स्वतन्त्रा की रूपरेखा क्या है। एक अंधा भी देख सकता है कि उपनिवेशों में पूंजीपतियों और उनकी साम्राज्यवादी सरकारों के कैसे और कितने महान स्वार्थ निहित हैं। आजादी की घोषणा कर दुनियां की आंखों में धूल झोंक देना बहुत ही आसान है, किन्तु आजाद होने वाले देश में लगी हुयी अपनी संपत्ति की रक्षा एवं अन्य स्वार्थों को भी नष्ट कर देने का निश्चय उतना आसान नहीं है। यही कारण है कि आज पूंजीवादी राष्ट्रों के मध्य उपनिवेश को प्रश्नों के लेकर ही नये-नये झगड़ों का सूत्रपात होता है, विजेताओं में शत्रु से छीनी गयी संपत्ति के बटवारे में स्वार्थ-प्रधान होने के कारण विचार वैषम्य हो जाता है, एक युद्ध समाप्त नहीं हो पाता कि तत्काल ही दूसरे युद्ध की नींव पड़ जाती है और कुछ समय पहले जो मित्र था, स्वार्थ के वशीभूत हो, शत्रु रूप में आ डटता है। इस प्रकार से युद्ध पर युद्ध हुआ करते हैं, जिनकी जड़ में और कुछ नहीं साम्राज्यवादियों के निहित स्वार्थ होते हैं तथा गरीबों और बेबसों की आहुति दे पूंजीवाद अपने इष्ट-पूर्ति का यज्ञ किया करता है।

द्वितीय महायुद्ध के समाप्त हो जाने के बाद परिणाम जो भी निकला है वह सर्वज्ञात है। इस युद्ध ने दुनिया का खाका बदल दिया है। अब तक जो महत्व एटलांटिक को प्राप्त था वह प्रशान्त को प्राप्त हो गया है तथा जिब्राल्टर की जगह फिलीपाइन ने ले ली है। फिलीपाइन की महत्ता इतनी बढ़ जाने पर ऐसा संभव भी कब हो सकता है कि अमेरिका सरकार उस पर से अपना साम्राज्यवादी पैर उठा ले। अमेरिकाभी इस युद्ध से पोषक नहीं शोषक बन गया है। यही कारण है कि फिलीपाइन्स को स्वतंत्र कर देने की घोषणा के साथ ही साथ अमेरिका सरकार ने स्पष्ट शब्दों में यह भी कह दिया है कि फिलीपाइन में लगी हुई अमेरिकन संपत्ति ज्यों की त्यों बनी रहेगी। वहां पर बनाये गये अमेरिकन जल तथा वायु सेना के अड्डे भी ज्यों के त्यों कायम रहेंगे। तो फिर मिला क्या ? कहना अनुचित न होगा कि फिलीपाइन का आंतरिक सम्बन्ध वहां के पूंजीपतियों द्वारा, जो अमेरिका के इशारों पर नाचने वाले हैं, किया जायगा। तो फिर क्या यह कहना सत्य नहीं है कि अमेरिका सरकार स्वतन्त्रता के नाम की मजाक उड़ा रही है !

फिलीपाइन को अमेरिकनों ने स्पेनिश अमेरिकन युद्ध में हस्तगत किया और यह उसका साम्राज्यवादी क्षेत्र में आने का पहला कदम था। इससे पहले अमेरिकन जनता ने फिलीपाइन का कभी नाम तक भी न सुना था। उसका ध्यान इस ओर आकर्षित करने वाला क्यूबा का स्वातन्त्र्य संग्राम था। क्यूबा स्पेन सरकार से अपनी आजादी की लड़ाई में रत था। थियोडोर रूजवेल्ट, जो उस समय अमेरिकन नौ सेना के उपमन्त्री थे,अमेरिकन स्पेनिश युद्ध प्रारंभ होने से दो मास पूर्व ही एडमिरल डेवी को एक जहाजी बेड़े के साथ सुदूरपूर्व की ओर गुप्त रीति से भेजा। थियोडोर का नौसेना भेजने का अर्थ फिलीपाइन पर आक्रमण करना मात्र था। दैवयोग से क्यूबा के हवाना बन्दरगाह पर 'मेन' नामक जलपोत के डूब जाने से, जिसका कारण अज्ञात था, युद्ध की भूमिका तैयार हो गयी। 'मेन' के डूब जाने के लिये स्पेन ही दोषी ठहराया गया। स्पैनियार्डस ने जब यह सुना कि मेन के डुबाने वाले अपराधी वही ठहराये जाते हैं तब उनके पैरों तले की जमीन खिसक गयी। विवश होकर उन्होंने ९ अप्रैल १८९८ को अमेरिका सरकार की मांगों को स्वीकार कर लिया। उस समय के प्रेसीडेण्ट मैकिनले ने दूसरे ही दिन इस संदेश को अमेरिकन सरकार को सुनाया।

तीन महीनों के बाद स्पेनिश-अमेरिकन युद्ध समाप्त हो चुका था। दो युद्धों में स्पेन की नौसेना को बर्बाद कर दिया गया तथा स्पेनिश साम्राज्यवाद को तृतीय श्रेणी की शक्ति बना दिया गया।

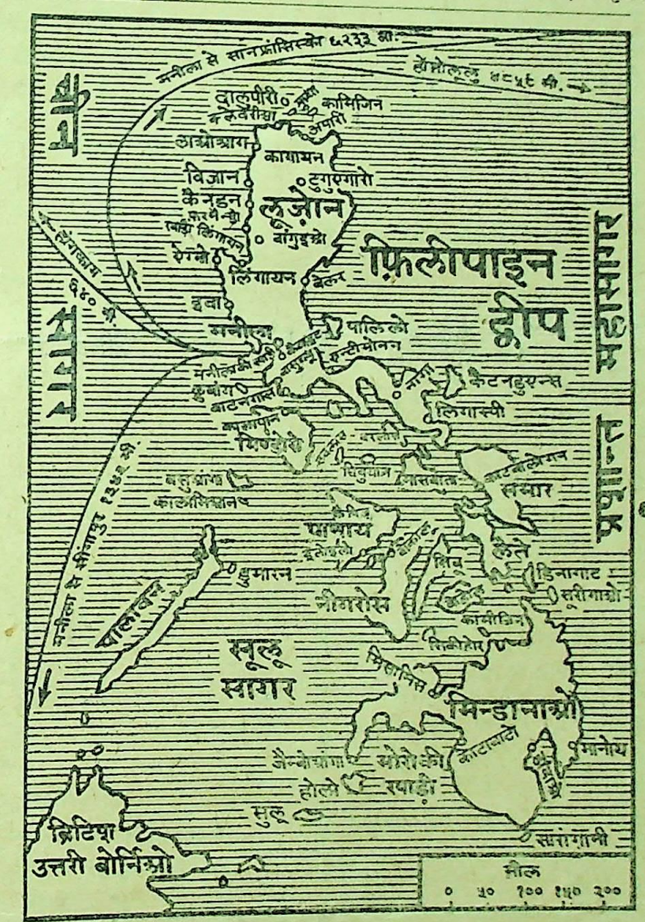

विश्व के अन्य साम्राज्यवादियों की गृध्रदृष्टि इधर ही लगी हुई थी। बर्लिन स्थित अमेरिकन राजदूतने अमेरिका सरकार के पास एक सूचना भेजकर कहा था—'अमेरिका के प्राची दिशा में इस प्रकार आ डटने से जर्मन सरकार का रुख बदला है। वह सोचती है कि या तो पूर्व में उसे कुछ प्राप्त हो नहीं तो वह युरुप में ही नहीं अपने भी देशवासियों के सामने बेइज्जत हो जायगी। जर्मनी के युद्धपोत मनीला बन्दरगाह में घुसे तथा डेवी की नौसेना के सामने ही लंगर डाल कर डट गये। अमेरिकन साम्राज्यवादी युद्ध में लूटी गयी सम्पत्ति को आसानी से बांट देने के लिये तैयार न थे। जर्मनी तथा अन्य देशों के पूंजीपतियों को 'न्यूयार्क टाइम्स' ने अपने अग्रलेख में इस बात की चेतावनी भी दे दी—'हम ''अपने से बड़े किसी सत्ताधीश को इस योग्य नहीं समझते जो आकर यह बताये कि अपने ही सैनिकों की शूरता से प्राप्त की गयी संपत्ति में हमें क्या और कितना मिलेगा।'

इस घटना के बाद से अमेरिकनों तथा फिलीपाइन के 'स्वतन्त्र' अधिवासियों के मध्य पंचवर्षीय युद्ध प्रारंभ होता है। एडमिरल डेवी ने स्पेन की प्रथम शर्त कि वह (एडमिरल डेवी) मनीला में फिलीपाइनों के आत्मसमर्पण करायें अस्वीकार कर दिया। उनका कथन था—'मेरे पास इतनी सेना नहीं जिससे कि नगर पर अधिकार किया जा सके और न मैं एक क्षण के लिये भी ऐसा उचित समझता हूं कि नगर असभ्य विद्रोही फिलीपाइनों के अधिकार में ही रहने दिया जाय।' वास्तव में मनीला में आत्मसर्पण का आयोजन स्पैनियार्डों ने ही किया था। यहां पर एक ओर तो विद्रोही फिलीपाइनों को नगर से बाहर रोक रखा गया था और दूसरी ओर अमेरिकनों के लिये नगर का फाटक खोल दिया गया। जनरल एण्डर्सन ने इस बात की सूचना देते हुये कि किस प्रकार उसने फिलीपाइनों को नगर से बाहर रोक रखा था बताया है— 'अपनी सेनाओं से नगर पर दखल करते हुये तथा उनकी स्थितियों का निरीक्षण करते हुए।' यहां से कूटनीतिक दूकानदारी प्रारंभ होती है क्योंकि डेवी का ऐसा ख्याल था कि उसके पास नगर पर अधिकार कर सकने के लिये यथेष्ट सेना नहीं है। व्यक्तिगत यात्रियों का कहना था कि देश के आंतरिक भागों में शांति है। जनता प्रजातन्त्र कायम करने की सोच रही थी। अमेरिकनों का कथन था कि देश में अशांति है और उसको शांत करने की आवश्यकता है।

अमेरिका से अधिकाधिक मात्रा में सेना आ पहुंची और उसने नगर पर कब्जा जमाना प्रारंभ कर दिया। समस्त देश पर अपना अधिकार जमाने में अमेरिकन सेना को दो वर्षों तक लड़ना पड़ा तथा ३ वर्षों तक गुरीला युद्ध जारी रहे। स्पेनके साथ किये गये युद्ध में अमेरिका के ३९सैनिक लड़ायी में मारे गये तथा५४६२ अन्य अमेरिकन सैनिक रोगग्रस्त होकर मरे। फिलीपाइनों के विरुद्ध ६० हजार अमेरिकन सैनिकों ने युद्ध में भाग लिया जिनमें से ४ हजार ३ सौ सैनिक काम आये।

[क्रमशः]

रियासतों की विजयादशमी

[ले० — श्री शैलेन्द्रकुमार पाठक]

प्रत्येक त्यौहार जन-जन में उत्साह का संचार करता हुआ आता है। मनुष्य उमंगों की बाढ़ में बहने लगता है और कुछ समय के लिए अपने को भूल जाता है — वैसे तो विजयादशमी ही नहीं प्रत्येक त्यौहार मनाने का ढंग अपने-अपने स्थान पर कुछ नवीनता अवश्य रखता है, परन्तु रियासतों में उनका परिवर्तित रूप देखकर आश्चर्य चकित हो जाना पड़ता है। निश्चित रूप से यह नहीं कहा जा सकता कि आज जिस रूप में रियासतों में विजयादशमी मनाई जाती है — उसका प्रचलन कब हुआ। कुछ इतिहासकारों की ऐसी धारणा है कि वर्तमान नरेशों के पूर्वजों ने जब आबू पर्वत पर दीक्षा ली थी उसी समयसे रियासतों में विजयादशमी का त्यौहार मनाया जाना प्रारम्भ हुआ। और उसके पश्चात् ही यह परम्परा बन गई।

रियासती त्यौहारों में यदि किसी को सब से अधिक महत्व दिया जाता है, और सब से अधिक शान से मनाया जाता है, तो वह विजयादशमी है। अधिकांश रियासतों में विजयादशमी के दिन नरेश अपनी सेना का निरीक्षण करते हैं, सैनिकों को नई वर्दी और नए हथियार दिए जाते हैं, जागीरदारों को सम्मान देने के साथ-साथ दरबारी पोशाक भी दी जाती है। कुछ नरेश सरदारों के साथ शिकार खेलने के लिए भी जाते हैं, यदि शिकार मिलता है तब तो अच्छाशकुन माना जाता है, नहीं तो ऐसा समझा जाता है कि यह वर्ष राज्य के लिए अशुभ सिद्ध होगा। कहीं कहीं नरेश राम-सीता की मूर्ति की, और तलवार की पूजा करते हैं।

परन्तु कुछ ऐसी भी रियासतें हैं, जहां की विजयादशमी देखकर आश्चर्य के साथ-साथ नरेशों की बुद्धि पर भी तरस आता है। ऐसी रियासतों में दतिया तथा कोटा प्रमुख हैं। अन्य रियासतों के बारे में मुझे उतनी जानकारी नहीं है।

दतिया में राजमहल के भीतर एक भैंसा बांध दिया जाता है, और एक साल तक वह बराबर खूंटे से बंधा-बंधा खाया करता है। इस भैंसे के भोजन का खर्च कई सौ रुपये मास का होता है। विजयादशमी के दिन भैंसे को अच्छी तरह से शराब पिलाई जाती है और बाद में उसे लाकर बाहर छोड़ दिया जाता है। महाराजा अपने सरदारों तथा जागीरदारों के साथ अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित बाहर खड़े रहते हैं। सबसे पहले दतिया नरेश तलवार से उस मतवाले भैंसे पर वार करते हैं। भैंसा घायल होकर नगर की सड़कों पर नागरिकों को रौंदता हुआ भागता है, उसके पीछे-पीछे सैनिक तथा सरदार उसे मारने के लिए दौड़ते हैं। कई घण्टे के परिश्रम के बाद भैंसे का शरीर छिन्न-भिन्न होकर मार्ग में बिखेर दिया जाता है। जब तक भैंसे के अंग प्रत्यंग में बरछी के घाव न हो उस समय तक विजयादशमी का अनुष्ठान पूरा नहीं माना जाता। इसके बाद ही अगले वर्ष के लिए फिर एक भैंसा बांध दिया जाता है।

कोटा में महाराज विजयादशमी के कई दिन पहले ही कुल देवियों तथा देवताओं की पूजा आरम्भ कर देते हैं। छुट्टी पर गए हुए तमाम सैनिक तथ रियासत के जागीरदार एक दिन पहले ही कोटा में आकर एकत्रित हो जाते हैं। विजयादशमी के दिन महाराव अपनी समस्त सेना, जागीरदारों तथा नागरिकों के साथ रावण का वध करने जाते हैं। सैनिक सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होते हैं, तोपें साथ में रहती हैं। आगे-आगे अंग्रेजी बाजा बजता चलता है, और उसके पीछे सेना चलती है। प्रस्थान करने के पूर्व ज्योतिषी महोदय से रावण के मारने का समय पूछा जाता है और आज इतना लम्बा समय बीत जाने के बाद भी मूढ़ ज्योतिषी रावण के मरने का समय बता देता है। महाराज मुगल बादशाहों की दी हुई पोशाक पहिन कर हाथी पर बैठकर चलते हैं। सरदार तथा जागीरदार घोड़ों पर होते हैं।

पहले प्रति वर्ष लकड़ी तथा कपड़ों से रावण का निर्माण होता था पर अब इस ईंट-चूने का पक्का बनवा दिया गया है, केवल सिर लकड़ी तथा कपड़े का बना दिया जाता है। महाराज जब रावण के निकट पहुंचते हैं तो पहले नगर कोतवाल महाराज की ओर से सन्धि का प्रस्ताव लेकर जाता है, परन्तु ईंट और चूने का रावण भी इतना अभिमानी है, कि वह कोटा नरेश की कोई परवाह नहीं करता कोतवाल उत्तर न पाकर लौट आता है, और महाराज से कह देता है। इस प्रकार कोतवाल तीन बार वापिस आता है। अन्त में महाराज क्रोधित होकर रावण पर आक्रमण करते हैं हाथी सूंड में रावण का सिर लपेट कर नीचे गिरा देता है। महाराज तथा जागीरदार बन्दूकों से फायर करते हैं, इसी समय तोपें भी चलने लगती हैं। रावण वध होने के पश्चात महाराज सीता के चित्र की पूजा करते हैं। सैनिकों को पुरस्कार दिया जाता है। इस प्रकार कोटाकी विजयादशमी समाप्त होती है।

ग्वालियर में विजयादशमी के ग्वालियर नरेश सरदारों जागीरदारों तथा सैनिकों के साथ शमी वृक्ष की पूजा करने जाते हैं। शमी वृक्ष नगर से बाहर है। उसका विधिवत पूजन करने के बाद महाराज लौटते हैं। और बाद में फिर— अस्त्र-शस्त्रों की पूजा की जाती है।

इस प्रकार भारतीय रियासतों में विजयादशमी का त्यौहार मनाया जाता है।

परिणय

यह मिलन का क्षण अमर हो!
दिवस-रजनी के मिलन के क्षण यथा संध्या-उषाएं
राग रंजित झिल-मिलाते,
प्रेममय चकवाक आतुर।
मेघ-दामिनि के मिलन में घिर घुमड़ आतीं घटाएं,
इन्दु धनु नव छवि रचाते,
स्निग्ध चातक प्रेम-आतुर।
मधु-मलय के शुभ मिलन में गन्ध भर आतीं हवाएं,
तारिका शशि जगमगाते,
प्रेमपूर्ण चकोर आतुर।
यह मिलन, यह गंध, शोभा, प्रेम-आतुरता अमर हो।

× × ×

एक बन्धन था बंधा जब आदि नारी-नर मिले थे,
सृष्टि के प्रारम्भ में जब कमलिनी दिनकर मिले थे,
चांदनी जब चन्द्रमा को शान्त औ शीतल मिली थी,
एक बन्धन था बंधा जब जाह्नवी-सागर मिले थे,
वे सुदृढ़ बन्धन प्रणय के आज ज्यों के त्यों बने हैं,
आज बंधता एक बन्धन, आज का बन्धन अमर हो।

× × ×

यज्ञवेदी से विहंसती अग्नि की उठती शिखाएं,
मंजु स्वर में गूंजती ये वेद की पावन ऋचाएं,
यह सलज शृङ्गार तन का, यह प्रखर सज्जा निलय की,
आज की मृदु भावनाएं, आज की शुभ कामनाएं,
यह अतुल उल्लास उज्ज्वल, यह सुखद परिहास मंजुल,
यह महोत्सव, ये समागत, यह वधू यह वर अमर हो!

× × ×

था दिया शिव ने उमा की मांग में सिन्दूर ज्यों भर,
और लक्ष्मी के सजाये कंकणों से विष्णु ने कर,
इन्द्र ने डाली शची के कण्ठ में श्री फूलमाला,
हैं सजे वैसे अभी कंकण, सुमन, सिंदूर सुन्दर;
देवता, आशीष दो तुम, कण्ठ की यह फूलमाला,
मांग की सिन्दूर रेखा, हाथ कंकण अमर हो।

कवि की प्रकाशित हो रही रचना 'प्रेमदूती' से

— विराज

गीत

यह भूल हुई, मैं भूल गया,
सुन्दर सपनों को देख-देख, जो मन ही मन मैं फूल गया।
मैंने समझा जीवन का सुख, यौवन में – मादकता में है,
मैंने सोचा जीवन निशीथ भी, सफल एकरसता में है।
मैंने तो चाहा फूलों को, अनजाने में चुभ शूल गया,
यह भूल हुई, मैं भूल गया।
जीवन का गीत चला गाने, रोदन औठों से फूट पड़ा,
अधरों पर आने के पहिले, प्याला हाथों से छूट गया।
कुसुमों की अंजलि भरने में, हाथों का सूखा फूल गया,
यह भूल हुई, मैं भूल गया।
मैंने चाहा सुख मदिरा से, भरलूं मैं जीवन का प्याला,
मैंने चाहा मन की मदिरा, पीकर हो जाऊं मतवाला।
मैं कुछ न कर सका हाय, कौन मेरी आंखों में भूल गया,
यह भूल हुई, मैं भूल गया।
सुन्दर सपनों को देख-देख जो मन ही मन मैं फूल गया॥

— शम्भूदयाल शर्मा

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भारत सरकार के सुरक्षामन्त्री

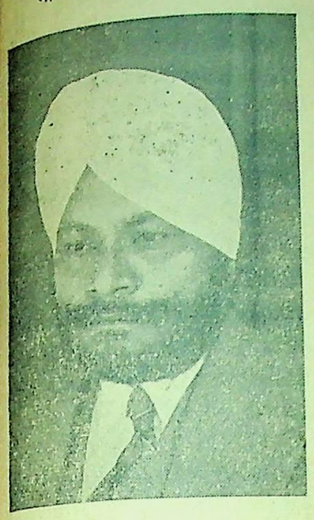

सरदार बलदेवसिंह

हमारी सुरक्षा-नीति

[ले० — प्रो० डी० एस० नाग, बी० काम०]

★

आज भारत बड़ी ही तेजी के साथ पूर्ण स्वतंत्रता की ओर बढ़ रहा है। विधान परिषद भारत की राजनीति के इतिहास में एक नया प्रकरण आरम्भ करेगी। प्रथम राष्ट्र के निर्वाचित प्रतिनिधि स्वतंत्र भारत के विधान का निर्माण करेंगे। हमें अपने भविष्य के सम्बन्ध में स्वतन्त्रतापूर्वक विचार करने का प्रथम बार अवसर मिल रहा है। देश के प्रत्येक जीवन क्षेत्र में हमें परिवर्तन करना है। युगों से छूटे हुए भारत के लिए अपनी सुरक्षा को हल करना अत्यन्त आवश्यक है। आन्तरिक तौर से भारत आज क्षत-विक्षत है, उसकी उत्तरी-पश्चिमी सीमा पर रूस मंडरा रहा है; अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में शक्तिशाली राष्ट्र अपना प्रभुत्व जमाने के लिए एक दूसरे से लड़ रहे हैं। वस्तुतः तृतीय महायुद्ध के बादल चारों ओर से मंडरा रहे हैं। ऐसी अवस्था में भारत के लिये अपनी सुरक्षा का प्रश्न बहुत जटिल है।

स्वतंत्र भारत को अपनी रक्षा के लिये पैदल, नाविक एवं हवाई फौजें दो कारणों से रखनी होंगी। प्रथम तो उसे किसी विदेशी राष्ट्र के आक्रमण से अपनी रक्षा करनी है। दूसरे देश के भीतर भी शांति कायम रखने के लिए उसे फौजों की आवश्यकता पड़ेगी। विदेशी आक्रमण से देश की रक्षा करने के लिये कितनी फौज की आवश्यकता पड़ेगी, इसका निर्णय केवल अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियां कर सकेंगी। यद्यपि शांति सम्मेलन संसार-व्यापी शांति स्थापित करने का प्रयत्न कर रहा है,परन्तु हम देखते हैं तृतीय महायुद्ध के बादल हम पर अभी से गंडराने लगे हैं। संसार के बड़े बड़े शक्तिशाली राष्ट्र एक दूसरे के दुश्मन बने हुए हैं। हमारी उत्तरी पश्चिमी सीमा पर ईरान देश में शक्तिशाली राष्ट्र शतरंज की चालें खेल रहे हैं। इन परिस्थितियों में एक सुसंगठित सेना बनाये रखना भारत के लिए अत्यंत आवश्यक है। यदि हमें अपने देश को शक्तिशाली राष्ट्रों का अखाड़ा नहीं बनाना है तो हमें अभी से अपने रक्षा कार्य में संलग्न हो जाना चाहिये। आधुनिक वैज्ञानिक शस्त्रों से सुसज्जित सेना खड़ी करने की अत्यंत आवश्यकता है। देश में आन्तरिक शांति कायम रखने के लिये भी हमें सेनाओं की आवश्यकता पड़ेगी। कुछ लोगों का ख्याल है कि ब्रिटेन का भारत को राजनीतिक शक्ति सौंपने का कार्य शांतिपूर्वक सम्पन्न हो जावेगा, परन्तु यह भ्रम है। अपने २०० वर्षों से साम्राज्यशाही शासन के दौरान में ब्रिटेन ने कुछ ऐसी प्रतिक्रियावादी शक्तियां हमारे राष्ट्रीय जीवन में पोषित की हैं जो ब्रिटेन के जाते ही वे अपने हितों की रक्षा के लिए प्रजातंत्रीय सिद्धांतों पर गठित राष्ट्रीय सरकार के विरुद्ध बलवा खड़ा करेंगी। राजनैतिक शक्ति हस्तान्तरित करने में अनेक रोड़े आवेंगे। इन प्रतिक्रियावादी शक्तियों को दबाने के लिए हमें सेना की आवश्यकता होगी।

सुरक्षा नीति की मूल

(१) राष्ट्रीय सीमा किसी भी स्वतंत्र राष्ट्र के सुरक्षा की आधार शिला होती है। अंग्रेजी राज्य में सिपाही केवल वेतन के लिये फौज में काम करते रहे हैं। राष्ट्र प्रेम तो दूर रहा,अधिकतर अभी तक उन्होंने राष्ट्र के हितों के विरुद्ध ही कार्य किया है। अब तक वे इंग्लैंड के बादशाह के प्रति आज्ञाकारिता की शपथ लेते आये हैं। स्वतन्त्र भारत में उन्हें राष्ट्र के प्रति आज्ञाकारी रहने की शपथ सहर्ष लेनी होगी। हम ब्रिटिश कामनवेल्थ आफ नेशन्स में रहें अथवा नहीं; हमें यह ब्रिटेन को साफ कह देना होगा कि आयरलैंड की तरह हमारी फौजें राष्ट्रके प्रति शपथ लेंगी और राष्ट्र के प्रतिनिधियों के हाथ में उनका कमान्ड रहेगा।

(२) जहां तक सुरक्षा का सम्बन्ध है,हमें भारत को अखंड एवं एक इकाई मानना होगा। उसकी सीमायें, पर्वतों की दीवार,समुद्री-तट एवं साधन और उत्पत्ति के दृष्टिकोण से भारत एक स्वावलंबी प्रदेश है। दक्षिण पूर्वी देशों में उसका अपना एक विशिष्ट स्थान है। वह केवल अपनी ही रक्षा नहीं कर सकता है वरन दक्षिणी-पूर्वी देशों की भी रक्षा करने में सहायक सिद्ध होगा। परन्तु यह सब तभी हो सकेगा, जबकि उस अखंडित रखा जावे। यदि किसी भी प्रकारसे हमने उसका विभाजन किया तो देश के लिए बड़ा भारी खतरा हो जावेगा। ब्रिटिश मंत्री मंडल की राय इस सम्बन्ध में लिख देना उचित होगा 'सुसंगठित रक्षा के और भी जोरदार कारण हैं, अब तक भारतीय सेनायें समस्त भारत की रक्षा के लिए प्रयत्न करती रही हैं। उनको दो भागों में विभाजित करने से उनकी कार्य-कुशलता एवं सैनिक परम्परा पर बड़ा आघात पहुंचेगा। इसके बाद ही घातक परिणाम होंगे। भारतीय नौसेना एवं हवाई फौजों की शक्ति बहुत कम हो जावेगी। प्रस्तावित पाकिस्तान के दोनों प्रदेशों को बाह्य आक्रमण का सदा खतरा है और हमारी राय में इन सीमाप्रान्तों की रक्षा के लिये पाकिस्तान के प्रदेश अपर्याप्त होंगे।'

(३) देश की आज की एकता की भावना कितनी आवश्यक है, यह हमें बतलाने की आवश्यकता नहीं। सैकड़ों वर्षों से ब्रिटिश फौजी अफसरों में, भारतीय सैनिकों में जातीयता, प्रांतीयता तथा अनेक प्रकार के भेद भाव बनाये रखे हैं। सन् १८५७ की राष्ट्रीय क्रान्ति से डर कर उन्होंने हमारे सैनिकों में कभी राष्ट्रीय एकता की भावना को पनपने नहीं दिया। सुरक्षा एवं आंतरिक शान्ति के लिये साम्प्रदायिक द्वेष की जहर से बचाये रखने के लिये तुरन्त ही कार्यवाही करनी चाहिये। फौजों के भरती करने के तरीके उनकी ट्रेनिंग तथा तरक्की इत्यादि में साम्प्रदायिकता के सिद्धांत को तुरन्त खतम कर देना चाहिये।

(४) हमें अपनी फौजों को आधुनिक वैज्ञानिक शस्त्रों में ट्रेनिंग देने के लिये तथा उनको वैज्ञानिक शस्त्रों से सुसज्जित करने में कुछ समय अवश्य लगेगा। इस अन्तःकालीन समय में हमें अपनी सुरक्षा के लिये अथवा राजनैतिक शक्ति हस्तान्तरित करने के लिये ब्रिटेन से कुछ सन्धि करनी होगी। एशियाई देशों में भारत का एक विशिष्ट स्थान है, संभवतः संयुक्त राष्ट्र संघ एशिया में शांति स्थापित रखने के लिये कुछ ब्रिटिश फौजें भारत में रखे। परन्तु इस सन्धि में कुछ बातें विशेष साफ कर देनी होंगी। हमें यह स्पष्ट कर देना होगा कि भारत एक सत्तासम्पन्न स्वतन्त्र राष्ट्र है। बिना उसकी अनुमति के ब्रिटिश साम्राज्यशाही की फौजें नहीं रह सकती। भारत की रक्षा करना उसकी स्वयं की जिम्मेदारी होगी।

[शेष पृष्ठ १८ पर]

चार कहानियां
तिरंगा टाइटिल
७ इक रंगे चित्र

मां का स्वर्ग मूल्य २)

लेखक व चित्रकार—
जयन्त
(भूतपूर्व प्रधान-सम्पादक साप्ताहिक वीर अर्जुन व सम्पादक
"मैं भूल न सकू" कहानी-संग्रह)
प्राप्ति स्थान—
प्रकृति-पुरुष, कला-मन्दिर,
आर्यनगर, ज्वालापुर (जि० सहारनपुर)

कहानी

सर्व शान्ता

श्री ऊषामित्रा

उस दिन भी इन्दुमती का छोटा-सा हृदय तृप्त श्वास से परिपूर्ण था, जिस दिन बंगाल के दुर्भिक्ष ने शत-शत नर-नारी को अपने कुख्यात विशाल उदर में समा लिया था और समाता जा रहा था।

यद्यपि इन्दु के उदर में क्षुधा की अग्नि प्रज्वलित रहती, परन्तु फिर भी सन्तोष से उसका जी भरा रहता, उसके दारिद्र्य और अभाव इन्दु के सन्तोष को लांघ नहीं सके।। पति प्रकाश के स्नेह, तीन सन्तानों के ममत्वपूर्ण मुख उसके लिए यथेष्ट होकर रहते। छोटी-सी गृहस्थी, छोटा-सा घर, रमा-उमा और शंकर तीन बच्चे, बच्चों के मुख से 'मां' की पुकार, इन सब के सामने इन्दु अभाव को तुच्छ समझती।

दुर्भिक्ष, दुर्दिन ? तो संसार में ऐसे बुरे दिन आया ही करते हैं, इसके लिए रोना भी कैसा ? वह स्वयं निराहार रह कर पति, पुत्र, कन्याओं को भोजन करवाती, यही थी उसकी दुनिया, उसका ध्येय। सोचती ईश्वर ने जब हमें सरजा है तब भोजन भी वही देगा, अन्न भी देगा और वस्त्र भी, इसके लिए मैं हाय-हाय क्यों करूं ?

दिन भर नौकरी की तलाश में भटकता, भूखा-प्यासा सन्ध्या के समय जब घर पर लौटकर हताश भाव से प्रकाश बैठ जाता, तब इन्दु एकबार उसे चकित नेत्रों से देखती, फिर मुख पर जरा-सी हंसी बिखेर कर कहती—'अजी तुम भी क्या औरतों की तरह मातम मनाने बैठ गए!'

'इन्दु, तुम नहीं जानती संसार मुझे किस तरह ठुकरा रहा है।'

'कोई बात नहीं, उठो, हाथ-मुंह धो, भोजन तो करो।'

'भोजन ? परन्तु इन्दु—'

'उठो-उठो, भोजन के बाद बातें करूंगी।'

तब प्रकाश बाध्य शिशु की भांति उठता। साफ कपड़े उतार कर यत्न से अलमारी में सहेज कर रखता, तब गमछा पहन कर हाथ-मुंह धोता और चुपका चोर की भांति बैठ जाता। इन्दु कहती—'चलो, खाना ठण्डा हो रहा है खालो।'

भावहीन नेत्रों से प्रकाश कहता—'खाना ? किन्तु कहां से आया ?'

इन्दु उसे बलात् उठाकर भोजन पर बठाती।

लाल-लाल मोटे चावल का पर्याप्त भात और दाल देखकर प्रकाश विस्मित होता। वह भली भांति जानता था कि घर में एक दाना भी अन्न का नहीं है, रहे भी कैसे ? एक वर्ष से उसकी नौकरी छूट गई है। एम० ए० की डिग्री बक्स में पड़ी सड़ रही है, इस दीर्घ एक वर्ष के 'युग' में ४० रुपये की एक स्कूल मास्टरी भी नहीं मिली। नौकरी की खोज में उसने क्या नहीं किया ? किन्तु व्यर्थ, सब व्यर्थ। एक पैसा भी तो आता नहीं, तब गृहस्थी चले भी कैसे ? खाने वाले कम नहीं। उस पर यह अकाल।

दो छोटी-छोटी लड़कियां एक ४-५ वर्ष का लड़का एवं दो आदमी स्वयं वह, प्रकाश यह भी जानता था कि गृहस्थी चलाने के लिए इस वर्ष के 'युग' में इन्दु के गहने, रेशमी कपड़े सब कुछ बिक चुके हैं, यहां तक कि घर में जो भी कांसे, पीतल के बर्तन थे सो भी बाजार में जा चुके हैं, मिट्टी के बर्तनों से इन्दु अपना काम चलाती है। अब उसके पास एक भी पैसा नहीं है। उसपर कलकत्ता में यह महाकाल, दुर्भिक्ष, चावल, गेहूं आटा बाजार में कुछ भी नहीं है। पैसा देकर भी अनाज नहीं मिलता। जहां थोड़ा बहुत कुछ है भी, वहां मनुष्यों की भीड़ में दुकान तक पहुंचने के लिये तिल बराबर भी स्थान नहीं मिलता, यदि मिला भी तो किसी को पाव भर जौ अथवा जुनरी मिलती है, किसी को वह भी नहीं। वरन, उस पाव-आधा सेर अन्न के लिए मार-पीट हो जाती है, सो अलग। ऐसी स्थिति में इन्दु अन्नपूर्णा की तरह नित्य अपने पति-पुत्र को अन्न-वितरण कैसे कर रही है।

'तुम खा रहे हो या बैठे बैठे सोच रहे हो ?'—इन्दु ने कहा।

'मैं ? परन्तु इतना भात अकेले मुझी को दे दिया, फिर तुम क्या खाओगी, बच्चे क्या खाएंगे ?'

'बच्चे खा चुके।'

'और तुम ?'

'मेरे लिए है।' इन्दु ने झूठ बोलते हुए कहा। बटलोई में मुट्ठी भर भात पड़ा था।

'किन्तु इतना सब आ कहांसे रहा है ?'

इन्दु चुप रही।

'मैं जानना चाहता हूं, घर में जब कि एक तांबे की अंगूठी भी बचने नहीं पाई है। और यदि होती भी तो वह क्या करामात करती ? कलकत्ते का बाजार अन्न से खाली पड़ा हुआ है। सैकड़ों आदमी भूखे मर रहे हैं। रास्तों पर मृतकों का ढ़ेर लगा रहता है, ऐसी दशा में तुम हम लोगों के भर पेट भोजन कैसे दे रही हो ? भागो मत, कहो इन्दु, नहीं तो यह अन्न छुऊंगा भी नहीं।'

इन्दुमती लौटी, पंखा लेकर पुनः पति को पंखा करने लगी, धीरे से बोली ? 'मैं सेठजी के यहां खाना बनाने जाती हूं।'

'तुम--तुम--'

'हां, वहां पर मैं खाना नहीं खाती, रोज सीधा मिल जाता है, वही घर पर लाकर बनाती हूं।'

विस्मित और विस्फारित नेत्रों से प्रकाश ने पत्नी की ओर देखा, तब गम्भीर वेदना से कह उठा — 'मेरी पत्नी इन्दु जा दूसरे के घर बासन मांजे, खाना बनावे, मेरे रहते हुए! किन्तु — हां, जीत गईं तुम, मुझ से ऊंची उठ गई तुम, इन्दु। मैं ! 'नहीं — नहीं' ही करता रहा; दुकान की नौकरी, सौदा बेचना, हिसाब लिखना – ये सब मैं न कर सका। वह दुकानदार तो पच्चीस रुपये अभी उस दिन भी देने को तैयार था, पर मैंने नाहीं कर दी। मेरी वह एम० ए० की डिग्री आड़ जाती है धूम-केतु की नाईं इसके बीच में, एक दुष्ट ग्रह की भांति आत्म-सम्मान को उभार कर मेरी आँखों के सामने खड़ी हो जाती है। वह डिग्री परिवार सहित अकाल पीड़ितों के साथ ध्वस्त हो जाने का पाठ मुझे देती है और मेरी पत्नी आज वास्तविक साहस के साथ मिथ्या आत्म-सम्मान के मोह को छिन्न-भिन्न कर मुझे और मेरे बच्चों को मौत के मुंह से बचा रही है। जीत गई तुम — जीत गईं इन्दुमती।'

इन्दु शांत हंसी, किन्तु उस हंसी की आड़ में जो एक आर्त भय का रूप था, वह प्रकाश की आंखों से छिप कर नहीं रह सका। उसने पत्नी के मस्तक पर धीरे धीरे हाथ फेरते हुए कहा — 'कहो क्या कहना चाहती हो ?'

इन्दु कुछ कहने को आकर भी चुप हो रही।

'कहो — कहो, छिपावो नहीं, एक दिन तो उसे कहना ही पड़ेगा न।'

'किन्तु भविष्य के उस एक दिन की छाया से आज के इस खुशी भरे दिन को आतंक से क्यों भर दूं ?'

प्रकाश खिन्न हंसा — 'तो भी कहो; आज ही उस भावी अमंगल के लिए तैयारी क्यों न की जावे ?'

'सेठजी बीमार हैं, इसलिए वे लोग कलकत्ता छोड़ रहे हैं।'

प्रकाश की आंखों के सामने मृत्यु का आतंक व्याप गया।

भीत स्वर से प्रकाश ने पूछा — 'कब ?'

'दो तीन दिन में।'

'सब जा रहे हैं, — सब — सब' नासमझ की भांति प्रकाश ने पूछा।

'हां, सब।'

इसके बाद लगा प्रकाश और इन्दु को जैसे कहने, सुनने के लिए सब कुछ गया है, सब कुछ का अन्त हो गया है वे दोनों मौन-मूक बैठे रह गए।

सम्भावित दिन आकर ही रहा। इन्दु के हजार रोकने की चेष्टा को व्यर्थ कर वह पहुंच ही गया। उसके हजार अस्वीकार करने पर भी एक दिन बंगालमाता दुर्भिक्ष ने अपना कुटिल नेत्र उसके संसार के प्रति प्रसारित कर ही दिया।

उस एक दिन ? नहीं, उस दिन की इन्दु उपेक्षा नहीं कर सकी, नाहीं उसे टाल सकी। अपितु उसके आलिंगन में निपीड़ित होने लगी। स्वयं निराहार रह कर इन्दु थोड़ा – बहुत भोजन बच्चे और पति को कभी दे देती, कभी वह भी नहीं।

'मां' — शुष्क, विवर्ण कण्ठ से बड़ी लड़की कमला दालान पर पड़ी-पड़ी पुकार रही थी।

इन्दु तब अनशनक्लिष्ट मुख से शंकर को पंखा कर रही थी। उसने पूछा — 'क्या है कमला ?'

'मां – मां जल्दी।'

'क्या है बेटी ?'

'देखो, देखो -- रमा कैसे कर रही है।'

इन्दु के शरीर में जैसे हाथी का बल समा गया, वह झपटी हुई उस कोने में पहुंची जहां कमला पड़ा छटपटा रही थी।

अपने अशक्त बाहों में माता रमा को समेट कर रो उठी — 'मेरी रमा, तुझे यह क्या हो गया है ?'

रमा के हाथ में तब भी अर्द्ध मृत सर्प था, वह उसे इस तरह पकड़े हुए थी — जैसे कोई अमूल्य निधि हो। मानों कोई स्वादिष्ट भोजन उसके हाथ से कोई छीन न लेवे।

उस मृत सर्प के टुकड़े को देखकर इन्दु सिहर उठी। पूछा — 'यह सांप तुम कहां से लाई ?'

'रास्ते में पड़ा था।' — उसने कुछ रुक कर कहा।

'क्यों लाई ? और इसके सिर के तरफ का कहां गया ?'

'मैं खा गई।' – कहती हुई कमला ने बचे हुए टुकड़े को मुंह में भर लिया।

उन्मादिनी सी इन्दु लड़की के मुख से सांप छीनने लगी। कठिनाई से उसने छीना और निकाल कर फेंक दिया।

तब रमा अति पीड़ित स्वर से और जड़ कण्ठ से कह रही थी – 'भूख – भूख मुझे खानेको दो मां, मत फेंको। भूखी मरने में बड़ी तकलीफ होती है मां, मुझे खाकर मरने दो।'

(शेष पृष्ठ २२ पर)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मेरे जीवन की झांकियां

फिरोजपुर जेल के अनुभव (१)

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

★

(१)

इसी प्रकार, जेल जीवन के प्रारम्भिक पाठ पढ़ते हुए, दिल्ली जेल में हमने सवा महीना गुजार दिया। कुछ दिन पहले मेरा परिवार मिलाई के लिये आया था। उस समय बात-बात में चर्चा उठी कि बसन्त पंचमी का त्यौहार आने वाला है। आपस में निश्चय किया गया कि पंचमी के दिन परिवार मिलने के लिये आये और बसन्ती हलवा खाने को और बसन्ती कपड़े पहनने के लिये लाये। जिस दिन की मैं बात सुना रहा हूं, वह चतुर्थी का दिन था। अगले दिन बसंत पंचमी का त्यौहार होगा और मुलाकात होगी, इसी विषय पर आशाभरी बातें हो रही थीं, जब दोपहर के बारह बजे महन्तजी भागे हुए आए और खबर दी कि आपके दूसरी जेल में तबादले की आज्ञा आ गई है, अभी जेलर आता होगा। तैयारी कर लीजिये। तैयारी का अभिप्राय यह था कि जो सामान साथ नहीं ले जाया जा सकता था या जिस पर कोई आपत्ति उठाई जा सकती थी वह ठिकाने लगा दिया जाय। सूचना देकर महन्तजी फौरन वहां से हट गये। तैयारी के लिये हमें कठिनाई से पांच मिनट मिले होंगे; परन्तु वह पांच मिनट भी काफी थे। जब तबादले का हुक्म लेकर असिसटेन्ट जेलर हमारे यहां आये, तब हम आवश्यक तैयारी से निबट कर चटाइयों पर बैठे हुए थे। नायब दारोगा ने तबादले की आज्ञा हमें ऐसी अदा से सुनाई मानों हम पर अकस्मात वज्र-प्रहार किया हो। हमने भी अत्यन्त आश्चर्य प्रकट करते हुए उसके भ्रम को कायम ही रक्खा। हमें अपना सामान लपेटने के लिये कठिनाई से १० मिनट दिये गये। इस बीच में यह ध्यान रखा गया कि जेल का कोई कैदी हमसे मिलने न पाये। यहां तक कि हमारे पड़ोसियों और महन्तजी को भी दूर-दूर रखा गया। यह सब सावधानतायें इस लिये की गई थीं कि कहीं हमारे परिवार को और वहां से नगरवासियों को यह समाचार मिल न जाए कि हम स्टेशन पर जा रहे हैं, हमें भी उस समय सबसे बड़ी चिंता यही थी कि बिचारे परिवार के लोग जब यह समाचार पायगे कि हम लोग चुपचाप बाहर भेज दिये गये तो उन्हें कितनी निराशा होगी।

ड्योढ़ी तक पहुंचने पर हमें मालूम हुआ कि हमारे हाथों और पांवों में हथकड़ी और बेड़ी पहनाई जाएंगी। पहले तो दिल में आया कि इस मामले पर लड़ाई लड़ी जाए, परन्तु फिर सोचा कि ऐसा करना बहुत बड़ी भूल होगी! जेल का अनुभव अपूर्ण रह जायेगा, यदि हथकड़ी बेड़ी पहन कर सफर न किया गया। बेड़ियों की जिस झंकार को बचपन से राष्ट्रीय गीतों में सुनते आये हैं अवसर आने पर उनकी ओर से कान बन्द कर लेना केवल मूर्खता का ही नहीं, दुर्भाग्य का भी सूचक होगा। लुहार आया और हथकड़ी बेड़ी पहना कर चला गया। अब तक याद है कि मैं उस समय आत्मसंतोष से मुसकराता रहा।

इस प्रकार कारागार के गहनों से सजकर हम स्टेशन के लिए रवाना हुए। सवा महीने के पश्चात दिल्ली दरवाजा, लाल किला और स्टेशन को पूर्ववत खड़ा देखकर मन में मानों संतोष हुआ कि हमारे न देखने पर भी दुनिया वैसी की वैसी चल रही है। पुलिस वाले हमें स्टेशन तक बड़ी सावधानता से ले गये। ऐसे रास्तों से ले गये कि कोई जान पहचान वाला न मिले प्लेटफार्म पर ले जाने के लिए भी ऐसा रास्ता चुना गया, जो आम रास्ता नहीं था, परन्तु प्लेटफार्म पर पहुंचकर पुलिस को निराशा का मुंह देखना पड़ा। बहुत से ऐसे लोग आये, जिन्होंने मुझे पहचान लिया और पूछ भी लिया कि आप कहां जा रहे हैं। मुझे मालूम हो चुका था कि हमें फिरोजपुर जेल में भेजा जा रहा है। मैंने बतला दिया इस पर हमारे साथ के दारोगा ने आंखें तो बहुत चढ़ाईं, पर कुछ कर न सका।

शाम के पांच बजे के लगभग भटिण्डा के रास्ते से जो गाड़ी लाहौर को जाती थी, उसके तीसरे दरजे के एक खाली डिब्बे में पुलिस हमें लेकर बैठ गई। हमारे हाथ पैर बंधे हुए थे, डिब्बा खाली था। इन कारणों से निश्चिन्त होकर दारोगा साहब और शेष सिपाही प्लेटफार्म पर चहल कदमी करते-करते दूर निकल गये। केवल वह दो-तीन सिपाही हमारे पास रह गये जिनके हाथों ने हमारी नकेल अर्थात् जंजीरें पकड़ी हुई थीं। इतने में हम क्या देखते हैं कि हमारा परिवार — पत्नी, बच्चे, पं० धर्मपालजी, लाला देशबन्धु गुप्त और अन्य बहुत से बन्धु-बान्धव खाने-पीने का बहुत-सा सामान लिये भागे चले आ रहे हैं, वह आये तो डिब्बे का दरवाजा खोल कर बेरोक-टोक अन्दर आ गये। हम अकस्मात जा रहे थे, फिर भी उन लोगों को खबर लग गई, इस बात से मिलने वालों की आंखों में आंसू थे और होठों पर मुस्कराहट। हमें आश्चर्य यह हुआ कि घर वालों को न केवल हमारे तबादले का, अपितु हमारी गाड़ी का भी पता कैसे चल गया। बात यूं हुई। हमारे तबादले की सूचना मिलते ही हमारे जेल के सबसे बड़े बन्धु महन्तजी को फिक्र पड़ी कि किसी तरह यह समाचार अर्जुन कार्यालय को भेजा जाय। टेलीफून उस समय जेलर की मेज पर रखा हुआ था और जेलर साहब डटे हुए थे। पहले तो उन्हें कोई अवसर नहीं मिला, परन्तु जब हम लोगों के हथकड़ी बेड़ी पहनने का प्रश्न उठा तो दारोगा को थोड़ी देर के लिये अपने कमरे से बाहर आना पड़ा, इसी अवसर से लाभ उठा कर महन्तजी ने हमारे घर पर हमारे तबादले की सूचना दे दी। यह सूचना घर वालों के लिये तो सर्वथा अनभ्रवृष्टि (बिना बादलों के वर्षा) के समान ही थी। बसन्त पचमी के दिन की मुलाकात की तय्यारी लगभग पूरी हो चुकी थी। चिट्ठी लिख कर मंजूरी भी मंगाई जा चुकी थी। ऐसे समय स्थान परिवर्तन के समाचार का मन पर जो असर हुआ होगा इसका पण्डितराज जगन्नाथ के शब्दों में यही वर्णन किया जा सकता है :

'रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्
भास्वानुदेष्यति, हसिष्यति पंकज श्रीः
इत्थ विचिन्तयति कोषगते द्विरेफे।
हा हन्तः! हन्त नलिनीं गज उज्जहार॥

अस्तु। हमारे तबादले का समाचार तो मिल गया परन्तु गाड़ी का पता न चला। यह कार्य उस सज्जन ने पूरा किया, जिसने मुझे प्लेटफार्म पर पहचान लिया, उसने टेलीफोन द्वारा हमारे प्लेट-फार्म नम्बर आदि की पूरी सूचना घर वालों को दे दी। हमारे यत्न धरे रह जाते हैं और भवितव्यता इस प्रकार पूरी हो जाती है।

दारोगा को जब मालूम हुआ कि हमारे डिब्बे में मिलने वाले आ पहुंचे तो वह भागा हुआ आया और पहले तो कुछ देर तक पुलिस वालों की धौंस पट्टी जमाने का यत्न करता रहा, परन्तु जब उसने जान लिया कि यह लोग टलने वाले नहीं हैं और उसे यह भी निश्चय हो गया कि भोजन का जो बहुत-सा सामान डिब्बे में आ गया है, उसका अधिकांश हिस्सा पुलिस वालों के ही काम आयेगा तो वह शान्त हो गया और उसने मेरे घर वालों के आंसू पोंछने के लिये, यह वायदा भी कर लिया कि जब गाड़ी चल पड़ेगी तब मेरे हाथ की हथकड़ी खोल दी जायगी।

(२)

दूसरे दिन प्रातःकाल अन्धेरे में ही गाड़ी फिरोजपुर पहुंच गई। उतरने से पहले दरोगा ने यह कहते हुए मेरे दूसरे हाथ में भी हथकड़ी पहना दी कि बाबूजी, अब तो अफसरों के सामने जाना होगा, इसलिये थोड़ी देर की तकलीफ और उठा लीजिये। घर वालों ने हमारे साथ फल, मिठाई, सोहन हलुआ आदि जो कुछ भी रखा था, वह सब हमने पुलिस देवता के अर्पण कर दिया था। रेल में हम कुछ भी नहीं खा सके। इससे देवता प्रसन्न हो गये और कम से कम मुंह से कड़वी बात कहना बन्द कर दिया। स्टेशन पर पुलिस की गाड़ी आई हुई थी, उसमें बन्द होकर पौफटने से पहले ही जेल के दरवाजे में जा पहुंचे।

वहां दारोगा साहब के दर्शन हुए, यह दारोगा साहब जेल के हल्कों में 'महाशयजी' कहलाते थे। सारे पंजाब में यह एक ही महाशयजी थे, अर्थात् वही एक जेल दारोगा थे जो कभी रिश्वत नहीं लेते थे, जेल के स्वामी होते हुए भी न रायसाहब बने और न अमीर ही हो सके। उनके लड़के गुरुकुल में शिक्षा पाते थे और घर में शायद प्रतिदिन हवन भी होता था। जेल वालों की परिभाषा में ऐसा अधिकारी 'महाशय' अर्थात् बुद्धू समझा जाता है। मेरे अनुभव ने बतलाया कि जेल वालों की समझ गलत थी। महाशयजी काफी चतुर शासक थे, ड्योढ़ी में पहली बार मिलने पर वह हम दोनों को कुछ अलग ले गये, हम लोगों की हथकड़ी बेड़ी को देखकर वह सचमुच दुःखित थे। उन्होंने जो कुछ कहा उसका अभिप्राय यह था कि आप लोग इस जेल में आये हैं, यह मेरे लिये अड़चन की बात भी है और सन्तोष की भी। अड़चन तो यह है कि मेरी सर्विस समाप्ति के करीब पहुंच चुकी है, मुझे बहुत सम्हलकर चलना होगा। संतोष यह है कि मुझे कानून के अन्दर रहते हुए आप लोगों की सेवा करने का मौका मिलेगा। आशा है, आप मेरी लाचारी का भी ध्यान रखेंगे। महाशयजी का नाम मैं पहले ही सुन चुका था। उनमें थोड़ी सी अपनावट भी पैदा हो चुकी थी। मैंने उन्हें आश्वासन दिया कि 'हमारी ओर से ऐसा कोई काम न होगा, जिससे आपकी सर्विस खतरे में पड़े। हम यथा-सम्भव जेल के नियमों का पालन करेंगे।' इस प्रकार फिरोजपुर के जेल में हम इस संकल्प के साथ प्रविष्ट हुए कि पांच साल की लम्बी कैद जेल मैनुअल की बनाई हुई पटड़ी पर चलकर ही गुजारेंगे। हमारी हथकड़ी-बेड़ी उतार दी गईं और ड्योढ़ी में घुसते ही चक्कियों की जो लाइन थी, उसमें—जहां तक याद है, ४-५ नम्बर की कोठरियां हमें दे दी गईं।

इन कोठरियों में हमारा जान्ते का जेल जीवन घड़ी की सुइयों की सी नियम-बद्धता के साथ चलने लगा। लगभग चार मास इस प्रतीक्षा में गुजर गये कि मुकद्दमे की अपील का परिणाम मालूम

बाबू प्रेमचन्दजी के साथ एक दिन

(क) परिशिष्ट

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

★

पाठकों को स्मरण होगा मैंने ७ श्रावण सम्वत् २००३ के साप्ताहिक वीर अर्जुन में ऊपर दिये हुए शीर्षक से एक संस्मरण लिखा था। उसके सम्बन्ध में मुझे निम्नलिखित पत्र प्राप्त हुआ है। मेरा वह लेख बनारस के साप्ताहिक 'संसार' में उद्धृत किया गया था। पत्र में उसी की ओर निर्देश है। पत्र निम्नलिखित है। —

१२—९—४६

"श्री मान्यवर महाशय जी,

कुशल अनन्तर विदित हो कि आपने अपनी बनारस जाने की जीवनी लिखी है, अखबार संसार १९-९-४६ में। मैं ने बनारस गया था और उसमें यह भी जिक्र किया है आपने कि कोई साहब उस वक्त जिस वक्त रानी साहबा मझोली के दरबार में गया था यानी बनारस कोठी पर उस वक्त कौन दीवान थे। अब इसमें और यह भी आप लिखे थे कि हमारा और प्रेमचन्दजी का खातिर किये थे और दूसरी दफा फिर जब आप गये हैं न तो उस कोठी का पता न तो रानिसाहबा न दीवानजी का पता चला। इस विषय में आपको सूचना दे रहा हूं कि अर्सा हुआ रानी साहब का स्वर्गवास होगया। उसी समय से दीवान साहब अपने मकान पर चले गये और अभी तक मौजूद हैं। अगर आपको उनसे पत्रव्यहार करना हो तो नीचे के पते से पत्रव्यवहार कर सकते हैं। पता:—

दीवान साहब, पं० रामवरण उपाध्याय जी,
मौजा मटियरा जगदीश,
पोस्ट आफिस लार, जिला गोरखपुर।"

पत्र इतना ही है। इससे यह जानकर दुःख हुआ कि रानी साहबा इस लोक में नहीं हैं। यह संतोष की बात है कि दीवान जी जीवित हैं। परमात्मा उन्हें चिरायु करे। मैं उन्हें उस स्मरणीय स्वागत के लिये धन्यवादका पत्र लिखूंगा। विशेष सन्तोष की बात यह है कि उस दिन के अनुभव की कम से कम एक स्वतन्त्र गवाही विद्यमान है। अन्यथा मुझे डर था कि उस घटना की अद्भुतता और मनोरंजकता के कारण पाठक कहीं उसे गल्प ही न समझें। (इन्द्र)

हो जाय। लगभग तीन महीने में सैशन की अपील का फैसला हुआ। पांच साल से अधिक की सजा कम होकर छः महीने की रह गई। दिल्ली की सरकार ने इस कमी के विरुद्ध हाईकोर्ट में अपील की। हाईकोर्ट ने सैशन जज के फैसले को ही बहाल रखा, मेरी सजा न घटाई और न बढ़ाई। इन कानूनी लड़ाई में जिन महानुभावों ने मेरी ओर से बहस की उनमें से डाक्टर जयकर और रायबहादुर मोतीसागर के नाम प्रमुख हैं। यदि ऐसे योग्य महानुभाव अपनी इच्छा से मेरी वकालत न करते तो शायद मेरी सजा में १० की कमी न हो सकती।

मैं उन दिनों 'मुगल साम्राज्य के क्षय और उसके कारणों' का इतिहास लिख रहा था। जेल अधिकारियों ने मुझे यह काम करने की आज्ञा दे दी। स्वास्थ्य अच्छा था, पचाने की शक्ति अच्छुण्ण रूप में विद्यमान थी और महाशयजी को यह आश्वासन दे रखा था कि कोई ऐसा काम न करेंगे, जिससे उन पर खतरा आये। दिन भर पढ़ना लिखना जेल के बने हुए भोजन और भुने हुए चनों के नाश्ते से सन्तुष्ट रहना और रात को कोठरी में बन्द होकर सो जाना—यह हमारी दिनचर्या थी। तीन मास तक तो वहां रहे, उसके पश्चात सम्पादक को रिहाई मिल गई क्योंकि सैशन जज ने उनकी भुगती हुई सजा ही काफी समझी। सम्पादक के मुक्त हो जाने पर मैं अकेला ही किताबों के बस्ते की सहायता से जेल की रूखी यात्रा करता रहा।

इन चार महीनों में मैंने बहुत कुछ सीखा और किया। अपराध और जेल के मनोविज्ञान का जितना अध्ययन मैंने इस समय में किय, वह दूसरे किसी समय में नहीं कर सका। फिरोजपुर का इलाका सिपाहियों और डाकुओं का इलाका है। वहां लम्बे-चौड़े और सुलभ अन्न-दूध से पले हुए किसान धूमधाम से जीना और बेफिक्री से मरना जानते हैं। इस जेल ने मुझे वस्तुतः जीवित मनुष्यों को देखने का अवसर दिया। उनके इतिहास सुने और विचारों का अध्ययन किया, वह मेरे लिये सैंकड़ों पुस्तकों से अधिक ज्ञानवर्धक अनुभव था। इन महीनों में मैंने किया यह कि मुगल साम्राज्य विषयक पुस्तक लगभग समाप्त की। यदि मुझे यह खाली चार मास न मिलते तो पुस्तक शायद चार वर्षों में भी समाप्त न होती।

यह था फिरोजपुर जेल का उज्ज्वल पहलू। काला पहलू पाठकों की सेवा में अगले लेख में उपस्थित किया जायगा।

(अपूर्ण)

स्त्रीको श्वेत प्रदर

स्त्री को श्वेत पानी की बीमारी भयानक होती है। इस बीमारी को ल्युकोरिया भी कहते हैं। इस बीमारी से पीड़ित होने वाली स्त्री के गुप्त शरीर से समय असमय श्वेत रङ्ग का बदबूदार पानी या लेस निकलता है और धीरे-धीरे उस स्त्री के यौवन को समाप्त कर देता है। उसकी कमर, नाफ, नले, पेट, बल्कि सारे शरीर में दर्द होने लगता है। माहवारी अर्थात् मासिक धर्म भी खराब हो जाता है। यह रोग बड़ा भयानक है। स्त्रियों को इसमें लापरवाही नहीं करनी चाहिए।

श्वेत पानी को रोकने की विधि

नवयुग की जांच से अब पूरी तरह साबित हो चुका है कि इस श्वेत पानी की बीमारी को समूल नष्ट करने की सबसे बढ़िया विधि यह है कि बीमार स्त्री को केवल एक शीशी औषधि 'रोक' सेवन करा दी जाय। इस औषधि के सेवन से ठीक तीसरे दिन श्वेत पानी की बीमारी बिल्कुल ठीक हो जाती है। हजारों वैद्य, डाक्टर, हकीम इस औषधि को रोगियों पर सेवन कराके ख्याति प्राप्त कर रहे हैं। यदि आवश्यकता हो तो:—

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४, दिल्ली

के पते पर पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा औषधि 'रोक' की एक शीशी मंगा लीजिये। एक शीशी का मूल्य ३) तीन रुपया डाक व्यय ॥-) आना है। हर धर्म की स्त्रियां सेवन कर सकती हैं।

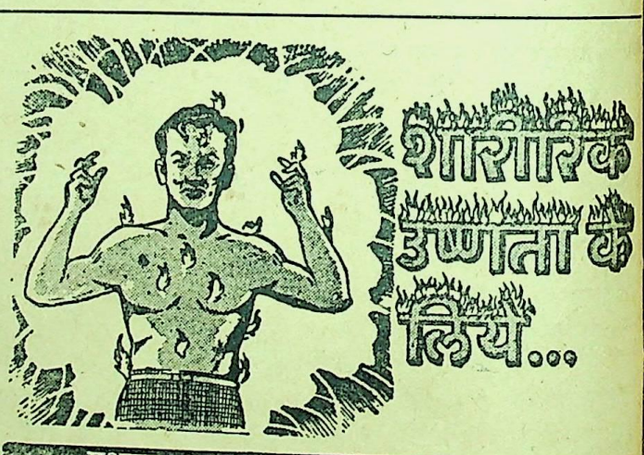

मशहूर अनुभूत इलाज

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

आज से ही शुरु कीजिए, सर्वत्र मिलता है।

जीर्णज्वर, शरीर के अन्दर, बाहर या हथेली तलुवों और आंखों की असह्य जलन, मूत्रमार्ग में आग सी जलन, भोजन के बाद पेट में जलन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कठिन अपच, नियमित कोष्ठबद्धता, रक्तविकार, अशक्ति, नियमित शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं शिथिलता.

इन शिकायतों पर यह बहुत काल से परीक्षित, जड़ी बूटियों के योग से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढा बालक वृद्ध, युवा सभी के लिये लाभदायक है तथा इस सीमा तक हानिरहित है कि कोमलांगी स्त्रियों को गर्भावस्था के समय निस्संकोच सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके शीतल, पाचक और शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

एजेन्ट चाहिए, शर्तों के लिए लिखिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

निहत्थे शिकारी

[एक वनचर]

★

[गताङ्क से आगे]

इस भयंकर युद्ध में विजयी होकर और लूट में प्राप्त हाथी के बच्चे को लेकर हम लोग अपने कालेज की ओर बढ़ चले। हमारे मन में उस समय यह कल्पना तक नहीं थी कि हमने जिस वस्तु को इतने अधिक प्रयास से प्राप्त किया है कि वह कुछ ही दिनों में कानून के डण्डे के जोर से हम से छीनली जायेगी।

जंगल के बने रास्ते से बाहर निकलने का अर्थ था कि जंगल की चौकी पर हमें रोक कर हाथी का बच्चा हमसे छीन लिया जाय। इसका हमें पहले से कुछ अनुभव प्राप्त हो चुका था। एक बार हम लोग जंगल से एक बिल्कुल निराला तोता पकड़ कर लाये। जब हम चौकी पर पहुंचे तो चौकीदार ने हमें धमकाते हुए कहा कि तुम्हें यह याद रखना चाहिए कि यह सरकारी जंगल है, तुम्हारे बाप का नहीं। इसलिये यह तोता मुझे देकर अपने घर को चले जाओ।

उस मूर्ख चौकीदार की धमकी का तो हम पर कोई प्रभाव नहीं हुआ, हां, उस के अशिष्ट भाषण के कारण हमने उसकी अच्छी मरम्मत कर दी थी। साथ ही भविष्य के लिये सावधान हो गये थे कि सरकारी मार्गों द्वारा—विशेषतः जिन मार्गों पर चौकियां हों—शिकार लेकर जाना अपने लिये नये संकट को निमंत्रण देना था। इसलिये यह निश्चय किया गया कि अपने शिकार को लेकर टेढ़े-मेढ़े जंगली तथा पथरीले मार्ग से जंगल से बाहर निकला जाय।

पर, समस्या यह थी कि बच्चे को उठाकर कैसे ले जायं। लगभग १५ मन का बोझ और पथरीला १० मील का रास्ता, दोनों मिलकर सब साथियों को थका देने के लिये पर्याप्त थे। जब हम इस समस्या को सुलझाने में लगे थे, तो बच्चा एकदम चिल्लाया, सम्भवतः भूख के कारण, यह एक और नयी समस्या पैदा हो गयी। अनायास ही एक साथी ने उसके मुंह में गुड़ का एक टुकड़ा दिया, उसके मीठे-मीठे स्वाद को प्राप्त कर वह चुप हो गया। जब वह साथी गुड़ देना बन्द कर किनारे पर हो गया तो बच्चा भी धीमे-धीमे उसके पास जा पहुंचा, इस प्रकार उसे गुड़ चटाते हुए कुछ दूर ले जाया गया, हम भी पीछे-पीछे चल दिये। बुद्धि पर बिना दबाव डाले और खुजाये एक सहज मार्ग हाथ लग गया था। उस समय न तो हमने यह अनुभव किया कि किसी समस्या का समाधान हो गया है, और न ही यह अनुभव किया कि कोई समस्या हमारे सामने थी। गुड़ के भण्डारे में कमी होती देखकर साथ में बंधे हुए कसार को पानी में घोलकर उसी में गुड़ घोल दिया और वही सत्तू उसे हाथ से चटाने लगे; बच्चे ने भी इस नूतन भोजन में अपनी रुचि प्रगट की और हम लोग चींटी की चाल से चलते हुए पर्वत की ऊंची नीची चोटियों पर होते हुए गंगा की रेती में आ पहुंचे।

इस प्रयाससाध्य मार्ग को पार करके जब हम लोग गंगा की रेती में पहुंचे तो सूर्य ऊपर चढ़ आया था, रेती बुरी तरह से तप रही थी। जबतक तो गंगा में घुटने-घुटने तक का पानी था, हाथी के बच्चे ने भी उसे पार करने में कोई संकोच नहीं किया। बड़े आनन्द से पानी से खेलता हुआ, कभी फिसलता, कभी गिरता-पड़ता उसे पार कर गया। पर ज्यों ही गंगा की एक छोटी-सी धारा पार की और पुनः रेतीले मैदान पर आये तो जलती हुई रेती के मारे बच्चे ने चीत्कार आरम्भ कर दिया। हम लोग स्वयं नंगे पैर थे! हमारे पैर भी बुरी तरह जल रहे थे। बच्चे ने अपनी सारी शक्ति समेट कर भागना शुरू किया, हम लोग भी धीमे-धीमे उसके पीछे दौड़ने लगे। कभी एक पैर ऊपर करके थोड़ी देर खड़े होते, रेत पर टिके पैर के लिये गर्मी के असह्य होते ही उसे ऊपर उठाकर दूसर नीचे रखते। यद्यपि हमारी इस रेस को वहां देखने वाला कोई नहीं था, हमी लोग जब अपने को उस समूह में से पृथक करके देखते तो प्रतीत होता इस प्रकार के दृश्य सिनेमाओं या दृश्यावलियों में प्राप्त कर सकना कठिन है। हां, यदि कोई सिनेमा वाला चाहता तो इस अद्भुत दृश्य का चित्र लेकर उससे अच्छे पैसे कमा सकता था—कुछ भी हो, इस प्रकार की स्थिति में देर तक रहना असम्भव हो गया। बच्चे की अवस्था बिगड़ती जा रही थी, हमें भय था कि कहीं इस गर्मी को सह न सकने के कारण उसकी मृत्यु ही न हो जाय।

लाचार होकर उस असह्य गर्मी में हमें यमराज की बहुत सी कथाएं याद आ गयीं कि किस प्रकार वह अपने चंगुल फंसे जीवित लोगों को उबलते तेल के कड़ाहों में भूनता है। पर साथ ही उन महामहिम और गौरवान्वित तपस्वियों और मुनियों का स्मरण हो आया जो कि हमारी ही भांति नग्न शरीर होकर तेजस्वी भास्कर-किरणों में रेती पर अपने शरीर को तपाते हैं और योगी पद को प्राप्त करते हैं। योगी पद प्राप्त करने की अभिलाषा कहिये या लाचारी कहिये उस तपती हुई रेती में हमें बाधित होकर हाथ में लिये बाणों का एक स्ट्रेचर बनाना पड़ा। गले में पड़े जनेऊ इकट्ठे किये गये, उनसे बाणों के टुकड़े बांधे, पर जनेऊ का तागा तो इतना थोड़ा था कि उसके भरोसे स्ट्रेचर पर विश्वास नहीं किया जा सकता था। इस कारण एक चादर फाड़कर स्ट्रेचर को दृढ़ता से बांधा गया।

इस स्ट्रेचर पर बच्चे को लादा गया, बच्चे का चीत्कार धीमा पड़ गया। ज्यों ज्यों उसे लेकर हम तेजी से भागने लगे त्यों त्यों वह शान्त होता गया। आठ कन्धों पर लदा हुआ वह बच्चा शान्त भाव से लेटा था और संभवतः आनन्द ले रहा था और हमारे मूर्खतापूर्ण प्रयास पर मुस्करा रहा था। उस उत्साह के आवेश में दौड़ते हुए हम लोग लगभग २ मील का मार्ग ७-८ मिनट में पार कर गंगा की दूसरी धारा के निकट पंहुचे। गरम-गरम रेती के पिछले अनुभव को स्मरण कर के यह निश्चय किया कि जब तक गर्मी कुछ कम न हो चले तब तक यहीं पानी के निकट ही अपना समय काटा जाय।

× × ×

प्रातः से ही हम लोग भूखे थे। फिर, इस भाग दौड़ ने तो हमारी भूख को और जागृत कर दिया था। पर करते क्या? जो कुछ हमारे पास था, उसे हम बच्चे को भेंट कर चुके थे, यद्यपि हम सबका वह भोजन भी उसे पर्याप्त नहीं हुआ था। गंगा के उस ठण्डे और मीठे पानी को पी पी कर भूख को व्यर्थ ही शांत करने की चेष्टा करने लगे। आस-पास कोई गांव नहीं था। सामान्य स्थिति होती तो एक आध दिन बिना खाये भी चल जाता। पर जब इतना परिश्रम करना पड़ रहा हो, बोझा कन्धों पर उठा कर चलना नहीं अपितु दौड़ना पड़ रहा हो, तब आप ही कल्पना कर लीजिये, कि हमारी क्या अवस्था होगी। भूख के मारे हम लोग अर्द्ध-मूर्च्छित से हो रहे थे।

थोड़ी ही देर में हम ने अनुभव किया कि इस भूख का सामना करने की सामर्थ्य हम में नहीं रही। इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं सूझा कि आगे बढ़ा जाय। भूख के मारे कुलबुलाते हुए गंगा की दूसरी धारा को भी पार किया, पानी बहुत थोड़ा था, बहाव भी कुछ नहीं था, इसलिये बच्चे को स्ट्रेचर पर लाद कर कन्धों पर रख कर पार हो गये। यह हमें मालूम था कि गंगा की प्रमुख और तीसरी धारा यहां से लगभग आध मील है, इस प्रमुख धारा को पार करने में जिस प्रयास की आवश्यकता थी, उससे भी हम परिचित थे। हम यह अनुभव करते थे कि बच्चे को साथ लेकर उसे पार करना हमारी शक्ति के बाहर हुआ जा रहा है। हमारा धैर्य और उत्साह भी अब धीमा पड़ रहा था। पर अपने घर तो पहुंचना ही था, इसलिये मन मार कर बढ़े जा रहे थे। पुनः उसी प्रकार तपती हुई रेती को पार करके रोते झींकते, तीसरी धारा पर जा पहुंचे। भूख को शांत करने के उद्देश्य से जी भर कर पानी पिया, थोड़ी देर के लिये एक ऐसी ताजगी अनुभव होने लगी, जो शराबी को शराब पीने से अनुभव होती है।

इस धारा को पार करना सहज नहीं था, पानी का बहाव बहुत तेज ही नहीं था, अपितु गहरा भी था। हम लोग तो तैर कर पार कर सकते थे, क्योंकि हमें प्रायः इस प्रकार से गंगा को पार करना पड़ता था, पर बच्चे को कैसे पार करें? इस धारा में ऋषीकेश से छोड़े जाने वाले स्लीपर प्रायः बहते हुए आ जाते हैं। उन स्लीपरों के बेड़े बनाकर मीलों गङ्गा में उन पर सवार रहने का न केवल हमें शौक था अपितु अच्छा अभ्यास भी था। पानी में घुस कर दूर-दूर तक स्लीपरों की खोज में दृष्टि दौड़ाई, कुछ दौड़ धूप करने के बाद चार स्लीपर हाथ लगे। उन स्लीपरों को पकड़ कर बांधा गया। बांधते समय इस विचार से हम लोग बहुत प्रसन्न और उत्तेजित थे कि बस अब मैदान मार लिया। गंगा पार की, किनारे पर जगजीतपुर गांव है, वहां से अपना कालेज दूर तो है नहीं, १०-१५ मिनट का रास्ता है। गांव में

[शेष पृष्ठ १६ पर]

[हम अपनी छुट्टियों का उपयोग जंगल में घूम घूम कर करते थे। इसी शौक के कारण जंगल में एक पहाड़ी की नुकीली चोटी पर वट-वृक्ष पर हम लोगों ने मचान भी बांध लिया। एक दिन जंगल में घूमते घामते पहाड़ियों के नीचे हमने एक हाथियों का झुण्ड देखा। हमारी शैतान बुद्धि जाग उठी, शोर मचाकर और केवल पत्थरों की बौछार करके हमने हाथियों को तो मार भगाया, पर पीछे एक हथिनी अपने नवप्रसूत बच्चे के साथ रह गई। वह भी हमारे आक्रमण का सामना न कर सकने के कारण भाग गई। बच्चे को रस्से से बांधकर हम पहाड़ के ऊपर खींच लाये और अपने मचान की ओर ले चले। रात भर हाथियों से द्वन्द्व करते बीता, पर हमारे सामने हाथियों की एक नहीं चली।]

क्रान्तिकारी फ्रॉइड

[ले० — श्री केशवराम सागर एम० ए० बी० टी०]

क्रान्तिकारी फ्राइड के विचारों ने आज समस्त संसार के साहित्य, उपन्यास, कथा, कहानी और कविता को आच्छादित कर लिया है। कहानी लेखक फ्राइड का नाम लेकर ही प्रेम-पंथी उत्तेजक कहानियां लिखते हैं। कवि और उपन्यासलेखक भी उसी की आड़ में आज विकृत साहित्य की सृष्टि करते हैं। उसी फ्राइड की संक्षिप्त चर्चा इस लेख में की गई है।

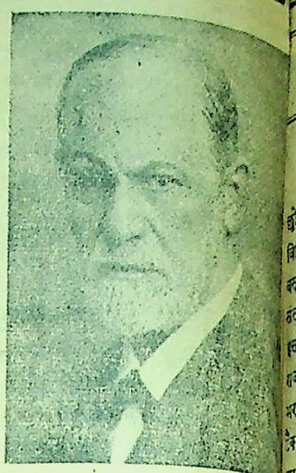

फ्रायड की अस्सीवीं वर्ष गांठ मनाते हुए 'अमरीकन मेडिकल एसोसिएशन' पत्रिका ने लिखा था कि फ्रायड का स्थान उच्चकोटि के नेताओं में सुरक्षित है। औषध-विज्ञान की उन्नति के युग नेताओं के नामों से सम्बन्धित किये जाते हैं जैसे बिसेलियस आंग विज्ञान का जन्मदाता है, होर्व जीव विज्ञान का और पास्चर कीटाणु - विज्ञान का। उसी प्रकार सिगमंड फ्रायड चरित्र-विज्ञान में एक नयी विचारधारा का उत्पादक है आदि मनोवृत्तियों की खोज भी तीव्र दृष्टि से पहली बार फ्रायड ने ही की है।'

मनोविश्लेषण का नेता सिगमंड फ्रायड एक यहूदी कुटुम्ब में पैदा हुआ। यह कुटुम्ब उस देश में रहता था जिसे अब जैकोस्लोवेकिया कहते हैं। फ्रायड चार साल की आयु में वियाना आया और वहीं विद्याध्ययन आरम्भ किया। वह एक असाधारण विद्यार्थी था। ज्ञान-विज्ञान की विशाल शृङ्खलाओं को खोजने की उत्सुकता और विश्लेषण की तीव्र योग्यता के चिन्ह विद्यार्थी-जीवन से दिखाई देते थे। उसने यहूदियों के प्रति घोर शत्रुता का अनुभव किया, जिसने उसे स्वावलम्बी स्वतन्त्र और बे-परवाह बना दिया। औषध-विज्ञानका अध्ययन ऐसे बालक के लिये कुछ स्वाभाविक होता किन्तु फ्रायड का मन इसमें न लगा, और डाक्टरी उपाधि लेने में उसे बहुत समय लगा। इसके बाद वह अरन्स्ट ब्रुक की जीव विज्ञान परीक्षण-शाला में अन्वेषण करने लगा, यहां से सन्तोष प्राप्त हुआ। ब्रुक ने उसे सरकारी इस्पताल में नौकरी करके जीविका कमाने की अनुमति दी। वहां रहते हुए फ्रायड मानस-नाड़ी-क्रम के अध्ययन में व्यस्त हो गया।

इस समय योरुप में स्नायु-रोग की चिकित्सा का कोई प्रबन्ध न था, किन्तु वस्तुतः ऐसी चिकित्सा की आवश्यकता को योरुप में बहुत महसूस किया जा रहा था। स्नायु-रोग के कारणों की खोज पहले से ही आरम्भ हो चुकी थी। शारको और उसके शिष्य मार्टन प्रिंस ने हिस्टीरिया और अविकसित मस्तिष्क आदि की चिकित्सा सम्मोहन द्वारा करने का प्रयत्न किया था। आयरजैन फ्रायड के क्षेत्र में आने से पहले ही अचेत-मन के अध्ययन और स्नायुरोग की चिकित्सा में लगा हुआ था। उसने अपने अनुसंधान से यह पता लगाया था कि सम्मोह अवस्था में रोगी भूली हुई घटनाओं को स्मरण कर सकता है और इस अवस्था में दिये हुए आदेश का ध्यान पूर्वक पालन करता है। जैन का विचार था कि रोग का कारण आत्म बल की कमी होता है और चिकित्सक का काम आत्म-बल को दृढ़ करना है। लेकिन फ्रायड के क्रांतिकारी विचारों ने जैन के कामको भी आच्छादित कर दिया।

१८८५ में ब्रुक की सहायता से फ्रायड को स्नायु रोग के व्याख्याता की जगह मिल गयी। फ्रायड शारको के पास पैरिस में रहा। शारको इस समय वातोन्माद का अध्ययन कर रहा था। उसने यह प्रत्यक्ष कर दिया था कि वातोन्माद का कारण न तो दुर्विचार है और न भूत-प्रेत यह तो केवल एक मानसिक विकार है। इस नयी खोज से फ्रायड की जिसने अभी तक केवल शारीरिक नाड़ी विकारों का ही अध्ययन किया था, जानकारीमें बहुत वृद्धि हुई और फ्रायड ने महसूस किया कि स्नायु रोग के मानसिक कारण होते हैं। शारको फ्रायड के इस विचार से सहमत था, किन्तु उसे इस सिद्धांत में कोई अधिक रुचि न हुई।

इसी समय शारको ने एक ऐसा सुझाव पेश किया, जो पीछे फ्रायड की विचारधारा का आधार बन गया। सुझाव यह था कि स्नायु रोग का कारण सर्वदा ही लैंगिक वृत्ति या काम वासना होता है।

जब फ्रायड ने इस नयी स्थापना का वर्णन वियाना में औषध परिषद् के सामने किया तो उसके सहकारी उसकी हंसी उड़ाने लगे। उन्होंने फ्रायड के मन-घड़न्त नवनिर्मित कल्पनाओं का परित्याग करने की अनुमति दी।

किन्तु वियाना के सभी औषध वैज्ञानिकों ने फ्रायड से मुंह न मोड़ा। जोज़फ ब्रुअर, फ्रायड का एक पुराना मित्र था। उसने सम्मोहन का वातोन्माद की चिकित्सा में प्रयोग किया था। उसने फ्रायड से सहानुभूति प्रगट की। फ्रायड ने भी ब्रुअर की रीति का रोगियों पर प्रयोग किया। ब्रुअर के उत्साह से फ्रायड ने फिर फ्रांस की यात्रा की। इस बार वह नैनसी में बर्नहम के पास ठहरा। बर्नहम का मत था कि सम्मोहन का सारा गुण आदेश में है। इसके अनुसार रोगी को सम्मोहित करके आदेश के द्वारा उन लक्षणों को प्रत्यक्ष किया जा सकता है, जिनके अस्पष्ट होने के कारण रोग की ठीक चिकित्सा नहीं हो सकती थी। ऐसा प्रतीत होता है कि मन में कोई ऐसी कल है कि जो अनुरोचक विचारों का दमन करती है। फ्रायड बहुत-सी आशायें लेकर वियाना लौटा। यद्यपि अभी तक वह किसी अन्तिम परिणाम पर न पहुंचा था, वह दत्तचित्त होकर अपने काम में लग गया। अन्त में उसने तीन सिद्धान्तों का निरूपण किया—

(१) रोग के लक्षणों के प्रगट होने के कोई निश्चित कारण होते हैं। हमारे दैनिक जीवन में भी हमारी विचारात्मक क्रियाओं के अतिरिक्त जो प्रत्यक्ष ही हमारी इच्छानुसार होती है, हमारी ऐसी क्रियायें भी हमारी इच्छा प्रकट करती हैं जो आकस्मिक, अविचारात्मक या हमारी धारणा के प्रतिकूल होती हैं। यह सिद्धान्त निश्चितवाद कहलाता है।

(२) इन लक्षणों की जड़ चेतन मन की अपेक्षा अचेत मन में होती है।

(३) अचेत मनके कारण दमन किये हुए अनुरोचक विचार होते हैं।

१८९५ में ब्रुअर और फ्रायड ने अपने अन्वेषणों के परिणाम स्टूडियन यूबेर हिस्टैरिक' नामक पत्र में प्रकाशित किये। उनका मत यह था कि वातोन्माद के लक्षणों की वृद्धि जिन्हें हम किसी कारण दबा देते हैं उन अनुभावों के कारण होती है और इसकी चिकित्सा चित्त शुद्धि द्वारा हो सकती है। अपने सिद्धांत की पुष्टि में उन्होंने बहुत से रोगियों का वर्णन किया जिनकी उन्होंने चिकित्सा की थी।

लेकिन उस समय डाक्टरों ने अत्यन्त घृणापूर्वक विचारों की उपेक्षा की। लेकिन फ्रायड हताश नहीं हुआ। वह और भी आगे बढ़ गया। उसने यह अनुभव किया कि लैंगिक प्रवृत्ति ही प्रत्येक स्नायु रोग की जड़ होती है। उसके अध्ययन ने उसे इस परिणाम पर पहुंचने के लिये विवश किया और समस्त चिकित्सक संसार का अनुरोध भी उसे इस विचार से न हटा सका।

इस दिशा में फ्रायड का एक बहुत बड़ा आविष्कार यह है कि बलात दमन किये अनुभावों में एक बल होता है, जिसे वह 'लिबिडो' कहता है। यह लिबिडो स्नायु रोग के लक्षणों के रूप में प्रगट होता है। चिकित्सक का कार्य यह है कि वह दमन की हुई सामग्री को धरातल पर बाहर लाकर इस बल को मुक्त करे, इसका तात्पर्य यह है कि 'अहं' को ऐसा बलवान बनाया जाये कि वह अपनी अशान्ति और विकारों के कारणों को जानकर और सोच-समझ कर उनके हराने का प्रयत्न कर सके।

फ्रायड ने देखा कि सम्मोहन स्नायु रोग की चिकित्सा में न केवल कभी लाभदायक, हैबल्कि कई बार हानिकारक भी होता है। इससे स्थायी इलाज नहीं हो पाता। कुछ समय पश्चात् रोग किसी दूसरे रूप में प्रगट हो जाता है। फ्रायड ने बर्नहम के आदेश-पद्धति को अधिक लाभदायक पाया और अपनी चिकित्सा में उसका आश्रय लिया। वह अपने रोगी को पुरानी भूली हुई घटनाओं को स्मरण करने और उनका विवरण करने के लिये उत्साहित करता, इस से लिबिडो बल-मुक्त हो जाता और रोगी स्वस्थ हो जाता। इस पद्धति का नाम फ्रायड ने 'अवाध स्मृत्यनुक्रमण' रखा। यद्यपि इससे रोगी और चिकित्सक दोनों पर खिचाव पड़ता था, किन्तु रोगी इसके लिये स्वस्थ होजाता था। इस चिकित्सा पद्धति को 'चित्त विश्लेषण' कहते हैं।

यद्यपि चित्त विश्लेषण आज सैकड़ों और हजारों का भला कर रहा है, किन्तु एक समय इस क्रान्तिकारी विचारधारा के कारण फ्रायड को तरह-तरह की बातें सुननी पड़ीं। उस पर चारों ओर से गालियों की बौछार हुई। कोई उसे व्यभिचारी, दुराचारी और पिशाच कहता था, कोई मूर्ख और उन्मत्त लोग समझते थे कि फ्रायड संसार से सदाचार की पवित्रता का विनाश करना चाहता है। प्रत्येक क्रान्तिकारी महानुभाव का संसार ने कुछ ऐसे ही ढंग से स्वागत किया था। कोपरनिकस, डार्विन, पास्चर आदि को भी ऐसे ही शब्द सुनने का श्रेय प्राप्त हुआ था। फ्रायड को यह सोचकर संतोष हुआ, उसे यह निश्चित हो गया कि वह उन लोगों में से है जो संसार की निद्रा भंग करने आते हैं और जिनका कोई साथी नहीं होता। उसने यह भी महसूस किया कि उसके अनुसंधानों और सिद्धान्तों की अभी प्रशंसा न होगी। उसकी मृत्यु के सैकड़ों वर्ष बाद कोई और वैज्ञानिक इसी गुप्त पथ पर चलकर हुआ उसके कार्य से प्रभावित होगा और उससे सहायता लेगा, किन्तु फ्रायड का यह भ्रम मिथ्या साबित हुआ। उसके जीवन में ही फ्रायड के काम की प्रशंसा हुई और आज उसके सिद्धान्त एक सम्प्रदाय का रूप धारण कर चुके हैं।

———

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

कुछ इधर-उधर की

विचित्र टैक्स

शिमला शैल के आस-पास ही एक छोटा देसी राज्य है। वहां का राजा एक विचित्र तरह का टैक्स अपनी प्रजा से वसूल करता है। इस प्रकार का टैक्स संसार में कहीं भी वसूल नहीं किया जाता। इस टैक्स का नाम है 'धुंआ' टैक्स राज्य में किस प्रजा ने साल भर में कितनी आग जलाई, उसी पर यह टैक्स है। इस टैक्स से राजा साहब की आमदनी साठ रुपया प्रति वर्ष है।

विचित्र रेलगाड़ी

ग्वालियर महाराज के राज महल में एक छोटी सी रेलगाड़ी है। किन्तु यह खिलौना-मात्र नहीं। यह रेलगाड़ी बिजली की शक्ति से चलती है, जमीन पर नहीं — टेबिल पर। महाराज और उनके अतिथि जब, टेबिल के चारों ओर खाने के लिए बैठते हैं, तब यह गाड़ी टेबिल पर चक्कर लगाती है। विभिन्न प्रकार के भोज्य पदार्थ, मिष्ठान, फलमूल आदि ही रेलगाड़ी के यात्री हैं — जब जिस चीज की जरूरत हुई, इस चलती गाड़ी पर से उठा लीजिए, खानसामे की जरूरत नहीं।

पुस्तक पढ़ाई की गणना

कुछ दिन पूर्व समाचार पत्र में पुस्तककी पढ़ाई के बारेमें कुछ मनोरञ्जक आंकड़े दिये गए थे। यूरोप और अमेरिका में सबसे अधिक पढ़ने वाले वे लोग हैं जो दूसरों से पुस्तक मांग कर या उधार लेकर पढ़ते हैं। ५७ प्रतिशत मांग कर पढ़ते हैं; ३१ प्रतिशत खरीद कर पढ़ते हैं एवं ११ प्रतिशत 'उपहार' में पाकर पढ़ते हैं। पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियां ही अधिक मांग कर पढ़ती हैं। स्त्रियों में ६१ प्रतिशत मांग कर पढ़ती हैं। १५ से १६ वर्ष तक की अवस्था के लड़के-लड़कियां सबसे अधिक पुस्तकें पढ़ती हैं। आय बढ़ने के साथ-साथ पुस्तकें पढ़ने का अभ्यास भी कम होता जाता है। लड़कियां पुरुषोंकी अपेक्षा अधिक पुस्तकें पढ़ती हैं। ५८ प्रतिशत घर में आराम कुर्सी पर बैठकर पुस्तकें पढ़ते हैं; १२ प्रतिशत बिछौने पर लेट कर पुस्तकें पढ़ते हैं १० प्रतिशत रेडियो सुनते-सुनते पुस्तकें पढ़ते हैं और ४ प्रतिशत काम करते-करते पुस्तकें पढ़ते हैं।

हरिजन पत्रिका

बापू द्वारा संचालित 'हरिजन' साप्ताहिक पत्रिका का नाम सबने सुना है। मालूम हुआ है कि इस पत्रिका की प्रचार संख्या एक लाख है। भारतवर्ष में आज तक इतनी अधिक संख्या किसी भी सामयिक पत्र की नहीं हुई।

एलूमिनियम

एलूमिनियम के बने बर्तन हम आज सभी जगह देखते हैं। कोई घर ऐसा न होगा जहां एलूमिनियम के बने दो एक बर्तन न हों। इस धातु का आविष्कार सर्व प्रथम सन् १८५६ ई० में हुआ उस समय इसकी कीमत बहुत ही अधिक थी। उस समय इस धातु से बनाए गए एक पात्र पर प्रायः २०० पौण्ड खर्च पड़ा था।

— श्री मधुकर

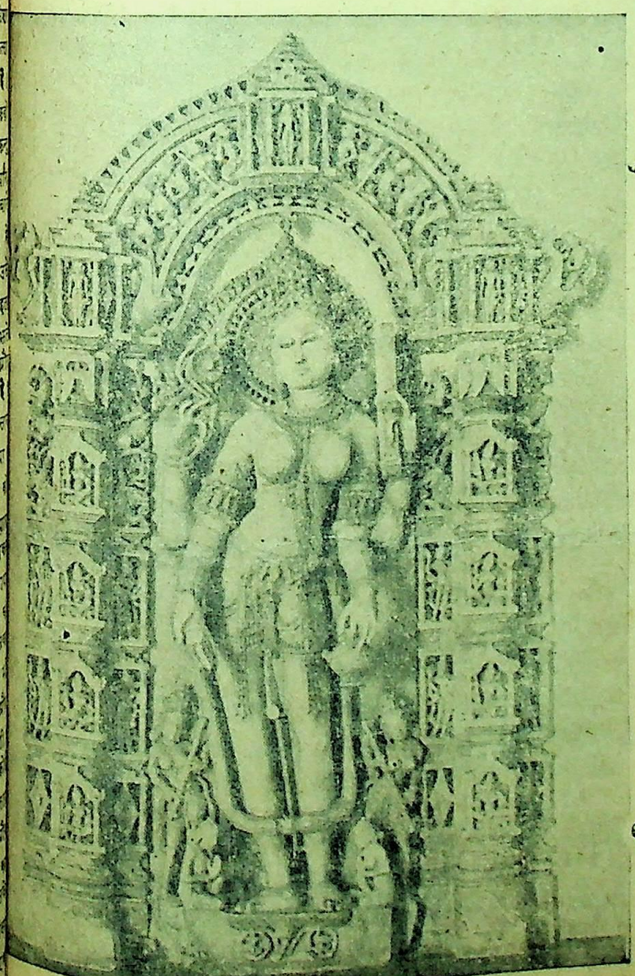

सरस्वती की प्रतिमा — जो बीकानेर राज्य में पाई गई है।

४० पौण्ड मूल्य की मोटर साइकिलें

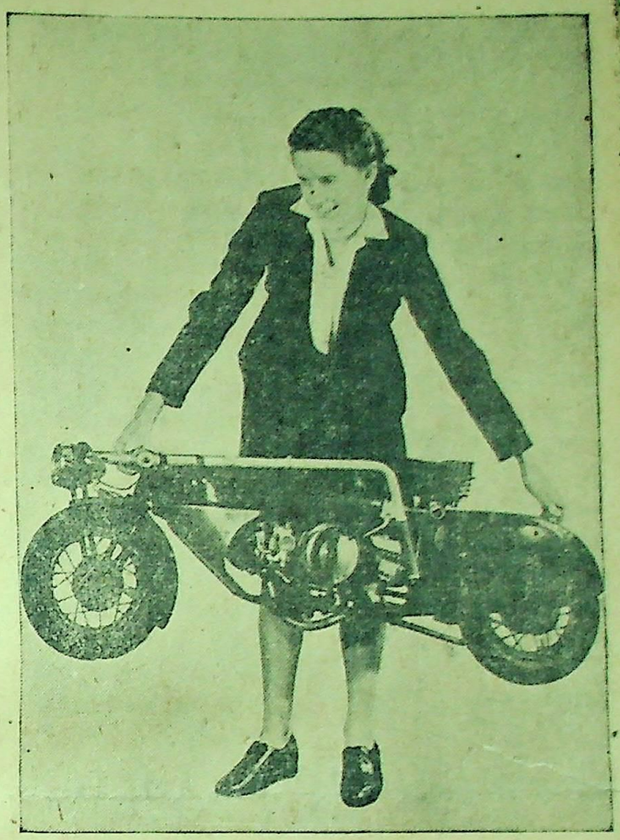

ब्रिटेन में उस समय की छोटी-छोटी मोटर साइकिलें बनायी जा रही हैं जिनका प्रयोग युद्ध काल में ब्रिटिश विमान-चालकों ने किया था। ये नयी साइकिलें पुराने माडल की कोरी नकल नहीं हैं, बल्कि उनके आकार-प्रकार में काफी सुधार किया गया है।

इन मोटर साइकिलों की दौड़ ३५ मील प्रति घण्टे है और इनमें बहुत थोड़ा पेट्रोल खर्च होता है। ब्रिटेन में उनका मूल्य इन्कम टैक्स मिलाकर केवल ४० पौंड है। किंतु ये मोटर साइकिलें अभी ब्रिटेन में न बेची जाकर विदेशों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये बनायी जा रही हैं।

———

असली जादू का शीशा

हर स्त्री-पुरुष चाहे कितनी उमर का हो, बालक हो या जवान या बूढ़ा इस जादू के शीशे से देख सकता है। चोरी का पता, गड़े हुए धन, गुमशुदा का पता, बीमार के अच्छा होने, आने वाले व गुजरे हुए हालात, मुहब्बत प्रेम, मुकदमा, नौकरी, परीक्षा, हर बात का ठीक-ठीक पता लग सकता है। झूठ निकले तो दाम वापिस, मूल्य ३) रु०, पत्र-व्यवहार अंग्रेजी में करें।

आनन्द स्वामी (V.W.D.) पो.ब. नं० ६१ लाहौर।
ANAND SWAMI, (V.W.D.) p. b. no. 61 Lahore.

निहत्थे शिकारी

[पृष्ठ १३ का शेष]

ही भूख भी मिटा लेंगे, गांव वाले सभी परिचित ही तो हैं। न होगा, गांव के बनिये से थोड़ी उधार ही कर लेंगे।

जब बेड़ा बनाकर पानी में धकेला और उस पर बच्चे को रखा तो 'बेड़ा' महोदय तो तत्काल रसातल को चल दिये और हाथी का बच्चा उस पानी में गुड़प-गुड़प करने लगा। एकदम सब लोग पानी में कूद गये और बच्चे को धकेल कर पुनः किनारे पर लाये। इससे सभी साथियों में एक प्रकार की मायूसी सी छा गई।

हम दो साथियों ने सब की उस निराशापूर्ण स्थिति को अनुभव किया और यह कह कर कि हम अभी आते हैं, गंगा में कूद पड़े। थोड़ी देर की छपाछप के बाद दूसरे किनारे पर जा पहुंचे। पीछे छूटे साथी देख रहे थे कि हम भी उनकी भांति सिर लटकाये किनारे से गांव की ओर चल दिये थे। हमारा विचार गांव वालों से सहायता मांगना था। थोड़ी ही दूर बढ़ने पर हमें गांव में कुछ हाथी दिखे, साथ ही महावत भी। यद्यपि महावत से हमारा परिचय नहीं था तो भी बातचीत करने से ज्ञात हुआ कि ये हाथी महाराजा टिहरी के हैं, आजकल यहां आये हुए हैं। हमने बातचीत के बीच अपना संकट उससे कह सुनाया। वह एकदम बोल उठा: 'बाबू! यह कौन बड़ी बात है, अभी गङ्गा में हाथी डालकर बच्चे को यहां ला दूंगा।' फिर थोड़ी देर रुक कर बोला: 'बाबू! पर एक बात है, थोड़ी मिठाई भी हमें खिलानी होगी।' उसके निर्देश को हम समझ गये।

अपनी कहने को हमारे पास एक भी फूटी कौडी न थी। जिस शिक्षणालय में हम थे, वहां पैसे रखना नियम विरुद्ध है, यद्यपि लुके-छिपे कभी कुछ पैसे रख भी लेते थे। पर आज तो वह लुकी छिपी कौड़ी भी हमसे रूठी थी। हमने महावत से अपनी विवशता प्रगट की, पर वह पुरस्कार का सौदा तय किये बिना हिलने को तैयार न हुआ। हमारी दुष्ट बुद्धि जागृत हुई, हमने उसे पांच रुपये देने का विचार प्रगट किया। वह इस सौदे को पक्का करके तत्काल अपने दो हाथियों को लेकर गङ्गा में घुस पड़ा।

साथियों ने देखा, वे हर्षोन्माद और आश्चर्य से चिल्ला-चिल्लाकर हमारा स्वागत करने लगे। थोड़ी ही देर में हाथी ने गङ्गा को पार कर लिया, महावत ने उसे किनारे पर बिठा कर बच्चे को उस पर लादा, कुछ एक साथी भी उस के साथ लद गये। कुछ ही क्षणों में पुनः गङ्गा के दूसरे किनारे जा खड़े हुए। महावत ने अपना पुरस्कार मांगा, तो हमने उसे खूब बनाया। वह खिसिया कर बिना कुछ लिये चुपचाप चला गया। हम लोग भी पन्द्रह मिनट में अपने कालेज में जा पहुंचे।

हाथी के बच्चे के पकड़ने की ख्याति थोड़ी ही देर में सब निकटस्थ स्थानों पर पहुंच गई। लोग आश्चर्य से उसे देखने के लिए आने लगे। हमारे साहसिक कार्य से डा० ताम्बे जो कि हमारे यहां के आयुर्वेद महाविद्यालय के अध्यक्ष थे तथा रिटायर्ड सिविल सर्जन थे, बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने बच्चे के खाने-पीने का सारा बोझा अपने ऊपर ले लिया।

यह ख्याति इतनी तीव्रता से फैली कि जंगल विभाग के अधिकारियों को भी इसकी सूचना मिल गई। वे सूचना के मिलते ही पुलिस को साथ लेकर हमारे कालेज में आ धमके। कोई दुर्घटना घटने से पहले ही कालेज के अधिकारियों ने स्थिति संभाल कर बच्चे को हमसे छीन कर जंगल विभाग के अधिकारियों को सौंप दिया। सच तो यह है कि उन अधिकारियों ने भी कुछ पैसों के लालच में मामले को दबा दिया। बाद में हमने सुना कि वे अधिकारी लोग उस बच्चे को पालपोस नहीं सके और वह बच्चा भूख के मारे मर गया।

———

दमा निवारक

श्वासकासारि अवलेह

दमा, श्वास, खांसी, जुकाम, कफ, सर्दी, हफनी, छाती व गले की जलन वगैरह की शतिया दवा डि० रु० २)

मदन मंजरी फार्मेसी-जामनगर

देहली– जमनादास कं० चांदनी चौक

आपके शहर में हमारे एजेंट से खरीदें।

रोज़ ROSE

TRADE ONK MARK

बच्चों की शक्ति बढ़ाने की अनुपम दवा

A WONDERFULL TONIC for CHILDREN

Ohav Nashak Karyalaya DELHI

घावनाशक कार्यालय दे-ह-ली

सुंदर त्वचा, यह स्त्री का एक महान् तंत्र है। अपनी त्वचा की उपेक्षा न कीजिये-लक्स टॉयलेट साबुन की सौम्यता से उसकी सुरक्षा करो। ३० दिन के लिये सितारा के सौन्दर्य-साधन का अनुसरण क्यों नहीं करते-आप उसके मृदु, शुद्धिकारक परिणाम से आनन्दित होंगे, और आपको इस सुगन्धित, सफ़ेद साबुन का विपुल मलाईदार झाग लुभायेगा। फिल्मी स्टार्स का सौन्दर्य-साधन आप की अनमोल त्वचा को ताज़ा, साफ़-सुथरी और रेशम के समान नरम रखता है।

LTS. 140-710-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

पाठकों का अपना अपना दृष्टिकोण

कांग्रेस का अध्यक्ष कौन हो ?

कांग्रेस के अध्यक्ष का चुनाव फिर आ गया। आचार्य कृपलानी और मौ० आजाद के नाम पेश हुए हैं। मौ० आजाद यद्यपि अत्यन्त योग्य और प्रतिभाशाली हैं और असाधारण संकट के समय उन्होंने राष्ट्र का सफल नेतृत्व किया है, तथापि मेरी सम्मति में अब यह सम्मान आचार्य कृपलानी को मिलना चाहिए। आज कांग्रेस कार्य के संगठन और उसकी कार्य-पद्धति में जो बल आ गया है; उसके मूल में आचार्य कृपलानी की कार्य-कुशलता ही है। उन्होंने दीर्घकाल तक कांग्रेस कार्यालय को संगठित किया है। गांधीजी के अनुयायी हैं और कांग्रेस के वर्तमान नेतृत्व तथा उसकी वर्तमान नीति को समझते हैं। आज ऐसे ही नेता की आवश्यकता भी है, जो राष्ट्र में वर्तमान नेताओं के प्रति बुद्धिभेद पैदा न करे, मौ० आजाद ने अ० भा० कांग्रेस समिति में कांग्रेस कार्यसमिति के संकट में जिस प्रस्ताव का समर्थन किया था, उसे भी अ० भा० कांग्रेस कमेटी ने अस्वीकृत कर दिया है। मौ० आजाद अवश्य वृद्ध भी हैं और उनके स्वास्थ्य को देखते हुए भी उन पर बोझ डालना ठीक न होगा।

आगरा] — श्याम कुमार

दसहरे का दूसरा पहलू

आज भारतवासी दसहरा मना रहे हैं। रामचन्द्र उनके पूज्य हैं, इसमें सन्देह नहीं, उनकी पूजा करने का उन्हें अधिकार है। लेकिन आज लाखों वर्ष बाद भी जब वे लंकापति रावण और कुंभकर्ण या मेघनाद का व्यङ्ग उड़ाते हुए उनके पुतले जला देते हैं, तो क्या इसका यह अर्थ नहीं है कि वे हमारे लंकावासियों के चित्त को लगातार हजारों सालों से दुखाते आ रहे हैं और आज भी वे अपने पड़ोसी लंका के निवासियों के मनोभावों का कोई आदर नहीं करते ? एक ओर वे यह शिकायत करते हैं कि लंका में भारतीयों के साथ समान व्यवहार होना चाहिए और दूसरी ओर वे लगातार हमारे पूर्वजों का मजाक उड़ाने में आनंद लेते हैं। रावण अच्छा था या बुरा, उसने राम को परेशान किया, यह सब आज कौन कह सकता है ? आजतक उपलब्ध होने वाले इतिहास की प्रामाणिकता का निश्चय से कोई समर्थन नहीं कर सकता। फिर राम और रावण की लड़ाई को राजनैतिक रूप भी तो दिया जा सकता है। आज के समय की मांग है कि हम पुरानी कटुता भूल कर परस्पर मित्रभाव से रहें और प्रतिवर्ष सम्पूर्ण भारतमें उत्साह व समारोहसे मनाया जाने वाला यह दसहरा— लंकेश आदि का कुत्सित परिहास मित्रभाव को कहां तक बढ़ा सकेगा, क्या इस पर भारतीय विचार करेंगे ?

— एक लंकानिवासी

आर्यसमाज और सरकारी नौकर

आर्य-समाजियों ने अब तक आर्य-समाजी सरकारी अफसरों को अन्य आर्य-समाजियों की अपेक्षा अच्छा समझा है। सरकारी अफसर चाहे वे कांग्रेस सरकार के अफसर ही क्यों न हों, अपनी आत्मा की पुकार को स्पष्ट रूप में लोगों के सम्मुख नहीं रख सकते, उन्हें अपने पदों और नौकरियों का इतना मोह होता है कि वे आदर्श और उसूलों पर अपनी नौकरी को तिलांजलि नहीं दे सकते।

तब फिर यह कैसे आशा की जा सकती है कि आर्य-समाज जैसी क्रांतिकारी संस्था सरकार-परस्तों के हाथों में रह कर कोई क्रांतिकारी कदम उठा सके। इन पंक्तियों के लेखक को पता नहीं कि हैदराबाद सत्याग्रह में कितने आर्य-समाजी सरकारी अफसर शामिल थे। मन्त्र कोई पढ़े और साँप के बिल में कोई दूसरा हाथ दे, यह बात नहीं हो सकती। इस लिये आर्य-समाज की बागडोर चुनाव और 'कन्वैसिंग' से नहीं, वरन् सेवा-भाव से ऐसे व्यक्तियों के हाथ में होनी चाहिये जो आवश्यकता पड़ने पर अपनी नौकरियों का मोह न करें। जो आर्य समाजी सरकारी नौकरी करते हैं, उन्हें यथा-सम्भव आर्य-समाज की कार्यसमिति में नहीं आना चाहिये। यदि वे आर्यसमाज की कार्यसमिति में आते हैं, तो उन्हें पथ-प्रदर्शक के नाते सक्रिय कार्य में भी भाग लेना चाहिये।

आगरा] — श्रीराम शर्मा

झालावाड़ और हिन्दी

ता० ९ सित० के अंक में झालावाड़ सम्बन्धी एक टिप्पणी प्रकाशित हुई है। उसे पढ़ कर खेद हुआ, जिसमें एक सरकुलर के द्वारा कुछ पत्रों को हिन्दी की अपेक्षा अंग्रेजी में पेश करने की बात कही गई है। इसे भ्रमात्मक रूप में उपस्थित किया गया है। वास्तविक बात यह है कि राज्य में कुछ फाइलें जिनका अंग्रेजी में होना आवश्यक है— अंग्रेजी में रखी जाती हैं और शेष हिन्दी में। यदि अंग्रेजी फाइलों के लिये कोई उत्तर हिंदी में आता है तो उसका भाषान्तर करना पड़ता है, जिससे मामला निबटाने में व्यर्थ समय लग जाता है। ऐसी फाइलों की ओर संकेत करते हुए ही विज्ञप्ति में लिखा गया है कि 'दीवान आसिफसे जो पत्र अंग्रेजी भाषा में भेजे जावें उनका उत्तर वह अफसर जो अंग्रेजी जानते हों, अंग्रेजी में ही दें।' इसमें अनौचित्य क्या है, इसे आप स्वयं सोच लें। जिस दीवान ने सुकेत स्टेट में हिंदी को राज्य-भाषा घोषित किया, वह झालावाड़ में उलटी गंगा बहायेगा, इसकी तो कल्पना ही व्यर्थ है।

नयी दिल्ली] — एक जानकार

उमदा व नया स्टाक
अमीकन गर्म कोट

हर प्रकार के ओवरकोट, हाफ़कोट वासकोट आदि उमदा और नया माल वाजबी दामों पर स्पलाई किया जाता है। हजारों पक्के ग्राहक वर्षों से फ़ायदा उठा रहे हैं। आज ही ताज़ा निर्स्व नामा मंगा कर आर्डर बुक करा लीजिये।

सैकन्ड हैंड कोटों की सब से पुरानी कम्पनी

रमेश राज ऐन्ड कम्पनी
सौदाग्रान कोट
पो० बक्स नं० 682 कराची।

संतान होने की दवा

जिस स्त्री के सन्तान न होती हो केवल ७ रात तक मशहूर दवा मुहाफिज औलाद खिलाओ। इन सात रात में स्त्री के बदन के अन्दर का हिस्सा ठीक ऐसी हालत में आ जाता है कि आठवीं रात ..... स्त्री को गर्भ रह जाता है। इस औषधि की वजह से आज हजारों बहिनों की गोद में बच्चे खेल रहे हैं। जिस स्त्री को सन्तान न होती हो वह नीचे के पते पर पत्र लिख कर दवा मुहाफिज औलाद की शीशी वी० पी० पार्सल द्वारा मंगालें। १ शीशी काफी है जिसका मूल्य दो रुपया आठ आना २॥) है पारसल पर ॥-) महसूल लगेगा।

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४ देहली

अफीम बन्द होजायेगी ?

चौधरी रामराय जी लिखते हैं—

मैं बीस साल से अफयून ४० तोले खाता था इसलिये मैंने ठेका अफीम ९६०००) रु० सालाना पर ले रखा था। ताकि मुझे अच्छी अफयून खाने के लिये मिलती रहे। मैंने अपने धन, शरीर का नाश होते देखकर डा० ऋषिराम मण्डी कोटफत्ता की वलैत टिकियां मंगाकर ८ दिन में आनन्द के साथ अफीम छोड़ दी। छोड़ते वक्त या बाद में कोई तकलीफ नहीं हुई। मैं एक रईस कई गांवों का मालिक हूं। जनता के लाभ के लिये यह इश्तहार देता हूं। जो भाई इस बुरी बला को छोड़ना चाहते हों वे जितने तोले माहवार अफीम खाते हों कीमत टिकिया दुगने रुपये का खत लिखकर वी. पी. मंगा लें।

पता — डा० ऋषिराम शर्मा अफयून छुड़ाऊ अस्पताल मंडी कोटफत्ता (स्टेट पटियाला)।

[पृष्ठ ६ का शेष]

विधान परिषद के सामने कुछ समस्याएं

यह स्पष्ट है कि विधान परिषद को ब्रिटिश मंत्रीमंडल द्वारा निर्धारित वैधानिक सिद्धांत के अन्तर्गत ही काम करना होगा। मिशन योजना के अनुसार सुरक्षा की जिम्मेदारी भारतीय संघ पर होगी। इस जिम्मेदारी को पूरा करने के लिये वह आवश्यकता धन भी एकत्रित कर सकेगा परंतु आज सुरक्षा का अर्थ केवल तलवार, बन्दूकें और सिपाही जुटाना ही नहीं है। इसकी आवश्यकताएं और इसका क्षेत्र बहुत बड़ा है। रक्षा के साधनों को जुटाने के लिये तथा उनके सचालन के लिये देश के बुनियादी उद्योगों, उपज तथा खनिज पदार्थ, जनशक्ति तथा समस्त आर्थिक ढ़ांचे पर पर्याप्त नियंत्रण होना आवश्यक है। विशेष तौर पर युद्धकाल में इस विस्तृत नियंत्रण की ओर भी अधिक आवश्यकता है। मिशन योजना में यह नहीं बताया गया है कि सुरक्षा के अन्तगत और कौन-कौन से आवश्यक विषय केन्द्र के हाथ में रहेंगे। सुरक्षा की परिभाषा, केन्द्र की जिम्मेदारी तथा अधिकार विस्तार पूर्वक विधान परिषद को भारत के भावी विधान में स्पष्ट कर देने चाहिये। शांति काल एवं युद्धकाल में कौन-कौन से विषय केन्द्र के अन्तर्गत रहेंगे। इसकी एक सूची तैयार करनी होगी। सुरक्षा के खर्च के सम्बन्ध में भी मिशन योजना में कोई स्पष्ट बात नहीं की है। प्रांत केन्द्र को सहायता के रूप में कुछ धन (Subvention) देंगे अथवा केन्द्र को टैक्सों द्वारा धन एकत्रित करने का अधिकार दिया गया है, यह स्पष्ट नहीं है। यदि केन्द्र को प्रांतों की सहायता पर निर्भर रहना पड़ा तो वास्तव में सेना की शक्ति उसके शस्त्र और संगठन केन्द्र के हाथ में न रह कर प्रांतों के ही हाथ में रहेंगे, क्योंकि केन्द्र की प्रांतों पर आर्थिक निर्भरता केन्द्र को प्रांतों का गुलाम-सा बना देगी। वह स्वतंत्र रूप से अपनी आर्थिक असमर्थता के कारण अपनी सुरक्षा नीति निश्चित करने में असमर्थ रहेगा। हमारी राय में विधान परिषद को चाहिये कि केन्द्र को प्रांतों पर निर्भर राजस्व के सम्बंध में न रख कर कुछ अखिल भारतीय टैक्स वसूल करने का अधिकार दे दे और यदि आवश्यकता पड़े तो केन्द्र को प्रांतों से और धन लेने का अधिकार हो।

मिशन योजना की अनिवार्य समूहीकरण की स्कीम में एक और खतरा अन्तर्हित है — (अ) और (ब) प्रांतों के गुट संभवतः भारतीय संघ के विरुद्ध विद्रोह कर बैठें और अपने आपको स्वतंत्र घोषित कर दें। सिंध और बङ्गाल इस प्रकार की धमकियां पहिले ही दे चुके हैं। भारत के भावी विधान में इस खतरे के लिये कुछ प्रबंध करना है।

भारतीय रियासतों का जो कि भारतीय संघ की सदस्य रहेंगी, आसान प्रश्न नहीं है। मिशन योजना के अनुसार देशी रियासतों की रक्षा की जिम्मेजारी भी केन्द्र के ऊपर है और रियासतें सुरक्षा के मामले में केन्द्र के अंतर्गत ही रहेंगी परन्तु मिशन योजना में यह स्पष्ट नहीं है कि देशी रियासतों की फौजों का कमान्ड नरेशों के हाथ में रहेगा अथवा संघ के हाथ में। सरदारी सत्ता का अन्त होने के पश्चात् प्रत्येक नरेश स्वयं सत्ता सम्पन्न हो यह दोनों बातें कुछ विरोधात्मक प्रतीत होती हैं। विधान परिषद को इस विरोधाभास को मिटाकर भारतीय संघ और देशी नरेशों की फौजों में वैधानिक तरीके से सामंजस्य स्थापित करना होगा। यदि रियासतों की फौजों का कमांड किसी भी अंश में नरेशों के हाथ में छोड़ा गया तो हमें डर है कि देशी नरेश कहीं स्वयं एक दूसरे पर चढ़ाई न कर दें। विधान में एक और बात स्पष्ट करनी है। देशी रियासतों की सुरक्षा की जिम्मेदारी तो केन्द्र पर डाल दी गई है, परंतु यह स्पष्ट नहीं है कि देशी रियासतों से केन्द्र किस प्रकार रक्षा खर्च वसूल करेगा और क्या केन्द्र को रियासतों में टैक्स लगाकर धन वसूल करने का अधिकार रहेगा? क्या रियासती नरेश अपनी आर्थिक सत्ता केन्द्र को सौंपने के लिये तैयार रहेंगे? विधान परिषद को इन सब समस्याओं को सुलझाना है।

स्त्री रोगों की निपुण चिकित्सिका

लेडी डाक्टर **कविराज आर. रानी** ही हैं

आप किसी भी स्त्री रोग में ग्रस्त हों तो निम्नलिखित पते पर मिलिये। वे आपको उसी समय ठीक कर देंगी। इसके अतिरिक्त उनकी तैयार की हुई औषधि 'आशा' एक ऐसी औषधि है जोकि स्त्री के आन्तरिक वाह्य रोगों को दूर करके सन्तान योग्य बना देती है और उसका मूल्य केवल १०) रु० है डाक व्यय पृथक होगा। औषधालय—

लेडी डाक्टर--**कविराज आर. रानी**

गली नं० १ अर्जुननगर निकट शाहालमी अड्डा लाहौर।

विजयगढ़ निवासी

भारत विख्यात वैद्यराज बांकेलाल गुप्त प्राणाचार्य्य
भूतपूर्व मैनेजिंग प्रोप्राइटर धन्वन्तर औषधालय
एवं भूतपूर्व सम्पादक धन्वन्तरि
ने

प्राणाचार्य्य भवन

नामक एक वृहद संस्था २००००० दो लाख के मूल धन से स्थापित की है जिसके लिमिटेड होने के लिये कागजात तैयार हो रहे हैं। शीघ्र ही लिमिटेड हो जायगी। शेयर प्रायः सब बिक चुके हैं। इस संस्था में आयुर्वेदीय, पेटेन्ट और नवीन प्रणाली से प्रस्तुत औषधियां, वैद्यक पुस्तकें, प्रवास मंजूषा चित्र आदि के अतिरिक्त उक्त वैद्यराज जी के सम्पादकत्व में "प्राणाचार्य्य" नामक आयुर्वेदीय उच्च कोटि का सचित्र मासिक पत्र एवं साप्ताहिक पत्र शीघ्र ही प्रकाशित होगा। अभी से ग्राहक बनने से मासिक का ४) वार्षिक और साप्ताहिक का ६) वार्षिक मूल्य लिया जायगा। सर्व साधारण को खेरीज और चिकित्सकों एवं औषधि विक्रेताओं को थोक भाव का सूचीपत्र शीघ्र मंगा लेना चाहिये।

एजेण्टों की आवश्यकता है

व्यवस्थापक — **प्राणाचार्य भवन, विजयगढ़ जि० अलीगढ़**

Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

युक्त प्राँत में

प्रान्तव्यापी चोरबाजार :

★ मिल मालिक चक्कर में
★ मिल के कपड़े पर खद्दर की मोहर : पुलिस भी षड्यंत्र में; रेलवे के गोदाम से चोरी : स्टील कंट्रोल सफर भी चोर बाजार में शामिल

कांग्रेस मंत्री-मण्डल द्वारा स्थापित भ्रष्टाचार-विरोधी विभाग ने एक प्रांतव्यापी चोर बाजार संघठन का अनुसंधान किया है, जिसमें कुछ अति प्रख्यात औद्योगिक व्यापारी तथा राजनीति व्यवसायी एव उच्चपदस्थ सरकारी अफसर लिप्त प्रतीत होते हैं। 'संसार' के सम्वाददाता के अनुसार गत सप्ताह भारत के भूतपूर्व खाद्य सदस्य सर जे० पी० श्री वास्तव की बरेली स्थित तारपीन और रेजिन फैक्टरी पर धावा मारकर उक्त विभाग ने चोरबाजारी के एक बहुत बड़े षड्यन्त्र का पता लगाया था, जिसके अन्तर्गत फैक्टरी में माल अधिक बनाया जाता था, पर दिखाया कम जाता था और अतिरिक्त माल चोरबाजार में जाता था।

किंतु जिस दिन यह धावा किया गया था, उसी दिन इसी विभाग की प्रेरणा से प्रांत के अन्य ९९ स्थानों में भी एक साथ धावे हुए थे। भारत सरकार के एक दफ्तर पर धावा मारने के लिए अधिकारियों से विशेष अनुमति लेनी पड़ी थी। विभाग का मुख्य लक्ष्य भारत सरकार के युक्तप्रांतस्थित रीजनल लोहा और स्टील कन्ट्रोल का दफ्तर था, जिसमें कुछ ऐसे कागजात पाये गये, जिनसे इस दफ्तर के ऊंचे अधिकारियों के भी इन षड्यन्त्रों में शामिल रहने का पता चलता है। उनके सम्बन्ध में अब कड़ी जांच हो रही है।

कानपुर चोरबाजार का केंद्र

उसी सम्वाददाता के अनुसार कानपुर चोर बाजार का केन्द्र है। अनेक स्थानों के कोटा होल्डर वहां माल लेने जाते थे, किंतु माल उठाने की कागजी कार्यवाई करके सारा माल वहीं छोड़कर चले आते थे। निस्सन्देह उनको व्यापारियों से पूरा मुनाफा मिल जाता था और वहां पड़ा रहने वाला यह माल, जो वहां से बाहर गया समझा जाता था, कानपुर के चोर बाजारियों द्वारा बहुत ऊंचे दामों में बेचा जाता था।

मिल मालिक चोरबाजार के सरदार

इन्हीं धावों के सिलसिले में भ्रष्टाचार विरोधी विभाग को कपड़े का चोर बाजार करने वाले एक संगठन का भी पता लगा। यह समुदाय मिल के बने कपड़े को हाथ का बना कपड़ा कह कर उस पर मनमाने दाम लगाकर बेचा करता था। कानपुर का एक प्रसिद्ध मिल मालिक हाथ के बने कपड़ों का भी डिपो रखे हुए है और वह डिपो उसकी मिल के समीप है। वहां मिल का बना माल चुपचाप पहुंचा दिया जाता था और उस पर 'हिन्द' की मोहर लगा कर उसे हाथ का बना कपड़ा कहकर मनमाने दामों पर बेचा जाता था। इस प्रकार के कपड़े की अनेक गांठें गोंडा, नैनीताल तथा नैपाल की सीमा पर पकड़ी गयी हैं।

पुलिस भी षडयंत्र में शामिल

पुलिस चोर बाजारी से अनभिज्ञ हो ऐसी बात नहीं है। गोरखपुर के श्री सुदामा प्रसाद एम० एल० ए० ने तो उस पर चोर बाजारी के षड्यन्त्र में शामिल रहने का भी आरोप लगाया है। उनका कहना है कि पुलिस की साजिश से हजारों गांठ कपड़ा गोरखपुर की सीमा से नैपाल में प्रविष्ट होती रही है। नैपाल में कपड़े के कारखाने नहीं हैं और न वहां कपड़े पर नियन्त्रण ही है। अतएवं वहां कपड़े के मनमाने दाम मिलते हैं। श्री सुदामाप्रसाद ने इस षड्यंत्र की जांच के लिए श्री जगदेव मिश्र को भेजा, जिन्होंने कुछ माल नैपाल जाते हुए कपड़ा। इस पर पुलिस ने उन पर डकैती का मामला चला दिया और उन्हें गिरफ्तार कर लिया।

ओ.टी.आर.दुर्घना की जिम्मेदार कौन

अनेक वर्षों के पश्चात अवध तिरहुत रेलवे में अति शीघ्र दो भयंकर ट्रेन दुर्घटनाएं हो गयी हैं। भटनी की दुर्घटना में आहत यात्रियों का रक्त सूखने भी न पाया था कि दिनवारा में दुर्घटना हो गयी। ओ० टी० रेलवे कर्मचारी संघ के अध्यक्ष श्री सत्यनारायण सिंह ने रेलवे अधिकारियों पर आरोप लगाया है कि धुरीकी गर्माहट से दुर्घटना हुई है, क्योंकि इस घर्षण की उष्णता को रोकने वाली धातु रेलवे के गोदाम से चोरी हो गयी, फलतः रेलवे में उसकी कमी हो गयी है।

स्त्रियों को शक्ति दायक औषधि

सुन्दरी साथी (रजिस्टर्ड)

स्त्रियों के प्रदर, रक्त प्रदर, ऋतुश्राव, गर्भाशय के रोग, मिटाता है। बन्ध्यत्व को मिटाता है, बच्चे होते हैं। स्त्री का स्वास्थ्य सुधार देती है, हरेक गांव में दवा वाले लोग बेचते हैं। कीमत फी बोतल १।=) तीन बोतल से आराम होता है इनका मूल्य ३।।।) । दिल्ली एजेन्टः—कान्तीलाल आर० पारिख, दवे केमिकल वर्कस, कालबादेवी रोड, बम्बई।

FOR BETTER LIGHT CHEAP PRICE and DURABILITY; BUY

Sole Distributors: for Sind, Baluchistan and Rajputana, MIRPURKHAS ELECTRIC SUPPLY CORP. LTD. WOOD STREET, KARACHI.

Stockists:- BINANI ELECTRIC STORES M. GANDHI ROAD, KARACHI.

MYSORE

श्वेतकुष्ट बनौषधि

महात्मा प्रदत्त श्वेतकुष्ट (सफेदी) की दवा से तीन दिन में पूरा फायदा। यदि सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों, विज्ञापनदाताओं की दवा से निराश हो चुके हों तो इसे लगा कर आराम होवें। १५ दिन की दवा का मूल्य २।।) ।

सफेद बाल काला

इस तेल से बालों का पकना रुक कर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे तो दूना मूल्य वापिसी की शर्त लिखा लें। यह तेल सिर के दर्द व सिर में चक्कर आना आदि को आराम कर आंख की रोशनी बढ़ाता है। एकाध बाल पका हो तो २।।) आधा पका हो तो ३।।) और कुल पका हो तो ५) का तेल मंगवा लें। एजेण्टों की हर जगह आवश्यकता है।

स्तम्भक वटी

एक गोली शाम को खा लें और इसके अद्भुत चमत्कार को देखें। एक घण्टे तक स्तम्भन कर गजब ढा देगी। १६ गोली १)।

पता—अखिल किशोर राम
नं० १०७ कतरी सराय (गया)

स्त्री की कमर टूट जाती है

अगर स्त्री का मासिक धर्म ठीक समय पर न आये या मासिक के दिनों में दर्द हो या माहवारी कम या ज्यादा आती हो तो इस तकलीफ से स्त्री की कमर में बहुत दर्द होता है। ऐसी को एक शीशी दवा कोरस सेवन करा देनी चाहिए। इस दवा के खाने से मासिक धर्म की सब खराबी ठीक हो जाती है। फिर हर महीना बिना किसी कष्ट के ठीक मात्रा में मासिक धर्म होने लगता है। हजारों स्त्रियाँ इस दवा से लाभ उठा रही हैं। एक शीशी दवा कोरस की कीमत दो रुपया आठ आना २।।) है। नीचे लिखे पते से पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा मंगा लीजिए।

पारसल खर्च ।।-) लगेगा।

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना
हिन्दी आफिस नं० ३४, दिल्ली !

बहनजी !

अभिमान करने योग्य ही चीज है यह। त्वचा की कांति-सौन्दर्य बढ़ाकर उसकी निरोगिता को रखने के लिए

एक्ला टॉयलेट स्नो

यह एक अद्वितीय साधन है शरीर की त्वचा में प्रवेश कर उसे सुस्वस्थ तथा सुन्दर बनाये रखने वाले प्रसाधन विशेषों में "एक्ला स्नो" अपना सानी नहीं रखता। इसके लिये तो जहां देखो वहां, वहीं वह नजर आता है।

★ ★

नोव्हा कम्पनी, माहिम, मुंबई

फिल्म स्टार

बनने के इच्छुक शीघ्र लिखें, कुछ पढ़ा होना आवश्यक है।
रंजीत फिल्म आर्ट कालेज 18 रावीरोड (V. D.) लाहौर।

वैद्यरत्न

पं० डी० गोपालाचार्लू

का

जीवामृतम

स्त्री पुरुष और बालकों में पौरुष, बल और चेतना शक्ति का संचार करने के लिए अर्धशताब्दी से विख्यात है

आयुर्वेद आश्रमम लि०

टी० नगर, मद्रास।

उत्तर भारत के लिए चीफ स्टोकिस्टस्

ए न सा ट्रे डिं ग कं०

चांदनी चौक, दिल्ली।

---

५००) इनाम

प्रेम वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को अपने पास रक्खें, आपकी प्रेयसी कैसी ही कठोर और जिद्दी क्यों न हो वह आपके काबू में हो जावेगी। प्रेम पथ के सभी कष्टों को दूर कर प्रेम सम्बन्ध जोड़ने में मदद करता है। एक बार परीक्षा कर-झूठी साबित करने वाले को ५००) इनाम। मूल्य प्रति यन्त्र २) तीन का ५) वी० पी० खर्च अलग।

पता—

एम० एल० शाह साहब,

पोस्ट बक्स २४३ कानपुर।

सिद्धयोगेन्द्र कवच

(गवर्नमेंट रजिस्टर्ड)

इस अद्भुत शक्तिशाली तथा शक्तिसम्पन्न कवच को केवल धारण से मनोवांछित फल प्राप्त होता है। नौकरी, संतान, धन की प्राप्ति, से लाभ, मुकदमे, रेस, लौटरी में कठोर से कठोर हृदय वाला स्त्री या आपके वश में होकर आपका हो जायगा और कठिनसे कठिन रोगों नवग्रहों से छुटकारा होकर भाग्योदय है। बेफायदा साबित करने से १००) इनाम। मूल्य तांबा २॥) रु० चांदी ३) रु० सोने का स्पेशल का मूल्य १५) पता-श्री महाशक्ति आश्रम मुहल्ला सार्ल अहरा, पो० बांकीपुर, पटना

पञ्जाब युनिवर्सिटी द्वारा नियत

हिन्दी रत्न, भूषण तथा प्रभाकर

हिन्दी परीक्षाओं की

पाठ्य पुस्तकें

तथा सर्वोत्तम सहायक पुस्तकों (कुञ्जियों) के लिये -

स्मरण रखिये। सूचीपत्र मुफ्त

गाला एण्ड कम्पनी

हस्पताल रोड, अनारकली लाहौर॥

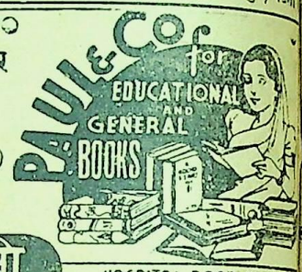

HOSPITAL ROAD, ANARKALI
LAHORE

१०००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल रजिस्टर्ड के सेवन करने से हमेशा के लिए काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है, उनको लम्बे, घूंघरवाले और चमकदार बनाता है। जहां बाल उगते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता है और सिर को ठण्डक पहुँचाता है। अतीव सुगंधित है। कीमत एक शीशी २॥), तीन शीशी पूरा कोरस की रियायती कीमत ६॥)। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक फैंसी स्यूट रिस्टवाच जोकि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्दन न्यूगोल्ड) बिल्कुल मुफ्त भेजी जाती है।

जरूरी नोट—माल पसंद न होने पर कीमत शीघ्र वापस करदी जाती है। तीन शीशी दवाई के खरीदार को डाक खर्च बिलकुल माफ, और चार अंगूठी लन्दन न्यूगोल्ड और चार घड़ियां बिलकुल मुफ्त इनाम दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार-बार हाथ न आयेगा। आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ-साफ लिखें।

मैनेजर—

लन्दन सी. कम्पनी (V.W. D.) पी. बी. १६५ लाहौर।

अत्यन्त उपयुक्त !

उद्यम

सर्वत्र लोकप्रिय !

धान्य - अकाल - निवारण विशेषांक

★ धान्य - अकाल - निवारण सम्बन्धी अत्यन्त उपयुक्त योजनाएं इस विशेषांक में देखिये।

★ वर्तमान अन्न संकट से मार्ग निकालने में यह विशेषांक काफी उपयुक्त सिद्ध हुआ है।

★ इसमें दी हुई योजनाओं पर अमल कर कोई भी व्यक्ति खुद को और अपने देश बंधुओं को भूखों मरने से बचा सकेगा !

विशेषांक की बहुत ही कम प्रतियां बची हैं। अतः शीघ्रता कीजिये। वार्षिक मूल्य रु० ५ ८० भेजकर अगस्त १९४६ से ग्राहक बनने वालों को धान्य - अकाल - निवारण विशेषांक और आगे प्रकाशित होने वाले अंक प्रति माह नियमित रूप से वर्ष भर मिलते रहेंगे।

उद्यम मासिक, धर्मपेठ, नागपुर।

सन्यासियों की गुप्त बूटियां

इस पुस्तक में सैकड़ों ऐसी जड़ी बूटियों के गुप्त रहस्य प्रकट किये गये हैं जिनसे सन्यासियों की धाक जमी हुई है। हालांकि इनमें से अधिकांश बूटियां आपके जंगल, खेत बागीचों और पंसारियों की दुकानों पर भी मिल सकती हैं, जिनकी आवश्यकता पड़ने पर स्त्रियां भी सिर से पांव के नख तक के सभी रोगों का इलाज घर में ही कर लिया करेंगी। इस पुस्तक को पढ़ लेने के बाद आप इस युग के धन्वन्तरि समझे जायेंगे। रोगियों का तांता बधा रहेगा। कुछेक बूटियों की सूची-

लाख-लाख रु० के प्रयोग—(१) ऐसी बूटी कि जिसकी लकड़ी कान में लगा देने से सर्प काटे का विष मुख द्वारा निकल जाता है, (२) वह बूटी जिससे गूढ़ गर्भ ५ मिनट में निकल जाता है, (३) मधुमेह की अक्सीर बूटी, (४) दुबले पतले आदमी को मोटा ताजा बना देने वाली बूटी, (५) सात दिन में नपुन्सक को मर्द बनाने वाली बूटी, (६) दमे की अद्भुत बूटी, (७) वह बूटी-जिसके रस में अंगुली डुबाने से तत्काल ज्वर उतर जाता है, (८) गर्भ रोक बूटी, (९) उपदंश को ७ दिन में मिटाने वाली बूटी, (१०) निमोनियां की बूटी, (११) वह बूटी जिससे बन्ध्या के पुत्र पैदा हो। ऐसी ही सैकड़ों बूटियों का वर्णन इसमें है, जिनसे चमत्कार दिखा कर आप सिविल सर्जनों को दंग कर सकते हैं। मूल्य २॥) डाकखर्च ।=)

पता—रसायन फार्मेसी (५) संगरिया (बीकानेर)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

बाल बन्धु परिषद

लाछी छीपिन

[श्री स्नेहरश्मि]

धर्मावती केसमीप के एक जैन-मन्दिर के परदेशी-सा दीखता पुरुष उदास बैठा था। उसी समय वहां भगवान का दर्शनकरनेके लिए लाछी नामकी छीपिन–छीपे की औरत—आई। वह श्रावक धर्म पालती थी और धनवान थी।

भगवान की पूजा करके लाछी ज्यों लौटने को हुई, उसकी नजर उस पर-देशी पर पड़ी। उसने धीमे से पूछा—'भई, कहीं बाहर से आये हो क्या ?'

'हां, बहन मारवाड़ से आया हूं।'

'अकेले हो ?'

'नहीं, साथ में मेरे बाल-बच्चे भी हैं।'

'यहां किस लिए आये हो ?'

'कहीं कोई काम-धन्धा मिल जाय तो रहूं, इसी विचार से यहां तक आ पहुंचा हूं।'

'अच्छा, ऐसी बात है ?' परदेशी की बात सुनकर लाछी तनिक सोच में डूब गई और फिर बोली—

'तुम्हारा नाम क्या है, भाई ?'

'ऊदा।'

'कहां ठहरे हो ?'

'ठहरता कहां ? परदेशी आदमी ठहरा। मेरी समझ में नहीं आता कि कहां जाऊं ?'

'फिकर न करो भाई, मेरे साथ मेरे घर चलो। मैं कोई अमीरजादी नहीं, मेरे मुंह से जो बनेगा, सो जुवार-बाजरा तुम्हें जरूर दूंगी।'

ऊदा इस भली औरत की बात को अचरज के साथ सुनता रहा। जिस देश के लोग एक परदेशी के लिए इतनी ममता दिखाते हैं, उस प्रांत के लिए उसके मन में आदर पैदा हुआ। उसने अपनी तकदीर को सराहा कि वह उसे खींचकर गुजरात तक ले आई।

लाछी ने ऊदा और उसके बाल बच्चों को भोजन कराया और फिर अपना एक खाली घर उन्हें रहने के लिए दे दिया। वहां रह कर ऊदा ने धीरे–धीरे अपनी मेहनत और होशियारी से कुछ पैसे जमा किये। लाछी के जिस घर में वह रहता था, उसे गिरा कर उसकी जगह दो टोंका पक्का घर बनाने का उसने इरादा किया। आखिर पुराना घर गिराया गया और उसकी नींव खोदी जाने लगी। उस नींव में से गड़ा हुआ धन निकला। अब सवाल उठा कि इस धन का मालिक कौन ? ऊदा ने सोचा, 'घर लाछी का था। उसे मालूम न होगा कि नींव में धन गड़ा है। अगर मालूम होता, तो वह जरूर गड़ा धन निकलवा लेती। इसलिए मुझे तो यह धन उसी को दे देना चाहिए। इसकी मालिक तो वही है।'

यह सोचकर नींव में से मिले हुए सारे धन के साथ ऊदा लाछी के पास पहुंचा। लाछी ने उसे लेने से इन्कार किया और कहा—

'भाई, क्या पागल हो गये हो ? घर तो मैं तुम्हें दे चुकी थी। अब इस धन से मुझे क्या वासता ?"

लाछी टस-से-मस न हुई। उसने वह धन न लिया और उस धन के बल पर ऊदा ऊदा न रह कर उदयन बना।

[आठ सौ बरस पहले की एक कहानी]

हम

[श्री ईश कुमार]

भारत मां के हम वीर पुत्र,
हमने न कभी डरना सीखा।
आंधी आये, बादल आयें
तूफान सरीखी विपदायें
सादर इनसे डट कर लड़ते
हम कभी न अब तक घबराये
हमने अपने कर्तव्य मार्ग पर–
ही सदैव मरना सीखा।
भारत मां के हम वीर पुत्र
हमने न कभी डरना सीखा।

हम धरती आज हिलादेंगे
दुर्गों को धूल मिलादेंगे
हम बलशाली, अभिमन्यु-बाल
जो कहते कर दिखलादेंगे
कैसा ही कठिन असम्भव हो
हमने सम्भव करना सीखा।
भारत माँ के हम वीर पुत्र
हमने न कभी डरना सीखा।

प्रश्न-पहेली

जो कुछ देखे वही तावे,
झूठ नहीं वह कहता है।
चुगलखोर पक्का है तब भी,
वह महलों में रहता है॥
(दर्पण)
— सुभाषसिंह

× × ×

हरे पर्दे में खूनी चोर।
सारी दुनिया में उसका शोर॥
(मेंहदी)
— अमरसिंह

दो अक्षर का मेरा नाम
सिर पर चढ़ना मेरा काम
बन जाऊं किसी का नाम
(भालू)
— धर्मेंद्रसिंह

क्या आप जानते हैं ?

१— पृथ्वी सूर्य से ९,२८,००००० (नौ करोड़ अट्ठाईस लाख) मील की दूरी पर है।

२— गर्मी की ऋतु में केवल एक मक्खी २०,८०,३२० (बीस लाख, अस्सी हजार, तीन सौ बीस) बच्चे पैदा करती है।

३— न्यूफाउण्डलैण्ड नामक देश में ४०,००० झीलें हैं।

४— संसार भर में चूहे प्रति वर्ष १८,०००,००० (अट्ठारह करोड़) रु० का अन्न अथवा अन्य खाद्य-पदार्थ खा जाते हैं।

५— अमैण्डिलो नामक जानवर के ९२ दांत होते हैं। दुनिया में किसी भी जानवर के इतने दांत नहीं होते।

६— चन्द्रमा पृथ्वी से २४०,००० मील की दूरी पर है।

७— समस्त संसार की लम्बाई १७,६४,०००,०००,०००,०००,६०० (सत्रह शंख, चौसठ पद्म, छः सौ) मील है।

८— शहद के छत्ते में ३०,००० तक मक्खियां रहती हैं।

९— २३,००० कीड़ों से आध सेर रेशम तैयार होता है।

— सुरेन्द्रनारायण

क्या आप गांधीजी की भांति अपने मित्रों के साथ हंसते बोलते भ्रमण करने कभी नहीं जाते ?

स्वाधीनता के लिए

हमारे देशवासियों की नस-नस में आज गुलामी के कीटाणु भर गये हैं। देश के लिए अपने को उत्सर्ग करना वे जानते ही नहीं। अपने-अपने स्वार्थ साधन में सभी व्यस्त हैं। अमीर, गरीब से नफरत करते हैं। श्रमिक, पूंजीपतियों से घृणा करते हैं। किसानों और जमीदारों में लड़ाई है। हिन्दू और मुसलमानों में विद्वेष है। जब तक लोगों की मनोवृत्तियों में परिवर्तन न किया जायगा, उनमें सद्भाव न उत्पन्न होगा, विभिन्न वर्गों और सम्प्रदायों को एकता के सूत्र में न बांधा जायगा, जब तक उनके मस्तिष्क में यह भावना न बैठादी जायगी कि वे सभी भारतीय हैं, एक ही जननी के गर्भ से उत्पन्न हुए हैं, उसकी ही छाती से फाड़कर निकाले हुए अन्न-जल से उनके शरीर पुष्ट हो रहे हैं, तब तक हम अपने लक्ष्य पर न पहुंच सकेंगे।

यह भूलने की बात नहीं

[श्री यशपाल आजाद]

★ अपने शरीर को सदा स्वच्छ रखो। स्वच्छ शरीर में रोग नहीं होते। मलिन शरीर में से दुर्गन्ध आने लगती है, और कोई स्वच्छ आदमी उन्हें अपने पास नहीं बैठाता; इस लिए यदि तुम अस्वच्छ रहते हो तो अपने मुख, आंख और नाक आदि शरीर के किसी भी भाग को कभी मलिन न रखो। स्नान के समय अपने प्रत्येक अंग को मल-मल कर धोया करो और अपने सभी वस्त्रों को भी सदा साफ रक्खो।

★ नियत समय पर अपना काम करो। समय पर काम करने से ही सब काम ठीक होते हैं, अन्यथा वे अधूरे ही रह जाते हैं।

★ रात को जल्दी सो जाओ और प्रातः सवेरे उठो। प्रातः सवेरे उठने से मन और शरीर प्रसन्न और नीरोग रहते हैं, और दिन भर आलस्य नहीं सताता।

★ जिस समय कोई कार्य करो, उसे पूर्ण ध्यान लगा कर करो, बिना पूर्ण ध्यान लगाए कोई काम ठीक नहीं हो सकता।

भारत के नवयुवकों! आज हमें अपनी स्वाधीनता के लिये पागल हो जाना चाहिए, पागल, पूर्णतया पागल। प्रताप शिवाजी, छत्रसाल, वीरबन्दा वैरागी की भांति आज हमें अपनी स्वतन्त्रता के लिये मचल पड़ना चाहिये। देश के गौरव की रक्षा के लिए संसार के सभी महापुरुषों ने अपनी सोने-सी जवानी नष्ट कर दी है। हमें भी देश-हित अपना सर्वस्व अब त्याग देना पड़ेगा, तभी हम अपने लक्ष्य तक पहुंचने में सफल होंगे अन्यथा नहीं।

— त्रिलोक अज्ञान

सर्व शान्ता

[पृष्ठ १० का शेष]

इन्दु के देखते-देखते रमा का सारा शरीर नीला पड़ गया। माता ने लड़की को हिलाया, रो-रोकर कहने लगी — 'रमा उठ बेटी, भूखी मत जा, अभी मैं कहीं से भात का मांड मांग कर लाती हूं।' किन्तु तब रमा की क्षुधार्त आत्मा चली जा चुकी थी।

रोती हुई आंगन की ओर भागी और तब उसकी दृष्टि सामने की प्रासाद तुल्य अट्टालिका पर पड़ी। नित की भांति उन्मुक्त वातायन पर धनकुबेर गृहिणी यूथिका खड़ी उसी के घर को निहार रही थी।

इन्दु ने उस ओर पलभर के लिए देखा, दूसरे पल वह सिहरी, भय-घृणा से उसका मुख चमका, मानों आखों के सामने वह किसी रक्त पिपासु दैत्य को देख रही हो, द्वितीय वार उसने पुनः ऊपर से देखा और फिर भागती हुई कमरे में पहुंची और शंकरको छातीसे लगा लिया। उन्मादिनी की भांति कहने लगी–'डाकिन, लुटेरी पैसों से मेरे शंकर को खरीदना चाहती है, भूखों मर जाऊंगी, फिर भी अपने शंकर को, हृदय के खून को उस चाण्डालिन के हाथ न बेचूंगी। क्यों-क्यों वह मेरे बच्चे को लेना चाहती है? नहीं दूंगी अपने शंकर को।' इसके बाद चुम्बनों से उसने क्षुधातुर बच्चे को अस्थिर कर दिया।

मिट्टी की हांडी हाथ में लिए इन्दु प्रति गृहस्थ के द्वार पर भटकती फिर रही थी—'बहिनो, जरा-सा मांड़ दे दो, एक टुकड़ा रोटी। भूखी रमा चल बसी है, कमला और शंकर भूख से मर रहे हैं, बच्चों का बाप दो दिन से उठा तक नहीं, दे दो बहिन थोड़ा-सा मांड़।'

किसी ने कहा—'शहर का शहर भूखा मर रहा है, किसे-किसे दिया जाये?'

कोई बोली—'जरा पहले आती तो मिल जाता, कई लोग अभी जरा पहले मांड़ लेकर गए हैं।'

तो किसी ने थोड़ा-सा मांड़ दे भी दिया। उतना ही लेकर इन्दु भागी-भागी घर आई। पहले शंकर को पिलाया फिर कमला और प्रकाश को दो-दो चम्मच पिला दिया। सूखी हांडी एक ओर रखदी और स्वयं नल पर जाकर भर पेट पानी पी आई।

(३)

उस प्रातः में कमला की क्षीण 'मां' पुकार इन्दु के कान तक नहीं पहुंचा, तब इन्दु के उठने की शक्ति लोपप्राय थी। देर से वह चेष्टा कर रही थी कि उठकर गृहस्थों के द्वार पर जावे, थोड़ा मांड यदि मिल सके तो लाकर बच्चों को पिलावे। किन्तु कई दिनों के अनशन ने उसे शक्तिहीन, निर्जीव कर दिया था। शंकर उसी के बगल में पड़ा हुआ था। प्रकाश किसी प्रकार से उठकर दालान में बैठा था और कमला! कमरे के कोने में कुण्डलिकाकार से पड़ी हुई थी।

एक घड़घड़ाहट की आवाज से इन्दु चौंकी, भीत स्वर से पुकारा—'कमला!' उत्तर न पाकर वह दीवाल के सहारे उठी, और गिरती-पड़ती कमला के निकट पहुंची। लड़की को हिलाया, तब घड़-घड़ाहट की आवाज नहीं थी। उसे हिलाया, और उसके हिम शीतल शरीर पर हाथ रखकर इन्दु चुपकी बैठी रह गई। सब कुछ समझ सकने के बाद भी जैसे उसने कुछ भी समझना न चाहा। मृत्यु को उसने अस्वीकार करना चाहा, चाहा उसने कल्पना को जीवन देना।

वह कमला के मृत शरीर के साथ बातें करने लगी—'भूखी लड़की! सो रही है, जरा-सी मेरी कमला, कितना धैर्य है इसमें, कितनी समझ है मेरी कमला में। भूख के मारे आंखें निकल पड़तीं हैं, तब भी कहती है—'मां, माड़ बाबू को और शंकर को पिलादो, मुझे भूख नहीं है, अगर बचे तो तुम पी लेना।

जिसके घर मेरी कमला जावेगी उसका भाग्य खुल जावेगा। भूखी लड़की सो गई है, सो बिटिया, तब तक मैं तेरे लिए कहीं से कुछ मांग लाऊं।'

धीरे-धीरे प्रकाश आकर खड़ा हो गया। मृत कन्या और उसकी माता को देखकर सिहर-सिहर कर पीछे हट गया।

शून्य दृष्टि से इन्दु ने पति को देखा, फिर फुसफुसाकर बोली—'बोलो मत, चिल्लाओ मत, भूखी कमला सो गई, उसकी नींद खुलने न पावे, भूखी है मेरी, कमला भूखी है न।'

'चली गई—कमला भी भूखी चली गई—' उन्मादित प्रकाश कहने लगा—'बच रहे हैं हम तीन, तो हम तीनों लड़की ही के साथ क्यों न सो रहें?'

इन्दुमती अवाक-विस्मय से प्रकाश का मुख देखने लगी—'तुम क्या कह रहे हो? चिल्लाओ मत, देखते नहीं मेरी कमला सो रही है।'

करुणापूर्व नेत्रों से प्रकाशने पत्नीको देखा फिर वैसे ही धीरे बाहर निकल गया।

संध्या के समय प्रकाश इन्दु के निकट जाकर लेट गया, बोला—'उसे पानी में बहा दिया, जलाता? किन्तु लकड़ी, लकड़ी के लिए पैसे कहां पाता? भूखी प्यासी थी न कमला, पानी में, नदी में वह आराम से सो रही है। अब हम तीन ही बाकी हैं।'

इन्दु चुपचाप उसका मुंह देखने लगी।

प्रकाश वहीं पर लेट गया—'मैं अब नहीं उठूंगा इन्दु, उठने की शक्ति मुझ में है नहीं।'

आतंकित भय से इन्दु ने शंकर को बाहों में समेट लिया—'यह सब क्या कर रहे हो?'

'परन्तु झूठ को खाकर खेल-खेलना कब तक चल सकेगा? वास्तविक जो है, आज या कल के भीतर होकर ही रहेगा, उसके लिए आज ही से तैयार हो लो इन्दु।'

'मेरा शंकर—'

'हां, तुम्हारा शंकर तुम्हारे ही लिए, तुम्हारे ही अकारण। नासमझ, स्नेह के अत्याचार में कल या आज तुम्हारी ही गोद में भूखा-प्यासा तड़फ-तड़फ कर मरेगा। मैं नहीं सोच सकता कि वह कैसा स्नेह है जो कि अपनी ही सन्तान की भूख की मौत को स्वीकार करे, परन्तु उस मौत को रोकने के उपाय को दूर पैरों से कुचले।'

बड़ी-बड़ी आंखें पति के मुख पर डाल कर इन्दु ने कहा—'तुम्हीं ऐसा कर रहे हो?'

'हां—मैं, शंकर का बाप और तुम्हारा पति ही इन्दु।'

'पैसों के लिए, अपने पेट भरने के लिए शंकर को मैं कैसे बेच दूं?'

'परन्तु अपनी गोद में उसे भूखा मारने का भी तुम्हें कौन-सा अधिकार है? रमा, कमला भूखी मरीं, मैं और तुम मर रहे हैं। शंकर तो आज या कल तक का मेहमान है। आज सवेरे भी यूथिका देवी ने कहला भेजा था कि शंकर को अब भी वह गोद लेना चाहती हैं, उनके अतुल धन का वह मालिक बन जावेगा और हम दोनों की आजीवन व्यवस्था वह कर देगी।'

इन्दु आर्तनाद कर उठी—'नहीं-नहीं, मां हूं मैं, राक्षसी नहीं, मेरे शंकर को, अपनी ही सन्तान को दूसरे का नहीं कर सकूंगी, उसी यूथिका राक्षसी के नजर से मेरी लड़कियां चल बसीं, शंकर जाने को बैठा है, हम दोनों मौत के दरवाजे पहुंच चुके हैं। जाओ, तुम हट जाओ मेरे सामने से, किसी दिन पेट भरने के लिए मुझ से मेरे बच्चे को छीन कर उसे दे आवोगे। शंकर—मेरा शंकर।'

शंकर ने क्षुधा खिन्न स्वर से पुकारा—'मां, भूख रोटी तो, दो-दो जल्दी दो।' और फिर वह सुधिहीन-सा हो गया।'

सहसा इन्दु चुप हो गई, दुनिया जैसे एक पहेली बन गई पलभर में उसके सामने। आत्मा उसकी विकल होने लगी—भूखा है, उसका शंकर भूखा है। और मां उस भूखे की मौत देख रही है, आज कहीं से भी कुछ नहीं मिल सका।

प्रकाश का तब कदाचित अन्तिम श्वास निकलने को था और शंकर का स्पन्दनहीन शरीर इन्दुके सामने पड़ा था। इन्दु? नहीं, दो दिन से वह उठ ही नहीं सकी, फिर कुछ मांगकर लाती भी कैसे?

देर से इन्दु उठने की चेष्टा कर रही थी। जब वह सफल हुई तब सर्व प्रथम उसने अपना हाथ शंकर के हृदय पर रखा और तब क्षीण आशा से उसके निराश प्रायः नेत्र उद्दीप्त हो उठे, फिर जमीन पर घिसकती हुई प्रकाश के निकट पहुंची, नाक पर हाथ रखा, श्वास नहीं था, वह सिहर उठी, नाड़ी पर हाथ रखा, बहुत ही धीरे रुक-रुक कर नाड़ी चल रही थी। स्थिर-धीर नेत्रों से उसने पुनः पति पुत्र को देखा, फिर वैसे ही घिसकती हुई दालान पर पहुंची। अट्टालिकाकी ओर आंखें उठाईं, यूथिका खड़ी थी, इन्दु ने कुछ कहना चाहा किन्तु आवाज उसकी तब मर चुकी थी। उसने से यूथिका को बुलाया।

यूथीका पहुंची—दास-दासियों बुलाया था?'

'मेरे शंकर को तुम ले जाओ शायद अब भी वह जी जावे। शंकर के पिता के लिए.....'

'हां, अभी मैं तुम दोनोंके लिए प्रबन्ध किए देती हूं। कहां है

शंकर को लेकर यूथिका चली प्रस्तर मूर्तिवत् इन्दु पड़ी-पड़ी देखती विस्मय तो यह है कि उसने अपने हाथों से बच्चे को उठाकर यूथीका दे दिया। बिना किसी प्रकार की अ प्रकट किये। फिर उसके बाद यू का भेजा हुआ दूध चम्मच से प्रका मुंह में डालने लगी।

(४)

दुनियां हंसती, दुनिया बोलती भूखा बंगाल का दुर्दिन कट जाता, गये हुये न लौटते। दुर्भिक्ष, दुर्दिन जाता, परन्तु तप्त स्मृति एक रख बंगाल के प्राङ्गण में, माताओं के मन

दिन आता और निकल जाता। मान के पथ पर चलता हुआ संसार चित अतीत के दुर्दिन को भूल जाता, विश्व के कोलाहल में मस्त हो रहता।

यूथिका के प्रासादतुल्य गृह के में सुन्दर, सुसज्जित अट्टालिका, दास-दासी, गाड़ी-मोटर, प्रकाश वह प्रकाश नहीं, परन्तु आज का घनश्य प्रकाश कार पर से उतरा। घर में प्रवे कर सर्वप्रथम पलने के पास गया, प पर कुन्द कलिसा सुन्दर बालक हाथ हिलाकर खेल रहा था। मुग्ध नेत्रों खड़ा-खड़ा प्रकाश जाने कबतक बच्चे देखता रहा, फिर इन्दु को खोजता हुआ उस कमरे में पहुंचा, जहां खिड़की खड़ी इन्दु पलकहीन नेत्रों से बाहर देख रही थी।

प्रकाश ने झांक कर देखा। प्रासादतुल्य अट्टालिका के सामने उद्यान में एक नौ दस वर्ष का बालक भृत्य का हाथ पकड़े टहल रहा था तब पहुंची यूथिका चांदी के कटोरे गरम दूध लेकर।

दूर ही से उस नारीको देखकर लड़का मां-मां कहता हुआ उससे लिपट गया।

प्रकाश ने पहचाना—हां, यही है उस दिन का और उसी का शंकर।

दर्द भरी आह से पुकारा उसने पत्नी को—'इन्दु'।

इन्दु लौटी, उस रिक्त, सर्वस्वहा मुख को देख कर प्रकाश सिहर उठा 'मधु रो रहा है, चलो?'

इन्दु चुपचाप चल पड़ी, बच्चे को पालने परसे उठाकर दूध पिलाया फिर सुला दिया।

प्रकाश ने परिहास कर कहा—'जैसे तुम्हारी सौत का लड़का हो। बेचारा लड़का कभी इसे प्यार करते मैंने नहीं देखा।'

इन्दु ने रक्तशून्य मुख उठाया—'प्यार परन्तु प्यार तो मेरा चुक गया है न, मैं मधु के लिए कहां से लाऊं प्यार!

Haridwar. Digitized by eGangotri

मिर्गी का २४ घण्टों में खात्मा। तिब्बत के सन्यासियों के हृदय का गुप्त भेद, हिमालय पर्वत की ऊंची चोटियों पर उत्पन्न होने वाली जड़ी बूटियों का चमत्कार, मिर्गी हिस्टीरिया और पागलपन के दर्पनीय रोगियों के लिये अमृत दायक। मूल्य १०॥) रुपये डाकखर्च पृथक।
पता—एच. एम. आर. रजिस्टर्ड मिर्गी का हस्पताल हरिद्वार।

गुदड़ी में लाल

पुराने ख्यालात के लोग इश्तहार देना पाप ख्याल करते हैं इसलिये उनके सोने से भी जनता कोई लाभ नहीं उठा सकती। हमारे हकीम साहब की खानदानी सैकड़ों बरस से सीना व सीना चली आने वाली बिजली की तरह काम करने वाली औषधियां केवल थोड़े से लोगों को लाभ पहुंचाया करती थीं। हमने मुद्दतों मजबूर करके इनसे इश्तहार देने की आज्ञा इस शर्त पर कि किसी औषधि की तारीफ न की जाय प्राप्त की है ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग लाभ उठा सकें। इस फिजूल इश्तहारी तारीफों को छोड़ कर पाठकों को सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित औषधियों को आजमा कर चमत्कार देखें। हर दवाई के साथ यह गारंटी है कि यदि लाभ न हो तो हलफिया लिख कर मूल्य वापस मंगालें और यह जड़ी बूटिया काफी मेहनत लागत से पर्वतों से लाई जाती हैं और केवल लागत पर बांटी जाती हैं। अब जिस रोग के लिये दरकार हो मंगालें।

नं० १ **मरदाना व जनाना** कमजोरी, स्वप्नदोष व प्रमेह के लिये ४० खुराक। कीमत ५॥)

नं० २ शीघ्रपतन के लिए १२ पुड़िया कीमत ५॥) तथा १ पुड़िया ॥)

नं० ३ तिला (तैल) अजीब कायाकल्पकारी शक्ति वाला कीमत ६॥)

नं० ४ पायोरिया—दांतों से खून व पीप का आना, हिलना आदि मुकम्मिल व अचूक इलाज कीमत २॥)

नं० ५ सफेद कोढ़ (फुलबहरी) की अद्भुत (अजीब) बूटी। मामूली दागों के लिये ५) रु० ज्यादा के लिये ४०) रु०तथा कुल जिस्म के लिये ११०) रु० कीमत है।

नं० ६ संग्रहणी ((पेचिस) नई व पुरानी की अचूक दवा कीमत ४॥)

नं० ७ औरतों के ऋतु की बहती नदी को एक दम रोकने की दवा कीमत ४॥)

नं० ८ बन्द ऋतु—दो मिनट में खोलना कीमत ५।)

नं० ९ वर्थ कन्ट्रोल (सन्तान होना बन्द करना) कीमत ४॥)

नं० १० ऋतु का सख्त दर्द दवाई देते ही गायब और फिर उमर भर न हो। कीमत ३॥)

नं० ११ दर्द गुर्दा फौरन ठीक करके जड़ से उखेड़ने वाली औषधि कीमत ४।)

नं० १२ पथरी को निकाल कर मसाना व गुर्दा को साफ करने वाली औषधि। कीमत ३॥)

नं० १३ प्रदर (सफेद पानी) की दवा। कीमत २॥)

नं० १४ आतशक व उसका गठिया ७ दिन में गायब। नई हो या पुरानी। कीमत ३॥)

नं० १५ सुजाक पहली खुराक में ही आराम और सात रोज में जड़ से खतम। कीमत ३॥)

व्यापार चलाइये या घर में काम लाइये

(जर्मन से आये माहिर की ईजादें)

नं० १—दूध, रबड़ी, खोवा, खीर, पेड़े, कलाकन्द आदि को मुद्दत तक खराब न होने देने वाला मसाला। कीमत १)

सस्ता दूधदूरदूर और रबड़ी भेजिये या वहां से मंगा कर लाभ उठाइये।

नं० २—बनी हुई दाल, अचार, तरकारी, गोश्त, सालन, आटा, मिठाई, चटनी, हलवा, दही आदि को खट्टा या खराब होने से बचाने वाला मसाला होटलों हलवाइयों व घरों, विवाह शादियों व दावतों के लिये नायाब मसाला। कीमत १॥)

नं० ३—शर्बतों फलों के रस, मुरब्बे वगैरह को सालों खराब न होने देने वाला मसाला। कीमत २)।

हर दवाई व मसाले वगैरह का महसूल डाक व पैकिंग बजिम्मे खरीदार होगा। जवाब मंगाना हो तो जवाबी कार्ड लिफाफा या टिकिट भेजिये। माल ताजा व असली होने की गारंटी है।

सोल एजेन्ट — बराये हिन्दुस्तान—
दी प्रीमियर ट्रेडिंग कं०, चावड़ी बाजार, देहली।
The Premier Trading Co. Chawari Bazar Delhi.

मर्द के पेशाब के बाद

सफेद बूँद

यदि किसी पुरुष को पेशाब करने के पहले या पेशाब करने के बाद सफेद रंगका पानी आता हो तो यह बहुत भयंकर बात है। इसे प्रमेह का रोग कहते हैं। धीरे-धीरे यह रोग बढ़ जाता है तो आदमी पौरुषहीन हो जाता है। उसकी शक्ति समाप्त हो जाती है। इस वास्ते जिन पुरुषों को यह शिकायत हो या स्वप्नदोष होता हो तो इस भयंकर रोग से लापरवाही नहीं करनी चाहिये।

प्रमेह का रोग केवल ७ दिन में नष्ट हो जाता है

और केवल ३॥) खर्च होंगे। "जौहरे आजम" इस रोग के लिये अक्सीर प्रमाणित होती है। केवल एक शीशी दवा "जौहरे आजम" से बड़े बड़े पुराने रोगी स्वस्थ हो गए। "जौहरे आजम" प्रमेह के रोग का सबसे अच्छा इलाज है। जिन लोगों को आवश्यकता हो—

मैनेजर, जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४ दिल्ली

के पते पर पत्र लिखकर "जौहरे आजम" की एक शीशी वी० पी० द्वारा मंगा लें। एक शीशी का मूल्य ३॥) तीन रुपया आठ आना है पार्सल का खर्च ॥-) लगेगा।

[टेलीफोन नं० ६२६८]

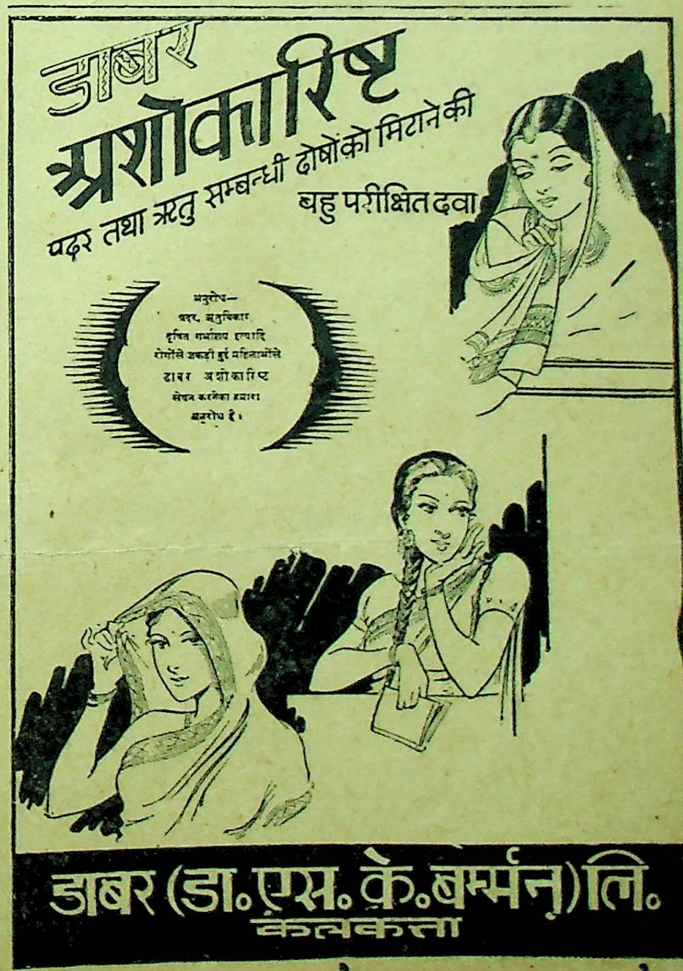

नया स्टाक आ गया है

हमें अपने माननीय ग्राहकों को सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष होता है कि सुई फन-सी (तरल) का सीमित स्टाक हांगकांग (चीन) से अभी आया है और अन्य कई दवाइयों का स्टाक भी शीघ्र आने वाला है।

अब सुई-फन-सी हमारे सभी आफिसों और हमारे स्टाकिस्टों से १२) बोतल (डाक व्यय अलग) मिल सकेगी।

हमारे अपने सभी ग्राहकों से निम्न निवेदन है कि वह आवश्यकता से अधिक आर्डर न दें ताकि हम चारों ओर की मांग को पूरी करने में समर्थ हो सकें।

चाइनीज मेडीकल स्टोर स्थापित १९३०

नया बाजार, [बर्न वेस्टियन रोड़] देहली।

हेड आफिस— २८ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट — बम्बई

ब्रांचें— चार रास्ता, अहमदाबाद, १२ डलहोजी स्कावायर, कलकत्ता।

डी० पी० आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी दवाखाना मोरेना।

★ उदय ★

एकमात्र वाणिज्य प्रधान

व्यापारियों के लिए

उपयोगी और अनिवार्य

पुस्तकालयों के लिये ५) रु०

वार्षिक ७) नमूने के लिए ॥।)

'उदय' मासिक

नया कटरा, चांदनी चौक,

दिल्ली।

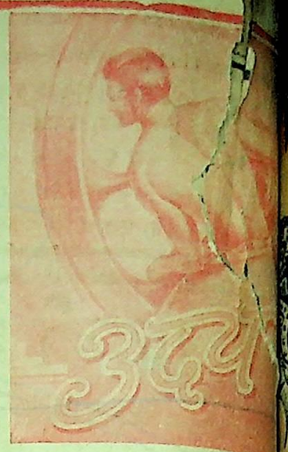

१९४४ के परिणाम

हिन्दुस्थान

ने सफ़लता की एक और मंज़िल पूर्ण की

❀ उन्नति पर प्रकाश ❀

चालू बीमा	३२ करोड़ से ऊपर
कुल पूंजी	६ करोड़ ८९ लाख से ऊपर
प्रीमियम की आय	१ करोड़ ५० लाख से ऊपर
दावे का भुगतान (१९४४)	३७ लाख ८० हजार से ऊपर
नया कारोबार (१९४४)	१० करोड़ रुपये से ऊपर

हिन्दुस्थान को-ओपरेटिव इन्श्योरैंस सोसायटी लि०

हेड आफिस—हिन्दुस्थान बिल्डिंग्स, कलकत्ता।

देहली. ब्रांच—हिन्दुस्थान बिल्डिंग्स, न्यू देहली।

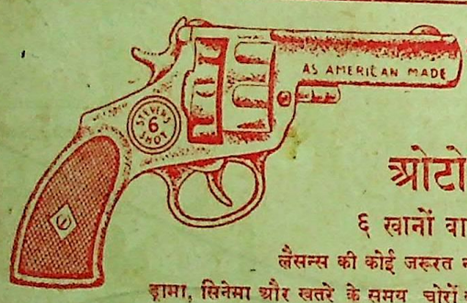

आत्मरक्षा

ओटोमेटिक

६ खानों वाली पिस्तौल

लैसन्स की कोई जरूरत नहीं

ड्रामा, सिनेमा और खतरे के समय चोरों को डराने के लिये बड़े काम की है। दागने पर पिस्तौल के मुंह से आग और धुंआ निकलता है। असली रिवाल्वर की तरह मालूम होती हैं। साइज ७॥ इंच×४ इंच और वजन १५ औंस। मूल्य ८) और साथ में १ दर्जन गोलियां (एलार्म डिस्क) मुफ्त। अतिरिक्त १ दर्जन गोलियों का दाम २)। स्पेशल तांबे की बनी ६६६ नं० की पिस्तौल का दाम १०)। वेस्ट के साथ केस २॥), पोस्टेज और पैकिंग का अतिरिक्त १=)। प्रत्येक आर्डर के साथ १ शीशी रिवाल्वर का तेल मुफ्त।

नापसंद होने पर दाम वापस

इम्पीरियल चैम्बर आफ साइंस (V. W. D.) पो० बा० ६१ लाहौर

Imperial Chamber af Science (V.W.D.) P.B.61. LAHORE

विजया दशमी के उपलक्ष्य में:—

१२००)रु० मनोरंजन पहेली नं० ३५ में अवश्य जीतिये

६००) सर्वशुद्ध पूर्तियों पर, ५००) न्यूनतम अशुद्धियों पर, विशेष इनाम-१००) किसी महिला व विद्यार्थी के सर्वशुद्ध हल पर दिया जायेगा।

पूर्तियां भेजने की अन्तिम तारीख २६-१०-१९४६ ई०

१ हा	२ जी	★	३		धि
	ा	★		★	★
★	म	५ ी	ना	★	६
७ ा	★	वा	★	८ ग	ढ़
९	१० की		★	११	ना
१२ त		★	१३ ा	ला	★

संकेत बायें से दायें—१. [illegible] मुसलमान जो हज कर आया हो, ३. समुद्र, ४. अरब का एक शहर, ८. किला, ९. इसमें आश्चर्य नहीं कि कोई-कोई यह अपने हुनर में बहुत चट होते हैं, ११. 'नाम' उलटा है, १२. गीला, १३. एक नाता।

ऊपर से नीचे को—१. [illegible] मनुष्य के मस्तिष्क पर इसका ज्यादा असर पहुंचता है तो वह प्रायः पागल-सा हो जाता है, २. 'मजीरा' में गड़बड़ है, ३. बीज का अच्छी तरह '—' भूमि पर भी निर्भर है, ५. ईंट, पत्थर, मिट्टी आदि से बनाई जाती है ६. [illegible] में नदी का अधिक '—' देखकर निकट वासी प्रायः घबराने लगते हैं, ७. पेटार्थ मनुष्य बहुधा दूसरों के यहां के इसकी ताक में ही रहा करते हैं, ८. मिट्टी का एक बर्तन जिसमें छोटे पेड़ लगाये जाते हैं, १०. तोता।

नियमावली—एक नाम से एक पूर्ति की प्रवेश फीस १), दो तीन पूर्ति की १॥) फिर हर पूर्ति ।=) है, जो मनी आर्डर या इण्डियन पोस्टल आर्डर (बिना क्रास) द्वारा भेजी जा सकती है। जारी म० आ० रसीद पूर्तियों के साथ अवश्य भेजें। पूर्ति सादे कागज पर जितनी चाहें भेजें। सील बन्द उत्तर से मिलान करने के लिये भेजी जाने वाली पूर्तियों की नकल अपने पास भी रख लें, पूर्तियों और म०आ० के नीचे कूपन हिन्दी में अपना पूरा पूरा पता अवश्य लिखें। नतीजा व सील बन्द उत्तर ता० ११ व १८ नवम्बर को साप्ताहिक वीर अर्जुन में छपेगा।

मनोरंजन पहेली नं० ३४ का सील बन्द उत्तर एवं नतीजा

बायें से दायें—१. सवाब, ३. कुज, ५. भोजनखाना, ८. जग, १०. छाया, ११. वर।

ऊपर से नीचे—१. सहभोज २. बयान, ४. जन, ६. जगत, ७. खाल, ९. बयार।

सर्वशुद्ध ७ व्यक्ति प्रत्येक को ८५॥

१ अशुद्धि १९ ,, ,,

२ ,, ३१ ,, ,,

३ ,, ६० ,, ,,

विशेष इनाम—१००) रु० [illegible] आर० के० वाशिष्ठ विद्यार्थी बरेली [illegible] सर्वशुद्ध हल पर दिया गया। विजेताओं को सब पुरस्कार १४ अक्टूबर को [illegible] दिये जावेंगे। हम व्यय की अधिकता के कारण विजेताओं की नामावली प्रकाशित करने में असमर्थ हैं।

जनरल मैनेजर

पूर्तियां एवं फीस भेजने का पता—

मैनेजर, मनोरंजन पहेली कार्यालय,

राहतगढ़ (सागर) सी० पी०।

श्री पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिये 'अर्जुन प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली से छाप कर प्रकाशित किया

वीर अर्जुन साप्ताहिक

ILLUSTRATED VIR ARJUN WEEKLY

१२] दिल्ली, सोमवार २८ आश्विन सम्वत् २००३, DELHI, 14th October 1946. [अङ्क ३१]

स्व० प्रेमचन्द

हिन्दी संसार ने आपकी पुण्य-तिथि ७ अक्टूबर को मनाई।

युवक-गीत

[सुरेशकुमार 'सुमन']

युवको, बढ़ो, बढ़ो !
लहरें मारें उत्साह,
हो कुछ करने की चाह,
उन्नति के दुष्प्राप्य शिखर पर युवको, चढ़ो, चढ़ो !
हो तनिक न मन में भीत,
गाओ विप्लव के गीत,
मधुर मंत्र मुख पर उमङ्ग का युवको, पढ़ो, पढ़ो !
अब सत्ता जाए डोल,
परिवर्तित हो भूगोल,
खोए स्वत्वों को फिर पाने युवको, अड़ो, अड़ो !
दिशि-दिशि में भर दो रोर,
जोड़ो नभ-भू के छोर,
धो युग युग की निष्ठुर कालिख युवको, कढ़ो, कढ़ो !
निष्क्रिय-सा बदलो काल,
दो रुद्र थिरकती ताल,
संचित बल से महारास में युवको, गड़ो, गड़ो !
हो दलितों के आधार,
उन्माद करो संचार,
इस अभाव के भूमण्डल में युवको, लड़ो, लड़ो !
तुम रचो समर्थ समाज,
रख लो जननी की लाज,
आहुतियां दे बलिवेदी पर युवको, पड़ो, पड़ो !

वार्षिक मूल्य ८) छः मास का ४) सम्पादक— रामगोपाल विद्यालङ्कार कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार एक प्रति का मूल्य ≈)

क० लक्ष्मी व क० सहगल

विवाह उचित या अनुचित ?

दूसरा पहलू

★

प्रचलित रीति चाहे कुछ भी हो, परन्तु दूरदर्शिता एवं न्याय इस बात का अनुरोध करते हैं कि विवाह के विषय में कोरी भावुकता से बचना चाहिये। विवाह बहुत सोच समझ कर करना चाहिये। विवाह को गुड़िया का खेल नहीं बना देना चाहिये और न ही लड़की को गौ के समान मूक समझ कर लड़के के हाथ में उसका जीवन सौंप देना चाहिये। माता-पिताकी मधुर इच्छा ही लड़के और लड़की को, चाहे वे एक दूसरे से कितने ही अपरिचित क्यों न हों, एवं उनके स्वभाव एवं योग्यता में आकाश पाताल का अन्तर ही क्यों न हो, आयु-भर के लिये एक दूसरे के साथी बनकर रहने को क्यों बाध्य करें ? इस में तथाकथित 'लोक लाज' भले ही रह जाय, नाक कटने से भले ही बच जाय, परन्तु जबरदस्ती का विवाह कभी सफल नहीं हो सकता उससे आदर्श गृहस्थ की आशा भी नहीं की जा सकती ?

कर्नल लक्ष्मी और कर्नल सहगल को कौन नहीं जानता ? दोनों 'आजाद हिंद फौज' के प्रतिष्ठित अधिकारी थे। वे दोनों वर्षों तक साथ रहे। साथ काम किया। इस बीच में दोनों एक दूसरे के स्वभाव एव योग्यता से भली भांति परिचित हो गये। दोनों का दृष्टिकोण एक होने के कारण दोनों एक दूसरे के निकट आते गये। अब यदि दोनों का प्रेम इस सीमा तक पहुंच गया है कि वे एक दूसरे के जीवन साथी बन जाने में ही अपना कर्तव्य समझते हैं तो किसी को इसमें आपत्ति नहीं होनी चाहिये परन्तु एक नैतिक कठिनाई बीच में आ पड़ी है।

कहा जाता है कि कर्नल सहगल की सगाई युद्ध से पूर्व ही जालधर के एक व्यवसायी की कन्या से हो चुकी थी। अब वह कन्या यह कहती है कि वह शादी करेगी तो प्रेमकुमार सहगल से ही करेगी अन्यथा चिर-कुमारी रहेगी।

मेरे विचार में उस जालंधरवाली लड़की की यह धारणा कुछ ठीक नहीं। जालंधर वाली लड़की की अपेक्षा, कर्नल सहगल कर्नल लक्ष्मी को अधिक निकट से जानते हैं। इसीलिये वे शादी करने पर सहमत हो गये हैं। परन्तु लड़की का इस प्रकार का प्रण ठान लेना अच्छा नहीं। यह तो प्रत्यक्ष है कि प्रेमकुमार सहगल और जालंधरवाली लड़की की सगाई उन दोनों की सहमति की अपेक्षा उनके माता पिता की सहमति का ही परिणाम है। सम्भव है दोनों ने एक दूसरे को देख भी लिया हो। परन्तु उस क्षणिक दर्शन की अपेक्षा सहगल और लक्ष्मी का इतना निकट सम्पर्क निश्चित रूप से अधिक महत्वपूर्ण है। जब कर्नल सहगल ने अपने पत्र में स्पष्ट रूप से लिख दिया है कि वह (जालधरवाले सज्जन) अपनी लड़की का विवाह अन्यत्र कर दें, तो इस में हठ करना उस लड़की के लिये सर्वथा, अनुचित है। उसे चाहिये कि वह प्रसन्नतापूर्वक दोनों 'कर्नलों' को विवाह सूत्र में बंध जाने दे और अपने चिरकुमारी रहने की भावुकतापूर्ण धारणा को बदल दे। इसी में ही तीन प्राणियों का कल्याण है।

—कैलाश

कुछ बातें पति से भी गुप्त रखें

कतिपय लोगों का कहना है कि पत्नी पति की अर्द्धांङ्गिनी है, इसलिये दोनों को कोई बात एक दूसरे से गुप्त नहीं रखनी चाहिये। परन्तु हमारा विश्वास और अनुभव बिल्कुल दूसरी ओर ही संकेत करता है। एक पत्नी के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि वह अपने रूप, सौंदर्य और यौवन को अधिक से अधिक काल तक सुरक्षित रखे। कुछ पुरुष भले ही अपनी पत्नी की आत्मा से प्रेम करते हों और उन्हें शारीरिक और अन्य बाह्य सौंदर्य से कोई सम्पर्क न हो परन्तु पत्नियों को यह बात याद रखनी चाहिये कि पति रूपी भ्रमर को मुग्ध रखने के लिये नित नये ढग से शृंगार करने की आवश्यकता है, हम तो यहां तक कहेंगे कि पत्नी को चाहिये कि वह आजन्म एक रहस्यपूर्ण सुन्दरी बनी रहे। केश-कलाप तो विशेषरूप से स्त्रियों को रहस्यमयी बना सकता है। इसी प्रकार वस्त्र और आभूषणों के चुनाव में नवीनता और आधुनिकता का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिये। इतना ही नहीं यदि वे कृत्रिमसौंदर्य प्रसाधनोंका प्रयोग करें तो यह पवमावस्क है कि वे अपने निजी कमरे में एकान्त करें हम साधारण पुरुष के नाते कह सकते हैं कि हमें गालों और ओठों का स्वाभाविक सौंदर्य जितना आकर्षित करता है उतना रूप और लिपस्टिकयुक्त चेहरा नहीं। वह तो एक चलता फिरता लेटरबक्स ही प्रतीत होती है। इसी प्रकार जब स्त्रियों की अवस्था ढलने लगे और किन्हीं कारणों से उन्हें नकली दांत लगाना पड़े या बालों को खिजाब से रंगना पड़े तो यह काम भी पति की नजरों से दूर एकान्त में ही करना चाहिये। पति के हृदय को सदा एक शीशे का गिलास समझना चाहिये जो जरा सा धक्का लगने से टूट सकता है—और पत्नी की कुरुपता अथवा असुन्दरता, अधेड़पन या बुढ़ापा सब उस हृदय को आघात अधिक पहुंचाया करते हैं।

जब कोई पत्नी किसी रोग से पीड़ित हो तो उसे अपने रोग की व्याख्या पति के सामने न करके केवल सुयोग्य डाक्टर के सामने करनी चाहिये। यदि पति को यह विश्वास हो जाये कि पत्नी ऐसे रोग से ग्रस्त है जो उसके दाम्पत्य जीवन के आनन्द को कम कर सकता है तो वह पत्नी के इलाज की व्यवस्था तो कर देगा परन्तु अपनी पत्नी से प्रेम भी कम करना आरम्भ कर देगा। परन्तु इन उपायों का प्रयोग पति की प्रगति देख कर ही करना चाहिये। कुछ पति अपनी पत्नी के मामलों में विशेष दिलचस्पी नहीं रखते। या तो पत्नी के पास अपना ही पर्याप्त रुपया रहता है या पति ने उसे ब्लैंक चैक दे रखा है ऐसी हालतों में पति को कुछ बतलाने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु कुछ पति शक्की स्वभाव के होते हैं। वह कभी पत्नी को पर्याप्त रुपये देते तो हैं नहीं इसलिये पत्नी को जब रुपये की आवश्यकता पड़ती है तो उसे पूरी बात समझानी पड़ती है तब कहीं रुपये मिलते हैं। ऐसी अवस्था में अपनी आवश्यकता कम से कम शब्दों में व्यक्त करनी चाहिये और कुछ अंश गुप्त रखने का ही प्रयत्न होना चाहिये।

—युगलकिशोर गुप्त,

'क्या आप पुरुष होना पसंद करेंगे'

★

२५ बनाम ३३

यदि आपसे कोई पूछे कि आप अपने पुर्नजन्म में क्या होना चाहेंगी—पुरुष या नारी—तो आप क्या उत्तर देंगी ? अमरीका में जहां कि स्त्रियां इतनी उन्नित कर चुकी हैं और जहां कि नारियां वास्तविक रूप से हर क्षेत्र में पुरुषों से मुकाबला करने का दम भरती हैं वहां 'फारचून' नामक एक मैगजीन ने यही प्रश्न अपने पाठकों से पूछा और उसके नतीजे से यह जाहिर हुआ कि २५ प्रतिशत स्त्रियां अमरीका में यही चाहती हैं कि वे अपने दूसरे जन्म में पुरुष योनि प्राप्त कर सकें लेकिन पुरुषों की संख्या जो खुशी से पायजामा और कमीज की जगह पेटीकोट और ब्लाउज पहनना पसंद करेंगे मुश्किल से ३३ प्रतिशत निकली।

लेकिन मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि भारतवर्ष में यही प्रश्न उठाया जाय तो मुश्किल से कोई ऐसी महिला निकलेगी जो धोती और कुरता पहनने के सुख के लिये अपनी साड़ी और सलवार परित्याग कर सके। वे भले ही की क्रूरता, निर्दयता और कठोरता दुहाई भरती हों, वे भले ही घर के काज से तंग आकर उसको न करने आंदोलन करती हों, वे भले ही मनुष्य बराबर अधिकार मांगने का बीड़ा हों, लेकिन वे अपनी बुद्धिमता श्रेष्टता से इतनी पूर्णरूप से परिचि कि अपने दूसरे जन्म में भी पुरुष अपेक्षा खच्चर होना अधिक करेंगी। हर एक समझदार और स्त्री — प्रायः सभी स्त्रियां समझ और पूर्णरूप से विद्वान होती है, सोचती हैं कि 'पुरुष प्रायः मूर्ख हु करते हैं। किसी भी स्त्री से आप पू वह यही कहेगी कि उसका पति खाने-पीने पहनने-ओढ़ने और यहां कि हर एक चीज में जरूरत से ज्या पैसा खर्च करता है। स्त्रियां सदैव उलाहना करती हुई पाई जायेंगी कि देव झट वही दाम दे देते हैं जि उनसे कोई मांगता है। भाव चुक तो उन्हें आता ही नही। समझ उनमें छू भर नहीं गई है। भले ही दफ्तर में बड़े योग्य गिने जाते हों, ले घर में तो अजीब बुद्धू रहते हैं। कभी तो और रात में देर से घर आने पर कोई बहाना भी रचेंगे तो अजीब सा जो जरा भी किसी को न जचे। से सवाल जवाब में बोल जाते हैं और घिग्घी सी बंध जाती है। भला ऐसे पुरुष योनि कोई लेकर क्या करे ? और फिर भारतीय स्त्रियां जो कहीं ज्याद विद्वान, मितव्ययी और कहानी और झूठ गढ़ने में इतनी बढ़ी-बढ़ी है भला पुरुष का ऐसा निकृष्ट जीवन पसंद कर सकती हैं ? कदापि नहीं !

बाइरन ने भी कहा है कि स्त्रिय पुरुष की अपेक्षा कहीं ज्यादा उच्च होती हैं। ईश्वर करे इन स्त्रियों की दिन दुगी और रात चौगुनी उन्नति हो !

बेचारा पुरुष अपनी वर्तमान स्थिति में ही खुश रहने की चेष्टा करेगा।

— रामकुमार अग्रवाल

अमेरिका में ५ लाख तलाक

हाल में ही प्रकाशित आंकड़ों से पता चलता है कि अमेरिका में होने वाले तीन विवाहों में से एकाकी विच्छेद हो जाता है। गत वर्ष प्रायः ६ लाख, २० हजार विवाह हुए थे और १९४५ में ५ हजार से अधिक तलाक दिये गये। १९३९ से तलाकों की संख्या बराबर बढ़ती जा रही है। हालीवुड फिल्म केन्द्र के आस-पास तलाकों की संख्या सब से अधिक रही है।

Digitized by eGangotri

समाचार-चित्रावली-

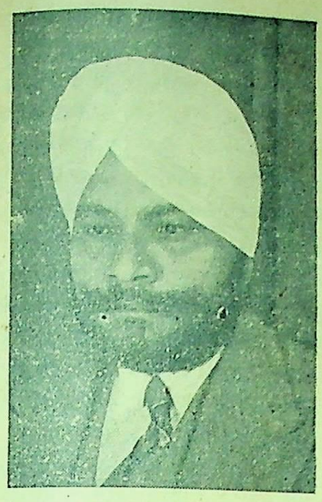

भारत के रक्षामंत्री सरदार बलदेवसिंह ने भारत की सेनाओं के पूर्ण भारतीय-करण की घोषणा की है।

श्री शाहनवाज की हत्या के प्रयत्न के संदेह में दो आदमी गिरफ्तार किये गये हैं।

श्री देशबन्धु गुप्त केन्द्रीय असेम्बली के निर्विरोध सदस्य चुन लिये गये।

श्री राममनोहर लोहिया गोआ में दूसरी वार गिरफ्तार होकर फिर रिहा हो गये हैं।

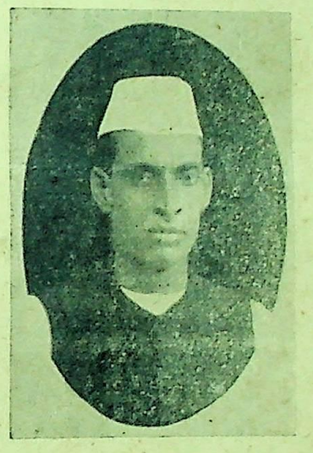

मेवाड़के सम्मानित नेता श्री माणिक्-लाल वर्मा ने मेवाड़ में शीघ्र ही अन्तःकालीन सरकार स्थापित करने की सलाह दी है।

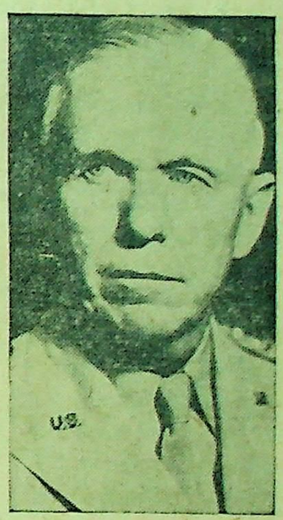

श्री जार्ज मार्शल के चीन के दोनों दलों में समझौता कराने के सब प्रयत्न असफल हो गये हैं।

मेरठ में बना हुआ गवर्नरहोम आज कांग्रेस की स्वागतसमिति का कार्यालय बन गया है।

स्वागत-समिति के सदस्य बनाने के लिए जनता को पोस्टरों द्वारा निमंत्रण।

लोकवाणी

अंग्रेजी सेनाएं हटाओ

ब्लैकपूल में ब्रिटिश कंजरवेटिव पार्टी की कान्फ्रेन्स में दिये गये कतिपय भाषणों से इस बात का पता चलता है कि पार्टी के कुछ प्रमुख सदस्य भारत की अन्तःकालीन सरकार के प्रति शत्रुतापूर्ण रुख रखते हैं। ये भाषण अनुत्तरदायित्वपूर्ण एवं दुर्भावनापूर्ण हैं तथा वे भारत में कलह उत्पन्न करने, एकता के मार्ग में बाधा उपस्थित करने और स्थायी एवं दृढ़ सरकार की स्थापना को रोकने के विचार से किये गये हैं। एक आरोप यह लगाया गया है कि मैं भारत से ब्रिटिश सेनाओं के हटाये जाने के सम्बन्ध में मौन हूं तथा हम लोग उनका उपयोग साम्प्रदायिक उपद्रवों के दमन के लिए करना चाहते हैं। ब्लैकपूल में दिये गये भाषणों में लगाये गये आरोपों के समान ही यह आरोप भी पूर्णतया मिथ्या है। हम ब्रिटिश सेनाओं का उपयोग आन्तरिक दंगों के दमन के लिए नहीं करना चाहते।

पद-ग्रहण करने से पूर्व और अब भी हमारी नीति यही है कि ब्रिटिश सेनाएं भारत से अविलम्ब हटा ली जायं अथवा उन्हें यथासम्भव अधिक से अधिक शीघ्रता के साथ भारत से हटाया जाय। हम नहीं चाहते कि ब्रिटिश सेनाएं भारतीय भूमि पर एक दिन के लिए भी रुकें। यह हमारे लिए अनुचित है और उनके लिए भी यहां रहना अनुचित है। मैं ब्रिटिश टोरी पार्टी के नेताओं को निमन्त्रित करता हूं कि वे इन मांगों के सम्बन्ध में हमारा समर्थन करें और उनकी अविलम्ब पूर्ति में हमारी सहायता करें।

यद्यपि हमने ब्रिटेन के साथ सहयोग करने की इच्छा प्रदर्शित की है तथापि मैं अपनी ओर से तथा भारत सरकार के अपने साथी सदस्यों की ओर से यह पूर्णतया स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि उन लोगों के साथ कतई सहयोग नहीं किया जायगा जो हमारे प्रति शत्रुतापूर्ण रुख रखते हैं अथवा जो भारत की स्वाधीनता के साथ खिलवाड़ करते हैं।

— जवाहरलाल नेहरू

× × ×

जिन्ना—अंग्रेजों के हथियार !

यदि मैं मि० जिन्ना होता तो इतने अपमान के बाद वायसराय से भेंट करने न जाता। वायसराय ने उन्हें बुलाया और दिल्ली में वार्तालाप आरम्भ हो गया है। यहां तक कि नवाब भोपाल पंच बनकर निकल आये हैं। हिन्दू जवाहरलाल और मुसलमान जिन्ना ने एक ही मेज पर खाना खाया, यह सब किस लिये? यदि वायसराय मि० जिन्ना के मित्र होते तो वह उन्हें पाकिस्तान दे देते अथवा उन्हें केन्द्र में लीग की सरकार स्थापित कर देते परन्तु मैं तो इन सब बातों को एक और ही महत्व देता हूं। मैं समझता हूं कि वायसराय ने मि० जिन्ना को अपने एक विशेष प्रयोजन के लिये बुलाया है। वायसराय को नेहरू सरकार का तजरुबा अच्छा नहीं लगा। लार्ड वेवल समझ रहे हैं कि उनके डिक्टेटरी के अधिकार क्षीण हो रहे हैं। इसलिए वह चाहते हैं कि वर्तमान सरकार जो भली-भांति चल रही है, प्रतिदिन के झगड़ों का अखाड़ा बन जाये।

यह प्रकट है कि जो नेता आप को धार्मिक युद्ध का सन्देश देते हैं, अंग्रेजों को अब भी अपना मित्र समझते हैं, इन लोगों ने इसलाम के नाम पर निर्दोष मुसलमानों को बहुत भड़काया है। जब मालाकण्ड ऐजंसी और वजीरस्तान के दूसरे भागों में धार्मिक युद्ध हो रहा था तो यह लोग कहां थे। वजीरस्तान पर बमवर्षा के विरुद्ध इन्होंने क्या किया था? मैंने ही सब से पहले इसके विरोध में आवाज उठाई क्यों कि मैं कबाइलियों को अपना भाई समझता हूं। मैं आप को ठीक-ठीक हालत बताने के लिये आया हूं। मैं इसलिये आया कि आपको लाल कमीज आन्दोलन में सम्मिलित करूं। यदि आप लोग मुस्लिमलीग में सम्मिलित होना अच्छा समझें तो मैं आपको ऐसा करने से नहीं रोकूंगा। मैं केवल यह चाहता हूं कि पठानों को फूलते-फलते देखूं। इस महान कार्य में मैं अपने जीवन का बलिदान देने से पीछे नहीं हटूंगा। यदि आप यह समझें कि आपको आगे लेजा सकता हूं तो मेरे पास आओ और मैं आपकी सेवा के लिये तैय्यार हूं। परन्तु यदि जिन्ना, अब्दुलकयूम और निशतर आपकी अवस्था अच्छी बना सकते हैं तो मैं पीछे हट जाऊंगा और आपकी सफलता की प्रार्थना करूंगा। हम बड़ी गम्भीर स्थिति से गुजर रहे हैं। अंग्रेज और उनके पिट्ठू डर रहे हैं कि उनकी शक्ति मिट जायेगी। अंग्रेज के दरवाजे से फैंकी हुई हड्डी पाकर कुछ लोग आपको इस्लाम के नाम पर गलत रास्ते पर ले जा रहे हैं।

— अब्दुलगफ्फार खां

× × ×

कांग्रेस में नये रक्त की आवश्यकता

कांग्रेस में पुराने रक्त के स्थान पर नये रक्त का संचार किया जाना चाहिये। नये कांग्रेस कार्यकर्ताओं को जनता की मौजूदा आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए कांग्रेस को संगठित तथा सशक्त करना चाहिये। कांग्रेस के समाजवादी सदस्य इस संगठन में अपना सहयोग देंगे जिससे कि कोई राष्ट्रीय विरोधी संस्था युवक समाजवादियों को अपनी ओर फुसला न सके।

कम्यूनिस्टों की कार्यवाइयों से जनता तथा कांग्रेस को परेशानी उठानी पड़ती है। मद्रास सरकार ने कम्यूनिस्टों के विरुद्ध जो कदम उठाया है उस से उलटी उन्हें ही ख्याति प्राप्त हुई है। कांग्रेस सरकार को चाहिये कि अपने शत्रुओं को परास्त करने के लिए रचनात्मक कार्य करे जिसके अनुसार उसे अपनी आर्थिक नीतियों तथा कार्यक्रम की स्पष्ट घोषणा करनी चाहिये। जब तक कांग्रेस अपना सुधार नहीं करेगी, तब तक कांग्रेस विरोधी संस्थाओं के विरुद्ध वह सफल नहीं हो सकेगी। कांग्रेस को जनता की सामाजिक तथा आर्थिक स्वतंत्रता के लिये कदम उठाना चाहिये।

— श्रीमती अरुणा

× × ×

लीग ने सारी मुस्लिम जाति को ही गुंडा बना दिया

राजनैतिक मतभेद होने पर प्रतिक्रिया करना प्रत्येक व्यक्तिका अधिकार है। परन्तु सभ्य जनता की रीति से प्रतिक्रियायें करनी चाहियें, असभ्य रीति से नहीं। प्रत्येक हिन्दू मुसलमान को राष्ट्र का समान साझीदार मानना चाहिये और उन्हें बौद्धिक, नैतिक, आर्थिक, शारीरिक तथा मानसिक उन्नति प्राप्त करने का अवसर देना चाहिए। उक्त उन्नति में जाति-भेद या सम्प्रदाय भेद बाधक नहीं होना चाहिये। कलकत्ता काण्ड के सम्बन्ध में मेरा अनुभव है कि लीगी इसके लिये पूरे जिम्मेवार है। उन्होंने गत कई वर्षों से इस तरह का आचरण किया है कि जानकार या बिना जाने ही सारी जाति को ही गुण्डा बना दिया है। कलकत्ते के मुसलमानों ने गुण्डागर्दी और बर्बरता के सहारे पाकिस्तानी स्वप्न पूरा करना चाहा था। यह हिंदुओं को सहन नहीं हुआ और कलकत्ता विनाश का एक केन्द्र बन गया। अंग्रेज तो कब से कहते आ रहे हैं कि हमने भारत छोड़ा तो हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे का गला घोंटा करेंगे। यह लज्जा की बात है कि लीगी अपनी बेहयायी को छिपा कर कांग्रेस को गुण्डागर्दी का दोषी बताते हैं।

—प्रो० अब्दुल बारी

× × ×

राष्ट्रीय सेना का निर्माण

हमारा उद्देश्य है कि सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय सेना का निर्माण किया जाये और वह सेना ऐसी हो, जिस पर देश अभिमान कर सके। यह निःसन्देह हमारा अधिकार है कि हम पूर्णतः भारतीयकरण की गई स्थल, जल और वायु सेनाएं रखें। इस अधिकार पर किसी को आपत्ति नहीं है। अब सेनाओं का भारतीयकरण उनके स्तर को कायम रखते हुए यथासंभव शीघ्रता से किया जायेगा। सेना तथा जनता में मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रहने चाहिएं। सेना का जनता से सम्बन्धविच्छेद नहीं रहना चाहिए, क्योंकि सेना जनता की सुरक्षा के लिये है।

राष्ट्रीय सेना अवश्य ही भारत के नागरिकों में से ही बनाई जानी चाहिये। इस समय हमारे पास बहुत से ब्रिटिश अफसर हैं। यह किसी की इच्छा नहीं है कि हम अपनी उद्देश्य-पूर्ति में उनके प्रति अन्यान्यपूर्ण हो। मुझे आशा है कि सेना के भारतीयकरण में उनकी सहायता व सहयोग हमें यथापूर्व उपलब्ध होगा।

— सरदार बलदेवसिंह

× × ×

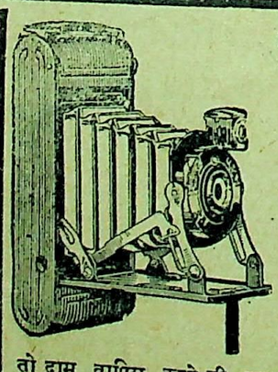

भारतके होशियार कारीगरोंका बनाया हुआ

बढ़िया स्वदेशी कैमरा

कीमत में सस्ता काम में अच्छा, सुन्दर नया डिजायन, मजबूत, इस कैमरे से आप आसानी से चाहे जिस दिलचस्प चीज का टिकाऊ मनोहर फोटो २॥×३॥ इंच का खींच सकते हैं। फोटो खींचने की तरकीब, कार्ड, मसाले कैमरे के साथ मुफ्त भेजते हैं। बढ़िया फोटो न खींचे तो दाम वापिस करने की गारण्टी है। मूल्य बौक्स कैमरा ६॥) पोस्टेज १।) फोलडिंग बढ़िया कैमरा १२) पोस्टेज १॥)।

सी० एम० ब्रादर्स (N.11) अलीगढ़ सिटी।

Haridwar. Digitized by eGangotri

'अर्जुन' के ग्राहकों से

'वीर अर्जुन' के ग्राहकों से निवेदन है, कि पत्रव्यवहार करते समय अथवा रुपया भेजते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखा करें, क्योंकि हजारों ग्राहकों की संख्या में उनका नाम ढूंढ़ना असम्भव है।

— प्रबन्धक

★ वीर ★

अर्जुन

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार २८ आश्विन सम्वत् २००३

सावधान !

[ले०—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

नई दिल्ली का वातावरण समझौते की चर्चा से भरा हुआ है। सुलह कराने वालों और करने वालों की अनथक भाग-दौड़ रात दिन जारी है। यहां तक कि महात्मा गांधी ने 'प्रार्थना के सन्देश' में यह आशा प्रकट कर दी है कि मुस्लिम-लीग मन्त्रिमण्डल में शामिल हो जायगी और इस बार जो एकता उत्पन्न होगी वह १९१६ और १९२१ से भी अधिक दृढ़ होगी।

ऐसे प्रत्यक्ष में, आशाजनक समय में सावधानता की बात उठाना शायद बेसुरा राग ही समझा जाय, परन्तु स्मरण रखना चाहिए कि सावधानता की आवश्यकता भी उसी समय होती है, जब मनुष्य किसी संकट की आशंका नहीं रखता। संकट के समय तो सभी सावधान रहते हैं। उस समय चेतावनी की आवश्यकता नहीं रहती। चेतावनी तभी देनी पड़ती है, जब प्रत्यक्ष में तो शान्ति दिखलाई दे, परन्तु तह के नीचे या चार कदम आगे ज्वालामुखी की आग धधक रही हो। यह समय वैसा ही है।

मैं समझता हूं कि इस परिस्थिति में जो खतरे छुपे हुए हैं उनमें से कुछेक निम्नलिखित हैं :

सबसे बड़ा खतरा तो यह है कि कहीं जल्दी समझौता करने के प्रलोभन में कांग्रेसी नेता यह न भूल जायें कि इस समय लीग के साथ जो भी अहदनामा या समझौता हो उसकी स्वीकृति आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी से अवश्य ली जानी चाहिए। वर्किंग कमेटी को भी यह अधिकार न होना चाहिये कि वह ऐसे महत्वपूर्ण समझौते को आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी की मंजूरी के बगैर ही प्रयोग में ले आये। जल्दी में किये गए पहले समझौतों के कड़वे फल हम अब तक भोग रहे हैं। इतने अनुभव के पश्चात् भी यदि हमने जल्दबाजी में कोई समझौता कर लिया तो सम्भव है कि भावी सन्तानें हमें सदियों तक कोसा करेंगी। यह बात निश्चित हो जानी चाहिए कि लीग से जो भी समझौता किया जाय, प्रयोग में लाने से पूर्व उसकी स्वीकृति आल-इण्डिया कांग्रेस कमेटी से और नवम्बर में होने वाले राष्ट्रीय-महासभा के वृहद् अधिवेशन से भी ले ली जावे।

दूसरा खतरा यह है कि कहीं एकता की उत्कट अभिलाषा की शीघ्रता में हमारे नेता किसी उसूली चीज की कुर्बानी न कर बैठें। जिन मुख्य सिद्धान्तों के कारण अब तक कांग्रेस और मुस्लिम-लीग में मतभेद रहा है, उनमें से किसी एक का भी बलिदान हो जाने का अभिप्राय यह होगा कि हमने राष्ट्रीयता के मूल सिद्धान्तों को छोड़ दिया। कांग्रेस देश की पूर्ण स्वाधीनता के लिये लड़ रही है, किसी लाभ के लिए भी वह अपनी इस मांग को शिथिल नहीं कर सकती। कांग्रेस अखण्ड भारत में विश्वास रखती है। वह स्पष्ट घोषणा कर चुकी है कि वह देश के टुकड़े न होने देगी। इस प्रश्न पर कोई समझौता नहीं हो सकता। कांग्रेस का दावा है कि वह सारे देश की, देश में रहने वाली सब जातियों, धर्मों और श्रेणियों की, प्रतिनिधि संस्था है – इसी कारण वह राष्ट्रीय कहलाती है। यदि कांग्रेस सीधे या टेढ़े ढंग से किसी प्रकार भी अपने इस दावे को छोड़ देती है तो वह एक ऐसा सौदा करती है, जिसमें क्षणिक और सन्दिग्ध लाभ के बदले में वह अपनी राष्ट्रीयता को बेच देती है। जिन राष्ट्रीय मुसलमानों ने कांग्रेस का साथ देने के कारण अपने सहधर्मियों की गालियां और छुरियां तक सहीं, उन्हें मझधार में छोड़ कर उन लोगों को अपनाने का कोई अच्छा फल नहीं हो सकता. जो अपने को भारतीय नहीं मानते और अबतक खुली गुण्डाशाही का प्रचार करते रहे हैं। यदि लीगी लोग राष्ट्रीय मुसलमानों के साथ बैठ कर देश के शासन का काम कर सकते हैं तो उनका स्वागत होना चाहिये। यदि वह ऐसा न कर सकें तो कांग्रेस का कर्तव्य स्पष्ट है। उसे राष्ट्रवादी मुसलमानों को अपनाना चाहिये, उन्हें छोड़ना आत्म-हत्या के समान होगा।

इसी प्रकार समानता के प्रश्न पर भी कोई समझौता नहीं होना चाहिये। मुस्लिमलीग की यह मांग सर्वथा असंगत है कि उसे हरेक क्षेत्र में कांग्रेस के समान अधिकार दिये जाएं। कांग्रेस सब की है और लीग केवल एक सम्प्रदाय के एक भाग की—फिर वह चाहे कितना ही बड़ा भाग क्यों न हो, एक टुकड़ा पूरे के बराबर कैसे हो सकता है? यदि किसी निर्बलता में आकर, कांग्रेस अपने व्यापी रूप के दावे को छोड़ देगी तो वह भारत के भावी भाग्य-निर्माण के अयोग्य हो जायगी।

राष्ट्र और राष्ट्र के नेताओं के बहुत सम्हल कर चलने का समय है। इस समय यदि एक भी कदम उल्टी ओर उठाया गया तो उसका फल बहुत काल तक भोगना पड़ेगा। वर्तमान खाई से बचने के लिए भविष्य के अन्धे कुएं में छलांग मारना बुद्धिमानों का काम नहीं। आशा है, देश के नेता वर्तमान उलझन को सुलझाने में पूरी सावधानता से काम लेंगे; जिससे भविष्य में और अधिक उलझनों का सामना न करना पड़े।

राष्ट्र का स्वास्थ्य

विदेशी सरकार की एक विशेषता यह थी कि वह सदा विदेशी हितों तथा शासन प्रबन्ध को अन्य सब कार्यों से अधिक महत्व देती थी और राष्ट्र निर्माण को सबसे कम। इसका परिणाम यह हुआ कि शासन प्रबन्ध लगातार खर्चीला होता गया और राष्ट्र-निर्माण सबसे अधिक उपेक्षित। जब कभी खर्च में कमी करनी पड़ती, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि कार्यों पर ही सरकारी कुठार चलता। नई लोकप्रिय सरकारों के सामने आज यह एक भीषण समस्या बन गई है। राष्ट्र निर्माण के लिये आज बीसियों नई योजनाएं बनानी हैं, क्योंकि इधर किसी ने ध्यान ही नहीं दिया। यह हर्ष की बात है कि सभी प्रान्तीय सरकारें तथा केन्द्रीय सरकार इस दिशा में ध्यान देने लगी हैं। स्वास्थ्य मंत्रियों के सम्मेलन ने भोर कमेटी की मुख्य सिफारिशों को स्वीकार कर लिया है। इन विविध सिफारिशों का ध्येय चिकित्सा व रोग-प्रतिरोध के लिए पर्याप्त व्यवस्था, माताओं, बच्चों तथा मानसिक दृष्टि से हीन व्यक्तियों की विशेष निगरानी तथा धनाभाव के कारण दवादारु से कोई वंचित न रह सके, इसकी व्यवस्था आदि बतलाये गये हैं। राष्ट्रीय सरकार के उपाध्यक्ष पं० जवाहर लाल नेहरू ने ऐसा कह करके जनता की आकांक्षाओं तथा नई सरकार की नीति को ही घोषित किया है कि यदि बड़े-बड़े युद्धों के लिए धन सुलभ है, तो ऐसा कोई कारण नहीं दिखाई देता कि अस्वास्थ्य से युद्ध करने के लिए धन की व्यवस्था न हो सके, क्योंकि अस्वास्थ्य आंतरिक शत्रु के समान है और राष्ट्र को दुर्बल बनाता है। लोकप्रिय मंत्रियों के स्वास्थ्य सम्मेलन में इस बात पर भी जोर देना स्वाभाविक है कि शहरों की अपेक्षा ग्रामों पर अधिक ध्यान दिया जाय। हमें आशा करनी चाहिये कि स्वास्थ्य सम्मेलन के निश्चय इस दिशा तेज कदम उठाने की शीघ्र प्रेरणा करेंगे।

रियासतों में नई मांग

पिछले दिनों अ० भा० देशी राज्य प्रजापरिषद् की स्थायी समिति ने रियासतों में अन्तःकालीन सरकार स्थापित करने की राय दी थी। तब से यह आन्दोलन प्रायः सभी रियासतों में चल पड़ा है। राजपूताने व मध्यभारत की अनेक रियासतों में यह आवाज जोरों से उठायी जाने लगी है। जोधपुर में लोक परिषद् ने अन्तःकालीन सरकार की स्थापना पर जोर देते हुए यह भी चेतावनी दी है कि यदि राज्य ने इस मांग को स्वीकार न किया, तो वह उसकी प्राप्ति के लिए हर आवश्यक कदम उठावेगी। अलवर में महाराजा ने लोकप्रिय शासन को ध्येय मानकर विधान परिषद् के निर्माण की जो घोषणा की है, उससे अलवर निवासी अत्यन्त असन्तुष्ट हैं। वे भी अन्तःकालीन सरकार चाह रहे हैं। यही स्थिति अन्य रियासतों में भी है। एक ओर रियासतें शासनसुधारों की घोषणा करती है, दूसरी ओर उनकी नीति अभी तक पुरानी चल रही है। इसलिए जरूरी है कि इस संक्रमण काल में ऐसी सरकारें प्रत्येक रियासत में कायम हों, जो नई लोकप्रिय सरकारों के लिए क्षेत्र तैयार कर सकें। जब राजा इस बात को मानते हैं कि वे अपनी प्रजा को शासन में अधिकार देंगे, तो फिर उन्हें आज इस दिशा में एक निश्चित कदम उठाने में क्या आपत्ति है। जब भारत व बर्मा में विदेशी सरकारें, जो जनता की आकांक्षाओं की अधिक विरोधिनी हैं, अन्तःकालीन सरकार स्थापित करने में कोई आपत्ति नहीं देखतीं, तो रियासती राजाओं को क्या आपत्ति होनी चाहिए? सांगली आदि छोटी रियासतों ने तो इस संबंध में क्रान्तिकारी कदम उठा लिये हैं। आज जो राजा समय की गति के साथ चलेंगे, वे ही अपना भविष्य उज्ज्वल रख सकेंगे। अ० भा० देशीराज्य लोकपरिषद् के अध्यक्ष श्री पट्टाभिसीतारमैया ने राजाओं को ठीक ही चेतावनी दी है कि भावी भारत में राजा लोग वैधानिक शासक के रूप में ही रह सकते हैं, पर इसके लिए भी उन्हें अपनी सारी व्यक्तिगत सम्पत्ति प्रजा को अर्पित कर बताना होगा कि वे प्रजा के हैं और प्रजा की इच्छा में उनकी इच्छा है।

—०—

मुद्राप्रसार से हानि

केन्द्रीय या प्रान्तीय सरकारों के सामने जो समस्याएं हैं, उनमें से एक मुख्य समस्या कर्मचारियों तथा मजदूरों की वेतन संबंधी है। जगह-जगह हड़तालों को रोकने की कार्यवाही यह कह कर की जा रही है, क्योंकि अनेक कार्यकर्ता केवल स्वार्थवश या अपने राजनैतिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए मजदूरों को बहकाते हैं। हम स्वयं इन पंक्तियों में कम्यूनिस्ट कार्यकर्ताओं की तीव्र आलोचना करते रहे हैं, लेकिन इसके बावजूद हम यह कहना चाहते हैं कि मजदूरों व साधारण जनता के असंतोष के असली कारण को दूर करने की ओर सरकार का ध्यान नहीं गया। पदार्थों की असाधारण महंगाई से असंतोष की जड़ जमती है और इसका कारण है असाधारण मुद्रा-प्रसार। अगस्त १९३९ को आधार मानते हुए अप्रैल १९४६ के पदार्थों का मूल्य २४४.६ था। वस्तुतः मूल्य इससे भी अधिक बढ़े हैं। सरकारी आंकड़े कण्ट्रोल दर के आधार पर घोषित किये जाते हैं, बाजार दर पर नहीं। मुद्राप्रसार के कारण यह महंगाई हुई है। १९३९ सितम्बर में रिजर्व बैंक के नोटों की संख्या २ अरब १७ करोड़ रु० थी, ९ अगस्त को यह संख्या बढ़कर १२ अरब ५५ करोड़ रु० हो गई। यह दुःख की बात है कि रिजर्वबैंक और करेंसी पर नई भारत सरकार का कोई प्रभाव नहीं है। लेकिन यह कह कर वह अपनी जिम्मेवारी से बच नहीं सकती। मुद्राप्रसार को कम करने के लिए सरकार अबतक रुपया कर्ज द्वारा खींचने के रूपमें कोशिश करती रही है, लेकिन इससे समस्या का समाधान नहीं हुआ। इधर जल्दी ध्यान देना चाहिए। आज भारत की अपेक्षा इंगलैण्ड में मुद्राप्रसार कम है और इसलिए वहां चीजों का मूल्य भी कम है। इसका एक बड़ा परिणाम यह हो रहा है कि भारत में चीजें तो महंगी तैयार हो रही हैं और विदेशों में अपेक्षाकृत कम। कल कारखानों के पुनर्निर्माण तथा यातायात की व्यवस्था में सुधार होते ही वें कारखाने भारतीय कारखानों का मुकाबला करने लगेंगे। इसलिए इधर और भी अधिक ध्यान देने की जरूरत है। मुद्राप्रसार को रोकने के लिए उत्पादन की यथासंभव अधिकतम वृद्धि भी आवश्यक है और यह भी जरूरी है कि स्टर्लिंगनिधि का हम प्रयोग करें, वह किसी तरह बढ़े नहीं। लेकिन यह निधि बढ़ती जा रही है १० अगस्त १९४५ को स्टर्लिंग सेक्योरिटियां १० अरब ३५ करोड़ की थीं, ठीक एक साल बाद ये बढ़कर ११ करोड़ ३५ लाख की होगई है। इस स्टर्लिंग निधि से अधिकाधिक मशीनें मंगा कर उत्पादन के कार्य को बढ़ाया जाय, युद्ध काल में बेईमानी से रुपया कमाने वालों पर कठोर कार्यवाही करके उनसे वापस लेने का प्रयत्न किया जावे। इनके अतिरिक्त भोजन व वस्त्र के मूल्य का धरातल कानून के जोर से कुछ नीचा करना चाहिये। इन दोनों पदार्थों के मूल्य कम होते ही उसका सारे बाजार पर विशेष प्रभाव पड़ेगा। जब तक मुद्रा-प्रसार को कम नहीं किया जाता, तब तक हड़तालें भी नहीं रोकी जा सकतीं और न कोई उत्तम आर्थिक व्यवस्था सफल हो सकती है।

———

अंग्रेजी की दासता

पिछले दिनों श्री राजेन्द्र प्रसाद ने पटना के लोगों को अंग्रेजी में मान पत्र देने पर फटकारते हुए कहा था कि 'मैं ऐसा बेवकूफ नहीं कि अपने ही आदमियों के बीच में अंग्रेजी में बोलूं।' जबलपुर में श्री पट्टाभिसीतारमैया से जब अंग्रेजी में भाषण देने के लिए कहा गया तो उन्होंने ऐसे प्रार्थियों को खरी-खरी सुनाते हुए कहा कि 'भारत आजाद होने जा रहा है और फिर भी अंग्रेजी में भाषण सुनने की इच्छा नष्ट नहीं हुई। इस का अर्थ यह है कि आप लोगों में स्वशासन की भावना हार्दिक नहीं है!' वस्तुतः स्वराज्य पाने की उत्कट इच्छा के साथ-साथ अंग्रेजी की दासता का कहीं समन्वय नहीं हो सकता। यह और भी दुःख की बात है कि कांग्रेसी कार्यकर्ता इस संबंध में अधिक दोषी हैं। वे आज अपने समाचार अंग्रेजी में भेजते हैं, अपनी कार्यवाई अंग्रेजी या फारसीमय उर्दू में लिखते हैं और आपसी बातचीत या शिष्टाचार का प्रदर्शन अंग्रेजी में करते हैं। राष्ट्रीयता केवल भारतीय शासन में नहीं है वह है देश की संस्कृति, भाषा और रहन-सहन को अपनाने में। यह काम जहां कांग्रेस कार्यकर्ताओं का है, वहां अन्य भी सब भारतीयों का तथा विशेष कर भारतीय संस्कृति के प्रेमियों का है। हमें यह निश्चय कर लेना चाहिए कि हम आपसी शिष्टाचार व सभा समिति तथा निमंत्रण पत्र आदि में केवल राष्ट्र भाषा या मातृ-भाषा का प्रयोग करेंगे। जेल जाने से इस नियम का पालन किसी तरह कम महत्वपूर्ण नहीं है।

———

अन्तःकालीन सरकार और लीग की समझौता-वार्ता

नरेन्द्रमण्डल के अध्यक्ष नवाब भोपाल के प्रयत्न से अस्थाई सरकार के उपाध्यक्ष पं. जवाहरलाल नेहरू और लीग के अध्यक्ष मियां जिन्ना की दो बार भेंट हो चुकी है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि दोनों के बीच जो वार्ता हुई है, उसके अनुसार मुस्लिमलीग ने राष्ट्रीय मुसलमान के रखे जाने को सिद्धान्त रूप से तो मान लिया है, पर वह चाहती है कि इस अन्तःकालीन सरकार में वह न रखा जा कर विधान निर्मात्री परिषद् का कार्य समाप्त होने पर जो सरकार बने उसमें रखा जाय। परन्तु कांग्रेस इसे अस्वीकार कर रही है तथा इसी अन्तः-कालीन सरकार में मौलाना आजाद को रखने पर जोर दे रही है।

यह भी चर्चा हुई हैं कि पांच मुस्लिम स्थानों पर मियां जिन्ना द्वारा निर्वाचित व्यक्ति नियुक्त किये जायेंगे, परन्तु उनमें एक ऐसा मुस्लिम होगा जिसे दोनों दलों का समर्थन प्राप्त होगा।

यह पता चला है कि मि० जिन्ना ने जो पत्र वाइसराय को लिखा था, उसमें उन्होंने वाइसराय से निम्नलिखित नौ बातों पर आश्वासन चाहे थे, पर वाय-राय ने इन सब पर पं.० जवाहरलाल नेहरू से बातचीत करने की सलाह दी:—

(१) कोई अलीगी मुसलमान केन्द्रीय सरकार में न रहें, (२) साम्प्रदायिक प्रश्नों पर केवल मुस्लिम मन्त्री ही निर्णय करें, (३) भविष्य में अल्पसंख्यकों के किसी मंत्री का स्थान किसी कारण रिक्त हो तो बिना लीगी सदस्यों की सहमति के नया मन्त्री नियुक्त न हो, (४) वायसराय की कौंसिल का वाइसप्रेसीडेण्ट एक बार कांग्रेस का हो, और दूसरी बार लीग का, (५) वाइसराय की कौंसिल संयुक्त मन्त्रिमण्डल की तरह कार्य न करे जिसमें हर मामला मंत्रिमण्डल ही तय करता है। (६) प्रत्येक मन्त्री सरकार के प्रत्येक निर्णय के लिये उत्तरदायी होता है। अब प्रत्येक सदस्य अपने विभाग के कार्य के लिए स्वतंत्र हो और केवल वाइसराय के प्रति उत्तरदायी हो, (७) लीग के आ जाने के बाद सब विभागों का नये सिरे से विभाजन किया जाय, (८) और लीग में मतभेद होने पर वायसराय पंच की तरह अपने विशेषाधिकारों का प्रयोग करें (९) और वायसराय आवश्यकता के अनुसार गवर्नमेंट आफ इण्डिया एक्ट १९३५ में दिये हुए अपने विशेषाधिकारों का प्रयोग करें।

सिंध के निर्वाचन में सरकारी हस्तक्षेप

जी० एम० सैयद ने भारतमंत्री लार्ड पेथिक लारेंस के पास एक तार भेजते हुए कहा है कि सिंध के निर्वाचनों में सरकारी कर्मचारी बड़े उद्धत रूप में हस्तक्षेप कर रहे हैं। यदि ब्रिटिश सरकार को यह देखना है कि हस्तक्षेप किस प्रकार हो रहा है तो भारतीय वैधानिक प्रगति में रुचि रखने वाले पार्लमेंट के दो सदस्यों को इस समय सिंध में भेजा जाय। हस्तक्षेप के ठोस प्रमाणों को सिंध के गवर्नर व वाइसराय के पास भी भेज दिया गया है।

सिंध से प्राप्त होने वाले समाचारों से यह भी ज्ञात होता है कि लीगी प्रति-निधियों को जितवाने के लिये सब प्रकार के अनैतिक साधनों के उपयोग की भी प्रारम्भिक तैयारियां कर ली गई हैं। १५०० के लगभग अलीगढ़ यूनिवर्सिटी के छात्र सिंध प्रांत में सर्वत्र फैल गये हैं तथा कलकत्ता की 'खुली लड़ाई' में बढ़-बढ़ कर हाथ दिखाने वाले लीगी गुण्डे भी हजारों की संख्या में इस प्रान्त में आकर जम गये हैं। इनका प्रमुख उद्देश्य अलीगी मतदाताओं तथा हिन्दुओं को विशेष रूप से आतंकित करना है। यह भी निश्चित समाचार आ रहे हैं कि एक बड़ी मुस्लिम रियासत ने इस चुनाव तथा विद्यार्थियों का व्यय उठाना स्वीकार कर लिया है तथा इसी प्रयोजन के लिये लगभग १० लाख रुपये कलकत्ते की प्रसिद्ध मुस्लिम व्यापारी फर्म को दिये हैं।

भारत में अफगान-दूत

पिछले दिनों से अफगानिस्तान का एक प्रतिनिधि-मंडल आया हुआ है। इसका उद्देश्य भारत से वस्त्र और खाण्ड प्राप्त करना है। इस मण्डल ने इस सम्बन्ध में महात्मा गांधी से भी भेंट की है। गांधीजी ने इस मण्डल को परामर्श दिया है कि वे वहां खादी का कार्य प्रारम्भ करें, इस प्रयोजन के लिये गांधीजी कुछ कार्यकर्ताओं को भी अफगानिस्तान में भेजने को तैयार हैं।

यह स्मरण रखने योग्य है कि इस युद्ध से पूर्व अफगान सरकार ने भारतीय व्यापार को समाप्त करने के बहुत प्रयत्न किये थे।

[शेष पृष्ठ १९ पर]

Haridwar. Digitized by eGangotri

सारावाक व बोर्नियो

[ले० — श्री दीनदयालु शास्त्री]

★

अंग्रेज दूर नीतिज्ञ हैं। उनका विशाल साम्राज्य कूटनीति के आधार पर बना और उसी के आधार पर अभी तक कायम है। अंग्रेजों का दूसरा गुण देशभक्ति है। वह अपने व्यक्तिगत स्वार्थ को देश के महान् लाभ के सामने सदा तिलाञ्जलि देने को प्रस्तुत रहते हैं। अंग्रेज की इस देशभक्ति ने साम्राज्य के निर्माण में कूटनीति की अपेक्षा कहीं अधिक मदद की है। हमारे देश में अंग्रेजों का आगमन व्यापार के लिये हुआ था। इस व्यापार की सुविधा एक अंग्रेज डाक्टर ने मुगलसम्राट की चिकित्सा द्वारा प्राप्त की थी। यदि वह आदर चाहता तो अपना व्यक्तिगत लाभ कर सकता था, किन्तु उसकी देशभक्ति ने सारी जाति का उपकार किया और अन्ततः हमारे देश में अंग्रेजीराज की स्थापना की। दक्षिण अफ्रीका व अमेरिका के अनेक भूमि भाग सर सेसिलरोडस व अन्य अंग्रेजों की सम्पत्ति थे। यदि वे चाहते तो इन्हें व्यक्तिगत सम्पत्ति बनाये रखते किन्तु नहीं! उन्हें व्यक्ति से समष्टि अधिक प्रिय थी, अतः उनके वे बृहत् भूमि-भाग आज स्वयं अंग्रेजी साम्राज्य के सम्पन्न व स्थिर अंग हैं। आज अंग्रेजों का वह विशाल साम्राज्य लड़खड़ा रहा है। संसार के बहुत से राजनीतिज्ञ एवं अंग्रेज भी उसे टूटता हुआ समझ रहे हैं किन्तु इस विपरीत स्थिति में भी पिछले दिनों अंग्रेजों की देशभक्ति ने दो-एक ऐसे संकल्प दिये हैं जिनसे पूर्वी एशिया में अंग्रेजों का साम्राज्य छिन्न-भिन्न होने के स्थान में अधिक स्थिर हुआ है।

बोरनियो टापू

युद्ध व व्यापार की दृष्टि से सिंगापुर का बन्दरगाह पूर्वी एशिया व आस्ट्रेलिया का प्रवेश द्वार है। इसके आस-पास के प्रदेश में मलाई लोग रहते हैं। अभी एक दो सदी पहले तक ये मलाई लोग मलाया, बोरनियो, सुमात्रा आदि अनेक प्रदेशों के मालिक थे। यद्यपि यह सब प्रदेश किसी एक मलाई साम्राज्य के अन्तर्गत न थे, किन्तु भिन्न-भिन्न मलाई राजाओं व नवाबों से शासित थे। आज ये प्रदेश या तो अंग्रेजों के संरक्षण में हैं या हालैंडी लोगों के। इन प्रदेशों में बोरनियो की खास स्थिति है। वह विशालता की दृष्टि से दुनिया का तीसरा टापू है। केवल आस्ट्रेलिया व ग्रीनलैंड उससे बड़े हैं। बोरनियो का क्षेत्रफल २८६ हजार वर्गमील है और आबादी है केवल तीस लाख। इस आबादी में मलाई लोग प्रमुख हैं यद्यपि अन्य जातियों की गणना भी कम नहीं है और अब तो चीनी प्रवासी भी पर्याप्त संख्या में आबाद हो गये हैं। इस बोरनियो के दक्षिणी भाग को हालैंड के लोगों ने स्थानीय शासकों से अठारवीं सदी में छीन लिया था। हालैंडमें शामिल यह दक्षिणी भाग अधिकतर पहाड़ी जंगलों से पूर्ण है किन्तु खनिजों से भरपूर है। बोरनियो का सन्दाकन स्थान पूर्वी एशिया में पेट्रोल व मिट्टी के तेल का सबसे बड़ा केन्द्र है इसी प्रकार कोयला, रबर व मसाले भी बोरनियो में पर्याप्त संख्या में मिलते हैं और इनके व्यापार से हालैंडी लोग खूब लाभ उठाते हैं।

सारावाक

इस बोरनियो द्वीप के उत्तरी भाग में तीन प्रदेश हैं : सारावाक, ब्रूनी एवं उत्तरी बोरनियो। इनमें से सारावाक, सर्वाधिक सम्पन्न है और अभी दो-तीन मास पहले तक एक अंग्रेज राजा द्वारा शासित था और अब उस अंग्रेज की देशभक्ति के कारण महान् अंग्रेजी साम्राज्य का अंग बन गया है! सन् १८४० तक इस सारावाक में मलाई शासकों का राज था। उस साल ब्रूनी के सुलतान व उसके चचा मुदाहाशिम में बड़ी कशमकश थी। सुलतान के शासन से प्रजा भी असन्तुष्ट थी और विद्रोह कर चुकी थी। इस विपत्ति में मुदाहाशिम ने सिंगापुर से सर जेम्सब्रुक नाम के अंग्रेज जनरल को अपनी मदद के लिये बुलाया। ब्रुक के साथ कुछ अंग्रेज सिपाही भी आये थे और उनके सहारे से ब्रुक ब्लिदाह के किले को तहस-नहस करने एवं विद्रोह को शान्त करने में सफल हुए थे। इस मदद के उपलक्ष में मुदाहाशिम ने सारावाक का प्रदेश सर जेम्सब्रुक को सौंप दिया और सन् १८४१ के सितम्बर में वे यहां राजा घोषित किये। अगले साल ब्रूनी के सुलतान ने भी उन्हें राजा स्वीकार कर लिया और इस प्रकार इंगलैंड के साथ-साथ सारावाक में एक दूसरे अंग्रेज राजा का वंश प्रारंभ हुआ।

अंग्रेज राजा

ब्रूनी के सुलतान ने सन् १८४१ में केवल सात हजार वर्गमील का प्रदेश राजा ब्रुक को भेंट किया था किन्तु अगले साठ साल में राजा ब्रुक व उसके वंश ने इसमें उत्तरोत्तर वृद्धि की है। सन् १८६१ व १८८२ में ब्रूनी का अधिकतर समद्री तट इस अंग्रेजी राज में शामिल हुआ है और इसके बाद सन् १८९० व १९०४ में लिम्बांग व लवास नदियों का मध्यवर्गी भाग विजय किया गया है। शुरु में इंगलैंड के शासक सारावाक के इस राजा को उपेक्षा की दृष्टि से देखते रहे किन्तु बाद में उनकी दिलचस्पी भी इधर बढ़ी और सन् १८६३ में इंगलैंड की सरकार ने सारावाक को एक स्वतंत्र राष्ट्र स्वीकार कर लिया। ऐसा करते हुए भी उसे भविष्य की चिन्ता थी कि कहीं सारावाक नवीन बन रहे सिंगापुर का प्रतिद्वन्दी न हो जाये। ब्रुक संसार में अंग्रेजों को दूसरा सत्ता प्रारंभ न करें यह चिन्ता भी इंगलैंड को थी। अन्त में काफी ले दे के बाद सन् १८८८ में इंगलैंड व सारावाक में एक सन्धि हुई। इस सन्धि के अनुसार राजा ब्रुक के भतीजे सर चार्ल्स ब्रुक ने जो गद्दी पर था इंगलैंड की सरकार का सारावाक पर संरक्षण स्वीकार कर लिया और बदले में इंगलैंड ने सारावाक के विदेशी सम्बन्ध व बाहरी हमले से सुरक्षा की जिम्मेदारी अपने ऊपर ओढ़ ली। सन् १८४१ से सन् १८८८ तक सारावाक की अंग्रेज राजा पूर्ण तथा स्वतंत्र था। सन् १८८८ में देश भक्ति के आधार पर इंगलैंड सरकार ने सारावाक के राजा को हिजहाईनेस की उपाधि से विभूषित किया और भीतरी स्वतंत्रता की गारण्टी दी।

राजा का दान

इस युद्ध में जापान ने जब मलाया पर हमला किया था तो सारावाक को भी अपने कब्जे में किया था। यदि सारावाक पर अंग्रेजी सरकार न होती तो जापान उस पर कब्जा करता या नहीं इसमें सन्देह है। जापानी अधिकार के बाद सारावाक के राजा ब्रुक आस्ट्रेलिया चले गये और वहां से घूमघाम कर लण्डन पहुंचे। लण्डन में अंग्रेजी सरकार से उनकी मंत्रणा हुई और दोनों ने यह समझा कि सिंगापुर के आसपास के प्रदेश को सदा खतरा बना रह सकता है, वहां के निवासी स्वतन्त्रता की मांग भी कर सकते हैं अतः सिंगापुर व हांगकांग के मध्यवर्ती सारावाक पर भी किसी स्वतन्त्र राजा का (चाहे वह अंग्रेज ही क्यों न हो) नहीं अपितु प्रबल ब्रिटिश सरकार का कब्जा होना चाहिये। सारावाक के राजा चाहते तो अपनी स्वतंत्र सत्ता कायम रख सकते थे, किन्तु उन्होंने अंग्रेजी साम्राज्य के हित को प्रमुखता दी और अपने वैयक्तिक स्वार्थ को हीन माना तथा देशभक्ति के प्रमाण स्वरूप अपना सारा राज्य अंग्रेजी साम्राज्य में सम्मिलित कर दिया।

पेट्रोल की महत्ता

इस समय सारावाक का क्षेत्रफल पचास हजार वर्ग मील एवं आबादी ६ लाख है। पहाड़ व समुद्र के मध्य में होने के कारण जलवायु अच्छा है। साबूदाना, मिर्च, नारियल व चावल की उन्नति यहां अधिक है। खनिजों में कोयला अच्छी किस्म का है, किन्तु सबसे मुख्य यहां की पैदावार पैट्रोल ही है। इस पेट्रोल का केन्द्र मीरी है। आजकल लगभग दो करोड़ मन पेट्रोल मीरी के कुओं से निकलता है और उसका कुछ भाग अंग्रेजी जंगी बेड़े के लिए सुरक्षित रख कर बाकी बाजार में बेच दिया जाता है। सारावाक की राजधानी कुचिंग में है जहां सरकारी दफ्तर हैं और राजा का निवास स्थान रहा है। अब यहां अंग्रेजी सरकार के प्रतिनिधि रहेंगे और सारावाक को अंग्रेजी साम्राज्य के अनुकूल सुदृढ़ बनाने का प्रयत्न करेंगे। इस सारावाक के पूर्वी छोर में ब्रूनी नाम का छोटी-सी रियासत है जो अंग्रेजों के संरक्षण में है। ब्रूनी के इन शासकों के पूर्वज ही पहले बोरनियो टापू के उत्तरार्ध के मालिक थे और इन शासकों से ही राजा ब्रुक ने सारावाक का अधिकार प्राप्त किया था।

बोरनियो व अंग्रेज

इन शासकों से ही अठारवीं सदी के मध्य भाग में अंग्रेजों की एक कम्पनी ने बोरनियों का उत्तरी प्रदेश प्राप्त किया था। बीच में कुछ देर के लिए यह प्रदेश उस कम्पनी से छिन गया और सन् १७७५ के बाद पुनः कब्जे में आया। तब से अभी पिछले मास तक नार्थ बोरनियो कम्पनी ही इस प्रदेश का शासन करती थी यद्यपि सन् १८८८ से इस कम्पनी ने अंग्रेजी सरकार के द्वारा भेजे गये अफसरों को अपने यहां रखना स्वीकार कर लिया था और इस प्रदेश के वैदेशिक सम्बन्धों में भी अंग्रेजी सरकार को प्रमाण मान लिया था। इस प्रदेश में तेल की सम्भावना अधिक है और अन्य खनिज व धन्य-धान्य भी पर्याप्त मात्रा में होते हैं। सन् १९४२ में सारावाक की भांति इस प्रदेश पर भी जापानियों का कब्जा हो गया था और युद्ध के बाद वह पुनः अंग्रेजी कम्पनी को प्राप्त हुआ था। अब राजा ब्रुक की भांति इस कम्पनी ने भी अपना यह सब प्रदेश अंग्रेजी सरकार को सौंप दिया है। प्रदेश का क्षेत्रफल ३१ हजार वर्ग मील और आबादी तीन लाख के लगभग है। इस प्रकार युद्ध के बाद के इस आदान-प्रदान में अंग्रेजी सरकार को सारावाक व बोरनियो का ८० हजार वर्गमील व नौ लाख आबादी का प्रदेश प्राप्त हुआ है। निःसन्देह

[शेष पृष्ठ १८ पर]

काश्मीर की घाटी में

लखपतराय प्रभाकर]

★

हृदय के किसी कोने में चिरकाल से काश्मीर देखने की सुप्त भावना को परिपूर्ण करने के लिये मैं सपरिवार देहली से चला और मरी जा पहुंचा। मरी एक सुन्दर पहाड़ी स्थान श्रीनगर के मार्ग में रावलपिंडी से ३६ मील दूर है और ६५०० फीट समतल से ऊंचा है। यहां की जलवायु की तुलना शिमला से की जा सकती है। ठंडी सड़क, काश्मीर अथवा पिंडी पुआईंट यहां देखने योग्य स्थान हैं जहां से बर्फ से ढकी पहाड़ों की चोटियां तथा अन्य मनोरम दृश्य दिखाई देते हैं। यहां एक मधुगृह भी पंजाब सरकार की ओर से स्थित है जहां मधु एकत्रित करके दूर-दूर प्रति वर्ष जाता है।

चार दिन मरी ठहरने के पश्चात हम श्रीनगर को बस में चल पड़े। कोहाला से जो कि मरी से २६ मील है काश्मीर रियासत आरम्भ हो जाती है कोहाला के पुल का आधा भाग काश्मीर रियासत का है और आधा पंजाब सरकार का। इस नाके पर यात्री के सामान की तालाशी ली जाती है, जिससे रियासत के कस्टम कर से मुक्त होकर कोई निकलने न पाये। कोहाल से बारामूला तक (६६ मील) सड़क की एक ओर जेहलम नदी बहती है और दूसरी ओर ऊंचे पहाड़। यहां जेहलम एक छोटी-सी नदी प्रतीत होती है, जिसमें लकड़ी के बड़े-बड़े लट्ठे पानी के ऊपर अटखेलियां करते चले जाते हैं। ये लट्ठे काश्मीर के घने जंगलों से काट कर नदी में फैंक दिये जाते हैं। जेहलम नदी का, कभी ऊंची ध्वनि और कभी शांत रूप से बहना चित्ताकर्षक प्रतीत होता है, प्रकृति ने इस नदी को विचित्र आभा प्रदान की है। मार्ग में इस नदी को पार करने के लिये विचित्र प्रकार के पुल बनाये गये हैं जो कि धातु के रस्सों से दोनों किनारों पर बंधे हुए हैं। और यात्री झूले की भांति उनके द्वारा लटक कर एक किनारे से दूसरे किनारे तक पहुंच जाता है। श्रीनगर के मार्ग में प्रसिद्ध स्थान डोमेल, ऊरी, बारामूला आदि हैं। बारामूला से जेहलम नदी सड़क से दूर हो जाती है और काश्मीर की घाटी में मनोरम दृश्य दृष्टिगोचर होता है। बारामूला से श्रीनगर तक (३४ मील) सड़क के दोनों ओर ऊंचे सफेदे के वृक्ष हैं।

श्रीनगर

श्रीनगर ५२०० फुट समतल से ऊंचा है और जलवायु ग्रीष्मऋतु में कुछ गर्म होती है। जेहलम नदी इस नगर को दो भागों में बांटती है और सात लकड़ी के पुलों द्वारा दोनों भागों में आना-जाना होता है। यह नगर काश्मीर की घाटी के हृदय में स्थित होने पर भी एक साधारण नगर है। नगर के पुराने हिस्से में घूमने से यह प्रतीत होता है कि घर अधिकतर दो मंजले और लकड़ी के बने हुए हैं। सिविल इलाका जिसमें पोलो कोर्स, रेजीडैंसी भव्य कोठियां और दुकानें हैं, आधुनिक ढंग पर बनाये गये हैं।

शंकराचार्य्य का मन्दिर श्रीनगर से १००० फुट ऊंचाई पर है। यहां घोड़ों पर अथवा पैदल जाते हैं। इस मन्दिर पर से श्रीनगर विशेषकर जेहलम नदी का दृश्य बहुत सुन्दर दिखाई देता है। नदी एक सर्प की भांति बल खाती हुई बहती है। इस मन्दिर में बिजली लगी हुई है और लोगों का कहना है कि इसी स्थान पर शंकराचार्य्य ने बौद्ध भिक्षुओं को शास्त्रार्थ में पराजित किया था।

श्रीनगर के समीप चश्माशाही, निशात, शालीमार अथवा नसीम बाग, डल और नागिन झीलें देखने के योग्य हैं। चश्माशाही से शुद्ध निर्मल ठंडा पानी निकलता है, यह महाराजा काश्मीर के नये भवन के समीप है और यहां से डल झील और उसके पास के सुन्दर दृश्य दिखाई देते हैं। ये उद्यान मुगल-कालीन कला के ढंग पर बने हुए हैं। फलों से लदे हुए वृक्ष तथा रंग-बिरंगे फूल अत्यन्त रमणीय प्रतीत होते हैं। डल झील सिविल इलाके के पीछे है जिसमें गृह नावें इधर-उधर घूमती हैं और इसमें तैरने का भी प्रबन्ध है। महाराजा काश्मीर के नये भवन इस झील के सम्मुख हैं और पीछे पहाड़ों की चोटियां हैं जिसके कारण इस भवन की सुन्दरता को चार चांद लग गये हैं और यहां का दृश्य स्विटजरलैंड में जैनेवा झील का स्मरण करा देता है।

एक विचित्र बात श्रीनगर की यह है कि सम्भवतः इस नगर की आधी जनसंख्या गृह-नावों (House Boats) में, जेहलम नदी में रहती है। शिकारों में (एक प्रकार की नाव द्वारा) जेहलम के दोनों ओर नगर का भलीभांति भ्रमण किया जा सकता है।

गुलमर्ग

गुलमर्ग (भारतीय पहाड़ी स्थानों की रानी) श्रीनगर से २८ मील दूर है उस यात्री को टंगमर्ग तक ले जाती है। यहां काश्मीर राज्य का सैनीटोरियम है। टंगमर्ग से पैदल अथवा घोड़ों पर तीन मील की चढ़ाई पर गुलमर्ग समतल से ८७०० फुट ऊंचा है। यहां अच्छे होटल इत्यादि हैं परन्तु सबसे आकर्षक वहां के गौल्फकोर्स हैं, इससे ऊपर तीन मील खेलनभर्ग (१०२०० फुट) और जाकर यात्री अधिक आनन्द रस-पान करता है। यहां का जलवायु बहुत स्वास्थवर्द्धक है। यहां से काश्मीर का घाटी का सुन्दर दृश्य और नगा पर्वत के दर्शन होते हैं। एक स्वच्छ जल का स्रोत भी यहां है। कुछ और ऊपर पत्थर पर बर्फ के तोंदे हैं जहां स्केटिंग हो सकती है। यहां से ही काश्मीर घाटी का दृश्य और भी रोचक प्रतीत होती है। कुछ दूर एक झील भी दृष्टिगोचर होती है।

पहलगाम

काश्मीर का दूसरा प्रसिद्ध सैनीटोरियम पहलगाम समतल से ७२०० फीट ऊंचा और श्रीनगर से ५६ मील दूर है। श्रीनगर से पहलगाम तक जो स्थान दर्शनीय उनमें अनंतनाग (इसलामाबाद) का नाम उल्लेखनीय है। यहां निर्मल जल और गंधक के स्त्रोत हैं। निर्मल जल का स्त्रोत एक ऊंचे पहाड़ के नीचे से ऐसे स्थान से निकलता है जिसके ऊपर एक सुन्दर मंदिर है। स्त्रोत का पानी तालाबों द्वारा लाया जाता है। इन तालाबों में रंग-बिरंगी मछलियां हैं। निर्मल जल में इन मछलियों का तैरना तथा, क्रीड़ा करना एक सुन्दर दृश्य उपस्थित करता है। मेरी पुत्री ने यहां कुछ चने फैंके झट से मछलियां झपट कर एक से ऊपर दूसरी चनों को खाने के लिये कूद पड़ीं; इनका यह झगड़ा बहुत रोच कथा!

पहलगाम छोटी-सी लिडरवैली में स्थिति है यहां से नीचे दो घहराती करती हुई नदियां पूर्वी लिडर (शांत गंगा) और पश्चिमी लिडर और ऊपर बर्फ से ढकी हुई पहाड़ी की चोटियां दृष्टिगोचर होती हैं! पहलगाम क्लब के इर्द गिर्द के मैदान में फूल, पार्क, खेल इत्यादि का प्रबन्ध करके इसे सुन्दर बना दिया है, बहुत से यात्री यहां तम्बुओं में रहते हैं! यहां रामेश्वर का मंदिर है लिडर नदी के उस पार है जहां एक पानी का स्त्रोत है!

लिडर घाटी की एक विचित्र बात यह है कि सूर्य का प्रकाश तो ग्रीष्म ऋतु में यहां ६ बजे प्रातः हो जाता है किन्तु सूर्य कोई ६ बजे दृष्टिगोचर होता है! इसी प्रकार संध्या को सूर्य ५ बजे दृष्टि से ओझल हो जाता है। यहां से प्रसिद्ध अमरनाथ की गुफा १६ मील है!

काश्मीरी लोग

स्थानीय काश्मीरी मुसलमान सादा और आधुनिक पश्चात्य सभ्यता से अप्रभावित है वह नित्य का कार्यक्रम

[शेष पृष्ठ २२ पर]

अधिकार हृदय की क्षमता है

[श्री आनन्दप्रकाश दीक्षित, बी० ए०]

अधिकार हृदय की क्षमता है, वह क्षमता ही में पलता है!

सागर की मन्थन कर छाती,
लहरें लुक-छिप कर रह जातीं;

पर सागर का भयप्रद-गर्जन कब उनसे रुकता चलता है।
अधिकार हृदय की क्षमता है, वह क्षमता ही में पलता है॥

तम पूर्ण भयद रजनी आती
जग को कालिख से भर जाती,

पर ऊषा की अरुणभा लख रजनी का रंग बदलता है।
अधिकार हृदय की क्षमता है, वह क्षमता ही में पलता है॥

काले बादल घिर छा जाते
जल उपल वृष्टि ले घहराते,

पर कौंध तड़ित की पलभर में फैला देती उज्ज्वलता है।
अधिकार हृदय की क्षमता है, वह क्षमता ही में पलता है॥

पद-रजकण भू पर पिस जाते
फिर वे ही उड़ ऊपर आते,

मानव जो मौन बना सहता उसके उर की दुर्बलता है।
अधिकार हृदय की क्षमता है, वह क्षमता में ही पलता है॥

CC-0. Haridwar. Digitized by eGangotri

क्या यही फिलिपाइन की स्वतन्त्रता है ?

[ले० — श्री एण्ड्रयूज]

[गताङ्क से आगे]

अमेरिकनों की नृशंसता

साम्राज्यवाद विजित तथा विजेता दोनों को ही पतित बना देता है। अमेरिकन सैनिकों के उरों में उन्हीं के अधिकारियों ने घृणा और पैशाचिकता के भाव भर दिये। फिलीपाइनों के रक्त से अमेरिकनों ने धरा को प्लावित करना प्रारंभ कर दिया। उनके चीत्कारों को दूसरों के कानों तक पहुंचने न देने के लिये उनके मुहों में सेंसरशिप का कपड़ा ठूंस दिया गया। एक अर्से के बाद बढ़ते हुये बाहरी विरोधों के कारण अपने ऊपर पड़े हुये लहू के दागों को दूसरों की नजरों से छिपाने के उद्देश्य मामले की जांच प्रारंभ हुयी।

मिसौरीरेजीमेण्ट के एल० एफ० आदम ने अपने घर भेजे गये एक पत्र में लिखा था—'हमने फिलीपाइनों के समस्त घर फूंक दिये। ज्ञात नहीं टिनीसी सैनिकों ने कितने मर्दों; औरतों तथा बच्चों को मौत के घाट उतारा क्योंकि यहां बंदी बनाने का आदेश नहीं।'

जनरल वेल ने अंदाजा लगाया था कि लूजन के विद्रोह को शांत करने के लिये वहां भी लगभग १/६ आबादी को कत्ल कर दिया गया, जो संख्या में लगभग ६ लाख होगी।

युद्धमंत्री के १७ फरवरी १६०१ के मेमोरैण्डम से पता चलता है कि इस नादिरशाही के अभियोग में कुछ सैनिक अफसरों को सजायें भी दी गयीं। ऐसे कुछ उदाहरण नीचे उद्धृत किये जाते हैं—

अभियोग—'लेफ्टी०टामस द्वारा दी गयी सजायें बहुत ही कठोर थीं।' सजा—३०० पौण्ड जुर्माना तथा कैदियों पर आक्रमण और निर्दयतापूर्ण व्यवहार करने के कारण धमकाया जाकर छोड़ दिया गया।

अभियोग—'कैप्टेन ब्रैण्डेल ने कैदियों का गला फंसाकर दस सेकेण्ड तक लटकाया। सजा—धमकाया जाकर छोड़ दिया गया।

ब्रिगेडियर जनरल जैकब एच. स्मिथ ने मेजर टी. एल. वालर को आदेश दिया था—'मैं एक भी कैदी नहीं चाहता। मैं यह चाहता हूं कि तुम सबको जला दो तथा जान से मारदो। जितनी ही अधिक संख्या में फिलिपाइनों को जलाओगे या मारोगे मैं उतना ही अधिक प्रसन्न होऊंगा।' (सेक्रेटरी आफ वार रूट्स का प्रेसीडेण्ट टी. आर. रूजवेल्ट को भेजा गया पत्र, १२ जुलाई १६०२)

इसी सरकारी रिपोर्ट में आगे कहा गया है—'ब्रिगेडियर जनरल स्मिथ ने मेजर वालर को एक अन्य आदेश देकर कहा था कि वह (स्मिथ) यह चाहता है कि उन तमाम व्यक्तियों को, जो हथियार धारण कर सकने योग्य हों, जान से मार दिया जाय। स्मिथ ने वालर को यह आदेश उसके एक पत्र के उत्तर में दिया था, जिसके द्वारा वालर ने यह जानना चाहा था कि ऐसे व्यक्तियों की उमर की एक सीमा नियुक्त कर दी जाय जिन्हें कि जान से नहीं मारना है।'

जापानी जनरल यामाशिता को ऐसे ही अपराधों के कारण, जो उसने अपनी साम्राज्यवादी सरकार के लिये किये थे फांसी की सजा दी गई थी। उचित था कि यामाशिता न्यायालय से ब्रिगेडियर जनरल स्मिथ को भी सजा देने की मांग करता, क्योंकि अपराधी होने पर भी उसे केवल नसीहत देकर छोड़ दिया गया था।

इसमें कोई संदेह नहीं कि अमेरिकन साम्राज्यवादियों ने फिलीपाइनों के रक्त से होली खेली। इसके परिणामस्वरूप कि जापानी सरकार उसको मन-मानी करने से रोक न सके, अमेरिका सरकार ने जापान के साथ एक महत्वपूर्ण साम्राज्यवादी सौदा भी किया। जापान उस समय कोरिया के विद्रोह में उलझा हुआ था। जापान के साथ १६ जुलाई १६०५ को हुये इस कुटिल टैफ्ट कात्सुरा समझौते के अंतर्गत युद्धमंत्री टैफ्ट ने वायदा किया था कि वह कोरिया में जापानी अधिकारियों का विरोध न करेंगे। इसके बदले में प्रधान मंत्री कात्सुरा ने वचन दिया था कि वह फिलीपाइन में अमेरिकन शासन में कोई हस्तक्षेप न करेगा। दो डाकुओं के मध्य किया गया यह समझौता प्रेसीडेण्ट थियोडोर रूजवेल्ट तथा युद्धमंत्री टैफ्ट द्वारा गुप्त रखा गया। इस घटना का पता तो १६२४ में एक ऐतिहासिक को लगा जो टी. आर. रूजवेल्ट संबंधी कुछ कागज पत्र उलट-पुलट रहा था।

स्वतन्त्रता प्रश्न ही रही

१६०७ में बहुत बड़ी पाबन्दियों के साथ चुनाव हुआ। इस चुनाव में लगभग १ लाख पूंजीपति ही वोट दे सके और एक कठपुतली सरकार की स्थापना भी हो गयी। अमेरिकन गवर्नर जनरल 'विटो' पावर के साथ वहां का शासन करता था। भविष्य में स्वतन्त्र कर दिये जाने की बात हमेशा से चलती रही किन्तु वह कार्यरूप में कभी परिणत न हो सकी।

प्रथम महायुद्ध के बाद विजयी अमेरिकन पूंजीपतियों ने फिलीपाइन पर अपना पंजा और भी दृढ़ता से जमा लिया। उन्होंने औपनिवेशिक शासन-पद्धति के अनुसार एक कठोर गवर्नर जनरल यहां का भी शासन करने को भेजा। जनरल उड ने पुरानी प्रथाओं को दो टूक कर दिया। उडरो विलसन द्वारा दी गयी छोटी-मोटी सुविधाओं को हटा दिया गया। कौंसिल आव स्टेट, जो एक सलाहकार समिति के रूप में थी, भंग कर दी गयी, कैबिनेट विभाग को धारासभा से अलग कर सेना के आदमियों को ही अपने सहकारी रूप में स्वीकार किया।

फिलीपाइन के कमजोर धनिकवर्ग ने प्रथम ही अपनी उन्नति के लिये, राज्य की सहायता प्राप्त करने के उद्देश्य से, 'राष्ट्रीयकरण' का प्रयोग किया था। उन्होंने मनीला रेल रोड, नेशनल बैंक, नेशनल कोल कम्पनी तथा नेशनल डेवलपमेण्ट कोआपरेशन की स्थापना की थी। वालस्टीट जनता की ऐसी मिल्कियत के उदाहरणों को नहीं देखना चाहता था। जनरल वुड ने उपरोक्त संस्थाओं को जबरन व्यक्तिगत पूंजीपतियों के हाथों सौंप दिया।

फिलीपाइन के पूंजीपतियों ने स्वतन्त्रता की आवाज को बराबर जीवित रखा। इसके द्वारा उन्होंने अपने देश की जनता पर काफी राजनीतिक प्रभाव जमाया, छानबीन तथा वाद-प्रतिवाद प्रारंभ हुये। वुड के बाद आये हुये गवर्नर जनरल ने साधारण सुविधाओं को पुनः प्रदान कर दिया।

१६३१ में जापान चीन में घुस पड़ा। द्वितीय महासमर अनिवार्य प्रतीत होने लगा। अतः एक बार फिर फिलीपाइन की स्वतन्त्रता को उठाकर ताक पर रख दिया गया। रूजवेल्ट शासन के अन्तरगत १६३४ का 'स्वतन्त्रता सम्बन्धी विधान' पास किया गया। इस विधान के अनुसार १६३५ में औपनिवेशिक स्वराज्य तथा ४ जुलाई १६४५ में पूर्ण स्वराज्य देने का वायदा किया गया। बाद में आकर ४ जुलाई १६४५ में इस तिथि को टाल दिया गया। १६३४ से आज तक के बारह वर्ष बहुत ही मनहूस रहे। द्वितीय महायुद्ध ने पुनः सारी प्रतिज्ञाओं और प्रश्नों को कसौटी पर ला रखा।

अमेरिकन लिबरेशन के बाद फिलीपाइन पर लगायी गयी सेंसरशिप अक्टूबर से हटने लगी। द्वीप के अन्दर बढ़ती हुयी समस्याओं ने, जो गृहयुद्ध की भूमिका तैयार कर रही थीं, ट्रूमैन शासन के लिये अमेरिकन जनता को दमन का पाठ

(शेष पृष्ठ १६ पर)

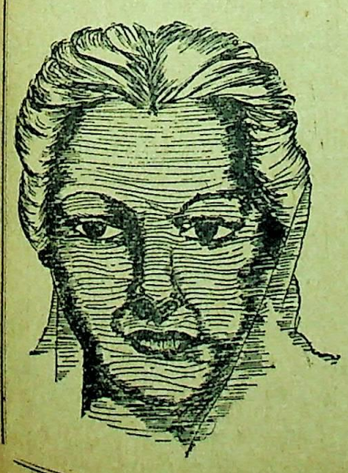

चार कहानियां
तिरंगा टाइटिल
७ इक रंगे चित्र

मां का स्वर्ग

मूल्य २)

लेखक व चित्रकार—

जयन्त

(भूतपूर्व प्रधान-सम्पादक साप्ताहिक वीर अर्जुन सम्पादक "मैं भूल न सकूं" कहानी-संग्रह)

प्राप्ति स्थान—

प्रकृति-पुरुष, कला-मन्दिर,

आर्यनगर, ज्वालापुर (जि० सहारनपुर)

ताज का शिल्पी

[श्री विराज]

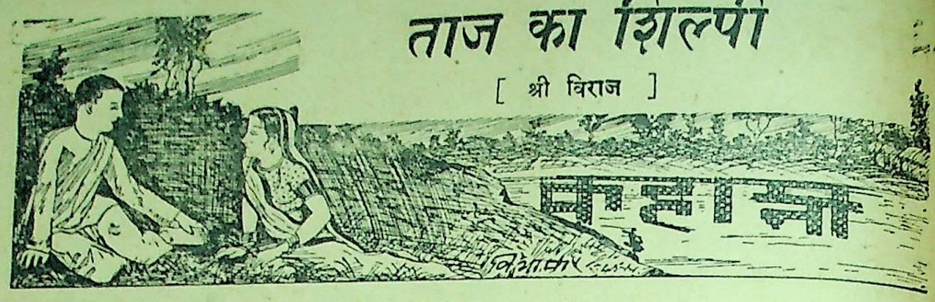

आगरे के किले में सम्राट् शाहजहां के अन्तिम दिन एक एक करके बीत रहे हैं। कितने लम्बे और भयानक दिन हैं ये! सवेरा होता है तो शाम होने में नहीं आती और शाम होती है तो सवेरा बहुत दूर जान पड़ता है।

सम्राट् बहुत तंग जगह में कैद हैं। उन्हें प्रायः सारा दिन एक ही कोठरी में काटना पड़ता है। अपने बाप के विरुद्ध षड्यन्त्र करके राजसिंहासन लेने वाले शाहजहां को इन दिनों की वेदना व्यथा साधारण की अपेक्षा कई गुनी अधिक जान पड़ती है। शायद उन्हें अब पितृ-हृदय के अधिक रहस्य ज्ञात हो गए हैं और वे पुत्र के दुर्व्यवहार से पिता का हृदय किस प्रकार चिर जाता है, इसे पहले से ज्यादा समझने लगे हैं। उन्हें शारीरिक कष्ट की अपेक्षा मानसिक कष्ट कहीं अधिक है। पश्चाताप की ज्वाला उनके शरीर को क्षीण करके उनसे भीषण प्रायश्चित करवा रही है।

सम्राट शाहजहां अगर अकेले होते तो शायद दृढ़तापूर्वक इन सब कष्टों को सह सकते, परन्तु उनकी स्नेहमयी कन्या रोशनआरा, औरङ्गजेब पर दबाव डालकर उनकी सेवा करने के लिए उनके पास ही रहने लगी है, इस कारण सम्राट का हृदय कुछ कच्चा सा हो गया है। उनकी जन्मजात भावुकता इन दिनों और भी अधिक हो उठी है। वे छोटी २ बातों पर रो उठते हैं। कभी-कभी हंसते भी हैं, परन्तु उनकी पुत्री रोशनआरा तक को वह हंसी पराई मालूम पड़ती है।

कभी वे सोचते 'रोशनआरा की आकृति मुमताज पर गई है। तभी तो वह मुझे इतना प्यार करती है।' पत्नी की स्मृति से उनकी आंखों में आंसू भर आते। वृद्धावस्था हो, शोक के दिन हों, सुकुमारी पुत्री पास हो, तब ऐसा होना ही स्वाभाविक है।

फिर न जाने कितनी सोचने योग्य और कितनी न सोचने योग्य बातें उनके मन में आने लगती। 'कन्या का विवाह न हो तो पिता का वृद्धावस्था अच्छी तरह बीत जाया करे। रोशनआरा मेरी कितनी सेवा करती है। और जहांनारा? वह तो इस कैदखाने में कभी भूल कर भी नहीं फटकी। कृतघ्न कहीं की।'

उन्होंने सिर उठाकर रोशनआरा की ओर देखा, जो उनके लिए कोई औषध तैयार कर रही थी। क्षणभर वे उसकी ओर देखते रहे। रोशनआरा तन्मय होकर अपने काम में व्यस्त थी। सम्राट् शाहजहां सोचने लगे 'ओह बेचारी का ब्याह नहीं हुआ। इतना रूप, यौवन और राजपुत्री होने का लाभ ही क्या, यदि उपयुक्त वर न मिले!.....पर अभी तो ब्याह का वक्त एकदम बीत नहीं गया है, अभी भी ब्याह हो सकता है।.....पर वह वक्त भी बीत जायगा और मैं अपनी आंखों से इस हठीली कन्या को दूसरे किनारे पर देख कर नहीं जा सकूंगा। हठीली तो है.....पर प्रेम भी कितना करती है।' फिर उनकी आखें सजल हो उठीं। 'रोशन, ओ रोशन बिटिया।

रोशनआरा ने मुंह घुमा कर अपनी बड़ी बड़ी आंखों से उन्हें निहारते हुए कहा जी!'

'बिटिया, यहां तो आ!'

रोशनआरा अपना काम छोड़ कर आकर सम्राट् के पलंग पर ही बैठ गई। सम्राट बोले 'बिटिया, ताज को देखने का मेरा बड़ा मन करता है। तू औरंगजेब से कह कर देख, शायद वह इस दीवार में कोई छेद करवाने को मान जाय, जिस से मैं ताज को देख सकूं। जमना के पार ही तो ताज है?

'मैं आजही उससे कहूंगी। पर अब्बा मेरा मन उससे कुछ भी कहने को नहीं होता। उससे कुछ मांगते, कुछ अनुरोध करते ग्लानि-सी होती है। उससे कोई चीज मिल जाने पर भी आनन्द या संतोष नहीं होता, उलटा यही लगता रहता है कि अगर यह प्राप्त नहीं हुई होती तो अच्छा रहता।'

'बिटिया, फिर तू उससे मत कहना। मेरा अपना मन उससे कुछ कहने को नहीं होता।'

'नहीं बापू, यह बात तो मैं उससे कहूंगी ही। मेरा अपना मन ताज को देखने का होता है। मेरा ख्याल है कि औरंगजेब इस बात के लिये तैयार हो जायगा।'

\+ + ×

शाहजहां के कमरे में किले की दीवार में एक छोटा सा छेद करवा दिया गया और अब वे जब चाहें ताजमहल को देख सकते हैं।

शुक्ला चतुर्दशी की रात्रि है। जहां तक दृष्टि जाती है, सारा संसार उज्वल चांदनी में स्नान कर रहा है। सुनिल आकाश में तैरता हुआ चन्द्रमा तो सम्राट् को नहीं दीख रहा, परन्तु उससे बहती हुई ज्योत्स्ना की अजस्र धारा मैदान पर वृक्षों पर, यमुना के जल पर और ताजमहल पर पड़ रही है, यह सम्राट् उसी छोटे से छेद की राह से देख पाते हैं। इस आनन्दमयी ज्योत्स्ना की एक किरण भी तो उनकी इस काला कोठरी में नहीं आ पा रही है।

सम्राट् का मन ग्लान हो उठा। श्वेत मर्मर का ताजमहल यमुना की तरंगों के पास खड़ा हुआ शुभ्र ज्योत्स्ना में नहा रहा है। और उस के अन्दर शांत भाव से मुमताजमहल सो रही है। सम्राट एकटक उसी ओर देख रहे हैं। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि मुमताज की चिरनिद्रा कुछ देर के लिए टूट जाय और वह आकर इस ओर के झरोखे में से झांकने लगे? अपनी इस काव्यमयी कल्पना से सम्राट् कुछ पुलकित हो उठे।

परन्तु वे पागल नहीं हैं। वे जानते हैं कि ऐसा नहीं हो सकता। जो चिरनिद्रा में सो गई है, वह लाख कामना करने पर भी जाग नहीं सकती, फिर झरोखे पर आयेगी कैसे?

परन्तु वह झरोखे पर कोई तो आया है। मर्मर की सफेद दीवार में बने झरोखे में से उसका काला सिर स्पष्ट दिखाई पड़ रहा है। सम्राट् ने अपनी आखों को मला। 'कोई न कोई है तो अवश्य, परन्तु दूर होने से पहिचाना नहीं जाता.....परन्तु इतनी रात गये ताजमहल में हो कौन सकता है?' सम्राट् कुछ भी निश्चित न कर सके।

परन्तु उनकी उत्सुकता शांत न हुई। सोई हुई रोशनआरा को उन्होंने उठाया। रोशनआरा उठी तो अनमने भाव से परन्तु ताजमहल के झरोखे में से झांकते हुए सिर और मुख को देखकर उसका अनमनापन जाता रहा। ऐसी भयंकर आकृति उसने जीवन में कभी न देखी थी। आकृति का मुख कुरूप नहीं था, परन्तु उसकी आंखों से, उसके होंठों से, उसके रोम रोम से दुःसह घृणा फूटी पड़ रही है। रोशनआरा को यह भी लगा कि उस व्यक्ति की घृणा किले में ही स्थित किसी व्यक्ति की ओर है। शायद वह उन्हीं की ओर है।

'बापू, यह तो कोई बड़ी ही डरावनी आकृति है। जब इसे देखती हूं तो लगता है कि यह मुझ ही पर अपार घृणा उंडेले दे रही है?

'पर आखिर यह है कौन? और ताज में इस समय है किस लिए?'

'उसके गोरे माथे पर बांई ओर एक काला दाग?' सम्राट् कुछ याद सा करने लगे।

सहसा रोशनआरा चीख मार कर पीछे हट गई।

'क्या हुआ बिटिया?' कहते हुए सम्राट् आगे बढ़ कर छेद में से स्वयं देखने लगे।

'वह अपने दोनों हाथ सामने को फैला खड़ा है।' सम्राट ने साधारण स्वभाव से कहा। उनकी दृष्टि कुछ कमजोर थी।

'उसके दोनों हाथों के अंगूठे कटे हुए हैं।' रोशनआरा की आवाज अब भी भय से कांप रही थी।

सम्राट को जैसे किसी ने जोर से धक्का दे दिया हो। उन्हें चक्कर-सा आ गया, वे वहीं भूमि पर बैठ गए। 'अंगूठे कटे हुए हैं।' उन्होंने लड़खड़ाती हुई आवाज में कहा 'तभी यह इतनी रात गए ताजमहल में उपस्थित है।'

'मेरा नाम तुमने पैसे के जोर से खरीद लिया' ताजमहल की ओर से आवाज आती हुई जान पड़ी 'कोई नहीं जानेगा कि ताजमहल बनाया किसने सब यही कहेंगे कि ताजमहल शाहजहां ने बनवाया। तुम शाहजहां, जिसके हाथ में एक मामूली मिस्त्री जितनी भी कारीगरी नहीं है, जो कि एक पत्थर के टुकड़े को सीढ़ी के ऊपर तक भी नहीं पहुंचा सकते, असली कलाकार को पीछे धकेल कर स्वयं आगे आ बैठे हो। लानत है तुम पर। काश! कि मेरे ये अंगूठे काट न दिये गए होते तो ताजमहल ही सर्वोत्तम समाधि न होता।'

आवाज धीमे धीमे निस्तब्धता में विलीन हो गई। रोशनआरा ने भी यह सब सुना। उसने सम्राट को सहारा देकर उठाते हुए कहा, 'बापू यह काम अच्छा नहीं हुआ।'

सम्राट उठकर खड़े हुए। छेद के पास जाकर उन्होंने फिर ताजमहल को देखने की कोशिश की, परन्तु अब वहां झरोखे का काला सिर फैल कर सारे ताजमहल पर छा गया था और उसकी घृणा बरसाती हुई डरावनी मुख मुद्रा के अतिरिक्त और कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता था।

उसके बाद सम्राट को ताजमहल कभी दिखाई नहीं पड़ा।

फिल्म स्टार

बनने के इच्छुक शीघ्र लिखें, कुछ पढ़ा होना आवश्यक है।
रंजीत फिल्म आर्ट कालेज 18 रावीरोड
(V. D.) लाहौर।

CC-0. Haridwar. Digitized by eGangotri

मेरे जीवन की झाँकियां

फिरोजपुर जेल के अनुभव (२)

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

★

(३)

पंजाब के मालवा और मांझा नाम के प्रदेश अपने शारीरिक बल और जोश के लिये प्रसिद्ध हैं। पंजाब का वह पुराना कौमी गीत अब लोग भूल गये हैं, जिसका आरम्भ 'पगड़ी सम्भाल ओ जट्टा' इस पद से होता था। उसके अन्तरा का निम्न लिखित पद इन्हीं दो प्रदेशों पर अभिमान प्रकट करता है।

मांझे दे जोर नाल, मालवे दे शोर नाल,
कदी नइयों हारना।

फिरोजपुर भी पंजाब के इसी जोरदार प्रदेश का हिस्सा है। सारे भारतभर से सरकार जितने सिपाहियों की भरती करती है उसका लगभग तीन चौथाई हिस्सा पंजाब से लिया जाता है और उस तीन चौथाई में से कम से कम एक चौथाई हिस्सा उस इलाके से भरती होता है, जिसका केन्द्र फिरोजपुर है। गुरु गोविन्दसिंह ने जिन 'चिड़ियों' से 'बाज' को परास्त किया था और अंग्रेजी सरकार जिनके भरोसे पर दुनिया को ललकारने की हिम्मत करती है, उन सिपाहियों की जन्म देने वाली भूमि इन्हीं इलाकों में हैं।

यदि आप किसी इलाके की मानवी विशेषताओं को परखना चाहें तो उसके केन्द्र में बने हुए जेल का अध्ययन कीजिये। वहां आपको मनुष्य-प्रकृति का काला रूप अपने अकृत्रिम ढंग पर दिखाई देगा। दिल्ली जेल में हमने पूछताछ करके देखा तो प्रतीत हुआ कि जेल में आये हुए अपराधियो में से अधिकतम दीवानी मुकदमों में आये हुए या तो चार सौ बीस के अपराधी हैं या गठकतरे अथवा चोर हैं। फौजदारी के अभियुक्त दिल्ली जेल में तभी आते हैं जब कोई सार्वजनिक हलचल उत्पन्न की जाय। स्वभाव से दिल्ली का वर्तमान प्रांत मारकाट के विरुद्ध है।

फिरोजपुर के जेल में हमें इससे बिल्कुल विपरीत दशा दिखाई दी। वहां दीवानी मामलों के अभियुक्त बिरले ही आते थे। यदि मैं यह कहूं कि वहां के नब्बे फीसदी अभियुक्त डकैती हत्या या दंगे फिसाद के मामलों में अभियुक्त बना कर लाये जाते थे, तो अत्युक्ति न होगी। हमारी बारक का पीली वरदी वाला नम्बरदार अकबरखां डकैती और हत्या के अपराध में जन्म कैद भोग रहा था, हमारा मुशक्कती लगभग सत्तर साल का बुड्ढा था। और वह बाजार झगड़ेमें छुरे से एक आदमी को मारने के अपराध में जेल आया था। मेरी कोठरी के दांयी ओर एक मशहूर डाकू रखा गया था। जब पहले दिन कोठरियां खुलने पर वह बाहर निकल कर आया, तो उसे सब लोग आश्चर्य से देखने लगे। वह कोई छः फुट से डेढ़ दो इंच ऊंचा लगभग तीन मन का खूब हृष्ट पुष्ट जवान था। उसके हाथ में माला थी और होठों पर 'वाह गुरु वाह गुरु' के शब्द। हम लोगों के पूछने पर उसने उत्तर दिया कि भला मेरा जेल से क्या वास्ता? मैं तो खेती करता और वाह गुरु का जप करता था, मुझे पुलिस वाले यूंही पकड़ लाये। उसकी शकल सूरत से डाकू होने की सम्भावना हो सकती थी, परन्तु उसकी माला और होठों को देखकर यह भान होने लगता था कि यदि पुलिसवालों ने उसका दुश्मनी से चालान नहीं किया तो भूल से तो अवश्य ही किया है। दोपहर के समय जब सुपरिन्टेन्डेन्ट जेल के निरीक्षण के लिये आया और उसने पूछा कि 'क्या तुम्हें कुछ चाहिये?' तो उस जवान ने उत्तर दिया:— 'साहब और क्या चाहिये, बस ग्रन्थसाहब की किताब मंगा दो। उसके जाप से जेल के दिन कट जायंगे।'

यह थी पहले दिन की बातें। लगभग एक सप्ताह में हम लोगों से उसकी बेतकल्लुफी हो गयी। तब उसने डकैतियों और हत्यायों के रोमाञ्चकारी वर्णन बड़े गौरव के साथ सुनाने आरम्भ कर दिये। जो घटनायें वह सुनाता था उनमें वीरता के साथ नृशंसता और नीचता का काफी मिश्रण और रहता था। इसका दूसरा साथी बीकानेर का एक राजपूत था। वह कम समझदार और अधिक क्रूर था। वह जब अपनी क्रूरता की कहानियां सुनाता था, तो गर्व से छाती ठोकता और हंसता था। वह मनुष्य-प्रकृति का बीभत्सतम रूप था। कुछ दिनों तक तो हम समझते रहे कि वह सरदार अपने कारनामे सुनाने में बहुत अत्युक्ति से काम लेता है, परन्तु एक दिन हमें उसका 'कारनामा' आंखों से देखने का अवसर मिल गया। तब हमारी समझ में आ गया कि उसके माला वाले हाथ और वाह गुरु वाले होठों के पीछे बहुत कुछ छुपा हुआ है।

बात यों हुई। पंजाब के जेलों में पठान और सिक्ख कैदियों की प्रतिस्पर्धा परम्परा से चली आयी है। वस्तुतः वह प्रांत की साम्प्रदायिक दशा का एक छोटा सा नमूना है और अंग्रेजी सरकार इन दो लड़ाकू जातियों के परस्पर विरोध से पूरा लाभ उठाती है। जहां सिक्ख कैदी अधिक हों वहां पठान नम्बरदार रखा जाता है और जहां पठान कैदी अधिक हों वहां सिक्ख नम्बरदार रखा जाता है इसी तरह भारत का साम्राज्य चलता रहा है और इसी तरह पंजाब जेलें। अकबरखां जुबान का जरा कड़वा था, सिक्ख कैदी उससे बहुत जलते थे, अब तक वह चुप थे, परन्तु इस नये मशहूर अभियुक्त के आने पर सिक्ख कैदियों ने निश्चय किया कि पठान नम्बरदार को सजा दी जाय। सजा देने का काम भी हमारे पड़ौसी ने अपने ऊपर ही लिया। सुबह जब नम्बरदार ने हाथ मुंह धोने और हवा खाने के लिये उसे खोला और खोलकर दूसरी कोठरी की ओर जाने के लिये मुंह फेरा तो सरदार ने अपनी पगड़ी सिर पर से उतार कर ऐसे दक्ष से फैंकी कि नम्बरदार के गले में फंदा पड़ गया। सरदार ने फंदे के जोर से नम्बरदार को अपनी कोठरी के घेरे में खैंच लिया और उसकी छाती पर चढ़ कर गला दबा दिया। तीन मन का बोझ ही बहुत था, उस पर गला दबाया गया तो नम्बरदार तत्काल बेहोश हो गया, और शायद थोड़ी ही देर में मर भी जाता, यदि एक पहरेहार सिपाही उधर न आ निकलता। उसने बाहर से झांक कर देखा तो वह भागा हुआ ड्योढ़ी में गया और एलार्म का घण्टा बजा दिया। थोड़ी ही देर में सरदार की कोठरी के सामने जेल के बाबुओं, सिपाहियों और नम्बरदारों की भीड़ लग गई पर आश्चर्य की बात यह देखी कि अन्दर जाकर अकबर खां को छुड़ाने की हिम्मत किसी की न पड़ी। सब उस प्रसिद्ध डाकू के पास जाते डरते थे। उसकी भूखे बाघ की सी हुंकारें दूर तक सुनाई दे रही थीं। उस समय जेल के बूढ़े दरोगा ने हिम्मत दिखाई। वह अकेले आगे बढ़ गये और झपट कर सरदार के केशों को पकड़ लिया और दोनों हाथों से उन्हें खैंचते हुए सरदार को कोठरी के दरवाजे से बाहर ले आये। तब तो बहुत से बहादुर निकल आये। जमादार लाठियों से और नम्बरदार कमर की पेटियों से सरदार पर चारों ओर से वार करने लगे। लगभग १० मिन्ट की खैंचा-तानी के बाद सरदार को रस्सियों से बांधा जा सका।

(४)

एक दिन प्रातःकाल जब मैं कोठरी का ताला खुलने पर बाहर आया तो क्या देखता हूं कि ड्योढ़ी के अन्दर के दरवाजे के सामने खुले सहन में लगभग सौ नये कैदी बैठे हुए थे। सब के कपड़े उजले जमींदारी ढंग के थे। उसमें से कोई भी ऐसा नहीं मालूम होता था जिसे पेशे से अपराधी कहा जा सके। उनमें बुड्ढे भी थे और लड़के भी। कइयों के तो डाढ़ी मूंछ के बाल भी अभी पूरी तरह नहीं आये थे। पूछने पर मालूम हुआ कि सब एक ही गांव के हैं। बात ही बात में दो आदमियों की तकरार हो गई। जिस पर दोनों के मददगार लाठियों और गंडासों से लैस होकर भिड़ गये। दर्जनों घायल हुए। जिनमें से २-३ मर भी गये। पुलिस ने गांव के प्रायः सभी बालिक मर्दों को पकड़ लिया है। हमारे यह आश्चर्य प्रकट करने पर कि इतनी छोटी उम्र के जवान जेल में क्यों आ गये? एक बुजुर्ग ने उत्तर दिया—'बाबूजी, ए गुरद्वारेच मत्था टेकन आये हैं' अर्थात् यह लोग गुरुद्वारे को माथा टेकने आये हैं। इन इलाकों में जब-तक कोई नौजवान फौजदारी में जेल की यात्रा न करले तब-तक समझा जाता है कि वह असंस्कृत है, पूरी तरह मर्द कहलाने के लायक नहीं है। सब प्रसन्न और अपने काम से संतुष्ट नजर आते थे।

एक अराई (मुसलमान जमींदार) परिवार हमारे सामने ही दो बार जेल में आया। परिवार से यहां मेरा अभिप्राय पिता और उसके चार पुत्रों से है। सभी कम से कम डाई-डाई मन के होंगे। खूब सुन्दर डीलडौल के, साफ रंग के पले हुए शरीर वाले। उनसे प्रायः बातचीत होती थी। पूछने पर विदित हुआ कि उनकी खासी बड़ी जमींदारी है, कई सौ भैंसें हैं और गांव में पक्का मकान भी है। परिवार के बुजुर्ग से मैंने पूछा कि आप लोगों के यहां इतनी लड़ाइयां क्यों होती हैं? उसने बिलकुल गांव के सादे ढंग पर जो व्याख्या की वह बहुत मनोरंजक थी। उसने कहा कि हम लोगों के पास खाने पीने की कमी नहीं, पेटभर कर खाते और भैंस का दूध पीते हैं जबतक फसल का काम रहता है तब-तक तो हमें लड़ाई-झगड़े की फुरसत नहीं रहती जब फुरसत के दिन आते हैं और अन्दर का खून जोर मारता है तब सिवाय लड़ने के और काम ही क्या है! एक ने दूसरे को कोई ताना दिया या मजाक किया, इसी पर गाली गलौच हो जाता है। सर्दियों में रात को घर के बाहर आग जलाकर हाथ तापने के लिये बैठते हैं और गर्म होने के लिये शराब पीते हैं। उस वक्त अगर किसी ने आकर किसी गाली या ताने की खबर सुनादी तो एकदम जोश आ जाता है और हम लोग 'डांगें और छुरियें' लेकर हमले के लिये निकल पड़ते हैं। अगर ऐसा न हो तो हमारे खून की गर्मी कम न हो।

उन्हीं दिनों एक अभियुक्त आया जिसपर डकैती और कत्ल के बारह मुकदमें चल रहे थे। उनमें से कुछ मुकदमों में उसपर सब मिलाकर कोई चौबीस साल

कारागार का दण्ड मिल चुका था। कुछ मामले छोटी अदालत में थे, कुछ ...न में थे और दो-तीन की अपील ...ईकोर्ट में चल रही थी। उसे किसी ने ...ला दिया कि मैं जालन्धर के मशहूर ...जदारी के बैरिस्टर रायजादा भगतराम ...भानजा हूं। मामाजी के बारे में यह ...शहूर था कि वह अभियुक्तों को फांसी ...तख्ते पर से छुड़ा लाने में बहुत ...उद्धहस्त थे। रिवायात थी कि जब कोई ...आदमी गडासा लेकर दूसरे को मारने ...लिये घर से निकलता और उसे दूसरा ...आदमी यह कह कर रोकता कि 'अरे, ...त्ल करेगा तो फांसी पर चढ़ेगा।' तो ...ह उत्तर देता था कि अभी भगतराम ...जिन्दा हैं, कोई डर नहीं। वह डाके ...ा अभियुक्त मेरे पास यह प्रस्ताव लेकर ...आया कि मैं मामाजी से उसकी सिफा-...रिश करूं ताकि वह अपील में उससे ...कम फीस ले लें। इसी प्रसंग में उससे ...उससे बहुतसी बातें हुई। बातचीत में ...उसने माना कि उसकी पार्टी ने एक-एक ...रात में तीन-तीन चार-चार स्थानों पर ...डाके डाले हैं। मैंने उससे पूछा कि यह ...कैसे सम्भव है? तो उसने बतलाया कि ...हम लोग घोड़ों पर चढ़ कर डाका डालते ...हैं। रात के बारह बजे एक जगह डाका ...डाला, दो बजे दूसरी जगह और चार ...बजे तीसरी जगह इसमें क्या मुशकिल ...है? मेरे यह पूछने पर कि ऐसा करने से ...आप लोगों को क्या लाभ है? उसने ...उत्तर दिया कि 'यही तो एक युक्ति है ...जिस से हम सजा से बच सकते हैं।' ...अपनी युक्ति को समझाने के लिए उसने ...बतलाया कि मान लीजिये कि हमने एक ...ही रात में तीन जगह डाका डाला और ...तीनों में हमारा चालान होगया, जब ...तीनों मुकदमों में गवाहों से अलग अलग ...जिरह की जायेगी तो उन्हें डकैती के समय ...के बारे में उलझा देना और एक दूसरे ...की बात को काट देना कुछ भी मुश्किल ...नहीं। मानलो कि एक मुकदमे के ...गवाह ने कहा 'डाका आधी रात के ...समय पड़ा, हमारे वकील ने कहा कि ...कितने बजे थे, होंगे कोई दो, गवाह ...उत्तर देगा शायद दो बजे हों। दूसरे ...मुकद्दमे के गवाह ने भी यदि उसी रात ...के बारे में वैसा ही उतर दे दिया तो ...दोनों गवाहियां रद्द हो गईं, क्योंकि एक ...आदमी एक ही समय में दो जगह डाका ...कैसे डाल सकता है? इसी प्रकार की ...और भी बहुत सी युक्तियें उस अभियुक्त ...ने हमें बतलायीं।

एक बहरा और गूंगा अभियुक्त बहुत ही मनोरंजक था। वह शायद बारहवीं या तेरहवीं बार जेल में आया था, वह गठकतरा था। अपने अपराधों और उन पर मिले हुए दण्डों की विस्तृत कहानी सुनाने में उसे बड़ा मजा आता था। पाठक सोचेंगे कि बहरा और गूंगा विस्तृत कहानी कैसे सुना सकता है? वे विश्वास करें कि जैसी विशद रीति से आपबीती घटनाओं को वह गूंगा सुनाता था, वैसे मैंने बहुत कम सुनी हैं। आंख, मुंह और हाथों के इशारे से वह आल्हा-ऊदल के गानों का सा समां बांध देता था। उसने अपने खास इशारे बना रखे थे। रेल का वर्णन करना हो तो दोनों हाथों को पहिये की तरह चला कर सीटी बजाने लगता था। वह घटना दिल्ली की है, यह सूचना देने के लिए हाथ से घण्टाघर बना देता था, बाल-बच्चों की चर्चा करनी हो तो हाथ से बच्चे को झुलाने के से इश... र देता था उसे आखिरी सजा एक मेम का बटुवा उडाने के अपराध में मिली थी। उसका वर्णन उसने निम्न प्रकार से किया। रेल का अभिनय करके बतलाया कि घटना स्टेशन पर हुई। सिर पर हैट का इशारा करके सूचित किया कि वह साहब लोग थी और बच्चे को दूध पिलाने का इशारा करके यह बतलाया कि स्त्री थी, इसके बाद जेब कतरने का अभिनय करके अपराध की ओर कलाई पर हाथ रख कर हथकड़ी पहनने की सूचना देकर सारी घटना सुनादी।

एक अन्धा अभियुक्त भी आया था, उस पर हत्या का अभियोग था। उसकी ओर से सफाई में कहा गया था कि अन्धा होने से उसको हत्या की जगह जाना और मारना दोनों ही बातें असम्भव हैं। दूसरी ओर से कहा गया कि उसका अन्धापन असली नहीं, बनावटी है। वह इस जेल में सिविल सर्जन द्वारा अन्धेपन की परीक्षा के लिए लाया गया था। मुझे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि उसके अन्धेपन की परीक्षा जेल में नहीं अपितु सिविल सर्जन साहब की कोठी पर हो रही थी। वह भी आंख देखने के औजारों से नहीं बल्कि नोटों की गड्डियों से; अभियुक्त के रिश्तेदार सिविलसर्जन की मेम के चरणों में जितने नोट चढ़ा चुके थे, वह उससे दूगने मांग रही थी। मेरे जेल से निकलने तक सौदा पूरा नहीं हुआ था, आशा हो रही थी कि मेम साहब के पास पूरी राशि पहुंचते ही अभियुक्त को अधेपन का प्रमाणपत्र मिल जायगा अन्यथा आखें वाला होने का प्रमाण पत्र तो तैयार ही पड़ा है। यह सिविल सर्जन साहब पारसी थे। इनके बारे में पाठक अगले लेख में बहुत कुछ पढेंगे।

—★—

पञ्जाब युनिवर्सिटी द्वारा नियत
हिन्दी रत्न, भूषण तथा प्रभाकर
हिन्दी परीक्षाओं की
पाठ्य पुस्तकें
तथा सर्वोत्तम सहायक पुस्तकों (कुञ्जियों)
के लिये -
स्मरण रखिये। सूचीपत्र मुफ्त
पाल एण्ड कम्पनी
हस्पताल रोड, अनारकली लाहौर॥

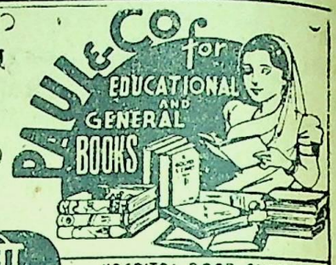

HOSPITAL ROAD, ANARKALI
LAHORE

१००००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

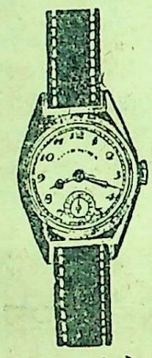

हमारे प्रसिद्ध काला तेल रजिस्टर्ड के सेवन करने से बाल हमेशा के लिए काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है, और उनको लम्बे, घूंघरवाले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न उगते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता है और सिर को ठण्डक पहुँचाता है। अतीव सुगंधित है। कीमत एक शीशी २॥), तीन शीशी पूरा कोरस की रियायती कीमत ६॥)। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक फैंसी म्यूट रिस्टवाच जोकि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्दन न्यूगोल्ड) बिल्कुल मुफ्त भेजी जाती है।

जरूरी नोट—माल पसंद न होने पर कीमत शीघ्र वापस करदी जाती है। तीन शीशी दवाई के खरीदार को डाक खर्च बिलकुल माफ, और चार अंगूठी लन्दन न्यूगोल्ड और चार घड़ियां बिलकुल मुफ्त इनाम दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार-बार हाथ न आयेगा। आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ-साफ लिखें।

मैनेजर—
लन्दन सी. कम्पनी (V.W. D.) पी. बी. १६५ लाहौर।

संतान होने की दवा

जिस स्त्री के सन्तान न होती हो केवल ७ रात तक मशहूर दवा मुहाफिज औलाद खिलाओ। इन सात रात में स्त्री के बदन के अन्दर का हिस्सा ठीक ऐसी हालत में आ जाता है कि आठवीं रात ..... स्त्री को गर्भ रह जाता है। इस औषधि की वजह से आज हजारों बहिनों की गोद में बच्चे खेल रहे हैं। जिस स्त्री को सन्तान न होती हो वह नीचे के पते पर पत्र लिख कर दवा मुहाफिज औलाद की शीशी वी० पी० पार्सल द्वारा मंगालें। १ शीशी काफी है जिसका मूल्य दो रुपया आठ आना २॥) है पारसल पर ॥-) महसूल लगेगा।

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४ देहली

Haridwar. Digitized by eGangotri

हमारा धारावाही उपन्यास

गंगाजल

[ले० — श्री इन्द्र बसावड़ा]

★

भग्न-हृदया शोभा घर के बाहर उस गन्दी गली में चल निकली। उसके मस्तिष्क में विचारों का तुमुल-युद्ध जमा हुआ था। उसने रौद्रस्वरूप धारण किया था; उसके नेत्र रक्तवर्ण हो रहे थे और इस अवस्था में उसे आस-पास का कुछ भी ध्यान नहीं था। वह कहां जा रही है; उसका क्या होना है, यह सब विचारने का उसने प्रयास ही नहीं किया, एक के बाद एक विचार आकर उसके मन में उठते और लय होते थे, और फिर भी जाने क्यों वह अपने मस्तिष्क पर से अधिकार खो रही हो, ऐसा उसे भासित होता था।

गली में अन्धकार था। म्यूनिसिपैलिटी का एक कंडील मन्द-मन्द जल रहा था और उस अन्धकार को अधिक प्रगाढ़ और भयंकर बना रहा था।

अनिल के घर के द्वार के पास आकर वह एक क्षण रुकी। पर नहीं-नहीं, उसका अपना इस संसार में अब कोई नहीं। उसके लिए जीवन अब नितान्त शुष्क-निस्सार है, और ये विचार आते ही वह पागल की तरह तेजी से दौड़ने लगी।

शहर के बाहर आकर एक पल वह ठहरी। उसने आकाश की ओर दृष्टि डाली। आकाश में ऊपर असंख्य तारे झगर-मगर करते थे और मानो उसे अपने देखकर हंसी करते थे--' शोभा-शोभा! तेरा कोई भी नहीं-- ह-ह-ह तेरा कोई भी नहीं इस संसार में।'

'हां, मेरा इस संसार में कोई भी नहीं, शोभा गुनगुनाई। दाईं ओर एक छोटी-सी नदी बहती थी। उसमें आकाश की तारिकाओं का क्षीण प्रतिबिम्ब पड़ता था। एक क्षण के लिए शोभा नीचे उतरी। घटाटोप वृक्षों और तारिकाओं का रम्य प्रतिबिम्ब उसने देखा। उसे लगा- उसका जीवन ऐसा ही गाढ़-तिमिराच्छन्न है। वह ऊपर आई और उसने पुनः दौड़ना प्रारम्भ कर दिया।

लम्बा निर्जन मार्ग है। दोनों ओर सघन वृक्षावलि, झींगुर झंकार रहे हैं और शोभा दौड़ी जा रही है— दौड़ी जा रही है।

कहां तक वह दौड़ी? धौंकनी की तरह उसकी छाती उछल रही है, पर विश्राम लेना उसे सूझता ही नहीं।

सामने ही अब तो पर्वतमाला दिखाई पड़ती है। ऊंचे-ऊंचे वृक्ष भी पिशाचों की तरह खड़े मानों उसे निमंत्रण दे रहे हैं— 'आओ! आओ! तुझे हम अपना लेंगे। आओ! हममें से एककी तरह तुझे बना दें।'

आज शोभा के हृदय में डर नहीं। सामने और पतली-सी पगडंडी है जो पर्वत की बाईं बाजू जाती है। शोभा उसी मार्ग पर दौड़ रही है। मार्ग क्रमशः संकड़ा होता जाता है। आसपास कोई भी दिखाई नहीं देता। वन्य-पशु और जन्तुओं का स्वर उसके दर्शप्रदेश में गूंज रहा है, पर उसे सुनने की फुरसत नहीं।

तेजी से वह आगे बढ़ती जाती है। मार्ग में पड़े कंकर और कांटे शूल की भांति उसके पैरों में चुभते हैं, पीड़ा से वह एक सिसकारी कर उठती है, पर दूसरे ही क्षण उसकी अवहेलना कर वह दूने वेग से आगे बढ़ती है। बढ़ी ही जा रही है। रास्ता दिखाई न पड़ने पर वह सामने के वृक्षों की डालियों से टकरा जाती है- उसके वस्त्र कांटेदार झाड़ियों में उलझ कर चीर-चीर हो रहे हैं, पर इनकी परवाह उसे नहीं।

उसके वस्त्र फट गये हैं, पैरों में रक्त की धाराएं बह रही हैं। बाल अस्त-व्यस्त हो स्कन्ध-प्रदेश और मुख पर लहरा रहे हैं, पर मार्ग का अन्त नहीं आता। यह पगडंडी कहां तक जाती होगी? पर्वत पर का वन अधिक-से-अधिक सघन बनता जा रहा है, पर शोभा को इसकी दरकार ही नहीं। बाह्य जगत की अपेक्षा उसका आन्तरिक जगत् अधिक भयंकर, दारुण और प्रगाढ़-तिमिराच्छन्न है। तो फिर उसे बाह्य जगत की क्या दरकार?

ओह! यह पैर तले क्या कुचल गया है? शोभा अपना हाथ पैर की तरफ बढ़ाती है। ओह! यह लम्बा-लम्बा रस्सी जैसा चिकना-चिकना क्या होगा। पर सर्प की फुंकार सुनते ही वह उसे जमीन पर फेंक देती है और फिर दौड़ने लगती है।

ओह! शरीर अब तो टूट-टूक हुआ जा रहा है। जोड़ जोड़ में वेदना हो रही है- चलने की शक्ति भी अब नहीं रही।

नहीं-नहीं, पर ऐसे किस तरह हो सकता है? यह क्या रुकने जैसा स्थल है। उसके लिए जीवन में अब विश्राम करने योग्य कुछ है ही नहीं। चल! चल शोभा। इस प्रकार कैसे बनेगी?

और वह पुनः दौड़ पड़ती है।

वृक्ष कम होते जाते हैं। पगडंडी नीचे उतर रही हो, ऐसा मालूम देता है। हां, अब तो वृक्ष बहुत ही थोड़े दिखते हैं। प्राण की एक क्षीण रेखा भी दिखाई देती है। हां, आकाश! आकाश में झलकते तारागण-और सामने ही बही जाती है कलकल करती माता भागीरथी।

शोभा सरिता के पास आकर रुक जाती है। ठण्डा-ठण्डा पवन भी बह रहा है, दाहिनी ओर छोटी सी पगडंडी बल खाती हुई चली जा रही है।

गम्भीर-प्रवाह से गंगा की गोद में चिरकाल के लिए सो जाऊं तो? शोभा के हृदय में एक विचार उत्पन्न होता है। कलकल करती गंगा बह रही है- शीतल उसका जल है। यह इस दुग्ध हृदय को, इस दुग्ध मन को शान्ति प्रदान करेगी। सदा के लिए इसी में सोती रहूं तो! वह विचारती है।

इन्हीं विचारों में वह ऊंचे किनारे से पानी की ओर आगे बढ़ती है। अपने पैर शीतल जल में डाल कर एक क्षण वह शान्त बैठी रहती है। शीतल फर-फर करती हवा चल रही है और उसके बालों से खिलवाड़ कर रही है। उसकी चीर-चीर साड़ी की धज्जियां वायु-वेग से इधर-उधर लहरा रही हैं।

क्या जीवन में अब कुछ भी तत्व नहीं? जीवन उसके लिए क्या सर्वथा निःसार है? उसके हृदय में प्रश्न उठते हैं।

अनिल दादा हैं। बड़े भाई अनिल के हृदय में उसके लिए स्थान है। है? होता तो वे सान्त्वना देने—बहन को एक प्रेमभरा शब्द कहने भी नहीं आ सकते?

दूसरा कोई है? माता-पिता के हृदय में वात्सल्य का झरना तो कभी का ही शुष्क हो गया है। वह तो मरुभूमि-सम है। उसमें से उसे कुछ भी मिलने का नहीं- उससे उसे किंचित भी तृप्ति होने की नहीं। सुरेश! उसका देवर! वह बालक है। बाल्य-हृदय जितना पवित्र और स्नेहभरा होता है, वैसा ही उसका हृदय है, पर उसका स्नेह ऐसा ही रहेगा, इसका क्या भरोसा?

नहीं-नहीं, इस जीवन में अब उसे आशा का कहीं चिन्ह भी नहीं दिखाई देता।

पर मृत्यु! मृत्यु!! कितनी भयंकर? मृत्यु सहन करने की- मृत्यु की गोद में सोने की उसमें शक्ति है?

न, न नहीं! ओह! मृत्यु! मरना आसान नहीं। नहीं-नहीं! मुझसे मृत्यु की गोद में चिरकाल के लिए सोया नहीं जायगा।

और यह विचार आते ही वह फिर खड़ी हो जाती है और किनारे पर आकर, दाईं ओर की पगडंडी पर जोर से दौड़ने लगती है।

वायु सनसनाती हुई बह रही है। शोभा के फटे वस्त्र, उसके बाल हवा में फर-फर उड़ते जाते हैं, और शोभा दौड़ी जाती है-दौड़ी जाती है। आसपास का उसे कुछ भी भान नहीं।

कहां तक इस प्रकार दौड़ जायगी शोभा। पैरों में शक्ति नहीं। छाती धौंकनी की तरह फूल रही है। पैरों में फिर खून निकलने लगा है, कांटे और पत्थर सुकुमार पैरों में शूल की भांति छिद गये हैं और पगडंडी पर उगे हुये घास की जाल बना रहे हैं, इतना होने पर भी वह दौड़ती जाती है दौड़ी ही जा रही है!!

गंगा का उछलता नीर, 'गंगाजल आकाश के तारों का हास्य; वह निर्जन पगडंडी और उसके ऊपर दौड़ी शोभा!!!

ओह? पगडंडी के बीच में ही यह वृक्ष आया हुआ है। बस, शोभा बस!! उसका सिर वृक्ष से टकराया है; रक्त का एक धारा फूट निकलती है और धड़ाम शोभा मूर्च्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़ती है।

× × ×

परिचय

[गिरनार पर्वत की गोद में, जूनागढ़ शहर में, गुजरात के आदि कवि नरसिंह मेहता के ग्राम में श्री इन्द्र बसावड़ा का जन्म सन् १९११ में देव उठनी ग्यारस के दिन हुआ।

गुजराती होते हुए भी श्री बसावड़ा ने हिन्दी में अपना प्रथम उपन्यास 'घर की राह' हिन्दी जनता को भेंट दिया। स्व० प्रेमचन्दजी ने उनके इस उपन्यास की भूरि प्रशंसा की है। घर की राह का गुजराती में और अंग्रेजी में अनुवाद हो चुका है। श्री बसावड़ा ने हिन्दी में 'शोभा' 'बड़ेम्यां' कोयल इत्यादि और भी ग्रन्थ रचे हैं। हम उनका लिखा 'गङ्गाजल' पाठकों के सामने रखते हैं।]

लेखक

"राधे !" दादी मा-ताऊ जी की सास आखिरी पान चबाती चबाती और नाक के बड़े-बड़े छिद्रों में तम्बाकू ठूंसती बोल उठी-'अनिल को तू बालक मत समझना - हो !!!

'नहीं जी ! राधेमोहन काका-ताऊ जी खाट पर बैठे-बैठे हुक्का गुड़गुड़ाते बोले- 'मैं क्या नहीं जानता ?"

'और हां राधे ! शोभा को जैसे बने, तैसे साथही ले जाना । समझा दस हजार की बात है ।'

'अच्छा ! दस हजार की ? मैंने तो सुना था पांच हजार थे ।'

'ओ हो ! भले ही पांच हजार की हों; पर पैसा इन लोगों के पास थोड़े ही जाने दिया जा सकता है ? हां, राधे ! तुझे खबर नहीं गगा की सास की बात की ?

'नहीं' ताऊ जी बोले ।

'गंगा का पति दो हजार का बीमा करवा के मर गया ।'

'हां ।'

'फिर उसकी सास ने छोकरी को बाप के घर भेजा ही नहीं; और लड़की के कान ऐसे भरे ऐसे भरे कि उसने बापके घर जाने का नाम भी नहीं लिया ।'

'अच्छा ? फिर ?'

'फिर क्या राधे ! सारे रुपये सास ही डकार गई । और जब सब कुछ सास के पास आ गया, तब छोकरी बेचारी को लात मार कर निकाल दिया ।'

'ऐसा ?'

'हां नहीं तो ! पैसे की पूछ है । किस समय किसका मन बिगड़े; यह कैसे कहा जा सकता है ?'

'सच बात है ।'

'मैं तो कहती हूं कि तू अभी ही जा और अनिल से कहकर लड़की को घर बुलाने को कहा । कल जैसे ही घर आवे, तुरन्त मोटर में रख कर ले जा ।'

'पूछे बिना ही ?'

'अरे, इसमें पूछने की क्या बात ? अपनी लड़की और हम ही ले जावें, इसमें पूछना कैसा, किससे ? लड़की बेच तो दी ही नहीं न ?'

'पर उसके सास-ससुर की आज्ञा ?'

'राधे रे राधे तू भी बिल्कुल भोला ही रहा । अरे भाई ! किसी दिन सास-ससुर भी ऐसा कहते हैं कि हां भाई, लड़की तुम्हारी है-ले जाओ ?'

'हां, यह बात तो सत्य है ।'

'तो फिर धरम के काम में ढील कैसी ? रुपये पांच हजार की बात है-ऐसी वैसी बात नहीं-हां ।'

'हां, बात तो सच है ।' ताऊ जी ने तकिया और पास खींच, हुक्का गुड़गुड़ाते हुये कहा ।

'ठीक राधे ! तो मैं तो सो जाती हूं, तेरी मर्जी । जाना हो तो अभी अनिल को मिल आओ । नहीं तो फिर कल ! भगवान करे सो होय ।'

और 'हरि करे से होय' जपते-जपते ताऊजी की वृद्धा सास बराण्डे में जा बिस्तर पर लेटीं और माला फेरने लगीं ।

खाट पर पड़े-पड़े ताऊजी विचारने लगे-अनिल के पास अभी जाऊं ? रात के साढ़े बारह बजे हैं । वह सो गया होगा तो ? और ऐसे असमय जाकर ये सब बातें करूं ? पर क्या करें ? पांच हजार की बात है । शोभा के ये सब रुपये उसके ससुराल वाले हजम कर जायेंगे तो ? ओह ! ऐसा अन्याय किस प्रकार सहन हो सकता है ? इस हृदय में जो ज्वाला धधक उठती है, वह शोभा के लिए स्नेह और सहानुभूति के कारण है या ईर्ष्या के कारण ? छि ! मुझे ईर्ष्या क्या ? मुझे तो पुत्री का हित देखना है । पांच हजार !! पुत्री को फुसला, कमसे लेकर घर के बाहर निकाल दें तो ?

पर शिरीश बाबू-शोभा के ससुर ऐसे आदमी हैं क्या ? हों या न हों; पर धन देखकर किसका मन ललचाता नहीं ? नहीं-नहीं ऐसा होने क्यों दिया जाय ?

बस एक ही मार्ग है ! जैसे बने वैसे पुत्री को यहां से ले ही आना । लड़की आवेगी ? उसके विवाह के बाद उसकी सहानुभूति तो खो बैठे हैं । पर विवाह के बाद लड़की जाती है ससुराल, और विधवा होने के बाद जाना चाहिये बाप के यहां ! यही सनातन रीति है ? हो या न हो-वह मेरे घर की रीति तो है ही ।

'मैं पूछता हूं ।' ताऊ जी बोले ।

'कहो राधे ?' सास ने माला मनके सरकाते-सरकाते पूछा ।

'अनिल सो तो नहीं गया होगा न ?'

'कौन, अनिल ? अनिल सो सकता है भला ?'

'क्यों ?'

'वह कालेज की लड़की है न-क्या नाम है उसका-हमारे मुंह तो ऐसा नाम चढ़ता ही नहीं ।' सास बोली ।

'अच्छा साश्चर्य ताऊ जी ने पूछा ।

'हां, है कोई-कालेज की छोकरी, करुण-करुण उसके साथ बातें करें या सोवे ?'

'ऐसा ?'

'ऐसा क्या ? बात यह है कि रात के दो-दो बजे तक, पढ़ने का बहाना कर गप्पें लड़ाते हैं दोनों, फिर कहो कैसे सोवें ।

'हूं ? ताऊ जी गुनगुनाये ।

'तो राधे ! अनिल अभी सोया नहीं होगा ।'

ताऊ जी उठे । दाढ़ी पर हाथ फिराते उठे। सिर पर साफा बांधा और पहना कोट, हाथ ले ली लकड़ी, पैर में डाली जूतियां और चल पड़े ।

लाठी जमीन पर ठोकते वे रात्रि के एक बजे चल पड़े अनिल को मिलने ।

[क्रमशः]

नसों की निर्बलता तथा शक्तिहीनता के लिए सर्वोत्तम औषधि

मलहम Ointment

पुरुषों की नसों की कमजोरी और उसके फलस्वरूप मन्द काम-वासना को सतेज करने के लिए यह तैल बेजोड़ साबित हो चुका है । इसके लगाने से नसें मजबूत व बलिष्ट बनती हैं तथा पूर्ण रूपसे शक्ति प्राप्त होती है । सारांश में दम्पति को सच्चे सुख का अनुभव होता है । मूल्य प्रति पौट ५), डाक खर्च ॥≡) अलग ।

विस्तृत सूची पत्र मुफ्त मंगाइये ।

चाइनीज मेडिकल स्टोर

नया बाजार — देहली

और बम्बई—कलकत्ता—अहमदाबाद

—सेलिंग एजेन्ट्स—

दी नेशनल मेडीकल, स्टोर्स-आगरा ।
दी जनरल मेडीकल स्टोर्स-अजमेर ।
दी एलाईड केमिस्ट्स-जयपुर ।
श्री सरस्वती स्टोर्स—बीकानेर ।
मे. गिरधरदास जानकीवल्लभ—उदयपुर ।
वैद्यराज विश्वनाथ त्रिवेदी-मुजफ्फरनगर ।
मेसर्स मोहन ब्रादर्स-लश्कर ।
मेसर्स खरे ब्रदर्स—उज्जैन ।
मे० गोपीलाल चिरंजीलाल-श्रीमाधोपुर ।
दी गुजरात मेडीकल स्टोर्स-कानपुर ।
दी वर्मा मेडीकल स्टोर्स-शिकोहाबाद ।
मे० धारीवाल ब्रादर्स—जोधपुर ।
डी० पी० आयुर्वेदिक एन्ड यूनानी दवाखाना मोरेना ।

स्त्री की कमर टूट जाती है

अगर स्त्री का मासिक धर्म ठीक समय पर न आये या मासिक के दिनों में दर्द हो या माहवारी कम या ज्यादा आती हो तो इस तकलीफ से स्त्री की कमर में बहुत दर्द होता है । ऐसी को एक शीशी दवा कोरस सेवन करा देनी चाहिए । इस दवा के खाने से मासिक धर्म की सब खराबी ठीक हो जाती है । फिर हर महीना बिना किसी कष्ट के ठीक मात्रा में मासिक धर्म होने लगता है । हजारों स्त्रियाँ इस दवा से लाभ उठा रही हैं । एक शीशी दवा कोरस की कीमत दो रुपया आठ आना २॥) है । नीचे लिखे पते से पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा मंगा लीजिए ।

पारसल खर्च ॥-) लगेगा ।

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना

हिन्दी आफिस नं० ३६, दिल्ली !

Haridwar. Digitized by eGangotri

अंग्रेजी में अभिनन्दन पत्र

गत २८ सितम्बर की शाम को राधिकासिनहा इन्स्टीट्यूट में पटना के नागरिकों की ओर से राजेन्द्रबाबू तथा मजदूर सदस्य श्री जगजीवनराम का स्वागत हुआ। अभिनन्दन-पत्र श्री जगतनारायणलाल ने अंग्रेजी में पढ़ा। उत्तर में राजेन्द्रबाबू ने खूब मीठी चुटकी ली। उन्होंने कहा — 'अपने प्रान्त में अपने साथियों के बीच मैं अंग्रेजी में बोलने की बेवकूफी नहीं कर सकता।' उन्होंने उत्तर हिन्दी में ही दिया।

हिंदी में परीक्षा

हिन्दू विश्वविद्यालय के तृतीय वर्ष के सभी छात्रों ने अपने हस्ताक्षर के साथ एक आवेदनपत्र भेजने का निश्चय कर लिया है, जिसमें वे अधिकारियों का ध्यान सीनेट के निर्णयों की ओर दिलाते हुए कहेंगे कि इसी त्रैमासिक परीक्षा से ही हम लोग हिन्दी में उत्तर लिखने जा रहे हैं। अब तक सवा दो सौ छात्रों के हस्ताक्षर हो चुके हैं।

भारतीय इतिहास-परिषद्

भारतीय इतिहास-परिषद, पटना के सहायकमंत्री श्री गदाधर प्रसाद अम्बष्ठ लिखते हैं:—

भारतीय इतिहास-परिषद ने भारतीय राष्ट्र का इतिहास जिन बीस जिल्दों में तैयार करने की योजना बनाई थी, उनमें से एक जिल्द प्रकाशित हो गई है। यह जिल्द वाकाटक गुप्तकाल (१०० से ५५० ई०) की है, जो डा० रमेशचंद्र मजुमदार और डा० अनंत सदाशिव अल्तेकर द्वारा सम्पादित हुई है। इसका हिंदी-संस्करण भी तैयार हो रहा है जो संभवतः अगले कुछ महीनों में प्रकाशित हो जाएगा। इतिहास को एक दूसरी जिल्द भी, जो मौर्यकाल की है, छप रही है और शीघ्र ही प्रकाशित हो जाएगी। कुछ और जिल्दों पर भी काम हो रहा है। पाठकों को यह स्मरण होगा कि इतिहास की यह योजना १९३९-४० में तैयार की गई थी और १९४१ में सात जिल्दों पर काम आरम्भ हो गया था। पर अशांत वातावरण बने रहने के कारण इसकी प्रगति में बड़ी बाधा पड़ी। परन्तु, अब कार्य का पुनःसंगठन कर उसे तेजी से आगे बढ़ाने का प्रबन्ध हो रहा है, जिससे इतिहास की जिल्दें नियमित रूप से प्रकाशित होती रहें।

— हिन्दी

शार्टहैण्ड लेखकों की आपत्ति

लखनऊ के सेक्रेटरिएट के हिन्दी शार्टहैण्ड लेखकों की शिकायत है कि अंग्रेजी के शार्टहैण्ड लेखकों की अपेक्षा उनका वेतन आधा है। वास्तव में दोनों का काम एकसा है, बल्कि अंग्रेजी वालों का काम कुछ सरल भी है। इस पर भी अंग्रेजी और हिंदी के स्टेनोग्राफरों के वेतनों का यह विभेद निःसंदेह निन्दनीय है और ख्याल किया जाता है कि सरकार का वेतन कमीशन इस दिशा में सहानुभूति पूर्वक विचार करेगा।

हिंदी का भविष्य

होल्कर राज्य के अधिकारी वर्ग ने निश्चय किया है कि राज्य के विभिन्न विभागों में जितना अधिक हो सके, हिंदी का व्यवहार किया जाय। इस निश्चय को कार्यान्वित करने के लिए सरकार ने निम्नलिखित आज्ञाएं दी हैं—

(१) निम्नलिखित वस्तुओं को कार्यान्वित करने की सम्भावना है अथवा नहीं इस बात की जांच हो (क) हिंदी में निर्णय दिया जा सके, इस बात की सुविधा के लिए कानून की पुस्तकों का हिंदी में अनुवाद यथाशीघ्र छोटी कचहरियों में हिन्दी का व्यवहार। (ग) हिंदी ही में निर्णय लिखना तथा एक पांच वर्ष की योजना प्रस्तुत करना जिससे इस अवधि के अन्त तक न्यायविषयक सभी कार्यों में हिंदी का व्यवहार किया जा सके।

(२) अफसरों की नियुक्ति के लिए यह शर्त रख दी जाय कि उन्हें हिंदी की एक विशेष श्रेणी की परीक्षा में उत्तीर्ण होना होगा।

(३) प्रत्येक अफसर के पास एक अंग्रेजी हिंदी शब्द कोष होना चाहिए।

(४) कोष तथा जङ्गल के आय-व्ययों को लिखने के फार्म को हिंदी में छापना सम्भव है या नहीं—इस बात पर विचार करना चाहिए।

(५) पत्र-व्यवहार में यथासम्भव हिंदी भाषा को ही प्रयुक्त करने की चेष्टा की जाय।

(६) इन्दौर सिविल सर्विस के नियम हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में लिखे जायं।

(७) ये आज्ञाएं होल्कर महाराज की सेना पर लागू नहीं होंगी, क्योंकि वे भारतीय सेना के साथ रह चुकी हैं।

आज का हिन्दी-संसार

रेलवे और हिन्दी

रेलवे अधिकारीगण राष्ट्र-भाषा हिंदी तथा राष्ट्र-लिपि नागरी के प्रति कितने उदासीन हैं इसका प्रमाण उनके विज्ञापन हैं। इस सम्बन्ध में पत्रव्यवहार भी हो रहा है। लोकमत प्रस्तुत करने के विचार से हिंदी प्रेमी जनताको यह सूचना दी जारही है। आप का यह कर्तव्य है कि ऐसी अशुद्धियों का निराकरण करें। आपके अभिमत का विद्यालय स्वागत करेगा।

प्रधानमन्त्री नवयुग हिंदी साहित्य विद्यालय
हौजकटरा काशी।

राजस्थान हिंदी साहित्य सम्मेलन

१९४५ में हिन्दी विद्यापीठ के निमन्त्रण से अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ३३ वां अधिवेशन बड़े समारोह पूर्वक किया गया। इसी अवसर पर राजस्थान साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति की बैठक हुई जिसमें हिन्दी विद्यापीठ उदयपुर से कार्यालय जोधपुर चला गया। कार्यालय को उदयपुर से गये ग्यारह मास बीत गये हैं। इन ग्यारह महीनों की लम्बी अवधि में राजस्थान साहित्य सम्मेलन की सजीवता का कोई भी चिन्ह दृष्टिगोचर नहीं हुआ।

अवश्य ही कुछ समय पूर्व अजमेर के साप्ताहिक पत्र 'विजय' ने इस पर एक टिप्पणी दी। परिणामस्वरूप राजस्थान साहित्य सम्मेलन के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री जनार्दनराय नागर का एक वक्तव्य 'विजय' में ही प्रकाशित हुआ और आगे काम को चलाने के सम्बन्ध में कुछ सुझाव पेश किये गये। सोचा था, इसमें राजस्थान साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मुनि जिनविजयजी और प्रधानमन्त्री का ध्यान आकर्षित होगा। पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ।

यदि श्रीमान मुनिजी महाराज कुछ समय देकर भी राजस्थान साहित्यसम्मेलन को सजीव करने का प्रयत्न करें तो मैं समझता हूं प्रांत का कल्याण होगा। अब तक जितने संघर्ष, जितनी कठिनाइयां और मतभेद उत्पन्न हुए हों सब को एक ओर रख कर नये सिरे से काम को उठाना चाहिये। राजस्थान की साहित्यिक प्रतिज्ञाओं को एक सूत्र में बांधने का एक ही साधन है और वह है राजस्थान हिन्दी साहित्य सम्मेलन, किसी तरह से यदि इसका दूसरा अधिवेशन कहीं कर दिया जाय तो इसे एक बार गति मिल जायगी और गति मिल जाने के बाद इसका काम चल निकलेगा।

प्रांत के पत्रों का भी इस ओर चैतन्य होना चाहिये। आज की दुनिया में विचारों का आदान-प्रदान समाचार पत्रों द्वारा ही मुख्यतः होता है। समाचार पत्र देश की जागृति में सहायक होते हैं। आशा है, सम्मेलन के अध्यक्ष और प्रधानमंत्री महोदय प्रांत की इस आवश्यक प्रकृति को संगठित करने का प्रयास करेंगे प्रान्त की साहित्यिक संस्थाओं से भी हमारा अनुरोध है कि, वे इसे आगे बढ़ाने के लिए पूर्णतया प्रयत्न-शील हों। आशा है, हमारी यह प्रार्थना कुछ परिणाम लायेगी। — गिरधारीलाल शर्मा

हिन्दी पत्रकार संघ

बम्बई हिन्दी पत्रकार संघ की एक बैठक में एक प्रस्ताव में बम्बई-सरकार के इस कार्य पर दुख प्रकट किया गया कि उसने प्रेस-परामर्शदात्री समिति में हिन्दी पत्रों का एक भी प्रतिनिधि नहीं लिया है। संघ ने प्रार्थना की है कि बम्बई गवर्नमेण्ट अपनी भूल समय रहते सुधार ले।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन

सभापति पद के लिए पाँच प्रस्ताव

हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति ने सम्मेलन के भावी अधिवेशन के सभापति पद के लिए सर्व श्री सेठ गोविन्ददास, जयचन्द विद्यालंकार, चतुर्वेदी द्वारकादास शर्मा, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' और वियोगी हरि के नामों का प्रस्ताव किया है।

दमा निवारक

श्वासकासारि अवलेह

दमा, श्वास, खांसी, जुकाम, कफ, सर्दी, इफनी, छाती व गले की जलन वगैरह की शर्तिया दवा डि० रु० २)

मदन मंजरी फार्मेसी-जामनगर

देहली— जमनादास कं० चांदनी चौक

आपके शहर में हमारे एजेंट से खरीदें।

क्या यही फिलिपाइन की स्वतन्त्रता है ?

[पृष्ठ ६ का शेष]

पढ़ाना अनिवार्य बना दिया। इस बात पर सरकारी लेख काफी प्रकाश डालते हैं। ट्रूमेन ने फिलीपाइन के भूतपूर्व हाईकमिश्नर पाल वी. मैकनट को २६ अक्टूबर १९४५ को लिखे गये अपने पत्र में बताया था— 'आज से कुछ वर्षों पूर्व मनीला के पास के एक सूबे के हजारों किसान अपने श्रम के उत्पादनों के आवश्यक विभाजनों की मांग रखने के लिये संगठित हुये थे। कई वर्षों तक इस समस्या का कोई हल न प्राप्त किया जा सका था। इसकालमें किसानों ने एक गुरीला सेना का भी संगठन किया था। इस कृषक सेना ने शत्रु का डट कर मुकाबला भी किया था, जैसा कि खबरों से पता चलता है। शत्रु की पराजय के बाद भी यह सेना भग न हुयी और आज इसी के परिणामस्वरूप ऐसी परिस्थिति पैदा हो गई है जो सरकार के स्थायित्व को भी असंभव बना रही है।'

पंपांगा प्रान्त के गवर्नर लिमलांगन ने इस आतंक का वर्णन करते हुये कहा था कि 'शांति और सुरक्षा को कायम रखने के लिये आवश्यक है कि अमेरिका की सरकार वहां की शिक्षित सेनाओं को सहायतार्थ भेजे। क्योंकि इसके बगैर सरकार का सुचारु रूप से कार्य कर सकना असभव है। कृषकवर्ग-स्पष्ट शब्दों में कहता है कि वह अपने पुराने झगड़ों का हल प्राप्त करने के लिये अमेरिकन सेनाओं के हटाये जाने की बाट जोह रहा है।'

वे कैसा फैसला चाहते हैं ? यामाशिता पर चलाये गये अभियोग के सिलसिले में पेश की गयी अमेरिकन सेना के इंटेलीजेन्स काउण्टर विभाग की रिपोर्ट से इस प्रश्न पर काफी प्रकाश पड़ता है। इस रिपोर्ट में कृषक गुरीला आन्दोलन 'हुक बालहैप्स' (Huk balahaps) का वर्णन इस प्रकार है—

'मध्य लुजान में यह सबसे बड़ा और शक्तिशाली गुरीला संगठन था। जापान, अमेरिका यानि फिलीपाइन कामनवेल्थ के प्रति इसकी कोई सहानुभूति नहीं थी। इसकी नीति कम्युनिस्ट ढंग की थी और अपने प्रयासों द्वारा वह रूस के आधार पर फिलीपाइन में, युद्ध समाप्त हो जाने पर, एक कम्युनिस्ट सरकार कायम करना चाहता था।'

इस बात को सभी मानते हैं कि हुक बालहैप्स या हुक्स इस युद्ध में बड़ी बहादुरी से लड़े। अमेरिकन सेना के ब्रिगेडियर जनरल डेकर के विचारों के अनुसार तो यह 'एक ऐसा सैनिक संगठन था जैसा कि मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखा।' यह नहीं कि उन्होंने (गुरीला सैनिक) केवल जापानियों को ही मारा था किन्तु जापानियों से मिल जाने वाले अमीर फिलीपाइनों का भी वध किया। उन्होंने जमींदारों तथा सूदखोरों को भी हीनतापूर्ण दृष्टि से देखा। वे निःशस्त्र होने से सर्वथा इनकार करते थे। इस सेना के मर्द और औरतें अपने सिवा किसी अन्य पर विश्वास नहीं करती थीं। उनके कार्य इस बात के पक्के प्रमाण हैं कि वे अपने नाम तथा अपने उद्देश्यों की सिद्धि के लिये ही लड़े।

४० वर्षों के अमेरिकन शासन के अंतरगत फिलीपाइन के पूंजीपति बड़े तथा यहां के कृषकों और श्रमिकों को क्षुधा रोग तथा दासता के कठोर बंधनों में जकड़ा रहना पड़ा। फिलीपाइन के अमेरिकन कमीशन के एक सदस्य क्लाड-बस ने दिसम्बर १९४४ के 'फारचून' में लिखा है—'युद्ध प्रारंभ होने के पूर्व फिलीपाइन के धनिक अमेरिका या स्पेन के सामन्तशाहों की भांति आनन्द से रहते थे। उनको भोग-विलास के सभी साधन उपलब्ध थे। इसके विपरीत वहां के श्रमिकों तथा किसानों को एक या दो कोठरियों वाली झोपड़ियों में रहना तथा चावल और मछली पर बसर करना पड़ता था। खेतों पर तमाम दिन बड़े परिश्रम से काम करने के बाद उन्हें ३० या ४० सेण्ट रोजाना मिलते थे तथा अपनी इस मजदूरी का बहुत बड़ा भाग उन्हें जमींदार या महाजन को दे देना पड़ता था।'

बस के कथनानुसार फिलीपाइन की आधी जनता बिलकुल ही अपढ़ है। २/३ प्रौढ़ों को शिक्षा प्राप्त कर सकने के साधन प्राप्त नहीं। २/५ तो चौथे दर्जे से आगे कभी गये ही नहीं।

वालस्ट्रीट ने अमेरिकन साम्राज्यवाद को दृढ़ बनाने तथा उसके कार्यों में हाथ बटाने के आशय से फिलीपाइन के धनवान किन्तु चापलूस शासकवर्ग की रक्षा की। यहां का पुलिस विभाग, जिसे अमेरिकन अफसर शिक्षा देते हैं, शासक साम्प्रदाय की ही रक्षा करता है। यहां के बैंकर, जमींदार व्यापारी तथा महाजन अपने दूषित शासन को कायम रखने के लिये 'नेशनलिस्ट पार्टी' के रूप में संगठित हुये थे।

फिलीपाइन के कृषकों को अपना जीवन इतना दुःखमय बिताना पड़ता है—जिससे अमेरिका तथा समस्त विश्व के कृषक परिचित हैं। फिलीपाइनों को जबरन गरीबी के गढ़े में धकेल दिया गया है। १९१८ में खेतों की संख्या १५ लाख थी, जिनकी देख-रेख उन्हीं के मालिक करते थे। किन्तु १९३८ में खेतों की यह संख्या घटकर ८ लाख ४ हजार ही रह गयी। १९१८ में कृषकों की संख्या ४ लाख ३५ हजार थी किन्तु १९३८ में यह संख्या बढ़कर ५ लाख ७५ हजार हो गयी।

किसान को अपनी पैदावार का ५० प्रतिशत अनिवार्य रूप से जमींदार को देना पड़ता है। उसे ऐसे मौके पर रुपया उधार लेना पड़ता है जब कि अनाज का भाव सस्ता होता है किन्तु उसे ऐसे मौके पर जब कि जमींदार चारों ओर से अपना फायदा देखता है, रुपया वापस कर देना पड़ता है।

वैद्यरत्न
पं० टी० गोपालाचार्लू
का
जीवामृतम
स्त्री पुरुष और बालकों में पौरुष, बल और चेतना शक्ति का संचार करने के लिए अर्धशताब्दी से विख्यात है
आयुर्वेद आश्रमम लि०
टी० नगर, मद्रास।
उत्तर भारत के लिए चीफ स्टोकिस्टस्
ए न सा ट्रे डिं ग कं०
चांदनी चौक, दिल्ली।

श्वेतकुष्ट वनौषधि
महात्मा प्रदत्त श्वेतकुष्ट (सफेद की दवा से तीन दिन में पूरा फायदा यदि सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों विज्ञापनदाताओं की दवा से निराश हो चुके हों तो इसे लगा कर आराम होगा १५ दिन की दवा का मूल्य २॥)।
सफेद बाल काला
इस तेल से बालों का पकना बंद कर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे तो दूना मूल्य वापिसी की शर्त लिखा लें। यह तेल सिर के दर्द व सिर में चक्कर आना आदि को आराम कर आंख की रोशनी बढ़ाता है। एकाध बाल पका हो तो २॥) आधा पका हो तो ३॥) और कुल पका हो तो ५) का तेल मगवा लें। एजेण्टों की हर जगह आवश्यकता है।
स्तम्भक वटी
एक गोली शाम को खा लें और इसके अद्भुत चमत्कार को देखें। एक घण्टे तक स्तम्भन कर गजब ढा देगी। १६ गोली १)।
पता—अखिल किशोर राम
नं० १०७ कतरी सराय (गया

अमेरिकन सैकिंडहैंड गर्मकोट
हर किस्म के हाफकोट ओवरकोट वास्कोट
बचकाना कोट ताज़ा माल बेहतरीन क्वालेटी
बिल्कुल वाजबी निरख, रेलवे लोडिंग खुला है
आज निरखनामा मंगावें, स्टाक थोड़ा है"

शमेश राज ऐन्ड को० कोटों वाले कराची पी. बक्स नं. 682

Haridwar. Digitized by eGangotri

पाठकों का अपना अपना दृष्टिकोण

अध्यापकों पर दया करो

हमारी नवीन राष्ट्रीय सरकार के माननीय सदस्यों ने अपने स्वल्पकालीन शासन काल में ही कई सराहनीय कदम उठाये हैं। इन्हीं में से एक महत्वपूर्ण पग यह भी है कि सरकार ने सब से छोटी-छोटी तनख्वाह वाले सरकारी नौकरों के वेतन बढ़ा दिये गये हैं।

परन्तु क्या अध्यापकवर्ग जो प्राइवेट स्वीकृत स्कूलों में काम करके ही अपना जीवन पूरा कर देता है, नई सरकार के सदस्यों का ध्यान अपनी दीन दशा की ओर नहीं आकर्षित कर सकता। प्राइवेट स्कूलों की आर्थिक दशा का हाल किसी से छिपा नहीं है। इन की मैनेजिंग कमेटियां अपने पास पर्याप्त धन न होने के कारण अध्यापकों को समुचित वेतन नहीं दे सकतीं। सरकार भी तो उन्हें नाम मात्र की ही सहायता देती है। इस सारी कुव्यवस्था का दण्ड बेचारे अध्यापक को भोगना पड़ता है। वह अपनी वेदना किसे सुनाएं। मैनेजिंग कमेटी तक ही उसकी अधिक से अधिक पहुंच है। सो वहां पैसा नहीं है, की हरी झंडी दिखादी जाती है।

नई सरकार के माननीय सदस्यों का ध्यान अध्यापक वर्ग अपनी करुण पुकार द्वारा अपनी ओर खींचना चाहता है। अब तक विदेशी सरकार होने के कारण वह हाई स्कूल की कक्षाओं के अंग्रेजी अध्यापकों को एल. टी. ग्रेड मिलता है। हिन्दी पढ़ानेवालों को सी. टी. ग्रेड भी मुश्किल से देती है। नई सरकार को शिक्षा विभाग की यह विषमता अवश्य मिटा देनी चाहिये। प्रत्येक अध्यापक को इतना वेतन अवश्य मिलना चाहिये कि उसे ट्यूशन के लिये भागना न पड़े। सरकार प्रत्येक स्कूल को अपने संरक्षण में लेकर उनकी अध्यापक संख्या के अनुसार प्रत्येक मास इतना धन विशेष सहायता रूप में स्वीकार करे जिससे प्रत्येक अध्यापक को उचित मंहगाई मिल सके।

देहरादून] —श्यामसुन्दर गोयल

संघराज्य और बीकानेरी झण्डा

तारीख ३० सितम्बर के साप्ताहिक वीर अर्जुन में किन्हीं वकील महोदय ने बीकानेर के झण्डे के विषय में प्रजा सेवक संघ, बीकानेर की नीति की जो आलोचना की है वह भ्रामक है।

वकील महोदय की समझ में नहीं आता "कि एक एक रियासत और एक-एक प्रान्त अगर अपना-अपना झण्डा अलग-अलग रखने लगे तो देश में अव्यवस्था फैल जायगी। उसे किस तरह रोका जा सकेगा"? उसे समझनेके लिये यदि वे संसार भर के सबसे अधिक प्रजासत्तात्मक देश स्विटजरलैण्ड के संघराज्य के विधान को पढ़ लेते तो सर्वोत्तम होता। भारत भी संघराज्य बनेगा। यदि वहां झण्डों की अनेकता अव्यवस्था की अपेक्षा अनेक स्वतन्त्र इकाइयों को संघराज्य में सम्मिलित होने के लिये तैयार कर सुव्यवस्था और शान्ति का कारण बनी है तो वह भारतवर्ष में ही अव्यवस्था का कारण क्यों बनेगी?

राज्य के किसी अंग में सेना से अधिक नियन्त्रण की व्यवस्था नहीं होती, फिर भी सेना के प्रत्येक विभाग के पास अपना निजी झण्डा होता है। हर एक सैनिक उसके लिये प्राण न्यौछावर करना अपना कर्तव्य समझ कर समग्र सेना की शक्ति बढ़ाता है। प्रजा सेवकसंघ समग्र भारत के लिये भी यही नीति उपयुक्त समझता है। उसका प्रत्येक अङ्ग भारतीय राष्ट्रध्वज का सम्मान करे; किन्तु साथ ही वह अपने झण्डे के गौरव को न भूले। हम चाहते हैं कि भारतीय संघराज्य शीघ्रातिशीघ्र स्थापित हो और यह अपनी स्वतन्त्र इकाइयों के चिन्हों का समुचित समादर करे।

वकील महोदय मानतेहैं कि "अधिकांश मामलों में (भारतीय राज्य और प्रान्त) स्वतन्त्र रहेंगे। फिर वे उनकी झण्डा रखने की स्वतन्त्रता को ही इतनी बुरी क्यों मान बैठे हैं? उनकी यह दलील कि "उनको यह अन्तिम सत्ता केन्द्र में ही रहेगी और इसलिये पृथक् झण्डों का कोई अर्थ नहीं" भ्रम पूर्ण है संघराज्य की अन्तिम सत्ता न केन्द्र में ही होती है और न प्रान्तों में। अपने २ क्षेत्र में दोनों स्वतंत्र हैं और उसका उल्लंघन करने पर दोनों का ही कार्य अवैधानिक उद्घोषित किया जा सकता है। प्रसिद्ध लेखक डाइसी के अनुसार संघराज्य की यह ही विशेषता है कि वह अपने अङ्गभूत राज्योंके अधिकारोंका संरक्षण करता हुआ राष्ट्रैक्य और राष्ट्रशक्तिकी वृद्धि करताहै,!

बीकानेर झण्डेके नीचे जाति या धर्म के भेदभाव के बिना बीकानेरियों ने अपने ऐक्य की रक्षा की है और अब भी वे पारस्परिक जातिगत विद्वेष को मिटाने का इसे ही अपना एक प्रधान साधन मानते हैं। इसकी मान्यता पर कुठाराघात करने का प्रयत्न करना अपने ऐक्य, अपनी शान्ति और अपने सौहार्द पर कुठाराघात करना है। यह किसी दल विशेष का नहीं, अपितु हमारे ऐक्य का एक परमावश्यक प्रतीक है।

बीकानेर] —एक प्रजासेवक

काश्मीर और कांग्रेस

काश्मीर भारत में, पंजाब, सीमाप्रान्त तथा रूसी तुर्किस्तान, अफगानिस्तान इत्यादि मुस्लिमप्रधान देशों के समीपवर्ती होने के कारण, बहुत महत्व रखता है। इसलिये काश्मीर की समस्या पर, केवल 'काश्मीर नेशनल कानफ्रेंस' के ही दृष्टिकोण से, विचार करना अनर्थ है। यदि 'पाकिस्तान' के आन्दोलन को हम राष्ट्रघाती मानते हैं, तो यह आवश्यक है कि भारत के द्वार का पहरेदार काश्मीर प्रबल केन्द्रीय सत्ता के ही हाथ में हो। नेहरू और कांग्रेस आज काश्मीर में हस्तक्षेप कर रहे हैं, इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा। आज वहां गौ रक्षा होती है, जिसके खिलाफ शेख अब्दुल्ला बहुत जोर लगा रहे हैं, कल वहीं गरीब गैया की गर्दन पर छुरी चलेगी। आज वहां हिन्दुओं की जान और माल की हिफाजत है, कल वहीं मुस्लिम सांप्रदायिक भावना के कारण कलकत्ता जैसे कांड होंगे, और निर्दोष हिंदुओं की हालत वैसी हो जायगी जैसी आज सीमाप्रांत में है। हैदराबाद में, जहां हिन्दी प्रचार करना, मंदिर पर कलश रखना, और ऋषि दयानंद का जीवन चरित्र प्रकाशित करना अपराध माना जाता है; वहां कांग्रेसी नेता तशरीफ क्यों नहीं ले गये? वहां कांग्रेस का जांच कमीशन क्यों नहीं बैठाया जाता? क्या कभी किसी ने राष्ट्रीय मुस्लिम नेता को मुसलमान रियासत के खिलाफ बोलते सुना है?

बीकानेर] —जोरावरसिंह 'मार्तण्ड'

'डान' पर लगाम की जरूरत

पिछले कुछ दिनों से 'डान' कांग्रेसी सरकारों के विरुद्ध विषवमन कर रहा है। प्रत्येक पत्र को सरकार की आलोचना करने का अधिकार है और इसे छीनने का कोई सवाल नहीं है, लेकिन इसके साथ ही पत्रों का भी तो कुछ उत्तरदायित्व है। किसी पत्र को यह अधिकार तो नहीं कि वह सरकार के विरुद्ध घटनाओं को तोड़फोड़—झूठे आरोप लगा कर आलोचना करे! 'डान' इस तरह कोरे झूठ का प्रचार कर रहा है और हर एक झूठ का प्रतिवाद सरकार को करना पड़ता है। लेकिन 'डान' के रवैये में कोई फर्क नहीं आता। इस लिये हमारी सम्मति में 'डान' को शरारतों से रोकने का केवल एक ही तरीका है और वह यह कि प्रत्येक सरकार द्वारा 'डान' को झूठी खबर देने पर प्रतिवाद के साथ-साथ मुख पृष्ठ पर चम्म छापने के लिए भी प्रेरित किया जाय। यदि वह ऐसा न करे तो सरकार जान-बूझ कर असत्य प्रचार का दावा अदालत में चला कर शिक्षा देवे। दो-तीन बार ऐसा करने पर ही 'डान' का दिमाग ठिकाने आ जायगा।

सहारनपुर] — रामशरण

सारावाक व बोर्नियो

[पृष्ठ ७ का शेष]

इस आदान-प्रदान में राजा ब्रुक व बोरनियो कम्पनी के डायरेक्टरों की देशभक्ति प्रमुख आधार है। राजा ब्रुक स्वतंत्र होते हुए भी संसार की राजनीति में नगण्य थे, किन्तु उनकी उत्तराधिकारी अंग्रेजी सरकार एक तो पहले ही पर्याप्त प्रबल है जिस पर सारावाक व बोरनियो को प्राप्त करके वह चीनी व प्रशान्त सागर में और अधिक प्रबल हो गयी है। कहना नहीं होगा कि सन् १९४२ में हांगकांग व सिगापुर के मध्यवर्ती समूह में जापानी जंगी बेड़ा जिस निःशंकभाव से चला था अब सारावाक स बोरनियो पर अंग्रेजी कब्जे के कारण कोई भी विदेशी बेड़ा इस समुद्र में निडर होकर न आ सकेगा। निःसंदेह पूर्वी एशिया में इस अदान प्रदान से अंग्रेजों की सैनिक स्थिति पूर्वापेक्षया अधिक दृढ़ हुई है। यह बात जुदा है कि इण्डोनेशिया की जागृति के कारण अंग्रेजी साम्राज्य की वह सुदृढ़ता स्थायी होगी या नहीं ? हमारे जानते अभी तो सारावाक व उत्तरी बोरनियो पर्याप्त काल तक अंग्रेजी साम्राज्य के अंग बने रहेंगे और इनके द्वारा अंग्रेज प्रजा राज ब्रुक की स्मृति अपने हृत्पटल पर बनाये रहेगी।

हर किस्मकी गोलियां व टेबलेट

उजरत पर बनाई जाती हैं

काम आला दर्जा बिल्कुल बिलायती किस्म का किया जाता है। हर साइज की गोलियां और टेबलेट और शूगर कूटिंग करने वाले बिलायत से सीखे हुए माहिर कारीगर बनाते हैं। निर्ख बनवाई रियायती, काम निहायत सफाई और सन्तोष जनक वायदे पर किया जाता है।

हावर्स मैडीसिन कम्पनी लोहारी अड्डा के सामने-चौक अनारकली लाहौर

सिद्धयोगेन्द्र कवच

(गवर्नमेंट रजिस्टर्ड)

इस अद्भुत शक्तिशाली तथा दैवी-शक्तिसम्पन्न कवच को केवल धारणमात्र से मनोवांछित फल प्राप्त होता है। इससे नौकरी, संतान, धन की प्राप्ति, व्यापार से लाभ, मुकदमे, रेस, लौटरी में जीत, कठोर से कठोर हृदय वाली स्त्री या पुरुष आपके वश में होकर आपका आज्ञाकारी हो जायगा और कठिनसे कठिन रोगों और नवग्रहों से छुटकारा होकर भाग्योदय होता है। बेफायदा साबित करने से १००) रु० इनाम। मूल्य तांबा २॥) रु० चांदी का ३) रु० सोने का स्पेशल का मूल्य १५) रु.

पता—श्री महाशक्ति आश्रम मुहल्ला सालीमपु अहरा, पो० बांकीपुर, पटना।

असली जादू का शीशा

हर स्त्री-पुरुष चाहे कितनी उमर का हो, बालक हो या जवान या बूढ़ा इस जादू के शीशे से देख सकता है। चोरी का पता, गढ़े हुए धन, गुमशुदा का पता, बीमार के अच्छा होने, आने वाले व गुजरे हुए हालात, मुहब्बत प्रेम, मुकदमा, नौकरी, परीक्षा, हर बात का ठीक-ठीक पता लग सकता है। झूठ निकले तो दाम वापिस, मूल्य ३) रु०, पत्र-व्यवहार अंग्रेजी में करें।

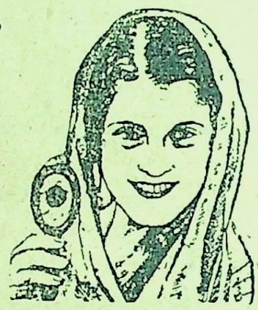

आनन्द स्वामी (V.W.D.) पो.ब. नं० ६१ लाहौर।

ANAND SWAMI, (V.W.D.) p. b. no. 61 Lahore.

टाइप राईटर

हर किस्म के रेमिंगटन—रायल, अण्डरवुड, वुडस्टाक एल० सी० स्मिथ स्टैण्डर्ड वगैर आवाज वाले हलका, बहुत मामूली इस्तेमाल किए हुए, सस्ते मिल सकते हैं। शीघ्र ही मंगाइए। स्टाक में बहुत कम हैं। पताः—

ईस्टर्न इम्पोर्ट एण्ड ऐक्सपोर्ट कम्पनी १२ अलीपुर रोड देहली।

शारीरिक उष्णता के लिये...

मशहूर अनुभूत इलाज

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

आज से ही शुरू किजिए, सर्वत्र मिलता है।

जीर्णज्वर, शरीर के अन्दर, बाहर या हथेली तलुवों और आंखों की असह्य जलन, मूत्रमार्ग में आग सी जलन, भोजन के बाद पेट में जलन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कठिन अपच, नियमित कोष्ठबद्धता, रक्तविकार, अशक्ति, नियमित शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं शिथिलता.

इन शिकायतों पर यह बहुत काल से परीक्षित, बड़ी बूटियों के योग से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढ़ा बालक वृद्ध, पुरुष स्त्री सभी के लिये लाभदायक है तथा इस सीमा तक हानिरहित है कि कोमलांगी स्त्रियों को गर्भावस्था के समय निस्संकोच सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके शीतल, पाचक और शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

एजेन्ट चाहिए, शर्तों के लिए लिखिये।

पर्ल कम्पनी आर्योषधी कारखाना बम्बई २७

روز ROSE रोज़
TRADE UNK MARK
बच्चों की शक्ति बढ़ाने की अनुपम दवा
A WONDERFULL TONIC for CHILDREN
Ghav Nashak Karyalaya DELHI
घावनाशक कार्यालय दे-ह-ली

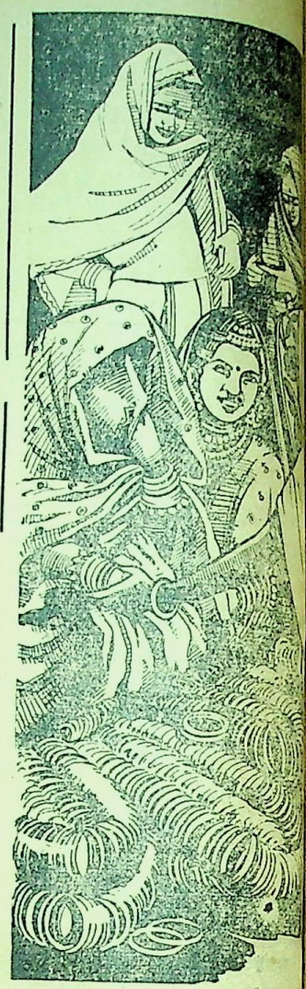

चूड़ीवाली

चूड़ीवाली की 'चूड़ियां, चूड़ियां' ध्वनि गूंज उठती है और उसकी रङ्गीन चीजों के आसपास स्त्रियों का एक समूह एकत्र हो जाता है। वे उत्सुकता से अपनी खरीद करती हैं तथा अन्य और चीजों को खरीदने के आनन्द-विनोद में आगे बढ़ जाती हैं।

हमाम को वे सर्वत्र देखती हैं। दैनिक स्नान में उसकी ताजगी और सुगंधि गरीब और अमीर के मन में जाग्रत हो जाती है और इस प्रकार एक और वस्तु खरीद ली जाती है।

हमाम

भारत का प्रियतम साबुन

टाम्को सेल्स डिपार्टमेंट चर्चगेट स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई

A TATA PRODUCT

दी टाटा आयल मिल्स कं० लि०

T.S. 228

Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

देश-विदेश का घटनाचक्र

[पृष्ठ ६ का शेष]

मित्र-राष्ट्रीय संघ में भारत अफ्रीका समस्या

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के वैदेशिक विभाग ने तुर्की, ईराक तथा चीन के भारत-स्थित प्रतिनिधियों से मित्र राष्ट्र संघ की बैठक में दक्षिणी अफ्रीका के मामले में भारत का समर्थन करने के लिये पत्र-व्यवहार किया था। ज्ञात हुआ है कि विदेशी प्रतिनिधियों ने संतोषजनक उत्तर दिया है।

हिरोहितो युद्ध अभियुक्त घोषित हो

सुदूरपूर्व के अन्तर्राष्ट्रीय सैनिक ट्रिब्यूनल में एक सोवियट वक्तव्य दिया गया है, जिसमें यह मांग की गयी है कि जापान के सम्राट् हिरोहितो को युद्ध अभियुक्त घोषित किया जाय तथा उन पर मुकदमा चलाया जाय। वक्तव्य में यह भी मांग की गयी है कि जापान के सभी बड़े औद्योगिक तथा आर्थिक संगठनों को भी 'अभियुक्त संगठन' घोषित किया जाय। जापानका युद्ध १६३१ में मंचूरिया के आक्रमण से आरम्भ होता है अतः उस समय के जापानी मंत्रीमण्डलमें जितने सदस्य थे, उन सब पर मुकदमा चलाया जाना चाहिये।

वक्तव्य में कहा गया है कि सोवियट साइबीरिया की जनता उस व्यक्ति के समान जीवन व्यतीत करती रही जिसकी ओर एक डाकू बंदूक का निशाना लगाये खड़ा हो।

इण्डोनेशिया में सन्धि-चर्चा

इण्डोनेशियन प्रधान-मन्त्री डा० सूतान शहरीर अपने अन्य मन्त्रियों के साथ ७ अक्तूबर से डच अधिकारियों में इण्डोनेशियन प्रजातन्त्र के सम्बंध में समझौते की बातें शुरू होंगी। दक्षिण पूर्वीय एशिया के ब्रिटिश स्पेशल कमिश्नर लार्ड किलर्न समझौते की अध्यक्षता करेंगे।

इण्डोनियन प्रतिनिधि मंडल के दूसरे सदस्यों के नाम ये हैं -- न्याय मंत्री सोएसाएटो, स्वदेश-मंत्री मुहम्मद रोएम तथा अर्थ मंत्री डा० ए० के० गानी। अन्य प्रतिनिधियों के नाम निम्नलिखित हैं — बिना पद के मंत्री डा० शिवदर्शनो सुरक्षा-मंत्री डा० अमीर शरीफुद्दीन और डा० एल०जे० लिमेना।

ईरान में संक्रमण-काल

पश्चिमी और दक्षिणी ईरान के प्रदेशों में जो विद्रोह हुआ था, वह अब समाप्त हो गया है, केन्द्रीय सरकार के प्रतिनिधि तथा कबीली प्रतिनिधि इस चर्चा में भाग ले रहे हैं। नसीर काशकाई, फारस प्रान्त के गवर्नर जनरल, हुमायूं बुशेरी और ईरानी सेना के सेनापती जनरल जाहदी में वार्तालाप हो रहा है। कुर्दिस्तान के पड़ोसी प्रान्त के गवर्नर शम्समल्लिक को करमनशाह का गवर्नर जनरल नियुक्त किया गया है। दक्षिणी ईरान के विद्रोही सर्नीर काशकाई की मांग है कि प्रधान मंत्री को छोड़कर ईरानी मंत्रीमण्डल के शेष सब सदस्य त्यागपत्र दे दें। नये मंत्रिमण्डल में दो काशकाई परामर्शदाता नियुक्त किये जांय तथा फारस प्रान्त को स्वायत्त शासन सत्ता प्राप्त हो।

ईरान के शाह ने एक नये आदेश द्वारा ईरान की धारासभा के नये निर्वाचन की घोषणा की है। इस घोषणा से राजनीनित क्षेत्रों में आश्चर्य प्रकट किया जा रहा है, क्योंकि वर्तमान गृह-युद्ध की अवस्था में निर्वाचन कराने में अत्यधिक कठिनाई होगी। पर क्योंकि रूस अपनी तेल की मांगों को पूरा करने के लिये ईरान सरकार पर दबाव डाल रहा है, ये मांग ईरानी धारासभा की स्वीकृति के बिना पूरी नहीं हो सकती, इसी कारण रूसी दबाव के कारण ये चुनाव किये जा रहे हैं।

स्वतन्त्र फिलस्तीन राज्यकी योजना प्रकाशित

स्वतन्त्र फिलस्तीन राज्य के लिए अरब राष्ट्रों ने जो योजना बनायी है उस योजना के मुख्य अंग निम्नलिखित हैं:-

१—संक्रमणकाल में—संरक्षित राज्य से स्वतन्त्र राज्य बनने के बीच का समय—फिलस्तीन के हाईकमिश्नर फिलस्तीन के नेताओं के परामर्श से एक मध्यवर्ती सरकार नियुक्त करें जिसे शासन अधिकार प्राप्त रहें। इस सरकार में फिलस्तीन के ७ अरब और ३ यहूदी सदस्य रहें। २—संक्रमणकाल में हाईकमिश्नर को विशेषाधिकार रहें। ३-१८ वर्ष से ऊपर के सभी पुरुषों का निर्वाचक सूची तैयार हो जाने के बाद मध्यवर्ती सरकार ६० सदस्यों का विधान सम्मेलन संघटित करे। जिसमें सभी सम्प्रदायों को अपनी-अपनी जनसख्या के अनुपातानुसार प्रतिनिधित्व मिले। विधान-सम्मेलन के सम्मुख उपस्थित करने के लिए मध्यवर्ती सरकार एक शासन-विधान तैयार करे और शासन-विधान स्वीकृत हो जाने के बाद फिलस्तीन की प्रथम पार्लमेंट के लिये निर्वाचन हो। और ४—पार्लमेंट का निर्वाचन समाप्त होते ही फिलस्तीन राज्य के प्रथम प्रधान नियुक्त किये जायं जो १६४८ ईसवी की ३१ दिसम्बर के पहले शासन-भार ग्रहण कर लें।

अमरीकन प्रधान ट्रूमेन की इस मांग से बहुत हलचल हो गई है कि ब्रिटिश सरकार एक लाख यहूदियों को तुरन्त फिलस्तीन में बसाये। ट्रूमैन अपने देश में भी प्रतिबन्ध उठाने को तैयार हैं। ट्रूमैन के इस वक्तव्य को अंग्रेज राजनीतिज्ञ असामयिक समझते हैं। अरब राष्ट्र भी ट्रूमैन के इस वक्तव्य से क्षुब्ध हो उठे हैं और वे अमरीकन सामग्री का बहिष्कार करने के लिये आन्दोलन कर रहे हैं।

यूनान में विद्रोह

यूनान के गृह-विभाग द्वारा बताया गया है कि सालोनिका के उत्तर पूर्व ३० मील पर नियोरिता जिले के लंगाड़ी नामक स्थान पर की सरकारी फौजों पर कुछ ३०० विद्रोहियों ने हमला कर दिया जिससे सरकारी फौजों को वहां से भाग आना पड़ा।

एक सरकारी अफसर ने बताया है कि उत्तरी यूनान के अनेक स्थानों पर की सैनिक टुकड़ियों को वापस बुलाया जा रहा है क्योंकि वहां पर विद्रोहियों का बड़ा जोर है और वहां पर सैनिक टुकड़ियों का रखना आत्म-हत्या के समान होगा।

यूनान अधिकारियों ने इस विद्रोह को न दबा सकने के कारण ब्रिटेन से शस्त्रास्त्रों की सहायता मांगी है।

यूनान के वामपक्षीय दल ने घोषणा की है कि वह तब तक युद्ध बन्द न करेगा जब तक साइप्रस और पूर्वी एथेन्स को ग्रीस में सम्मिलित न कर लिया जाय। इस दल का कहना है कि यूनान के शाह की कमजोरी के कारण ही पेरिस सम्मेलन में उक्त प्रदेशों को ग्रीस में मिलाने का प्रस्ताव पास नहीं हो सका। दल ने यूनान में संयुक्त मन्त्री-मण्डल की स्थापना की भी मांग की है।

क्लर्क चाहिये

जो हिंदी अंग्रेजी की अच्छी योग्यता रखते हों। अनुभव और वेतन सहित शीघ्र लिखें।

पता:—पोष्ट बक्स १२५ देहली

अफीम बन्द होजायेगी ?

चौधरी रामराय जी लिखते हैं—

मैं बीस साल से अफयून ४० तोले खाता था इसलिये मैंने ठेका अफीम ६६०००) रु० सालाना पर ले रखा था। ताकि मुझे अच्छी अफयून खाने के लिये मिलती रहे। मैंने अपने धन, शरीर का नाश होते देखकर डा० ऋषिराम मण्डी कोटफत्ता की वलैत टिकियां मंगाकर ८ दिन में आनन्द के साथ अफीम छोड़ दी। छोड़ते वक्त या बाद में कोई तकलीफ नहीं हुई। मैं एक रईस कई गांवों का मालिक हूं। जनता के लाभ के लिये यह इश्तहार देता हूं। जो भाई इस बुरी बला को छोड़ना चाहते हों वे जितने तोले माहवार अफीम खाते हों कीमत टिकिया दुगने रुपये का खत लिखकर वी. पी. मंगा लें।

पता – डा० ऋषिराम शर्मा अफयून छुड़ाऊ अस्पताल मंडी - कोटफत्ता (स्टेट पटियाला)।

नकालों से सावधान

चित्रकूट की श्वास-दमा की अचूक जड़ी

(हिमल्यास हर्ब रजिस्टर्ड)

श्री १०८ महात्मा सिद्ध बाबाजी की सौ वर्ष से विश्व विख्यात अनुभव सिद्ध असली जड़ी केवल एक मात्रा ता० ६-११-४६ कार्तिक की रात्रि को सेवन करके सदैव के लिये निरोग हो जाइये -

नोट—वृन्दावन, गुरुकुल वैदिक विश्वविद्यालय से श्री गौतम शास्त्रीजी ने लिखा है कि इस जड़ी से ११ रोगियों को दवा पर ६ रोगियों का उपयोग सफल हुआ, रोगी निरोग हो गये।

पता:—श्री सिद्ध बाबा सेवा आश्रम

प्रो० चित्रकूट

यू० पी०

शुद्ध स्वदेशी ताजा सिगरेट पीजिये

जो आपके लिये लाभदायक होगी

यह मशीन १ घण्टे में ५० सिगरेट बनाती है! मशीन के साथ १०० सिगरेट बनाने का कागज और सिगरेट बनाने की तरकीब मुफ्त है --

मूल्य ३॥) पोस्टेज पैकिंग ॥=)

एस० के० सक्सैना, रंगमहल अलीगढ़

लूट लो !

धोका हो तो फौरन वापस कर दो

३) में ६ पुस्तकें

१- असली कोकशास्त्र (सचित्र) पति-पत्नी के पढ़ने योग्य, स्त्री, पुरुषों के समस्त गुप्त भेद कामविज्ञान की अपूर्व पुस्तक १।) २-मृत्यु ज्ञान मृत्यु समाचार ४-६ मास पहले से जानना १) ३- इंगलिश टीचर बिना गुरु अंग्रेजी बोलना लिखना पढ़ना सीखो १) ४- सच्चा जादू हाथ सफाई चालाकी जादू के आश्चर्यजनक खेल सीखो १) ५- कैलाशपति तंत्र अनेक प्रकार के वशीकरण तथा मोहन मंत्र, यंत्र, तंत्र का संग्रह ॥) ६- स्वदेशी रंग-मेकर देशी जड़ी बूटियों से रंग बनाना और कपड़ा रंगना सीखो १॥)।

६ पुस्तकों के सैट का मूल्य ३) पोस्टेज पैकिंग ॥=) अलग।

रोयल एन्ड को० कासगंज

B. B. & C. Rly.

विश्व के उत्थान में लेखकों का महत्व

[श्री सत्यभूषण वेदालङ्कार]

★

आधुनिक युग में ज्ञान-विज्ञान की उन्नति के साथ साथ पुस्तकों की महत्ता भी बढ़ रही है और लेखन-कला का महत्व सामान्य जनता भी समझने लगी है। अंग्रेजी की एक कहावत है : जीने के लिये सीखो और सीखने के लिये जीओ। ज्ञान का समुद्र अनन्त है। इस थोड़ी-सी अवधि में हम उस अनंत सागर का सम्पूर्ण अवलोकन नहीं कर सकते। महान् वैज्ञानिक न्यूटन ने भी एक स्थान पर कहा है : मैं तो अभी अनंत ज्ञानसागर के तट पर कुछ बालुकाकणों को ही चुन रहा हूं। पर इस अनंत पारावार की झांकी हम विश्व की अनेक श्रेष्ठ पुस्तकों में ही पा सकते हैं, अर्थात् हमारे ज्ञान का एक मात्र साधन उत्तमोत्तम पुस्तकें ही हो सकती हैं। पुस्तकों में ही विश्व का मनोवैज्ञानिक तथा साहित्यिक विकास अंतर्हित है। हम कहीं बैठे हों, संसार के किसी कोने में हमारा घर हो, किसी पत्र-पत्रिका अथवा पुस्तक द्वारा हम जो ज्ञान चाहें उपलब्ध कर सकते हैं। इसी कारण फ्रांस के विद्वान 'वाल्टेयर' ने एक स्थान पर कहा है : 'कलम तलवार से अधिक शक्ति शाली है।'

सचमुच बड़े-बड़े राजाओं के सिंहासन डावांडोल हो जाते हैं। मुकुट मिट्टी में मिल जाते हैं, प्रासाद खंडहर बन जाते हैं, पर पुस्तकों में खिंची हुई लकीरों को संसार की कोई शक्ति नहीं मिटा सकती। यदि पुस्तकों को कोई जला भी दे, तो भी ज्ञान की आग प्रज्वलित रह-रह कर धधकती रहती है। नालन्दा वा तक्षशिला के पुस्तकालय जलकर राख हो गये, पर उनके द्वारा प्रदीप्त ज्ञान की चिनगारी को कोई न बुझा सका। इटली के प्रसिद्ध वैज्ञानिक ब्रूनो को जब जिंदा जलाने के लिये चर्च के सामने लाया गया तो उसने कहा था, आप लोगों को शायद मुझे सजा सुनाने में डर लग रहा है, पर सत्य एक दिन अवश्य विजयी होगा। प्रसिद्ध वैज्ञानिक गैलेलियो ने जब 'विश्व का संस्थान' नामक पुस्तक लिखी तो चर्च ने १० साल तक उसे जेल की कोठरी में सड़ा-सड़ा कर मार डाला, पर आज प्रत्यक्षरूप में गैलेलियो की विजय हो चुकी है। विस्चुला नदी के किनारे रहने वाले कोपार्निकस ने ३६ वर्ष तक चर्च के दबाव की प्रतीक्षा करके 'खगोल पिंडों का भ्रमण' नामक पुस्तक को प्रकाशित कर दिया, जिससे ज्योतिष-शास्त्र में खलबली मच गई और पादरियों के होश-हवास जाते रहे। इसी कारण 'वाल्टेयर' का कथन है, जो व्यक्ति पढ़ता है, स्वाध्याय करता है, वही नेतृत्व करने वाला होता है। रूजवेल्ट और हिटलर सरीखे बड़े-बड़े नेता गहरे अध्ययन के परिणामस्वरूप बन सके हैं। कार्लाइल जैसे महान् विचारक तथा स्टुअर्ट मिल और फ्लिन्ट जैसे दार्शनिक भी चिंतन और मनन के परिणामस्वरूप संसार में अमर हो गये हैं। प्राचीन भारतीय दार्शनिक महर्षि गौतम और पातञ्जल की विद्वता का कारण उनकी अध्ययन शीलता ही थी। यूनान के ऋषि सुकरात और अफलातून की कीर्ति-पताका सारे यूरोप में इस कारण लहरा रही है कि उन्होंने अपने चिंतन और मनन के परिणाम-स्वरूप संसार को सूक्ष्म रीति से सोचने की शक्ति प्रदान की। अरब के खलीफाओं ने अरस्तू की निरीक्षण और परीक्षण विधि के अपनाने द्वारा संसार को बड़ी देन दी। कहते हैं कि अरब वासियों को पुस्तकों के पढ़ने का इतना शौक था कि खलीफा अलमामूं ४०० ऊंटों पर लदने योग्य हस्तलिखित ग्रन्थ बगदाद में ले आया था। स्पेन के पुस्तकालय में ६ लाख पुस्तकें थीं और 'ऐन्डल्यूसिया' में ७० सार्वजनिक पुस्तकालय थे। खलीफा अलमामूं ने यह घोषणा करदी थी कि विद्वान् लोग ईश्वर के चुने हुए अति-उपयोगी सेवक हैं, जिनके जीवन नैतिक शक्तियों की उन्नति में व्यतीत होते हैं। इन प्रकाश-स्तम्भों के बिना संसार अज्ञान और मूर्खता में डूब जावेगा। महान् वैज्ञानिक एडीसन पहले अखबारों की फेरी करने वाला एक लड़का ही था, उसी काम के साथ वह एक दिन रसायन और भौतिक-विद्या का प्रयोग करते-करते आविष्कारक बन गया। हेलेन-केलर एक अंधी, गूंगी और बहरी महिला है। वह तीन ज्ञानेन्द्रियों के अभाव में भी तालीम प्राप्त करके एक विश्व-विद्यालय की स्नातिका बनी है और अमेरिका में अपूर्व लेखिका बनने का सम्मान प्राप्त किया है। कविवर टैगोर की अमर पुस्तक 'गीताञ्जलि' से कौन परिचित न होगा। देश-विदेश में इस पुस्तक को ख्याति मिली और इस छोटी-सी पुस्तक के बल पर ही 'नौबल प्राइज' प्राप्त किया गया। भारत के प्रसिद्ध लेखक कहानीकार प्रेमचन्दजी ने अपनी अनूठी कहानियों से गांव गांव तक अपना संदेश जा पहुंचाया। बाबू शरत् ने बंगला-साहित्य में अपूर्व नाम पाया। अपने पूर्व-जीवन में निर्धन से निर्धन व्यक्ति श्री एच० जी० वेल्स की 'संसार का इतिहास' (World history) नामक पुस्तक ने इतिहास में एक अपूर्व क्रान्ति मचा दी। दस साल तक सपरिवार आधा भोजन करने वाले और पग-पग पर विद्रोह का सामना करने वाले क्रान्तिकारी ऋषि 'कार्लमार्क्स' की 'कैपिटल' नामक पुस्तक ने संसार के साम्यवादी विचारों से पूंजीवाद की जड़ों को हिला दिया। शेक्सपियर के नाटक और कालिदास की 'शकुन्तला' विश्व के साहित्य में अद्वितीय स्थान रखते हैं। महाकवि व्यास का 'महाभारत' कलकल निनादिनी साहित्य गङ्गा के पीयूष की तरह सहृदय जनों में सरसता का संचार करता। आदि कवि 'बाल्मीकि रामायण' तथा तुलसीदासजी की चौपाइयां किसे नहीं सुहातीं। 'बंकिमचन्द' की 'सरल निबन्धावली' और देशभक्ति के सुमधुर गीत 'वन्देमातरम्' को सुनकर किसका हृदय गद्-गद् नहीं हो जाता। मोक्षम गर्की की 'श्रेष्ठ कहानियां' सामाजिक क्षेत्र के उत्थान और पतन को कितना स्पष्ट करती हैं। इसके अतिरिक्त टालस्टाय जेम्स एलन आदि यूरोपीय विद्वानों की लिखी हुई पुस्तकों से संसार का धार्मिक भावना का बीज अंकुरित हो रहा है। इसी प्रकार अन्य भी अनेक विद्वान् हैं, जिनकी गणना नहीं की जा सकती।

पुस्तकों की मांग दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है तथा ज्ञान-प्राप्ति की जिज्ञासा उत्कट होती जा रही है। नये से नया विषय और नये से नया दृष्टिकोण पुस्तकों के द्वारा ही पाठक के सामने प्रस्तुत किया जाता है। अतः अंग्रेजी के किसी विद्वान् का कथन है (The true-universiy of these days is a collection of books) अर्थात् इन दिनों का वास्तविक विश्व-विद्यालय पुस्तकों का संग्रह है। कार्लाइल का कथन है, All that mankind has done, thought, gained or been-it is eyng as inmagic preserv- ion in the pages off book. अर्थात् मानव जाति के कार्यों चिन्तन की सारी प्राप्ति पुस्तकों के की आश्चर्य-जनक सुरक्षा के कारण सकी है। इसी कारण ही एक मुहावरा बन गया है आपके घर की पहचान-आ पुस्तकों से होती है। वास्तव में पु ही मानव जाति के ज्ञान का संग्रहालय और हमें इसी दृष्टि से उनका अध्यय और मनन बड़े शौक से करना चाहिये।

———

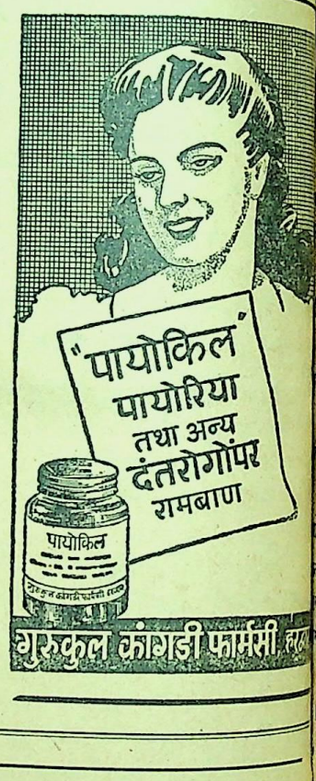

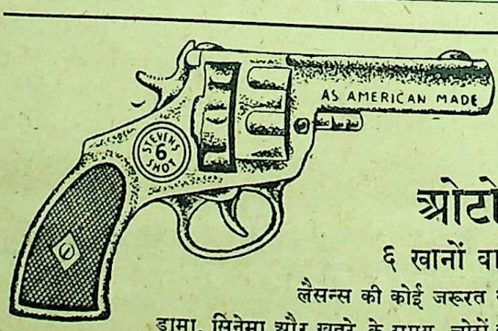

आत्मरक्षा

ओटोमेटिक

६ खानों वाली पिस्तौल

लैसन्स की कोई जरूरत नहीं

ड्रामा, सिनेमा और खतरे के समय चोरों को डराने के लिये बड़ी काम की है। दागने पर पिस्तौल के मुंह से आग और धुंआ निकलता है। असली रिवाल्वर की तरह मालूम होती है। साइज ७॥ इंच×४ इंच और वजन १५ औंस। मूल्य ८) और साथ में १ दर्जन गोलियां (एलार्म डिस्क) मुफ्त। अतिरिक्त १ दर्जन गोलियों का दाम २)। स्पेशल तांबे की बनी ६६६ ० की पिस्तौल का दाम १०)। बेस्ट के साथ केस २॥), पोस्टेज और पैकिंग का अतिरिक्त १=)। प्रत्येक आर्डर के साथ १ शीशी रिवाल्वर का तेल मुफ्त।

नापसंद होने पर दाम वापस

इम्पीरियल चैम्बर आफ साइंस (V. W. D.) पो० बा० ६१ लाहौर

Imperial Chamber af Science (V.W.D.) P.B.61. LAHORE

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

मेंढकी 'पटास्'

[श्री कुमुद]

खेत में घास चरते-चरते एक सांड तालाब के किनारे जा पहुंचा। तालाब पर नहाते के कई छोटे-छोटे बच्चे खेल रहे थे। सांड के पैर के नीचे आकर कई बच्चे कुचल कर मर गए। जो बच गये—उनमें से एक डरा, घबराया हुआ अपनी मां के पास पहुंच कर हांपते-हांपते बोला—मां! चार-पैर वाले एक बड़े जानवर पशु ने मेरे भाइयों को कुचल कर मार डाला!'

'बड़ा विशाल?'

'हां, मां—बड़ा वि—शा—ल।'

'तुम कहना चाहते हो कि वह मुझ से भी बड़ा है?'

'हां, मां, वह बहुत बड़ा है।'

मां ने अपना पेट जरा सा फुला कर कहा—'इतना बड़ा?'

बच्चा बोला—'तुम पागल हो गई हो मां! मां—वह कितना बड़ा है यह तो तुम कल्पना भी नहीं कर सकती।'

मां ने झल्लाकर पेट तनिक और अधिक फुला कर कहा—'इतना बड़ा?'

'नहीं, मां,—इससे भी ढेर-ढेर-ढेर बड़ा है।'

मां ने और तनिक-सा पेट फुला कर कहा—'इससे भी बड़ा?'

'हां मां—उससे-इससे भी अधिक, अधिक और भी अधिक है। तुम पेट फुला ही क्यों न फुलाओ मां—चाहे प्रयत्न करने पर भी तुम उससे एक बराबर भी नहीं हो सकती।'

बेटा सदेह करता है, उसके साहस पर क्रोध से तिलमिला कर मेंढकी और और भी, अधिक पेट फुलाने लगी। पेट फूलते-फूलते अन्त में 'पटास्' हुआ।

हंसो—हंसो

एक दिन बड़े जोर की वर्षा हो रही थी। घर में पानी चूता देखकर हामिद ने कहा—अब्बा-अब्बा चूआ।

अब्बा—बेटा पकड़ लो और बाहर फेंक आओ।

— उर्मिला देवी

× × ×

पिता — बेटी तेरी बोली बहुत मीठी है।

बेटी — पिताजी मैं प्रतिदिन शक्कर खाया करती हूं।

— गिरीशचन्द्र

ना खू न

[श्री० त्रिदेव]

नाखून कटाओ

नाखून किसे कहते हैं, दीदी?

जिसमें से खून न निकले, वह नाखून।

आज बालवाड़ी में दादा ने कहा, नाखून कटालो! मैं कुछ समझा ही नहीं।

तो उन्होंने काटे नहीं?

कहा, घर से कटवा कर आना! अब मुझे बताओ, क्या कटवा कर ले जाऊं?

नाखून ही तो! अपने नाखून कटा लेना।

परंतु नाखून हैं कहां?

तुम्हारे पास ही तो हैं! देखो तुम्हारी अंगुलियों में।

एं, मेरी अंगुलियों में नाखून!

तो इसमें अचम्भा क्या है? देखे नहीं?

तभी तो पूछता हूँ।

ये क्या रहे? ये नख हैं, इन्हीं को कुछ लोग नाखून कहते हैं।

धत्त तेरे को! मैं क्या जानूं कि यह बिना खून की वस्तु मेरी अंगुलियों में ही है।

अब तो जान गये न? नख और नाखून दोनों एक ही वस्तु के दो नाम हैं। जिसे काटने से क्षत या घाव न हो, वह नख, और जिसे काटने से खून न निकले वह नखून!

वाह दीदी, आज तो तुमने गजब कर दिया। अच्छा, एक बात और पूछूं?

पूछो, अवश्य पूछो।

सभी कहते हैं, नख काटो; नाखून कटालो। इसकी आवश्यकता?

बढ़े हुए नखों में मैल भर जाता है। कितने काले, गन्दे और घिनौने लगते हैं! यदि वैसे ही गन्दे नखों से खाना खाओ, तो उनके अन्दर का मैल हमारे पेट के अन्दर चला जाता है। और मैल भी कोई खाने की वस्तु है?

छी—छी—छी मैल कौन खाये?

जिनके बड़े-बड़े और गंदे नख होते हैं, वे सभी मैल खाते हैं। जानते हो, नाखून में तो हजार जात का मैल भर जाता है, और वह सब नाखून के द्वारा खाते समय हमारे पेट में जाता है।

थू-थू-थू-! मुझे नहीं मालूम था! अब मैं अपने नख कभी न बढ़ने दूंगा।

यदि नाखून न हों?

दादा, ये नाखून बड़े खराब हैं!

क्यों इन्होंने क्या खराबी की?

देखिये कितने जल्दी-जल्दी बढ़ते हैं, कोई ठिकाना है!

तो तुम्हारा क्या बिगाड़ता है? भले बढ़ें।

हां, आप डाटें कि नख क्यों बढ़ाये? जाओ कटवा आओ!

डाटने की क्या बात है? बढ़े हुए नख कटेंगे, नहीं, तो गंदे होंगे और गंदगी फैलायेंगे।

तो फिर इनसे कहा किसने कि ये यों बार-बार बढ़ें और बार-बार कटें?

हूं.....तो तुम बहुत अधिक बुद्धिमान हो गये, क्यों?

और नहीं तो क्या? भगवान ने नाखून बनाये ही क्यों? व्यर्थ की झंझट।

झंझट नहीं, वह तो तुम्हारी अंगुलियों की शोभा है! जानते हो, नख न हों, तो अंगुलियों का क्या हो?

अंगुलियां, अंगुलियां ही रहेंगी, होगा क्या?

नहीं, यही तो बात है! नख न रहें, तो अंगुली-अंगुली न रहेगी!

यह कैसे?

बिना नाखूनों वाली अंगुलियां, तो लूली हो जायंगी; न खड़ी रही सकेंगी, न मुड़ सकेंगी लटकती रहेंगी। उनसे न तुम लिख सकोगे, न कोई चीज उठा सकोगे और न रख सकोगे! और तो और तुम अपने हाथ से खाना भी नहीं खा सकोगे। चम्मच भी नहीं उठा सकोगे। फिर तो तुम्हें कुत्ते-बिल्ली और गाय आदि की भांति औंधे झुक कर लपालप जीभ चलानी पड़ेगी, और चाट-चाट कर खानी पड़ेगी। भारी कसरत हो जायगी समझे?

बाप रे बाप! एक छोटा-सा नाखून न हो, तो गजब हो जाय? मैं क्या जानूं नाखून की इतनी कीमत है। मैं तो उसे झंझट समझने लगा था।

यही तो हम भूल करते हैं। भगवान बिना मतलब के कोई चीज नहीं बनाता। उसकी बनाई हर वस्तु का उपयोग होता है!

बाल-बन्धु-समाचार

'आगे कदम' हस्तलिखित पत्रिका के संपादक सूचित करते हैं, कि सितम्बर मास का पुरस्कार निम्न मित्रों की श्रेष्ठ रचनाओं पर दिया गया:

महेन्द्र अग्रवाल.....हापुड़
चंद्रकिशोर.....बुलंद शहर
एस. कांत जोशी.....अजमेर
सुश्री प्रभावती.....दिल्ली
पुखराज बोहरा.....जोधपुर

पत्रिका के 'दिवाली अंक' के लिये अच्छी-अच्छी रचनायें भेजने की मित्रों से प्रार्थना है।

नेमीचन्द्र 'भावुक'
द्वारा—बाटमल तेजराज
सराफा बाजार, जोधपुर

× × ×

'पथिक' हस्तलिखित पत्रिका का आगामी 'दिवाली-अंक' प्रकाशित होगा। बन्धुओं से निवेदन है कि अपनी-अपनी सुन्दर कृतियां शीघ्र ही भेजने की कृपा करें।

संपादक
'पथिक' कार्यालय
कोटा [राजस्थान]

× × ×

विगत मासों से 'शारदा' नामक हस्तलिखित पत्रिका अनवरत प्रकाशित होती रही है। लेखकों को अपनी उत्तम रचनायें भेजने का सादर निमंत्रण है। सर्वश्रेष्ठ कृतियों पर पुरस्कार देने की भी व्यवस्था है।

जिन सच्चे और अच्छे बंधुओं को पत्रिका देखनी हो, साढ़े चार आने का पोस्टेज व्यय भेजकर एक निश्चित अवधि के लिए पत्रिका देखने को मंगवा सकते हैं।

रघुवर दयाल गुप्ता
(संपादक, 'शारदा')
शारदा-पुस्तकालय
नजीबाबाद [युक्तप्रांत]

× × ×

मंत्री बाल सभा सूचित करते हैं कि सभा एक छोटी-सी पुस्तिका प्रकाशित कराने का विचार रखती है। जिसमें साथियों की छोटी-छोटी रचनायें होंगी और सर्व श्रेष्ठ पांच रचनाओं पर पुरस्कार देने की व्यवस्था की जायगी। बालबन्धु अपने विचार शीघ्र भेजें।

अध्यापक चन्द्रदत्त
डी. ए. वी. हाई स्कूल
मोखरा[रोहतक]

× × ×

बाल-बंधु परिषद् बीकानेर के मंत्री बृजबिहारी लाल लिखते हैं कि आश्विन शुक्ला सप्तमी को परिषद् की ओर से श्री दीनदयालजी शर्मा के सभापतित्व में बाल-बंधुओं की एक सभा जुटी।

काश्मीर की घाटी में

[पृष्ठ ८ का शेष]

नमकीन चाय से (चीनी दूध से रहित) बासी रोटी के टुकड़े डालकर आरम्भ करता है तथापि वह इसे बड़े चाव से खाता है सारांश उसके भोजन में पौष्टिक वस्तुओं का प्रभाव है ! वह अज्ञानता, निर्धन और भोलेपन की सजीव मूर्ति है उसके रहने तथा पहनने का ढंग गंदा है फिर भी वह आकर्षण का केन्द्र है उसके गुलाबी कपोल और हृष्ट पुष्ट शरीर उसके साधारण खान पान के साथ तुलना करने से प्रत्येक व्यक्ति को आश्चर्य से परिपूर्ण कर देते हैं उसका आधुनिक पश्चात्य बंधनों से छुटकारा और इस घाटी की स्वस्थ बर्द्धक जल-वायु तथा फल उस की आभा और स्फुर्ति के कारण हैं ! वह स्वभाव से कुछ डरपोक है आप किसी काश्मीरी बच्चे को बुलायें वह आपके सफेद वस्त्र देखकर भाग जायेगा ! मुझे निर्जन घने वर्षों में सपत्नी (भूषणों आदि से सुसज्जित) घूमने का अवसर हुआ यदि कोई काश्मीरी मुसलमान मार्ग में मिलता वह सलाम करता और चल देता !

प्राकृतिक सौन्दर्य

काश्मीर की सुंदर घाटी हिमालय की गोद में स्थित है प्रत्येक स्थान पर प्रकृति वहां मुस्कराती है, यह दीर्घकाल से यात्रियों, कवियों, आदि के लिये आकर्षण रहा है यहां प्रत्येक प्रकार का आनन्द और खेल की सामग्री है बरफ से ढकी हुई पहाड़ों की चोटियां, हरियाली भरने, निर्मल जल के स्त्रोत, घने बन, भांति-भांति के पुरुष; फलों से लदे वृक्षों को देखकर मन का मोर नाच उठता है और बरबस ये शब्द स्मरण आते हैं कि यदि पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है तो यहीं है यहीं है यहीं है !

FOR BETTER LIGHT CHEAP PRICE and DURABILITY; BUY

Sole Distributors: for Sind, Baluchistan and Rajputana. MIRPURKHAS ELECTRIC SUPPLY CORP. LTD. WOOD STREET, KARACHI.

Stockists:- BINANI ELECTRIC STORES M. GANDHI ROAD, KARACHI.

MYSORE MADE IN INDIA

स्त्रीको श्वेत प्रदर

स्त्री को श्वेत पानी की बीमारी भयानक होती है। इस बीमारी को ल्युकोरिया भी कहते हैं। इस बीमारी से पीड़ित होने वाली स्त्री के गुप्त शरीर से समय असमय श्वेत रङ्ग का बदबूदार पानी या लेस निकलता है और धीरे-धीरे उस स्त्री के यौवन को समाप्त कर देता है। उसकी कमर, नाफ, नले, पेट, बल्कि सारे शरीर में दर्द होने लगता है। माहवारी अर्थात् मासिक धर्म भी खराब हो जाता है। यह रोग बड़ा भयानक है। स्त्रियों को इसमें लापरवाही नहीं करनी चाहिए।

श्वेत पानी को रोकने की विधि

नवयुग की जांच से अब पूरी तरह साबित हो चुका है कि इस श्वेत पानी की बीमारी को समूल नष्ट करने की सबसे बढ़िया विधि यह है कि बीमार स्त्री को केवल एक शीशी औषधि 'रोक' सेवन करा दी जाय। इस औषधि के सेवन से ठीक तीसरे दिन श्वेत पानी की बीमारी बिल्कुल ठीक हो जाती है। हजारों वैद्य, डाक्टर, हकीम इस औषधि को रोगियों पर सेवन कराके ख्याति प्राप्त कर रहे हैं। यदि आवश्यकता हो तो:—

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४, दिल्ली

के पते पर पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा औषधि 'रोक' की एक शीशी मंगा लीजिये। एक शीशी का मूल्य ३) तीन रुपया डाक व्यय ॥-) आना है। हर धर्म की स्त्रियां सेवन कर सकती हैं।

मलोरिन नं० ५० मौसमी बुखारों के लिए अक्सीर है

सोल एजेंटः— देहली जाम फैक्टरी नयाबांस, बीड़ी मार्केट, देहली। (सं.

मिर्गी का २४ घण्टों में खात्मा। तिब्बत के सन्यासियों के हृदय का गुप्त भेद, हिमालय पर्वत की ऊंची चोटियों पर उत्पन्न होने वाली जड़ी बूटियों का चमत्कार, मिर्गी हिस्टीरिया और पागलपन के दयनीय रोगियों के लिये अमृत दायक। मूल्य १०॥) रुपये डाकखर्च पृथक।

पता—एच. एम. आर. रजिस्टर्ड मिर्गी का हस्पताल हरिद्वार।

दीपावली के शुभ अवसर पर

हम 'अर्जुन' के पाठक तथा प्रतियोगियों का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं

३५००) सन्तोष पहेली नं० ५ में अवश्य जीतिये

२०००) सर्वशुद्ध वालों को, १०००) न्यूनतम अशुद्धियों पर दिया जावेगा। ५०) २५) १५) १०) क्रमशः सर्वाधिक कूपन भेजने वालों को दिया जावेगा। ४००) के निम्न पुरस्कार दिये जावेंगे। ५०) ५०) सर्वशुद्ध पूर्ति वाले महिला या विद्यार्थी को।

१. सर्वशुद्ध पूर्तियां वाले सज्जनों को नकद इनाम के अतिरिक्त एक हाथ घड़ी (15 Jewels) ७५) रु० की दी जावेगी।

२. एक अशुद्धि वालों को इनाम के अतिरिक्त १-१ हाथ घड़ी ३५) की दी जावेगी

३. दो — — — — फाउन्टेनपेन २०) — —

४. तीन— — — — — ८) — —

५. कम-से-कम ८ पूर्तियां भेजने वालों को भी उपयोगी उपहार दिये जावेंगे।

पूर्तियां भेजने की अन्तिम तारीख ३० अक्टूबर (३०-१०-४६

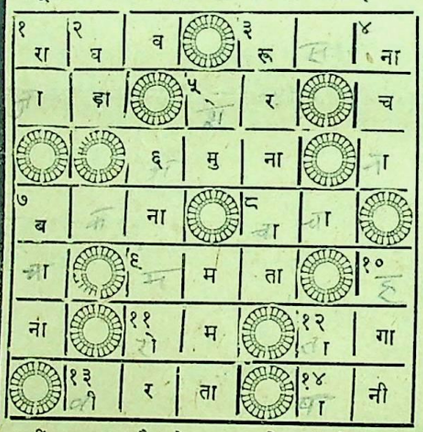

संकेत बायें से दायें— रामचन्द्र जी यह भी कहलाते हैं ३. नाराज होना, गुस्सा ५. यह जानवर जंगल का राजा कहलाता है। ६. पवित्र नदी। ७. बकवास करना, व्यर्थ की बातें करना ८. बाप का भाई यह कहलाता है। ९. माता अपने पुत्रों के प्रति यह रखती है ११. शरीर के बाल, रोआं १२. दर्जी इसके बिना काम नहीं कर सकता है, डोरा। १३. सेनापति में यह तो होनी चाहिए। १४. जल।

ऊपर से नीचे को— १. सम्राट, नरेश। २. पानी इसमें भरा जाता है ३. नृत्य करना। १०. 'नीगाह' पलट गई है (हगानी)। ७. रक्षा करना।

नियमावली— एक नाम से एक पूर्ती की फीस १॥) एक रु० आठ आने फिर प्रत्येक के ॥) आठ आने। फीस मनी आर्डर द्वारा भेजनी चाहिए। मनी आर्डर की रसीद पूर्तियों के साथ भेजें। म० आ० कूपन पर तथा पूर्तियों के साथ में और लिफाफे पर अपना नाम व पता अवश्य लिखें। पूर्तियां सादे कागज पर जितनी इच्छा हो, भेज सकते हैं। नतीजा तथा पहेली नं० ६ साप्ताहिक अर्जुन ११ नवम्बर को छपेगा। पूर्तियां एवं मनी आर्डर भेजने का पताः—

एस० एन० भटनागर,

डिग्गी बाजार, दर्जी मोहल्ला अजमेर।

पहेली नं० ४ का शुद्ध हल।

बायें से दायें—१. रामायण, ३. चार, ५. सरल, ७. लाभ, ८. दाध ९. चटनी, १०. घन, ११. सपूत, १२. नरनाह, १३. जोगी।

ऊपर से नीचे—१. रामलीला, २. मान, ३. चाय ४. रथ, ६. रजनी।

सर्वशुद्ध ३ प्रत्येक को १३३
१ अशुद्धि १० ,, ,, ५
२ ,, १९ ,, ,, ३
३ ,, ३३ ,, ,,

सब पुरस्कार २० अक्टूबर भेजे जावेंगे।

सर्वाधिक कूपनों का पुरस्कारः— १— कमलाकान्त हापुड़ १०१ पूर्तियां २— दीनानाथ मुगलसराय ४० पूर्तियां १५) ३—सी.एम.मेहरा बनारस २८ पू०

मर्द के पेशाब के बाद

सफेद बूँद

यदि किसी पुरुष को पेशाब करने के पहले या पेशाब करने के बाद सफेद रंगका पानी आता हो तो यह बहुत भयंकर बात है। इसे प्रमेह का रोग कहते हैं। धीरे-धीरे यह रोग बढ़ जाता है तो आदमी पौरुषहीन हो जाता है। उसकी शक्ति समाप्त हो जाती है। इस वास्ते जिन पुरुषों को यह शिकायत हो या स्वप्नदोष होता हो तो इस भयंकर रोग से लापरवाही नहीं करनी चाहिये।

प्रमेह का रोग केवल ७ दिन में नष्ट हो जाता है

और केवल ३॥) खर्च होंगे। "जौहरे आजम" इस रोग के लिये अक्सीर प्रमाणित होती है। केवल एक शीशी दवा "जौहरे आजम" से बड़े बड़े पुराने रोगी स्वस्थ हो गए। "जौहरे आजम" प्रमेह के रोग का सबसे अच्छा इलाज है। जिन लोगों को आवश्यकता हो—

मैनेजर, जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४ दिल्ली

के पते पर पत्र लिखकर "जौहरे आजम" की एक शीशी वी० पी० द्वारा मंगा लें। एक शीशी का मूल्य ३॥) तीन रुपया आठ आना है पार्सल का खर्च ॥-) लगेगा।

[टेलीफोन नं० ६२६८]

स्त्री रोगों की निपुण चिकित्सिका

लेडी डाक्टर **कविराज आर. रानी** ही हैं

आप किसी भी स्त्री रोग में ग्रस्त हों तो निम्नलिखित पते पर मिलिये। ये आपको उसी समय ठीक कर देंगी। इसके अतिरिक्त उनकी तैयार की हुई औषधि 'आशा' एक ऐसी औषधि है जोकि स्त्री के आन्तरिक बाह्य रोगों को दूर करके सन्तान योग्य बना देती है और उसका मूल्य केवल १०) रु० है। डाक व्यय पृथक होगा। औषधालय—

लेडी डाक्टर-**कविराज आर. रानी**

गली नं० १ अर्जुननगर निकट शाहालमी अड्डा लाहौर।

सन्यासियों की गुप्त बूटियां

इस पुस्तक में सैकड़ों ऐसी जड़ी बूटियों के गुप्त रहस्य प्रकट किये गये हैं, जिनसे सन्यासियों की धाक जमी हुई है। हालांकि इनमें से अधिकांश बूटियां आपको जंगल, खेत बागीचों और पंसारियों की दुकानों पर भी मिल सकती हैं, जिनसे आवश्यकता पड़ने पर स्त्रियां भी सिर से पांव के नख तक के सभी रोगों का इलाज घर में ही कर लिया करेंगी। इस पुस्तक को पढ़ लेने के बाद आप इस युग के धन्वन्तरि समझे जायेंगे। रोगियों का तांता बंधा रहेगा। कुछेक बूटियों की सूची—

लाख-लाख रु० के प्रयोग—(१) ऐसी बूटी कि जिसकी लकड़ी कान में लगा देने से सर्प काटे का विष मुख द्वारा निकल जाता है, (२) वह बूटी जिससे गूढ़ गर्भ ५ मिनट में निकल जाता है, (३) मधुमेह की अक्सीर बूटी, (४) दुबले पतले आदमी को मोटा ताजा बना देने वाली बूटी, (५) सात दिन में नपुन्सक को मर्द बनाने वाली बूटी, (६) दमे की अद्भुत बूटी, (७) वह बूटी-जिसके रस में अंगुली डुबाने से तत्काल ज्वर उतर जाता है, (८) गर्भ रोक बूटी, (९) उपदंश को ७ दिन में मिटाने वाली बूटी, (१०) निमोनियां की बूटी, (११) वह बूटी जिससे बन्ध्या के पुत्र पैदा हो। ऐसी ही सैकड़ों बूटियों का वर्णन इसमें है, जिनसे चमत्कार दिखा कर आप सिविल सर्जनों को दंग कर सकते हैं। मूल्य २॥) डाकखर्च ≈)

पता—रसायन फार्मेसी (५) संगरिया (बीकानेर)

विजयगढ़ निवासी

भारत विख्यात वैद्यराज बांकेलाल गुप्त प्राणाचार्य्य
भूतपूर्व मैनेजिंग प्रोप्राइटर धन्वन्तर औषधालय
एवं भूतपूर्व सम्पादक धन्वन्तरि
ने

प्राणाचार्य्य भवन

नामक एक वृहद संस्था २००००० दो लाख के मूलधन से स्थापित की है जिसके लिमिटेड होने के लिये कागजात तैयार हो रहे हैं। शीघ्र ही लिमिटेड हो जायगी। शेयर प्रायः सब बिक चुके हैं। इस संस्था में आयुर्वेदीय, पेटेन्ट और नवीन प्रणाली से प्रस्तुत औषधियां, वैद्यक पुस्तकें, प्रवास मंजूषा चित्र आदि के अतिरिक्त उक्त वैद्यराज जी के सम्पादकत्व में "प्राणाचार्य्य" नामक आयुर्वेदीय उच्च कोटि का सचित्र मासिक पत्र एवं साप्ताहिक पत्र शीघ्र ही प्रकाशित होगा। अभी से ग्राहक बनने से मासिक का ४) वार्षिक और साप्ताहिक का ६) वार्षिक मूल्य लिया जायगा। सर्व साधारण को खेराज और चिकित्सकों एवं औषधि विक्रेताओं को थोक भाव का सूचीपत्र शीघ्र मंगा लेना चाहिये।

एजेण्टों की आवश्यकता है

व्यवस्थापक — **प्राणाचार्य भवन, विजयगढ़ जि० अलीगढ़**

रजि० नं० एल० ४६००

विजय पुस्तक-भण्डार देहली की

जीवनदायिनी सामयिक पुस्तकें

जीवन चरित्र-माला:—सम्पादक—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

पं० मदनमोहन मालवीय

(ले०—श्री राम गोविन्द मिश्र)

महामना मालवीय जी का क्रम बद्ध जीवन वृत्तान्त। उनके मन को और विचारों का सजीव चित्रण। और उनके सम्बन्ध में महापुरुषों के मत। सब कुछ एक ही पुस्तक में। मूल्य १।) डाकखर्च ।=)

श्री सुभाषचन्द्र बोस

(लेखक—श्री रमेशचंद्र आर्य)

यह कांग्रेस के भूतपूर्व राष्ट्रपति का प्रामाणिक और पूरा जीवन-चरित्र है। ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। पुस्तक के अंत में श्री सुभाष बाबू के विचारों का संग्रह भी है। मूल्य ॥=) डाक व्यय ।-)

पं० जवाहरलाल नेहरू

(ले०—पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति)

इस पुस्तक में इन प्रश्नों का उत्तर मिलेगा : — पं० जवाहरलाल जी क्या हैं ?वह जो कुछ भी हैं, वह कैसे बने ? वह क्या चाहते और क्या करते हैं ? इन प्रश्नों के उत्तर में भारत के इस महापुरुष का सारा चरित्र आजाता है। भाषा, लेखन शैली और भाव के विषय में कुछ लिखना अनावश्यक है। इतना ही बताना पर्याप्त है कि इसमें लेखक की सब विशेषतायें विद्यमान हैं। और १९४५ तक की पं० जी के जीवन की प्रायः सारी ही घटनाओं का वर्णन आगया है। मूल्य केवल १।) डाक व्यय ।=)

मौ० अबुलकलाम आजाद

(ले०—श्री रमेशचन्द्र जी आर्य)

यह भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री मौलाना अबुलकलाम आजाद की जीवनी है जिसे श्री रमेशचन्द्र जी आर्य स्वर्गवासी ने बड़े परिश्रम के साथ लिखा है ! इसके पढ़ने से यह भली भांति प्रकट होजाता है कि मौलाना साहब की राष्ट्रीयता दूध की तरह स्वच्छ है और वह अपने मार्ग पर दृढ़ चट्टान की तरह अटल हैं। मूल्य ॥=) डाक व्यय ।-)

महर्षि दयानन्द

ले०—श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति

महर्षि का यह जीवन चरित्र अपने ढङ्ग का पहिला है सब उपलब्ध सामग्री के आधार पर ऐतिहासिक तथा प्रामाणिक शैली पर ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। सत्यार्थप्रकाश के महत्व पर विशेष प्रकाश डाला गया है।

मूल्य केवल १।) डाक व्यय ।=)

"मैं भूल न सकूं"

[सम्पादक श्री जयंत]

श्रीयुत श्रीनाथसिंह जी, श्री वात्स्यायन 'अज्ञेय' श्री काका कालेलकर जी, कवि सम्राट् श्री अयोध्यासिंह जी उपाध्याय 'हरिऔध' श्री रत्नकुमारी जी माथुर, श्रीमती होमवती जी, श्री विष्णुप्रभाकर जी, श्रीयुत देवीदत्त जी शुक्ल तथा श्री पहाड़ी आदि प्रसिद्ध साहित्यिकों उपन्यास और कहानी लेखकों की शिक्षाप्रद सच्ची कहानियों का संग्रह। प्रत्येक कहानी ऐसी है जिसे एकबार पढ़कर भूलना कठिन है। मूल्य केवल १) डाकव्यय ।-)

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

'जीवन संग्राम'

का

सन्शोधित दूसरा संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय की ललकार एक ही साथ है। श्री पं० जी की इस नई सामाजिक कृति के सम्बन्ध में – ग्वालियर राज्य के प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र "जयाजी प्रताप" ने लिखा है — पराधीन देशों को ऐसी पुस्तकें आशा और क्रियात्मकता का सन्देश देती हैं और इस दृष्टि से यह पुस्तक पठनीय है। 'विक्रम' उज्जैन ने इसके सम्बन्ध में लिखा है -- 'इस पुस्तक की विशेषता और सफलता इसी में है कि इसके लेखक प्रो० इन्द्रजी हैं। पुस्तक हिन्दी भाषी के मनन और संग्रह योग्य है'। मूल्य १) डाक व्यय ।-)

त्याग का मूल्य

यह विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगौर की अमर कृति (उपन्यास) योगा योग का अविकल अनुवाद है। इसी को उपन्यास सम्राट स्वर्गीय प्रेमचन्दजी ने रवि बाबू का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास बतलाया था। ४०० पृष्ठ दोरंगा टाइटल पेज — मूल्य ५) डाकव्यय ।=)

तिरंगा झण्डा

श्री विराज जी रचित चार एकांकिका नाटकों का संग्रह मूल्य १।) डाकव्यय ।-)

"दिल्ली चलो"

ले० दैनिक वीर अर्जुन के सम्पादक आनन्द विद्यालङ्कार व हरिश्चन्द्र

भारतीय स्वतन्त्रता-संघर्ष के अमर सैनिकों की एक अविस्मरणीय गाथा, कर्नल सहगल के विशेष संदेश सहित। सुभाष बाबू भारत से कैसे भागे, आजाद हिन्द फौज का निर्माण और उसके कारनामे, तथा मुकदमों का पूरा विवरण

मूल्य डाक व्यय सहित २।-)

घर बैठे हुनर सिखाने वाली अनुपम पुस्तकें—

साबुन-विज्ञान

तैल का सब से बड़ा उद्योग साबुन है और देश के साधनों को देखते हुये साबुन के उद्योग विस्तार के लिये अभी बहुत बड़ा क्षेत्र पड़ा है। परन्तु इस उद्योग में सफलता प्राप्त करना साबुन बनाने की अच्छी शिक्षा पर निर्भर है। 'साबुन-विज्ञान' इस विषय में अद्वितीय पुस्तक है। हर प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के लिये इसे अवश्य पढ़ें। मूल्य २) डाकव्यय ।-)

तैल-विज्ञान

इस पुस्तक में तिलहन से लेकर तैल के चार बड़े उद्योगों की विवेचना सविस्तार तथा सरल ढंग से की गई है। अतः केश तैल, वनास्पति घी, पेण्ट और वार्निस के उद्योग सीखने के लिये 'तैल विज्ञान' पुस्तक अवश्य पढ़िये। मूल्य २) डाकव्यय ।-)

हमारे घर

भट्टी की तरह धधकते हुये भारतीय घरों को शान्ति सदन कैसे बनाया जाय ? इस पुस्तक में इसी विषय का चिन्तन है। ॥=) मूल्य डाक व्यय ।-)

आनुपातिक प्रनिनिधित्व (Single Transferable Vote) (निर्वाचन सम्बंधी नियम) ले० श्री पं० महावीर जी त्यागी मूल्य ।)

विजय पुस्तक भण्डार (वीर अर्जुन कार्यालय के ऊपर) श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

श्री पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिये 'अर्जुन प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली से छाप कर प्रकाशित किया।

Digitized by eGangotri

वीर अर्जुन साप्ताहिक

ILLUSTRATED VIR ARJUN WEEKLY

वार्षिक मूल्य	८)
छः मास का	४)
एक प्रति का	तीन आना

अ० भा० कांग्रेस के अध्यक्ष

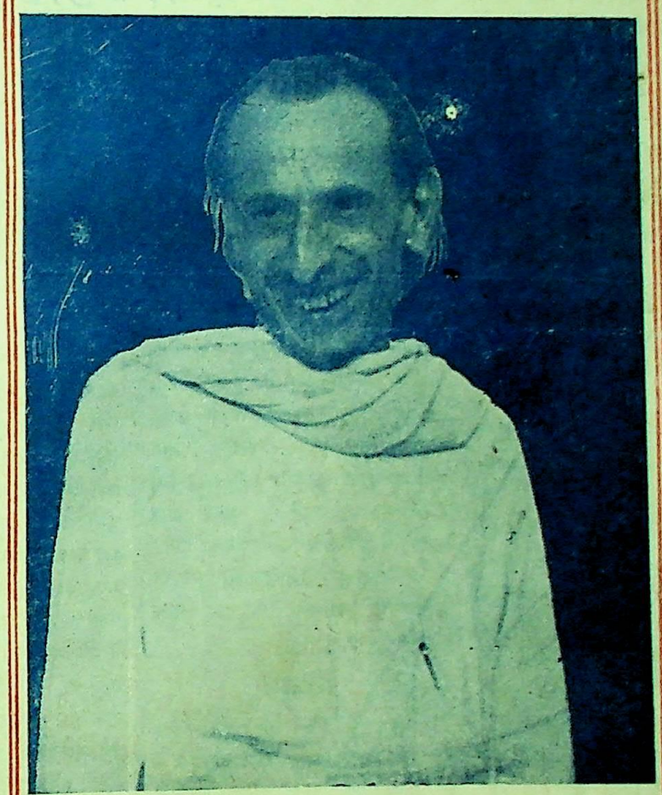

आचार्य कृपलानी

वर्ष १२

अङ्क ३३

8th October 1946
DELHI

सम्पादक— रामगोपाल विद्यालङ्कार
कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार

सोमवार १२ कार्तिक सम्वत् २००३
देहली

चित्र शाला

आधी दुनियां

हमारी अपनी समस्याएं

[कुमारी शान्ता, अजमेर]

हम से मेरा अभिप्राय उन स्त्रियों से नहीं है जो तरुणावस्था को पार कर प्रौढ़ावस्था में पहुंच चुकी हैं; और न उन बहिनों से ही है जो अभी छोटी हैं और समाज जिन्हें अबोध और अज्ञान कहता है; वरन् उन कुमारियों से है जो वयस्का हैं; गार्हस्थ-जीवन के प्रवेश द्वार पर खड़ी हैं तथा जिनके अभिभावकों की हितैषिता हमें एक नजरबन्द-सा बनाये हुए है। मेरा मतलब सिर्फ उन्हीं किशोरियों से है, जो साधारणतया दस और बीसके बीच में हैं तथा जो पूर्ण-यौवन के तट पर खड़ी हैं यों तो अनेक सामाजिक बधन हमारे जीवन की विभीषिकाएं तानकर प्रगतिशीलता के पथ को रोके हुए हैं, पर मैं यहां अपनी दो-तीन समस्याओं का विवेचन करूंगी, जिनके हल पर ही हमारे जीवन की कुछ सफलता निहित है। मैं पूर्ण स्वतन्त्रता नहीं चाहती क्यों कि 'पूर्ण स्वतंत्रता' का अर्थ है सामाजिक अव्यवस्था।

बंदी-जीवन

मुझे पुरुष समाज से विरोध नहीं है, क्योंकि सनातन परिपाटी के अनुसार हम परस्पर एक दूसरे के जीवन के पूरक हैं, हमारा साथ चिरस्थायी है। यह दूसरी बात है कि कोई अविवाहित रहकर अपने क्षणभंगुर जीवन की पूर्ति करदे, पर यह उनका व्रत और तपस्या है, जिसमें जीवन की यथार्थता नहीं है। गार्हस्थ-जीवन के हम दो पहिये हैं, जिन्हें एक समान मजबूत रहने की आवश्यकता है, इसलिये शारीरिक व्यवस्था हमारे जीवन की पहिली आवश्यकता है। पर हमारे अभिभावक जिनमें हमारी मा भी है, हमारे १०-१२ वर्ष को पार करते ही हम पर एक बदी-सा अनुशासन करने लगती है। यहां पर मैं उन बहिनों के अभिभावकों की बात नहीं करती जो पाश्चात्य सभ्यता से प्रेरित हैं, क्यों कि उन्हें स्वतन्त्रता तो रहती है पर उनकी स्वतन्त्रता उच्छृंखलता का रूप धारण कर लेती है। पर अधिकांश हम ऐसी ही लड़कियां हैं, जिनकी दुनिया केवल घर तक ही सीमित रहती है। हमें बाहर कदम रखने का आदेश नहीं रहता और घर की चहारदीवारी में ही हम बंदी-सी बनी रहती हैं। इस संकुचित क्षेत्र ने हमें कायर और डरपोक बना दिया है और फिर लोग कहते हैं कि दुर्बल प्रवृत्ति कन्याओं का नैसर्गिक नियम है। अगर भाग्यवश हम विद्यार्थिनी हुईं तो अवश्य ही ४-६ घंटे के लिये इस कारागार से मुक्त हो पाती हैं। हमारे समवयस्क लोगों से मेल-जोल तो पहिले ही बन्द हो जाता है, यहां तक कि अपने स्वजनों तथा परिजनों से भी जिनकी गोद में हम खेलते थे हमारा स्वच्छंद बोल-चाल सीमित हो जाता है। यद्यपि हम स्कूल की 'महरी' की छत्रछाया और बसों में ही स्कूल जाती हैं पर फिर भी हमारे सदाचरण में हमारे अभिभावकों को विश्वास नहीं रहता। आमोद-प्रमोद से तो हम वंचित हो ही जाती हैं, क्योंकि स्कूल से आ जाने के पश्चात् हम पूर्णतः अपने मां-बाप की मरजी पर अवलम्बित रहती हैं। जो स्कूल नहीं जातीं, उनके ऊपर तो बहुत कठोर बंधन होते हैं। लोग सोचते होंगे कि इस प्रकार के बंधनों से हम अपनी सन्तान को अनुशासन का पाठ पढ़ाते हैं, पर वे भूल जाते हैं कि वे उनके जीवन से खेल रहे हैं। गार्हस्थ जीवन में प्रवेश करते ही जो तपेदिक जैसे संक्रामक रोग हो जाते हैं वे इसी अनुशासन के दुष्परिणाम हैं और हमारी अकाल मृत्यु के साधन हैं।

लोग कहते हैं कि हमें युग के साथ चलना चाहिये परन्तु उसका उदाहरण स्वयं मैं अपने अनुभव से दूंगी कि एक बार जब मेरी शिक्षिका ने एक लेख 'सिनेमा' पर लिखने के लिए दिया, तब ३२ लड़कियों की कक्षा में से केवल ६ ही लड़कियां ऐसी थीं, जिन्होंने सिनेमा २-४ बार देखा था और शेष लड़कियों ने सिनेमा न देखने के कारण लेख लिखने में अपनी असमर्थता प्रकट की। हमारी शिक्षिका ने हमारी कूपमंडूकता पर क्षोभ प्रकट किया और लेख का विषय बदलना पड़ा।

शिक्षा

भारत के १० प्रतिशत शिक्षित समाज में हमारी संख्या कठिनता से एक है। माता-पिता, स्वजन परिजन कहते हैं 'अरे लड़कियों को पढ़ाकर कोई बैरिस्टर वकील या डाक्टर थोड़े ही बनाना है अथवा कोई दफ्तर की नौकरी ही कराना है। बस उनके लिये तो अक्षर ज्ञान ही यथेष्ट है, जिसका दुष्परिणाम यह होता है कि हमारे मस्तिष्क का पूर्ण विकास नहीं हो पाता। फिर क्यों न हमारी सन्तान जर्जर हो, क्यों न घर-घर में लड़ाई और कलह हो।

कई लोगों को तो मैंने यह भी कहते हुए सुना है कि पढ़-लिखकर लड़कियां आचार भ्रष्ट हो जाती हैं। क्या यह हम सदा पर किये गये अनैतिकता दोषारोपण नहीं है? क्या यह उनका स्वयं अपनी सन्तानों पर लगाया गया दोष नहीं है, जिसके लिये तुम्हें खुद लज्जित होना चाहिये?

आर्थिक पहलू

स्त्री शिक्षा के अभाव के कारण हमारे समाज में हेय स्थान तो है, हम आर्थिक विवशताके कारण अपने अभिभावकों पर आश्रित रहने से हमारी घर में कोई कदर नहीं है। एक बार स्वयं हमारे पिताजी ने भी अपने व्यंग में माताजी से कहा था—देखती तो हो अभी दो डिग्रियां और हैं और तब मैंने अनुमान लगाया कि पिताजी को जो डिग्रियां चुकानी थीं वे अदालती नहीं, वरन् हम दो बहिनों के मौजूद रहने की अशुभता थी जो अभी कुंवारी थीं। हमारे अभिभावक खूब समझते हैं कि हमें अपनी कन्याओं से कोई आर्थिक लाभ की आशा नहीं है उल्टे खर्च का बोझ है इसलिये उनका ध्यान सदा लड़कों के भविष्य की ओर ही केन्द्रित रहता है, वे उसे खूब पढ़ाते-लिखाते और उज्जवल भविष्य की नवीन योजनाएं पेश करते हैं, परतु दूसरी तरफ हमारा जीवन शुष्क, मरु रहता है। जब हमारा भाई और हम क्रमशः १२ वीं और ८ वीं में प्रवेश पाये थे तब पिता ने आर्थिक अभाव की दलील पेश कर मेरा पढ़ना तो बद करा दिया परंतु भाई के लिये २-४ सौ का खर्च उठाकर भी अध्ययन जारी रखा। यद्यपि मेरे पिता की आर्थिक अवस्था हम जैसी और लड़कियों को पढ़ाने की थी। तब मैंने विचारा कि हमारे ज्ञान विकसित न होने का कारण हमारी आर्थिक पराधीनता है और तब मैंने अपनी शिक्षिकाओं के सहयोग से पढ़ाई का क्रम जारी रखा तब कहीं लजा कर उन्होंने स्कूल की नियमित फीस चुकाई। इस आर्थिक समस्या को हल करने के लिये जापानी महिलाओं का प्रयास विशेष उल्लेखनीय है जो गृह कला की कुशलता विदेशी बाजारों तक में भेजकर यथेष्ट धन कमाती हैं। जब हमें घर से बाहिर कदम रखना भी एक दम वर्जित है तब हम किस तरह धनोपार्जन कर सकती हैं। पर जिस तरह भी हो हमें अपने आर्थिक साधनों को पुष्ट बनाकर अपने अभिभावकों की धन लिप्सा का अवश्य संतुष्ट करना है वरना हमारी सामाजिक अवहेलना हमारी पहेली ही बनी रहेगी और हम अपने भाइयों की तरह लोक-प्रिय न बन सकेंगी।

वैवाहिक समस्या

इसी आर्थिक अभाव का दूसरा पहलू हमारी वैवाहिक समस्या की विभीषिका है। अनमेल व्याह इसी का दुष्परिणाम है। हमारे समाज की कुछ ऐसी परिपाटी है कि लड़की वाला ही वर की तलाश में घर से बाहिर निकलता है और लड़कों के नखरों से जब बाज आ जाता है जिसे वे सहन नहीं कर पाते तब गुस्से में आकर हमारा कहीं भी ठिकाना कर दिया जाता है। हमारा उनकी मरजी में दखल देना नियम विरुद्ध माना जाता है, चाहे वर लड़की को भी पसंद हो या न हो। जब वर को भली-बुरी लड़की देखने का अधिकार है तो मैं नहीं जानती कि फिर हमें इस अधिकार से क्यों वंचित रखा जाता है कि हम भी उनकी मनोवृत्तियों को समझने की चेष्टा करें।

माता-पिता का कर्त्तव्य तो केवल यही रह जाता है कि किसी भी तरह से युवा लड़की का ठिकाना कर उऋण हो जायें। सुख दुख तो जीवन के साथी हैं। इसलिये वैवाहिक समस्या का निवारण न होने से आज 'तलाक' जैसे बिलों की आवश्यकता हुई है जो भारतीय संस्कृति में अवैध हैं। यदि पुरातनयुग की ही आज दुहाई दी जाती है तो क्यों हमारे समाज ने स्वयंवर जैसी प्रथाओं को उठा दिया है। जिनके अभाव में हमारा वैवाहिक सबध भी एक समस्या बन गया है।

अतः जब तक हमारी इन समस्याओं का हल न निकाला जायंगा; तब तक भारतीय स्त्री समाज द्रोही के रूप में ही रहेगा और उसकी यथोचित्त उन्नति न हो सकेगी और न हम अन्य देशों की भांति गौरवान्वित ही हो सकेंगी। क्या हुआ यदि कुछ विजय लक्ष्मी, सरोजनी और कमला देवी हो गई पर इनकी संख्या ही कितनी है?

कुमारी आशा सहाय

आप मेरठ कांग्रेस पर संगठित महिला स्वयसेविका दल की प्रधान नायक नियुक्त हुई हैं।

कुरूपता से प्रेम

न्यूयार्क से राइटर का सम्वाददाता ने सूचित किया है कि एक अमेरिकन लेखक ने यह साबित किया है कि स्त्रियां बदसूरत मर्दों को अधिक पसन्द करती हैं। लेखक का नाम राबर्ट रुआर्क है।

Digitized by eGangotri

★ समाचार चित्रावली ★

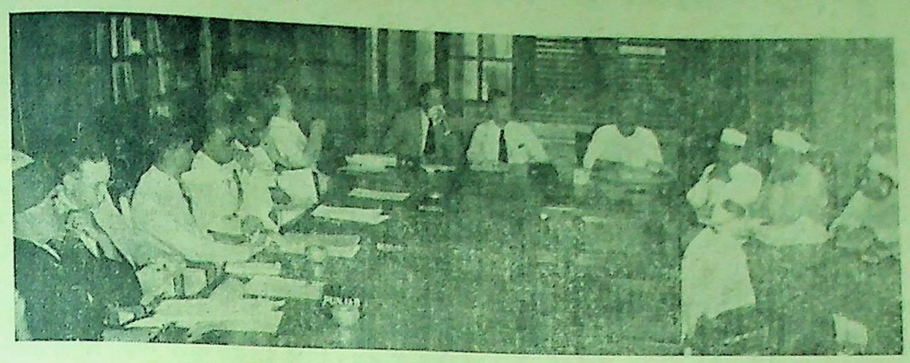

प्रांतों के प्रधानमंत्रियों की कांफ्रेंस— सरदार पटेल के सभापतित्व

...न्ति गांधी अब्दुलगफ्फार खां

...शान्ति का दौरा करने के बाद वापस आने पर प० नेहरू का स्वागत।

कबीली पठानों के पं० नेहरू पर होने वाले आक्रमण को आप अपने ऊपर लेकर जख्मी हो गये।

मेरठ में कांग्रेस की तैयारियां

आखर, हमारे फोटोग्राफर ने स्वागताध्यक्ष चौ० रघुवीर-नारायण को पकड़ लिया। अ० भा० कांग्रेस की मन्त्रिणी कुमारी मृदुला के साथ वे जा रहे हैं

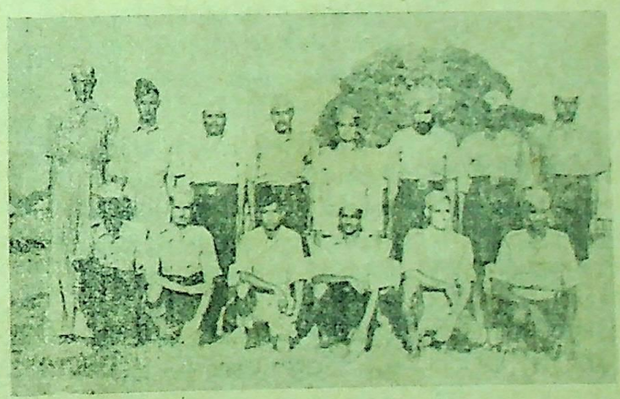

स्वयंसेवकदल व आजाद हिन्द फौज के अफसर; जो स्वयंसेवकों को ट्रेनिंग दे रहे हैं।

इन महिला अफसर — विभिन्न प्रान्तों की प्रतिनिधि महिलाएं अफसर ट्रेनिंग प्राप्त कर रही हैं।

बंगाल में दूसरा नृशंस नरमेध, अग्निकाण्ड और अपहरण

कलकत्ते में मुस्लिम गुण्डेशाही का जो आतंक, आततायीपन और हत्याकांड शुरू हुआ है वह धीरे-धीरे अपना पांव पसारता जा रहा है। बंगाल से आने वाली नित्य घटनाओं से ऐसा मालूम होता है कि मुस्लिम गुण्डेशाही का यह आततायीपन और खूंरेजी सारे बङ्गाल को आवृत कर लेगी। कलकत्ते का हत्याकाण्ड न केवल बङ्गाल प्रत्युत सारे भारतवर्ष के इतिहास में अभूतपूर्व और अश्रुत था। कलकत्ते के हत्याकाण्ड ने चंगेजी हत्याकाण्ड को भी मात कर दिया था। लेकिन इसके बाद होने वाला पूर्वी बङ्गाल लूट, अपहरण, जबर्दस्ती धर्म परिवर्तन और हत्याकाण्ड तो कलकत्ते को भी पीछे छोड़ गया है।

पूर्वी बङ्गाल के नोआखाली जिले से हमें समाचार पत्रों द्वारा जो खबरें प्राप्त हुई हैं वे रोमांचकारी और हृदय को दहलाने वाली हैं। मुस्लिम आततायियों ने वहां आततायीपन की हद करदी है। बङ्गाल की प्रेस सलाहकार कमेटी ने नोआखाली के सम्बन्ध में एक प्रेस विज्ञप्ति प्रकाशित की है, उससे वहां की गम्भीर स्थिति का पता चलता है। इस विज्ञप्ति में कहा गया है कि आततायी खतरनाक एवं मृत्युकारक हथियारों को लेकर गांवों पर हमला करते हैं। वे गांव को लूटते हैं, ग्रामीणों की हत्या करते हैं और घरों में आग लगा देते हैं। गत १० अक्टूबर से ये दुर्घटनायें विस्तृत पैमाने पर लगातार हो रही हैं।

उपर्युक्त दुष्कार्यों के अतिरिक्त आततायी और दुराचारी जबर्दस्ती लोगों का धर्म-परिवर्तन कर रहे हैं, स्त्रियों का अपहरण कर रहे हैं और धर्म एवं देवस्थानों को नष्ट-भ्रष्ट कर रहे हैं। ये दुर्घटनाएं नोआखाली जिले के सदर और फेनी सब डिवीजन के २०० वर्गमील के क्षेत्र में घट रही हैं। सशस्त्र आततायी इस क्षेत्र में किसी को प्रविष्ट नहीं होने देते। बहुत से हिन्दू परिवारों की हत्या करदी गई और बहुत से परिवारों को जीवित आग में जला दिया गया। इन हत्या किये जाने वाले परिवारों में नोआखाली जिले के प्रसिद्ध वकील रायसाहब राजेन्द्रलाल राय और उनका सारा परिवार तथा वहां के प्रसिद्ध जमींदार श्री सुरेन्द्रबोस और उनका सारा परिवार भी शामिल है। आततायियों ने एक वहां के हाई स्कूल को भी जलाकर खाक कर दिया।

नोआखाली के ये भयंकर आंकड़े

अ० भा० हिन्दू महासभा के मन्त्री श्री आशुतोष लाहिरी के एक वक्तव्य के अनुसार पूर्वी बंगाल के नोआखाली जिले में हत्याओं के शिकार होने वालों की संख्या सैकड़ों नहीं वरन हजारों है। चांदपुर से आने वाले व्यक्ति बताते हैं कि ढाई सौ वर्गमील के जिस क्षेत्र में घेरा डालकर विनाश-ताण्डव हो रहा है, उसकी आग की लपटें कस्बे से दिखाई देती हैं। नोआखाली से आने वाले हिन्दू महासभा के एक प्रतिनिधि का कहना है कि कई हजार औरतें जबर्दस्ती छीन ली गई हैं। कम-से-कम १० हजार व्यक्तियों का जबर्दस्ती धर्म-परिवर्तन कराया गया है।

श्री आशुतोषजी का कहना है कि गवर्नर और कमिश्नर को सूचना देने पर भी रक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं किया गया। लीगी एम० एल० ए० महीनों से धर्मान्ध जनता को भड़का रहे हैं।

बंगाल प्रेस सलाहकार समिति द्वारा प्रकाशित वक्तव्य के अनुसार नोआखाली तथा टिपरा जिलों के ११ पुलिस थानों के हल्कों पर उपद्रवों का प्रभाव पड़ा है, जिनके अन्तर्गत लगभग १६०० वर्ग मील के क्षेत्र में मार-धाड़, लूट-खसोट, अग्निकाण्ड तथा स्त्री-अपहरन की अब तक अनेक दुर्घटनायें घटित हो चुकी हैं।

कल एक प्रेस-कान्फ्रेंस में, सहायता तथा पुनः संस्थापन कमिश्नर सर वाल्टर गर्नर ने नोआखाली तथा टिपरा जिले के उपद्रवों के सम्बन्ध में बताया है कि इन जिलों से लगभग ५००० शरणार्थी गत ४ या ५ दिन में कलकत्ता आ चुके हैं। इनके अलावा लगभग २०,००० शरणार्थी चांदपुर, रामगंज तथा अन्य क्षेत्रों के सरकारी केन्द्रों पर पड़े हुए हैं।

'स्टेट्समैन' के सम्वाददाता ने फेनी से खबर दी थी कि उन्मत्त गुण्डों की जिस भीड़ ने दस दिन तक रामगज, बेगमगंज, रायपुर, लक्ष्मीपुर तथा सेनांग थाने में लोगों को कत्ल किया, लूटा, घर जलाये, सुरक्षा का झूठा आश्वासन देकर रुपया ऐंठा, स्त्रियों का अपहरण किया तथा उनसे जबर्दस्ती धर्म-परिवर्तन कराया, वह अब त्रिपुरा से फरीदगज-चारहेम-चांदपुर चली गई है।

गुण्डों की इस भीड़ का एक हिस्सा नोआखाली के 'अधिकृत' क्षेत्र में पहरेदारी के लिए छोड़ दिया गया है, ताकि यदि जनता गुण्डों के आदेशानुसार न चले तो उसे आतंकित किया जाय।

पुलिस के इंस्पेक्टर-जनरल श्री टेलन ने बताया है कि गुण्डों के पास बन्दूकें तथा दूसरे अस्त्र-शस्त्र हैं और वे पुलिस तथा फौज का सामना करने को तैयार हैं।

चांदपुर सहायता समिति के मंत्री के अनुसार उपद्रव ग्रस्त क्षेत्रों में हिन्दू जनता का बलात धर्म परिवर्तन बड़े पैमाने पर अभी तक जारी है और स्थिति अत्यन्त भयजनक है। गांवों दफा १४४ के अन्तर्गत आदेशों का जारी करना अत्यन्त आवश्यक हो गया है।

उपद्रव-ग्रस्त क्षेत्रों से हजारों आदमी प्रतिदिन कुमिल्ला आ रहे हैं और जिले के विभिन्न सहायता केन्द्रों में अब तक ४० हजार आश्रयार्थी स्थान पा चुके हैं।

चांदपुर सब डिवीजन के फरीदगज तथा हाजीगंज थाने के क्षेत्रों में उपद्रव बहुत तेजी के साथ बढ़ रहे हैं। घरों का विध्वन्स तथा अन्य हिंसात्मक कार्य बड़े पैमाने पर किये जा रहे हैं।

चटगांव के कमिश्नर को स्थानीय हिंदू सभा के प्रधान द्वारा दिये गये तार के अनुसार रानीगंज थाने के एक गांव में ३००० हिंदू निराश्रित कर दिये गये तथा सैकड़ों का कतल कर दिया गया।

सनद्वीप में पुलिस स्टेशन पर आक्रमण करने वाली भीड़ पर पुलिस ने गोली चलाई। यहां भीषण अत्यवस्था मची हुई है।

१८.५ प्रतिशत हिन्दू

जन-गणना के आंकड़ों के अनुसार नोआखाली के उपद्रव-ग्रस्त क्षेत्रों की आबादी १४ लाख है, जिनमें हिंदुओं की संख्या १८.५ प्रतिशत तथा मुस्लिमों की संख्या ८१.५ प्रतिशत हैं, नोआखाली जिले की आबादी २२ लाख से कुछ ऊपर हैं जिनमें मुस्लिमों की जनसंख्या ८१.४ प्रतिशत है।

टिपरा जिलों के उपद्रव ग्रस्त क्षेत्रों की जनसंख्या ८ लाख है, जिनमे ८३.७ प्रतिशत मुस्लिम तथा १६.३ प्रतिशत हिन्दू हैं।

सशस्त्र फौजी गुण्डे

नोआखाली तथा तिपरा जिले से हजारों आश्रयार्थी कलकत्ता पहुंच रहे हैं। उनके अनुसार उपद्रवों में भाग लेने वाले हजारों गुण्डे बङ्गाल से बाहर के हैं। उनमें से कई लोहे के बने शिरस्त्राण पहने रहते हैं तथा उनके पास पिस्तौलें, बंदूकें व रायफलें हैं। हाजीगंज क्षेत्र के आश्रयार्थियों के अनुसार बड़े-बड़े परशुओं से सज्जित पेशावरियों ने वहां उपद्रवों का नेतृत्वकिया। उन लोगों की उपस्थिति की शिकायत लूट पाट से पूर्व की जाने के बावजूद भी उनकी गतिविधि पर कोई नजर नहीं रखी गयी थे। लोग गत दो मास से वहां अपनी कार्यवाइयां कर रहे थे।

२७ आदमी भूने गये

किसी प्रकार प्राणों की रक्षा कर कुमिल्ला पहुंचे हुए श्री चेत्रनाथ राय ने एक पत्र सम्वाददाता को यह प्रकट किया कि नोआखाली जिले के बेगमगंज पुलिस थाने के एक गांव को सशस्त्र गुण्डों ने लूट लिया और उसके आग लगा दी। कुछ घरों के पुरुषों को उन्होंने एकत्र करके उन्हें एक झोंपड़ी में बंद कर दिया और उसमें आग लगादी, जिसके परिणामस्वरूप २७ प्राणियों को जान से हाथ धोना पड़ा। जो लोग किसी प्रकार प्राण बचाकर भाग सके, उन्होंने जंगलों अथवा समीपवर्ती गांवों की शरण ली। १२ अक्टूबर यहां से सशस्त्र पुलिस ने ३१ स्त्री-बच्चों की मुस्लिम गुण्डों के शिकजे से रक्षा की। कुछ घरों में अब भी बहुत सी महिलाओं को गुण्डों ने कैद करके रखा हुआ है।

हमले के नये तरीके

गुण्डे नवीन तरीकों का भी उपयोग कर रहे हैं। वे पृथक-पृथक झुण्ड बना कर गांवों में जाते हैं। वहां प्रमुख हिंदू ग्रामीणों के पशुओं को मारकाट कर उनके घरों को आग लगा देते हैं तथा उनसे कुछ रुपया ऐंठ कर उन्हें यह चेतावनी देकर छोड़ देते हैं कि वे अमुक तारीख को धर्मपरिवर्तन के लिए तैयार रहें। गुंडों ने अनेक गांवों को घेरा हुआ है और वहां के हिन्दू लोगों के सामने अब भूखों मरने की नौबत आ गई है।

अ० भा० हिन्दूमहासभा के प्रधान डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी को एक पत्र मिला है, जिसमें रामगंज थाना के अनेक गांवो में गुंडों द्वारा की गई लूट-पाट अग्निकांड, व्यभिचार तथा बलात धर्मपरिवर्तन का उल्लेख है और बताया गया है कि सशस्त्र गुंडों ने आम सड़कों को रोका हुआ है और भागे हुए हिन्दू झाड़ियों व तालाबों में छिप कर आत्म-रक्षा कर रहे हैं।

भारत सेवाश्रम-संघ के श्री स्वामी त्रियम्बानन्द ने आंखों देखा निम्नलिखित लोमहर्षक वर्णन किया है।—

१० अक्टूबर को बेगमगंज क्षेत्र के एक भूतपूर्व असेम्बली सदस्य ने स्थानीय बाजार की एक सभा बुलाई और रामगंज थाने के थानेदार के सामने ही अपने श्रोताओं को, जिनकी संख्या १५००० के लगभग थी, एक खास साम्प्रदाय के विरुद्ध भड़काया। सभा समाप्त होते ही समूची भीड़ ने बाजार को लूटना शुरू किया और दूकानों में आग लगानी शुरू की। क्षण भर में ही सारा बाजार आग की लपटों में धू-धू कर जलने लगा और उसके बाद गुंडों ने अपने आपको गुटों में बांट लिया। इसमें से एक गुट स्थानीय जमींदार श्री सुरेन्द्रकुमार बोस

[शेष पृष्ठ २० पर]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'अर्जुन' के ग्राहकों से

'वीर अर्जुन' के ग्राहकों से निवेदन है कि पत्रव्यवहार करते समय अथवा रुपया भेजते समय अपनी ग्राहक सख्या अवश्य लिखा करें, क्योंकि हजारों ग्राहकों की संख्या में उनका नाम ढूंढना असम्भव है।

— प्रबन्धक

★ वीर ★
अर्जुन
अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार १२ कार्तिक सम्वत् २००३

वीर अर्जुनका पूर्वी बंगाल-सहायक-फण्ड

(ले० — श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति)

पूर्वी बंगाल की वर्तमान परिस्थिति को जितनी गहराई में जाकर देखा जाता है, उसकी भीषणता उतनी ही अधिक स्पष्ट होती जा रही है। अपनी जिम्मेवारी छुपाने के लिये बंगाल का गवर्नर पार्लिमेन्ट के पास झूठी रिपोर्ट भेजे, या प्रान्तीय मुस्लिमलीग सब कुछ जान बूझ कर दुनिया को धोखा देना चाहे, अब इसमें सन्देह नहीं रह गया कि पूर्वी-बंगाल के मुसलमानों ने मुस्लिमलीगी लीडरों की इस धमकी को सार्थक बनाने की चेष्टा की है कि हम हिन्दुओं को डायरेक्ट-ऐक्शन के दिन याद दिला देंगे। इस-विषय में यदि किसी भारतवासी को कोई भ्रम हो सकता था तो उसे कांग्रेस की वर्किंग कमेटी के प्रस्ताव ने दूर कर दिया है। पूर्वी बंगाल के हिन्दुओं पर अत्यन्त क्रूर और अत्यन्त पाशविक अत्याचार हुआ है, जिसके लिये मुस्लिम लीगी पूर्ण रूप से जिम्मेवार है।

इस सम्बन्ध में राजनैतिक संस्थाओं और सरकार के सदस्यों का क्या कर्तव्य है, यह दूसरा प्रश्न है। इस समय पहला प्रश्न तो यह है कि हम बंगाल के अत्याचार पीड़ितों की सहायता किस प्रकार करें, उन लोगों के कष्टों की सूची बहुत लम्बी है। जो लोग मारे गये उनके बाल-बच्चे और परिवार सर्वथा अनाथ हो गये हैं। जिनके घर-बार जला दिये गये हैं, उनके पास सिर छुपाने के लिये जगह नहीं है। गांव के गांव उजड़ गये हैं, जिनके निवासी पास के शहरों में शरणार्थी बनकर पहुंच रहे हैं। उनके पास खाने को अन्न नहीं, पहनने को कपड़ा नहीं, और रात के समय सोने को छत नहीं। हजारों व्यक्ति तो ऐसे हैं जो अभी तक उपद्रवियों के घेरे में फंसे हुए हैं! वह उसमें से जिन्दा निकल सकेंगे या नहीं, यह भी नहीं कहा जा सकता। ऐसे समय में देश-वासियों का कर्त्तव्य केवल शाब्दिक सहानुभूति प्रकाशित करके पूरा नहीं हो सकता। इस समय तो आवश्यक है कि बंगाल के अत्याचार पीड़ितों के लिये सब तरह की सहायता एकदम पहुंचाई जाय। सब धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं को अपना ध्यान कुछ समय के लिये पूर्वी बंगाल में केन्द्रित कर देना चाहिये। पूरा यत्न किया जाय और वह भी अत्यन्त शीघ्र— बंगाल की परिस्थिति चाहती है।

मैंने कहा कि अब संस्थाओं को अपना ध्यान कुछ समय के लिये बंगाल में केन्द्रित कर देना चाहिये। इसका यह अभिप्राय नहीं कि व्यक्तियों को इस भरोसे पर बैठा रहना चाहिये। प्रत्येक व्यक्ति को चाहिये कि अपनी शक्ति के अनुसार अत्याचार पीड़ितों की सहायता करे। जो शरीर से सेवा कर सकते हैं, वह वहां पहुंच कर कार्य करने वाली किसी जिम्मेवार संस्था के साथ काम करें। जो धन से सहायता दे सकते हैं उन्हें देनी चाहिये। जिनके हाथ में लोकमत बनाने की शक्ति है वह इस विषय में राष्ट्र को सचेत करें और देश-वासियों को सहानुभूति प्रकट करने का ठोस और क्रियात्मक मार्ग दिखलायें।

जो सज्जन पूर्वी बंगाल के अत्याचार पीड़ितों की सहायता करना चाहते हैं उनकी सहायता के लिये 'वीर-अर्जुन' कार्यालय में 'पूर्वी बंगाल-सहायक-निधि' का उद्घाटन कर दिया गया है। जो महानुभाव इस निधि में धन भेजेंगे उनके नाम 'अर्जुन कार्यालय' से बाकायदा रसीद भेजी जायेगी। पर्याप्त राशि हो जाने पर आवश्यकतानुसार वह राशि पूर्वी बंगाल में सेवा कार्य करने वाली प्रामाणिक संस्थाओं को भेजी जाती रहेगी। निधि में प्राप्त राशियों का विस्तृत ब्योरा, दानियों के नाम तथा व्यय का विवरण समय-समय पर 'वीर अर्जुन' में प्रकाशित किया जाता रहेगा।

'वीर अर्जुन' केवल एक समाचार-पत्र नहीं, वह एक संस्था भी है। उसका काम केवल कहना नहीं, कुछ करना भी है। १९३४ के बिहार-भूकम्प के अवसर पर हमने 'वीर अर्जुन' द्वारा एक पुष्कल धन-राशि सेवा कार्य के लिये भेजी थी। उस समय 'वीर अर्जुन' के पाठकों ने दिल खोलकर 'बिहार रिलीफ फन्ड' में चन्दा दिया था। मुझे पूर्ण आशा है कि 'वीर अर्जुन' का परिवार बङ्गाल के अत्याचार पीड़ितों के लिये भी शीघ्र और पर्याप्त आर्थिक सहायता भेजने में विलम्ब न करेगा। मैं चाहता हूं कि इस अपील के निकलने से पश्चात् पन्द्रह दिन के अन्दर ही अन्दर हम एक अच्छी राशि सहायता के लिये भेज सकें।

जो दान उचित पात्र के लिये और समय पर किया जाता है वही सात्विकदान कहलाता है। अत्याचारपीड़ित स्त्रियों और बच्चों से बढ़कर सहायता का पात्र कौन हो सकता है? मुझे विश्वास है कि आर्यजाति इस समय अपनी सात्विक दान की भावना का पूर्ण परिचय देगी।

प्रमाणिक मजदूर संघ

जो भारत के मजदूर आन्दोलन से कुछ भी परिचित हैं, वे अच्छी तरह जानते हैं कि इस आंदोलन को अधिक व्यवस्थित करने की जरूरत है। आजकल न जाने कितने मजदूर दलों में मजदूर बटे हुए हैं। ये दल परस्पर लड़ते रहते हैं और इन्हीं के कारण मजदूरों की कोई समस्या ठीक ढंग से हल नहीं हो पाती। सभी का दृष्टिकोण भिन्न-भिन्न होता है और एक का कार्य दूसरे को पसन्द नहीं आता। लेकिन इसके कारण न सरकार मजदूरों के सम्बन्ध में कोई नीति निर्धारित कर सकती है। न मिल मालिक, आखिर सरकार को वे मजदूरों का सच्चा प्रतिनिधि मानें? बम्बई सरकार ने इस सम्बन्ध में जो नीति स्वीकार की है, वह बहुत युक्तियुक्त है। उसके अनुसार जिस व्यवसाय में जिस मजदूर-संघ के अधिकतम सदस्य होंगे, उसी को वे उस व्यवसाय के मजदूरों का अधिकृत प्रतिनिधि मानेंगे और किसी भी विवादास्पद प्रश्न पर उसी से सरकार व मिल मालिक बातचीत कर किसी भी निर्णय पर पहुंचेंगे। इस अवस्था में छोटे-छोटे मजदूर दल संगठित होकर कोई अव्यवस्था न फैला सकेंगे। इससे जहां कल-कारखानों को हानि कम होगी, वहां मजदूरों का संगठन भी अधिक व्यापक और मजबूत बन सकेगा। पिछले दिनों भारत सरकार ने श्री मानवेन्द्रनाथ राय के मजदूर संघ को स्वीकार कर लिया था, यह अनुचित था। नयी संख्याओं से मालूम होता है कि उस संघ के सदस्यों की संख्या पिछले दिनों ५१ फीसदी कम होकर २ लाख ७ हजार से १ लाख १ हजार रह गई थी, जबकि अ० भा० ट्रेड यूनियन के सदस्यों की संख्या २ लाख २६ हजार थी। ऐसी स्थिति में श्री राय के मजदूर-संघ को प्रतिनिधि माना नहीं जा सकता। स्थानीय मजदूरसंघों की तो और भी बुरी स्थिति है। इसलिए हम बम्बई सरकार के इस निर्णय का स्वागत करते हैं।

दंगों में हताहतों की जानकारी

पिछले कुछ समय से सरकारों ने साम्प्रदायिक झगड़ों के बारे में यह नीति अपनाई है कि मारे गये या घायल आदमियों की जाति नहीं बताई जाती। ऐसा करने से सरकार का खयाल है कि दूसरी जाति में उत्तेजना फैलेगी। सेंट्रल प्रेस एडवाइजरी बोर्ड ने भी इसी नीति को अपनाने की सलाह दी है। लेकिन हमें सन्देह है कि यह नीति किसी भी तरह सफल हुई है। इस नीति का लाभ आक्रमणकारी को होता है। वह अपना आक्रमण जारी रखता है, क्योंकि वह जानता है कि उसको रोकने वाला कोई नहीं आयगा। सरकारी पुलिस की सहायता का उसे पूरा भरोसा है। जहां सरकारी अधिकारियों की असमर्थता या उदासीनता का आक्रमणकारी को निश्चय हो, वहां एक चीज उसे रोक सकती है वह यह कि उसे यह विश्वास हो कि दूसरी जाति संगठित होकर उसका मुकाबला करेगी। सरकार की समाचार-प्रकाशन नीति से यह होने नहीं पाता। बस, आक्रमणकारियों को खुलकर अपने हाथ चलाने का मौका मिलता है। म० गांधी ने भी इस नीति की आलोचना करते हुए लिखा है कि जिन्हें मालूम नहीं होना चाहिए, वे तो यह जान लेते हैं कि किसने किसे छुरा भोंका है और जिन्हें जानना चाहिए वे अंधेरे में रखे जाते हैं।

जमींदारियों का मुआवजा

अनेक प्रान्तों की असेम्बलियों ने जमींदारी पद्धति समाप्त करने का निश्चय किया है। लेकिन इसके साथ जमींदारियों का मूल्य चुकाने का सवाल पेश हो गया है। उनका मूल्य क्या लगाया जाय, इस संबंध में यद्यपि एक सामान्य नियम बनाने की आवश्यकता है, तथापि एक बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए। बहुत सी जमींदारियां खरीदी नहीं गई, सरकार ने पुरस्कार के रूप में या मालगुजारी वसूल करने के लिए बिना किसी कीमत के बड़ी-बड़ी जमीनें जमींदारों को दे दी हैं। ऐसी जमींदारियों का बहुत बड़ा लाभ वे वर्षों से उठाते आये हैं। इसलिए उन्हें मुआवजा देते समय निश्चित रूप से कम मूल्य मिलना चाहिए बजाय उनको जिन्होंने कुछ समय पूर्व ही जमीनें काफी रुपया लगाकर खरीद की हैं। ऐसा श्रेणीभेद करके कोई अन्याय हम न करेंगे। मुफ्त में सरकार से जमीनें पाने वालों ने अपनी सेवाओं से अधिक फल अब तक पा लिया है। उन्हें तो मूल्य न भी दिया जाय, तब भी कोई अनौचित्य न होगा, लेकिन इससे उनकी सामाजिक स्थिति में विशेष अन्तर पड़ जायगा, इसलिए उन्हें कुछ न कुछ मुआवजा देकर भी असंतोष को दूर करना बुरा न होगा। इस श्रेणीभेद से सरकार का भार भी कुछ हलका हो जायगा।

देशविदेश का घटनाचक्र

इस सप्ताह पूर्वी बंगाल से आने वाले लोमहर्षक समाचारों ने समस्त देश का ध्यान आकृष्ट कर लिया है। भारतवर्ष के दीर्घकालीन इतिहास में ऐसा नृशंस और जघन्य नरमेध कभी हुआ हो, इसका कोई उदाहरण नहीं मिलता। जब बंगाल में मुस्लिमगुण्डे यह सब नृशंसतापूर्ण काण्ड कर रहे थे, वायसराय बम्बई की पूर्वनिश्चित यात्रा पर गये हुये थे।

म० गांधी ने जो बंगाल के दुःखसमाचार सुनकर विचलित हो गये हैं, कांग्रेस के नये अध्यक्ष आचार्य कृपलानी को पूर्वीय बंगाल में स्थिति का अध्ययन करने के लिए भेजा। वे अपनी पत्नी के साथ वहां पहुंचे और पूर्वीय बंगाल के उपद्रवग्रस्त तथा विध्वस्त स्थानों का निरीक्षण किया। उन्होंने सरकारी व्यवस्था की तीव्र आलोचना करते हुए बंगाल की जनता से अपील की है कि 'कल और परसों मैंने जो कुछ देखा और सुना उस से इसी निष्कर्ष पर पहुंचा कि केन्द्र अथवा प्रान्त चाहे जो भी सरकार हो किन्तु बंगाल के सभी स्त्री और पुरुषों को जिस उपाय से हो सके अपनी रक्षा करनी चाहिए।

पूर्वी बंगाल के नरमेध का विवरण पृष्ठ ४

'इस सम्बन्ध में मैं श्री राजेन्द्रलाल राय तथा उनके परिवार वालों का उदाहरण आपके सामने रखना चाहता हूं जिन्होंने दो दिन तक उपद्रवियों का मुकाबला किया और जो अन्त में युद्ध करते ही मरते मर मिटे।

आचार्य कृपलानी के साथ श्री शरत्चन्द्र वसु भी पूर्वी बंगाल गये थे। वे अभी कुछ समय तक वहीं रहेंगे। उन्होंने एक वक्तव्य में कहा है कि बंगाल में मेरा रहना अधिक आवश्यक है, इसलिए इस समाचार में कोई सचाई नहीं है कि मैं भारत से बाहर कहीं विदेश में जा रहा हूं।

म० गांधी स्वयं बंगाल जाने के लिए अत्यन्त उत्सुक हैं। वे अब तक वहां चले भी जाते, लेकिन कांग्रेस कार्यसमिति की आवश्यक बैठक के कारण वे नहीं जा सके। इस बैठक के समाप्त होने पर वे बंगाल जावेंगे।

कांग्रेस कार्यसमिति

२३ अक्तूबर को भंगीबस्ती में कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक आरम्भ हो गई। इस कार्यसमिति के सामने अनेक महत्वपूर्ण समस्यायें हैं, जिनमें से कुछ उल्लेखनीय निम्नलिखित हैं:—

(१) पूर्वी बंगाल का भीषण नरमेध। लीगी नेताओं का हिंसापूर्ण रुख लगातार प्रचण्ड हो रहा है।

(२) केन्द्रीय सरकार में लीगी सदस्य कांग्रेस से समझौता करके नहीं, वायसराय से षड्यन्त्र करने के कारण केन्द्रीय सरकार में सम्मिलित हुए हैं। वे वहां पर सम्मिलित उत्तरदायित्व के सिद्धान्त को स्वीकार न करें, तो कांग्रेस का क्या रुख रहेगा? दूसरा प्रश्न यह है कि लीगी सदस्यों को कौन कौन से महकमे दिये जावें। ये दोनों विषय अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। लीग के नियत किये गये सदस्य मियां गजनफरअली ने एक वक्तव्य में स्पष्ट कहा है कि हम लोग पाकिस्तान प्राप्त करने के खयाल से ही अस्थायी सरकार में भाग लेने जा रहे हैं। यदि लीगी सदस्यों ने सम्मिलित उत्तरदायित्व का सिद्धान्त स्वीकार न किया तो क्या किया जाय। एक अफवाह यह थी कि कांग्रेसी सदस्य केन्द्रीय सरकार से इस प्रश्न पर त्यागपत्र देने वाले थे, लेकिन म० गांधी के अनुरोध से रह गये। अब कांग्रेस कार्यसमिति में इस प्रश्न पर विचार होगा।

महकमों का बटवारा भी साधारण प्रश्न नहीं है। एक सम्वाद के अनुसार नवाबजादा लियाकतअली खां शहर में ढिंढोरा पीट रहे हैं कि वे तो 'होम डिपार्टमेंट' संभालेंगे। दिल्ली प्रान्त 'होम डिपार्टमेंट' के मातहत आता है, अतः उन्होंने अभी से अपना रोब जमाना शुरू कर दिया है। सरदार अब्दुर्रब 'निश्तर' सरदार बलदेवसिंह के 'डिफेन्स विभाग' पर दांत गड़ाये बैठे हैं तो चुन्दरीगर बम्बई के व्यापारियों से वादा कर आये हैं कि वे 'इण्डस्ट्री और सिविल सप्लाई विभाग संभालेंगे।'

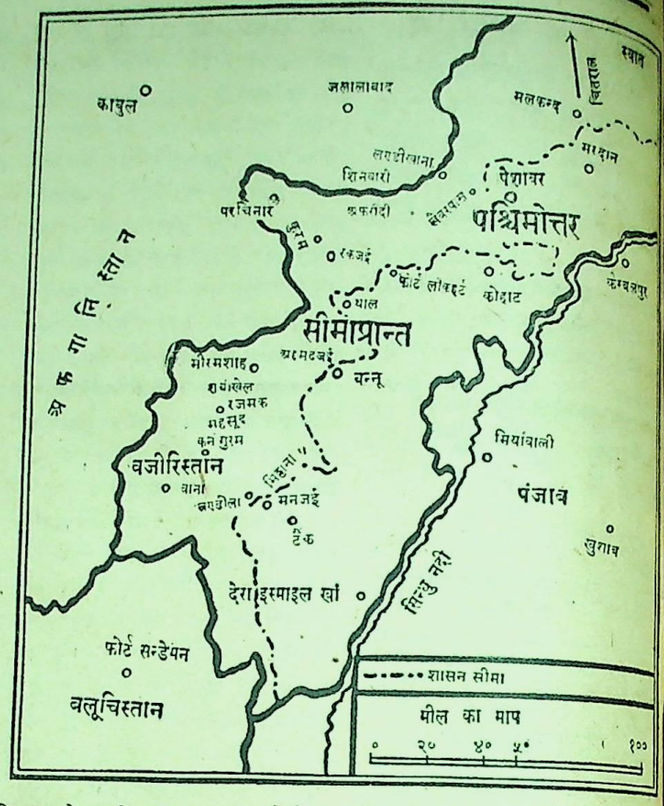

रेडियो में एक साल

हमें दुःख है कि अपने वचन के अनुसार हम इस अंक में उक्त लेखमाला का प्रारम्भ नहीं कर सके कम्पोज होकर भी लेख नहीं जा सकता। आगामी अङ्क से यह लेखमाला जायगी।

—सम्पादक

लीग सबसे अधिक उत्सुक निर्माण, खान और पावर महकमे के बारे में है। इस विभाग के अन्तर्गत केन्द्रीय तामीरात विभाग आता है। श्री शरतचन्द्र वसु ने इस महकमे की जांच कर करोड़ों रुपये की बेईमानी पायी है। इस बेईमानी के सहयोगी अधिकांशतः बड़े-बड़े मुस्लिम ठेकेदार हैं जिन पर मुकदमे चलाये जाने वाले हैं। इन लोगों की रक्षा के लिए लीगी इस विभाग को हाथ में लेना चाहते हैं ताकि बेईमानों का बाल न बांका होने पाये।

स्याम के चार प्रान्त फ्रान्स को

अमेरिका के दबाव में आकर स्याम की सरकार ने अपने ४ प्रान्त, फ्रांस को दे देना स्वीकार कर लिया है। १९४१ में टोकियो में फ्रांस और स्याम में एक समझौता हुआ था, जिसके अनुसार ये प्रान्त स्याम को मिले थे। ये चारों प्रान्त स्याम की पूर्वी सीमा पर हैं और उन्हें फ्रांस ने जबर्दस्ती जीतकर हिन्दचीन में मिला लिया था।

[शेष पृष्ठ १९ पर]

अन्तकालीन सरकार के मंत्री तथा प्रान्तीय प्रधानमंत्री एवं प्रतिनिधि (प्रांतीय प्रधानमंत्री सम्मेलन के बाद लिया गया चित्र)

Haridwar. Digitized by eGangotri

गणेशजी का बलिदान व्यर्थ गया ? — हां !

१९३१ की मार्च की बात है। कानपुर में एक महान् पवित्र बलिदान हुआ था — श्रद्धेय गणेशशंकर विद्यार्थी का। उनका उद्देश्य भी महान् था। कानपुर में हिन्दू मुस्लिम दंगा हो रहा था। गणेशजी ने दोनों जातियों की विद्वेषाग्नि को शान्त करने के लिए अपने प्राणों का बलिदान करने का निश्चय किया और उसी में किसी आततायी के हाथों मारे गये। कई दिन बाद मालूम हुआ कि उनके जीवन का अन्त हो गया।

समस्त देश में उनके बलिदान की प्रशंसा की गई। म० गांधी ने कहा कि गणेशजी अमर हो गये — सारे देश ने उनके स्वर में स्वर मिलाकर कहा कि गणेशजी अमर हो गये। उनके बलिदान की प्रशंसा की गई और कानपुर ने अपने महान् श्रद्धेय नेता की स्मृति में शोक मनाने के बाद उनकी चिरस्थायी स्मारक बनाने का निश्चय किया।

× × ×

इसमें कोई संदेह नहीं कि गणेशजी महान् थे। उनके हृदय में देश के लिए प्रेम था, देश की दुर्दशा देखकर उनके हृदय की तीव्र वेदना को वही अनुभव कर सकते हैं, जिनको उनके संम्पर्क में रहने का अवसर मिला था। वे सच्चे दिल से चाहते थे कि राष्ट्र के दोनों वर्ग-हिन्दु और मुसलमान सदा के लिए एक हो जावें। इसीलिए उन्होंने अपने महान् पवित्र जीवन का बलिदान किया। उन्होंने राष्ट्र को सर्वस्व समर्पण कर दिया।

× × ×

लेकिन उनका बलिदान क्या कोई फल लाया ? इसका उत्तर शायद संतोषजनक नहीं दिया जा सकता, यह लिखते समय लेखक की वेदना को शायद पाठक समझ न सकें। लेकिन लेखक का यह विश्वास है और वह अपनी इस धारणा पर अत्यन्त दुःख के बाद विश्वास करने लगा है कि उनका बलिदान अभीष्ट फल नहीं ला सका। कानपुर में भी आज हिंदू और मुसलमान उसके बलिदान को भूल गये हैं, यह शायद मैं ठीक नहीं लिख पाया। हिंदू उन्हें स्मरण करते हैं, उनके बलिदान की गाथा गाते हैं और उनके आत्योत्सर्ग का वर्णन सुनते-सुनते विह्वल भी हो जाते हैं, लेकिन वे लोग, जो साम्प्रदायिक विद्वेष के वस्तुतः जिम्मेवार हैं, बिलकुल अप्रभावित हैं, उन पर उस महान् बलिदान का कोई असर नहीं। उनके लिए गणेशजी केवल एक साधारण हिन्दू थे, जिनका अन्त ही अच्छा था। उससे गणेशजी के बलिदान की भावना की पवित्रता पर कहीं आंच नहीं आती, यह मानते हुए भी मुझे यह संदेह हो रहा है कि ऐसे बलिदानों से अभीष्ट फल प्राप्त हो नहीं सकता। आततायी का हृदय ही उस कठोर घात का बना होता है, जिस पर किसी महान् बलिदान का प्रभाव नहीं पड़ता।

पिछले दिनों अहमदाबाद में दो स्वयंसेवक मारे गये थे, लेकिन वहां दंगा शान्त नहीं हुआ। अभी हाल ही की बात है कि बम्बई सरकार ने दो स्वयं सेवकों के बलिदान पर शोक प्रकाश किया था, उनका आत्मोत्सर्ग बम्बई की स्थिति को रत्ती भर भी सुधार सका, इसका कोई प्रमाण नहीं मिला।

अहिंसा एक सत्य है, तो हिंसा भी एक ऐसा सत्य है, जिसके पीछे हजारों सालों का अनुभव है। संसार सदय नहीं है, सहृदय नहीं है, उसकी कठोरता असंदिग्ध और एक कठोर सत्य है। प्रकृति या परमात्मा उसे एक क्षण के लिये भी क्षमा नहीं करते, जो उसके विधयों की अवहेलना करता है। परमात्मा की छत्रछाया में प्रकृति के तत्व जब कल्पनातीत विध्वंस प्रारंभ करते हैं, तब-तब वे मनुष्य को एक किसी सत्य की शिक्षा दे रहे होते हैं। तत्व यह है कि इस जीवन संग्राम में कठोरता भी एक आवश्यक सत्य है। नदियों का जल प्रलय सैकड़ों मील प्रदेश को कुछ दिनों में ध्वस्त कर देता है। क्वेटे और बिहार के भूकम्प ने दो चार पलों में वहां की दुनिया बदल दी थी।

प्रकृति के ये तत्व बताते हैं कि आत्म बलिदान और अहिंसा के साथ साथ संघर्ष और विध्वंस भी संसार के कठोर सत्य हैं। और इनकी उपेक्षा करके हम इस संसार में एक कदम भी नहीं बढ़ सकते।

× × ×

संसार का इतिहास भी इस सत्य का समर्थन करता है। रावण अंगद के समझाने पर नहीं माना, दुर्योधन ने श्रीकृष्ण के संधि संदेश को ठुकरा दिया। विवश होकर राम और कृष्ण को युद्ध का निर्णय करना पड़ा। लातों के भूत बातों से नहीं मानते; यह कहावत भले ही कुछ ग्राम्यता लिए हुए हो, लेकिन इसमें संदेह नहीं कि यह हजारों सालों के मानव प्रकृति के अध्ययन का परिणाम है।

संसार में ऐसे व्यक्ति होते हैं, जो

स्व० गणेशशंकर विद्यार्थी

वस्तुतः खल और दुष्ट होते हैं, उनकी चित्तवृत्ति कुछ इस प्रकार की होती है कि वे शान्ति और सद्भावना को पसन्द ही नहीं करते, उनकी स्वार्थ और दुष्ट बुद्धि किसी भी तरह न्याय और औचित्य को समझ नहीं पाती और न समझने का यत्न करती है। ऐसे लोगों की सद्भावना को जाग्रत करना कठिन ही नहीं, असंभव है। वे पशुबल पर विश्वास करते हैं।

× × ×

संभव है कि आत्माओं महान अन्याओं का बलिदान ऐसे लोगों की सद्भावना को जाग्रत कर सके, लेकिन ऐसे महान् आत्मा हैं ही कहां। गणेशजी जैसे सात्विक व्यक्ति यदि कानपुर के मुसलमानों का हृदय नहीं बदल सके, तो दूसरे लोगों से इसकी आशा करना उपहासास्पद है।

जब ऐसे पवित्र आत्मा नहीं है, तो फिर वैसे उपायों का प्रतिपादन भी व्यावहारिक नहीं है। देश की स्वतंत्रता वेदी पर सैकड़ों युवकों ने बलि दे दी, लेकिन क्या इससे अंग्रेजों का हृदय बदलने की संभावना की जा सकती है ? वे विवश होकर तो भारत को कुछ दे सकते हैं, लेकिन अपने हृदय की साधुता से वे स्वराज्य हमें दे रहे हैं, यह कल्पना नोआखाली और सीमाप्रान्त की आज की घटनाओं को देखकर नहीं की जा सकती।

× × ×

आज देश की जो नयी परिस्थिति है, जिसमें बंगाल की घटनाएं अत्यन्त प्रमुखता से हमारे सामने आ रही हैं, उस पर विचार करते हुए हमें इतिहास और प्रकृति के उक्त कठोर सत्य से आंख मूंदने का कोई अधिकार नहीं है। ऐसा करना अदूरदर्शिता होगी और आगे वाली संतति हमसे पूछ सकती है कि हमने इतिहास के महान् प्रत्यक्ष सत्य की उपेक्षा करके उसके साथ क्यों अन्याय किया ?

———

वायसराय — लीग का परस्पर षडयन्त्र

मियां लियाकतअली

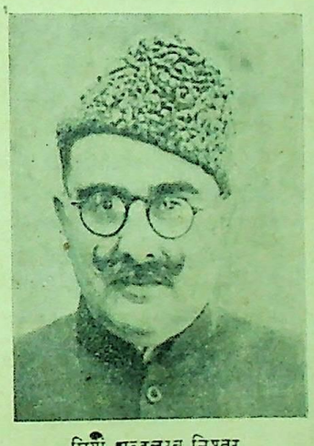

मियां अब्दुलरब निश्तर

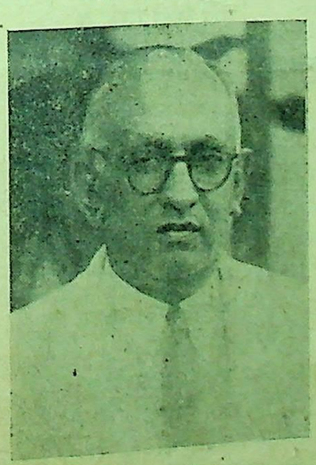

मियां चुन्द्रीगर

मियां गजनफरअली

चारों मुस्लिमलीगी केन्द्रीय सरकार में वायसराय के षडयन्त्र से सम्मिलित हो गये हैं।

ऐतिहासिक फिल्मों से घातक प्रचार

[श्री कालीचरण शर्मा]

★

दिल्ली की मोती टाकीज में प्रदर्शित 'महाराणा प्रताप' फिल्म के दर्शकों ने २ अक्टूबर को सिनेमा के पर्दे को फाड़ डाला तथा हुल्लड़बाजी भी की। अगले दिन शहर की दीवारों पर चिपके हुए बड़े-बड़े पोस्टरों द्वारा पत्र सम्पादकों और जनता को सचेत करते हुए उन्होंने 'महाराणा प्रताप' फिल्म की बुराइयां दिखाई थीं जो गन्दे गीत, अण्डशण्ट कथानक और बनावटी राष्ट्रीयता, थे। शक्तिसिंह की पत्नी को तो आज की प्रगतिशील महिलाओं से भी आगे बढ़ा दिया गया था जो उस समय स्वप्न की भी वस्तु नहीं थी। बात भी ठीक थी। 'राजपूतानी' फिल्म द्वारा महाराणा को जिस प्रकार उपस्थित किया था, वैसे भी कथित फिल्म नहीं बनने पाया।

इसके बाद ही 'तानसेन' और 'शाहजहां' फिल्मों को देखा गया। 'माशूक' बिना फिल्म बन ही नहीं सकती, यह आज के फिल्म निर्माताओं द्वारा दृढ़तापूर्वक मान्य सिद्धांत है। तदनुसार तानसेन के लिये तानी को उत्पन्न किया गया और इन नायक नायिकाओं को मुस्लिम जाति से उत्पन्न प्रदर्शित किया गया है। तानसेन बैजू बावरा के शिष्य थे और हिन्दू कुलोत्पन्न थे किन्तु फिल्म निर्माताओं ने मनघडन्त को स्थान देकर जो कुछ करना था वह किया। हम नहीं समझ सके कि 'तानसेन' को मुस्लिम कुलोत्पन्न ही क्यों माना गया? क्या वे प्रमाणित कर सकते हैं कि तानसेन हिन्दू नहीं थे? यदि नहीं तो फिर तानसेन को मुसलमान रूप में प्रदर्शित करने का उन्होंने क्यों साहस किया?

अब 'शाहजहां' चित्र को लीजिये जिसके द्वारा खुल्लमखुल्ला 'लीगी' प्रचार किया गया है; तत्कालीन ऐतिहासिक तथ्यों का कहीं नाम भी नहीं। कथानक है: एक सुन्दर राजपूत कन्या का सिराजुद्दीन ईरानी द्वारा पाणि-ग्रहण और अन्त में दम्पती का ईरान चले जाना। शाही दरबारी ज्वाला सिंह की कन्या, वह 'रूही' नाम से है, जो बेगम मुमताज से भी अधिक सुन्दर और कोमलांगी युवती है। उसे एक सुदृढ़ और सुन्दर राजपूत महाकवि हृदय से चाहता है। वह दूसरे से होते हुए उसके ब्याह में झगड़ा डाल कर अपने लिये सुरक्षित कर लेता है। फलतः वह शाही महलों की अमानत हो जाती है और उसे सब प्रकार से स्वर्गीय सौख्य पहुंचाने वाले के लिये 'स्वयंवर' पद्धति से प्रदत्त होने वाली शाहजहां द्वारा घोषित की जाती है। हजारों राजपूत इकट्ठे होते हैं, किन्तु सिवा कथित महाकवि युवक के सब निराश लौटते हैं। शाहजहां की आज्ञानुसार अपनी 'प्रियतमा' के लिये वह 'जन्नत' (स्वर्ग) भी तैयार करके शाहजहां को दिखाता है, जिसे देख कर वे प्रसन्न होते हैं और निश्चित समय बाद 'रूही' को उसे देने का वचन देते हैं। इस बीच ईरान से 'सिराजुद्दीन' पधार कर रूही के सौंदर्य की प्रशंसा सुनते हैं और उसे हथियाने का षड्यंत्र रचते हैं। अपनी कारीगरी की शेखी बघारते हुए दरबार में कहते हैं कि किसी भी स्त्री का केवल हाथ का अगला हिस्सा देखकर वे उसकी पूरी और सही प्रतिमा बना सकते हैं। बादशाह द्वारा परीक्षा होती है और एक पर्दे के छिद्र से कई हाथ बाहर निकाले जाते हैं। 'सिराज' साहब सबको नकली कंगन पहनाते हैं किन्तु मुमताज की चालाक बांदी 'रूही' को बहका कर उसका भी हाथ बाहर निकलवाती है, जिसे देखते ही प्रसन्न होकर 'सिराज' साहब शाह प्रदत्त विशेष कंगन उसे पहनाते हैं और उसे प्राप्त करने के लिये उसकी हूबहू प्रतिमा बनाने लगते हैं। बेगम की चालाक और बदमाश बांदी रूही और सिराज में बलात् सम्बन्ध स्थापित करने के लिये 'दूती' बन जाती है। कुटनी (बांदी) प्रतिमा दिखाने के बहाने से रूही और सिराज को प्रतिमा के पास एकत्रित कर देती है और सिराज चालाकी से रूही का मुखमण्डल अच्छी तरह देख लेता है और उसी प्रकार का मुंह प्रतिमा में बनाने लग जाता है। बादशाह, बेगम, बांदी और स्वयं रूही के पिता ज्वालासिंह भी सिराज के साथ उसका ब्याह रचाने के लिये अत्यधिक लालायित हो जाते हैं, बांदी एक रात को बहका कर रूही को सिराज के पास ले जाती है और कहती है कि आप कहीं भी ले जाइये, यह आपके साथ चलने को तैयार है। बनावटी सभ्यता के सिराज इस कार्य से सहमत नहीं होता। महाकवि को सब बाध्य करते और उसकी अभीष्ट 'रूही' भी कहती है कि उससे प्रेम करना छोड़ दे। किन्तु महाकवि 'रूही' के मोह को नहीं छोड़ते और उसके लिये ही अपना प्राण त्याग कर देते हैं। 'रूही'— 'अल्लाह बचाना' प्रभृति 'इश्क' प्रधान गीतों द्वारा सिराज को अपने लिये चाहती है और उनका विवाह कराने में ही शाहजहां के न्याय का माप दण्ड पूरा हो जाता है।

शाहजहां की दूरदर्शिता और न्यायप्रियता का नमूना और कथानक पाठक विचार करें। सजातीय, सुदृढ़, सुन्दर, समवयस्क, महाकवि और चाहने वाले को राजपूत कन्या न दी जाकर बेगम, और बांदी द्वारा फुसलाकर, अनुचित संबंध कराकर बाहर से आये हुए एक मुसलमान को सुन्दर और कोमलांगी राजपूत युवती को दे देना क्या यही शाहजहां का ऐतिहासिक न्याय है। क्या यह कथानक लीगी प्रचार के लिये प्रत्यक्ष बनावट नहीं है? ईरान से आकर 'सिराजुद्दीन' ने ताजमहल बनाया। इस विषयक प्रमाण क्या फिल्म निर्माता उपस्थित कर सकते हैं? भारतीय कारीगर जिन्होंने 'ताजमहल' का आगरा में निर्माण किया, क्या उनके अंगूठे इस लिये नहीं काट दिये गये कि भविष्य में ऐसी सुन्दर दूसरी इमारत वे न बना सकें? फिल्म निर्माताओं को 'शाहजहां' फिल्म में हिन्दू युवती द्वारा मुस्लिम युवक को पति बनाना प्रदर्शित करने के लिये नया कथानक घड़ना पड़ा तो साथ ही उन्हें शाहजादी रोशनआरा द्वारा हिंदू धर्म ग्रहण पूर्वक कविवर पण्डित जगन्नाथजी से विवाह करना प्रदर्शित करने में क्यों संकोच हुआ, जो वास्तव में एक सच्ची घटना थी। हमें आज के फिल्म निर्माताओं की बुद्धि पर इस लिये तरस आता है कि ऐतिहासिक तथ्यों की पूरी जानकारी प्राप्त किये बिना ही मन गढ़न्त और घृणित चित्र वे ऐतिहासिक चित्रों के नाम पर तैयार करने का दुस्साहस कर बैठते हैं। उन्होंने भविष्य में यदि इसी प्रकार ऐतिहासिक तथ्यों की हत्या की तो हमें भय है इसका परिणाम उन फिल्म निर्माताओं को बहुत ही बुरी तरह भोगना पड़ेगा। वे इस चेतावनी को हृदयंगम कर लें।

चण्डी की प्यास

[छैलबिहारी साहित्यालङ्कार]

एक समय
इसी हरित-श्यामल में
अम्बर औ' जलथल में
काली-कराली
रुण्ड-मुण्ड माल वाली
बहुत भूखी थी
सूखी थी
मिला नहीं पीने को
उसे रक्त
मानव का तप्त तप्त
मिला नहीं खाने को
मांसल तन
मानव का नरम-नरम
शोणित से भरा हुआ
खप्पर भी खाली था
खाली था सारा पेट
आज महाकाली का
करती थी फूत्कार
जीभ निकाल बार-बार
लप-लप क्यों करती थी
शुष्क-शुष्क अधरों पर
रह-रह कर फिरती थी
उसकी यह हीन दशा
रावण नहीं देख सका
अतुलित बलधारी था
अस्त्र-शस्त्रधारी था
अजर अमर!
विजय - प्रखर!!
उसको था
शंकर वरदान मिला
सका नहीं मुनियों का
ध्यान हिला
मां का वह देख नहीं
सका वेश
बिखरे थे
मस्तक के
एक एक शुष्क केश—
भूख तव मिटाऊंगा
जननी ओ तेरी।
तत्क्षण ही वज्रवादी
उसने रणभेरी—
सन्मुख जो उसके
ज्ञानी था ध्यानी था
मानी था दानी था
राजस्वी - तेजवान
बलधारी-नृप महान
आया था एक बार
खांडे की तीक्ष्ण धार
कर प्रहार
लिए हुए रुण्डमाल
दौड़ा दानव विशाल
विकट हास्य हसता था
लुटकर सुमेरु
महासागर में धंसता था —
'कितनी है भूख-प्यास
बोल! बोल!!
दूंगा मैं रक्त तुझे तोल! तोल!!
भूख मिटी भरले तू
आज पेट
दूंगा नरमुण्डों की
आज भेंट'
और उस दानव ने
किया यज्ञ
भीषण नरमेध यज्ञ
आहुतियां देता
नरमुण्डों की
छिन्न-भिन्न पशुओं के
खण्डों की
धाता की सृष्टि हुई
जब निराश
चण्डी की
युग-युग की
बुझी प्यास —

Haridwar. Digitized by eGangotri

मेरे जीवन की झाँकियां

सिविल सरजन

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

(४)

बीमारी का समाचार पाकर दारोगा जी मेरे पास आये, छोटे डाक्टर को भी बुलाया गया। कालिक के दर्द से मैं बेहाल हो रहा था। बुखार देखा तो १०५ से ऊपर था। बेचारे दरोगाजी की आंखों में आंसू आगये, परन्तु करते क्या? एक ओर जेल मैनुअल, दूसरी ओर यह विचार कि सरविस खात्मे पर है, कहीं कोई बेजाब्ता न हो जाय। छोटे डाक्टर से देर तक परामर्श करते रहे। छोटे डाक्टर ने कहा कि रोगी को एक दम हस्पताल ले जाना चाहिये। कोठरी में हवा बन्द है और बेतहाशा मच्छर हैं। दरोगाजी ने प्रस्ताव को स्वीकार किया, परन्तु एक दम ऐसा करने से इन्कार कर दिया, क्योंकि इतना महत्व-पूर्ण कदम उठाने से पहले सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब से अनुमति ले लेना आवश्यक था। भाग्यवश उस दिन सिविल सरजन साहब की जेल में आने की बारी नहीं थी। इस कारण उन्हें बीच में डाले बिना ही दोपहर तक मेरे हस्पताल भेजे जाने की स्वीकृति जेल के सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब से ले ली गई। यह महानुभाव राय साहब थे। तबीयत के सादे, प्रबन्ध में दब्बू और विद्याव्यसनी थे। मुझे पुस्तकें प्राप्त करने में इनके निजी पुस्तकालय से बहुत सहायता मिली। जब जेल देखने के लिए आते, तब कोई न कोई बढ़िया किताब साथ ले आते सज्जनता का यह हाल था कि शायद ही कभी किसी को कठोर दण्ड देते हों। रहा दब्बूपन, उसका एक नमूना सुनिये—एक दिन शहर के डिप्टी कमिश्नर जेल के निरीक्षण के लिये आये। राय साहिब भी उनके साथ थे। आपको यह ख्याल हुआ कि कहीं डिप्टी कमिश्नर मेरे कमरे की तलाशी न ले लें और उसमें से राय साहब के पुस्तकालय की पुस्तकें न निकल आयें। आप डिप्टी कमिश्नर को जेल के दूसरे हिस्से में निरीक्षण के लिए ले गये, और पास एक असिस्टेन्ट को भेज कर यह 'दरखास्त' की कि सब किताबें थोड़ी देर के लिये वापिस दे दी जायें। उसी समय एक चादर में मेरी कोठरी में रखी हुई सब किताबों की गठरी बांधी गई और जेल के गोदाम में बन्द कर दी गई। जब डिप्टी कमिश्नर साहब निरीक्षण के लिये आये, तब मेरी कोठरी पुकार-पुकार कर कह रही थी कि मेरा किताबों से कोई सम्बन्ध नहीं है। यूं डिप्टी कमीश्नर साहब ने मेरी तलाशी लेने का कष्ट नहीं उठाया। अच्छी बात यह हुई कि दूरदर्शिता से काम लेकर राय साहिब ने अपनी नौकरी और पेन्शन को बाल-बाल बचा लिया।

दोपहर बाद मुझे अस्पताल पहुंचा दिया गया। उस समय दारोगाजी के चेहरे पर संतोष की वास्तविक झलक दिखलाई दी। वह अनुभव कर रहे थे कि आखिर वह मेरे प्रति एक ऐसे कर्तव्य का पालन कर सके, जैसा वह चिरकाल से करना चाहते थे। मैं हस्पताल में जाकर सोलहों आने पारसी सिविल सरजन के साम्राज्य में पहुंच गया।

लगभग एक सप्ताह तक मुझे दरद और बुखार दोनों का बहुत कष्ट रहा दूसरे या तीसरे दिन रात के समय बुखार १०६ से ऊपर हो गया। और बीच में 'डिलीरियम' भी हो जाता। दरोगाजी ने घबरा कर सिविल सरजन को टेलीफौन द्वारा जेल में बुलावा भेजा। दूसरे रोज टैलीफौन की वह बातचीत मुझे सुनाई गई। वह इस योग्य है कि मैं उसे यहां लिख दूं। वह मनोविज्ञान के विद्यार्थियों के लिये विशेष उपयोगी हैं। सिविल सरजन को टैलीफौन द्वारा दरोगाजी का यह सन्देश पहुंचाया गया कि प्रोफेसर इन्द्र की हालत बहुत खराब है, आप इसी समय आकर देख लीजिये। इसके उत्तर में सिविल सरजन ने पूछा।

'क्या हालत बहुत ही खराब है?

'जी हां, बहुत ही खराब है।

'तब मेरे वहां आने से क्या फायदा होगा। क्या मैं खुदा हूं, जो उसे बचा लूंगा?'

इस उत्तर को सुन कर छोटे डाक्टर ने (जो उस समय टेलीफोन कर रहे थे) समझा कि उत्तर देने में शायद कुछ भूल हुई; भूल का सुधार करते हुये उसने साहब से कहा—

'हुजूर मेरे कहने में कुछ भूल हुई। प्रोफेसर इन्द्र की हालत ऐसी खराब नहीं है कि उसे सम्हाला न जा सके।'

उत्तर मिला—

'तब तो मेरा इस वक्त जाना बिलकुल फिजूल है। सुबह देखने से भी काम चल जायगा।'

छोटा डाक्टर निरुत्तर हो गया। तीसरा कोई विकल्प सम्भव ही नहीं था। उसने टेलीफोन रख दिया और सिविल सरजन साहब नींद खराब करने के लिये दरोगा और छोटे डाक्टर को कोसते हुए सम्भवतः अपनी मसहरी में जा लेटे।

इसके आगे लगभग तीन सप्ताह तक मैं जेल में रहा। सिविल सरजन का कहना ठीक ही था कि वह खुदा नहीं था। उसका कोई बस नहीं चला और असली 'खुदा' ने मेरी रक्षा की। दौरा तो छः सात दिन में हट गया, परन्तु प्रतिदिन बुखार आने लगा। एक बुरी बात यह हुई कि मेरी पुरानी खांसी की बीमारी शरीर को निर्बल पाकर जोर पर आ गई। इस बीमारी के लम्बे वृत्तान्त में पाठकों को न घसीट कर संक्षेप में इतना कह देना ही पर्याप्त है कि जब बीमारी का समाचार दिल्ली पहुंचा तो मेरी पत्नी और बन्धुवर्ग घबरा गये। वे लोग जेल में आकर मुझसे मिले फिर उन्होंने डाक्टर सुखदेवजी और डाक्टर तुलसीरामजी को मेरी दशा देखने के लिए दिल्ली से भेजा और अन्त में जेल विभाग की आज्ञा प्राप्त करके डाक्टर अन्सारी मेरी स्वास्थ्य परीक्षा के लिये फिरोजपुर जेल गये। जब सिविल सरजन साहब को यह खबर लगी कि डाक्टर अन्सारी मुझे देखने आ रहे हैं तो उन्होंने मुझसे कहा कि मालूम होता है कि आपकी बीमारी का शोर बहुत मच गया है। मैंने अखबार में पढ़ा था कि असेम्बली में भी सवाल किया गया है। मेरी तो यह राय है कि आपको कोई खास बीमारी नहीं। आपकी क्या राय है? क्या आपको तपेदिक है?'

मैंने उत्तर दिया कि मैं आपसे सहमत हूं। मुझे तपेदिक बिलकुल नहीं है।

मेरे उत्तर से सन्तुष्ट होकर साहब ने पूछा: 'तो फिर यह डाक्टर अन्सारी क्यों आ रहे हैं? यह तो वही दिल्ली के हकीम हैं न, जो बल्लीमारां में बैठते हैं?'

मुझे सिविल सरजन की मूर्खता पर हंसी तो आई, परन्तु केवल मुस्करा कर मैंने कहा: 'आपका खयाल गलत है। डाक्टर अन्सारी हकीम नहीं हैं, बहुत बड़े डाक्टर हैं। विलायत के M. D. हैं और देश के प्रख्यात डाक्टर हैं।'

यह बात सिविल सरजन की समझ में नहीं आई या अच्छी नहीं लगी, इसका उत्तर मैं ठीक ठीक नहीं दे सकता। आपने उत्तर दिया, 'हो सकता है।' मैंने बात को जरा नर्म करने के लिये कहा—'वह बहुत अच्छे आदमी हैं। आप उनसे कल जरूर मिलियेगा।'

'मैं कल नहीं आ सकूंगा' यह खुश्क उत्तर देकर सिविल सरजन जेल से चले गये, और दूसरे दिन नहीं आये।

लेख अधिक बढ़ गया है। इसे मैं अन्तिम दृश्य के साथ समाप्त करता हूं। डाक्टर अन्सारी ने जेल विभाग को मेरे स्वास्थ्य की जो रिपोर्ट भेजी उसके आधार पर आई. जी. (जेल के इन्सपैक्टर जनरल) ने फिरोजपुर जेल में निम्न लिखित तार भेजा। "Release Prof Indra if fit for journey (यदि सफर के योग्य हों तो प्रोफेसर इन्द्र को रिहा कर दिया जाय) दरोगा ने इस तार को दफ्तर में रख कर निम्न लिखित प्रश्न सिविलसरजन के पास उत्तर के लिये भेजा—"Plese report if Prof Indra is fit for journey. (कृपया रिपोर्ट दीजिये प्रोफेसर इन्द्र सफर के लायक हैं या नहीं।)

साहब इस तार को लेकर घबराए हुए मेरे पास आये। पूछने लगे कि इसका क्या मतलब है? रिहाई या तबादला?

मैं ने असली तार नहीं देखा था, इस कारण सावधान होकर उत्तर दिया—

'कुछ कह नहीं सकता, शायद तबादला ही होगा।'

साहब ने सन्तोष का सांस लिया और रिपोर्ट लिख दी कि प्रोफेसर इन्द्र सफर के लायक हैं।

थोड़ी देर में जब सिविल सरजन जेल से चला गया तो मैंने देखा कि दरोगा जी अस्पताल की दीवार के पीछे से झटपट निकल आये और रिपोर्ट पढ़ कर मुझ से कहने लगे 'पं० जी, आप एक मिनट की भी देर मत कीजिये यदि उस मूंजी को यह मालूम हो गया कि आपकी रिहाई हो रही है तो वह अभी वापिस आकर अपनी रिपोर्ट बदल देगा। आपका सब सामान मैं सम्हाल कर पीछे भिजवा दूंगा। आप एक दम जेल के दरवाजे से बाहर हो जाइये। आप के लिए गाड़ी तैयार खड़ी है।

दरोगाजी का डर बिल्कुल यथार्थ था। जब मैं जेल की ड्योढ़ी में पहुंच कर बाहर निकलने के लिये तैयार हो रहा था, तब दरोगा को सिविलसरजन का टैलीफोन मिला। उसने पूछा क्या यह सच है कि 'प्रोफेसर इन्द्र की रिहाई का हुक्म आगया है?' स्वीकारात्मक उत्तर मिलने पर उसने टैलीफोन पर कहा—

'मुझे धोखा हुआ, उसे ठहराओ मैं आता हूं।' दरोगा जी ने टैलीफौन का 'रिसीवर' नीचे रखते हुए मुझे हाथ के इशारे से एकदम दरवाजे से बाहर जाने की प्रेरणा की। मैं बाहर चला गया और घोड़ागाड़ी पर जा बैठा मेरी गाड़ी अभी जेल के कम्पाउन्ड से निकली नहीं थी कि दूसरे रास्ते से मेजर साहब (सिविलसरजन) की मोटर जेल में आती दिखाई दी।

उनके जेल के दरवाजे तक पहुंचने से पहले मैं जेल की सीमाओं से बाहर जा चुका था।

सुनते हैं, जेल के अन्दर पहुंच कर जब उन्हें मालूम हुआ कि चिड़िया उड़ चुकी है तो वह बहुत लाल पीले हुए और आई. जी. तक शिकायत पहुंचाने की धमकी दी।

इस नौकरशाही के पुराने घाव को मुझ से इतना विरोध क्यों था इस प्रश्न का उत्तर मैं नहीं दे सकता। अतः एक

ामी दयानन्द और उनके समकालीन महापुरुष

[श्री विष्णु]

वैसे तो हिन्दू शास्त्रों में केवल पर-मा को महापुरुष माना है परन्तु कोत्तर कल्याण भावना से युक्त, तेजो- तथा नवचेतना से तत्कालीन समाज क्रान्ति पैदा करने वाले व्यक्तिविशेष इसी श्रेणी में आ जाते हैं। यह भी ई नियम नहीं है कि एक युग अथवा क काल में एक ही महापुरुष हो। क्षेत्रों विभिन्नता के कारण एक ही समय में, नेक महापुरुष होते आये हैं। साधारण नता में स्वभावत यह उत्सुकता रहती है क समकालीन महापुरुषों के परस्पर सम्ब- कैसे रहते हैं? चीन के दो प्रसिद्ध ार्शनिक लाओत्जे तथा कन्फ्यूशियस आपस में मित्र नहीं थे, परन्तु भारत के वीन्द्र और गान्धी मतभेद रखते हुए भी मित्र थे, इन बातों को जनता काफी महत्व देती है। वस्तुतः ये बातें मानव स्वभाव पर निर्भर करती है और महापुरुष सदा ही इस मानव स्वभाव से मुक्त होते हैं यह कोई नियम नहीं है।

आज फिर दिवाली सदा की भांति आयी है। आज से तरेसठ वर्ष पूर्व ३० अक्टूबर १८८३ को उनसठ वर्ष की आयु में आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सर-स्वती ने इस असार-संसार को छोड़ दिया था। उनके इस निर्वाण-दिवस के अवसर पर हमारे मन में स्वभावतः यह कौतूहल उत्पन्न हुआ कि उनके अपने समकालीन महापुरुषों से कैसे सम्बन्ध थे! उनके सम्बन्ध में यह भाव अधिक कौतूहलपूर्ण था, क्योंकि इतिहासकार स्वामीजी की उपेक्षा इसी लिये कर जाते हैं कि वे असहिष्णु तथा दूसरों पर आक्रमण करने वाले कहे जाते हैं।

उनके काल में विभिन्न जातियों, प्रांतों व धर्मों में अनेक महाप्राण महा-पुरुष हुये हैं। वस्तुतः यह युग सामाजिक और राजनीतिक नव-चेतना का युग था और अनेक दिव्य पुरुष जागरण-गान गा रहे थे।

सर सैयद अहमद

तत्कालीन मुसलमानों के नेता और अलीगढ़ मुस्लिम कालेज के संस्थापक सर सैयद अहमद खां स्वामी दयानन्द के गहरे दोस्त थे। वे स्वामीजी को सत्पुरुष और सच्चा तपस्वी मानते थे तथा उनकी बड़ी प्रतिष्ठा करते थे। वे स्वामीजी के समान मुसलमानों की उन्नति के लिये प्रयत्नशील थे। स्वामीजी की मृत्यु के पश्चात जब १८८५ में कांग्रेस का जन्म हुआ, तब वे उसके साथ थे परन्तु बाद को अलग हो गये। यह अंग्रेजों की कूटनीति का परि-णाम था। जब वे बनारस में सब-जज थे, तब स्वामीजी ने उनके बंगले पर भाषण दिया था। अलीगढ़ में भी स्वामीजी सैय्यद साहब के घर गये थे। उनके घर भोजन करने का निमंत्रण उन्होंने इस लिये अस्वीकार कर दिया था कि हिन्दू लोग उन्हें गलत समझने लगेंगे। १८७७ के कैसर दरबार के अवसर पर स्वामीजी ने सब धर्मों की एकता के लिये एक कान्फ्रेंस बुलाई थी। सर सैय्यद उसमें उपस्थित थे। वे मृत्युपर्यन्त स्वामीजी के प्रशंसक रहे और उन्होंने प्राचीन ग्रन्थों के अर्थ करने की प्रणाली को, जिसका स्वामीजी प्रचार करते थे, अपनाया।

श्री देवेन्द्रनाथ ठाकुर

श्रीराम मोहनराय — सुधार आन्दोलन के अग्रणी थे। उन्होंने ब्रह्म-समाज की स्थापना की थी। आगे चल कर इसकी दो शाखायें हो गई और ब्रह्म-समाज जिसके नेता विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर थे तथा नव-विधान-शाखा के लीडर ब्रह्मानन्द केशवचन्द्र सेन थे। स्वामीजी आदि ब्रह्मसमाज को वेदधर्म के समीप समझते थे और राजा राम मोहनराय के प्रशंसक थे। वे श्री देवेन्द्रनाथ टैगोर के भी प्रशंसक थे और उन्हें स्वभावतः ऋषि स्वभाव का अनुगामी मानते थे। कलकत्ता प्रवास के समय वे टैगोर परिवार के विशेष सम्पर्क में आये। वे ब्राह्म-उत्सव में सम्मिलित होने के लिये ठाकुर महोदय के घर भी गये थे। वहां पर विश्व-कवि के बड़े भाई रव० हेमेन्द्रनाथ ठाकुर के साथ उनकी आत्मा की स्वतंत्र सत्ता पर बातें हुई थी। श्री द्विजेन्द्रनाथ ठाकुर से भी स्वामीजी ने अनेक बार दर्शन शास्त्रों पर चर्चा की थी। रवीन्द्र बाबू तब अल्प आयु थे, परन्तु उन्हें स्वामीजी की याद थी और वे उनकी तथा अपने बड़े भाई की शास्त्र चर्चा से बड़े प्रभावित थे।

श्री केशवचन्द्र सेन

नव-विधान के प्रवर्तक श्री केशवचन्द्र सेन तथा स्वामीजी के सम्बन्ध बहुत गहरे और व्यापक थे। उनकी मित्रता उत्तरोतर उन्नति करती रही। वे एक दूसरे की प्रतिभा, शक्ति और लगन को पहिचानते थे। कहा जाता है केशव बाबू बिना परिचय के स्वामीजी से मिलने आये थे परन्तु स्वामीजी ने उन्हें पहिचान लिया बोले—ऐसी बातें केशव बाबू के अतिरिक्त कौन कर सकता है? इसी स्नेहानुराग के कारण केशवचन्द्र ने स्वामीजी को दो सलाहें दी थी। एक वस्त्र धारण करने की तथा दूसरी हिंदी भाषा के बोलने की। तब तक स्वामीजी नंगे रहते थे और संस्कृत बोलते थे। स्वामीजी स्वभावतः बड़े निरभिमानी थे। उन्होंने दोनों बातों को उचित समझा और स्वीकार कर लिया। कैसर दरबार के अवसर पर जो एकता-सम्मेलन स्वामीजी ने बुलाया था उसमें केशव बाबू भी उपस्थित थे, पर वे वेदों को निर्भ्रान्त न मान सके और इस कारण सम्मेलन भंग हो गया। सेन महोदय ने लार्डनाथब्रुक से स्वामीजी की चर्चा की थी और लार्ड महोदय ने उनसे मिलना भी चाहा था, परन्तु कई कारणों से यह मिलना सम्भव नहीं हो सका।

श्री महादेव रानाडे

बङ्गाल में जिस प्रकार ब्रह्मसमाज का प्रभाव था उसी प्रकार बम्बई प्रांत में प्रार्थना समाज का बोलबाला था। जब स्वामीजी इधर गये, तो प्रार्थना-समाज के सभी नेताओं ने उनका हृदय से स्वागत किया और अपना मंच उनके लिये खाली कर दिया। अहमदाबाद के प्रसिद्ध सुधारक राय बहादुर भोलानाथ साराभाई तथा राय साहब महोपतराय रूपराम स्वामीजी का बड़ा आदर करते थे। उन्होंने स्वामीजी के उस प्रस्ताव का कि प्रार्थनासमाज को आर्य समाज में परिवर्तन कर दिया जाय स्वागत किया था परंतु मूल सिद्धांत में मतभेद के कारण ऐसा न हो सका। तीसरे नेता रायबहादुर रा० रा० गोपाल राव हरिदेश मुख, मैम्बर कौंसिल गवर्नर बम्बई, स्वामीजी के बड़े प्रशंसक थे और पीछे आर्य समाज में सम्मिलित हो गये थे। पूना में प्रार्थना-समाज के नेता रायबहादुर रा० रा० जिसके महादेव गोविन्द रानाडे थे वे स्वामी जी को अपना गुरु मानते थे और उनमें बड़ी श्रद्धा रखते थे। स्वामीजी भी उनको इतना मानते थे कि आर्यसमाजी

[शेष पृष्ठ १६ पर)

और सज्जन का दिया हुआ उत्तर यहां उद्धृत करके लेख को समाप्त करता हूं। उस सज्जन ने कहा था कि आपको यदि रिहा होना ही था तो कम से कम पांच-सौ की थैली मेम साहब के पास पहुंचा देनी थी। अगर आप की तरह सब कैदी फोकट में ही रिहा हो जाया करें, तो बिचारे ऊंचे अधिकारियों का काम कैसे चले।'

संतान होने की दवा

"जिस स्त्री के सन्तान न होती हो केवल ७ रात तक मशहूर दवा मुहाफिज औलाद खिलाओ। इन सात रात में स्त्री के बदन के अन्दर का हिस्सा ठीक ऐसी हालत में आ जाता है कि आठवीं रात..... स्त्री को गर्भ रह जाता है। इस औषधि की वजह से आज हजारों बहिनों की गोद में बच्चे खेल रहे हैं। जिस स्त्री को सन्तान न होती हो वह नीचे के पते पर पत्र लिख कर दवा मुहाफिज औलाद की शीशी वी० पी० पार्सल द्वारा मंगालें। १ शीशी काफी है जिसका मूल्य दो रुपया आठ आना २॥) है पारसल पर ॥-) महसूल लगेगा।

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४ देहली

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

हमारा धारावाही उपन्यास

गंगा जल

[ले०— श्री इन्द्र बसावड़ा]

★

शोभा विधवा हो गई और अपना अन्धकारमय भविष्य देखकर काली रात में जङ्गल की ओर प्राणत्याग के लिए गङ्गा के तट पर चली गई। दूसरी ओर उसके ससुराल वाले तथा भाई अनिल करुणा को लेकर उसकी खोज करने लगे।

[गतांक से आगे]

(२)

'इस तरफ चलो अनिल बाबू!' करुणा ने अनिल से कहा।

चुपचाप अनिल उसी मार्ग पर चलने लगा।

रात्रि के लगभग दो बजे होंगे। नीरव-घोर रात्रि, आकाश में जगमगाते तारों का क्षीण प्रकाश; और वह पर्वत-मालाओं की ओर जाता हुआ मार्ग।

'अनिल बाबू! शोभा इसी तरफ गई है, मेरा मन साक्षी देता है।'

'सच?' अनिल ने कहा।

'हां, मैं सो रही थी उस समय मुझे अद्भुत स्वप्न आया और मुझे लगा—जाने कोई असहाय स्त्री इस तरफ से उन पर्वतमालाओं में भागी जा रही है। अब मुझे याद आता है कि वह शोभा ही थी।'

'तो, तुमने मुझे क्यों नहीं जगाया?' अनिल ने पूछा।

'हां, नींद से जागते ही मैं तुम्हारे पास दौड़कर आई। दीवार पर से कूद कर तुम्हारे पास आई। तुमको जगाने लगी, तभी तो शिरीष बाबू की आवाज नीचे से सुनाई पड़ी।'

'अच्छा!' अनिल बोल पड़ा।

द्रुतगति से दोनों मित्र मार्ग काटते जा रहे हैं। श्वास जोर से चल रहा है, पसीने से कपड़े तर हो गये हैं; पर परवाह नहीं।

'इस तरफ यह जो पगडंडी दिखाई पड़ती है।' करुणा बोल उठी।

'हां!'

'उसी तरफ हमें चलना है।'

'पर इस तरफ वह न गई हो तो?'

'तो क्या? तुम चलो तो सही!' करुणा ने सत्तावादी स्वर में कहा।

इस पगडंडी पर जाते ही उनको लगा कि यह मार्ग पर्वत के ऊपर जंगल में जाता होगा। वे भी चलने लगे। विकट रास्ता था। झींगुर तथा निकट-वर्ती वन के जन्तुओं का स्वर वातावरण को भयंकर रूप दे रहा था।

'अनिल बाबू!' करुणा बोली।

'हां···'

अपना हाथ देना तो।'

अनिल ने हाथ बढ़ाया। दोनों जने वेग से उस पगडंडी पर चलने लगे। कोई कुछ बोलता नहीं। एक ही उद्देश्य है; जिस प्रकार से हो यह जगल पार करना है। क्षण और पल युगों की तरह बीत रहे हैं। उनका उत्साह और वेग बढ़ता जा रहा है। पैरों में कांटे चुभते हैं, कंकर गड़ते हैं पर वे चलते ही जाते हैं, चलते ही जाते हैं।

जंगल के बाहर आ पहुंचे! ओह गंगा! गंगा नदी का जल उछल-उछल कर मानो उनका आह्वान कर रहा है।

'अनिल बाबू!'

'करुणा!'

'यहां कहीं से नाव नहीं मिल सकती?'

'क्यों?'

'यहां से नाव में ही हम लोग चलें तो?'

'क्यों?'

'बस, लाओ न नाव! जल्दी करो।'

अनिल तो मूर्ख की तरह खड़ा ही रहा। करुणा को यह असह्य हो पड़ा। वह बाईं ओर के किनारे की ओर वेग से दौड़ने लगी।

'कहां जाती हो, करुणा?'

'तुम खड़े रहो। मैं आती हूं।'

थोड़ी दूर जाते ही एक झोंपड़ा दिखाई दिया।

एक गम्भीर आकृति वाला मनुष्य खाट पर पड़ा-पड़ा खर्राटें भर रहा था।

'ऐ भाई' करुणा ने उसे जगाने का प्रयत्न करते हुये आवाज दी।

'कौन?' भर्राई हुई आवाज में वह मांझी बोल उठा।

'ये भाई! तुम्हारी डोंगी लेकर आना?'

'क्यों? क्या है? इस समय?'

'नौका लेकर तुम चलो। इस नदी में कोई डूब गया है···'

'तो मैं क्या करूंगा?'

'भाई! चल तो — जितना पैसा लेना···'

'दस रुपया लेंगे···हम लोग।' अपनी भाषा में उस भयंकर आकृति वाले व्यक्ति ने कहा—रात का मौका है। दस रुपये से एक पाई कम नहीं।'

'हां, हां, दस रुपये देंगे।' करुणा ने कहा।

मांझी उठा। नाव खोली। करुणा उसमें बैठ गई।

'किधर?'

'इस तरफ'

नौका मन्द गति से गंगा के नीर पर उछलने लगी।

'ठहरो जरा!'

'क्यों?'

'अनिल बाबू! अनिल बाबू!' करुणा ने आवाज दी।

अनिल किनारे-किनारे पास आया।

'बैठ जाओ!' करुणा ने अपना हाथ बढ़ा दिया।

करुणा का हाथ पकड़ अनिल नौका में चढ़ गया।

'चलने दो।' करुणा ने कहा।

'अच्छा!' और मल्लाह डांड मारने लगा। थोड़ी देर तक कोई कुछ बोला नहीं। नौका धीमे-धीमे आगे बढ़ने लगी।

'कौन डूब गया है?' मांझी ने पूछा।

'···एक हमारी बहन···'

'उम्र?'

'सोलह सतरह वर्ष की।'

'तो कैसे पता चलेगा?' मांझी ने पूछा।

'राम जाने!'

'ओह! बांस साथ लेना चाहिये!'

और मल्लाह अपनी नाव पूरे वेग से चलाने लगा।

थोड़े देर जाने के बाद एक बड़ा वन आया। बड़े-बड़े वृक्षों की परछाई गंगा के जल को अधिक अंधेरा बना रही थी।

'हें···हें···हें···' एक वृक्ष के नीचे नाव रोक कर मांझी ने आवाज लगाई।

दो-चार युवक तभी पास के झोंपड़ों में से निकल कर बाहर आ गये।

'क्या है?' वे बोले।

'चार बांस! तुम भी आओ।'

यह आज्ञा सुनते ही दो युवक बड़े बांस ले नाव में आ गये।

'चलो जल्दी अब?' करुणा ने कहा।

मल्लाह ने पूर्ण वेग से अब नाव छोड़ दी। दोनों युवक बड़े बड़े बांस पानी में डालते डालते तलाश करने लगे। निराश हृदय, अपूर्व वेदना सहन करता अनिल यह सब देखता रहा।

करुणा भी चुपचाप यह सब देखती रही।

नाव पानी में दौड़ रही है; गंगा का जल उछल रहा है।

आकाश में चमकते तारे ये सब देखते हैं और मन्द-मन्द वायु बहती जाती है।

× × ×

शोभा की मूर्छा भंग हुई। उसने देखा, वृक्ष के पास, जहाँ वह टकरा कर गिर पड़ी थी, वहां लाल का गड्ढा ब है। अशक्त होकर पास पर बै एक क्षण में हजारों विचार उसके में आये और विलीन हो गये। उसे बिल्कुल नीरस लगने लगा। अपेक्षा तो वह मूर्च्छा ही अधिक थी कि जिसमें दुःख का कुछ भ न था।

बड़ी मुश्किल से वह उठी औ सकड़ी पगडंडी पर चलने लगी।

पूर्व में उषा के गुलाबी-सिन्दू के रंग निकलने लगे थे। मन्द-मन्द चलने लगा था। गंगा का नीर रहा था।

वह किनारे के पास आई निश्चय किया। बस अब तो सदा लिये ही इस जल में समाधि लेनी और यह दृढ़ निश्चय कर वह गंग जल में कूद पड़ी। एक धमाका हु और वह पानी में डुबकियां खाने लग

स्नान करती राधा ने देखा-सा से कुछ आ रहा है। क्या होगा? स पांचेक बजे होंगे। घाट के ऊपर के पत्ते मन्द-मन्द वायु में झूल रहे पक्षियों का कलरव शुरू हो गया था।

राधा ने डुबकी मारी और कप खींचा।

कौन—कोई स्त्री?

सामने से ही नाव आती दिखा पड़ी।

'कौन?'

'राधा?' अनिल के मुख में से निकल पड़ा।

'अनिल बाबू!'

'शोभा?'

और अनिल यह दृश्य देख करुणा के पास बैठ गया, वह खड़ा नहीं रह सका।

तृतीय परिच्छेद

'गोविन्दा महाराज! गोविन्दा महाराज! राधा ने आवाज दी।

मन्दिर में पूजा करते गोविन्द महाराज दौड़े।

'क्यों, क्या है मां?'

'जल्दी आओ तो, दौड़ो तो!'

अपने कन्धे पर पड़े रुमाल को ठीक करते गोविन्द महाराज दौड़े।

'क्या है मां!'

'देखो तो!'

'ओह!' शोभा की विचित्र हालत देख गोविन्द महाराज चकित हो गया।

'घबराओ मत! अभी कुछ बिगड़ा नहीं।'

तभी तो नाव में से मांझी कूद पड़ा और किनारे के पास आकर शोभा के शरीर की देख भाल करने लगा।

'ए···हे·····' उसने अपने साथियों को बुलाया।

शोभा के पेट में से पानी निकाल संभाल करने में सब लग गये। घबराओ मत!' मल्लाह ने कहा। अरगद के नीचे दो—तीन झोंपड़ियां थीं। राधा दौड़ी और उनमें की एक में खाट बिछा आई।

करुणा और अनिल ने शोभा को कर अन्दर बिछौने पर जा सुलाया। धीरे-धीरे शोभा की हालत सुधरने लगी। मंद गति से उसका श्वासोच्छ्वास चलता था। पर अभी वह होश में नहीं थी। माथे पर सख्त चोट आई थी। उसके ऊपर पट्टी बांध सब स्तब्ध से थे।

'अनील ने मांझी को पैसा दे ही दी।

'राम—राम' करते हुये मांझी नाव खता वहां से चलता बना।

'अनिल बाबू! तुम नहा-धोकर स्थ हो जाओ और तुम बहन! म भी.....'

'हां, मैं पहले नहा लूं—करुणा ने ने कहा—मुझे एक साड़ी देंगी?'

'हां, लाई।'

करुणा इस बाईस वर्ष की सुन्दर धा को देखती रही। अनिल बाबू जिसके विषय में एक बार ही बोले थे, वही है यह राधा? सुन्दर है, नम्र है और है कर्तव्य-निष्ठ।

पर उसका मन इतना थक गया था कि अधिक कुछ सोच न सकी। खाट पर सहारा लेकर, आखें बन्द करके वह चुप-चाप बैठ गई।

अनिल शोभा की खाट पर बैठा और शोभा के हाथ को अपने हाथ में ले सहलाने लगा। कितनी देर तक वह शोभा का मुख देखता रहा।

(क्रमशः)

वैद्यरत्न
पं० डी० गोपालाचार्लू
का
जीवामृतम

स्त्री पुरुष और बालकों में पौरुष, बल और चेतना शक्ति का संचार करने के लिए अर्धशताब्दी से विख्यात है

आयुर्वेद आश्रमम लि०
टी० नगर, मद्रास।

उत्तर भारत के लिए चीफ स्टोकिस्ट्स्
ए न सा ट्रे डिं ग कं०
चांदनी चौक, दिल्ली।

मुक्ति की
घर-घर गंगा
अर्थात्
वेदान्त प्रकाशिका प्रथम भाग—
अर्थात्
गीता-रहस्य भजनावली

जिसको पं० इच्छाराम शर्मा ग्राम मीठेपुर पो० फरीदाबाद सूबा दिल्ली ने गीता प्रेमियों के हितार्थ उत्तम वाणी में रचा है। इसमें वृज गीत (रशिया) भजन, रागनी, दोहे, छन्द, चौपाई, गाने, निर्गुण सुर्गुण, वर्तज देशी। मुक्ति, भक्ति के अभिलाषियों को यह पुस्तक वेदान्त विषय के गाने रूप में परिणत ११ अध्याय का अनुवाद है, एक कापी हर एक मनुष्य को अवश्य मंगानी चाहिये की० ।) अलावा डाक खर्च। दूसरा भाग् छप रहा है।

देहली का पता:—जगत पुस्तक भण्डार
दरीबाकलां देहली।

मर्द के पेशाब के बाद
सफेद बूँद

यदि किसी पुरुष को पेशाब करने के पहले या पेशाब करने के बाद सफेद गंदा पानी आता हो तो यह बहुत भयंकर बात है। इसे प्रमेह का रोग कहते हैं। धीरे-धीरे यह रोग बढ़ जाता है तो आदमी पौरुषहीन हो जाता है। उसकी शक्ति समाप्त हो जाती है। इस वास्ते जिन पुरुषों को यह शिकायत हो या स्वप्नदोष होता हो तो इस भयंकर रोग से लापरवाही नहीं करनी चाहिये।

प्रमेह का रोग केवल ७ दिन में नष्ट हो जाता है

और केवल ३॥) खर्च होंगे। "जौहरे आजम" इस रोग के लिये अक्सीर प्रमाणित होती है। केवल एक शीशी दवा "जौहरे आजम" से बड़े बड़े पुराने रोगी स्वस्थ हो गए। "जौहरे आजम" प्रमेह के रोग का सबसे अच्छा इलाज है। जिन लोगों को आवश्यकता हो—

मैनेजर, जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४ दिल्ली

के पते पर पत्र लिखकर "जौहरे आजम" की एक शीशी वी० पी० द्वारा मंगा लें। एक शीशी का मूल्य ३॥) तीन रुपया आठ आना है पार्सल का खर्च ॥–) लगेगा।

[टेलीफोन नं० ६२६८]

सन्यासियों की गुप्त बूटियां

इस पुस्तक में सैकड़ों ऐसी जड़ी बूटियों के गुप्त रहस्य प्रकट किये गये हैं, जिनसे सन्यासियों की धाक जमी हुई है। हालांकि इनमें से अधिकांश बूटियां आपको जंगल, खेत बागीचों और पंसारियों की दुकानों पर भी मिल सकती हैं, जिनसे आवश्यकता पड़ने पर स्त्रियां भी सिर से पांव के नख तक के सभी रोगों का इलाज घर में ही कर लिया करेंगी। इस पुस्तक को पढ़ लेने के बाद आप इस युग के धन्वन्तरि समझे जायेंगे। रोगियों का तांता बंधा रहेगा। कुछेक बूटियों की सूची—

लाख-लाख रु० के प्रयोग—(१) ऐसी बूटी कि जिसकी लकड़ी कान में लगा देने से सर्प काटे का विष मुख द्वारा निकल जाता है, (२) वह बूटी जिससे गूढ़ गर्भ १ मिनट में निकल जाता है, (३) मधुमेह की अक्सीर बूटी, (४) दुबले-पतले आदमी को मोटा ताजा बना देने वाली बूटी, (५) सात दिन में नपुन्सक को मर्द बनाने वाली बूटी, (६) दमे की अद्भुत बूटी, (७) वह बूटी-जिसके रस में अंगुली डुबाने से तत्काल ज्वर उतर जाता है, (८) गर्भ रोक बूटी, (९) उपदंश को ७ दिन में मिटाने वाली बूटी, (१०) निमोनियां की बूटी, (११) वह बूटी जिससे बन्ध्या के पुत्र पैदा हो। ऐसी ही सैकड़ों बूटियों का वर्णन इसमें है, जिनसे चमत्कार दिखा कर आप सिविल सर्जनों को दंग कर सकते हैं। मूल्य २॥) डाकखर्च ।=)

पता—रसायन फार्मेसी (५) संगरिया (बीकानेर)

स्त्री रोगों की निपुण चिकित्सिका
लेडी डाक्टर कविराज आर. रानी ही हैं

आप किसी भी स्त्री रोग में ग्रस्त हों तो निम्नलिखित पते पर मिलिये। वे आपको उसी समय ठीक कर देंगी। इसके अतिरिक्त उनकी तैयार की हुई औषधि 'आशा' एक ऐसी औषधि है जोकि स्त्री के आन्तरिक बाह्य रोगों को दूर करके सन्तान योग्य बना देती है और उसका मूल्य केवल १०) रु० है। डाक व्यय पृथक होगा। औषधालय—

लेडी डाक्टर—कविराज आर. रानी

गली नं० १ अर्जुननगर निकट शाहालमी अड्डा लाहौर।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मृग-तृष्णा

[पृष्ठ १० का शेष]

'तुम्हारी बदतमीजी से मैं तो तंग आ गई हूं', मैंने कहा था कि सब देख लेना।'

फिर आशा को धक्का देकर बोली 'तुम्हारी आंखें क्या अन्धी थीं, हम तुम्हारी तनख्वाह से काटेंग।'

आखिर वे लोग चले गये और हम लोग भी हंसते-हंसते घर लौटे। सबकी खुशी में मैं साथ देता रहा था, जाने क्यों मुझे एक अजीब शक हो रहा था इसलिये मैं कुछ अधिक न कह सका। मिसेज लैडले कुछ कुछ कौमुदी की तरह लगी पर फिर भी कौमुदी में और उनमें आकाश-पाताल का अन्तर देख मैं सोचता-विचारता रहा। पहिले मेरे मन में आया कि मिसेज लैडले का नाम आदि पूछूं, किन्तु एक ओर कौमुदी की उच्च अतीम सुकमार भावनाओं द्वारा रक्षित मन्तुल मूर्ति दूसरी ओर गर्त में गिरी लांछित और उपेक्षित मि० लैडले। मैं अपनी आराध्य देवी को झूठे शब्दों द्वारा अपमानित न कर सका किन्तु दूसरे दिन जब मैं क्लब में पहुंचा अग्रवाल को अकेला बैठा देख मैं अपने को रोक न सका, धड़कते हुये दिल से मैंने पूछा :

'क्यों यार मिसेज लैडले का नाम क्या है? क्या कुछ पढ़ी लिखी भी है?

'हंसते हुये' अग्रवाल ने 'अखबार से नजर हटा कर कहा — आश्चर्य की बात तो यही है कि ये ग्रेजुवेट होते हुये भी इतनी अनकलर्ड है। इनका नाम भी मैं अच्छी तरह से जानता हूं ये पहिले 'कौमुदी अडियार थीं।'

उसकी बात सुनते मेरा चेहरा फक पड़ गया और हाथ पैर सनसनाने लगे। पर कौमुदी पर मेरी इतनी अटल श्रद्धा थी कि मुझे अपने सभी साथी बिलकुल झूठे और मक्कार प्रतीत होने लगे। मैं घबराहट से उठ कर टहलने लगा। उसी समय हार्न बजा और पोर्टिको में एक कार आकर रुकी। अखबार रखते हुये अग्रवाल बोला 'लो आगई वही आज अकेली ही आई हैं?

उसने कुछ और कहा पर मुझे सुनने का अवकाश न था। मैं सामने आती हुई इष्ट देवी की ओर देख रहा था। बिल्कुल तन्मय होकर!

वह ठीक कौमुदी का कंकाल प्रतीत हो रही थी न वह रंग था, न वैसा खिला हुआ शरीर न आखों में वह रोमांस था। न वह नपी-तुली चाल पर वह कौमुदी थी, वही कौमुदी! मुझे पागल बनाने को इतना ही काफी था। उसके पास आते ही मुंह से निकल गया 'अरे कौमुदी! तुमने मुझे पहिचाना!' पर उसने कड़क कर कहा 'सभ्यता से बोलिये, मैं आपको.....।

शायद एक एक शब्द के लिये अगर किसी ने एक एक हथौड़ा मारा होता तो भी मैं आसानी से सह लेता! मेरे स्वप्न बिखर गये मेरी साधना चूर चूर हो गई और क्षण भर में मैं जान गया कि वह सब कुछ भ्रम था, मृगतृष्णा थी।

मैं बेहद खिसिया गया था। मेरे आकस्मिक अपमान से अग्रवाल भी घबरा गया। यदि वह वहीं बैठ गई होती तो शायद शर्म से मेरा हार्ट फेल हो जाता किन्तु ईश्वर की कृपा से वह रैकेट घुमाती हुई लाइब्रेरी की तरफ चलदी। और अग्रवाल ने मेरी घबराहट और परेशानी देख कर मुझे लौटने की सलाह दी।

रास्ते भर अग्रवाल मुझे समझाता रहा— 'अरे ये तो पूरी—चुड़ैल है। तुम क्यों बुरा मानते हो? ये तो लैडले को क्लब में तमाचा तक मार चुकी है। इसकी बात का क्या? यह तो एक सिक्ख वेश्या की लड़की है, बेचारा लैडले फंस गया है।'

पर मेरा दिल बैठा जा रहा था पश्चाताप घृणा और रंज से मैं सन्न सा था। धक्का बड़ा गहरा था।

अग्रवाल ने एक पेग विस्की देकर मुझे लिटा दिया पर मैं विचारों के तूफान और आश्चर्य और निराशा की चोटों से रात भर बेचैन रहा।

सवेरे जब दो महीने की अर्जी छुट्टी के लिये भेज दी और शीला को अपने आने की सूचना का तार दिया तब जाकर कुछ-चैन मिला।

———

फिल्म स्टार

बनने के इच्छुक शीघ्र लिखें, कुछ पढ़ा होना आवश्यक है।
रंजीत फिल्म आर्ट कालेज 18। रावीरोड
(V. D.) लाहौर

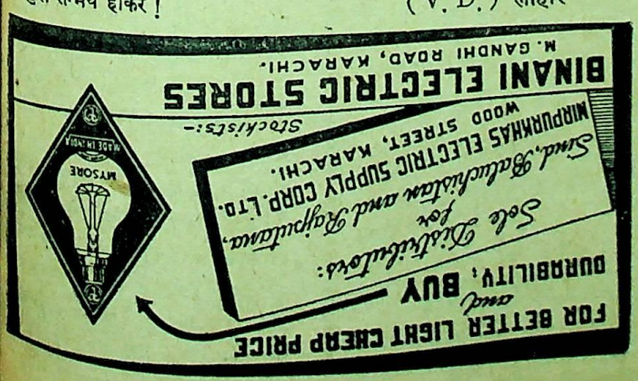

दीपावली अभिवादन

हम कामना करते हैं कि दीवाली शांति और शुभेच्छा के नववर्ष की संदेश-वाहिका बने और यह नववर्ष देश में सुख-समृद्धि के युग का सूत्रपात करे।

दी टाटा आयरन मिल्स कम्पनी लिमि.

असली जादू का शीशा

हर स्त्री-पुरुष चाहे कितनी उमर का हो, बालक हो या जवान या बूढ़ा-इस जादू के शीशे से देख सकता है। चोरी का पता, गड़े हुए धन, गुमशुदा का पता, बीमार के अच्छा होने, आने वाले व गुजरे हुए हालात, मुहब्बत प्रेम, मुकदमा, नौकरी, परीक्षा, हर बात का ठीक-ठीक पता लग सकता है। झूठ निकले तो दाम वापिस, मूल्य ३) रु०, पत्र-व्यवहार अंग्रेजी में करें।

आनन्द स्वामी (V.W.D.) पो.ब. नं० ६१ लाहौर।
ANAND SWAMI, (V.W.D.) P. B. no. 61 Lahore.

१००००) रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल रजिस्टर्ड के सेवन करने से बाल हमेशा के लिए काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है, और उनको लम्बे, घूंघरवाले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न उगते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता है और सिर को ठण्डक पहुँचाता है। अतीव सुगंधित है। कीमत एक शीशी २॥), तीन शीशी पूरा कोरस की रियायती कीमत ६॥)। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक फैंसी म्यूट रिस्टवाच जोकि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्दन न्यूगोल्ड) बिल्कुल मुफ्त भेजी जाती है।

जरूरी नोट—माल पसंद न होने पर कीमत शीघ्र वापस करदी जाती है। तीन शीशी दवाई के खरीदार को डाक खर्च बिलकुल माफ, और चार अंगूठी लन्दन न्यूगोल्ड और चार घड़ियां बिलकुल मुफ्त इनाम दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार-बार हाथ न आयेगा। आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ-साफ लिखें। मैनेजर—

लन्दन सी. कम्पनी (V.W. D.) पी. बी. १६५ लाहौर।

दादा कृपलानी

(पृष्ठ ६ का शेष)

खूब पटती है। कृपलानीजी ज्यादा भाषाएं नहीं जानते। वे टूटी फूटी गुजराती बोलते हैं और हिन्दुस्तानी सूबे में ३० साल रहने के बाद भी सिर्फ टूटी-फूटी हिन्दुस्तानी बोल सकते हैं। मगर हिन्दुस्तानी उनके प्रेम और दिल्लगी की भाषा है।

यह एक आश्चर्यजनक बात है कि वे सिन्ध में पैदा होने पर भी सिंध और सिंधियों को नहीं चाहते। सिंधी चरित्र में कोई ऐसी खास बात अवश्य है, जिससे वे दूर भागते हैं। वे सिंधियों की फिजूल-खर्ची व पश्चिम की नकल पसंद नहीं करते। सिंधियों में ऊपरी दिखावा बहुत है, जिससे छोटे-बड़े का खयाल उत्पन्न होता है। उनमें राजनैतिक और धार्मिक उत्साह की भी कमी है और जब कृपलानीजी सिंधियों के बीच में होते हैं तो वे सिंधियों के यूरोपियन हैटो और बनावट पर हंसते हैं।

प्रोफेसर कृपलानी ने गांधीजी का साथ १९१७ से किया। उस समय वे चम्पारन में किसानों के मामले में गए हुए थे। यह उस समय की बात है, जब बंगाल के आतंकवादी देशभक्त विहार में आ-आकर एकत्र हो रहे थे। यह रंग धीरे-धीरे सभी नौजवानों पर चढ़ रहा था। ऐसा मालूम हो रहा था कि सभी लोग समाजवादी या कम्युनिस्ट हो जायंगे। यह उनका दोष नहीं था— युग की आवश्यकता थी। कृपलानीजी ने भी आतंकवाद उसी जोश से स्वीकार किया, जैसे बाद में श्री जयप्रकाश नारायण ने समाजवाद को अपनाया। बदलते हुए समय में नई बातें पैदा होती हैं, परन्तु जैसे सब धाराएं बह कर नदी में जाती हैं और नदियां बह कर समुद्र में समा जाती हैं, उसी तरह ये सब बातें गांधीजी के गांधीवाद में समा जाती हैं। वे सबसे अधिक शान्त, परन्तु क्रान्तिकारी हैं।

कृपलानीजी ने अपना राजनैतिक जीवन हिंसात्मक आन्दोलन से शुरू किया और मेरा ख्याल है हिंसा के कारण उन्हें बहुत ही बड़ी कीमत चुकानी पड़ती। गांधीजी खुद कहते हैं कि बड़ी कठिनाई के बाद कृपलानीजी ने अपने विचार बदले और वह भी अपने ढंग से। वे व्यक्तिगत रूप से गांधीजी के बड़े भक्त हैं और गांधीजी के लिए वे सबके विरुद्ध गदा उठाने को तैयार हैं। वास्तव में कृपलानीजी कार्य-कारिणी समिति अखाड़े के वे पहलवान हैं, जो सबके छक्के छुड़ाते हैं, मगर वे अपने गुरु के दब्बू और खामोश शिष्य हैं। अगर जरूरत पड़ जाय तो कैंप में वे कड़वी से-कड़वी सीधी बात कहने को तैयार रहते हैं, कभी-कभी वे उन दूसरों की बात को भी आगे बढ़ाते हैं, जो खुद अपनी बात नहीं कह सकते। वे गांधीवाद के सच्चे अर्थ के अनुसार गांधीवादी नहीं हैं। वे गांधीजी से व्यक्तिगत तौर पर जितना प्रेम करते हैं उतना गांधीवाद से नहीं। गांधीजी अगर अपने पक्ष वालों को वामपक्षी मध्यपक्षी और दक्षिणपक्षी विभागों में बांटें तो कृपलानीजी वामपक्षी हैं। गांधीवाद को चाहने वाले कई लोग हैं, मगर बहुधा देखा जाता है कि चाहने वाले अपने मालिक को धीरे-धीरे कठ-पुतला बना देते हैं। मगर कृपलानीजी गांधीजी का इस तरह चाहने वाले नहीं हैं। कृपलानी जी गांधीजी को इस तरह चाहते हैं कि वे उनको उनकी मृत्यु के बाद भी जिन्दा रक्खेंगे।

फोटो कैमरा मुफ्त

यह कैमरा सुन्दर नमूने का सफाई से बना हुआ बिना किसी कष्ट के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है। इसका प्रयोग सरल है यही सही काम करता है और शौकिया काम लेने वाले व व्यवसायी दोनों ही इससे काम ले सकते हैं। यह कीमती मनोहर कैमरों में से है, जो थोड़े ही मूल्य का है। यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और रुपया कमावें। मूल्य बक्स कैमरा पूरा, तमाम फिल्म कार्ड, कैमीकल, सरल प्रयोग सहित नं० ५०१ कीमत ५।।।) वेस्ट, क्वालिटी, नं० ५४५ कीमत ७।), डी लक्स एक्स्ट्रा स्पेशल क्वालिटी नं० ५५० कीमत ६।।), फोल्डिंग नं० १००, कीमत ४५), पैकिंग व डाक व्यय १=) नोट — एक समय में ६ कैमरों के ग्राहक को कैमरा नं० ५५० मुफ्त। स्टाक सीमित है। अभी आर्डर दें अथवा निराश होना पड़ेगा। माल पसन्द न होने पर कीमत वापिस।

इम्पीरियलचैम्बर आफ साईन्स (V.W.D.) पो० बा० ६१, लाहौर
Imperial Chamber of Science, (V.W.D.) P. B. 61, Lahore.

स्त्री की कमर टूट जाती है

अगर स्त्री का मासिक धर्म ठीक समय पर न आये या मासिक के दिनों में दर्द हो या माहवारी कम या ज्यादा आती हो तो इस तकलीफ से स्त्री की कमर में बहुत दर्द होता है। ऐसी को एक शीशी दवा कोरस सेवन करा देनी चाहिए। इस दवा के खाने से मासिक धर्म की सब खराबी ठीक हो जाती है। फिर हर महीना बिना किसी कष्ट के ठीक मात्रा में मासिक धर्म होने लगता है। हजारों स्त्रियाँ इस दवा से लाभ उठा रही हैं। एक शीशी दवा कोरस की कीमत दो रुपया आठ आना २॥) है। नीचे लिखे पते से पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा मंगा लीजिए।

पारसल खर्च ॥-) लगेगा।

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना
हिन्दी आफिस नं० ३८, दिल्ली !

दमा निवारक
श्वासकासारि अवलेह

दमा, श्वास, खांसी, जुकाम, कफ, सर्दी, हिचकी, छाती व गले की जलन वगैरह की शर्तिया दवा डि० रु० २)

मदन मंजरी फार्मेसी-जामनगर
देहली— जमनादास कं० चांदनी चौक
आपके शहर में हमारे एजेंट से खरीदें

हांगकांग चीन में बनी हुई

संसार में स्त्री सम्भोग की केवल पुरुषों के लगाने की एक अद्भुत औषधि।

—सुइ फन सी—
Solution

पुरुषों के लिए केवल बाहर से व्यवहार करने लायक रुकावट की संसार में अद्वितीय तथा अद्भुत औषधि है। लाखों गृहस्थ इसकी मांग कर रहे हैं। जिन पुरुषों का शीघ्र ही वीर्य पतन हो जाता है, उनके लिये यह दवा बेजोड़ है। इस के लगाने से रुकावट सम्बन्धी अपूर्व शक्ति तथा सामर्थ्य प्राप्त होता है। इस दवा की एक शीशी बहुत दिनों तक चलती है।

मूल्य प्रति शीशी रुपये १२) डाक ख. ॥≡) अलग।

विस्तृत सूचिपत्र मुफ्त मंगाइये।

चाइनीज मेडिकल स्टोर
नया बाजार——देहली।
हैड आफिस——एपोलो स्ट्रीट, फोर्ट बम्बई। ब्रांचें—१२ डलहौजी स्क्वायर कलकत्ता: रीची रोड-अहमदाबाद।

—सेलिंग एजेन्ट्स—

दी नेशनल मेडिकल, स्टोर्स--आगरा।
दी जनरल मेडिकल स्टोर्स--अजमेर।
दी एलाईड केमिस्टस-जयपुर।
श्री सरस्वती स्टोर्स—बीकानेर।
मे. गिरधरदास जानकीवल्लभ--उदयपुर।
वैद्यराज विश्वनाथ त्रिवेदी-मुजफ्फरनगर।
मेसर्स मोहन ब्रादर्स—जयपुर
मेसर्स खरे ब्रदर्स—इंदौर
मे० गोपीलाल चिरंजीलाल—श्रीमाधोपुर।
दी गुजरात मेडीकल स्टोर्स—कानपुर
दी वर्मा मेडिकल स्टोर्स--शिकोहाबाद।
मे० धारीवाल ब्रादर्स—जोधपुर।
डी० पी० आयुर्वेदिक एन्ड यूनानी दवाखाना मोरेना।

देश विदेश का घटनाचक्र

[पृष्ठ ६ का शेष]

अब फ्रांस, स्याम के संयुक्तराष्ट्र संघ का सदस्य बनने में बाधक न होगा, प्रत्युत समर्थन करेगा। सीमा-निर्धारित करने के सम्बन्ध में एक संयुक्त समिति नियुक्त की जायगी। स्याम की राष्ट्रसभा ने इस प्रस्ताव का घोर विरोध किया जा रहा है।

ईरान के षड्यन्त्रोंकी जिम्मेदारी किस पर ?

मास्को रेडियो ने रूसी आलोचक मुर्गी बेलोकोव का एक लेख ब्राडकास्ट किया जिसमें बताया गया है कि (१) ईरान के कबीले वालों के विद्रोह के पीछे शहबाज और इस्फहान के ब्रिटिश कौन्सिल कर्नल अण्डरवुड तथा ऐंग्लो-ईरानियन आयल कम्पनी के एक अधिकारी का हाथ था। (२) ईरान और ईराक के मध्यवर्ती सीमांत प्रदेश में बराबर ब्रिटिश फौजी दस्तों का जमघट लगा रहता है और (३) इसी भाग में गत सप्ताह ८० हजार हथियार रात के समय पहुंचे।

तेहरान के हल्कों में निश्चयपूर्वक कहा जाता है ईरान में जितने भी सरकार-विरोधी षड्यन्त्र होते हैं, उनमें शहबाज के ब्रिटिश मि० ए० सी० ट्रौट और इस्फहान के ब्रिटिश कन्सल मि० सी० गाल्ट का बड़ा हाथ होता है। दक्षिण-पूर्वी ईरान के कबीलों के षड्यन्त्र तथा अन्य उपद्रव के पीछे वे ही हैं, जो चाहते हैं कि ईरान कमजोर हो जाय। गत ग्रीष्म ऋतु के बाद से साम्राज्यशाही ने इस ओर बहुत जोर पकड़ लिया है और ईरान के पश्चिमी सीमांतों से घिरा कर दक्षिणी ईरान के कबीले वालों के पास अस्त्र-शस्त्र भेजे जा रहे हैं। काफी अरसे से ब्रिटिश विमानों के द्वारा कुर्दिस्तान में अस्त्र-शस्त्र भेजे जा रहे हैं।

मि० बोलोकव ने यह भी बताया कि उक्त कर्नल अण्डरवुड तथा आयल कम्पनी के एक अधिकारी ने ही बख्तियारी व काशकई के विद्रोहों का संगठन किया था। गत जुलाई में बसरा में ब्रिटिश फौजी दस्तों के पहुंचने से वे और भी जोश में आ गये थे।

पश्चिमी अफ्रीका में विचित्र ट्रस्टीशिप

टंगानिका, टोजोलैण्ड व कैमरून को ट्रस्टीशिप के अन्दर रखने की शर्तें ब्रिटिश सरकार ने प्रकाशित करदी हैं। ब्रिटेन इन देशों को संयुक्तराष्ट्र संघ के सुपुर्द करने को तैयार हैं पर शासन तन्त्र ब्रिटेन का ही रहेगा।

वह शर्तें उस समय प्रकाशित की गयी हैं जब दक्षिणी अफ्रीका के प्रधान-मन्त्री जनरल स्मट्स न्यूयार्क के लिए रवाना हो चुके हैं। वह संयुक्तराष्ट्र संघ से यह स्वीकृति लेने जा रहे हैं कि दक्षिणी-पूर्वी अफ्रीका के शासनादेश प्राप्त भूखण्डों को दक्षिणी अफ्रीका की यूनियन सरकार को दे दिया जाय।

इसमें कहा गया है कि ब्रिटिश संघ संयुक्तराष्ट्र संघ की ट्रस्टीशिप कौंसिल से सदा सहयोग करता रहेगा तथा उसके अधिकारियों के दौरे के लिए भी प्रबन्ध करता रहेगा।

इन देशों में शान्ति, व्यवस्था, सुशासन तथा इसकी रक्षा के लिए ब्रिटेन ही जिम्मेवार होगा, एतदर्थ उसे कानून बनाने का भी अधिकार होगा। पर वह ट्रस्टीशिप की धाराओं के अनुकूल ही होगा।

ब्रिटेन वहां नौसैनिक तथा हवाई अड्डे भी बना सकेगा, वहां वह किले-बन्दी कर अपने सैनिकों को भी ला सकेगा तथा वे सारी कार्यवाइयां कर सकेगा जो आवश्यक समझी जायेंगी।

संयुक्तराष्ट्र संघ के घोषणा-पत्र के अनुसार इन भूखण्डों के निवासियों की राजनीतिक, आर्थिक सामाजिक तथा शैक्षिक अवस्थाओं में भी सुधार किया जायगा।

चीन-भारत का राजदूत सम्बन्ध

चीनी परराष्ट्र विभाग की एक घोषणा में कहा गया है कि भारत और चीन की सरकारों ने यह निर्णय किया है कि अपने प्रतिनिधिवासों को राजदूता-वास के रूप में परिणत कर दें। जिसमें दोनों देशों के मित्रता के सम्बन्ध और अधिक दृढ़ और घनिष्ट बनाये जा सकें।

चीनी परराष्ट्र मन्त्री श्री वांग शीहहूने एक वक्तव्य में कहा है कि भारत और चीनमें राजदूतावास खुलने की बात अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हम प्रसन्नता के साथ उस अवसर की प्रतीक्षा कर रहे हैं जब दोनों देशों के राजदूत एक दूसरे देश में जायेंगे।

भारतीय प्रतिनिधिवास के अध्यक्ष श्री हसन ने इस समाचार की पुष्टि करते हुए बताया कि प्रथम भारतीय राजदूत के नाम की अभी घोषणा न होगी लेकिन अब प्रतिनि धिवास राजदूतावास में परिवर्तित हो जायगा।

भूल सुधार

१. सरस्वती पहेली नं० २ का सील बन्द उत्तर २५ नवम्बर या २ सितम्बर के सा० अर्जुन में छपेगा न कि (१५ अक्टूबर या २ नवम्बर के में)

२. सरस्वती पहेली १ का सील बन्द उत्तर में सर्केत ६ ऊपर से नीचे में 'कार्य' की जगह शुद्ध शब्द 'कपि' है।

सिद्धयोगेन्द्र कवच

(गवर्नमेंट रजिस्टर्ड)

इस अद्भुत शक्तिशाली तथा दैवी-शक्ति सम्पन्न कवच को केवल धारणमात्र से मनोवांछित फल प्राप्त होता है। इससे नौकरी, संतान, धन की प्राप्ति, व्यापार से लाभ, मुकदमे, रेस, लौटरी में जीत, कठोर से कठोर हृदय वाली स्त्री या पुरुष आपके वश में होकर आपका आज्ञाकारी हो जायगा और कठिनसे कठिन रोगों और नवग्रहों से छुटकारा होकर भाग्योदय होता है। बेफायदा साबित करने से १००) रु० इनाम। मूल्य तांबा २॥) रु० चांदी का ३) रु० सोने का स्पेशल का मू० १५) रु०

पता—श्री महाशक्ति आश्रम मुइल्ला सालीमपुर अहरा, पो० बांकीपुर, पटना।

श्वेतकुष्ट वनौषधि

महात्मा प्रदत्त श्वेतकुष्ट (सफेदी) की दवा से तीन दिन में पूरा फायदा। यदि सैकड़ों हकीमी, डाक्टर, वैद्यों, विज्ञापनदाताओं की दवा से निराश हो चुके हों तो इसे लगा कर आराम होवें। १५ दिन की दवा का मूल्य २॥)।

सफेद बाल काला

इस तेल से बालों का पकना रुक कर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे तो दूना मूल्य वापिसी की शर्त लिखा लें। यह तेल सिर के दर्द व सिर में चक्कर आना आदि को आराम कर आंख की रोशनी बढ़ाता है। एकाध बाल पका हो तो २॥) आधा पका हो तो ३॥) और कुल पका हो तो ५) का तेल मंगवा लें। एजेण्टों की हर जगह आवश्यकता है।

स्तम्भक वटी

एक गोली शाम को खा लें और इसके अद्भुत चमत्कार को देखें। एक घण्टे तक स्तम्भन कर गजब ढा देगी। १६ गोली १)।

पता—अखिल किशोर राम

नं० १०७ कतरीसराय (गया)

टाइप राइटर

नये सस्ते, हाल के ही सर्व श्रेष्ठ आफिस टाइपराइटरों की कीमतों में महान कमी।

यूनिवर्सल टाइप राइटर्स सेण्ट्रल बैंक, ६६२ ए. चाँदनी चौक दिल्ली

वर की आवश्यकता है

एक जाट कन्या के लिए। जो १६ वर्ष की, मिडल तथा पढ़ी, सुन्दर और स्वस्थ है, वर जाट हो, पढ़ता हो या रोजगार में हो। विशेष जानकारी के लिए पत्र लिखिए।

रघुनाथसिंह

पो० टीकमगढ़ (जिला झांसी)।

लाखों रुपए का फायदा

बाजरा, चांदी, सोना, सरसों, अलसी, रुई, गुड़, सूत, रंग, पाट, बारदाना इत्यादि एक चीज की एक मास की तेजी मन्दी किस मिती से किस मिती तक होगी। फीस २।-) एक बार अवश्य परीक्षा कर देखिए। डेली रिपोर्ट टके वार फीस ४) पं० दुर्गाप्रसाद ज्योतिषी रिवाड़ी (पंजाब)

शुद्ध स्वदेशी ताजा सिगरेट पीजिये

जो आपके लिये लाभदायक होगी

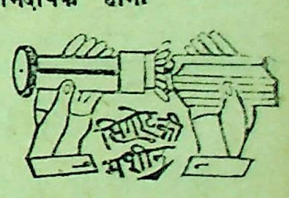

यह मशीन १ घण्टे में ५० सिगरेट बनाती है। मशीन के साथ १०० सिगरेट बनाने का कागज और सिगरेट बनाने की तरकीब मुफ्त है।

मूल्य ३॥) पोस्टेज पैकिंग ॥=)

पता:—एस० के० सक्सैना (A. D.) रंगमहल अलीगढ़।

श्री शारदा-सहेली-संघ, जयपुर का अनूठा प्रकाशन !

तीन नाटकों का संग्रह

यदि आप समाज की मूक सुकुमार, निरपराध कन्याओं को बूढ़ों की कुत्सित वासना का शिकार होने से बचाना चाहते हैं, यदि आप दर-दर की ठोकरें खाने वाली भारतीय विधवा की दुरवस्था पर आंसू बहाते हुए उसको गौरवमय स्थिति में देखना चाहते हैं? यदि आप अपने घरों में, नारियों की कलह और क्लेश की यातनाओं से मुक्त कर शान्ति और प्रेम की स्वर्गीय सरिता बहाना चाहते हैं?

तो वृद्ध-विवाह, विधवा, और उत्सर्ग इन तीन सामाजिक नाटकों का लोकोपयोगी संग्रह:—

तीन— पुष्प

स्वयं पढ़िये और महिलाओं को भी पढ़ाइये!

लेखक:—पं० कैलाशचन्द्र जी शास्त्री, पृष्ठ संख्या ३५० मूल्य केवल २) रु०

प्राप्ति स्थान:—

१. श्री शारदा-सहेली-संघ, चौकड़ी घाट दरवाज़ा, जयपुर सिटी.

२. भारतीय भवन, बड़ा दरीबा देहली।

बंगाल में दूसरा नरमेध

[पृष्ठ ४ का शेष]

की कचहरी की ओर गया और उनके निवासस्थान में आग लगाकर उन्हें तथा उनके परिवार के अन्य लोगों एवं कारिन्दों को पकड़ कर नृशंसता से उनकी हत्या कर डाली और उनकी लाशों को आग में डाल दिया। लगभग ४०० अन्य व्यक्ति जिनमें कितनी ही स्त्रियां व बच्चे भी थे, और जो कचहरी में शरणागत हुए थे, उन्हें भी गुण्डों ने जहां का तहां देखते-देखते जिबह कर दिया। इसके बाद उन्होंने जी भर कर लूटपाट की और समीप के अनेक गांवों में आग लगा दी।

आचार्य कृपलानी का वक्तव्य

कांग्रेस के मनोनीत सभापति आचार्य कृपलानी ने श्री शरतचन्द्र बोस तथा कुछ और नेताओं के साथ नोआखाली और त्रिपुरा जिलों के दंगा-ग्रस्त क्षेत्रों का हवाई दौरा करने के बाद वक्तव्य दिया है कि स्थिति अभी काबू में नहीं हुई है।

कोमिल्ला में हमने शरणार्थियों से यह भी सुना कि किस तरीके से धावे किए गए। हमें बताया गया कि आक्रमणकारी गुण्डों के नेता भूतपूर्व फौजी थे और उन्होंने बाकायदा फौजी ढंग से इन आक्रमणों की व्यवस्था की थी, गांव पर हमला करने से पहले वह कुछ दस्ते पेशगी वहां भेजते थे, जो उन्हें सब आवश्यक सूचनायें दे देते। गांव छोड़ने से पहले वे अपने में से कुछ लोग वहीं छोड़ देते थे। वे लोग सड़कें खोदना और यातायात के साधन काटना जानते थे। १० तारीख से जब कि दंगा एकदम भड़क उठा, काफी पहले एक भूतपूर्व एम० एल० ए० मुसलमानों को बाकायदा भड़काते फिर रहे थे। हमारा ख्याल है कि सरकार को इस आदमी के आन्दोलन की जानकारी थी।

हमने गवर्नर के नोटिस में यह बात भी लाई कि गुण्डों को बड़े पैमाने पर गिरफ्तार नहीं किया गया। इस बात को उन्होंने और उनके सेक्रेटरी ने भी स्वीकार किया। हमने गवर्नर को यह भी बताया कि यद्यपि फौज को बुलाया गया है, मगर अधिकारीगण उनका पूरा लाभ नहीं उठा रहे और फौज से जो काम लिया जाना चाहिये, वह नहीं लिया जा रहा।

हमने नोआखली इलाके पर उड़ने का फैसला किया और चालक को जहां तक हो सके, अधिक से अधिक नीचे उड़ने को कहा। इस इलाके में हमें लगभग दस गांवों में मकान जलते हुए मिले। आग हाल की ही लगी हुई थी उनमें से कुछ तो आज सवेरे की ही लगी हुई दिखाई देती थी। प्रधानमन्त्री ने भी इस आग को देखा। वे फरीदगंज, रायपुर, चांदपुर, और रामगंज के पूर्वी इलाकों में दिखाई दीं।

'अभी तक हताहतों की संख्या का सही अन्दाज करना भी कठिन है, तथापि सरकारी ब्यौरा बहुत न्यून प्रतीत होता है।

बंगाल सरकार असफल

श्री शरतचन्द्र बोस ने कहा कि जनता द्वारा रक्षा की अपील होने पर भी बंगाल सरकार इस दिशा में उचित कदम उठाने में असफल रही है। उसका क्या कारण है, यह तो भली-भांति बङ्गाल सरकार को ही मालूम हो सकता है, किन्तु नोआखाली तथा टिपरा जिलों में मनपानी हिंसा और खून खराबी जारी है और बंगाल की शस्य-श्यामला भूमि की छाती पर आज बर्बादी और विनाश का तांडव नर्तन हो रहा है—हत्या, लूट-खसोट, अग्निकांड तथा स्त्रियों के सतीत्व अपहरण की घटनायें सुनकर रोमांच हो आता है। एक ओर जबकि बङ्गाल सरकार अपने कर्तव्य को पूरा करने में असफल हुई है, दूसरी ओर भारत सरकार इस समय नपुंसक-सी प्रतीत होती है। इस समय क्या करना चाहिये आज यह प्रश्न प्रत्येक व्यक्ति अपने-आप से तथा अपने पड़ोसी से पूछ रहा है।

शरदबाबू ने कहा कि हमें अपने आप अपनी रक्षा करनी सीखनी चाहिये। इन उपद्रवों के पीछे एक छिपा हुआ हाथ काम कर रहा है।

श्वेत कुष्ट की अद्भुत जड़ी

प्रिय पाठकगण! औरों की भांति हम प्रशंसा करना नहीं चाहते, यदि इसके लेप से सफेदी जड़ से आराम न हो तो मूल्य वापिस दूंगा। कीमत २)

पता:—श्री अखिल के० आराम औषधालय, मुहल्ला सलीमपुर अहरा, पो० बांकीपुर (पटना)

५००) इनाम

प्रेम वशीकरण यन्त्र

इस यंत्र को अपने पास रक्खें, आपकी प्रेयसी कैसी ही कठोर और जिद्दी क्यों न हो वह आपके काबू में हो जावेगी। प्रेम पथ के सभी कष्टों को दूर कर प्रेम सम्बन्ध जोड़ने में मदद करता है। एक बार परीक्षा करें—झूठी साबित करने वाले को ५००) इनाम। मूल्य प्रति यन्त्र २) तीन का ५) वी० पी० खर्च अलग।

पता—

एम० एल० शाह साहब,

पोस्ट बक्स २४३ कानपुर।

हर किस्मकी गोलियां व टेबलेट

उजरत पर बनाई जाती हैं

काम आला दर्जा बिल्कुल बिलायती किस्म का किया जाता है। हर साइज की गोलियां और टेबलेट और शुगर कूटिंग करने वाले बिलायत से सीखे हुए माहिर कारीगर बनाते हैं। निर्ख बनवाई रियायती, काम निहायत सफाई और सन्तोष जनक वायदे पर किया जाता है

हावर्स मैडीसिन कम्पनी लोहारी अड्डा के सामने-चौक अनारकली लाहौर

विजयगढ़ निवासी

भारत विख्यात वैद्यराज बांकेलाल गुप्त प्राणाचार्य्य
भूतपूर्व मैनेजिंग प्रोप्राइटर धन्वन्तरि औषधालय
एवं भूतपूर्व सम्पादक धन्वन्तरि
ने

प्राणाचार्य्य भवन

नामक एक वृहद संस्था २००००० दो लाख के मूल धन से स्थापित की है जिसके लिमिटेड होने के लिये कागजात तैयार हो रहे हैं। शीघ्र ही लिमिटेड हो जायगी। शेयर प्रायः सब बिक चुके हैं। इस संस्था में आयुर्वेदीय, पेटेन्ट और नवीन प्रणाली से प्रस्तुत औषधियां, वैद्यक पुस्तकें, प्रवास मंजूषा चित्र आदि के अतिरिक्त उक्त वैद्यराज जी के सम्पादकत्व में "प्राणाचार्य्य" नामक आयुर्वेदीय उच्च कोटि का सचित्र मासिक पत्र एवं साप्ताहिक पत्र शीघ्र ही प्रकाशित होगा। अभी से ग्राहक बनने से मासिक का ४) वार्षिक और साप्ताहिक का ६) वार्षिक मूल्य लिया जायगा। सर्व साधारण को खेरीज और चिकित्सकों एवं औषधि विक्रेताओं को थोक भावका सूचीपत्र शीघ्र मंगा लेना चाहिये।

एजेण्टों की आवश्यकता है—

व्यवस्थापक — **प्राणाचार्य भवन, विजयगढ़ जि० अलीगढ़**

दीपावली के शुभ अवसर पर

१०००) नवजीवन पहेली में अवश्य जीतिये!
६००) सर्वशुद्ध पूर्तियों पर तथा ४००) न्यूनतम अशुद्धियों पर।
पूर्तियां भेजने की अन्तिम तारीख २५ नवम्बर (२५-११-४६)

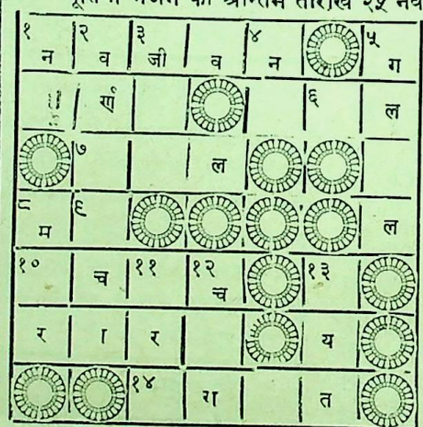

संकेत बायें से दायें:— १. पहेली में थोड़ा परिश्रम करनेसे अधिक रुपया मिलता है। ६. आजकल अधिकतर कार्य इसके बल पर होते हैं। ७. आयुर्वेद में इसे उपविष माना है। धार्मिक व्यक्तियों द्वारा मोक्ष प्राप्ति का साधन समझा जाता है। १०. शांत प्रकृति का मनुष्य इससे दूर ही रहता है। १४. करने वाले मनुष्य की जन-समाज में अक्सर चर्चा रहती है।

संकेत ऊपर से नीचे:— १. यह आबदार होने से ही आदर पाता है। २. महापुरुष अपने ..... से सदा दूर रहते हैं (तीन अक्षर)। ३. अपने ..... की कीमत सबसे अधिक मानी जाती है। ४. एक राजा जिसकी देवताओं ने भी स्पर्द्धा की थी। ५. एक पक्षी। ८. एक जल जन्तु। ९. मार्ग में इसका मिलना कष्ट-प्रद होता है। ११. सामान्य श्रेणी के पुरुष साधारणतया इसे नहीं रख सकते। १२. एक स्वादिष्ट खाने की वस्तु। १३. एक वृक्ष।

नियमः— एक नाम से एक पूर्ति की फीस १), दो पूर्ति की १॥), फिर प्रत्येक की ।=)। फीस मनी आर्डर द्वारा भेजें। मनी आर्डर की रसीद पूर्तियों के साथ भेजें। पूर्तियों, लिफाफे तथा मनी आर्डर कूपन पर अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें। पूर्तियां सादे कागज पर किसी भी संख्या में भेजी जा सकती हैं। शुद्ध हल ८ दिसम्बर के साप्ताहिक वीर अर्जुन में प्रकाशित होगा। पूर्तियां और मनी आर्डर भेजने का पता:—

मैनेजर, नवजीवन पहेली कार्यालय पोस्ट बक्स नं० ६६ अजमेर।

वह कैसे वैज्ञानिक बना ?

जब मेनेशस बालक था, तब उसकी मां ने उसे पढ़ने के लिए स्कूल भेजा। वहां उसे बहुत-सी चीजें मुखाग्र करनी पड़ती थीं। कुछ दिनों बाद बड़े-बड़े पाठों को मुखाग्र करते-करते और याद न करने पर मास्टरों की मार खाते-खाते ऊब गया। एक दिन स्कूल छोड़कर वह घर भाग गया! घर जाने पर उसकी मां ने पूछा—"तुम इतनी जल्दी घर क्यों आ गए?" उसने जवाब दिया—"मैं पढ़ने से ऊब गया हूं और कुछ करना चाहता हूं।" उस समय उसकी मां अपने कुशल हाथों से एक बहुत ही सुन्दर कपड़ा बुन रही थी। उसने एक कैंची ली और उस कपड़े को काट डाला। बालक मेनेशस भय और दुःख से चिल्ला उठा — "मां तुमने यह क्या किया! अपने सुन्दर नमूने को नष्ट कर दिया!" मां ने जवाब दिया—"मैंने वही किया जो तुम कर रहे हो। तुमने जो पढ़ाई शुरू की वह भी एक सुन्दर कपड़े बुनने के समान ही है किन्तु तुम उस काम से ऊब गये और बिना सोचे-विचारे ही उससे विमुख हो गये। मैंने जो कुछ किया है उससे ही तुम समझ सकते हो कि तुमने कितना बुरा काम किया।" बालक मेनेशस पर इस बात का गहरा प्रभाव पड़ा और वह उसी समय फिर से स्कूल चला गया।

मेनेशस की मां हमेशा उसकी देख-रेख बहुत ही सूक्ष्म दृष्टि से करती थी। उसने देखा कि बालक मेनेशस जो कुछ अपने चारों तरफ देखता है उसी का अनुकरण करता है। उसके पड़ौस में कसाई रहते थे और बालक उसीका अनुकरण करके अपने साथियों के साथ दुर्व्यवहार करता था, अतः उसकी मां ने दूसरा मकान बदला; किन्तु वहां भी मेनेशस वहां के दुखपूर्ण वातावरण का अनुकरण करने लगा। उसकी मां ने फिर भी मकान बदलकर एक स्कूल के समीप मकान लिया। इसके बाद से बालक मेनेशस एक बहुत ही अच्छा अभ्यास करने वाला लड़का हो गया। आगे चलकर वह एक बहुत बड़ा आदमी और प्रसिद्ध वैज्ञानिक बना!

[एक चीनी गाथा के आधार पर]

प्रकाश-किरण

ईश्वर उन्हीं की सहायता करता है जिनकी सांसों में तूफान होता है, जिनकी अंगुलियों में भूचाल होता है; आजादी की राह पर आगे बढ़ो। या तो तुम विजयी होकर देश के इतिहास में अमर हो जाओगे या तुम्हारी लाशें जमीन चूम जायेंगी और अमर-शहीदों में तुम्हारा नाम होगा।

— नेताजी

बंगाल की दीवाली

बुझ चुका है दीप, गई दीवाली बीत।

हर वर्ष दीवाली आती थी
घर-घर में दीप जलाती थी
इस वर्ष भी दीवाली आयी
पर वह दीप जला न पायी
चारों ओर छाया भयानक तम
बंगाल दुःखी, मना रहा मातम
निस्तेज जो दीपक जलते हैं
आंखों से अश्रु ढुलकते हैं
याद आते हैं वह मरने वाले
याद आते हैं वह दिन काले
याद आती है चिताओं की ज्वाला
तब कौन मनाये दीपमाला

झंकार उठी दीवाली की
पर गा न सका कोई जीवन-गीत

बुझ चुका है दीप, गई दीवाली बीत।

राजधानी का रक्त सुख न पाया
मिट न सकी मृत्यु की छाया
पूर्वी बंगाल की बारी आयी
हरी-भरी क्यारी मुरझाई
अबलाओं पर हुआ अत्याचार
मानवता कर उठी हा हाकार
स्त्रियों का हुआ घोर अपमान
धर्म का रहा न नाम व निशान
कौन चढ़ाता पुष्प वहां
चढ़ाने वाले न रहे जहां
कोन वहां पर दीप जलाता
जब अपना घर जलता पाता

हार चुकी है मानवता गयी पशुता जीत
बुझ चुका है दीप, गयी दीवाली बीत॥

घर में कौन मिठाई लाये
लक्ष्मी की कौन पूजा कराये
कौन वहां पर दीप जलाए
कौन वहां दीवाली मनाये
त्यौहार मनाने वाले न रहे
दीप जलाने वाले न रहे
रह गया रक्त-रंजित बंगाल
रह गया उसका कलंकित भाल
थोड़े से रह गये दीप टिमटमाते
आजकल में वह भी बुझ जाते

दीवाली आयी जलाती, दीप याद दिलाती
बंगाल का दुःखमयी अतीत

बुझ चुका है दीप, गई दीवाली बीत॥

— हरीशकुमार

दिवाली

दिवाली आई! दिवाली आई।
मेरे मन को बहुत सुहाई॥
घर घर में दिये जले हैं।
मानों तारे खिले हुए हैं॥
बड़े चाव से अपने घर।
सजा रहे नारी और नर॥
हलवाई बैठे दुकान पर।
थाल मिठाई से भर-भर॥
घर-घर में बड़ी सफाई।
नहीं कहीं गन्दगी पाई॥
दुनिया का अंधकार भगाया।
सारे में प्रकाश फैलाया॥
छटा आज की सुन्दर ऐसी।
वर्ष भर में आयेगी ऐसी॥
चलो हम भी दिवाली देखें।
उसके बारे में कुछ लिखें॥
कैसी सुन्दर शोभा लाई।
दिवाली आई! दिवाली आई॥

— जगदीशलाल

हंसो.....हंसो

भिखमंगा (दुकानदार से)-- दाता। एक पैसा दे दो, भगवान तुम्हारा भला करे।

दुकानदार— (चिढ़कर) 'कहां सुबह सुबह आया है। देखता नहीं अभी बोनी का समय है।

भिखमंगा— (नम्रता से) हुजूर मेरा भी यह बोनी का समय है। पहले पहल आपके ही पास आया हूं।

—राम सहाय

× × ×

मियां — बेली राम दवा फरोश के लड़का उत्पन्न हुआ है। उसकी प्रसन्नता में उसने दो-दिन के लिये दवाई की कीमत आधी कर दी है।

बिवी— शाबाश, शाबाश।

लड़का—माताजी क्या ही अच्छा होता, यदि आज पिताजी बिमार होते तो दवाई तो सस्ते मूल्य पर आ जाती!

—यशपाल आजाद

× × ×

डाक्टर—तुम्हारे कहां चोट आई? क्या गर्दन के पास?

मरीज—जी नहीं! चौराहे के पास!

× × ×

मास्टर—ऐसे जीव का नाम बताओ जिसके दांत न हो।

नीलू—जी, मेरी दादी।

—रामदेव

कौन अधिक

राजा बन्द कमरे में सोता है; मैं खुले आसमान के नीचे सोता हूं।

राजा के सिर पर छत है, मेरे सिर पर हीरों का जड़ा आसमान है।

राजा पंखे की हवा खाता है, मैं ताजा हवा का मजा लूटता हूं।

राजा आरामसे दिन बिताता है, इससे उसे नींद नहीं आती। मैं मेहनत-मजदूरी करता हूं, इसलिए मुझे रात खर्राटे की नींद आती है।

राजा को खाया हुआ हजम नहीं होता मुझे कड़ाके की भूक लगती है।

राजा का राज्य छोटा है। मैं तो जहां जाऊं; वही मेरा राज्य।

कहो, मैं सुखी या राजा?

—त्रिदेव

घावनाशक

फोड़े, फुन्सी, ज़ख्म, खाज का अनुपम मरहम

GHAV NASHAK KARYALAYA
PAHAR GANJ
DELHI

स्टाकिस्ट :- जे. पी. कपूरिया एंड सन्स
पहाड़गंज, देहली।

उद्यम

अक्टूबर अङ्क में

★ डा. आर. एन. डागाका परिचय
★ घरों की सजावट
★ सूर्यकिरण-चिकित्सा पद्धति
★ फौन्टेन पैन की दुरुस्ती
★ नकम-कर तथा नमक का औद्योगिक महत्व
★ विज्ञापन सम्बन्धी दृष्टिकोण

इनके सिवाय रुचिकर खाद्य-पदार्थ, खोज-पूर्ण खबरें, व्यापारिक समालोचना आदि स्तंभ, लेख और व्यंगचित्र देखिये। अङ्क प्रकाशित होते ही खप जाया करते हैं। व्यापारी वर्ग, किसान बागवान, विद्यार्थी वर्ग, सुशिक्षित महिलाओं, सार्वजनिक संस्थाओं और न्यूजपेपर एजेण्टों की मांग सतत बढ़ती जा रही है। अतः आज ही वार्षिक मूल्य रु० ५-८-० भेजकर ग्राहक बन जाइये।

उद्यम मासिक धर्मपेठ, नागपुर

दिवाली का सिद्ध किया हुआ धनलाभ यन्त्र

इस यन्त्र को दाहिनी भुजा में बांधने से रोजगार लगता है, तरक्की होती है, व्यापार में धन कमाया जाता है ! जो मनुष्य धन के बिना चिन्तायुक्त रहते हैं उनको धन की प्राप्ति होकर चिन्तायें दूर होती हैं। ज्यादा लिखना व्यर्थ है। एक बार परीक्षा करिये। मूल्य २॥) डाकखर्च अलग। स्त्रियों के सब कष्ट निवारण होकर गर्भस्थिति होती है। स्त्री-रक्षा यन्त्र २॥) बाल-रक्षा यन्त्र २) सब यन्त्र चांदी में मंढे हुए तथा रेशम से गुंथे हुए हैं।

पता—पं० प्रहलाददत्त यन्त्र-शास्त्री, रिवाडी (पंजाब)।

वह पुरुष

जो शक्तिहीन पुरुष किसी भी कारण से शरीर बल नष्ट कर चुके हों और उनके जीवन को घुन लग चुका हो और विशेष दुख से समय व्यतीत कर रहे हों, ऐसे दुखी पुरुषों को शक्ति प्रदान करने का सुअवसर यह है कि 'रिजोवीन' औषधि को १६ दिन तक सेवन कर लें, उनकी गई हुई शक्ति फिर से लौट आयेगी और अपना समय सुख से आनन्द प्राप्त अवश्य करेंगे। शरीर के प्रत्येक बलहीन भाग की यह दवा अमृत तुल्य है और काया को फिर से बदल कर नया जीवन देती है। सारे भारत-वर्ष में इस औषधि का प्रचार है और प्रत्येक वर्ष लाखों दुखी पुरुष इस औषधि द्वारा आनन्द प्राप्त कर चुके हैं। शक्तिशाली पुरुष भी यह दवा सेवन करके अपने जीवन के आनन्द को बढ़ा सकते हैं और यह दवा किसी भी ऋतु में सेवन की जा सकती है। इस कोर्स में दो दवायें होती हैं, एक खाने की, दूसरे मलने की। पूरे कोर्स का मूल्य ५) रुपये, डाक खर्च ॥≡) अलग।

अक्सीरी दवाखाना क़लां महल पो० नं० ४१ (A.D.) देहली।

मिर्गी

का २४ घण्टों में खात्मा। तिब्बत के सन्यासियों के हृदय का गुप्त भेद, हिमालय पर्वत की ऊंची चोटियों पर उत्पन्न होने वाली जड़ी बूटियों का चमत्कार, मिर्गी हिस्टीरिया और पागलपन के दयनीय रोगियों के लिये अमृत दायक। मूल्य १०॥) रुपये डाकखर्च पृथक।

पता—एच. एम. आर. रजिस्टर्ड मिर्गी का हस्पताल हरिद्वार।

अमीकन सैकिंड हैंड गर्मकोट

हर किसम के हाफ़कोट ओवरकोट वास्कोट बचकाना कोट ताज़ा माल बेहतरीन क्वालेटी बिल्कुल वाजबी निर्ख़, रेलवे लोडिंग खुला है आज निर्ख़नामा मंगावें, स्टाक थोड़ा है"

रमेश राज ऐन्ड को० कोटों वाले कराची पो० बक्स नं० 682

बाजार का ठीक-ठीक रुख

जानने के लिये ज्योतिर्विज्ञान का एकमात्र अद्वितीय पत्र

❀ 'श्री स्वाध्याय' ❀

सदा अपने पास रखें। इसमें भारत के बड़े-बड़े अनुभवी ज्योतिषाचार्यों के चांदी, सोना, रुई, शेयर अलसी, आदि प्रत्येक वस्तु के अनुभूत स्पेशल चांस और दैनिक तेजी-मन्दी टकेवार मय खरीद बेच की तारीखों के लिखी रहती है। हजारों व्यापारियों ने लाभान्वित होकर प्रशंसापत्र भेजे हैं। अभी वर्तमान मास के 'नववर्षांक में नई अन्तःकालीन राष्ट्रीय सरफार का भविष्य तथा श्री पं० जवाहरलाल नेहरू, श्री म० गांधी और कांग्रेस की कुंडली पर भी शास्त्रीय विचार लिखा गया है। अंग्रेजी के 'एस्ट्रोलाजिकल मेगजीन' से कहीं अधिक उपयोगी और जर्मनी के नूरेम्बर्ग नगर से प्रकाशित होने वाले 'एस्ट्रोलाजिकल जरनल' के मुकाबले का राष्ट्रा भाषा हिन्दी में प्रकाशित होने वाला 'श्री स्वाध्याय' अपने ढंग का अद्भुत पत्र है। ज्योतिर्विज्ञान के साथ ही इस पत्र में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सम्बन्धी राष्ट्रीय साहित्यिक ऐतिहासिक गवेषणात्मक लेख और आयुर्वेद के अद्भुत प्रयोग भी रहते हैं। उच्चकोटि के विद्वान, नेताओं और पत्र-पत्रिकाओं ने इस पत्र की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। छठे वर्ष के प्रथमांक (जो अभी प्रकाशित हुआ है) का मूल्य २) मात्र है। इस अंक में सात सुन्दर चित्र और कुल १२० पृष्ठ हैं। वार्षिक मूल्य ३॥) तीन रुपये आठ आने नीचे लिखे पते पर भेज कर स्थायी ग्राहक बनने वालों को यह अंक इसी मूल्य में मिलेगा। केवल यह नववर्षांक ही मंगवाना हो तो रजिस्ट्री खर्च सहित २।-) भेजें या वी० पी० मंगावें। विलम्ब करने से यह अवसर फिर हाथ न आयेगा।

पता—व्यवस्थापक 'श्री स्वाध्याय' सोलन, शिमला।

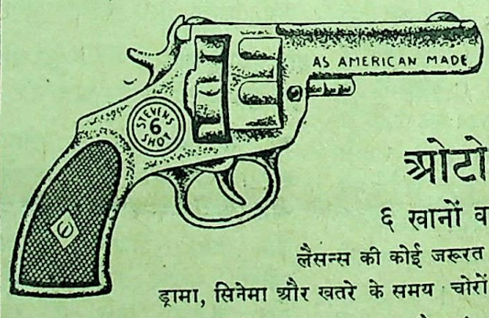

आत्मरक्षा

ओटोमेटिक

६ खानों वाली पिस्तौल

लैसन्स की कोई जरूरत नहीं

ड्रामा, सिनेमा और खतरे के समय चोरों को डराने के लिये काम की है। दागने पर पिस्तौल के मुंह से आग और धुंआ निकलता है। रिवाल्वर की तरह मालूम होती हैं। साइज ७॥ इंच×४ इंच और वजन १५ मूल्य ८) और साथ में १ दर्जन गोलियां (एलार्म डिस्क) मुफ्त। अतिरिक्त दर्जन गोलियों का दाम २)। स्पेशल तांबे की बनी ६६६ नं० की पिस्तौल का १०)। वेस्ट के साथ केस २॥), पोस्टेज और पैकिंग का अतिरिक्त १=)। आर्डर के साथ १ शीशी रिवाल्वर का तेल मुफ्त।

नापसंद होने पर दाम वापस

इम्पीरियल चैम्बर आफ साइंस (V. W. D.) पो० बो० ६१ लाहौर

Imperial Chamber af Science (V.W.D.) P.B.61. LAHORE

मलोरिन नं० ५०

मौसमी बुखारों के लिए अक्सीर है।

सोल एजेंटः—
देहली जाम फैक्टरी नयाबांस,चौड़ी मार्केट,देहली। (नं० १)

T.B. तपेदिक बड़ा भयंकर रोग है

टी. बी.

इस रोग के भयंकर कीटाणु (जर्म) नवयुवकों तथा नवयुवतियों के ही रक्त के प्यासे होते हैं और थोड़े ही दिनों में रोगी को काल के गाल में पहुंचा देते हैं। रोगी के मरने के पश्चात भी कुटम्ब में किसी न किसी को अपना शिकार बनाते ही रहते हैं, इस दुष्ट रोग के जर्मों को नष्ट करनेवाली यदि कोई औषधि है तो वह परमधाम बंगाल की शक्तिशाली महौषधि "जबरी" ही है। जिसने परमात्मा की कृपा से सैकड़ों-हजारों ऐसे-ऐसे रोगियों को भी काल के गाल से बचा दिया, जिनको "एक्सरे" (X Ray) आदि के बाद डाक्टरों, हकीमों, वैद्यों ने जवाब दे दिया था। यह सब उस परम-पिता परमात्मा की कृपा और भारत के पूज्य ऋषियों के रक्त से सींचे हुए आयुर्वेद शास्त्र का चमत्कार है। जब ही तो लोगों ने इसका नाम औषधि नहीं, बल्कि काल के गाल से बचानेवाली 'ईश्वरीय शक्ति" रख दिया है। आप इन ही कालमों में अनेक रोगियों के प्रशंसापत्र देख चुके हैं। अब अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं रही। परमात्मा की कृपा से अब तो अनेक जगह टी. बी. अस्पतालों में भी 'जबरी' का डंका बज रहा है।

T.B. "तपेदिक" और पुराने ज्वर के रोगियो—

टी. बी.

अब भी समझो—यदि आप अपनी प्यारी जान को बचाना चाहते हैं तो आज ही "जबरी" का सेवन शुरू कर दो। अन्यथा फिर वही कहावत होगी—कि अब पछताए क्या होत है—जब चिड़ियां चुग गईं खेत—सैकड़ों हकीम, वैद्य, डाक्टर, अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार द्वारा आर्डर देते हैं, इस शुभ पत्र-व्यवहार के लिए थोड़ा-सा पता "जबरी" (जगाधरी) Jabri (Jagadhri) लिख देना ही काफी है। मूल्य इस प्रकार है—

"जबरी" स्पेशल नं० १ अमीरों के लिए जिसमें साथ-साथ ताकत को बढ़ाने के लिए सोना, मोती, अभ्रक आदि की मूल्यवान भस्में भी पड़ती हैं। मूल्य (३० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन के लिए २०) रु०। "जबरी" नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान जड़ी बूटियां हैं। पूरा कोर्स २०) रु०। नमूना १० दिन के लिए ६) रु० महसूल आदि अलग हैं। आर्डर में पत्र का हवाला तथा नं० १ या २ साफ-साफ लिखें। तुरन्त 'जगाधरी के पते पर आर्डर देकर रोगी की जान बचावें १० दिन में ही अद्भुत चमत्कार दिखाई देगा।

निवेदक—राय साहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस ऐण्ड बैंकर्स (३) शिलांग (आसाम) या पंजाब आफिस "जगाधरी"

LTS. 142-111-40 HI LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

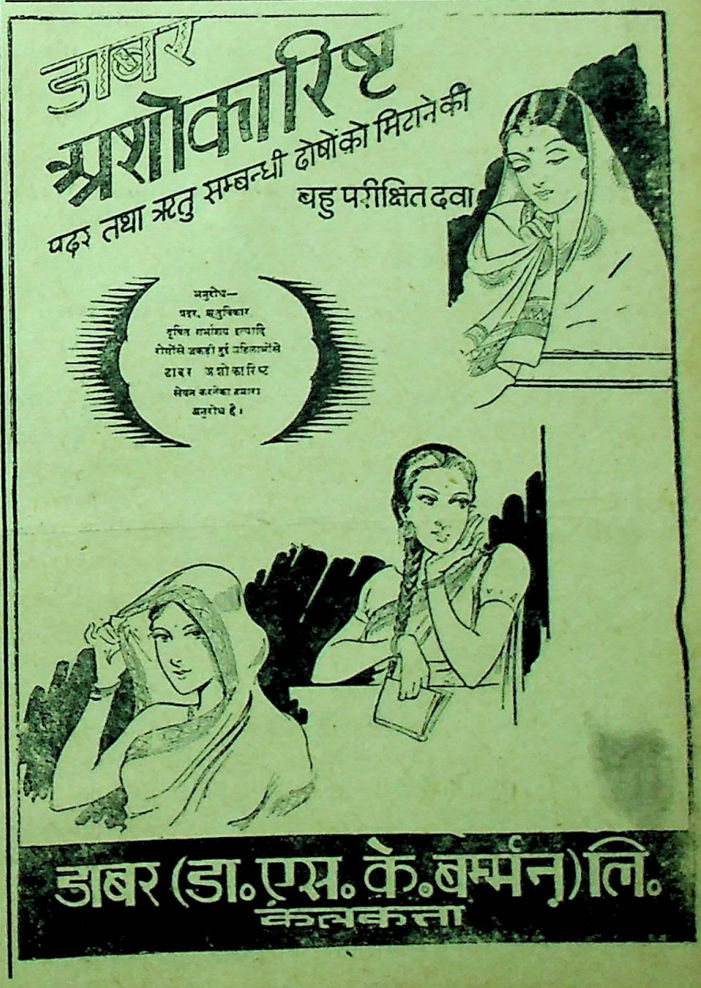

बन्द माहवारी (मासिक धर्म)

२४ घन्टे में शुरू

यदि किसी स्त्री की माहवारी रुक गई हो तो हमारी दवा 'कामिनी' से २४ घण्टे में जारी हो जाती है । अगर किसी स्त्री की माहवारी तकलीफ से आती है, रुक-रुक कर आती है । महीने-दो महीने से आती है, तो 'कामिनी' दवा सेवन कर लेने से तमाम खराबियां दूर हो जाती हैं । हजारों स्त्रियां, जिनकी माहवारी रुक गई थी, इस दवा के सेवन करने से २४ घंण्टे में साफ होकर आने लगी । जिन स्त्रियों को गर्भ हो वे यह दवा सेवन न करें वरना गर्भ प्रायः गिर जाता है । (एक शीशी एक स्त्री के लिए काफी है) । कीमत दो रुपया आठ आना, डाक-व्यय ग्यारह आना ।

अक्सीरी दवाखाना कलां महल; (छत्ता हकीम आगाजान)
(V. A.) नं० ४१ देहली ।

विजय पुस्तक भण्डार देहली
की
जीवनदायक पुस्तकें

जीवन चरित्र—

(१) महर्षि दयानन्द सरस्वती	मूल्य	१॥)
(२) महामना मालवीय जी	,,	१।)
(३) पं० जवाहरलाल नेहरू	,,	१।)
(४) नेता जी सुभाषचन्द्र बोस	,,	॥=)
(५) मौ० अबुलकलाम आजाद	,,	॥=)

अन्य पुस्तकें—

(६) जीवन संग्राम	,,	१)
(७) मैं भूल न सकूं	,,	१)
(८) बृहत्तर भारत	,,	७)
(९) त्याग का मूल्य	,,	५)
(१०) गीतांजलि	,,	१॥)
(११) दिल्ली चलो	,,	२)
(१२) तिरंगा झण्डा	,,	१।)
(१३) नेता जी सरहद पार	,,	१।)
(१४) एकांकिका	,,	२)
(१५) नीराजना	,,	१)
(१६) हमारे घर	,,	॥=)
(१७) तैल विज्ञान	,,	२)
(१८) साबुन विज्ञान	,,	२)
(१९) आनुपातिक प्रतिनिधित्व	,,	।)

उर्दू पुस्तकें—

(२०) फन रंगाई धुलाई (उर्दू)	,,	॥।)
(२१) फन मोमबत्ती साजी ,,	,,	१)
(२२) बूट पालिश (अंग्रेजी)	,,	२॥)
(२३) सोडा कास्टिक (हिन्दी)	,,	१॥)
(२४) फन फिनायल साजी (उर्दू)	,,	२)
(२५) फन रोशनाई साजी ,,	,,	१॥।)
(२६) देसी रंगों से सस्ती रंगाई ,,	,,	॥)

डाक व्यय ग्राहक के जिम्मे होगा । थोक खरीदने वाले दुकानदारों को उचित कमीशन दिया जाता है । मिलने का पता—

विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार देहली

गुदड़ी में लाल

पुराने ख्यालात के लोग इश्तहार देना पाप ख्याल करते हैं इसलिये उन सोने से भी जनता कोई लाभ नहीं उठा सकती । हमारे हकीम साहब की खानदा सैकड़ों बरस से सीना व सीना चली आने वाली बिजली की तरह काम करने औषधियां केवल थोड़े से लोगों को लाभ पहुंचाया करती थीं । हमने मुद्दतों मश करके इनसे इश्तहार देने की आज्ञा इस शर्त पर कि किसी औषधि की तारीफ की जाय प्राप्त की है ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग लाभ उठा सकें । इस किस्म इश्तहारी तारीफों को छोड़ कर पाठकों को सूचित किया जाता है कि निम्नलिखि औषधियों को आजमा कर चमत्कार देखें । हर दवाई के साथ यह गारंटी है कि यदि लाभ न हो तो हलफिया लिख कर मूल्य वापस मंगालें और यह जड़ी बूटि काफी मेहनत लागत से पर्वतों से लाई जाती हैं और केवल लागत पर बांटी जाती हैं । अब जिस रोग के लिये दरकार हो मगालें !

नं० १ मरदाना व जनाना कमजोरी, स्वप्नदोष व प्रमेह के लिये ४ खुराक । कीमत ५॥)

नं० २ शीघ्रपतन के लिए १२ पुड़िया कीमत ५॥) तथा १ पुड़िया ॥)

नं० ३ तिला (तैल) अजीब कायाकल्पकारी शक्ति वाला कीमत ६॥)

नं० ४ पायोरिया--दांतों से खून व पीप का आना, हिलना आदि मुद्द मिनल व अचूक इलाज कीमत २॥)

नं० ५ सफेद कोढ़ (फुलबहरी) की अद्भुत (अजीब) बूटी। माम्ल दागों के लिये ५) रु० ज्यादा के लिये ४०) रु०तथा कुल जिस्म के लिये ११०) कीमत है ।

नं० ६ संग्रहणी ((पेचिस) नई व पुरानी की अचूक दवा कीमत ४॥)

नं० ७ औरतों के ऋतु की बहती नदी को एक दम रोकने की दवा कीमत ४॥।)

नं० ८ बन्द ऋतु--दो मिनट में खोलना कीमत ५।)

नं० ९ बर्थ कन्ट्रोल (सन्तान होना बन्द करना) कीमत ४॥)

नं० १० ऋतु का सख्त दर्द दवाई देते ही गायब और फिर उमर भर न हो । कीमत ३॥)

नं० ११ दर्द गुर्दा फौरन ठीक करके जड़ से उखेड़ने वाली औषधि कीमत ४।)

नं० १२ पथरी को निकाल कर मसाना व गुर्दा को साफ करने वाली औषधि । कीमत ३॥)

नं० १३ प्रदर (सफेद पानी) की दवा । कीमत २॥।)

नं० १४ आतशक व उसका गठिया ७ दिन में गायब । नई हो या पुरानी । कीमत ३॥)

नं० १५ सुजाक पहली खुराक में ही आराम और सात रोज में जड़ से खतम । कीमत ३॥)

व्यापार चलाइये या घर में काम लाइये

(जर्मन से आये माहिर की ईजादें)

नं० १—दूध, रबड़ी, खोवा, खीर, पेड़े, कलाकन्द आदि को मुद्दत तक खराब न होने देने वाला मसाला । कीमत १।)

सस्ता दूधदूर दूर और रबड़ी भेजिये या वहां से मंगा कर लाभ उठाइये ।

नं० २—बनी हुई दाल, अचार, तरकारी, गोश्त, सालन, आटा, मिठाई, चटनी, हलवा, दही आदि को खट्टा या खराब होने से बचाने वाला मसाला होटलों हलवाइयों व घरों, विवाह शादियों व दावतों के लिये नायाब मसाला । कीमत १॥)

नं० ३—शर्बतों फलों के रस, मुरब्बे वगैरह को सालों खराब न होने देने वाला मसाला । कीमत २) ।

हर दवाई व मसाले वगैरह का महसूल डाक व पैकिंग वजिम्मे खरीदार होगा । जवाब मंगाना हो तो जवाबी कार्ड लिफाफा या टिकिट भेजिये । माल ताजा व असली होने की गारंटी है ।

सोल एजेन्ट -- बराये हिन्दुस्तान--
दी प्रीमियर ट्रेडिंग कं०, चावड़ी बाजार, देहली ।
The Premier Trading Co. Chawari Bazar Delhi.

अपने व्यापार को बढ़ाने का सबसे उत्तम साधन

साप्ताहिक 'वीर अर्जुन'

में विज्ञापन देना है ।

श्री पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स 'ल०' के लिये 'अर्जुन प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार दहली से छाप कर प्रकाशित किया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ILLUSTRATED VIR ARJUN WEEKLY

वर्ष १२] दिल्ली, सोमवार १९ कार्तिक सम्वत २००३, DELHI, 4th November 1946. [अङ्क ३४

गुण्डों का नहीं लीगी मुसलमानों का विद्रोह

मेरी सम्मति में पूर्वी बंगाल का यह वर्तमान संकट १९४३ के दुष्काल दैत्य से भी बड़ा है जिसके कराल गाल में ३० लाख प्राणी समा गये थे। कहा जाता है कि बाहर के गुण्डों ने आकर यह सब कुछ किया; मानों उनको निकालना इतना कठिन था कि १५ दिन तक अधिकारी कुछ नहीं कर सके। क्या गुण्डों के पास सरकार से अधिक साधन थे? बाहर के गुण्डे दैनिक उपयोग के कपड़े-लत्ते, पशु बतन व खाद्य-सामग्री लूटा करते; उनकी जबर्दस्ती विवाह धर्म परिवर्तन के काम में भी अभिरुचि नहीं होती। वे धर्म परिवर्तन समारोहों के लिए अपने साथ मौलवी और पीर नहीं रखते। उनकी दृष्टि धर्म परिवर्तन तथा विवाहों की अपेक्षा रुपये पैसे तथा हीरे जवाहरात पर अधिक होती है। बाहर के कुछ लोगों ने वहां के मुस्लिम लोगों को सगठित किया होगा; परन्तु दगे में उनके स्थानीय नेता ही थे। लीगी नेताओं द्वारा उत्पन्न घृणा व प्रचारित हिंसा के द्वारा उसे इस प्रकार के विद्रोह के लिए तैयार किया गया।

यह सोचना भी वाहियात प्रतीत होता है कि गांवों में हजारों की संख्या में गुंडे बसते हैं। मुझे इस विषय में रत्ती भर सन्देह नहीं है कि उपद्रवग्रस्त क्षेत्रों में आम मुस्लिम जनता द्वारा विद्रोह किया गया।

— आचार्य कृपलानी

पीड़ित व त्रस्त बंगाल की आशाओं के केन्द्र

राष्ट्रदेव म० गांधी

वार्षिक मूल्य ८)
छः मास का ४)

सम्पादक— रामगोपाल विद्यालङ्कार
कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार

एक प्रति का मूल्य ⅌)

आधी दुनिया

मानसिक रोग और उनकी चिकित्सा

[श्री रामेश्वरप्रसाद 'मंजु']

'कल्पवृक्ष 'कार्यालय', उज्जैन के मानसोपचार विभाग में पिछले २५ वर्षों से देश के सैकड़ों मानसिक रोगियों का उपचार किया जाकर उन्हें व्याधिमुक्त किया गया है। इन पंक्तियों के लेखक 'मंजु' ने उक्त कार्यालय में इस पद्धति से रोगियों का उपचार करते हुए रोग-विश्लेषण एवं उपचार-पद्धति के विषय में जो अनुभव पाये हैं, उनकी झलक इस लेख से प्राप्त हो सकेगी।]

स्त्रियों का मानसिक रोग

आजकल महिलाओं में बेहोशी (हिस्टीरिया) का रोग बढ़ रहा है और अधिकतर पढ़ी-लिखी लड़कियां इस रोग का शिकार होती हैं। डा० फ्रायड महाशय का सिद्धान्त है कि यह रोग काम-वासना की तृप्ति न होने से होता है। लेकिन उनकी चिकित्सा-पद्धति भारतवर्ष में लागू नहीं होगी, क्योंकि यहांकी संस्कृति, समाज और साहित्य इतना नीचे गिरा हुआ नहीं है।

सन १९४० में एक महिला १९ वर्ष की अवस्था की मध्यप्रान्त के बड़े नगर से लाई गई थी। उसे दिन और रात में २०० बेहोशी के दौरे आते थे। धड़ाम से वह चक्कर खाकर गिर पड़ती थी। २-३ घन्टे बाद होश में आती थी। वह शरीर से कृश हीन हो गई थी और शरीर पीला-पीला पड़ गया था। उसका ज्ञान अंग्रेजी के छठे दर्जे का था और हिन्दी में मिडिल क्लास तक था।

यह रोग क्यों हुआ ?

यह एक बड़े सम्पन्न व्यक्ति की इकलौती बेटी थी और इस २०वीं शताब्दि के रोग में पूर्ण रंग चुकी थी। उसे अपने पिता के यहां पूरी आजादी थी, परन्तु उसकी शादी, एक सामान्य परिवार में पांच भाइयों में सब से छोटे भाई से की गई। वहां उसकी सारी मनोवृत्तियों पर आघात पहुंचा और इतनी उदास रहने लगी कि अन्त में उसे पल-पल में मूर्छा आने लगी और शरीर से कृशहीन हो गई। इसका उपचार सभी चिकित्सा-पद्धतियों द्वारा कराया गया, किन्तु सब बेकार रहा। अन्त में उसकी आध्यात्मिक चिकित्सा कराई गई और आज वह स्वस्थ है और ३ बच्चों की माता है।

इस प्रकार की अनेक महिलाएं और बहनें हैं, जिन्हें मौत का शिकार होना पड़ रहा है, क्योंकि पुरुष समाज इसे स्त्रियों का ढोंग कहता है और घर के बड़े बूढ़े कहते हैं, काम से 'जी' चुराती है। वैद्य भी कामोन्माद का रूप देखकर हताश हो जाता है परन्तु उस रोगी के अन्तर्मन पर कौनसी बात बैठ गई, इसका मनो-विश्लेषण नहीं कराया जाता।

भावी पति की आशंका से पागलपन

सन १९४१ में, होशंगाबाद (सी० पी०) से एक १६ वर्षीय जैन कन्या बिल्कुल विक्षिप्त अवस्था में लाई गई थी, जिसका उपचार डाक्टरों एव वैद्यों से कराया जा चुका था। उसने खाना-पीना बन्द कर दिया था। उसे बांधकर रखना पड़ता था।

बात यह थी कि दो मास पूर्व ही उसकी शादी के सम्बन्ध में चर्चा होने लगी थी। लड़की किसी भी प्रकार यह जानने की भरसक चेष्टा करती है कि उसके भविष्य की बागडोर जिस व्यक्ति के हाथ में दी जाने वाली होती है, उसकी कुछ न कुछ जानकारी अवश्य प्राप्त कर ले और किसी भी प्रकार यह जानकारी अवश्य प्राप्त कर लेती है। इसी प्रकार यह कन्या भी उत्सुक थी कि उसका भावी पति कैसा होगा? घरवालों ने एक ४५ वर्षीय वृद्ध महाशय से शादी करना तय कर लिया था। जब उस बात की खबर इस लड़की ने सुनी तो वह बेहोश हो गई और अन्त में बिल्कुल पागल हो गई।

डाक्टर या वैद्य उसका बाहरी उपचार न कर सके और मानस चिकित्सा से वह १५ दिन बाद ही स्वस्थ हो गई। उससे स्वलेखन कराया गया और उसने लिखा कि 'मैं उस बूढ़े की स्त्री नहीं बन सकती।" और बोलने लगी। आज वह पूर्ण स्वस्थ और एक बच्चे की माता है। अन्त में उसका सम्बन्ध अन्यत्र समवयस्क युवक से घरवालों ने किया और आज वह परम सुखी है।

ऐसी अनेक महिलाएं हैं, जिनकी भाग्यरेखा विपरीत इच्छा होते हुए भी समाजबन्धन के आधार पर चार-चार आंसू बहा रही हैं।

सहगल-लक्ष्मी विवाह चर्चा

कर्नल सहगल व लक्ष्मी के विवाह सम्बन्धी समाचार को लेकर अनेक लेखक अब तक भी लेख व अपने मत भेज रहे हैं। प्रायः इन सब लेखों में ऐसे विवाह के विरुद्ध तीव्र मत प्रकट किया गया है। एक समस्या के रूप में यह प्रश्न उठाया गया था। अब स्थानाभाव से यह विवाद आगे जारी रखने में हम असमर्थ हैं।—सं०

पतित युवकों की कार्रवाई

क्या पुलिस उन पतित युवकों पर नजर नहीं रख सकती, जो राह चलती स्त्रियों और विशेषकर स्कूल की लड़कियों का पीछा किया करते और छेड़छाड़ भी किया करते हैं? क्या यह पुलिस के कर्तव्य के बाहर की बात है? लखनऊ, बनारस जैसे शहरों में तो इनका अत्याचार बहुत ही बढ़ गया है। शिक्षा-संस्थाओं, सिनेमा घरों और बड़ी सड़कों पर ये प्रायः देखे जाते हैं। कोई कुछ कहे तो मारपीट पर उतारू हो जाते हैं। आश्चर्य नहीं, यदि लड़कियां भगाने वाले दलों से भी इनका सम्बन्ध हो। यदि इस ओर सरकार अपनी पुलिस का ध्यान शीघ्र न दिलायेगी तो भले घर की लड़कियों के लिए स्कूल जाना भी असम्भव हो जायगा। इस सम्बन्ध में जनता का भी कर्तव्य है। हम प्रायः देखते हैं कि अपने सामने लड़कियों को इन पतित युवकों द्वारा अपमानित होते देख कर भी लोग कुछ नहीं कहते। और तो और भले घर के कहलाने वाले लोग भी आवाजकशी किया करते हैं। अधःपतन इससे बढ़ कर और क्या हो सकता है? इसी देश में स्त्रियों की रक्षा के लिए तलवारें म्यान से निकला करती थीं और इसी देश में आज यह भी दिखाई दे रहा है। मानों हमारा पुरुषत्व और मनुष्यत्व नष्ट हो गया है। कर्तव्य तो यह है कि राह चलती युवतियों से छेड़छाड़ करने वाले को पकड़ कर लोग स्वयम् ही उसी जगह अच्छी तरह पीट दें और यदि यह न हो सके तो पुलिस के हवाले कर दें। हम आशा करते हैं कि सरकार और जनता दोनों इस मामले में कर्तव्य पालन करेंगी। — संसार

अंग्रेजी और स्त्रियां

लड़कियों के लिए अंग्रेजी पढ़ना आवश्यक नहीं है और हाईस्कूल परीक्षा में अंग्रेजी उनके लिए अनिवार्य न होकर ऐच्छिक विषय रहे, इस पर लखनऊ में प्रांतीय अध्यपिक सम्मेलन के तत्वावधान में एक बहस हुई, जिसमें अनेक पुरुष तथा महिला शिक्षाविशेषज्ञों ने भाग लिया, पुरुषों ने कहा कि इस विदेशी भाषा के स्थान पर कन्याओं को गृहकार्य की शिक्षा दी जाय, महिला अध्यापिकाओं ने इसका विरोध करते हुए कहा कि प्रत्येक बालक के लिए गृहकार्य की शिक्षा अनिवार्य कर दी जाय, क्योंकि बालिकाएं बालकों से किसी प्रकार हीन नहीं हैं, अन्त में वोट लिए जाने पर यह निर्णय हुआ कि अंग्रेजी भाषा सभी के लिए ऐच्छिक विषय रखा जाय···।

अपने स्वार्थ के शत्रु न बनें

[श्री युगलकिशोर गुप्त, एम० ए०, बी० एल०]

अभी तक भारत में तथा अन्य देशों में ऐसी स्त्रियां हैं, जिनका विश्वास है कि पति यदि जीवन बीमा करा ले तो उसकी मृत्यु शीघ्र हो जाती है। बस कहीं एक ऐसे आदमी की मृत्यु हो गई, जिसने मृत्यु के एक दो वर्ष पूर्व जीवन बीमा कराया था तो चूंकि उसके जीवन में बीमे की नवीनता थी इस लिये उन्होंने यह धारणा कर ली कि जीवन बीमा ही उस पुरुष की मृत्यु का कारण था। शायद ऐसी अबोध स्त्रियों की यह धारणा है कि बीमा कम्पनी वाले सदा परमात्मा से यही मनाया करते हैं कि बीमा कराने वाले शीघ्रातिशीघ्र मर जाया करें या जीवन बीमा वैधव्य का आवाहन करता है। इससे अधिक मूर्खतापूर्ण बात क्या हो सकती है? मृत्यु से कोई बच नहीं सकता। इसका समय निश्चित है। जीवन बीमा कराने से मृत्यु की तिथि पहले नहीं आ सकती। दूसरे शब्दों में यह नहीं कहा जा सकता कि जीवन बीमा की पालिसी लेने वाला निश्चित रूप से जीवन बीमा रहित मनुष्य से पहले मरेगा। बीमा कम्पनियां पालिसी जारी करने से पहले आदमी की डाक्टरी परीक्षा कर लेती हैं और स्वस्थ होने पर ही उसके बीमे का भार ग्रहण करती हैं। इस लिये और रूप में जीवन बीमा कराने वाले दीर्घायु निकलेंगे— आकस्मिक दुघटनाओं की बात जुदा है।

तदुपरान्त जीवन बीमा की कम्पनियों का स्वार्थ इसी में है कि पालिसी लेने अधिक-से-अधिक दिन जीवित रह कर कम्पनी को किस्तें दिया करें, जिससे उनको काफी लाभ हो। इस लिये यदि बीमा कम्पनी वाले सचमुच ही कोई प्रार्थना करते हों तो वह बीमा कराने वालों के दीर्घायु होने की प्रार्थना करते होंगे। वास्तव में कम्पनी को प्रार्थना इत्यादि से कुछ वास्ता नहीं।

और सबसे बड़ी बात यह है कि जीवन बीमा का मुख्य उद्देश्य है कि मीयादी बीमा वाले यदि मीयाद तक जीते रहें तो पालिसी का रुपया उन्हें स्वयं मिल जायेगा। सेविंग बैंक में तो आदमी रुपया अपनी इच्छा से जमा करता है परन्तु बीमा कम्पनी तो अनिवार्य सेविंग बैंक है। आपको रुपये की तंगी हो परन्तु किस्त के लिये रुपया जुटाना ही होगा। यदि परमात्मा की इच्छा यह है कि बीमा कराने वाला मीयाद के पहले ही स्वर्गवासी हो जाये तो विधवा को पालिसी का रुपया पूरा मिल जाता है, जिससे उसको कुछ वर्ष आर्थिक कष्ट नहीं होगा। इस लिये बीमा कराना प्रत्येक पुरुष का धर्म है।

Digitized by eGangotri

समाचार चित्रावली

बंगाल के नृशंस हत्याकांड का पर्दा फाश करने वाले नेता

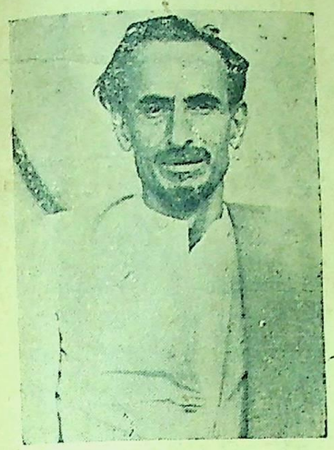

आचार्य कृपलानी

श्री श्यामाप्रसाद मुकर्जी

श्री शरत्चन्द्र बसु

सीमान्त गांधी पठान कबायलियों में भाषण दे रहे हैं

मेरठ कांग्रेस में स्वयंसेवकों के प्रधान नायक

श्री नागर

अलवर में दलितों के साथ सहभोज

डा० खान साहब व नेहरू का दिल्ली में आने पर स्वागत

आचार्य कृपलानी के शब्दों में

बंगाल में लीगियों के वीभत्स हत्याकांड की करुण कहानी

कांग्रेस के मनोनीत अध्यक्ष आचार्य कृपलानी ने उपद्रव ग्रस्त इलाकों का दौरा करने के बाद नोआखाली और त्रिपुरा जिलों की घटनाओं के बारे में कहा है कि चांदपुर और नोआखाली के भीतरी हिस्सों का दौरा करने के बाद मैं नीचे लिखे नतीजों पर पहुंचा हूं, जो किसी भी निष्पक्ष न्यायालय के सामने स्थानीय गवाही के जरिये सिद्ध किये जा सकते हैं, बशर्ते गवाहों को सुरक्षितता का आश्वासन दे दिया जाय।

(१) नोआखाली और त्रिपुरा जिले के हिन्दुओं पर आक्रमण की पहले से व्यवस्था और तैयारी की गई थी। यह लीग के प्रचार का प्रत्यक्ष परिणाम था। स्थानीय प्रमाणों से स्पष्ट होता है कि गांवों के प्रमुख लीग नेताओं का उसमें हाथ था।

(२) होने वाली घटनाओं की अधिकारियों को चेतावनी मिल चुकी थी। सम्बन्धित इलाकों के हिन्दुओं ने पहले जबानी और बाद में लिखित चेतावनियां दी।

(३) कुछ मुस्लिम कर्मचारियों ने आक्रमण की तैयारियों की ओर आंखें बन्द रक्खी। मुसलमान अफसरों को ख्याल था कि यदि हिन्दुओं के खिलाफ कुछ किया गया तो सरकार कोई कार्यवाई नहीं करेगी।

(४) मुसलमान सैकड़ों की और कुछ स्थानों से हजारों की संख्या में इकट्ठे होते और हिन्दू गांवों या मिली-जुली आबादी के गांवों में हिन्दू घरों पर जा धमकते। ये पहले मुस्लिमलीग के दंगों के पीड़ितों के लिए चन्दा मांगते। यह जबर्दस्ती के चन्दे काफी होते और उनकी संख्या कभी-कभी १०,००० रु० या इससे भी अधिक पहुंच जाती। चन्दा वसूल कर लेने के बाद भी हिन्दू सुरक्षित न थे। वही या एक और भीड़ बाद में घटनास्थल पर पहुंचती और मकानों को लूट लेती। लूटे हुए घर ज्यादातर जला दिए जाते। सिर्फ नकद, जेवरों, और अन्य कीमती चीजों को ही नहीं लूटा जाता, बल्कि गृहस्थों के काम की हर चीज जैसे अनाज, बर्त्तन, कपड़े वगैरा भी लूटे गए। कई जगह लुटेरे मवेशियों को खुद ले गए! कभी-कभी घर को लूटने के पहले घरवालों को इस्लाम कबूल करने को कहा जाता, परन्तु धर्म-परिवर्तन पर भी लूट और आग से बचने की गारण्टी न थी।

हमलावर मुस्लिम भीड़ के नारे मुस्लिमलीग के नारे थे, जैसे —'मुस्लिम-लीग जिन्दाबाद', 'पाकिस्तान जिन्दाबाद', 'लड़ के लेंगे पाकिस्तान', 'मार के लेंगे पाकिस्तान'।

(५) हिन्दुओं को यह भी कहा गया कि हत्या, लूट और अग्निकाण्ड जो हो रहा है, वह कलकत्ते के दंगे में मारे गये मुसलमानों का बदला है। जिन्होंने मुकाबला किया वे सब कत्ल कर दिये गए। लोगों को गोली से भी मारा गया, क्योंकि दंगाइयों के पास बन्दूकें थीं। ये बन्दूकें या तो मुस्लिम जमींदारों की थीं या हिन्दुओं से चुराई या छीनी गई।

एक अधिकारी ने मुझे निश्चित रूप से कहा कि सिर्फ १०० आदमी मारे गये हैं। एक अन्य बड़े अफसर ने कहा कि मारे गये लोगों की संख्या ५०० के आस पास है।

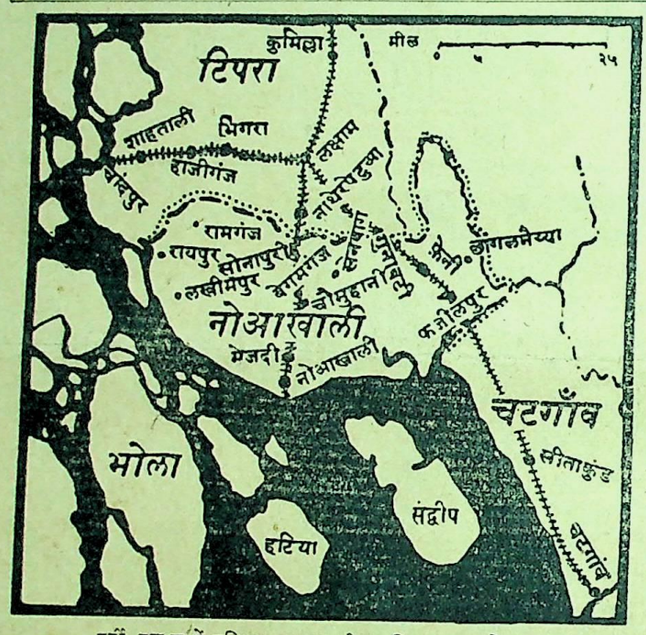

पूर्वी बङ्गाल में मुस्लिम गुण्डाशाही का शिकार — क्षेत्र।

मुझे ऐसी घटनाओं के बयान मिले हैं, जिनमें एक परिवार के १० से लगाकर २० तक आदमी मारे गये हैं और कुछ परिवारों के सब पुरुष मार डाले गये।

(६) लूट, अग्निदाह, हत्या और धर्म परिवर्तन आदि कार्यों में हिस्सा लेने वाले पड़ोस के मुस्लिम गांवों के रहने वाले हैं। मिली-जुली आबादी के मुसलमानों ने भी इनमें हिस्सा लिया। अत्याचारपीड़ित उनमें से बहुतों को पहचान सकते हैं। उन्होंने नामों की लम्बी सूची दी है। बाहर के तो बहुत थोड़े लोग थे।

(७) लूट, हत्या और अग्निकाँड के बाद भी हिन्दू उस वक्त तक सुरक्षित न थे, जबतक कि वे इस्लाम कबूल नहीं कर लेते। हिन्दुओं को अपनी रक्षा करने के लिए एक साथ इस्लाम स्वीकार करना पड़ा। धर्म परिवर्तन की निशानी के तौर पर उन्हें सफेद टोपियां दी गईं जो बस्ती के मुसलमान पहनते हैं। अक्सर ये टोपियां नई थीं और उन पर पाकिस्तान का नकशा था और ये शब्द लिखे थे 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' और 'लड़ के लेंगे पाकिस्तान!'

(८) हिन्दुओं को जुमा की नमाज में शामिल किया गया और उनसे कलमा और नमाज पढ़ाये गये। औरतों का धर्म परिवर्तन किया गया, उनकी चूड़ियां तोड़ दी गईं और उनके माथे की सिन्दूर मिटा दी गई। धर्म परिवर्तन की निशानी के तौर पर उन्हें पीर द्वारा पवित्र किये हुये कपड़े को छूने के लिये कहा गया और उन्हें कलमा भी पढ़ना पड़ा।

हिन्दू मकानों में देवताओं की मूर्तियां नष्ट करदी गईं और उपद्रवग्रस्त इलाकों के सब हिन्दु मन्दिर लूट लिए गये।

जबरदस्ती शादियां करवाने की घटनायें भी हुई है। इस समय ऐसी शादियों की संख्या मालूम कर सकना असम्भव है।

औरतों के भगाये जाने की भी घटनायें हुई हैं, किन्तु मैं थोड़े से समय में उनकी निश्चित संख्या न ज्ञात कर सका।

(९) मैं बलात्कार की घटनाओं को जांच नहीं कर सका, जिसका कारण स्पष्ट है। किन्तु औरतों ने श्रीमती कृपलानी से बुरे बर्ताव की शिकायत की। उनके सुहाग की निशानी चूड़ियां तोड़ डाली गईं और सिन्दूर की बिन्दियां मिटा दी गईं। एक जगह आततायियों ने औरतों को जमीन पर गिरा दिया और अपने पांवों की एड़ियों से सिन्दूर की बिन्दियों को मिटाया।

(१०) इन इलाकों में हिन्दू चाहे उन्होंने धर्म परिवर्तन किया है अथवा नहीं, निरन्तर खतरे में रह रहे हैं।

(११) उपद्रवग्रस्त गांवों के रास्तों पर गश्ती दस्ते कड़ा पहरा देते हैं। कुछ उदाहरणों में नये धर्म-परिवर्तन किये लोगों को गांव से बाहर जाने और लौटने के आज्ञापत्र भी दिये गये हैं। मैंने ये आज्ञापत्र देखे हैं।

(१२) उपद्रवों के समय जो उपद्रव-ग्रस्त इलाकों से बाहर थे, अपने गांवों को नहीं जा पाये हैं। इसलिये उन्हें उन गांवों के अपने रिश्तेदारों की कोई खबर नहीं है।

(१३) बहुत से परिवारों के मर्द और बच्चे गायब हैं। उनके खोजने के कोई साधन नहीं हैं। देहाती डाकखाने बन्द पड़े हैं।

(१४) दंगों में पुलिस ने कुछ नहीं किया। पुलिस के आदमियों का कहना है कि उन्हें इस बात की हिदायत थी कि आत्मरक्षा के अवसर के अलावा गोली न चलायें। उनकी आत्मरक्षा का सवाल कभी पैदा ही नहीं हुआ, क्योंकि उन्होंने दंगा करने वालों के काम में हस्तक्षेप ही नहीं किया।

मैं कह सकता हूं कि २० तारीख तक अग्निकांड होते रहे। मैंने चांदपुर और नोआखाली इलाकों में हवाई जहाज से १९ और २० तारीख को मकानों को जलते देखा। इन अग्निकाण्डों को चीफ मिनिस्टर ने भी २० तारीख को देखा जो चटगांव से हमारे साथ वायुयान में उड़े थे। जिन इलाकों में मैं गया वे बर्बाद किये जा रहे थे और मैंने सिर्फ जले हुए घरों और निस्सहाय हिन्दू देहातियों को देखा। सब कुछ नष्ट हो जाने के कारण उनको न आश्रय है और न अन्न और न कपड़ा।

मैंने खुद अधिकारियों से सुना कि नोआखाली इलाकों में २५ अक्टूबर तक सिर्फ ५० गिरफ्तारियां की गई हैं।

अभी भी बहुत सी ऐसी हिन्दू बस्तियां हैं जिन पर मुसलमानों का पहरा है। ये लोग वहां से बाहर आने के लिये पुलिस या फौज की मदद चाहते हैं।

पूर्वी बङ्गाल की घटनाओं के पीछे आर्थिक कारण न थे। एक भी धनिक मुसलमान का घर नहीं लूटा गया। मुझे तो यह सब शुद्ध साम्प्रदायिक और एक-तर्फा प्रतीत होता है।

नोआखाली और तिपुरा के शरणार्थियों की संख्या ४०–५० हजार के बीच है। उनकी हालत दयनीय है। अन्न कपड़े और दवा का अभाव है।

———

'अर्जुन' के ग्राहकों से

'वीर अर्जुन' के ग्राहकों से निवेदन है कि पत्रव्यवहार करते समय अथवा रुपया भेजते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखा करें, क्योंकि हजारों ग्राहकों की संख्या में उनका नाम ढूंढ़ना असम्भव है।

— प्रबन्धक

★ वीर ★

अर्जुन

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार १६ कार्तिक सम्वत् २००३

देश की गंभीर परिस्थिति

आज जबकि संसार के विभिन्न राष्ट्र अपनी-अपनी महत्वपूर्ण निर्माणकारी योजनाओं में लगे हुए हैं, भारतवर्ष गंभीरतम सांप्रदायिक समस्या में उलझ गया है। कलकत्ते में सांप्रदायिक विद्वेष की जो अग्नि जली थी, वह अब अत्यन्त व्यापक होकर समस्त देश में फैलने जा रही है। पूर्वीय बङ्गाल में जो अमानुषिक और पैशाचिक नृशंस काण्ड हुआ है, उससे हमारे पाठक परिचित हैं। बिहार के भी अनेक स्थानों से साम्प्रदायिक रक्तपात के समाचार मिल रहे हैं। आज से एक वर्ष पूर्व यदि किसी दंगे में १०-१५ आदमी मर जाते थे, तो उसे एक भीषण दंगे का नाम दिया जाता था, कलकत्ते के दंगे में मरने वालों की हजारों में संख्या के बाद अब १०-१५ या २० की मृत्यु को हम अब बहुत महत्व नहीं देते। अब तो दंगों में १५-२० की मृत्यु आम बात हो गई है। बम्बई और कलकत्ते से तो कई सप्ताहों से लगातार प्रायः प्रतिदिन छुरा भोंकने, तेजाब और बमबाजी तक के समाचार मिलने लगे हैं। लुधियाना में भी साम्प्रदायिक दंगे की हवा फैल चुकी है। स्थान-स्थान पर दंगों और रक्तपात की यह लहर लगातार बढ़ती जा रही है और इसे देखकर सर फीरोज खां नून जैसे प्रमुख लीगी नेताओं की चंगेज-खां और तैमूर की पुनरावृत्ति की धमकी चरितार्थ होती प्रतीत होती है। बहुत दिन नहीं बीते कि लीग के प्रबल समर्थक और भारत की राष्ट्रीय प्रगति के कट्टर विरोधी मि० चर्चिल ने भी जगह-जगह रक्तपात की भविष्यवाणी की थी। अभीतक यह नहीं कहा जा सकता कि लीगी नेताओं ने भारत में कहां-कहां नोआखाली-काण्ड की आवृत्ति करने की योजना बनाई हुई है।

× × ×

पूर्वीय बंगाल के कत्ले आम को हलका करने तथा उसे ठिफ गुण्डों का कार्य बताने आदि प्रयत्नों का रहस्योद्घाटन कांग्रेस के नये अध्यक्ष श्री आचार्य कृपलानी ने बहुत योग्यता के साथ कर दिया है। इसमें किसी तरह संदेह नहीं कि आज भारत में जो कुछ रक्तपात हो रहा है, उसका एक मात्र उत्तरदायित्व केवल मुस्लिमलीग और उसके नेताओं व कार्यकर्ताओं पर है। लीग के खुले संघर्ष की चेतावनी-दिवस के बाद दो ढाई महीनों में जितना रक्तपात हुआ है, उतना ब्रिटिश शासन की पिछली डेढ़ सदी में भी नहीं हुआ। बंगाल में धर्म परिवर्तन बलात् विवाह आदि की घटनाओं से तो यह स्पष्ट है कि ये उपद्रव महज गुण्डों के नहीं, लीगी मुसलमानों की प्रेरणा के परिणाम हैं।

× × ×

इस संबंध में अब तक जो प्रयत्न हुए है या किये जा रहे हैं, वे सब अत्यन्त दोषपूर्ण हैं। पहली बात तो यह है कि बंगाल की मुस्लिम-लीगी सरकार की शासन क्षमता में हमें इतना संदेह नहीं है, जितना कि उसके अधिकारियों की भावना के संबंध में हमें अविश्वास है, उत्तरी या पूर्वी कलकत्ते में तो सामूहिक जुरमाने लगा दिये गये हैं, लेकिन पूर्वी बङ्गाल में जहां चंगेजखानी हमले हुए हैं, वहां अब तक सामूहिक जुरमाने लगाने की कोई खबर नहीं मिली।

× × ×

साम्प्रदायिक दंगों के सम्बन्ध में विभिन्न प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकार की नीति सुनिश्चित और स्पष्ट नहीं है। कांग्रेस की स्थिति तो सचमुच बड़ी दुविधा की हो गई है। वह अपने व्यापक उदार राष्ट्रीय रूप की रक्षा करना चाहती है, और इसलिए वह अत्याचारी मुसलमानों के विरुद्ध कोई असंदिग्ध घोषणा करने में संकोच करती है। वह यह कहने का भी साहस नहीं करती (आचार्य कृपलानी का वक्तव्य इसमें अपवाद है) कि मुस्लिम जनता का यह उपद्रव है। वह सिर्फ गुण्डों का नाम लेती है और म० गांधी की सम्मति के बावजूद वह आक्रमणकारी मुसलमानों की निन्दा नहीं करती। पंजाब और युक्तप्रांत में हिन्दुओं का दमन इस बात का प्रमाण है कि हम अभी स्थिति को स्पष्ट और नग्न रूप में देखने का साहस नहीं कर सकते हैं। हम अपनी निष्पक्षता का सबूत देने के लिए यदि लीगी पत्रों पर कोई कदम उठाते हैं, तो उसके साथ हिन्दू पत्रों को भी घसीट लेते हैं।

× × ×

आज की स्पष्ट स्थिति यह है कि मुस्लिमलीगी नेताओं की हिंसापूर्ण उत्तेजना ही दंगों का एकमात्र कारण है। दंगा प्रारम्भ होने पर किसी जगह हिन्दुओं का मुसलमानों पर यदि प्रत्याक्रमण होता है, तो यह अत्यन्त स्वाभाविक है और इसके लिए उन्हें किसी तरह का बड़ा दोष नहीं दिया जा सकता। शासकों को आक्रमण और रक्षा या प्रत्याक्रमण में अन्तर करना चाहिए। आज के अधिकारी इसकी चिन्ता किये बिना प्रत्येक को दंगाई मानकर उसका एक समान दमन करना चाहते हैं, इससे स्थिति सुलझने नहीं पाती। आज तो अधिकारी इतने निर्बल हैं कि वह लोगों को यह भी बताने को तैयार नहीं कि किसने किसको मारा या आग लगाई। उन्हें स्पष्ट बताना चाहिए कि आक्रमणकारी कौन था, उसने किसे मारा, किसके मुहल्ले में आग लगाई। अब तक यह न बताने पर भी साम्प्रदायिक दंगे बढ़ते जा रहे हैं। यही इसका प्रमाण है कि यह नीति असफल हुई है। इस सम्बन्ध में अधिक सुनिश्चित और कठोर नीति का ग्रहण करना चाहिए।

× × ×

पिछले दिनों मुस्लिमलीग के प्रधानमंत्री मि० लियाकतअली ने कहा था कि ताली एक हाथ से नहीं बजती। यह कहावत वस्तुतः गलत है। मुस्लिमलीग ने समझौते के सब प्रयत्नों की उपेक्षा कर 'खुली लड़ाई' का बिगुल बजाया था। इसमें कहीं कांग्रेस की ओर से पहल नहीं हुई। एक गुण्डा सरे बाजार जाकर ५-७ को मार डालता है, तो इसमें दो हाथ से ताली की बात कहां से आई। इसलिए अधिकारियों को अपने दिमाग में से यह भावना निकाल कर प्रथम आक्रमणकारी और मुख्य अपराधी को दण्ड देना चाहिए।

× × ×

इन दंगों से यह बात और अधिक वेग तथा स्पष्टता के साथ फिर सामने आई है कि भारत में प्रान्तों को स्वतंत्रता एक नियत सीमा तक ही मिलनी चाहिये। आज केन्द्रीय असेम्बली प्रान्तीय विषयों पर विचार भी नहीं कर सकती और सुहरावर्दी की सरकार गांधीजी को नोआखाली भेजने की शीघ्र व्यवस्था करने में असमर्थ है। दुर्बल केन्द्रीय सरकार के साथ संघ-विधान, हमें भय है कि भविष्य में बहुत खतरनाक सिद्ध होगा।

× × ×

यदि सांप्रदायिक स्थिति के संबंध में किसी तरह दूरदर्शिता, दृढ़ता और व्यवहार कुशलता से काम न लिया गया तो हमें भविष्य के अन्धकारावृत पहलू से निश्चिन्त नहीं हो जाना चाहिए। ब्रिटिश नीति ने हमें इतना दुर्बल बना दिया है कि हम आत्मरक्षा नहीं कर सकते। फिलस्तीन में आज ब्रिटिश सरकार की नति के परिणामस्वरूप यहूदियों व अरबों का जो संघर्ष छिड़ रहा है, वह भारत में भी आ सकता है, ईरान के एक प्रान्त में जो विद्रोह की ज्वाला जल रही है, उसकी पुनरावृत्ति यहां भी हो सकती है, इन सब बातों की आशंका करके हमें आज अत्यन्त गम्भीरता के साथ सम्पूर्ण समस्या पर विचार करके कोई दृढ़ नीति अपनानी चाहिए, तभी देश की मुक्ति हो सकती है।

बैंकों के प्रसार की योजना

न्यू बैंक आफ इण्डिया लि० के अध्यक्ष ने कम्पनी की वार्षिक बैठक में भाषण देते हुए एक बहुत सुन्दर परामर्श दिया है। पिछले कुछ सालों से बैंकों का प्रचार बहुत बढ़ गया है, यह देश की नई आर्थिक दिशा का सूचक है। लेकिन इस नये प्रयत्न में बैंकों के संचालकों ने कसबों की उपेक्षा कर दी है। बैंकों की एक साथ कई कई शाखाएं बड़े शहरों में खुल रही है, लेकिन ५-१० हजार आबादी के कस्बों की ओर कोई ध्यान नहीं देता। बैंक कम्पनियों की इस उदासीनता की दो हानियां है। एक तो यह कि कसबोंके निवासियों को बैंकों की कोई सुविधा प्राप्त नहीं होती। दूसरे यह कि शहरों में बैंकों की अत्यधिक भीड़ के कारण उनमें परस्पर अनुचित प्रतिस्पर्धा शुरु हो जाती है, जो स्वयं बैंकों के लिए भी हानिप्रद होती है। इसलिए बैंकों के विस्तार में एक संगठित सुविचारित नीति की आवश्यकता है, जिससे बैंकों का समस्त देश में आवश्यकता के अनुसार समान विभाजन हो सके।

जहाजी उद्योग

युद्ध के समय और उसके बाद भारतवर्ष ने जहाजों की कमी को जिस बुरी तरह अनुभव किया है, इससे पहले कभी नहीं किया था। इसी कमी के कारण बंगाल दुर्भिक्ष के समय यहां अनाज न आ सका था और न आज आ रहा है। ४५०० मील विस्तृत समुद्री तट की रक्षा के लिए भी भारत को अपने जहाजों की आवश्यकता है। अभी तक प्रायः समस्त विदेशी व्यापार विदेशी जहाजों के द्वारा होता है। भारत सरकार द्वारा नियुक्त जहाज कमेटी ने भावी योजना के सम्बन्ध में अपनी जो सिफारिशें पेश की हैं, वे बहुत अच्छी हैं। भारतीय की व्याख्या करते हुए कमेटी ने भारतीयों के स्वामित्व और प्रबन्ध की शर्त पेश की है। भारतीय तट का १०० फी सदी व्यापार बर्मा व लंका के साथ ७५ फी सदी व्यापार और ५० फी सदी सुदूरवर्ती व्यापार भारतीय जहाजों के हाथ में सुरक्षित रहना चाहिए। अन्य सब देशों ने अपने अपने जहाजी व्यवसाय की रक्षा करने के लिए यथासंभव सभी उपाय किये हैं। भारत सरकार को भी भारतीय व्यवसाय को सहायता देकर तथा विदेशी जहाजी कम्पनियों पर संरक्षण कर लगाकर इस नये धन्धे को विकसित करने का पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए।

केन्द्रीय असेम्बली का शरत्कालीन अधिवेशन आरम्भ

२८ अक्तूबर सोमवार को प्रातः से केन्द्रीय असेम्बली का शरत्कालीन अधिवेशन प्रारम्भ हो गया है। प्रथम दिन असेम्बली के बाहर मुस्लिमलीगियों ने प्रदर्शन करके उत्तेजनात्मक नारे लगाये, जिससे वहां का वातावरण अत्यन्त क्षुब्ध और अशांत हो गया। पर पुलिस ने अश्रुगैस का उपयोग करके लीगी गुंडों को भगा दिया। अन्तःकालीन सरकार सदस्यों को उत्तर देने की प्रणाली में सरदार पटेल को बहुत सराहा गया है। पं० जवाहरलाल के सम्बन्ध में यहां के लोगों का विचार है कि वे अन्य राजनीतिज्ञों की भांति चमत्कार और शाब्दिक जाल में उलझे हुए उत्तर न देकर बिल्कुल सीधे ढंग से उत्तर दे देते हैं।

प्रथम दिन अफ्रीका और इंडोनेशिया में स्थित भारतीय सेनाओं के सम्बन्ध में स्थगित प्रस्ताव पेश किये जाने पर पं० जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि यह प्रश्न मित्रराष्ट्र संघ में उपस्थित है और इंडोनेशिया से नवम्बर के अन्त तक सब भारतीय सेनाएं हटाली जायंगी। इसलिए प्रथम प्रस्ताव को अनियमित घोषित कर दिया गया।

असेम्बली में दी गई अन्य सूचनाओं के अनुसार इस समय भारत में ४१७ मिलें सूती कपड़े की हैं तथा १२५ नई मिलें खोलने का विचार है।

अमरीका से १,६४,००० टन अन्न अभी तक नहीं आ सका। भारत में चूहों से १० लाख टन तथा अन्य कृमियों व बोदामों की खराबी से २० लाख टन अन्न विनष्ट होता है।

असेम्बली भवन के बाहर लीगियों के दंगा करने पर पुलिस द्वारा अश्रुगैस के प्रयोग पर लीगी सदस्य नौमान ने एक स्थगित प्रस्ताव उपस्थित किया। सरदार पटेल ने पुलिस के कार्य का न केवल समर्थन किया अपितु यह भी संकेत किया कि पिछले ६ सप्ताह से स्थानीय पुलिस लीगी प्रदर्शनकारियों के साथ रिआयत और नरमी का व्यवहार कर रही थी। सरदार ने फिर कहा कि पुलिस द्वारा छोड़ी गई अश्रुगैस असेम्बली भवन का अपेक्षाकृत ठण्डा वातावरण देखकर भीतर भी घुस आई, उसका सदस्यों की आंखों पर जो प्रभाव पड़ा उसे सदस्य लोग विनोद की एक सामग्री ही समझें और कुपित न हों, क्योंकि उससे जो हानि हुई है वह अतिसामान्य है।

पं० नेहरु ने यह प्रगट किया कि सीमाप्रान्त का गवर्नर उनकी कबीली क्षेत्रों की यात्रा के विरुद्ध था। इन क्षेत्रों में उनके विरुद्ध संगठित हिंसात्मक कार्यवाहियों के पीछे सरकारी अफसरों का हाथ था या नहीं इसकी जांच की जा रही है।

भारत को अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष व अन्तर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण संघ का सदस्य बनाये रखने का लियाकतअली-खां का प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हो गया।

रक्षा-विभाग के मन्त्री जी० एस० भालजा ने भवन को सूचित किया है कि अन्तःकालीन सरकार इस सम्बन्ध में विचार कर रही है कि किस प्रकार सर्वोत्तम उपाय से तथा न्यूनतम समय में भारतीय सेनाओं का राष्ट्रीयकरण किया जाय।

दक्षिणी अफ्रीका और भारत का प्रश्न मित्रराष्ट्र संघ में

मित्रराष्ट्रसंघ की कार्यक्रम समिति ने तीन के विरुद्ध पांच मतों से जनरल असेम्बली से यह सिफारिश की है कि भारत की 'दक्षिण अफ्रीका विरोधी अधिकार है जो उनके सम्बन्ध में हो, इसलिये भारतीय प्रतिनिधि को बुलाना चाहिये। यही विचार चीन के प्रतिनिधि डा० वेलिंगटन कू ने प्रगट किये। मि० स्मट्स को इस आपत्ति का कि यह समस्या अफ्रीका की घरेलू है — उत्तर देते हुए मि० विशिंस्की ने कहा यह प्रश्न घरेलू नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय है। वस्तुतः यह दक्षिण अफ्रीका द्वारा भारतीयों के प्रति विश्वासघात तथा दक्षिण अफ्रीका और भारत के समझौते को भंग करने वाला है। चार्टर की धारा एक के तीसरे पैरे में यह स्पष्ट कहा गया है मित्रराष्ट्रों का उद्देश्य मानवीय अधिकारों तथा जाति, लिंग, भाषा या विश्वास के बिना भेदभाव किये सभी लोगों के लिये मौलिक स्वतन्त्रताओं के प्रति सम्मान की

ने मिश्र में विदेशी सेनाओं की उपस्थिति की कटोर आलोचना की और असेम्बली से अनुरोध किया कि वह यह घोषणा कर दे कि तब तक कोई सन्धि-चर्चा या समझौता वैध न समझा जाये जब तक कि एक सदस्य राष्ट्र दूसरे पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपनी शक्ति के बल पर दबाव डालता रहे। मिश्री प्रतिनिधि ने धीरे-धीरे बड़े देशों के वीटो-अधिकार को समाप्त करने तथा अंतर्राष्ट्रीय सेनाएं रखने की भी जोरदार वकालत की।

तुर्की और अरबराष्ट्र मैत्री बढ़ाने को इच्छुक

तुर्की ने जिस प्रकार का मैत्री तथा व्यापारिक सन्धि ईराक के साथ की है वैसी ही सन्धियां वह लेबनान, फिलस्तीन, सीरिया और ट्रांसजोर्डन के साथ भी करना चाहता है। इस आशय का एक वक्तव्य तुर्क-विदेशमन्त्री हसन साका का सीरियन पत्र 'जम्हूरिया' में प्रकाशित हुआ है।

श्री साका का कथन है कि एलेग्जेन्ड्रेटा के बन्दरगाह का उपयोग करने के लिये सीरिया तथा अन्य अरब राष्ट्रों को

[शेष पृष्ठ १६ पर]

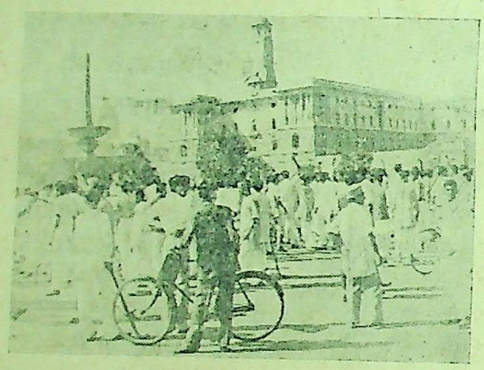

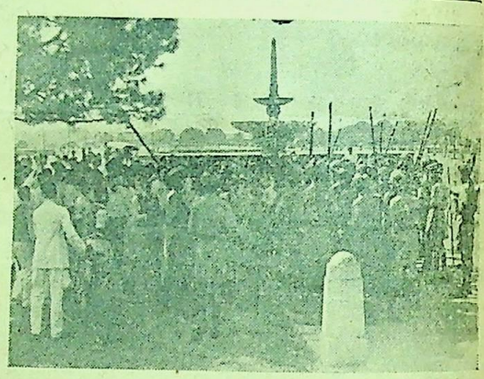

असेम्बली भवनके सम्मुख २८ अक्तूबरको प्रदर्शनकारियों व दर्शकोंकी भीड़ डण्डाधारी पुलिस असेम्बली भवन के समीप तैयार

शिकायत' को मिरास को समिति सं० १ और समिति सं० ६ को सौंप दिया जाय। समिति सं० १ शिकायत के राजनीतिक और सुरक्षात्मक पहलू पर विचार करेगी तथा समिति सं० ६ कानूनी रूप पर विचार करेगी। समिति सं० ६ शिकायत पर यह निर्णय करेगी कि दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के साथ दुर्व्यवहार की समस्या उस देश की घरेलू समस्या है अथवा १९२६ और १९३२ में दक्षिण अफ्रीका तथा भारत में हुई सन्धियों के कारण अन्तर्राष्ट्रीय है।

इस समस्या पर विचार करते समय बेलजियन प्रतिनिधि तथा समिति के अध्यक्ष मि० स्पाक ने यह प्रश्न उठाया कि भारत द्वारा उपस्थित शिकायत पर भारत के प्रतिनिधियों को बोलने दिया जाय या नहीं? रूसी प्रतिनिधि श्री विशिंस्की ने कहा कि विधान की धारा ३४ के अनुसार मित्रराष्ट्रों के सभी सदस्यों को उस वादविवाद में भाग लेने का पूरा अभिवृद्धि करना और उसे प्रोत्साहन देना है।

ब्रिटेन-मिश्र सन्धिवार्ता पुनः खटाई में ?

ब्रिटेन से सन्धिवार्ता चलाने के लिये मिश्र के प्रधानमन्त्री श्री सिदकीपाशा लन्दन गये थे, पर कोई भी अन्तिम निश्चयात्मक समझौता न कर सकने के कारण काहिरा वापिस लौट आये हैं। मिश्र की सरकार सूडान पर अपना अधिकार रखना चाहती है जब कि ब्रिटेन सूडान की जनता के आत्मनिर्णय के अधिकार को मानने के लिये जोर दे रहा है। सूडानी नेताओं ने भी घोषणा की है कि वे सूडान पर मिश्री आधिपत्य को स्वीकार नहीं कर सकते। वे सूडान में जनता का राज्य चाहते हैं मिश्र के शाह का नहीं।

मित्रराष्ट्रीय असेम्बली के अधिवेशन में मिश्र के प्रतिनिधि मोहम्मद हुसेनपाशा

Haridwar. Digitized by eGangotri

विश्व के नभोमण्डल पर तृतीय महायुद्ध की काली घटाएं

[श्री ई० आर० फ्रैंक]

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की किले-बंदी तथा वर्त्तमान समय में उसके द्वारा बरती जाने वाली नीति पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि तृतीय महायुद्ध की काली घटायें विश्व को आच्छादित करने के लिये पुनः उसके नभमंडल-पर फैलनी आरंभ हो गयी हैं। यह कथन कि द्वितीय महायुद्ध समस्त युद्धों का अन्त करने के लिये लड़ा जाने वाला युद्ध था, सर्वथा असत्य प्रतीत हो रहा है। इसके विपरीत तृतीय महायुद्ध अवश्यम्भावी होता जा रहा है। अमेरिकन साम्राज्यवादी सरकार का हर विभाग और हर कार्य इस धारणा को और भी दृढ़ बना रहे हैं कि वे शांति की स्थापना के बजाय विश्व को एक अत्यधिक भयंकर युद्ध की ओर घसीट रहे हैं।

११ अरब डालर !

उपर्युक्त धारणा की पुष्टि यह जान कर और भी हो जाती है कि गत २१ जून को अमेरिकन 'हाउस' तथा 'सिनेट' ने चालू वर्ष के लिये जो १ जून से प्रारंभ होता है, सैन्य संगठन के खर्चे का जो आर्मी और नेवी एप्रोप्रियेशन बिल पास किया है, वह ११००,००,००,००० (डालर लगभग रु० ३८ ३७,५०,००,०००) का है। जब कि यहां के इतिहास में शांति काल में कभी भी ७,०६, १०,३४, ७०० डालर (लगभग २३-२४ अरब रु०) से ज्यादा इस मद में खर्च नहीं किया गया। सैन्य संगठन के लिये खर्च की जाने वाली इस बड़ी रकम के विरोध में, ऐसी दशा में जब कि सर्व साधारण का दैनिक जीवन निम्न कोटि का होता जा रहा है, न तो 'हाउस' और न 'सिनेट' ने ही अपनी आवाज उठायी है। यही नहीं, धारा सभा के मैनेजरों ने इस लम्बे-खर्चे की मजूरी के लिये वोट लेना भी उचित नहीं समझा। इसके लिये तो उनकी स्वीकृति ही पर्याप्त मान ली गई है। अपने प्राधान्य को बनाये रखने के लिये द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति के बाद भी दुनिया भर में संयुक्तराष्ट्र अमेरिका के सैनिक अड्डे कायम हैं। इनमें से कुछ तो स्थायी हैं और कुछ अस्थायी। आर्मी और नेवी एप्रोप्रियेशन की बड़ी रकम से सयुक्त राष्ट्र अमेरिका अलास्का, मैरियाना, फिलीपाइन, हवायी तथा ओकीनावा में बनाये गये अपने सैनिक अड्डों का स्थायी निर्माण करेगा।

नयी योजना

अमेरिकन साम्राज्यवादियों के इन प्रयासों का, जो विश्व को भीषण युद्ध की ओर खींचे लिये जा रहे हैं, यहीं अंत नहीं हो जाता। वे पश्चिमी गोलार्ध के दो बड़े महाद्वीपों को एक सशस्त्र कैम्प में ला अपने नियन्त्रण में रखने का प्रयास कर रहे हैं। इस योजना की घोषणा जिसका नाम 'पश्चिमी गोलार्ध रक्षा -(Hemi-sphere Defence)' है, गत ६ठीं मई को प्रेसीडेण्ट ट्रूमैन ने की थी। फारेन पालिसी एसो-सियेशन बुलेटिन (१७ मई १६४६) में कहा गया था कि इस योजना का उद्देश्य नयी दुनिया के विभिन्न राष्ट्रों को सयुक्त कर एक ब्लाक तैयार करना है जो कि एक सैनिक इकाई के रूप में काम करेगा और इतना शक्ति-शाली होगा कि विश्व के किसी भी कोने से आने वाली युद्ध की चुनौती को असंभव बना देगा। इस ब्लाक के सदस्य केवल दक्षिणी और मध्य अमेरिका के ही राष्ट्र न होंगे, वरन् कनाडा भी इस प्रयास को सफल बनाने में साथ होगा।

इस योजना के अनुसार पश्चिमी गोलार्ध रक्षा के उद्देश्य से तैयार किये गये ब्लाक के सदस्यों को अपने देश की सेना को अमेरिकन सेना के ढंग से संगठित कर अमेरिकन शस्त्राओं द्वारा सज्जित करना होगा। यही नहीं, सदस्य राष्ट्रों द्वारा बरते जाने वाले हथियारों की मरम्मत भी संयुक्त राष्ट्र अमेरिका ही करेगा। अब जहां तक सैनिक रीति-नीतियों को स्थान देने का प्रश्न है, यह कार्य इस प्रकार संपादित किया जायगा कि ब्लाक के सदस्य राष्ट्र अमेरिकन सैनिक शिक्षा स्टाफ के सदस्यों को अपने यहां आमंत्रित करेंगे तथा उन राष्ट्रों के सैनिक अधिकारियों को सैन्य संगठन आदि बातों की शिक्षा संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की सेना, नौ सेना तथा वायुसेना की शिक्षणशालाओं में दी जायगी।

विश्व की महान शक्ति के रूप में

यदि अमेरिकन साम्राज्यवाद अपनी उपर्युक्त योजना को सर्विंगपूर्ण बना लेता है तो यह कहना अतिप्रयोक्ति नहीं कि वह विश्व की महान शक्तियों में सर्व श्रेष्ठ होगा और इस दौड़ में अपने प्रति द्वंदियो को पछाड़ देगा। ऐसी दशा में दो महा द्वीपों में उसके सैनिक अड्डे कायम हो जायंगे और इन दोनो महा द्वीपों के देश जो सभी पश्चिमी गोलार्ध रक्षा ब्लाक के सदस्य होंगे एक सैनिक सूत्र में बंध कर अमेरिकन साम्राज्यवाद के प्रभुत्व में चले जायगे। इस प्रकार से ब्लाक में अपनी प्रधानता होने तथा अन्य साधारण राष्ट्रों को अपने इशारों पर नाचता देख अमेरिका अपने अतुल पराक्रम के गर्व से फूल उठेगा।

लैटिन अमेरिका के देशों को भी अपना साथी बनाने के लिये संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका शक्तिशाली आर्थिक अस्त्रों का प्रयोग कर रहा है। जहां कहीं भी परिस्थितियां प्रतिकूल है, ऐसा दबाव डाला जा रहा है। उन देशों की सरकारें जो अर्ध-औपनिवेशिक पूंजी-पतियों का ही प्रतिनिधित्व करती हैं, अमेरिकन साम्राज्य-वाद का प्रतिनिधित्व कर सकने में सर्वथा असमर्थ हैं। अपने ढिलमिल शासन को कायम रखने के लिये वे इस प्रकार अमेरिका सरकार द्वारा बढ़ाये जाने वाले मैत्री पूर्ण हाथ से हाथ मिलाने को, बिना भविष्य की चिन्ता किये हुये ही, आतुर हैं। वाशिंगटन स्थित नीति निर्माता भी उनकी इन कमजोरियों से भली-भांति अवगत हैं। वे जानते हैं कि लैटिन अमेरिका के इन देशों के शासकों को भीतर ही भीतर सुलगने वाले क्रांति के अंगारे सदैव ही भयभीत किया करते हैं और यही कारण है कि अमेरिका की हां में हां मिलाकर वे अपनी क्षीण होती शक्ति को सुदृढ़ बनाना चाहते हैं।

विश्व अधिनायकत्व की उत्कट लालसा

'पश्चिमी गोलार्ध रक्षा' की योजना यदि सफल हो जाती है तो मानना पड़ेगा कि इसके द्वारा अमेरिकन साम्राज्यवाद को केवल इतना ही लाभ न होगा कि वह लैटिन अमेरिका के राष्ट्रों को अपने कब्जे में कर उन पर अपना आर्थिक सिक्का जगादे, वरन् यह तो विश्व पर अपनी छाप डालने के लिये संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा खेले जाने वाले नाटक का प्रथम अंक होगा। लैटिन अमेरिका की जनता का शोषण तो वालस्ट्रीट डाकुओं के लिये महत्वपूर्ण है ही, किन्तु साथ ही साथ इसमें उसके विश्वव्यापी स्वार्थों की एक छाया प्रतिबिम्बित है जो अनिवार्य रूप से तृतीय महायुद्ध की ओर संकेत कर रही है।

भावी युद्ध की रूपरेखा

तृतीय महायुद्ध की रूपरेखा भी अमेरिकन साम्राज्यवादियों के प्रवक्तागण खींचने लग गये हैं। मैक्सिको से अर्बेंटाइना के लिये रवाना होने वाले अमेरिकन राजदूत जार्ज एस० मेसर्स स्मिथ ने गत ११ वीं मई को मैक्सिको नगर में अपनी विदायी के समय एक भाषण देते हुए कहा था कि तृतीय महायुद्ध की काली घटायें विश्व के नील नभ को आच्छादित करने के लिये फैलती हुयी दृष्टिगोचर हो रही हैं। सोवियट रूस द्वारा बरती जाने वाली वर्तमान नीति ठीक वैसी ही है जैसी कि १६३३-३८ में जर्मनी की थी। अतः यह तय है कि तृतीय महायुद्ध अनिवार्य है। अपने भाषण के अंत में आपने कहा था—'आज हम भलीभांति जानते हैं कि रूस तथा हमारे मध्य एक सशस्त्र संधि ही है। ऐसी दशा में आवश्यक है कि पश्चिमी गोलार्ध के राष्ट्रों के मध्य पूर्ण राजनीतिक, आर्थिक तथा सैनिक ऐक्य स्थापित हो।

'पश्चिमी गोलार्ध रक्षा नीति' पर प्रवदा

संयुक्त राज्य अमेरिका इस दिशा में जो भी कदम बढ़ा रहा है, स्टालिन उससे भलीभांति अवगत है। गत १६ जून को रूसी पत्र प्रवदा ने 'पश्चिमी गोलार्ध रक्षा' नीति पर अपना मत व्यक्त करते हुये लिखा था कि लैटिन अमेरिका के देशों के साथ संयुक्त राष्ट्र अमेरिका 'मनरो नीति' बरत रहा है, अपनी इस चाल द्वारा वह इस क्षेत्र को प्रतिद्वंदियों से मुक्त कर अपनी आवश्यक सत्ता जमा राजनैतिक, आर्थिक तथा सैनिक तंतुओं का जाल सा बिछा देना चाहता है। इस प्रकार से स्पष्ट है कि लैटिन अमेरिका संयुक्त राष्ट्र अमेरिका का एक महत्वपूर्ण सैनिक अड्डा अड्डा बन जायगा। अपने उद्देश्यों को सफल बनाने के लिये जोरों का प्रचार जारी है, जिसके द्वारा नग्न साम्राज्यवादी सौदे को 'उच्चत उद्देश्यों' का जामा पहना कर ढका जा रहा है।

स्टालिन के सामने मार्ग

सन्देह नहीं, 'प्रवदा' का कथन सत्य है, फिर भी अमेरिका द्वारा तैयार की जाने वाली नूतन युद्धभूमिका को दुनिया के सामने रखने और उस पर थू थू करने मात्र से कोई लाभ नहीं। ऐसे समस्त कार्यों का जो भी निष्कर्ष निकलेगा, वह होगा तृतीय महायुद्ध, जिसमें एक ओर होगा रूस तथा दूसरी ओर होंगे उसके विरोधी साम्राज्यवादी राष्ट्र। ऐसी दशा में जब कि रूस की जीवन-नौका भयंकर भंवरों के चक्कर में पड़ गयी है, केवल विश्व का सर्वहारा ही उसे उतार सकने की क्षमता रखता है, किन्तु आज से कभी वर्षों पूर्व ही स्टालिन सामाजिक क्रान्ति के कार्यकर्मियों का अन्त कर चुका है स्वभावि इससे स्वयं उसकी प्रतिक्रियावादी शासन-प्रणाली को एक बहुत बड़ा भय था, अतः आज किसी भी दशा में स्टालिन विश्व के श्रमिक वर्ग पर रूस की रक्षा का भार नहीं सौंप सकता। दूसरी बात यह है कि अब शक्ति-संतुलन की पुरानी नीति मृत हो चुकी है। इसके पुनः जीवित होने की अब कोई आशा नहीं।

[शेष पृष्ठ २० पर]

राजनैतिक मंच के रंगे सियार

मियां हसन शहीद सुहरावर्दी

[श्री विद्यासागर विद्यालंकार]

श्री सुहरावर्दी

बंगाल धारासभा में २० सितम्बर १९४६ को लंगा मन्त्रीमण्डल पर अविश्वास का प्रस्ताव उपस्थित हुआ था। उस प्रस्ताव पर जब डा० श्यामप्रसाद मुखोपाध्याय गुण्डों द्वारा किये गये अत्याचारों और विनाश पर बोल रहे थे तो बीच में टोकते हुए मियां सुहरावर्दी ने कहा था 'यदि तथाकथित लोग गुण्डे हैं तो कहने वाला भी गुण्डा है।' सुहरावर्दी की इस उक्ति पर सारी बंगाल धारासभा में गहरी उत्तेजना फैल गयी थी। इसका उत्तर देते हुए डाक्टर श्यामप्रसाद ने कहा था: 'यदि मैं गुण्डा हूं तो सुहरावर्दी बंगाल का निकृष्टतम प्राप्य गुण्डा है।' अपने इसी भाषण में डा० मुखोपाध्याय ने मियां सुहरावर्दी द्वारा ऐसे सात मुसलमानों के छुड़ाने का वर्णन किया जिनके पास कलकत्ते की लूटमार का सामान पाया गया था।

वस्तुतः डाक्टर महोदय की उपर्युक्त उक्ति अक्षरशः सत्य थी। आज से ठीक २० वर्ष पूर्व सुहरावर्दी एक गुण्डे के रूप में बंगाल के राजनैतिक मञ्च पर प्रगट हुआ था।

'मीना पेशावरी का दोस्त'

कलकत्ते में १९२६ में मुसलमानों ने एक दंगा किया था जिसमें हिन्दुओं को भेड़ बकरियों की भांति काटा गया था। इस दंगे का प्रमुख अपराधी 'मीना पेशावरी' नामक एक फलविक्रेता गुण्डा था। इस दंगे के सम्बन्ध में जब जांच की गई तो पता चला मियां सुहरावर्दी उसके एक विशेष सहायक थे। इन्हीं दिनों बंगाल की लेजिस्लेटिव कौन्सिल में एक आलेख (बिल) पास किया गया, जिसके अनुसार स्त्रियों पर अत्याचार करने वाले अपराधियों को कोड़े लगाने का दण्डविधान किया गया था। उस समय मियां सुहरावर्दी ने केवल अपने व्याख्यानों द्वारा इस आलेख का विरोध नहीं किया अपितु वे कोर्ट और थानों में जा जाकर ऐसे अपराधियों को छुड़ाने लगे। इस सुख्याति को प्राप्त करके सुहरावर्दी एक गहरी डुबकी मार गये और दस वर्ष तक कोई यह नहीं जान सका कि सुहरावर्दी क्या कर रहे हैं? पर इस काल में वह चुपके-चुपके कलकत्ते के गुण्डों और शोहदों का संगठन करते रहे, उनपर अपना प्रभाव बढ़ाते रहे और अवसर की प्रतीक्षा में रहे।

पुनः राजनैतिक मंच पर

गवर्नमेंट आफ इण्डिया ऐक्ट १९३५ के देश में लागू होने की घोषणा होते ही सुहरावर्दी कूद कर एक नये रूप में सभ्य व्यक्ति का वेश धारण किये हुए मञ्च पर आ खड़े हुए। सन् १९३६ में नवाब ढाका के नेतृत्व में आपने 'यूनाइटेड मुस्लिम पार्टी' संगठित की। सन् १९३७ में प्रान्तीय धारासभाओं के चुनाव के समय यह दल मियां जिन्ना की मुस्लिमलीग में सम्मिलित हो गया।

इस समय बंगाल की राजनीति में मौलवी फजलुलहक का नक्षत्र बहुत प्रबल था और प्रान्तीय धारासभा के कृषक-प्रजा दल ने मुस्लिमलीग को बुरीतरह पराजित किया। मौलवी हक ने तो पटुआखली के क्षेत्र में लीगी प्रतिनिधि ख्वाजा नाजिमुद्दीन को बुरी तरह हराया। पर इसके बाद ही मौलवी हक ने लीग के अनेक असन्तुष्ट सदस्यों को अपने दल में मिलाकर संयुक्त मन्त्रीमण्डल बनाया। इस मन्त्रीमण्डल में सुहरावर्दी को श्रम मन्त्री बनाया गया। इस समय सुहरावर्दी ने श्रमिकों में अपना प्रभाव बढ़ाने का भरसक प्रयत्न किया। पर इस समय उनकी शक्ति इतनी नहीं थी कि वे अपने बल पर कुछ कर सकते। इसलिये वे अवसर की प्रतीक्षा में रहे।

मुस्लिमलीग में पुनः प्रवेश

सन् १९४३ में मियां जिन्ना ने मुस्लिमलीग में पुनः प्रवेश किया। इस समय बंगाल में मुस्लिमलीग की दशा बहुत शोचनीय थी। मियां जिन्ना ने बंगाल में लीग को पुनः संगठित करने का भार मियां सुहरावर्दी को सौंपा। सुहरावर्दी ने इस अवसर से पूरा लाभ उठाया। उन्होंने लीग में सम्मिलित होते ही अपने दल के सदस्यों को लीग में भर्ती करना आरम्भ कर दिया। इस समय लीग में अधिकांश सदस्य वे ही थे जो सुहरावर्दी के दल के थे। इस प्रकार सुहरावर्दी ने लीग पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। इसके बाद सुहरावर्दी ने लीग के संविधान में परिवर्तन करके लीग के अध्यक्ष का निर्वाचन लीग कौन्सिल द्वारा कराने की व्यवस्था की। इस समय लीग कौन्सिल में सुहरावर्दी के समर्थकों का बहुमत था। इसलिये सुहरावर्दी ने लीग के अध्यक्ष पद के लिये मियां जिन्ना के विरुद्ध खड़े होने का निश्चय किया। पर जब उन्हें पता चला कि मियां जिन्ना के विरुद्ध खड़े होने पर उनकी पराजय निश्चित है तो उन्होंने अपना नाम वापस ले लिया। इस प्रकार सुहरावर्दी ने लीग पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया।

नाजिमुद्दीन को भी पछाड़ा

जब सर जान हरबर्ट-बंगाल गवर्नर ने लंग द्वारा धता बताये हुए मौलवी फजलुलहक को प्रधानमन्त्रित्व के पद से उठाकर कीचड़ में फेंक दिया तो मुस्लिम लीग ने 'सर ख्वाजा नाजिमुद्दीन' के नेतृत्व में एक लीगी मंत्री-मण्डल बनाया। सुहरावर्दी इसमें भी यथापूर्व एक मन्त्री बने और श्रमिक विभाग सम्भाला। पर अब यह व्यक्ति चुपचाप शान्ति से नहीं बठा रहा। इस गुटबन्दीपसन्द तथा षड्यन्त्रकारी व्यक्ति ने 'सर ख्वाजा' की जड़ें काटनी शुरू की। इस प्रयोजन से आपने लीग का प्रचार जोरों से प्रारम्भ किया और लीगी संगठन पर अधिकार करना प्रारम्भ किया। आपने मन्त्री पद का लाभ उठाकर बड़े-बड़े यूरोपियन मिलमालिकों से मिलकर तथा कलकतिया गुण्डों की सहायता से श्रम मन्त्री सुहरावर्दी ने श्रमिक यूनियनें खड़ी कीं। श्रममंत्री के छोड़े हुए व्यक्ति गुंडागिरी के बल पर अपनी मांगों के लिये लड़ने वाले श्रमिकों तथा संस्थाओं को उस कठोर संघर्ष के होते हुए भी सुहरावर्दी कलकत्ता के दो क्षेत्रों में बहुत बड़े बहुमत से जीत गये। इसी समय कांग्रेस के महाकर्णधारों ने वसुबन्धुओं की सम्मति को ठुकरा कर मौलवी हक के दल के साथ मिलकर संयुक्त मन्त्रीमण्डल बनाना अस्वीकृत कर दिया। अवसरवादी सुहरावर्दी ने इसका पूरा-पूरा लाभ उठाया, पुरानी बातों तथा निर्वाचन की कटुता को भुला कर इस व्यक्ति ने हक-दल से सन्धि करली। अपने प्रभाव से लीग तथा कृषक प्रजा के संयुक्त दल का मौलवी हक को नेता निर्वाचित करवा के हक साहब से बदले में अपने लिये मन्त्री-मण्डल में स्थान प्राप्त कर लिया। कुछ ही दिनों बाद मौलवी हक को लीगी भी बना लिया। पर साथ ही यह धूर्त राजनीतिज्ञ मौलवी हक के अक्षुण्ण प्रभाव को सहन करने में असमर्थ था, इसलिये इस व्यक्ति ने कलकत्ता के उत्तरी क्षेत्र से—जो कि सारा का सारा लीगी है—त्यागपत्र देकर ख्वाजा नाजिमुद्दीन को भेंट कर दिया। हक के घोर विरोधी और प्रतिद्वन्दी ख्वाजा साहब के साथ इस व्यक्ति ने मिलकर मौलवी हक के प्रभावशाली तथा शक्तिशाली व्यक्तित्व के विरुद्ध षड्यन्त्र प्रारम्भ किया। यह कहा जाता है कि मियां जिन्ना और मौलवी फजलुलहक के बीच झगड़ा करवाने में सबसे प्रमुख हाथ सुहरावर्दी का ही था।

नाजिमुद्दीन को भी पछाड़ा

जब सर जान हरबर्ट-बंगाल गवर्नर ने लंग द्वारा धता बताये हुए मौलवी फजलुलहक को प्रधानमन्त्रित्व के पद से उठाकर कीचड़ में फेंक दिया तो मुस्लिम लीग ने 'सर ख्वाजा नाजिमुद्दीन' के नेतृत्व में एक लीगी मंत्री-मण्डल बनाया। सुहरावर्दी इसमें भी यथापूर्व एक मन्त्री बने और श्रमिक विभाग सम्भाला। पर अब यह व्यक्ति चुपचाप शान्ति से नहीं बठा रहा। इस गुटबन्दीपसन्द तथा षड्यन्त्रकारी व्यक्ति ने 'सर ख्वाजा' की जड़ें काटनी शुरू की। इस प्रयोजन से आपने लीग का प्रचार जोरों से प्रारम्भ किया और लीगी संगठन पर अधिकार करना प्रारम्भ किया। आपने मन्त्री पद का लाभ उठाकर बड़े-बड़े यूरोपियन मिलमालिकों से मिलकर तथा कलकतिया गुण्डों की सहायता से श्रम मन्त्री सुहरावर्दी ने श्रमिक यूनियनें खड़ी कीं। श्रममंत्री के छोड़े हुए व्यक्ति गुंडागिरी के बल पर अपनी मांगों के लिये लड़ने वाले श्रमिकों तथा संस्थाओं को आगे नहीं बढ़ने देते थे। इस प्रकार अपनी शक्ति को धीमे-धीमे बढ़ाते हुए इस व्यक्ति ने लीग पार्टी पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। ख्वाजा साहब के भारत से बाहर जाने का लाभ उठा कर इस व्यक्ति ने उनकी जड़ें पूरी तरह से काट दीं। जब सन् १९४६ में प्रांतीय धारा सभाओं के नये चुनाव हुए तो न केवल ख्वाजा साहब को अपितु उनके समस्तविश्वस्त साथियों तक को निर्वाचन से दूर-दूर रखा और धारासभा की लीगी सीटों पर पूर्णरूप से अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया तथा बिना बाधा के प्रधानमंत्रित्व हथिया लिया।

सुहरावर्दी के प्रारम्भिक दिन

बङ्ग देश के प्रधानमन्त्री हसनशहीद सुहरावर्दी बङ्गाली नहीं है, इनकी मातृ-भाषा बंगला नहीं है। इनके पिता 'सर' जहीद सुहरावर्दी कलकत्ता हाईकोर्ट में एक जज नियुक्त हुए थे, क्योंकि आप भी उनके एक पुत्र हैं इसलिये आप बङ्गाली होने का दावा करते है, यूं आपकी परिवारिक भाषा उर्दू है। अधिकांश लीगी नेताओं की भांति आपने मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ की दहलीज पर माथा नहीं टेका। कलकत्ता में आर स्नातक हुए और आक्सफोर्ड जाकर बैरिस्टरी पास की। कलकत्ता कोर्ट में आपने बैरिस्टरी भी प्रारम्भ पर इसमें असफल होकर आप एक वादी बन गये। तब आपने स्वराज-दल पल्ला पकड़ा और उग्र विचारों 'स्वराजिस्ट' बन गये। स्वर्गीय देश-बन्धु चितरञ्जनदास के प्रमुख अनुयायि में आकर खड़े हो गये और स्वर्गीय देशबन्धु ने भी इसका आपको उचित पुरस्कार दिया। कलकत्ता में कारपोरेशन ऐक्ट के लागू होते ही स्वर्गीय देशबन्धु ने इस 'स्वराज्य दल' को कलकत्ता का 'डिप्टी मेयर' बना दिया।

उन दिनों प्रचारित किया गया था कि जब यह 'स्वराज्य दली' छोकरा आक्सफोर्ड में पढ़ता था तो इसने बंगाल धारासभा के विरोधी पक्ष के वर्तमान नेता श्री किरणशंकरराय आदि मित्रों के साथ मिलकर एक ऐसा 'क्लब' खोला था जिसका सदस्य कोई अंग्रेज नहीं बन सकता था। कहते हैं कि जब रवीन्द्रनाथ ठाकुर को नोबल-पुरस्कार मिला था तब उनके आक्सफोर्ड पधारने पर भारतीय विद्यार्थियों की ओर से 'स्वराज्य दली' सुहरावर्दी को स्वागत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

पर इस राष्ट्रीयता की परीक्षा का अवसर भी बहुत शीघ्र आकर उपस्थित हो गया। इन के डिप्टीमेयर काल में कलकत्ता के हांग मारकेट में एक वृद्ध फकीर रहता था जो वहीं अपनी कुटिया में मर गया। फकीर के कुछ शिष्यों ने उसके शव को वहीं गाड़ना चाहा। इस समस्या को लेकर कलकत्ता कारपोरेशन दो भागों में विभक्त हो गया और सुहरावर्दी ने अत्यन्त निर्लज्जतापूर्वक मुसलमानी कैम्पों का पक्षपात किया। परिणामतः डिप्टीमेयर के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव रखा गया और शीघ्र ही इस व्यक्ति को उस पद से हटना पड़ा। वस्तुतः जिस व्यक्ति का एक बार पतन आरम्भ होता है वह रुकता नहीं है, मृत्यु के अन्तिम क्षण तक वह गिरता ही चला जाता है। साम्प्रदायिकता से पूर्ण तथा विवेकभ्रष्ट व्यक्तियों का पतन हजारों मार्गों से होता है।

शौकीन घमण्डी व्यक्ति

आक्सफोर्ड से आप एक विशेष वस्तु अपने साथ लाये हैं वह है—नाच और गाना। इसलिये आपको प्रतिदिन कलकत्ता के फैशनेबल नाइट-क्लब 'थ्री हन्ड्रेड' में प्रतिदिन देखा जा सकता है। इस 'शौक' के मारे आप ५० व्यक्तियों से अधिक को आमंत्रित न करने के आर्डर को तोड़ने से भी नहीं हिचकते। छैलछबीले रूप में निकलना तो आपके लिये अति सामान्य वस्तु है नहीं इसमें आप कोई लज्जा अनुभव करते

[शेष पृष्ठ १८ पर]

Collection Haridwar. Digitized by eGangotri

रेडियो में एक साल

[श्री चिरंजीत]

लेखक

श्री चिरंजीत हिन्दी के लब्ध, प्रतिष्ठ कवि, गीतकार और लेखक हैं और उर्दू, अंग्रेजी और संस्कृत के विद्वान हैं। हाल ही में इन्होंने आल इण्डिया रेडियो के हिन्दी सलाहकार के पद से अधिकारियों के साथ सैद्धांतिक मतभेद हो जाने के कारण त्याग पत्र दि स लेखमाला में, जिसका आज सूत्रपात हो रहा है चिरंजीतजी निजी अनुभव और ज्ञान के आधार पर रेडियो की आंतरिक व्यवस्था और हिन्दी विरोधी नीति पर प्रकाश डालेंगे।

—सं०

२ अक्तूबर १९४५ को मेरे पास दिल्ली रेडियो स्टेशन से निम्न आशय का नियुक्ति-पत्र आया— 'आपको २००) मासिक पर हम अपना हिन्दी सलाहकार नियुक्त करते हैं, शीघ्र ही पद ग्रहण कीजिये।' काम को देख कर मैंने यह अनुमान लगाया कि हिंदी-सेवा की दृष्टि से यह पद यथेष्ट महत्वपूर्ण होगा। उन दिनों अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का रेडियो विरोधी आन्दोलन जोरों पर था। चुनांचे मैं इस पद को ग्रहण करने से हिचकिचाया। जब मैंने दिल्ली के साहित्यिक बंधुओं और आंदोलन के एक दो कर्णधारों से परामर्श किया तो सबने मुझे अविलम्ब पद ग्रहण करने की ही सलाह दी। मेरा अपना भी विचार था कि विपक्षी के गढ़ में पहुंच कर अपनी कार्यसिद्धि में अधिक सफलता मिल सकती है। अतः ३ अक्तूबर १९४५ को मैंने साहित्यिक बंधुओं की शुभकामनाओं और आशीर्वादों के साथ आल इण्डिया रेडियो, दिल्ली में हिंदी सलाहकार के रूप में प्रवेश किया।

जाते ही मैंने इधर-उधर वातावरण और वस्तुस्थिति पर दृष्टि डाली और एक बात ने मेरा ध्यान विशेष रूप से आकर्षित किया और वह यह कि स्टेशन के स्टाफ में ऊपर से लेकर नीचे तक कट्टर मुस्लिमलीगियों का बाहुल्य था, जो रेडियो स्टेशन को कल्पित-पाकिस्तान की प्रयोगशाला बनाये हुए थे। इस की चर्चा मैंने इधर-उधर पत्र-पत्रिकाओं और वक्तव्यों में देखी थी, परन्तु इसका प्रत्यक्ष और सच्चा ज्ञान रेडियो के भीतर प्रवेश करते ही प्राप्त हुआ। कुल मिला कर सात छोटे और बड़े अफसरों में एक हिन्दू था— उसकी दांतों के बीच जिह्वा की सी अवस्था थी। सब के सब अधिकारी और उनके पदचिन्हों पर चलते हुए अन्य कर्मचारीगण सच्चे दिल से उर्दू को ही देश की सबसे पुरानी सर्वसम्मत राष्ट्र-भाषा मानते थे और हिन्दी को २०-२५ वर्ष में उर्दू की प्रतिस्पर्धा में सोद्देश्य गढ़ी गई कृत्रिम भाषा बताते थे! अधिकांश तो बातचीत करते समय हिंदी को शुद्ध संस्कृत का पर्यायवाची ही मानते थे।

आल इण्डिया रेडियो की सारी मशीनरी प्रोग्राम असिस्टेंटों के बल पर चलती है और ब्राडकास्ट होने वाले समस्त प्रोग्रामों में अधिकांश इन्हीं के आचार-विचारों, मनोवृत्तियों और भाषा, संस्कृति और कला सम्बन्धी प्रवृत्तियों तथा आस्थाओं का प्रतिबिम्ब रहता है, क्योंकि रेडियो के यही कर्मचारी भिन्न-भिन्न विभागों— भाषण, संगीत, गान इत्यादि के अध्यक्ष होते हैं और यही बाहर के नेताओं, साहित्यकारों, कलाकारों और विशेषज्ञों को ब्राडकास्ट के लिये 'बुक' करते हैं, यही पखवारे भर के प्रोग्राम तैयार करते हैं, यही ब्राडकास्ट करने वालों की फीस आदि निश्चित करते हैं और दिलाते हैं। यह ठीक है कि इन्हें ऊपर के अधिकारियों के लिये सारा दिन क्लर्की का काम भी करना पड़ता है, तो भी अपने तौर पर अफसरी जमाने और मनमानी करने का इन्हें पर्याप्त अवसर और सुविधा रहती है। स्टेशन पर नियुक्त साहित्यकारों, विशेषज्ञों, कलाकारों और लेखकों की योग्यता अथवा अयोग्यता का निर्णय यही प्रोग्राम असिस्टेंट करते हैं और ऊपर के अफसर परम्परा के अनुसार इन्हीं की बात को सत्यासत्य का विवेक किये बिना ब्रह्म-वाक्य मानते हैं। यह ठीक है कि ऊपर के अफसर इन प्रोग्राम-असिस्टेंटों पर नियंत्रण रखते हैं, परन्तु जहां अफसर और प्रोग्राम असिस्टेंट दोनों ही एक गुट, एक पक्ष, एक मजहब, एक ध्येय और एक विचार-धारा के आदमी हों, दोनों की आपस में मिलीभगत हो और एक दूसरे के संकेतों को कार्यरूप में परिणत करने को तैयार हो, वहां नियंत्रण आदि का प्रश्न ही नहीं उठता।

मैंने दिल्ली रेडियो स्टेशन के भीतर पहुंच कर देखा कि अधिकारीवर्ग की ही तरह प्रोग्राम-असिस्टेंटों के समुदाय में भी मुस्लिम लीगियों और उर्दू के कट्टर पक्षपातियों का बाहुल्य है और सब के सब अधिकारीवर्ग की प्रतिमूर्तियां हैं। कुछेक जो हिंदू प्रोग्राम असिस्टेंट थे, वे हिंदी भाषा और साहित्य से पूर्णतया अनभिज्ञ अथवा अनभिज्ञ होने का स्वांग भरने वाले और मुस्लिम लीगी स्टाफ की प्रतिच्छाया मात्र थे। जो लोग हिंदी अथवा भारतीय संस्कृति से गुप्तरूप से प्रेम रखते थे, वे अपने प्रभुओं का कोपभाजन बनके, २००) रुपये की नौकरी से हाथ धोने को तैयार नहीं थे। अतः उनको मैंने आतंकित, साहसहीन, जिवाहीन और हिंदी विरोधी ही पाया। इन हिंदू प्रोग्राम असिस्टेंटों में मुझे एक संगीत विभाग में नियुक्त, हिंदीभाषी, संस्कृत का उच्च उपाधिधारी शास्त्रीय संगीत का विशेषज्ञ, परन्तु उर्दू से सर्वथा अनभिज्ञ प्रोग्राम असिस्टेंट मिला। मेरे देखते ही देखते उसे अयोग्य ठहरा कर पदच्युत कर दिया। दिल्ली स्टेशन पर और भी कई हिन्दी के ज्ञाता परन्तु उर्दू से अनभिज्ञ हिंदी प्रेमी असिस्टेंटों की ऐसी ही दुर्दशा पहले भी हो चुकी है। सर्व श्री ज्ञानस्वरूप भटनागर, गिरिजाकुमार माथुर और श्यामाचरण काला का हाल किसे मालूम नहीं? ऐसे उदाहरणों के सम्मुख होते हुए भला कौन प्रोग्राम असिस्टेंट रेडियो के प्रभुओं द्वारा निर्धारित नीति, उनकी पसंद नापसंद के विरुद्ध आचरण करने और उर्दू से अनभिज्ञता और हिंदी से प्रेम और जानकारी प्रदर्शित करने का साहस करेगा? चुनांचे मैंने देखा कि सब प्रोग्राम असिस्टेंट हिंदी के विरोधी और रेडियो अधिकारियों की उर्दू और इस्लामपरक नीति के पोषक और समर्थक हैं। स्टेशन के स्टाफ में भी मैंने यही दशा देखी।

हरेक रेडियो स्टेशन पर उपर्युक्त स्टाफ के अतिरिक्त कर्मचारियों का एक और समुदाय भी होता है जो 'स्टाफ आर्टिस्ट' कहलाते हैं। इस समुदाय में लेखक, कवि, साहित्यिक, भाषाविद्, संगीत और ब्राडकास्ट सम्बन्धी विषयों के विशेषज्ञ, एनौन्सर (उद्घोषक), अभिनेता, प्रतिलिपिकार और साजिन्दे होते हैं। ये सब नियमित और सैद्धान्तिक रूप से सरकारी नौकर नहीं कहलाते और न ही सरकार द्वारा स्वीकृत महंगाई का भत्ता वगैरा या अन्य सुविधाएं ही प्राप्त होती हैं। इन्हें वार्षिक कन्ट्रेक्ट पद्धति के आधार पर नौकर रखा जाता है। साल के अन्त में, यदि किसी स्टाफ आर्टिस्ट को और आगे के लिये रखना अपेक्षित हो, तो उससे फिर से कन्ट्रेक्ट किया जाता है। जहां अफसरों, प्रोग्राम असिस्टेन्टों और सरकारी नौकर कहलाये जाने वाले अन्य कर्मचारियों की नियुक्ति भिन्न-भिन्न स्टेशनों पर स्वयं डायरेक्टर जनरल द्वारा होती है, वहां इन 'स्टाफ आर्टिस्टों' की किसी स्टेशन पर नियुक्ति उस स्टेशन के डायरेक्टर द्वारा होती है। वही इनका वेतन और ड्यूटी निर्धारित करता है, वही इन्हें तरक्की देता है और वही बिना डायरेक्टर जनरल को बताये इन्हें निकाल सकता है।

दूसरे कर्मचारियों की अपेक्षा इन 'स्टाफ आर्टिस्टों' के मामले में किसी भी स्टेशन डायरेक्टर के लिये मनमानी और स्वेच्छाचारिता करने की अधिक गुंजाइश है। प्रायः देखा गया है कि बाज स्टेशन डायरेक्टर अपने सम्बन्धियों, मित्रों, परिचितों और अपने गुटों के सदस्यों को मनमाने वेतन देकर 'स्टाफ आर्टिस्ट' के रूप में स्टेशन पर नौकर रख लेते हैं और उन्हें सफेद हाथियों की तरह पालते हैं। इस स्वेच्छाचारिता के विशिष्ट और सप्रमाण उदाहरण मैं इस लेखमाला के अगले लेख में दूंगा। हां, तो 'स्टाफ आर्टिस्ट' — लेखक, कवि, विशेषज्ञ, अभिनेता, उद्घोषक इत्यादि — सैद्धान्तिक रूप से सरकारी नौकर न होते हुए भी अधिकारियों का एक विशेष उद्देश्य है। वे आल इण्डिया रेडियो की रीढ़ हैं। दूसरे विशिष्ट कर्मचारी — अफसर लोग, प्रोग्राम असिस्टेंट इत्यादि तो ब्राडकास्ट होने वाले प्रोग्रामों की रूपरेखा निर्धारित करते हैं और व्यवस्था करते हैं, ये स्टाफ आर्टिस्ट उन्हें भिन्न भिन्न रूपों में रेडियो पर प्रस्तुत करते हैं। स्पष्ट है कि इनके बिना कोई प्रोग्राम भी ब्राडकास्ट नहीं हो सकता। प्रसंगवश, यहां यह बता देना भी उचित होगा कि ये ऐसे दर्पण हैं जिनमें रेडियो अधिकारियों की भाषा और संस्कृति सम्बन्धी गुप्त से गुप्त नीति भी प्रतिबिम्बित हुए बिना नहीं रहती। जब मैंने दिल्ली रेडियो पर हिन्दी सलाहकार के रूप में पदग्रहण किया तो मुझे यह देखकर भारी अचरज हुआ कि स्टाफ आर्टिस्टों के समुदाय में भी मुसलमानों और उर्दू के जानकारों का बाहुल्य ही नहीं बल्कि आश्चर्यकारी बहुमत है। मैं इस समुदाय का वर्गीकरण करके अपनी बात को स्पष्ट करता हूं — स्टेशन पर तीन लेखक और साहित्यक विशेषज्ञ थे — एक स्टेशन की ओर से अधिकृत रूप में ब्राडकास्ट होने वाले लेख (जंग नामा, वक्त की बातें, जवाबदेही, पत्रों के उत्तर आदि) लिखने वाला, दूसरा संगीत के प्रोग्रामों के लिये गीत, भजन, और गजलें आदि चुनने वाला और तीसरा नाटक और फीचर आदि लिखने वाला ये तीनों ही 'उर्दूदां' मुसलमान थे। स्टेशन पर छः सात अनौन्सरों में (वे लोग जो किसी प्रोग्राम के

[शेष पृष्ठ १६ पर]

लहसन—क्षय का अचूक इलाज

[श्री रामेशबेदी आयुर्वेदालङ्कार]

लेखक

क्षय की चिकित्सा में लहसुन की उपयोगिता का उल्लेख सब से पहले एक हजार ईस्वी पूर्व में खोजा जा सकता है और उसके बाद भी प्रायः हर जमाने में इसका प्रयोग किया जाता रहा है। कश्यप, चरक आदि पुराने समयों के श्रेष्ठतम चिकित्सक इसे इस रोग में देते रहे हैं। वर्तमान समय में फेफड़े के क्षय में इसका अन्तःप्रयोग करने के लिए लण्डन के स्वर्गीय डाक्टर मूर, वीनिस के डाक्टर कावाजानी, डाक्टर वी० पिरिसनीनि तथा अन्य डाक्टरों ने सिफारिश की।

लहसुन में जो अत्यन्त उड्डनशील पदार्थ होते हैं वे इसे प्रथम श्रेणी के कृमिहरों में रख देते हैं और फेफड़े के रोगों की चिकित्सा में सुंघाने के लिए इसे सर्वोत्कृष्ट मूल्यवान् पदार्थ बना देते हैं।

यह तथ्य कई बार बताया जाता रहा है कि कई शहरों में जहां बहुत अधिक घनी तथा अत्यन्त गन्दी बस्तियां हैं वहां क्षय रोग से होने वाली मृत्युसंख्या काफी कम है। डाक्टर मिनचिन के ख्याल में इसका स्पष्टीकरण वहां के निवासियों की लहसुन खाने की आदत कहा जा सकता है। संसार के बहुत से हिस्सों में बसने वाले यहूदियों की इस रोग से मृत्यु संख्या विशेष रूप से कम होने का कारण भी यही कहा जा सकता है। इस प्रथम महायुद्ध से कुछ पहले क्रोशिया के हेल्थ औफिसर ने बताया था कि उस की सम्मति में बल्गेरिया के निवासियों की लम्बी आयु के रहस्य का कारण अधिक मात्रा में लहसुन का खाना है।

लहसुन में विद्यमान उड्डनशील तेल प्रबल कृमिनाशक होने से यह क्षय के कृमियों की वृद्धि को रोकने में आश्चर्यजनक रूप से प्रभावकारी होता है। खून में मिलकर यह तेल फेफड़े, जिगर, गुर्दे तथा त्वचा में दौरा करता है और शरीर की धातुओं और रचनाओं में गहराई तक पहुंच जाता है, जिससे समस्त शरीर के अन्दर किसी भी जगह क्षय के कीटाणुओं का उपद्रव हो तो उसे रोकता है। हड्डियों तक के क्षय को यह ठीक करता देखा गया है। एक जवान मनुष्य के पैर और पंजे की सारी हड्डियों को क्षय के कीटाणु खा गये थे। गली हुई हड्डियों वाले पैर को कटवा डालने की उसे सलाह दी गई, परन्तु ऐसा करने को वह राजी न हुआ। छः महीने के बाद डाक्टर मिनचिन ने उसका पैर बिलकुल स्वस्थ अवस्था में देखा तो इस चमत्कार का कारण जानना चाहा। उन्हें यह जानकर आश्चर्य हुआ कि लहसुन का लेप करते रहने से ही उसका पैर बिलकुल चंगा हो गया था।

मिनचिन ने दस साल के एक बच्चे का उदाहरण दिया है। हाथ की हड्डियों में क्षय रोग हो जाने से उसकी एक अंगुली तो काट भी डाली गई थी। हथेली के तीन गहरे नासूरों से सदा पीप बहती रहती थी। दूसरे उपचारों को असफलता के साथ करने के बाद उस की लहसुन से चिकित्सा की जाने लगी। बारीक पिसे हुए लहसुन को चरबी के साथ मिलाकर पांवों पर रख दिया जाता था और चौबीस घण्टे के बाद पट्टी खोलकर नया लेप किया जाता था। उसे जल्दी ही लाभ नजर आने लगा और प्रायः डेढ़ महीने में उसका हाथ बिलकुल ठीक हो गया। चरबी या वेजलीन में लहसुन के कल्क को लगाने का उद्देश्य यह था कि लहसन की जलन पावों पर कम अनुभव हो।

हड्डी के क्षयी जख्मों का लहसुन से कुछ सप्ताह इलाज करने के बाद आराम न मालूम दे तो चल्पकर्म करना चाहिए। हड्डी की परीक्षा करने से पता चलेगा कि ऊपर मरी हड्डी का एक टुकड़ा है। उसके नीचे सड़े हुए मृदु तन्तुओं का समूह है जिसमें पीप अच्छी तरह मिली हुई है। शल्य कर्म में इन सब की सफाई करने के बाद लशुन चिकित्सा आरम्भ कर देनी चाहिए। अब जल्दी ही आराम आने लगता है।

न्यूयार्क के मेट्रोपोलिटन हौस्पिटल के डाक्टरों ने इन्हीं विदेशों का पालन करते हुए दो साल से अधिक समय तक १०८२ रोगियों की चिकित्सा की। उन्होंने इन रोगियों की चिकित्सा में क्षय के छुप्पन आधुनिक इलाजों की परीक्षा की। १९१४ के इण्टरस्टेट मेडिकल जर्नल के क्षय रोग विशेषाङ्क में एक लेख प्रकाशित हुआ है जिसमें डाक्टर मार्शल ने इन परीक्षाओं की रिपोर्ट दी है। वे इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि क्षय के कीटाणुओं और उनसे पैदा होने वाले विविध प्रकार के रोगों पर विश्वसनीय रूप से प्रभाव करने वाली वनस्पति में केवल एक ही औषध लहसुन है। अपनी रिपोर्ट में ये लिखते हैं कि किसी स्थान पर लेप करने से लहसुन त्वचा द्वारा अच्छी तरह जज्ब कर लिया जाता है और अधिक गहरे तन्तुओं में घुस जाता है। इसके प्रयोग हमें सर्वोत्कृष्ट सफल परिणाम दिये।

लेप करने से अक्षत त्वचा में यह कितनी शीघ्रता से प्रवेश पा जाता है यह इस बात से समझा जा सकता है कि यदि त्वचा पर किसी भी जगह लहसुन को पीस कर लेप कर दिया जाय तो इसका क्रियाशील तेल झट रक्त-सञ्चार में मिल जाता है जिसका प्रमाण यह है कि उसके सांस में भी इसकी गन्ध आने लगती है। शरीर के प्रत्येक हिस्से में घुस कर यह फेफड़े, त्वचा, जिगर, गुरदे, दूध और लाला के द्वारा बाहर निकलता है।

वर्तमान समय के ज्ञान के अनुसार धारण पत्र में बिना दाना लहसुन का ताजा रस क्षय तथा दूसरे रोगों से पीड़ित बहुत से रोगियों में सबसे अच्छा लाभदायक उपचार रहा है। इसकी बुरी गन्ध से बचने के लिए इण्डियन एण्ड ईस्टर्न ड्रगिस्ट (मई १९२२) में एक तरीका बताया गया था। उसके अनुसार रस को गरम पानी में रख कर गाढ़ा कर लेते हैं और तब उसकी गोलियां बना कर रोगी को खिलाते हैं।

फेफड़े के क्षय में लहसुन और इसके योगों का बहुत प्रयोग होता है। कर्नल चोपड़ा के अनुसार वर्तमान काल में इस प्रकार के कई योग बाजार में चल रहे हैं जिनमें लहसुन का रस या इसके अन्य क्रियाशील तत्व होते हैं। फेफड़े के क्षय की अवस्था में जमे हुए बल्गम और खांसी को लहसुन रस प्रायः कम करता है, भूख बढ़ जाती है और कुछ रोगियों में तो रात का पसीना पूर्णतया बन्द होते देखा गया है। रोगी अपने को अधिक स्वस्थ अनुभव करता है, नींद बढ़ जाती है, पाचन क्रिया में उन्नति दिखाई देती है और भार में वृद्धि हो जाती है। दूध में लहसन का सेवन करते हुए भी और दूध का खूब प्रयोग करना चाहिए। घी और दूध में लहसन को पका कर खिलाना चाहिए। क्षय में रोग को अधिक गहरा घर करने से लहसन रोकता है। शरीर सूख रहा हो तो इसके योगों का नियमित सेवन आरम्भ करा देना चाहिए। घातल कृशता में असगंध के चूर्ण के साथ लहसुन सेवन कराते हैं। कश्यप का इन्द्राणी घृत क्षयी के भोजनों में सम्मिलित करना चाहिए। लहसुन को कुंडी सोटे में कुचलकर और जौ के घी में मिलाकर बन्द हण्डी में एक साल तक धान के ढेर के अन्दर दबा देते हैं। फिर इसे क्षय के रोगी को चार या छः या आठ महीने तक रोग की जड़ निकल जाने तक, निरन्तर सेवन कराते हैं। क्षय के सब लक्षणों को दूर करके यह क्षयी को सर्वथा निरोग कर देता है।

श्री शारदा सहेली-संघ, जयपुर का अनूठा प्रकाशन !

तीन नाटकों का संग्रह

यदि आप समाज की मूक सुकुमार, निरपराध कन्याओं को बूढ़ों की कुत्सित वासना का शिकार होने से बचाना चाहते हैं, यदि आप दर-दर की ठोकरें खाने वाली भारतीय विधवा की दुरवस्था पर आंसू बहाते हुए उसको गौरवमय स्थिति में देखना चाहते हैं ? यदि आप अपने घरों में, नारियों की कलह और क्लेश की यातनाओं से मुक्त कर शान्ति और प्रेम की स्वर्गीय सरिता बहाना चाहते हैं ?

तो वृद्ध-विवाह, विधवा, और, उत्सर्ग इन तीन सामाजिक नाटकों का लोकोपयोगी संग्रहः—

तीन— पुष्प

स्वयं पढ़िये और महिलाओं को भी पढ़ाइये !

लेखकः-पं० कैलाशचन्द्र जी शास्त्री, पृष्ठ संख्या ३५० मूल्य केवल २) रु०

प्राप्ति स्थानः—

१. श्री शारदा-सहेली-संघ, चौकड़ी घाट दरवाजा, जयपुर सिटी.

२. भारतीय भवन, बड़ा दरीबा देहली।

आवश्यकता है

एक दफ्तरी (चपरासी) की आवश्यकता है जोकि साइकिल चलाना जानता हो और ईमानदार हो। रहने को जगह दी जायगी, तनख्वाह ३३) माहवार या इससे भी अधिक तजुर्बे के अनुसार।

फैंसी सिल्क मिल्ज, खैबरपास, सिविल लाइन, देहली।

CC-0. Haridwar. Digitized by eGangotri

मेरे जीवन की झाँकियां

पं० बधावाराम — जेलर

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

★

[१]

पं० बधावाराम १६२६ से दो-तीन वर्ष तक दिल्ली जेल के डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट (जेलर) रहे। लेख के शीर्षक के रूप में एक जेलर का नाम देखकर पाठक आश्चर्यित न हों। जिन लोगों को पंडित बधावाराम से किसी तरह का वास्ता पड़ा था, वह जानते हैं कि वह एक असाधारण मनुष्य था। वह अच्छा था या बुरा, इस प्रश्न का मैं कोई उत्तर नहीं दूंगा और प्रत्येक पाठक अपनी-अपनी प्रवृत्ति के अनुसार उत्तर देने में स्वतन्त्र हैं। मैं तो भलाई और बुराई, साहस और विनय, चतुराई और अदूरदर्शिता के उस अद्भुत मिश्रण की कुछ स्वयं देखी घटनायें सुनाकर फैसला पाठकों पर ही छोड़ दूंगा। पं० बधावाराम अब इस लोक में नहीं हैं, परन्तु वह सब राजनीतिक बन्दी जो उसकी जेल में रहे, उस दबंग दरोगा की स्मृति को नहीं भुला सकते।

जिन देशभक्तों को पं० बधावाराम के पास जेल में रहना पड़ा, उनकी सूची बहुत बड़ी है। दिल्ली के स्त्री तथा पुरुष सत्याग्रहियों के अतिरिक्त कांग्रेस की वर्किंग कमेटी के उस समय के लगभग सब सदस्यों को काफी समय तक दिल्ली की जेल में रहना पड़ा था। मैं तो लगभग पांच मास तक पं० बधावाराम के प्रबन्ध काल में दिल्ली जेल में रहा। १६३० के नमक सत्याग्रह आरम्भ होने से कुछ सप्ताह पहले ही मुझे गिरफ्तार कर लिया गया था। और मेरे कुछ लेखों और भाषणों को आपत्तिजनक मान कर नौ महीने के कारागार की सजा दे दी गई थी। मेरे साथ और मेरे पीछे सैंकड़ों सत्याग्रही दिल्ली जेल में पहुंचे और पंजाब की जेलों में सजा काटने के लिये भेज दिये गये, परन्तु मुझे दिल्ली में ही रखा गया। इसका कारण यह बतलाया जाता था कि जेलों के इन्सपेक्टर जनरल ने दफ्तर १६२७-१६२८ के अनुभव के आधार पर मुझे पंजाब की किसी जेल में रखने से इन्कार कर दिया। समझा गया कि पंजाब का जल-वायु शायद मेरे अनुकूल न पड़े। मैंने अपनी यह सजा दिल्ली के डिस्ट्रिक्ट जेल में ही काटी।

[२]

प्रातःकाल का समय था। मैं अभी स्नान आदि से निवृत्त भी नहीं हुआ था कि मेरे एक सहोद्योगी राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता मेरे घर पर पहुंचे, और मुझे सूचना दी कि उनका वारन्ट निकला हुआ है, पुलिस उनका तलाश में फिर रही है। वह मुझ से यह सलाह करने आये थे कि उन्हें किस प्रकार गिरफ्तार होना चाहिये। मैंने उन्हें सलाह दी कि खूब धूमधाम से गिरफ्तार होना चाहिये। उसका उपाय यह सोचा गया कि हम लोग जलूस बनाकर नारे लगाते हुए उनके साथ कोतवाली तक जायें और वहां वह अपने आपको पुलिस के सुपुर्द कर दें। टैलीफौन और हरकारों की सहायता से थोड़ी ही देर में बहुत से कार्यकर्त्ता एकत्र कर लिये गये, और जलूस कोतवाली की ओर चल पड़ा। घर से जाते हुए मेरी पत्नी ने मुझसे कहा कि सुबह का नाश्ता तैयार है, आप लोग कुछ लेकर जाइये। मैंने अपने आशावादी स्वभाव के अनुसार उत्तर दिया कि 'हम अभी लौटकर आयेंगे। सम्भवतः गर्गजी (मेरे सहोद्योगी का नाम श्री नारायणदास गर्ग था।) के वारन्ट की खबर भी निर्मूल ही होगी। हम अभी आकर नहा-धोकर नाश्ता लेंगे। मेरी पत्नी का इस उत्तर से संतोष तो नहीं हुआ परन्तु जलूस का ढंग बन चुका था। इस कारण उस समय रवाना हो जाना ही उचित समझा गया। कोतवाली के दरवाजे तक पहुंचते-पहुंचते जलूस में कई हजार आदमी इकट्ठे हो गये। दरवाजे पर हमारे स्वागत के लिये बहुत-सी बन्दूकधारी पुलिस खड़ी थी। जलूस के वहां पहुंचने पर दो सब इन्सपैक्टर आगे बढ़े और गर्गजी को दोनों ओर से पकड़ लिया। गर्गजी तो स्वयं गिरफ्तार होने आये थे तब इस बल प्रदर्शन की क्या आवश्यकता है, यह समझकर मैंने सब इन्सपैक्टर से कहा यह तो स्वयम् ही जाने को तैयार हैं, आप इन्हें घसीटते क्यों हैं? इसका उत्तर सब इन्सपैक्टर ने यह दिया कि आप को डिप्टी साहब ने याद किया है, आप भी साथ चले चलिये। 'बहुत अच्छा' कहकर मैं भी उनके साथ हो लिया। हमें अन्दर लेकर कोतवाली के बड़े द्वार की खिड़की बन्द करदी गई। द्वार तो पहले से ही बन्द था। खिड़की बन्द होने पर सब इन्सपैक्टर ने मुझ से कहा—'प्रोफेसर साहब! आपका भी वारन्ट है।' इस तरह नाटकीय ढंग पर गिरफ्तार होकर मैं दिल्ली की जेल में दूसरी बार पहुंचा।

जेल के दरवाजे में घुसते ही ड्योढ़ी में पं० बधावाराम से मुलाकात हुई। आप लम्बे चौड़े पंजाबी गठन के गोरे रंग के व्यक्ति थे। चेहरे पर प्रायः हंसी रहती थी। हां, जब गुस्सा आता था तब आंखें और चेहरा दोनों लाल हो जाते थे। आवाज खूब ऊंची और रोबदार थी। पुराने जमाने के अफसर होने के कारण अच्छी अंग्रेजी नहीं बोल सकते थे, परन्तु विशेष बात यह थी कि बड़े अंग्रेज अफसर के सामने धाराप्रवाह गोराशाही अंग्रेजी बोलने में जरा संकोच नहीं करते थे। महावरे या व्याकरण की कोई परवाह न करके धड़ाधड़ बोलते जाते थे। अंग्रेजी भली हो या बुरी, उनका काम चल जाता था।

मिलने पर हंसते हुए चेहरे से पं० बधावाराम ने कहा 'आइये, मैं तो आपकी इन्तजार ही कर रहा था।' और हाथ बढ़ाकर खूब जोर से मिलाया। मुझे उस समय तीन वर्ष पहले की बात याद आ गई, जब मैं प्रातःकाल के अन्धेरे में फिरोजपुर जेल में प्रविष्ट हुआ था, तब पंजाब के जेल विभाग में ईमानदारी के लिये सब से प्रसिद्ध दरोगाजी से भेंट हुई थी। वह भेंट जितनी ठंडी थी, पं० बधावाराम से यह पहली भेंट उतनी ही गरम थी। सिपाहियों और अपने सहायकों और शायद दो-एक सी० आई० डी० के सज्जनों के सामने वह मेरा हाथ पकड़े हुए ड्योढ़ी से अपने कमरे में ले गये और वहां ले जाकर कुर्सी पर बिठाते हुए कहा—'प्रोफेसर साहब! आपने पहले भी जेल देखा है और अब बधावाराम का जेल भी देखिये। घर से ज्यादा आराम न दे दिया तो मेरा नाम भी बधावाराम नहीं।' यह बात डिप्टी साहब ने जेल के सहायक जेलरों और नम्बरदारों के सामने छाती ठोक कर कही! मैं अंग्रेज नौकरशाही की जेल में बैठा हुआ आश्चर्य से उस अफसर के मुंह की ओर देख रहा था और सोच रहा था कि यह मेरे साथ व्यंग या मजाक कर रहा है या सच्ची बात कह रहा है।

[३]

उपर्युक्त भूमिका के पश्चात् मेरा जो जेल-जीवन आरम्भ हुवा मैं उसका विस्तार से वर्णन नहीं करूंगा। उस जीवन का अनुभव दिल्ली के सत्याग्रहियों के अतिरिक्त देश के प्रायः प्रत्येक प्रान्त के नेता और राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता कर चुके हैं। जब डाक्टर अन्सारी के बंगले पर कांग्रेस की वर्किंग कमेटी के सब सदस्य गिरफ्तार हुए थे तब दिल्ली जेल का प्रबन्ध पं० बधावाराम के ही हाथ में था। वह सभी लोग उस अद्भुत जेलर और उसके सहायक महन्त नारायणदास को अबतक याद करते हैं। यह मानना पड़ेगा कि राजनैतिक बन्दियों के लिये पं० बधावाराम के समय का कारागार मुख्यतया चार दिवारी तथा ताले चाबी तक ही परिमित था।

हम लोगों को उस खुली बैरक में रखा गया था जो, उन दिनों गोरा बैरक कहलाती थी। वहां पहुंचने पर हम लोगों ने देखा कि जो टट्टियां बनी हुई हैं, वह अच्छी नहीं। शिकायत करने पर बिलकुल नई टट्टियां साबरमती आश्रम की टट्टियों के ढंग पर बनवा दी गईं। जब मौसम जरा गर्म हुआ तो हम लोगों के कहने पर बारक के कमरों में छत के पंखे लगवा दिये गये। दूध, घी आदि सब सामान 'ए' क्लास के कैदियों की मार्फत खुले तौर पर बाहर से आ सकता था। मिलने-जुलने में कोई विशेष रुकावट नहीं थी। कभी कभी दोपहर के समय दफ्तर में प्रायः सभी राजनैतिक बन्दी और उनसे मिलने वाले बीसियों मुलाकाती इकट्ठे हो जाते थे। उस समय दफ्तर में तिल रखने की भी जगह नहीं बचती थी। कभी-कभी तो दफ्तर के अन्दर के कमरे में कैदियों और मुलाकातियों की युद्ध समिति भी हो जाती थी। एक साथ मिलकर फलाहार तो प्रायः होता ही रहता था। कभी कभी सी० आई० डी० के लोग डिप्टी कमिश्नर के पास शिकायत भेजकर थोड़ी बहुत दिक्कत पैदा कर देते थे, परन्तु पं० बधावारामजी अपनी व्यवहार कुशलता द्वारा उलझन को शीघ्र ही सुलझा लेते थे और गाड़ी फिर अपनी पटरी पर निर्विघ्न रूप से चलने लगती थी।

एक बार मामला बहुत पेचीदा हो गया। सी क्लास के लगभग १०० राजनैतिक बन्दियों ने दरोगा के पास अपनी शिकायतों और मांगों की लम्बी सूचि भेजते हुए धमकी दी कि यदि मांगें पूरी न की गईं तो वह भूख हड़ताल कर देंगे। पं० बधावाराम का खयाल था कि सारी मांगें एक साथ पूरी नहीं की जा सकतीं। उनका यह भी विश्वास था कि कैदी लोग भूखहड़ताल नहीं करेंगे क्योंकि उनकी शिकायतों को दूर करने का प्रयत्न बराबर होता रहता है। इस भरोसे पर वह धीरे धीरे चल ही रहे थे कि भूख-हड़ताल शुरू हो गई और जेल में 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारे गूंजने लगे। पं० बधावाराम इन बातों से बहुत खिन्न होकर अपने घर चले गये। जब खाने का समय आया तब नौकर को आवाज दी कि खाना ले आओ। नौकर ने आकर डरते डरते जो उत्तर दिया उससे पंडित जी स्तब्ध रह गये। उसने आकर बतलाया कि आज रोटी नहीं बनी, क्योंकि माजी ने चूल्हे में आग जलाने से मना कर दिया है। अब तो पं० जी बहुत घबराये। उन्हें खाने का बेहद शौक था। मशहूर था कि वह सुबह के नाश्ते के समय एक बड़ा कटोरा भर मलाई खाया करते थे। आपने अन्दर जाकर पूछा तो पत्नी ने उत्तर दिया— जेल में लड़के भूखे मर रहे हैं

'अनिल बाबू! यह पुड़िया दे दो शहद के साथ गोविन्दा महाराज भीतर प्रवेश करते बोले — ग्राम के वैद्यराज ने दी है।'

शोभा को दवा दी गई। वह नेत्र बन्द करके सो जाने का प्रयत्न करने लगी।

अनिल का स्थान करुणा ने लिया और अनिल स्नान करने चला गया।

राधा फिर अपने काम में जा लगी और गोविन्दा महाराज भी अपने काम से चले गये। जाते-जाते कहते गये :—

'देखो मां, मैं बारह बजे बाद लौटूंगा। सबको भोजन करा देना— मेरी प्रतीक्षा करना मत।'

'क्यों?' राधा ने पूछा।

'मुझे कुंवर साहब के गांव जाना है।'

'तो भोजन करके ही जाओ न?'

'नहीं मां, दो मील दूर तो है ही। अभी-अभी पीछा आता हूं न?'

नहीं, भोजन बाद ही जाना।' राधा ने कहा।

राधा ने तवा चूल्हे पर चढ़ा दिया और एक थाली में शाक परोस गर्मागर्म मोटी रोटी थाली में रख गोविन्दा महाराज के सामने सरका दी।

'तुम नहीं मानोगी। अच्छा तो खा लूं।'

ऐसा कह लोटा भर महाराज वहीं जमीन पर बैठ गये।

'यह भाई कौन है राधा?'

राधा का का मुंह शर्म से जरा लाल हो गया, पर लकड़ियों को ठीक करने के बहाने से उसने यह आवेश देखने नहीं दिया।

'तुमको याद है न कि मैं ढाबा चलाती थी?'

'हां!'

'वहीं का एक विद्यार्थी। इनके साथ जो बहन है, यह है इनकी मित्र। दोनों साथ ही कालेज में पढ़ते हैं और यह बहन जो—शोभा पर इसके विषय में सब अभी जानना है।'

'ठीक, पर देख मां— किसी भी प्रकार इनको यह न लगने देना कि यह स्थान पराया है। मैं तो अब सन्ध्या तक आऊंगा। एक जगह कथा-पूजा भी करनी है। इससे देर हो तो भी चिन्ता मत करना।'

'अच्छा!' राधा बोली।

और इसके बाद हाथ में लाठी ले गोविन्दा महाराजा लक्ष्मीपुर की तरफ चल दिये।

स्नान करने के बाद जब अनिल लौटा, तब करुणा ने कहा:— 'अनिल बाबू! तुम यहीं बैठो। मैं रसोई में जाती हूं।'

'अच्छा!' अनिल बोला और करुणा भोजनालय की ओर चल दी।

कांटों की बाड़ से घिरे हुये ये तीन मिट्टी के कच्चे मकान थे। दाईं ओर का मकान—कोठरी भोजन के काम आती थी। बीच के घर में राधा सोती और बाईं बाजू की कोठरी में गोविन्दा महाराज। छप्पर पर बेलें छायी हुई थी। और इन सब पर थी बरगद की छाया। तीनों कोठरियों की खिड़कियों में से बहती हुई गंगा दिखाई देती थी।

इस बाड़े के बाईं तरफ ऊपर, नदी के किनारे शंकर का मंदिर था और उसके ऊपर से गांव का सुन्दर दृश्य दिखाई पड़ता था— छोटे छोटे कच्चे मिट्टी के घर, बीच-बीच में नीम के वृक्ष और दूसरी ओर सुन्दर श्वेत!

रसोई में घुसते ही करुणा ने देखा कि लगभग सब तैयार है। थोड़ा-सा आटा (गुंदा हुआ) अभी बाकी है। राधा विचारमग्न बैठी है और तवे पर रोटी जल रही है।

'आऊं क्या मदद करने?' करुणा बोली।

'ओह! आओ' स्वस्थ होते हुये राधा बोल उठी और अपनी इस असावधानी पर उसे खूब लज्जा आई।

'लाओ, मैं बेलूं और तुम सेंको!' करुणा बोली।

'अच्छा!' पट्टा सरकाते हुये राधा ने कहा। करुणा रोटियां बेलने लगी और राधा लग गई सेंकने में; यह काम करते-करते दोनों मौन ही रहीं।

जब सब रोटियां तैयार हो गईं, तब करुणा ने पूछा:—

'बहन! यहां कितने समय से हो तुम?'

'दो-तीन वर्ष हुए।'

'अकेली ही हो?'

'नहीं।' और फिर कहा— 'गोविन्दा महाराज भी हैं।'

'कौन गोविन्दा महाराज?

इसका क्या जवाब दे, यह राधा को सूझा नहीं। थोड़ी देर मौन रह कर वह बोली:— वे हैं!

करुणा चुप रही। और क्या पूछना है यह। उसे सूझा नहीं।

थोड़ी देर तक पुनः मौन व्याप्त रहा। इसके बाद राधा ने पूछा:—

'अनिल बाबू की मित्र हो तुम न?

'हां!'

'कालेज की?'

'हां!'

'साथ ही पढ़ते हैं.....?'

'हां!'

'साथ ही रहती हैं.....?'

'हां!'

ये सब बातें राधा को कैसे मालूम? करुणा विचार करने लगी।

'यह बहिन कौन हैं?'

'शोभा।'

'शोभा कौन?'

'अनिल बाबू की बहिन।'

'सगी?'

'नहीं!'

'तो?'

'इनके बड़े चाचा की लड़की।'

'उनका नाम?'

'बाबू राधेमोहन।'

'ओह! उनकी पुत्री? जहां तुम पढ़ती हो, वहीं रहती हैं?'

'हां, वहीं ससुराल है!' करुणा बोली।

'क्या हुआ है इन को?'

'बात बहुत दुःखदायी है।' करुणा बोली।

राधा दत्तचित्त हो सुनने लगी।

अनु० — मृदुल]

(क्रमशः)

मिर्गी का २४ घण्टों में खात्मा। तिब्बत के सन्यासियों के हृदय का गुप्त भेद, हिमालय पर्वत की ऊंची चोटियों पर उत्पन्न होने वाली जड़ी बूटियों का चमत्कार, मिर्गी हिस्टीरिया और पागलपन के दयनीय रोगियों के लिये अमृत दायक। मूल्य १०॥) रुपये डाकखर्च पृथक।
पता—एच. एम. आर. रजिस्टर्ड मिर्गी का हस्पताल हरिद्वार।

दो समस्यायें

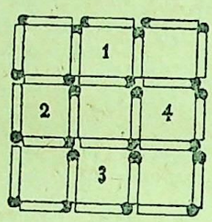

प्रश्न: दिया सलाई की ४ तीलियों को ऐसे हटाइए कि ५ समकोण चतुर्भुज शेष रह जायें।

उत्तर: बाहर वाली तीलियों को जो नं० १, २, ३, और ४ समकोण चतुर्भुज बनाती हैं, हटाइए। ४ समकोण चतुर्भुज लुप्त हो जायेंगे और शेष ५ रह जायेंगे।

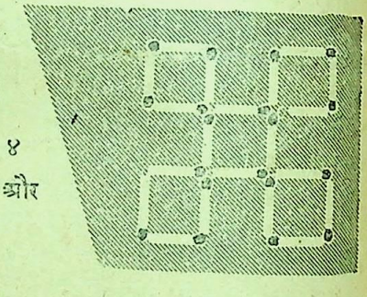

इस समस्या का निवारण कठिन नहीं था। "अपनी बचत का व्यय कैसे किया जाय"—इस दूसरी समस्या की निवृत्ति भी कठिन नहीं है।

अपनी बचत नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स में लगाइए।

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट्स

निम्न लिखित मुख्य लाभ यह हैं:—

(१) आप ५, १०, ५०, १००, ५००, १०००, या ५०००, रु० के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफ़िकेट्स खरीद सकते हैं।

(२) कुटुम्ब का प्रत्येक व्यक्ति (वयस्क या अल्पवयस्क) ५००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स खरीद सकता है। दो व्यक्ति मिलकर १०,००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स खरीद सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है। सरकार द्वारा प्रचलित रुपया लगाने की मदों पर जो ब्याज दिया जाता है यह सब से अधिक दर है।

(४) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।

(५) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते हैं (५ रु० का सर्टिफ़िकेट १-१/२ वर्ष पश्चात भी भुनाया जा सकता है)

(६) जिनकी बचत थोड़ी है वह १), ॥), ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्प्स खरीद सकते हैं, ५ रु० के स्टाम्प्स जमा होने पर एक नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट मिल जायेगा।

(७) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्प्स डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकृत एजंटों अथवा सेविंग्ज ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

अपने सेविंग्ज़ ग्रूप में अभी सम्मिलित हो जाइए

Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

हमारा धारावाही उपन्यास

गं गा ज ल

[ले०— श्री इन्द्र बसावड़ा]

शोभा विधवा हो गई और अपना अन्धकारमय भविष्य देखकर काली रात में जङ्गल की ओर प्राणत्याग के लिए गङ्गा के तट पर चली गई। उसके भाई अनिल ने करुणा को लेकर उसको खोज लिया।

(गताङ्क से आगे)

जब राधा एक साड़ी लेकर भीतर आई, तब करुणा खाट का सहारा लेकर खड़ी हो गई थी।

"अनिल बाबू!" राधा धीरे से बोली।

"राधा!" अनिल ने कहा।

"यह साड़ी; जागे तब दे देना। मैं पूजा करने जाती हूं।" और यह कह कर राधा मन्दिर में पूजा करने चली गई।

मन्दिर का घण्टा बजने लगा। अन्दर के भाग में वह गई। गोविन्दा महाराज माथे पर साफा लपेटते वहां आये और बोले —

"बाजार से क्या लाना है मां?"

"ककड़ी, मेथी-पालक और घी भी लेते आना!"

"अच्छा, तो मैं जाता हूं।"

"हां!" राधा ने कहा और मन्दिर के भीतरी भाग में फूलों की छोटी सी टोकरी तथा चन्दन लेकर घुस गई।

सुन्दर शिव-लिंग था। ऊपर जलाधारी में से शंकर पर जल टपकता था। चन्दन तथा फूलों की सुगन्धि चारों ओर व्याप्त हो रही थी और घी का दीपक टिम-टिम-टिम-टिम जल रहा था।

राधा ने अपना चन्दन शंकर को चढ़ाया; फिर पुष्प चढ़ाये और पद्मासन लगा प्राणायाम करने लगी।

और इस ध्यान में उसे शंकर और सती की प्रेम-गोष्ठी याद आ गई। सती का शंकर के लिए स्नेह; दक्ष प्रजापति का इन्कार, सती का शंकर के साथ विवाह और ..... विचार-धारायें आगे बढ़ने लगीं।

दक्ष प्रजापति का यज्ञ-समारोह, सती का क्रोध और स्वयं उत्पन्न की हुई अग्नि में सती का अवसान ..... और इसके पश्चात् की भयंकर रुद्र आकृति और तांडव-नृत्य।

ओह! सती का शव हाथ में ले जंगलों में भटकते महादेव! तुम कहां हो? राधा गद्-गद् बोल उठी। उसने हिमालय के दृश्य देखे। हिमाच्छादित श्वेत शिखर; ठंडी वायु और देवदार के कांपते वृक्ष तथा वन; और उसके ऊपर तपस्या करते देवाधिदेव महादेव!!

राधा ने अपने नेत्र खोले। हां, वे ही शंकर सामने हैं; पर आज इस हृदय में यह घबराहट कैसी? हृदय में इतनी व्याकुलता क्यों है?

और वहां बैठी बैठी राधा आज प्रातःकाल के दृश्य का स्मरण करने लगी। रोज सवेरे पांच बजे उठकर, कलकल निनादिनी गंगा में वह स्नान करती है। अदृश्य सूर्य को अर्घ्य दे, चन्दन और पुष्पों से शंकर की दो दो घन्टे तक स्तुति करती है। पर आज क्या का क्या बन गया?

उसकी आंखों के सामने राधा मिश्राणी नाचने लगी। उस शहर की गन्दी गली में स्थित दूकान में भोजन बनाती — 'हाबा' चलाती राधा उसे याद आई। और उस रात्रि का दृश्य? राधा! राधा!!

हां, तो उस दिन अनिल बाबू आने वाले थे; हृदय में अपूर्व भावों का अनुभव करती राधा मिश्राणी ने अनिल बाबू के लिए मिष्टान्न बनाये थे और उन सब को ठोकर मार, मानों उसके हृदय को टुकड़े टुकड़े करके अनिल बाबू उस रात को चले गये थे और यह सब होने पर भी, वह अनिल बाबू के सम्मुख वह तिरस्कार अथवा विद्रोह की भावना प्रकट नहीं कर सकी थी और न मन में ला सकी थी।

और इसके बाद तो वह गोविन्द महाराज के साथ इस ग्राम में आकर रहने लगी थी।

और आज अकस्मात् उन्हीं अनिल बाबू से भेंट हो गई थी। उस समय कुछ भी विचार करने का उसको समय नहीं मिला था।

"यह शोभा — शोभा नामकी यह लड़की कौन होगी? और यह करुणा वही करुणा, जिसके विषय में रसिक-बिहारी और सुधीर न जाने क्या क्या कहते थे?"

मन्दिर में फिर घन्टा बजा। राधा का ध्यान मानों टूटा। ग्राम के मनुष्यों का आना-जाना अब दर्शन के लिए शुरू हो गया है। अब उसे उठना चाहिये। और शंकर के चरणों में साष्टांग प्रणाम कर वह उठी और बरगद के नीचे वाली कोठरी में आकर भोजन बनाने में लग गई।

दो एक घन्टे बाद करुणा की नींद टूटी।

"खूब सोईं?" अनिल ने खाट पर बैठे-बैठे ही पूछा।

"ओह! मैं सो गई थी क्या?" करुणा ने पूछा।

"लगता तो ऐसा ही है।"

"लाओ लाओ, मैं नहा आऊं।"

"अच्छा! राधा यह साड़ी दे गई है।"

"ओह! मुझे जगाया क्यों नहीं?"

"सारी रात का जागरण! अच्छा हुआ न थोड़ी-बहुत नींद आ गई।"

करुणा उठी और साड़ी ले बाहर आई।

लगभग साढ़े आठ या नौ बजे होंगे। गंगा के जल पर सूर्य की किरणें पड़ रही थीं और उसका जल झिलमिल झिलमिल कर रहा था। वायु की लहरें पानी की तरंगों से टकरातीं। जलकणों के साथ बरगद के पत्तों को हिलाती-डुलाती बह रही थी। पवन के इस शीतल स्पर्श से करुणा प्रफुल्लित हो उठी। एक अनुपम चेतना मानों उसके रोम-रोम में व्याप्त हो गई। उसकी इच्छा हुई कि इस बरगद पर चढ़ जाये और वहां डाल पर बैठी-बैठी गंगा की तरंगों का नृत्य देखती रहे।

और इसी विचार में वह बरगद के पास आकर खड़ी रही। ओह! कैसी शीतलता है? फर-फर करती वायु चल रही है और उसके वस्त्र तथा बालों से क्रीड़ा करती बहती जा रही है। बड़ की घनी छाया पानी में प्रतिबिम्बित हो रही है और इससे जल श्यामल बन गया है। उसे 'मेघदूत' याद आया।

गंगा के प्रवाह के ऊपर बादल और उनका पड़ता हुआ प्रतिबिम्ब मानों गंगा और यमुना के संगम की याद दिलाता था।

क्या इस बरगद का प्रतिबिम्ब भी यमुना गंगा के समागम की याद नहीं कराता?

और फिर तो करुणा वृक्ष के तने के सहारे टिक कर पानी की तरंगें देखने लगी। आस-पास का सारा ही ध्यान वह भूल-सी गई। बस एकमात्र गंगा है; उसकी तरंगें हैं; सुन्दर बहता समीर है और सांय-सांय करते बरगद हैं।

यह दृश्य राधा ने भोजनालय की खिड़की में से देखा। बरगद का सहारा लेकर करुणा खड़ी है और उसके मुख पर आनन्द, सुख और शान्ति के भाव हैं, पर राधा कुछ बोली नहीं।

थोड़ी देर बाद अचानक दोनों की आंखें चार हो गईं।

'क्यों, क्या देखती हो?' राधा ने पूछा।

'यही खड़ी तुम्हारी इस गंगा-मैया को देखती थी।' करुणा बोली।

'स्नान करने आई हो क्या?'

'हां, यह रह तुम्हारी साड़ी। नहाने आई, पर मुझे तो गजब की नींद आ गई थी।'

'रात भर जागी हो, नींद आनी ही चाहिए न।'

'क्या कर रही हो तुम?'

'कोई खास काम नहीं, जरा भोजन.....'

'हां..हां। मैं अभी आती हूं।'

'नहीं उतावल नहीं। तुम आनन्द से नहाओ। तैरना आता है?'

'हां, साधारण-सा, तो मैं नहाकर कर आती हूं' करुणा बोली। 'कोई जल्दी नहीं।'

और फिर तो करुणा जरा नीचे उतरी और पानी में डुबकी लगा तैरने लगी।

शीतल जल का स्पर्श कितना आह्लादक था? अंग प्रत्यंग में मानों जीवन सचार करता था। करुणा बहुत देर तक नहाती रही। आज अकस्मात उसके हृदय में उमंग और आनन्द की तरंगें उठने लगीं।

कहां कल रात्रि की हृदय-व्यथा, पीड़ा और घबराहट और कहां आज का आनन्द और उमंग। करुणा को भी इसकी समझ नहीं पड़ी।

शोभा ठीक हो जायगी वह अवश्य स्वस्थ हो जायगी उसका अन्तरात्मा पुकार कर कहने लगा, और इन्हीं विचारों में मस्त बनी हुई करुणा गंगा की तरंगों के साथ क्रीड़ा करती, उसका जल उछालती, छप-छप करती डुबकियां लगाती तैरती हुई स्नान करती रही।

इसी समय अनिल ने आवाज लगाई—

'करुणा! करुणा!!'

'क्या है अनिल बाबू!'

'शोभा। शोभा ने आंख खोली।'

'आई अनिल बाबू!'

इसी प्रकार अनिल ने राधा को भी पुकारा।

राधा भोजन का काम ज्यों का त्यों ही छोड़ अनिल वाली कोठरी में गई और देखती है तो शोभा के नेत्र खुले हैं और वह आस पास के वातावरण को समझने का प्रयास कर रही है।

'शोभा!' अनिल ने मन्द स्वर में पुकारा।

'दादा!' शोभा बोली, और अनिल का हाथ पकड़ माथे के पास लेकर बालक की तरह रोने लगी।

अनिल उसके सिरहाने बैठ गया और उसका सिर सहलाता हुआ आश्वासन देता रहा।

'शोभा! कैसी है?'

पर एक फीके-मन्द हास्य के सिवा शोभा कुछ बोली नहीं।

और मेरे घर में रोटी बने यह कैसे हो सकता है। मैं भी बच्चों वाला हूं। जब लड़के भूख हड़ताल तोड़कर खाना खा लेंगे, तब मेरे चूल्हे में भी आग जल जायगी।' अब तो बधावारामजी के होश गुम हो गए। भागे हुए जेल में आये और मुझे तथा श्री देवदासजी गांधी को (देवदास जी भी हमारे साथ ही जेल में थे) अलग ले गए और हड़ताल तोड़ने के उपायों पर परामर्श करने लगे। हमने उन्हें समझाया कि लड़कों की मांगें उचित हैं उन्हें पूरा करना ही चाहिये। बेचारे रात भर भूखे रहे और प्रातःकाल उठते ही जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट (जिनका नाम, जहां तक याद है, मेजर वैब था।) के घर पर पहुंचे और उन्हें अधिकतर मांगों की स्वीकृति के लिये तैयार कर लिया। दोपहर तक कैदियों की शिकायतों को दूर करने का आश्वासन मिल गया, जिससे भूख हड़ताल टूट गई और प० बधावाराम जी के घर में भी चूल्हा गरम हो गया।

इसी प्रसंग में अन्य समाचारों के साथ हम लोगों को यह समाचार भी मिला था कि पं० बधावारामजी की साहसिकता का यह हाल था कि जब एक दिन सायंकाल के समय मुलाकात के पश्चात मेरे परिवार को घर वापिस जाने के लिए तांगा न मिला तो उन्होंने अपनी विक्टोरिया गाड़ी जुतवा कर उसमें परिवार को भेज दिया। हम लोगों के कहने पर एक बार हमारे घर से ग्रामोफोन और दूसरी बार हमारे एक और साथी के घर से वायलन भी मंगवा दिया था। हम स्वयं आश्चर्य किया करते थे कि एक भारतीय जेल का दरोगा इतना साहस कैसे कर सकता है।

इस स्थान पर मेजर वैब के सम्बध में कुछ शब्द लिख देना भी आवश्यक है। वह सम्भवतः नयी दिल्ली के हैल्थ आफिसर थे। उनके व्यवहार में वह सब वस्तुयें पायी जाती थीं, जिन्हें अंग्रेजों के गुण समझा जा सकता है। दोष थेया नहीं यह मैं नहीं जानता। हम लोगों से उनका जितना वास्ता पड़ा उसके आधार पर मैं यह नहीं कह सकता हूं कि वह दिल के बहुत ही अच्छे आदमी थे। मैंने बहुत से ऐसे अफसर देखे हैं जो हुकूमत का अभिप्राय यह समझते हैं कि उनका कुछ बने या न बनें, प्रजा को किसी प्रकार की सहूलियत न मिलनी चाहिये। मैजर वैबकी तबीयत यह थी कि यदि अपनी कोई हानि न हो तो कैदियों को अधिक से अधिक आराम दिया जाय सुपरिन्टेन्डेन्ट की इसी तबीयत का परिणाम था कि पं० बधावाराम को राजनैतिक कैदियों के साथ ऐसा अच्छा सलूक करने का अवसर मिलता रहा।

[४]

लगभग ३ वर्ष तक पं० बधावराम ने दिल्ली जेल का प्रबन्ध किया। इस समय में वह सैकड़ों देशभक्त पुरुषों और स्त्रियों के हृदयों पर अपनी अच्छी अच्छी स्मृति अंकित कर गये, परन्तु नौकरशाही हकूमत में ऐसी साहसिकता की अधिक गुंजाइश नहीं रहती। न जाने यह तीन साल किस कठिनाई से कटे होंगे। सी० आई० डी० के गोइन्दे निरन्तर बधावारामजी की शिकायतें करते रहते थे। अन्त में उन्हें दिल्ली से मुलतान भेज दिया गया, जहां वह पुराने सैन्ट्रल जेल के डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट बनाये गये। वहां जाकर भी पं० जी ने दिल्ली की नीति पर चल कर राजनैतिक कैदियों को आराम देने का यत्न किया, परन्तु वहां मैजर नहीं थे और न दिल्ली का शहर था। वह पंजाब था और सुपरिडेन्ट थे डाक्टर खान परिणाम यह हुआ कि डाक्टर खान की सिफारिश पर कुछ ही समय पीछे बधावाराम को नौकरी से मुअतिल (स्थगित) कर दिया गया और अन्त में समय से पूर्व ही कम पेन्शन पर नौकरी से अलग होने पर मजबूर किया गया, भला नौकरशाही हकूमत में सज्जनता और उदारता चिरकाल तक कैसे खप सकती थी?

———

१९४४ के परिणाम

हिन्दुस्थान

ने सफलता की एक और मंजिल पूर्ण की

उन्नति पर प्रकाश

चालू बीमा	३२ करोड़ से ऊपर
कुल पूंजी	६ करोड़ ८९ लाख से ऊपर
प्रीमियम की आय	१ करोड़ ५० लाख से ऊपर
दावे का भुगतान (१९४४)	३७ लाख ८० हजार से ऊपर
नया कारोबार (१९४४)	१० करोड़ रुपये से ऊपर

हिन्दुस्थान को-ओपरेटिव इन्श्योरेंस सोसायटी लि०

हेड आफिस—हिन्दुस्थान बिल्डिंग्स, कलकत्ता।

देहली ब्रांच—हिन्दुस्थान बिल्डिंग्स, न्यू देहली।

सन्यासियों की गुप्त बूटियां

इस पुस्तक में सैकड़ों ऐसी जड़ी बूटियों के गुप्त रहस्य प्रकट किये गये हैं, जिनसे सन्यासियों की धाक जमी हुई है। हालांकि इनमें से अधिकांश बूटियां आपको जगल, खेत बागीचों और पंसारियों की दुकानों पर भी मिल सकती हैं, जिनसे आवश्यकता पड़ने पर स्त्रियां भी सिर से पांव के नख तक के सभी रोगों का इलाज घर में ही कर लिया करेंगी। इस पुस्तक को पढ़ लेने के बाद आप इस युग के धन्वन्तरि समझे जायेंगे। रोगियों का तांता बंधा रहेगा। कुछेक बूटियों की सूची-

लाख-लाख रु० के प्रयोग—(१) ऐसी बूटी कि जिसकी लकड़ी कान में लगा देने से सर्प काटे का विष मुख द्वारा निकल जाता है, (२) वह बूटी जिससे गूढ़ गर्भ ५ मिनट में निकल जाता है, (३) मधुमेह की अक्सीर बूटी, (४) दुबले पतले आदमी को मोटा ताजा बना देने वाली बूटी, (५) सात दिन में नपुन्सक को मर्द बनाने वाली बूटी, (६) दमे की अद्भुत बूटी, (७) वह बूटी-जिसके रस में अंगुली डुबाने से तत्काल ज्वर उतर जाता है, (८) गर्भ रोक बूटी, (९) उपदंश को ७ दिन में मिटाने वाली बूटी, (१०) निमोनिया की बूटी, (११) वह बूटी जिससे बन्ध्या के पुत्र पैदा हो। ऐसी ही सैकड़ों बूटियों का वर्णन इसमें है, जिनसे चमत्कार दिखा कर आप सिविल सर्जनों को दंग कर सकते हैं। मूल्य २॥) डाकखर्च ।=)

पता—रसायन फार्मेसी (५) संगरिया (बीकानेर)

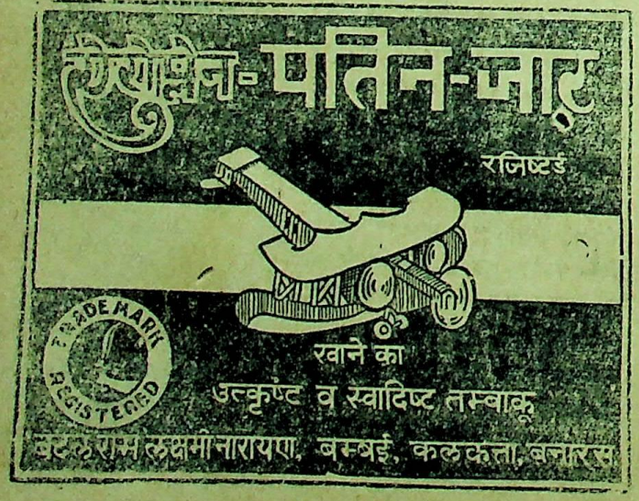

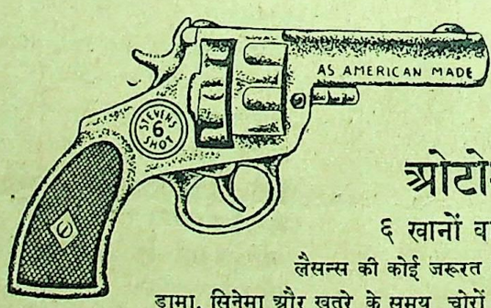

आत्मरक्षा

ओटोमेटिक

६ खानों वाली पिस्तौल

लैसन्स की कोई जरूरत नहीं

ड्रामा, सिनेमा और खतरे के समय चोरों को डराने के लिये बड़े काम की है। दागने पर पिस्तौल के मुंह से आग और धुंआ निकलता है। असली रिवाल्वर की तरह मालूम होती है। साइज ७॥ इंच×४ इंच और वजन १५ औंस। मूल्य ८) और साथ में १ दर्जन गोलियां (एलार्म डिस्क) मुफ्त। अतिरिक्त १ दर्जन गोलियों का दाम २)। स्पेशल तांबे की बनी ६६६ नं० की पिस्तौल का दाम १०)। बेस्ट के साथ केस २॥), पोस्टेज और पैकिंग का अतिरिक्त १=)। प्रत्येक आर्डर के साथ १ शीशी रिवाल्वर का तेल मुफ्त।

नापसंद होने पर दाम वापस

इम्पीरियल चैम्बर आफ साइंस (V. W. D.) पो० बो० ६१ लाहौर

Imperial Chamber af Science (V.W.D.) P.B.61. LAHORE

Haridwar. Digitized by eGangotri

आज के विद्युत युग के विकास का एक पृष्ठ

१९ वीं शताब्दी में विद्युत-यातायात

[श्री विनय]

अभी एक भी सदी नहीं बीती कि लोग यह समझते थे कि बिजली के द्वारा कोई शक्तिशाली काम नहीं हो सकता। लेकिन जब सन् १८७६ में जर्मनी की एक बिजली का सामान बनाने वाली कम्पनी ने एक ऐसी बिजली की रेल बनाई जिसमें आगे की ओर तो बहुत छोटा-सा इंजन होता था और पीछे छोटे चार-पांच छोटे बेबदुमा डिब्बे होते थे, जिसमें कि लोग दोनों ओर बैठते थे तो सब के कान खड़े हो गए। लोगों ने उस समय यह मान लिया कि बिजली के द्वारा काफी काम हो सकता है। वाष्प के इंजन चलते समय धुंआ गर्मी और बहुत कूड़ा करते थे, इस कारण खानों के अन्दर चलने के लिए जो रेल बनाने का विचार किया गया, खानों के अन्दर भाप के इंजिन को तो किसी भी प्रकार से काम में लाया ही नहीं जा सकता था। इसलिए सिर्फ बिजली ही ऐसी शक्ति थी जिसके द्वारा कि खानों के अन्दर भी काम लिया जा सकता था। यही सोचकर खानों के अन्दर रेल बनाने की दृष्टि से बिजली के इंजिन बनाए गए। उस समय के बिजली के इंजिन बिजली लाइन से भी लिया करते थे और ऊपर लगे तारों से भी। अधिकतर इंजन ऊपर लगे तारों से ही बिजली लिया करते थे। उस समय आजकल के इंजनों की तरह से रफ्तार कम-ज्यादा करने का कोई इन्तजाम नहीं होता था। जो थोड़े बहुत परीक्षण किए गए उनमें थोड़ी बहुत सफलता तो अवश्य मिली, लेकिन वह ना के बराबर ही थी। शुरू शुरू के जितने भी इंजिन होते थे, उनका ढांचा बिल्कुल साधारण अच्छी बनी हुई गाड़ी जैसा होता था और उसके ऊपर एक बिजली का मोटर रखा रहता था और पहियों को चेन या शैफ्ट के द्वारा घुमा दिया जाता था, बिजली ऊपर के लगे तारों से या लाइन से आती रहती थी। अमरीका की खानें बिजली का प्रयोग सबसे अधिक करती थी और उस समय में भी बिजली का प्रयोग करने से खानों को २५ से लेकर ३४ प्रतिशत तक नफा अधिक रहता था।

अक्टूबर १८८३ में लिया डाफट नामक अमेरिकन ने ईम्पीयर नामक एक स्टेण्डर्ड गेज का इंजिन बनाया जो कि पहला ही स्टेण्डर्ड गेज का सफल इंजन था। इसके अन्दर चाल को घटाने-बढ़ाने का भी इन्तजाम था। सन् १८८५ में उसी आविष्कर्ता ने एक और इंजिन बनाया जिसका नाम उसने बेन फ्रांकलिन रखा और इस इंजिन को बहुत दिनों न्यूयार्क के अन्दर काम में लाया गया। बाद में १८८८ में इस इंजिन के अन्दर कई सुधार किए गए उस समय यह दुनिया का सबसे अधिक शक्तिशाली बिजली का इंजिन था। यह दस-दस टन वजन की चार गाड़ियां खींच कर सात मील प्रति घण्टा की चाल से चल सकता था और खाली २८ मील प्रति घण्टे की चाल से चल सकता था। उस समय यह माल बहुत तेज समझी जाती थी।

सन् १८९५ में फ्रैंच वैज्ञानिकों ने एक ऐसा इंजिन बनाया जिसके अन्दर ही भाप से बिजली पैदा होती थी और उस पैदा हुई बिजली से वह चलता था। इस प्रकार के इंजिन को बिजली कहीं बाहर से नहीं लेनी पड़ती थी। इसका दाम ६००० पौंड था और यह १५०० अश्वशक्ति का था, यह हिसाब लगाया गया था कि यह इंजिन अपने ही दाम और अपने ही वजन और लम्बाई इत्यादि के वाष्प के इंजिन से डेढ़ गुना तेज चल सकता है, और डेढ़गुना वजन ले जा सकता था।

सन् १८९० में लन्दन की भूगर्भ रेल बनाई गई थी। इसके एक इंजिन का वजन २१७०० पौंड था और हरेक इंजिन के अन्दर धुरी में पचास-पचास अश्वशक्ति की दो मोटरें लगाई गई। यह इंजिन साढ़े तेरह से पन्द्रह मील की चाल से चल सकते थे। इन इंजिनों के अन्दर वैक्युयम ब्रेक लगाए गए थे।

शुरू-शुरू में जो बिजली के इंजिन बनाए गए वे बहुत बड़े होते थे।

सन् १८९१ तक जितने भी इंजिन बनाए गए सब के अन्दर केवल एक ही मोटर होती थी, लेकिन बाद में जो इंजिन बनाए गए उनके अन्दर दो से अधिक मोटरें भी रखी गई, और दोनों की दोनों मोटरों को ठीक धुरी पर रखा गया, इससे सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि एक तो इंजिन की शक्ति दो मोटरों के होने के कारण से दुगनी हो गई और दूसरे क्योंकि मोटर को सीधा धुरी के बीच में रखा गया इसलिए कम से कम रगड़ हुई और इस प्रकार जो इंजिन की शक्ति का एक बड़ा भाग बरबाद हो जाता था वह न होने पाया।

सबसे पहले खानों के लिए इंजिन सन् १८८३ में सीमैन्स एन्ड हालास्के नामक जर्मन कम्पनी ने रायल कोल माइन्स के लिए बनाया, यह इंजन बारह टन की पन्द्रह गाडियां खींच सकता था और पूरी तरह से लदे हुए इसकी चाल साढ़े चार मील प्रति घंटा थी। यह इंजन खान के अन्दर काम करने वाले इंजनों में पहला सफल इंजन था और प्रतिदिन सात आठ सौ गाडियां ढोता था। बहुत से देशों की खानों के अन्दर बिजली की रेल बन गई थी।

सन् १८९५ में बाल्टीमोर एण्ड ओहियो नामक अमरीकन रेल जो कि अन्य रेलों की भांति भाप से चलती थी उसे बिल्कुल बिजली से चलने वाला बना दिया गया। पहले यह रेल शहर के अन्दर मुसाफिरों को लेने के लिए शहर की भूमि के अन्दर साढ़े तीन मील चलती है। इसके लिए जो इंजन बनाया गया वह अपने समय का बस सबसे बड़ा इंजन था, इस इंजन के नीचे की ओर चार मोटर लगाए गए थे। यह स्टैण्डर्ड गेज का इंजन था और इसका वजन ९० टन था और इस प्रकार के जो इंजन थे वे पांच सौ टन वजन की गाड़ी को खींचकर ३५ मील प्रतिघंटा की चाल से चल सकते थे और जब इनके पीछे १६०० टन वजन बांध दिया जाता था तब इनकी चाल १२ मील प्रतिघंटा हो जाती है। अपने शेष समय में इन इंजनों से बड़ी प्रसिद्धी पायी।

जब कोई रेल किसी लम्बे अन्तर पर चलती है तो उस समय तो बिजली से भाप की जगह बहुत ही बचत होती है। केवल २-२ डालर बिजली की रेल का किराया ही सस्ता नहीं होता था, बिजली की रेल चलते हुए बाहर की ओर कोयला इत्यादि नहीं फेंकती, उन्नीसवीं शताब्दी के अन्दर बिजली का काम करने वाली कोई भी कम्पनी ऐसी नहीं थी जिसको कि घाटा हो और सबकी सब कम्पनियां खूब नफे पर चल रही थीं और लोगों को भी बिजली की रेल और ट्राम इत्यादि में सफर करना भाप की रेल और घोड़ों की गाड़ी इत्यादि की अपेक्षा सस्ता रहता था और आराम वाला भी।

उमदा व नया स्टाक
अफ्रीकन गर्म कोट

हर प्रकार के ओवरकोट हाफ कोट वास्कोट आदि उमदा और नया माल बाजबी दामों पर स्पलाई किया जाता है। हजारों पब्लिक गाहक वर्षों से फायदा उठा रहे हैं। आज ही नाम लिखे नामा मंगा कर आर्डर बुक करा लीजिये।

सेकन्ड हैंड कोटों की सब से पुरानी कम्पनी
रमेश राज ऐन्ड कम्पनी
सौदागरान कोट
पो. बक्स नं. 682 कराची।

वह पुरुष

जो शक्तिहीन पुरुष किसी भी कारण से शरीर बल नष्ट कर चुके हों और उनके जीवन को घुन लग चुका हो और विशेष दुख से समय व्यतीत कर रहे हों, ऐसे दुखी पुरुषों को शक्ति प्रदान करने का सुअवसर यह है कि 'रिजोवीन' औषधि को १६ दिन तक सेवन कर लें, उनकी गई हुई शक्ति फिर से लौट आवेगी और अपना समय सुख से आनन्द प्राप्त अवश्य करेंगे। शरीर के प्रत्येक बलहीन भाग की यह दवा अमृत तुल्य है और काया को फिर से बदल कर नया जीवन देती है। सारे भारतवर्ष में इस औषधि का प्रचार है और प्रत्येक वर्ष लाखों दुखी पुरुष इस औषधि द्वारा आनन्द प्राप्त कर चुके हैं। शक्तिशाली पुरुष भी यह दवा सेवन करके अपने जीवन के आनन्द को बढ़ा सकते हैं और यह दवा किसी भी ऋतु में सेवन की जा सकती है। इस कोर्स में दो दवायें होती हैं, एक खाने की, दूसरे मलने की। पूरे कोर्स का मूल्य ५) रुपये, डाक खर्च ।≡) अलग।

अक्सीरी दवाखाना कलां महल पो० नं० ४१ (V.W.D.) देहली।

दिल्ली में चांदनी चौक, फतेहपुरी बाजार के तमाम औषधि विक्रेता यह दवा बेचते हैं।

रेडियो में एक साल

[पृष्ठ ६ का शेष]

आरम्भ और अन्त में उसकी उद्घोषणा करते हैं) सिवाय एक हिन्दू के सब के सब 'उर्दू दां' मुसलमान थे। रेडियो से ब्राडकास्ट होने वाले नाटकों में भाग लेने के लिये स्टेशन के वेतन-भोगी अभिनेता और अभिनेत्रियों में सिवाय एक हिन्दू के सब के सब मुसलमान और 'उर्दू दां' थे। लगभग यही दशा प्रतिलिपिकारों और दूसरे स्टाफ आर्टिस्टों के मामले में थी। मतलब यह कि स्टेशन के ऊपर से लेकर नीचे तक, प्रत्येक विभाग और वर्ग में — जहां भी मैंने दृष्टि डाली मुझे मुसलमान उर्दू दां का ही प्रभुत्व दिखाई दिया और ऐसे किलाबन्द स्थान में आ फंसा मैं निहत्था हिन्दी का तुच्छ सेवक, भारतीय संस्कृति का अनुरागी, और कांग्रेस का अनुगामी ! आरम्भ में मेरे पांव डगमगाये और हृदय कांपा, परन्तु बाद में नैतिक साहस का बल पाकर मैं प्रकृतिस्थ हुआ।

यह प्रसंग अधूरा ही रह जायगा यदि मैं आल इंडिया रेडियो के तीन अन्य दिल्लीस्थित दफ्तरों — डायरेक्टर जनरल का कार्यालय अर्थात् आल-इंडिया रेडियो का हैडक्वार्टर, समाचार विभाग और वैदेशिक ब्राडकास्ट विभाग— के स्टाफ का भी उल्लेख न करूं। ये तीनों दफ्तर दिल्ली रेडियो स्टेशन के साथ नई दिल्ली में भव्य-रक्तिम ब्राडकास्टिंग हाउस में ही स्थित हैं। डायरेक्टर जनरल (मि० बुखारी) का कार्यालय, जैसा कि नाम से स्पष्ट है, भारत के समस्त रेडियो स्टेशनों के लिये रीति नीति निर्धारित करता है, उनका नियंत्रण करता है, और उनके लिए अफसर तथा अन्य कर्मचारी (सिवाय स्टाफ आर्टिस्टों के) नियुक्त करता है। इस कार्यालय के स्टाफ के बारे में पत्र-पत्रिकाओं में यथेष्ट प्रकाश डाला जा चुका है। समाचार विभाग में जो कि प्रतिदिन चार बार ब्राडकास्टिंग होने वाली खबरों से सम्बन्ध रखता है, मैंने न्यूज एडीटर, अनुवादक, समाचार उद्घोषक अधिकांशतः मुसलमान और सर्वांशतः उर्दू दां, उर्दू अखबारों से लिये गये और उस विशेष गुट के आदमी ही देखे, जिससे हिन्दी संसार भलीभांति परिचित है। वैदेशिक ब्राडकास्ट विभाग में हिन्दुस्तानी सैक्शन में मैंने हर जगह इसी तरह मुसलमानों और उर्दू दांओं का प्रभुत्व पाया। ले दे के यहां एक हिन्दी का ज्ञाता हिन्दू अफसर था, जो ऊपर नीचे से इस तरह बंधा हुआ था, कि मजाल है कहीं हिन्दी का नाम ले जाये। यहां एक और हिन्दी के ज्ञाता और संस्कृतज्ञ हिन्दू अधिकारी का उल्लेख कर दूं। इन्हें वैदेशिक ब्राडकास्ट विभाग में हिन्दुस्तानी का नहीं, बल्कि वैदेशिक भाषाओं और वैदेशिक संगीत का इंचार्ज बनाया गया था और वे आज भी इसी पद पर हैं। इनकी योग्यता का हिन्दी को कोई भी लाभ नहीं मिल सकता।

यह सब कुछ देखकर मेरा सब से पहला अनुभव यह था कि आल इंडिया रेडियो में मुसलमानों, उर्दू और संस्कृति के पोषकों और समर्थकों, राष्ट्रभाषा हिन्दी के विरोधी लोग, आल इंडिया रेडियो को प्रयोगशाला समझकर पाकिस्तानी फार्मूले का सफल परीक्षण करने में लगे हुए उत्साही और निर्भीक लोगों का अभेद्य दुर्ग है।

क्रमशः

T.B. टी० बी. तपेदिक बड़ा भयंकर रोग है

इस रोग के भयंकर कीटाणु (जर्म) नवयुवकों तथा नवयुवतियों के ही के प्यासे होते हैं और थोड़े ही दिनों में रोगी को काल के गाल में पहुंचा देते रोगी के मरने के पश्चात भी कुटम्ब में किसी न किसी को अपना शिकार ही रहते हैं, इस दुष्ट रोग के जर्मों को नष्ट करनेवाली यदि कोई औषधि है तो आसाम बंगाल की शक्तिशाली महौषधि "जबरी" ही है। जिसने परमात्मा की से सैकड़ों-हजारों ऐसे-ऐसे रोगियों को भी काल के गाल से बचा दिया, जिन "एक्सरे" (X Ray) आदि के बाद डाक्टरों, हकीमों, वैद्यों ने जवाब दे दि था। यह सब उस परम-पिता परमात्मा की कृपा और भारत के पूज्य ऋषियों के से सींचे हुए आयुर्वेद शास्त्र का चमत्कार है। जब ही तो लोगों ने इसका औषधि नहीं, बल्कि काल के गाल से बचानेवाली "ईश्वरीय शक्ति" रख दिया आप इन ही कालमों में अनेक रोगियों के प्रशंसापत्र देख चुके हैं। अब अधि लिखने की आवश्यकता नहीं रही। परमात्मा की कृपा से अब तो अनेक जगह टी. हस्पतालों में भी 'जबरी' का डंका बज रहा है।

T.B. टी.बी. "तपेदिक" और पुराने ज्वर के रोगियों-

अब भी समझो—यदि आप अपनी प्यारी जान को बचाना चाहते हैं तो तुरन्त "जबरी" का सेवन शुरू कर दो। अन्यथा फिर वही कहावत होगी—कि अब पछताए क्या होत है—जब चिड़िया चुग गईं खेत—सैकड़ों हकीम, वैद्य, डाक्टर अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार द्वारा आर्डर देते हैं तार या पत्र-व्यवहार के लिए थोड़ा-सा पता "जबरी" (जगाधरी) Jabri (Jagadhri) लिख देना ही काफी है। मूल्य इस प्रकार है—

"जबरी" स्पेशल नं० १ अमीरों के लिए जिसमें साथ-साथ ताकत को बढ़ाने के लिए सोना, मोती, अभ्रक आदि की मूल्यवान भस्में भी पड़ती हैं। मूल्य पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन के लिए २०) रु०। "जबरी" नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान जड़ी बूटियां हैं। पूरा कोर्स २०) रु०। नमूना १० दिन के लिए ६) रु० महसूल आदि अलग हैं। आर्डर में पत्र का हवाला तथा नं० १ या नं० २ साफ-साफ लिखें। तुरन्त 'जगाधरी के पते पर आर्डर देकर रोगी की जान बचालें १० दिन में ही अद्भुत चमत्कार दिखाई देगा।

पता—राय साहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस ऐण्ड बैंकर्स (३) शिलांग (आसाम) या पंजाब आफिस "जगाधरी"

संतान होने की दवा

जिस स्त्री के सन्तान न होती हो केवल ७ रात तक मशहूर दवा मुहाफिज औलाद खिलाओ। इन सात रात में स्त्री के बदन के अन्दर का हिस्सा ठीक ऐसी हालत में आ जाता है कि आठवीं रात..... स्त्री को गर्भ रह जाता है। इस औषधि की वजह से आज हजारों बहिनों की गोद में बच्चे खेल रहे हैं। जिस स्त्री को सन्तान न होती हो वह नीचे के पते पर पत्र लिख कर दवा मुहाफिज औलाद की शीशी वी० पी० पार्सल द्वारा मंगालें। १ शीशी काफी है जिसका मूल्य दो रुपया आठ आना २॥) है पारसल पर ॥-) महसूल लगेगा।

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४ देहली

Haridwar. Digitized by eGangotri

यह कितने दिन तक चलेगा ?

बनारस राज्य प्रजामण्डल में यह प्रस्ताव उपस्थित करने की सूचना कांग्रेसी सदस्य बशनारायणसिंह ने दी थी — 'बनारस राज्य की जनता हिन्दी भाषा-भाषी है और राज्य की कचहरियों में हिन्दी को स्थान भी मिला है, पर हिन्दी के नाम पर हिन्दी लिपि में अरबी और फारसी के शब्दों में भरी हुई जिस प्रकार की भाषा का व्यवहार किया जाता है वह जनता की समझने की भाषा नहीं है और न उसे हिन्दी कहा ही जा सकता है, अतएव वह प्रजामण्डल राज्य सरकार से सिफारिश करती है कि वह राज्य की ओर से होने वाले प्रत्येक प्रकाशन में हिन्दी के नाम पर अरबी, फारसी का प्रयोग न करके जनता के समझने योग्य हिन्दी शब्दों का प्रयोग करे।'

सुना जाता है कि किसी प्रकार के दबाव में पड़कर प्रस्तावक ने प्रस्ताव वापस ले लिया अथवा पेश ही नहीं किया। यह अच्छा नहीं हुआ। इस दबाव की हम कल्पना कर सकते हैं तथा मानते हैं कि उसका उद्देश्य अच्छा है। परन्तु यह कितने दिन चलेगा? कब तक हिन्दू अपनी भाषा और संस्कृति को उपेक्षित करते रहेंगे? प्रजा की भाषा चाहे जो हो, जिन राज्यों के शासक मुसलमान हैं वहां जबर्दस्ती उर्दू चलायी जाती है, जिसके कारण हिन्दू शासन में अधिक भाग नहीं ले सकते। हैदराबाद इसका उदाहरण है और इधर शासक हिन्दू और अधिकतर प्रजा भी हिन्दू है पर थोड़े से मुसलमान असन्तुष्ट न हों इसलिये उन्हें अपनी मातृभाषा की उपेक्षा करनी पड़ती है। क्या यह न्याय है? हम फिर पूछते हैं, वह कितने दिन चलेगा?

—संसार

तुलसीनगर की स्थापना

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के ३३ वें अधिवेशन के अवसर पर सम्मेलन की स्थायी समिति ने एक करोड़ रुपये की तुलसी स्मारक की योजना स्वीकृत की थी एवं इसकी विस्तृत योजना बनाने के लिये एक समिति भी चुनादी गई थी। इसके बाद उदयपुरके हिन्दी विद्यापीठ कुल ने विद्यापीठ को स्थायित्व देने एवं इसकी वर्तमान चाल प्रवृत्तियों को विकसित करने तथा साथ ही साथ महात्मा तुलसीदास की स्मृति रूप में तुलसीनगर बसाने व तुलसी पान्थशाला स्थापित करने के लिये ११ लाख की महात्मा तुलसीदास स्मारक कोष की स्थापना गत ४ अगस्त को की गई थी। सम्मेलन की स्थायी समिति ने हिन्दी विद्यापीठ की आवश्यकता को ध्यान में रखकर ११ लाख की योजना को स्वीकार किया है।

— गिरिधारीलाल

सीरिया के पत्रों ने शिकायतें प्रकाशित
हैं और मो० साका ने अपने वक्तव्य
यही प्रयत्न किया है कि यह प्रश्न
रिया के लिए सन्तोषजनक ढंग से
तभ्क जाय। अब बहुत से सीरियनों
विचार है कि अलेग्जेंड्रेटा के विषय में
तचीत शीघ्र ही आरम्भ हो सकी है।

घावनाशक
फोड़े, फुन्सी, ज़ख़्म, खाज का अनुपम मरहम
GHAVNASHAK KARYALAYA
PAHAR GANJ
DELHI
स्टाकिस्ट :- जे.पी. कथूरिया एंड सन्स
पहाड़गंज देहली।

बन्द माहवारी (मासिक धर्म)

२४ घन्टे में शुरू

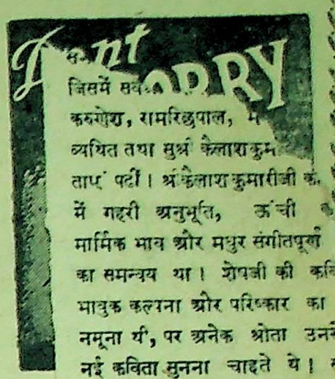

यदि किसी स्त्री की माहवारी रुक गई हो तो हमारी दवा 'कामिनी' से २४ घण्टे में जारी हो जाती है। अगर किसी स्त्री की माहवारी तकलीफ से आती है, रुक-रुक कर आती है। महीने-दो महीने से आती है, तो 'कामिनी' दवा सेवन कर लेने से तमाम खराबियां दूर हो जाती हैं। हजारों स्त्रियां, जिनकी माहवारी रुक गई थी, इस में साफ होकर आने लगी। जिन स्त्रियों वरना गर्भ प्रायः गिर जाता है। (एक शी कीमत दो रुपया आठ आना, डाक-व्यय

अक्सीरी दवाखाना कलां महल;

दिल्ली में चांदनी चौक फतेहपुरी बाजार के सभी

प्यारी द

रमोटिक
गाकती

मेरी महत्ता

मैं तरल तूलिका की मचलन, तुम रंग बिरंगे चित्रकार!
मुझको है तेरी चाह सदा, तुझको है मेरा चाव सदा,
तेरे उद्गारों का मुझसे जगती में चित्रित भाव सदा।
मुखरित सजीवता तो मुझसे इस मूक तुम्हारे अंकन की;
मुझ बिन सब सुषमा ही फीकी इन रंगों के रस-रंजन की।
मेरी गति का नियमन ही तो आता तुमको कलाकार!
मैं तरल तूलिका की मचलन, तुम रंग बिरंगे चित्रकार!!
जब तुमने भरा पात्र मेरा अपनी सुषमा के मधुरस में,
आ गया रूप झट प्रतिबिम्बित, लघु पुतली के कालेपन में।
फिर पलक-पटल के हटते ही वह जगत पटल पर खिंच आया;
उस मधुर छवि की छाया को बिखराना ही दृग को भाया।
आखिर रखती कैसे चितवन, वह रूप-राशि-रस-अतुल भार!
मैं तरल तूलिका की मचलन, तुम रंग बिरंगे चित्रकार!!
कहता है मेरा स्वर ही तो कोकिल-कलरव की कोमलता,
खग-वृन्दों के कल-कूजन की मदमाती मधुरिम मादकता।
जगती में होता महागान मन-वीणा की झंकारों से;
पहचान तुम्हारी भी होती तन्त्री के हिलते तारों से।
स्वर तो मेरा है, लय ही तो बस तेरी, मेरे गीतिकार!
मैं तरल तूलिका की मचलन, तुम रंग बिरंगे चित्रकार!!
मेरी लहरों की उमड़न से सरि-सागर लहरें नाच उठीं,
पत्तों की फड़कन में मस्ती, पायल में रुनझुन जाग उठी!
अणु-अणु के मधुमय कम्पन से ले अंग-भंगिमा के पुलकन;
नाचा जग मुझे रिझाने फिर झुक झूम-झूम कर चञ्चल तन!
जग-नर्तन में सिहरन मेरी, बस ताल तुम्हारी नृत्यकार!
मैं तरल तूलिका की मचलन, तुम रंग बिरंगे चित्रकार!!

— राजपालसिंह 'करुण' —

कवि-सम्मेलन

दिल्ली में कवि-सम्मेलन की परम्परा बहुत पुरानी है। इस वर्ष भी दीपावली के अवसर पर कवि-सम्मेलन हुआ। इसमें सर्व श्री करुणेश, रामरिछपाल, म व्यथित तथा सुश्री कैलाशकुम ताएं पढ़ीं। श्रीकैलाशकुमारीजी क में गहरी अनुभूति, ऊंची मार्मिक भाव और मधुर संगीतपूर्ण का समन्वय था। शेषजी की कविता भावुक कल्पना और परिष्कार का नमूना थी, पर अनेक श्रोता उनसे नई कविता सुनना चाहते थे। सर्व जी महोदय ने सुन्दर, शब्द-चमत्कार कविताएं पेश कीं जो बहुत पसन्द गईं। श्री रघाजीतसिंह की रचना द्वारा बहुत पसन्द की गई, मगर उ कविता की कोटि में रखने को साहित्य-श्रोता तैयार नहीं थे। तुकबिगणोंके सुमधुर कविता-पाठ को जनता ने बहुत पसन्द किया और इस प्रकार कवि-सम्मेलन सफल हुआ।

जनपद हिन्दी साहित्य सम्मेलन मेरठ

५४ वें अ० भा० कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की संरक्षता में हिन्दी प्रचार तथा अ० भा० कवि-सम्मेलन करने का निश्चय किया गया है। इस कार्य-भार को साहित्य-सम्मेलन प्रयाग ने जनपद हिन्दी साहित्य सम्मेलन मेरठ को सौंप दिया है।

इस योजना के तीन मुख्य भाग होंगे:—

१. भारत के प्रमुख हिन्दी साहित्यिकों की एक बैठक करना जिसमें हिन्दी को प्रगति देने पर विचार किया जा सके।

२. अ० भा० कवि-सम्मेलन किया जाय जिसके द्वारा जनसाधारण में हिन्दी काव्य के प्रति उच्च भावना जाग्रत हो।

३. हिन्दी के लिये आन्दोलन करना तथा हिन्दी को अदालतों, सरकारी विभागों, म्युनिसिपल व डिस्ट्रिक्ट बोर्डों में वही स्थान दिलाया जाय, जो कि अन्य भाषाओं को प्राप्त है।

सूचना

हमारी मिल में दस अप्रेंटिसों (काम सीखने वालों) की जगह खाली हैं। शुरू में २०) महीना वजीफा और ५) मंहगाई दी जाती है। काम सीख जाने पर मिल में कारीगर का काम दिया जाता है। कारीगर आम तौर पर ४०) रुपए से ६०) रुपए माहवार कमाता है। अर्जी में नाम, उमर, पता व पढ़ाई आदि लिखें। अर्जियां १५ नवम्बर ४६ तक इस पते पर आनी चाहिएं — मैनेजर —

फन्सी सिल्क मिल्स लिमिटेड
खैबर पास, सिविल लाइन्स देहली

ये पेज ऊपर से
जला हुआ है।

रेडियो में एक साल

[पृष्ठ ६ का शेष]

आरम्भ और अन्त में उसकी उद्घोषणा करते हैं) सिवाय एक हिन्दू के सब के सब 'उर्दूदां' मुसलमान थे। रेडियो ब्राडकास्ट होने [illegible] जाते हैं। [illegible] के लिये स्टेशन डायरेक्टर तथा उनके साथियों और [illegible] खाई चौड़ी करती जा रही सब [illegible] लगा इस व्यक्ति की मनमानी करने की दूसरी विशेष प्रवृत्ति है। आप की उत्तर-मति [illegible] दायित्व से शून्य प्रवृत्तियों के कारण [illegible] के 'जिगरी दोस्त' तक कांप उठते [illegible]। सामाजिक असभ्यता तो कूट कूट कर [illegible] हुई है। इस प्रकार के उत्तर-दायित्व-हीन, सभ्यताहीन, घमण्डी, गुण्डाज और षड्यन्त्रकारी के हाथ में बंगाल का [illegible] है। बंगाल के भविष्य का कल्याण अब भगवान् के भी हाथ में नहीं है।

इस व्यक्ति की प्रवृत्तियों के नूतनतम उदाहरण 'कलकत्ता का हत्याकाण्ड' और 'पूर्वी बंगाल का नरमेधयज्ञ' हैं। ऊपर ही ऊपर बातों की मीठी मीठी व्यार बहा कर यह व्यक्ति बंगीय हिन्दुओं को भ्रान्त करने का पूरा प्रयत्न कर रहा है, पर अन्दर ही अन्दर हिंदुओं के विरुद्ध जहाद करने वाली मुस्लिम सेना का एक शक्तिशाली नेता बनने की तैयारी कर रहा है। क्रूरता और हृदयहीनता में स्टालिन से दो पग आगे है, जातिगत द्वेष में हिटलर को पछाड़ दिया है। इन क्रूरतापूर्ण और हृदयहीन योजनाओं का कार्यान्वित करने में संलग्न रहने पर भी यह व्यक्ति अर्थ-लोलुपता में पीछे नहीं है। यह एक प्रचलित जनश्रुति है कि जब यह व्यक्ति वैदेशिक संगीत का इंचार्ज बनाया गया था और वे आज भी इसी पद पर हैं। इनकी योग्यता का हिन्दी को कोई भी लाभ नहीं मिल सकता।

यह सब कुछ देखकर मेरा सब से पहला अनुभव यह था कि आल इंडिया रेडियो में मुसलमानों, उर्दू और संस्कृति के पोषकों और समर्थकों, राष्ट्रभाषा हिन्दी के विरोधी लोग, आल इंडिया रेडियो को प्रयोगशाला समझकर पाकिस्तानी फार्मूले का सफल परीक्षण करने में लगे हुए उत्साही और निर्भीक लोगों का अभेद्य दुर्ग है।

क्रमशः

फोड़ा, फुन्सी, दाद, खाज, एक्ज़ीमा गले सड़े ज़ख्म, आग से जला, हाथी-पांव से कटा, आतशक व सूज़ाक के ज़ख्म, बवासीर, भगंदर आदि सभी चर्म सम्बन्धी रोगों को नष्ट करता है

जड़ भी खोखला कर दो, तो मियां जिन्ना खुदा नहीं है, वे भी एक दिन मुहरावर्टी के पञ्जे के नीचे आ सकते हैं। उस दिन यह व्यक्ति मुसलमानों का भाग्य-विधाता बन कर भारतीय जनता का भी भाग्यविधाता बनना चाहेगा। उसके लिये यह व्यक्ति पूर्वी बंगाल से भी अधीक

T.B. टी० बी० तपेदिक ब[illegible]

इस रोग के भयंकर कीटाणु (जा[illegible] के प्यासे होते हैं और थोड़े ही दिनों में [illegible] रोगी के मरने के पश्चात भी कुटम्ब में [illegible] ही रहते हैं, इस दुष्ट रोग के जर्मों को न[illegible] आसाम बंगाल की शक्तिशाली महौषधि [illegible] से सैकड़ों-हजारों ऐसे-ऐसे रोगियों को भ[illegible] "एक्सरे" (X Ray) आदि के बाद [illegible] था। यह सब उस परम-पिता परमात्मा [illegible] से सींचे हुए आयुर्वेद शास्त्र का चमत्का[illegible] औषधि नहीं, बल्कि काल के गाल से बच[illegible] आप इन ही कालमों में अनेक रोगियों के [illegible] लिखने की आवश्यकता नहीं रही। परमा[illegible] हस्पतालों में भी 'जबरी' का डंका बज रहा

T.B. टी.बी. "तपेदिक" और [illegible]

अब भी समझो—यदि आप अप[illegible] तुरन्त "जबरी" का सेवन शुरू कर दो। [illegible] पछताए क्या होत है—जब चिड़ियां चुग [illegible] अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैद[illegible] तार या पत्र-व्यवहार के लिए थोड़ा-सा प[illegible] dhri) लिख देना ही काफी है। मूल्य इ[illegible]

"जबरी" स्पेशल नं० १ अमीरों [illegible] बढ़ाने के लिए सोना, मोती, अभ्रक आदि [illegible] पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना [illegible] २ जिसमें केवल मूल्यवान जड़ी बूटियां हैं [illegible] के लिए ६) रु० महसूल आदि अलग हैं। [illegible] नं० २ [illegible] लिखें। तुरन्त [illegible] में

"एक्ला स्नो" अपना सानी नहीं रखता। इसके लिये तो जहां देखो वहां, वही वह नजर आता है।

★ ★

नोव्हा कम्पनी, माहिम, मुंबई

फिल्म स्टार

बनने के इच्छुक शीघ्र लिखें, [illegible] पढ़ा होना आवश्यक है। रंजीत फिल्म आर्ट कालेज 18 [illegible] (V. D.) लाहौर

वर की आवश्यकता है

एक जाट कन्या के लिए। जो [illegible] वर्ष की, मिडल तथा पढ़ी, सुन्दर [illegible] स्वस्थ है, वर जाट हो, पढ़ता हो [illegible] रोजगार में हो। विशेष जानकारी [illegible] लिए पत्र लिखिए।

रघुनाथसिंह

पो० टीकमगढ़ (जिला झांसी)।

नसों की निर्बलता तथा शक्तिहीनता के लिए सर्वोत्तम औषधि

मलहम Ointment

पुरुषों की नसों की कमजोरी और उसके फलस्वरूप मन्द काम-वासना को सतेज करने के लिए यह तैल बेजोड़ साबित हो चुका है। इसके लगाने से नसें मजबूत व बलिष्ट बनती हैं तथा पूर्ण रूपसे शक्ति प्राप्त होती है। सारांश में दम्पति को सच्चे सुख का अनुभव होता है। मूल्य प्रति पौट ५), डाक खर्च ॥≥) अलग। विस्तृत सूची पत्र मुफ्त मंगाइये।

चाइनीज मेडिकल स्टोर

नया बाजार — देहली

और बम्बई—कलकत्ता—अहमदाबाद

—सेलिंग एजेन्ट्स—

दी नेशनल मेडीकल, स्टोर्स-आगरा।
दी जनरल मेडीकल स्टार्स अजमेर।
दी एलाईड केमिस्टस-जयपुर।
श्री सरस्वती स्टोस—बीकानेर।
मे. गिरधरदास जानकीवल्लभ—उदयपुर।
वैद्यराज विश्वनाथ त्रिवेदी-मुजफ्फरनगर।
मेसर्स मोहन ब्रादर्स-लश्कर।
मेसर्स खरे ब्रदर्स—उरई।
मे० गोपीलाल चिरंजीलाल-श्रीमाधोपुर।
दी गुजरात मेडीकल स्टोर्स-कानपुर।
दी वर्मा मेडीकल स्टोर्स-शिकोहाबाद।
मे० धारीवाल ब्रादर्स—जोधपुर।
डी० पी० आयुर्वेदिक एन्ड यूनानी दवाखाना मोरेना।

स्त्री की कमर टूट जाती है

अगर स्त्री का मासिक धर्म ठीक समय पर न आये या मासिक के दिनों में दर्द हो या माहवारी कम या ज्यादा आती हो तो इस तकलीफ से स्त्री की कमर में बहुत दर्द होता है। ऐसी को एक शीशी दवा कोरस सेवन करा देनी चाहिए। इस दवा के खाने से मासिक धर्म की सब खराबी ठीक हो जाती है। फिर हर महीना बिना किसी कष्ट के ठीक मात्रा में मासिक धर्म होने लगता है। हजारों स्त्रियाँ इस दवा से लाभ उठा रही हैं। एक शीशी दवा कोरस की कीमत दो रुपया आठ आना २॥) है। नीचे लिखे पते से पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा मंगा लीजिए।

पारसल खर्च ॥-) लगेगा।

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना

हिन्दी आफिस नं० ३४, दिल्ली!

[पृष्ठ ६ का शेष]

पूरी-पूरी सुविधाएं दी जायंगी। तुर्की और सीरिया के मध्य अनुमति पत्रों की आवश्यकता न रहेगी।

अलेग्जेंड्रिया के बन्दरगाह के विषय में सीरिया के पत्रों ने शिकायतें प्रकाशित की हैं और मो० साका ने अपने वक्तव्य में यही प्रयत्न किया है कि यह प्रश्न सीरिया के लिए सन्तोषजनक ढंग से सुलझ जाय। अब बहुत से सीरियनों का विचार है कि अलेग्जेंड्रिया के विषय में बातचीत शीघ्र ही आरम्भ हो सकती है।

श्वेत कुष्ट की अद्भुत जड़ी

महात्मा प्रदत्त श्वेतकुष्ट (सफेदी) की दवा से तीन दिन में पूरा फायदा। यदि सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों, विज्ञापनदाताओं की दवा से निराश हो चुके हों तो इसे लगा कर आराम होवें। १५ दिन की दवा का मूल्य २॥)।

सफेद बाला काला

इस तेल से बालों का पकना रुक कर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे तो दूना मूल्य वापिसी की शर्त लिखा लें। यह तेल सिर के दर्द व सिर में चक्कर आना आदि को आराम कर आंख की रोशनी बढ़ाता है। एकाध बाल पका हो तो ३॥) और कुल पका हो तो ५) का तेल मंगवा लें। एजेण्टों की हर जगह आवश्यकता है।

पता:—

श्री अखिल के० आराम औषधालय,
मुहल्ला सालिमनुर अहरा, पो. बांकीपुर(पटना)

धवनाशक

फोड़े, फुन्सी, ज़ख्म, रवाज का अनुपम मरहम

GHAV NASHAK KARYALAYA
PAHAR GANJ
DELHI

स्टाकिस्ट :- जे. पी. कथूरिया एंड सन्स पहाड़गंज देहली।

बन्द माहवारी (मासिक धर्म)

२४ घन्टे में शुरू

यदि किसी स्त्री की माहवारी रुक गई हो तो हमारी दवा 'कामिनी' से २४ घण्टे में जारी हो जाती है। अगर किसी स्त्री की माहवारी तकलीफ से आती है, रुक-रुक कर आती है। महीने-दो महीने से आती है, तो 'कामिनी' दवा सेवन कर लेने से तमाम खराबियां दूर हो जाती हैं। हजारों स्त्रियां, जिनकी माहवारी रुक गई थी, इस दवा के सेवन करने से २४ घण्टे में साफ होकर आने लगी। जिन स्त्रियों को गर्भ हो वे यह दवा सेवन न करें वरना गर्भ प्रायः गिर जाता है। (एक शीशी एक स्त्री के लिए काफी है)। कीमत दो रुपया आठ आना, डाक-व्यय ग्यारह आना।

अक्सीरी दवाखाना कलां महल; (लुत्फा हकीम आगाजान)
(V. W. 1०) नं० ४१ देहली।

दिल्ली में चांदनी चौक फतेहपुरी बाजार के सभी प्रमुख औषधिविक्रेता यह दवा बेचते हैं

महान वाजीकरण व परमबोष्टिक

अनंगप्रभा गुटिका

शक्तियों का हद से ज्यादा उपयोग करने से, वृद्धावस्था से, अथवा किसी भी कारण से आई हुई कमजोरी दूर करती है, पतली धातु को गाढ़ा करता है और सम्भोग में रुकावट बढ़ाकर दाम्पत्य जीवन का आनन्द देती है। की० ३० (सुनहरी) गोलियों की शी० रु० १०)

पद्मनमंजरी फार्मेसी—जामनगर-देहली एजेंट जमनादास कं० चांदनीचोक

पञ्जाब युनिवर्सिटी द्वारा नियत
हिन्दी रत्न, भूषण तथा प्रभाकर
हिन्दी परीक्षाओं की
पाठ्य पुस्तकें
तथा सर्वोत्तम सहायक पुस्तकों (कुञ्जियों) के लिये -
✓ स्मरण रखिये। सूचीपत्र मुफ्त

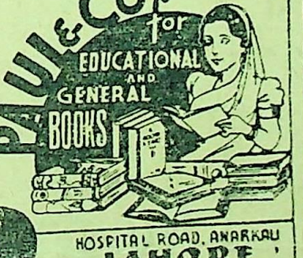

पाल एण्ड कम्पनी
हास्पिटल रोड, अनारकली लाहौर॥
HOSPITAL ROAD, ANARKALI
LAHORE

विलायती घड़ियां आ गई

जिन घड़ियों का मुद्दत से इन्तजार था और जिसके लिये आप और सब परेशान थे वह घड़ियां बहुत थोड़ी मिकदार में आगईं। यह कलाई की खूब सूरत मजबूत और मुद्दत तक चलने वाली घड़ी एक ऐसा नायाब तोहफा है कि जिसकी मिसाल नहीं मिलेगी। टाइम भी बिलकुस सच्चो, पुर्जों की मजबूती की गारण्टी चौरस और लम्बे दोनों शेप में मौजूद है। बनाने वाली कम्पनी ने तारीफ यह की है कि पत्थर पर गिरने से नहीं टूटती और टाइम बराबर देती रहती है। जरूरत मन्द लोगों को सिर्फ एक घड़ी दी जावेगी। दुकानदारों को ज्यादा मिकदार में हम अभी सप्लाई नहीं कर सकते। कीमत सफेद पालिश वाली मय स्ट्राप और केस के सिर्फ २०) सुनहरी २२) डाक खर्च अलग।

घड़ियों के बड़े सौदागर
सुख सागर कम्पनी पो० नं० २०७ देहली।

प्यारी बहिना

न तो मैं कोई नर्स हूं, न कोई डाक्टर हूं और न वैद्यक ही जानती हूं, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थी स्त्री हूं। विवाह के एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं लिकोरिया (श्वेतप्रदर) और मासिक-धर्म के दुष्ट रोगों में फंस गई थी मुझे मासिक-धर्म खुलकर न आता था, अगर आता था तो बहुत कम और दर्द के साथ, जिससे बड़ा दुख होता था। सफेद पानी (श्वेतप्रदर) अधिक जाने के कारण मैं प्रति दिन बहुत कमजोर होती जारही थी, चेहरे का रङ्ग पीला पड़ गया था, घर के कामकाज से जो घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पतिदेव ने मुझे सैकड़ों रुपये की औषधियां सेवन कराईं, परन्तु किसी से रत्ती भर लाभ न हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुख उठाती रही। सौभाग्य से एक सन्यासी महाराज हमारे दर्वाजे पर भिक्षा के लिए आये मैं दर्वाजे पर आटा डालने आई तो महात्मा जी ने मेरा मुख देखकर कहा—बेटी तुझे क्या रोग है जो इस आयु में ही चेहरे का रङ्ग रुई की भांति सफेद हो गया है ? मैंने सारा हाल सुनाया। उन्होंने मेरे पति को अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्खा बतलाया, जिसके केवल १५ दिन के सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगों का नाश हो गया। ईश्वर की कृपा से अब मैं कई बच्चों की मां हूं। मैंने इस नुस्खे से अपनी सैकड़ों बहिनों को अच्छा किया है और कर रही हूं। अब मैं इस अद्भुत औषधि को अपनी दुखी बहिनों की भलाई के लिये असल लागत पर बांट रही हूं। इसके द्वारा लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वर ने मुझे बहुत कुछ दे रखा है। एक बहिन के लिये पन्द्रह दिन की दवा तैयार करने पर २॥=) दो रुपये चौदह आने असल लागत खर्च होती है और महसूल डाक खर्च अलग है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोग में फंस गई हो तो वह मुझे जरूर लिखे मैं उनको अपने हाथ से औषधि बनाकर वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी। यह मेरा प्रण है कि मैं किसी बहिन से दवा की कीमत अपनी असल लागत से एक पैसा भी ज्यादा न लूंगी।

जरूरी सूचना मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का ही नुस्खा मालूम है इसलिये कोई बहिन मुझे किसी और रोग की दवाई के लिये न लिखें।

प्रेमप्यारी अग्रवाल नं० (३०) बुढलाडा जि० हिसार (पंजाब)।

[पृष्ठ ७ का शेष]

तब फिर स्टालिन के लिये यह भी आसान नहीं कि अपने विरोधियों में से ही कुछ को मिलाकर काम चलावे। इन तमाम विषम परिस्थितियों में फंसकर कुशलतापूर्वक निकल सकने के लिये स्टालिन के समक्ष केवल दो ही उपाय हैं। प्रथम तो यह कि सोवियट यूनियन के चारों ओर वह एक रक्षाव्यूह बनाने की कोशिश करे और दूसरा यह कि अपनी रक्षा के लिये अमेरिकन साम्राज्यवाद द्वारा बनाये जाने वाले ब्लाक का विरोधी ब्लाक तैयार करे। किन्तु यह दूसरा उपाय उसके लिए असम्भव है। इस सिलसिले से स्टालिन के साथ यूरोप के केवल थोड़े दीन-हीन पूंजीवादी राष्ट्र हो सकेंगे। तब तो प्रत्यक्ष है कि स्टालिन की नीति का दिवाला निकल चुका है। उसके द्वारा किया जाने वाला कोई भी प्रयास उसकी रक्षा करने के बजाय अमेरिकन साम्राज्यवादियों की नीति में घृत का काम करेगा और उन्हें सोवियत यूनियन को आत्मसात कर लेने के लिये आगे बढ़ायेगा, जिसका अर्थ होगा विश्वव्यापी तृतीय महायुद्ध।

(प्रेस सर्विसेज आफ वर्ल्ड अफेयर्स)

भूल सुधार

(१) नवजीवन पहेली—बायें से दायें—७ वे शब्द में दूसरा अक्षर 'न' लिखलें व तीसरा रिक्त समझें और १० वें शब्द में तीसरा अक्षर 'प' लिखलें। उपर से नीचे ६ वें शब्द का तीसरा अक्षर 'रा' लिखलें।

(२) संकेत बायें से दायें—'धार्मिक व्यक्तियों द्वारा मोक्ष प्राप्ति का साधन समझा जाता है' ठवां संकेत है।

५००) इनाम

प्रेम वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को अपने पास रक्खें, आप की प्रेयसी कैसी ही कठोर और जिद्दी क्यों न हो वह आपके काबू में हो जावेगी। प्रेम पथ के सभी कष्टों को दूर कर प्रेम सम्बन्ध जोड़ने में मदद करता है। एक बार परीक्षा करें—झूठी साबित करने वाले को ५००) इनाम। मूल्य प्रति यन्त्र २) तीन का ५) वी० पी० खर्च अलग।

पता—

एम० एल० शाह साहब,

पोस्ट बक्स २४३ कानपुर।

पाठक नोट कर लें

प्रतियोगियों के आग्रह से पहेली नं० ५ की तारीख बढ़ा दी है। अब पूर्तियां भेजने की अन्तिम १६ नवम्बर कर दी गई है। नतीजा दिसम्बर के अंक में छपेगा। पहेली ५ में ३५००) के इनाम के अ घड़ी, फाउन्टेनपेन भी दिये जावेंगे। सज्जन पहेली मंगाना चाहें वे एक का टिकिट निम्न पते पर भेजें।

एस० एन० भटनागर, डिग्गी वाल दरजी मोहल्ला, अजमे

वीरतापूर्ण नया साहित्य पढ़िये

छत्रपति शिवाजी

ले०—पंजाब केसरी स्व० ला लाजपतरायजी। हिन्दू-कुल गौरव छत्र शिवाजी का प्रामाणिक और रोच जीवन-परिचय। पृष्ठ संख्या १७०, क जिल्द, तिरंगा टाइटिल, कीमत १॥)।

अगस्त आंदोलन के क्रान्तिकारी

अगस्त सन् ४२ के हालात और उसके नेताओं के जीवन-परिचय। मू० ।

पं० जवाहरलाल नेहरू और उनके प्रमुख भाषण

विषय नाम से ही स्पष्ट है। अत्यन्त रोचक भाषा में लिखा गया है। मू०) सजिल्द १।)।

पुस्तक-विक्रेता उचित कमीशन के लिए पत्र-व्यवहार करें—

जयभारत साहित्य मण्डल;

२२०६, नई सड़क, देहली।

विवाहित जीवन

को सुखी बनाने के रहस्य जानने हों तो इन पुस्तकों को अवश्य पढ़ें—

सच्चा कोक शास्त्र	(सचित्र)	१॥)
८४ आसन	(,,)	१॥)
१०० चुम्बन	(,,)	१॥)
सोहागरात	(,,)	१॥)
८० आलिंगन	(,,)	१॥)

उपरोक्त पुस्तकें एक साथ लेने पर केवल ६) पोस्टेज अलग।

पता—प्रतियोगिता ऑफिस श्यामनगर (१) अलीगढ़।

५०) इनाम

श्वेत कुष्ठ (सफेदी) की आश्चर्यजनक महौषधि। चाहे कितने ही दिन से श्वेत कुष्ठ हो, या किसी भी कारण से सफेद दाग हो गया हो इस महौषधि के सिर्फ २ दिन के सेवन से पूर्ण लाभ होता है। इससे प्रति वर्ष हजारों रोगी आराम होते हैं। यदि आप अनेकों दवाइयां कर निराश हो चुके हों तो एक बार और परीक्षा करें। मूल्य २) गलित कुष्ठ सुनहरी की औषधि मूल्य ३॥)।

गुणहीन साबित होने पर ५०) इनाम

श्री सदानन्दराम संजीवनी औषधालय

नं० १८ पो० बारशलीगंज, (गया)।

सुंदर त्वचा, यह स्त्री का एक महान् तंत्र है। अपनी त्वचा की उपेक्षा न करें जिये-लक्स टॉयलेट साबुन की सौम्यता से उसकी सुरक्षा करो। ३० दिन के लिये सितारा के सौन्दर्य-साधन का अनुसरण क्यों नहीं करते—आप उसके सुंदर, शुद्धिकारक परिणाम से आनन्दित होंगे, और आपको इस सुगन्धित, सफेद साबुन का विपुल मलाईदार झाग लुभायेगा। फिल्मी स्टार्स का सौन्दर्य-साधन आप की अनमोल त्वचा को ताज़ा, साफ़-सुथरी और रेशम के समान नरम रखता है।

LTS. 149-710-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

चित्रकार की कला

[श्री पुष्पन]

प्राचीन गाथा है, वह भी हिन्दुस्तान की नहीं अन्य देश की। एक चित्रकार को कला में बड़ा निपुण और चतुर था। उसकी प्रतिभा ने उसकी कीर्ति को दूर दूर तक फैला दी थी।

एक बार उस प्रसिद्ध कलाकार के पास एक बहुत धनी स्त्री अपना चित्र बनवाने आई। चित्रकार ने उसकी आकृति को अपने स्वच्छ मस्तिष्क पर अंकित कर लिया और कहा कि आपका चित्र परसों तक बिल्कुल तैयार हो जायगा।

तीसरे दिन वह धनिक स्त्री कलाकार के पास पुनः आई और साथ में वह अपने प्यारे कुत्ते को भी लाई। चित्रकार ने उसका चित्र देते हुए कहा—'क्या में आशा करूं कि यह चित्र आपको अच्छा लगेगा ?'

वह धनिक स्त्री निर्णय करने में असमर्थ रही कि मेरा यह चित्र अच्छा है या बुरा। अन्त में कलाकार से कहा—'यदि यह मेरा चित्र सुंदर होगा तो मेरा कुत्ता इसमें मुझे पहचान लेगा।' और उसने चित्र को कुत्ते के सामने रख दिया।

चित्रकार इस घटना को देखकर मुस्कराया और उसके मस्तिष्क-पटल पर एक सूझ समाई और वह बोला—आदरणीया अमीरजादी साहबा! आप कल पधारियेगा। इस चित्र में जो कमियां रह गई हैं, वह सब ठीक कल तक कर लूंगा।

× × ×

दूसरे दिन सोत्साह धनिक साहिबा चित्रकार के पास अपना चित्र लेने को पुनः पहुंची। चित्रकार ने चित्र में परिवर्तन तो कुछ भी नहीं किया अपितु उस उसने इतना काम किया कि चित्र पर मक्खन उठाकर रगड़ दिया और द्वार के सामने चित्र को रख दिया। अपनी मालकिन के साथ कुत्ते ने जब चित्रालय में प्रवेश किया तो घुसते ही कुत्ते की दृष्टि मक्खन लगे चित्र पर पड़ी और उसे चाटने के लिये वह उधर झपटा। चित्र पर कुत्ते के टूटते ही कलाकार चिल्ला उठा — 'देखिये मेरी निर्मित कृति कितनी सुन्दर है कि आपकी सूरत को पहचान कर चित्र पर आपका प्रेमी टूट पड़ा।

यह दृश्य देखकर अमीरजादी अट्टहास के साथ खिलखिला उठी और चौंक कर बोली — 'शाबाश-चित्रकार! यह मेरा ही सुन्दर चित्र है। धन्यवाद!

पर जब उसने चित्र को उठाकर हाथ में लिया तो मक्खन से सदा और खराब हुआ पाया। उसे तत्काल अपनी भूल भी मालूम हुई पर अपने पिछले कर्म से वह विवश थी।

रे मानव

[सुश्री शशि]

ठोकर से सीखो ए' मानव
अपने में खो जाना।
प्याले पी-पी दुख-सुख रे;
जग में रो हंस जाना॥
कभी मौन कभी इठलावो रे,
कुछ खोये कुछ पाये रे।
जग की धूप-छाया में प्राणी
सुध-बुध सब खो जाये रे॥
कभी प्रकाशित हृदय तुम्हारा
कभी सघन अन्धेरा रे।
कभी शांत निशी जो फैले
कभी सुखद सवेरा रे॥
कभी क्रोध कभी आत्म ज्ञान से
मानव अति अकुलाये रे।
कभी आस की अमर राह पर
ठगा प्राणी रह जाये रे॥

बच्चों का अजायब घर

लन्दन के बच्चों के अजायबघर में सभी जानवर छोटे और पालतू हैं। वहां ऐसे छोटे-छोटे घोड़े और हाथी हैं जिन पर छोटे छोटे लड़के भी सवारी कर सकते हैं। सबसे विचित्र तो उस अजायबघर में चूहों का शहर है, जिसमें पालतू चूहे रहते हैं।

हक़ की रोटी

[श्री त्रिदेव]

भड़ी झाड़ू लगता है गांव को साफ सुथरा रखता है वह हक की रोटी खाता है।

जुलाहा कपड़े बुनता है। सब के तन ढंकता है। वह भी हक की रोटी खाता है।

किसान अनाज पैदा करता है। सबके पेट भरता है। वह भी हक की रोटी खाता है।

मजदूर पसीना बहाता है। कड़ी मेहनत करता है। वह भी हक की रोटी खाता है।

ये सब भाई—बहन हक की रोटी खाने वाले हैं। भगवान् इन सबको सुखी रक्खे!

बालकों को वैज्ञानिक शिक्षा

लन्दन की 'साईण्टिफिक सोसाईयटी' बच्चों के लिए वैज्ञानिक और लिखित फिल्म दिखाने की योजना शीघ्र कार्यान्वित करने वाली है। यह फिल्म महीने में एक बार दिखायी जायगी। 'साइण्टिफिक फिल्म' नाम से एक पाक्षिक पत्र भी प्रकाशित होने वाला है।

फुटबाल के खेल का जन्म कब ?

फुटबाल के खेल की कहानी भी बड़ी दिलचस्प है। सन् १८६३ ई० की २६ अप्रैल को इंग्लैण्ड में यह सर्वप्रथम नियमपूर्वक खेला गया और उस समय १३ विभिन्न फुटबाल क्लब के प्रतिनिधि आपस में खेलना चाहते थे। परन्तु कोई एक नियम न रहने से कठिनाई उपस्थित हुई। बाद में इन लोगों ने मिलकर एक नियम बनाया और उसके अनुसार खेल हुआ। नियम निर्माण करने वाली यह समिति बाद में 'फुटबाल असोशियेशन' के नाम से संसार में प्रसिद्ध हुई और वही नियम प्रायः अबतक सर्वत्र प्रयोग में लाये जा रहे हैं!

बाल-बन्धु-समाचार

कोटा से प्रकाशित होने वाली 'अमर ज्योति' हस्तलिखित पत्रिका का 'कविता-अंक' प्रकाशित होगा। श्रेष्ठ कवि-वृन्दों से विनती है कि अपनी अच्छी रचनायें २२-११-४६ तक यहां भेज दें। सर्व प्रथम रचना पर एक पुस्तक पुरस्कार में दी जायेगी।

— राजेशनारायण
द्वारा—बा० शम्भूनारायण माथुर
यार्ड डिटी स्टेशन मास्टर कोटा जंकशन।

× × ×

'बाल-सुधार' मासिक हस्तलिखित पत्रिका के लिये बाल लेखकगण अपनी सुन्दरतम कृतियां भेजने की कृपा करें।

संपादक — महेश
द्वारा — श्री बनारसीदास राजपतराय
आर्यनगर, हापुड़ (युक्तप्रान्त)।

कृषि और उद्योगधंधों की एकमात्र मासिक पत्रिका

उद्यम

का एक अंक देखिये और उसकी उपयोगिता तथा लोकप्रियता का अनुभव किजिये।

उद्यम के प्रत्येक अंक में पढ़िये

★ खेती-बागवानी के व्यवहारोपयोगी तरीके
★ लाभदायक उद्योगधंधे
★ व्यवसाय-बाजारों में हेरफेर
★ आरोग्य तथा औषधोपचार
★ महिलाओं के लिये उपयुक्त जानकारी

इनके सिवाय कृषि-बागवानी-उद्योगधंधों सम्बन्धी प्रश्नोत्तर, वैज्ञानिक शोध, घरेलू मितव्ययिता तथा खाद्य पदार्थों सम्बन्धी व्यवहारोपयोगी जानकारी को पढ़ कर आपकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहेगा। आज ही वार्षिक मूल्य ५॥) रु० भेज कर स्थायी ग्राहक बन जाइये।

उद्यम मासिक धर्मपेठ, नागपुर।

विजयगढ़ निवासी

भारत विख्यात वैद्यराज बांकेलाल गुप्त प्राणाचार्य्य
भूतपूर्व मैनेजिंग प्रोप्राइटर धन्वन्तरि औषधालय
एवं भूतपूर्व सम्पादक धन्वन्तरि
ने

प्राणाचार्य्य भवन

नामक एक वृहद संस्था २००००० दो लाख के मूल धन से स्थापित की है जिसके लिमिटेड होने के लिये कागजात तैयार हो रहे हैं। शीघ्र ही लिमिटेड हो जायगी। शेयर प्रायः सब बिक चुके हैं। इस संस्था में आयुर्वेदीय, पेटेन्ट और नवीन प्रणाली से प्रस्तुत औषधियां, वैद्यक पुस्तकें, प्रवास मंजूषा चित्र आदि के अतिरिक्त उक्त वैद्यराज जी के सम्पादकत्व में "प्राणाचार्य्य" नामक आयुर्वेदीय उच्च कोटि का सचित्र मासिक पत्र एवं साप्ताहिक पत्र शीघ्र ही प्रकाशित होगा। अभी से ग्राहक बनने से मासिक का ४) वार्षिक और साप्ताहिक का ६) वार्षिक मूल्य लिया जायगा। सर्व साधारण को खेरीज और चिकित्सकों एवं औषधि विक्रेताओं को थोक भाव का सूचीपत्र शीघ्र मंगा लेना चाहिये।

एजेण्टों की आवश्यकता है—

व्यवस्थापक — प्राणाचार्य भवन, विजयगढ़ जि० अलीगढ़

स्त्री रोगों की निपुण चिकित्सिका

लेडी डाक्टर **कविराज आर. रानी** ही हैं

आप किसी भी स्त्री रोग में ग्रस्त हों तो निम्नलिखित पते पर मिलिये। वे आपको उसी समय ठीक कर देंगी। इसके अतिरिक्त उनकी तैयार की हुई औषधि 'आशा' एक ऐसी औषधि है जोकि स्त्री के आन्तरिक बाह्य रोगों को दूर करके सन्तान योग्य बना देती है और उसका मूल्य केवल १०) रु० है। डाक व्यय पृथक होगा। औषधालय—

लेडी डाक्टर—**कविराज आर. रानी**

गली नं० १ अर्जुननगर निकट शाहालमी अड्डा लाहौर।

असली जादू का शीशा

हर स्त्री-पुरुष चाहे कितनी उमर का हो, बालक हो या जवान या बूढ़ा-इस जादू के शीशे से देख सकता है। चोरी का पता, गड़े हुए धन, गुमशुदा का पता, बीमार के अच्छा होने, आने वाले व गुजरे हुए हालात, मुहब्बत प्रेम, मुकदमा, नौकरी, परीक्षा, हर बात का ठीक-ठीक पता लग सकता है। झूठ निकले तो दाम वापिस, मूल्य ३) रु०, पत्र-व्यवहार अंग्रेजी में करें।

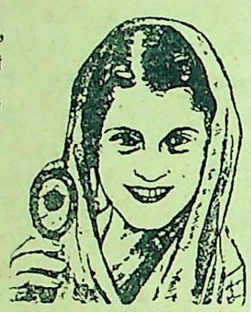

आनन्द स्वामी (V.W.D.) पो.ब. नं० ६१ लाहौर।
ANAND SWAMI, (V.W.D.) P. B. no. 61 Lahore.

प्रमेह रोग समाप्त करो

७ दिन में आराम

यदि किसी पुरुष को पेशाब करने के पहले या पेशाब करने के बाद सफेद गंका पानी आता हो तो यह बहुत भयंकर बात है। इसे प्रमेह का रोग कहते हैं। धीरे-धीरे यह रोग बढ़ जाता है तो आदमी पौरुषहीन हो जाता है। उसकी शक्ति समाप्त हो जाती है। इस वास्ते जिन पुरुषों को यह शिकायत हो या स्वप्नदोष होता हो तो इस भयंकर रोग से लापरवाही नहीं करनी चाहिये।

प्रमेह का रोग केवल ७ दिन में नष्ट हो जाता है

और केवल ३॥) खर्च होंगे। "जौहरे आजम" इस रोग के लिये अक्सीर प्रमाणित होती है। केवल एक शीशी दवा "जौहरे आजम" से बड़े बड़े पुराने रोगी स्वस्थ हो गए। "जौहरे आजम" प्रमेह के रोग का सबसे अच्छा इलाज है। जिन लोगों को आवश्यकता हो—

मैनेजर, जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४ दिल्ली

के पते पर पत्र लिखकर "जौहरे आजम" की एक शीशी वी० पी० द्वारा मंगा लें। एक शीशी का मूल्य ३॥) तीन रुपया आठ आना है पार्सल का खर्च ॥-) लगेगा।

[टेलीफोन नं० ६२६८]

नयी भारत सरकार में बैंकों की सुरक्षा

विशेषतः

ज्वाला बैंक लि

में है

प्रधान कार्यालयः— माल, आगरा

संस्थापित १९२३

शाखाएं: —— —— समस्त भारत वर्ष में

इम्पीरियल बैंक तथा अलाहाबाद बैंक के पश्चात यह युक्त प्रान्त तथा मध्य प्रान्त का तीसरा पुराना बैंक है

चालू मूलधन १,०४००,०००)

इमारतें तथा फर्नीचर आदि में लड़ाई से पहले के रेट से लगे हुए अन्य अनेक पावनों (ASSETS) के अलावा गिल्ट एण्ड सिक्योरिटियों में लगा हुआ पावना १,०७००,०००)

सुप्रबन्ध और सुरक्षा की दृष्टि से भारतवर्ष का सबसे श्रेष्ठ और विश्वसनीय बैंक

स्त्रियों को शक्ति दायक औषधि

सुन्दरी साथी (रजिस्टर्ड)

स्त्रियों के प्रदर, रक्त प्रदर, ऋतुस्राव, गर्भाशय के रोग मिटाता है। बन्धत्व को मिटाता है, बच्चे होते हैं। स्त्री का स्वास्थ्य सुधार देती है, हरेक गांव में दवा वाले लोग बेचते हैं। कीमत फी बोतल १।=) तीन बोतल से आराम होता है इनका मूल्य ३॥) । दिल्ली एजेन्टः—कान्तीलाल आर० पारिख, दवे केमिकल वर्कस, कालबादेवी रोड, बम्बई

फोटो कैमरा मुफ्त

यह कैमरा सुन्दर नमूने का सफाई से बना हुआ बिना किसी कष्ट के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है। इसका प्रयोग सरल है। यही सही काम करता है और शौकिया काम लेने वाले व व्यवसायी दोनों ही इससे काम ले सकते हैं। यह कीमती मनोहर कैमरों में से है, जो थोड़े ही मूल्य का है। यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और रुपया कमावें। मूल्य बक्स कैमरा पूरा, तमाम फिल्म कार्ड, कैमीकल, सरल प्रयोग सहित नं० ५०१ कीमत ५॥।) वेस्ट, क्वालिटी, नं० ५४५ कीमत ७।), डी लक्स एक्स्ट्रा स्पेशल क्वालिटी नं० ५५० कीमत ६॥) फ लिंडग नं० १००, कीमत ४५), पैकिंग व डाक व्यय १=) नोट — एक समय में ६ कमरों के ग्राहक को कैमरा नं० ५५० मुफ्त। स्टाक सीमित है। अभी आर्डर दें अथवा निराश होना पड़ेगा। माल पसन्द न होने पर कीमत वापिस।

इम्पीरियलचैम्बर आफ साईन्स (V.W.D.) पो० बा० ६१, लाहौर

Imperial Chamber of Science, (V.W.D.) P. B. 61, Lahore.

Haridwar. Digitized by eGangotri

शारीरिक उष्णता के लिये...

मशहूर अनुभूत इलाज

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

आज से ही शुरू कीजिए, सर्वत्र मिलता है।

जीर्णज्वर, शरीर के अन्दर, बाहर या हथेली तलुवों और आंखों की असह्य जलन, मूत्रमार्ग में आग सी जलन, भोजन के बाद पेट में जलन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कठिन अपच, नियमित कोष्ठबद्धता, रक्तविकार, अशक्ति, नियमित शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं शिथिलता।

इन शिकायतों पर यह बहुत काल से परीक्षित, अद्वी बूटियों के योग से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढा बालक वृद्ध, स्त्री सभी के लिये लाभदायक है तथा इस सीमा तक निरुपद्रव है कि कोमलांगी स्त्रियों को गर्भावस्था के समय निस्संकोच सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके हल्के, पाचक और शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

पर्ल कम्पनी
आर्यों ए डी
का २ ना ना
नम्बर ३ ५५

चित्रवत् *जेन्ट चाहिए, शर्तों के लिए लिखिये।*

स्त्री को श्वेत प्रदर

स्त्री को श्वेत पानी की बीमारी भयानक होती है। इस बीमारी को ल्युकोरिया भी कहते हैं। इस बीमारी से पीड़ित होने वाली स्त्री के गुप्त शरीर से समय असमय श्वेत रङ्ग का बदबूदार पानी या लेस निकलता है और धीरे-धीरे उस स्त्री के यौवन को समाप्त कर देता है। उसकी कमर, नाफ, नले, पेट, बल्कि सारे शरीर में दर्द होने लगता है। माहवारी अर्थात् मासिक धर्म भी खराब हो जाता है। यह रोग कहा भयानक है। स्त्रियों को इसमें लापरवाही नहीं करनी चाहिए।

श्वेत पानी को रोकने की विधि

नवयुग की जांच से अब पूरी तरह साबित हो चुका है कि इस श्वेत पानी की बीमारी को समूल नष्ट करने की सबसे बढ़िया विधि यह है कि बीमार स्त्री को केवल एक शीशी औषधि 'रोक' सेवन करा दी जाय। इस औषधि के सेवन से ठीक तीसरे दिन श्वेत पानी की बीमारी बिल्कुल ठीक हो जाती है। हजारों वद्य, डाक्टर, हकीम इस औषधि को रोगियों पर सेवन कराके ख्याति प्राप्त कर रहे हैं। यदि आवश्यकता हो तो:—

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४, दिल्ली

के पते पर पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा औषधि 'रोक' की एक शीशी मंगा लीजिये। एक शीशी का मूल्य ३) तीन रुपया डाक व्यय ॥-) आना है। हर धर्म की स्त्रियां सेवन कर सकती हैं।

भारतीय ऋषियों की खोज का अद्भुत चमत्कार

एक आश्चर्यजनक घटना — रोगी के पति की आप बीती

मेरी स्त्री अनेक दिनों से बीमार थी, आखिर डाक्टरों ने 'तपेदिक' (टी० बी०) रोग बतलाया, 'तपेदिक' का नाम सुनते ही होश हवास उड़ गये। अन्त में डाक्टरों ने एक्सरे करके दोनों फेफड़े खराब (गल) जाने की बात कहकर मुझे आदेश दिया कि रोगी १०-१५ दिन का मेहमान है। इसको अस्पताल से ले जाओ और किसी अलग कमरे में रख दो। कोई इसके पास न आवे, इसके थूक आदि से बचाव रखो। लाचार होकर उसको घर ले आया।

फिर क्या हुआ—अखबार 'मिलाप' में मैंने आपकी दवा जबरी का 'विज्ञापन' देखा। दिल ने कहा कि जहां सैकड़ों रुपया हकीम डाक्टरों की भेंट चढ़ा चुका हूं, यह भी खर्च करके देख लूं। रोगी ने कहा कि जब डाक्टरों ने यह कह दिया है कि दोनों फेफड़े खराब हो चुके हैं और मैं १०-१५ दिन की मेहमान हूं तो व्यर्थ क्यों खर्च करते हो, मुझे अब परमात्मा पर छोड़ दो। परन्तु दिलने न माना और तुरंत 'जबरी' नं० १ का आर्डर दे डाला। पांचवें दिन ही पार्सल पहुंच गया और विधि के अनुसार परमात्मा का नाम लेकर औषधि शुरू करा दी गई। फिर क्या हुआ—वही आश्चर्य-जनक चमत्कार। जिस रोगी के बारे में डाक्टरों ने मौत का फतवा दे दिया था, और ६ मास तक बराबर इलाज करने पर भी बुखार न गया था, आसाम बङ्गाल की शक्ति-शालीऔषधि 'जबरी' ने दस दिन में ही अपना चमत्कार दिखा दिया, बुखार बिलकुल जाता रहा। जो रोगी चारपाई से उठने लायक न था, शरीर में रक्त का संचार होने लगा और दिल में पहले की सी उमंग पैदा हो गई, दिल में पूर्ण रूप से विश्वास हो गया कि जिस दवा ने इतनी जल्दी ऐसा चमत्कार दिखाया है—क्यों न स्त्री को एक बार वहीं लेजाकर पूर्ण रूप से परीक्षा कराकर आगे को इलाज का प्रबन्ध किया जावे। मेरी स्त्री की भी यही राय हुई। फिर क्या हुआ — जिस रोगी में चारपाई से उठने की शक्ति न थी हजारों मील रेलकी यात्रा करके 'जगाधरी' आ गई। यहांपर पूर्णरूपसे अच्छी तरह परीक्षा करके आगेके लिए औषधियों का प्रबन्ध हुआ, यथार्थमें कार्यालयका सलूक प्रशंसनीय है। रोगीकी तन्दुरुस्ती दिनपर दिन बदलती गई और अब परमात्मा की कृपा से बिलकुल ठीक हो गई है। मैं ही नहीं—बल्कि मेरा तमाम कुटुम्ब कार्यालय के कृतज्ञ हैं जिसने मेरी स्त्री को काल के गाल से बचा लिया। यह ऋषियों के रक्त से सींचे हुए आयुर्वेद शास्त्र की पूर्ण सफलताका चमत्कार है। उपरोक्त घटना सरदार करतारसिंह इण्डियन मिल्ट्री हस्पताल, करांची के साथ घटी।

पाठक वृन्द—यह एक नहीं। पचासों सैकड़ों ऐसी घटनाएँ हो चुकी हैं और भी देखिये—(१) लाला काशीप्रसाद वैश्य दारानगर (इलाहाबाद), (२) बाबू मुन्नालाल स्टोरकीपर सिम्भावली शुगर मिल पो० बक्सर (मेरठ), (३) बाबू रामसिंह घर नं० ६१ रीठामन्डी (देहरादून), (४) बाबू गजपतराय रिटायर्ड सब रजिस्ट्रार (मथुरा), आदि सैकड़ों सज्जनों का यही कहना है कि आसाम बंगालकी शक्तिशाली औषधि 'जबरी' दवा नहीं, बल्कि यथार्थ में रोगी को काल के गालसे बचाने वाली 'ईश्वरीय शक्ति' है। अब तो परमात्मा की कृपा से मिल्ट्री अस्पताल 'औध' (पूना) रुड़की (यू० पी०) कराची आदि स्थानों में भी 'जबरी' के गुणों का डंका बज रहा है, पचासों रोगी सेवन करके लाभ उठा रहे हैं।

(T. टी. / B बी.) तपेदिक-और पुराने ज्वर वालो—

अब भी समझो—यदि आप सब तरफ से हताश हो चुके हैं तो एक बार 'जबरी' की परीक्षा करें।

सैकड़ें हकीम, वैद्य, डाक्टर अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं, अनेक आदमी तार से आर्डर देते हैं—तार तथा पत्र के लिए थोड़ा सा पता 'जबरी' (जगाधरी) (Jabri Jagadhari) लिख देना ही काफी है। मूल्य इस प्रकार है। 'जबरी' स्पेशल नं० १ अमीरों के लिए, जिसमें साथ साथ ताकत को बढ़ाने के लिए सोना, मोती, अभ्रक आदिकी मूल्यवान भस्में भी पड़ती हैं मूल्य पूरा ४० दिनका कोर्स ७५) रुपया नमूना १० दिन के लिए २०) रुपया 'जबरी' नं० २ जिसमें केवल मूल्य वान जडी बूटियां हैं पूरा कोर्स २०) रुपया १० दिन ६) महसूल आदि अलग है। आर्डर में अखबारका हवाला तथा नं० १ या २ साफ साफ लिखें। तुरन्त आर्डर देकर रोगी की जान बचावें, १० दिनमें ही अद्भुत चमत्कार दिखाई देगा। जल्द प्राप्त करने के लिये 'जगाधरी' आर्डर दें।

रायसाहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड बैंकर्स
(३) शिलांग [आसाम] या पंजाब आफिस 'जगाधरी',

'वीर अर्जुन' साप्ताहिक में विज्ञापन देकर लाभ उठाइये

विजय पुस्तक-भण्डार देहली की
जीवनदायिनी सामयिक पुस्तकें

जीवन चरित्र-माला:—सम्पादक—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

पं० मदनमोहन मालवीय

(ले०—श्री राम गोविन्द मिश्र)

महामना मालवीय जी का क्रम बद्ध जीवन वृत्तान्त। उनके मन को और विचारों का सजीव चित्रण। और उनके सम्बन्ध में महापुरुषों के मत। सब कुछ एक ही पुस्तक में। मूल्य १।) डाकखर्च ।=)

श्री सुभाषचन्द्र बोस

(लेखक—श्री रमेशचंद्र आर्य)

यह कांग्रेस के भूतपूर्व राष्ट्रपति का प्रामाणिक और पूरा जीवन-चरित्र है। ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। पुस्तक के अंत में श्री सुभाष बाबू के विचारों का संग्रह भी है। मूल्य ॥=) डाक व्यय ।-)

पं० जवाहरलाल नेहरू

(ले०—पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति)

इस पुस्तक में इन प्रश्नों का उत्तर मिलेगा : — पं० जवाहरलाल जी क्या हैं ! वह जो कुछ भी हैं, वह कैसे बने ? वह क्या चाहते और क्या करते हैं ? इन प्रश्नों के उत्तर में भारत के इस महापुरुष का सारा चरित्र आजाता है। भाषा, लेखन शैली और भाव के विषय में कुछ लिखना अनावश्यक है। इतना ही बताना पर्याप्त है कि इसमें लेखक की सब विशेषतायें विद्यमान हैं। और १९४५ तक की पं० जी के जीवन की प्रायः सारी ही घटनाओं का वर्णन आगया है। मूल्य केवल १।) डाक व्यय ।=)

मौ० अबुलकलाम आजाद

(ले०—श्री रमेशचन्द्र जी आर्य)

यह भुतपूर्व राष्ट्रपति श्री मौलाना अबुलकलाम आजाद की जीवनी है जिसे श्री रमेशचन्द्र जी आर्य स्वर्गवासी ने बड़े परिश्रम के साथ लिखा है। इसके पढ़ने से यह भली भांति प्रकट होजाता है कि मौलाना साहब की राष्ट्रीयता दूध की तरह स्वच्छ है और वह अपने मार्ग पर दृढ़ चट्टान की तरह अटल हैं। मूल्य ॥=) डाक व्यय ।-)

महर्षि दयानन्द

ले०—श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति

महर्षि का यह जीवन चरित्र अपने ढङ्ग का पहिला है सब उपलब्ध सामग्री के आधार पर ऐतिहासिक तथा प्रामाणिक शैली पर ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। सत्यार्थप्रकाश के महत्व पर विशेष प्रकाश डाला गया है।

मूल्य केवल १।) डाक व्यय ।=)

"मैं भूल न सकूं"

[सम्पादक श्री जयंत]

श्रीयुत श्रीनाथसिंह जी, श्री वात्स्यायन 'अज्ञेय' श्री काका कालेलकर जी, कवि सम्राट् श्री अयोध्यासिंह जी उपाध्याय 'हरिऔध' श्री रत्नकुमारी जी माथुर, श्रीमती होमवती जी, श्री विष्णुप्रभाकर जी, श्रीयुत देवीदत्त जी शुक्ल तथा श्री पहाड़ी आदि प्रसिद्ध साहित्यिकों उपन्यास और कहानी लेखकों की शिक्षाप्रद सच्ची कहानियों का संग्रह। प्रत्येक कहानी ऐसी है जिसे एकबार पढ़कर भूलना कठिन है। मूल्य केवल १) डाकव्यय ।-)

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

'जीवन संग्राम'

का

सन्शोधित दूसरा संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय की ललकार एक ही साथ है। श्री पं० जी की इस नई सामाजिक कृति के सम्बन्ध में – ग्वालियर राज्य के प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र "जयाजी प्रताप" ने लिखा है — पराधीन देशों को ऐसी पुस्तकें आशा और क्रियात्मकता का सन्देश देती है और इस दृष्टि से यह पुस्तक पठनीय है। 'विक्रम' उज्जैन ने इसके सम्बन्ध में लिखा है -- 'इस पुस्तक की विशेषता और सफलता इसी में है कि इसके लेखक प्रो० इन्द्रजी हैं। पुस्तक हिन्दी भाषी के मनन और संग्रह योग्य है'। मूल्य १) डाक व्यय ।-)

त्याग का मूल्य

यह विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगौर की अमर कृति (उपन्यास) योगा योग का अविकल अनुवाद है। इसी को उपन्यास सम्राट स्वर्गीय प्रेमचन्दजी ने रवि बाबू का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास बतलाया था। ४०० पृष्ठ दोरंगा टाइटल पेज — मूल्य ४) डाकव्यय ।=)

तिरंगा झण्डा

श्री बिराज जी रचित तीन एकांकी नाटकों का संग्रह — मूल्य १।) डाकव्यय ।-)

"दिल्ली चलो"

ले० दैनिक वीर अर्जुन के सम्पादक आनन्द विद्यालङ्कार व हरिश्चन्द्र

भारतीय स्वतन्त्रता-संघर्ष के अमर सैनिकों की एक अविस्मरणीय गाथा, कर्नल सहगल के विशेष संदेश सहित। सुभाष बाबू भारत से कैसे भागे, आजाद हिन्द फौज का निर्माण और उसके कारनामे, तथा मुकदमों का पूरा विवरण

मूल्य डाक व्यय सहित २।-)

घर बैठे हुनर सिखाने वाली अनुपम पुस्तकें—

साबुन-विज्ञान

तैल का सब से बड़ा उद्योग साबुन है और देश के साधनों को देखते हुये साबुन के उद्योग विस्तार के लिये अभी बहुत बड़ा क्षेत्र पड़ा है। परन्तु इस उद्योग में सफलता प्राप्त करना साबुन बनाने की अच्छी शिक्षा पर निर्भर है। 'साबुन-विज्ञान' इस विषय में अद्वितीय पुस्तक है। हर प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के लिये इसे अवश्य पढ़ें। मूल्य २) डाकव्यय ।-)

तैल-विज्ञान

इस पुस्तक में तिलहन से लेकर तैल के चार बड़े उद्योगों की विवेचना सविस्तार तथा सरल ढंग से की गई है। अतः केश तैल, बनास्पति घी, पेण्ट और वार्निस के उद्योग सीखने के लिये 'तैल विज्ञान' पुस्तक अवश्य पढ़िये। मूल्य २) डाकव्यय ।-)

हमारे घर

भट्टी की तरह धधकते हुये भारतीय घरों को शान्ति सदन कैसे बनाया जाय ? इस पुस्तक में इसी विषय का चिन्तन है। ॥=) मूल्य डाक व्यय ।-)

आनुपातिक प्रनिनिधित्व (Single Transferable Vote) (निर्वाचन सम्बंधी नियम) ले० श्री पं० महावीर जी त्यागी मूल्य ।)

विजय पुस्तक भण्डार (वीर अर्जुन कार्यालय के ऊपर) श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

श्री पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिये 'अर्जुन प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली से छाप कर प्रकाशित किया।

...llection. Haridwar. Digitized by eGangotri

वीर अर्जुन

साप्ताहिक

ILLUSTRATED VIR ARJUN WEEKLY

[वर्ष १२] दिल्ली, सोमवार २६ कार्तिक सम्वत् २००३, DELHI, 11th November 1946. [अङ्क ३७]

इस अंक की कुछ सामग्री

१—वर्तमान विश्वव्यापी युद्ध और भारतीय जनता का नैतिक पतन
२—राजपूताने की रियासतों का भविष्य।
३—रेडियो में एक साल।
४—मेरे जीवन की झांकियां।
५—कन्हाईलाल दत्त।
६—नमक कर कैसे हटाया जाय।
७—प्रवृत्ति और भाव (कहानी)
उपन्यास, समालोचना, घटनाचक्र, कविता, समाचार चित्रावली आदि।

★ वयोवृद्ध महामना मालवीय जी ★

आपने हिन्दू जाति को संगठित होकर आत्मरक्षा के लिए सन्नद्ध होने का आदेश दिया है।

वार्षिक मूल्य ८)
छः मास का ४)
सम्पादक— रामगोपाल विद्यालङ्कार
कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार
एक प्रति का मूल्य ≡)

आधी दुनियां

पूर्वीय बंगाल में हिन्दू नारी

★

स्त्रियां जहर खाकर सतीत्व रक्षा करें

पूर्वीय बंगाल में औरतों को भगाकर जबरन् मुसलमान बनाया जा रहा है लेकिन किसी के बनाने से न कोई मुसलमान बनता है, न हिन्दू, न ईसाई। लेकिन हिन्दुस्तानी औरतें अपने आपको इतनी बेबस क्यों समझें? क्या बहादुरी पर मर्दों का ही एकाधिकार है? औरतों के हाथ में आमतौर पर तलवार नहीं रहती। झांसी की रानी के हाथ में तलवार थी, और तलवार के जौहर में वह अपने जमाने के सब लोगों से आगे बढ़ गई थी, लेकिन सभी औरतें झांसी की रानी नहीं बन सकतीं। फिर भी उन्हें भगाकर लेजाने वालों को वे यह जरूर कह सकती हैं कि न तुम हमें मुसलमान बना सकते हो, न अपने घरों में डाल सकते हो। मरने का इल्म तो सब जानते हैं। सीता एक दुबली-पतली और निरपराध स्त्री थी, लेकिन महाबली रावण भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सका।

सीता की मिसाल को हम किस्से-कहानी की बात कहकर उड़ा न दें। मैंने मिस ओलिव डोक को देखा है। वह अकेली जंगली हब्शियों के बीच रहती थी और किसी ने उनकी तरफ आंख तक उठाने की हिम्मत नहीं की। मैं हिन्दुस्तान की औरतों में ऐसी ही सात्विक हिम्मत देखना चाहता हूं। आज पूर्वी बंगाल में फौज औरतों को बचाने की कोशिश कर रही है लेकिन जिन्हें भगा लिया गया है, या जो फौज या पुलिस की हिफाजत के बावजूद भी भगाई जा सकती है, उनका क्या? उन्हें अपनी रक्षा स्वयं करनी होगी। उसका एक ही अचूक रास्ता है मरने की कला सीखना। जिसे मरना ही है, वह अपनी जीभ काटकर या सांस रोककर भी मर सकता है।

अगर मरने का सीधा रास्ता जहर ही हो, तो मैं कहूंगा कि बेइज्जती कराने की बनिस्बत जहर खाकर मर जाना बेहतर है। मगर मैं योग जानने वालों से इस बारे में दरयाफ्त करूंगा कि मेरा ख्याल है कि जहर के सिवा भी मरने का रास्ता होना चाहिये। हमने अपनी लड़कियों को बेबसी की शिक्षा दी है। हमने उन्हें सिखाया है कि उनकी रक्षा अपने पति के साथ या चिता पर ही हो सकती है। अगर इस तरह हिन्दुस्तान के ४० करोड़ लोगों में से आधे बेबस बन जायं, तो सच्ची आजादी आ नहीं सकती। औरतों के दिल में यह विश्वास होना चाहिए कि अपनी प्रतिष्ठा बचाने वाली वे स्वयं हैं। जिसने मौत के डर को जीत लिया है, उसकी बेइज्जती कौन कर सकता है? जिन्हें खंजर रखना हो, वे भले खंजर रक्खें। लेकिन खंजर से एक-दो का सामना किया जा सकता है, सैकड़ों का नहीं। खंजर तो कमजोरी की निशानी है। आखिरकार जान पर खेल जाने की तैयारी ही हर हालत में औरतों की इज्जत बचा सकती है और कुछ न कर सकें तो वे अपने जेब में जहर ही रक्खें। जहर खाकर मरना नैतिक पतन से कहीं अच्छा है।

—म० गांधी

नारी पर अमानुष अत्याचार

विधान-परिषद की सदस्या श्रीमती लीला राय ने नोआखाली के नरमेध के सम्बन्ध में बंगाल-गवर्नर को लिखी एक चिट्ठी में उन पर जान-बूझ कर चुप्पी का आरोप लगाते हुए लिखा है—'इस सम्पूर्ण हत्या-काण्ड ने आपको जरा भी विचलित नहीं किया। इस देश की नारियों को पद-पद पर अप्रतिष्ठा का सामना करना पड़ रहा है, इस एक बात से भी आपके हृदय से क्रोध की एक चिंगारी भी नहीं फूटी। मैं आपका ध्यान नोआखाला में महिलाओं के साथ किये गये पशु-व्यवहार की ओर विशेष रूप से आकर्षित करती हूं। घटनाओं के सरकारी या गैरसरकारी वर्णनों से यह तो असन्दिग्ध रूप से सिद्ध है कि कत्लेआम, लूटपाट, अग्नि-काण्ड तथा सामूहिक धर्म-परिवर्तन के साथ-साथ जबर्दस्ती विवाह तथा नारी-अपहरण भी किया गया। आप सरकार के प्रधान हैं और इस देश की महिलाओं की ओर से मैं आपसे निम्न प्रश्न पूछती हूं —

(१) महिलाओं की रक्षा के लिए आपने क्या किया है?

(२) अब तक कितनी औरतों की रक्षा की गई है?

(३) बचाई गई औरतों के साथ क्या किया गया है?

(४) क्या आप उन स्त्री-पुरुष स्वयंसेवकों को सैनिक सुरक्षा देने के लिए तैयार हैं, जो नोआखाली के गांवों का दौरा करके स्थिति की जानकारी हासिल करना तथा तथा सहायता-कार्य करना चाहते हैं।

यदि आप इस प्रारम्भिक मांग को पूरा नहीं कर सकते, तो हमें यह जानने का अधिकार है कि सरकार किस उद्देश्य से 'कानून और व्यवस्था' का ठेकेदार बनने का स्वांग रच रही है।

———

त्रिपुरा में लीगियों द्वारा त्रस्त और पीड़ित आश्रयार्थी स्त्रियों के एक कैंप में वायसराय

अमेरिका में

शीशे की नालियों में संतान की उत्पत्ति

अमरीका ने जहां हर क्षेत्र में उन्नति की है, वहां संतान उत्पन्न करने के विज्ञान को अछूता नहीं छोड़ा है। अब यह आवश्यक नहीं है कि एक स्त्री किसी पुरुष के सम्पर्क में आवे, तभी सन्तानोत्पत्ति हो सके। आज अमरीका में लड़कियां वास्तविक रूप से कुंवारी रहते हुए भी मां बन सकती है। और इस वैज्ञानिक प्रयोग ने न मालूम कितनी निःसंतान स्त्रियों को उनके बध्यात्व से निराकरण की आशा दिलाई है। भले ही आप इसे अच्छा कहें या बुरा, आज इसी प्रयोग के कारण अमरीका में कई हजार नालिका-प्रसूत बच्चे अच्छी तरह पालन पा रहे हैं।

स्वस्थ पुरुषों के बीजाणु कांच की नलियों (टेस्ट-ट्यूब) में रक्खे जाते हैं और उन बीजाणुओं द्वारा इन स्त्रियों का गर्भाधान किया जाता है, जो अपने नपुंसक पतियों के कारण संतानोत्पन्न में असमर्थ हैं। ध्यान रहे, स्त्री गर्भ धारण करने के योग्य होनी चाहिए, यदि उसमें कोई खराबी हुई तो प्रयोग कदापि सफल नहीं हो सकता। इस समय अमेरिका में 'ट्रेस्ट-ट्यूब बेबीज' की संख्या कितनी है? इसका ठीक ठीक अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता है, क्योंकि अधिकांश माताये इतना साहस अभी नहीं रखती हैं कि खुले आम यह स्वीकार कर लें कि उनका बच्चा 'टेस्ट ट्यूब बेबी है'। केवल पति-पत्नी तथा डाक्टर तक ही यह खबर रखती है। कोई भी डाक्टर पति की सहमति के बिना किसी स्त्री का गर्भाधान कराने के लिये राजी नहीं होता। बहुत-सी स्त्रियां अपने असमर्थ पतियों को धोखा देकर कृत्रिम उपाय से सर्भाधान कराना चाहती हैं जिससे पति महाशय यह समझ कर कि बच्चा उन्हीं का है उसके प्रति प्रेम बनाये रहें। लेकिन डाक्टर लोग ऐसे आवेदनों को प्रायः अस्वीकार कर देते हैं। केवल इतना ही नहीं यदि पति महोदय राजी भी हो तो डाक्टर यह देखता है कि पति-पत्नी के प्रेम की नींव कितनी दृढ़ है। कहीं यह तो नहीं कि संतानोत्पत्ति के बाद दोनों के प्रेम में अन्तर आ जाये। पति भी पुत्र के लिये उतना ही उत्सुक है जितना कि पत्नी क्योंकि किसी अज्ञात पुरुष के बीजाणु से पत्नी को गर्भवती कराने की बात पर राजी होने के लिये पति में मनोवैज्ञानिक दृढ़ता की आवश्यकता होती है।

कुछ लोगों ने सुझाव पेश किया है कि पति के किसी भाई या पिता के बीजाणु द्वारा गर्भाधान कराया जाय ताकि यदि पति का नहीं तो कम से कम उसी वंश का रक्त तो सुरक्षित रहे। पर डाक्टर लोग इस बात पर भी राजी नहीं होते क्योंकि इसमें इस बात का डर रहता है कि मां की ममता इस प्रकार से परिवार के उस व्यक्ति की ओर अधिक बढ़ जायेगी जिससे तलाक तक की नौबत आ सकती है।

अब यह प्रश्न उठता है, कि इस प्रकार से जो बच्चे उत्पन्न होते हैं वह जायज माने जाये या नहीं। कुछ जजों ने यह मत प्रकट किया है कि कृत्रिम गर्भाधान को कांच की नली म व्यभिचार की संज्ञा देनी चाहिये। वास्तव में यद्यपि इस क्रिया से स्त्री का किसी पर-पुरुष से प्रत्यक्ष संबंध नहीं होता, फिर भी परोक्ष रूप से किसी पर-पुरुष का बीज ग्रहण करना नैतिक व्यभिचार के बराबर है। लेकिन शिकागो के एक तलाक के मामले में एक जज ने यह फैसला दिया है कि कृत्रिम गर्भाधान को व्यभिचार नहीं माना जा सकता और इसलिये तलाक के लिये उपयुक्त कारण नहीं है। कुछ भी हो, कृत्रिम गर्भाधान उलझन का कारण बन सकता है। यदि वह पुरुष यह जान जाये कि उसके बीजाणु इस स्त्री ने धारण किये हैं और वह यह साबित करदे, तो पुत्र पर उसका अधिकार हो जाता है

[शेष पृष्ठ २० पर]

Collection Haridwar. Digitized by eGangotri

समाचार चित्रावली

मेरठ कांग्रेस की तैयारियां

ऊपर की ओर—श्री एण्डनजी के साथ स्वागताध्यक्ष
भारतीय दुर्भिक्ष की प्रतिमा
दायीं ओर—प्यारेलाल नगर का प्रवेश द्वार
बायीं ओर – प्रदर्शनी में एक तालाब

सत्यार्थ प्रकाश-सत्याग्रह

के

प्रमुख सत्याग्रही नेता

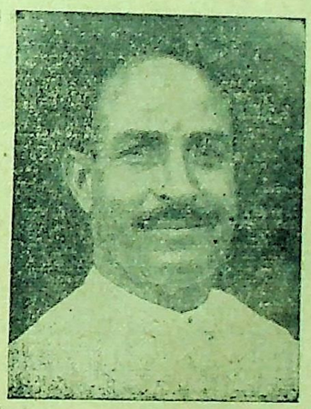

श्री धुरन्द्रजी शास्त्री

श्री वेदव्रतजी (स्वा० अभेदानन्द)

सर्वाधिकारी श्री नारायण स्वामीजी

श्री चांदकरण शारदा

ला० खुशहालचन्दजी

पाठकों का अपना अपना दृष्टिकोण

बिलों में सुधार हो

युक्त प्रान्तीय सरकार ने अस्थायी यू० पी० कण्ट्रोल आफ रेन्ट एण्ड एविक्शन बिल १९४६ प्रकाशित किया है। इसमें धारा ३ (एच) में भू-स्वामी को यह अधिकार दिया गया है कि यदि स्थान की उसे अपने प्रयोग के लिये आवश्यकता हो तो वह खाली करा सकता है। मेरी सम्मति में भू-स्वामी को आवश्यक रूप से एक घोषणा पत्र कोर्ट में देना चाहिये, जिसमें वह घोषित करे कि 'मुझे इस स्थान को अपने प्रयोग के लिये आवश्यकता है और मैं यह घोषणा करता हूं कि जब तक यह कानून लागू रहेगा, मैं इस स्थान को किसी अन्य व्यक्ति को किसी भी किराये पर नहीं दूंगा, अपितु स्वयं ही इस स्थान का प्रयोग करूंगा। इस घोषणापत्र के विरुद्ध आचरण इस कानून का तोड़ना समझा जायेगा तथा मैं इस कानून के तोड़ने में दण्ड का भागी होऊंगा।"

प्रायः दुकानदार अपनी दुकान का कुछ भाग दूसरों को थोड़े समय के लिए दे दिया करते हैं और जब काम काज की तेजी के दिन आते हैं, तो खाली करा लेते हैं। इससे लाभ यह होता है कि काम की मन्दी के समय दूसरे लोग उस स्थान से लाभ उठा लेते हैं तथा दुकानदार को कुछ किराया मिल जाता है, वर्तमान कानून के अनुसार कोई दुकानदार किसी को दुकान का कोई भाग न दे सकेगा और यदि दे दिया तो पुनः वह भाग खाली न कराया जा सकेगा। इसलिये इस कानून में एक ऐसी धारा और जोड़ देनी चाहिये, जिससे कोई दुकानदार किसी अन्य व्यक्ति को दुकान का कुछ भाग कुछ दिनों के लिये दे सके और काम के तेजी वाले दिनों में खाली करा सके। यह धारा दुकानों के सम्बंध तक सीमित रखा जा सकती है।

इसी प्रकार युक्त प्रांतीय सरकार ने एक और बिल यू० पी० शाप्स एण्ड कमर्शियल एस्टेबलिशमैण्ट १९४६ प्रकाशित किया है। इसके अनुसार ७ बजे से पहले और रात को १० बजे के बाद दुकान खुली रखना मना कर दिया गया है। मेरी सम्मति में सर्दियों में अर्थात् १ अक्टूबर से ३१ जनवरी तक प्रातः ९ बजे से पहले और रात को ९ बजे के बाद कोई दुकान खुली न रह सके और न ही किसी अन्य प्रकार का सौदा किया जाय। क्योंकि प्रातः का ७ तो गर्मियों में भी बहुत जल्दी होता है और सर्दियों में तो बहुतही जल्दी होगा। शेष ऋतुओं में प्रातः ८ बजे से रात के १० बजे तक समय निर्धारित किया जा सकता है। प्रातः ७ बजे का समय रखने से दुकान पर कार्य करने वाले कर्मचारियों को इस कानून का कोई लाभ न मिल सकेगा।

— एक मुर्तिम
बरेली]

दलितों में लीगी प्रचार

मैं इन दिनों राजपूताने की रियासतों का दौरा कर गुजरात-काठियावाड़ की रियासतों में जा रहा हूं और अछूत भाइयों से मिल कर मुस्लिम लीगियों के हथकंडे, झूठे प्रचार नीच मनोवृत्तियों का अध्ययन कर रहा हूं। मुस्लिमलीग के डाइरेक्ट एक्शन की धमकी व अत्याचारों से हिन्दू जनता में आतंक फैला हुआ है। डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, उदयपुर, ईडर आदि रियासतों में डरकर इस आतंक से लोग 'हिन्दू-संगठन' पर पूरा बल दे रहे हैं।

दलितों को नोआखाली के अत्याचारों की दारुण कहानी सुनाकर भयभीत किया जा रहा है और मुसलमान बनने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। कहा जाता है कि अनेक हिन्दू स्त्रियों को बहकाकर मुसलमान भगा ले गये हैं। एक भील नवयुवती मंगरी का प्रसव हुए अभी सिर्फ आठ दिन ही हुए हैं, वह स्त्री डरकर अपना आठ दिन का जिंदा बच्चा झाड़ियों में डालकर मुसलमान के साथ भाग रही थी। पता चलने पर पुलिस को इतला दी। पुलिस ने बच्चे को बरामद कर उसकी मां का पकड़वा मंगवाया, उसने बयान दिया कि मैं एक मुसलमान के साथ अपनी रक्षा के लिए भाग जाना चाहती हूं। यह बच्चा हमारी आजादी में रुकावट था, इसलिए मैंने वहां जिन्दा डाल दिया। कहते हैं कि मुस्लिम पुलिस कर्मचारियों ने मामले को आगे नहीं बढ़ाया। इन्हीं दिनों इस किस्म के मुस्लिम गुण्डों से भगाई जाने वाली तीन स्त्रियों को आर्यसमाज डूंगरपुर ने छुड़ाया। आज समाज में दो सुरक्षित हैं, एक को उसके पति के पास पहुंचा दिया।

मि० योगेन्द्रनाथ मंडल के लीग द्वारा अन्तःकालीन सरकार में लिये जाने के बाद से अछूतों में हर जगह यह झूठा प्रचार शुरू कर दिया गया है कि अंबेडकरी पथ के ६ करोड़ अछूतों ने मुस्लिम धर्म को स्वीकृत कर लिया है और बड़ी तेजी से अछूत मुसलमानी धर्म में परिवर्तित हो रहे हैं। डूंगरपुर रियासत में प्रचार किया जारहा है कि प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, ईडर, उदयपुर के सब अछूत मुसलमान बन गये। दूसरी दूसरी रियासतों में अड़ोस-पड़ोस की रियासतों का नाम लेकर बतला कर झूठा प्रचार किया जा रहा है। अछूतों के भोले भालेपन से नाजायज फायदा उठाया जा रहा है।

हैदराबाद] — ठा० रघुवीरसिंह आर्य

झालावाड़ में पंचायतें

राणा झालावाड़ नरेश ने अपनी वर्ष गांठ पर राज-सभा में निम्न-लिखित घोषणाएं की थीं :—

(१) संयुक्त निर्वाचन प्रणाली तथा बालिग मताधिकार द्वारा राज्य के प्रत्येक गांव में ग्राम-पंचायतों की स्थापना।

(२) म्युनिस्पिलटियों को अध्यक्ष के निर्वाचन करने का अधिकार।

(३) घूंस-विरोधी तथा पब्लिक-सर्विस-कमीशन सभाओं की स्थापना।

(४) ग्राम-पुनर्निर्माण, सरकारी-सभाओं तथा पशु-पालन के लिये विभागों की स्थापना।

(५) पंचायतों तथा सम्बन्धित अन्य उपकारी कार्यों के विकास के लिये एक लाख रुपये की स्वीकृति।

(६) अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा। राज्य में पहले ही से शिक्षा निःशुल्क है

शासन के विचार से 'पंचायत कानून' इन सब में अधीक ध्यान देने योग्य है, जिसकी योजनाओं का सार निम्नलिखित है—

रियासत में हर एक गांव के लिये एक पचायत होगी, जिसका नाम 'देहाती पचायत' होगा। इस देहाती पचायत के मेम्बर हर एक निजामत के लिये, एक 'निजामत पंचायत' चुनेंगे और राज्य की सब निजामत पचायतें मिलकर एक 'राज्य पचायत' चुनेगी। हर एक बालिग को चाहे वह आदमी हो या औरत चुनाव में अपनी राय देने का हक होगा। तमाम आदमी और औरतें बगैर किसी तरह के जाति या धर्म भेद भावों के एक दूसरे के लिये आजादी से राय दे सकेंगे।

(क) न्याय

अदालती मुआमलों में राजनामों मुकद्दमों, दफा १०७ और १०९ जाब्ता फौजदारी के सिवाय देहाती पंचायतों के सामने पेश होंगे।

दीवानी विभाग के १००)रु० तक के और माल सीगे के खातेदारों और काश्तकार के बीच के लगान के मुकद्दमें 'देहाती पचायतें' सुन सकेंगी।

'देहाती पंचायतों' के हुक्म की अपील 'निजामत पंचायत में होगी और बाद में इसकी अपील 'राज्य पचायत' में दायर हो सकेगी। वकील लोग सिर्फ श्री आलिया इजलास खास में ही पैरवी कर सकेंगे।

(ख) प्रबन्ध

राज्य करने में पंचायतों के हक बहुत ज्यादह होंगे। इनमें प्रजा के नागरिक, नैतिक, आर्थिक और शारीरिक उन्नति के मामले भी शामिल हैं। असल में 'राष्ट्र-निर्माण' और प्रजा के फायदों के कोई काम ऐसे नहीं रह जाते, जिन्हें अपनी मरजी के मुआफिक करने का प्रजा को मौका न दे दिया गया हो। अपने गांव के गरीब व अनाथ लोगों की देख-भाल से लेकर राज्य के उन कर्मचारियों की निगरानी तक, जो उनके गांव में काम करते हैं, पूरी तौर से प्रजा के हाथों में होगी।

हर काम में राय देने वालों की आवाज आखिरी होगी, क्योंकि पचायत के मेम्बरों को, राय देने वाले अगर उन्हें यह मालूम हो जाये कि वह उनकी नीति पर अमल नहीं कर रहे हैं, पंचायत से मियाद से पहले भी वापस बुला सकते हैं और जरूरत पड़ने पर सरकार पचायतों को काम करने पर मजबूर कर सकती है।

भारतवर्ष का अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं में भाग

भारत वर्ष ने पिछले वर्षों में विविध अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं में जितनी रकमें दी हैं, उनका अनुमान साधारणतः नहीं किया जा सकता। नीचे लिखे आंकड़ों से मालूम होता है कि वह राशि कितनी महान और कल्पनातीत है:—

संस्था का नाम	रकम
अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष	४० करोड़ डालर
,, पुनर्निर्माण बैंक	,, ,, ,, (इसमें ३२ करोड़ डालर पीछे दिया जायगा)।
लीग आफ नेशन्स	१४,२०,००० रु०
नया मित्रराष्ट्रीय संगठन	१०,९७,७५० डालर स्थायी कोष में पहले बजट के लिए देय धन का निश्चय नहीं हुआ।
शरणार्थियों की सहायता	३६००० रु० प्रति वर्ष
ऋतु विज्ञानपरीक्षण शाला	२१०० रु० प्रति वर्ष
अस्थायी अन्तर्राष्ट्रीय हवाई उड़ान संघ	१,३०,००० रु०
हवाई समुद्री कमिशन पेरिस,	६००० रु० प्रति वर्ष
तार टैलिफोन संघ	१३००० रु० प्रति वर्ष
विश्व डाक संघ	१०००० रु०
अन्न खाद्य कृषि संघ	१,०६,२५० डालर प्रथम वर्ष १८६८००० डालर दूसरे वर्ष
अन्न कृषि संस्था रोम	१९४० से कुछ नहीं दिया
यू. एन. आर. आर. ए.	८ करोड़ रुपये
अन्न युद्ध क्षति-एजेंसी	अभी तक पता नहीं
मित्रराष्ट्रीय सूचना विभाग लन्दन	६६६७ रु० प्रति वर्ष
मित्रराष्ट्रीय सूचना विभाग वाशिंगटन	११९८० रु० प्रति वर्ष
मित्रराष्ट्रीय स्वास्थ्य रक्षण संस्था	१२५६ पौंड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

'वीर अर्जुन' की
पूर्वी बंगाल सहायक निधि

नोआखाली व पूर्वी बंगाल के अन्य स्थानों में मुस्लिमलीगी गुण्डाशाही के शिकार हजारों हिन्दू नर-नारियों के परिवारों से सहानुभूति प्रदर्शन करने और उनकी कुछ सहायता करने के लिए 'वीर अर्जुन' ने एक सहायक निधि खोली है, जिसमें कुछ ही दिन में २०००) जमा हो गया है। अपनी इस निधि में अपना भाग भेजिये।

—सम्पादक

★ वीर ★

अर्जुन

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार २६ कार्तिक सम्वत् २००३

सांप्रदायिक विद्वेष का मूल कारण खोजो

गत सप्ताह देश की सांप्रदायिक स्थिति जितनी गंभीर थी, आज वह उससे भी अधिक गंभीर हो गई है। बिहार में साम्प्रदायिक रक्तपात की घटनाओं का वर्णन अत्यन्त हृदय-विदारक है। संयुक्त प्रांत के भी अनेक स्थानों से छोटे-मोटे उपद्रवों की सूचनाएं अब प्रायः दूसरे तीसरे दिन मिलने लगी हैं। दिल्ली तक में भी दंगा हो गया। अन्य अनेक स्थानों में भी वैमनस्य के बढ़ जाने के कारण किसी भी क्षण दंगे की आशंका की जाने लगी है! स्थिति की विषमता को शान्त करने के प्रयत्न नेताओं ने किये, लेकिन स्थिति और भी बिगड़ती जा रही है।

म० गांधी जब नोआखाली की ओर रवाना हुए थे, तब साधारण भारतीयों में एक आशा का उदय हुआ था कि अब वे जाकर स्थिति को संभाल लेंगे, लेकिन स्थिति लगातार बिगड़ती जा रही है। आज उनके अनशन की धमकी ने बिहार के ही नहीं, समस्त भारत के हिन्दुओं में चिन्ता के साथ क्षोभ की लहर भी पैदा करदी है। आखिर, समस्त राष्ट्रीय नेताओं और सरकारों के प्रयत्नों के बावजूद स्थिति लगातार क्यों विषम होती जा रही है?

इस का मुख्य कारण यह है कि राष्ट्रीय सरकार के नेताओं ने तथा अन्य सरकारी कर्मचारियों ने सांप्रदायिक वैमनस्य के मूल कारणों की गहराई में न जाकर उसके ऊपरी चिन्हों को दबाने का कृत्रिम प्रयत्न किया है। इस कारण असंतोष और भी उग्र रूप धारण करता जा रहा है। आज देश में सांप्रदायिक विद्वेष की जो लहर चली, उसके मूल कारण की विवेचना के लिए अधिक दूर जाने की जरूरत नहीं। मि० जिन्ना का 'डान' जब से प्रारम्भ हुआ, तब से वह लगातार सांप्रदायिक विद्वेष का प्रचार कर रहा है। उसपर आजतक भी कोई कार्रवाई नहीं की गई। मुस्लिमलीग ने डायरैक्ट एक्शन का निश्चय किया और सर फीरोजखां जैसे लीगी नेताओं ने चंगेजखां और नादिरशाह की पुनरावृत्ति करने की धमकी दी, तब भी न दिल्ली सरकार ने और न भारत सरकार ने उस पर कोई कार्रवाई की। इसके बाद जब कलकत्ते में मुस्लिमलीगियों ने कतलेआम किया, तब बहुत समय तक सरकार ने उस पर कोई कार्रवाई नहीं की और जब हिन्दुओं ने आत्मरक्षा के लिये प्रत्याक्रमण किया, तब पुलिस और सेना की टुकड़ियां अपनी सरगर्मी दिखाने पहुंच गईं। इसके भी कुछ समय बाद पूर्वीय बंगाल में लीगी गुण्डों द्वारा जो नृशंस और अमानुष नरमेध १० अक्टूबर को आरम्भ हुआ, वह २० दिन तक लगातार चलता रहा। पुलिस और सरकार की जो कार्यवाहियां हुईं, वे इतनी प्रभावशून्य और निष्कर्मण्यतापूर्ण थीं कि २० दिनों तक भी ऐसी वारदातें होती रहीं और किसी ने हिन्दुओंकी सुध न ली। वे घटनाएं इतनी रोमांचकारी थीं कि पं० नेहरूजी के शब्दों में 'वे मुर्दों को भी कंपा देने वाली थीं।' सरकार की उदासीनता और निष्कर्मण्यता से परेशान होकर हिन्दू जनता का धीरज टूट गया। बिहार की घटनाएं मुस्लिम लीगी आक्रमण, बंगाल की लीगी सरकार की शरारत तथा केन्द्रीय सरकार की असमर्थता या किंकर्तव्यविमूढ़ता आदि की प्रतिक्रिया मात्र थीं। हम आज साम्प्रदायिक विद्वेष का प्रचार नहीं करना चाहते और न बिहारके हिन्दुओं की आक्रमण नीति का समर्थन करना चाहते हैं। हम जानते हैं कि इस नीति से भारत में साम्प्रदायिक विद्वेष की आग ज्यादा से ज्यादा भड़केगी, लेकिन फिर भी हम अत्यन्त नम्रता और अपनी पूर्ण शक्ति के साथ यह कहना चाहते हैं कि बिहार में जो कुछ हुआ, वह स्वाभाविक था और उसकी जिम्मेवारी उन सब पर है, जिन्होंने मुस्लिमलीग के जहरीले प्रचार तथा बीभत्स और अमानुष रक्तपात को ठीक समय न रोक कर अपनी दुष्टता, असमर्थता या किंकर्तव्यविमूढ़ता का परिचय दिया है। आज केन्द्रीय सरकार के नेता पं० नेहरूजी बिहार-निवासियों को बमवर्षा और गांधीजी के आमरण अनशन की धमकी देते हैं, लेकिन इसकी प्रतिक्रिया हिन्दुओं के दिल व दिमाग पर हो रही है। वे अब खुले आम पूछने लगे हैं कि जब नोआखाली में अमानुष और रोमहर्षण अत्याचार हो रहे थे, तब क्यों नहीं कोई बम बरसाया गया? हम राष्ट्रीय सरकार के समर्थक हैं। हम चाहते हैं कि वह अपने प्रयत्नों में सफल हो और राष्ट्र में एकता व शान्ति की स्थापना कर सके। हम उसकी कठिनाइयों और मर्यादाओं को भी समझते हैं और म० गांधी व नेहरूजी जैसे आदरणीय नेताओं की भावनाओं में भी हमें किसी तरह का सन्देह नहीं है। लेकिन इसके बावजूद हम यह कहना चाहते हैं कि वे शान्ति-प्रसार के लिये जो साधन बरत रहे हैं, वे कारगर नहीं होंगे। बिहार का दंगा प्रतिक्रिया थी और नोआखाली का संभवतः प्रत्याक्रमण था और यह उस स्थिति में हुआ, जब नोआखाली आदि में सरकार की असमर्थता देखकर बिहार के हिन्दुओं ने यह अनुभव कर लिया कि उनकी रक्षा करने वाला कोई नहीं है। ऐसी प्रतिक्रिया अन्यत्र भी हो सकती है। बिहार या अन्यत्र ऐसी प्रतिक्रियाओं को रोकने का एकमात्र सही हल यह है कि विद्वेष और उपद्रव के मूल कारण पर पूर्ण शक्ति और प्रभावकारिता के साथ चोट की जाय। आश्चर्य और दुःख की बात यह है कि सरकार इस संबंध में अत्यन्त उदासीन है।

मि० जिन्ना को भारत की विदेशी सरकार ने तब 'डान' पत्र निकालने की अनुमति दी, जब भारत में कागज की दुलभता थी और नये पत्रों को न अनुमति मिलती थी और न कागज के लिए कोटा। लेकिन उस समय सरकार को कांग्रेस के विरोध में एक शक्ति खड़ी करनी थी और इसमें संदेह नहीं कि सरकार का संकेत पाकर 'डान' ने भारत के समस्त राष्ट्रीय शरीर को विषमय कर दिया। मि० जिन्ना का यह पत्र आज भी अहिंसा की मूर्ति म० गांधी, कांग्रेस के नये अध्यक्ष आचार्य कृपलानी तथा बिहार के प्रधान मंत्री श्रीकृष्णसिंह पर मुकदमा चलाने का परामर्श खुले आम दे रहा है। उसकी भाषा पर न कोई बन्धन है और न विचारों पर। जब तक वह खुले आम जहर फैलाता रहेगा और जब तक मिस्टर जिन्ना स्वयं निर्द्वन्द्व और निर्भीक होकर साम्प्रदायिक द्वेष का चक्र चलाते रहेंगे, तब तक नोआखाली, बिहार या अन्यान्य ऐसे दंगों की पुनरावृत्ति होती रहेगी। इसीलिए आज यदि भारत के नेता और भारत सरकार इस सम्बन्ध में कोई प्रभावशाली कदम उठाना चाहती है, तो उसे अत्यन्त दृढ होकर साम्प्रदायिक विद्वेष की जड़ पर ही कुठाराघात करना चाहिए। ऐसा न करके वह बम और तोपों से सैकड़ों या हजारों को भून कर भी देश में शान्ति की स्थापना में सफल हो सकेगी, इसमें हमें पूरा सन्देह है।

आज जरूरत इस बात की है कि समस्त देश में एक कठोर नीति स्वीकार की जाय। अलीगढ़ की मुस्लिम यूनिवर्सिटी के विरुद्ध कठोर कार्रवाई का निर्णय अबतक नहीं किया गया, पूर्वी बंगाल की मुस्लिम जनता पर कोई सामूहिक कर नहीं लगाये गये, लीगी नेताओं के भाषण और लेखन पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया गया। इस प्रकार की दुर्बल नीति से आक्रमणकारी को प्रोत्साहन मिलता रहा है और आगे भी कठोर कार्रवाई न करने पर प्रोत्साहन मिलता रहेगा।

खानों का नियंत्रण

अब तक खनिजों के संबन्ध में भारत सरकार की नीति अत्यन्त दूषित रही है। खनिज द्रव्य निकालने का कार्य मुख्यतः विदेशी पूंजिपतियों के हाथों में था, जो देश की पेट्रोलियम, सोना और तांबे की खानों के स्वामी थे। मैंगेनीज तथा क्रोमियम की खानों का भी वही नियंत्रण करते थे। खानोंके विदेशी स्वामी खनिजों का शोषण दीर्घ कालीन राष्ट्रहित की दृष्टि से नहीं, केवल भारी मुनाफा कमाने के ख्याल से करते थे। खानें किसी राष्ट्र की अमूल्य निधि होती हैं। वे समाप्त होने वाली होती हैं, इस लिए उनका उपयोग भविष्य की दृष्टि से भी करना होता है, लेकिन विदेशी खानमालिकों को इसकी चिन्ता नहीं थी। सरकार की उदासीनता का परिणाम यह हुआ कि भारत के खान मालिकों का ध्यान खनिजों के निर्यात की ओर रहा। इन खनिज द्रव्यों पर किसी प्रकार का निर्यात-कर नहीं लगाया जाता। ये खनिज द्रव्य बाहर जाते हैं और विदेशों से आने वाला ५० प्रतिशत सामान हमारे इन्हीं साधनों से तैयार होताहै मैंगेनीज, अबरक, सोना, क्रोमाइट आदि खनिज द्रव्य बाहर जाकर फिर यहां आते हैं और लाखों करोड़ों रु० का लाभ विदेशी पूंजीपति लेते हैं। इसलिए इस संबंध में शीघ्र ही कोई क्रान्तिकारी कदम उठाने की जरूरत है। इन खानों को एक दम भारतीय हाथों में लेने और उन पर सरकारी नियंत्रण स्थापित करने की आवश्कता है। हमें यह भी स्मरण रखना चाहिये कि भारत के खनिज साधन न तो अक्षय हैं और न सभी राष्ट्रीय आवश्यकताओं के लिये पर्याप्त ही हैं। यह हर्ष की बात है कि भारत सकार इस संबंध में देशव्यापी नीति निर्धारित करने के लिए एक सम्मेलन बुला रही है, जिसमें इस दृष्टिकोण से इन प्रश्नों पर विचार किया जायगा।

देशव्यापी उपद्रव

कलकत्ता और नोआखाली में दंगों की जो आग लगी थी वह फैल कर बिहार में पहुंच गई। बङ्गाल की परिस्थिति का अध्ययन करने के लिये अन्तःकालीन सरकार के चार सदस्य प० नेहरू, सरदार पटेल, लियाकतअली खां और अब्दुरब निश्तर कलकत्ता तक गये। प० नेहरू कलकत्ता से लौट कर पटना चले गये। वहां आपने हिन्दुओं को सम्बोधित करते हुए कहा: 'यदि तुम एक मुसलमान को मारना चाहते हो तो तुम्हें पहले मुझे मारना होगा और उसके बाद मेरी लाश पर पांव रख कर ही तुम आगे बढ़ सकते हो।'

गांधी जी ने जो कि पूर्वी बङ्गाल में किये गये नर-संहार से दुःखी होकर कलकत्ता गये थे, बिहार के नाम लिखे एक पत्र में घोषणा करते हुए कहा कि यदि गलत रास्ते पर चलने वाले बिहारियों ने अपना मार्ग नहीं बदला तो मैं अन्नाहार द्वारा मरणान्त अनशन करूंगा।

इस सम्बध में डा० श्यामप्रसाद मुखोपाध्याय ने एक वक्तव्य देते हुए कहा है, यदि गांधी जी ने अपने प्रस्तावित आमरण अनशन का विचार न त्यागा, तो वे स्थिति को न केवल और भी विषम बनाने में सहायक होंगे, इस संकट काल में हिन्दुओं की सब से बड़ी सम्भावित अपसेवा भी कर डालेंगे।

जहां कहीं भी किसी निर्दोष व्यक्ति की जान जाये, उस पर खेद प्रकट किया जाना चाहिये; पर यह आश्चर्य की बात है कि नोआखाली में अल्पसंख्यकों पर किये गये दुःखद और भयानक दमन व अत्याचार का हिन्दुस्तान के सभी भागों में बहुत से स्त्री-पुरुषों द्वारा समर्थन किया जा रहा है। यह प्रश्न केवल बंगाल प्रान्त का ही नहीं है, परन्तु देश भर के हिन्दुओं को इस पर ध्यानपूर्वक विचार करना चाहिये। सब से बड़ी आश्चर्य की बात अन्तःकालीन सरकार की अकर्मण्यता रही है। वस्तुतः यदि अन्तःकालीन सरकार के सदस्यों ने, जिनमें से कुछ अब खुले तौर पर बिहार में आकाश से बमवर्षा की धमकियां दे रहे हैं, अपनी इन धमकियों और कार्यवाहियों का उपयोग गत अगस्त और अक्टूबर में बंगाल में किया होता, तो देश भर में हुई अमानवीय घटनाओं को रोकने में बहुत कुछ सफल हो जाते।

बंबई कलकत्ता और पूर्वी बंगाल में हुए उपद्रवों के अतिरिक्त पटना, छपरा, गया और मुंगेर में उपद्रव हुए। पर ये उपद्रव बंगाल के उपद्रवों की तुलना में नृशंसता, मृत्युसंख्या और बलात् धर्म-परिवर्तन आदि की दृष्टि से अत्यन्त नगण्य हैं।

बनारस में दंगा प्रारम्भ हो गया है, निजामपुर महद, बम्बई, लुधियाना, पटियाला में भी उपद्रव जारी है, दिल्ली में पहाड़गंज से उपद्रवों की भूमिका बांधी जा रही है।

हिन्दू नेताओं की अपील के परिणामस्वरूप हिन्दू लोग उपद्रवों में भाग लेने से हिचकिचा रहे हैं, पर लीगी नेताओं के उत्तेजनात्मक और हिंसात्मक भाषण अभी तक जारी हैं ईद के अवसर पर मि० जिन्ना ने जो भाषण दिया है उसमें मुसलमानों से भविष्य में खून बहाने को तैयार हो जाने के लिये कहा है। लीगी पत्र 'डान', 'मंसूर' 'अजम' निरन्तर हिन्दुओं के विरुद्ध विषवमन कर के मुसलमानों को उपद्रवों के लिये भड़का रहे हैं, पर स्थानीय सरकार ने अभी तक उसके विरुद्ध कदम नहीं उठाया।

सैनिकों द्वारा ५०० हिन्दुओं की हत्या

यद्यपि पूर्वी बंगाल में सेनाएं भेजने का कोई समाचार प्रचारित नहीं किया गया, पर बिहार में जो सेनाएं भेजी गई हैं उसमें दो यूनिट पूर्णरूप से गोरी हैं, तीन बिल्कुल मुस्लिम हैं। शेष ६ यूनिटों में से अधिकांश में मुस्लिम सैनिक ही बहुसंख्यक हैं। इन मुस्लिम सैनिकों ने पटना जिले में गली चलाकर ५०० व्यक्तियों को मार दिया और अनेक व्यक्ति घायल हुए।

सगोत्र विवाह-बिल स्वीकृत

केन्द्रीय असेम्बली ने ७ नवम्बर को डा. जी. वी. देशमुख द्वारा प्रस्तुतबह हिन्दू बिल बिना मत-विभाजन के ही स्वीकृतकर लिया है जिसके अनुसार अब हिन्दू सगोत्र और सप्रवर विवाह कर सकेंगे।

भारत का अमरीका समर्थन करेगा

मित्रराष्ट्रीय संघ में संयुक्तराज अमरीका के शिष्टमण्डल ने सर्वसम्मति से इस बात को स्वीकार कर लिया है कि मिरास की असेम्बली को दक्षिण अफ्रीका में भारतीय भेदभाव की भारत की शिकायत पर विचार करने का पूर्ण अधिकार है। इस निश्चय का अर्थ यह है कि संयुक्त राज्य अमरीका फील्ड-मार्शल स्मट्स के इस कथन का विरोध करेगा कि भारत की शिकायत दक्षिण अफ्रीका के आन्तरिक मामले से सम्बद्ध है और इसलिये वह मित्रराष्ट्रीय संघ के कार्यक्षेत्र से बाहर है।

विदेश-मन्त्री सम्मेलन पुनः आरम्भ

४ नवम्बर से न्यूयार्क में चार विदेश-मन्त्रियों का तीसरा सम्मेलन आरम्भ हो गया है। इस सम्मेलन में सोवियत रूस तथा पश्चिमी शक्तियों के बीच पारस्परिक मतभेद और भी बढ़ता दिखाई दे रहा है। यह अनुभव किया जा रहा है कि पेरिस में समझौते की जो नीति निर्धारित की गई थी, उसके कारण अनेक समस्याएं उठ खड़ी हुई हैं। सोवियत प्रतिनिधि वहां केवल पेरिस सम्मेलन की उन सिफारिशों को स्वीकार कराने के लिये आये प्रतीत होते हैं, जिनके समर्थन में उन्होंने स्वयं पेरिस में वोट दिये थे।

इसके अतिरिक्त जो अन्य जटिल प्रश्न आकर उपस्थित हो गये हैं वे इस प्रकार हैं: (१) स्वतन्त्र ट्रीस्ट का निर्माण, (२) डेन्यूब नदी का सब के लिये खुला यातायात (३) बालकन राष्ट्रों में स्वतन्त्र व्यापार (४) युद्ध क्षतिपूर्ति का विषय, और (५) ग्रीस की सीमा आदि।

चीन और अमेरिका में नयी संधि

व्यापार और जहाजरानी के सम्बन्ध में अमेरिका और चीन में एक नया मित्रता की सन्धि हुई है। सन्धिपत्र पर नानकिंग में हस्ताक्षर किये गये हैं।

युद्ध के बाद से अब तक दोनों देशों ने इस सम्बन्ध में किसी भी देश से इस तरह की संधि के अनुसार अमेरिका को चीन में व्यापार करने और उसकी नदियों में अपने जहाज चलाने की सुविधा मिलेगी और पुरानी सुविधा भी कायम रहेगी।

सभी देशों द्वारा चीन में अपने विशेषाधिकारों के त्याग देने के कारण व्यापार और जहाजरानी के सम्बन्ध में आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय संबंध की अनुकूल एक नयी संधि करने की इच्छा से प्रेरित होकर दोनों देशों ने ऐसा निर्णय किया है। विशेषाधिकार छोड़ने के समय अमेरिका ने जो सन्धि की थी उसमें अमेरिका को जो सुविधा मिली थी। नयी सन्धि के बाद भी वे सुविधाएं बनी रहेंगी।

सूडान में प्रदर्शन

सूडान में यह अफवाह उड़ने के बाद कि सूडान को मिश्र के अधीन रखा जायगा मोहम्मद अहमद महारब नामक जज ने स्तीफा दे दिया है। उसने भीड़ के समक्ष भाषण देते हुए कहा, "हम किसी से घृणा नहीं करते और न किसी की सूडान की देशभक्ति में सन्देह करते हैं। हम केवल यह चाहते हैं कि दक्षिणी अथवा उत्तरी सूडान के मध्य कोई भेद-भाव किये बिना स्वतन्त्रतापूर्वक रहने का अधिकार होना चाहिए।'

उम्मा दल के २०,००० समर्थक तथा राष्ट्रवादी, उदारदली रिपब्लिकन और स्वतन्त्रदली व्यक्ति अब्बास पार्क में एकत्रित हो गये और काले-नीले तथा लाल रंग के झण्डे को फहराया। यह झण्डा स्वतन्त्र सूडान का झण्डा बनाया गया है। सूडान के सरकारी कार्यालय में दिये एक मेनीफेस्टो में कहा गया है कि सूडान पर सूडानियों का ही सर्वोच्च सत्ता रह सकती है।

अमरीका में नये निर्वाचन

अमरीकन कांग्रेस के निर्वाचन के नवीनतम परिणामों के अनुसार लोकसभा के ४४५ स्थानों से रिपब्लिकन दल अबतक २३३ स्थानों पर अधिकार कर चुके हैं। डेमोक्रेट प्रतिनिधियों को केवल १७४ स्थान मिले हैं। १ स्थान अमरीकन अमिक प्रतिनिधि को प्राप्त हुई है। ३७ स्थानों के निर्वाचन संघर्षों का परिणाम अभीतक प्रगट नहीं हुआ है।

इन निर्वाचनों के परिणामस्वरूप कांग्रेस के दोनों भवनों में अब रिपब्लिकन दल का बहुमत हो गया है। यह इस बात का सूचक है कि अमरीका की जनता अब प्रे० ट्रूमैन को शासन में परिवर्तन चाहती है। डेमोक्रेट सीनेटर श्री विलियम फुलब्राइट ने कहा कि ट्रूमैन को त्यागपत्र दे देना चाहिये।

पूंजी लगाने का सुअवसर

घर बैठे ४ वर्ष में सवाई पूंजी प्राप्त करनेके लिये निम्नलिखित पते से नियम व फार्म मंगावें। पता-श्री छगनलाल सिंघवी मालदास स्ट्रीट उदयपुर (मेवाड़)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

राजपूताने की रियासतों का भविष्य

[श्री 'हेमन्त']

भारत की स्वाधीनता के आन्दोलन की तरह रियासतों का आन्दोलन भी काफी पुराना है। नागरिक अधिकारों की मांग और शासन व्यवस्था में जनता के भाग की मांग तो लगभग तीस-चालीस वर्षों से की जा रही थी। किन्तु रियासतों में दायित्वपूर्ण शासन की मांग, प्रान्तों में १९३५ के विधान के अनुसार स्वाधीन मंत्रिमण्डलों के स्थापित हो जाने के बाद ही की जाने लगी। अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद के सभापति के स्थान पर पं० जवाहरलाल नेहरू के आजाने से इस आन्दोलन को और भी प्रोत्साहन मिला। सभापति के आसन से मार्च १९३९ में लुधियाना में पं० नेहरू ने जो भाषण दिया वह पहले के सब अभिभाषणों से निराला था। उसका महत्व भी असाधारण था। लुधियान सम्मेलन में जो प्रस्ताव स्वीकार किये गये उनमें विशेष ये थे--

(१) ब्रिटिश भारत की तरह रियासतों का शासन भी पूर्णरूप से लोकतान्त्रिक हो।

(२) छोटी रियासतों को अलग रहने का कोई अधिकार नहीं, इसलिये छोटी-छोटी रियासतों को मिलाकर उनके गुट बनाए जायं।

जहां तक इन दो विषयों का संबंध है, इनके बारे में आन्दोलन का सूत्रपात १९३० से ही हुआ। तब से आजतक जितने भी सम्मेलन हुए, उन सब में इन दो बातों पर विशेष जोर दिया गया। सब छोटी-छोटी रियासतों के प्रजाजनों की यह मांग है कि देश के भावी संघ में उन्हें भी कोई स्थान प्राप्त हो। यह उसी सूरत में हो सकता है, जबकि रियासतें आपस में मिलकर बड़े गुट बनालें, ताकि जनसंख्या के आधार पर केन्द्रीय धारा-सभा में वे भी अपने प्रतिनिधि भेज सकें। यह कहना अत्युक्ति न होगा कि आज रियासतों की वास्तविक समस्या शासन व्यवस्था के लोकतन्त्रीकरण की नहीं, बल्कि ५६० छोटी-बड़ी रियासतों के विलय या इसके लगभग गुट बनाने की है।

विभिन्न छोटी रियासतों के बारे में आजकल बहुत कुछ सुनने में आ रहा है, परन्तु कितने आश्चर्य की बात है कि इस संबंध में राजपूताने के बारे में अभी तक कोई योजना सामने नहीं आई है। राजपूताने में छोटी बड़ी २२ रियासतें हैं। क्या भावी संघ में ये रियासतें २२ पृथक इकाइयों के रूप में शामिल होंगी? ऐसा होगा नहीं हो सकेगा। तो फिर समस्त राजपूताने को कितनी इकाइयों में बांटा जाय? यह एक मूल प्रश्न है, जिसे सुलझाये बिना राजपूताने के भविष्य की चर्चा ही नहीं की जा सकती।

आधारभूत तथ्य

राजपूताने की किसी भी योजना में अजमेर, मारवाड़ के अंग्रेजी इलाके का मिलाना आवश्यक है। इस छोटे से क्षेत्र को संयुक्तप्रांत से जोड़ना या दिल्ली से इसका गठबन्धन करना निपट मूर्खता की बात है। भावी आयोजन में हमें अंग्रेजी और रियासती क्षेत्र में भेदभाव नहीं करना है। इस आयोजन का आधार तो केवल इन क्षेत्रों के निवासियों का कल्याण ही होना चाहिये।

राजपूताना और अजमेर, मारवाड़ का क्षेत्रफल १,३४,९५९ वर्गमील है। यह २४ भागों में बटा है—२२ रियासतें, अजमेर मारवाड़ और आबू का जिला। भाषा, संस्कृति, इतिहास और धर्म की दृष्टि से यह सारा क्षेत्र एक रूप है। किसी भी दीर्घकालीन योजना में इस क्षेत्र का बटवारा करना असम्भव होगा। जब भी यहां के लोगों में पूर्ण जागृति होगी और शासन लोकतन्त्र के आधार पर चलने लगेगा, निश्चय ही समस्त राजपूताना एक ही इकाई या प्रान्त का रूप धारण कर लेगा। इस प्रकार की उन्नति में कोई भी शक्ति बाधा नहीं डाल सकेगी। परन्तु यह आवश्यक नहीं कि इस समय भी हम इसी आधार पर आयोजन करें। हमारी अन्तःकालीन योजना का आधार सुविधा और मान्यता होना चाहिये। इस समय राजपूताना २४ हिस्सों में बटा है। इसलिये इन सबकी तत्काल एक ही इकाई बनाना शायद सम्भव न हो। हो सकता है, ऐसा करने की चेष्टा से इतनी समस्याएं खड़ी हो जायं कि हम उन्हीं में उलझकर रह जायं। इस समय तो हमारा उद्देश्य मौजूदा व्यवस्था को भंग करना है। हमें आगे बढ़ना चाहिये और फिलहाल थोड़े पर संतोष करना चाहिये। अन्तःकालीन आयोजन मौजूदा स्थिति और आदेश स्थिति के बीच की स्थिति होगी। यदि यह पग हम सफलतापूर्वक उठा सके तो शीघ्र ही हम उसमें इच्छानुसार परिवर्तन कर सकेंगे।

मेरे विचार से इस समय राजपुताने को तीन इकाइयों में बांटना ठीक होगा। राजनीतिक विभाग ने इसे पांच एजेंसियों में बांटा है, किन्तु यह विभाजन अप्राकृतिक है। न तो यह भूगोल की दृष्टि से किया गया है और न ही शासन व्यवस्था में सुविधा की दृष्टि से। इस विभाजन के अनुसार बीकानेर और सिरोही को एक ही एजेंसी में रखा गया है, यद्यपि इन दोनों के बीच कई सौ मील का फासला है। हमारे विभाजन का आधार भूगोल और शासन की सुविधा ही होगी। आय, जनसंख्या और क्षेत्रफल के आधार पर हमें साधारण मान बनाने होंगे और उन्हीं को ध्यान में रखकर २२ रियासतों, अजमेर मेरवाड़ा और आबू जिले की चार इकाइयां बनानी होंगी।

विस्तृत आयोजन

राजपूताने की तीन इकाइयां इस प्रकार होनी चाहियें—

(१) पूर्वी राजपूताना

इस इकाई में निम्नलिखित रियासतें शामिल होंगी। भरतपुर, अलवर, बूंदी, धौलपुर, जयपुर, करौली, किशनगढ़, और लावा तथा दो परगने टोंक रियासत के। इन रियासतों का क्षेत्रफल २६,८०८ वर्ग मील होगा और जनसंख्या ५,२,७४,७९१।

(२) दक्षिण राजपूतान

इस इकाई में ये रियासतें और सरकारी क्षेत्र शामिल होंगे अजमेर मेरवाड़, उदयपुर, सिरोही, माउण्ट, आबू, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, शाहपुरा, प्रतापगढ़ पालनपुर, दांता और कुशलगढ़। इस इकाई का क्षेत्रफल २४,७८९ वर्गमील और जनसंख्या ३९,०७,५५८ होगी।

(३) उत्तर पश्चिमी राजपूताना

इस इकाई में केवल तीन रियासतें शामिल हैं— जोधपुर, बीकानेर तथा जैसलमेर। इन तीनों का क्षेत्रफल ७५,२८१ वर्गमील और जनसंख्या ३९,४२,०८८ होगी।

इन तीनों इकाइयों में तीन के सिवाय राजपूताने की सब रियासतें आ जाती हैं, जो किसी एक इकाई में नहीं खप सकतीं। इसका कारण यह है कि वास्तव में टोंक एक रियासत तो है ही नहीं, यह ९-७ जिलों में बटी है, हरेक जिला एक दूसरे से दूर अन्य रियासतों में जा घुसा है। कुछ जिले तो मध्य भारत में स्थित हैं। इसलिए जो जिला जहां पड़ता है, उसे उसी क्षेत्र में लेना होगा! इस प्रकार टोंक के दो जिले तो पूर्वी राजपूताना में शामिल करने होंगे और एक या दो दक्षिण राजपूताना में। इसके अतिरिक्त हमारे पास और कोई चारा ही नहीं, क्योंकि हम और चाहे जो कुछ करें, भूगोल की उपेक्षा नहीं कर सकते। रही कोटा झालावाड़ आदि की बात, ये दोनों रियासतें भूगोल की दृष्टि से मध्य-भारत में हैं, राजपूताने में नहीं। राजपूताने और मध्य-भारत के बीच चम्बल नदी ही प्राकृतिक सीमा है। ये दोनों रियासतें चम्बल के दूसरी ओर स्थित हैं। इसलिए इन्हें राजपूताने से हटाकर मध्य-भारत से जोड़ना होगा।

उपर्युक्त इकाइयों में उत्तर-पश्चिमी राजपूताने, दक्षिणी राजपूताने की जनसंख्या जरा थोड़ी है। साधारण तौर से हम चाहते थे कि किसी इकाई की जनसंख्या ४० लाख से कम न हो। किन्तु इन इकाइयों की संख्या ४० लाख से कुछ ही कम है और ३९ लाख से ऊपर है। इसलिए यह कमी साधारण है।

आंसू

यह जलते अंगार जिन्हें जग आंसू कहता!
धधक रही है रह-रह उर में अन्तर्ज्वाला,
दमन-चक्र के प्रस्तर नीचे इस को पाला;
उभर आज आंखों में आई यह चिंगारी,
महा-क्रान्ति का चिन्ह, भयंकर तेग दुधारी—
प्रलयंकर उद्गार—जिन्हें जग आंसू कहता!
यह जलते अङ्गार—जिन्हें जग आंसू कहता!

सूखे मरु में बहने वाली अन्तर्धारा,
जो बहती स्वच्छन्द तोड़कर अपनी कारा,
बन्धन से यह बाढ़ नहीं रुक पाती पलभर,
चट्टानों के उर का स्रोत—उमड़ता निर्झर—
तूफानी बौछार—जिन्हें जग आंसू कहता!
यह जलते अंगार—जिन्हें जग आंसू कहता!

प्राणों की यह भेंट, हृदय का मूक समर्पण,
सघन व्यथा का एक बूंद में पूर्ण प्रदर्शन;
विप्लव-वादी विकट भावनाओं का परिचय,
परिवर्तन की उथल-पुथल का व्याकुल अभिनय—
मूर्तिमान प्रतिकार—जिन्हें जग आंसू कहता!
यह जलते अङ्गार—जिन्हें जग आंसू कहता!

—ओंकारसिंह 'निर्भय'

वर्तमान विश्वव्यापी युद्ध और भारतीय जनता का नैतिक पतन

[श्री राजेन्द्र कुमारी निगम एम० ए०]

भारतवर्ष में अंग्रेजी शासन ने पहला युद्ध १९१४ में किया था। यह कदाचित अंग्रेजी भारत में अंग्रेजी शासन का पहला युद्ध था जिसका शिकार भारतीय जनता को शासित-वर्ग होने के नाते होना पड़ा था। कुछ दिनों के लिए बीच में शाँतिकाल आया, जिसमें लोगों के युद्ध से प्रभावित हृदय पुरानी घटनाओं को कुछ भूल से गये। किन्तु जिन दिलों में युद्ध का रोग लग गया था, वह अन्दर ही अन्दर नासूर बन रहा था, जिसका पूर्ण विस्फोट १९३९ में हुआ, जिसने विश्वव्यापी युद्ध के नाम से प्रसिद्धि पाई। इस युद्ध के क्रोड़ में विश्व की अनेकों महाशक्तियां काम कर रही थीं। अंग्रेज जाति ने इस युद्ध में प्रधान अभिनेता का भाग लिया। इस युद्ध के आदि, मध्य और अंत तीनों ही कालों में भारतवर्ष को बुरी तरह चोट सहनी पड़ी। यह युद्ध विदेशी जाति की अपनी स्वार्थसाधना को पूरा करने के लिये शुरु किया गया था। भारत तो उनकी स्वार्थ सिद्धि को पूरा करने की सामग्री मात्र था। उसे हर प्रकार की हानि विदेशी हाथोंसे सहनी पड़ी। पराधीन देश के लिए युद्ध केवल स्वतंत्रता के लिए युद्ध के रूप में गर्व की बात हो सकता है अन्यथा नहीं। इस महायुद्ध ने भारतीय जीवन का कोई भी कोना अछूता नहीं छोड़ा था। यह युद्ध भारतीय जनता पर ऐसा आघात था, जिसने सामान्य जीवन को जर्जर बना दिया, आत्मा को झकझोर दिया, दुर्बल बना दिया जिससे हमारी नैतिकता का संहार हुआ। नैतिकता ही राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन को संचालित करती है।

युद्धकाल में जनता की राजनीतिक भावनाओं में जो नैतिक पतन देखने में आया था, वह दासत्व की भावना का बढ़ जाना। भारतीय धर्म और नीति में मुख्य रूप से भगवान या पुरुष के लिये ही दास और स्वामी, स्वामी और सेवक का सम्बन्ध मान्य है। राजा के सम्बन्ध में पिता और पुत्र की उपमा दी जाती है। भारतीय वातावरण में गुलामी की भावना का बढ़ जाना नैतिक ह्रास का सब से अपमानजनक अंग है। देश के विदेशी शासन में चले जाने के कारण आज भारतवासियों का रोटी, और जविका के लाले पड़ने लगे। वर्तमान युद्ध प्रारम्भ होने के पहिले देश में बेकारी सी फैली थी। असंख्य पढ़े-लिखे नवयुवक तथा अनपढ़ जनता भी जो बेकारी के जीवन से कुछ निराश से हो चले थे, युद्ध छिड़ जाने के कारण, युद्धकालीन विभागों की ओर ऐसे दौड़ पड़े, जैसे किसी पिंजरे में बन्द भूखे प्यासे पक्षी को द्वार खुला पा दाना चुगने को मिल जाय, फिर चाहे उसे उन दानों के पीछे जाल ही में क्यों न फंसना पड़े।

इससे यह तो अवश्य हुआ कि कुछ दिनों के लिये श्रमिकों का प्रश्न सुलझ गया। किसी को अगर ऊंचा पद मिल गया तो थोड़ा मान सम्मान भी मिला, किन्तु यह सौदा कितना महंगा था, इस पर बहुत कम लोग ध्यान देते होंगे। यह वह सौदा था जिसमें आत्मा बेच दी गई, एक निर्दयी तथा क्रूर हाथों में। यह आत्म समर्पण था। अंग्रेजों की स्वार्थ सिद्धि के लिये पंक्तियों की तरह तन्मयता से प्राण देने वालों को यहां के देशवासी अगर देशद्रोही का नाम दें तो अत्युक्ति न होगी। यद्यपि अंग्रेजी शासन के यह कटु नियम सम्पूर्ण भारतीय जनता के लिए एक समान थे, पर फिर भी सरकार युद्ध विभागों में कार्य करने वालों को विशेष रूप से साहस तथा आत्म बल दे न रह गया था कि वह अपना मुंह खोल सकें, क्योंकि उनके सामने रोटी का प्रश्न प्रमुख था और देश के प्रति कर्तव्य और धर्म का गौण।

युद्ध स्वयं बर्बरता तथा कटोरता का पोषक है और दया, करुणा, सहानुभूति जैसी वस्तु से कोसों दूर, पर भारतीय नीतिज्ञ सदा से 'अहिंसा परमो धर्मः' में विश्वास करते आये हैं और उनके अनुसार भारत के देशवासियों का यह नीति के अपनाने में सब तरह हित है। पर आज इस वाक्य के स्थान पर 'हिंसा परमो धर्मः' का उपयोग होता है। युद्ध ने पाशविक वृत्ति को इतना बढ़ाया है कि आज मानव-मानव के रक्त का पिपासु हो रहा है। पारस्परिक वैमनस्य, घृणा मारकाट दिन पर दिन बढ़ रही है।

बरसाती नदी की तरह वेगवती होकर हिंसा वृत्ति के बढ़ जाने के साथ ही साथ घोर नास्तिकता का भी प्रचार हुआ। बहुत से लोग जो पहिले बहुत पूजा-पाठ, ध्यान, संध्या आदि नहीं करते थे तो कम से कम ईश्वर की सत्ता में तो विश्वास करते ही थे, युद्ध के प्रभाव में आ वह मानने को तैयार नहीं कि युगों से चला आया अनादि, अनन्त, अनश्वर, सच्चिदानंद ब्रह्म भी कोई वस्तु है।

युद्धकाल के इन छः सात वर्षों में भारतीय जनता की राजनैतिक तथा धार्मिक भावनाओं में जो विशेष परिवर्तन देखने में आया, वह तो है ही, उसके साथ ही देश भर पर आर्थिक संकट भी आया, जिसका खुला हुआ दृश्य युद्ध जनित मंहगाई है। इस मंहगाई को अनेक दुर्गुणों का कुआं कहा जाय तो अनुचित ठीक होगा। मनुष्य की वह सब तामसिक वृत्तियां जो शांतिकाल में दबी रहीं, सुप्तावस्था में रहती हैं वही युद्धकाल में और भी बढ़ चढ़ कर प्रगट हो जाती हैं। मद्यपान, झूठ, चोरी, व्यभिचार, धोखा, मक्कारी आदि तो जैसे मामूली बातें हैं। आर्थिक संकट में जब जीवन का प्रश्न सामने हो रहने के लिये पशुवत् ठोकरें तथा अपमान सहना पड़े, तो नैतिकता का पतन जीवित हो जाता है। पेट भरने के लिए जब सुविधा से अन्न नहीं मिल पाता, तो चोरियां होती हैं। धोका, मक्कारी का प्रयोग किया जाता है। छोटी-से-छोटी वस्तु से लेकर बड़ी वस्तुके मूल्य में दुगुना और चौगुना दसगुना अन्तर सामान्य जीवन को कष्ट नाई में डाल देता है। मंहगाई के दिनों

[शेष पृष्ठ २२ पर]

कवि की दिवाली

सघन हो उठी मेरे घर में आज अमावस की अंधियाली।
बच्चे शोर मचाते जाते घर घर जगमग जली दिवाली॥
हा-हा, ही-ही, हंसी मजाकें, गूंज रही हैं चीख पुकारें,
लक्ष्मी पूजन में पूरी होती दुनिया भर की मनुहारें
खांड बताशे, खील-खिलौने, घर-घर होती हैं ज्यौनारें,
पर मेरी सूनी कुटिया में कौन स्नेह के दीपक बारे,
घर वालों के घर हैं खाली बच्चों की है भोली खाली॥
मेरी मां ने दिया जलाया घर में आग नयन में पानी,
आज अकेले में दुनिया की याद आ गयी बात पुरानी,
इस छोटे आंगन का हंसता, मधु बिखेरता एक खिलौना,
उजड़ी फुलवारी की शोभा-जन्म-भूमि का लघु मृगछौना,
शशि तारों के संग बैठकर देख रहा जग की उजियाली॥
बहन वेदना बनी खड़ी है होकर उठते गान रुदन के,
किस को आशा कौन बंधाये-सभी दुखी हैं अपने मन के,
नन्हीं बच्ची छोड़ चली मिलने जाती आंसू की सरिता,
मलमल झांक रही आंखों से रूप धार वह खोई कविता,
देखो दुनिया वालो देखो! इन दीपों की छटा निराली॥
दादी दीप जलाये बैठी किसकी वह आरती उतारे,
'लो बच्चों के लिये खिलौने' आज अचानक कौन पुकारे,
उस आंगन की घनी छांह शोभा-आश्रम-जीवन घन प्यारे,
हम बच्चों के बूढ़े बाबा- यमुना छोड़ी स्वर्ग सिधारे,
ठण्डी आह भरी ऊपर से धुंधली करुण दृष्टि भी डाली॥
'मामा मेरी साड़ी लाये-नये खिलौने मेरी गुड़िया'
'क्या उत्तर दूं' मुरझा जायेंगी भोली कोमल में पंखुरियां,
गोदी में ले आंखें चूमीं पिछली उर की करुणा सारी,
'हे भगवान! भला तेरा हो' अच्छी जीवन की बेकारी,
इधर न आना-कहीं तुम्हें भी छिपा न ले ये चादर काली॥
साथ छोड़ती एक एक कर जीवन के सुख दुख की स्मृतियां॥
आश्वासन बन धीर बंधाती भूल भरी पागल विस्मृतियां,
यहीं अकेले सूनेपन में अरमानों की चिता सजाता,
है जीवन की बाती उर का स्नेह प्राण के दीप जला,
मरघट का शृंगार-गीत मांसों के स्वर चिर वैभव शाली॥
सघन हो उठी मेरे घर में आज अमावस की अंधियाली॥

सूर्यकुमार वेदालङ्कार

विधान और नरेश

अब प्रश्न उठता है कि इन इकाइयों का विधान कैसा हो और उसमें राजाओं का क्या स्थान हो? सवाल टेढ़ा है, किन्तु इसका उत्तर सीधा है। विधान निश्चय लोकतांत्रिक होगा। प्रत्येक इकाई की सरकार स्थानीय धारा-सभा के प्रति पूर्ण रूप से उत्तरदायी होगी। राजा वैधानिक नरेशों से अधिक और कुछ नहीं रह सकते। वास्तविक सत्ता जनता के प्रतिनिधियों के हाथों में रहेगी। राजाओं का भत्ता आदि सुरक्षित रहेगा। राजा लोग जहां सम्भव हो, अपनी परिषद् बना सकते हैं, जिसके अन्तर्गत उनके निजी तथा वंश सम्बन्धी हितों का मामला रहे। अमुक इकाई का सर्वोच्च अधिकारी या गवर्नर कौन हो? इस सम्बन्ध में भी इस परिषद का निर्णय स्वीकार किया जा सकता है। अन्य सब मामले इस परिषद् के कार्य-क्षेत्र से बाहर के विषय होंगे, जिन पर इकाई के मंत्रिमडल को ही अधिकार होगा।

Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

रेडियो में एक साल—[२]

[श्री चिरंजीत]

लेखक

प्रोग्राम असिस्टैंट

प्रत्येक रेडियो स्टेशन पर कार्य संचालन के लिये भाषण, संगीत, नाटक, बाल-शिक्षा इत्यादि प्रोग्राम सम्बन्धी बहुत से विभाग (सेक्शन) होते हैं। और प्रत्येक विभाग के अध्यक्ष एक-एक या दो-दो प्रोग्राम असिस्टैंट नाम के कर्मचारी होते हैं जैसा कि मैं अपने पहले लेख में कह चुका हूं, ब्राडकास्ट होने वाले प्रोग्रामों के पीछे असल हाथ इन्हीं प्रोग्राम असिस्टैंटों का होता है और प्रोग्रामों में उन्हीं के भाषा, कला, संस्कृति और राजनीति-सम्बन्धी विचार और मनोभाव प्रतिबिम्बित होते हैं। अब प्रश्न उठता है कि इतना महत्वपूर्ण काम करने वाले ये लोग आते कहां से हैं ?

अधिकांशतः (कहीं-कहीं तो सर्वांशतः) लाहौर के गवर्नमेंट कालिज से और पंजाब के एक विशेष सत्तारूढ़ गुट के मुस्लिम लीगी परिवारों से प्रोग्राम असिस्टैण्ट लिये जाते हैं। इस स्थिति में आल इण्डिया रेडियो के प्रोग्रामों की, विशेष कर दिल्ली स्टेशन के प्रोग्रामों की जैसी रूपरेखा और दशा होनी चाहिये, उसका आसानी से अनुमान लगाया जा सकता है। और यह भी अनुमान लगाया जा सकता है कि वह गुट विशेष अपने किन एकांगी स्वार्थों और मान्यताओं के लिये आल इण्डिया रेडियो जैसी राष्ट्रीय और सार्वजनिक संस्था का दुरुपयोग कर रहा है।

हां, तो हिन्दी सलाहकार का पद ग्रहण करने के बाद जब मैंने इधर-उधर दृष्टि डाली, तो दिल्ली स्टेशन पर मैंने इसी मुस्लिम लीगी और 'उर्दूवादी' गुट को पूर्णरूप से सत्तारूढ़ पाया। सात अधिकारियों में केवल एक हिन्दू था और प्रोग्राम असिस्टैंटों में अधिकांशतः मुसलमानों की थी और जो कुछेक हिन्दू ये भी, तो वे हिन्दी साहित्य और भाषा से बिलकुल अनभिज्ञ थे। इधर तो रेडियो स्टेशन पर हिन्दी का पूर्ण 'ब्लैक-आउट' था और उधर साहित्य सम्मेलन का रेडियो-विरोधी आन्दोलन जोरों पर था। यह स्थिति देख कर मुझे ऐसे लग, मानों निपट आवश्यकता के कारण ही मुझे हिन्दी सलाहकार बना कर रखा गया है। एक हिन्दू अफसर ने मेरे इस अनुमान का समर्थन भी किया, चुनांचे मैंने रेडियो के प्रोग्रामों में हिन्दी को अनुपाततः उचित प्रतिनिधित्व दिलाने के लिये प्रयत्न करने शुरू किये, हालांकि मुझे सत्ता और अधिकारहीन 'स्टाफ आर्टिस्टों' की श्रेणी में रखा गया था। एक मुस्लिम लीगी और 'उर्दूवादी' अफसर को जब मेरे इन प्रयत्नों का कुछ आभास मिला तो उसने मुझे एक दिन बातों-बातों में जतलाया 'हम साहित्य सम्मेलन से डरने के नहीं। जो कुछ यहां होता रहा है, वही होता रहेगा। तुम्हें इन सरगर्मियों में वक्त खराब नहीं करना चाहिये। तुम्हारे पद का चाहे नाम कुछ भी हो, आखिर तो तुम स्टाफ आर्टिस्ट ही हो और तुम्हें नाटक, फीचर और गीत लिखना चाहिये।'

एक बार फिर इसी अफसर ने मुझे संकेत किया— 'अगर तुम तरक्की करना चाहते हो तो हमारी पालिसी के मुताबिक चलो।' इस पर मैंने भी संकेतात्मक भाषा में जतला दिया कि मैं शोव्वाय' बनने का तैयार नहीं। उसी दिन से मेरी और उनकी ठन गई और एक वर्ष बाद मुझे विरोध-स्वरूप त्याग-पत्र देना पड़ा।

भाषण विभाग

खैर, मुस्लिम लीगियों और उर्दूवादियों के गढ़ में बैठ कर और दृढ़ प्रतिज्ञ होकर मैंने हिंदी के उचित प्रतिनिधित्व के लिये प्रयत्न शुरू किये। कुछ समय तक तो मैंने प्रत्येक विभाग की गतिविधि का निरीक्षण किया। सबसे पहले मैंने हिन्दुस्तानी भाषण विभाग को लिया। मैंने देखा कि इस विभाग की ओर से दिन में दो बार एक प्रातः और एक सायं हिन्दुस्तानी भाषण ब्राडकास्ट करवाये जाते हैं। प्रातः युद्ध और आर्थिक बचत के प्रोपेगण्डे और बाजार भावों के बारे में और साथ साहित्यिक, सामाजिक, राजनैतिक आदि विभिन्न विषयों पर। सवेरे के भाषण, सिवाय एक आध, सारे-के-सारे उर्दू के लेखकों द्वारा ब्राडकास्ट किये जाते थे। रात के समय महीने में ब्राडकास्ट होने वाले ३०-३१ भाषणों में से आठ तो 'आफिशल' होते थे अर्थात स्टेशन के वेतनभोगी लेखकों द्वारा लिखे जाते थे जैसे, 'जग नामा', 'वक्त की बातें' और 'पत्रों के उत्तर'। ये आठों दिन ही शुद्ध उर्दू भाषा में ब्राडकास्ट होते थे, (आज भी 'पयामी' द्वारा पत्रों के उत्तर उर्दू में ही दिये जाते हैं।) जिसका स्पष्ट अर्थ यह हुआ कि रेडियो स्टेशन की सरकारी भाषा उर्दू ही है। शेष २२-२३ भाषणों में से दो-तीन हिन्दी साहित्य सम्बन्धी भाषणों को छोड़कर बाकी सब के सब बाहर के उर्दू लेखकों से, अधिकांशतः मुसलमानों से ब्राडकास्ट करवाये जाते थे। सम्मेलन के आन्दोलन के कारण कभी-कभी दो एक और भाषण हिन्दी में करवा दिये जाते थे; परन्तु इनमें भाषा की सरलता पर जोर दिया जाता था और सरलता से आशय था हिन्दी के शब्दों के स्थान पर उर्दू के शब्दों का प्रयोग। यही दशा उन उद्घोषणाओं की थी, जो स्टेशन के उद्घोषकों द्वारा किसी प्रोग्राम के आरम्भ और अन्त में अथवा किसी एक विषयक लम्बे प्रोग्राम को ग्रंथित करने के लिये की जाती हैं। ये सभी घोषणायें शुद्ध उर्दू में होती थीं और इसका मुख्य कारण यह था कि स्टेशन पर नियुक्त छः सात उद्घोषकों में से केवल एक ही हिन्दू और हिन्दी भाषी था।

संगीत विभाग

अब संगीत विभाग को लीजिये। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि रेडियो से ब्राडकास्ट होने वाले प्रोग्रामों में लगभग ८० प्रतिशत संगीत रहता है, जिसके अन्तर्गत कुछ तो पक्के गाने और कुछ गजलें, गीत, भजन और साज संगीत होता है। इस दृष्टि से संगीत विभाग हिन्दुस्तानी भाषण विभाग के समान ही महत्वपूर्ण है। दिल्ली स्टेशन पर नियुक्त होने के पश्चात मैंने जब संगीत विभाग की ओर दृष्टि डाली तो देखा कि तीन प्रोग्राम असिस्टैंटों में से केवल एक हिन्दी-विज्ञ है। संगीत के प्रोग्राम बनाने और कलाकारों को 'बुक' करने का काम तो दो उर्दू के ज्ञाता मुसलमान प्रोग्राम असिस्टैंटों को दे रखा है और हिन्दू प्रोग्राम असिस्टैंट के जिम्मे है केवल रिहर्सल का काम। मैंने यह भी देखा कि गजलें, गीत और भजन चुनने और गाने वालों का उच्चारण ठीक करने के लिये इस विभाग में उर्दू और फारसी का एक बहुत बड़ा विद्वान और हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्य से पूर्णतः अनभिज्ञ जो स्वभावतः मुसलमान था, इस पर नियुक्त है। मैंने यह भी देखा कि गजलों, गीतों और भजनों की प्रतिलिपियां तैयार करने वाले पांच छः आदमियों में से केवल एक हिन्दी विज्ञ है। इस प्रकार के स्टाफ के होते संगीत के प्रोग्रामोंमें हिन्दी का अनुपात कितना रहना चाहिये, इसका अनुमान भली भांति लगाया जा सकता है। परन्तु 'लिसनर' और 'सारंग' आदि रेडियो-पत्रिकाओं के रहते अनुमान की क्या जरूरत ? स्पष्ट था कि आधे से कहीं अधिक (कभी कभी तीन चौथाई) समय तो केवल उर्दू और फारसी की गजलों पर व्यतीत होता है और रहा-सहा समय उर्दू कवियों द्वारा रचित गीतों पर। यदि दिन भर में तीन-चार भजन रख दिये गये तो इसे विशेष कृपा समझिये। सब से अधिक आश्चर्य तो मुझे यह देखकर हुआ कि गजलों की भांति गीत भी उर्दू के शायरों के ही ब्राडकास्ट होते हैं। हर कोई पढ़ा-लिखा जानता है कि गीत-परम्परा के अनुसार अविरल रूप से हिन्दी भाषा की चीज है और हिन्दी साहित्य में इसकी आयु ५०० साल से किसी तरह भी कम न होगी। आदि काल से लेकर आधुनिक काल तक के समर्थ हिन्दी कवियों ने सतत साधना और परिश्रम से अपने गीतों को विषय और शैली की दृष्टि से विश्व-साहित्य में अनुपम सिद्ध कर दिया है और इधर रेडियो के महाप्रभु उर्दू शायरों को ही गीत रचने में सिद्धहस्त और बेजोड़ मानते हैं और मानते हैं कि गीत नाम की वस्तु पिछले आठ नौ साल से ही अस्तित्व में आई है।

एक दिन मैं उन शायरों और कवियों की तालिका का निरीक्षण कर रहा था जिनका रेडियो से कन्ट्रैक्ट हो चुका था और आश्चर्यचकित नेत्रों से मैं देखता क्या हूं कि उस तालिका में बच्चन, रामकुमार वर्मा, विद्यावती 'कोकिल', सुमित्रा कुमारी सिन्हा, नेपाली और सरोज जैसे हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठ आठ गीतकारों के भी नाम हैं। मन में तुरन्त प्रश्न उठा कि इनकी रचनायें क्यों ब्राडकास्ट नहीं होतीं ? पूछताछ करने पर ज्ञात हुआ कि संगीत विभाग के लोगों को पता ही नहीं था कि ये कवि हिन्दी के गण्यमान्य गीतकार हैं और न कभी उन्होंने इस बात का पता लगाने की जरूरत ही समझी। एक और बात का मैंने पता लगाया। स्टेशन के पुस्तकालय में जहां उर्दू और फारसी के नये और पुराने शायरों के सैकड़ों दीवान और संग्रह भरे हुए थे, वहां हिन्दी के किसी नये या पुराने कवि की कोई पुस्तक सूंघने तक को नहीं थी।

क्रमशः

फिल्म स्टार

बनने के इच्छुक शीघ्र लिखें, कुछ पढ़ा होना आवश्यक है।

रंजीत फिल्म आर्ट कालेज 18। रावीरोड (V. D.) लाहौर।

प्रवृत्ति और भाव

[कुमारी सन्तोष भटनागर

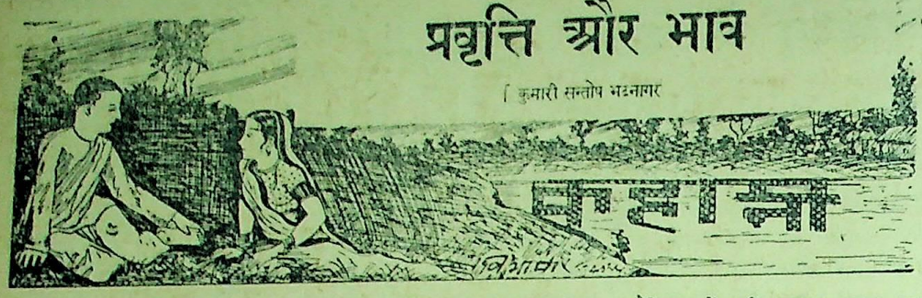

मैं कुर्सी पर बैठा अखबार पढ़ रहा था, आवाज सुनकर चौंक पड़ा। देखा एक बारह-तेरह वर्ष की लड़की खड़ी है। इकहरा बदन, चांद-सा मुखड़ा, बड़ी गोल-गोल आंखें व भोला-भोला चेहरा। न सुन्दर कपोलों पर क्रीम, न लाली, न पाउडर और ना ही होठों पर लिपस्टिक। मुझे देखते ही झट लजा कर दरवाजे की ओट में होकर दरारों में से मेरी ओर; और फिर वहीं बैठी हुई मंजु की ओर झांकने लगी।

मंजु तो मानों पहिले से ही प्रतीक्षा कर रही हो। अभी आई कह कर किताबें स्लेट सब बस्ते में बांध और झटपट अलमारी में से गुड़िया निकाल कर बोली-'भैया, अब मैं फिर आकर पढ़ूंगी।' और बिना उत्तर लिये कूदती हुई बाहर भाग गई।

'यह कौन लड़की थी? मैंने तो पहिले कभी इसे मंजुके साथ नहीं देखा!' उस लड़की के विषय में मैं सोचता-सोचता विचारों की अथाह गहराईयों में खो गया।

'सुधीर', पिताजी ने आवाज दी।

मैं चौंका। 'जी अभी आया।' कहता हुआ ड्राइंग रुम में पहुंच गया। मैं आज सुबह ही अजमेर से मैट्रिक की परीक्षा देकर आया था। पिताजी के पांव छुए और पास पड़ी कुर्सी पर बैठ गया। काफी देर नीचा मुंह किये बैठा रहा और पिताजी ने केवल दो-तीन छोटी-छोटे प्रश्न किये। 'कैसे पर्चे किये? कोई तकलीफ तो नहीं हुई' आदि-आदि। फिर पिताजी से कोई मिलने आ गया और मैं अपने कमरे में चला गया। परन्तु जब वहां भी अखबार पढ़ने में मन न लगा तो उसे वहीं फेंक कर माताजी के पास गया। वह उस समय मैले-वस्त्र धोबी को देने को एकत्रित कर रही थीं। मुझे देखकर एकदम बोली—'अरे सुधीर, जरा झट पेन्सिल-लेकर धोबी के कपड़े तो लिख दे।'

'मंजु, भैया को कागज पेन्सिल तो दे दो जरा।'

'यहीं आ जाओ न भैया!' मंजु ने भीतर से पुकारा।

मैं भीतर चला गया। मंजु कुछ लिख रही थी और पास में वही लड़की बैठी हुई कुछ बोल-सी रही थी।

'बहन कमलेश!' जरा खुशामदी स्वर में मंजु ने कहा—'सामने की अलमारी खोलो! देखो उसमें एक नीले जिल्द की कापी है, जिसपर 'धोबी के कपड़ों की कापी' लिखा हुआ है। वह और यह पेन्सिल तो दे दो जरा भैया को। शाबाश, बड़ी अच्छी है मेरी कम्मो। इस प्रकार नटखट मंजु ने सरलता से यह काम कमलेश से करवा लिया।

कमलेश बड़ी देर तक चुपचाप कापी पेन्सिल लिये कुर्सी के पीछे खड़ी रही। 'मंजु, इतनी देर हो गई अबतक कापी पेन्सिल नहीं लाई!'

'अरे भैया, कमलेश से ले लो न!'

'मैं नहीं जानता कमलेश को। सीधे से तुम्हीं आकर दो।' मैंने झूट-मूठ क्रोध दिखाकर कहा।

'वाह! यह आप के पीछे कौन खड़ी है? यही तो है कमलेश। हमारे नये पड़ोसी की एकमात्र सुपुत्री जी! बस अब तो जान गये, और आप हैं हमारे पिताजी के एकमात्र पुत्र अथवा यूं कहो कम्मो तुम्हारी सखी मंजु के नटखट भैया।' कह कर मंजु हंस पड़ी! फिर बोली—'हां, वह दोपहर वाली गुड़िया इसी की थी! उसका नाम हमने बड़ा प्यारा रक्खा है 'सुप्रभात रानी' दिखाऊं तुमको, और फिर सब पढ़ना छोड़कर भागो गुड़िया लेने।

'लो भई हो चुकी लिखाई।' मैंने मुस्करा कर कहा।

कमलेश हम बहन-भाइयों की बात पर हंसती-हंसती दोहरी हो गई। वह अल्हड़ हंसी कितनी मधुर थी, जो रोके न रुकती थी। तभी धोबिन ने कहा—'बाबूजी, जल्दी लिख दीजिये देर हो रही है।' तब कमलेश ने पेन्सिल कापी आगे बढ़ा दी। पेन्सिल लेते समय उंगलियां छू गईं। ऐसा प्रतीत हुआ मानों बिजली के तार को छू लिया हो! वह भी लजा गई। तब मैं जल्दी से उल्टे सीधे कपड़े लिखकर और मंजु की गुड़िया के दर्शनों का सौभाग्य बिना प्राप्त किये ही मैं शीघ्र बाहर निकल गया।

बाहर निकला तो मेरा संसार ही और था। एक मीठी-मीठी-सी धड़कन हृदय में गुद-गुदा रही थी। अबतक मैं नहीं जानता था कि प्रेम बिना किये हो कैसे जाता है? हां नाम आवश्य सुना था कि मन वश में नहीं रहता। कई बार मेरे मित्रों ने कहा तो मैं उत्तर देता—कैसे वश में नहीं रहता। उल्टा लटका दो इस मन के बच्चे को! तब वे लम्बी-लम्बी सांसे लेकर कहते—'भैया, इस बला से तो विश्वमित्र जैसे महान् ज्ञानी व तपस्वी ऋषि तक नहीं बच सके फिर हम किस खेत की मूली हैं?' वही दशा आज मेरी थी। जिधर देखता था उधर कमलेश के कमल-नेत्र और वह हंसता हुआ मुख दिखाई देता था। यह बात नहीं कि मैंने इससे पूर्व कभी लड़कियां नहीं देखी थीं। हमारे हाल में ही कितनी लड़कियों का सेन्टर पड़ा था। एक से एक सौन्दर्य की प्रतिमा और फैशनेबल थी। कई तो साईकलों पर हमारे साथ ही जाती थीं, परन्तु मुझे उनमें कोई नहीं भाई। इस अल्हड़ लड़की ने तनिक-सी देर में ही मेरी सोई हुई भावनाएं जगादीं।

चाचाजी अम्बाले बहुत बुला रहे थे। अब के जबकि मैं जाने को बिल्कुल तैयार न था, ईस्टर की छुट्टियों में आकर ले जाने लगे। मैं मजबूर हो गया। चलते समय माताजी ने सिर पर स्नेहपूर्ण हाथ फेरा। पिताजी ने पीठ थपथपाई। मंजु गले से लिपट गई और कमलेश ने अश्रुओं की भांति दूर खड़े हाथ जोड़ दिये। हमारी नजरों ने एक बार फिर आलिंगन किया!

अम्बाले से जैसे-तैसे पीछा छुड़ाकर मैं घर वापस लौटा। मेरे आने से सारे घर में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई, परन्तु जिस वस्तु की मुझे चाह थी उसके दर्शन अभी तक नहीं हुए थे और पूछते हुए लज्जा आती थी।

मेरा दसवीं का परिणाम निकल आया था। पिताजी का विचार अजमेर कालिज में मामाजी के पास भेजने का था। आज मैं वहीं जाने की तैयारी कर रहा था कि कमलेश और मंजु ने कमरे में प्रवेश किया और 'बधाई' देकर चली गई कमलेश।

मैं कालिज में दाखिल हो गया। दिन, सप्ताह, महीनों और वर्षों में परिवर्तित होते रहे। मेरे हृदय में पड़ा हुआ एक छोटा सा प्रेम का बीज अब पूरा वृक्ष बन गया।

मैं बी. ए. की परीक्षा देकर घर लौटा। मस्तिष्क में कमलेश का विचार, नेत्रों के सन्मुख उसी की प्रतिमा और हृदय में उसी से मिलने की लालसा और चाह थी। ट्रेन में बैठा हुआ खिड़की से बाहर सिर निकाले मैं गुनगुना रहा था। मुझे ऐसा अनुभव हो रहा था मानों कमलेश इस यात्रा में मेरे साथ हो। मैं उसके साथ मीठे-मीठे शब्दों में प्यार भरी बातें कर रहा हूं।

दरवाजे पर सब से पहिले कमलेश ही मिली! मैं आवाक् रह गया और बन्द कली खिल कर पुष्प बन गई थी। यौवन ने सौन्दर्य में और अमृत मिला दिया था। मंजु कुछ दिन से ज्वर से पीड़ित थी। इसलिये कमलेश ही मां के काम में हाथ बढ़ाती थी। शाम को खाने के लिये बुलाने आई परन्तु मैंने मना कर दिया, फिर माताजी आई तो मैं सिर-दर्द का बहाना कर पड़ गया। माताजी कह गई कि अभी अमृतांजन भेजूंगी, लगा लेना। मैं पलंग पर पड़ा-पड़ा ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था कि कमलेश ही दूध लेकर आये तो अच्छा है। इतने में मैंने सुना माताजी नीचे कह रही थीं कि लो बेटी जरा भैया को दूध पिला आना और अमृतांजन लगा देना। मैं बांसों उछल पड़ा। मेरा मन मोर की भांति नाच उठा। सीढ़ियों पर चढ़ने की आवाज सुन कर मैं सोने की रीति से आखें बन्द कर लेटा रहा! पहिले तो कमलेश मुझे जगाने के विचार से खांसी फिर पतली गोरी-गोरी उंगलियोंसे मेरे माथे पर दवा मलने लगी। मेरे बालों में लम्बी-लम्बी उंगलियां भी उलझाईं। मैं अधिक देर मौन न रह सका और झट कमलेश का हाथ पकड़ बोला—'रहने दो कमलेश!'

'तो मंगवाया क्यों था?'

'वह तो केवल तुम से मिलने का एक बहाना था! मुझे तो कमलेश तुम्हारे प्रेमामृत की प्यास है।'

'चुप, माताजी सुन लेंगी तो?

'छुट जाये बला से! मैं जो सहारा हूं!'

'उमड़ी हुई नदी में आप जैसे तिनके से सहारे लेकर क्या करूंगी?

'मैं! तिनके भर का सहारा क्यों?'

'आप अमीर आदमी जो ठहरे!'

'क्या अमीरों के पास हृदय नहीं होता या उसमें प्रेम की पीर नहीं होती।'

'सब कुछ होता है। दर्द होता है परन्तु दवा नहीं होती।'

'तुम्हारा क्या मतलब है कमलेश?'

'मतलब यही कि बड़े आदमियों का प्रेम नदी के बहाव के समान होता है। अमीर व्यक्ति प्यार कर सकता है परन्तु उसकी पीड़ा सहन नहीं कर सकता!'

'मैं नहीं समझा कम्मों, खोल कर कहो!'

'मान लीजिये, कल मां व पिताजी आप को मेरे बोलने को रोकें। तो आप मेरे कारण यह नाराजगी मोल ले लेंगे। यदि ऐसा है तो चलिये माताजी से कह देते हैं। प्रेम कोई बुरी वस्तु नहीं है, तो लुक-छिप कर करने वाली चीज अवश्य बुरी कहलाती है। चलिये, उठिये!

[शेष पृष्ठ १६ पर]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar, Digitized by eGangotri

मेरे जीवन की झाँकियां

मेजर फजलुद्दीन और सेंट्रल जेल

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

[१]

१९३२ के सत्याग्रह आन्दोलन में जब हम लोग दिल्ली की जेल में पहुंचे तब वहां के वातावरण को बहुत कुछ बदला हुआ पाया। सबसे बड़ा परिवर्तन तो यह था कि प० बधावाराम का तबादला हो चुका था। दूसरी नई बात यह थी कि दिल्ली के अं० मजि० मि० पूल ही जेल के सुपरिन्टेन्डेन्ट नियुक्त कर दिये गये थे। नौकरशाही की शासन पद्धति अपने उग्रतम रूप में यदि कहीं दिखाई दे रही थी तो वह दिल्ली प्रान्त में उसी अधिकारी ने हमारी गिरफ्तारी के वारेण्ट पर हस्ताक्षर किये, उसी ने जज बनकर सजा दी और अब वही हमारा मुख्य जेलर बना। राजनीति शास्त्र की दृष्टि से शासन के अधिकारों का यह केन्द्रीकरण अत्यन्त दूषित समझा जा सकता है। परन्तु नौकरशाही की स्मृतियों में उसका प्रमुख स्थान है। वह नौकरशाही के भवन का आधार स्तम्भ समझा जाता है।

इस बार हम लोगों को उस पुरानी बंगलानुमा बारक में न रखकर नई बनी हुई गोरा बारक में रखा गया। इसमें यद्यपि स्थान कम था, पर आराम अधिक। मकान हवादार था टट्टियों में फ्लेश लगे हुए थे और एक कोने में बना होने के कारण जेल की बदबू से भी थोड़ा बहुत बचा हुआ था। इस बार एक नई बात यह थी कि डाक्टर अन्सारी भी हमारे साथ ही बन्द थे। कहते हैं कि अधिक समीप रहने से मनुष्यों में एक दूसरे के लिये तिरस्कार का भाव पैदा हो जाता है। इसी कारण जेल के सहवास को मनुष्य के आदर-सत्कार की कसौटी कह सकते हैं, जेल के सहवास में मैंने बड़े-बड़े बुतों को टूटते देखा है। जिन्हें जेल के बाहर देवता समझ कर पूजा जाता था, जेल के सहवास ने उनके चरित्र का ऐसा गन्दा रूप प्रगट किया कि स्वयं-सेवक तक उन्हें तुच्छ और जलील समझने लगे। परन्तु डाक्टर अन्सारी के चरित्र का सबसे बड़ा गुण यह था कि जितना ही उनके समीप जाओ, उनके प्रति आदर-भाव उतना ही अधिक बढ़ता था। हम लोग उनके साथ जेल में केवल तीन सप्ताह तक रहे। इन तीन सप्ताहों में मेरे मन में उनके प्रति जो प्रेम और आदर की भावना थी, वह सौगुनी हो गई। उनकी देशभक्ति कुन्दन की तरह खरी थी और उनकी सज्जनता हीरे की तरह उज्ज्वल और ठोस थी। एक बड़ी बात यह थी कि उनके जीवन में बनावट नहीं थी। वह हम सब में आयु और योग्यता दोनों में बड़े थे, परन्तु वह एक क्षण भर के लिए भी यह अनुभव नहीं होने देते थे कि हम उनसे छोटे हैं। उनके रात-दिन के व्यवहार और बातचीत में कभी इस बात की बू नहीं आने पाती थी कि वह देश के सर्वोत्कृष्ट चिकित्सक और प्रमुख राजनीतिज्ञ नेता हैं। उनमें न अकड़ थी न बू।

एक दिन ड्योढ़ी से सूचना आई कि मौलाना शौकतअली, डाक्टर अन्सारी से मिलने आये हैं। मौलाना शौकतअली अपने को केवल भारत का ही नहीं अपितु संसार के महापुरुषों में प्रमुख व्यक्ति मानते थे। उन्हें बहुत भारी आश्चर्य हुआ, जब डाक्टर अन्सारी ने उन्हें कहला भेजा कि आपने कौम के साथ गद्दारी की है, इस कारण मैं आपसे नहीं मिलना चाहता। हम लोगों ने भी डाक्टरजी से कहा कि आप मिल लीजिये, देखिये वह क्या कहते हैं? परन्तु डाक्टरजी अपनी बात पर अटल रहे। मौलाना शौकतअली को अपने जीवन में एक बार हार मानकर और छोटा-सा मुंह लेकर वापिस जाना पड़ा।

मेरे स्मृति-पट पर डाक्टर अन्सारी के संस्मरण इतने गहरे अक्षरों में अंकित हैं कि यदि मैं अपनी लेखनी को यत्न-पूर्वक न रोकूं तो यह लेख उन्हीं में समाप्त हो जायेगा। उन्हें दूसरे अवसर के लिये छोड़कर मैं इतना ही लिख कर आगे चलता हूं कि १९३२ के तीन सप्ताह जो हमने दिल्ली जेल में काटे, डाक्टर अन्सारी से सम्बन्ध रखने वाली स्मृतियों से इतने अधिक भरे हुए हैं कि उन्हें एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता।

[२]

आखिर दिल्ली में प्रतीक्षा का समय समाप्त हुआ और दूसरे जेल में जाने की तैयारी होने लगी। इस समाचार ने हम लोगों में बहुत हलचल पैदा करदी कि इस बार ए और बी क्लास के सब राजनैतिक कैदी मुलतान के न्यू सेन्ट्रल जेल में भेजे जायंगे। न्यू सैन्ट्रल जेल मुलतान अपने सुपरिन्टेन्डेन्ट मेजर फजलुद्दीन के कारण पजाब भर में मशहूर था। मेजर फजलुद्दीन का सभी कुछ चर्चा के योग्य था। मध्यम कद था, रंग ऐसा काला था कि तवे से उपमा देने में अत्युक्ति का दोष नहीं आ सकता था। शरीर खूब गठा हुआ था। चलते हुए गरदन या कमर में जरासी भी लचक नहीं आती थी। जिस समय वह जेल के दौरे को आता था तब कोट, पेन्ट और हैट पहने,बांया हाथ पैन्ट की जेब में, दांये हाथ में पुलिसवालों की छोटी रेव्यूलेशन स्टिक, गर्दन बिल्कुल अकड़ी हुई और चेहरा मुट्ठी की तरह बंधा हुआ। इस हुलिये को देखकर यही कहने को जी चाहता था कि यह मनुष्य नहीं है, बल्कि लोहे के कलपुर्जों का आदमी है जो चाबी के बल पर घूम रहा है। मेजर के बारे में तरह तरह की बातें मशहूर थीं। कहा जाता था कि उसके बांये हाथ में हमेशा भरी हुई पिस्तौल रहती है। यह भी प्रसिद्ध था कि दांये हाथ में जो छड़ी है उसमें लोहा भरा हुआ है। रंग के बारे में आम कैदियों की यह राय थी कि वह काली बूट पालिश से मिलता है। इन सब प्रसिद्धियों से यह परिणाम आसानी से निकाला जा सकता है कि मेजर फजलुद्दीन बहुत ही कठोर और अप्रिय अफसर समझा जाता था। दिल्ली के कुछ राजनैतिक बन्दी १९३० में उसकी जेल में रह आये थे। उनमें से बहुत सों को मेजर ने हथकड़ी बेड़ी की सजा दी थी। ऐसे अफसर की जेल में जाने पर हम लोगों में मानसिक हलचल होना स्वाभाविक ही था। आगामी संघर्ष की सम्भावना से प्रायः सभी ने दिल्ली से ही आस्तीनें चढ़ा ली थीं।

मुलतान जाने वाले पहले जत्थे में मौलाना आरिफ भी थे। मौलाना आरिफ उन इने-गिने मुसलमान राष्ट्रभक्तों में से थे, जो परीक्षा में कभी अनुत्तीर्ण नहीं हुए। देश के हर प्रकार के कार्य में वह हमेशा सिपाहियों की अगली पंक्ति में दिखाई देते थे। यूं शरीर से वह बहुत ही दुबले-पतले थे, देखभाल से मालूम होता था कि किसी ने बांस के ढांचे पर खद्दर मंढ दिया हो। वह शायर भी थे। एक बड़ा उगालदान और मसनद जेल में भी उनके साथ रहते थे। पान के तो वह दीवाने थे। जागते हुए शायद ही कोई क्षण ऐसा हो, जब पान उनके मुंह में न रहता हो। यहां तक कि बात करते हुए उनके मुंह में पान भरा रहना आवश्यकसा प्रतीत हो गया था। वह कई बरस तक दिल्ली की जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे। उन्हें जेलवाले नवाब साहब कहा करते थे।

पहले जत्थे के सात दिन पीछे दूसरा जत्था मुलतान भेजा गया। मैं उस जत्थे में था। न्यू सेंट्रल जेल की ड्योढ़ी में पहुंचकर जो पहला अनुभव हुआ, उसमें से दो बातें विशेष रूप से याद हैं। सब से पहली और प्रमुख बात तो यह थी कि इस जेल की हरएक वस्तु साफ सुथरी मालूम होती थी। आमतौर पर बदबू या मक्खी का अभाव प्रतीत होता था। दूसरी विशेष बात थी कि हरएक काम में सख्ती की बू आती थी। हमारे पहने हुए कपड़ों की अच्छी तरह तलाशी ली गई। बक्स उनकी चाबियों के साथ ड्योढ़ी में ही रख दिये गये, ताकि हमारी अनुपस्थिति में खूब खोद-खोद कर तलाशी ली जा सके।

मुलतान का न्यू सेंट्रल जेल अन्दर से बहुत खुला है और ढंग से बना हुआ है। जेल के बीचोंबीच लम्बा चौड़ा बाग है, जिसमें घास के कई अच्छे मैदान हैं। 'ए' और 'बी' क्लास के राजनैतिक कैदियों को अलग-अलग बारकों में रखा गया था। जब मैं अपनी बारक में पहुंचा तो वहां पहुंचा, जहां पंजाब और दिल्ली के कुछ भाई पहुंच चुके थे। कांग्रेसी कैदियों के अतिरिक्त जमीयत और अहरार पार्टी के मौलाना भी विद्यमान थे। मौलाना दाऊद गजनवी को मैंने पहले पहल वहीं देखा था। वहां की मण्डली में उनका उपनाम 'चेपेंदी का लोटा' रखा हुआ था। मुझे बहुत ही आश्चर्य हुआ जब मैंने अखबारों में यह पढ़ा कि वह पंजाब की प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष चुने गये हैं। यह चुनाव सदस्यों ने किया हो या कांग्रेस के हाई कमाण्ड ने, चुनाव करने वाले की विवेकशून्यता का ही परिणाम था। विचारों की अस्थिरता मौलाना दाऊद गजनवी की खासियत थी।

(३)

मैं यह नहीं जानता कि मेरे जेल के साथियों ने यह निश्चय मेरे वहां पहुंचने से पूर्व ही कर लिया था या मेरे पहुंचने पर किया कि मुझे दोनों बारकों का जत्थेदार बना दिया जाये। जेल में जत्थेदार बनना बड़ी मुसीबत का काम है। मेरे दो एक मित्रों ने मुझे सावधान करते हुए मुझे जत्थेदार बनने से रोकने की चेष्टा भी की, परन्तु मैंने अपने आशावादी सहज स्वभाव के अनुसार उत्तर दिया कि पहले तो कठिनाई उत्पन्न ही न होगी और यदि होगी तो हल कर ली जायगी। व्यर्थ में अनिष्ट की आशंका क्यों की जाय? जत्थेदार बनना था कि चारों ओर से जेल के प्रबन्ध की शिकायतें आने लगीं। कैदी को शिकायत न हो तो जेल ही क्या? फिर वह तो मेजर फजलुद्दीन का जेल था। इन सात आठ दिनों में ही असली शिकायतोंके ढेर इकट्ठे हो गये थे। 'बी क्लास' के कैदियों के घर के कपड़े, हजामत बनाने का सामान, किताबें, लेखन सामग्री और ताश आदि मनोरंजन की चीजें तक ड्योढ़ी में रख ली गई थीं। हमारे फाउन्टेनपेन भी रोक लिये गये थे। गजब तो यह हुआ कि मौलाना आरिफ हसवी का पानदान और उगालदान भी बारक में नहीं जाने दिया गया। जेल में जाकर जब

[६ पर]

मैं मौलाना से मिला तो उनकी गालें पिचक कर आपस में मिल गई मालूम होती थीं और बोलने की शक्ति लगभग जाती रही थी, क्योंकि सात दिन से पान नहीं मिले थे। मौलाना दीवारों से चूना खुरच खुरच कर अपनी जीभ के व्यसन को पूरा कर रहे थे, उनकी यह दशा देख कर हम लोगोंकी आंखोंमें आंसू आ गये। मौलाना फजलुद्दीन ने जेल में पानदान जाने की इजाजत न देने का कारण यह बतलाया था कि पान के थूकों से मेरा जेल गन्दा हो जायेगा और पान जीवन के लिये कोई जरूरी चीज भी नहीं है, वह तो एक अय्याशी की चीज है।

अन्य शिकायतों की सूची भी बहुत लम्बी थी खाने में घी, आटा आदि जो सामग्री काम में लाई जाती थी, वह बहुत ही रद्दी और मैल से भरी

चिट्ठी लिखने के लिये, यहां तक कि शिकायत लिखने के लिये भी कागज और कलम विशेष रूप से परेड के समय जेलर से मांगने पर ही मिल सकते थे, यूं तो हर एक बारक में नहाने के फव्वारे (शावर बाथ) लगे हुए थे, परन्तु वह बन्द ही रहते थे। खाना बनाने वाले मशक्ती खाने के समय से घन्टों पहले खाना तैयार करके कोठरियों में बन्द कर दिये जाते थे। दोनों बारगों की सम्मिलित सभा हुई, जिसमें निश्चय किया गया कि यह सब शिकायतें लिख कर सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब के पास भेजी जावें। भेजने का काम जत्थेदार की हैसियत से मेरे सुपुर्द किया गया।

[४]

मैंने जेलर से विशेष दरख्वास्त करके लिखने का सामान दफ्तर से मंगवाया और एक छोटा-सा शिकायती पत्र सुपरिन्टेन्डेन्ट साहबके नाम लिख भेजा जिसमें संक्षेप से १०-११ शिकायतें लिखी हुई थीं। जिस दिन यह पत्र दफ्तर में भेजा गया, उससे अगले रोज प्रातःकाल ७ बजे जेल के बड़े घन्टे ने एक टंकार बजाई। सब को मालूम हो गया कि मेजर साहब तशरीफ ला रहे हैं। थोड़ी देर में हमारी बैरक के दरवाजे से लम्बी लाम्बडोरी घुसती दिखाई दी। सबसे आगे चाबियों के गुच्छे सम्भाले हुए लम्बी दाढ़ी वाला हैडवार्डर, उसके पीछे कई सिपाही और नम्बरदार, इस सेना की संरक्षा में मेजर फजलुद्दीन उनके साथ एक छत्रधारी, जो हाथ में बहुत बड़ा छाता पकड़े हुए था और मेजर साहब को धूप से बचाता था। मेजर साहब के पीछे जेलर, एसिस्टेन्ट जेलर और अन्य सिपाहियों की लाइन थी जो उस चतुरंगिनी सेना को पूरा करती थी! वार्ड के सब लोग टंकार सुनते ही इधर-उधर फैल गये थे, कोई नहाने चला गया तो कोई कोठरी से दूर खड़ा होकर दांतन करने लगा। मेजर साहब ने कोठरियों के सामने आकर पूछा 'प्रोफेसर इन्द्र की सैल कौनसी है?' हैडवार्डर ने भाग कर मेरी सैल में झांका और अर्ज किया कि हजूर सैल तो यह है पर कैदी अन्दर नहीं है। इस पर एक असिसटेन्ट जेलर भागा हुआ मेरे पास गया, उसने मुझे सूचना दी कि जल्दी चलिये मेजर साहब आपका इन्तजार कर रहे हैं।

मैं नहाने के कपड़े बगल में दबाये हुए बेतकल्लुफी से मेजर साहब के सामने जा खड़ा हुआ। फिर हममें इस तरह बातचीत हुई। मैंने पूछा 'कहिये' मेजर साहब का पारा काफी ऊंचा जा चुका था। आपने कोई आवश्यकता न होते हुए भी पूछा, 'आप ही प्रोफेसर इन्द्र हैं?' शायद उन्हें यह सन्देह हुआ कि यह धोती कुर्ता-पहनने वाला आदमी प्रोफेसर कैसे कहला सकता है? मैंने उनकी शंका का निवारण करते हुए कहा—

'जी हां, मैं ही प्रोफेसर इन्द्र हूं।'

मेजर साहब ने जेब से मेरी लिखी हुई शिकायती चिट्ठी आपने लिखी है।

मैंने उत्तर दिया, 'जी'। 'आपने जो शिकायतें लिखी हैं वह बिल्कुल गलत हैं। आपने लिखा है कि खाने की चीजें बिल्कुल रद्दी हैं। जेल मैनुअल के मुताबिक हमारा फर्ज है कि हम कैदियों को खाने लिये ऐसी चीजें दें जो इन्सान के खाने के लायक (Fit for human consumptoin) हों। हम कैदियों को ऐसी चीजें खाने को देते हैं। यह बात सुनकर मुझे गुस्सा तो बहुत आया, परन्तु मैंने अत्यन्त शान्तभाव से उत्तर दिया, 'वह चीजें इन्सान के खाने के लायक हैं या नहीं यह तो तभी मालूम हो सकता है अगर आप उन्हें कुछ दिनों तक खायें।'

इस उत्तर पर आस पास खड़े सभी लोग हंस पड़े। इस समय हमारे वार्ड के पेचे प्रायः सब भाई उस जगह इकट्ठे हो चुके थे। मेजर साहब के सामने बड़ी कठिन समस्या आ गई। मेरे उत्तर से उनका जो हल्का सा अपमान हुआ उसके साक्षी जेल के सब अधिकारी और नम्बरदार तक बन गये। अब उनके सामने दो ही मार्ग थे या तो मुझे सजा देकर सुपरिन्टेन्डेन्ट की मान-मर्यादा की रक्षा करते या 'पहले बने हुए प्लान के अनुसार बाकायदा रिट्रीट करते हुए मैदान से भाग निकलते। मैनेजर साहब ने दूसरा रास्ता ही चुना। बड़े जोश से भरी हुई आवाज में हुक्म दिया, 'कैदी को दफ्तर में हाजर करो।' और एक दम 'राइट-एबाउट टर्न' हो गये। काफला जैसे आया था, वैसे ही वापिस हो गया। मेजर साहब का क्रोध और दण्ड मशहूर ही थे। मेरे साथी मुझे एक महीने के लिये विदाई देने में लग गये, क्योंकि उन्हें निश्चय था कि मुझे एक महीने के हथकड़ी बेड़ी और बंद कोठरी से कम सजा नहीं मिलेगी।

(अपूर्ण)

भारतीय ऋषियों की खोज का अद्भुत चमत्कार

एक आश्चर्यजनक घटना — रोगी के पति की आप बीती

मेरी स्त्री अनेक दिनों से बीमार थी, आखिर डाक्टरों ने 'तपेदिक' (टी० बी०) रोग बतलाया, 'तपेदिक' का नाम सुनते ही होश हवास उड़ गये। अन्त में डाक्टरों ने एक्सरे करके दोनों फेफड़े खराब (गल) जाने की बात कहकर मुझे आदेश दिया कि रोगी १०-१५ दिन का मेहमान है। इसको अस्पताल से ले जाओ और किसी अलग कमरे में रख दो। कोई इसके पास न आवे, इसके थूक आदि से बचाव रखो। लाचार होकर उसको घर ले आया।

फिर क्या हुआ—अखबार 'मिलाप' में मैंने आपकी दवा जबरी का 'विज्ञापन' देखा। दिल ने कहा कि जहां सैकड़ों रुपया हकीम डाक्टरों की भेंट चढ़ा चुका हूं, यह भी खर्च करके देख लूं। रोगी ने कहा कि जब डाक्टरों ने यह कह दिया है कि दोनों फेफड़े खराब हो चुके हैं और मैं १०-१५ दिन की मेहमान हूं तो व्यर्थ क्यों खर्च करते हो, मुझे अब परमात्मा पर छोड़ दो। परन्तु दिलने न माना और तुरंत 'जबरी' न० १ का आर्डर दे डाला। पांचवें दिन ही पार्सल पहुंच गया और विधि के अनुसार परमात्मा का नाम लेकर औषधि शुरू करा दी गई। फिर क्या हुआ—वही आश्चर्यजनक चमत्कार। जिस रोगी के बारे में डाक्टरों ने मौत का फतवा दे दिया था, और ६ मास तक बराबर इलाज करने पर भी बुखार न गया था, आसाम बङ्गाल की शक्तिशाली औषधि 'जबरी' ने दस दिन में ही अपना चमत्कार दिखा दिया, बुखार बिलकुल जाता रहा। जो रोगी चारपाई से उठने लायक न था, शरीर में रक्त का संचार होने लगा और दिल में पहले की सी उमंग पैदा हो गई, दिल में पूर्ण रूप से विश्वास हो गया कि जिस दवा ने इतनी जल्दी ऐसा चमत्कार दिखाया है—क्यों न स्त्री को एक बार वहीं लेजाकर पूर्ण रूप से परीक्षा कराकर आगे को इलाज का प्रबन्ध किया जावे। मेरी स्त्री की भी यही राय हुई। फिर क्या हुआ — जिस रोगी में चारपाई से उठने की शक्ति न थी हजारों मील रेलकी यात्रा करके 'जगाधरी' आ गई। यहांपर पूर्णरूपसे अच्छी तरह परीक्षा करके आगेके लिए औषधियों का प्रबन्ध हुआ, यथार्थमें कार्यालयका सलूक प्रशंसनीय है। रोगीकी तन्दुरुस्ती दिनपर दिन बदलती गई और अब परमात्मा की कृपा से बिलकुल ठीक हो गई है। मैं ही नहीं—बल्कि मेरा तमाम कुटुम्ब कार्यालय के कृतज्ञ हैं जिसने मेरी स्त्री को काल के गाल से बचा लिया। यह ऋषियों के रक्त से सींचे हुए आयुर्वेद शास्त्र की पूर्ण सफलताका चमत्कार है। उपरोक्त घटना सरदार करतारसिंह इण्डियन मिल्ट्री हस्पताल, करांची के साथ घटी।

पाठक वृन्द—यह एक नहीं। पचासों सैकड़ों ऐसी घटनाऐं हो चुकी हैं और भी देखिये—(१) लाला काशीप्रसाद वैश्य दारानगर (इलाहाबाद), (२) बाबू मुन्नालाल स्टोरकीपर सिम्भावली शुगर मिल पो० बक्सर (मेरठ), (३) बाबू रामसिंह घर नं० ६१ रीटामन्डी (देहरादून), (४) बाबू गजपतराय रिटायर्ड सब रजिस्ट्रार (मथुरा), आदि सैकड़ों सज्जनों का यही कहना है कि आसाम बंगालकी शक्तिशाली औषधि 'जबरी' दवा नहीं, बल्कि यथार्थ में रोगी को काल के गालसे बचाने वाली 'ईश्वरीय शक्ति' है। अब तो परमात्मा की कृपा से मिल्ट्री अस्पताल 'औध' (पूना) रुड़की (यू० पी०) कराची आदि स्थानों में भी 'जबरी' के गुणों का डंका बज रहा है, पचासों रोगी सेवन करके लाभ उठा रहे हैं।

[T. टी. B बी.] तपेदिक-और पुराने ज्वर वालो—

अब भी समझो—यदि आप सब तरफ से हताश हो चुके हैं तो एक बार 'जबरी' की परीक्षा करें।

सैकड़ों हकीम, वैद्य, डाक्टर अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं, अनेक आदमी तार से आर्डर देते हैं—तार तथा पत्र के लिए थोड़ा सा पता 'जबरी' (जगाधरी) (Jabri Jagadhari) लिख देना ही काफी है। मूल्य इस प्रकार है। 'जबरी' स्पेशल नं० १ अमीरों के लिए, जिसमें साथ साथ ताकत को बढ़ाने के लिए सोना, मोती, अभ्रक आदिकी मूल्यवान भस्में भी पड़ती हैं मूल्य पूरा ४० दिनका कोर्स ७५) रुपया नमूना १० दिन के लिए २०) रुपया 'जबरी' न० २ जिसमें केवल मूल्यवान जडी बूटियां हैं पूरा कोर्स २०) रुपया १० दिन ६) महसूल आदि अलग है। आर्डर में अखबारका हवाला तथा नं० १ या २ साफ साफ लिखें। तुरन्त आर्डर देकर रोगी की जान बचावें, १० दिनमें ही अद्भुत चमत्कार दिखाई देगा। जल्द प्राप्त करने के लिये 'जगाधरी' आर्डर दें।

रायसाहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड बैंकर्स
(३) शिलांग [आसाम] या पंजाब आफिस 'जगाधरी',

'वीर अर्जुन' साप्ताहिक में विज्ञापन देकर लाभ उठाइये

Collection Haridwar. Digitized by eGangotri

हमारा धारावाही उपन्यास

गंगा जल

[ले० — श्री इन्द्र बसावड़ा]

शोभा विधवा हो गई और अपना अन्धकारमय भविष्य देखकर काली रात में जङ्गल की ओर प्राणत्याग के लिए गङ्गा के तट पर चली गई। उसके भाई अनिल ने करुणा को साथ लेकर उसको खोज लिया।

(गतांक से आगे)

'शोभा की अनिच्छा होने पर भी शोभा के पिता ने इसका विवाह उसी जगह कर दिया। दोनों के बीच बनती नहीं थी। फिर गिरीश बाबू शोभा के पति शंकाशील मनुष्य थे, इससे विवाह के पश्चात शोभा को सुख नहीं मिला। फिर तो दोनों घरों में युद्ध शुरू हो गया—यहां तक मामला बढ़ा कि एक दूसरे का मुंह तक कोई नहीं देखता था। शोभा को उसके सास-ससुर मायके भेजते नहीं थे और वैमनस्य इतना बढ़ गया कि शोभा ने भी पिता से सब सम्बन्ध छोड़ दिया। उसके गहने आदि राधे-मोहन बाबू ने अपने कब्जे में रखे; मांगने पर भी पुत्री को नहीं दिये। इसी समय गिरीश बाबू बीमार पड़े और बीमारी बढ़ती गई और एकाएक उनका अवसान हो गया। शोभा को जान पड़ा कि अब उनके जीवन में किसी को रस नहीं। इससे वह रातों रात घर से भाग निकली। इसके बाद की बात तो तुम जानती हो।'

राधा किंकर्तव्य विमूढ़-सी ये सब बातें सुनती रही। शोभा के प्रति उसके मन में सहानुभूति की एक लहर पैदा हुई।

इसी समय अनिल ने रसोई में झांका :— 'क्यों, क्या हो रहा है ?'

'शोभा कैसी है ?' राधा ने पूछा।

'ठीक है, सो रही है।'

'अच्छा, तो तुम भोजन कर लो न ?'

'जल्दी ही क्या है ?'

'नहीं अनिल बाबू तुम भोजन करलो। मैं वहां बैठती हूं।' और ऐसा कहकर करुणा वहां से उठी और शोभा की कोठरी की ओर चलदी।

अनिल जमीन पर ही बैठ गया।

'उठो, अनिल बाबू !' राधा बोली।

'क्यों ?'

'क्यों ? नीचे बैठना चाहते हो ?'

'इसमें क्या हर्ज है ?'

'नहीं, हर्ज कुछ नहीं, पर.....'

'पर ?'

'पर कुछ नहीं ; यह टाट का टुकड़ा बिछाने दो।' और राधा ने कोने में से एक आसन उठाकर वहां बिछा दिया।

अनिल उसके ऊपर बैठ गया।

राधा ने एक थाली में रोटी और मेथी पालक का शाक तथा उड़द की दाल परसी और धीमे से थाली अनिल की तरफ सरकाई। फिर स्वयं अपने आसन पर बैठ गई।

'भोजन करो !'

'हाँ !' और अनिल ने भोजन करना शुरू किया।

जीमते-जीमते अनिल को 'ढाबे' वाली राधा याद आई। कुछ भी हो पर राधा के हृदय में उसके लिए कितना स्नेह था ही ? कितने स्नेह से राधा उसको खिलाती थी और एकाएक उसे उस रात्रि का दृश्य स्मरण आया। राधा ने भोजन की सम्पूर्ण तैयारी उसके लिए की थी और उसको एकाएक आगरा जाना पड़ा और वह भोजन किये बिना ही आट आना सामने डाल चल दिया था।

आज एकाएक अनिल को अपने उस व्यवहार के लिए लज्जा होने लगी। क्या राधा के प्रेम का उत्तर आट आना मात्र ! यह विचार आते ही उसे अपने ऊपर तिरस्कार की भावना होने लगी ; आज वही राधा है जो इतने प्रेम से और इतने स्नेह से उसकी सेवा-सुश्रूषा में लग गई है। आज इस ग्राम में राधा न होती तो उसका क्या दशा होती ? उसका हृदय मानों इन सब अहसानों से दबने लगा। वह राधा की तरफ देख भी नहीं सका।

और उसी समय सामने बैठी हुई राधा भी उसी रात्रि का विचार करती थी। यही है अनिल बाबू। इनके लिए मैंने कितनी तैयारियां की थी और कितने स्नेह से भोजन बनाया था। और .....

'राधा !' एकाएक वह बोल उठा।

राधा ने अनिल की तरफ देखा।

'उस दिन रात—मुझे अकस्मात चला जाना पड़ा था.....'

पर अधिक वह नहीं बोल सका

राधा की आंखें भी न जाने क्यों छलछला आईं और उसने साड़ी के छोर से उनको पोंछ, कांपते स्वर में पूछा—'शाक दूं क्या ?'

पर अनिल ने जवाब नहीं दिया।

राधा ने शाक और रोटी परसते हुये कहा—'यह सब मैं जानती हूं अनिल बाबू !'

और इन शब्दों से मानों अनिल का भार हल्का हुआ

वह बोला—

'राधा ? उस रात की भूल के लिये तो मुझे.....'

'अनिल बाबू ! दही दूं क्या ? ओ मा ! मैं कैसी हूं !' और ऐसा कह वह उठी और बगल की कोठरी में से दही की हांडी ले आई और एक दोने में रुफेद गाढ़ा दही निकाल अनिल को दिया।

अनिल के भोजन कर लेने के बाद राधा ने कहा—

'अनिल बाबू ! तुम अब जाओ और करुणा जीजी को जल्दी खाने को भेज दो। मुझे भूख लगी है ?'

जब करुणा भोजन करने आई तब उसने देखा कि राधा के मुख पर सवेरे का सा आनन्द नहीं; पर एक प्रकार की वेदना और आर्द्रता दिखाई देती है। इसका कारण वह समझ नहीं सकी।

चुपचाप दोनों खाती रहीं।

संध्या होते-होते शोभा की तबियत में फर्क पड़ने लगा और अनिल को भी लगा कि शोभा को दो-एक दिन में बिल्कुल आराम हो जायगा। दूसरे दिन सवेरे तो उसकी तबीयत बहुत ठीक थी। अनिल को वह पहचान सकी और करुणा को देखकर उसने मन्द मुस्कान भी की।

दूध पीने के पश्चात् वह खाट पर करवट लेकर सो गई।

उसी दिन संध्या होते ही उसे गहरी निद्रा भी आगई।

राधा ने कहा—

'अनिल बाबू ! संध्या का समय है तुम घूम आओ, मैं यहीं बैठी हूं।'

'मैं अकेला तो नहीं जाऊंगा !'

'अकेले क्यों ? करुणा जीजी को भी साथ में ले जाओ। तुम शहर के रहने वाले तुमको घर में घुसे रहना तो अच्छा नहीं लगता।

'नहीं, ऐसा कुछ नहीं, पर.....'

'पर-वर कुछ नहीं-तुम घूम न आओ' राधा ने कहा।

'कहां जाऊंगा ?' — अनिल ने पूछा।

'घूमने के स्थान क्या कम हैं ? इस ओर जाओ तो खेत ही खेत, गंगा के किनारे जाओ तो भी ठीक है और आगे जावे तो जंगल।'

'हमें खेतों की तरफ ही जाना चाहिये।'

'अच्छा !'

अनिल और करुणा दोनों पूर्व की तरफ के रास्ते पर चलने लगे। कच्चा रास्ता था धूल से भरा हुआ। दोनों ओर बड़े-बड़े खेत थे। पश्चिम में सूर्य के सुनहरी गुलाब रंग ने बादलों के दल को रंग डाला था।

कुछ बात-चीत किये बिना दोनों आगे बढ़ रहे थे। इतने में सामने से धूल उड़ती दिखाई दी।

'क्या होगा ?' करुणा बोल उठी।

'मोटर मालूम होती है।'

'सच ?'

'हां।'

थोड़ी देर में तो मोटर का भोंपू भी सुनाई पड़ा।

'कौन होगा ?'

उसी समय मोटर उनके पास आकर रुक गई।

चतुर्थ परिच्छेद

'हलो ! अनिल है क्या ?' अनिल के ताऊजी ने मोटर में से ही आवाज दी।

'ओह ! ताऊजी ?'

'हां बेटा ! सब कुशल है न ?'

'जी हां !'

'हे प्रभो ! धन्यवाद है मुझे !!' यह कह कर ताऊजी ने आकाश की ओर अपने हाथ जोड़ मोटर में से नीचे उतरे और अनिल के पास आ खड़े हुये।

'चलो बेटा, हम जरूरी बातें करलें !' ताऊजी बोले।

'घर जायेंगे ?'

'नहीं तो जल्दी क्या है ? पहले हम बातें करलें।'

'जी !' अनिल ने कहा।

'तुम जरा यहीं रहना अच्छा ! हम आते हैं।' मोटर वाले को संकेत कर ताऊजी ने कहा और अनिल के साथ चलने लगे।

'अनिल बाबू !' करुणा ने कहा।

'जी !'

'मैं जाती हूं तो !'

'क्यों ?'

'आप दोनों बातें करें, मैं रसोई की तैयारी करूंगी'

'अच्छा'

(क्रमशः)

———

अमेरिकन सैकिंडहैंड गर्मकोट
हरकिसम के हाफ़कोट ओवरकोट वास्कोट
बच्चकाना कोट ताज़ा माल बेहतरीन क्वालेटी
बिल्कुल वाजबी निर्ख. रेलवे लोडिंग खुला है
आज निर्ख़नामा मंगावें, स्टाक थोड़ा है।
रमेश राज ऐन्ड को. कोटोंवाले कराची

कन्हाईलाल दत्त

बंगाल और पंजाब, ये दोनों प्रांत सन् ५७ के स्वातंत्र्य युद्ध में अन्य प्रांतों से पीछे रहे थे। इस कलंक को धोने के लिये वहां पर समय समय पर अनेकों वीर होते रहे हैं। सरदार भगतसिंह, यतीन्द्रनाथ, मुखोपाध्याय, बटुकेश्वरदत्त, सरदार हरिनामसिंह, सरदार बन्तासिंह, कन्हाईलाल दत्त आदि इसके ज्वलंत प्रमाण हैं। बंगाल की शस्यश्यामला भूमि में उत्पन्न कन्हाईलालदत्त का नाम इनमें विशेष आदर से लिया जाता है।

सन् १८८७ में आप का जन्म कृष्ण जन्माष्टमी के दिन हुआ। बचपन से ही प्रखर बुद्धि का होने के कारण अपने साथियों में विशेष प्रिय थे। धनी होने पर भी ये त्याग की मूर्ति थे। विलासप्रियता इन्हें छू तक न गई थी। वह एक कर्तव्यनिष्ठ, दयावान व कर्मशील व्यक्ति थे। प्रायः दीन-हीन व्यक्ति इनसे सहायता प्राप्त करते थे। इसी समय ये देशसेवा की ओर अग्रसर हुए।

इनकी शिक्षादीक्षा बंगाल और बम्बई में हुई थी। बी० ए० पास होने के पश्चात् घर वालों से यह कह कर कि मैं कलकत्ता में नौकरी करने जा रहा हूं, कलकत्ते चले गये पर इनके मन में तो आग लगी हुई थी। उस समय स्वदेशी आंदोलन शांत हो चुका था, पर बंगाल के नवयुवकों के हृदय में उस समय भी उष्ण रक्त हिलोरें ले रहा था। उनका एक संगठन बन चुका था और क्रियात्मक रूप से कार्य कर रहा था। कलकत्ते पहुंच कर आपने इसमें भाग लेना प्रारम्भ किया और अपनी कार्य कुशलता के कारण ये शीघ्र ही उसके प्रमुख कार्यकर्त्ता बन गए।

१९०७ में ये चन्द्रनगरमें विप्लवकारी संगठन का केन्द्र स्थापित करने गए। वहां का संगठन दृढ़ करने के उपरांत ये कलकत्ते आ गए। यहां से वे चटगांव आदि स्थानों का दौरा करते रहे। इस बीच में इन्होंने चन्द्रनगर की बम फैक्टरी में बम बनाने का काम सीखा था।

सन् १९०८ में जब खुदीराम बोस ने मुजफ्फरपुर में मि० पी० केनेडो पर बम फेंका तो समस्त बंगाल में हलचल मच गई। चारों ओर गिरफ्तारियां प्रारंभ हो गईं। २ मई १९०८ को प्रायः सब प्रमुख क्रांतिकारी कैद कर लिये गये। देश की स्वतंत्रता के ये मतवाले जेल में भी मस्त रहते थे। नियमित रूप से इनकी सभाएं होती थीं, भाषण होते थे; कोई-कोई स्वाध्याय में मग्न रहते थे पर कन्हाई का कार्यक्रम बिल्कुल विचित्र था। ये दिन भर सोते और साथियों को तंग करते रहते थे।

इसी समय इन लोगों को पता चला कि नरेन्द्र गोस्वामी (रामपुर का) मुखबर हो गया है। सब साथियों ने उसे मुखबर बनने का दण्ड देने की सोची। सत्येन्द्र बसु ने इस काम को पूर्ण करने का बीड़ा उठाया और कन्हाईलालदत्त ने भी मन ही मन विश्वासघातक को दंड देने की प्रतिज्ञा की। इसी बीच में सत्येन्द्रकुमार बसु बिमार पड़े व हस्पताल भेज दिये गए। सत्येन्द्र विवश थे, जाना पड़ा। पर वहां भी वे पापी नरेन्द्र को दण्ड देने की सोचते रहे। सत्येन्द्र के हस्पताल जाने से कन्हाई अकेले रह गए। सत्येन्द्रकुमार बसु से मिलने के लिये उन्होंने पेट दर्द का बहाना बनाया और ये भी अस्पताल भेज दिये गए। कन्हाई के आने से पहले सत्येन्द्र मुखबर नरेन्द्र से मिले। उन्होंने अपने को डरा हुआ-सा दिखाया और धीरे-धीरे यह दर्शाया कि वह सरकारी गवाह बनने को तैयार हैं।

कन्हाईलाला दत्त के आने के बाद नरेन्द्र दो शरीर रक्षकों के साथ पुनः सत्येन्द्र से मिलने आया और शिकार हाथ में आया देख सत्येन्द्र ने एक फायर किया, पर शब्द हो के रह गया; फिर दूसरा किया पर नरेन्द्र के शरीर रक्षक ने उन्हें पकड़ लिया। सत्येन्द्र ने भी उस पर वार किया, जिससे उसके हाथ में गहरी चोट लगी। वह दूर जाकर खड़ा हो गया, इस बीच नरेन्द्र ने भागने का प्रयत्न किया। शिकार हाथ से निकलते देख कन्हाई ने उस पर गोली का वार और किया गोली उसके पांवों पर लगी। गोली लगते ही वह बगटुट भागा। कन्हाईलाल दत्त ने उस पापी का पीछा किया। उसी समय कन्हाई को एक गोरे ने पकड़ा, तो कन्हाई की गोली उसका कान फोड़ कर निकल गई, और इन्होंने फिर पीछा किया। देशद्रोही के सम्मुख आते ही फिर १० फायर किये जिससे वह पापी अपने कर्मों का फल पा के इस संसार से कूच कर गया।

जिस समय यह गोलीकाण्ड हो रहा था, जेल के सब कर्मचारी उन दोनों का रौद्ररूप देखकर तीन-तेरह हो गये। जेलर साहब डर के मारे तिपाई के नीचे छिप गये। फाटक के पहरेदार ने हाथ में रिवाल्वर देखकर स्वयं दर्वाजा खोल और हाथ के इशारे से बता दिया कि नीचे किधर को भागा है। जब दोनों वीरों के पास गोलियां समाप्त हो गईं तो उन्हें पकड़ लिया गया। अन्त में उन पर मुकदमा चला और जो होना था वही हुआ। १० नवम्बर सन १९०२ को उन्हें फांसी के तख्ते पर लटका दिया गया। दिव्यात्मा पुनः पंचत्व को प्राप्त हो गई।

फांसी के दिन उनका वजन आठ सेर बढ़ा हुआ था। देखने वालों का कहना है कि अन्त समय तक उनके मुखमण्डल पर विषाद की एक क्षीण रेखा तक न आई। उनकी अन्तिम क्रिया श्री मोतीलालराय ने की। जब उनके रिश्तेदार आदि शव लेने आये तो वे शव देखकर रो पड़े। इस पर एक अंग्रेज ने सान्त्वना देते हुए कहा था कि

जिस भूमि में ऐसे-ऐसे वीर उत्पन्न होते हैं वह भूमि देर तक परतन्त्र नहीं रह सकती। उसकी भविष्यवाणी की सत्यवादिता आज हम देख रहे हैं। कन्हाईलालदत्त ने अपने प्राण देकर स्वतन्त्रता हमें दे दी।

———

स्कूल कालेज और पाठशालाओं की

निकम्मी बुद्धिहीन

शिक्षा को आज ही त्याग दें और ऐश्वर्यों के देने वाली अष्टाध्यायी योगादि शास्त्रीय ग्रन्थों की तथा मोटर विमान रेडियो आदि शास्त्रीय पदार्थों की क्रियात्मक साधनों द्वारा बुद्धियुक्त शिक्षा दर्शनालय से प्राप्त करें।

बड़े विज्ञापन और नियमावली मुफ्त मंगाइये

दर्शनालय चमत्कारी शिक्षा केन्द्र
ऋषि भवन दरियागंज देहली।

विजयगढ़ निवासी

भारत विख्यात वैद्यराज बांकेलाल गुप्त प्राणाचार्य्य
भूतपूर्व मैनेजिंग प्रोप्राइटर धन्वन्तरि औषधालय
एवं भूतपूर्व सम्पादक धन्वन्तरि
ने

प्राणाचार्य्य भवन

नामक एक वृहद संस्था २००००० दो लाख के मूल धन से स्थापित की है जिसके लिमिटेड होने के लिये कागजात तैयार हो रहे हैं। शीघ्र ही लिमिटेड हो जायगी। शेयर प्रायः सब बिक चुके हैं। इस संस्था में आयुर्वेदीय, मेटर और नवीन प्रणाली से प्रस्तुत औषधियां, वैद्यक पुस्तकें, प्रवास मंजूषा चित्र आदि के अतिरिक्त उक्त वैद्यराज जी के सम्पादकत्व में "प्राणाचार्य्य" नामक आयुर्वेदीय उच्च कोटि का सचित्र मासिक पत्र एवं साप्ताहिक पत्र शीघ्र ही प्रकाशित होगा। अभी से ग्राहक बनने से मासिक का ४) वार्षिक और साप्ताहिक का ६) वार्षिक मूल्य लिया जायगा। सर्व साधारण को खेरीज और चिकित्सकों एवं औषधि विक्रेताओं को थोक भाव का सूचीपत्र शीघ्र मंगा लेना चाहिये।

एजेण्टों की आवश्यकता है—

व्यवस्थापक — प्राणाचार्य भवन, विजयगढ़ जि० अलीगढ़

सन्यासियों की गुप्त बूटियां

इस पुस्तक में सैकड़ों ऐसी जड़ी बूटियों के गुप्त रहस्य प्रकट किये गये हैं, जिनसे सन्यासियों की धाक जमी हुई है। हालांकि इनमें से अधिकांश बूटियां आपको जंगल, खेत बागीचों और पंसारियों की दुकानों पर भी मिल सकती हैं, जिनसे आवश्यकता पड़ने पर स्त्रियां भी सिर से पांव के नख तक के सभी रोगों का इलाज घर में ही कर लिया करेंगी। इस पुस्तक को पढ़ लेने के बाद आप इस युग के धन्वन्तरि समझे जायेंगे। रोगियों का तांता बंधा रहेगा। कुछेक बूटियों की सूची-

लाख-लाख रु० के प्रयोग—(१) ऐसी बूटी कि जिसकी लकड़ी कान में लगा देने से सर्प काटे का विष मुख द्वारा निकल जाता है, (२) वह बूटी जिससे गूढ़ गर्भ ५ मिनट में निकल जाता है, (३) मधुमेह की अक्सीर बूटी, (४) दुबले पतले आदमी को मोटा ताजा बना देने वाली बूटी, (५) सात दिन में नपुन्सक को मर्द बनाने वाली बूटी, (६) दमे की अद्भुत बूटी, (७) वह बूटी-जिसके रस में अंगुली डुबाने से तत्काल ज्वर उतर जाता है, (८) गर्भ रोक बूटी, (९) उपदंश को ७ दिन में मिटाने वाली बूटी, (१०) निमोनियां की बूटी, (११) वह बूटी जिससे बन्ध्या के पुत्र पैदा हो। ऐसी ही सैकड़ों बूटियों का वर्णन इसमें है, जिनसे चमत्कार दिखा कर आप सिविल सर्जनों को दंग कर सकते हैं। मूल्य २॥) डाकखर्च ।=)

पता—रसायन फार्मेसी (५) संगरिया (बीकानेर)

Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

कुछ उपयोगी सुझाव

नमक कर कैसे हटाया जाय ?

[श्री भंवर जाखेटिया मेवाड़ी]

नमक एक ऐसा दैनिक उपयोगी पदार्थ है जो राजाओं के महलों से लगाकर गरीबों की झोपड़ियों तक प्रतिदिन आवश्यक रूप में उपयोग में आता है।

भारत एक कृषि-प्रधान देश के साथ-साथ खनिज-प्रधान देश भी है। भारत में नमक उत्पादन की प्रचुर मात्रा खनिजों द्वारा उपलब्ध है और समुद्र तट व सांभर पचभद्रा जैसे विशाल जलाशयों से भी।

भारत की नमक की वार्षिक खपत ७ करोड़ मन आंकी जाती है, और उत्पादन ५॥ करोड़ मन। तथा १॥ करोड़ मन नमक आयात माना गया है।

देश की एक मात्र प्रजातंत्रीय संस्था कांग्रेस द्वारा एक समय से सर्वसाधारण के हितार्थ नमक कर समाप्त करने की मांग की जा रही है। भारत के कर्णाधार बापू ने भी नमक कर के विरुद्ध देशव्यापी आन्दोलन चलाया था।

कांग्रेस सरकार के पद ग्रहण करते ही सर्वसाधारण व्याकुलता से कांग्रेस सरकार द्वारा नमक-कर हटाने की घोषणा की प्रतीक्षा कर रहे हैं। ऐसी अफवाह भी है कि आगामी वर्ष यह कर हटा दिया जायगा।

परंतु सरकार के सामने समस्या है कि नमक-कर किस प्रकार हटाया जावे।

इस समय नमक की जिन खानों और जलाशयों पर उत्पादन का नियंत्रण भारत सरकार का है, उनमें नमक-कर उत्पादन खर्च और रेलवे लदाई कुल मिलाकर एक रुपया साढ़े तेरह आना प्रति मन लिया जा रहा है। इसमें ।)॥ प्रति मन उत्पादन व नमक की कीमत (लैंड रेवेन्यू) है और डेढ़ आना प्रति मन लदाई अर्थात १।=)॥ प्रति मन नमक कर है।

समुद्रीय निकटवर्ती प्रदेशों में नमक-कर तो कम है, परन्तु उत्पादन भारत सरकार के हाथ में नहीं है, अपितु वहां का सारा उत्पादन और व्यवसाय एक लम्बे ठेकों पर विदेशी कम्पनियों के हाथ में है। वे निश्चित कर सरकार को देने के पश्चात वितरण, आयात और निर्यात में स्वतन्त्र हैं अर्थात मौजूदा नमक मूल्य-नियन्त्रण नियम उनके उत्पादन और व्यवसाय पर लागू नहीं है।

अब प्रश्न उठता है विदेशों से १॥ करोड़ मन नमक कहां से आता है। आयात तभी होता है जबकि पर्याप्त उत्पादन न हो अथवा महंगा होता हो। बंगाल, बिहार और आसाम के लिये विदेशों से नमक आता है तो क्या वास्तव में उत्पादन नहीं हो सकता? यह बिल्कुल झूठ है। भारत सरकार के पास इसके जवाब में सरकारी रेकर्ड केवल यह जवाब देते रहे और दे सकते हैं कि, अब तक भारत में केवल इतना नमक पैदा होता रहा कि खपत को पूरा किया जाने का प्रयत्न कभी नहीं किया और जरूरत पूरी नहीं हुई, इस उदासीनता का मुख्य कारण सरकार की विदेशी व्यापार नीति थी। वह विदेशी नमक के व्यापार को सदा प्रोत्साहन देती रही। यही कारण है कि, सांभर से बंगाल, बिहार और आसाम में जाने वाला नमक ज्यादा किराये के कारण महंगा पड़ता रहा जब कि विदेशों से आने वाला नमक सस्ता पड़ता है।

यदि विदेशी सरकार इस पक्षपात का अवलम्बन न करती तो सरकारी जहाजरानी को विदेशों से खाली आते समय (अदन—डेनमार्क) से खाली आना पड़ता है और जो नाजायज मुनाफा बंगाल, बिहार और आसाम में इस आयात द्वारा होता आया है, वह नहीं होता!

अब सबसे बड़ा सामयिक प्रश्न सामने आता है, नमक का प्रतिदिन बढ़ने वाला मूल्य किस प्रकार घटाया जावे और अभाव किस प्रकार दूर हो!

वास्तव में यह समस्या कठिन है, वस्तुतः अभाव और मूल्य नियंत्रण का सारा दोष भारत सरकार का है, सारे नमक केन्द्रों में नमक वितरण का। सरकारी सारा मूल्य दे देने के पश्चात भी नमक लेने का अधिकार सीधे किसी व्यवसायी को नहीं है। अधिकार नमक के उन व्यवसायियों को, उन विदेशी व देशी कम्पनियों को सुरक्षित रूप में दे दिया गया है, जो हर समय सरकार के व्यापारिक स्वार्थों का साथ देती आई है।

यही कारण है कि सांभर, पंचभदरा खारागोडा, डीडवाणा धोरानारा की यह कम्पनियें और ठेकेदार समुद्र तट के विदेशी नमक-व्यवसायी, कांग्रेस सरकार के पदारूढ होते हुए भी मूल्य बढ़ा रहे हैं और बाजार में नमक को दुर्लभ बना रहे हैं।

नमक वितरण, मूल्य नियंत्रण और नमक उत्पादन के लिये सरकार ने, सौल्ट डिपार्टमेन्ट या नमक विभाग को सेन्ट्रल गवर्नमेंट के एग्जूक्यूटिव अधिकार देकर केन्द्रीय व प्रान्तीय सरकारों से अलग रख सर्वाधिकार दे रखे हैं और उक्त विभाग की छत्रछाया में उक्त व्यवसायी देश पर मनमानी का राज कर रहे हैं।

अतः प्रजातंत्र के मूलभूत सिद्धान्तों के अनुसार उचित तो यही है कि राष्ट्र के व्यवसाय की व्यवस्था देश निवासियों के हितार्थ हो, राष्ट्रीय व्यवसाय और राष्ट्रीय पूंजी का एकीकरण हो और नमक व्यवसाय में बिना किसी बड़ी बाधा के इस तरह हो सकता है।

१. कांग्रेसी सरकार अविलम्ब नमक-कर एक रु० साढ़े सात आने प्रतिमन हटा ले।

२. सारे देश की नमक पैदावार पर राष्ट्रीय एकीकरण के अंतर्गत अधिकार कर नमक को पूर्ण मात्रा में पैदा किया जावे।

३. विदेशों का आयात बन्द करदे या एक भारी कर उनपर लगा दे।

४. मौजूदा वितरक कंपनियों और विदेशी उत्पादकों को हटा दिया जावे।

५. सारे देशी राज्यों की नमक (संधियें) समाप्त कर नमक पैदा नहीं करने के अधिकार समाप्त करदे, इसके एवज का जो मुआवजा वह देती आई है वह भी बन्द करदे।

६. नमक विभाग को समाप्त कर सारे अधिकार सरकार स्वयं ले लें।

७. वितरण का राष्ट्रीय व्यवसाय एकीकरण के अंतर्गत अधिकार सैंट्रल गवर्नमेंट अपने हाथ में ले ले।

८. राष्ट्रीय पूंजी एकीकरण के अंतर्गत सरकार एक निश्चित मुनाफे पर प्रमाणित व्यवसायी संघों या व्यवसायियों को उत्पादन की जगहें वितरण करे।

९. प्रत्येक केन्द्रीय व प्रान्तीय सरकार नमक जबतक उक्त व्यवस्था क्रियात्मक रूप से लागू न हो तबतक ही मूल्य नियंत्रण रखे।

१०. प्रत्येक केन्द्रीय अथवा प्रान्तीय नमक व्यवसायी उक्त राष्ट्रीय पूंजी एकीकरण से खपत के अनुपात से सीधे नमक ले सके।

उपर्युक्त व्यवस्था होते ही; आप स्वयं देखलेंगे कि, किस प्रकार आपके नमक बजट का घाटा नमक का अभाव और मूल्य नियंत्रण अपने आप गायब हो जाते हैं।

स्त्री की कमर टूट जाती है

अगर स्त्री का मासिक धर्म ठीक समय पर न आये या मासिक के दिनों में दर्द हो या माहवारी कम या ज्यादा आती हो तो इस तकलीफ से स्त्री की कमर में बहुत दर्द होता है। ऐसी को एक शीशी दवा कोरस सेवन करा देनी चाहिए। इस दवा के खाने से मासिक धर्म की सब खराबी ठीक हो जाती है। फिर हर महीना बिना किसी कष्ट के ठीक मात्रा में मासिक धर्म होने लगता है। हजारों स्त्रियाँ इस दवा से लाभ उठा रही हैं। एक शीशी दवा कोरस की कीमत दो रुपया आठ आना २॥) है। नीचे लिखे पते से पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा मंगा लीजिए।

डाकखर्च ॥-) लगेगा।

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना

हिन्दी आफिस नं० ३८, दिल्ली!

प्रवृत्ति और भाव

[पृष्ठ १० का शेष]

मुझ पर मानों घड़ों पानी पड़ गया। कमलेश ने ठीक कहा था। वास्तव में मुझ में इतना साहस न था। मेरी आशाओं का ताना-बाना मकड़ी के जाले की तरह तार-तार हो कर रह गया। मैं सहमा सा बैठा रहा और वह यह कहती हुई कि मैं मां से भाभी लाने को कहूंगी, बाहर चली गई।

इस घटना के उपरान्त मैं वहां अधिक न ठहर सका और मन बहलाव के लिये मामाजी के कारखाने में अजमेर में मैनेजर हो गया! घर से बहुत बुलावे आते और मंजु के स्नेह से भरे हुए निमन्त्रण पढ़ कर तो मैं रो उठता परन्तु मना लिख देता! पिता जी ने विवाह के विषय में कई बार बातें छेड़ी परन्तु मैंने इन्कार कर दिया!

दो वर्ष उपरान्त—

मैंने अकस्मात कमलेश को एक सुन्दर नवयुवक के साथ सिनेमा-हाल से निकलते देखा। उस समय वह हल्के प्याजी रंग की साड़ी पहिने माथे पर सुन्दर नन्हीं बिन्दी लगाये, मांग में सिन्दूर व हाथों में हाथी-दांत के गजरे पहिने इन्द्रलोक की अफसरा-सी दृष्टिगोचर हो रही थी। मैं अधिक देर देख न सका और तांगा लेकर कोठी की राह ली।

खाना भी नहीं खाया। पलग पर लेटा, विचारने लगा कि जिससे आंखे मिलाने को मैं तरसता था आज उसे ही देखकर मैं भाग आया।

अगले दिन रक्षा-बन्धन था! स्नान कर मैंने बहन मंजु की भेजी हुई राखी, लिफाफे से निकाली। एक नाजुक सी चीज परन्तु लाखों प्रेम सन्देश अपने साथ लिये हुए। अहा! मैंने उस झिल-मिलाती हुई मोतियों की लड़ी को अपनी आंखों से लगा लिया! मुझे आंखों में बड़ी ठंडक प्रतीत हुई। मैं हाथ में बांधने ही वाला था कि—

'लाईये' मैं बांध दूं! कहते हुए उन्होंने अपनी और मंजु की दोनों राखी बांध दीं।' फिर बोली—'गुस्सा मुझसे और छोड़ दिया घर वालों को। कहां का न्याय है? मुझे क्षमा कर दीजिये! मैंने आपका हृदय तोड़ा है। मैं विवश थी। जानते हो सुधीर भैया क्यों?'

'इसलिये कि मैं अमीर का पुत्र था। वे विलास करना जानते हैं परन्तु उनमें त्याग नहीं होता! इसी लिये ठुकराया था न?'

'नहीं, नहीं! मैं माता-पिता की एक मात्र पुत्री, भाई-बहन के प्यार से वंचित और साथ में माता के भी! पिताजी ने आपके यहां मुनीम की नौकरी की! मुझे माता और बहिन-भाईयों के प्यार की सदैव भूख रही। वह आपके यहां पूर्ण हो गई। माताजी जैसी मां पाकर, मंजु सी बहन पाकर और आप-सा भैया पा कर मैं धन्य हो उठी। परन्तु आपने मुझे बहन नहीं बनाया, यह उस दिन विदित हुआ जब आप एक बहन से उसका भैया छीनने की चेष्टा करने लगे। पति तो मुझे मिलना ही था परन्तु आप जैसा प्रिय भाई कहां से लाती!'

मैंने झट उसके चरणों की रज माथे से लगा ली। मेरी आखों में हर्ष के आंसू छलछला आये।

मेरे हाथों को पकड़ती हुई बोली—'भैया, मेरी रक्षा का भार तुम पर है!'

मैंने उपहार-स्वरूप कुछ रुपये के नोट आगे बढ़ाये।

'बस इतने से टरकाना चाहते हो! आज तो मैं अपने मन की वस्तु लूंगी। वचन दो कि दोगे?'

'हां, हां, दूंगा! अवश्य दूंगा!'

तो अब शीघ्र घर पर छमछम करती एक भाभी लाओ। और जोर से हंसते हुऐ उसने रेडियो का स्विच खोल दिया—

'भैया हमें छोटी सी भाभी ला देना!'

महान बाजीकरण व परमपौष्टिक

अनंगप्रभा याकुती

शक्तियों का हद से ज्यादा उपयोग करने से, वृद्धावस्था से, अथवा किसी भी कारण से आई हुई कमजोरी दूर करती है, पतलो धातु को गाढ़ा करता है और सभोग में रुकावट बढ़ाकर दाम्पत्य जीवन का आनन्द देती है। की० ३० (सुनहरी) गोलियों की शी० रु० १०)

मदनमंजरी फार्मेसी—जामनगर-देहली एजेंट जमनादास कं० चांदनीचौक

संतान होने की दवा

जिस स्त्री के सन्तान न होती हो केवल ७ रात तक मशहूर दवा मुहाफिज औलाद खिलाओ। इन सात रात में स्त्री के बदन के अन्दर का हिस्सा ठीक ऐसी हालत में आ जाता है कि आठवीं रात..... स्त्री को गर्भ रह जाता है। इस औषधि की वजह से आज हजारों बहिनों की गोद में बच्चे खेल रहे हैं। जिस स्त्री को सन्तान न होती हो वह नीचे के पते पर पत्र लिख कर दवा मुहाफिज औलाद की शीशी वी० पी० पार्सल द्वारा मंगालें। १ शीशी काफी है जिसका मूल्य दो रुपया आठ आना २॥) है पारसल पर ॥-) महसूल लगेगा।

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४ देहली

५०) इनाम

श्वेत कुष्ट (सफेदी) की आश्चर्य जनक महौषधि। चाहे कितने ही दिन से श्वेत कुष्ट हो, या किसी भी कारण से सफेद दाग हो गया हो इस महौषधि के सिर्फ २ दिन के सेवन से पूर्ण लाभ होता है। इससे प्रति वर्ष हजारो रोगी आराम होते हैं। यदि आप अनेकों दवाइयां से निराश हो चुके हों तो एक बार अवश्य परीक्षा करें। मूल्य २) गलित कुष्ट सुधा हरी की औषधि मूल्य ३॥)।

गुणहीन साबित होने पर ५०) इनाम श्री सदानन्दराम संजीवनी औषधालय नं० १८ पो० बारशलीगंज, (गया)।

जीवन में मधुर आनन्द उपभोग करने के लिये स्वर्ण मिश्रित गोलियां

भीन सीन गोल्ड

—टानिक पिल्स—

'भीनसीन' में अनेक शक्ति वर्धक तत्वों के अतिरिक्त शुद्ध सोना भी है। इनमें बल और पौरुष बढ़ाने की शक्ति पुष्ट कर तथा स्वप्नदोष और जातीय दुर्बलता मिटाने की अपूर्व शक्ति है। 'भीन सीन' के सेवन से आपकी खोई हुई शक्ति, उत्साह, उमङ्ग तथा पुरुषत्व फिर प्राप्त होगा। मूल्य प्रति शीशी डाकखर्च ॥≡) अलग।

विस्तृत सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये।

चाइनीज मेडीकल स्टो

नया बाजार — देहली

हैड-आफिस——एपोलो स्ट्रीट, बम्बई। ब्रांचें—१२ डलहौजी स्क्वायर कलकत्ता: रीची रोड-अहमदाबाद

—सेलिंग एजेन्ट्स—

दी नेशनल मेडिकल, स्टोर्स-आगरा
दी जनरल मेडिकल स्टोर्स-अजमेर
दी एलाईड केमिस्टस-उदयपुर
श्री सरस्वती स्टोर्स—बीकानेर
मे. गिरधरदास जानकीवल्लभ-उदयपुर
वैद्यराज विश्वनाथ त्रिवेदी-मुजफ्फरनगर
मेसर्स मोहन ब्रादर्स—जयपुर
मेसर्स खरे ब्रदर्स—जबलपुर
मे०गोपीलाल चिरंजीलाल-श्रीमाधोपुर
दी गुजरात मेडीकल स्टोर्स—कानपुर
दी वर्मा मेडिकल स्टोर्स-शिकोहाबाद
मे० भारीवाल ब्रादर्स—जोधपुर
डी० पी० आयुर्वेदिक एन्ड यूनानी दवाखाना मेरठ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar, Digitized by eGangotri

साहित्य परिचय

परिचय के लिये प्रत्येक पुस्तक की दो दो प्रतियों का आना आवश्यक है, अन्यथा केवल प्राप्ति-स्वीकार किया जायगा। —सम्पादक

बहन के पत्र या पारिवारिक समस्याएं— लेखक— श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार, सम्पादक सा० अर्जुन। प्रकाशक—सामयिक साहित्य सदन, लाहौर। लेखक से भी प्राप्य। मूल्य ३)।

साधारणतः मैं गृहस्थ-जीवन सम्बन्धी पुस्तकें नहीं पढ़ता, क्योंकि मेरा ऐसा ख्याल है कि उनमें कुछ पुरानी सुनी सुनाई बातों को दुहरा दिया भर जाता है, जो आज के नवीन वातावरण के बिलकुल अनुकूल नहीं होतीं। लेकिन जब इस पुस्तक की भूमिका में लेखक की इन पंक्तियों पर मेरी दृष्टि पड़ी कि 'मैंने जो कुछ लिखा है, वह यह जानते-बूझते लिखा है कि यह पुस्तक उन युवतियों के हाथ में जायेगी जो बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में प्रवेश कर रही हैं,' तो इस पुस्तक को पढ़ने की उत्सुकता हुई। एक बार पुस्तक हाथ में ली, ज्यों-ज्यों पढ़ता गया त्यों त्यों मेरी उत्सुकता बढ़ती गई और आखिर इसे समाप्त करके ही छोड़ा।

आज की भारतीय नारी वस्तुतः नई और पुरानी सभ्यताओं के संघर्ष में पड़ कर दुविधा में पड़ गई है। एक ओर वह सीता-सावित्री के आदर्श सुनती है, दूसरी ओर वह नई चमकीली सभ्यता व नया जमाना देखती है, जिसकी परिस्थितियां बिलकुल भिन्न हैं। नई परिस्थितियों का आज के पारिवारिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। इसके कारण समाज में नई समस्यायें पैदा हो गई हैं। अब वह नारी नहीं, जो पर्दे में रसोई घर में बैठती थी, जिसे न कभी अपने पति के मित्रों के सामने आना पड़ता था, न समाज में और न कभी पति की आर्थिक चिन्ता में हाथ बंटाना पड़ता था। पहले 'सहचरी' का आदर्श कुछ और था, अब उसे असली अर्थों में 'जीवन-संगिनी' बनना है। यह पुस्तक पढ़ कर सन्तोष हुआ कि लेखक ने आज की नारी की नई परिस्थितियों को समझ कर पुस्तक में अनेक उपयोगी सूचनायें दी हैं। वह नारी को पीछे नहीं धकेलना चाहता। वह उसे सम्मति देता है कि वह सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्रों में जावे। वह उसे पति की आर्थिक चिन्ताओं में हाथ बटाने का भी परामर्श देता है। लेकिन इसके साथ ही वह उस मर्यादा को भी बांधना चाहता है, जिसके पालन न करने के कारण आज यूरोपियन नारी उच्छृंखल होकर दुःखी हो गई है। नारीत्व का विकास मातृत्व में, मातृत्व से मत घबराओ, स्त्री का कार्य-क्षेत्र आदि अध्यायों में आज की नारी-समस्या का गंभीर विवेचन करते हुए दुविधा में पड़ी हुई नारी का लेखक ने सुन्दर पथ प्रदर्शन किया है। वह भूमिका में लिखता है कि 'नई समस्याओं और नई परिस्थितियों का समाधान भी नये दृष्टिकोण से करना होगा।' लेकिन इसके साथ ही वह नारी को सावधान करता है कि नवीन विचारधारा के गुणों को ग्रहण करते हुए भी यह तो आवश्यक नहीं है कि उसके समस्त दोषों को भी उसी आदर के साथ स्वीकार किया जाए।' दोनों विचारधाराओं के सुन्दर समन्वय का मार्ग लेखक ने दिखाने की चेष्टा की है।

समस्या का गंभीर विवेचन करते हुए लेखक परिवार की व्यावहारिक कठिनाइयों को नहीं भूल गया। लेखक ने वस्तुतः यह पुस्तक लिखी व्यावहारिक समस्याओं को हल करने के लिये है। वह कहता है कि 'गृहस्थ जीवन पर लिखी गई अन्य पुस्तकों में जहां सामान्य सिद्धांतों की चर्चा अधिक की गई है, वहां मैंने व्यावहारिक कठिनाइयों और समस्याओं पर अधिक ध्यान देने का प्रयत्न किया है।' और ऐसा करते हुए उसने अपने मित्रों तथा परिचित गृहस्थों के सैकड़ों सच्चे उदाहरण दिये हैं। स्थान-स्थान पर आने वाले बीसियों उदाहरणों के कारण यह पुस्तक न केवल रोचक बन गई है, परन्तु अधिक उपयोगी भी बन गई है। क्या यही गृहस्थ जीवन है? जीवन संगिनी का चुनाव, नये जीवन की देहलीज पर, परीक्षा में खरी उतरना, गुलाब के फूल में कांटे भी होते हैं, पति की रुचि पहचानो, पंडित जी के कुछ उपयोगी परामर्श, चिन्ता चिता से भी बुरी है, पति क्यों खिंचे रहते हैं, गर्भस्राव पाप है, भूल कर भी संदेह न करो, गृहस्थ जीवन के तीन अनुभव, संतान की समस्या, जितनी चादर उतने पैर पसारो, आदि शीर्षकों से गृहस्थ जीवन में दिन-प्रतिदिन आने वाली विविध समस्याओं की चर्चा की गई है।

सगाई के बाद और विवाह से पूर्व कन्या को किन बातों की शिक्षा लेनी चाहिये; विवाह होने पर एकदम अपरिचित सुसराल में स्त्री को किन-किन बातों का ध्यान करना चाहिए; आज का युवक जैसा भी है, क्या चाहता है और उसकी इच्छाओं की पूर्ति कैसे की जा सकती है; पति के मित्रों से पर्दा करे तो वह पसन्द नहीं करता, ज्यादा परिचय प्राप्त करे तो वह सन्देह की दृष्टि से देखता है; सार्वजनिक सेवा कर्तव्य है, लेकिन इससे परिवार का दुःख बढ़ता है; स्त्री स्वयं अर्थोपार्जन करती है तो गृहस्थ

शारीरिक उष्णता के वजह से..

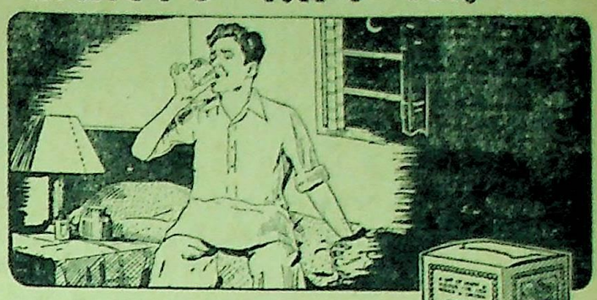

यदि आपको कायमी बदहजमी और अरुचि जैसी उष्णता की शिकायतें हों, रातको बारम्बार सख्त प्यास आपको जगाती रहती हो, खाना खानेके बाद जलन होती हो और खट्टी डकारें आती हों, पित्ताशय में कायमी मन्द कब्ज़ रहती हो, सारे शरीरके अपर और अन्दर जलन रहती हो, आंखें जलती हों, हथेलियों और पाँव के तलुओं में जलन होती हो, मूत्र-मार्ग में जलन होती हो, वजन कम हो गया हो, पंडुरोग हो, सामान्य अशक्ति महसूस होती हो तो आजाई एक बोतल का सेवन शुरु की जिये, २५ से भी ज्यादा सालों से पर्लकाढ़ा ने इस दवाई को सेवन करनेवाले हजारों लोगों को अच्छा कर दिया है।

पर्लकाढ़ा जवान और बुढे स्त्री, पुरुष और बच्चे – सभीको समान रुपसे फायदा करता है। प्रसूता स्त्रियों को भी फायदा करता है।

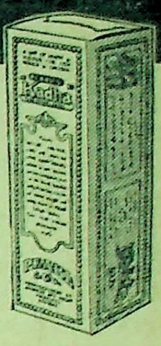

शारीरिक उष्णता के लिये मशहूर अनुभूत इलाज!

शीतल शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

एकबार परीक्षा कर स्वयं अजमाइये!

8/46 /H1/1

पर्ल कंपनी, आर्योषधि कारखाना, राणीबाग, बम्बई २७

वह पुरुष

जो शक्तिहीन पुरुष किसी भी कारण से शरीर बल नष्ट कर चुके हों और उनके जीवन को घुन लग चुका हो और विशेष दुख से समय व्यतीत कर रहे हों, ऐसे दुखी पुरुषों को शक्ति प्रदान करने का सुअवसर यह है कि 'रिजोवीन' औषधि को १६ दिन तक सेवन कर लें, उनकी गई हुई शक्ति फिर से लौट आयेगी और अपना समय सुख से आनन्द प्राप्त अवश्य करेंगे। शरीर के प्रत्येक बलहीन भाग की यह दवा अमृत तुल्य है और काया को फिर से बदल कर नया जीवन देती है। सारे भारतवर्ष में इस औषधि का प्रचार है और प्रत्येक वर्ष लाखों दुखी पुरुष इस औषधि द्वारा आनन्द प्राप्त कर चुके हैं। शक्तिशाली पुरुष भी यह दवा सेवन करके अपने जीवन के आनन्द को बढ़ा सकते हैं और यह दवा किसी भी ऋतु में सेवन की जा सकती है। इस कोर्स में दो दवायें होती हैं, एक खाने की, दूसरे मलने की। पूरे कोर्स का मूल्य ५) रुपये, डाक खर्च ॥≡) अलग।

अक्सीरी दवाखाना कलां महल पो० नं० ४१ (V.W.D.) देहली।

दिल्ली में चांदनी चौक, फतेहपुरी बाजार के तमाम औषधि विक्रेता यह दवा बेचते हैं।

सुख नष्ट होता है न करे तो घर का गुजारा नहीं होता ; सास की नाराजगी कैसे दूर हो ; पति किन-किन छोटी बातों पर नाराज हो जाते हैं ; सन्तान कैसे बिगड़ती है ; आदि कितनी ही समस्याओं पर लेखक ने व्यावहारिक दृष्टिकोण से प्रकाश डाला है, और अत्यन्त उपयोगी सूचनाएं दी हैं। पारिवारिक जीवन के सभी पहलू लेखक की पैनी दृष्टि में हैं।

पुस्तक बड़ी बहन की ओर से छोटी बहन को पत्रों के रूप में लिखी गई है इसलिए इसमें आत्मीयता और रोचकता की सुन्दर शैली स्वभावतः आ गई है।

रोचकता के साथ-साथ लेखक के गम्भीर अध्ययन व मनन के कारण विचारसामग्री भी बहुत मिलती है। विवाह के अवसरों पर बहन, पुत्री या सखी को ऐसी पुस्तकें भेंट में दी जानी चाहियें। प्रकाशक यदि पुस्तक के मुद्रण पर अधिक ध्यान देते तो अच्छा होता। पुस्तक का आवरण आकर्षक है।

— प्रो० हरनारायण एम० ए०

पाकिस्तान—लेखक—तन्मय बुखारिया। प्रकाशक — प्रभात प्रकाशन, दरीबा, दिल्ली। मूल्य २)।

यह पुस्तक आज की राजनीतिक समस्या पर गद्य में नहीं लिखी गयी, पद्य में लिखी गयी है। भाषा सरल है। इस विषय पर जो अनेक विचार एक राष्ट्रीय हिन्दू के दिल में पैदा होते हैं, वे सब इस पुस्तिका में पद्य-बद्ध किये गये हैं। पाकिस्तान के विरोध में जो दलीलें दी गई हैं, वे प्रभावकारी हैं और साधारण बोलचाल में आने वाली भाषा और विचारपद्धति होने के कारण पढ़ने में सरस और मनोरंजक प्रतीत होती है। छपाई सफाई अच्छी है।

आहुति — लेखक वही। प्रकाशक एस० एन० अग्रवाल। ५६ जीरो रोड, अलाहाबाद। मूल्य १)।

श्री सुभाषचन्द्र बोस और आजाद हिन्द फौज के बारे में यद्यपि बहुत कुछ लिखा और पढ़ा जा चुका है, तथापि यह विषय इतना प्राणवान है कि इस सम्बन्ध में आज भी हिन्दी पाठक पढ़ने में उत्सुकता लेते हैं। इसमें भी करीब १२५ पद्यों में वीर सुभाष की वर कहानी दी गई है। गेट-अप सुन्दर और आकर्षक है।

गाय ही क्यों ? — ले० — श्री हरदेव सहाय। प्रकाशक — गोवंश रक्षिणी सभा, हिसार। मूल्य १)।

इस पुस्तक के लेखक श्री हरदेव सहाय बरसों से अत्यन्त शुद्ध व आस्था के साथ गोसेवा में व्यस्त रहे हैं। उन्हें गौ से सच्चा प्रेम है और उन्हें अन्ध श्रद्धा नहीं है। इस पुस्तक में उन्होंने गौ के सम्बन्ध में विविध आवश्यक जानकारी देने का सुन्दर प्रयत्न किया है। कुछ शीर्षक निम्न लिखत हैं:—

गायों की संख्या तथा शक्ति में कमी, संसार के अन्यान्य देशों में गोवंश की स्थिति, गोवंश के ह्रास से हमारी हानि हिन्दू, बौद्ध और मुस्लिम कालों में गौ की दशा, गोवंश की उन्नति, क्या करें, गोवध के कारण, गाय और भैंस, भैंस का महत्व क्यों बढ़ा, पंचगव्य पदार्थों के गुण, कुछ विचारणीय आंकड़े आदि। आशा है, गो-रक्षा के प्रेमी ही नहीं, गो को रखने वाले भी इसमें बहुत कुछ ज्ञातव्य सामग्री पा सकेंगे ?

— कृष्ण

---

५००) इनाम

प्रेम वशीकरण यन्त्र

इस यंत्र को अपने पास रक्खें, आप की प्रेयसी कैसी ही कठोर और जिद्दी क्यों न हो वह आपके काबू में हो जावेगी। प्रेम पथ के सभी कष्टों को दूर कर प्रेम सम्बन्ध जोड़ने में मदद करता है। एक बार परीक्षा करें—झूठी साबित करने वाले को ५००) इनाम। मूल्य प्रति यन्त्र २) तीन का ५) वी० पी० खर्च अलग।

पता—

एम० एल० शाह साहब,

पोस्ट बक्स २४३ कानपुर।

बन्द माहवारी (मासिक धर्म)

२४ घन्टे में शुरू

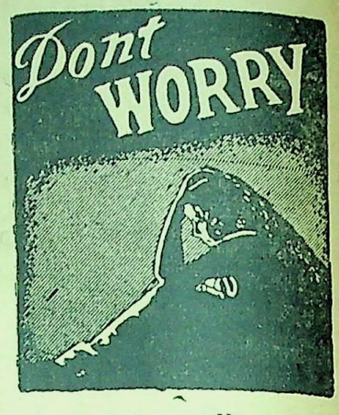

यदि किसी स्त्री की माहवारी रुक गई हो तो हमारी दवा 'कामिनी' से २४ घण्टे में जारी हो जाती है। अगर किसी स्त्री की माहवारी तकलीफ से आती है, रुक-रुक कर आती है। महीने-दो महीने से आती है, तो 'कामिनी' दवा सेवन कर लेने से तमाम खराबियां दूर हो जाती हैं। हजारों स्त्रियां, जिनकी माहवारी रुक गई थी, इस दवा के सेवन करने से २४ घण्टे में साफ होकर आने लगी। जिन स्त्रियों को गर्भ हो वे यह दवा सेवन न करें वरना गर्भ प्रायः गिर जाता है। (एक शीशी एक स्त्री के लिए काफी है)। कीमत दो रुपया आठ आना, डाक-व्यय ग्यारह आना।

अक्सीरी दवाखाना कलां महल; (छत्ता हकीम आगाजान)
(V. W. D) नं० ४१ देहली।

दिल्ली में चांदनी चौक फतेहपुरी बाजार के सभी प्रमुख औषधिविक्रेता यह दवा बेचते हैं

असली जादू का शीशा

हर स्त्री-पुरुष चाहे कितनी उमर का हो, बालक हो या जवान या बूढ़ा इस जादू के शीशे से देख सकता है। चोरी का पता, गड़े हुए धन, गुमशुदा का पता, बीमार के अच्छा होने, आने वाले व गुजरे हुए हालात, मुहब्बत प्रेम, मुकदमा, नौकरी, परीक्षा, हर बात का ठीक-ठीक पता लग सकता है। झूठ निकले तो दाम वापिस, मूल्य ३) रु०, पत्र-व्यवहार अंग्रेजी में करें।

आनन्द स्वामी (V.W.D.) पो.ब. नं० ६१ लाहौर।
ANAND SWAMI, (V.W.D.) P. B. no. 61 Lahore.

फोटो कैमरा मुफ्त

यह कैमरा सुन्दर नमूने का सफाई से बना हुआ बिना किसी कष्ट के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है। इसका प्रयोग सरल है यही सही काम करता है और शौकिया काम लेने वाले व व्यवसायी दोनों ही इससे काम ले सकते हैं। यह कीमती मनोहर कैमरों में से है, जो थोड़े ही मूल्य का है। यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और रुपया कमावें। मूल्य बक्स कैमरा पूरा, तमाम फिल्म कार्ड, कैमीकल, सरल प्रयोग सहित नं० ५०१ कीमत ५।।।) वेस्ट, क्वालिटी, नं० ५४५ कीमत ७।), डी लक्स एक्स्ट्रा स्पेशल क्वालिटी नं० ५५० कीमत ६।), फिल्डिंग नं० १००, कीमत ४५), पैकिंग व डाक व्यय १=) नोट — एक समय में ६ कैमरों के ग्राहक को कैमरा नं० ५५० मुफ्त। स्टाक सीमित है। अभी आर्डर दें अथवा निराश होना पड़ेगा। माल पसन्द न होने पर कीमत वापिस।

इम्पीरियलचैम्बर आफ साईन्स (V.W.D.) पो० बा० ६१, लाहौर
Imperial Chamber of Science, (V.W.D.) P. B. 61, Lahore.

CC-0. J Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

श्वेत कुष्ट की अद्भुत जड़ी

महात्मा प्रदत्त श्वेतकुष्ट (सफेदी) की दवा से तीन दिन में पूरा फायदा। यदि सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों, विज्ञापनदाताओं की दवा से निराश हो चुके हों तो इसे लगा कर आराम होवें। १५ दिन की दवा का मूल्य २॥)।

सफेद बाला काला

इस तेल से बालों का पकना रुक कर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे तो दूना मूल्य वापिसी की शर्त लिखा लें। यह तेल सिर के दर्द व सिर में चक्कर आना आदि को आराम कर आंख की रोशनी बढ़ाता है। एकाध बाल पका हो तो ३॥) और कुल पक्का हो तो ५) का तेल मगवा लें। एजेण्टों की हर जगह आवश्यकता है।

पता:—

श्री अखिल के० आराम औषधालय,
मुहल्ला सालिमपुर अहरा, पो. बांकीपुर (पटना)

वीरतापूर्ण नया साहित्य पढ़िये

क्षत्रपति शिवाजी

ले०—पंजाब केसरी स्व० लाला लाजपतरायजी। हिन्दू-कुल गौरव क्षत्रपति शिवाजी का प्रामाणिक और रोचक जीवन-परिचय। पृष्ठ संख्या १७०, पक्की जिल्द, तिरंगा टाइटल, कीमत १॥)।

अगस्त आंदोलन के क्रान्तिकारी

अगस्त सन् ४२ के हालात और उसके नेताओं के जीवन-परिचय। मू० १)

पं० जवाहरलाल नेहरू और उनके प्रमुख भाषण

विषय नाम से ही स्पष्ट है। अत्यन्त रोचक भाषा में लिखा गया है। मू० १) सजिल्द १।)।

पुस्तक-विक्रेता उचित कमीशन के लिए पत्र व्यवहार करें—

जयभारत साहित्य मण्डल;
२२०६, नई सड़क, देहली।

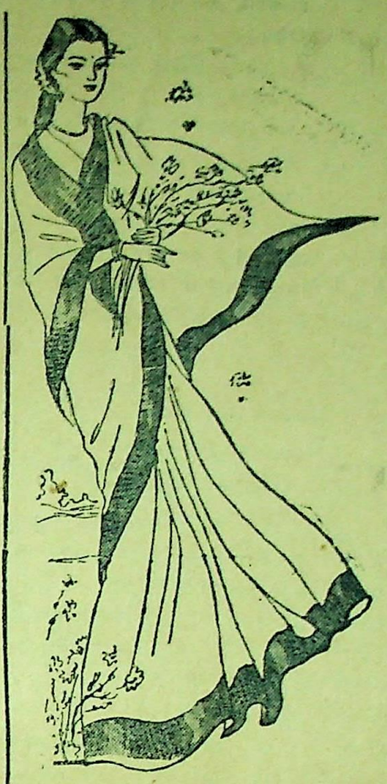

शीतल और सुरभित

सदैव अच्छा साथी

गर्मियों में थकावट अनुभव करने के समय आप अपने माथे और गर्दन पर टाटा का ओ० डी० कोलोन लगा लीजिये। इसकी तीक्ष्ण शीतलता तुम्हें ताजा कर देगी और तुम्हारी थकावट को दूर करेगी। यह तुम्हें सर्वदा ताजा और सुरभित रखेगी। आज ही अपने प्रयोगार्थ एक शीशी मोल लीजिये।

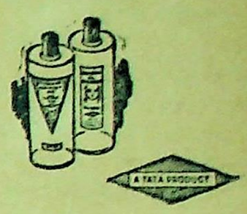

टाटा का ओ० डी० कोलोन

दी टाटा आयल मिल्स कम्पनी लि०

TSE 209

मिर्गी

का २४ घण्टों में खात्मा। तिब्बत के सन्यासियों के हृदय का गुप्त भेद, हिमालय पर्वत की ऊंची चोटियों पर उत्पन्न होने वाली जड़ी बूटियों का चमत्कार, मिर्गी हिस्टीरिया और पागलपन के दयनीय रोगियों के लिये अमृत दायक। मूल्य १०॥) रुपये डाकखर्च पृथक।

पता—एच. एम. आर. रजिस्टर्ड मिर्गी का हस्पताल हरिद्वार।

खाजोल

नं. १५०

तर खुजली की अचूक और मशहूर दवा है।

सोल एजेण्ट:—

देहली जाम फैक्टरी नया बांस, बीड़ी मार्केट, देहली। (२)

डाबर द्राक्षासव

डाबर द्राक्षासव के सेवन से (१) दिल, दिमाग व शरीर पुष्ट होता है। (२) फिजिक्स दूर होती है। (३) कब्जि और मूत्र बढ़ती है। (४) रक्त, बल और वीर्य बढ़ता है। (५) थकावट, सुस्ती और कमजोरी दूर होती है। (६) खांसी, सुकाम और फेफड़ों की कमजोरी में पूरा फायदा होता है। (७) यह आयुर्वेदिक अपूर्व टानिक है।

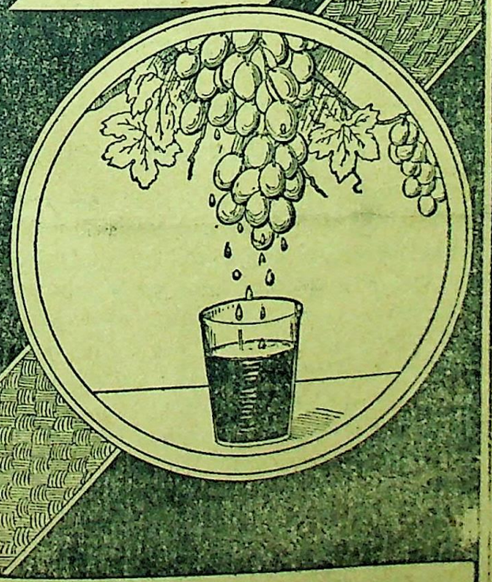

रक्त वर्द्धक
स्फूर्तिदायक
सुस्वादु

डाबर (डा. एस. के. बर्म्मन) लि. कलकत्ता

T.B. टी बी. तपेदिक बड़ा भयंकर रोग है

इस रोग के भयंकर कीटाणु (जर्म) नवयुवकों तथा नवयुवतियों के ही रक्त के प्यासे होते हैं और थोड़े ही दिनों में रोगी को काल के गाल में पहुंचा देते हैं। रोगी के मरने के पश्चात भी कुटम्ब में किसी न किसी को अपना शिकार बनाते ही रहते हैं, इस दुष्ट रोग के जर्मों को नष्ट करनेवाली यदि कोई औषधि है तो वह आसाम बंगाल की शक्तिशाली महौषधि "जबरी" ही है। जिसने परमात्मा की कृपा से सैकड़ों हजारों ऐसे-ऐसे रोगियों को भी काल के गाल से बचा दिया, जिनको "एक्सरे" (X Ray) आदि के बाद डाक्टरों, हकीमों, वैद्यों ने जवाब दे दिया था। यह सब उस परम-पिता परमात्मा की कृपा और भारत के पूज्य ऋषियों के रक्त से सींचे हुए आयुर्वेद शास्त्र का चमत्कार है। जब ही तो लोगों ने इसका नाम औषधि नहीं, बल्कि काल के गाल से बचानेवाली "ईश्वरीय शक्ति" रख दिया है। आप इन ही कालमों में अनेक रोगियों के प्रशंसापत्र देख चुके हैं। अब अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं रही। परमात्मा की कृपा से अब तो अनेक जगह टी. बी. हस्पतालों में भी 'जबरी' का डंका बज रहा है।

T.B. टी.बी. "तपेदिक" और पुराने ज्वर के रोगियो—

अब भी समझो—यदि आप अपनी प्यारी जान को बचाना चाहते हैं तो तुरन्त "जबरी" का सेवन शुरू कर दो। अन्यथा फिर वही कहावत होगी—कि अब पछताए क्या होत है—जब चिड़िया चुग गईं खेत—सैकड़ों हकीम, वैद्य, डाक्टर, अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार द्वारा आर्डर देते हैं, तार या पत्र-व्यवहार के लिए थोड़ा-सा पता "जबरी" (जगाधरी) Jabri (Jagadhri) लिख देना ही काफी है। मूल्य इस प्रकार है—

"जबरी" स्पेशल नं० १ अमीरों के लिए जिसमें साथ-साथ ताकत को बढ़ाने के लिए सोना, मोती, अभ्रक आदि की मूल्यवान भस्में भी पड़ती हैं। मूल्य पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन के लिए २०) रु०। "जबरी" नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान जड़ी बूटियां हैं। पूरा कोर्स २०) रु०। नमूना १० दिन के लिए ६) रु० महसूल आदि अलग हैं। आर्डर में पत्र का हवाला तथा नं० १ या नं० २ साफ-साफ लिखें। तुरन्त 'जगाधरी के पते पर आर्डर देकर रोग की जान बचावें १० दिन में ही अद्भुत चमत्कार दिखाई देगा।

पता—राय साहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस ऐण्ड बैंकर्स (३) शिलांग (आसाम) या पंजाब आफिस "जगाधरी"

(पृष्ठ २ का शेष)

और जायदाद के मामलों में बड़ा भारी सवाल उत्पन्न हो सकता है।

चाहे कृत्रिम गर्भाधान जायज हो, या नाजायज, वह देश जो कि अपने देश की जनसंख्या बढ़ाना चाहते हैं, इस प्रयोग से पूर्ण लाभ उठा सकते हैं। इस प्रकार से उत्पन्न बच्चे साधारण बच्चों की अपेक्षा कहीं हृष्ट पुष्ट होते हैं और अधिक जीवित रहते हैं। अभी हाल में ही रूस ने मां बनने वाली स्त्रियों को अधिक रुपया देने की घोषणा की है। आश्चर्य न होगा, कुछ समय में अमरीका का यह प्रयोग रूस में भी जोरों से व्यवहार में लाया जाने लगे।

— रामकुमार अग्रवाल

चेहरे के रोएं

चेहरे पर या बाजुओं पर बड़े बड़े रोए बहुत बुरे लगते हैं। परन्तु इनको दूर करने के लिये कैंची या ब्लेड का उपयोग नहीं करना चाहिये इससे बाल और भी मोटे तथा अधिक हो जायंगे। चेहरे के रोओं को दूर करने के लिये निम्नलिखित लोशन तैयार कर लो, इससे रोएं दूर हो जायेंगे, तथा चेहरे का रंग भी निखर आयेगा।

खालिस ग्लेसरीन	एक	आउन्स
गुलाब जल	दो	,,
हाइड्रोजन पैरोकसाइड आधा		,,

इन सब को मिला कर एक शीशी में डाल लो और रात को सोते समय चेहरे पर रुई से लगा लो। सुबह हल्के पानी से साफ कर लो। यदि खाल पर मिर्च, सी महसूस हो तो थोड़ा दूध लगा कर मुख को पानी से साफ कर लो।

—विमला बी० ए०

काढ़ने की मशीन

यह कसीदा काढ़ने की मशीन (Embriodery machine) हाल में ही ईजाद हुई है जो फूल, पत्ते बेल, सीन सीनरी आदि कपड़े पर बड़ी आसानी से काढ़ती है। स्त्री और लड़कियों के खास मतलब की चीज। मूल्य मय ४ सुइयों के ३) खर्च ॥≥)

पता—दीन ब्रादर्स, अलीगढ़ नं० ४

प्यारी बहिनो

न तो मैं कोई नर्स हूं, न कोई डाक्टर हूं और न वैद्यक ही जानती हूं, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थी स्त्री हूं। विवाह के एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं लिकोरिया (श्वेतप्रदर) और मासिक-धर्म के दुष्ट रोगों में फंस गई थी मुझे मासिक-धर्म खुलकर न आता था, अगर आता था तो बहुत कम और दर्द के साथ, जिससे बड़ा दुख होता था। सफेद पानी (श्वेतप्रदर) अधिक जाने के कारण मैं प्रति दिन बहुत कमजोर होती जारही थी, चेहरे का रङ्गपीला पड़ गया था, घर के कामकाज से जी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पतिदेव ने मुझे सैकड़ों रुपये की औषधियां सेवन कराईं, परन्तु किसी से रत्ती भर लाभ न हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुख उठाती रही। सौभाग्य से एक सन्यासी महाराज हमारे दर्वाजे पर भिक्षा के लिए आये मैं दर्वाजे पर आटा डालने आई तो महात्मा जी ने मेरा मुख देखकर कहा—बेटी तुझे क्या रोग है जो इस आयु में ही चेहरे का रङ्ग रुई की भांति सफेद हो गया है ? मैंने सारा हाल सुनाया। उन्होंने मेरे पति को अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्खा बतलाया, जिसके केवल १५ दिन के सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगों का नाश हो गया। ईश्वर की कृपा से अब मैं कई बच्चों की मां हूं। मैंने इस नुस्खे से अपनी सैकड़ों बहिनों को अच्छा किया है और कर रही हूं। अब मैं इस अद्भुत औषधि को अपनी दुखी बहिनों की भलाई के लिये अस्ल लागत पर बांट रही हूं। इसके द्वारा लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वर ने मुझे बहुत कुछ दे रखा है। एक बहिन के लिये पन्द्रह दिन की दवा तैयार करने पर २॥=) दो रुपये चौदह आने असल लागत खर्च होती है और महसूल डाक खर्च अलग है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोग में फंस गई हों तो वह मुझे जरूर लिखे मैं उनको अपने हाथ से औषधि बनाकर वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी। यह मेरा प्रण है कि मैं किसी बहिन से दवा की कीमत अपनी असल लागत से एक पैसा भी ज्यादा न लूंगी।

जरूरी सूचना-मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का ही नुसखा मालूम है इसलिये कोई बहिन मुझे किसी और रोग की दवाई के लिये न लिखें।

प्रेमप्यारी अग्रवाल नं० (३०) बुढलाडा जि० हिसार (पंजाब)।

विलायती घड़ियां आ गई

जिन घड़ियों का मुद्दत से इन्तजार था और जिनके लिये आप और हम परेशान थे वह घड़ियां बहुत थोड़ी मिकदार में आगईं। यह कलाई की सबसे मजबूत और मुद्दत तक चलने वाली घड़ी एक ऐसा नायाब तोहफा है कि जिसकी मिसाल नहीं मिलेगी। टाइम भी बिल्कुल सच्ची, पुर्जों की मजबूती की गारण्टी और लम्बे दोनों शेप में मौजूद है। बनाने वाली कम्पनी ने तारीफ यह की है कि फर्श पर गिरने से नहीं टूटती और टाइम बराबर देती रहती है जरूरत मन्द लोगों को सिर्फ एक घड़ी दी जावेगी। दुकानदारों जो ज्यादा मिकदार में हम अभी सप्लाई नहीं कर सकते। कीमत सफेद पालिश वाली मय स्ट्राप और केस के सिर्फ २०) सुनहरी २२) डाक खर्च अलग।

घड़ियों के बड़े सौदागर

सुख सागर कम्पनी पो० नं० २०७ देहली।

थोड़ी थोड़ी बचत बड़ी बड़ी समस्याओं की निवृत्ति करती है

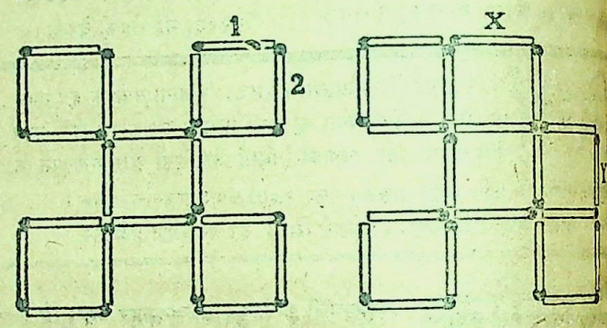

प्रश्न : दिया सलाई की २ तीलियों को दुबारा ऐसे रखिये कि ५ समकोण चतुर्भुज ६ बन जावें।

उत्तर : तीली नं० १ और २ को हटा दीजिये और एक एक तीली 'X' और 'Y' के चिन्ह पर रखिये। इस प्रकार ६ समकोण चतुर्भुज बन जायेंगे।

यदि आप जानते हैं कि "किस प्रकार" सब समस्याओं की निवृत्ति हो सकती है, तो थोड़ी बचत की स्कीम से आपकी आर्थिक समस्याओं की निवृत्ति हो सकेगी। प्रति सप्ताह अथवा प्रति मास थोड़ा बहुत बचाइये और उस बचत से नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिये।

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट्स

निम्न लिखित मुख्य लाभ यह हैं:—

(१) आप ५, १०, ५०, १००, ५००, १०००, या ५०००, रु० के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) कुटुम्ब का प्रत्येक व्यक्ति (वयस्क या अल्पवयस्क) ५००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकता है। दो व्यक्ति मिलकर १०,००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ६०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है। सरकार द्वारा प्रचलित रुपया लगाने की दरों पर जो ब्याज दिया जाता है यह सब से अधिक दर है।

(४) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।

(५) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते हैं (५ रु० का सर्टिफ़िकेट १॥) में पश्चात भी भुनाया जा सकता है)

(६) जिनकी बचत थोड़ी है वह १) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं। ५ रु० के स्टाम्प्स जमा होने पर एक सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट मिल जायेगा।

(७) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्प्स सरकार द्वारा अधिकृत एजेंटों अथवा पोस्ट आफिसों से प्राप्त हो सकते हैं।

अपने सेविंग्ज़ ग्रुप में अभी सम्मिलित हो जाइये

CC-0. Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गुरु नानक देव

श्री ज्ञानी हरनामसिंह 'वल्लभ' सदस्य—सिख इतिहास अन्वेषण समिति

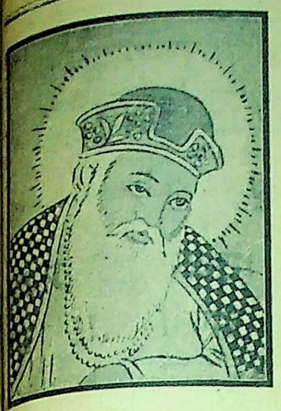

श्री गुरुनानक देव जी

श्री गुरु नानकदेव जी महाराज एक सामयिक देन थे, और प्रभु की वह एक ऐसी पवित्र देन थे जिनकी तात्कालिक और आज की युगीन परिस्थितियों की विषमता और भीषणता में कोई विशेष अन्तर दृष्टिगोचर नहीं होता। लगभग पांच शताब्दि पूर्व के इतिहास की राजनैतिक, सामाजिक वा धार्मिक घटी विकट घटनायें ही आज घटती पाई जा रही हैं। शासकों की प्रचण्ड कूटनीति और मानव की पाशविक-वृत्तियों का उभार उस समय ठीक वैसा ही था, जैसा आज है। मानव की मानवता उस समय भी उससे बिछुड़ चुकी थी और आज का मनुष्य तो राक्षस का कुरूप रूप पूर्णतया धारण कर चुका है। ऐसे विषादमय समय की विभीषिकाओं से निस्तारा यदि मिलता है तो शान्तिमय संत गुरुदेव महापुरुषों के चरणों में बैठकर ही मानव की अशान्त आत्मा को शान्ति, और उनके उपदेशों को ग्रहण करने से व्यष्टि का प्रगतिशील पथ निष्कण्टक बनता है।

श्री गुरु नानकदेव जी ने उस समय देश और जाति की दुर्दशा को भली प्रकार अनुभव किया, उसके रोगों के कारण को ढूंढा और उनका उपचार किया। उस समय के उनके अमूल्य उपदेशों ने मानव की गिरावट पर एक ऐसी बन्दिश बांधी, जिससे मानव ने और विशेषतया हिन्दू-जाति ने अपने को झंझावात से सुरक्षित कर लिया। युग बदला और मानव फिर गिर गया, आज फिर उनके उपदेशों को दुहराने और ग्रहण करने की संसार को अत्यावश्यकता अनुभव हुई है।

गुरुजी का कार्य बहुत कठिन था। बाढ़वाद में ग्रसित हिन्दू जाति अनेकानेक ढोंगों और कुटेवों से शृङ्खलित हुई दासता के बन्दी-गृह में जीवन यापन करने में अभ्यस्त हो चुकी थी। उसे अपनी शृङ्खलाओं से बहुत ममता हो चुकी थी और वह दीन-हीन दशा के अनुकूल ही अपने को ढाल चुकी थी। रोग उस समय भयंकर माना जाता है, जब उसकी अवहेलना करके रोगी अपने उपचार को छोड़ देता है। ठीक यही दशा तब हिन्दू जाति की थी। दूसरी ओर देश का शासन विधान अपनी क्रूरता और नृशंसता के कारण पर्याप्त प्रसिद्ध हो चुका था (!) शासकों की दुरूहता और दृढ़ता से यह स्पष्ट जान पड़ता था कि समय और परिस्थितियों में कोई परिवर्तन हो सकना बड़ी दूर की बात है। ऐसी कठिन दशा में गुरुजी ने अपने कार्य को आरम्भ किया। उन्होंने देखा कि लोग परमात्मा को भूल चुके हैं और धर्म की आड़ में अपना स्वार्थ परायणता को पनपा रहे हैं। शासक और शासित दोनों गर्त की ओर दौड़े चले जा रहे हैं। धर्म के संरक्षक अपने पथ से डिग गये हैं और समाज पर लोलुपता और ढोंगियों ने अपना पंजा जमा लिया है, ऐसे आड़े समय में अज्ञानान्धकार को दूर करना उन्हीं जैसे तपस्वियों का काम था। जन-मन को ज्ञान का प्रकाश मिलने लगा। उस प्रकाश से जनता-जनार्दन को सच्चा-जीवन मिला और समाज ने उनके चरणों पर अपनी श्रद्धा भेंट की।

श्री गुरु नानकदेवजी महाराज ७२ वर्ष की अवस्था में संसार को छोड़ उच्च पद पर पहुंचे। गुरुजी गृहस्थी थे और गृहस्थ-मार्ग को भी उन्होंने ऊंचा बताया है। ३२ वर्ष की अवस्था पर्यंत तक वे घर में ही रहे परन्तु बाल्यकाल से ही उनकी प्रवृत्ति साधुओं की सी थी। सात-आठ वर्ष की अवस्था में ही उनमें महानता के अनेक गुण प्रगट होने लगे और तब से ही अनेकों उनके स्नेही और श्रद्धालु भी बन गये थे।

३२ वर्ष की युवावस्था में श्री गुरुजी ने देशाटन करके धर्म प्रचार करने का निश्चय किया और विदेश-यात्रा आरम्भ करदी। इस लम्बी यात्रा में उन्होंने अपने साथ केवल दो सहयोगी—'बाला' (सनातनी) और 'मर्दाना' (मुसलमान) को सग ले, हरिकीर्तन करते और सत्पुरुषों को धर्म का सदेश सुनाते हुए अपना प्रचार यात्रा को लगभग तीस वर्ष में सम्पूर्ण की। इस यात्रा में भारतवर्ष के प्रसिद्ध स्थानों में, विशेषकर तीर्थों पर वे घूमें और इसके अतिरिक्त चीन, लङ्का, जापान, तिब्बत, काबुल, ईरान, बगदाद, मक्का और मदीना में भी गये। इन स्थानों में से बहुतसों में श्री नानकदेवजी के स्मारक गुरुद्वारों वा अन्य रूपों में अबतक विद्यमान हैं।

विदेश-यात्रा के दौरे में लगभग ६ वर्ष तक महाराज के उपदेश इस्लामी प्रदेशों में बड़ी निस्सङ्कोच और निर्भीकता के साथ हुए। एक बार अरब में गुरुजी के पहुंचने से, वहां की बालू की भूमि में दबी हुई भारतीय संस्कृति के चिन्ह और पुण्य मान्यताएं पुनः चमक उठीं। उनकी वाणी पर सरस्वती थी, ईश्वर को उन्होंने साक्षात किया था, इसी कारण से उनके सद्विचारों से अरब की साधारण जनता ही क्या; अपितु इस्लाम के अभिमानी पीर तक भी उनके हजूर में अपनी श्रद्धा को समर्पित करने की बेचैनी से प्रतीक्षा किया करते थे। काबुल और बगदाद में इस्लामी पीरों द्वारा स्थापित गुरु नानकदेवजी का स्मृति-मन्दिर अब तक अरब की रेतीली भूमि में गुरुजी की महत्ता को वहां लहरा रहा है। बगदाद में तो अब तक बहलोल पीर द्वारा स्थापित श्री गुरु-स्मृति-मन्दिर, जिनकी पीर से चर्चा हुई थी, की अति प्राचीन दीवार में निम्न शिला लेख मढ़ा हुआ है—

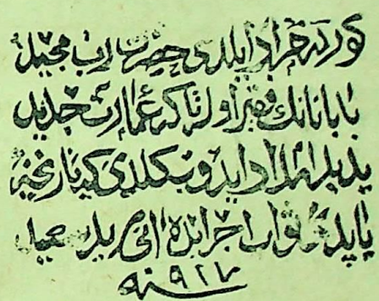

[बगदाद शिला लेख की प्रतिच्छाया]

शिलालेख का भाषांतर—

"जब हज़रत बहलोल ने, देखी यादगार अपने मुरशद हिन्द के पीर बाबा नानक की, तब उसने यादगार को अच्छा बनाकर, इस पत्थर को भी दीवार में जड़वा दिया ताकि उस खुदा के प्यारे, मुरशद के यहां आने की तारीख यादगार के तौर पर कायम रहे।"

बगदाद की भांति मक्के में भी नानकदेवजी महाराज का स्मृति स्थान स्थापित किया गया था, जिसमें वहां गुरुजी की चरण-पादुकाओं को रखा गया था। १८०७ में वहां के मुसलमान मुजावर (पुजारी) को परिस्थितियों वश मक्के से भागना पड़ा और वह हिन्दुस्थान बहावलपुर रियासत के 'उच्च' नामी गांव में आकर बस गया। गुरु नानक जी की चरण-पादुकाओं को मक्के के गुरु मंदिर का मुजावर अपने साथ साक्षी देने के लिये लेता आया था कि उसके पूर्वज 'रुकन दीन' ने ही श्री गुरुजी से इनको प्राप्त किया था। गुरुजी की पादुकाए अब तक रुकन दीन के वंशजों के पास उपरोक्त स्थान पर सुरक्षित हैं।

श्री गुरु नानकदेव जी महाराज का जीवन तेजोमय था उनके उपदेशों की संसार को आज भी आवश्यकता है, और उनका कथन था कि जीवन और समाज को सुखद बनाने के लिये हमें दो चीजों को तो कम से कम अवश्य ग्रहण कर लेना चाहिये—

प्रभु-भक्ति और जन-सेवा

हिन्दी ही हिन्दुस्तान की राष्ट्र भाषा है।

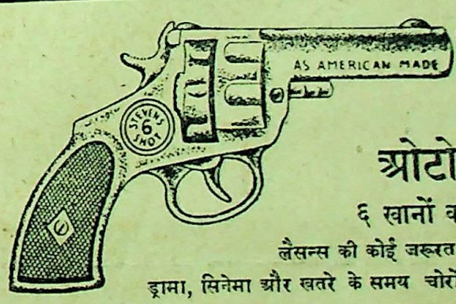

आत्मरक्षा

ओटोमेटिक

६ खानों वाली पिस्तौल

लैसन्स की कोई जरूरत नहीं

ड्रामा, सिनेमा और खतरे के समय चोरों को डराने के लिये बड़े काम की है। दागने पर पिस्तौल के मुंह से आग और धुंआ निकलता है। असली रिवाल्वर की तरह मालूम होती हैं। साइज ७॥ इंच×४ इंच और वजन १५ औंस। मूल्य ८) और साथ में १ दर्जन गोलियां (एलार्म डिस्क) मुफ्त। अतिरिक्त १ दर्जन गोलियों का दाम २)। स्पेशल तांबे की बनी ६६६ नं० की पिस्तौल का दाम १०)। वेस्ट के साथ केस २॥), पोस्टेज और पैकिंग का अतिरिक्त १=)। प्रत्येक आर्डर के साथ १ शीशी रिवाल्वर का तेल मुफ्त।

नापसंद होने पर दाम वापस

इम्पीरियल चैम्बर आफ साइंस (V. W. D.) पो० बो० ६१ लाहौर

Imperial Chamber af Science (V.W.D.) P.B.61. LAHORE

वर्तमान विश्वव्यापी युद्ध और भारतीय जनता का पतन

[पृष्ठ ८ का शेष]

में रुपये का मूल्य घट जाता है और आय उतनी ही रहती है; मंहगाई का भत्ता मिला कर कुछ बढ़ा भी तो कुछ लोगों को वह पर्याप्त नहीं होती। झूठ, चोरी तथा बेईमानी आदि दुर्गुण नीच प्रकृति तथा निम्नवर्ग में तो खुले तौर पर देखने में आते हैं, पर पढ़े लिखे तथा ऊपर से संस्कृत व्यवसायी कुछ सभ्य उपायों का प्रयोग करते हैं। चोर बाजार इसी प्रकार की वस्तुयें हैं।

युद्धकाल की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये भारत के बहुत से प्रमुख नगरों में सैकड़ों कारखाने खुले, जहां प्रतिदिन हजारों की संख्या में मजदूरों ने काम किया। उनका जीवन रोज कुआं खोदना और पानी पीना था। 'आज पेटभर भोजन मिल जाय कल की क्या चिन्ता' में विश्वास करने वाले यह मनुष्य जीवन को एक मीठा सपना समझने लगे। कारखानों मे उनको जी तोड़कर मेहनत करनी पड़ती थी, सुबह सात बजे से संध्या के पांच बजे तक अफसरों के तथा सारजेंटों के कड़े शासन में और कभी-कभी पैसे के लोभ में कुछ घंटे और काम करके दिनभर की कड़ी मेहनत से चूर होकर संध्या के झुटपुटे में दिन की थकावट दूर करने के लिये चल देते थे मदिरालय की ओर जहां ताड़ी या देशी शराब के कुछ घूंट गले से उतरते ही वह दुनिया को भूल जाते हैं। रात मादकता की छाया में बीत जाती है, दिन होते ही फिर वही नित्यक्रम चलने लगता है। यह क्रम उनके जीवन को घड़ी की सुइयों की भांति चलाता है एक ही कीली पर। कभी-कभी यह मजदूर तथा परिश्रमी वर्ग सिनेमा घर में किसी रद्दी चीज के अश्लील वाक्य या अशोभन व्यापार पर एक भद्दी हंसी तथा तालियों से हाथों को गुंजाते हुए भी पाये जाते हैं। सिनेमा वाले भी शायद इन्हीं की रुचि को ध्यान में रखकर एक से एक गंदा चित्र तैयार कर पैसा कमाते हैं, बिना यह सोचे हुये कि वह भारतीय जनता के बड़े भाग को नैतिक पतन की ओर घसीटे लिये जा रहे हैं। निम्न वर्ग के लोगों का मानसिक धरातल इतना संकीर्ण तथा विषमय हो जाता है कि वह अश्लील बातों के अलावा कुछ सोच ही नहीं सकते। नैतिकता का ह्रास अपनी चरम सीमा पर पहुंच जाता है। सेना में, नौकरियों में पढ़े-लिखे बाबू भी नैतिक दृष्टि से बहुत गिर गये। कहा जाता है कि धन के नष्ट होने पर कुछ नष्ट नहीं होता। स्वास्थ्य के नष्ट होने पर सब कुछ नष्ट होता है। आचरण के नष्ट होने पर सब कुछ नष्ट हो जाता है। भारतवर्ष के कुछ लोगों का यह सब कुछ नष्ट हो चुका है और कुछ अभी उसकी सीमा के निकट पहुंच गये हैं। उनके लिए अवसर है कि वह संभल जायं और आचार भ्रष्ट लोगों को एक बार जाग्रति की भांति फिर से ऊपर उठा दें।

वर्तमान विश्वव्यापी युद्ध में जो बर्बरता, कठोरता तथा जीवन का भूखा है, एक ऐसे दैत्य शिशु को जन्म दिया — जिसने बंगाल की उस शस्यश्यामला भूमि को, जहां धान के खेतों की मनोरम हरियाली में अनेकों कवि, चित्रकार और संगीतज्ञ बना दिया, भूख की यातना में तड़पा-तड़पा कर निगल लिया। बंगाल के अकाल का सब से अधिक लज्जास्पद अंग जिसमें नैतिक पतन चरमसीमा पर पहुंच गया था, अकाल की ओट में व्यभिचार था। कितनी ही सभ्रांत घराने की नारियां जो अपने को सीता, सावित्री से कम न समझती थीं, कितनी नैतिकता उच्चकोटि का थी, समय और विपत्ति के चक्र में आ, पेट के लिए अपने नन्हें शिशुओं के सूखे शरीर, भूख से बाहर निकली हुई आंखों की दयनीयता तथा अपार विवशता न देख सकने के कारण अपने जीवन की अमूल्य निधि 'सतीत्व' को चन्द दानों के लिए बेचने को बाध्य हुईं, क्योंकि केवल यही एक मार्ग था, जिससे वह जीवन की रक्षा कर सकती थीं। यहां पर भारतीय जनता की नैतिकता का अन्त हो गया। इससे अधिक नारकीय वृत्ति भला क्या हो सकती है?

युद्ध के कारण देश में अन्नाभाव तो हुआ ही, साथ ही वस्त्राभाव भी हो गया। यहां तक कि बहुत से परिवारों को तन ढकने के लिए एक वस्त्र भी नहीं मिलता। भद्र नारियां न जानें किस भांति अपनी लज्जा की रक्षा करती हैं।

युद्ध का प्रभाव भारतीय जनता पर मानवता के पूर्णरूपेण लोप के रूप में देखने में आता है। स्वार्थ, विश्वबन्धुत्व आदि की बातों को दूर छोड़ परिवार के अति निकट सम्बन्धों की सीमा को उल्लंघन करता हुआ कोरे स्वार्थ के आंगन में पैर रख देते हैं। जब अन्नाभाव होता है तो लोग एक दूसरे से कौर छीनते हुए दिखाई देते हैं। यहां तक कि मां भी अपने बच्चे से छुपाकर रोटी का सूखा टुकड़ा या दाना मुंह में डाल लेती है। जब मानव, मानव ही नहीं रह गया, जब उसे जीने का अधिकार तो दिया गया और साधन छीन लिये गये तो मानवता कहां रह सकती है।

अब यह युद्ध एक तरह समाप्त-सा हो गया है, पर उसकी काली छाया का प्रभाव भारतीय जनता के मस्तिष्क को गन्दी वायु की भांति अब भी दूषित किये हुए है। शान्तिकाल लौट आने पर और सभी पुरानी बातें सम्भव हैं, धीरे धीरे लौट आयें। पर एक बार जो नैतिक पतन हो जाता है उसको दूर करना कुछ कठिन होता है। पर यहां उपेक्षा का विषय नहीं है, भारतीय जनता से तात्पर्य, उस सम्पूर्ण राष्ट्र से है जो चन्द दिनों में स्वतन्त्रता की स्वच्छन्द वायु में सांस लेने वाला है, जिसके लिये आवश्यक है कि प्रत्येक भारतीय बालक, युवा, वृद्ध, नर तथा नारी इस महत् तथा पुण्य कार्य को सम्भालने के लिये अपने को तैयार करें; अपने को ऊपर उठायें। सदाचार के नियमों का पालन करें ताकि वह एक सच्चे तथा आदर्श नागरिक की भांति राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा करें और यह तभी सम्भव है, जब हमारी नैतिकता अपने असली भारतीय रूप में हजारों वर्ष पीछे लौट जायेगी।

पेट भर भोजन की

गेसहर—(गोलियां) गैस बनना पैदा होना, पेट में पतन का घूमना की कमी पाचन का न होना, खाने पेट का भारीपन बेचैनी, हृदय की दिमाग अशान्त रहना, नींद का न दस्त की रुकावट वगैरह, शिकायत करके दस्त हमेशा नियमित साफ लाता अन्न पचा कर कड़ाके की भूख लाती आंत को ताकत देती है। शरीर में बढ़ा कर शक्ति प्रदान करती है। लीवर तिल्ली और पेट के हर एक रोग अद्वितीय दवा है! कीमत रुपया १) का ३॥: डाक खर्च अलावा।

पता:-दुरुधानुपान फार्मेसी ४ जाफर देहली एजेंट-जमनादास कं० चांदनी

प्रमेह रोग समाप्त करो

७ दिन में आराम

यदि किसी पुरुष को पेशाब करने के पहले या पेशाब करने के बाद लंबा गंदा पानी आता हो तो यह बहुत भयंकर बात है। इसे प्रमेह का रोग कहते हैं। धीरे-धीरे यह रोग बढ़ जाता है तो आदमी पौरुषहीन हो जाता है। उसकी शक्ति समाप्त हो जाती है। इस वास्ते जिन पुरुषों को यह शिकायत हो या स्वप्नदोष होता हो तो इस भयंकर रोग से लापरवाही नहीं करनी चाहिये।

प्रमेह का रोग केवल ७ दिन में नष्ट हो जाता है

और केवल ३॥) खर्च होंगे। "जौहरे आजम" इस रोग के लिए अक्सीर प्रमाणित होती है। केवल एक शीशी दवा "जौहरे आजम" से बड़े पुराने रोगी स्वस्थ हो गए। "जौहरे आजम" प्रमेह के रोग का सबसे अच्छा इलाज है। जिन लोगों को आवश्यकता हो—

मैनेजर, जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४ दिल्ली

के पते पर पत्र लिखकर "जौहरे आजम" की एक शीशी वी० पी० द्वारा मंगा लें। एक शीशी का मूल्य ३॥) तीन रुपया आठ आना है पार्सल का खर्च ॥-) लगेगा।

[टेलीफोन नं० ६२१६

स्त्री रोगों की निपुण चिकित्सिका

लेडी डाक्टर **कविराज आर. रानी**

आप किसी भी स्त्री रोग में ग्रस्त हों तो निम्नलिखित पते पर मिलें। वे आपको उसी समय ठीक कर देंगी। इसके अतिरिक्त उनकी तैयार की औषधि 'आशा' एक ऐसी औषधि है जोकि स्त्री के आन्तरिक बाह्य रोग दूर करके सन्तान योग्य बना देती है और उसका मूल्य केवल १०) रु० डाक व्यय पृथक होगा। औषधालय—

लेडी डाक्टर-**कविराज आर. रानी**

गली नं० १ अर्जुननगर निकट शाहालमी अड्डा लाहौर

CC-0. Lala Kanguri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

स्त्री को श्वेत प्रदर

स्त्री को श्वेत पानी की बीमारी भयानक होती है। इस बीमारी को ल्युकोरिया भी कहते हैं। इस बीमारी से पीड़ित होने वाली स्त्री के गुप्त शरीर से समय असमय श्वेत रङ्ग का बदबूदार पानी या लेस निकलता है और धीरे-धीरे उस स्त्री के जीवन को समाप्त कर देता है। उसकी कमर, नाफ, नले, पेट, बल्कि सारे शरीर में दर्द होने लगता है। माहवारी अर्थात् मासिक धर्म भी खराब हो जाता है। यह रोग बड़ा भयानक है। स्त्रियों को इसमें लापरवाही नहीं करनी चाहिए।

श्वेत पानी को रोकने की विधि

नवयुग की जांच से अब पूरी तरह साबित हो चुका है कि इस श्वेत पानी की बीमारी को समूल नष्ट करने की सबसे बढ़िया विधि यह है कि बीमार स्त्री को केवल एक शीशी औषधि 'रोक' सेवन करा दी जाय। इस औषधि के सेवन से ठीक तीसरे दिन श्वेत पानी की बीमारी बिल्कुल ठीक हो जाती है। हजारों वद्य, डाक्टर, हकीम इस औषधि को रोगियों पर सेवन कराके ख्याति प्राप्त कर रहे हैं। यदि आवश्यकता हो तो:—

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४, दिल्ली

के पते पर पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा औषधि 'रोक' की एक शीशी मंगा लीजिये। एक शीशी का मूल्य ३) तीन रुपया डाक व्यय ॥-) आना है। हर धर्म की स्त्रियां सेवन कर सकती हैं।

अर्जुन साप्ताहिक

ARJUN WEEKLY

DELHI, 18th November 1946. [अङ्क ३६]

मालवीय जी

[देहान्त १९४६

पाल विद्यालङ्कार
न्द्र विद्यालङ्कार

एक प्रति का मूल्य ।)

नारी आन्दोलन की नेत्रियों से

सच्चा नारी-जागरण क्या है ?

[कु० दयावती विद्याविभूषिता, काव्यतीर्थ]

★

समय के साथ-साथ भारत में नारी-जागरण-आन्दोलन व्यापक रूप धारण कर चुका है और उच्च घरानों की बहनों ने पाश्चात्य-शिक्षा के प्रभाव में अपने जीवन को रंग लिया है। भारतीय आदर्शों को पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव पड़ते ही हमारी बहनों ने भारतीय आदर्श को तिलाञ्जलि दे दी है और वे पुरुषों के साथ अधिकारों का संघर्ष कर रही हैं। यह है नारी-जागरण की बाह्य रूप-रेखा, जिसे देखकर बहनें अपने समाज को उन्नतिशील एवं जाग्रत समझ कर आत्म-सन्तोष कर रही है। लेकिन सच्चा नारी-जागरण यह नहीं है। अतीतकाल में पुरुष ने स्त्री पर जो प्रतिबन्ध लगाये थे, वे स्वयं आज सौभाग्य से शिथिल और जर्जर हो चुके हैं। पुरुष आज प्रगतिशील है; पर वह सब अपने लिए करता है। अपने वर्ग की उन्नति के लिये पुरुषों की ओर ताकना हमारे लिये उचित नहीं। हमें अपने बल पर ही अपना जागरण करना है; इसलिये हमारा आन्दोलन प्रत्यक्ष संघर्ष की दिशा में न होकर रचनात्मक अधिक होना चाहिये।

ग्रामीण और निम्न श्रेणी की बहनों का दैनिक जीवन अभी सुख नाम की वस्तु से कितनी दूर है, इसका उन तक पहुंचने पर ही पता लग सकता है। अशिक्षा-निवारण का कार्य यदि अपने हाथ में लेकर हम बहनों के पास पहुंचें तो बड़ा भारी कार्य हो सकता है। अविद्यान्धकार के नष्ट होते ही समाज की वे रूढ़ियां, जिनकी शृंखलाओं में जग लग चुका है और जो अकिञ्चन प्रहार से विशृंखलित होने की प्रतीक्षा कर रही हैं सदा के लिए नष्ट हो जायंगी। स्त्रियों में अशिक्षा-निवारण के महत्वपूर्ण कार्य को सफल बनाया जा सके, तो नारी-जागृति में बहुत सहायता मिलेगी। आवश्यकता है भारतीय दृष्टिकोण के साथ-साथ महिलाओं में जागृति (रचनात्मक कार्य में रुचि) पैदा की जाय। यदि अखिल भारतवर्षीय महिला-सम्मेलन की प्रधान कार्य-कर्त्रियां अपने आन्दोलन की दिशा को इस ओर मोड़ लें और ग्रामीण तथा मध्य-वर्ग की स्त्रियों की वर्तमान दशा सुधारने में संलग्न हो जांय, तो स्त्रियों की दुर्दशा का कलंक मिट जाय और वे भारत तथा मानवता की महान सेवा कर सकें।

आज हमारी अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की बहिनें सहशिक्षा के अधिकार की मांग करने में अपना गौरव समझती हैं। क्या ही अच्छा हो, यदि सह-शिक्षा के कुपरिणामों को देखते हुए इस मांग को छोड़ दिया जाय, तथा कन्याओं के लिये अनिवार्य और निःशुल्क पृथक शिक्षा की मांग पर जोर दिया जाय। आर्यसमाज ने स्त्री-शिक्षा का जो महत्वपूर्ण कार्य किया है, उसका स्वागत करते हुए आर्यसमाज के कन्या-विद्यालयों और गुरुकुलों को सम्मानित तथा प्रोत्साहित किया जाय। और उनसे सहायता ली जाय। दहेज प्रथा के लिए जहां पुरुष को उत्तरदायी समझा जाता है, वहां वर की माता का भी इस विषय में बड़ा भारी उत्तरदायित्व है। इससे इन्कार नहीं करना चाहिये। अनेक शिक्षित और सभ्य कही जाने वाली बहनें अपने पतियों को दहेज लेने के लिये उत्साहित एवं विवश करती हैं। दहेज दानव ने भारतीय समाज को कुरुप एवं क्रूर बना दिया है। इसके साथ ही विवाह-बन्धन के लिये जात-पांत का भूत अभी तक शिक्षित महिलाओं में से नहीं निकल सका है। ग्रामीण नारी तो इस प्रगति से कोसों दूर है। जात-पांत के मिथ्या आडम्बरों को तोड़ने में कुछ महिलाओं ने विशेषकर आर्यसमाजी महिलाओं ने साहस अवश्य दिखाया है; पर उसकी प्रगति अब बिल्कुल बन्द है। इस दिशा में आन्दोलन करने की बड़ी आवश्यकता है।

कन्याओं के लिये गृहस्थ धर्म की शिक्षा का पाठ्यक्रम बनाया जाय और प्रत्येक कन्या के लिये उसका पढ़ना अनिवार्य कर दिया जाय। इस कार्य में सरकार का सहयोग मिल सकता है।

प्रसूति-विज्ञान की उच्च शिक्षा की व्यवस्था के लिये आन्दोलन हो तथा सार्वजनिक प्रसूति-गृहों की अधिक संख्या में स्थापना के लिये प्रयत्न किया जाय। निर्धन स्त्रियों का उन में मुफ्त प्रवेश हो। आज हमारे देश में प्रसूति-गृहों की संख्या उंगलियों पर गिनी जा सकती है। यह आवश्यक नहीं कि भव्य भवनों के निर्माण में इस फण्ड के धन का अपव्यय हो। सम्प्रति अनिवार्य व्यय करके इस प्रकार के गृहों की ही व्यवस्था की जाय। स्त्रियों की शिक्षा के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है।

स्त्रियों की आर्थिक अवस्था के सुधार का प्रश्न भी बड़ा महत्वपूर्ण है। भारत की गरीबी ने आज उसे संसार में असभ्य कह अपमानित कराया है। बेकारी को दूर करने से ही भारत सुखी हो सकता है। स्त्रियां स्वावलम्बन के द्वारा बेकारी से युद्ध लड़ सकती हैं। म० गांधीजी ने चर्खे के रूप में हमें पुराने जमाने की याद दिलाई है। एक दिन घरों में चर्खा कातना स्त्री का नित्य कर्तव्य था। कातने के अतिरिक्त अन्य बहुत से शिल्प हैं, जिन्हें स्त्रियां घर में भी कर सकती हैं। कस्तूरबा-स्मारक-ट्रस्ट ने इस ओर ध्यान दिया है। यदि अ० भा० महिला-सम्मेलन और आर्यसमाज की कर्तव्य-परायण देवियां इस कार्य में अपना सहयोग दें तो काफी सफलता मिल सकती है।

ऊपर नारी-समाज के हित के लिये संक्षिप्त कार्यक्रम रखा गया है। इसका सम्बन्ध उन बहनों से है जिनका हम सुधार चाहती हैं; पर साथ ही हमारा अपने प्रति भी कर्तव्य है, जिसे पूर्ण करना चाहिये। सभ्यता की चौंध ने हमें मोह लिया है, और अधिकांश बहनें पाश्चात्य प्रभाव इतनी बह गई हैं कि उन्हें नारी भी कहना ठीक न होगा। कर्तव्य है कि हम अपने की ओर देखें और उन्हें अपने प्रगतिशीलता के नाम पर आज भाषा और वेष, रहन-सहन सब चुका है। भारत में आने वाले माल में आधे से अधिक हमारे और परिधान की ही सामग्री क्या भारत को आजाद कराने का करने वाली भारतीय महिलाओं के इससे बुरी और कोई बात हो सकती

अमेरिकन सैनिकों की परित्यक्त बीबियां

विश्वव्यापी द्वितीय महायुद्ध ने संसार की कुछ अन्य आचरण-सम्बन्धी बुराइयों के सिवा महिलाओं के आचरण को भी बड़ी हानि पहुंचाई है।

एक अमेरिकन अफसर ने बताया था कि करीब ६००० युवतियों ने अमेरिकन सैनिकों से शादियां की हैं। उन युवतियों में २००० तो केवल कलकत्ते की ही थीं। उनमें से कुछ युवतियों की गोद में शिशु भी थे। बहुत-सी युवतियां अपने सैनिक पतियों के साथ अमेरिका को प्रस्थान करते समय अपने साथ हिमालय की तराई में रहने वाली जातियों की दाइयों को भी ले गयीं। बाद में मालूम हुआ कि करीब एक हजार से अधिक अधगोरी युवतियों को अमेरिका पहुंचने पर उनके सैनिक पतियों ने 'तलाक' दे दिया।

अब इन परित्यक्त अधगोरी युवतियों के सामने भारत वापस आने के सिवा दूसरा चारा नहीं है। अमेरिका के कानून के अनुसार किसी भी सैनिक की विदेशी पत्नी तब तक अमेरिकन नागरिक नहीं समझा जा सकती, जब तक वह अपने पति के साथ एक नियत समय तक न रह ले। यदि नियत समय से पूर्व उनका सम्बन्ध-विच्छेद हो जाय, तो वह नागरिक अधिकार से वंचित कर दी जाती है। इस प्रकार जिन अधगोरी युवतियों ने वासना के वशीभूत होकर अमेरिकन सैनिकों को वरण किया था, वे अब अपनी जन्मभूमि—पवित्र भारत से हजारों मील दूर अपनी जन्म-भूमि पवित्र भारत से हजारों मील दूर अपनी करनी पर पछता रही हैं। उनकी अवस्था बहुत ही दयनीय है।

भारत में जब कोई अमेरिकन सैनिक किसी युवती से विवाह करने को राजी होता था, तब उसे फौजी कानून के अनुसार यह सिद्ध करना पड़ता था कि वह जिस युवती से विवाह करने जा रहा उसका ५१ प्रतिशत रक्त यूरोपियन है इस प्रकार युवती को भी अपने पवित्रता की गारंटी देनी पड़ती थी।

रक्त-परीक्षा के बाद अमेरिकन सैनिक को अपनी पल्टन के कमांडर से अपनी शादी के लिए निर्देश प्राप्त करना पड़ता था कि वह अपनी पसन्द की युवती से शादी कर सकता है या नहीं। कमांडर की स्वीकृति के बाद फौजी पादरी विवाह उम्मेदवारों को देखता था। उसके बाद वे प्रणय-बन्धन में बंध जाते थे।

अमेरिकनों के वैभव और ऐश्वर्य की ओर आकर्षित होकर कुछ भारतीय रमणियों ने भी अपने कुल को तिलांजलि देकर सैनिक पति निर्वाचित किये। इसमें सन्देह नहीं कि ऐसी भारतीय रमणियों का भारत से नाममात्र का सम्बन्ध है, वरना ये पश्चिमी सभ्यता की दासी हैं। पंजाब और बंगाल की कुछ तथाकथित उच्च परिवारों की युवतियों ने भी अमेरिकनों से शादियां की और अमेरिका गई हैं। उनको वहां किस संकट का मुकाबला करना पड़ रहा है, यह कौन जानता है।

अमेरिकन नीग्रो सैनिकों ने भी कलकत्ते में काफी शादियां कीं। खिदिरपुर डकपर बहुत से नीग्रो सैनिकों को अपनी भारतीय पत्नियों के साथ जहाज पर सवार होते देखा गया। उनके साथ कुछ बच्चे भी थे। मालूम हुआ था कि उनमें बहुत-सी सैनिक पत्नियां तो 'होली गार्डी' आदि पवित्र स्थानों की हैं।

ब्रिटेन में चाय का शौक

दुनिया के चाय पीने वाले देशों में ब्रिटेन का सबसे पहला नम्बर है। वहां प्रति वर्ष एक आदमी पीछे चार से १० छटांक चाय खर्च होती है। इंग्लैण्ड में सबसे पहिले चाय पीने की प्रथा १७९७ ई० में प्रारम्भ हुई थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar, Digitized by eGangotri

समाचार चित्रावली

श्री कृष्ण मेनन—भारत सरकार की ओर से विदेशों के परराष्ट्र विभाग से सम्बन्ध स्थापित करने जा रहे हैं।

श्री डेवेलेरा ने भी भारत से राजनैतिक सम्बन्ध स्थापित करने की इच्छा प्रकट की है।

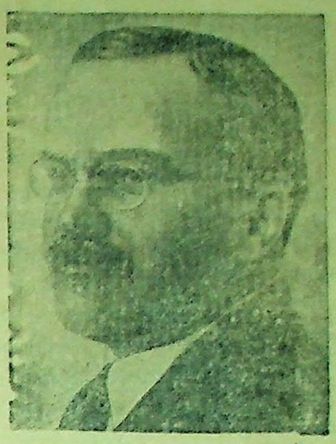

रूस के विदेश मन्त्री श्री मोलोटोव ने भारत सरकार से राजनैतिक सम्बन्ध कायम करना स्वीकार कर लिया है।

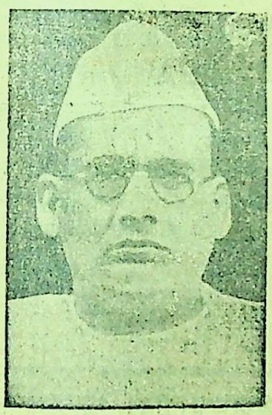

श्री श्री कृष्ण सिन्हा ने बिहार में साम्प्रदायिक स्थिति पर काबू पा लिया है।

मिश्र के बादशाह शाह फारुक ने ब्रिटेन से शीघ्र संधि होने की आशा प्रकट की है।

श्री गिरिजाशंकर वाजपेयी—अमेरिका में भारत के कार्यवाही राजदूत नियत हुए हैं।

डासना की ट्रेन लूट मार के बाद हिन्दू यात्री अपना सामान ढोकर जाते हुए।

डासना की लूट मार के बाद निराश्रित हिन्दू यात्री सहायता की प्रतीक्षा में।

साम्प्रदायिक उपद्रवों का प्रारम्भ कैसे हुआ ?

[पं जवाहरलाल नेहरू द्वारा विवेचना]

पं० जवाहरलाल नेहरू ने केन्द्रीय असेम्बली में श्री मदनधारीसिंह (कांग्रेस) तथा श्री अब्दुर्रहमान सिद्दीकी (लीगी) के स्वल्प सूचनावाले प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा—

केन्द्रीय सरकार की असमर्थता

[illegible] हैं कि मौजूदा विधान के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार प्रान्तीय आजादी में दखल नहीं दे सकती। दखल देनेका अधिकार केवल गवर्नर-जनरल को ही है। फिर भी अन्तःकालीन सरकार के सदस्योंने अपने उच्च पद को एवं जनता की उनकी ओर लगी आशाओं को देखते हुए बंगाल व बिहार अथवा देश में कहीं भी अन्यत्र साम्प्रदायिक उपद्रवों को शान्त करने में मदद दी है और पदग्रहण करने के बाद से ही वह इस दिशा में प्रयत्नशील। सरकार अपने कर्त्तव्य के प्रति सजग है और देश पर छाई इस विपत्ति की घटा को दूर करने के लिए उत्सुक रही है। जनता में हमारी निष्क्रियता की बड़ी आलोचना हुई है किन्तु निश्चय ही हम इन मामलों में सार्वजनिक रूप से कुछ नहीं कर सकते अतः इन तथ्यों के जान लेने पर इस आलोचना की अनुपयुक्तता स्वयं सिद्ध हो जायगी।

उपद्रव शृङ्खला का जन्म

"कुछ घटनाओं ने जिन्हें हमारे सदस्य जानते हैं, कलकत्ता के महान नर-हत्याकाण्ड को जन्म दिया। इसके बाद पूर्वी बंगाल व नोआखाली में महान नर-संहार व उपद्रव हुए और उनके परिणाम स्वरूप बिहार में भी भयानक घटनाएं घटीं। और अब बिहार की घटनाओं के परिणामस्वरूप अन्यत्र भी हिंसा और उपद्रव हो रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि नरहत्या व नृशंसता की होड़ चल रही है किन्तु यदि इसे रोका नहीं गया तो हमारे देश का निकट भविष्य बड़ा अन्धकार पूर्ण हो जायगा। किन्तु इसे रोका जा सकता है, इसमें मुझे तनिक भी सन्देह नहीं। किन्तु इसके लिए फौजी सहायता नहीं, बल्कि जिम्मेवार तथा जनता पर प्रभाव रखने वाले लोगों के प्रयत्न काम में लाये जाने चाहिए। यह स्पष्ट समझ लिया जाना चाहिये कि हम हिंसा व घृणा के तरीकों से किसी भी मसले को हल नहीं कर सकते। बिहार में मैंने देखा है कि कलकत्ता के महा नर-हत्याकांड में बिहारियों की भारी प्राण-हानि हुई और वहां से भाग कर बिहारी लोगों ने बिहार के गांवों में उस हत्या-काण्ड की कहानियां सुनाईं जिसे [illegible] हो गयी इसी बीच नोआखाली और पूर्वी बंगाल की घटनाएं सुन पड़ीं। इन घटनाओं ने, खासकर स्त्रियों के अपहरण, बलात परिवर्तन सामान्य बलात्कार आदि की घटनाओं ने आम जनता को क्रोध से भड़का दिया। कुछ समय तक उन्होंने केन्द्रीय सरकार पर संरक्षण व सहायता की आशा लगाई, किन्तु जब उनकी वह आशा पूरी नहीं हुई, तो वह और भी बिगड़ गए और उन्होंने अंतःकालीन सरकार की कड़ी आलोचना की। इसके अलावा बिहार में और भी कुछ घटनाएं घटीं, जिन्होंने लोगों को भड़का दिया, जिससे बिहार प्रान्त में भारी रक्तपात प्रारम्भ हो गया। किन्तु यह सामूहिक रक्तपात केवल एक सप्ताह तक जारी रहा। जिस प्रकार वह शुरू हुआ था, उसी तरह वह एकाएक शान्त भी हो गया। इस शान्ति स्थापना में महात्मा गांधी के प्रस्तावित उपवास ने भी बड़ा प्रभाव डाला।

बिहार में कितने व्यक्ति हताहत हुए यह ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता किन्तु पत्रों में जो आंकड़े प्रकाशित हुए हैं वे सब अतिरंजित व अतिशयोक्तिपूर्ण हैं क्योंकि इनका आधार शरणार्थियों के बयान हैं जो कि अपना मानसिक सन्तुलन खो चुके हैं।

जहां तक पूर्वी बंगाल का ताल्लुक है, जनता की रक्षा एवं उनकी सहायता की जिम्मेवारी सरकार पर है, इसलिए मुझे आशा है कि बंगाल सरकार जनता को उचित संरक्षण देने व उनकी सहायता का उत्तरदायित्व निभायेगी।

बिहार में एक सप्ताह के प्रयत्नों से शान्ति स्थापित हो गई है

लोग अब अपने परित्यक्त घरों को लौट जाना चाहते हैं, यही इस बात का प्रमाण है कि अब वहां स्थिति सामान्य हो गयी है। इन गृह-भ्रष्ट लोगों की सहायता की समस्या सब से बड़ी समस्या है। बिहार सरकार ने इन लोगों को रहने के लिए घर, खाने को अन्न और पहनने को वस्त्र तथा इलाज के लिए डाक्टरी सहायता मुहय्या करने का दायित्व अपने ऊपर ले लिया है।

पूर्वी बंगाल से विश्वस्त सूत्रों से जो बयान मिले हैं उन्होंने अपहरण की गयी तथा बलात विधर्मी बनाई गई स्त्रियों को फिर से यथास्थान लौटाने की महत्व-पूर्ण समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है। यह समस्या केवल अपने आपमें ही महत्वपूर्ण नहीं, बल्कि इसकी समस्त देश में प्रतिक्रिया भी होगी। इसलिए यह आवश्यक है कि उन स्त्रियों को फिर अपने पतियों, पिताओं व भाइयों को लौटा देने के लिए शीघ्र व प्रत्येक सम्भव कदम उठाया जाना चाहिए। ऐसा हो जाने के बाद ही पूर्वी बंगाल में गृहभ्रष्ट लोगों को फिर से बसाने का काम प्रारम्भ हो सकता है।

हाल ही में दिल्ली के इर्द-गिर्द व समीप जो घटनाएं घटी हैं, वे अभी लोगों के दिमागों में ताजा होनी चाहिएं। इसलिए यह मौका है, जबकि हमें देश-भर में इस दुखपूर्ण घटनाक्रम को रोक देना चाहिए और मुझे उम्मीद है कि प्रत्येक समझदार भारतीय, चाहे उसकी राजनैतिक विचारधारा कुछ भी हो, इस महत्वपूर्ण व आवश्यक काम में सहयोग देगा।

———

कोहेनूर हीरा वापस हो!

भारत के नोबल प्राइज विजेता वैज्ञानिक सर सी० वी० रमन ने कोलम्बिया में एक भाषण देते हुए कहा कि भारतवर्ष उस समय तक स्वतंत्र नहीं माना जा सकता है जब तक मिट्रेन वाले उसका चुराया हुआ कोहेनूर हीरा वापस न कर दें।

कोहेनूर हीरा इस समय लन्दन के घंटाघर में बादशाह के ताज के अन्य हीरों के साथ रक्खा हुआ है। सन् १७४९ में नादिरशाह दुर्रानी ने देहली की लूट में इस हीरे को पाया था और इस हीरे की ज्योति से चकाचौंध होकर उसने ही इसका नाम कोहेनूर—'ज्योति का पर्वत' रक्खा था। इस हीरे की कथा अन्य हीरों से कहीं अधिक ही अद्भुत है। गोलकुंडा की हीरे की खानों से इसका जन्म हुआ। ईसा से ३०० वर्ष महाभारत के युद्ध में भी इसका विवरण आता है, जब यह एक योद्धा के ताज पर सुशोभित था। इसके पश्चात ईरानी कहानियों से ज्ञात होता है कि यह तुरान के बादशाह अफरेसियाब के खजाने की बहुमूल्य वस्तु रहा। इस हीरे का लिखित इतिहास सन् १३०४ से प्रारम्भ होता है, जब अलाउद्दीन खिलजी ने मालवा के राजा से इसका दोना। फिर करीब २२२ वर्ष तक इस हीरे का इतिहास अंधकार-मय रहता है, लेकिन इसका पता हमें फिर १५१६ ई० चलता है, जब परचित अफगान शाह इब्राहीम लोदी ने मुगल शहंशाह बाबर को यह हीरा भेंट किया।

लेडी बरटन का कहना है कि इस हीरे के अधिकारी के ऊपर सदैव आपत्ति का पहाड़ टूटा। अलाउद्दीन खिलजी का कत्ल हुआ, इब्राहीम लोदी मुगलों द्वारा हटाया गया और मुगल सल्तनत का भी खात्मा हो गया। नादिरशाह दुर्रानी जो इसको लूट में ले गया था उसका भी कत्ल हुआ। सिक्ख सल्तनत भी इसी हीरे के कारण समाप्त हो गई।

अब यह देखना है कि मिट्रेन, जो इस समय हीने बैठे हैं, उसके ऊपर कैसी बीतती है। भला होगा यदि भारतवर्ष का हीरा उसी को वापस हो जाय।

— रामकुमार अग्रवाल

———

राष्ट्रीय आर्थिक दृष्टि से प्रस्तुत उपयोगी गो-साहित्य

मेरठ कांग्रेस की गो-प्रदर्शनी में मिलने वाली विशेष पुस्तकें

१. गो-सेवा— ले० महात्मा गांधी जी ।॥)
२. भूखे भारत को पेट भर तथा अच्छा भोजन मिलने के उपाय— देश रत्न डा० राजेन्द्रप्रसाद जी ३
३. गाय ही क्यों ? ले० हरदेव सहाय जी भूमिका ले० डा० राजेन्द्रप्रसाद जी १)
४. वृषभ सुधार— ले० श्री पानेकर जी ।=)
५. चमड़े के लिये पशुओं का भयंकर वध— ले० श्री कन्हैयालाल जी भिन्डा ।=)
६. दूध की नदी— भूमिका ले० महात्मा खुशहालचन्द जी ।=)
७. गो-वध का हेतु : वनस्पति घी की खराबी तथा गायों पर बुरा प्रभाव म० गांधी जी और देश के मान्य नेता तथा विशेषज्ञों की कलम से ।=)
८. गो संकट-निवारण : २५ हजार छप चुकी हैं— पांचमी बार =)
९. गायों का इलाज सस्ती तथा साधारण चीजों से चिकित्सा =)
१०. गो-रक्षा की आवश्यकता और उन्नति के उपाय ।)
११. गाय या भैंस ? ले० हरदेवसहाय ।)
१२. गाय ही क्यों (संक्षिप्त उर्दू संस्करण) ले० ला० हरदेवसहाय जी ।=)
१३. खुशहाली या बदहाली— भूमिका ले० सरदार बहादुर सर दातारसिंहजी =॥)
१४. पशुओं का इलाज ले० श्री परमेश्वरीप्रसाद जी ॥)
१५. चारा दाना =)

पुस्तकें मिलने का स्थाई पता:—

हरदेवसहाय संयोजक गो सेवा-संघ : पंजाब शाखा हिसार।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

'वीर अर्जुन' की

पूर्वी बंगाल सहायक निधि

नोआखाली व पूर्वी बंगाल के अन्य स्थानों में मुस्लिमलंगी गुण्डाशाही के शिकार हजारों हिन्दू नर-नारियों के परिवारों से सहानुभूति प्रदर्शन करने और उनकी कुछ सहायता करने के लिए 'वीर अर्जुन' ने एक सहायक निधि खोली है, जिसमें कुछ ही दिन में ६०००) जमा हो गया है। अपनी इस निधि में अपना भाग भेजिये।

—सम्पादक

★ वीर ★
अर्जुन
अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्
सोमवार ३ मार्गशीर्ष सम्वत् २००३

ब्रिटिश सरकार और हमारा कर्तव्य

'वीर अर्जुन' के गत अङ्क में देश की सांप्रदायिक समस्या की चर्चा करते हुए हमने यह अनुरोध किया था कि देश भर में फैलने वाले दंगों की रोक-थाम के लिए यह आवश्यक है कि उसके मूल कारण और उद्गम की खोज की जाय। हमें हर्ष है कि पं० जवाहरलाल नेहरू ने केन्द्रीय असेम्बली में सांप्रदायिक समस्या के सम्बन्ध में जो भाषण दिया है, उसमें उन्होंने सांप्रदायिक दंगों की और विशेष कर बिहार के दंगे के वास्तविक कारण की तलाश करने का सुन्दर प्रयत्न किया है। कलकत्ते के अमानुष नरमेध की चर्चा करते हुए उन्होंने असेम्बली को यह बताया कि उसमें बहुत से बिहारी मारे गये थे। उनके रिश्तेदार तथा बहुत से शरणार्थी वापस आये और उन्होंने बिहार के देहातों में कलकत्ता-नरमेध की कहानियां सुनाईं।" शायद तब भी बिहार की जनता अपने क्रोध को पी जाती, लेकिन "इसके बाद ही नोआखाली तथा पूर्वी बंगाल के समाचार मिले। उपर्युक्त कहानियों तथा विशेष कर स्त्रियों के अपहरण, बलात्कार तथा बलात् विवाह के समाचारों ने जनता की क्रोधाग्नि में घी का काम दिया।" इस समय तक भी उसमें बदला लेने की भावना तीव्र रूप से पैदा नहीं हुई और "वह कुछ समय तक केन्द्रीय सरकार की ओर देखती रही। उसे आशा थी कि सरकार सहायता व संरक्षण देगी। जब उन्होंने ऐसी कोई मदद या किसी ऐसे संरक्षण को मिलता न देखा तो वह क्रोधित हो उठी और इस क्रोध ने गया तथा मुंगेर जिले में जन विद्रोह का रूप धारण कर लिया।"

करीब-करीब यही कारण-शृंखला थी, जिसकी ओर हमने गतांक में पाठकों का ध्यान खींचा था। वस्तुतः केन्द्रीय सरकार की अकर्मण्यता और असमर्थता की स्वाभाविक प्रतिक्रिया बिहार के दंगों के रूप में प्रकट हुई है। इसलिए जब तक कलकत्ता और नोआखाली में होने वाली दुर्घटना के सम्बन्ध में सरकार स्वयं कोई कठोर कार्रवाई नहीं करती, तब तक जनता को धैर्य नहीं मिलेगा। इस सम्बन्ध में प्रायः सभी राष्ट्रीय पत्रों ने केन्द्रीय सरकार को अधिक दृढ़ नीति अपनाने का परामर्श दिया है। हम भी इस सम्बन्ध में अनेक बार अपने विचार व्यक्त कर चुके हैं। अब पहली बार पं० नेहरू ने बाकायदा सरकारी तौर से इस प्रकार की आलोचनाओं का उत्तर दिया है। वे कहते हैं कि "मौजूदा विधान के अन्तर्गत भारत सरकार प्रांतीय स्वशासन में हस्तक्षेप नहीं कर सकती है। यदि कोई हस्तक्षेप कर सकता है, तो वह गवर्नर जनरल है, न कि सपरिषद् गवर्नर जनरल। इसलिए हमारे अनेक प्रयत्नों के बावजूद ऐसा जान पड़ता था कि हम अकर्मण्य बैठे हैं और इसके लिए जनता ने हमारी बहुत आलोचना की। लेकिन यह तो अनिवार्य था कि हम इस मामले में खुले तौर से कार्य नहीं कर सकते थे।" इन शब्दों में पं० नेहरू ने वर्तमान सरकार की स्थिति का, जितना वह कर सकते थे, स्पष्टीकरण कर दिया है।

इस स्पष्टीकरण का अर्थ यह है कि लार्ड वैवल ने गवर्नर जनरल की स्थिति में नयी अन्तःकालीन सरकार को सांप्रदायिक स्थिति शान्त करने में किसी तरह का सहयोग नहीं दिया। उनका स्पष्ट कर्तव्य था कि वे अन्तःकालीन सरकार को देश में शांति स्थापित करने में पूर्ण सहयोग देते और कलकत्ता काण्ड होते ही वे बंगाल की लीगी सरकार को बरखास्त कर देते। लेकिन ऐसा करना तो दूर, वे अपने साथ मुस्लिम लीग को लेने के लिए इतने आतुर थे कि कांग्रेस की स्थिति की और उसकी आवश्यक शर्तों की उन्होंने उपेक्षा की। लीग के साथ वायसराय कितनी अधिक सहानुभूति रखते हैं, इसका एक स्पष्ट प्रमाण तब मिला; जब कि उन्होंने अन्तःकालीन सरकार से बिना कोई बातचीत किये ही बेगम शाहनवाज और मियां अस्पहानी को अमेरिका का पासपोर्ट दिलवा दिया। यह स्पष्टतः विदेशों में बढ़ते हुए कांग्रेस के प्रभाव को नष्ट करने के लिए सरकार की एक चाल थी। जो अधिकारी इन छोटी सी बातों में भी अन्तःकालीन सरकार को सहयोग नहीं दे सकता, उससे यह कैसे आशा की जा सकती है कि वह सांप्रदायिक स्थिति को शान्त करने में अन्तःकालीन सरकार को सहयोग देगा?

यह स्थिति है, जिसमें अन्तःकालीन सरकार के राष्ट्रीय नेताओं ने कार्य करना है और हमें जिस स्थिति से गुजरना है। इसलिए आज हमें पं० नेहरू और सरदार पटेल की कटोर आलोचना छोड़ कर शांति-स्थापन के कार्य में सहयोग देने की नीति को गम्भीरतापूर्वक अपनाना होगा। हमें यह स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि देश में उपस्थित तीसरी शक्ति को हमारी सांप्रदायिक शान्ति से कोई विशेष सहानुभूति नहीं है। वह आज भी हमारे पारस्परिक संघर्ष का लाभ उठाने का अवसर कभी नहीं चूकेगी। देश की सरकारी मशीनरी पर अब तक लोकप्रिय सरकारों का नियंत्रण नहीं हो सका है। सरदार पटेल इस बात के लिए अत्यन्त प्रयत्नशील हैं कि इण्डियन सिविल सर्विस और इण्डियन पुलिस भारत मन्त्री के नियन्त्रण से निकल कर लोकप्रिय सरकारों के हाथ में आ जायं। जब तक यह नहीं होता, तब तक हमें यह समझ लेना चाहिए कि सरकारी नौकरों के बल पर हम आपस में शान्ति स्थापित नहीं कर सकते, इसके लिए हमें स्वयं ही प्रयत्न करना होगा।

आज जनरल स्मट्स भारत में होने वाले साम्प्रदायिक उपद्रवों की ओर व्यंग्य करते हैं और इसमें सन्देह नहीं कि आज की साम्प्रदायिक स्थिति भारत के लिए अत्यन्त लज्जाजनक है। हम यदि आज के अमानुष नरमेध को शान्त नहीं कर सकते, तो हम स्वराज्य से फिर पचास वर्ष दूर हो जावेंगे और तब भारत के शत्रुओं को साम्प्रदायिक वैमनस्य और भी बढ़ाने का अवसर मिल जायगा। इसलिये प्रत्येक राष्ट्रीय देशभक्त का यह कर्तव्य है कि वह दंगों को शान्त करने का गम्भीर प्रयत्न अवश्य करें।

जहां जनता का यह कर्तव्य है, वहां अन्तःकालीन सरकार से भी हम यथासम्भव दृढ़ नीति पर अमल करने का अनुरोध करेंगे। भारत सरकार के गृह मन्त्री सरदार पटेल ने प्रेस प्रतिनिधियों से बातचीत करते हुए कुछ दृढ़ता दिखाने का आश्वासन दिया था। यदि वे इस नीति पर दृढ़तापूर्वक अमल करेंगे, तो बहुत लाभ हो सकता है। मि० जिन्ना और उनके पत्र 'डान' की ओर हमने गतांक में संकेत किया था। अब भी मि० जिन्ना ने जो बयान दिया है, उसमें पाकिस्तान की प्राप्ति तक दंगों की सम्भावना को उन्होंने उत्साहित किया है। यह स्पष्ट शरारत है और दंगइयों को भड़काने की चाल है। उन्होंने अन्तःकालीन सरकार के लीगी सदस्यों को भी सहयोग की कोई प्रेरणा नहीं दी, इसके विपरीत अब भी वे 'लकवेया' के रूप में लीगी सदस्यों को देखना चाहते हैं। यदि ब्रिटिश सरकार और उसके सर्वोच्च पदाधिकारी वायसराय सचमुच भारत में साम्प्रदायिक शान्ति चाहते हैं, तो उन्हें लीग के सम्बन्ध में अपनी नीति पर पुनर्विचार करना होगा। लेकिन यदि वे उतने संजीदा नहीं है, तो आज प्रत्येक देशभक्त की जिम्मेवारी और भी बढ़ जाती है और इसके लिए प्रत्येक नागरिक को अपने कर्तव्य के पालन में अधिक सतर्क हो जाना चाहिए।

———

लीगी सरकार के शासन में लूट

आसाम असेम्बली द्वारा सरकारी खातों की जांच के लिए नियुक्त कमेटी ने भूतपूर्व लीगी प्रधान मंत्री सर सादुल्ला के शासनकाल में भयंकर भ्रष्टाचार का पता चलाया है। कमेटी को ज्ञात हुआ है कि सप्लाई वस्त्र नियंत्रण, यातायात आदि व्यावसायिक विभागों के परिचालन में लीगी शासनकाल में प्रांतीय खजाने को करोड़ों रुपये की हानि हुई। १९४५-४६ में सरकारी स्टाक में ९,३८,१७९ मन अन्न दिखाया गया था, किन्तु तोले जाने पर केवल ६ लाख २ हजार मन ही निकला। सवा तीन लाख मन से अधिक अन्न कहां गया, इसका कोई पता नहीं है। एक व्यावसायिक फर्म को, जिसके भागीदारों में सर सादुल्ला का एक निकट संबंधी भी था, प्रान्तीय खजाने से ७ लाख रुपया एडवांस का दिया गया, पर सरकार का ६० लाख का जो स्टाक उसके पास पड़ा था, उसकी कोई खबर न ली गई। इसी फर्म को असेम्बली ने कुछ वसूली-कार्यों में २ आना प्रति रुपया कमीशन देने का निश्चय किया था; किन्तु सर सादुल्ला ने बिना असेम्बली की अनुमति प्राप्त किये उसका कमीशन ५० प्रतिशत बढ़ा दिया। हवाई हमले से हिफाजत के काम पर १ करोड़ १२ लाख रु० व्यय किया गया, किन्तु इसका कोई उचित हिसाब नहीं है। यातायात विभाग में ११७ नयी लारियों के लिए लिख दिया गया कि वे टूट गयीं, पर उनकी रद्दी तक का हिसाब नहीं मिलता। ये संख्याएं और तथ्य इतने अधिक स्पष्ट हैं कि आसाम की भूतपूर्व लीगी सरकार के शासन की इससे अधिक कठोर आलोचना नहीं की जा सकती। जहां स्वयं बड़े-बड़े अधिकारी भ्रष्टाचार में सम्मिलित हों, वहां किसी तरह के सुधार की आशा कैसे की जा सकती है?

———

उपद्रवों की लहर

इस सप्ताह दिल्ली में भी उपद्रव पर्याप्त उग्ररूप में फूट पड़ा। सरकारी अनुमानों के अनुसार अब तक हताहतों की संख्या ८० के लगभग है। यह उपद्रव पुल बंगश, हिंदू बाड़ाराव, हौजकाजी थाना में अधिक तीव्र रहा। सब्जीमण्डी का क्षेत्र अपेक्षाकृत बहुत शान्त रहा, क्योंकि इस क्षेत्र के पुलिस अधिकारी बहुत सतर्क थे।

जब कि सम्पूर्ण देश पाकिस्तानियों द्वारा लगाई हुई आग में जल रहा है, मियां जिन्ना अब भी यह कह रहे हैं कि इस संघर्ष को समाप्त करने का एकमात्र उपाय यह है कि भारत को दो भागों में बांट दिया जाय। 'यदि भारत के विभाजन पर कांग्रेस और लीग सहमत न हुए तो आगामी ६ मास या एक वर्ष में क्या होगा?' प्रश्न का उत्तर देते हुए मियां जिन्ना ने कहा:— जो होगा वह आप देख रहे हैं और जो हो रहा है वह भी आप देख रहे हैं।

पटना में अ० भा० हिंदू महासभा के प्रधान डा० श्यामप्रसाद मुखोपाध्याय ने भाषण करते हुए कहा है: 'बंगाल से प्रारम्भ हुए देशव्यापी उपद्रव भारतवर्ष के सार्वजनिक जीवन में केवल परिवर्तन-कालिक वस्तु नहीं है, बल्कि देश में हिन्दुओं की सत्ता के मूल पर ही कुठाराघात है। यह संघर्ष कठोर होगा और तब तक जारी रहेगा जब तक मुस्लिमलीग पाकिस्तान का प्रचार करती रहेगी। यह प्रश्न केवल बंगाली हिंदुओं की रक्षा का नहीं है, अपितु वास्तविक समस्या हिंदुस्तान की सारी जनता की रक्षा की है, क्योंकि मुस्लिमलीग की योजना हिन्दुओं की बड़ी पैमाने पर हत्या करने की नहीं, धर्म परिवर्तन कर लेने की है तथा जो धर्म-परिवर्तन के लिये तैयार नहीं होंगे, उन्हें मार डाला जायेगा।

अन्तःकालिक सरकार के सदस्यों ने बंगाल में घटी घटनाओं के प्रति तो उपेक्षा दिखाई तथा बिहार में जरा सी घटना शुरू होते ही यहां के लिये दौड़ पड़ने का अत्युत्साह दिखाया। इससे प्रगट होता है कि न केवल मुस्लिमलीग और ब्रिटिश सरकार ही हिन्दुओं को कुचलने पर तुले हुए हैं बल्कि कांग्रेस भी इस मामले में अपने कृत्यों द्वारा अपने आप को उनका सहायक सिद्ध कर रही है।

बंगाल, बिहार तथा अन्य स्थानों में जो विनाश और दुर्घटनाएं हुई हैं उनकी कौन निन्दा नहीं करेगा? बिहार की दुर्घटनाएं जिन्हें मुस्लिम पत्रों ने बहुत अतिरंजित रूप दे दिया है-

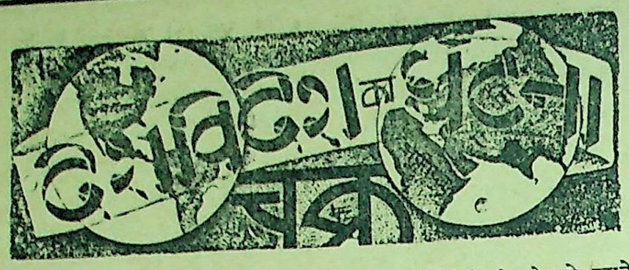

प्रथमतः तो कलकत्ता में हजारों बिहारियों द्वारा उठाई गई हानियों, दूसरे, मुसलमानों द्वारा हिन्दू लड़कियों को उड़ाये जाने से उत्पन्न तनाव, तीसरे, नोआखाली और चांदपुर में किये गये अभूतपूर्व काण्डों और चौथे, बिहार के कुछ मुसलमानों द्वारा की गई आक्रमणात्मक तैयारियों के कारण हुईं।

बिहार में सेनाओं के अनाचार

पटना के 'राष्ट्रवाणी' ने अपनी सम्पादकीय टिप्पणी में यह शिकायत की है कि देहातों में नियुक्त सेनाओं के कारण जनता को बड़ा कष्ट उठाना पड़ रहा है। यह बताया जाता है कि इन्होंने कई स्थानों पर लोगों के साथ दुर्व्यवहार और छेड़खानियां की हैं। बलात्कार तथा लूटपाट के भी बहुतेरे समाचार प्राप्त हुए हैं।

नोआखाली से आतंक के समाचार अब भी आ रहे हैं। 'स्टेट्समैन' के सम्पादकीय विभाग के एक प्रतिनिधि का कहना है कि चांदपुर सबडिविजन में विनाश-कार्य का सही चित्रण कर सकना सम्भव नहीं है। पूर्वी बंगाल की घटनाओं की विस्तृत जांच के लिये कम से कम ५० उच्च सरकारी अधिकारियों को छः मास के लिये नियुक्त करना पड़ेगा।

गत सप्ताह गढ़मुक्तेश्वर में गंगाजी के मेले पर भी दंगा हो गया जिसमें लगभग ५० मनुष्य हताहत हुए। गढ़ मुक्तेश्वर से दिल्ली आने वाली एक गाड़ी पर गुण्डों ने आक्रमण कर दिया तथा बहुत से मनुष्यों को मार डाला और सम्पत्ति को लूट लिया। इसी प्रकार मेले से लौटती हुई बैलगाड़ियों पर आक्रमण करके ४५ व्यक्ति जीवित जला दिये गये— इनमें स्त्रियां और बच्चे भी थे। मेरठ में भी उपद्रव से बहुतेरे व्यक्तियों के मारे जाने के समाचार हैं।

ब्रिटिश किंग

भारत के सम्राट नहीं रहेंगे!

भारत में राजनैतिक परिवर्तनों के फलस्वरूप ब्रिटिश किंग के साथ भारत के सम्राट का जो विशेषण लगा हुआ है; उसके परित्याग पर विचार किया जाने लगा है। यदि ऐसा निर्णय किया गया तो भारत के सिक्कों पर जो ब्रिटिश सम्राट का चित्रादि अंकित रहता है, उसे भी टकसाली अधिकारियों की ओर से हटाने का निश्चय किया जा सकता है।

अभी तक ब्रिटिश किंग प्रतिनिधि वायसराय (उप-सम्राट) सर्वभौम सत्ता और राजनीतिक विभाग के सर्वोच्च सत्ताधारी माने जाते थे। परन्तु अब उन्हें राजनैतिक रूप से केवल वैधानिक प्रमुख ही बना रहना पड़ेगा। ऐसी अवस्था में राजनीतिक विभाग का नियन्त्रण वायसराय के हाथ से निकल कर नव नियुक्त दिल्ली स्थित ब्रिटिश हाई कमिश्नर के हाथ में चले जाने की सम्भावना है। वैधानिक रूप से राजनीतिक विभाग के अधिकारीगण सम्राट की सरकार के अन्तर्गत नहीं वरन् सपरिषद् गवर्नर जनरल के मातहत होनी चाहिये।

ट्रीस्टे का भविष्य

विदेशमन्त्री सम्मेलन में ट्रीस्ट विषयक चर्चा में फ्रांस द्वारा पेश किये गये प्रस्ताव पर सोवियत विदेशमन्त्री म० मोलोतोव ने १६ संशोधन पेश किये हैं। इन संशोधनों का सार मुख्यतः इस प्रकार है—

(१) ट्रीस्ट का भविष्य विदेशमन्त्री सम्मेलन द्वारा निर्धारित किया जाय न कि सुरक्षा कौंसिल द्वारा।

(२) ट्रीस्ट सरकार के अधिकार कम किये जांय।

(३) विदेशी सेनाएं ट्रीस्ट से सन्धि के क्रियान्वित होने के ४ मास के भीतर हटा ली जांय।

मिश्र-ब्रिटेन चर्चा

वफ्द दल के अधिकृत पत्र 'अल-मिस्त्री' ने ब्रिटेन के विदेशमंत्री श्री अर्नेस्ट बेविन और मिस्त्र के प्रधान मन्त्री सिदकी पाशा के बीच एंग्लो-मिस्त्री सन्धि के सम्बन्ध में तथा कथित मसविदे को प्रकाशित किया है, जिसमें बताया गया है कि अंग्रेजी सेनायें काहिरा और सिकन्दरिया बन्दरगाह के क्षेत्र को मार्च सन् १९४७ तक और सारे मिस्त्र को १ सितम्बर १९४९ तक खाली कर देंगी।

मसविदे में सूडान के बारे में कहा गया कि दोनों देश, इंगलैंड और मिस्त्र की सूडान के प्रति यह नीति होगी कि मिस्त्र और सूडान दोनों ताज के नीचे रह कर सूडान की जनता को स्वशासन के लिये तैयार कर और उन्हें अपनी इच्छानुसार शासन स्थापित करने का अधिकार दें, जब तक उक्त उद्देश्य तक नहीं पहुंचे, सूडान की जनता से सलाह मशविरा किया जाय और सन् १८९९ की संधि तथा सन् १९३६ की संधि की धारा ११ कायम रहे।

दोनों देशों की एक संयुक्त सुरक्षा समिति की स्थापना की जायगी जो दोनों देशों को सुरक्षा सम्बन्धी मामलों पर सलाह देगी, समिति की बैठकें जब चाहे तब और मध्यपूर्व में आक्रमण की आशंका होने पर हुआ करेंगी।

यह संधि-पत्र के अनुसार २० वर्ष तक कायम रहेगी।

— हैदराबाद राज्य ने इनकम टैक्स लगाना स्वीकार कर लिया गया है।

— पश्चिमी राजपूताना, गुजरात, तथा काठियावाड़ की ५० छोटी रियासतों की कान्फ्रेन्स बम्बई में आरम्भ हो गई है, जिसमें वे विधान परिषद् के लिये एक गुट में मिल जाने के सम्बन्ध में विचार करेंगी।

— रेल के स्टेशनों पर, हिन्दू पानी 'मुसलमान पानी' आदि आवाज लगाना बन्द कर दिया गया है।

— श्री योगेन्द्रनाथ मंडल के चले आने पर बंगाल के लीगी मंत्रिमंडल में अंबेडकर दल के दो सदस्य लिये जायंगे। इनके नाम श्री योगेन्द्रनाथ राय और श्री द्वारकानाथ बरारी हैं। अंबेडकर दल वाले तो तीन स्थान चाहते थे पर सुहरावर्दी ने दो से अधिक देने से इनकार कर दिया।

— अमरीका ने ५० हजार टन अन्न भारत के लिये रख दिया है जो दिसम्बर के अन्त तक भारत आ जायगा।

— जनरल चियांगकाई शेक ने अपनी फौजों को गोली चलाना बन्द करने का आदेश दे दिया है। इस तरह चीन का गृहयुद्ध समाप्त होने की आशा है।

— अफगानिस्तान, आइसलैंड और स्वीडन मित्रराष्ट्र संघ के नये सदस्य स्वीकृत किये गये हैं।

— ब्रिटेन ने टर्की से भारत के लिये १॥ लाख टन अनाज खरीदना तय कर लिया है।

— यूनानी सूचना विभाग ने सूचित किया है कि यूनान-बल्गेरिया सीमा पर बल्गेरिया की सशस्त्र फौज का जमाव हो रहा है। अभी तक फौज की संख्या का अनुमान नहीं किया जा सका है। सैलोनिका के पत्रों में लिखा गया है कि बल्गेरिया में कम्यूनिस्ट आतंकवादियों ने स्वतन्त्र दलों के विरुद्ध जो जिहाद बोला था, उसके फलस्वरूप ६० हजार व्यक्ति मारे गये हैं और ४० हजार बन्दियों को श्रमिक-शिविर में भेज दिया है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

विविध चित्रावलि

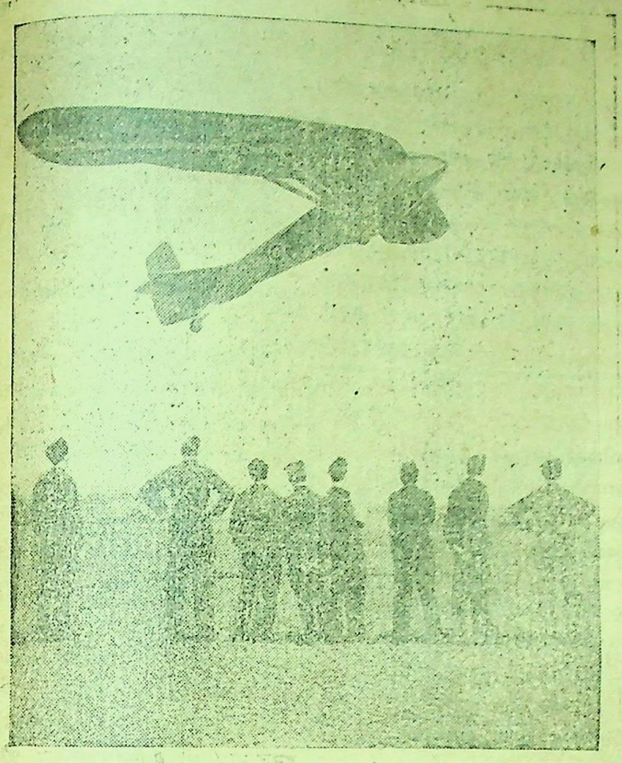

ब्रिटेन में नये प्रकार के ग्लाइडरों की परीक्षा की जा रही है

शेक्सपीयर के नाटक 'हेनरी पञ्चम' में श्रीमती रेनी एशर्सन 'राजकुमारी कैथेराइन' के रूप में तथा लारेन्स ओलिवियर 'किंग हेनरी' के रूप में।

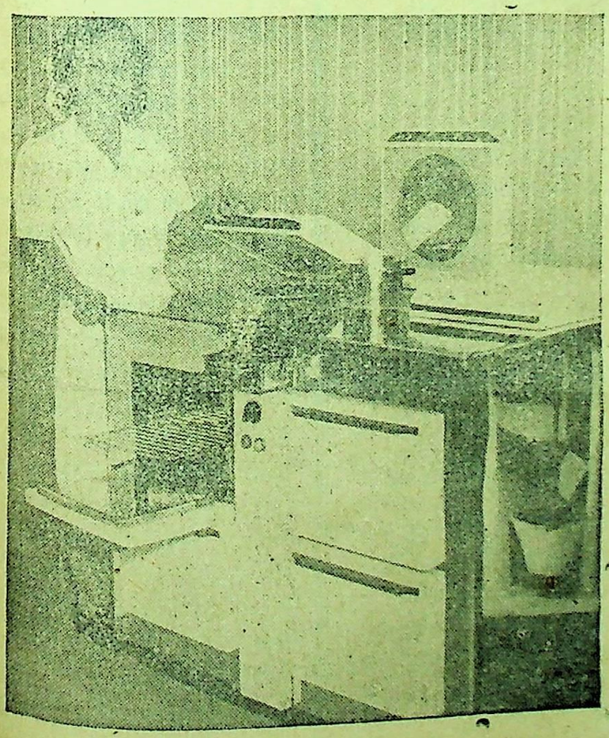

घर में विद्युत की सहायता से भोजन बनाने के उपकरण। चित्र में एक सुन्दर चौकोर बाक्स है जिसमें चार चूल्हे हैं तथा तैयार तवों का प्रबन्ध है।

ब्रिटेन में चीनी मिट्टी तथा अन्य प्रकार की मिट्टी से सुन्दर बर्तन बनाये जा रहे हैं

दिवंगत नेता मालवीय जी के प्रति राष्ट्र की श्रद्धांजलि

महामना मालवीयजी का देहान्त १२ नवम्बर ४६ को सायंकाल ४ बज कर १० मिनट पर बनारस में हो गया। इस वयोवृद्ध नेता के देहावसान पर समस्त राष्ट्र ने श्रद्धांजलियां अर्पित की हैं। इनमें से कुछ सम्मतियां निम्नलिखित हैं—

'हमारे देश का एक महापुरुष चल बसा। बनारस विश्वविद्यालय उनकी स्मृति का एक जीवित स्मारक है।'

— मौलाना आजाद

"वे मनुष्यों में देवता थे। आधुनिक भारतीय राष्ट्रीयता के निर्माण में उनका प्रकांड योग है भारतीय स्वतंत्रता के भवन के निर्माण में उन्होंने एक एक ईंट और पत्थर चुना है। उनके देहावसान के साथ ही भारतीय राजनीति का एक निश्चित युग समाप्त हो गया है। राजनीतिक क्षेत्र में मेरे बचपन की प्रारम्भिक स्मृतियां मालवीय जी के साथ जुड़ी हुई हैं। सम्भव है कुछ लोगों का उनसे मतभेद रहा हो पर ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जिसके सम्मान के वे पात्र न हों।

—जवाहरलाल नेहरू

'....वे भारत के प्रमुखतम नेता थे। उनका सम्पूर्ण जीवन निःस्वार्थ सेवा तथा कठोर कर्म में व्यतीत हुआ। वे सरकार के अत्यन्त निर्भीक आलोचक थे। इम्पीरियल लेजिस्लेटिव कौंसिल में एक चौथाई शती तक मेरा उनका साथ रहा और मैंने उनमें एक महान नागरिक के दर्शन किये।'

— मानिक जी दादा भाई

'निःसंदेह पं० मालवीयजी भारत के महानतम राजनीतिक नेताओं में से एक थे। उनकी मृत्यु से देश की भारी क्षति हुई है।'

— सर मुहम्मद उस्मान

'मालवीयजी के निधन से भारत सबसे महान बुजुर्ग से हाथ धो बैठा। उनका ब्राह्मण जीवन आदर्श और वे सनातन धर्म की अत्युत्तम परम्पराओं के प्रतीक थे।'

— सर अल्लादी कृष्णस्वामी अय्यर

'वे महान देश भक्त थे। भारत की स्वतन्त्रता के हित में उन्होंने महान सेवाएं की।'

— राजकुमारी अमृतकौर

"भारत का एक महान सपूत, जिसने करीब ६० वर्ष तक बड़े परिश्रम और लगन से मातृभूमि की सेवाएं की, चल बसा है। देश के लिए राजनीतिक कार्य के अलावा, शिक्षा-क्षेत्र में की गई उनकी सेवाओं को कभी नहीं भुलाया जा सकता। अपने महान कार्य के लिए वह सदैव स्मरण रहेंगे।'

— कुमार राजा सर मुथिया चेटियर

'पं० मालवीय जी की मृत्यु से देश का सबसे पुराना, योग्यतम तथा अविश्रांत कार्यकर्ता उठ गया है। अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक वे भारत और उसकी स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में सोचते रहे।

— म० गांधी

मालवीय जी भारतीय राष्ट्रवाद के प्रमुख निर्माताओं में से थे।

— एम० के० पाटिल

'भारत का सबसे अच्छा सपूत चल बसा। शिक्षा, राजनीति व धर्म में उनका स्थान अद्वितीय था।'

—डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी

'.... उस महान आत्मा के निधन पर समूचा राष्ट्र शोक संतप्त है। उनका नश्वर शरीर अपने अस्तित्व के अन्तिम क्षण तक कर्तव्य-स्थल पर डटा रहा। अपने राजनीतिक इतिहास के इस अत्यन्त संकटपूर्ण समय में इस संत के बुद्धिमत्तापूर्ण और प्रेरणात्मक पथ-प्रदर्शन से वंचित रहेगा। प्रभु दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।'

— ला० भीमसेन सच्चर

संक्षिप्त जीवन परिचय

आपका जन्म सन् १८६१ के दिसम्बर मास में एक दरिद्र परिवार में हुआ था; पर अपनी कुशाग्र बुद्धि एवं कठोर अध्यवसाय के परिणामस्वरूप विषम परिस्थितियों के बीच ही आपने बी० ए० तक शिक्षाग्रहण कर एक स्कूल में अध्यापकी कर ली। आपके सार्वजनिक जीवन का श्रीगणेश कांग्रेस के द्वितीय अधिवेशन से हुआ था। जबकि आपने अपनी ओजस्विकवक्तृत्व शक्ति से श्रोता समाज को चकित कर दिया। इसके बाद आप 'हिन्दुस्तान' और 'इंडियन यूनियन' का सम्पादन करते रहे। इस सम्पादन काल में ही आपने विभिन्न सभा-सोसइटियों में भाग लेते हुए कानून का अध्ययन किया और १८९१ में डिग्री प्राप्त कर ली। १८९३ में आप हाईकोर्ट के वकील बन गए। १९०२ से १९०९ तक आप प्रांतीय लेजिस्लेटिव कौंसिल के सदस्य रहे और इस बीच में आपने 'अभ्युदय' साप्ताहिक 'लीडर' तथा दैनिक 'मर्यादा' नामक पत्रों को जन्म दिया। १९०८ में आपने युक्तप्रांतीय राजनीतिक सम्मेलन की अध्यक्षता की। १९१९ में आप लाहौर कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। १९१७ में आपने होमरूल के आंदोलन के सिलसिले में सारे देश का दौरा किया। १९१८ में आप पुनः दिल्ली कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। १९१० से १९१९ तक आप इम्पीरियल लेजिस्लेटिव कौंसिल के सदस्य रहे, पर अंत में रालेट एक्ट के विरोध में आपने उससे स्तीफा दे दिया। १९१९ में आपने बनारस विश्वविद्यालय की स्थापना की। जीवन के अन्त समय तक आप उसके कुलपति रहे। १९२४ से १९३० तक आप लेजिस्लेटिव असेम्बली के सदस्य रहे; पर अंत में शाही तरजीह नीति के विरोध में उससे भी स्तीफा दे दिया। १९२४ में आपने 'हिन्दुस्तान टाइम्स' दिल्ली के प्रबन्ध का अपने हाथ में लिया और बाद में, बहुत समय तक उसके बोर्ड आफ डाइरेक्टस के अध्यक्ष पद पर आसीन रहे। १९३० के आंदोलन में आप दो बार जेल गए। १९३१ में आपने द्वितीय गोलमेज कांफ्रेंस में भाग लिया। १९३४ में आपने साम्प्रदायिक निर्णय के विषय में कांग्रेस में पार्लमेंट्री बोर्ड की उपेक्षा के कारण उससे स्तीफा दे दिया और नेशनलिस्ट पार्टी का संगठन किया। १९३६ में फैजपुर कांग्रेस के अधिवेशन पर आपने एक ऐतिहासिक भाषण देकर सक्रिय राजनैतिक जीवन से वृद्धावस्था के कारण छुट्टी ले ली। १९३८ में आपने कायाकल्प किया

(शेष पृष्ठ २१ पर)

नोआखाली के खण्डहर पर

अभी-अभी तृण तरुओं पर रो विदा हुई रजनीबाला
कवि, ऊषा के घर के पीछे धधक उठी फिर से ज्वाला।

जिसके सुन्दर विशद वृक्ष पर बहती अगणित धाराएं,
जिसे युगों से रही सीचती मानसून की मालाएं,
जिसकी सुषमा के वर्णन में कवियों के उपमान थके,
जिस धरती पर कवि रवीन्द्र ने मानवता के गान लिखे,
आज वहीं पर नर्तन करती दानवता अति विकराली,
कवि धू-धू कर जलते देखा, कलकत्ता, नोआखाली।

किसने इस सुन्दर प्रदेश पर सर्वनाश का रास रचा?
किसके इङ्गित पर यह नन्दनवन में सत्यानाश मचा?
ओ शासन के ठेकेदारों? जलता है बंगाल, उठो,
धनिक रंक, नर-नारी, बालक-वृद्ध-युवक-कंगाल, उठो।
है पुकारती सजल नयन से तुमको शस्यों की रानी,
मांग रहे हैं नोआखाली के खण्डहर तुम से पानी।

बोटी-बोटी कटी शवों की, कन्दुक कट-कट शीश बने,
कोमल शिशुओं के शोणित से दानवता के हाथ सने,
कवि में शक्ति नहीं वह उसकी करुणा को चित्रित करदे,
मध्ययुगों की बबरता को जो असीम लज्जित करदे।
नभ चुम्बी प्रासाद भूमि को चूम रहे, हा, क्षार हुए,
धू-धू करके जले खेत धानों के लाल अंगार हुए।

अभी धूम्र घुट रहा हृदय में, कानों में झङ्कार रही,
इस श्मसान के क्षार कणों में भीषणतम चीत्कार रही।
बंग देश का हृदय आज जल कर भीषण श्मसान हुआ,
नोआखाली के खण्डहर पर मानव का अपमान हुआ।
ओ मानवता के आधारो! जलता है बंगाल, उठो
धनिक-रंक नर-नारी, बालक-वृद्ध-युवक-कंगाल उठो।

तड़प-तड़प कर वृद्ध मर गए, अगणित नौनिहाल खोए,
इस नृशंसता की गोदी में कितने युवा, बाल सोए,
अपने उजड़े घर की स्मृति में कितने ही फुटपाथों पर—
जीवन के दिन शेष गिन रहे किस आशा से ठहर-ठहर,
लुटा सतीत्व अमित बहनों का, माताओं की लाज लुटी,
भस्म हो उठी क्षण भर में ही मानवता की राजकुटी।

— शरदेन्दु

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

रेडियो में एक साल — ३

[श्री चिरंजीत]

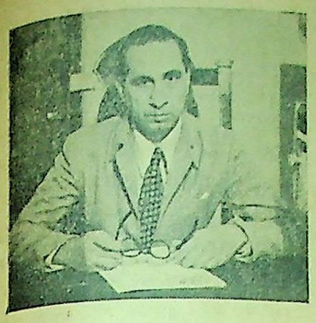

ए० एस० बुखारी

जो स्थिति भाषण और गीत विभागों में थी वही नाटक विभाग में थी। वहां भी उर्दू का बोलबाला था।

पर ज्ञात हुआ कि दिल्ली रेडियो स्टेशन का क्षेत्र दिल्ली प्रांत के अतिरिक्त अम्बाला, देहरादून, पहाड़ी रियासतें, मुरादाबाद, अलीगढ़, मथुरा, आगरा, राजपूताने और मध्यभारत की समस्त रियासतों तक फैला हुआ है। यह बताने की आवश्यकता नहीं कि उपर्युक्त प्रदेशों में हिन्दीभाषियों का ही बहुमत है। फिर क्या कारण है कि दिल्ली रेडियो से प्रसारित होने वाले प्रोग्रामों में हिन्दी का परिमाण मुश्किल से एक चौथाई भर हो। यह तय था कि रेडियो अधिकारी जानबूझ कर साम्प्रदायिकता के आवेश में वास्तविकता की उपेक्षा कर रहे हैं। मैंने दिल्ली स्टेशन के जोन में हिन्दी कवियों के बहुमत को आंकड़ों द्वारा प्रमाणित करने का निश्चय किया।

मैंने भारतीय सरकार के सूचना-विभाग द्वारा प्रकाशित सभी भाषाओं के पत्रों की संख्या और सर्कुलेशन के प्रामाणिक आंकड़ों के आधार पर एक वक्तव्य तैयार किया, जिसके अनुसार दिल्ली रेडियो स्टेशन के क्षेत्र में हिंदी भाषियों का भारी बहुमत स्पष्ट था। परन्तु मेरा वह स्टेटमेंट रास्ते में ही दबा लिया गया। परन्तु मैं हतोत्साहित नहीं होने वाला था। केवल संगीत विभाग के बारे में मैंने एक और स्टेटमेंट तैयार किया, जिसमें मैंने अधिकारियों से प्रार्थना की कि गजलों को इतना अधिक समय नहीं मिलना चाहिये और हिन्दी के कवियों के गीत भी उर्दू शायरों के गीतों की तरह ब्राडकास्ट होने चाहियें। रामकुमार वर्मा, बच्चन, विद्यावती कोकिल, नैपाली, सुमित्रा कुमारी आदि से तो कान्ट्रेक्ट है, इनके अतिरिक्त महादेवी वर्मा, निराला, पं० नरेन्द्र शर्मा, उदयशंकर भट्ट आदि अनेकों श्रेष्ठ गीतकारों से भी कान्ट्रेक्ट होने चाहियें। मेरा यह स्टेटमेंट भी रास्ते में ही गायब हो गया। मैंने अब भी साहस नहीं छोड़ा। मैंने एक लम्बा स्टेटमेंट तैयार किया जिसमें मैंने स्टेशन के सभी विभागों में हिन्दी को उचित स्थान दिलाने के लिए सुझाव पेश किये। स्टेशन के मुस्लिम लीगी अफसरों और कर्मचारियों की दृष्टि में मेरा यह बहुत बड़ा अपराध था। तुरन्त ही मुझे स्टेशन से निकलवाने के लिए एक षड़यन्त्र रचा गया। स्टेशन डाइरेक्टर के साथ मेरी चार घंटे तक बातचीत हुई। उसने मेरे कुछेक सुझावों को कार्यरूप में परिणत करने का वादा किया। उसके बाद हिंदी के भाषणों की संख्या बढ़ी। हिंदी कवियों के गीत ब्राडकास्ट होने लगे। हिन्दी के नाटक प्रसारित हुए। हिन्दी के प्रोग्रामों की उद्घोषणाएं हिन्दी में होने लगीं। स्त्रियों और बच्चों के प्रोग्राम में हिन्दी को कुछ और स्थान मिला परन्तु यह सिलसिला अधिक समय तक न चल सका। सुधारों की गति मन्द पड़ गई और कुछ महीनों बाद स्थिति वहीं की वहीं जा पहुंची।

रेडियो से असन्तोष के दो कारण गिनाये जाते हैं—एक तो रेडियो विभाग की भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय विचारधारा और हिन्दी भाषा विरोधी नीति और दूसरा, बुखारी गुट द्वारा अपने ही एक प्रान्तीय सम्बंधियों, इष्टमित्रों और पुछल्लों को रेडियो जैसी अखिल भारतीय संस्था में नियुक्त करने की तथा लाभ पहुंचाने की। पहले कारण पर मैं प्रकाश डाल चुका हूं। यहां दूसरे कारण की विस्तार से विवेचना करना चाहता हूं।

श्री रामसरन शर्मा अपनी पुस्तिका A. I. R. Exposed और श्री श्यामाचरण काला अपने कतिपय लेखों में मि० बुखारी और रेडियो विभाग के अन्य बड़े बड़े अफसरों और कर्मचारियों के पारस्परिक सम्बन्धों पर यथेष्ट प्रकाश डाल चुके हैं, और बता चुके हैं कि रेडियो विभाग में कौन किसका भाई है, कौन किसका बहनोई है, कौन किस का साला है, कौन किसका लड़का-लड़की या बहिन हैं इत्यादि। स्थानाभाव के कारण मैं वह सूची फिर से नहीं दुहराऊंगा। अपने गुट के लोगों और संगसम्बन्धियों को रेडियो विभाग में भरने की इस दुरभिसंधि की तह में साम्प्रदायिकता भाषा और संस्कृति संबंधी दुराग्रह के अतिरिक्त आत्मरक्षा की भावना भी काम करती रही है और कर रही है। यदि दूसरे दल, सम्प्रदाय या विचारों का कोई आदमी, भले ही वह मुसलमान हो, किसी तरह भीतर घुसा तो उसके लिए ऐसी स्थिति पैदा कर दी जाती है कि वह स्वयं नौकरी छोड़ने या भागने के लिए विवश हो जाता है। संस्कृत, हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी के प्रकाण्ड पण्डित डा० अख्तरहुसैन रायपुरी को आखिर रात-दिन इन्हीं झगड़ों के कारण से रेडियो-विभाग से नौकरी छोड़नी पड़ी थी। अभी थोड़ा ही समय हुआ 'शैदा' नाम के एक राष्ट्रीय विचारों के मुसलमान पठान अफसर को इन्हीं कारणों से दिल्ली से पेशावर को जाना पड़ा। सुनते हैं कि वह सरहदी गांधी के इष्ट मित्रों में से थे। वे मुझ से अक्सर कहा करते थे 'चिरंजीत साहब, दिल्ली रेडियो स्टेशन के गन्दे माहौल से मैं तंग आ गया हूं। मैं चूंकि नेशनलिस्ट मुसलमान हूं, इसलिये यहां हर कोई मुझ से चिढ़ा बैठा है।' स्टेशन के एक हिन्दू अफसर को हाल ही में डाके तब्दील कर दिया गया है — उस डाके शहर में जो साम्प्रदायिक दंगों के कारण आज हिंदुओं के लिये रौरव नरक बना हुआ है। कुछ साल हुए दिल्ली रेडियो स्टेशन पर एक विख्यात कवि और लेखक श्री हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय आर्टिस्ट थे। कुछ ही समय बाद उन्हें रेडियो को छोड़कर भाग जाना पड़ा। यहां की हिन्दी और हिन्दू विरोधी नीति के कारण ही कविवर गिरिजाकुमार माथुर को लखनऊ तब्दील करवानी पड़ी, श्यामचरण काल और ज्ञानस्वरूप भटनागर को त्यागपत्र देना पड़ा और संस्कृत और संगीत के पंडित श्री बी० एन० चतुर्वेदी को प्रोग्राम असिस्टेंटी से हाथ धोने पड़े। उधर संस्कृत और हिंदी के प्रकाशक पण्डित डा० यदुवंशी वैदेशिक ब्राडकास्ट विभाग के अंग्रेजी, जापानी और चीनी संगीत के सेक्शन में दिन बिता रहे हैं, जबकि इधर दिल्ली स्टेशन को हिंदी के ज्ञाता अफसरों की अत्यन्त आवश्यकता है।

अक्सर कहा जाता है कि रेडियो विभाग के लिये अफसरों और प्रोग्राम असिस्टेंटों को एक बोर्ड चुनता है। मैं अपने निजी अनुभव के आधार पर कह सकता हूं कि यह बोर्ड महज दिखावे की वस्तु होती है। इस बोर्ड में मि० बुखारी या उनके कोई लेफ्टीनेन्ट सर्वेसर्वा और निर्णायक होते हैं। अक्सर देखने में आया है कि रेडियो विभाग द्वारा नियुक्त बोर्ड एकाध अपवाद को छोड़कर इसी सत्तारूढ़ गुट के आदमियों को ही चुनता है और जब एक बार आदमी चुन लिया जाता है तो बाद में उसकी तरक्की अपने आप होती चली जाती है। मैं एक मुसलमान अफसर को जानता हूं जो इस गुट का विशेष रूप से कृपापात्र है। रेडियो में आने से पहले वह एक उर्दू पत्र में चालीस-पचास रुपये लेता था। बाद में वह साठ-सत्तर रुपये मासिक पर रेडियो विभाग में नौकर हो

लेखक

गया। आज अढ़ाई तीन साल के पश्चात वह असिस्टेंट स्टेशन डायरेक्टर बनने के स्वप्न देख रहा है जबकि उस से पहले के कमचरी आठ-आठ दस-दस साल से प्रोग्राम असिस्टेंट के मकाम्बल में ही एड़ियां रगड़ रहे हैं। तरक्की के ऐसे बहुत से उदाहरण इस 'हवाई' विभाग में मिल सकते हैं। हाल ही में एक एजुकेशनल स्कूल ब्राडकास्ट ए सुपरवाईजर रूप में ४००) मासिक पर नियुक्त हुआ है। यहां आने से पहले ये किसी चुंगी दफ्तर में थे। बताइये भला चुंगी के दफ्तर और स्कूल का आपस में क्या सम्बन्ध? संबंध केवल यह है कि वे एक उच्चाधिकारी के रिश्तेदार हैं। सुना है कि इन्हीं एक उच्चाधिकारी के एक और सम्बंधी दर्जियों सरीखे आदमियों के अधिकारों को रौंदते हुए और अपने साथियों को भी आश्चर्यचकित करते हुए प्रोग्राम सुपरवाईजर के पद पर जा पहुंचे हैं। शायद ही किसी और सरकारी विभाग में ऐसी धांधली हो।

एक और मजे की बात सुनिये। बी० बी० सी० अर्थात इंग्लैंड के रेडियो में हिंदुस्तानी प्रोग्रामों के लिए भी स्टाफ इसी बुखारी गुट की सलाह से नियुक्त होता है, इसीलिए तो वहां भी उर्दू का बोलबाला है। पिछले दिनों बी० बी० सी० वालों को एक दो हिंदी के जानकारों की आवश्यकता थी और दिल्ली स्टेशन के एक मुसलमान अधिकारी के हाथ में यह सारा मामला दिया गया। उसने स्टेशन के दो ऐसे नामों की सिफारिश कर दी जो हिंदी की वर्णमाला को शायद ही जानते थे। हिंदी भाषा और हिंदी साहित्य से बिल्कुल अनभिज्ञ थे। हिंदी के साथ इससे अधिक और क्या अन्याय हो सकता है?

मैं दिल्ली स्टेशन का मामला फिर से लेता हूं। यहां पर होने वाली नियुक्तियों में बुखारी गुट के अतिरिक्त एक और व्यक्ति का भी इतना प्रभाव है और

(शेष पृष्ठ २१ पर)

संघर्ष की गूंज

[श्री रामचन्द्र तिवारी]

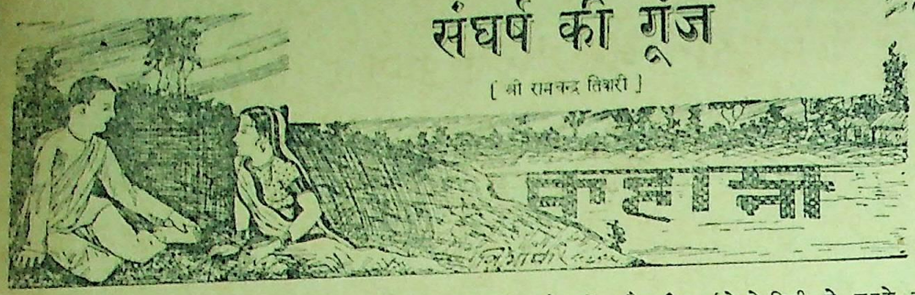

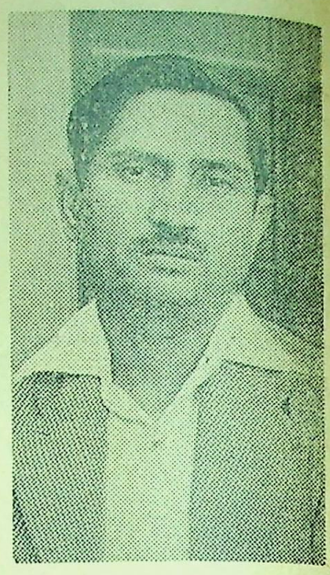

लेखक

जीवनलाल ने सम्मुख देखा, जन-समुदाय जो उसकी मूर्तियों की ओर एकटक निहार रहा है। दर्शकों की दृष्टियां उसके लक्ष्मी-गणेश, शिव-पार्वती, राम-सीता और राधा कृष्ण के क्रमों की छवि निरख उन के चरणों पर अपनी आत्मा का अर्घ अर्पण कर रहीं हैं। उसकी कला के प्रति अपनी अभिभूतता का निवेदन कर रही हैं। उसका हृदय उल्लास से फूला। कितनी सफल है उसकी कला।

उसके गर्वित नयन उठे। दृष्टि सड़क से ऊपर, दिवाली के बाजार के कोलाहल पर दूर दूर तक तैर आई। विद्युत-दीपों से राजमार्ग आलोकित था। बर्तनों की दुकानों पर धातु की रौनक मानव-मूल्यों को चुनौती देती उभर रही थी। वहां की भीड़ क्रेता थी, आत्म[illegible] नहीं, पर उसकी मूर्तियों [illegible]। उसकी दुका[illegible]

[illegible] एक [illegible] दिये हैं, [illegible] गणेश हैं, आम, [illegible] रूद से लेकर बन्दर, चीते [illegible] भालू तक हैं। और उससे आगे बढ़कर एक दुकान है, जहां नेताओं के बुत हैं -गांधी, जवाहर, सुभाष; और न जाने कौन-कौन।

भीड़ आती है। साश्चर्य उसकी मूर्तियों की ओर देखती है, चली जाती है। जीवनलाल ने देखा; त्यौहार है, चहल-पहल है। कोलाहल है। वस्त्रों की तड़क-भड़क है। आलोक की रश्मियां हैं, जो अनेक समाचार-वाहकों की भांति इधर-उधर दौड़ रही हैं। पर नहीं है; उसे लगा कि कुछ नहीं है इसमें, जो त्यौहार में प्राण फूंकता है, जो मनुष्य को उमड़ पड़ने को बाध्य करता है।

और तभी उसका ध्यान जाने कहां से लौट आया।

दर्शकों में से एक ने पूछा,—यह मूर्ति कितने की है ?'

जीवनलाल ने उस की ओर देखा, उनके बाल घुंघराले थे। शीश पर दुपल्ली मल-मल की टोपी थी, और वे चुनियाया हुवा मलमल का झीना कुर्ता पहिने थे। उसपर सुनहरी गोट थी। उसके नीचे उनकी मूल्यवान बनियाइन स्पष्ट झलक रही थी, जैसे कि श्यामल शिला के मध्यांश को मोती से रंगकर किसी ने उसे अर्द्ध-पारदर्शी कांच के पीछे रख दिया हो।

उसने देखा कि उनके साथ एक बालक है। उसकी टोपी जड़ाऊ है। जो उसके बल्ब के प्रकाश में दम-दम दमक रही है।

जीवनलाल का हृदय पुलका। हुलस कर बोलाः 'ले लीजिये, कौनसी मूर्ति चाहिये आपको ?'

बालक ने सीता-राम के युग्म की ओर संकेत किया। 'यह जोड़ा दो रुपये का है। यह एक रुपये का और वह जो मूर्ति सबसे ऊपर रखी है, पांच रुपये की है। कला का मूल्य है, लालाजी।'

बालक ने वयस्क का हाथ खींचकर कहाः 'हम ऊपर वाली मूर्ति लेंगे।'

वयस्क ने पूछा, 'तुम्हारे पास सुभास नहीं है ?'

'नहीं लालाजी, कला उपासना है। [illegible]ता की उपासना करता हूं, मनुष्य की नहीं।' यह भावना थी जो उस मूर्तिकार के हृदय में उसके गुरु ने कूट-कूट कर भर दी थी। उसे गुरु का स्मरण आया। उनकी निर्मित देवमूर्तियां बाजार की वस्तु नहीं थी। कलाप्रेमी जानते थे और उनके दर्शक गृह में गिनी-चुनी मूर्तियों को देखते थे और उसके गुरु थे कि कभी किसी मूर्ति का मूल्य शत-मुद्रा से कम नहीं लिया और यदि नहीं लिया तो बिल्कुल नहीं लिया। उसका हृदय गर्व से ऊंचा हो गया। वह मनुष्य की उपासना कभी नहीं करेगा।

पर इसके पश्चात लाला वहां ठहरे नहीं वे बालक को खींचते दूसरी दुकान की ओर बढ़ गये। बड़-बड़ाते गये, 'देस में रक्त की नदियां बह रही हैं। महात्माजी का आदेश है कि दिवाली मत मनाओ। क्या त्यौहार है, जैसे-तैसे लकीर पीटनी है।'

बालक ने कहा : 'चाचा !'

उन्होंने सुना नहीं: वे उसे घसीट ले गये।

जीवनलाल मुग्धदृष्टि प्रशंसकों की ओर देख रहा था। वह भूल गया था कि वह यहां दुकान लगाकर मूर्तियां बेचने बैठा है। पीछे से किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखा, छोटा-छोटा कोमल-कोमल उसके हृदय में खलबली मच गई। उसने पीछे देखा। उसका पांच बरस का श्यामों उसके कंधे को खींच रहा है।

'चाचा, मिठाई·····।'

और जीवनलाल के सम्मुख एक दूसरा संसार उदय हो गया। मिठाई···। और मिठाई का ध्यान करते ही एक इतिहास उसके सामने उठ खड़ा हुवा। मिठाई···। पिछले तीन मास में वह एक बार रंग लाने के लिये ही घर से बाहर निकला है। वह मूर्तियों में लगा रहा। उसने कुल्हड़ नहीं बनाये, सकोरे नहीं बनाये, और न बनाये दिये ही। वे तीन महीने उसके जीवन में सब से सुख-मय थे।

उसने लुब्धदृष्टि से उन मूर्तियों की ओर देखा, जो सब नहीं है। इनसे दूनी घर रखी हैं। यह जैसे बिकती जायेंगी, घर से मंगाता जाऊंगा; और·····।

हां, उसपर पन्द्रह रुपये का ऋण है। कल्लू है अपना सम्बन्धी, पर उसने रुपया दिया है दो आने महीने के व्याज पर। एक महीने में एक रुपया चौदह आना व्याज ! तीन दिन में सोलह रुपये चौदह आने उसे देने हैं। सत्रह ही हो गये। और उसकी मूर्तियां सब तीन सौ रुपये की ! मूर्तियां बिकेगीं और श्यामों के लिये मिठाई थाल में सजी हुई मिठाई।

और उसने सुना।

'कितनी सुन्दर मूर्तियां हैं।'

जीवनलाल ने गाहक की आशा से सम्मुख देखा। सोलह रुपये चौदह आने। उसका हृदय धड़का, उसमें शूल चुभने के समान पीड़ा हुई।

दूसरे दर्शक ने कहा, 'हां है तो सुन्दर ! परन्तु देश में संघर्ष उठा है। बंगाल में भाइयों के रक्त से होली खेली जा रही है। नहीं, यह समय मूर्तियों के सौन्दर्य निरखने का नहीं है।'

जीवनलाल उनकी ओर देखता रह गया। ये लोग मूर्तियां क्यों नहीं खरीद रहे हैं ? दुकानों पर सामान बिक रहा था। नेताओं की मूर्तिवाला एक गाहक को नोट के शेष पैसे दे रहा था।

जीवनलाल के मन में उठा : कैसे हैं ये लोग ! इस बुत में क्या है नेहरू जैसा। नेताओं के बड़े बुत खरीदनेवाले हैं पर सौंदर्यवान। कलापूर्ण देवताओं की मूर्तियों के लिए गाहक नहीं हैं। और अब उसके मन में उठा कि उसने एक भी मूर्ति नहीं बेची है। उसका हृदय धक से रह गया।

तभी उसकी पत्नी ने आकर पूछा, 'और मूर्तियां ले आऊं ?'

जीवनलाल का हृदय बैठ गया। उसका मुख उतर गया। उसने पत्नी की की ओर देखा।

'कितनी बेच लीं ?' पत्नी ने उत्साह से पूछा।

जीवनलाल ने उसकी ओर देखा।

'क्यों ?'

'एक भी नहीं।'

'हां !'

'तो कब बिकेंगी ? बस दो ही घन्टे का बाजार तो और है !'

'तो मैं क्या करूं ?'

'न, अब तुम क्या करोगे ! जब मैं कहती थी कि सस्ता समान बनाओ कुछ, इन्हें कौन खरीदेगा। पर तुमने सुना ? उल्टा मुझे ही डांटा। और मेरी जान फंसा दी। अभी लच्छी की दादी तकाजा कर गई है अपने रुपयों का।'

पत्नी को दुःखित जान वह कुछ न बोला। ठीक था; पत्नी उससे अधिक मानव-बुद्धि की पारखी निकली। उसने क्यों नहीं उसका कहना माना।

पत्नी ने पति से उत्तर नहीं पाया। उसने पायी एक कातर दृष्टि, जो कह रही थी : हां तुम ठीक कहती थीं। भूल मेरी ही है, पर क्या करता मैं ? कला का भी तो·····।

पत्नी ने सहानुभूति के स्वर से पूछा 'क्या एक भी मूर्ति नहीं बिकी ?'

'नहीं !' जैसे आंसू रोकते हुए पति ने कहा।

पुत्र ने सूचना दी। 'मां सब देख जाते हैं। दाम पूछ जाते हैं, पर लेता कोई नहीं। मां, दादा से कहता था जवाहरलाल नेहरू बनाओ। खूब बिकेंगे। क्यों कहता था न दादा'

[शेष पृष्ठ १७ दर]

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मेरे जीवन की झाँकियां

मेजर फजलुद्दीन और सेंट्रल जेल (२)

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

★

[५]

सुपरिन्टेन्डेन्ट को हमारी बारक से गये दस मिनट ही हुये होंगे कि एक पीली वर्दी वाला सिक्ख नम्बरदार मुझे बुलाने के लिये आ पहुंचा। वह नम्बरदार मेजर साहब का खास आदमी समझा जाता था। मैं तब तक सब तरह से तैयार हो चुका था और अपने साथियों से बिदाई भी ले चुका था। आगे-आगे नम्बरदार जा रहा था और पीछे-पीछे मैं। रास्ते में एक ऐसी जगह आई जहां आस-पास कोई आदमी नहीं था। नम्बरदार ने मुंह सामने की ओर ही रखते हुए पंजाबी में कहा, 'बाबूजी यह साहब बड़ा मूंजी और सख्त है। आप इससे सम्हल कर बातचीत करें। इसे गुस्सा बहुत जल्दी आ जाता है।' उसके स्वर से प्रतीत होता था कि उसे मुझ पर दया आ रही है, वैसी दया जैसी भेड़ को वधस्थान पर ले जाते हुए उसके रखवाले को आती होगी।

मुझे लेकर नम्बरदार साहब के कमरे में घुसा तो मैंने एक दृष्टि से साहब और उसके कमरे को बड़े ध्यान से देखकर यह जानने का यत्न किया कि इस मुलाकात का भविष्य क्या होगा? मेजर साहब काले बुत की तरह अपनी कुर्सी पर डटे हुए थे। उनके सामने की मेज के आस-पास और कोई कुर्सी नहीं थी। मैं जाकर सामने खड़ा हो गया तो साहब ने नम्बरदार को हुक्म दिया दरवाजा बन्द करते हुए बाहर चले जाओ। दरवाजा बन्द होने पर उस कमरे का बाहर की दुनिया से सम्बन्ध बिल्कुल टूट गया। अब उस कमरे में मेजर फजलुद्दीन और मेरे बीच में आने वाले ईश्वर के अतिरिक्त और कोई नहीं था। वह काले पत्थर की मूर्ति कुर्सी से उठी, कमरे के एक कोने में गई, वहां से एक कुर्सी उठा कर मेरे पास रखते हुए अपनी कुर्सी पर जा बैठी और मुझे बैठ जाने का इशारा किया। मेरे बैठ जाने पर मेजर फजलुद्दीन ने खड़े होकर अपना हाथ आगे बढ़ाया। मैंने भी खड़े होकर अपना हाथ उनके हाथ में दे दिया। उसके पश्चात् हमारी जो बातचीत हुई, उसका आवश्यक भाग अपनी स्मृति से उद्धृत करके मैं यहां अंकित करता हूं। सम्भव है इसमें कहीं किसी शब्द का भेद हो जाये, परन्तु मैं बातचीत में उस सारे प्रसंग को इतनी बार सुना चुका हूं कि भूल होने की सम्भावना बहुत ही कम है।

इस समय उस पत्थर की मूर्ति का चेहरा खूब सजीव हो चुका था, उस पर मुस्कराहट थी। उस मुस्कराहट का मैं यह अभिप्राय समझा कि वह मेरे आश्चर्य पर प्रसन्न हो रहा था। यह मूर्ति भी चेतन है और खड़ी होकर हाथ मिला सकती है, इस पर मुझे जो आश्चर्य हो रहा था, उसका अनुमान लगा कर ही मेजर साहब मुस्करा रहे थे। हाथ मिलाने के पश्चात् हम दोनों बैठ गये। तब मेजर फजलुद्दीन ने मुझ से पूछा।

'प्राफेसर साहब! क्या आप जालंधर जिले के रहने वाले हैं?'

मैंने उत्तर दिया—'जी हां। मेरी पैदायश तो जालन्धर जिले की ही है, लेकिन अब तो आप मुझे दिल्ली का वाशिन्दा ही समझिये।'

मेजर साहब—'आपको यह जान कर खुशी होगी मैं आपका पड़ौसी हूं। मैं जिला होशियारपुर का रहने वाला हूं।'

'तब तो हम दोनों हमवतन हैं' मैंने कहा—

इस पर मेजर साहब बोले 'यह जान कर आपको शायद ताज्जुब होगा कि मैं आपका हमख्याल भी हूं' इस पर मुझे सचमुच ताज्जुब हुआ और मैंने उसे प्रायः बुत की तरह चेतनाहीन रहने वाले चेहरे की तरफ देखा, वह मेरा भाव समझ कर बोले—'मैं सयासयात में डा० अन्सारी का पैरोकार हूं। सरकारी नौकर हूं तो क्या हुआ। दिल से मैं पक्का नेशनलिस्ट हूं।'

मेजर साहब के इस इकबाली बयान से मैं वस्तुतः आश्चर्यित हुआ।

यह प्रसंग यहीं खत्म हुआ और बात आगे चली।

मैंने मुस्कराते हुए कहा—'फर्माइये-हमारी दर्खास्त का क्या हुआ?'

मेजरसाहब ने भी मुस्कराते हुए जवाब दिया—'उसका जवाब देने से पहले मैं आपसे एक सवाल करना चाहता हूं। आप और हम जेल में दोस्त बन कर रहेंगे या दुश्मन?'

मैंने उत्तर दिया—'सरकार के तो हम दुश्मन ही हैं। आपके दोस्त रहेंगे या दुश्मन, इस सवाल का जवाब यह है कि अगर आप लोग हमारे साथ इन्सानों जैसा सलूक करेंगे तो हम दोस्त बन कर रहेंगे और अगर हमारे आत्मसम्मान को ठेस पहुंचायेंगे या हमें फजूल तंग किया गया तो हमारी और आपकी खूब डट कर लड़ाई होगी।'

इस पर मेजरसाहब ने कहा—'मेरी भी एक शर्त सुन लीजिये कि मुझे जिन इश्लाकी कैदियों का इन्तजाम करना पड़ता है वह सूबे भर के छंटे हुए बदमाश हैं। मैं उन्हें कड़े डिसिप्लिन के बगैर काबू में नहीं रख सकता। आप मेरे जेल के उस डिसिप्लिन में दस्तन्दाजी न करें, तो मेरी ओर से आपको कोई शिकायत न होगी।'

मैंने उत्तर दिया, 'हम आपके जेल डिसिप्लिन में कोई दस्तन्दाजी नहीं करना चाहते। हां, अगर कोई बेजाब्ता होती देखेंगे तो आप से जरूर कहेंगे। इस पर मेजर फजलुद्दीन ने फिर हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा, 'तब तो हमारा समझौता हो सकता आप यकीन रखें, आप लोगों को मेरी ओर से कोई शिकायत न होगी। आप लोग घर की तरह रहिये। सिर्फ इतना ख्याल रखिये कि प्राइवेट खतों या मुलाकातों द्वारा यह बात जेल की चहारदीवारी से बाहर न जाने पावे। बाहर वही खबर जानी चाहिये कि आप लोग जेल में बहुत तंग हैं।'

इस अहदनामे के पश्चात हमारी दरख्वास्त सामने रखी गई। पहली शिकायत घी के सम्बन्ध में थी। उसके विषय में मेजरसाहब ने कहा, 'यह शिकायत तो बहुत आसानी से दूर हो सकती है, आप लोगों के साथ लायलपुर के डाक्टर किशनलाल भी हैं। वह लायलपुर के अपने किसी दोस्त को चिट्ठी लिखकर अच्छे घी के १० कनस्तर मंगवा लें। उनके दाम जेल का दफ्तर देगा। वह कनस्तर आप लोगों की देख-रेख में अलग पड़े रहेंगे।'

घी का प्रबन्ध तो ठीक हो गया। अब आटे की शिकायत पेश हुई, उसके बारे में मेजरसाहब ने यह व्यवस्था की कि शहर के किसी कांग्रेसी आदमी द्वारा बढ़िया गेहूं की बोरियां खरीद ली जाय, पोलिटिकल कैदियों को उन्हीं का आटा दिया जाय। फव्वारे के बारे में निश्चय हुआ कि वे तब तक खुले रहा करेंगे जब तक हम नहा न लें। यह भी तय पाया कि हमारा खाना बनाने वाले मुशक्कती रात के नौ बजे तक खुले रहा करेंगे।

मैंने मौलाना आरिफ के पानदान का मामला भी पेश किया। मेजर फजलुद्दीन को सफाई का मेनिया था। वह सब से ज्यादा सख्त सजायें सफाई ठीक न रखने पर देता था। जब मैंने मेजर को समझाया कि यदि मौलाना आरिफ को पान खाने की इजाजत न मिली तो उनका पतला-दुबला शरीर १५ दिन से ज्यादा न चल सकेगा तो मेजर साहब ने यह राजीनामा पेश किया कि वह कभी पान का थूक फर्श पर न गिरायेंगे और केवल नाली पर थूकेंगे तो उन्हें पानदान दिया जा सकता है। यह तो स्पष्ट ही था कि यह राजीनामा सिर्फ एक बहाना था। असल में तो पानदान भी उस बड़े इकरारनामे का ही एक हिस्सा था। मेजर साहब ने समझा कि लगते हाथ एक वायदा भी ले लो, जिससे आगे दबाने का मौका बना रहे।

इस प्रकार मेरी और मेरे द्वारा उस जेल के राजनैतिक बन्दियों का मेजर फजलुद्दीन से अहदनामा हो गया। जब मैं दफ्तर से अपनी कोठरी में वापस आया तो मेरे साथियों को बहुत आश्चर्य हुआ। वह तो इस समाचार की प्रतीक्षा में थे कि मेरे हथकड़ी बेड़ी पहनकर बारक नम्बर १४ में पहुंच जाने का समाचार मिले तो 'इन्कलाब जिंदाबाद' के नारे लगाकर युद्ध की घोषणा की जाये। मुझ से अहदनामे के समाचार सुनकर सभी साथी प्रसन्न हुए। मेरे परिचित समाज में प्रायः यह माना जाता है कि मैं साधारण से अधिक आशावादी और विश्वासी व्यक्ति हूं। प्रत्येक चीज में आशा की रेखा देख लेता हूं और प्रत्येक व्यक्ति पर विश्वास कर लेता हूं। मैं इस आरोप का न खण्डन करता हूं न मण्डन। मैं जैसा हूं, वैसा ही हूं। मुलतान जेल में भी वैसा ही था। मेरे कई नौजवान साथियों ने अविश्वास पूर्वक सिर हिलाते हुए कहा कि मेजर फजलुद्दीन ने आपको धोखा दे दिया। वह अहदनामे पर कायम नहीं रहेगा। परन्तु मैंने उन्हें आश्वासन दिलाया कि ऐसा नहीं होगा। कम से कम इस समय हमें यही मानकर चलना चाहिये।

(६)

१९३२ में दिल्ली और पंजाब के कम से कम तीन सौ ए और बी क्लास के राजनैतिक बन्दी मुलतान की न्यू सेन्ट्रल जेल में रहे होंगे। उनमें से प्रायः सभी इस बात पर सहमत होंगे कि सामान्यरूप से मेजर फजलुद्दीन ने अपने वायदे को निभाने का प्रयत्न किया। हिन्दुस्तान के उस युग के जेल, निचले कर्मचारियों का विरोध और सी० आई० डी० का डर—इन सब कारणों के होते हुए भी यदि उस बार के जेल जीवन में अधिक विक्षोभ उत्पन्न नहीं हुआ तो उसका बहुत कुछ श्रेय इस बात को मिलना चाहिये कि मेजर फजलुद्दीन का बाह्य रूप जैसा काला और कठोर था वैसा आन्तरिक रूप नहीं था। मैंने देखा कि बड़े से बड़े विक्षोभ के उत्पन्न हो जाने पर भी मेजर का यही यत्न रहता था कि किसी तरह समझौते से काम चल जाय।

कुछ दृष्टान्त लीजिये एक बार कैदियों के भाग्यविधाता हैडवार्डर साहब हम लोगों से बहुत नाराज हो गये। किसी

नौजवान की कोई शिकायत शायद उन्हें बुरी लगी। नाराज होकर उसने दरोगा के कान भरे। दरोगा एक खांसाहब था जो इस बात से बहुत नाराज था कि मेजरसाहब कांग्रेसी कैदियों के साथ रियायती सलूक करते हैं। दरोगा ने हुक्म दे दिया कि रात को सात बजे सब मुशक्कती बन्द कर दिये जायं। उससे पहले ही खाना तैयार हो जाना चाहिए। इधर हम लोग आठ-साढ़े आठ बजे बोल-बोल खेल कर निवृत्त होते और तब खाना खाते थे। जब हम लोगों को इस आर्डर का पता लगा तब सब ने प्रतिवाद करने का निश्चय किया। प्रतिवाद का यह रूप बनाया गया कि मुशक्कतियों के बन्द होने के पश्चात् खाने का सामान सिरों पर उठा कर हम लोग अपनी बारक से बाहर निकले। हम लोगों में कौन थे, यह भी सुनिये। पंजाब के पं० नेकीराम शर्मा, श्री चौधरी किशन गोपाल, डा० सन्तराम सेठ, मौलाना दाऊद गजनवी, शेख हिसामुद्दीन, दिल्ली के श्री जुगलकिशोर खन्ना, डा० मुखदेव श्री जैनेन्द्रकुमार तथा अन्य अनेक महानुभाव थे। हम लोगों का जलूस विचित्र रूप धारण किये हुये था। किसी के सिर पर दाल का देगचा, किसी के सिर पर आटे की परात और किसी के सर पर सब्जी की पतीली थी। हम लोग अपनी बारक से बाहर निकल कर मध्य में बने हुए चक्कर में गये और वहां सब सामान रख कर अपनी बारक में वापिस जाने लगे तो बारक का दरवाजा रोक कर हैडवार्डर ने हुक्म दिया, 'तुम लोग खां साहब के आने तक यहीं खड़े रहो, अन्दर जाना नहीं मिलेगा।' सब लोग वहीं रुक गये। इतने में अलारम का घण्टा बजने लगा और ६-७ मिनट में खां साहब सिपाहियों और नम्बरदारों की लट्ठबन्द फौज के साथ आते हुए दिखाई दिये। बेचारे बहुत ही घबराये हुए थे। समझ रहे थे कि हमने जेल तोड़ दिया। पास आये तो मालूम हुआ कि हम अन्दर जाना चाहते थे और हैडवार्डर ने रोक दिया। यूं हम सब लाठीचार्ज का स्वागत करने के लिये तैयार खड़े हैं। खांसाहब के लिए मौका भी अच्छा था, परन्तु न जाने क्यों उस समय वह कुछ घबरा गये। कहने लगे आप लोग अपने खाने का सामान लेकर बारक में क्यों नहीं जाते। हमने उत्तर दिया कि हम लोग गर्म खाना खाने के आदि हैं। खाना सब ठण्डा हो गया है और रोटियां बनी हों नहीं। हम इसे ले जाकर क्या करेंगे।

झुंझला कर दरोगा ने कहा कि 'आप किसी तरह अन्दर जायेंगे भी।'

हमने उत्तर दिया, 'आप हमारे खाना बनाने व खिलाने का इन्तजाम कर दीजिये, हम बारक में चले जायंगे।'

हार मानकर, जेलर ने कहा अच्छा, आज तो मैं मुशक्कतियों को बुलवा देता हूं परन्तु कल आप सबकी साहब के सामने पेशी होगी।

अगले दिन सब की तो नहीं, जत्थेदार की हैसियत से साहब के सामने मेरी पेशी हुई। मुझ से सारा वृत्तान्त सुनकर मेजरसाहब ने जेलर को दफ्तर में बुलाया मैं कुर्सी पर बैठा था और खां साहब अफसर के सामने खड़े हुए थरथर कांप रहे थे। मेजर साहब ने उन्हें खूब जोर की डांट लगाई और आज्ञा दी कि राजनैतिक कैदियों का खाना बनाने वाले मुशक्कती रात के नौ बजे तक खुले रखे जायें।

[७]

सुना है कि मेजर फजलुद्दीन अब इस दुनिया में नहीं हैं। वह अपने महकमे में कैसी ख्याति छोड़ गये हैं, यह मुझे मालूम नहीं। मैं तो अपने अनुभव के आधार पर कह सकता हूं कि वह आदमी बात का धनी था। मुझे यदि भविष्य में जेल जाते हुए यह चुनाव करने का अवसर दिया जाय कि मैं किस तरह के जेल में जाना चाहता हूं तो मैं किस मधुरभाषी परन्तु निर्बल जेलर की जेल में न जाकर मेजर फजलुद्दीन जैसे रूखे परन्तु बात के धनी जेलर की जेल में जाना पसन्द करूंगा।

———

फिल्म स्टार

बनने के इच्छुक शीघ्र लिखें, कुछ पढ़ा होना आवश्यक है।
रंजीत फिल्म आर्ट कालेज 18। रावीरोड
(V. D.) लाहौर।

डालडा आपके दिलपसन्द भाजी को स्वादिष्ट करता है—और आप को स्फूर्ति भी देता है!

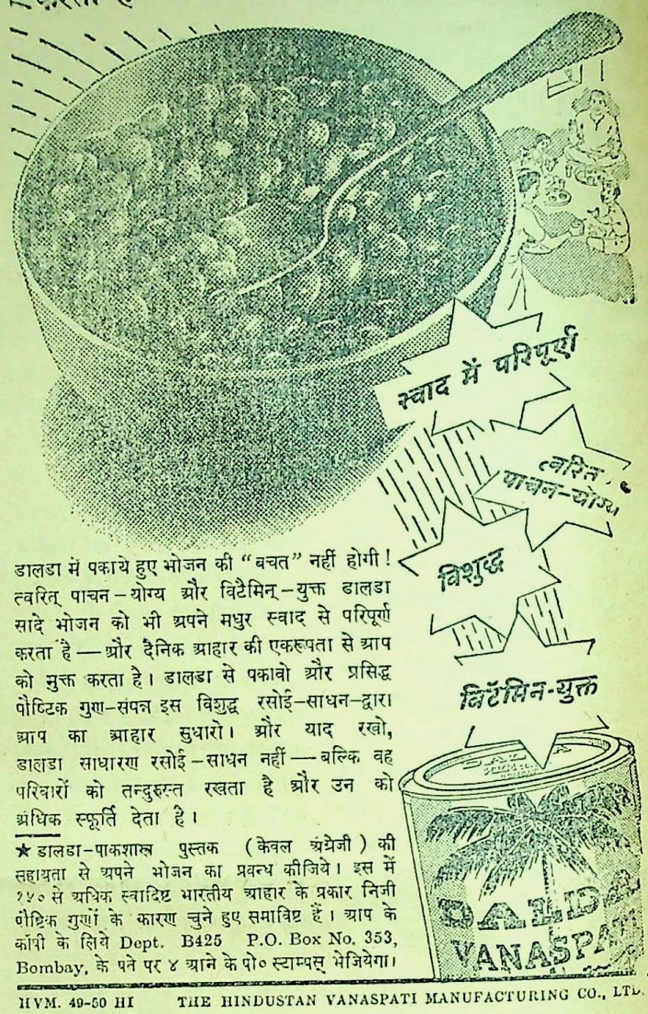

डालडा में पकाये हुए भोजन की "बचत" नहीं होगी! त्वरित् पाचन—योग्य और विटैमिन्—युक्त डालडा सादे भोजन को भी अपने मधुर स्वाद से परिपूर्ण करता है—और दैनिक आहार की एकरूपता से आप को मुक्त करता है। डालडा से पकावो और प्रसिद्ध पौष्टिक गुण—संपन्न इस विशुद्ध रसोई—साधन—द्वारा आप का आहार सुधारो। और याद रखो, डालडा साधारण रसोई—साधन नहीं—बल्कि वह परिवारों को तन्दुरुस्त रखता है और उन को अधिक स्फूर्ति देता है।

★ डालडा—पाकशास्त्र पुस्तक (केवल अंग्रेजी) की सहायता से अपने भोजन का प्रबन्ध कीजिये। इस में १५० से अधिक स्वादिष्ट भारतीय आहार के प्रकार निजी पौष्टिक गुणों के कारण चुने हुए समाविष्ट हैं। आप के कॉपी के लिये Dept. B425 P.O. Box No. 353, Bombay, के पते पर ४ आने के पो० स्टाम्पस् भेजियेगा।

HVM. 49-50 HI THE HINDUSTAN VANASPATI MANUFACTURING CO., LTD.

संतान होने की दवा

जिस स्त्री के सन्तान न होती हो केवल ७ रात तक मशहूर दवा मुहाफिज औलाद खिलाओ। इन सात रात में स्त्री के बदन के अन्दर का हिस्सा ठीक ऐसी हालत में आ जाता है कि आठवीं रात ..... स्त्री को गर्भ रह जाता है। इस औषधि की वजह से आज हजारों बहिनों की गोद में बच्चे खेल रहे हैं। जिस स्त्री को सन्तान न होती हो वह नीचे के पते पर पत्र लिख कर दवा मुहाफिज औलाद की शीशी वी० पी० पार्सल द्वारा मंगालें। १ शीशी काफी है जिसका मूल्य दो रुपया आठ आना २॥) है पारसल पर ॥-) महसूल लगेगा।

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४ देहली

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हमारा धारावाही उपन्यास

गंगा जल

[ले० — श्री इन्द्र बसावड़ा].

विधवा शोभा अपना अन्धकारमय भविष्य देखकर काली रात में जङ्गल की ओर प्राणत्याग के लिए गङ्गा के तट पर चली गई। उसके भाई अनिल ने करुणा को साथ लेकर उसको खोज लिया। शोभा के ताऊजी भी उसे लेने वहां पहुंच गये।

(गतांक से आगे)

करुणा वहां से चल दी। अनिल और ताऊजी थोड़ी दूर चलते रहे। एक खेत में आकर ताऊजी ने कहा — 'अनिल !'

'जी !'

'यहीं बैठ जावें ?'

'जी हां !'

दोनों खेत में बैठ गये।

'शोभा ?' ताऊजी ने पूछा।

'शोभा जीजी मजे में हैं।' अनिल ने उत्तर दिया।

थोड़ी देर तक मौन रहा। अनिल को नहीं सूझा कि क्या बात की जाय।

'वह तो भला अपना भाग्य अच्छा था.....'

'हां जी, नहीं तो पानी में पड़ा हुआ कोई मनुष्य बच सकता है भला ?'

'हां, नहीं तो, क्या तुम्हारी प्रशंसा करूं बेटा ! सचमुच मैं तो तेरे इस ऋण से किसी दिन भी मुक्त नहीं हो सकता।'

अनिल चुपचाप सुनता रहा।

'और बेटा अनिल !'

'जी !'

'अब एक काम करना है।'

'जी ?'

'शोभा बिल्कुल स्वस्थ है न ?'

'हां जी, लगभग।'

'तो मुझे जंचता है, इसी मोटर से मैं उसे ले जाऊं।'

'कहां ?'

'आगरा। अब तो लड़की को बाप के घर ही रहना चाहिये। ससुराल से उसे अब क्या लेना देना ?'

'यह तो ठीक है; पर शिरीष बाबू के आये बिना ?'

'अब तो शिरीष बाबू, शिरीष बाबू हैं कौन ? अपनही हैं उसके सगे-सम्बन्धी ! पति का अवसान हुये बाद पुत्री के लिए तो मां बाप का ही घर होता है।'

'यह ठीक है; पर शिरीष बाबू के आये बिना; उनको खबर दिये बिना, शोभा इस तरह कैसे जा सकती है ?'

'क्यों नहीं जा सकती ?'

'शिरीष बाबू से कहकर ही शोभा को ले जाना चाहये।'

'क्यों अनिल ? लड़की अपनी है या शिरीष बाबू की ?'

'अपनी ; पर व्यवहार की दृष्टि से !'

'व्यवहार की दृष्टि से ? व्यवहार तू क्या जाने बेटा ! तू तो अभी नादान लड़का है.....'

'यह होगा ; पर.....'

पर ? तू तो होशियार है ; अकलमन्द है, पढ़ा लिखा है ; गीता में तैंने पढ़ा होगा.....'

क्या ?'

'शठे प्रति शाठ्यं कुर्यात्।'

'मैं समझा नहीं।' अनिल ने कहा।

'बेटा, तुझसे क्या छिपा है ? शोभा के विवाह के बाद, इन लोगों ने जो बर्ताव किया है, जिस उद्धतता के साथ व्यवहार का प्रदर्शन किया है, वह तुझसे क्या छिपा है ? और अब तो ऐसे संयोग में शोभा को यहां रख ही कैसे सकते हैं— इन लोगों के पंजे में शोभा को सौंप ही कैसे सकते हैं ?'

यह सुन कर अनिल को आश्चर्य होने लगा। आज दिन तक जिन ताऊजी ने शोभा की दरकार नहीं की थी, जिनने शोभा की तरफ दृष्टिपात तक नहीं किया था, जिन्होंने शोभा विधवा होने वाली है यह जान कर भी गहने या अच्छे कपड़े पहनने देने की इच्छा बताई न थी, उन्हीं ताऊजी के हृदय में शोभा के प्रति स्नेह का यह दरिया कैसे उभरने लगा है ?

अनिल को वह दिन याद आया। शिरीष बाबू बीमार थे। शोभा को मिल वह वापस लौट रहा था। मार्ग में ही शिरीष बाबू लाठी के सहारे सामने से आ रहे थे। अनिल को देख कर वे रुक गये थे, और उसके दोनों हाथ अपने हाथ अपने हाथ में ले वे बोले थे—

'नारायण ! नारायण ! अनिल बाबू ! न करे नारायण कि कुछ हो जाय तो मेरे हृदय में एक घाव किसी दिन भरेगा नहीं।'

उसने पूछा था— 'बात क्या है ?

और उनने गद्‌गद् कण्ठ से कहा था— 'अनिल बाबू ! शोभा ने कुछ सुख देखा नहीं, सुन्दर वस्त्र या गहने पहने नहीं, और राधेमोहन बाबू को कितना ही लिखा कि तुम इस समय तो सब कुछ दो, मेरी बहू अन्तिम बार तो शृंगार कर ले, पर कुछ नहीं.....जाने दो यह बात।' और फिर 'नारायण नारायण। करते वे वहां से चले गये थे।

अनिल को वे सब बातें एकाएक याद आईं। उसने ताऊजी के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।

'क्यों, बोला नहीं अनिल ?' ताऊजी बोल उठे।

'जी !'

'बेटा ! तुझे इस संसार की धोखाधड़ियों की क्या खबर ? अभी तो वे झूठ-मूठ ढोंग करेंगे प्रेम का, शोभा की तरफ सहानुभूति और स्नेह की डींगें भी मारेंगे, पर बेटा, जहां पैसे आये पास कि शोभा को देंगे लात— उसका जीवन जहर जैसा हो जायगा— उसे कहीं रहने को स्थान नहीं रहेगा। उसके लिए जीवन व्यर्थ हो जायगा।' ताऊजी हाथ का अभिनय करते कहते जाते थे।

तब भी अनिल ने कोई उत्तर नहीं दिया। यह देख ताऊजी साफे का एक सिरा आंख के पास ले जा जरा भारी आवाज में कहने लगे—

'इस पुत्री के लिए तो मेरा यह जीवन जहर जैसा हो गया है। कहीं चैन नहीं— घर में भी नहीं और बाहर भी नहीं ! भगवान ने क्यों मेरे यहां इसे जन्म दिया ?'

इन शब्दों से अनिल का हृदय पिघ-लेगा ही, ऐसा ताऊजी को लगा।

'बेटा, तुझे अपनी बहन के लिए स्नेह है, इसी से मैं कहता हूं। तुझे खबर तो नहीं होगी ?'

'किसकी ?' अनिल ने पूछा।

'गिरीश बाबू पांच-छः हजार का बीमा छोड़ गये हैं।'

'नहीं।'

'ओह ! तभी तो तू इस प्रकार निश्चिन्त बैठा है बेटा ! इन लोगों को तू पहचानता नहीं। वह सारा धन हजम कर जाने की इनकी नीयत है, और इसी से वे लोग शोभा को मेरे साथ भेजने को राजी नहीं। किसी भी प्रकार मैं शोभा को ये सब बातें समझा दूं, उसको समझा यह सब धन शोभा के हित बैंक में रखवा दूं, और इन लोगों को यह रुपया किसी तरह भी न दूं, समझा अनिल ?'

'पर, ताऊजी ! शिरीष बाबू ऐसे मनुष्य नहीं।'

'हरि ! हरि ! हरि !! क्या आजकल की पढ़ाई है ! क्या तुम्हारा निर्दोष मन है ! पवित्रता से भरा हुआ तुम्हारा हृदय कब इस संसार की स्वार्थ-परता को समझना सीखेगा ? शिरीष बाबू जैसे धर्मात्मा ! शिरीष बाबू न्याय और इन्साफ की मूर्ति ! अनिल रे अनिल ! अभी तक तू तो वैसा ही भोला रहा ! पर इसमें तेरा दोष नहीं ?'

और इतना कहकर ताऊ जी ने एक आंख तिरछी कर अनिल की तरफ देख लिया ! उसके मन पर इन शब्दों का क्या प्रभाव होता है !

अनिल विचार रहा था—सर्वदा मौन-सेवन करने वाले; आवश्यक हो इतना ही बोलने वाले ताऊजी में आज इतनी वाचालता किस प्रकार हुई ?

पर इसका निर्णय करने का उसे समय नहीं था। उसको मौन देखकर ताऊ जी बोले:—

'तो समझा अनिल ! मैं शोभा को आज ही ले जाता हूं ?'

'क्या ?' अनिल ने पूछा।

'आज रात को उसे मोटर में बैठा पास के किसी स्टेशन से गाड़ी पकड़ लूंगा।'

'पर ताऊजी ! अभी शोभा की स्थिति मुसाफिरी करने योग्य नहीं है।'

'बेटा ! स्त्रियों के रोग को बहुत महत्व नहीं देना चाहिये। फिर उसकी पूरी संभाल करने वाला उसका बाप मैं बैठा हूं न ? मुझे उसे थर्ड क्लास में थोड़े ही ले जाना है, सेकण्ड क्लास रिजर्व करा के.....'

'पर इतनी जल्दी क्या है ?'

'जल्दी क्या है ? इसको यहां रहने की भी आवश्यता क्या है ?'

'शोभा की तबीयत जहां तक बिल्कुल ठीक न हो, वहां तक उसे यहां से कहीं भी ले जाना ठीक नहीं हो सकता ?'

'पागल है पागल ! ऐसा भी हो सकता है !'

और हंसते हंसते ताऊ जी उठे और अनिल का हाथ खींचकर बोले— 'चल बेटा, देर होगी। रात तो होने लगी। घर पहुंचते साढ़े आठ- नौ होंगे और शोभा को तैयार करते-करते साढ़े नौ।'

न जाने क्यों अनिल से कुछ बोला नहीं गया। वह साफ-साफ कह देना चाहता था कि ताऊ जी ! शोभा को इस तरह भेजा नहीं जा सकता। वह अभी बिल्कुल स्वस्थ नहीं। फिर शिरीष बाबू के कहे बिना; उनकी सम्मति के बिना शोभा नहीं जा सकती और वह भी खुद शोभा को नहीं जाने देगा; पर न जाने क्यों अनिल संकोच और क्षोभ के कारण ताऊ जी से कुछ भी कह नहीं सका।

दोनों खेत छोड़कर, धूल से भरी हुई कच्ची सड़क पर आ पहुंचे थे। आकाश के तारों का क्षीण प्रकाश ग्राम और खेतों पर पड़ रहा था। गांव के छप्परों में से उठता हुआ धुवां अब भी दिखाई देता था और बछड़ों के रंभाने का स्वर भी किसी-किसी घर के आंगन में से आ रहा था।

थोड़ी देर में वे मोटर के पास आ गये। ताऊजी और अनिल पीछे की सीट में जम गये और मोटर उस ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर कूदती-उछलती चलने लगी।

अन्दर बैठे बैठे भी अनिल की इच्छा हुई—'कह डालूं कि ताऊ जी ! शोभा को आप लेजा नहीं सकेंगे।'

पर न जाने क्यों होठ तक आये हुये शब्द उसके मुंह में ही रह जाते थे और वह मन ही मन एक अकथ्य आकुलता का अनुभव करता था।

उसी समय इस ओर ताऊजी मन में अपनी सास के कहे हुये वाक्य याद कर रहे थे--'समझा राधे! छोकरी को लिए बिना आना ही मत! मोटर में रखकर ले ही जाना साथ! अनिल-फनिल जैसे छोकरों को तो आंख की एक चमक ही दिखा देना—समझा न राधे?'

थोड़ी देर में तो मोरों के नाद और बरगद के पक्षियों की फड़-फड़ाहट ने सूचना दे दी कि महादेवजी का मन्दिर आ गया है। मोटर रुकी।

ताऊजी और अनिल उतर कर शोभा की कोठरी की ओर जाने लगे, 'समझा न अनिल?' ताऊजी जरा जोर से बोले। अनिल समझा नहीं कि क्या समझना था।

तभी तो सामने से आकर करुणा ने कहा—'अनिल बाबू! इस तरफ के घर में आओ न? शोभा को नींद आ गई है।'

ताऊजी ने अपनी मूंछ और दाढ़ी के गुच्छे में से एक तीक्ष्ण वेधक दृष्टि से करुणा को देखा—फिर बोले--

'हां बेटा! चलो, उठेगी तब ही वहां जायंगे।'

दोनों बीच के कमरे में आकर, उसमें बिछी हुई एक खाट पर बैठ गये।

पलंग पर एक शतरंजी बिछी थी और ऊपर थी सफेद चादर! गंगा की तरफ वाली खिड़की खुली थी, जिसमें से शीतल हवा आ रही थी।

टीन की चिमनी का मन्द प्रकाश उस कोठरी में हो रहा था। ताऊजी ने देखा कि घर की साज-सजावट साधारण है। एक कोने में चार-पांच घड़े हैं। एक तरफ खूंटी पर दो साड़ियां और लहंगा लटक रहा है, एक ओर खाट बिछी है, जिसपर वे दोनों बैठे हैं और जमीन गोबर से लिपी हुई है।

ताऊजी ने अधिक प्रश्न नहीं पूछे। खिड़की में आकर कल-कल निनाद करती बहती गंगा की ओर मुंह करके कुछ विचारते खड़े रहे।

इस अवसर का लाभ उठा अनिल ने कहा—'ताऊजी! मैं अभी आता हूं।'

'अच्छा!' कहकर ताऊजी पलंग पर आकर बैठ गये।

अनिल बाहर चला गया। वहां सामने ही उसे करुणा मिली।

'क्यों अनिल बाबू!'

'मैं तुम्हारे पास ही आता था करुणा!'

'क्यों?'

'खास बात करनी है।'

'क्या?'

'ये ताऊजी हैं! शोभा को लेने आये हैं।'

'शोभा को?'

'हां! अभी ही मोटर में डालकर ले जाना चाहते हैं।'

'कहां?'

'आगरा।'

'ऐसा, कैसे हो सकता है?'

'मैं भी यही कहता हूं।'

'चलो तुम राधा के पास।'

दोनों राधा के पास गये।

'राधा जीजी!' करुणा बोली- 'शोभा के पिता आये हैं। वे शोभा को आज ही रात में ले जाना चाहते हैं।'

'ऐसा तो कैसे हो सकता है अनिल बाबू?' अनिल की तरफ देख राधा ने कहा।

'तुम तो इनसे कहदो कि शोभा की स्थिति ठीक नहीं। जब तक ठीक नहीं होगी तबतक यह कहीं जाने की नहीं।'

'बिल्कुल ठीक है।' करुणा बोली।

'मैं भी ऐसा ही मानता हूं।' अनिल ने भी अपनी सम्मति दी।

'मानने से कुछ नहीं होता, तुम उनको साफ कहदो।'

'अच्छा!'

अनिल ताऊजी के पास आया। उस समय वे खाट पर लेट गये थे।

'क्यों बेटा! 'अनिल को भीतर आते देखकर, ताऊजी बोल उठे—'शोभा जागी क्या?'

'नहीं जी।'

'तो बेटा, उसे उठाओ। फिर तैयार होने में देर लगेगी।'

'ताऊजी! जल्दी क्या है? अभी भोजन तैयार होता है.....।'

'नहीं...नहीं...नहीं बेटा! ये सब माथापच्ची रहने दे। मुझे भूख ही नहीं और फिर उपवास है। एक प्याला दूध होगा तो काम चल जायगा; और फिर गांव जैसा दूध कहां मिलेगा? शोभा को भी दूध-वूध जो देना हो दे दो।'

'जी!'

ऐसा कहकर अनिल उठा! उसे लगा अब तो साफ-साफ ताऊजी से कह ही देना चाहिये कि ताऊजी! शोभा को तुम लेजा नहीं सकोगे। शब्द मुंह तक आये; पर कहा नहीं गया और वह वहां से शोभा की कोठरी की तरफ चल दिया। आधे से ही वापस लौटा; कमरे तक आया और फिर शोभा की कोठरी की तरफ चल दिया।

एक पुराना लालटेन उस कोठरी में जल रहा था। शोभा खाट में पड़ी थी। अनिल उसके पास गया और उसके माथे के पास बैठ, मन्द स्वर में बोला-'शोभा!'

'दादा!'

'जगती है क्या?'

'हां।'

थोड़ी देर तक अनिल वहीं बैठा रहा।

अनु० मृदुल] (क्रमशः)

नयी भारत सरकार में बैंकों की सुरक्षा

विशेषतः

ज्वाला बैंक लि.

में है

प्रधान कार्यालयः—माल, आगरा

संस्थापित १९२३

शाखाएं:——————समस्त भारत वर्ष में

इम्पीरियल बैंक तथा अलाहाबाद बैंक के पश्चात यह युक्त प्रान्त तथा मध्य प्रान्त का तीसरा बड़ा बैंक है

चालू मूलधन १,०४००,०००)

इमारतें तथा फर्नीचर आदि में लड़ाई से पहले के रेट से लगे हुए अन्य अनेक पावनों (ASSETS) के अलावा गिल्ट एण्ड सिक्योरिटियों में लगा हुआ पावना १,०७००,०००)

सुप्रबन्ध और सुरक्षा की दृष्टि से भारतवर्ष का सबसे श्रेष्ठ और विश्वसनीय बैंक

प्रमेह रोग समाप्त करो

७ दिन में आराम

यदि किसी पुरुष को पेशाब करने के पहले या पेशाब करने के बाद सफेद गंगका पानी आता हो तो यह बहुत भयंकर बात है। इसे प्रमेह का रोग कहते हैं। धीरे-धीरे यह रोग बढ़ जाता है तो आदमी पौरुषहीन हो जाता है। उसकी शक्ति समाप्त हो जाती है। इस वास्ते जिन पुरुषों को यह शिकायत हो या स्वप्नदोष होता हो तो इस भयंकर रोग से लापरवाही नहीं करनी चाहिये।

प्रमेह का रोग केवल ७ दिन में नष्ट हो जाता है

और केवल ३॥) खर्च होंगे। "जौहरे आजम" इस रोग के लिये अक्सीर प्रमाणित होती है। केवल एक शीशी दवा "जौहरे आजम" से बड़े बड़े पुराने रोगी स्वस्थ हो गए। "जौहरे आजम" प्रमेह के रोग का सबसे अच्छा इलाज है। जिन लोगों को आवश्यकता हो—

मैनेजर, जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४ दिल्ली

के पते पर पत्र लिखकर "जौहरे आजम" की एक शीशी वी० पी० द्वारा मंगा लें। एक शीशी का मूल्य ३॥) तीन रुपया आठ आना है पार्सल का खर्च ॥-) लगेगा।

[टेलीफोन नं० ६२६८]

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पूर्वीय अफ्रीका में आर्यसमाज

[श्री धर्मेन्द्रनाथ वेदालंकार, नैरोबी]

स्वदेश से मीलों दूर सगे सम्बन्धियों और जात-बिरादरी के बन्धन और भय से मुक्त होकर भारतीय जब पूर्वी अफ्रीका में पहुंचे, तो उनमें से अनेक प्रलोभनों के शिकार हो गये। वे दृढ़ आचार के लोग न थे इसलिये ज्यों ही थोड़ी आजादी मिली और पैसा हाथ में आया तो वे शराब और मांस का खुला व्यवहार करने लगे। जुए का बाजार भी गर्म था। देश से एक दो नर्तकियां भी आईं, जो खूब पैसा बटोर कर चलती बनीं। जब ऋषि दयानन्द के अनुयायी आर्यसमाजी यहां पहुंचे तो इस अनाचार और अधोगति को देखकर उनके अन्तस्तल को चोट लगी। उन्होंने सब कठिनाइयों का सामना करते हुए इन कुप्रथाओं का बल-पूर्वक खण्डन प्रारम्भ किया। सन् १९०३ में नैरोबी में सब से प्रथम आर्यसमाज की स्थापना हुई। इसके बाद अन्य स्थानों पर भी आर्यसमाज मन्दिरों की आधार शिलाएं रक्खी गईं। आर्यसमाज का सदस्य निर्वाचित होने के लिये सदाचार-सम्बन्धी नियमों का पालन आवश्यक है, इसलिये यहां शुरु से वे ही सदस्य लिये जाते रहे हैं, जो मांस-मदिरा का सेवन न करते हों। ईसाइयत और इस्लाम दोनों ही इस दिशा में वैदिक धर्म से शिथिल हैं। वे अपने अनुयायियों को इन व्यसनों से नहीं बचा सके। भारतीयों का सदाचार सम्बन्धी माप दण्ड ऊंचा करने के लिये आर्यसमाज का नाम इस भूखण्ड के इतिहास में आदर और गौरव से स्मरण किया जावेगा। यूरोपियन भी शराब पीते हैं और अफ्रीकन 'टेम्बू' (शराब का सुहेली नाम)। आर्यसमाज ने अफ्रीकन प्रजा में भी वैदिक धर्म का सन्देश फैलाने के लिये एक पाठशाला की स्थापना की थी, जो सरकार की आंखों में खटकने लगी और बन्द करनी पड़ी। भारतवर्ष से पं० लेखरामजी, प्रो० रामदेवजी, और पं० लोकमणिजी, जैसे उच्चकोटि के प्रचारक आये तो उनके अंग्रेजी के व्याख्यानों ने यूरोपियनों पर पर्याप्त प्रभाव डाला। कुछ यूरोपियनों ने अपनी 'विल' में यह भी लिखा कि हमारा शव हिन्दू रीति से जलाया जावे। आर्यसमाज ने पूर्ण वैदिक रीति से ये संस्कार सम्पन्न करवाये। अफ्रीकनों के साथ आर्यसमाज का सम्पर्क नहीं के बराबर है। अतः पूर्वी अफ्रीका में आर्यसमाज का इतिहास भारतीय प्रजा तक ही सीमित है। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का ध्येय रखने रहने ऋषि के प्रवासी पुत्र इसी त्रुटि को अनुभव करते हैं।

चौमुखी कार्य

अब अफ्रीका में भारतीयों की अनेक संस्थाएं यथा इण्डियन एसोसियेशन, पूर्वी अफ्रीका भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस हो गई है, परन्तु प्रारम्भ में जब आर्यसमाज ही एकमात्र संस्था थी, तो यह भारतीयों की चौमुखी समस्याओं को हल करने का प्रयत्न करती थी। आर्यसमाज नैरोबी की ओर से एक पर्व मनाया जा रहा था। उस में पूर्वी अफ्रीका के निष्ठावान् एवं वयोवृद्ध आर्यसमाजी नेता श्री म० बद्रीनाथजी ने निम्न शब्द कहे थे — 'आर्यसमाज राजा और प्रजा दोनों के कल्याण के लिये है। यदि राजा कोई अनुचित काम करेगा, तो आर्यसमाज उसे भी सावधान किये बिना न रहेगी। इन शब्दों से स्थानीय सरकारी क्षेत्र में काफी हलचल मची। आर्यसमाज रेलवे और सरकारी कर्मचारियों की शिकायतें भी सरकार के सामने रखती रही। इस समय अन्य संस्थाएं इस काम के लिये ही है, अतः आर्यसमाज का कार्यक्षेत्र धार्मिक और सामाजिक रह गया है।

कन्या शिक्षा

इस उपनिवेश में कन्या-शिक्षा के श्रीगणेश का श्रेय आर्यसमाज को है। दारे सलाम और नैरोबी की कन्या-पाठशालाएं भारत की कई प्रसिद्ध कन्या-पाठशालाओं को मात करती हैं। जब अन्य धर्मावलम्बियों की अपनी कन्या-पाठशालाएं न थीं, तो मुसलमान सिक्ख और गोअन कन्याएं भी आर्यसमाज की कन्या पाठशालाओं में विद्या प्राप्त किया करती थीं। इन पाठशालाओं के द्वारा स्त्री-जाति में वैदिक धर्म के प्रचार को पुष्कल सहायता मिली है। जहां-जहां भी इन पाठशालाओं की छाप्राएं गई हैं वहां-वहां वे आर्यसमाज का सन्देश सुनाती रही हैं।

हिन्दी प्रचार

आर्यसमाज जन्मकाल से ही हिन्दी का प्रबल पोषक रहा है। इस उपनिवेश में जो भारतीय आये, उनमें से अधिकांश उर्दू और गुजराती ही जानते थे। परन्तु आर्यसमाज ने यहां भी अपनी कन्याशालाओं में हिन्दी के माध्यम के द्वारा हिन्दी की शिक्षा दी। पूर्वी अफ्रीका की आर्य प्रतिनिधिसभा हिन्दी को पाठ्यक्रम में स्थान दिलवाने के लिये सरकारी शिक्षा विभाग के अधिकारियों को प्रेरित करती रही है। शिक्षा विभाग के एक अधिकारी ने भारतीय अध्यापकों की सभा में भाषण देते हुए कहा था 'कुछ ही अर्से में इस उपनिवेश में घर घर और बाजार में अंग्रेजी ही बोली जावेगी।' आर्यसमाज शुरू से ही इस चैलेंज का जवाब देने की तैयारी करता रहा है। समस्त हिन्दू संस्थाओं को निमन्त्रित कर भिन्न-भिन्न अवसरों पर आर्यसमाजियों ने हिन्दी सम्मेलनों का आयोजन किया है और यह मांग की है कि भारतीय बालकों को अपनी संस्कृति और सभ्यता से परिचित कराने के लिये उन्हें अपनी मातृभाषा हिन्दी की शिक्षा अवश्य दी जानी चाहिये। अधिकारियों ने पहले तो कोरा जवाब दिया, पर बहुत बल देने पर स्थानीय सरकारी प्रारंभिक परीक्षा में इसे एक परीक्षा विषय के रूप में स्थान दे दिया है। आर्यसमाज की मांग तो यह है कि प्रथम श्रेणी से सीनियर केम्ब्रिज तक हिन्दी भाषा की शिक्षा देने का समुचित प्रबन्ध सरकारी पाठशालाओं में हो। आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से 'प्रतिनिधि' नाम का त्रैमासिक (गुजराती हिन्दी और अंग्रेजी में) प्रतिमास प्रकाशित होता है।

आर्यसमाज द्वारा संचालित गुरुकुल और डी० ए० वी० कालिज राष्ट्रीयता के केन्द्र रहे हैं। १९१४ के महायुद्ध के दिनों में कई सैनिक अधिकारियों ने मुम्बासा में आर्यसमाज पर छापा मारा और उसका मन्दिर जब्त कर लिया। आर्यसमाजी कार्यकर्ता -- श्री विशनदासजी रलाराम शर्मा तथा लालचन्दजी शर्मा जेल में ठूंस दिए गये और साल भर सरकार के मेहमान रहे। कन्या पाठशालाओं के द्वारा भी राष्ट्रीय भावना का प्रचार किया जाता है तथा राष्ट्रीय नेताओं के जन्म-दिवस आर्यसमाज की ओर से मनाये जाते हैं।

अन्य प्रवृत्तियां

गुरुकुल खोलने के उद्देश्य से यहां श्रद्धानन्द ब्रह्मचर्याश्रम की स्थापना भी की गई। नैरोबी में इस आश्रम की अपनी बड़ी भव्य इमारत है, जिसके साथ कई एकड़ भूमि भी है। आर्यसमाज ने देश से उद्योग व्यायाम विशारदों को बुलाकर आश्रम के विद्यार्थियों को जिमनास्टिक सिखाने का प्रबंध किया। पाश्चात्य सभ्यता मंदिरों और गिर्जों के स्थान पर क्लबों की पूजा सिखाती है। आर्यसमाज इस दिशा में भी जागरूक है और वह यहां भी क्लबों के स्थान पर व्यायाम शालाओं को ही प्रोत्साहन देता है। दारेसलाम की आर्यसमाज की अध्यक्षता में कार्य करने वाली तथा हनुमान व्यायामशाला पूर्वी अफ्रीका की दर्शनीय वस्तुओं में से है। सैंकड़ों आदमी यहां प्रति दिन सायंकाल व्यायाम करने के लिये एकत्रित होते हैं। आर्यसमाज नैरोबी की ओर से पिछले कई वर्षों से ऋषिबोधोत्सव के पुनीत अवसर पर खेलों और शारीरिक प्रदर्शनों का आयोजन होता है, जिसमें आबाल वृद्ध भारतीय नर नारी भाग लेते हैं।

वैदिक संस्कारों के प्रचार करने और भारत के साथ सांस्कृतिक सम्बन्ध बनाये रखने में भी आर्यसमाज सतत प्रयत्न शील है। जात कर्म, नाम करण, चूड़ा कर्म, दीक्षान्त और विवाह संस्कार इत्यादि पूर्ण वैदिक रीति से कराये जाते हैं। कई अन्य धर्मावलम्बियों की शुद्धि आर्य समाज की ओर से कराई जा चुकी है। स्त्रियों के पुनःविवाह का प्रसार करने के समय प्रारम्भ में आर्य समाजियों को लोक-विरोध का सामना करना पड़ा। परन्तु इस पुण्य कार्य को सम्पन्न कर आर्य समाज ने अनेक महिलाओं का जीवन सुखी बनाया है। आर्य समाज नैरोबी की ओर से पिछले ३-४ वर्षों से 'वेद-पारायण' यज्ञ का आयोजन बड़ी सफलता से हो रहा है।

किसी भी देश के प्रवासी अपनी मातृ-भूमि के साथ जीवित सम्बन्ध बनाये रखने को आतुर रहते हैं; क्योंकि स्वदेश के भाग्य के साथ इन उन का भाग्य ओत-प्रोत होता है। आर्य समाज ने भी देश की आर्य सामाजिक तथा राष्ट्रीय प्रगति से अपने को सम्बद्ध रखने का प्रशंसनीय प्रयत्न किया है। जब यहां वालों पर स्थानीय संस्थाओं का बोझ न था, तो संस्कारों तथा शुभ अवसरों के उपलक्ष में गुरुकुल कांगड़ी और डी. ए. वी. कालिज के लिये हजारों शिलिंग दान एकत्र हो जाते थे। गुरुकुल कांगड़ी, गुरुकुल सूपा इत्यादि के डेपुटेशन जब-जब भी यहां धन संग्रहार्थ आये हैं तो यहां वालों ने खुले दिल से उनकी सहायता की है। हैदराबाद सत्याग्रह के लिये केवल आर्य समाज नैरोबी की ओर से प्रति मास २००० शि० भेजे जाते रहे। मुम्बासा विसुमुनकोरो कम्पाला तथा अन्य आर्य समाजों ने अपनी ओर से पुष्कल धनराशि भेजी। आर्य समाज दारे सलाम ने आर्थिक सहायता देने के अतिरिक्त इस ऐतिहासिक सत्याग्रह की सैकड़ों प्रतियां मंगवाकर प्रचारार्थ बिना मूल्य वितरण कीं। बंग-दुर्भिक्ष, 'नेहरू वैली' आदि के लिये भी आर्य समाज ने अच्छी धन-राशि एकत्रित कर देश में भेजी। सार्वदेशिक सभा की ओर से जब यह सूचना मिली कि दक्षिण भारत में मुसलमान पैसे के लालच से तथा कथित अछूतों को बड़ी तेजी से धर्मान्तरित कर रहे हैं और सभा इसके प्रतिकार के लिये प्रचार केन्द्र स्थापित करना चाहती है तो आ० प्र० सभा पू० अफ्रीका ने विज्ञप्ति पत्रिका द्वारा समस्त आर्य समाजों को आर्थिक सहायता के लिये आदेश दिया। इस प्रयोजन के लिये पुष्कल धन एकत्रित कर सार्वदेशिक सभा को समर्पण किया गया।

संस्थाओं या आन्दोलनों के इतिहास की आत्मा तो कुछ मस्ताने व्यक्ति ही होते

हैं। पूर्वी अफ्रीका में वैदिक धर्म का नाद गुंजाने वाले कितने ही महानुभावों का नाम लिया जा सकता है। इन सब में से दो व्यक्तियों के नाम तो आर्य समाज के पर्याय वाची समझे जाते हैं। वे हैं श्री म० बद्रीनाथ जी और श्री पं० सत्यपाल जी। आर्य समाज के पास कोई भजनीक न था तो म० बद्रीनाथ जी और म० मथुरादास जी ने स्वयं भजनों का अभ्यास किया। म० बद्रीनाथ जी के पास भजन संग्रहों की सौ से भी अधिक कापियां हैं। वे आसन और प्राणायाम का अभ्यास करते हैं तथा ७५ वर्ष की आयु में भी पर्याप्त स्वस्थ हैं। वे अपने ही खर्च पर प्रचार के लिये पूर्वी अफ्रीका के एक कोने से दूसरे कोने तक पहुंचते हैं। श्री पं० सत्यपाल जी के वैयक्तिक चरित्र और प्रभावशाली प्रवचनों का आकर्षण भी आर्य समाज को अधिक लोक प्रिय बनाने में सहायक हुआ है। वे गरीब-अमीर सब के घर में जा पहुंचते हैं। उन्होंने अपनी सुन्दर सलाह से कई गृहस्थियों की उलझनें सुलझाई हैं। वे बाल ब्रह्मचारी हैं और गृहस्थी न होते हुए भी सब परिवारों को सुख दुःख में हिस्सा बटाते हैं। इस ठिगने व्यक्ति के व्याख्यानों को जनता मन्त्र मुग्ध होकर सुनती है। स्थानाभाव से अन्य व्यक्तियों के विषय में लिखना चाहता हुआ भी लेखक नहीं लिख सकता।

यहां आर्य समाज के लिये अब भी विशाल कार्य क्षेत्र है। आवश्यकता है प्रचार वृत्ति वाले उपदेशकों की, जो स्थान-स्थान पर आर्य समाज के आन्दोलन में जीवन फूंक दें। अफ्रीकनों और यूरोपियनों के साथ हमारा कोई भी सांस्कृतिक या सामाजिक सम्बन्ध नहीं है। भारत के भाग्योदय के साथ यह आवश्यक हो गया है कि हम अपनी सांस्कृतिक उच्चता अ० भारतीयों के हृदयों पर अंकित कर सकें। सार्वदेशिक सभा की ओर से एक विदेश प्रचार विभाग स्थापित होना चाहिये जो इस कार्य के लिये योजनाएं तैयार करे, विदेश प्रचार को सुव्यवस्थित रूप दे तथा विदेश की आर्य समाजों को कार्य क्रम की रूप रेखा का निर्देश करे। सार्वदेशिक सभा की ओर से एक अंग्रेजी की मासिक पत्रिका अवश्य प्रकाशित हो, जो कम से कम 'वैदिक मैगजीन के स्टेण्डर्ड की अवश्य हो। आर्य समाज के सिद्धांतों और कार्य प्रणाली के विषय में सुहेली में ट्रैक्ट प्रकाशित कर बिना मूल्य वितरण किये जावें।

काढ़ने की मशीन

यह कसीदा काढ़ने की मशीन (Embriodery machine) हाल में ही ईजाद हुई है जो फूल, पत्ते बेल, सीन सीनरी आदि कपड़े पर बड़ी आसानी से काढ़ती है। स्त्री और लड़कियों के खास मतलब की चीज। मूल्य मय ४ सुइयों के ३) खर्च ॥≡)

पता—दीन ब्रादर्स, अलीगढ़ नं० ४

५००) इनाम
प्रेम वशीकरण यन्त्र

इस यंत्र को अपने पास रक्खें, आप की प्रेयसी कैसी ही कठोर और जिद्दी क्यों न हो वह आपके काबू में हो जावेगी। प्रेम पथ के सभी कष्टों को दूर कर प्रेम सम्बन्ध जोड़ने में मदद करता है। एक बार परीक्षा करें—झूठी साबित करने वाले को ५००) इनाम। मूल्य प्रति यन्त्र २) तीन का ५) वी० पी० खर्च अलग।

पता—

एम० एल० शाह साहब,

पोस्ट बक्स २४३ कानपुर।

हांगकांग चीन में बनी हुई

संसार में स्तम्भन की केवल पुरुषों के लगाने की एक अद्भुत औषधि।

—सुइ फन सी—

Solution

पुरुषों के लिए केवल बाहर से व्यवहार करने लायक रुकावट की संसार में अद्वितीय तथा अद्भुत औषधि है। लाखों गृहस्थ इसकी मांग कर रहे हैं। जिन पुरुषों का शीघ्र ही वीर्य पतन हो जाता है, उनके लिये यह दवा बेजोड़ है। इस के लगाने से रुकावट सम्बन्धी अपूर्व शक्ति तथा सामर्थ्य प्राप्त होता है। इस दवा की एक शीशी बहुत दिनों तक चलती है।

मूल्य प्रति शीशी रुपये १२) डाक. ख. ॥≡) अलग।

विस्तृत सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये।

चाइनीज मेडिकल स्टोर

नया बाजार——देहली।

हैडआफिस—२८, एपोलोस्ट्रीट फोर्ट, बम्बई।
ब्रांचें—१२, डलहौजी स्क्वायर, कलकत्ता,
और रीची रोड, अहमदाबाद।

——सेलिंग एजेन्ट्स——

दी नेशनल मेडिकल, स्टोर्स--आगरा।
दी जनरल मेडिकल स्टोर्स—अजमेर
दी एलाईड केमिस्टस—जयपुर।
श्री सरस्वती स्टोर्स—बीकानेर।
मे. गिरधरदास जानकीवल्लभ---उदयपुर।
वैद्यराज विश्वनाथ त्रिवेदी-मुजफ्फरनगर।
मेसर्स मोहन ब्रादर्स—लश्कर।
मेसर्स खरे ब्रदर्स—उरई।
मे० गोपीलाल-चिरंजीलाल-श्रीमाधोपुर।
दी गुजरात मेडिकल स्टोर्स—कानपुर।
दी वर्मा मेडिकल स्टोर्स---शिकोहाबाद।
मे० धारीवाल ब्रादर्स—जोधपुर।

वह पुरुष

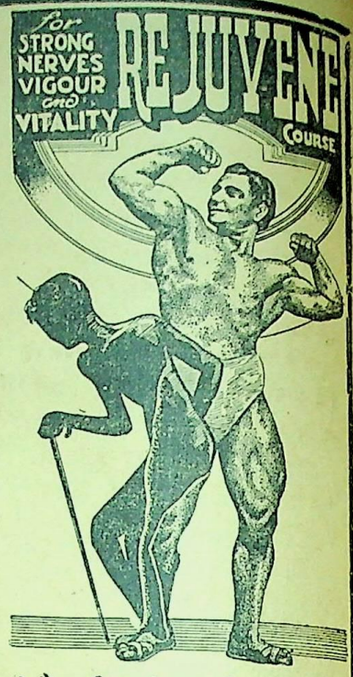

जो शक्तिहीन पुरुष किसी भी कारण से शरीर बल नष्ट कर चुके हों और उनके जीवन को घुन लग चुका हो और विशेष दुख से समय व्यतीत कर रहे हों, ऐसे दुखी पुरुषों को शक्ति प्रदान करने का सुअवसर यह है कि 'रिजोवीन' औषधि को १६ दिन तक सेवन कर लें, उनकी गई हुई शक्ति फिर से लौट आयेगी और अपना समय सुख से आनन्द प्राप्त अवश्य करेंगे। शरीर के प्रत्येक बलहीन भाग की यह दवा अमृत तुल्य है और काया को फिर से बदल कर नया जीवन देती है। सारे भारत-वर्ष में इस औषधि का प्रचार है और प्रत्येक वर्ष लाखों दुखी पुरुष इस औषधि द्वारा आनन्द प्राप्त कर चुके हैं। शक्तिशाली पुरुष भी यह दवा सेवन करके अपने जीवन के आनन्द को बढ़ा सकते हैं और यह दवा किसी भी ऋतु में सेवन की जा सकती है। इस कोर्स में दो दवायें होती हैं, एक खाने की, दूसरे मलने की। पूरे कोर्स का मूल्य ५) रुपये, डाक खर्च ॥≡) अलग।

अवसीरी दवाखाना कलां महल पो० नं० ४१ (V.W.D.) देहली।

दिल्ली में चांदनी चौक, फतेहपुरी बाजार के तमाम औषधि विक्रेता यह दवा बेचते हैं।

पञ्जाब युनिवर्सिटी द्वारा नियत
हिन्दी रत्न, भूषण तथा प्रभाकर
हिन्दी परीक्षाओं की
पाठ्य पुस्तकें
तथा सर्वोत्तम सहायक पुस्तकों (कुञ्जियों)
के लिये
स्मरण रखिये। सूचीपत्र मुफ्त

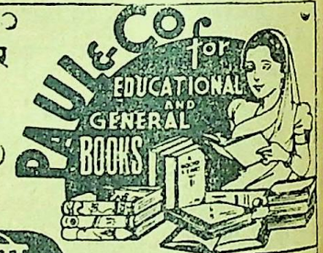

पाल एण्ड कम्पनी
हास्पिटल रोड, अनारकली लाहौर॥
HOSPITAL ROAD, ANARKALI
LAHORE

फोटो कैमरा मुफ्त

यह कैमरा सुन्दर नमूने का सफाई से बना हुआ बिना किसी कष्ट के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है। इसका प्रयोग सरल है यही सही काम करता है और शौकिया काम लेने वाले व व्यवसायी दोनों ही इससे काम ले सकते हैं। यह कीमती मनोहर कैमरों में से है, जो थोड़े ही मूल्य का है। यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और रुपया कमावें। मूल्य बक्स कैमरा पूरा, तमाम फिल्म कार्ड, कैमीकल, सरल प्रयोग सहित नं० ५०१ कीमत ५॥।) वेस्ट, क्वालिटी, नं० ५४५ कीमत ७।), डी लक्स एक्स्ट्रा स्पेशल क्वालिटी नं० ५५० कीमत ६॥), फोल्डिंग नं० १००, कीमत ४५), पैकिंग व डाक व्यय १=) नोट — एक समय में ६ कैमरों के ग्राहक को कैमरा नं० ५५० मुफ्त। स्टाक सीमित है। अभी आर्डर दें अथवा निराश होना पड़ेगा। माल पसन्द न होने पर कीमत वापिस।

इम्पीरियलचैम्बर आफ साईन्स (V.W.D.) पो० बौ० ६१, लाहौर

Imperial Chamber of Science, (V.W.D.) P. B. 61, Lahore.

Digitized by eGangotri

संघर्ष की गूंज

[पृष्ठ १० का शेष]

दादा बोला नहीं। उसने नेताओं के बुत-बिकेताओं की ओर देखा। भीड़ उतनी ही थी दुकान के आगे। पर खरीदने की ओर किसी की रुचि न थी।

दो क्षण निरख उसे शांति हुई।

श्यामो ने पूछा, 'क्यों कहता था न दादा। नेताजी की मूरत बनाते तो कैसे नहीं बिकती ? क्यों न मां !'

दादा ने कहा, 'कहां वे भी तो नहीं बिक रहे हैं मैं बराबर उस ओर देख रहा हूं। पता नहीं आज मन्दा क्यों है ?'

पत्नी ने कहा, 'लोग कह रहे थे कि कि मुसलमान लड़ रहे हैं कहीं। दिवाली मत मनाओ। दिये मत जलाओ।'

पति ने कहा, 'कहीं बरस बरस का त्यौहार रुका है इन झगड़ों से पगली। जहां हुआ होगा, होगा। यहां तो कुछ नहीं होता। और यदि दिवाली नहीं मनेगी तो हम लोग क्या करेंगे ?'

पत्नी बोली नहीं। पर पति ने सोचा कहां मन रही है दिवाली। एक मूर्ति भी तो नहीं बिकी मेरी।

पत्नी ने कहा, 'लच्छी की दादी के रुपये.....।'

एक वेदना जीवनलाल के प्राणों में उठ खड़ी हुई। रुपये देने हैं। उसने जीवन से मुख फेर लेना चाहा।

वह चीख पड़ा, 'हां देने हैं। मैं दूंगा तू क्यों मरी जाती है।'

पत्नी चुप रही। पति ने कुछ शांत होकर कहा, 'श्यामो को ले जा, घर बैठ। मैं सामान लेकर आ जाऊंगा।'

श्यामो सहम गया। उठा मां के साथ जाने को। तभी उसके मुख से निकला, 'दादा, तुमने कहा था कि मिठा.....।'

मिठाई वह पूरा उच्चार भी न पाया था कि दादा चीख उठा, 'जायेगा नहीं यहां से, मारते मारते दम निकाल दूंगा, पाजी।'

श्यामो और भी मां के निकट चला गया। जीवनलाल कांप उठा। पत्नी ने पति की ओर देखा घृणा से, क्रोध से, विस्मय से और दया से एक ही साथ। पुत्र से कहा, 'चल श्यामो दादा की तबियत ठीक नहीं है।'

गद्दी पर बैठा जीवनलाल क्रोध से कांपता रहा। सारा बाजार उसकी दृष्टि से ओझल हो गया। सोलह रुपये चौदह आने अग्नि की शलाख बन उसके अन्तर का स्पर्श करने बढ़े।

गाहक ने पूछा, 'यह शिवपार्वती कितने के हैं रे ?' इस सम्बोधन पर उसकी भृकुटि चढ़ी। पर उसने उत्तर दिया, डेढ़ रुपये को।'

उसके स्वर में प्रार्थना घुली थी। वह विनती कर रहा था। खरीद लीजिये चाचूजी ! केवल डेढ़ रुपये के हैं ये। कितनी कला है इनमें। खरीद लीजिये। जरूर खरीद लीजिये। मैं आभारी हूंगा। हम कुम्हार हैं। आप लोगों के दास हैं। खरीद लीजिये।

पर गाहक ने मुख बिचकाया: डेढ़ रुपया !'

पीछे किसी ने कहा, 'इन चिताओं की अग्नि दावानल है वह क्यों नहीं बुझेगी।'

दूसरे ने कहा, 'नोआखाली में.....।'

गाहक का मुख सूखते जीवनलाल ने देखा।

उसने कैसे कलाकार से क्षमा मांगी : 'नहीं भई, मैं आज तुम्हारा शिवपार्वती नहीं खरीद सकता।'

और तब जीवनलाल को संदेह हुआ कि उसकी मूर्तियों के सामने यह बत्ती ठीक नहीं है। प्रकाश टेढ़ा पड़ता है। तभी तो मूर्ति गाहक के मन में ठीक नहीं बैठती। उसने बल्ब सरकाया और बैठकर राम नाम जप प्रारम्भ किया। हे भगवान, गाहक भेज; गाहक भेज ! नाना गाहकों की कल्पना वह करता रहा।

राम राम करके उसने रात्रि के १ बजे तक पांच रुपये की मूर्तियां बेचीं; दुकानदार चल दिये, तब भी वह दुकान लिये बैठा रहा।

बिजली वाले लाला ने कहा, 'जीवन उठ न। मैं बत्ती बुझाता हूं।'

'लाला !' उसने प्रार्थना की।

'अरे, गाहक कहां है, पगले !'

और तब लाला ने बत्ती बुझा दी। मूर्तियां धुंधली पड़ गईं। सड़क सुनसान हो चली थी। एक रुपया लाला को बिजली का दे जीवन घर आया।

पत्नी ने मूर्तियां सिर पर से उतरवाते हुए पूछा, 'कितने की बेची ?'

'चार रुपये की।'

'बस !'

'देखो मैं कहती थी.....।'

'चुप नहीं रहेगी तू ?'

और तब वह एकदम चुप हो गई। बरस बरस के दिन घर में कलह ठीक नहीं। पर मन में कहती गई : 'चुप कैसे रहूं ताने तो मुझे सहने पड़ेंगे।'

एक अत्यन्त सुन्दर लक्ष्मी के चरणों में उसने चारों रुपये रख दिये, और पूजा करने बैठ गया।

वह शीघ्र पूजा समाप्त कर देना चाहता था। पत्नी स्तब्ध बैठी थी। विद्रोही वाक्य उसके कण्ठ और हृदय के बीच घुमड़ कर रह जाते थे। आंखों में झांक-झांक कर आंसू लौट जाते थे। वह रुपयों को रोली से चर्चित करने जा ही रहा था कि ऊंघता हुआ श्यामो बीच में बोल उठा। 'दादा मिठाई नहीं लाये, तुम कहते थे.....।'

तिलक के पहिले ही दादा का हाथ रुक गया। वह भुन गया।

'देता हूं मिठाई तुझे, पाजी कहीं के, 'उसने दांत पीसे। 'ले मिठाई, ले मिठाई। ऐसी मिठाई चाहिये थी तो किसी राजा के यहां जन्मा होता, ले मिठाई !'

श्यामो तिलमिला गया। पत्नी ने कहा 'क्यों मार रहे हो उसे त्यौहार के दिन ?'

'क्यों क्या तेरे भी जी में है।'

पत्नी बोली नहीं।

'जा सो !' पुत्र को पिता ने आज्ञा दी श्यामो जाकर लेट गया। 'खबरदार जो रोया।'

पर रुदन उसके भीतर नहीं समा रहा था। सिसकन के झोंके से उसका शरीर हिल हिल उठता था।

'चुप नहीं हुआ !'

पत्नी ने आंखों का पानी पोंछा। पति ने यंत्रवत् पूजा की क्रिया सम्पादित की।

सोते हुए श्यामो के ललाट पर जाकर तिलक लगाया। 'पत्नी से कहा, तू भी सो जा.....।'

पत्नी बोली 'आज लक्ष्मीका जुवा..।'

'सुना नहीं ? सोजा !' और उसने द्वार बन्द कर लिया।

पत्नी लेट गई। लक्ष्मी के चरणों में शीश रखकर जीवनलाल भी पड़ रहा। पर वह सो न सका। निद्रा उसके निकट आते जैसे शंकित होती थी। वह करवट बदलता रहा। सोचता रहा पर स्पष्ट कुछ सोच न सका। लगा कि वह लेटा न रह सकेगा। वह बैठा। मस्तक को सहलाया, उसे जोर से दबाया और फिर लेट गया। दूसरे क्षण ही पुनः उठकर बैठ गया। बैठा। पर बैठा भी न रह सका।

वह उठा, और डंडा लेकर अपनी मूर्तियों की ओर चला। वह तोड़ डालेगा इन्हें। तोड़े बिना मानेगा नहीं। पर उनके निकट जाकर उसके हाथों की पेशियां शिथिल पड़ गईं। वह विवश हो गया। उसने डंडा भूमि पर डाल दिया और कांपता लक्ष्मी की मूर्ति के निकट लौट आया।

टहलने का प्रयत्न किया। पाया कि शांति यहां भी नहीं है उसे। वह श्यामों की ओर चल पड़ा। उसके निकट जाकर एक क्षण ठिठका। लक्ष्मी की मूर्ति के निकट आलोकमय दीपक को निहारा और फिर श्यामों के निकट घुटने के बल बैठ गया। श्यामों सो रहा था, पर निद्रा में भी सिसक रहा था। अश्रुओं के प्रवाह-चिन्ह उसके कांपते कपोलों पर दिखाई दे रहे थे।

उसका हृदय उमड़ पड़ा। जी में आया, उसे हृदय से लगा ले, उसका मुख चूमले। त्यौहार का दिन है। वह कई सप्ताह से मिठाई का वचन उसे देता आ रहा है। उसने उसे उठाने को हाथ बढ़ाया पर शीघ्र पीछे खींच लिया। उसके ललाट की नसें तन गईं। ग्रीवा दृढ़ हो गई। वह उठा। लक्ष्मी के चरणों में से तीन रुपये उठाये और धीरे से द्वार खोल बाहिर निकल गया।

आध घण्टे पश्चात् जब उसने पत्नी और पुत्र को जगाया तो उन्होंने देखा कि लक्ष्मी के सम्मुख दो थालियों में मिठाई रखी है। पत्नी ने पाया कि पति के मुख पर मुस्कान है और एक विचित्र उत्साह है। उसकी दृष्टि तुरन्त रुपयों की ओर गई। पाया कि वहां एक ही है। उसका हृदय बैठने लगा। पर वह बोली नहीं।

श्यामो ने हंस कर कहा, 'मां, दादा मिठाई लाये हैं, क्यों न दादा ?'

जीवनलाल ने कहा, "हां श्यामो, मिठाई ! देख कितनी मिठाई लाया हूं तेरे लिए। मां लक्ष्मी को भोग लगा और अपनी मां को दो। श्यामा खिल पड़ा। रोली-अक्षत मिलाने लगा।

जीवनलाल ने मुस्काते हुये कहा 'सुना तू ने, हलवाई की मिठाई भी बिकी नहीं। वह बिचारा रो रहा था।'

'बात क्या है ?'

'बात बहुत बड़ी है। लाला ने बताया है, बंगाल में हिन्दू-मुसलमानों का झगड़ा हो रहा है। हिन्दुओं को घर छोड़ कर भागना पड़ा। उन्हीं की सहायता के लिये पैसा भेजना है। इसी से आज बाजार में बिक्री नहीं थी।

पत्नी के नेत्र चमक उठे, 'ओ, यह बात ! परमात्मा फिर देगा। जैसा तैसा काम चला लूंगी। कहूंगी तो लच्छी की दादी और चार दिन ठहर जायेगी। पर होगा क्या ? अब वे लोग कहां जायेंगे ?

'सरकार प्रबन्ध करेगी, सब अपने-अपने घर लौट जायेंगे। पर वह हलवाई कह रहा था कि काशी के पंडितों ने विवस्था दी है कि अब कोई हिन्दू मुसलमान नहीं हो सकता।'

'हैं ?'

'हां। राम नाम में वह शांति है कि मनुष्य बड़े का मांस खाकर भी पवित्र रहता है। अपने राम बड़े प्रतापी है।'

'हे भगवन् ! सच ? मुझे विश्वास नहीं होता।'

'होगा, कल अखबार में पढ़वा लेना। लाला झूंठ थोड़े ही बोलेगा। वे तो ऊंची जात के.....

'तब तो हरी के चाचा.....।'

'हां अब वह बिरादरी में आ जायेगा। बिरादरी काशी के पण्डितों से बड़ी थोड़े ही है।'

तभी श्यामो ने मां की ओढ़नी खींचते हुये कहा, 'मां ले न परसाद।'

'अरे, मानता नहीं ! हां, लादे। अपने दादा को तो दे.....।'

———

नोट करलें—११ नवम्बर के साप्ताहिक में प्रकाशित साहित्य परिचय की पाकिस्तान व आहुति का प्राप्तिस्थान भारतीय भवन बड़ा दरीबा देहली है।

— सम्पादक

विजयगढ़ निवासी

भारत विख्यात वैद्यराज बांकेलाल गुप्त प्राणाचार्य्य
भूतपूर्व मैनेजिंग प्रोप्राइटर धन्वन्तरि औषधालय
एवं भूतपूर्व सम्पादक धन्वन्तरि
ने

प्राणाचार्य्य भवन

नामक एक बृहद संस्था २००००० दो लाख के मूलधन से स्थापित की है जिसके लिमिटेड होने के लिये कागजात तैयार हो रहे हैं। शीघ्र ही लिमिटेड हो जायगी। शेयर प्रायः सब बिक चुके हैं। इस संस्था में आयुर्वेदीय, पेटेन्ट और नवीन प्रणाली से प्रस्तुत औषधियां, वैद्यक पुस्तकें, प्रवास मंजूषा चित्र आदि के अतिरिक्त उक्त वैद्यराज जी के सम्पादकत्व में "प्राणाचार्य्य" नामक आयुर्वेदीय उच्च कोटि का सचित्र मासिक पत्र एवं साप्ताहिक पत्र शीघ्र ही प्रकाशित होगा। अभी से ग्राहक बनने से मासिक का ४) वार्षिक और साप्ताहिक का ६) वार्षिक मूल्य लिया जायगा। सर्व साधारण को खेराज और चिकित्सकों एवं औषधि विक्रेताओं को थोक भाव का सूचीपत्र शीघ्र मंगा लेना चाहिये।

एजेण्टों की आवश्यकता है—

व्यवस्थापक — **प्राणाचार्य भवन, विजयगढ़ जि० अलीगढ़**

बन्द माहवारी (मासिक धर्म)

२४ घन्टे में शुरू

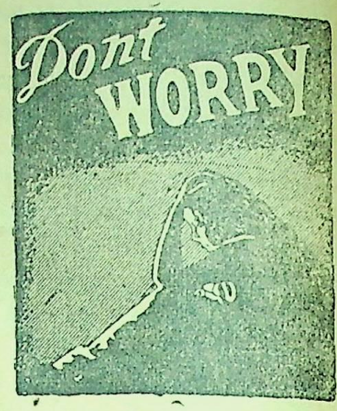

यदि किसी स्त्री की माहवारी रुक गई हो तो हमारी दवा 'कामिनी' से २४ घण्टे में जारी हो जाती है। अगर किसी स्त्री की माहवारी तकलीफ से आती है, रुक-रुक कर आती है। महीने-दो महीने से आती है, तो 'कामिनी' दवा सेवन कर लेने से तमाम खराबियां दूर हो जाती हैं। हजारों स्त्रियां, जिनकी माहवारी रुक गई थी, इस दवा के सेवन करने से २४ घण्टे में साफ होकर आने लगी। जिन स्त्रियों को गर्भ हो वे यह दवा सेवन न करें वरना गर्भ प्रायः गिर जाता है। (एक शीशी एक स्त्री के लिए काफी है)।

कीमत दो रुपया आठ आना, डाक-व्यय ग्यारह आना।

अक्सीरी दवाखाना कलां महल; (छत्ता हकीम आगाजान)
(V. A.) नं० ४१ देहली।

देहली में चांदनी चौक फतेहपुरी बाजार के सभी प्रमुख औषधिविक्रेता यह दवा बेचते

असली जादू का शीशा

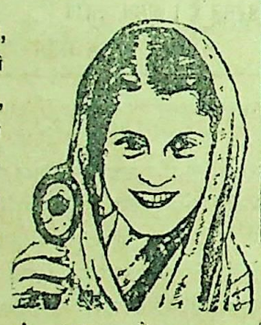

हर स्त्री-पुरुष चाहे कितनी उमर का हो, बालक हो या जवान या बूढ़ा इस जादू के शीशे से देख सकता है। चोरी का पता, गड़े हुए धन, गुमशुदा का पता, बीमार के अच्छा होने, आने वाले व गुजरे हुए हालात, मुहब्बत प्रेम, मुकदमा, नौकरी, परीक्षा, हर बात का ठीक-ठीक पता लग सकता है। झूठ निकले तो दाम वापिस, मूल्य ३) रु०, पत्र-व्यवहार अंग्रेजी में करें।

आनन्द स्वामी (V.W.D.) पो.ब. नं० ६१ लाहौर।
ANAND SWAMI, (V.W.D.) P. B. no. 61 Lahore.

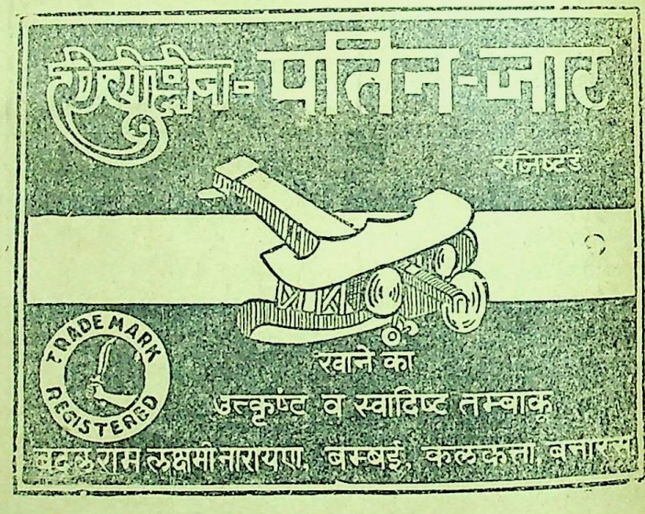

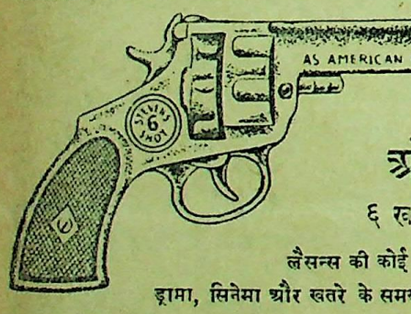

आत्मरक्षा

ओटोमेटिक
६ खानों वाली पिस्तौल

लैसन्स की कोई जरूरत नहीं

ड्रामा, सिनेमा और खतरे के समय चोरों को डराने के लिये बड़े काम की है। दागने पर पिस्तौल के मुंह से आग और धुंआ निकलता है। असली रिवाल्वर की तरह मालूम होती है। साइज ७॥ इंच×४ इंच और वजन १५ औंस। मूल्य ८) और साथ में १ दर्जन गोलियां (एलार्म डिस्क) मुफ्त। अतिरिक्त १ दर्जन गोलियों का दाम २)। स्पेशल तांबे की बनी ६६६ नं० की पिस्तौल का दाम १०)। बेरट के साथ केस २॥), पोस्टेज और पैकिंग का अतिरिक्त १=)। प्रत्येक आर्डर के साथ १ शीशी रिवाल्वर का तेल मुफ्त।

नापसंद होने पर दाम वापस

इम्पीरियल चैम्बर आफ साइंस (V. W. D.) पो० बो० ६१ लाहौर
Imperial Chamber af Science (V.W.D.) P.B.61. LAHORE

सन्यासियों की गुप्त बूटियां

इस पुस्तक में सैकड़ों ऐसी जड़ी बूटियों के गुप्त रहस्य प्रकट किये गये हैं, जिनसे सन्यासियों की धाक जमी हुई है। हालांकि इनमें से अधिकांश बूटियां आपको जंगल, खेत बागीचों और पंसारियों की दुकानों पर भी मिल सकती हैं, जिनसे आवश्यकता पड़ने पर स्त्रियां भी सिर से पांव के नख तक के सभी रोगों का इलाज घर में ही कर लिया करेंगी। इस पुस्तक को पढ़ लेने के बाद आप इस युग के धन्वन्तरि समझे जायेंगे। रोगियों का तांता बंधा रहेगा। कुछेक बूटियों की सूची—

लाख-लाख रु० के प्रयोग—(१) ऐसी बूटी कि जिसकी लकड़ी कान में लगा देने से सर्प काटे का विष मुख द्वारा निकल जाता है, (२) वह बूटी जिससे गूढ़ गर्भ ५ मिनट में निकल जाता है, (३) मधुमेह की अक्सीर बूटी, (४) दुबले पतले आदमी को मोटा ताजा बना देने वाली बूटी (५) सात दिन में नपुन्सक को मर्द बनाने वाली बूटी, (६) दमे की अद्भुत बूटी, (७) वह बूटी-जिसके रस में अंगुली डुबाने से तत्काल ज्वर उतर जाता है, (८) गर्भ रोक बूटी, (९) उपदंश को ७ दिन में मिटाने वाली बूटी, (१०) निमोनियां की बूटी, (११) वह बूटी जिससे बन्ध्या के पुत्र पैदा हो। ऐसी ही सैकड़ों बूटियों का वर्णन इसमें है, जिनसे चमत्कार दिखा कर आप सिविल सर्जनों को दंग कर सकते हैं। मूल्य २॥) डाकखर्च ।=)

एजेन्ट—रघुनाथ पारीक (५) संगरिया (बीकानेर)

Kanya Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

[पृष्ठ ८ का शेष)

फिर भी १९४० के बाद से आप निरन्तर अस्वस्थ रहने लगे। इस अस्वस्थावस्था में भी आप अपने सत्यपरामर्श से देश-सेवा में योग देते रहे और १९४६ में तो मन्त्री मिशन की चर्चाओं में भाग लेने के लिए खटिया छोड़कर दिल्ली आए और नेताओं को अपना अमूल्य परामर्श दिया।

अपने जीवनकाल में मालवीय जी ने हिंदू तथा हिंदी क्षेत्र में भी अविस्मरणीय कार्य किया और अ० भा० हिंदू महासभा के आप तीन बार अध्यक्ष निर्वाचित हुए। जीवन के प्रथम जागरूक क्षण से जीवन के अंतिम प्रहर तक आपका सम्पूर्ण जीवन देश व जाति की सेवा की एक अपूर्व कहानी है।

— मित्र राष्ट्र संघ की ट्रस्टीशिप समिति में फील मार्शल स्मट्स ने दक्षिण पश्चिमी अफ्रीका को दक्षिण अफ्रीका यूनियन में मिलाने का प्रस्ताव उपस्थित किया है। इसका भारत, रूस और अमेरिका विरोध कर रहे हैं जबकि ब्रिटेन समर्थन कर रहा है।

रा ग नी

माहेश्वरी पिक्चर्स कृत रागनी नामक चित्र का उत्तरीय भारत में वितरण का एक मात्र अधिकार 'श्री छत्रसाल फिल्म्स एण्ड फाइनेन्स लिमिटेड, नई देहली' ने प्राप्त कर लिया है। रागनी सर्वोत्कृष्ट सामाजिक चित्र है।

इसके मुख्य कलाकार नजमुल हुसैन हैं और उनके सहायक स्मृति, अरुणा, प्राण, ज्ञानी, रूफी इत्यादि हैं।

स्मृति ने इस कला में नया ही प्रवेश किया है, किन्तु फिर भी बड़े-बड़े कलाकारों की समानता प्राप्त कर ली है। स्मृति के मोहक गाने, रूफी और अरुणा के आकर्षक नृत्य, सुन्दरता और दृश्यावलियों की पराकाष्ठा है।

माचिस के खेल

माचिस का बक्स हर जगह मिल जाता है। बक्स में से तीलियां निकालिये और जादू, कला, तमाशा, पहेली आदि १५ प्रकार के अद्भुत और आश्चर्यजनक खेल जैसे:— (१) अग्नि बांण चलाना, (२) फूल बनाना, (३) सिगरेट बनाना (असली), आदि दिखाकर अपने मित्रादि में मान प्राप्त कीजिये। केवल ॥) आठ आने के टिकट लिफाफे में रखकर भेज देने पर हम आपको चित्र, सामान और विधि घर बैठे देंगे।

पाकिट व स्टेज के खेल भी मिलते हैं।

परिक्षा व प्रेम में सफलता का यन्त्र केवल १)।

प्रो० शर्मा चमत्कारी

३२३, छोटा छीपीवाड़ा, चावड़ीबाजार, देहली।

सा० अर्जुन में देरी

दिल्ली में सांप्रदायिक स्थिति के विषय हो जाने के कारण सा० अर्जुन एक दिन लेट निकल रहा है। एजेण्ट और पाठकों से इस विवशता के लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं।

— व्यवस्थापक

संतोष पहेली नं. ५ का नतीजा

२२ या २६ दिसम्बर के अर्जुन सा० में छपेगा, पूर्तियां भेजने की अन्तिम ता० १५ दिसम्बर। नोट — नोंक, झोंक मासिक के २५ नवम्बर को छपने के कारण तथा संसार सा० में भी इस सप्ताह पहेली नहीं छपने के कारण ता० बढ़ाई गई है। एस० एन० भटनागर डिग्गी बाजार अजमेर। उपरोक्त पते पर १ आने का टिकिट भेज कर पहेली मगाइये।

यदि आप २५) रुपये

लगा कर १००) मासिक कमाना चाहते हैं तो डेढ़ आने के डाक के टिकट भेज कर विस्तृत हाल मंगवाएं।

पोस्ट बक्स न० १ W.

C/o वीर अर्जुन देहली।

उद्यम

नवम्बर अंक में

× बिक्री-कर कायदा
× मिट्टी से सोना बनाने वाले की मियागर
× नागपुरी संतरे का भवितव्य
× खड़ू तैयार करना
× भारत के आर्थिक पुनर्निर्माण के मूल सिद्धान्त।

इनके सिवाय उद्यम का पत्र-व्यवहार, आरोग्य सम्बन्धी जानकारी, साग-सब्जियों की बागवानी आदि लेख देखिये। एक अंक देखकर उद्यम को उपयुक्तता की कसौटी पर कस लीजिये। न्यूज पेपर एजेन्ट्स, हिन्दुस्थान के सभी रेलवे बुक स्टाल्स और उत्साही लोगों की मांग बढ़ती जा रही है। अतः शीघ्र ही वार्षिक मूल्य रु० ५-८० भेज कर स्थायी ग्राहक बन जाइये।

उद्यम मासिक, धर्मपेठ, नागपुर

महान वाजीकरण व परमपौष्टिक

अनंगप्रभा याकुती

शक्तियों का हद से ज्यादा उपयोग करने से, वृद्धावस्था से, अथवा किसी भी कारण से आई हुई कमजोरी दूर करती है. पतली धातु को गाढ़ा करता है और रुकावट बढ़ाकर दाम्पत्य जीवन का पूर्ण आनन्द देती है शी० रु० १०)।

मदनमंजरी फार्मेसी—जामनगर-देहली एजेंट जमनादास कं० चांदनीचोक

शर्तिया फायदा देने वाली नीचे लिखी हुई दवाइयों का इस्तेमाल करके

सच्चा नवजीवन प्राप्त करो!

१. जवां मर्द पिल्स— यह सुस्त तथा कमजोर शरीर को मस्त बनाती है! कमजोरी, स्त्री प्रसंगी शीघ्र पतन वगैरह फौरन दूर होती है और इस्तेमाल करने वाला जवां मर्द बनता है। धातु गाढ़ी बनाने के लिये 'बंधेज चूर्ण' आठ दिन सेवन करने के बाद यह पिल्स लेने वाले को बहुत ही आनद मिलता है।

२. बंधेज चूर्ण— धातु पेशाब या स्वप्न में जाना, गरमी, सुस्ती, स्मरण शक्ति कम होना तथा चेहरा सफेद पड़ना वगैरह दोष शर्तिया दूर करता है। पतली धातु का यह दुश्मन है। नया धातु विकार ७ दिन में और पुराना १४ दिन में दूर होता है और धातु गाढ़ी बनती है।

३. कामशक्ति नवजीवन— ज्यादा स्त्री संग से और हस्तदोष वगैरह से जिन्होंने अपना नाश किया है, उनको तथा बूढ़ोंको भी नवजीवन प्राप्त करा देता है। २१ दिन के इस्तेमाल के लिये उसकी कीमत २) ऊपर लिखी हुई प्रकार से तीनों दवाइयां इस्तेमाल करने से असाधारण पुरुषत्व प्राप्त होता है। बहुत ही प्रसिद्ध दवाइयां हैं।

४. परमा दुश्मन— इसे इस्तेमाल करने से गनोरिया पुराना तथा नया ७ दिन में भाग जाता है। फायदा दूसरे ही दिन होता है। पेशाब मार्ग में की सब दुष्ट विकारों का दुश्मन है। कीमत २॥)।

मैनेजर— नवजीवन दवाखाना (अ) नागपुर सिट

डाबर द्राक्षासव

रक्त वर्द्धक स्फूर्तिदायक सुस्वादु

डाबर (डा. एस. के. बर्म्मन) लि. कलकत्ता

मलोरिन

नं० ५०

मौसमी बुखारों के लिए अक्सीर है।

सोल एजेंटः—

देहली जाम फैक्टरी नयाबांस, बीड़ी मार्केट, देहली। (नं० १)

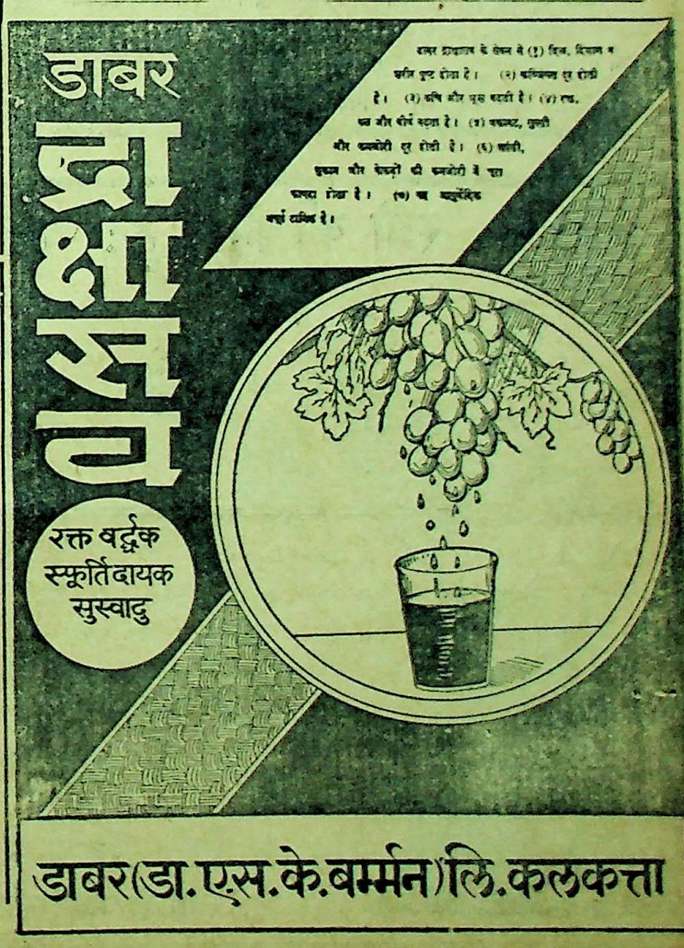

१९४४ के परिणाम

हिन्दुस्थान

ने सफलता की एक और मंज़िल पूर्ण की

❀ उन्नति पर प्रकाश ❀

चालू बीमा	३२ करोड़ से ऊपर
कुल पूंजी	६ करोड़ ८६ लाख से ऊपर
प्रीमियम की आय	१ करोड़ ५० लाख से ऊपर
दावे का भुगतान (१९४४)	३७ लाख ८० हजार से ऊपर
नया कारोबार (१९४४)	१० करोड़ रुपये से ऊपर

हिन्दुस्थान को-ओपरेटिव इन्श्योरैंस सोसायटी लि०

हेड आफिस—हिन्दुस्थान बिल्डिंग्स, कलकत्ता।

देहली ब्रांच—हिन्दुस्थान बिल्डिंग्स, न्यू देहली।

पेनूलाइन वर्क्स

का

आश्चर्यजनक नवीन आविष्कार

वर्थ कन्ट्रोल VETO मलहम

इस दवा की ज्यादा तारीफ नहीं की जा सकती। यह दवा खाने या अन्दर लगाने की नहीं है केवल नाभी पर लगाने से ही गर्भ की रुकावट हो जाती है। किसी किस्म का कोई कष्ट या नुकसान नहीं होता। आपको पूर्ण सन्तोष होगा - मंगा कर परीक्षा कीजिये। १५ बार के प्रयोग के लिए दवा मू० ४) डाकखर्च व पेकिंग ॥=) आना। सारे भारत के सोल एजेण्ट—

एस० के० सक्सेना, रंगमहल (एडी) अलीगढ़ सिटी।

५०) इनाम

श्वेत कुष्ट (सफेदी) की आश्चर्यजनक महौषधि। चाहे कितने ही दिन से श्वेत कुष्ट हो, या किसी भी कारण से सफेद दाग हो गया हो इस महौषधि के सिर्फ २ दिन के सेवन से पूर्ण लाभ होता है। इससे प्रति वर्ष हजारों रोगी आराम होते हैं। यदि आप अनेकों दवाइयां कर निराश हो चुके हों तो एक बार और परीक्षा करें। मूल्य २) गलित कुष्ट सुनव हरी की औषधि मूल्य ३॥)।

गुणहीन साबित होने पर ५०) इनाम

श्री सदानन्दराम संजीवनी औषधालय

नं० १८ पो० बारशलीगंज, (गया)।

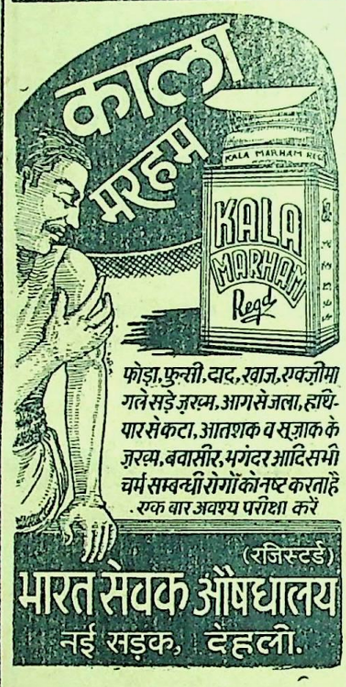

फोड़ा, फुन्सी, दाद, खाज, एक्जीमा गले सड़े ज़ख्म, आग से जला, हाथी-पांव से कटा, आतशक व सुज़ाक के ज़ख्म, बवासीर, भगंदर आदि सभी चर्म सम्बन्धी रोगों को नष्ट करता है

एक बार अवश्य परीक्षा करें

(रजिस्टर्ड)

भारत सेवक औषधालय

नई सड़क, देहली.

३५ साल की आजमूदा अचूक औषधियां

गर्भ निवारक

इसके सेवन से आजन्म गर्भ स्थापित नहीं होता। रंग निखर कर सुन्दरता सी आ जाती है। हां, मासिकधर्म बन्द नहीं होगा। किन्तु फिर गर्भ की आशा न करें। मू० ५) यही न० २ इससे एक वर्ष तक गर्भ स्थापित नहीं होता। मू० ३) डा०म०॥।-)

मर्द कर्दम तिला - नामर्द को मर्द बना देता है। प्रतिशी ३) डा.म.॥।-)

कामिनी वशीकरण—स्तम्भक और परम आनन्ददायक। ८ गोली ४) रु० नमूना १ गोली ॥=) डा० म० ॥।-)

पता—पं० चन्द्रशेखर वैद्यशास्त्री

ब्राह्मी औषधालय अलीगढ़।

सब शारीरिक रोगों पर तथा सर दर्द की रामबाण दवा—

— मोहनजन पेन बाम —

चौधरी ब्रदर्स जलगाव पूर्व खानदेश।

मासिक रुकावट

बन्द मासिक धर्म रजोलीना दवाई के उपयोग से बिना तकलीफ शुरू हो नियमित आता है ऋतु की फर्याद दूर होती है। यह दवा गर्भवती को उपयोग न करावें की० रु. ४) तुरन्त फायदे के लिए तेज दवाई की० रु. ६) पोस्टेज अलाया। गर्भांकुश—दवा के सेवन से हमेशा के लिए गर्भ नहीं रहता गर्भ निरोध होता है, मासिक धर्म नियमित होगा, विश्वसनीय और हानि रहित है रु० ४) पो० अलावा पता:- दुरधानुपान फार्मेसी जामनगर ५, देहली एजेण्ट—जगन्नाथदास क० चांदनीचौक अजमेर— मेहता ब्रदर्स नया बाजार

स्त्री की कमर टूट जाती है

अगर स्त्री का मासिक धर्म ठीक समय पर न आये या मासिक के दिनों में दर्द हो या माहवारी कम या ज्यादा आती हो तो इस तकलीफ से स्त्री की कमर में बहुत दर्द होता है। ऐसी को एक शीशी दवा कोरस सेवन करा देनी चाहिए। इस दवा के खाने से मासिक धर्म की सब खराबी ठीक हो जाती है। फिर हर महीना बिना किसी कष्ट के ठीक मात्रा में मासिक धर्म होने लगता है। हजारों स्त्रियाँ इस दवा से लाभ उठा रही हैं। एक शीशी दवा कोरस की कीमत दो रुपया आठ आना २॥) है। नीचे लिखे पते से पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा मंगा लीजिए।

पारसल खर्च ॥-) लगेगा।

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना

हिन्दी आफिस नं० ३४, दिल्ली!

उम्दा व नया स्यूट

अमेरिकन गर्म कोट

हर प्रकार के ओवरकोट हाफ़ कोट वास्कोट आदि उम्दा और नया माल वाजबी दामों पर स्यलाई किया जाता है। हजारों पक्के ग्राहक वर्षों से फ़ायदा उठा रहे हैं। आज ही तालुक निर्स्व नामा मंगा कर आर्डर बुक करा लीजिये।

सेकन्ड हैंड कोटों की सब से पुरानी कम्पनी

रमेश राज ऐण्ड कम्पनी

सौदागरान कोट

पो० बक्स नं० 682 कराची।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

रेडियो में एक साल

[पृष्ठ ६ का शेष]

वे हैं उर्दू मासिक 'साकी' के सम्पादक। आज लोग तो इन्हें ही दिल्ली रेडियो स्टेशन का मालिक कहते हैं। जिसकी यह शिफारिश कर दें, किसी की मजाल क्या जो उसे नौकरी न मिले। चुनांचे, इधर-उधर अनौन्सरों, लेखकों, नायकों और अन्य कर्मचारियों में आपको इन्हीं के साथी मिलेंगे।

"फिर फिर आपनों ही को रेवड़ियां बांटने" का यह प्रसंग अधूरा ही रह जायेगा यदि मैं उन लोगों के विषय पर भी यहां यत्किंचित प्रकाश न डालूं जिन्हें अक्सर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से भाषण, संगीत, नाटक आदि रेडियो प्रोग्रामों के लिए आमन्त्रित किया जाता है। आमंत्रित करने का अर्थ है उन्हें पैसे दिये जाते हैं। रेडियो विभाग के भीतर नियुक्ति होने वाले लोगों की भांति इस समुदाय में भी उन लोगों का बाहुल्य है जो इस सत्तारूढ़ गुट के सदस्य, सहायक अथवा समर्थक हैं अर्थात् उर्दू के लेखक या कवि और हिन्दी के शत्रु। अधिकांशतः ऐसे लोग पंजाब प्रांत से ही सम्बन्ध रखते हैं और वह भी पंजाब प्रांत के लाहौर नामक शहर से।

यहां के अधिकारियों ने इस दिल्ली स्थान के लिए तीन भाषायें बराबर बराबर स्वीकृत की हैं — हिन्दुस्तानी, उर्दू और हिन्दी। सिद्धांत रूप से तय यह है कि इन तीनों में से प्रत्येक का ३३ प्रतिशत के अनुपात से रेडियो-प्रोग्रामों में प्रतिनिधित्व रहेगा, परन्तु व्यवहारिक रूप में हिन्दुस्तानी के नाम पर भी उर्दू की चीजें ब्राडकास्ट होती हैं। (रेडियो की हिन्दुस्तानी का वैसे भी तो अर्थ उर्दू ही है।) इस तरह उर्दू का अनुपात ६६ प्रतिशत और हिन्दी का ३३ प्रतिशत रह जाता है।

इस पूर्व निश्चित योजना और परम्परा के अनुसार रेडियो प्रोग्रामों के लिए अधिकांशतया उर्दू के लेखक और कवि ही आमंत्रित होते हैं। प्रमाण के लिए 'लिसनर' का कोई सा अङ्क देखा जा सकता है। पखवारे भर के प्रोग्रामों की रूप रेखा ही ऐसी निर्धारित की जाती है जिसमें उर्दू के लेखकों और कवियों की जेबों में रेडियो विभाग का अधिक रुपया जा सके और यह रुपया बांटने में भी काफी भेदभाव बरता जाता है। उदाहरणार्थ भाषणों के लिए २५) रुपये "बेसिक फी" के रूप में निर्धारित हैं। लेकिन उर्दू के लेखकों का एक ऐसा समुदाय भी है जिसे इससे अधिक फ़ीस मिलती है। डा० जाकिर हुसैन, रशीद अहमद सद्दीकी, शाहिद अहमद, प्रो० हसन, रजा अली मिर्जा मुहम्मद सईद जैसे उर्दू लेखकों में से किसी को पचास-पचास और किसी को ३५-३५ मिलते हैं। उधर डा० रामकुमार वर्मा, महादेवी वर्मा, निराला, पंत, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' श्री कृष्णदत्त पालीवाल, डा० रामविलास शर्मा, जैनेन्द्र, प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति, वियोगी हरि, बच्चन इत्यादि जैसे हिन्दी के वंदनीय साहित्यकारों को २५) रुपये के ही योग्य समझा जाता है। इसी तरह उन कवियों और शायरों के विषय में भेदभाव बरता जाता है जिनके गीत और ग़ज़लें ब्राडकास्ट होती हैं। हिन्दी के जिन सात-आठ कवियों (डा० रामकुमार वर्मा, बच्चन, विद्यावती कोकिल, नेपाली, सुमित्राकुमारी सिनहा, इत्यादि) के साथ रेडियो वालों का गीतों के लिए कांट्रेक्ट है, उनमें से किसी को भी तीन आने, चार आने या आठ आने प्रति गीत प्रति ब्राडकास्ट से अधिक नहीं मिलते। उधर हफीज जालन्धरी को एक रुपया प्रति गीत प्रति ब्राडकास्ट और जिगर मुरादाबादी को लगभग एक हजार रुपया वार्षिक और इसी तरह अन्य मुसलमान शायरों को भी बड़ी-बड़ी रकमें मिलती हैं जिनकी स्थानाभाव के कारण मैं सूची नहीं दे सकता। सबसे सनसनीपूर्ण मामला पाकिस्तान के समर्थक उर्दू के स्वर्गीय शायर इक़बाल का है। सुनते हैं कि उनके उत्तराधिकारियों को शाश्वत अधिकारों के लिए लगभग दस हजार रुपये रेडियो विभाग ने दिये थे। इस बारे में मैंने स्वयं मुसलमानों को चर्चा करते सुना है।

इसी प्रकार की बंदर-बांट नाटक आदि अन्य विभागों में भी होती है। नाटकों के लिए उर्दू लेखकों को हिन्दी लेखकों की अपेक्षा सदैव अधिक पैसे मिलते हैं। अधिकांश अभिनेता उर्दू जानने वाले तो होते ही हैं।

यह लेख मैं एक चुटकला सुना कर समाप्त करता हूं। वे लोग जिनके हां रेडियो सेट हैं उन्होंने देखा होगा कि लगभग रविवार को दिल्ली रेडियो स्टेशन से ब्राडकास्ट होने वाले बच्चों के प्रोग्राम में मिर्जा फहीम बेग की कोई न कोई कहानी या नज्म होती है। एक बार एक कर्मचारी ने एक मुस्लिम अधिकारी से इसका कारण पूछा। उन्होंने उत्तर दिया—"बेचारा मिर्जा उर्दू के पुराने उस्तादों में से है। अब बूढ़ा हो गया है और कुछ करने धरने के काबिल नहीं। इसी लिए हमने इसकी रोजी का यों बन्दोबस्त कर दिया है।"

यह कह कर अधिकारी महोदय चल दिये। बाद में उस कर्मचारी ने यह टिप्पणी कस दी है—"गोया दिल्ली रेडियो स्टेशन मुस्लिम यतीमखाना है।"

(क्रमशः)

श्वेत कुष्ट को अद्भुत जड़ी

महात्मा प्रदत्त श्वेतकुष्ट (सफेदा) की दवा से तीन दिन में पूरा फायदा। यदि सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों, विज्ञापनदाताओं की दवा से निराश हो चुके हों तो इसे लगा कर आराम होवें। १५ दिन की दवा का मूल्य २॥)।

सफेद वाला काला

इस तेल से बालों का पकना रुक कर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे तो दूना मूल्य वापिसी की शर्त लिखा लें। यह तेल सिर के दर्द व सिर में चक्कर आना आदि को आराम कर आंख की रोशनी बढ़ाता है। एकाध बाल पका हो तो ३॥) और कुल पक्का हो तो ५) का तेल मंगवा लें। एजेण्टों की हर जगह आवश्यकता है।

पता:—

श्री अखिल के० आराम औषधालय,
मुहल्ला सालिमपुर अहरा, पो. बांकीपुर (पटना)

वैद्यरत्न

पं० डी० गोपालाचार्लू

का

जीवामृतम

स्त्री पुरुष और बालकों में पौरुष, बल और चेतना शक्ति का संचार करने के लिए अर्धशताब्दी से विख्यात है

आयुर्वेद आश्रमम लि०

टी० नगर, मद्रास।

उत्तर भारत के लिए चीफ स्टोकिस्टस्

ए न सा ट्रे डिं ग कं०

चांदनी चौक, दिल्ली।

दही बिलोना

बहुत से घरों विशेषकर उनमें, जो कि नगरों के बाहर स्थित हैं—दही बिलोना एक आवश्यकता है इसलिये कि इससे ताजा मक्खन मिल सकता है जो अन्यथा नहीं मिलता। भारत की उन अनेक स्त्रियों के लिये जिन्हें बाहरी खेलों का लाभ प्राप्त नहीं हो सकता यह दैनिक आवश्यकता उन्हें पतला रखने के लिये उत्तम अवसर प्रदान करती है। दही बिलोते समय वे मीठे गीत गाती हैं जिनसे प्रातःकाल सारा घर संगीतमय हो जाता है।

इस प्रकार की दैनिक स्वास्थ्यप्रद क्रिया आवश्यकता को बोझा नहीं बनाती। इसी प्रकार दैनिक स्नान भी एक आवश्यकता है। स्वास्थ्य और स्वच्छता के लिये यह अनिवार्य है किन्तु हमाम साबुन की श्रमहारी सुगंधि इस दैनिक क्रिया को आनददायी बना देती है।

हमाम

भारत का प्रियतम साबुन

टाम्को सेल्स विभाग
७ माल मेनशन
दी माल लाहौर

दी टाटा आयल मिल्स कं० लि०

T.S. 35

मिर्गी का २४ घण्टों में खात्मा। तिब्बत के सन्यासियों के हृदय का गुप्त भेद, हिमालय पर्वत की ऊंची चोटियों पर उत्पन्न होने वाली जड़ी बूटियों का चमत्कार, मिर्गी हिस्टीरिया और पागलपन के दयनीय रोगियों के लिये अमृत दायक। मूल्य १०॥) रुपये डाकखर्च पृथक।

पता—एच. एम. आर. रजिस्टर्ड मिर्गी का हस्पताल हरिद्वार।

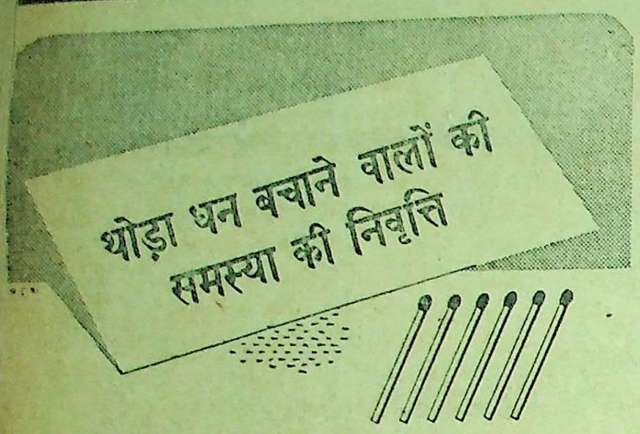

प्रश्न : दियासलाई की ६ तीलियों की सहायता से चार त्रिकोण बनाइए

उत्तर : एक मेज़ पर तीन तीलियों को एक त्रिकोण के रूप में रखिये और शेष तीन की सहायता से एक सूच्याकार बनाइए जैसा आकृति में दिखाया गया है।

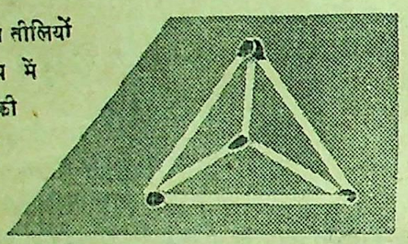

ऐसी समस्यायें केवल चतुर ही नहीं बनातीं बल्कि अवकाश में प्रसन्नता और मनोरंजन भी देती हैं। लेकिन हमारे सन्मुख आर्थिक रूप से सुरक्षित रहना इन से कहीं कठिन समस्या है। इस समस्या से आपको चिन्तित नहीं रहना चाहिये क्योंकि इस समस्या की निवृत्ति उचित रूप से बचत करके हो सकती है। प्रति वर्ष आप अपनी बचत की पूंजी में वृद्धि और आर्थिक रूप से उन्नति कर सकते हैं यदि आप नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्प्स ख़रीद कर थोड़ा धन लगाने वालों की प्रतिदिन बढ़ती संख्या के साथ सम्मिलित हो जायें। नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स रुपया लगाने की सबसे श्रेष्ठ मद हैं, यह पूर्णतया सुरक्षित और सब मदों से अधिक लाभदायक हैं।

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट्स

निम्न लिखित मुख्य लाभ यह हैं:—

(१) आप ५, १०, ५०, १००, ५००, १०००, या ५०००, रु० के मूल्य के नैशनल सेविंग्ज सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) कुटुम्ब का प्रत्येक व्यक्ति (वयस्क या अल्पवयस्क) ५००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकता है। दो व्यक्ति मिलकर १०,००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है। सरकार द्वारा प्रचलित रुपया लगाने की मदों पर जो ब्याज दिया जाता है यह सब से अधिक दर है।

(४) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।

(५) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते हैं (५ रु० का सर्टिफ़िकेट १-१/२ वर्ष पश्चात भी भुनाया जा सकता है)

(६) जिनकी बचत थोड़ी है वह १), ॥), ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं, ५ रु० के स्टाम्प्स जमा होने पर एक नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट मिल जायेगा।

(७) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्प्स डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकृत एजेंटों अथवा सेविंग्ज ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

अपने सेविंग्ज़ ग्रुप में अभी सम्मिलित हो जाइए

स्त्रियों की शक्ति दायक औषधि

सुन्दरी साथी (रजिस्टर्ड)

स्त्रियों के प्रदर, रक्त प्रदर, ऋतुस्राव, गर्भाशय के रोग, मिटाता है। बन्ध्यत्व को मिटाता है, बच्चे होते हैं। स्त्री का स्वास्थ्य सुधार देती है, हरेक गांव में दवा वाले लोग बेचते हैं। कीमत की बोतल १।=) तीन बोतल से आराम होता है इनका मूल्य ३॥) । दिल्ली एजेन्ट:—कान्तं लाल आर० पारिख, दवे केमिकल वर्कस, कालबादेवी रोड, बम्बई।

स्त्री रोगों की निपुण चिकित्सका

लेडी डाक्टर **कविराज आर. रानी** ही हैं

आप किसी भी स्त्री रोग में ग्रस्त हों तो निम्नलिखित पते पर मिलिये। वे आपको उसी समय ठीक कर देंगी। इसके अतिरिक्त उनकी तैयार की हुई औषधि 'आशा' एक ऐसी औषधि है जो कि स्त्री के आन्तरिक बाह्य रोगों को दूर करके सन्तान योग्य बना देती है और उसका मूल्य केवल १०) रु० है। डाक व्यय पृथक होगा। औषधालय—

लेडी डाक्टर—**कविराज आर. रानी**

गली नं० १ अर्जुननगर निकट शाहालमी अड्डा लाहौर।

प्यारी बहिनो

न तो मैं कोई नर्स हूं, न कोई डाक्टर हूं और न वैद्यक ही जानती हूं, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थी स्त्री हूं। विवाह के एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं लिकोरिया (श्वेतप्रदर) और मासिक-धर्म के दुष्ट रोगों में फंस गई थी मुझे मासिक-धर्म खुलकर न आता था, अगर आता था तो बहुत कम और दर्द के साथ, जिससे बड़ा दुख होता था। सफेद पानी (श्वेतप्रदर) अधिक जाने के कारण मैं प्रति दिन बहुत कमजोर होती जारही थी, चेहरे का रङ्ग पीला पड़ गया था, घर के कामकाज से जी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पतिदेव ने मुझे सैकड़ों रुपये की औषधियां सेवन कराईं, परन्तु किसी से रत्ती भरन लाभ हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुख उठाती रही। सौभाग्य से एक सन्यासी महाराज हमारे दर्वाजे पर भिक्षा के लिए आये मैं दर्वाजे पर आटा डालने आई तो महात्मा जी ने मेरा मुख देखकर कहा—बेटी तुझे क्या रोग है, जो इस आयु में ही चेहरे का रङ्ग रुई की भांति सफेद हो गया है? मैंने सारा हाल सुनाया। उन्होंने मेरे पति को अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्खा बतलाया, जिसके केवल १५ दिन के सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगों का नाश हो गया। ईश्वर की कृपा से अब मैं कई बच्चों की मां हूं। मैंने इस नुस्खे से अपनी सैकड़ों बहिनों को अच्छा किया है और कर रही हूं। अब मैं इस अद्भुत औषधि को अपनी दुखी बहिनों की भलाई के लिये अस्ल लागत पर बांट रही हूं। इसके द्वारा लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वर ने मुझे बहुत कुछ दे रखा है। एक बहिन के लिये, पन्द्रह दिन की दवा तैयार करने पर २॥=) दो रुपये चौदह आने असल लागत खर्च होती है और महसूल डाक खर्च अलग है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोग में फंस गई हो तो वह मुझे जरूर लिखें मैं उनको अपने हाथ से औषधि बनाकर वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी। यह मेरा प्रण है कि मैं किसी बहिन से दवा की कीमत अपनी असल लागत से एक पैसा भी ज्यादा न लूंगी।

जरूरी सूचना—मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का ही नुस्खा मालूम है इसलिये कोई बहिन मुझे किसी और रोग की दवाई के लिये न लिखें।

प्रेमप्यारी अग्रवाल नं० (३०) बुढलाडा जि० हिसार (पंजाब)।

CC-0. Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

स्त्री को श्वेत प्रदर

स्त्री को श्वेत पानी की बीमारी भयानक होती है। इस बीमारी को ल्युकोरिया भी कहते हैं। इस बीमारी से पीड़ित होने वाली स्त्री के गुप्त शरीर से समय असमय श्वेत रङ्ग का बदबूदार पानी या लेस निकलता है और धीरे-धीरे उस स्त्री के जीवन को समाप्त कर देता है। उसकी कमर, नाफ, नले, पेट, बल्कि सारे शरीर में दर्द होने लगता है। माहवारी अर्थात् मासिक धर्म भी खराब हो जाता है। यह रोग बड़ा भयानक है। स्त्रियों को इसमें लापरवाही नहीं करनी चाहिए।

श्वेत पानी को रोकने की विधि

नवयुग की जांच से अब पूरी तरह साबित हो चुका है कि इस श्वेत पानी की बीमारी को समूल नष्ट करने की सबसे बढ़िया विधि यह है कि बीमार स्त्री को केवल एक शीशी औषधि 'रोक' सेवन करा दी जाय। इस औषधि के सेवन से ठीक तीसरे दिन श्वेत पानी की बीमारी बिल्कुल ठीक हो जाती है। हजारों वैद्य, डाक्टर, हकीम इस औषधि को रोगियों पर सेवन कराके ख्याति प्राप्त कर रहे हैं। यदि आवश्यकता हो तो:—

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४, दिल्ली

के पते पर पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा औषधि 'रोक' की एक शीशी मंगा लीजिये। एक शीशी का मूल्य ३) तीन रुपया डाक व्यय ॥-) आना है। हर धर्म की स्त्रियां सेवन कर सकती हैं।

शारीरिक उष्णता के वजह से

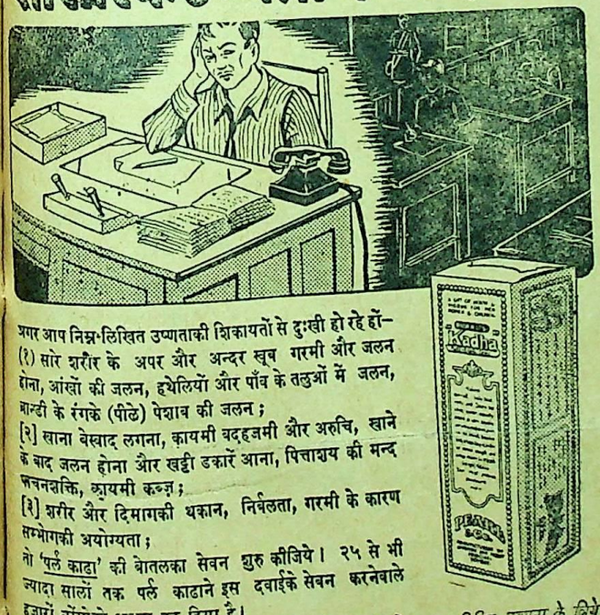

अगर आप निम्न-लिखित उष्णताकी शिकायतों से दुःखी हो रहे हों—
(१) सारे शरीर के अपर और अन्दर खूब गरमी और जलन होना, आंखों की जलन, हथेलियों और पाँव के तलुओं में जलन, ब्रान्डी के रंगके (पीले) पेशाब की जलन;
[२] खाना बेस्वाद लगना, कायमी बदहजमी और अरुचि, खाने के बाद जलन होना और खट्टी डकारें आना, पित्ताशय की मन्द क्रियाशक्ति, कायमी कब्ज़;
[३] शरीर और दिमागकी थकान, निर्बलता, गरमी के कारण सम्भोगकी अयोग्यता;
तो 'पर्ल काढ़ा' की बोतलका सेवन शुरु कीजिये। २५ से भी ज्यादा सालों तक पर्ल काढ़ाने इस दवाईके सेवन करनेवाले हजारों लोगोंको अच्छा कर दिया है।
पर्लकाढ़ा जवान और बूढ़े स्त्री, पुरुष और बच्चे-सभीको समान रुपसे फ़ायदा करताहै। यहांतक कि प्रसूता स्त्रियोंको भी फ़ायदा करता है।

शारीरिक उष्णता के लिये मशहूर अनुभूत इलाज!

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

एकबार परीक्षा कर स्वयं अनुभव करें!

HI/2

पर्ल कंपनी, आयुर्वेदी कारखाना, राणीबाग, बम्बई २७

बांझ स्त्रियों के लिये

संतान पैदा करने का लासानी नुस्खा

मेरा ब्याह हुए १५ वर्ष हो चुके थे इस समय के बीच कई इलाज कराए मगर कोई फायदा न पहुंचा। अचानक मैं अपनी सहेलियों के साथ तीर्थ यात्रा करने श्री बद्रीनारायण जी चली गई। सौभाग्यवश वहां मुझे एक ऐसे जटाधारी त्यागी महापुरुष महात्मा जी के दर्शन हुए जो सचमुच ही ईश्वर का अवतार दिखाई देते थे। मैंने उनके चरणों का स्पर्श करके अपनी तमाम दुःखभरी कहानी सुनाई। महात्मा जी ने खुश होकर मुझे एक औषधि तन्त्र दिया और आशीर्वाद देकर कहा बेटी, चिन्ता मत करो ईश्वर तुम्हारे हृदय की अभिलाषा पूर्ण करेगा। मैंने घर आकर उस औषधि को तैयार किया और महात्मा जी के कथनानुसार अनुष्ठान किया। ईश्वर की कृपा से मुझे आशा की झलक दिखाई दी और नौ मास के पश्चात जीता-जागता बालक गोद में खेलने लगा। इसके पश्चात मैंने जिस सन्तानहीन बहन को निम्न लिखित औषधि का सेवन कराया, ईश्वर की कृपा से उसी की आशा पूर्ण हुई। महात्मा जी ने औषधि देते समय मुझसे वचन लिया था कि, बेटी, इस दवा से औरों का उपकार करती रहना। महात्मा जी के कथनानुसार मैंने इस औषधि तन्त्र को सूचीपत्र द्वारा प्रकाशित कर दिया है जिस से और बहिनें इस औषधि को तैयार करके लाभ उठा सकें।

औषधि तन्त्र ये है—असली नैपाली कस्तूरी (जिस पर नेपाल गवर्नमेंट की मोहर हो) केसर, जायफल, सुपारीदक्खिनी हर एक साढ़े दस मासे, पुराना गुड़ (जो कम-से-कम दस साल का हो) तेरह मासे, लौंग चार अदद, कटियारी सफेद की जड़ (सत्यानाशी सफेद की जड़) सवा तोला, इन सब औषधियों को खरल में डाल कर २४ घण्टे तक खरल करें और पानी इतना मिलावें कि गोलियां बन सकें, फिर जंगली बेर के बराबर गोलियां बना लें। इस के सेवन से गुप्त खराबियां दूर हो जाती हैं और बहनें इस लायक हो जाती हैं कि सन्तान पैदा कर सकें।

रीति—गाय के थोड़े गर्म दूध में मीठा डाल कर प्रातःकाल और सायंकाल एक-एक गोली तीन रोज तक सेवन करें। ईश्वर की कृपा से कुछ रोज में ही आशा की झलक दिखाई देने लगेगी।

नोट—औषधि तन्त्र के अन्दर सफेद फूल वाली सत्यानाशी की जड़ मिलानी आवश्यक है, क्योंकि इसके अन्दर सन्तान पैदा करने के अधिक गुण हैं।

इसके विषय में श्रीमान राधेश्याम जी हापुड़ से लिखते हैं—मेरी समझ में नहीं आता कि आपकी सन्तान पैदा करने वाली औषधि की मैं किन अक्षरों में प्रशंसा करूं। मैं आपको हर्ष के साथ सूचित करता हूं कि आपकी औषधि से मेरी स्त्री को १६ वर्ष के पश्चात बालक की प्राप्ति हुई। मेरा आशीर्वाद है कि आप दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति करती रहें। सरदार हरदन्तसिंह भटिन्डे से सूचित करते हैं कि आपकी सन्तान पैदा करने वाली औषधि एक अद्भुत जादू है। मैं इसकी जितनी प्रशंसा करूं कम है। मैं नहीं जानता था कि आपकी औषधि में इतने गुण भरे हुए हैं। हमारे शहर में आपकी औषधि की घर घर प्रशंसा हो रही है। अब तक करीब-करीब बीस से ज्यादा बहिनें गर्भवती हो चुकी हैं। कृपया तीन दर्जन शीशी वी० पी० से भेज दें। धन्यवाद।

इसके सिवाय अनिगिनत प्रशंसा-पत्र मेरे पास मौजूद हैं अगर कोई देखना चाहे तो मेरे पास आकर देख सकते हैं।

मेरी सन्तान-हीन बहिनो,

आप इसे बेगुण औषधि न समझें। अगर इसकी असली चीजें और बताए हुए औषधि तन्त्र की रीति से तैयार कर लें तो कोई वजह नहीं कि इससे बीस और पच्चीस वर्ष से बैठी हुई सन्तान-हीन बहिनों की गोद में बच्चे खेलते नजर ना आवें। अगर कोई बहिन इस औषधि को मेरे हाथों से ही बनवाना चाहें वो मुझे लिख दें। मैं उनको अपने हाथ से ही दवा तैयार करके भेज दूंगी।

मैं अपने धर्म से सच कहती हूं कि मैं किसी बहिन से औषधि की असली लागत से एक पाई भी ज्यादा न लूंगी। जिस बहिन को मेरे ऊपर विश्वास न हो वो बहन मुझे दवा तैयार करने के लिए कदापि न लिखें। एक बहन की औषधि पर पांच रुपये बारह आने, दो बहिनों की औषधि पर नौ रुपये आठ आने, तीन बहिनों की औषधि पर तेरह रुपये चार आने लागत खर्च आते हैं और महसूल डाक — इन से अलग।

जरूरी नोट—एक बहिन की चौबीस घण्टे दवा पिसवाने पर मेरे २) रुपए लगते हैं और दो और तीन के लिए दवा पिसवाने पर भी दो रुपये खर्च होते हैं। इस लिए अगर दो तीन बहिनें मिलकर दवा तैयार करा लेंगी तो वो फायदे में रहेंगी।

पता:—श्रीमती रतनबाई जैन सदर बाजार थाना रोड़, देहली।

विजय पुस्तक-भण्डार देहली की
जीवनदायिनी सामयिक पुस्तकें

जीवन चरित्र-माला:—सम्पादक—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

पं० मदनमोहन मालवीय

(ले०—श्री राम गोविन्द मिश्र)

महामना मालवीय जी का क्रम बद्ध जीवन वृत्तान्त। उनके मन को और विचारों का सजीव चित्रण। और उनके सम्बन्ध में महापुरुषों के मत। सब कुछ एक ही पुस्तक में। मूल्य १।) डाकखर्च ।=)

श्री सुभाषचन्द्र बोस

(लेखक—श्री रमेशचंद्र आर्य)

यह कांग्रेस के भूतपूर्व राष्ट्रपति का प्रामाणिक और पूरा जीवन-चरित्र है। ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। पुस्तक के अंत में श्री सुभाष बाबू के विचारों का संग्रह भी है। मूल्य ॥=) डाक व्यय ।-)

पं० जवाहरलाल नेहरू

(ले०—पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति)

इस पुस्तक में इन प्रश्नों का उत्तर मिलेगा : — पं० जवाहरलाल जी क्या हैं ! वह जो कुछ भी हैं, वह कैसे बने ! वह क्या चाहते और क्या करते हैं ! इन प्रश्नों के उत्तर में भारत के इस महापुरुष का सारा चरित्र आजाता है। भाषा, लेखन शैली और भाव के विषय में कुछ लिखना अनावश्यक है। इतना ही बताना पर्याप्त है कि इसमें लेखक की सब विशेषतायें विद्यमान हैं और १९४५ तक की पं० जी के जीवन की प्रायः सारी ही घटनाओं का वर्णन आगया है। मूल्य केवल १।) डाक व्यय ।=)

मौ० अबुलकलाम आजाद

(ले०—श्री रमेशचन्द्र जी आर्य)

यह भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री मौलाना अबुलकलाम आजाद की जीवनी है जिसे श्री रमेशचन्द्र जी आर्य स्वर्गवासी ने बड़े परिश्रम के साथ लिखा है ! इसके पढ़ने से यह भली भांति प्रकट होजाता है कि मौलाना साहब की राष्ट्रीयता दूध की तरह स्वच्छ है और वह अपने मार्ग पर दृढ़ चट्टान की तरह अटल हैं। मूल्य ॥=) डाक व्यय ।-)

महर्षि दयानन्द

ले० — श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति

महर्षि का यह जीवन चरित्र अपने ढङ्ग का पहिला है सब उपलब्ध सामग्री के आधार पर ऐतिहासिक तथा प्रामाणिक शैली पर ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। सत्यार्थप्रकाश के महत्व पर विशेष प्रकाश डाला गया है।

मूल्य केवल १॥) डाक व्यय ।=)

"मैं भूल न सकूं"

[सम्पादक श्री जयंत]

श्रीयुत श्रीनाथसिंह जी, श्री वात्स्यायन 'अज्ञेय' श्री काका कालेलकर जी, कवि सम्राट् श्री अयोध्यासिंह जी उपाध्याय 'हरिऔध' श्री रत्नकुमारी जी माथुर, श्रीमती होमवती जी, श्री विष्णुप्रभाकर जी, श्रीयुत देवीदत्त जी शुक्ल तथा श्री पहाड़ी आदि प्रसिद्ध साहित्यिकों उपन्यास और कहानी लेखकों की शिक्षाप्रद सच्ची कहानियों का संग्रह। प्रत्येक कहानी ऐसी है जिसे एकबार पढ़कर भूलना कठिन है। मूल्य केवल १) डाकव्यय ।-)

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

'जीवन संग्राम'

का

सन्शोधित दूसरा संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय की ललकार एक ही साथ है। श्री पं० जी की इस नई सामाजिक कृति के सम्बन्ध में – ग्वालियर राज्य के प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र "जयाजी प्रताप" ने लिखा है — पराधीन देशों को ऐसी पुस्तकें आशा और क्रियात्मकता का सन्देश देती हैं और इस दृष्टि से यह पुस्तक पठनीय है। 'विक्रम' उज्जैन ने इसके सम्बन्ध में लिखा है -- 'इस पुस्तक की विशेषता और सफलता इसी में है कि इसके लेखक प्रो० इन्द्रजी हैं। पुस्तक हिन्दी भाषी के मनन और संग्रह योग्य है'। मूल्य १) डाक व्यय ।-)

त्याग का मूल्य

यह विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगौर की अमर कृति (उपन्यास) योगा योग का अविकल अनुवाद है। इसी को उपन्यास सम्राट स्वर्गीय प्रेमचन्दजी ने रवि बाबू का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास बतलाया था। ४०० पृष्ठ दोरंगा टाइटल पेज — मूल्य ५) डाकव्यय ।=)

तिरंगा झण्डा

श्री बिराज जी रचित तीन एकांकी नाटकों का संग्रह — मूल्य १।) डाकव्यय ।-)

"दिल्ली चलो"

ले० दैनिक वीर अर्जुन के सम्पादक आनन्द विद्यालङ्कार व हरिश्चन्द्र

भारतीय स्वतन्त्रता-संघर्ष के अमर सैनिकों की एक अविस्मरणीय गाथा, कर्नल सहगल के विशेष संदेश सहित। सुभाष बाबू भारत से कैसे भागे, आजाद हिन्द फौज का निर्माण और उसके कारनामे, तथा मुकदमों का पूरा विवरण

मूल्य डाक व्यय सहित २।-)

घर बैठे हुनर सिखाने वाली अनुपम पुस्तकें—

साबुन-विज्ञान

तैल का सब से बड़ा उद्योग साबुन है और देश के साधनों को देखते हुये साबुन के उद्योग विस्तार के लिये अभी बहुत बड़ा क्षेत्र पड़ा है। परन्तु इस उद्योग में सफलता प्राप्त करना साबुन बनाने की अच्छी शिक्षा पर निर्भर है। 'साबुन-विज्ञान' इस विषय में अद्वितीय पुस्तक है। हर प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के लिये इसे अवश्य पढ़ें। मूल्य २) डाकव्यय ।-)

तैल-विज्ञान

इस पुस्तक में तिलहन से लेकर तैल के चार बड़े उद्योगों की विवेचना सविस्तार तथा सरल ढंग से की गई है। अतः केश तैल, वनास्पति घी, पेण्ट और वार्निस के उद्योग सीखने के लिये 'तैल विज्ञान' पुस्तक अवश्य पढ़िये। मूल्य २) डाकव्यय ।-)

हमारे घर

भट्टी की तरह धधकते हुये भारतीय घरों को शान्ति सदन कैसे बनाया जाय ? इस पुस्तक में इसी विषय का चिन्तन है। ॥=) मूल्य डाक व्यय ।-)

आनुपातिक प्रतिनिधित्व (Single Transferable Vote) (निर्वाचन सम्बंधी नियम) ले० श्री पं० महावीर जी त्यागी मूल्य ।)

विजय पुस्तक भण्डार (वीर अर्जुन कार्यालय के ऊपर) श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

श्री पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिये 'अर्जुन प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली से छाप कर प्रकाशित किया।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वीर अर्जुन

साप्ताहिक

ILLUSTRATED VIR ARJUN WEEKLY

वर्ष १२] दिल्ली, सोमवार १० मार्गशीर्ष सम्वत् २००३, DELHI, 25th November 1946. [अङ्क ३७]

पुस्तकालय
सरदार पटेल कांग्रेसी

भूतपूर्व राष्ट्रपति

पं० जवाहरलाल नेहरू

नये राष्ट्रपति

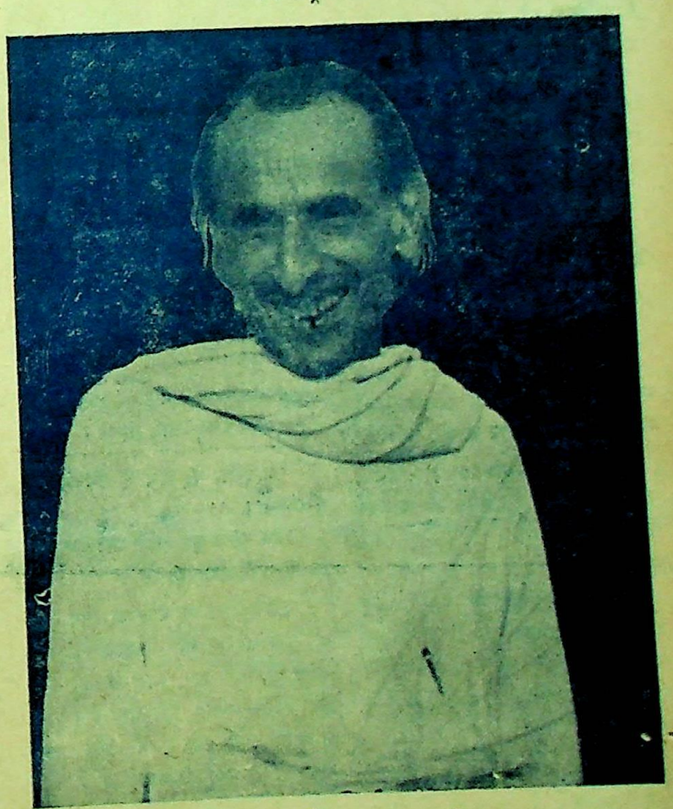

आचार्य कृपलानी

वार्षिक मूल्य ८)
छः मास का ४)

सम्पादक— रामगोपाल विद्यालङ्कार
कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार

एक प्रति का मूल्य ≈)

आधी दुनिया

यदि गवर्नमेण्ट इजाजत देगी तो····

[अर्धनारीश्वर]

★

'यदि गवर्नमेण्ट ने इजाजत दी' यह उत्तर सुनकर मैं हक्का-बक्का हो गया।

बात है गांधी आश्रम, दिल्ली की। एक भद्र महिला खद्दर खरीदने आई थीं। बातचीत, वेशभूषा और चेहरे से सुसंस्कृत कुलीन व शिक्षित महिला जान पड़ती थीं। गांधी आश्रम के एक कार्यकर्ता बहुत महीन सूत दिखाकर उन महिला से कह रहे थे कि यदि चर्खे के सूत की बारीकी देखनी है तो मेरठ चलिये, वहां कांग्रेस के अवसर पर प्रदर्शनी होगी। उसमें खादी की सभी क्रियाओं को दिखाया जा रहा था। वहां आप देखेंगी २५-३०) रु० सेर रुई की पूनियां और १०० नम्बर का एकसा सूत। वे खादी के प्रेम में मस्त खादी की महिमा ऐसे आकर्षक ढंग से कर रहे थे कि वह महिला ही नहीं, अन्य उपस्थित ग्राहक भी मेरठ जाने का निश्चय करते से मालूम होते थे। इसके बाद जब उन्होंने पूछा कि आप मेरठ चलेंगी न? तब यह उत्तर सुनकर मैं और वे खादी कार्यकर्ता कुछ हैरान से हो गये कि 'यदि गवर्नमेंट ने इजाजत दी।'

'अजी, आज तो सरकार पटेल और नेहरू की है। अब वे दिन गये, जब सरकारी नौकर खादी या कांग्रेस के नाम से कांपते थे।' उन्हीं खादी कार्यकर्ता ने जवाब दिया।

'मैं भी यह जानती हूं, लेकिन मैं उस गवर्नमेंट की कोई बात नहीं करती।'

'तब।'

'घर की गवर्नमेण्ट' उनके मुख पर यद्यपि हास्य की रेखा थी, तथापि उनके स्वर में वेदना का स्पष्ट आभास था।

'घर की गवर्नमेण्ट?' उनका अभिप्राय समझते हुए और भी आश्चर्य से कार्यकर्ता ने कहा। 'वे भला क्यों रोकेंगे?'

बात भी ठीक थी। वे क्यों रोकते? उनके पति सुशिक्षित थे और थे राष्ट्रीय विचारों के। उनके एक भाई तो प्रान्तीय असेम्बली के कांग्रेसी सदस्य थे। वे क्यों रोकते?

महिला ने कोई जवाब नहीं दिया। खादी कार्यकर्ता ने फिर कहा — 'मेरठ है ही कितनी दूर? दो तीन घण्टे में तो आप देखकर वापस आ जायंगी; फिर आपके तो पास गाड़ी है। जैसे यहां बाजार आईं, वैसे ही मेरठ भी।'

'फिर भी उनकी इच्छा होगी, तभी तो जाऊंगी।' संक्षिप्त उत्तर था, लेकिन इस उत्तर के गर्भ में कितनी विवशता और कितनी वेदना थी, यह सुनने वाले जान गये थे। बात कुछ नाजुक हो चली थी। बातचीत आगे बढ़ाना उचित न था। महिला बिल चुका चली गईं लेकिन जो चर्चा चल पड़ी थी, ग्राहकों में वह पीछे भी चलती रही।

'देखिये, इतनी सुशिक्षित और समझदार स्त्रियों पर भी यह प्रतिबन्ध?'

'इसमें क्या बात है। पूछने में हर्ज ही क्या है?' एक ग्राहक ने जवाब दिया।

'क्यों पूछें? क्या पत्नी पति की दासी है? पति पूछ कर क्यों नहीं जाते?'

'जहां पत्नियां जबर्दस्त होती हैं, वहां ऐसा ही होता है। वे पत्नी से बिना पूछे एक कदम नहीं चलते।'

मेरठ कांग्रेस पर संगठित महिला स्वयंसेवक की प्रधान नायक।

'तो इसका यह अर्थ है कि जो जबर्दस्त हो·····

बात काटते हुए पहले ग्राहक ने कहा कि 'ऐसा तो होता ही है।'

एक महिला भी बातचीत सुन रही थी, कुछ वयस्क थीं। सार्वजनिक कार्य करती थीं, दो बार जेल भी हो आई थीं, बोलीं—'कितनी बुरी बात है। पुरुष से आज्ञा लेनी पड़े। स्त्री और पुरुष दोनों का समान अधिकार है। कोई किसी का मालिक नहीं।'

'लेकिन आप ही बतायें कि क्या आपने जेल जाने की अनुमति कभी उनसे ली थी?'

'नहीं, वे तो मुझे कभी रोकते नहीं, जहां चाहती हूं चली जाती हूं। १९३०-३१ के आन्दोलन में तो दिन भर गायब रही हूं, कभी उन्होंने पूछा तक नहीं।'

'तब फिर आप क्यों ऐतराज करती हैं, पुरुषों पर दोष लगाती हैं?'

'पर इस बात का दूसरा भी पहलू आपने कभी सोचा है। जब पति को बिना सूचना दिये—

'सूचना देने की बात तो ठीक है, सवाल तो इजाजत लेने का है। वह शासक तो नहीं है।'

'अरे शासक! शासक तो पत्नी होती है। आज अधिकांश घरों में शासन स्त्री का होता है, न कि पुरुष का? यही देखो न? आप जेल इसी लिए नहीं गये कि घर की मालकिन की इजाजत नहीं मिली।'

'अरे मालकिन! कमाने वाला आदमी गुलाम और मौज से खर्च करने वाली मालकिन! शर्म से भले ही कोई न बतावे, लेकिन हर एक घर का हाल यही है।'

'परन्तु क्या पुरुष निर्दयी नहीं होते? क्या वे स्त्रियों को गुलाम बनाकर नहीं रखते? क्या वे—'

'होंगे थोड़े से, लेकिन इसका अर्थ पुरुष जाति को तो बदनाम करना नहीं है, ऐसे तो कुछ स्त्रियां भी होती हैं और कुछ पुरुष भी।'

'अजी कहां, मैं तो देखता हूं कि बिरला पुरुष इतना स्वेच्छाचारी होगा; स्त्रियां तो प्रत्येक घर में। उनके संकेत पर उनके रूप में मतवाले पुरुष नाचते हैं, उनके एक-एक आंसू पर सैकड़ों रु० निछावर करने को तैयार। पुरुष अपने पेट के लिए इतनी मेहनत नहीं करता, वह दिन-रात खून पसीना एक करता है स्त्री के गहनों, रेशमी साड़ियों तथा उसके बच्चों के लिए?'

'क्या बच्चे पुरुष के नहीं होते?' अब वयस्क महिला की बारी थी। 'स्त्री भी तो उसके बच्चों के लिए, उसके लिए दिन-रात एक करती है। क्या वह कम मेहनत करती है? जरा पुरुष बच्चों को पाल कर तो दिखावें? जरा सा बच्चा रो दे तो स्त्री के ऊपर पटक कर चले जाते हैं! पुरुष उसकी मेहनत का—'

विभिन्न प्रान्तों की महिला स्वयंसेविकाएं।

'लेकिन आप यह तो बताइये कि आपके जेल जाने पर किसने आपके बच्चों को पाला था?' एक व्यक्ति ने, जो शायद उनके कुछ परिचित भी थे, कुछ धृष्टता से पूछा।

'अजी तब तो?' वे सिर खुजाते हुई बोलीं—'उन्हीं के सिर पर बोझ पड़ा था।'

उन्होंने अत्यन्त धैर्य के साथ कहा—

'यह तो उनका कर्तव्य था' सान्त्वना देते हुए उन्हीं खादी-कार्यकर्ता ने कहा। 'आप देश के लिए जेल गयीं, तो क्या भी वे न करते।'

'लेकिन सवाल तो यह है कि मेरठ कांग्रेस पर जाने के लिए स्त्री को पति की अनुमति लेनी चाहिए या नहीं?' वास्तविक प्रश्न की ओर सबका ध्यान एक सज्जन ने खींचा।

'मेरी तो राय यह है कि स्त्री को अनुमति लेनी चाहिए। आखिर घर में तो किसी एक को बड़ा होना ही चाहिए; नहीं तो घर में अव्यवस्था फैल जायगी।'

'लेकिन पति ही क्यों हो?' फिर वही महिला बोलीं। 'स्त्री भी तो घर की मालकिन है' वह न जाने क्यों कुछ आवेश में आ गई थी।

'पर संसार तो पुरुष को जिम्मेवार ठहराता है। उसकी अनुमति आवश्यक है।'

एक वयस्क पुरुष भी बोले—'न स्त्री और न पुरुष, घर का मालिक तो बुजुर्ग होना चाहिए, जो उम्र में सबसे बड़ा हो। श्वसुर हो तो वे अन्यथा सास, उसकी भी अनुपस्थिति में पति, क्योंकि उसकी उम्र स्त्री से अधिक होती है और यदि वह भी न हो तो फिर विधवा पत्नी। केवल उम्र से ही।'

बात कुछ ऐसे युक्ति-युक्त ढंग से कही गई थी कि उसका उत्तर किसी को न सूझा इधर करफ्यू आर्डर का भी समय हो रहा था। सबको घर जाने की जल्दी थी। बातचीत यहीं खतम हो गई।

———

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

साम्प्रदायिक समझौतों के कारण देश संकट में

राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी की कांग्रेस को चेतावनी

मेरठ में होने वाले कांग्रेस के ५४ वें अधिवेशन के सभापति पद से आचार्य कृपलानी ने निम्न आशय का भाषण दिया :—

हम आज संसार के इतिहास में छः महत्वपूर्ण सालों के बाद मिल रहे हैं। इस अवसर में हमें १९४१ और १९४२ में दो बार ब्रिटिश सरकार से संघर्ष करना पड़ा। १९४१ में व्यक्तिगत सत्याग्रह और १९४२ में भारत छोड़ो आन्दोलन। कांग्रेस ने सदा अहिंसात्मक संग्राम किये हैं और उनके बाद ऐसा प्रतीत हुआ कि कांग्रेस परास्त हो गई है, लेकिन यही ही समय आया, कांग्रेस और भी दृढ़ता व बल के साथ उठी और उसने सरकार से जबरदस्त मोर्चा लिया। १९४२ का आन्दोलन भी समाप्त हो गया। कांग्रेस यहीं विद्यमान रहे। वे भारत छोड़ कर नहीं गये। राष्ट्र ने समझा कि कांग्रेस कुचल दी गई, लेकिन ज्यों ही जेलों के दरवाजे खुले, नेता बाहर आये, कहीं निराशा व पराजय का चिन्ह भी न रहा। सारा में एक नवीन जीवन प्रतीत होने लगा और शिमला में कांग्रेस को निम-न्त्रण स्पष्ट कांग्रेस की विजय थी। उसके बाद चुनाव आये, उन्होंने कांग्रेस पर राष्ट्र के अगाध विश्वास को प्रकट कर दिया। जो लड़े थे, वे जीत गये, बहुत से वीर इस युद्ध में बलि भी हो गये, जिन्हें हम कभी भूल नहीं सकते। वे इस-लिये मरे कि उनका राष्ट्र जीवित रहे।

शिमला कांफ्रेंस की चर्चा करते हुए आचार्य कृपलानी ने कहा—उसकी असफलता का कारण यह था कि उसे आगे काम नहीं करने दिया गया। ब्रिटिश नौकरशाही की सुस्त मशीनरी का परिणाम था कि कुछ जल्दी ही नहीं हो सका। उसके बाद पार्लमेंट सदस्यों का कमीशन आया, मंत्रि-मण्डल का मिशन आया और उसकी घोषणाओं के अनुसार सितम्बर १९४६ में अन्तःकालीन सरकार बनी। इसके बाद वायसराय ने अपने मंत्रि-मंडल के साथियों की सम्मति के बिना लीग के नेताओं को अपनी मरजी पर निमंत्रित किया। इस तरीके की किसी ने पहले कल्पना भी न की थी। आखिर लीग के प्रतिनिधि भी अन्तःकालीन सरकार में सम्मिलित हो गये।

मेरा विश्वास है कि यदि हम १९४२ का चैलेंज स्वीकार न करते, तो आज की स्थिति में हम न होते। यद्यपि हमने पूर्ण स्वराज्यका उद्देश्य प्राप्त नहीं किया है। तथापि हमारे नेताओं ने शक्ति के अभेद्य दुर्ग में प्रवेश अवश्य कर लिया है। विदेशी शासन के अन्त का यह प्रारंभ है। स्वराज्य प्राप्त करनेके बाद भी हमारा लक्ष्य और हमारा कार्य पूर्ण नहीं होगा। विदेशों के स्वातन्त्र्य-युद्ध विध्वंसात्मक होते रहे हैं, इसका परिणाम हुआ है डिक्टेटरशिप या गृहयुद्ध। लेकिन गांधीजी के नेतृत्व में रचनात्मक कार्यक्रम हमारा साधन है और आज हमें प्रान्तोंमें अपनी पूर्ण शक्ति के साथ इसे अपनाना चाहिए।

कांग्रेस ने अहिंसा मार्ग को अपनाया है। अहिंसा का परिणाम है विशुद्ध प्रजातंत्र। इसमें कहीं दबाव या हिंसा को कोई स्थान नहीं। अहिंसा और डिक्टेटरशिप का कोई मेल नहीं। इसलिए कांग्रेस में कभी एकतंत्र या डिक्टेटरशिप नहीं चल सकती। इसलिए कांग्रेस का स्वराज्य किसी एक जाति, वर्ग या श्रेणी का स्व-राज्य नहीं हो सकता। यह तो जनता का जनता के लिए जनता पर शासन है। विशुद्ध प्रजातंत्र का कोई अर्थ नहीं, यदि उसके साथ साथ आर्थिक समानता की भावना नहीं है। पूंजीवाद के साथ प्रजा-तंत्र मेल नहीं खा सकता। इसीलिए बड़े पूंजीवादी देशों की अपेक्षा नारवे, स्वीडन डेनमार्क आदि छोटे राष्ट्र प्रजातंत्र का अधिक आनन्द लेते हैं। लेकिन इसके साथ ही यह भी निश्चय है कि जिन देशों में बड़ी बड़ी मशीनरियां हैं, वहां शक्ति कुछ थोड़े से लोगों के हाथों में केन्द्रित हो जाती है। इन देशों के शासकों के हाथ में राजनैतिक शक्ति के साथ साथ आर्थिक शक्ति का भी नियंत्रण आजाता है। पूंजीवाद ने प्रजातंत्र को नष्ट कर दिया, क्योंकि पूंजीपति श्रेणी के हाथ में राजनैतिक शक्ति आ गई। कम्यू-निज्म राजनैतिक डिक्टेटर के हाथ में आर्थिक चक्र का भी पूर्ण नियंत्रण कर देता है। इस लिए साम्यवाद और पूंजी-वाद दोनों में प्रजातंत्र के लिए खतरा है।

उद्योगधन्धों के विकेन्द्रीकरण और ग्रामोद्योग की उन्नति को आर्थिक समस्या का हल बताने के बाद आचार्य कृपलानी ने कृषि और खाद्यसमस्या की चर्चा की और कांग्रेस की जमींदारी पद्धति को समाप्त करने, यू० पी० सरकार की इस दिशा में प्रगति की चर्चा करते हुए आचार्य कृपलानी ने कहा कि हम जिस शोषण से रहित समाजवाद की रचना सहयोग और शान्ति के आधार पर करना चाहते हैं, वह गांधीजी के आदर्शों के अनुसार ही स्थापित हो सकता है।

राष्ट्रीय एकता

आज भारत स्वराज्य के द्वार पर है; यह निश्चित है। आज की जरा सी असावधानता हमें लक्ष्य से विचलित कर सकती है। ब्रिटिश साम्राज्यवाद की सब से बड़ी शक्ति यह है कि वह भारतीयों को अपना साधन बनाता रहा है। भारत-वर्ष को अंग्रेजों ने भारत के धन से, भारत के साधनों और भारत के मस्तिष्क तथा भारत के सिपाहियों द्वारा जीता है। हमारा सब से बड़ा दुर्भाग्य हमारे आपसी मतभेद हैं। यही हमारी सब से बड़ी दुर्बलता है। स्वराज्य के मार्ग में सब से बड़ा बाधा हिन्दू मुसल-मानों का साम्प्रदायिक मतभेद है। विदेशी शक्ति हमारे इस मतभेद से पूर्ण लाभ उठा रही है। यही उसका आखिरी हथियार है, वह बड़ी कुशलता से उसका प्रयोग कर रहा है। हिन्दू और मुसल-मानों को दो पृथक राष्ट्रों के रूप में स्वीकार करना अनैतिहासिक, अवैज्ञानिक, अनैतिक और अस्वाभाविक है। जाति और नसल के विज्ञान से भी यह सिद्ध नहीं होता। दोनों के राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक स्वार्थ एक हैं। उनकी समानताएं अनगिनत हैं, उनके मतभेद अंगुलियों पर गिने जा सकते हैं। हिन्दू और मुसलमान किसी तरह दो अलग अलग राष्ट्र नहीं हैं। मेरे अपने भतीजे और भतीजियां मुसलमान हैं। उनकी और मेरी जाति अलग अलग कैसे हो गई। जब हिन्दुस्तान में मुसलमान आये थे, वे सिर्फ हजारों में थे, आज वे भारत की जनसंख्या का २५ फीसदी भाग हैं। वे तब नहीं डरे थे, आज क्यों डरते हैं? वे विदेशी नहीं हैं।

कांग्रेस की गलत नीति

मैंने प्रायः यह कहा है कि कांग्रेस को अल्पसख्यकों की उचित मांगें स्वीकार करनी चाहिएं, लेकिन राष्ट्रीय हित का बलिदान करके नहीं। अतीत में इस प्रकार का समर्पण हमारे वर्तमान संकटों के लिए काफी हद तक उत्तरदायी है। राष्ट्रीयता साम्प्रदायिकता से ऊंची चीज है, इसलिए हमें प्रजातन्त्र के ऊपर साम्प्रदायिकता को कभी भी हावी नहीं होने देना चाहिए। इस दृष्टि से देखने पर इस बात में कोई संदेह नहीं है कि कांग्रेस ने अराष्ट्रीय और प्रजातंत्रविरोधी पृथक चुनाव को स्वीकार करके गलती की है। मेरा विश्वास है कि हमारी वर्तमान समस्याएं इतनी विकट न होती, यदि हम उसी समय पृथक चुनाव के सिद्धांत को स्वीकार करने से इन्कार कर देते। यह संभव है कि अपनी विकट समस्या को हल करने के लिए हम ऐसे सिद्धांत को स्वीकार करलें, जो राष्ट्रीयता और प्रजातंत्र के जड़ पर ही कुठाराघात करदें। यदि हम ऐसा करते

आचार्य कृपलानी

है, तो न केवल हम राष्ट्र के साथ प्रवंचना करते हैं, बल्कि मुसलमानों और अन्य अल्पसंख्यक जातियों का भी अन्ततोगत्वा अहित करते हैं मुझे आशा है कि भविष्य में राष्ट्र ऐसे प्रजातंत्र विरोधी और अराष्ट्रीय समझौते नहीं करेगा।

बंगाल के अमानुष नरमेध की चर्चा करते हुए आचार्य कृपलानी ने कहा कि हिंसा से अपने उद्देश्य की पूर्ति करना उचित नहीं है। बंगालमें मुसलमान बलात् धर्म परिवर्तन, विवाह और अपहरण आदि का प्रयोग करके आग के साथ खेल रहे हैं। केन्द्रीय सरकार ने हस्तक्षेप न करके प्रान्तों को स्वतंत्र सा कर दिया, इसकी प्रतिक्रिया बिहार में हुई और यह अत्यन्त स्वाभाविक था। मैं स्वयं अहिंसावादी हूं। लेकिन मैं नहीं कह सकता कि यदि बंगाल सा अमानुष कांड मेरे साथ होता तो मैं कहां तक अपने सिद्धान्त पर दृढ़ रहता। फिर भी बदले की भावना उचित प्रतिकार नहीं है। बिहा-रियों का कर्तव्य था कि वे अपनी सरकार पर दबाव डालते कि वह बंगाल सरकार से मुलझे। ऐसा करना अधिक युक्ति-संगत होता। बदला लेने से हिंसा और रक्तपात का जो चक्र चलेगा, उसे फिर लीग व कांग्रेस दोनों आगे रोक नहीं सकेंगी।

हिन्दु-मुस्लिम एकताके लिए मर्मस्पर्शी शब्दों में अपील करते हुए आ० कृपलानी ने कहा कि हिन्दू मुस्लिम समस्या की तरह रियासतों की समस्या भी बड़ी विषम है। राजाओं को यह अनुभव करना चाहिए कि भारतवर्ष एक है और राजाओं को संपूर्ण भारत के साथ चलना चाहिए। जिन राजाओं को जनहित का संरक्षक होना चाहिए था, आज वे विदेशी शासन की कठपुतली बन रहे हैं। ऐसी परिस्थि-तियों में उनके बड़े-बड़े खिताब, और उनका शाही ठाठबाट आदि सब उपहासा-स्पद है। उनको अपने प्रभु इंगलैंड नरेश का अनुकरण करना चाहिए। वह आज इसीलिए लोकप्रिय हैं कि वह स्वयं शासन नहीं करता, वह जन मत को अपना प्रदर्शक मानता है।

[शेष पृष्ठ ६ पर]

बाल बन्धु परिषद

पेटू मल

एक समय की बात है कि किसी शहर में एक आदमी रहता था। उसका नाम था पेटूमल। उसकी दिनचर्या बडी अजीब थी। सवेरे नाश्ता किया करता, दोपहर को खाना खाता और फिर खाने की प्रतीक्षा में रहने लगता। ४ बजते ही नौकरों को खाना लाने के लिए कह देता था। ऐसा था वह अजीब पेटू। इस तरह उसकी तन्दुरुस्ती सुन्दर कैसे रह सकती थी। आखिर वह एक दिन बीमार हो गया और इतना बीमार हुआ कि उसके जीने की भी आशा न रही। इन्हीं दिनों में किसी ने डाक्टर शिव-नारायण से उन्हें इलाज कराने के लिये कहा अन्त में पेटू डाक्टर साहब के पास इलाज कराने को पहुंचे तो देखा कि डाक्टर साहब खुद मरीजों को खाना खिला रहे हैं तो पेटू ने सोचा कि अब तो बस मजे ही मजे हैं।

अब वह पेटू डाक्टर साहब से मिले और शर्त तय हुई कि वह एक महीने तक डाक्टर साहब का कहना मानेंगे। वह अपनी आदत के अनुसार खाने के लिए मांगने लगे। जब खाना आया तो पेटू ने देखा कि प्लेटें हैं। यह देख कर बहुत खुश हुए लेकिन प्लेटें खोलने पर देखा कि फलों के सिवा और कुछ है ही नहीं। खैर किसी तरह खाना खाया और सोने के लिए देखा तो केवल एक लोहे का पलंग है। वह यह देखकर बहुत लाल पीले हुए। नौकरों पर गुस्सा उतार ही रहे थे कि डाक्टर साहब आये और पलंग निकलवा के बाहर से सांकल बन्दकर दी और कमरे के लोहे के फर्श को बिजली की अंगीठी से गर्म करवा दिया। कमरा जब खूब गर्म हो गया तो पेटूमल नाचने लगे और डाक्टर साहब को कोसने लगे। इसी तरह रोज होता रहा। एक महीने बाद जो पेटू खुद भी नहीं उठ सकता था अब एक दो आदमियों को भी उठा सकता है।

—सुभास

पृथ्वी

पृथ्वी उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव के बीचोंबीच पृथ्वी में आरपार एक लकीर खींचे तो उसकी लम्बाई ७,८९९ मील होगी और पृथ्वी के मध्य भाग में (विषुवत) पृथ्वी के आर पार एक लकीर खींचे तो उसकी लम्बाई ७,९२६ मील होगी, यानी वह कुल २७ मील ज्यादा लम्बी होगी।

हिसाबी लोगों का कहना है कि पृथ्वी की आयु २०,००,००,००० (बीस करोड़ साल) की है!

हमारी पृथ्वी पर वर्षों का पानी प्रति सेकण्ड १, ६०.००,००० (एक करोड़ साठ साल) टन के हिसाब से बरसता है।

महामना श्री मालवीयजी

पूण्य भूमि की शोभा हे?
सत-जन के सिरताज अहा॥
शील सनेही गुण के आगर
नागर सुखद गुरु राज महा॥
ज्योति राष्ट्र प्रीति की तुम !
नव रश्मि फैली भारत पर॥
आलोकित मन दिशा हुई।
उपकार हुआ जन आरत पर॥
मालवीय तुम सा राष्ट्रपति पा।
भारत मां हर्षाईं थीं॥
कई जन्मों के सत्कृत्यों से।
तुम-सी निधि को पाई थीं॥
वीणा की गति बंद पड़ीं।
वे शिथिल हुईं तब सूनेपन से॥
तुम सुमाग दर्शक भारत के।
अरु पाठ सदा मधु जीवन के॥
यज्ञ देश-हित प्राणों के कर।
तुमने सदा किये शुभ कार्य॥
कह कित खोये भूषण भारती।
गुण-विद्या में भूषिते आर्य॥
जीवन उज्जवलता के अहो !
स्वर्गीय-आत्मा अति ही महान॥
भक्ति-भाव की यह लो अंजली।
ओज तेज-मय प्रतिभामान॥

—सुश्री शशी

क्या आप जानते हैं ?

ईसाई हठयोगी सायमान उनहत्तर वर्ष तक एक ऊंचे खम्भे के सिरे पर बैठा रहा थे।

× × ×

नेपोलियन ने घोड़े पर चढ़कर लाल-सागर पार किया था।

× × ×

सहारा प्रदेश में रहने वाली तौरेग जाति में स्त्रियों के बजाय पुरुष बुरका पहिनते हैं।

× × ×

नेपोलियन के आठ प्रेम पत्र जो उसने जोजैफीन को भेजे थे, लन्दन में बीस हजार पौंड में नीलाम हुए थे।

× × ×

फ्लोरैन्ज जीगफैल ने आजीवन उत्तरमें एक भी पत्र किसीको नहीं लिखा।

× × ×

काठियावाड़ प्रदेश के निवासी देसुर अर्जुन डांगर नामक व्यक्ति के संसार भर में सबसे बड़ी एक सौ चार इंच लम्बी मूछें थीं।

— दीनदयाल

संसार का भारी मुकदमा

नूरम्बर्ग की अदालत पर संसार की आंखें लगी हुई थीं। आखिरकार उन नाजी नेताओं के भाग्य का फैसला १ अक्तूबर सन् १९४६ को 'चार बड़ो' की मण्डली ने सुना ही दिया। १२ नाजी नेताओं को फांसी की सजा, ७ को विभिन्न आजीवन तथा कड़ी सजायें और तीन को बरी कर दिया गया। गोयरिंग जैसा बबर शेर, जिसके कि इशारों पर लाखों लोग मर मिटते थे, उसे भी फांसी की सजा दी गयी। १६ अक्तूबर को सबों को फांसी के तख्ते पर लटका दिया गया परन्तु गोयरिंग अपमान से मरने के बदले चुपचाप स्वयं विष पान करके संसार से चल बसा।

पूरा फैसला ५५ हजार शब्दों में लिखा गया था। इसके लिए २१७ दिन अदालत बैठी थी और २४०० घन्टे कार्य में खर्च हुए। १५ हजार पृष्ठों में ५० लाख शब्दों की गवाहियां हुई थीं। लग-भग २०० गवाह थे। ३ लाख हल्फनामे पेश किये गये थे। ५००० व्यक्तियों का एक छोटा सा नगर इसी काम के लिए बसाया गया था जिसका खर्चा ५ हजार पौंड प्रति सप्ताह था। सफाई के वकील को १ लाख पौंड मिले। ३० लाख कागजात पेश हुए। हिटलर और हिमलर की अनुपस्थिति अखरती थी। नाजी नेताओं की लाशों को जलाकर उनकी राख उड़ा दी गयी। इस प्रकार मित्रराष्ट्र मडली ने जर्मनी को शान्ति के नाम पर कुचलने का नाटक खेला पर देखने की यह बात है कि वहां का बाल जगत् जो कि जर्मनी का भाग्यनिर्माता होगा, कैसा इतिहास बनात ?

—नेमिचन्द्र

प्रश्न पहेली

[१]

शयामामुखी जुगा युगल,
सब गुणन की खान।
जाके पास होवत है,
जग में पावत मान॥

[कलम]

[२]

तीन अक्षर की मैं कहलाऊं.
आदि काट लो तरी पहुंचाऊं।
अन्त काटते छत बन जाऊं,
खोलो तो सर पर तन जाऊं॥

[छतरी]

—जगदीशलाल

समुद्र का पानी खारी क्यों

हम जानते हैं कि समुद्र में बारिश का पानी इकट्ठा होता है। बरसात का पानी कभी न कभी तो जमीन पर होता ही है। जमीन पर बरसा हुआ पानी अंदर जज्ब हो जाता है और जमीन के अंदर रहे हुए रसायनिक पदार्थ उसमें घुल जाते हैं। इसमें का बहुत सा पानी नदियों और झरनों की राह समुद्र में जाता है, जहां उसमें खारीपन और दूसरे रसायनिक पदार्थ रह जाते हैं।

अलग-अलग समुद्र के खारीपन का परिमाण अलग-अलग होता है। उत्तर समुद्र में और अटलाण्टिक महासागर के पानी में फीसदी ३ और भूमध्य समुद्र में फीसदी ४ खारीपन है। दूसरी तरफ बाल्टिक समुद्र में यही फीसदी १ से २ तक है। मृतसरोवर (डैड सी) में इसका परिमाण प्रतिशत २० से २५ तक मान गया है।

समुद्र में पाये जाने वाले नमक का 'सोडियम क्लोराइड' की मात्रा पर पृथ्वी की पहली या सबसे पुरानी चट्टान की उम्र निकालने का तरीका निकला है और उसी के आधार पर पृथ्वी की उम्र २०,००००,००० बीस करोड़ बरस की कूती गई है।

———

आइये ! बैठिये !

आइये !
बैठिये !
हाथ-पैर धोइये।
ठण्डा पानी पीजिये।
दो घड़ी सोइये।
बात चीत कीजिये।
अच्छा, तो अब पधारिये।
स्नेह रखिये।
रोज रोज आइये।

मनोविनोद

बाबू—(अपने नौकर से) अरे कल्लू जरा देख तो क्या बजा है?

कल्लू—(कुछ सोच कर) हजूर रसोई घर में बिल्ली ने दूध का बर्तन गिराया था सो वही बजा होगा।

× × ×

मास्टर—(रमेश से क्रोधित होकर) बैंच पर खड़े हो जाओ।

रमेश—लेकिन मास्टर साहब मैं ऐसा करने में असमर्थ हूं।

मास्टर—क्यों ?

रमेश—मेरे पिताजी ने मुझे बताया है कि कोई मनुष्य जो तुमसे बड़ा हो, यदि तुम से नीचे खड़ा हो तो उससे नीचे खड़े होकर बात करो। भला मैं आपसे ऊंचे पर कैसे खड़ा हो सकता हूं!

— सुन्दरलाल

———

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

रजत जयन्ती अंक

अर्जुन के पाठकों को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि अर्जुन को निकले २५ साल होने के उपलक्ष में 'अर्जुन' का "रजत जयन्ती-अंक" शीघ्र ही निकलने वाला है। अंक निकालने की तैयारियां शुरू कर दी गई हैं। इस अंक की विषय सूची आगामी अंक में दी जायगी।

—सम्पादक

★ वीर ★

अर्जुन

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार १० मार्गशीर्ष सम्वत् २००३

राष्ट्र की समस्याएं

—:०:—

आज राष्ट्र इतनी उलझनभरी परिस्थितियों में ग्रस्त हो गया है कि उसे स्पष्ट मार्ग निर्देश की आवश्यकता किसी भी समय से अधिक है। अब तक कांग्रेस के सामने केवल एक ध्येय था, ब्रिटिश सरकार से संघर्ष। इसका मार्ग-निर्देश गांधीजी ने किया। कांग्रेस के समस्त नेताओं ने एक प्राण होकर अपने सामने के उद्देश्य--स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अनथक प्रयत्न किया। मार्ग में अनेक बाधाएं आईं. इनके वास्तविक कारण की गहराई में जाने का उनके पास न समय था और न उतनी उत्कट इच्छा, वे अधीर थे स्वतंत्र होने के लिए, इस लिए उन बाधाओं को नजरअन्दाज करते हुए या मूल रोग को दूर करने की बजाय उसके प्रकट चिन्हों को शांत कर के वे आगे बढते गए। जब कभी किसी ने इन बाधाओं की गहराई की ओर नेताओं का ध्यान भी खींचा, तो उन्होंने अपने सामने के महान ध्येय की ओर संकेत करते हुए यह कह कर उन्हें चुप कर दिया कि हम इन बाधाओं में उलझ कर कहीं मार्ग से विचलित न हो जाएं। ऐसा करना शायद स्वाभाविक भी था।

लेकिन आज स्वराज्य के बहुत निकट पहुंचकर हम देख रहे हैं कि वे बाधाएं, जिन्हें हमने अत्यन्त तुच्छ समझकर हल करने की असली कोशिश नहीं की थी, आज वृहदाकार धारणकर हमारे सामने उपस्थित हो गई हैं। हमने पहले केवल सामने की ओर दृष्टि की थी, नीचे और दायें, बायें की बाधाओं की उपेक्षा की थी। जब-जब सरकार के संकेत पर अथवा अपने स्वार्थ के कारण मुसलमानों ने कोई अनुचित या अराष्ट्रीय मांग रखी, हमने स्वराज्य के महान लक्ष्य को सामने रखकर उसे किसी न किसी रूप में इस आशा से स्वीकार कर लिया था कि स्वराज्य प्राप्त होने पर इन सब बाधाओं को दूर कर लेंगे। पृथक् चुनाव को स्वीकार कर लेने, रैम्जे मैकडानल्ड के राष्ट्रघाती साम्प्रदायिक निर्णय को न स्वीकार करने और न अस्वीकार करने की दिलमिल नीति हिन्दी-उर्दू के कृत्रिम सम्बन्ध को स्वीकार करने तथा वायसराय की कौंसिल में सवर्ण हिन्दुओं के बराबर मुस्लिमलीग को सीटें देने आदि के कार्य राष्ट्र नेताओं की स्वातन्त्र्य प्राप्ति की उत्कट अभिलाषा के प्रमाण हैं। वे राष्ट्रीयता के उपासक थे, लेकिन उन्होंने केवल अपने महान् लक्ष्य की खातिर साम्प्रदायिकता के साथ, जो सत्य नहीं थी, समझौता किया। इतने समझौतों के बाद भी आज मुस्लिम साम्प्रदायिकता जिस घोर रूप में हमारे सामने खड़ी है, उसकी शायद किसी नेता ने कल्पना भी न की थी। इतने विचार का शायद समय भी न था। लेकिन कलकत्ता और नोआखाली ने आज यह स्पष्ट कर दिया है कि हम कहीं भूल कर रहे थे। साम्प्रदायिकता समझौते से बढ़ती है, घटती नहीं और जब देश में तीसरी शक्ति उसे उत्तेजित करने के लिए सदा सतर्क और बद्धपरिकर हो। नये राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी ने सभापति पद से जो भाषण दिया है, उसमें अपने अतीत पर बिना किसी विशेष पक्षपात या 'वाद' में पड़े हुए गम्भीर दृष्टि डालकर यह निष्कर्ष निकाला है कि कांग्रेस ने साम्प्रदायिक नीति के सम्बन्ध में अब तक जिस नीति का अवलम्बन किया था, वह भ्रान्त थी। हम तात्कालिक समस्या को हल करने के लिये ऐसे उपायों पर सहमत हो गये, जो समय पाकर स्वयं तीव्र रोग बन गये। इसलिए नये राष्ट्रपति ने ठीक समय राष्ट्र को यह चेतावनी दी है कि हमें अपनी सांप्रदायिक नीति आमूलचूल बदलनी होगी। यह राष्ट्रपति का संदेश है, जिस की ओर हम पिछले कई बरसों से देश का ध्यान खींचते रहे हैं। इस संदेश का आधार केवल भावुकता नहीं है, इसके पीछे हमारे पिछले तीस वर्षों का कटोर अनुभव है, जिसकी यदि हम आगे भी उपेक्षा करेंगे, तो भारी गलती करेंगे। साधारणतः मनुष्य का स्वभाव है कि वह अपनी कोई गलती स्वीकार करना नहीं चाहता। राष्ट्रपति कृपलानी ने इस स्वाभाविक भावना के ऊपर उठकर परिस्थिति को स्पष्ट नग्नरूप से देखने का महान साहस किया है और उसके लिए राष्ट्र उनके प्रति कृतज्ञ है।

हमारी समस्या केवल एकांगी नहीं है। कांग्रेस जिस महान लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयत्न करती रही है, आज तक भी वह उस तक पहुंच नहीं पाई है। राष्ट्रपति के शब्दों में 'हम शक्ति के अभेद्य दुर्ग की दीवारों को तोड़ कर भीतर घुस अवश्य गये हैं, परन्तु अभी लक्ष्य तक हम नहीं पहुंच पाये हैं। अन्तःकालीन सरकार के उपाध्यक्ष पं० जवाहरलाल नेहरू ने विषय-समिति में आज की राजनैतिक स्थिति पर बहुत सुन्दर प्रकाश डाला है उसकी उपेक्षा हम नहीं कर सकते। ब्रिटिश सरकार अपने प्रतिनिधि वायसराय के द्वारा अन्तःकालीन सरकार और स्वराज्य के प्रश्न के साथ जो यहां खिलवाड़ कर रही है, उसके रहस्यका उद्घाटन करते हुए पं० नेहरू ने कहा है कि कांग्रेस का लक्ष्य भारत को पूर्ण स्वतंत्र सार्वभौम सत्ता प्राप्त प्रजातंत्र राष्ट्र बनाना है। वायसराय यदि चाहते तो बंगाल के नरमेध को रोक सकते थे, लेकिन ब्रिटिश सरकार की दृष्टि में भारतीयों के जीवन का कोई मूल्य न पहले था और न अब है। बंगाल के दुर्भिक्ष में २०-२५ लाख आदमी मर गये, लेकिन सेना के अन्नभंडारों को रत्ती भर नहीं छुआ गया, आज बङ्गाल में ४०-५०००० मर गये, तो इसकी भी विदेशी ब्रिटिश सरकार को चिन्ता नहीं, उसका अपना उल्लू तो सीधा होता है। उसे यह कहने का अवसर तो मिलता है कि भारतीय स्वशासन नहीं कर सकते यदि यह सचाई न होती, तो आज वायसराय लीगी मंत्रियों के हाथों अन्तःकालीन सरकार और भारत की महत्वाकांक्षाओं के साथ जो खेल खेल रहे हैं, वे न खेलते। पं० नेहरू ने अपनी कल्पनातीत विवशता का वर्णन स्पष्ट शब्दों में किया है कि वायसराय ने किस तरह अन्तःकालीन सरकार के बारे में अपना रुख बदल लिया है। लीगी मंत्रियों में न काम करने की तबीयत है और न मिल जुल काम करना वे चाहते हैं। अंग्रेज अपनी हकूमत को जमाये रखने के लिए लीग को बढ़ाना चाहते हैं। वायसराय धीरे-धीरे मशीन के पुर्जों को निकालते जा रहे हैं, न जाने किस दिन मशीन का चलना एकाएक बन्द हो जाय। मुस्लिम लीग के अन्तकालीन सरकार में आने से पूर्व वायसराय ने यह आश्वासन दिया था कि मिलजुल कर काम होगा। नई सरकार के स्वरूप के सम्बन्ध में भी आज विवाद हो रहा है और वायसराय इसे मन्त्रिमंडल का रूप देकर फिर बदल रहे हैं। मि० जिन्ना तो स्पष्ट कहते हैं कि हमारे सदस्य तो संत्री की हैसियत से अन्तःकालीन सरकार में गये हैं। यह स्थिति वायसराय से छिपी न थी और फिर भी उन्होंने लीगी सदस्यों को आमंत्रित किया -- अपनी प्रभुता फिर से कायम करने के लिए और नई सरकार के कामों में लगातार रुकावटें डालने के लिए। स्थिति कितनी नाजुक है, इसका निर्देश करते हुए पं० नेहरू ने बताया है कि वह कई बार स्तीफे की धमकी दे चुके हैं और 'उनका धैर्य बहुत तेजी से चरम सीमा की ओर जा रहा है, यदि यही स्थिति जारी रही तो बड़े पैमाने पर संघर्ष होना अनिवार्य है।' यह समस्या है, जिसे हम नहीं भूल सकते।

आज ब्रिटिश सरकार वस्तुतः भारत को स्वतन्त्र करना चाहती है, तो उसे यह स्पष्ट कर देना चाहिये कि वह भारत में साम्प्रदायिकता को किसी तरह सहन न करेगी, अन्तःकालीन सरकार विशुद्ध मन्त्रिमण्डल के रूप में कार्य करेगी और उसका उत्तरदायित्व सम्मिलित होगा। ऐसा किये बिना उस पर विश्वास करना असम्भव होगा और संघर्ष अनिवार्य होगा।

इस तरह आज राष्ट्र के सामने जो समस्या है, उसके दो रूप हैं। एक तो स्वराज्य की प्राप्ति के लिए अंग्रेजों से संघर्ष, जिसकी ओर हमारे अनेक समाजवादी नेता पिछले कई महीनों से ध्यान खींचते रहे हैं। इसी समस्या का दूसरा रूप उन साम्प्रदायिक नेताओं से संघर्ष है, जो देश को गृहयुद्ध की आग में झोंक रहे हैं और ब्रिटिश सरकार के हाथों की कठपुतली बने हुए हैं। वे यह जानते हैं कि उन्होंने जो कुछ मांगा है, कांग्रेस ने उन्हें दिया है, उनके हौसले बढ़ गये हैं और आज वे देश का सर्वनाश करने पर तुल गये हैं। हमें एक साथ बाहरी और घरेलू शत्रुओं के विरुद्ध तीव्र संघर्ष करना होगा, हमें यह स्पष्ट कर देना होगा कि हम पूर्ण स्वराज्य चाहते हैं और उसमें सबके साथ न्याय किया जायगा, किसी के साथ विशेष पक्षपात न किया जायगा, हमारी दृष्टि में सभी भारतीय हैं, कोई न मुसलमान है न हिन्दू, इस लिए किसी भी अराष्ट्रीय साम्प्रदायिक समझौते के आगे सिर न झुकाते हुए पूर्ण स्वतन्त्रता के मार्ग पर अविचल रूप से चलेंगे। यही राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी का संदेश है और यही पं० नेहरू के प्रस्तावका सार है। एक बार साम्प्रदायिकता की चट्टान पर हम फिसले, उसका परिणाम था देश में साम्प्रदायिकता की वृद्धि। इसलिये हमें अपने पुराने अनुभव से लाभ उठा कर निर्द्वन्द होकर लीग की सहायता लेकर खिलवाड़ करने वाले सरकार के विरुद्ध स्वातन्त्र्य प्राप्ति के लिए संघर्ष तब तक जारी रखना चाहिए, जब तक हम अपने उद्देश्य को प्राप्त न करलें।

—इण्डोनेशिया और डच सरकार तथा फ्रांस और स्याम में समझौता हो गया है। ट्रीस्ट के सम्बन्धमें विदेशमंत्रियों ने समझौता कर लिया है।

मेरठ कांग्रेस अधिवेशन प्रारम्भ

कांग्रेस का ५४ वां अधिवेशन २१ नवम्ब

इस अधिवेशन की विषय समिति में मौलाना आजाद ने कार्य समिति तथा अ० भा० कांग्रेस कमेटी द्वारा अन्तःकालीन सरकार का निर्माण आदि समय समय पर किये गये निश्चयों की पुष्टि व स्वीकृति का प्रस्ताव किया। इस प्रस्ताव का अच्युत पटवर्धन और स्वामी सहजानन्द आदि समाजवादियों ने विरोध किया पर प्रस्ताव के विपक्ष में केवल ३० मत आने के कारण बहुत अधिक मतों से प्रस्ताव स्वीकृत हो गया। इस के पश्चात् अध्यक्ष कृपलानी ने दक्षिण अफ्रीका, पूर्वी अफ्रीका और इण्डोनेशिया के सम्बन्ध में तीन अलग-अलग प्रस्ताव उपस्थित किये और सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिये गये।

अन्त में पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने 'स्वतन्त्र सर्वसत्ताधारी भारतीय प्रजातन्त्र' की स्थापना का प्रस्ताव उपस्थित किया। आप ने अपने भाषण में कहा जब हम विधान बनायेंगे तो वह विधान प्रजातन्त्री होगा न कि किसी राजा के अन्तर्गत होगा। यह विधान समाजवादी ढंग का होगा।

इसके बाद पं० नेहरू ने अन्तःकालीन सरकार की स्थापना का सिंहावलोकन करते हुए वर्तमान सरकार में उत्पन्न संकटों का ओर निर्देश किया। इन संकटों के कारण पिछले कुछ ही सप्ताहों में पचासों बार त्यागपत्र देने के अवसर उपस्थित हो गये। मुस्लिमलीग द्वारा शासन परिषद में सम्मिलित होने से 'सम्मिलित उत्तरदायित्व' का समाप्ति हो गई। लीग की नीति अंग्रेजी शासन को सहायता देना और राष्ट्रीय भावना को कुचलने की रही है, अंग्रेजों से सहायता लेकर शाही पार्टी बना रही है। अंग्रेज अपने शासन को स्थिर रखने के लिये लीग को बढ़ा रहे हैं।

श्री जिन्ना अभी तक १६ मई के वक्तव्य को स्वीकार करने से इन्कार करते हैं और कहते हैं कि लीग विधान परिषद में सम्मिलित नहीं होगी — तो फिर मुस्लिम लीग को अन्तःकालीन सरकार में रहने का अधिकार नहीं होना चाहिये। वे तो स्पष्ट कहते हैं कि लीग काम करने के विचार से अन्तःकालीन सरकार में सम्मिलित नहीं हुई अपितु उसे तोड़ने के लिए प्रविष्ट हुई है। यदि लीग विधान परिषद में नहीं आयेगी तो हमारा काम तो रुकेगा नहीं।

मैं स्पष्ट रूप से यह कह देना चाहता हूं कि मैं इस विधान परिषद को बहुत अच्छा नहीं समझता तो भी इसमें जाकर अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिये। मैं इसे भारत की अन्तिम विधान परिषद नहीं समझता, जब भारत में स्वतन्त्र वातावरण उत्पन्न हो जायेगा तब उसे फिर विधान परिषद बुलानी होगी। इस विधान परिषद की तो एक ही विशेषता है कि इसमें ब्रिटिश सरकार का सीधा प्रतिनिधित्व नहीं होगा फिर चाहे हम ब्रिटिश सरकार द्वारा अप्रत्यक्ष तथा गुप्त रीति से डाले गये प्रभाव को न रोक सकें।

नेहरूजी के बोलने के बाद बिना संशोधन के यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हो गया।

कबीले वाले स्वतन्त्र हैं !

गत सप्ताह लण्डीकोतल में २०० अफरीदियों के एक जिरगे में वायसराय ने प्रारम्भिक भाषण देते हुए पांच बातें कहीं: (१) कबीले वालों की स्वतन्त्रता उनकी सब से बड़ी निधि है। (२) ब्रिटिश सरकार ने एक सन्धि के अनुसार उस स्वाधीनता की रक्षा की गारन्टी दी हुई है। (३) इस सन्धि को किसी अन्य राजनीतिक दल को नहीं सौंपा जायेगा। (४) यदि इस सन्धि के परिवर्तन का कोई अवसर उपस्थित हुआ तो कबीले वालों को पूर्व सूचना दी जायेगी। (५) कबीले वाले, उस परिस्थिति में भारत की भावी सरकार से समझौता कर सकेंगे।

वायसराय के इस भाषण के बाद जिरगे वालों की ओर से मलिक अब्दुल लतीफ खां ने भत्तों के रूप में मिलने वाला २५,००० रुपया कम बताया तथा और रुपये की मांग की। नेहरूजी के दौरे के समय हुई गड़बड़ी के कारण लगाये गये जुर्माने को लौटाने की प्रार्थना की। तथा इस बात पर बहुत बल दिया कि कबीले वालों की सन्धियां ब्रिटिश सरकार के साथ हुई हैं, इस लिये जब अंग्रेज भारत से जाने लगें तो खैबर दर्रा उन्हें वापिस लौटा दिया जाय। उस समय वे अपनी सुविधा के अनुसार या तो पृथक राष्ट्र रहेंगे अथवा अफगानिस्तान से मिल जायेंगे। वर्तमान साम्प्रदायिक उपद्रवों के रहने तथा हिन्दू-मुस्लिम मतभेद के रहते वे अन्तःकालीन सरकार से समझौता नहीं करेंगे।

दर्रे के सम्बन्ध में वायसराय ने उत्तर देते हुए कहा कि यह दर्रा अन्तर्राष्ट्रीय मार्ग पर अवस्थित है। इसलिये भविष्य में कबीला इसे पहले की ही भांति खुला रखने के लिये स्वभावतः उपयुक्त प्रबन्ध करेगा। वायसराय ने जुर्माने क्षमा करने की प्रार्थना को अस्वीकार कर दिया।

वायसराय की उपस्थिति में तथा वायसराय को सम्बोधन करते हुए अहमदजाई वजीरों के प्रतिनिधि मलिक हफ्ता खां ने वर्तमान अन्तःकालीन सरकार की ओर निर्देश करते हुए हिन्दू अधिपत्य का विरोध किया!

यहां के राजनैतिक क्षेत्रों में वायसराय के भाषण को कबीले वालों को भड़काने वाला समझा जा रहा है। यह कहा जा रहा है कि वायसराय अभी से कबीले वालों को भड़का कर खैबर दर्रे को अंग्रेजों के लिये सुरक्षित करना चाह रहे हैं तथा भारत की भावी सरकार को अधिक से अधिक निर्बल बनाने के लिये प्रयत्नशील हैं।

साम्प्रदायिक समझौतों के कारण देश संकट में

(पृष्ठ ३ का शेष)

अस्पृश्यता निवारण तथा राजनीति में न्याय, सत्य और स्वार्थनता के सिद्धान्तों के प्रयोग, दक्षिण अफ्रीका, लंका, ब्रह्मा आदि की चर्चा करने के बाद आचार्य कृपलानी ने कांग्रेस संगठन की चर्चा करते हुए कहा—

हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि कांग्रेस सरकार नहीं है, वह तो स्वयंसेवकों का एक संगठन है। इसी में इस की शक्ति है और इसी में इसकी दुर्बलता है। स्वयंसेवकों के संगठन में शारीरिक शक्ति का प्रयोग नहीं किया जा सकता। अपने आदेशों का पालन करने के लिए न इसके पास मजिस्ट्रेट हैं और न पुलिस या कानून। इसके पास तो एक ही बल है और वह है स्वयंसेवकों की श्रद्धा। किसी भी संगठन के लिए एकता और अनुशासन दोनों गुण अत्यन्त आवश्यक हैं। विभिन्न विचार रखते हुए भी प्रत्येक को समस्त संस्था के प्रति सच्चा रहना चाहिए। स्वराज्य की भावना हम सबको एक करती है और परस्पर विभेद के विचार उसकी अपेक्षा सर्वथा गौण हैं। एक अंग्रेज पारिवारिक, स्थानीय या राजनीतिक दलों से अपने देश को ऊंचा समझता है, इसी तरह हमारे विभिन्न दल कोई भी क्यों न हों, समस्त राष्ट्र की प्रतीक कांग्रेस हमारे लिए सब से अधिक सम्मानीय है। आज कांग्रेस के चुनावों में भी इस धड़ेबन्दी, धोखा, छल और बैलट बक्सों की चोरी, मारपीट, रिश्वत आदि की कुप्रथाएं चल पड़ी हैं, यह अत्यन्त अनुचित है।

हमने अब तक निरंकुश ब्रिटिश सरकार से लोहा लिया है और उसके लिए कुछ तरीके अपनाये हैं, लेकिन अपनी ही सरकार के खिलाफ वे तरीके बरते नहीं जा सकते। हम यहां अपनी सरकार को — सरकार के लक्ष्य प्रतिष्ठित तपस्वी देशभक्त नेताओं को देशभक्ति का उपदेश देना उपहासास्पद है। वे तरीके निरंकुश ब्रिटिश सरकार के आगे तो चल सकते हैं, लेकिन प्रजातन्त्रीय अपनी सरकार के आगे नहीं। प्रान्तीय सरकार के नेताओं को तो जब हम चाहें, प्रजातन्त्रीय तरीके से बदल सकते हैं। हमें अपनी प्रान्तीय सरकार के नेताओं की कठिनाइयों और मर्यादाओं को स्वयं भी अनुभव करना चाहिए। उन सरकारों को हमें पर्याप्त अधिकार देने चाहिएं। दूसरी ओर प्रांतीय सरकारों को भी यह न भूलना चाहिए कि वे जनता के सेवक हैं, स्वामी नहीं। वे उस संस्था को ठोकर नहीं मार सकते, जिसके द्वारा वे इतनी ऊंची स्थिति तक पहुंचे हैं। उन्हें सदा कांग्रेस और देश की जनता के प्रति निष्ठ रहना चाहिए। सरकारी दफ्तरी मशीन के स्वयं कलपुर्जे न बन जावें, यह भी उन्हें देखना है।

अन्त में आज के अन्धकाराछन्न युग में अहिंसा और सत्य के उपदेश देने के महान् अवसर की चर्चा करते हुए आपने समस्त राष्ट्र से अपील की कि सदियों का अंधकार उसी क्षण नष्ट हो सकता है, जिस क्षण उसमें प्रकाश लाया जाय। भारत में प्रदीप जला दिया गया है। उसे सदा प्रज्वलित रखना चाहिए, तभी हम सफल हो सकेंगे। वन्देमातरम्।

दतिया में संघर्ष

दतिया राज्य के दीवान ऐनुद्दीन की महाराज ने राज्य में साम्प्रदायिक भावनाओं को उत्तेजित करने आदि अभियोगों में पदच्युत कर दिया था, किन्तु मध्यभारतीय रियासतों के रेजीडेण्ट कर्नल कैम्बेल ने फिर नियुक्त कर देने का निर्णय किया है। इसके विरोध स्वरूप दतिया की महारानी ने भूख हड़ताल प्रारम्भ कर दी बताते हैं। दीवान विरोधी आन्दोलन के सम्बन्ध में गिरफ्तार किये गये ३५ अन्य व्यक्तियों ने भी आमरण अनशन कर दिया है। समस्त सरकारी कर्मचारियों ने कार्य बन्द कर दिया है और राज्य भर में कारोबार बन्द हो गया है।

— केन्द्रीय असेम्बली ने विधान निर्मात्री परिषद के खर्चे के लिए १७,८३,००० रु० की राशि स्वीकृत कर ली है।

CCO. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भारत का भावी शासन विधान (१)

क्या भारत में एकतंत्र शासन सम्भव है ?

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

१]

इस लेख का शीर्षक देखकर पाठक अवश्य ही आश्चर्यित होंगे, क्योंकि इनमें जिन परिभाषाओं का प्रयोग किया गया है, वह नई-सी हैं। राजनीतिक ग्रन्थों में मानी हुई राजनीतिक परिभाषायें यहां प्रयुक्त हुई परिभाषाओं से कुछ अलग हैं। शासनप्रणालियों को सूचित करने वाले जो शीर्षक राजनीतिक पाठ्य पुस्तकों में प्रयुक्त होते हैं, वह अरिस्टौटल द्वारा किये गये विश्लेषण पर आश्रित है। अरिस्टाटल ने शासनप्रणालियों को निम्न तीन श्रेणियों में बांटा है।

(१) राजतन्त्र (Monarchy)

(२) कुलीनतन्त्र या सरदारतन्त्र (Aristocracy)

(३) प्रजातन्त्र (Democracy)

अरिस्टाटल के समय देशों की राज्यव्यवस्था बहुत सरल थी। यदि किसी देश में राजा राज्य करता था, तो वह सर्वशक्ति सम्पन्न था। यदि कहीं सरदार लोगों का प्रभुत्व था, तो वह भी अत्यन्त स्पष्ट था और जहां प्रजातन्त्र प्रणाली का प्रचार था, वहां नगर के सब निवासी नगर के चौक में इकट्ठे होकर वोट देते, कानून बनाते और दण्ड देते थे। उस समय संख्या पर अवलम्बित राज्यप्रणालियों का अंगुलियों पर गिन लेना सम्भव था, परन्तु आज दशा बदल चुकी है। ऐसे राजा भी हैं, जिनके हाथ में राज्य की सम्पूर्ण सत्ता केन्द्रित है, और ऐसे राजा भी हैं, जो बाजार में बिकने वाली कठपुतली से भी कम शक्ति रखते हैं। कुलीनतन्त्र राज्यप्रणाली के स्पष्ट और जीवित उदाहरण का मिलना बहुत ही कठिन हो गया है। इंग्लैण्ड जैसे कुछ देशों में अब भी कुलीन श्रेणियां शक्तिसम्पन्न हैं, परन्तु समय के प्रवाह ने उनकी जड़ें हिला दी हैं, और वह 'अब गिरी-तब गिरी' की दशा में पहुंच चुकी हैं। 'प्रजातन्त्र शासनप्रणाली' यह तो शब्द ही अब व्यर्थ हो चुका है। अब किसी भी स्वाधीन और जागृत देश के निवासी 'प्रजा' शब्द से नहीं पुकारे जा सकते। 'प्रजा' शब्द का प्रयोग वहीं हो सकता है, जहां एक राजा भी हो। जिस देश के निवासी स्वयं अपना शासन करते हैं, वहां 'राजा' तथा 'प्रजा' शब्दों का प्रयोग बिल्कुल अर्थहीन हो जाता है।

कुछ नये लेखकों ने अरिस्टाटल की परिभाषाओं के स्थान पर शासनविधान पर आश्रित परिभाषाओं का प्रयोग करना उचित समझा है। यथा — आस्टन ने अपने शासनविधान सम्बन्धी पुस्तक में नये शीर्षकों का सुझाव दिया है। उसका सुझाव है कि शासनप्रणालियों को (१) कैबिनेट का शासन (२) प्रधान या राजा का शासन (३) और कमेटी द्वारा शासन—इन तीन श्रेणियों में बांटा जाय। इस विभाजन में शासन के बाह्य रूप पर अधिक ध्यान दिया गया है, उसके आधारभूत सिद्धान्त पर कम। अरिस्टौटल का किया हुआ विभाजन मुख्य रूप से शासन शक्ति के मूलाधारों पर आश्रित था। समय ने और परिस्थितियों ने संसार के राजनीतिक शरीर में जो परिवर्तन कर दिये हैं, उन्हें दृष्टि में रखकर आवश्यक प्रतीत होता है कि विभाजन के शीर्षकों में कुछ परिवर्तन किया जाय। मैंने इस लेख के प्रारम्भ में जिन परिभाषाओं का प्रयोग किया है, वह उस आवश्यक परिवर्तन का ही फल है।

[२]

क्या एकतन्त्र होगा ?

मैंने भारत के शासनविधान सम्बन्धी प्रश्न को तीन हिस्सों में बांटा है। पहले, पहले हिस्से को लीजिये —

क्या स्वतन्त्र भारत का शासनविधान एकतन्त्र शासनप्रणाली के आधार पर बनाया जा सकता है ?

एकतन्त्र शासन उसे कहते हैं, जिसमें शासन की सम्पूर्ण सत्ता एक ही व्यक्ति के हाथ में हो। एक व्यक्ति के हाथ में शासनसत्ता आ जाने के तीन कारण होते हैं—

(१) युद्ध में विजय।

(२) कुलक्रमागत अधिकार।

(३) देशवासियों के मत द्वारा एकाधिकार की प्राप्ति।

बाबर भारत के एक बड़े भाग का सर्वाधिकारी शासक था, क्योंकि उसने अपने शस्त्र बल से विजय प्राप्त की थी। जहांगीर भी भारत का सर्वाधिकारी बादशाह था, परन्तु उसके अधिकार का आधार यह था कि वह सम्राट् अकबर का बेटा होने से उत्तराधिकारी था। अपने शक्ति-काल में हिटलर जर्मनी का एकाधिपति था। उसकी प्रभुता का आधार जर्मनी का लोकमत था, जिसने उसे अपना भाग्यविधाता बनाया था। उपर्युक्त तीन आधारों पर संसार के तानाशाहों की प्रभुता स्थापित हुआ करती है। भारत में इस समय तीनों में से एक भी नहीं है। किसी एक विजेता ने देश को शस्त्र बल से नहीं जीता, देश में कोई ऐसा राजवंश विद्यमान नहीं, जिसे सारा देश या देश का बड़ा भाग राज्य का अधिकारी मान सके, और अपना सर्वाधिकारी चुनने का देश को अधिकार ही नहीं है। अभी उसकी कोई स्वतन्त्र राजनीतिक सत्ता ही नहीं, तो वह अपने डिक्टेटर का स्वयं चुनाव कैसे कर सकता है।

इस प्रकार एकसत्तात्मक राज्य प्रणाली के अधिकृत कारणों का अभाव होने के कारण भारतवर्ष का भावी शासन-विधान एकतन्त्रता पर आश्रित नहीं हो सकता।

[३]

हमने देखा कि इस समय भारत की परिस्थिति ऐसी नहीं कि एकतन्त्रता पर आश्रित शासनविधान सम्भव हो, साथ ही हमें यह भी समझ लेना चाहिये कि यदि ऐसा सम्भव भी होता तो एकतन्त्र शासनप्रणाली केवल भारत के लिये ही नहीं, मनुष्यमात्र के लिये अनुपादेय सिद्ध हो चुकी है। शायद किसी समय, मनुष्य जाति का काम चलाने के लिये एकसत्तात्मक शासन उपयोगी रहा हो। परन्तु गुजरी हुई तीन चार शताब्दियों के इतिहास ने निर्विवाद रूप से सिद्ध कर दिया है, कि किसी राष्ट्र की सारी शासनशक्ति का केन्द्र यदि एक ही व्यक्ति बन जाय, तो उस राष्ट्र का कल्याण नहीं होता। वह राष्ट्र तो ठोकर खाता ही है, साथ ही आसपास के राष्ट्रों को भी अशान्ति के नरक में घसीट ले जाता है। एकतन्त्र शासनप्रणाली के गुण सन्दिग्ध हैं और दोष निश्चित हैं। मुख्य दोष निम्नलिखित हैं:—

(१) शासन की अनियमित सत्ता एक हाथ में आ जाने से देश के सर्वसामान्य नागरिक दृष्टि से अधिकारहीन और इसी कारण कर्तव्यहीन हो जाते हैं। जिस देश के सामान्य निवासी नागरिक अधिकारों से वंचित हो जायं, उसकी उन्नति रुक जाती है स्थिति भी संकटमय हो जाती है। (२) एकतन्त्र शासन का सब से बड़ा दोष यह है कि उसमें एक व्यक्ति की निर्बलता या बेईमानी का फल सारी जाति को भोगना पड़ता है। बलवान् से बलवान् और बुद्धिमान् से बुद्धिमान् व्यक्ति भी सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् नहीं हो सकता। यदि देश की पूरी सत्ता एक व्यक्ति के पास केन्द्रित हो जाय तो संकट का समय आने पर उसके दोषों के निवारण और कमी को पूरा करने का उपाय नहीं हो सकता। बनता ही बनता जाय तो ठीक, पर जब बिगड़ने लगता है तब तानाशाही शासन घुन की खाई लकड़ी की तरह टूट जाता है।

(३) एकतन्त्रता का एक बड़ा दुर्गुण यह है कि व्यक्तियों की महत्वकांक्षा एकबार भड़की तो आसानी से सीमा को पार कर जाती है, जिससे आये दिन अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष उत्पन्न होते रहते हैं। इतिहास के महान् महायुद्धों का इतिहास पढ़ें तो हमें यह देख कर आश्चर्य होता है कि उनमें महापुरुषों ने मदारी, और सामान्य जनता ने कठपुतलियों का सा अभिनय किया है। युद्ध की आग व्यक्तियों की महत्वकांक्षा ने लगाई, और देश के निवासी सूखी लकड़ियों के ढेर की तरह उसके ईंधन बने।

अब एकतन्त्र शासन से मनुष्य जाति ऊब चुकी है। गत शताब्दियों में अनेक जातियों ने पुरोहितों और स्वयं बनाये हुए एकसत्तात्मक सिंहासनों को जड़ों से उखाड़ कर फेंक दिया है। अब भी कभी-कभी, और कहीं-कहीं व्यक्तिगत जादू की चमक सर्वसामान्य की आंखों को चौंधिया कर देशों को तानाशाही के गढ़े में धकेलती रहती है, परन्तु फिर भी असंदिग्ध रूप से यह कहा जा सकता है कि संसार की राजनीतिक दृष्टि से जागृत जातियां एकतन्त्र शासन प्रणाली के दोषों को अंगीकार कर चुकी है, और उससे बचना चाहती हैं।

[४]

भारत के सम्बन्ध में तो निश्चय से कहा जा सकता है कि इसकी वर्तमान राजनीतिक उलझन का यह हल नहीं है कि एकतन्त्र राज्य की स्थापना ही हो। इसमें अनेक धर्म, अनेक सम्प्रदाय और अनेक जातीय विशेषताओं का इतना मिश्रण है कि बहुत भारी और भीषण बलात्कार के सिवा यहां एकसत्ता कायम नहीं हो सकती, और यह स्पष्ट है कि आज ऐसे भीषण बलात्कार की सफलता देश में असम्भव है। अपनी सब निर्बलताओं के रहते भी देश इतना जाग चुका है कि अब इसे घोर बलात्कार से किसी रास्ते पर नहीं लाया जा सकता। इस देश में एकसत्तात्मक राज्य करने वाले को बहुत विकट कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। उस से पूछा जायगा कि तुम हिन्दू हो, मुसलमान हो या सिख हो ? उसे यह भी बतलाना पड़ेगा कि तुम मरठे हो, राजपूत हो या नवाब कुल के हो ! भारत की रियासतों के शासक उस से गद्दी का पासपोर्ट दिखाने को कहेंगे। सारांश यह कि 'इस समय भारत में एकतन्त्र शासनप्रणाली की स्थापना न हितकर है, और न सम्भव है। सारा सभ्य संसार इस प्रणाली की हानियों को अनुभव कर चुका है, और भारत की दशा तो विशेष रूप से रोती है कि उसमें एकतन्त्रता स्थापित नहीं हो सकती।'

———

लो ! प्रभात हो गया !

दीर्घ दो शताब्दि तक पर-अधीनता निशा—
ग्रस्त-त्रस्त देश की जग गई दिशा-दिशा।
सिद्ध-तंत्र-मंत्र से भागते पिशाच ज्यों,
सब निशाचरी दनुज हो रहे विलीन त्यों।
रात जा रही लिये दमन की कहानियां,
दग्ध-नष्ट शलभ-दल की मिटी जवानियां।
शलभ एक-एक जल
ज्योति-कण संजो गया।
लो, प्रभात हो गया!

शाप-ताप-संकुला काल दामिनी कटी,
घन तमिस्र हट गया, शुभ्र दूत पौ फटी।
श्वेत रेख एक यह हो चली सुलाल लो!
ज्यों सुहाग मांग में भर दिया सिंदूर हो।
पर, नहीं सिंदूर यह, रक्त-रक्त-रक्त यह!
हाय, देखिये वहां दीर्ण-वक्ष कौन वह—
जागरण-मुहूर्त में
मृत्यु-नींद सो गया?
क्या, प्रभात हो गया!

लाश एक ही वहीं, लग रहे अंबार रे!
पशु सदृश लड़ रहे बंधु, मित्र, यार रे!
नींद दो शताब्दि की सहज टूटती नहीं,
स्वप्न-जन्म मूढ़ता सहज छूटती नहीं।
डोलते सुषुप्त ये स्वप्न देखते बुरा,
शत्रु जान बंधु को हाय, भोंकते छुरा!
कौन वक्ष-वक्ष में
फूट-बीज बो गया?
क्या प्रभात हो गया!

काष्ठ-पुतलिकाएं ये नाचतीं संकेत पर,
स्वार्थ-द्यूत-गोरियां फेंकता अदृश्य कर।
स्वजन मेध-लग्न ये सुप्त हैं, झंझोड़ दो!
अवश, पर-अधीन हैं, शृंखलायें तोड़ दो!
प्रेम-वारि से धुलें रक्त सिक्त हाथ ये,
प्रेम-लेप से लिपें दीर्ण-वक्ष-माथ ये।
रे शहीद का लहू
द्वेष-मैल धो गया!
लो, प्रभात हो गया!

चिर-स्वराज्य-दिवस की, पुष्प माल से भरी,
शुभ्र हास से सजी मोर-स्वर्ण-देहरी!
सुरभि रस पराग से हिम कणों से लद रहे
शुभ स्वराज्य द्वार में हाय, क्यों लहू बहे?
हां, बहे अजस्र ही स्वर्ण-निर्झरी विमल,
जन-प्रताप-भानु हो उच्च-उच्चतर सबल!
कह उठे सहर्ष जग
लो, प्रकाश हो गया!
लो, प्रभात हो गया!

— चिरंजीत

उड़ीसा में ईसाई पादरियों के षड़यंत्र

[आर्यधर्म सेवा संघ द्वारा प्रेषित]

★

गांगपुर स्टेट उड़ीसा की अनेक छोटी छोटी रियासतों में से है। इसका क्षेत्रफल प्रायः ६५३१५ वर्गमील तथा इसकी जनसंख्या लगभग चार लाख है, जिसमें लगभग ६० प्रतिशत आदिवासी हैं। स्टेट का दो तिहाई भाग जगली इलाका है। राज्य की वार्षिक आय बीस लाख बताई जाती है। यहां के राजा कुलीन क्षत्रिय वश के हैं।

गांगपुर राज्य में बसने वाले आदिवासियों की प्रायः ३० जातियां हैं। उनमें उरांव, खड़िया, किसान, वैडगा, मुंडा, मान, शबर, कोंराड, गौराड ताम्बड़िया, लखवा विझिया, भूइयां, भूमिज, माझी, धीक' बड़ाइक अथरिया आदि हैं।

उपरोक्त जातियों में अधिकांश क्षत्रिय जातियां हैं। उदाहरणार्थ उरांव रोहित वंशीय क्षत्रिय मुंडा मौर्यवंशीय क्षत्रिय, किसान कृष्णवंशीय क्षत्रिय, भूइयां भूमिहार क्षत्रिय तथा मान पौंडू वंशी क्षत्रिय हैं। ये जातियां अतीत काल से हिन्दू धर्म के संस्कारों और आचरणों से संबन्ध रखती आ रही हैं। इनके देवता भी प्रायः वही हैं जो हिन्दुओं के हैं। किन्तु कुछ नाममेद अवश्य आगया है। जैसे सूर्य देवता को सिंग बोंगा, महादेव को सारंग देवता, ग्राम देवता को गांवा देवता गृहदेवता को ओड़ा बोना कहा जाता है। राम, कृष्ण, देवी तथा जानाथ आदि को भी ये मानते हैं। इनमें बहुत से लोग जंगलों में निवास करते हैं। इनकी जीविका के साधन स्वल्प हैं। इनकी शिक्षा दीक्षा के लिए कोई प्रबन्ध राज्य की ओर से नहीं है। इन में केवल दो प्रतिशत ही शिक्षित हो पाये हैं। प्रतिमा के कारण ये अपनी कमाई मद्यपान में नष्ट कर डालते हैं। प्रत्येक बड़े गांव में शराब की दुकान है। उसके ठेकेदार अधिकतर मुसलमान और कहीं कहीं एक दो पारसी हैं। इतनी शराब की दुकानें शायद ही भारत में और हों। राज्य की आधी आय प्रायः शराब, गांजा, भाँग आदि की दुकानों से ही होती है। उरांव, मुंडा, खड़िया, किसान जाति के नवयुवक और युवतियां शराब और इंडिया भारत से तैयार की गई एक तरह की शराब पीकर ढोलक और नगाड़ों के साथ रात रात भर नाचते हैं। स्त्रियां साड़ी बहुत ऊपर तक पहनती हैं। पुरुष धोती पहनते हैं। किन्तु जंगली लोग लंगोट जिसे तोलींग और करिया कहते हैं, पहनते हैं। युवक गीत के प्रेमी होते हैं और बांस की मुरली बजाते हैं। ये तीर धनुष खूब चलाते हैं। उरांव, मुंडा, खड़िया आदि जातियों की भाषा भी विचित्र है, किन्तु वे संस्कृत से ही निकली हुई है। समय समय पर इनमें धार्मिक आन्दोलन भी होते रहे हैं। बिरसा भगवान द्वारा बिरसा धर्म, टाना भगत द्वारा टाना भगत धर्म, और एक महिला द्वारा हरिबाबा धर्म तथा किसी महात्मा ने कबीर पंथी धर्म चलाया। किन्तु इनमें बिरसा धर्म और हरिबाबा धर्म लुप्त हो गये। हिन्दू उरांवों में विशेष कर टाना भगत और कबीरपंथी लोग हैं जो मांस मदिरा से परहेज रखते हैं। शिखा रखते हैं और कंठी माला धारण करते हैं। इनकी अशिक्षा से लाभ उठा कर ईसाई मिशनरियों ने इनके बीच अनेक पाठशाला खोल रखी हैं और औषधि चिकित्सा तथा शिक्षाप्रचार के नाम पर इन जातियों की ६० प्रतिशत संख्या को ईसाई धर्म में दीक्षित कर लिया है।

सवर्ण हिन्दुओं में ब्राह्मण, राजपूत, शिखरदेव; लालसाहेब महन्थी (कायस्थ), ठुरिया, अहीर, मगवा, भूरिया, भाट तथा खन्डेत आदि हैं। हिन्दुओं में अधिकांश सनातनी हैं यहां आर्यसमाज तथा हिन्दूमहासभा का नाम भी नहीं है। किसी प्रकार की अन्य संस्था यहां नहीं है, जिस से धार्मिक सामाजिक उन्नति के लिये इनको कोई प्रेरणा मिल सके हिन्दुओं, की अनेक सामाजिक कुरीतियों के कारण अनेक हिन्दू स्त्रियां मुसलमानों द्वारा भगायी जाती हैं। समस्त राज्य में साढ़े तीन प्रतिशत मुसलमान हैं। किन्तु उनके द्वारा हिन्दू स्त्रियों का लगातार अपहरण हो रहा है और उनकी संख्या दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। स्त्रियों की यहां बहुत लूट है। वे मेलों हाटों और बाजारों में स्वछन्दता से घूमती हैं और प्रायः मुस्लिम गुण्डों की शिकार बन जाती हैं।

इसी प्रकार जंगली जातियों में ईसाई मिशनरियों का कार्य बड़े प्रबल वेग से हो रहा है। उनके पास प्रचुर साधन हैं। विद्यालय, पाठशाला औषधालय, प्रचारक लोभ, दबाव आदि अनेक उपायों से वे ईसाईधर्म का प्रचार कर रहे हैं। स्टेट में उनके विशाल गिरजे हैं। अनेक गांवों में भी बड़े बड़े गिरजाघर हैं। जहां से नित्य प्रति फादर, सिस्टर, मदर और प्रचारक हिन्दू गांवों में जाकर ईसाइयत का प्रचार कर रहे हैं। प्रायः प्रत्येक गांव में मिट्टी का गिरजाघर और पाठशाला है जहां रविवार के दिन ईसाई जमा हो कर प्रार्थना करते हैं। प्रचारक भोली भाली हिन्दू जनता को फुसलाते हैं। ईसा'

[शेष पृष्ठ १६ पर]

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

स्वागत समिति के प्रधान कार्यकर्ता—

उपाध्यक्ष

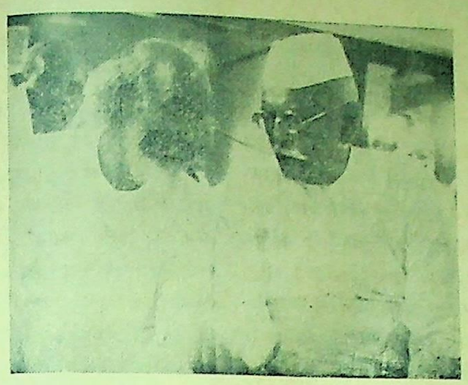

मेरठ कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष चौ० रघुवीरनारायणसिंह श्री टण्डन जी के साथ।

उपाध्यक्ष

श्रीमती कमला चौधरी

श्री कृष्णचन्द्र शर्मा एम० एल० ए०

पंडाल इन चार्ज

पं० रामस्वरूप

प्रधान मन्त्री

ला० सरयूप्रसाद

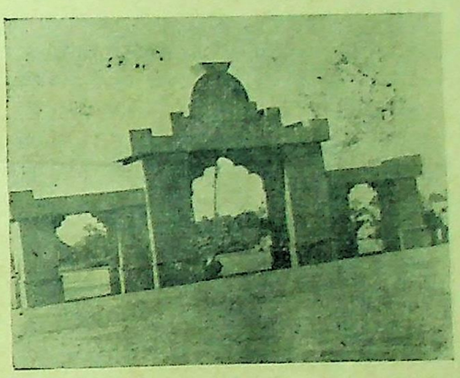

प्यारेलाल नगर का प्रवेश द्वार

भारतीय दुर्भिक्ष की प्रतिमा

कांग्रेस की स्वागत समिति का कार्यालय

कहानी

समाज रोता है

श्री श्रीराम शर्मा 'राम'

आखिर एक दिन रेवतीशंकर को अवसर मिला कि वह अपने समाज में बैठे और पैसे के साथ मान-प्रतिष्ठा पाये। वह पैसा उसने किस रास्ते से पाया, भले ही लोगों को उसके प्रति अरुचि हो, परन्तु आखिर पैसा तो पैसा ही है, समाज का सिरमौर—इसलिए, उसकी ओर उसके मालिक की इज्जत करना आदि-युग से एक बंधा-बंधाया स्वभाव चला आया है। सो, धनपत के पुत्र रेवतीशंकर को मालामाल देख उस समाज में ऐसा किसका अहंभाव हो सकता है कि उसे प्रतिष्ठा न दी जाये और समाज के व्यक्तियों में बैठने के लिए ऊंचा स्थान। यद्यपि, बेचारा धनपत कभी इन चार अक्षरोंसे आगे 'धनपतराय' नहीं बना, पर उसका पुत्र रेवती अवश्य 'रेवतीशंकर' बन गया।

और जब पैसा आया, तो मनुष्य की चिर-हीनता और धर्म-भीरुता का भाव भी रेवतीशंकर में जाग्रत हुआ। लोगों ने देखा और वाह-वाह कर उसे साधुवाद दिया। मानों धनपत के किन्हीं चिर-संचित भले कामों का अच्छा प्रमाण वह रेवतीशंकर पैदा हुआ हो।···हां बेटा हो तो ऐसा, कूड़े के ढेर पर कञ्चन का महल खड़ा कर दिया। बाप को कोई दो कौड़ी को भी नहीं पूछता था और बेटा है कि चारों ओर सरनाम हो गया·····।

लेकिन जब समाज है और बहुत से व्यक्तियों का एक समूह; तो यह कहना भी संगत नहीं कि उसमें एक ही विचारों का केन्द्र हो। भई माना कि पैसा पैसा है,—आदमी की जरूरतों का पृष्ठ-पोषक; परन्तु उसके लिए मानवता को भी बेच दिया जाय, ऐसा तो कभी भी स्वीकार नहीं किया जा सकता, लेकिन रेवतीशंकर ने जब अपने-आपको दुनिया की आंखों में डालकर देखा, तो उसने अनुभव किया कि पैसा पाने के लिए सभी कुछ किया जा सकता है। इसी दुनिया में सभी साध्य और सुगम·····खून, चोरी, लूट और डाकाजनी·····।

रेवतीशंकर का एक विश्वास यह भी है कि जब व्यापार किया जाता है, तो घाटा-नफा और भलाई-बुराई सब खरीदी जाती है। कदाचित इसी से, जब एक दिन उसके निकट के नातेदार और बुजुर्ग ने उसे सम्बोधित करके कहा—'भाई रेवतीशंकर, पाप की कमाई कभी फला नहीं करती।'—तो, रेवतीशंकर ने तुरन्त ही कह दिया—'जब मनुष्य स्वयं कमजोर हो, तो पुण्य भी पाप लगता है। मुझे इसमें अन्तर नहीं मालूम होता।'

और बात यह थी कि रेवतीशंकर ने उसी नगर की एक सेठानी के यहां गुमाश्तगीरी करके उसकी जायदाद के झूठे बयनामे बनाने शुरू कर दिये थे। बात तब खुली कि जब सेठानी पूरी तरह से उल्लू बन चुकी थी और पैसे-पैसे से खाली हो चुकी थी। इतनी देर में रेवतीशंकर ने अपनी जड़ मजबूत बनाली और नगर के हाकिम-हुक्कामों में अपनी पहुंच करली थी। निदान, वह विधवा सेठानी रोटियों की मोहताज बन गयी और उसकी जितनी सम्पत्ति थी वह रेवतीशंकर के हाथों में आ गयी।

कहावत है कि पैसा मनुष्य के बहुत से पापों को ढक लेता है। लिहाजा, रेवतीशंकर का एक यह पाप तो ढक ही गया, साथ ही, पैसा पाकर उसमें जितना प्रसाद और अहंमन्यता का भाव जागृत हुआ, वह भी, उस पैसे की आड़ में क्षन्तव्य और स्वाभाविक दिखाई देने लगा। और जैसे रेवतीशंकर ने समाज की नब्ज पर ठीक ही हाथ रखा कि उसे अपने जैसे विचारों और कर्म करने वालों का ही आधिक्य प्राप्त हुआ। उसका लेन-देन का काम तो था ही, बाद में कपड़ा और अनाज का काम भी आरम्भ कर दिया।

उस दिन रेवतीशंकर के यहां पुत्र जन्म का उत्सव था। नगर के सभी गण्य-मान्य व्यक्तियों को निमन्त्रित किया गया था। उसमें कई वेश्याओं को भी बुलाया गया। लगा कि रेवतीशंकर ने कई हजार रुपया उस उत्सव पर खर्च कर दिया। जब शाम को उत्सव समाप्त हुआ और मेहमानों से फुरसत पा, बंगले की ऊपरी मंजिल में रेवतीशंकर पहुंचे तो उन्होंने देखा कि वहां मेहमानों की खाई हुई जूठन को पटका गया था, उसी के पास कुछ भिखमंगे नर-कंकाल जैसी चेष्टा लिए खड़े थे और कुछ पाने के लिए बार बार पुकार रहे थे। उन्हीं में एक लड़के को देख एकाएक रेवतीशंकर को अपने बचपन का भान हुआ। याद आया कि उसके पड़ोस में एक सेठ के यहां बारात आई थी और जब बारातियों के खाने की जूठन बाहर डाली गयी तो उसमें कचौड़ी लड्डू को देख, उसके मुंह में भी पानी आया·····उसने चाहा कि उसे भी लड्डू मिले और कचौड़ी! और निदान, यह उस जूठन में से चुपके से एक कचौड़ी और लड्डू उठा भी लाया था···उन्हें खाकर जो आनन्द आया, वह अब भी उसके स्मृति-पट पर अंकित था।

किन्तु हाय! हाय! क्या याद किया लाला रेवतीशंकर ने! उन्हें तुरन्त अपने आप पर ही खिन्नता का भाव उपज आया। उन्होंने वहां से हटकर कमरे में पैर रखते ही नौकर से कहा—'ह्विस्की लाओ।'

और अपने आप कहा—हरामजादे कहीं के! जाने कहां से आ मरे हैं!'

फिर कहा—'हां, वह भी एक दिन था, मेरा। गरीबी में नीयत भी बिगड़ती है·····ईमान भी·····

ह्विस्की आ गयी। गिलास में उंडेल दी गयी। जब कुछ गले के नीचे उतर गयी तो रेवती बाबू ने उन कंगलों के लिए बात कही—'कमाना नहीं आता, मांगना आता है···मुफ्त का खाना!'

जब नशे की पूरी मिकदार हो गयी, तो नौकर को देखकर उन्होंने आज्ञा दी—'दरवाजे से कंगालों को हटा दो, अभी!'

उसी समय पत्नी वहां आई। एकदम रेशमी साड़ी और सोने के जेवरों से मढ़ी हुई। आते ही वह रवतीशंकर की आंखें देख कर बोली—'दिन भर तो तुम्हें छूट नहीं हुई और अब! मुनुवा को नहीं खिलाओगे!'

उस समय रेवतीशंकर अपनी मौज में थे और अपना ही आप देखते थे। किंतु पत्नी की मधुर बात सुनकर बोले—हां, हां, क्यों नहीं खिलाऊंगा, मुनुवा! जनम-करम में एक तो पुत्र मिला, फिर भी·····

उसी समय दासी पुत्र को गोद में लेकर आई। रेवतीशंकर ने अपने नन्हें-मुन्ने को लिया और उससे बात करने बैठ गया—'मेरा मुन्ना राजा है···मेरा मुन्ना···

मुन्ना रो दिया। दासी ने फिर उसे ले लिया।

रेवतीशंकर ने दासी से कहा—'देखो मुन्ने को ठण्ड न लगे, रोये भी नहीं। इसके सुख में ही तुम्हें अपना सुख देखना होगा, समझी!'

बलात दासी ने कह दिया—'जी, समझी!'

'और ललिता कहां है?'

दासी ने कहा—सिनेमा गयी हैं।'

'ओह, नादान लड़की! सिनेमा की बड़ी शौकीन है।'

पत्नी ने ताना देकर कहा—'तुम्हीं ने तो यह शौक लगा दिया है।'

रेवतीशंकर ने लापरवाही से कहा—'अरे, करने भी दो शौक। इन्हीं के मुकद्दर का तो है, सब कुछ।'

पत्नी ने कहा—'हूं।'

'हां, भाई, इसमें तुम्हारा भी मुकद्दर है। ललिता भी तुम्हारी है, यह सुनुवा भी।'

'पर जानते हो, क्वांरी लड़की का इस तरह फिरना शोभता नहीं है, वह सयानी है। तुमने तो पढ़ाने और सैर-सपाटे की ही उसे सीख दी है।'

रेवतीशंकर ने हंसकर कहा—'तुम मूर्ख हो और बे-पढ़ी हो, इसीसे ऐसा समझती हो; तुम तो इस घर की चहार-दीवारी के अन्दर ही अपनी दुनिया देखती हो।'

× × ×

सिनेमा चल रहा था। पर्दे पर प्रेमी और प्रेमिका का प्रदर्शन हो रहा था। उसी समय हाउस के एक कोने में बैठे हुए एक युवक ने लाला रेवतीशंकर की लड़की ललिता के हाथ को अपनी मुट्ठी में दाबकर कहा—'पसन्द आया चित्र?'

ललिता ने कहा—'हूं।'

'लगता है नायक मुझ जैसा ही बन पड़ा है। यह अपनी प्रेमिका पर सभी कुछ समर्पण करना चाहता है।' युवक ने कहा।

ललिता ने फिर कहा—'हूं।' और उसकी ओर देखकर मुस्करा दी। वह भी आंखों से हंस दिया।

खेल समाप्त हो गया और ललित ने सांस भरकर कहा—'बस! प्रेमी का अन्त हो गया·····प्रेमिका का भी·····'

उस युवक ने भी सांस भर कर कहा—'हां, बस! काश!'

हाउस से बाहर होते-होते ललिता ने कहा—'पर मैं ऐसा नहीं होने दूंगी, ललित बाबू! मैं तुम्हारे हाथ पकड़ कर फिर ढीले नहीं होने दूंगी।'

ललित ने कहा—'यह समाज, तुम्हारे पिता·····'

ओह, मैं इन सब से लड़ने के लिए तैयार हूं। और मेरे पिता, उन्हें तो तुम जानते हो, मुझे कितना प्यार करते हैं। वे मेरे जरा से कष्ट पर हजारों रुपया खर्च कर देते हैं।' बाजार में जाकर उसने कहा—'हां, उधर नहीं, इधर से। उस दुकान पर।'

'उस पर? कैमिस्ट·····बर्थ-कण्ट्रोल·····'

ललिता ने तनिक आतुर हुए भाव में कहा—'हां-हां, जैसे भोले हो तुम··· निरे अजान!'

और वहां से बर्थकन्ट्रोल की औषध ले, उसने फिर रास्ते में चलते हुए कहा—'यही तो नारी का एक पाप है·····सच, कठिन प्रश्न है! पुरुष अच्छा है··· तुम!

ललित ने दूर एक पक्षी को देखते हुए कहा—'जाने कौन अच्छा है! पर हां, प्रश्न तुम्हारा भी पेचीदा है!

(शेष पृष्ठ २१ पर)

CCO. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

युक्तप्रांत में विविध कांग्रेसी दल

[श्री होलास]

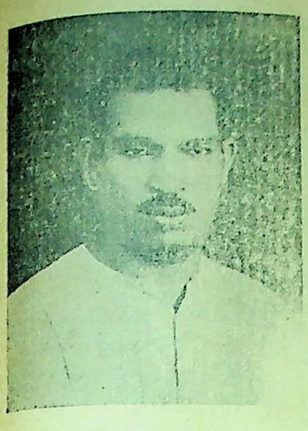

श्री शिव्वनलाल सक्सेना

संयुक्त प्रान्तीय कांग्रेस में इस समय विभिन्न राजनैतिक दलों में काफी संघर्ष चल रहा है और इस बात का भय है कि यदि कांग्रेस ने शीघ्र ही इस बात का निर्णय न कर लिया कि कांग्रेसजन कांग्रेस के अन्दर रहकर कोई विशेष दल नहीं बना सकते और न किसी अन्य दल से किसी प्रकार से सम्बन्धित ही रह सकते हैं, तो थोड़े ही काल में कांग्रेस के इतने टुकड़े हो जायंगे कि कांग्रेस स्वयम् एक ढांचा मात्र रह जायगी और सब दल अलग-अलग बिखर जायेंगे। इसका सबसे बड़ा दुष्परिणाम यह हो सकता है कि नया भारतीय शासन विधान बनने पर जो व्यक्ति नई धारासभाओं के लिये खड़े होंगे, वह कांग्रेस के प्रतिनिधि न बनकर अपने-अपने दल-विशेषों के ही प्रतिनिधि की हैसियत से खड़े होंगे और चुनाव के बाद कांग्रेस की बड़ी ही क्षीण दशा हो जायगी, तथा इस देश में भी फ्रांस की तरह कोई भी सरकार पन्द्रह-बीस दिन या महीने भर से अधिक अपना शासन कायम न रख सकेगी।

दलबन्दी का अखाड़ा—युक्तप्रान्त

इस दलबन्दी का सबसे बड़ा अखाड़ा संयुक्तप्रान्त है। भारतवर्ष का शायद ही कोई राजनैतिक दल ऐसा हो जो इस प्रान्त में अपनी शाखायें न रखता हो और उसकी वह शाखायें बड़ी तेज प्रगति से न चल रही हों।

कांग्रेस समाजवादी दल

प्रान्तीय कांग्रेस में इस समय तीन दलों का संघर्ष जोरों के साथ चल रहा है। इनका प्रारम्भ होता है सन् १९३५ से, जब पं० जवाहरलालजी नेहरू के सहयोग से कांग्रेस समाजवादी दल की स्थापना हुई। यद्यपि नेहरूजी इस दल में आज तक सम्मिलित नहीं हुए हैं, तब भी इनकी सहानुभूति इस दल के साथ सदा ही रही है। इस दल की स्थापना हुई थी वास्तव में उस समय के प्रमुख कांग्रेसी नेताओं की वैधानिकप्रियता की बढ़ती हुई लहर को रोकने के लिये, किन्तु बाद में प्रमुख समाजवादी नेता बाबू सम्पूर्णानन्दजी प्रान्त के शिक्षा-मंत्री बन गये और आज भी वह इस आसन पर विराजमान हैं।

यह दल महात्मा गांधी की लगभग सभी नीतियों का विरोधी है। यह दल कम्युनिस्ट न होते हुए भी अपनी विचार-धारा में मार्क्सवादी है, चर्खा और खादी को देश की उन्नति में विशेष सहायक नहीं मानता और अहिंसा और हिंसा के संबंध में भी गांधीजी के विचार को अनिवार्य नहीं मानता। यह दल वर्गयुद्ध में विश्वास करता है और रूस की तरह खेती बाड़ी और कल-कारखानों का समाजीकरण आवश्यक समझता है। इसी विचार से यह दल किसान और मजदूर सभायें कांग्रेस के बाहर संगठित करना अपनी कार्य प्रणाली का एक मुख्य अंग मानता है। एक प्रकार से यह दल नर्मदली कम्यूनिस्ट दल कहा जा सकता है।

श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल

प्रारम्भ में इसके प्रमुख थे श्री० युसुफ मेहरअली और श्री मसानी। बाद में श्री अच्युत पटवर्धन और आचार्य नरेंद्रदेव इत्यादि भी इस दल के नेताओं में प्रसिद्ध हुए। बाबू जयप्रकाशनारायण तो गत अगस्त आन्दोलन के बाद ही इस दल के नेताओं में गिने जाने लगे।

कांग्रेस समाजवादी नेता

युक्तप्रान्त में इस दल के नेता हैं आचार्य नरेन्द्रदेवजी, जो काशी विद्यापीठ के आचार्य रह चुके हैं। इस प्रान्त में इस दल के अधिकांश सदस्य काशी विद्यापीठ के शास्त्रीगण और लाहौर के स्वर्गीय लाला लाजपतराय द्वारा स्थापित लोकसेवक मण्डल के सदस्यगण ही हैं। इनमें से प्रमुख हैं सर्वश्री हरिहरनाथ शास्त्री, राजाराम शास्त्री, लालबहादुर शास्त्री, अलगूराय शास्त्री और मोहन-लाल गौतम। सर्वश्री हरिहरनाथ शास्त्री और राजाराम शास्त्री कानपुर में मजदूरों में कार्य करते हैं और श्री अलगूराय शास्त्री प्रांतीय किसान सभाओं का संगठन-कार्य करते हैं।

मजदूर कार्य

श्री हरिहरनाथ शास्त्री कानपुर में सन् १९२५ से मजदूर कार्य में लगे हुए हैं, मगर आप प्रारम्भ से ही डा० मुरारीलाल और अमरशहीद श्री गणेश-शंकर विद्यार्थी के दल के विरोधी रहे हैं, मगर आप प्रारम्भ से ही डा० मुरारीलाल और अमरशहीद श्री गणेश-शंकर विद्यार्थी के दल के विरोधी रहे हैं और आज भी कानपुर शहर में कांग्रेस कमेटी में आपका विशेष स्थान नहीं है। मजदूर कार्य में आप आल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस के अध्यक्ष तक रह चुके हैं मगर उसके बाद ही सन १९३५ में कांग्रेस और कम्यु-निस्टों ने मिलकर आपको कानपुर मज-

श्री दामोदरस्वरूप एम० एल० ए०

दूर सभा से निकाल दिया। तब से आप कानपुर कपड़ा कर्मचारी मंडल के बल पर ही कानपुर के मजदूरों में अपना स्थान बनाए हुए हैं। कानपुर की पन्द्रह बीस यूनियनों में से केवल दो तीन आपके हाथों में हैं, बाकी सब या तो कम्युनिस्टों के हाथों में हैं, या अन्य कांग्रेसजनों के कब्जे में। कहते हैं कि इस दल को कानपुर में पुरानी कांग्रेस की पार्टीबन्दी के आधार पर वहां के प्रसिद्ध मिल-मालिक लाला रामरतनजी गुप्त का सहयोग प्राप्त है, जिसके फलस्वरूप आर्थिक दृष्टि से इस दल को कानपुर में कोई अड़चन नहीं होती।

सेठ दामोदरस्वरूपजी जो युक्तप्रांतीय कांग्रेस के अध्यक्ष भी हैं, इसी दल के हैं। लखनऊ आचार्य नरेन्द्रदेव का

आचार्य नरेन्द्रदेव

केन्द्र-सा बन गया है और गत अगस्त आन्दोलन से पहले तक यहीं से इस दल का साप्ताहिक पत्र 'संघर्ष' प्रकाशित होता था। श्री मोहनलाल गौतम भी अब यहीं रहते हैं। लखनऊ में इस दल के सब से बड़े समर्थक हैं लाला चन्द्रभानु जी गुप्त, जिनका यहां की शहर कांग्रेस कमेटी पर पूरा अधिकार रहा है। आप यद्यपि समाजवादी दल के स्वयं सदस्य नहीं हैं, तब भी आप उसके बड़े समर्थक और सहायक हैं।

समाजवादी दल के विरोधी

इस दल के विरोध में युक्तप्रान्त का पूरा कांग्रेसवादी दल प्रारम्भ से ही रहा है, जिस का यह कहना रहा है कि कांग्रेस स्वयं एक दल है और उसके अन्दर किसी अन्य दल के रहने की गुंजाइश नहीं है। इसमें गांधीवादी और गैर गांधीवादी सभी तरह के लोग सम्मिलित हैं।

किसान मजदूर प्रजा पार्टी

इस दल के नेता हैं आगरे के प्रसिद्ध नेता प० श्रीकृष्णदत्तजी पालीवाल। इनके दल का नाम पहले 'कांग्रेस वर्कर्स पार्टी' रखा गया था, मगर अब बदल कर 'किसान मजदूर प्रजा पार्टी' कर दिया गया है। कहते हैं कि माननीय पं० गोविन्द बल्लभ पन्त, श्री रफी अहमद किदवई, डा० कैलाश नाथ काटजू, बाबू मोहनलाल सक्सेना, श्री गोपीनाथ श्रीवास्तव, बा० जगदम्बानारायण सक्सेना आदि नेता सब इसी दल के समर्थक हैं, यद्यपि इन में से अधिकांश प्रकट रूप से इस के सदस्य नहीं हैं।

लखनऊ में इस दल के प्रमुख नेता हैं सर्वश्री गोपीनाथ श्रीवास्तव, त्रिलोकीसिंह और जगदम्बानारायण सक्सेना। अगस्त आन्दोलन के बाद जिस समय लोगों का जेलों से छूटना प्रारम्भ हुआ और जनता हैलेटशाही से काफी भयभीत थी और कांग्रेसजन स्वयम् भी खुल्लम-खुल्ला कांग्रेस की चर्चा

[शेष पृष्ठ १७ पर]

मेरठ में स्वातन्त्र्य-आन्दोलन

[श्री विश्वम्भर सहाय प्रेमी]

★

अतीत पर एक दृष्टि

मेरठ का प्राचीन भारत के साथ गहरा सम्बन्ध रहा है। इसका प्राचीन नाम मयराष्ट्र था। किंवदन्तियों के आधार पर यह बात प्रचलित है कि त्रेतायुग में रावण की पत्नी मन्दोदरी के पिता राजा मय ने इस नगर का निर्माण कराया और उसी के नाम पर इसका प्राचीन नाम मयराष्ट्र रखा गया। इसके पश्चात् इसका सम्बंध महाभारत काल से भी रहा है। मेरठ से लगभग २२ मील की दूरी पर हस्तिनापुर प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर था और उस समय के परीक्षित गढ़, वारणावत आदि स्थान भी इसके निकट थे।

इसका सम्बन्ध बौद्ध काल से भी रहा। ईसा से तीन शताब्दी पूर्व सम्राट अशोक ने मेरठ में एक स्तम्भ भी बनवाया था। यह युग मेरठ की समृद्धि का युग रहा होगा। यह स्तम्भ सन् १२०६ में फीरोजशाह द्वारा देहली ले जाया गया था, जो देहली में इस समय भी अशोक के लौह-स्तम्भ के नाम से प्रसिद्ध है।

मेरठ का यवन काल से भी गहरा सम्पर्क रहा है। रशीदुद्दीन के लेखों में इसका वर्णन मिलता है। उसने दसवीं शताब्दी के सुप्रसिद्ध लेखक अलबरूनी का अपने लेखों में कुछ वर्णन किया है। सन् १०१७ में सैयद समूद ने मेरठ पर आक्रमण किया और उसने उस समय के यहां के नरेश हरदत्त से अपार धन-राशि प्राप्त की। ऐसा भी लिखा मिलता है कि हरदत्त ने एक विशाल दुर्ग भी निर्माण कराया था, जिसके चारो तरफ की खाई अत्यन्त चौड़ी और गहरी थी।

सन् ११९१ में मुहम्मद बिन कासिम के गुलाम जनरल कुतुबुद्दीन ऐबक ने नगर पर आक्रमण किया और बहुत सी सम्पत्ति का विनाश किया। १३८९ में मुहम्मदशाह ने अपने प्रतिद्वन्दी अबू बकर को यहां के किले में बन्दी रखा था और उसकी यहीं पर मृत्यु हुई। १३९९ में तैमूर ने भी इस नगर को लूटा। इसके पश्चात् सुलतान नसीरुद्दीन नसरत शाह ने इसे अपना निवास स्थान बनाया, किंतु कुछ दिन के बाद ही वह देहली चला गया। सन् १५२६ में पानीपत की लड़ाई के पश्चात् इस नगर पर मुगल बादशाहों का अधिकार रहा, फिर इस पर मरहटों का अधिकार हुआ।

मरहटों के सम्बन्ध में यह बात विशेष रूप से कही जा सकती है कि उन्होंने इस नगर की रक्षा के लिये स्थान स्थान पर ऊंची मीनार बनवाईं जो अब तक ग्राम मसूरी, ग्राम अतरौली आदि स्थानों में सुरक्षित हैं। इन पर कोई एक व्यक्ति चढ़ कर एक बड़ा ढोल बजाता था जिससे कि चारो तरफ के व्यक्ति यह समझ लें कि शत्रु आक्रमण करने के लिये आ रहा है।

१७८८ में यहां के मरहटा सरदार राना ने अपनी छोटी सी सेना की सहायता से गुलाम कादिर को परास्त किया। उसने बचकर भागने का यत्न किया, किन्तु वह एक खड्ड में गिर जाने के कारण पकड़ा गया और उसके बाद मरवा दिया गया।

मरहटा सरदार सिंधिया की अंजन गांव की संधि के अनुसार ३० दिसम्बर १८०३ को मेरठ अंग्रेजी शासन के अन्तर्गत आ गया। १८०५ में अमीर खां पिंडारी ने होल्कर की सेना से मेल किया और मेरठ में प्रवेश करने का यत्न किया परंतु उसे सफलता न मिली। जिसका परिणाम यह हुआ कि अंग्रेजों ने छावनी की स्थापना करके इसे सेना का एक बड़ा केन्द्र बना दिया।

१८५७ में

१८५७ के स्वाधीनता संग्राम के आरम्भ होने का श्रेय मेरठ को ही है। मेरठ छावनी के जिन सैनिकों ने चरबी वाले कारतूसों का प्रयोग करने से इन्कार कर दिया था, उन्हें दस-दस वर्ष का कारावास देकर जेल भेज दिया गया। सिपाहियों में विद्रोह की जो ज्वाला विभिन्न कारण से धीरे-धीरे सुलग रही थी, इस घटना से भड़क उठी। उन्होंने मिल कर जेल को तोड़ डाला, अपने साथियों को मुक्त कराकर अन्य कैदियों को भी मुक्त कर डाला।

शस्त्रों से लैस होकर अधिकारियों का वध करने के लिये सैनिक निकल पड़े। कर्नल फिनिस और कैप्टेन मैकडोनेल्ड विद्रोहियों को शान्त करने का प्रयत्न करते हुए मारे गये। कैप्टेन ग्रेग, लैफ्टीनेण्ट मैकेन्जी, मिस मैकेंजी और कुछ सैनिक अधिकारियों ने भाग कर १०-११ मई की रात को केसर गंज के पास के एक स्थान पर आश्रय लिया। अब तक भी वहां एक पत्थर लगा हुआ है, जो इस घटना का स्मरण कराता है।

सन् सत्तावन के विद्रोह की ज्वाला धीरे-धीरे शान्त हो गई। अंग्रेजों को अपनी शक्ति को देश में संगठित करने का अवसर मिला। कोई ५० वर्षों में देश को पूरी तरह जकड़ लिया गया। यह समझा जा रहा था कि अब उठ सकना देश के लिये सम्भव नहीं होगा। परन्तु १९१४ में महायुद्ध की ज्वाला युरोप में सुलग उठी। स्थिति का लाभ उठाकर देश में आतंकवादियों ने अपना कार्य आरम्भ कर दिया। मेरठ की छावनी को ध्वस्त करने के उद्देश्य से क्रान्तिकारी युवक विष्णु देव पिंगले ने प्रयत्न किया। वह एक बड़े विस्फोटक के साथ जो मेरठ की आधी छावनी के लिए काफी था — पकड़ा गया।

१९२०-१९२२ के आन्दोलन में भी मेरठ पीछे न रहा। यह आन्दोलन खिलाफत का आन्दोलन था। मेरठ के स्वर्गीय पं० प्यारेलाल शर्मा और काजी नजमुद्दीन इस आन्दोलन को मेरठ में चलाने वालों में हैं। इन दोनों के नेतृत्व में मेरठ के हिन्दु मुसलमानों ने मिलकर मेरठ का नाम उज्वल किया।

१९३०-३२ के आंदोलन में एक ओर गांधीजी के असहयोग की लहर थी तो दूसरी ओर आतंकवादियों का प्रयास भी चल रहा था। साम्यवाद आदि आदर्शों से प्रेरित होकर भारत के लगभग ३१ क्रान्तिकारी मेरठ षड़यन्त्र केस के सम्बन्ध में पकड़े गये। इस केस ने भी मेरठ को राजनीतिक क्षेत्र में काफी प्रमुख बना दिया। काकोरी का षड़यन्त्र भी मेरठ से काफी सम्बन्धित है। मेरठ के ही श्री विष्णु शरण दुबलिश इस षडयन्त्र में एक प्रमुख भाग रखते थे और अन्य षडयन्त्रकारियों के साथ वह भी अण्डमान काले पानी गये।

जब गांधीजी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह का कांदोलन किया तब मेरठ के अनेको कांग्रेसियों ने भाग लिया। इसी आंदोलन में मेरठ के सर्व प्रिय नेता स्वर्गीय पंडित प्यारेलाल शर्मा का बलिदान हुआ।

इसके बाद १९४२ का महान् आंदोलन आया। देश भर में जो भी कांग्रेस कार्यकर्ता समझे जाते थे उन्हें ९ अगस्त को प्रातःकाल ५ बजे से ही गिरफ्तार किया जाने लगा। इसकी प्रतिक्रिया युवकों में हुई। विद्यार्थियों में हुई, महिलाओं में हुई, देश में हुई। इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप क्रांति की ज्वाला धधक उठी। अधिकारी इसके लिए तैयार नहीं थे। उन्हें पता नहीं था कि जब हृदय में से विद्रोह की आग उठा करती है तो वह कितनी सर्वग्राही होती है। झुंझलाहट में, बोखलाहट में इस क्रांति की ज्वाला को बुझाने के लिए दमन चक्र चला। स्त्रियों की लज्जा, बच्चों की कोमलता, युवकों का अदम्य साहस सब कुछ भूल कर यह दमन चक्र चला। छोटे छोटे बच्चों को गोली मारी गई। मेरठ जिले के अनेक स्थानों पर गोलीकाण्ड हुए। सबसे दर्दनाक गोलीकांड भमौरी ग्राम का था, जिसमें गांधी आश्रम के श्रेष्ठ कार्यकर्ता श्री रामस्वरूप शहीद हुए थे।

इन गोली काण्डों में अनेक व्यक्ति पकड़े गये। मवाना, हापुड़ आदि से सबन्धित गोलीकाण्ड के मुकदमों में अनेकों युवकों पर मुकदमे चले। इस आंदोलन में मेरठ को जो घाव हुए, वह आज भी भरे नहीं हैं। मेरठ उन्हें हरा रखेगा उस समय तक के लिये जब तक कि देश पूर्ण रूप से स्वाधीन न हो जायगा।

———

मेरठ के स्व० राजनीतिक नेता

श्री प्यारेलाल शर्मा की प्रतिमा, आपके नाम पर प्यारेलाल नगर बसाया गया है, जहां कांग्रेस का अधिवेशन हो रहा है।

मिर्गी का २४ घण्टों में खात्मा। तिब्बत के सन्यासियों के हृदय का गुप्त भेद, हिमालय पर्वत की ऊंची चोटियों पर उत्पन्न होने वाली जड़ी बूटियों का चमत्कार, मिर्गी हिस्टीरिया और पागलपन के दयनीय रोगियों के लिये अमृत दायक। मूल्य १०॥) रुपये डाकखर्च पृथक।
पता—एच. एम. आर. रजिस्टर्ड मिर्गी का हस्पताल हरिद्वार।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हमारा धारावाही उपन्यास

गंगा जल

[ले० — श्री इन्द्र बसावड़ा]

विधवा शोभा अपना अन्धकारमय भविष्य देखकर काली रात में जङ्गल की ओर प्राणत्याग के लिए गङ्गा के तट पर चली गई। उसके भाई अनिल ने करुणा को साथ लेकर उसको खोज लिया। शोभा के ताऊजी भी उसे लेने वहां पहुंच गये।

[गतांक से आगे]

'ताऊजी आए तो तुझे अच्छा लगे न ?' अन्त में अनिल ने पूछा। एकाएक शोभा के मुंह पर श्याम-वर्ण की बदली छा गई। उसने कुछ भी उत्तर नहीं दिया।

अनिल ने लालटेन के मन्द प्रकाश में भी यह परिवर्तन देखा।

'शोभा ! तू यहां रहेगी ?'

'हां दादा !' शोभा बोली।

'यही अच्छा लगेगा ?'

इस प्रश्न का उत्तर शोभा ने नहीं दिया। पर उसने मौन रहकर ही मानों अपनी इच्छा प्रकट की।

'यहां रहना है तो फिर ?' अनिल ने कहा !

पर इसी क्षण उसे एकाएक लगा कि यहां बैठा-बैठा व्यर्थ समय खो रहा है और ताऊजी बगल के कमरे में बैठे उसकी बाट जोह रहे हैं।

एक क्षण बाद अनिल ने कहा — 'शोभा ! तुझे किसी प्रकार डरने की आवश्यकता नहीं। जहां तक मैं हूं तहां तक तेरा बाल भी कोई बांका नहीं कर सकता, समझी !'

शोभा सुनती रही।

अनिल मानों इन शब्दों के द्वारा अपने मन की निर्बलता को निकाल भगाना चाहता हो, इस प्रकार वेग से बोलने लगा — 'शोभा ! तुम्हें खबर मले ही न हो ; पर ताऊजी आये हैं, और वे तुझ से मिलना चाहते हैं। मैं अभी उनको बुला लाता हूं। तुझे घबराने की बिल्कुल जरूरत नहीं। मैं जहां हूं तुझे कोई भी कुछ नहीं कह सकता।'

और इन शब्दों का उच्चारण कर अनिल ताऊजी वाली कोठरी में गया। इस समय ताऊजी खाट पर पड़े-पड़े 'वसुदेवं वन्दे, परमानन्द माधवम्।' श्लोक गुनगुना रहे थे।

'चलो ताऊजी ! शोभा जग गई है।'

'जग गई ? नारायण तेरी बलिहारी !' यह कहकर ताऊजी उठे।

'शोभा .....'

'हां-हां। शोभा का क्या ?'

'कहता था ... कि ... कि...'

'हां हां कह डाल न, इसमें क्या बड़ी बात है। शोभा क्या तेरी बहन नहीं ? शोभा से अधिक तुझे किस पर प्रेम हो सकता है ?'

'हां जी। मैं यह कहता था कि शोभा आज रात नहीं जा सकती।'

'तो कल सवेरे जा सकेगी यही न ? तो भी क्या हानि है ? यह भी तो घर ही है न ? फिर पुनीत गंगा मैया .....।'

'ऐसा नहीं ताऊजी ? शोभा जब तक स्वस्थ न हो जाय, तब तक उसको ले जाया नहीं जा सकता। फिर शिरीष बाबू के आये बिना .....'

'ओ ..... हो' एक मुक्त हास्य ताऊजी के मुंह से निकल गया और मानों इस हास्य में अनिल के सारे शब्द डूब गये।

'चलो-चलो बेटा ! यह सब तो होगा, पर पहले बेटी को तो देख लूं ?'

जब ताऊजी अन्दर आये तब शोभा ने अपना पल्ला माथे पर ले लिया था।

अन्दर जाते ही, शोभा की खाट के पास जाकर ताऊजी बोल उठे--'शाबाश बेटा ! धन्य है तुझे मेरी बहन !' और यह कह कर उसने शोभा के माथे पर अपना हाथ फेरा।

पिता के हाथ का स्पर्श पाते ही शोभा एकाएक सिसक-सिसक कर रोने लगी।

'शाबाश बेटा शाबाश !' ताऊजी बोलते रहे — 'अब क्या चिन्ता है तुझे ! मैं बैठा हूं फिर तुझे क्या चिन्ता है बेटी ? और तुझे लेने तो मैं आया ही हूं।'

'लेने की बात .....' अनिल बीच में बोला ; पर ताऊजी ने उसके शब्दों की ओर ध्यान नहीं दिया। वे बोलते रहे —

'बेटी ! क्या तुझ से कहूं ? तेरी मां तो यह समाचार सुनते ही जमीन पर पछाड़ खाकर गिर पड़ी। तीन घण्टे तक तो उसी अवस्था में पड़ी रही। रात के आठ बज गये ; पर मूर्छा दूर न हुई। मैं तो अजब संकट में पड़ा। अब क्या करूं ? इसके बाद विनोद को डाक्टर बुलाने भेजा। डाक्टर ने आकर क्लोरोफार्म सुंघाकर दो इंजेक्शन दिये तब मुश्किल से हालत सुधरी और बेटी! होश में आते ही तो वह कहने लगी — 'चलो, जल्दी चलो ! मुझे तो मेरी बेटी के साथ जाना है। मुझे ले चलो वहां।' और कैसी बेचैनी हुई है — कैसे बेचैन हुई है कि पूछ मत बात ! डाक्टर ने कहा — 'ऐसी स्थिति में यात्रा योग्य नहीं — जाना हो तो राधे बाबू, तुम्हीं जाओ। घर में से ले मत जाना — वे ट्रेवलिंग के लिए बिल्कुल फिट नहीं' ये शब्द सुनते ही तेरी मां पुनः बेहोश होकर गिर पड़ी।'

और ये शब्द कहते ताऊजी ने अपनी आंखों में से अदृश्यमान आंसू पोंछने लगे।

शोभा दुने वेग से रोने लगी। अनिल मूर्ख की तरह जड़वत् खड़ा रहा।

इसी समय करुणा कोठरी में आई। उसने यह दृश्य देखा। अनिल को सम्बोधन करती हुई वह बोली — 'अनिल बाबू ! यह सब क्या है ? शोभा को मार डालना चाहते हो तुम लोग ?'

पर अनिल ने इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।

करुणा बाहर गई और रसोई की तरफ जाकर बोली — 'राधा बहन !' देखो तो ? ताऊजी शोभा को उकसा रहे हैं। यह समय है ऐसी-ऐसी बातें करने का ? शोभा मुश्किल से आज कुछ संभली है; पर आज फिर उसकी दशा बिगड़ न जावे, मुझे डर है। अनिल बाबू से मैंने कहा, पर वे तो कुछ भी बोलते नहीं। क्या करें ? कुछ समझ में नहीं आता।'

'करुणाजी जी ! क्या हो ? गोविन्द महाराज भी अब तक नहीं आये ! अब ?'

दोनों शोभा की कोठरी की तरफ चलीं। उसी समय उनके कानों में शब्द पड़े —

'और बेटा ! इस असार-संसार में कोई किसी का नहीं। भाई-भाई का नहीं, बहन-बहन की नहीं, सास-ससुर भी अपने नहीं। मैंने तो अपनी इन्हीं आंखों से देखा है कि लड़की रांड हो जाय तो सास-ससुर के मन में बहू की कीमत दो कौड़ी जितनी — बस फिर तो वह दासी हो गई। कैसा-कैसा कठोर बर्ताव करते हैं कि उसका वर्णन करूं तो दिल दहल उठे।'

अनिल ने सोचा कि अब ताऊजी को ये सब बातें बन्द करनी ही चाहियें पर उसके मुंह से शब्द न निकल सके।

'लो बेटी ! अब क्या विचार किया ?' ताऊजी बोले।

शोभा चुप रही।

'मैंने कहा न बेटी, अब तुम्हें अपने ससुराल के साथ कुछ भी सम्बन्ध रखने की जरूरत नहीं। पति मरा तो ससुराल भी मर गया। हमें उन लोगों की क्या अपेक्षा ? और बेटा ! मैं मोटर ले आया हूं। हमें आज चलना है न ?'

'कहां ?' मन्द स्वर में शोभा ने पूछा।

'आगरा।'

'आज ही ?'

'हां बेटा ! अभी ! मोटर तैयार है।'

अनिल एक क्षण शोभा के मुंह की तरफ देखता रहा। वह एक पल उसे एक युग जैसा लगा। शोभा क्या कहेगी ? 'हां' करेगी ? और इस 'हां' और 'ना' में मानों जीवन का सारा ही रहस्य समाप्त हुआ हो। इस प्रकार आतुरता पूर्वक वह शोभा का मुख देखता रहा।

'यह कैसे हो सकता है ?' शोभा ने कहा।

'नहीं कैसे हो सकता ?' जरा तीक्ष्ण स्वर में, जिसमें क्रोध, सत्ता और अवहेलना मिश्रित थी, ताऊजी बोले।

अनिल को प्रतीत हुआ कि वह अपने ऊपर काबू खो बैठेगा।

शोभा मानों थक गई हो, इस प्रकार वह पिता की ओर देखती रही।

'नहीं कैसे बन सकता है बेटी ?' उन्होंने फिर से नम्र आवाज में पूछा !

'अभी दस दिन .....।' और यह कहकर शोभा फिर रो पड़ी।

'जा री जा पगली। दस वर्ष का क्या ? ऐसी पगली तू कब से हुई ! मेरी बेटी ऐसी बाहियात बात करती है ? ड्राइवर साहब ! बड़े म्यां !' ताऊ जी ने जोर से आवाज दी।

'मालिक !' कह कर ड्राइवर पास आया।

'मोटर तैयार करो, अभी चलना है।'

फिर अनिल की ओर रुख करके वे बोले — 'अनिल ! शोभा को मैं आज ही — बल्कि अभी ले जाता हूं। शोभा ! चल बेटा, तैयार हो जा। अभी ही चलना है।'

शोभा जोर से रोने लगी।

एकाएक सारा साहस बटोर कर अनिल बोला — 'ताऊजी !'

अनिल की इस सत्ताशाली आवाज से ताऊजी जरा चमके। पर बाहर से अत्यन्त शान्त होने का डौल करते बोले — 'बेटा।'

'शोभा नहीं जा सकती है, शोभा को आप नहीं ले जा सकते। वह नहीं जायगी।'

'चल-चल ,नहीं जायगी ! क्यों नहीं जायगी ? तू कौन है मना करने वाला ?'

और यह कह ताऊजी शोभा के बिछौनों की तरफ गये और उसका हाथ पकड़ कर बोले — 'चल बेटा ! मोटर तैयार है।'

'करुणा !' अनिल ने पुकारा।

करुणा दौड़ती अन्दर आई।

'गोविन्दा महाराज कहां है ? बुलाओ उनको। उनसे कहदो कि मोटरवाले को यहां से निकाल दे।' 'ताऊजी !' ताऊजी का हाथ पकड़ कर अनिल बोला— बस बन्द करो। जब तक मैं जीवित हूं तहां तक तुम शोभा को यहां से नहीं ले जा सकते।'

इसी समय मोटर का भोंपू जोर से बजा।

शोभा उसे सुनकर एकदम मूर्च्छित हो बिछौने पर गिर पड़ी।

इसी समय गोविन्दा महाराज हाथ में लाठी ले हाजिर हुआ।

'क्या है अनिल बाबू! क्या है यह धमाचौकड़ी? कौन हैं ये महाशय? सिर ही फोड़ डालूंगा सुसरे का?'

गोविन्दा महाराज का रौद्र स्वरूप देख ताऊजी तो डर ही गये।

'पर अनिल···प···प···प···र··· अनिल···'

'अनिल बाबू! कौन है यह मोटर वाला! मार ही डालूं। चमड़ा चीर डालूं। खबर नहीं कि गांव के लोगों को हैरान करने में सार नहीं। साला है कहां वह काट ही डालूं।'

बात यह थी कि जब ताऊजी शोभा को ले जाने का हठ कर रहे थे, उसी समय गोविन्दा महाराज आ पहुंचा था।

राधा ने सारी बात उनसे कही। लाठी ले वे तैयार हो गये। इसी समय अनिल ने करुणा को आवाज दी और गोविन्दा महाराज को बुलाने के लिये कहा।

'अच्छा अनिल! खैर कुछ नहीं बेटा! मैं जाता हूं। शोभा को नहीं भेजे तो तेरी मर्जी! पर उसके जीवन-मरण की सारी जिम्मेदारी तेरी है।' हरि करे सो होय 'हरि करे सो होय' वे बाहर निकले और बोले—

'अरे बड़े भ्यां! मोटर तैयार है?'

'तैयार है बाबू' ड्राइवर ने कहा।

ताऊजी सांघे मोटर में बैठने को जा रहे थे तभी सामने से दूसरी मोटर आती हुई दिखाई दी। ताऊजी घबराये यह क्या किसकी मोटर होगी?

मोटर रुकी और उसमें से लाठी टेकते शिरीष बाबू निकले।

'नारायण! नारायण!! अनिल बाबू!' वे बोले।

ताऊजी का मुंह फीका पड़ गया। एक क्षण भी अधिक रुकने की उन्होंने जिज्ञासा नहीं बताई।

ताऊजी को देखते ही शिरीष बाबू बोले—

'नारायण! नारायण!! राधे बाबू। क्यों, चल दिये?'

'हां!' मुंह पिचकाकर वे मोटर में बैठे और बोले—

'ड्राइवर मियां! मारदो गाड़ी।'

और मोटर द्रुत गति से चलदी।

अनु० मृदुल] (क्रमशः)

वैद्यरत्न
पं० डी० गोपालाचार्य
का
जीवामृतम्
स्त्री पुरुष और बालकों में पौरुष, बल और चेतना शक्ति का संचार करने के लिए अर्धशताब्दी से विख्यात है
आयुर्वेद आश्रमम लि०
टी० नगर, मद्रास।
उत्तर भारत के लिए चीफ स्टोकिस्ट
ए न सा ट्रे डिं ग कं०
चांदनी चौक, दिल्ली।

श्वेत कुष्ट की अद्भुत जड़ी
महात्मा प्रदत्त श्वेतकुष्ट (सफेद) की दवा से तीन दिन में पूरा फायदा। यदि सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों, विज्ञापनदाताओं की दवा से निराश हो चुके हों तो इसे लगा कर आराम लें। १५ दिन की दवा का मूल्य २॥)।

सफेद बाला काला
इस तेल से बालों का पकना रुक कर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६ वर्ष तक काला न रहे तो दूना मूल्य वापिसी की शर्त लिखा लें। यह तेल लगाने के दर्द व सिर में चक्कर आना आदि को आराम कर आंख की रोशनी बढ़ाता है। एकाध बाल पका हो तो ३॥) कुल पक्का हो तो ५) का तेल मंगवा लें। एजेण्टों की हर जगह आवश्यकता है।
पताः—
श्री अखिल के० आराम औषधालय
मुहल्ला सालिमपुर अहरा, पो. बांकीपुर(पटना)

पेट भर भोजन करिये
गेसहर—(गोलियां) गैस चढ़ना, पैदा होना, पेट में पवन का घूमना, भूख की कमी पाचन का न होना, खाने के बाद पेट का भारीपन बेचैनी, हृदय की निर्बलता दिमाग अशान्त रहना, नींद का न आना, दस्त की रुकावट वगैरह, शिकायतें दूर करके दस्त हमेशा नियमित साफ लाती है। अन्न पचा कर कड़ाके की भूख लाती है। आंत को ताकत देती है। शरीर में रक्त बढ़ा कर शक्ति प्रदान करती है। जिगर लीवर तिल्ली और पेट के हर एक रोग की अद्वितीय दवा है! कीमत रुपया १) सैकड़ा का ३॥: डाक खर्च अलावा।
पताः—दुरधानुपान फार्मेसी ४ जामनगर देहली एजेंट-जमनादास कं० चांदनी चौक

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कांग्रेसी प्रतिनिधि मेरठ में क्या देखेंगे ?

[श्रीयुत प्रेमी]

★

मेरठ का सब से प्राचीन स्थान शहर का श्री बिल्वेश्वरनाथ का मंदिर है। कहा जाता है कि मरहट्टा काल में इसकी चहारदीवारी तथा मंदिर का निर्माण हुआ किन्तु उस काल से पूर्व भी इस स्थान पर एक मंदिर होने का उल्लेख मिलता है।

जामामस्जिद भी अत्यन्त पुरानी है। १०१६ ई० में इसका निर्माण मुहम्मद गजनी के वजीर हसन मेहदी ने कराया बताते हैं।

शाहपीर दरवाजे के पास शाहपीर का मकबरा है जो लाल पत्थरों से निर्माण किया गया है। इसका निर्माण सम्राट जहांगीर के शासनकाल में हुआ जिसे सम्राज्ञी नूरजहां ने शाहपीर नामक एक मित्रक की स्मृति में १६२८ में निर्माण कराया था।

मेरठ में सन् ५७ के गदर की भी कितनी ही स्मृतियां हैं। सिपाहियों के हाथों से मारे गये अंग्रेजों की कब्रों के पास कई स्थानों पर उनके वध का वृत्तान्त मिलता है। केसरगंज के निकट एक समाधि पर निम्न अर्थ का लेख लिखा मिलता है।

'कैप्टेन ग्रेगी, लेफ्टीनेंट मैकेंजी (लाइट केवेलरी) ने मि० क्रेसी, मिस मैकेंजी और छुटी ड्रेगून गार्ड के एक पैनिक के साथ यहां १०-११ मई १८५७ की रात्रि को आश्रय लिया।'

सूर्यकुण्ड भी बहुत प्राचीन कुण्ड है। इसके चारों ओर कितनी ही सतियों के स्तम्भ और मंदिर हैं। १७१४ में इसका निर्माण हुआ बताया जाता है। नागरीलिपि के प्रचारक और हिन्दी के अनन्य सेवक पं० गौरीदत्त जी की समाधि भी इसी स्थान पर है।

मेरठ छावनी में एक म्युटिनी मेमोरियल चर्च आफ इंग्लैण्ड की इमारत है। इसका निर्माण १८५७ के विप्लव के कुछ वर्ष पश्चात हुआ था।

१८८४ में मेरठ स्थित फौज के कमांडर डयूक आफ कनाट द्वारा मेरठ के टाउन हाल की नींव रखी गई थी जिसकी विशाल इमारत कम्बोह गेट के पास बनी हुई है।

मेरठ के मेले तथा तीर्थस्थान

मेरठ जिले का प्रमुख तीर्थस्थान शहर से पूर्व की ओर गंगा के तट पर औघड़नाथ नामक स्थान है। प्रति वर्ष कार्तिकी पूर्णिमा पर एक सप्ताह के लगभग यहां मेला लगता है। यहीं पर एक मन्दिर तथा राजा नृग का बनवाया हुआ प्रसिद्ध कुंआ है। अन्य कई मन्दिर भी यहां पर हैं।

मेरठ से दक्षिण की ओर लगभग ५ मील पर गगौल नामक स्थान है। जहां भगवान रामचन्द्र के चरण चिन्ह बने हुए हैं। प्राचीन काल में यहां महर्षि विश्वमित्र ने तप किया था। यहां सूर्यग्रहण; चन्द्रग्रहण आदि पर मेला लगता है और यात्री स्नान करने आते हैं।

मवाना के पास इसी जिले में हस्तिनापुर नामक तीर्थ स्थान है। यहां पर पाण्डवों की राजधानी थी। अनेक पर्वों पर मेला लगता है। अनन्त चौदस तथा कार्तिकी पूर्णमासी को जैनियों के बड़े मेले होते हैं। यह तीर्थ बूढ़ी गंगा के किनारे पर है।

अन्य अनेकों छोटे-छोटे स्थानों पर प्राचीन गौरव के चिन्ह वर्तमान है और अब भी वहां अनेकों मेले लगते हैं।

धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाएं

सनातन धर्म रक्षिणी सभा तथा आर्य समाज मेरठ की दो प्रमुख धार्मिक संस्थाएं हैं। इनके अपने अपने विशाल मन्दिर हैं।

कुमार आश्रम — हरिजन बालकों के निवास के लिये अखिल भारतीय अछूतोद्धार कमेटी की संस्थापकता में स्वर्गीय लाला लाजपतराय द्वारा इस आश्रम का उद्घाटन किया गया था। इस आश्रम द्वारा हरिजन बालकों की शिक्षा का प्रबन्ध होता है।

वैश्य अनाथालय भी मेरठ की एक उपयोगी संस्था है। बिना जातिभेद के बालक बालिकाएं इसमें प्रविष्ट किये जाते हैं। विशेषता यह है कि उन्हें कहीं मांगने के लिये नहीं भेजा जाता।

सामाजिक तथा साहित्यिक जगत

यहां के सामाजिक तथा साहित्यिक जगत में स्वर्गीय बाबू घासीराम जी का नाम आदर के साथ लिया जाता है। श्री प० अलगूराय जी शास्त्री मेरठ में अछूतोद्धार सम्बन्धी कार्य करने वालों में प्रमुख रहे। श्री० पं० गौरीदत्त जिन्होंने देवनागरी पाठशाला को जन्म दिया। हिन्दी के अनन्य सेवक थे। आज यही देवनागरी पाठशाला एक बड़े इंटरमीजियेट कालिज में बदल गई है।

उस्ताद विश्वम्भरसहाय 'व्याकुल' मेरठ के रंगमंच के जनक कहे जा सकते हैं। पारसी थियेट्रिकल कम्पनियों के ढंग के उर्दू प्रधान नाटकों का सफल उत्तर यदि किसी ने देकर हिन्दी रंगमंच के लिये स्थान बनाया तो वह उस्ताद 'व्याकुल' जी ही थे।

पुराने साहित्यिकों में स्वर्गीय श्री० हरिशरण 'मराल' का नाम उल्लेखनीय है। आप धार्मिक प्रकृति के व्यक्ति थे और आपकी रचनाएं हृदय से निकलती थीं।

साधुकवि घीसा १६ वीं शताब्दी के मध्यकाल में हुए। बीस वर्ष की आयु में ही इनकी मृत्यु हो गई। यह कबीर के भक्त थे। उनकी कविता भी कबीर के आदर्शों के अनुसार होती थी।

आज के मेरठ के साहित्यिकों में श्री होमवती ज., श्रीमती कमला चौधरी, श्री रघुवीरशरण मित्र, श्री रामप्रेम, श्री रामगोपाल 'दीपक' आदि प्रमुख हैं।

पेनूलाइन वर्क्स

का

आश्चर्यजनक नवीन आविष्कार

वर्थ कन्ट्रोल VETO मलहम

इस दवा की ज्यादा तारीफ नहीं की जा सकती। यह दवा खाने या अन्दर लगाने की नहीं है केवल नाभी पर लगाने से ही गर्भ की रुकावट हो जाती है। किसी किस्म का कोई कष्ट या नुकसान नहीं होता। आपको पूर्ण सन्तोष होगा — मंगा कर परीक्षा कीजिये। १५ बार के प्रयोग के लिए दवा मू० ४) डाकखर्च व पेकिंग ॥=) आना। सारे भारत के सोल एजेण्ट —

एस० के० सक्सेना, रंगमहल (एडी) अलीगढ़ सिटी।

संतान होने की दवा

जिस स्त्री के सन्तान न होती हो केवल ७ रात तक मशहूर दवा मुहाफिज औलाद खिलाओ। इन सात रात में स्त्री के बदन के अन्दर का हिस्सा ठीक ऐसी हालत में आ जाता है कि आठवीं रात..... स्त्री को गर्भ रह जाता है। इस औषधि की वजह से आज हजारों बहिनों की गोद में बच्चे खेल रहे हैं। जिस स्त्री को सन्तान न होती हो वह नीचे के पते पर पत्र लिख कर दवा मुहाफिज औलाद की शीशी वी० पी० पार्सल द्वारा मंगालें। १ शीशी काफी है जिसका मूल्य दो रुपया आठ आना २॥) है पारसल पर ॥-) महसूल लगेगा।

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४ देहली

अमीकन सैकिंडहैंड **गर्मकोट**

हर किसम के हाफ़कोट ओवरकोट वास्कोट
बच्चकाना कोट ताज़ा माल बेहतरीन क्वालेटी
बिल्कुल वाजबी निर्ख, रेलवे लोडिंग खुला है
आज निर्ख़नामा मंगावें, स्टाक थोड़ा है।"

रमेश शाज ऐन्ड को० कोटोंवाले कराची पी० बक्स नं० ६९२

सावधानी से बचत बढ़ाइए

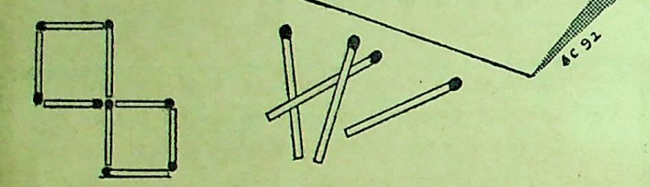

प्रश्न : दिया सलाई की चार तीलियों की सहायता से दो समकोण चतुर्भुजों को चार में पलटिए

उत्तर : इन चार तीलियों को ऐसे रखिये जैसे आकृति में दिखाया गया है।

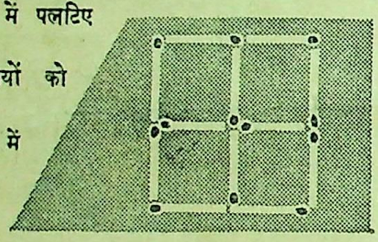

दियासलाई की चार तीलियों को उचित ढंग से रख कर इन से आठ तीलियों का काम लिया जा सकता है। इसी प्रकार यदि आप अपनी बचत को उचित ढंग से प्रयोग में लगाना जानते हैं तो गृहस्थी में अपनी आय से आप अधिक से अधिक लाभ उठा सकते हैं। नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए। छोटी पूंजी वालों के हित के लिए ही यह मद प्रचलित की गई है।

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट्स

निम्न लिखित मुख्य लाभ यह हैं:—

(१) आप ५, १०, ५०, १००, ५००, १०००, या ५०००, रु० के मूल्य के नैशनल सेविंग्ज सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) कुटुम्ब का प्रत्येक व्यक्ति (बयस्क या अल्पवयस्क) ५००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकता है। दो व्यक्ति मिलकर १०,००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है। सरकार द्वारा प्रचलित रुपया लगाने की मदों पर जो ब्याज दिया जाता है यह सब से अधिक दर है।

(४) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।

(५) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते हैं (५ रु० का सर्टिफ़िकेट १-१/२ वर्ष पश्चात भी भुनाया जा सकता है)

(६) जिनकी बचत थोड़ी है वह १), ॥), ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं, ५ रु० के स्टाम्प्स जमा होने पर एक नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट मिल जायेगा।

(७) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्प्स डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकृत एजेंटों अथवा सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

अपने सेविंग्ज़ ग्रुप में अभी सम्मिलित हो जाइए

विजयगढ़ निवासी

भारत विख्यात वैद्यराज बांकेलाल गुप्त प्राणाचार्य्य
भूतपूर्व मैनेजिंग प्रोप्राइटर धन्वन्तरि औषधालय
एवं भूतपूर्व सम्पादक धन्वन्तरि
ने

प्राणाचार्य्य भवन

नामक एक वृहद संस्था २००००० दो लाख के मूल धन से स्थापित की है जिसके लिमिटेड होने के लिये कागजात तैयार हो रहे हैं। शीघ्र ही लिमिटेड हो जायगी। शेयर प्रायः सब बिक चुके हैं। इस संस्था में आयुर्वेदीय पेटेन्ट और नवीन प्रणाली से प्रस्तुत औषधियां वैद्यक पुस्तकें, प्रवास मंजूषा चित्र आदि के अतिरिक्त उक्त वैद्यराज जी के सम्पादकत्व में "प्राणाचार्य्य" नामक आयुर्वेदीय उच्च कोटि का सचित्र मासिक पत्र एवं साप्ताहिक पत्र शीघ्र ही प्रकाशित होगा। अभी से ग्राहक बनने से मासिक का ४) वार्षिक और साप्ताहिक का ६) वार्षिक मूल्य लिया जायगा सब साधारण को खेरात और चिकित्सकों एवं औषधि विक्रेताओं को थोक भाव का सूचीपत्र शीघ्र मंगा लेना चाहिये।

एजेण्टों की आवश्यकता है—

व्यवस्थापक — **प्राणाचार्य भवन, विजयगढ़ जि० अलीगढ़**

प्यारी बहिना

न तो मैं कोई नर्स हूं, न कोई डाक्टर हूं और न वैद्यक ही जानती हूं, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थी स्त्री हूं। विवाह के एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं लिकोरिया (श्वेतप्रदर) और मासिक-धर्म के दुष्ट रोगों में फंस गई थी मुझे मासिक-धर्म खुलकर न आता था, अगर आता था तो बहुत कम और दर्द के साथ, जिससे बड़ा दुख होता था। सफेद पानी (श्वेतप्रदर) अधिक जाने के कारण मैं प्रति दिन बहुत कमजोर होती जारही थी, चेहरे का रङ्ग पीला पड़ गया था, घर के कामकाज से जी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पतिदेव ने कुछ सैकड़ों रुपयेकी औषधियां सेवन कराईं, परन्तु किसी से रत्ती भरन लाभ हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुख उठाती रही। सौभाग्य से एक सन्यासी महाराज हमारे दर्वाजे पर भिक्षा के लिए आये मैं दर्वाजे पर आटा डालने आई तो महात्मा जी ने मेरा मुख देखकर कहा—बेटी तुझे क्या रोग है, जो इस आयु में ही चेहरे का रङ्ग रुई की भांति सफेद हो गया है? मैंने सारा हाल सुनाया। उन्होंने मेरे पति को अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्खा बतलाया, जिसके केवल १५ दिन के सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगों का नाश हो गया। ईश्वर की कृपा से अब मैं कई बच्चों की मां हूं। मैंने इस नुस्खे से अपनी सैकड़ों बहिनों को अच्छा किया है और कर रही हूं। अब मैं इस अद्भुत औषधि को अपनी दुखी बहिनों की भलाई के लिये अस्ल लागत पर बांट रही हूं। इसके द्वारा लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वर ने मुझे बहुत कुछ दे रखा है। एक बहिन के लिये, पन्द्रह दिन की दवा तैयार करने पर ≈॥=) दो रुपये चौदह आने असल लागत खर्च होती है और महसूल डाक खर्च अलग है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोग में फंस गई हो तो वह मुझे जरूर लिखे मैं उनको अपने हाथ से औषधि बनाकर वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी। यह मेरा प्रण है कि मैं किसी बहिन से दवा की कीमत अपनी असल लागत से एक पैसा भी ज्यादा न लूंगी।

जरूरी सूचना—मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का ही नुसखा मालूम है इसलिये कोई बहिन मुझे किसी और रोग की दवाई के लिये न लिखें।

प्रेमप्यारी अग्रवाल नं० (३०) बुढलाडा जि० हिसार (पंजाब)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

युक्तप्रांतमें विविध कांग्रेसी दल

(पृष्ठ ११ का शेष)

करने का साहस नहीं करते थे, उस समय सर्वश्री जगदम्बानारायण सक्सेना और श्री सम्पूर्णानन्दजी ने ही युक्तप्रांत में सबसे पहले प्रतिनिधि कांग्रेस असेम्बली कायम की जो बाद में प्रांतीय कांग्रेस कमेटी में परिवर्तित होगई श्री त्रिलोकीसिंह पिछले कई वर्षों से लखनऊ जिला कांग्रेस कमेटी के सर्वेसर्वा रहे हैं और आज भी हैं। कानपुर में इस दल के प्रमुख नेता हैं श्री गंगा सहायजी चौबे, पं० बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' भी इसी दल के एक नेता हैं।

प्रजापार्टी का एकमात्र उद्देश्य

इस दल का मुख्य उद्देश्य है युक्त प्रान्त में कांग्रेस समाजवादी दल का खुल कर विरोध करना। इस दल के घोषणा पत्र के अनुसार इस दल का विश्वास है कि 'साम्राज्यवादी शोषण का सफलतापूर्वक मुकाबला करने के लिये जनता को सफलतापूर्वक संगठित करने में हमारी राष्ट्रीय कांग्रेस ही का सब से अधिक हाथ रहा है और वही इस देश में एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था भी कायम करने में सफल हो सकती है, जिस में कोई भी व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति का शोषण न कर सके और जिसमें उत्पत्ति और विनिमय के सब साधन जन समूह के ही हाथों में रहे।'

यही कारण है कि इस दल ने कांग्रेस समाजवादी दल के नेता श्री जयप्रकाशनारायण फंड तक का खुल्लम खुल्ला विरोध किया था। सर्वश्री केशवदेव मालवीय और जगनप्रसाद रावत ने दो वक्तव्य निकाल कर जयप्रकाश बाबू से कहा था कि वह इस बात की स्पष्ट घोषणा करें कि यह फंड कांग्रेस कार्य में ही व्यय होगा कांग्रेस समाजवादी दल के सगठन में नहीं।

तीसरा दल-क्रान्तिकारी कांग्रेस दल

तीसरा दल गोरखपुर के नेता प्रो० शिब्बनलाल सक्सेना ने जेल से छूटने के बाद स्थापित किया था। इस का आधार कांग्रेस समाजवादी दल का विरोध तो है ही, मगर यह कुछ दार्शनिक सिद्धान्तों पर भी निर्धारित है। उनका यह 'क्रान्तिकारी कांग्रेस दल' दल के घोषणा पत्र के अनुसार 'सारे संसार में आध्यात्मिक साम्यवाद की स्थापना चाहता है, जिसे गांधी जी अपनी भाषा में 'राम राज्य' या 'हकूमते इलाहिया' कहते हैं और जिसे बाइबिल की भाषा में 'मानव लोक में स्वर्ग का राज्य' कहा गया है। 'यह दल मार्क्सवादी नहीं है, क्योंकि वह मार्क्स और लेनिन का आदर उसी प्रकार करता है, जैसा कि वे संसार के उन सद्गुरुओं में स्थान देता है जिन के सिद्धान्तों ने मनुष्य की विचारधारा में क्रांति उत्पन्न करके नव युग का निर्माण किया है; किन्तु जिस 'आत्मा' की सत्ता का विचार न करने के कारण मार्क्स ने 'आत्मिक शक्ति पर कोई ध्यान नहीं दिया जो ब्रह्माण्ड की सब से प्रबल शक्ति है और इसका फल यह हुआ कि मार्क्स के दार्शनिक सिद्धान्त परमाणिवक (एटोमिक) और ब्रह्मांड की (कास्मिक) शक्तियों को संहार के साधन बनाने की स्वार्थपूर्ण प्रतिद्वन्दिता में संलग्न संसार को अवश्यम्भावी विनाश के कराल गाल में जाने से रोक सकने में समर्थ नहीं हैं। इसके विपरीत, महात्मा गांधी के सामाजिक सिद्धान्तों में, जो प्राचीन भारतीय सभ्यता अपने चरम विकास को पहुंच गई है, आधुनिक विश्व की समस्याओं को चिरस्थाई रूप से हल करने का तथा एक वास्तविक श्रेणी हीन समाज की स्थापना का मार्ग निर्देशित है।

नेशनल लेबर कोर की स्थापना

इस दल का श्रीगणेश लखनऊ में गत वर्ष दिसम्बर मास में हुआ था जब वहां कांग्रेस द्वारा मजदूरों में संगठन करने का प्रश्न गत प्रान्तीय असेम्बली के मजदूर चुनाव के अवसर पर उठा। कुछ स्थानीय कांग्रेस कार्यकर्ता सर्वश्री कृष्ण कुमार द्विवेदी, कन्हैयालाल श्रीवास्तव, देवी प्रसाद मुनीश और चन्द्रप्रकाश आदि ने मिल कर 'नेशनल लेबर कोर' की स्थापना की और लखनऊ शहर कांग्रेस कमेटी के सहयोग से मजदूरों में कार्य प्रारम्भ किया और लगभग महीने भर में ही कम्यूनिस्टों के प्रभाव को वहां के मजदूरों के बीच से बिलकुल नष्ट ही कर दिया, जिस का फल यह हुआ कि कांग्रेसी मजदूर उम्मेदवार की बहुत बड़ी विजय हुई। किन्तु इस 'नेशनल लेबर कोर का बढ़ता हुआ प्रभाव थोड़े ही दिनों में स्थानीय कांग्रेस कमेटी और विशेष कर उसके अध्यक्ष श्री चन्द्रभानु गुप्त को खटकने लगा और उन्होंने उसका खुलम खुला विरोध प्रारम्भ कर दिया, किन्तु जितना-जितना इसका विरोध हुआ उतना-उतना यह दल प्रबल होता गया और अप्रैल मास में इसी के तत्वाधान में प० शिवकुमार द्विवेदी और प्रो० शिब्बनलाल सक्सेना का जो अपूर्व स्वागत लखनऊ आनेपर हुआ उस से इस दल की शक्ति का प्रदर्शन हुआ। बाद में प्रो० शिब्बनलाल सक्सेना ने इस दल का नाम 'क्रान्तिकारी कांग्रेस दल' रखा और अब लखनऊ में जितना भी मजदूरों का काम चल रहा है सब इसी दल की संरक्षता में चल रहा है।

इस दल की ओर से गोरखपुर में मजदूर संगठन जोरों के साथ हो रहा है, श्री० शिब्बनलाल सक्सेना को सन १९३९ में 'नेशनल हेरल्ड' ने 'गोरखपुर का लेनिन' कहा था। वहां की लगभग दो दर्जन शक्कर मिलों के मजदूरों के वह सर्वेसर्वा हैं और गांव गांव में खेतिहरों के हरबाह सघ स्थापित हो रहे हैं। गोरखपुर जिला ही इस दल का असली गढ़ है। प्रो० सक्सेना अबध तिरहुत रेलवे की सघर्ष कमेटी के अध्यक्ष भी हैं।

बनारस जिले में इस दल की ओर से श्री देवनन्दनसिंह दीक्षित और श्री मार्कण्डेयसिंह मजदूर संगठन कर रहे हैं। कानपुर में युवक नेता श्री यदुनाथसिंह और इलाहाबाद में डा० महावीर प्रसाद बंगा मजदूरों में कार्य कर रहे हैं।

लखनऊ तो इस मजदूर संगठन का केन्द्र है। वहां इस दल के मजदूर संगठन के अधिनायक हैं युक्तप्रान्तीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल श्रीवास्तव। लखनऊ की लगभग दो दर्जन मजदूर यूनियनों में से बीस इन्हीं के हाथों में हैं, इनमें से अधिकांश तो इन्होंने स्वयं ही स्थापित की हैं और कुछ दूसरे दलों के हाथों से छीन कर अपने कब्जे में करली हैं।

इन तीन दलों के अतिरिक्त सयुक्त प्रान्त में प० विश्वम्भरदयाल त्रिपाठी की संरक्षता में अग्रगामी दल यानी फार्वर्ड ब्लाक, श्री जोगेशचन्द्र चटर्जी की संरक्षता में रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी यानी क्रान्तकारी समाजवादी दल, कम्यूनिस्ट पार्टी और रेडिकल डेमाक्रेटिक पार्टी यानी रायवादी दल भी हैं, किन्तु उनका इस समय कांग्रेसी राजनीति पर कोई विशेष प्रभाव नहीं है।

——

सन्यासियों की गुप्त बूटियां

इस पुस्तक में सैकड़ों ऐसी जड़ी बूटियों के गुप्त रहस्य प्रकट किये गये हैं, जिनसे सन्यासियों की धाक जमी हुई है। हालांकि इनमें से अधिकांश बूटियां आपको जंगल, खेत बागीचों और पंसारियों की दुकानों पर भी मिल सकती हैं, जिनसे आवश्यकता पड़ने पर स्त्रियां भी सिर से पांव के नख तक के सभी रोगों का इलाज घर में ही कर लिया करेंगी। इस पुस्तक को पढ़ लेने के बाद आप इस युग के धन्वन्तरि समझे जायेंगे। रोगियों का तांता बंधा रहेगा। कुछेक बूटियों की सूची—

लाख-लाख रु० के प्रयोग—(१) ऐसी बूटी कि जिसकी लकड़ी कान में लगा देने से सर्प काटे का विष मुख द्वारा निकल जाता है, (२) वह बूटी जिससे गूढ़ गर्भ ५ मिनट में निकल जाता है, (३) मधुमेह की अक्सीर बूटी, (४) दुबले पतले आदमी को मोटा ताजा बना देने वाली बूटी, (५) सात दिन में नपुन्सक को मर्द बनाने वाली बूटी, (६) दमे की अद्भुत बूटी, (७) वह बूटी-जिसके रस में अंगुली डुबोतरता। से तत्काल ज्वर उतर जाता है, (८) गर्भ रोक बूटी, (९) उपदंश को ७ दिन की कटो-मिटाने वाली बूटी, (१०) निमोनियां की बूटी, (११) वह बूटी जिससे बन्ध्य मजबूत होते पैदा हो। ऐसी ही सैकड़ों बूटियों का वर्णन इसमें है, जिनसे चमत्कारकर्ता प्रियता की आप सिविल सर्जनों को दंग कर सकते हैं। मूल्य २॥) डाकखर्च ।=) नहीं कर सकते।

पता—रसायन फार्मेसी (५) संगरिया (बीकानेर पर लाहूल स्पी

शीतल और सुरभित
तुम्हारे प्रतिदिन के प्रयोगार्थ

सन्द बड़ी अजीब होती
रे, नीले रंग के मणि,
जेबरात होते हैं और
बड़ी निर्भीकता पूर्वक
मिलनसार प्राणियों
रने में हिमालय की
ठिनाई उपस्थित करती
यहां भी इतने दूर
।

गर्मियों में अपने माथे गर्दन और बाहों पर टाटा का ओ डी कोलोन लगाओ। इसका तीक्ष्ण शीतल स्पर्श आल्हादक है और गर्मी और थकावट को दूर करता है। इसकी कोमल सुगन्धित पहाड़ों आते हुए वायु के शीतल झोंके के समान है।

यह तुम्हें ऐसे वैसे जल वायु में शीतल और ताजा रहने में सहायता करती है। सर्वदा टाटा के ओ डी कोलोन की एक शीशी पास रखकर प्रतिदिन प्रयोग करें।

टाटा का ओ डी कोलोन

दी टाटा आयल मिल्स कम्पनी, लि०

T.S.E. 208

स्त्री रोगों की निपुण चिकित्सिका

लेडी डाक्टर **कविराज आर. रानी** ही हैं

आप किसी भी स्त्री रोग में ग्रस्त हों तो निम्नलिखित पते पर मिलिये। वे आपको उसी समय ठीक कर देंगी। इसके अतिरिक्त उनकी तैयार की हुई औषधि 'आशा' एक ऐसी औषधि है जोकि स्त्री के आन्तरिक बाह्य रोगों को दूर करके सन्तान योग्य बना देती है और उसका मूल्य केवल १०) रु० है। डाक व्यय पृथक होगा। औषधालय—

लेडी डाक्टर--**कविराज आर. रानी**

गली नं १ अर्जुननगर निकट शाहालमी अड्डा लाहौर।

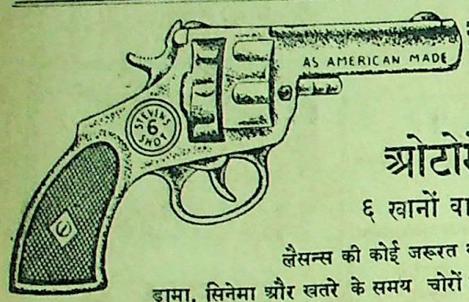

आत्मरक्षा

ओटोमेटिक

६ खानों वाली पिस्तौल

लैसन्स की कोई जरूरत नहीं

ड्रामा, सिनेमा और खतरे के समय चोरों को डराने के लिये बड़े काम की है। दागने पर पिस्तौल के मुंह से आग और धुंआ निकलता है। असली रिवाल्वर की तरह मालूम होती हैं। साइज ७॥ इंच×४ इंच और वजन १५ औंस। मूल्य ८) और साथ में १ दर्जन गोलियां (एलार्म डिस्क) मुफ्त। अतिरिक्त १ दर्जन गोलियों का दाम २)। स्पेशल तांबे की बनी ६६६ नं० की पिस्तौल का दाम ऐसे बेस्ट के साथ केस २॥), पोस्टेज और पैकिंग का अतिरिक्त १=)। प्रत्येक साथ १ शीशी रिवाल्वर का तेल मुफ्त।

दिखाया नापसंद होने पर दाम वापस

दियासलाई [illegible]म्बर आफ साइंस (V. W. D.) पो० बो० ६१ लाहौर

तीलियों का [illegible]mber af Science (V.W.D.) P.B.61. LAHORE

बचत को उंचि[illegible]

आय से आप अधि[illegible]

सर्टिफ़िकेट्स ख[illegible]

प्रचलित की गई है

---

५००) इनाम

प्रेम वशीकरण यन्त्र

इस यंत्र को अपने पास रक्खें, आप की प्रेयसी कैसी ही कठोर और जिद्दी क्यों न हो वह आपके काबू में हो जावेगी। प्रेम पथ के सभी कष्टों को दूर कर प्रेम सम्बन्ध जोड़ने में मदद करता है। एक बार परीक्षा करें—झूठी साबित करने वाले को ५७०) इनाम। मूल्य प्रति यन्त्र २) तीन का ५) वी० पी० खर्च अलग।

पता—

एम० एल० शाह साहब,

पोस्ट बक्स २४३ कानपुर।

फिल्म स्टार

बनने के इच्छुक शीघ्र लिखें, कुछ पढ़ा होना आवश्यक है।

रंजीत फिल्म आर्ट कालेज 18। रावीरोड (V. D.) लाहौर।

सब शारीरिक रोगों पर तथा सर दर्द की रामबाण दवा--

— मोहनांजन पेन बाम

चौधरी ब्रदर्स जलगांव पूर्व खानदेश।

---

३५ साल की आजमूदा अचूक औषधि

गर्भ निवारक

इसके सेवन से आजन्म गर्भ स्थापित नहीं होता। रंग निखर कर सुन्दरता की वृद्धि हो जाती है। हां, मासिकधर्म बन्द नहीं होगा। किन्तु फिर गर्भ की आशा न करें। १) २) ५) यही नं० २ इससे एक वर्ष तक गर्भ स्थापित नहीं होता। मू० ३) डा०म०॥-)

मर्द कर्दम तिला—नामर्द को मर्द बना देता है। प्रतिशीशी ३) डा०म०॥-)

कामिनी वशीकरण—स्त्रियों के लिये परम आनन्ददायक। ८ गोली ४) डा० नमूना १ गोली ॥=) डा० म० ॥-)

पता—पं० चन्द्रशेखर वैद्यशास्त्री ब्राह्मी औषधालय अलीगढ़।

जीवन में मधुर आनन्द उपभोग करने लिये खायें मिश्रित रोगन

झीन सीन गोल्ड

—टानिक पिल्स—

'झीनसीन' में अनेक शक्तिवर्धक तत्वों के अतिरिक्त शुद्ध सोना भी। इनमें बल और पौरुष बढ़ाने की पुष्ट कर तथा स्वप्नदोष और जातंक लता मिटाने की अपूर्व शक्ति है। झीन सीन' के सेवन से आपकी खोई शक्ति, उत्साह, उमङ्ग तथा पुरुषत्व प्राप्त होगा। मूल्य प्रति शीशी डाकखर्च ।।=) अलग।

विस्तृत सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये।

चाइनीज मेडीकल स्टो

नया बाजार — देहली

हैड-आफिस——एपोलो स्ट्रीट, बम्बई। ब्रांचें—१२-डलहौजी स्क्वायर कलकत्ता: रीची रोड-अहमदाबाद

—सेलिंग एजेन्ट्स—

दी नेशनल मेडिकल, स्टोर्स--अमृतसर
दी जनरल मेडिकल स्टोर्स--अमृतसर
दी एजाईड केमिस्टस-जयपुर
श्री सरस्वती स्टोर्स—बीकानेर
मे. गिरधरदास जानकीवल्लभ-उदयपुर
वैद्यराज विश्वनाथ त्रिवेदी-मुजफ्फरनगर
मेसर्स मोहन ब्रादर्स—अकोला
मेसर्स खरे ब्रदर्स—इटारसी
मे०गोपीलाल चिरंजीलाल—ओमकारेश्वर
दी गुजरात मेडीकल स्टोर्स—कानपुर
दी वर्मा मेडिकल स्टोर्स—शिकोहाबाद
मे० भारीवाल ब्रादर्स—जोधपुर
डी० पी० आयुर्वेदिक एण्ड दवाखाना, मोरेना।

स्त्री की कमर टूट जाती है

नेशनल

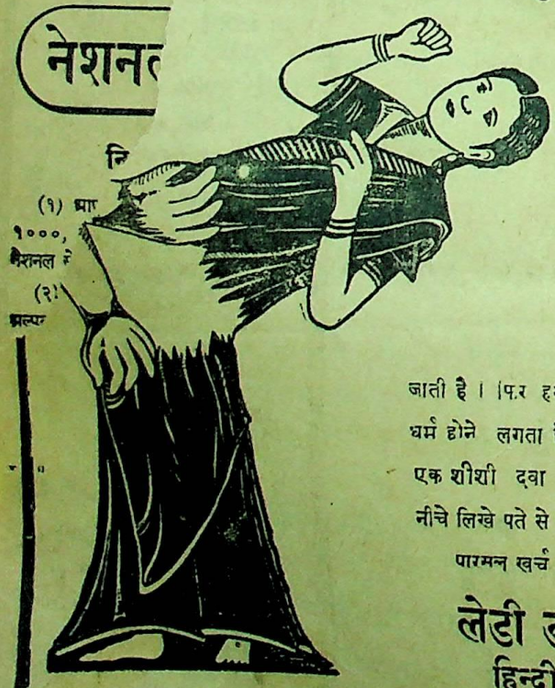

अगर स्त्री का मासिक धर्म ठीक समय पर न आये या मासिक के दिनों में दर्द हो या माहवारी कम या ज्यादा आती हो तो इस तकलीफ से स्त्री की कमर में बहुत दर्द होता है। ऐसी को एक शीशी दवा कोरस सेवन करा देनी चाहिए। इस दवा के खाने से मासिक धर्म की सब खराबी ठीक हो जाती है। फिर हर महीना बिना किसी कष्ट के ठीक मात्रा में मासिक धर्म होने लगता है। हजारों स्त्रियों इस दवा से लाभ उठा रही हैं। एक शीशी दवा कोरस की कीमत दो रुपया आठ आना २॥) है। नीचे लिखे पते से पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा मंगा लीजिए।

पारमन खर्च ॥-) लगेगा।

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना

हिन्दी आफिस नं० ३४, दिल्ली!

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

[पृष्ठ ८ का शेष]

इयों की चमक दमक, वेषभूषा आदि से भी आकृष्ट हो कर बहुत से बनवासी ईसाई बन जाते हैं। इन मिशनरियों में रोमन, कैथोलिक, प्रोटेस्टेन्ट और साल्वेशन आर्मी आदि हैं जो प्रायः ५० वर्षों से यहां कार्य कर रहे हैं। रांची स्टेट की सीमा पर स्थित है जहां इनका बड़ा केन्द्र है। वहीं से इनके दल के दल आते रहते हैं। हिन्दू प्रायः निश्चेष्ट हैं और राज्य की ओर से कोई रोक थाम नहीं है। ईसाई प्रचार के प्रभाव में आकर मुंडा और खड़िया जाति की ६८ प्रतिशत संख्या ईसाई बन चुकी है। उरांव और किसान की ३५ प्रतिशत चमार और लोहार आदि जातियों की ४ प्रतिशत संख्या ईसाई धर्म में दीक्षित हो चुकी हैं। रांची राज्य में केवल एक ही हाई स्कूल राज्य की ओर से है और मिडिल स्कूल और प्रायः ३० प्रतिशत मिशनरियों द्वारा चलाये जा रहे हैं। राज्य की ओर से शिक्षा के लिए बहुत ही कम व्यय किया जाता है। ईसाई मिशनरियों को अपने प्रचार में राज्य की ओर से काफी सुविधा है। भविष्य बतायेगा कि ईसाई मिशनरियों को को अबाध्य रूप से जो प्रचार की सुविधा राज्य की ओर से दी गई है उसका परिणाम राजा और प्रजा दोनों के लिये क्या होगा! आश्चर्य तो यह है कि मांगपुर राज्य की हिन्दू प्रजा, हिन्दू राजा के रहते हुए ईसाई बनाई जा रही है, परन्तु वहां के हिन्दू आज भी इतने असावधान और गहरी निद्रा में पड़े हुए हैं, यह राजा और प्रजा दोनों के लिए लज्जा की बात।

—

सच्चा कोकशास्त्र (सचित्र) १॥)
सोहाग रात ,, १॥)
१०० चुम्बन ,, १॥)
तीनों का मूल्य ३॥) पोस्टेज ॥-) अलग
पता—वी० सी० भाटिया, अलीगढ़।

५०) इनाम

श्वेत कुष्ट (सफेदी) की आश्चर्यजनक महौषधि। चाहे कितने ही दिन से श्वेत कुष्ट हो, या किसी भी कारण से सफेद दाग हो गया हो इस महौषधि के सिर्फ २ दिन के सेवन से पूर्ण लाभ होता है। इससे प्रति वर्ष हजारों रोगी आराम होते हैं। यदि आप अनेकों दवाइयां कर निराश हो चुके हों तो एक बार और परीक्षा करें। मूल्य २) गलित कुष्ट सुनवहरी की औषधि मूल्य ३॥)।

गुणहीन साबित होने पर ५०) इनाम
श्री सदानन्दराम संजीवनी औषधालय
नं० १८ पो० बारशलीगंज, (गया)।

सच्चा नवजीवन प्राप्त करो!

१. जवां मर्द पिल्स— यह सुस्त तथा कमजोर शरीर को मस्त बनाती है! कमजोरी, स्त्री प्रसंगी शीघ्र पतन वगैरह फौरन दूर होती है और इस्तेमाल करने वाला जवां मर्द बनता है। धातु गाढ़ी बनाने के लिये 'बंधेज चूर्ण' आठ दिन सेवन करने के बाद यह पिल्स लेने वाले को बहुत ही आनंद मिलता है।

२. बंधेज चूर्ण— धातु पेशाब या स्वप्न में जाना, गरमी, सुस्ती, स्मरण शक्ति कम होना तथा चेहरा सफेद पड़ना वगैरह दोष शर्तिया दूर करता है। पतली धातु का यह दुश्मन है। नया धातु विकार ७ दिन में और पुराना १४ दिन में दूर होता है और धातु गाढ़ी बनती है।

३. कामशक्ति नवजीवन— ज्यादा स्त्री संग से और हस्तदोष वगैरह से जिन्होंने अपना नाश किया है, उनको तथा बूढ़ोंको भी नवजीवन प्राप्त करा देता है। २१ दिन के इस्तेमाल के लिये उसकी कीमत २) ऊपर लिखी सुई प्रकार से तीनों दवाइयां इस्तेमाल करने से असाधारण पुरुषत्व प्राप्त होता है। बहुत ही प्रसिद्ध दवाइयां हैं।

४. परमा दुश्मन— इसे इस्तेमाल करने से गनोरिया पुराना तथा नया ७ दिन में भाग जाता है। फायदा दूसरे ही दिन होता है। पेशाब मार्ग में की सब दुष्ट विकारों का दुश्मन है। कीमत २॥)।

मैनेजर— नवजीवन दवाखाना (अ) नागपुर सिटी।

म हे श घी

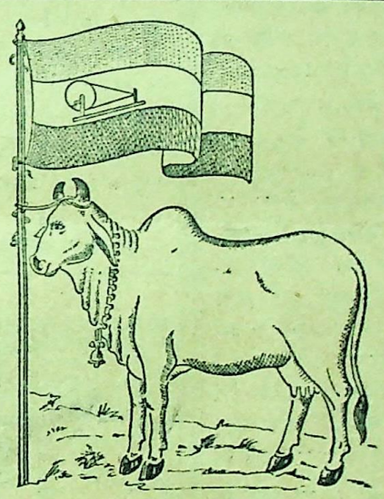

म हे श घी

५४वें अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर प्रत्येक देशभक्त को अपने और अपनी भारत माता के हित के लिए केवल 'शुद्ध घी' व्यवहार करने की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

शुद्ध घी के सेवन करने से—

❀ आप भारत के महान पशुधन की रक्षा करते हैं।
❀ आप भारत के उस सर्वश्रेष्ठ ग्रामीण व्यवसाय को रक्षा करते हैं जिससे प्रतिवर्ष ४,००,००,००,००० रुपये की बचत होती है।
❀ आप समस्त राष्ट्र की स्वास्थ्य-रक्षा करते हैं।

विनीतः— मैसर्स सागरमल रामसरूप खुर्जा, यू. पी.
पैकर्स तथा सोल सप्लायर्स शुद्ध देशी

महेश घी

एक स्वादिष्ट तथा स्वास्थ्यप्रद दुग्ध से उत्पन्न पदार्थ

लाहूल में

भेड़ों के लिए अपनी सम्पन्न चारागाह और ख्यातिनामा पशमीना बकरियों का पहाड़ी देश लाहूल पश्चिमी तिब्बत और उत्तरी पंजाब के मध्य में स्थित है जो कभी भी १०,००० फीट से नीचे नहीं उतरता। यहां के जलवायु और इस देश की कठोरता के कारण यहां के मनुष्य मजबूत होते हैं परन्तु वे स्त्री को अलंकारप्रियता की भावना का अवरोध नहीं कर सकते। किसी त्योहार के अवसर पर लाहूल स्त्री की जवाहरातों की पसन्द बड़ी अजीब होती है जिसमें अम्बर हरे, नीले रंग के मणि, प्रवाल व चांदी के जेवरात होते हैं और वह उन सब को बड़ी निर्भीकता पूर्वक इकट्ठा करती है।

इन सादे परन्तु मिलनसार प्राणियों से सम्पर्क स्थापित करने में हिमालय की निचली शृंखला कठिनाई उपस्थित करती है परन्तु हमाम साबुन यहां भी इतने दूर प्रदेश में आकर बिकता है।

हमाम

भारत का प्रियतम साबुन

टाम्को सेल्स विभाग
७ माल मेनशन
दी माल लाहौर
दी टाटा आयल मिल्स कं० लि०

T.S. 227

ऐरोप्लेन-पतिन-जार
रजिष्टर्ड
TRADE MARK REGISTERED
खाने का
उत्कृष्ट व स्वादिष्ट तम्बाकू
बटलराम लक्ष्मीनारायण, बम्बई, कलकत्ता, बनारस

काढ़ने की मशीन

यह कसीदा काढ़ने की मशीन (Embriodery machine) हाल में ही ईजाद हुई है जो फूल, पत्ते बेल, सीन सीनरी आदि कपड़े पर बड़ी आसानी से काढ़ती है। स्त्री और लड़कियों के खास मतलब की चीज है। मूल्य मय ४ सुइयों के ३) खर्च ॥≡)।

दीन ब्रादर्स, अलीगढ़, नं० ४।

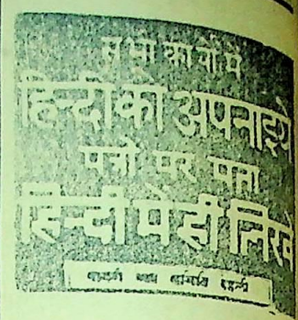
सभा कार्यों में
हिन्दी को अपनाइये
पत्रों पर पता
हिन्दी में ही लिखें

स्वप्न दोष और प्रमेह

केवल एक सप्ताह में जड़ से दूर। दाम २) डाक खर्चा पृथक।

हिमालय कैमीकल फार्मेसी हरद्वार।

विलायती घड़ियां आ गई

जिन घड़ियों का मुद्दत से इन्तजार था और जिनके लिये आप और सब परेशान थे वह घड़ियां बहुत थोड़ी मिकदार में आगईं। यह कलाई की खूब सूरत मजबूत और मुद्दत तक चलने वाली घड़ी एक ऐसा नायाब तोहफा है कि जिसकी मिसाल नहीं मिलेगी। टाइम भी बिल्कुस सच्ची, पुर्जों की मजबूती की गारण्टी चौरस और लम्बे दोनों शेप में मौजूद है। बनाने वाली कम्पनी ने तारीफ यह की है कि पत्थर पर गिरने से नहीं टूटती और टाइम बराबर देती रहती है जरूरत मन्द लोगों को सिर्फ एक घड़ी दी जावेगी। दुकानदारों जो ज्यादा मिकदार में हम अभी सप्लाई नहीं कर सकते। कीमत सफेद पालिश वाली मय स्ट्राप और केस के सिर्फ २०) सुनहरी २२) डाक खर्च अलग।

घड़ियों के बड़े सौदागर

सुख सागर कम्पनी पो० नं० २०७ देहली।

शतिया फायदा देने वाली नीचे लिखी हुई दवाइयों का इस्तेमाल करके

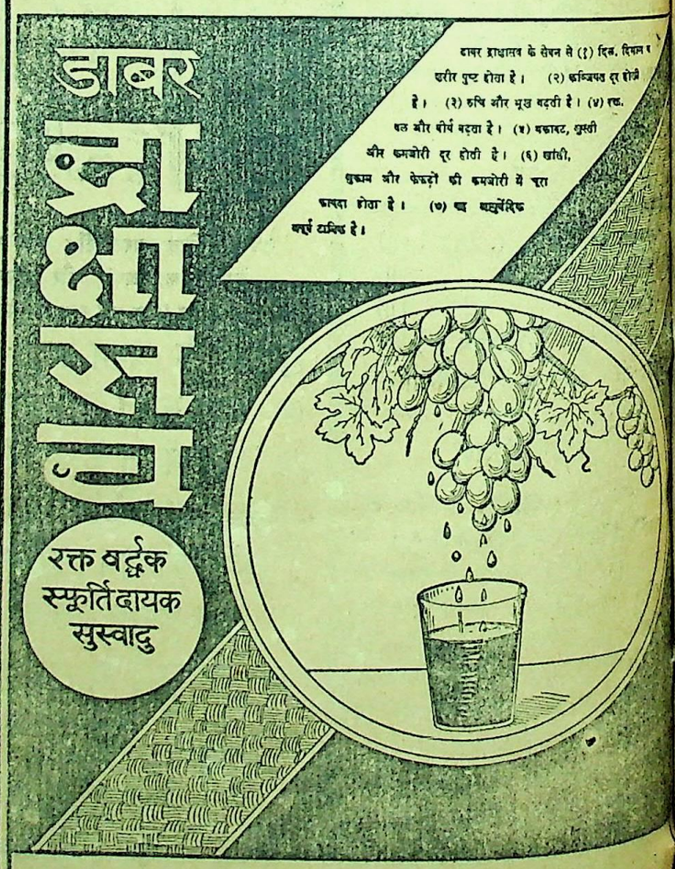
डाबर
द्राक्षासव
डाबर द्राक्षासव के सेवन से (१) दिल, दिमाग व शरीर पुष्ट होता है। (२) कब्जियत दूर होती है। (३) रुचि और भूख बढ़ती है। (४) रक्त, बल और वीर्य बढ़ता है। (५) थकावट, सुस्ती और कमजोरी दूर होती है। (६) खांसी, सुकाम और फेफड़ों की कमजोरी में चूरा फायदा होता है। (७) यह आयुर्वेदिक अपूर्व टानिक है।
रक्त वर्द्धक
स्फूर्तिदायक
सुस्वादु
डाबर (डा. एस. के. बर्म्मन) लि. कलकत्ता

सरस्वती पहेली नं० ३ में

१०००) रु० अवश्य जीतिये

६००) रु० सर्वशुद्ध हल पर, ३००) रु० न्यूनतम अशुद्धियों पर, ४०) रु० किसी महिला के सर्वशुद्ध हल पर ज्यादा दिये जावेंगे, ५०) रु० क्रम से ज्यादा पूर्तिया भेजने वालों को, १०) रु० हमारे सबसे प्रथम आने वाली चार पूर्तियों पर दिये जावेंगे। पूर्तिया भेजने की अन्तिम तारीखः-१० दिसम्बर १९४६ है।

१ शि	वा	२ जी		३ य	व	न
वा		४ व	५ न	वा	सी	
६ ल	प	क	ना		७ ड	ग
८ य	म		९ ल	ड़	का	१० व
	११ की	च	ड़		र	हे
१२ गा	र	१३ शा	ना			ति
ली		ल			१४ द	या

संकेत बायें से दायेंः— १. आज देश को ऐसे महापुरुषों की आवश्यकता है। ३. राजपूताना में '.....' (मुसलमान) जाती ने कोई विशेष उन्नति नहीं की। ४. वन में निवास करने वाला ६. खाने की चीजों पर बुरी तरह '.....' (लपकना) शिष्टाचार के विरुद्ध है। ७. कोई कोई मनुष्य बहुत लम्बे-लम्बे '.....' भरते हैं। ८. यमराज को सक्षेप में '.....' भी कहते हैं। ९. किसी के '.....' होने पर बहुत खुशी मनाई जाती है। ११. '.....' कीच में होकर जाना बहुत कष्टप्रद होता है। १२. 'शानागार' में गड़बड़ है। १४ गरीबों पर '.....' करना मनुष्य का धर्म है।— संकेत ऊपर से नीचेः—१. शिवजी का मन्दिर, २. सेवक। ५. 'नाडलनान' उलट गया है। ७. खूब खा लेने के बाद यह आती है। ९. आपस में '.....' बुरा है। १०. पक्षी मारने वाला शिकारी। १२. किसी को '.....' देना बुरा है। १३. काश्मीरी '.....' अच्छे होते हैं।

नियमः—एक नाम से एक पूर्ती की प्रवेशिका फीस १) रु० दो पूर्ती की ३।) रु०, तीन पूर्ती की २॥) रु० फिर आगे तीस पूर्तियों तक ॥=) फी पूर्ती, इकत्तीसवीं (३१) पूर्ति से ।=) फी पूर्ती फीस हो जाती है। जो मनीआर्डर द्वारा भेजा जा सकता है। पूर्तियों के साथ जारी मनीआर्डर रसीद अवश्य भेजे, एक नाम से चाहें जितनी पूर्तियां भेजी जा सकती हैं। पूर्तियां व मनीआर्डर के कूपन पर अपना पता जरुर लिखें। इस पहेली का सीलबन्द उत्तर २३ या ३० दिसम्बर १९४६ के सा० अर्जुन में देखें, मैनेजर का निर्णय अन्तिम व माननीय है। पूर्तियां व फीस भेजने का पताः— मैनेजर, सरस्वती पहेली कार्यालय, चांदपोल बाजार, कल्याणजी का रास्ता, जयपुर (राजपूताना)।

सरस्वती पहेली नं० २ का सीलबन्द उत्तर

बायें से दायेंः—१. दिवाली, २. जलज, ३. सवानरल, ४. वर, ५. रथवाह, ६. टसना, ७. शोभना,— संकेत ऊपर से नीचेः—१; दिशावर २. जननी ८. होट, ९. रथ, १०. टराना, ११. नाह, १२. रघुराज, १३. जलन, १४. बिटाना।

१ अशुद्धि पर १२ व्यक्तियों में, प्रत्येक को १२॥) रु०
२ ,, १५ ,, ,, ६=)॥ रु०
३ ,, २३ ,, ,, २=)॥ रु०

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

समाज रोता है

(पृष्ठ १० का शेष)

अच्छा, वह तुम्हारा बगला आ गया, कल कालिज में मिलेंगे, नमस्ते।'

ललिता ने कहा — 'नमस्ते।'

देखती हो, रेवतीशंकर ने पूछा — 'कहां गयी थी, बिटिया ? सिनेमा ?'

बिटिया ललिता ने कहा — 'हां, पिताजी सिनेमा।'

'अच्छा, अच्छा।'

ललिता अपने कमरे में चली गयी। भोजन किया और एक उपन्यास उठा पलंग पर पड़े पड़े पढ़ने में लग गयी।

उसी समय बंगले की दूसरी मंजिल में रेवतीशंकर ने पलग पर पड़े-पड़े अंगड़ाई ली और दूध लेकर आई घर की युवा दासी की ओर वासनापूर्ण दृष्टि लगा दी।

उन आंखों को देखा, अपनी आंखों में बिद्रूप भर कर हिरिया दासी ने कहा— 'दूध ला, दूध लो !'

'हाँ, दूध तो लूंगा ! पर आज तो मैं तेरे इस रसपूर्ण यौवन का भी पान करूंगा ··· हिरिया ··· मेरी प्यारी ··· हिरिया ने फिर अल्हड़पन से कहा — 'चलो, चलो !'

और रेवतीशंकर पर नशा था शराब का, उस नारी के यौवन का। हिरिया को पकड़ लिया और पलंग पर बैठा लिया। उसने कमरे की बत्ती को भी बुझा दिया। प्रकाश कम कर दिया। उसी समय हिरिया ने मुस्करा दिया और आंखों से हंस दिया।

रेवतीशंकर ने पूछा — 'क्या ···?'

'हां, नहीं तो ! सोचती हूं तुम भी कैसे हो एक आदमी, घर की खीर छोड़कर बाहर की रूखी रोटी पर आंख डालते हो ·····

'मूर्ख !' एकाएक खिसियाकर रेवतीशंकर ने कहा।

और इतना सुन हिरिया ने हंस दिया। तभी जाने उसने किस भावना के साथ चाहा कि लाला पर थूक दे, धिक्कार दे उसे ! पर जैसे युग-युग से उसको आत्मा का दबाव दिया गया था और उसकी दृष्टि से चरित्र का महत्व भी मिटा दिया गया था। क्योंकि उसी समय जब लाला ने एक दस रुपये का नोट उसकी ओर बढ़ाया, तो उसने ले लिया। वह नोट उसने फाड़ नहीं दिया और वापिस नहीं कर दिया। कदाचित उसके सामने अपनी इच्छाओं का उतना प्रश्न नहीं था जितना कि वर्ष भर से बीमार पड़े हुए अपने पति का था और दो बच्चों के पालन-पोषण का था। उसकी हीनता और विवशता का फायदा जितना लाला रेवतीशरण ने उठाया, उसके ऐवज में, एक अंश उसने भी उठा लिया ····· पैसा ····· बच्चों के पालने और पति का जीवन बचाने के लिए ···

× × ×

एक दिन लाला रेवतीशंकर अपने कुछ मित्रों के साथ शराब पीने और नाच देखने के लिए एक होटल में पहुंचे। बड़े-बड़े शौकीन बैठे थे। नगर के रईस, उमरा और हाकिम-हुक्काम ! बहुत-सी युवतियां भी रंग-बिरंगी तितलियों के समान इधर-उधर उड़ रही थीं।

लाला रेवतीशंकर ने शराब पी ली थी और अब नाच देखने के लिए डांस-हाल में जाने की बारी थी। मित्रों के साथ, उनके पास में मनबहलाव के लिए जो नारी बैठी थी, वह लालाजी को अपने साथ डांस करने के लिए आमन्त्रित कर रही थी। वह उनके गले में बांह डाले हुए बैठी थी। बार-बार प्याले में शराब उंडेलकर वह उनके होठों से लगा रही थी। वह कितनी चतुर थी ! कितनी सलीकेदार ···

अपनी जगह बैठे हुए, उसी अवस्था में एकाएक रेवतीशंकर ने देखा कि उनकी प्यारी बिटिया ललिताकुमारी एक युवक के हाथ में हाथ डाले होटल के एक कमरे से निकली और बाहर हो गयी। पिता ने पुत्री को देखा और पुत्री ने पिता को। किन्तु पुत्री को देख लाला रेवतीशंकर की अवाक् और क्षुब्ध दृष्टि जिस ओर टिकी तो वहीं रह गयी। अपने गले में पड़ी हुई नारी की बाहें उन्होंने अलग हटा दीं। मित्रों से विदा ले ली। तुरन्त वहां से उठ उन्होंने बाहर चारों तरफ़ दृष्टि फैलायी और ललिता को पाने की चेष्टा की। उसी समय वह घर पहुंचे, तो दरबान ने उन्हें एक बन्द चिट्ठी दी। वह खोली। पढ़ी--

'मेरे पिताजी,

आप होटल में आज जिस अवस्था में थे, उसे देख मैं चकित नहीं हुई। और आपने मुझे देख जिस दुर्भावना को अपने मन में उत्पत्ति की वह भी स्वाभाविक थी। देखती हूं, आप भी विवश थे और मैं भी। मैं आज इस नगर को छोड़ रही हूं और जा रही हूं दूर ··· दूर ···

माँ मुझे याद आयेगी। वह मेरी जैसी मां है, सीधी, अनोखी और अपढ़ — मैं सोचती हूं, मैं भी ऐसी ही होती, तो काश !

आपकी बिटिया—
ललिता

प्रमेह रोग समाप्त करो

७ दिन में आराम

यदि किसी पुरुष को पेशाब करने के पहले या पेशाब करने के बाद सफेद गंदा पानी आता हो तो यह बहुत भयंकर बात है। इसे प्रमेह का रोग कहते हैं। धीरे-धीरे यह रोग बढ़ जाता है तो आदमी पौरुषहीन हो जाता है। उसकी शक्ति समाप्त हो जाती है। इस वास्ते जिन पुरुषों को यह शिकायत हो या स्वप्नदोष होता हो तो इस भयंकर रोग से लापरवाही नहीं करनी चाहिये।

प्रमेह का रोग केवल ७ दिन में नष्ट हो जाता है

और केवल ३॥) खर्च होंगे। "जौहरे आजम" इस रोग के लिये अक्सीर प्रमाणित होती है। केवल एक शीशी दवा "जौहरे आजम" से बड़े बड़े पुराने रोगी स्वस्थ हो गए। "जौहरे आजम" प्रमेह के रोग का सबसे अच्छा इलाज है। जिन लोगों को आवश्यकता हो—

मैनेजर, जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४ दिल्ली

के पते पर पत्र लिखकर "जौहरे आजम" की एक शीशी वी० पी० द्वारा मंगा लें। एक शीशी का मूल्य ३॥) तीन रुपया आठ आना है पार्सल का खर्च ॥-) लगेगा।

[टेलीफोन नं० ६२६८]

'वीर अर्जुन' साप्ताहिक में विज्ञापन देकर लाभ उठाइये

वह पुरुष

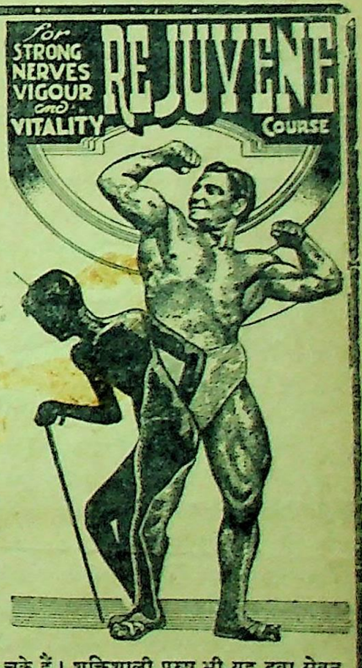

जो शक्तिहीन पुरुष किसी भी कारण से शरीर बल नष्ट कर चुके हों और उनके जीवन को घुन लग चुका हो और विशेष दुख से समय व्यतीत कर रहे हों, ऐसे दुखी पुरुषों को शक्ति प्रदान करने का सुअवसर यह है कि 'रिजोवीन' औषधि को १६ दिन तक सेवन कर लें, उनकी गई हुई शक्ति फिर से लौट आयेगी और अपना समय सुख से आनन्द प्राप्त अवश्य करेंगे। शरीर के प्रत्येक बलहीन भाग की यह दवा अमृत तुल्य है और काया को फिर से बदल कर नया जीवन देती है। सारे भारतवर्ष में इस औषधि का प्रचार है और प्रत्येक वर्ष लाखों दुखी पुरुष इस औषधि द्वारा आनन्द प्राप्त कर चुके हैं। शक्तिशाली पुरुष भी यह दवा सेवन करके अपने जीवन के आनन्द को बढ़ा सकते हैं और यह दवा किसी भी ऋतु में सेवन की जा सकती है। इस कोर्स में दो दवायें होती हैं, एक खाने की, दूसरे मलने की। पूरे कोर्स का मूल्य ५) रुपये, डाक खर्च ॥≡) अलग।

अक्सीरी दवाखाना कलां महल पो० नं० ४१ (V.A.D.) देहली।

दिल्ली में चांदनी चौक, फतेहपुरी बाजार के तमाम औषधि विक्रेता यह दवा बेचते हैं।

खाजोल नं. १२०

तर खुजली की अचूक और मशहूर दवा है।

सोल एजेण्टः—
देहली जाम फैक्टरी नया बांस, बीड़ी मार्केट, देहली। (२)

बन्द माहवारी (मासिक धर्म)

२४ घन्टे में शुरू

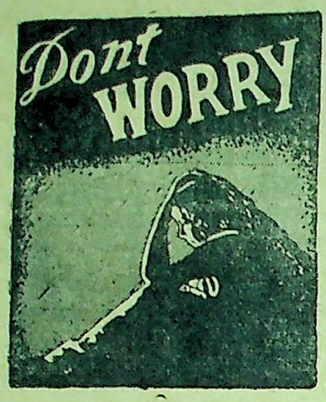

यदि किसी स्त्री की माहवारी रुक गई हो तो हमारी दवा 'कामिनी' से २४ घण्टे में जारी हो जाती है । अगर किसी स्त्री की माहवारी तकलीफ से आती है, रुक-रुक कर आती है । महीने-दो महीने से आती है, तो 'कामिनी' दवा सेवन कर लेने से तमाम खराबियां दूर हो जाती हैं । हजारों स्त्रियां, जिनकी माहवारी रुक गई थी, इस दवा के सेवन करने से २४ घण्टे में साफ होकर आने लगी । जिन स्त्रियों को गर्भ हो वे यह दवा सेवन न करें वरना गर्भ प्रायः गिर जाता है । (एक शीशी एक स्त्री के लिए काफी है) । कीमत दो रुपया आठ आना, डाक-व्यय ग्यारह आना ।

अक्सीरी दवाखाना कलां महल; (छत्ता हकीम आगाजान) (V.W.D.) नं० ४१ देहली ।

दिल्ली में चांदनी चौक फतेहपुरी बाजार के सभी प्रमुख औषधिविक्रेता यह दवा बेचते

मर्दाना बाजीकरण व परमौष्टिक

अनंगप्रभा याकुती

शक्तियों का हद से ज्यादा उपयोग करने से, वृद्धावस्था से, अथवा किसी भी कारण से आई हुई कमजोरी दूर करती है, पतली धातु को गाढ़ा करता है और रुकावट बढ़ाकर दाम्पत्य जीवन का पूर्ण आनन्द देती है शी० रु० १०) ।

मदनमंजरी फार्मेसी—जामनगर-देहली एजेंट जमनादास कं० चांदनीचौक

फोटो कैमरा मुफ्त

यह कैमरा सुन्दर नमूने का सफाई से बना हुआ बिना किसी कष्ट के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है । इसका प्रयोग सरल है यही सही काम करता है और शौकिया काम लेने वाले व व्यवसायी दोनों ही इससे काम ले सकते हैं । यह कीमती मनोहर कैमरों में से है, जो थोड़े ही मूल्य का है । यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और रुपया कमावें । मूल्य बक्स कैमरा पूरा, तमाम फिल्म काड, कैमीकल, सरल प्रयोग सहित नं० ५०१ कीमत ५।।।) वेस्ट, क्वालिटी, नं० ५४५ कीमत ७।), डी लक्स एक्स्ट्रा स्पेशल क्वालिटी नं० ५५० कीमत ६।), फोल्डिंग नं० १००, कीमत ४५), पैकिंग व डाक व्यय १=) नोट — एक समय में ६ कैमरों के ग्राहक को कैमरा नं० ५५० मुफ्त । स्टाक सीमित है । अभी आर्डर दें अन्यथा निराश होना पड़ेगा । माल पसन्द न होने पर कीमत वापिस ।

इम्पीरियल [illegible] फैक्ट्री (V.W.D.) पो० बौ० ६१, लाहौर

Imperial Chamber of Science, (V.W.D.) P. B. 61, Lahore.

T.B. टी.बी. तपेदिक बड़ा भयंकर रोग है

इस रोग के भयंकर कीटाणु (जर्म) नवयुवकों तथा नवयुवतियों के ही रक्त के प्यासे होते हैं और थोड़े ही दिनों में रोगी को काल के गाल में पहुंचा देते हैं । रोगी के मरने के पश्चात भी कुटम्ब में किसी न किसी को अपना शिकार बनाते ही रहते हैं, इस दुष्ट रोग के जर्मों को नष्ट करनेवाली यदि कोई औषधि है तो वह आसाम बंगाल की शक्तिशाली महौषधि "जबरी" ही है । जिसने परमात्मा की कृपा से सैकड़ों-हजारों ऐसे-ऐसे रोगियों को भी काल के गाल से बचा दिया, जिनको "एक्सरे" (X Ray) आदि के बाद डाक्टरों, हकीमों, वैद्यों ने जवाब दे दिया था । यह सब उस परम-पिता परमात्मा की कृपा और भारत के पूज्य ऋषियों के रक्त से सींचे हुए आयुर्वेद शास्त्र का चमत्कार है । जब ही तो लोगों ने इसका नाम औषधि नहीं, बल्कि काल के गाल से बचानेवाली "ईश्वरीय शक्ति" रख दिया है । आप इन ही कालमों में अनेक रोगियों के प्रशंसापत्र देख चुके हैं । अब अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं रही । परमात्मा की कृपा से अब तो अनेक जगह टी. बी. हस्पतालों में भी 'जबरी' का डंका बज रहा है ।

T.B. टी.बी. "तपेदिक" और पुराने ज्वर के रोगियो—

अब भी समझो—यदि आप अपनी प्यारी जान को बचाना चाहते हैं तो तुरन्त "जबरी" का सेवन शुरू कर दो । अन्यथा फिर वही कहावत होगी—कि अब पछताए क्या होत है—जब चिड़िया चुग गईं खेत—सैकड़ों हकीम, वैद्य, डाक्टर, अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार द्वारा आर्डर देते हैं, तार या पत्र-व्यवहार के लिए थोड़ा-सा पता "जबरी" (जगाधरी) Jabri (Jagadhri) लिख देना ही काफी है । मूल्य इस प्रकार है—

"जबरी" स्पेशल नं० १ अमीरों के लिए जिसमें साथ-साथ ताकत को बढ़ाने के लिए सोना, मोती, अभ्रक आदि की मूल्यवान भस्में भी पड़ती हैं । मूल्य पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन के लिए २०) रु० । "जबरी" नं० २ जिसमें केवल मूल्यदान जड़ी बूटियां हैं । पूरा कोर्स २०) रु० । नमूना १० दिन के लिए ६) रु० महसूल आदि अलग हैं । आर्डर में पत्र का हवाला तथा नं० १ या नं० २ साफ-साफ लिखें । तुरन्त 'जगाधरी के पते पर आर्डर देकर रोगी की जान बचालें १० दिन में ही अद्भुत चमत्कार दिखाई देगा ।

पता—राय साहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस ऐण्ड बैंकर्स (३) शिलांग (आसाम) या पंजाब आफिस "जगाधरी"

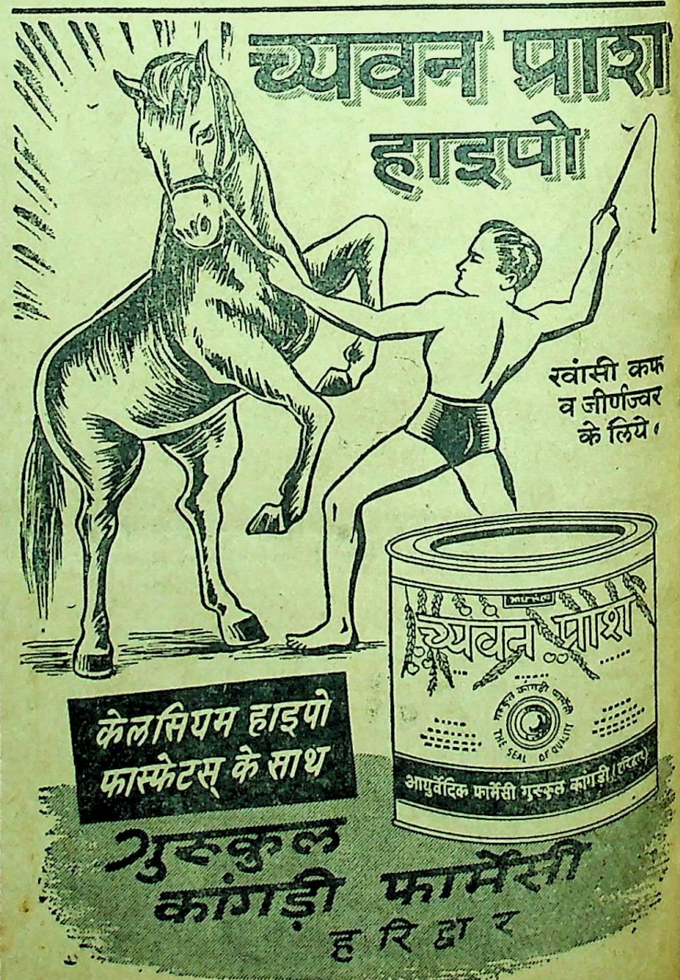

CCO. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

स्त्री को श्वेत प्रदर

स्त्री को श्वेत पानी की बीमारी भयानक होती है। इस बीमारी को ल्युकोरिया भी कहते हैं। इस बीमारी से पीड़ित होने वाली स्त्री के गुप्त शरीर से समय असमय श्वेत रङ्ग का बदबूदार पानी या लेस निकलता है और धीरे-धीरे उस स्त्री के यौवन को समाप्त कर देता है। उसकी कमर, नाफ, नले, पेट, बल्कि सारे शरीर में दर्द होने लगता है। माहवारी अर्थात् मासिक धर्म भी खराब हो जाता है। यह रोग बड़ा भयानक है। स्त्रियों को इसमें लापरवाही नहीं करनी चाहिए।

श्वेत पानी को रोकने की विधि

नवयुग की जांच से अब पूरी तरह साबित हो चुका है कि इस श्वेत पानी की बीमारी को समूल नष्ट करने की सबसे बढ़िया विधि यह है कि बीमार स्त्री को केवल एक शीशी औषधि 'रोक' सेवन करा दी जाय। इस औषधि के सेवन से ठीक तीसरे दिन श्वेत पानी की बीमारी बिल्कुल ठीक हो जाती है। हजारों वैद्य, डाक्टर, हकीम इस औषधि को रोगियों पर सेवन कराके ख्याति प्राप्त कर रहे हैं। यदि आवश्यकता हो तो:—

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४, दिल्ली

के पते पर पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा औषधि 'रोक' की एक शीशी मंगा लीजिये। एक शीशी का मूल्य ३) तीन रुपया डाक व्यय ॥-) आना है। हर धर्म की स्त्रियां सेवन कर सकती हैं।

बांझ स्त्रियों के लिये

संतान पैदा करने का लासानी नुस्खा

मेरा ब्याह हुए १५ वर्ष हो चुके थे इस समय के बीच कई इलाज कराए मगर कोई फायदा न पहुंचा। [अचानक मैं अपनी सहेलियों के साथ तीर्थ यात्रा करने श्री बद्रीनारायण जी चली गई। सौभाग्यवश वहां मुझे एक ऐसे जटाधारी त्यागी महापुरुष महात्मा जी के दर्शन हुए जो सचमुच ही ईश्वर का अवतार दिखाई देते थे। मैंने उनके चरणों का स्पर्श करके अपनी तमाम दुःखभरी कहानी सुनाई। महात्मा जी ने खुश होकर मुझे एक औषधि तन्त्र दिया और आशीर्वाद देकर कहा बेटी, चिन्ता मत करो ईश्वर तुम्हारे हृदय की अभिलाषा पूर्ण करेगा। मैंने घर आकर उस औषधि को तैयार किया और महात्मा जी के कथनानुसार अनुपान किया। ईश्वर की कृपा से मुझे आशा की झलक दिखाई दी और नौ मास के पश्चात जीता-जागता बालक गोद में खेलने लगा। इसके पश्चात मैंने जिस सन्तानहीन बहन को निम्न लिखित औषधि का सेवन कराया, ईश्वर की कृपा से उसी की आशा पूर्ण हुई। महात्मा जी ने औषधि देते समय मुझसे वचन लिया था कि, बेटी, इस दवा से औरों का उपकार करती रहना। महात्मा जी के कथनानुसार मैंने इस औषधि तन्त्र को सूचीपत्र द्वारा प्रकाशित कर दिया है जिस से और बहिनें इस औषधि को तैयार करके लाभ उठा सकें।

औषधि तन्त्र ये है—असली नैपाली कस्तूरी (जिस पर नेपाल गवर्नमेंट की मोहर हो) केसर, जायफल, सुपारीदक्खिनी हर एक साढ़े दस मासे, पुराना गुड़ (जो कम-से-कम दस साल का हो) तेरह मासे, लौंग चार अदद, कटियारी सफेद की जड़ (सत्यानाशी सफेद की जड़) सवा तोला, इन सब औषधियों को खरल में डाल कर २४ घण्टे तक खरल करें और पानी इतना मिलावें कि गोलियां बन सकें, फिर जंगली बेर के बराबर गोलियां बना लें। इस के सेवन से गुप्त खराबियां दूर हो जाती हैं और बहनें इस लायक हो जाती हैं कि सन्तान पैदा कर सकें।

रीति—गाय के थोड़े गर्म दूध में मीठा डाल कर प्रातःकाल और सायंकाल एक-एक गोली तीन रोज तक सेवन करें। ईश्वर की कृपा से कुछ रोज में ही आशा की झलक दिखाई देने लगेगी।

नोट—औषधि तन्त्र के अन्दर सफेद फूल वाली सत्यानाशी की जड़ मिलानी आवश्यक है, क्योंकि इसके अन्दर सन्तान पैदा करने के अधिक गुण हैं।

इसके विषय में श्रीमान राधेश्याम जी हापुड़ से लिखते हैं—मेरी समझ में नहीं आता कि आपकी सन्तान पैदा करने वाली औषधि की मैं किन अक्षरों में प्रशंसा करूं। मैं आपको हर्ष के साथ सूचित करता हूं कि आपकी औषधि से मेरी स्त्री को १६ वर्ष के पश्चात बालक की प्राप्ति हुई। मेरा आशीर्वाद है कि आप दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति करती रहें। सरदार हरदन्तसिंह भटिन्डे से सूचित करते हैं कि आपकी सन्तान पैदा करने वाली औषधि एक अद्भुत जादू है। मैं इसकी जितनी प्रशंसा करूं कम है। मैं नहीं जानता था कि आपकी औषधि में इतने गुण भरे हुए हैं। हमारे शहर में आपकी औषधि की घर घर प्रशंसा हो रही है। अब तक करीब-करीब बीस से ज्यादा बहिनें गर्भवती हो चुकी हैं। कृपया तीन दर्जन शीशी वी० पी० से भेज दें। धन्यवाद।

इसके सिवाय अनिगिनत प्रशंसा-पत्र मेरे पास मौजूद हैं अगर कोई देखना चाहे तो मेरे पास आकर देख सकते हैं।

मेरी सन्तान-हीन बहिनो,

आप इसे बेगुण औषधि न समझें। अगर इसको असली चीजें और बताए हुए औषधि तन्त्र की रीति से तैयार कर लें तो कोई वजह नहीं कि इससे बीस और पच्चीस वर्ष से बैठी हुई सन्तान-हीन बहिनों की गोद में बच्चे खेलते नजर ना आवें। अगर कोई बहिन इस औषधि को मेरे हाथों से ही बनवाना चाहें वो मुझे लिख दें। मैं उनको अपने हाथ से ही दवा तैयार करके भेज दूंगी।

मैं अपने धर्म से सच कहती हूं कि मैं किसी बहिन से औषधि की असली लागत से एक पाई भी ज्यादा न लूंगी। जिस बहिन को मेरे ऊपर विश्वास न हो वो बहन मुझे दवा तैयार करने के लिए कदापि न लिखें। एक बहन की औषधि पर पांच रुपये बारह आने, दो बहिनों की औषधि पर नौ रुपये आठ आने, तीन बहिनों की औषधि पर तेरह रुपये चार आने लागत खर्च आते हैं और महसूल डाक इन से अलग।

जरूरी नोट—एक बहिन की चौबीस घण्टे दवा पिसवाने पर मेरे २) रुपए लगते हैं और दो और तीन के लिए दवा पिसवाने पर भी दो रुपये खर्च होते हैं। इस लिए अगर दो तीन बहिनें मिलकर दवा तैयार करा लेंगी तो वो फायदे में रहेंगी। पता:—श्रीमती रतनबाई जैन सदर बाजार थाना रोड, देहली।

मशहूर अनुभूत इलाज

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

आज से ही शुरु कीजिए, सर्वत्र मिलता है।

जीर्णज्वर, शरीर के अन्दर, बाहर या इकेली त्वचा और आंखों की असह्य जलन, मूत्रमार्ग में आग सी जलन, भोजन के बाद पेट में जलन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कठिन अपच, नियमित कोष्ठबद्धता, रक्तविकार, अशक्ति, नियमित शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं शिथिलता.

इन शिकायतों पर यह बहुत काल से परीक्षित, बड़ी बूटियों के योग से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढा बालक वृद्ध, पुरुष सभी के लिये लाभदायक है तथा इस सीमा तक हानिरहित है कि कोमलांगी स्त्रियों को गर्भावस्था के समय निस्संकोच सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके फौरन, पाचक और शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

पर्ल कम्पनी
औ र्यो ष धी
का र खा ना
बम्बई २

एजेन्ट चाहिए, शर्तों के लिए लिखिये।

रजि० नं० एल० ४६००

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरद्वार

के

अमूल्य उपहार

शीत ऋतु में अपूर्व गुणदायक

च्यवनप्राश हाईपो

च्यवनप्राश में कैलशियम व सोडियम आदि नवीन रासायनिक पदार्थ डाल कर यह योग तैयार किया गया है। खांसी, क्षय, निर्बलता व दमा आदि में रामबाण है और शरीर वृद्धि के लिए उत्तम रसायन है। मूल्य ३।) पाव

च्यवनप्राश

स्वादिष्ट, बलवर्य वर्धक रसायन है। शरीर के प्रत्येक अंग को बल देता है। दिल, दिमाग व फेफड़ों की निर्बलता, पुरानी खांसी दमा व नजला आदि में लाभ प्रद है।
मूल्य १॥=) पाव ६॥) सेर

बादामपाक

बादाम, पिस्ता व अन्य गुणदायक वस्तुओं से तैयार किया गया है। स्वादिष्ट बल वर्धक पाक है। मस्तिष्क व शारीरिक निर्बलता को दूर कर शक्ति देता है। मूल्य ४) पाव

सत शिलाजीत

इसके सेवन से सब प्रकार का प्रमेह, स्वप्नदोष धातुक्षीणता, कमर दर्द, दर्द गुर्दा, जिगर की कमजोरी आदि रोग दूर होजाते हैं और शरीर में नई ताकत आजाती है।
मूल्य ॥-) तोला, ३।) छटांक

चन्द्रप्रभावटी

यह औषधि अनेक रोगों को दूर करके शरीर में नई शक्ति लाती है। खून की कमी, जिगर की कमजोरी, बवासीर प्रमेह व स्वप्न दोष आदि रोगों में अक्सीर है। मूल्य १) तोला, ४ छटांक

गुरुकुल चाय

जड़ी-बूटियों के योग से बनी देशी चाय। सुख व स्वास्थ्य के लिए परिवार में इसका प्रयोग कीजिए। मूल्य १=) पाव नमूना ।-)

सिद्ध मकरध्वज

स्वर्ण कस्तूरी आदि बहुमूल्य वस्तुओं से तैयार किया गया है। सब प्रकार की निर्बलता को दूर करके शरीर में शक्ति व स्फूर्ति देता है।
मूल्य ३॥।) माशा ४५) तोला

बंसत कुसुमाकर

सोना; चांदी, मोती आदि से तैयार की गयी यह औषधि बहुमूत्र और मधुमेह रोग में विशेष गुणकारी है। शरीर की नसों की कमजोरियों को हटा कर समर्थ और बलवान बनाता है।
मूल्य ३) माशा, ३६) तोला

सुपारीपाक

स्त्रियों के प्रदर (ल्यूकोरिया) रोग की प्रसिद्ध औषधि है। कुछ दिनों में ही निर्बलता को दूर करके स्वास्थ्य व स्फूर्ति पैदा करती है।
मूल्य २॥) पाव

महालोहादिरसायन

इसके सेवन से शरीर में नथा खून पैदा होता है प्रत्येक ऋतु में सेवन करने योग्य उत्तम औषधि हैं। मूल्य ६) तोला

महालक्ष्मीविलास रस

सिर दर्द, खांसी जुकाम आदि रोगों में अत्युत्तम है। शारीरिक निर्बलता को दूर करता है।
मूल्य १) माशा १२) तोला

मुक्तादिकल्प

दिल की कमजोरी को दूर कर ताकत देता है और खून को बढाता है।
मूल्य १॥।) माशा २१ तोला

अनुभूत औषधियाँ

भीमसेनी सुरमा

सारे देश में प्रसिद्ध 'भीमसेनी सुरमा' गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी का ही अविष्कार है। मोतियों और भीमसेनी कर्पूर आदि बहुमूल्य औषधियों के योग से यह सुरमा तैयार होता है। पुराने मोतियाबिन्द के सिवाय आंखों का कोई रोग ऐसा नहीं है जो कि इसके सेवन से अच्छा न होजाये। आंखों से पानी बहना, कुकरे, नजला, कमजोरी आदि आंखों की तमाम बीमारियों के लिए निहायत मुफीद है।
मूल्य १।) शीशी, नमूना ॥=)

पायोकिल

पायोरिया की अक्सीर दवा है। दांतों के अन्य रोगों को दूर करता है व प्रति दिन प्रयोग के लिए उत्तम मंजन है। मूल्य १॥) शीशी

द्राक्षासव

स्वादिष्ट, सुमधुर, टानिक है। शारीरिक व मानसिक थकावट को दूर कर ताजगी व ताकत देता है। पुरानी खांसी, कब्ज, भूख न लगना आदि रोगों में विशेष भाभदायक है।
मूल्य १।) पाव, २।) पौंड

भीमसेनी मरहम

फोड़ा फुन्सी घाव व जलन के लिए अचूक है। हर तरह के घाव पर लगाने के लिए व भरने में सर्वोत्तम है। मूल्य ॥।) शीशी, नमूना ।=)

भीमसेनी दन्तमंजन

दांतों में कीड़ा लगना हिलना, मुंह से दुर्गन्ध आना आदि सब रोगों में रामबाण है।
मूल्य १।) शीशी

पामाहर

इसके लगाने से खुजली व चम्बल को फौरन आराम हो जाता है। मूल्य ।=) शीशी

कुछ विशेषताएं—

(१) हमारे यहाँ आयुर्वेदिक औषधियां शास्त्रोक्त विधिपूर्वक ताजा जड़ी बूटियों से विशेष सावधानी से तैयार की जाती हैं। अतः विशेष गुणकारी हैं।
(२) औषधियों के बिक्री से जो थोड़ा बहुत लाभ होता है, उसे आयुर्वेद कालेज में जनता के बच्चों को मुफ्त शिक्षा देने में खर्च किया जाता है।
(३) हमारे यहां सब प्रकार के रोगों का इलाज पत्र द्वारा किया जाता है। फीस नहीं ली जाती। उत्तर के लिये जवाबी पत्र लिखें।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी (हरद्वार)

एजेन्सियां—

देहली प्रान्त के सोल एजेंट–रमेश एंड को० चांदनीचौक, मोतीबाजार के सामने, देहली।
आगरा कमिश्नरी के सोल एजेंट–राजकुमार एंड को० रावतपाड़ा, आगरा।
राजपूताना के सोल एजेंट–नवज्योति जनरल स्टोर बड़े डाकखाने के सामने, अजमेर।
हरियाना प्रदेश के सोल एजेंट–आर्य वस्तु भण्डार, रेलवे रोड़, रोहतक।
रुहेलखंड के सोल एजेंट–प्रभात आयुर्वेदिक फार्मेसी, टाउनहाल बरेली।
मेरठ–वैद्य धर्मप्रकाशजी सिपट बाजार।
मुरादाबाद–अलकार चिकित्सालय, अमरोहा गेट।
मुजफ्फरनगर–चैतन्य औषधालय. नई मंडी।

श्री पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्री सदानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिये 'अर्जुन प्रेस' सदानन्द बाजार देहली से छाप कर प्रकाशित किया।

CCO. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वीर अर्जुन

साप्ताहिक

ILLUSTRATED VIR ARJUN WEEKLY

वर्ष १२] दिल्ली, सोमवार २४ मार्गशीर्ष सम्वत् २००३, DELHI, 9th December 1946. [अङ्क ३६]

पं० जवाहरलाल नेहरू — सरदार बलदेवसिंह

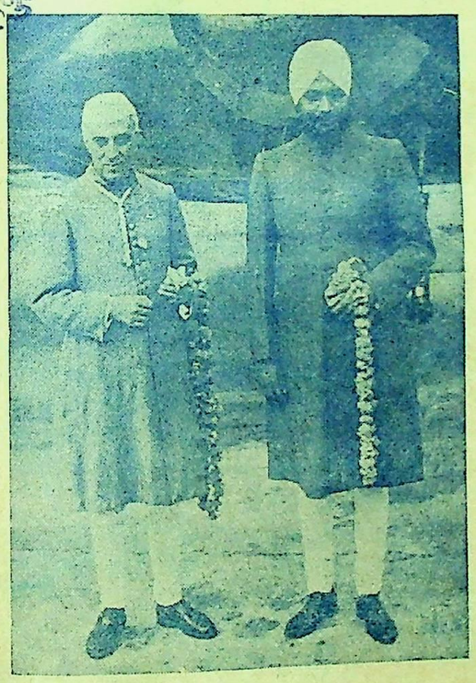

मुझे बुलाया गया है, और मैं आ गया हूं। — मैं तो नेहरू जी के साथ हूं

लार्ड वेवल

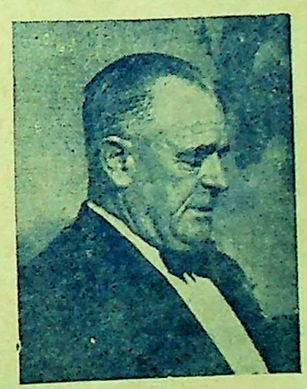

मैं बहुत थका हुआ हूं और परेशान हूं।

श्री एटली

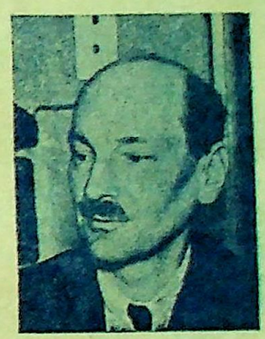

मैं भी सोच कर बताऊंगा

जिन्ना

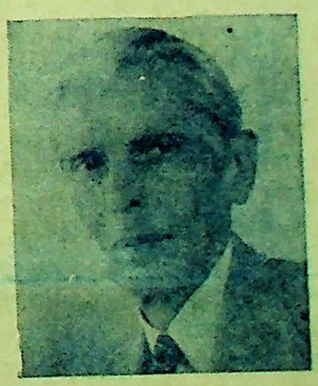

मैं अपने पाकिस्तानी मिशन पर आया हूं।

सम्पादक—
रामगोपाल विद्यालङ्कार
कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार

वार्षिक मूल्य ८)
छः मास का ४)
एक प्रति का मूल्य ≡)

पञ्जाब युनिवर्सिटी द्वारा नियत
हिन्दीरत्न, भूषण तथा प्रभाकर
हिन्दी परीक्षाओं की
पाठ्य पुस्तकें
तथा
सर्वोत्तम सहायक पुस्तकों
के लिये
स्मरण रखिये
सूचीपत्र मुफ़्त

पाल एण्ड कम्पनी
हस्पताल रोड, अनारकली, लाहौर।
प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता

अपनी
मानसिक, आध्यात्मिक
और नैतिक उन्नति के लिये
वर्तमानयुग के महापुरुषों की पुस्तकें
हम से मंगवा कर पढ़िये
जिन में उनके
जीवन और अनुभूतियों की बात है।
हमारी शो रूम
आप की रुचि तथा प्रकृति की
सन्तुष्टि करेगा और
आपका पथ-प्रदर्शक
सिद्ध होगा।

आधी दुनिया

करफ्यू आर्डर सदा के लिये लग जावे ?

[अर्धनारीश्वर]

'करफ्यू आर्डर परमात्मा करे, सदा के लिए लग जावे।'

'क्यों, इससे क्या लाभ है ?'

'लाभ क्यों नहीं' एक तीसरी सहेली ने जरा रस लेते हुए कहा—'लाभ तो बहुत हैं। यही देखो न, अब इनके घर ठीक समय रसोई बनने लगी है।'

'पहले क्यों नहीं बनती थी ?' अनजान बनते हुए दूसरी ने पूछा।

'वे आवें भी तो ? वे आते ही रात को नौ दस बजे थे।' पहली ने थोड़ा-सा अपनी खीज प्रकट करते हुए कहा।

यह बात हो रही थी एक बाबूजी के घर में, जो नई दिल्ली के दफ्तर से हमेशा देर में घर आते थे। उन्हें अपने घर आते-आते ८-९ बज जाते थे और इसके बाद रसोई बनती थी।

थोड़ी देर ठहर कर वह बोली—'मैं तो कहते-कहते हार गई, लेकिन वे सुनते ही नहीं थे। न जाने उन्हें घर से बाहर रहने में क्या मजा आता है।'

'ऐसा न कहो, आखिर दफ्तर के काम होते होंगे ?'

'सारा काम उन्हीं के सिर पर कैसे ? तुम लोगों के घर में तो ४-५ बजे तक सब आ जाते हैं। क्या उन्हें काम नहीं होता ?'

'अपना-अपना काम है, किसी को ज्यादा, किसी को कम। हमारे यहां से जाते भी १० बजे हैं।' दूसरी ने उन्हें समझाते हुए कहा।

'अजी रहने दो; कुछ आदमियों की आदत ही ऐसी होती है। वे दफ्तर से चलते है, तो रास्ते में दस जगह ठहरते हैं। मैं अपने घर की ही बात कहती हूं। जब उनसे कहो, तब कभी किसी मित्र का नाम ले लेते हैं, तो कभी किसी दूसरे मित्र का। ऐसा भी होता है कि कभी दोस्तों के साथ सिनेमा चले गये, तो रात को १० बजे घर आये।' एक चौथी महिला ने पहली का समर्थन करते हुए कहा।

'हां; कभी-कभी तो मैं भी परेशान हो जाती हूं। यहां रसोई ठण्डी हुई जाती है और वे दोस्तों में गपशप मार रहे होते हैं।' तीसरी कुछ-कुछ खुल रही थी।

'मैं तो उस दिन बड़ी प्रसन्न हुई, जब सरकार ने ६ बजे का करफ्यू आर्डर निकाल दिया था। ये करफ्यू के दिन बड़े आराम से बीते।'

'अब भी तो करफ्यू है।'

'कहां, ९ बजे तक कर दिया है। इससे क्या लाभ ? हमें तो वही ६ बजे वाला करफ्यू चाहिए।'

'तो फिर' एक हंसोड़ स्त्री ने कहा 'एक महिला कांफ्रेंस करके प्रस्ताव पास करो, डेपुटेशन ले जावो और डिप्टी-कमिश्नर से कहो कि वह करफ्यू फिर से लगा देवे।'

'ऐसे ही कैसे कर देगा ? यह भी कोई मजाक है। दंगा फिसाद होने पर करफ्यू लगाया जाता है और तुम दंगा फसाद करने से रहीं।'

'पर सवाल तो यह है कि न जाने क्यों लोग इतनी देर से घर आते हैं ? उन्हें क्या मालूम कि घर में उनकी कितनी इन्तजार हो रही होती है।' एक नवोढा ने कुछ दबी हुई आवाज से कहा। उसके हाथों में लाख की शादी वाली चूड़ियां अभी तक पड़ी हुई थीं। वह शायद कुछ और भी कहना चाहती थी लेकिन साथी स्त्रियों को हंसते देखकर झेंप गई।

'हां, देखो, अभी शादी हुई है, पत्नी उनके आने की इन्तजार में आंखें बिछाये रहती है और एक आदमी हैं कि उन्हें घर की फिक्र ही नहीं।'

'अजी, आदमी क्या जानें, बिचारी लड़की को अपने माता पिता, भाई बहन के घर से ले आते हैं अनजाने घर में, जहां उसका कोई परिचित सगा सम्बन्धी नहीं होता। वह आती है अपने पति के प्रेम के भरोसे, लेकिन पति हैं कि उन्हें अपने दोस्तों से ही फुरसत नहीं। उन्हें क्या मालूम कि पत्नी किस तरह उनकी इन्तजार में —

'तो क्या विवाह का अर्थ यही है कि वह स्त्री के लहंगे में सदा छिपा रहे। उसका काम तो रोजी कमाना है। वह बाहर जाकर कमावे नहीं, तो घर के खर्च और नई बहू की नित नई फारमाइशों कहां से पूरी करे। उसका तो काम ही —

'अरे काम से कौन रोकता है, सवाल तो यह है कि आदमी ठीक समय पर नहीं लौटते। वे दफ्तर के बाद गपशप मारने के लिए, चाट खाने के लिए और सिनेमा देखने के लिए क्यों रुकते हैं ? उनका कर्तव्य है कि मनोरंजन के लिए उन्हें अपने घर आवें और अपने सुख व मौज में पत्नी को साथी बनावें। पत्नी उनकी नौकरानी नहीं है कि वह रसोईघर में बैठे ५-५ घंटे बिता दे। घर में छोटा बच्चा हो तो रसोई बनाने में जो कठिनाई होती है, वह आदमी क्या जानें। क्या उनका यह कर्तव्य नहीं है कि वे अपनी पत्नी के सुख दुःख में तथा घर के कामकाज में हाथ बटावें।'

'लेकिन यदि आदमी अपना कर्तव्य न समझे, तो क्या किया जाय ? कफ्यू आर्डर तो सदा के लिए लग नहीं सकता। इससे तो लोगों को परेशानियां होती है।'

'इलाज तो सिर्फ यह है कि आदमी को अपने वश में रखा जाय, उसे मालूम हो कि घर में उसका कोई प्रेम से इन्तजार कर रहा है। आदमी दूसरी जगह तभी जाता है, जब उसे घर में विशेष खिंचाव नहीं रहता। आदमी को मालूम होना चाहिए कि घर में जाते ही उसकी थकान दूर हो जायगी।' वह शायद आगे भी कहती, लेकिन एक बालक ने आकर बताया कि बाबूजी आ गये है। वह चली गई, लेकिन बातचीत चलती रही।

'अरे भई, घर की दूध रोटी की बजाय आलू की टिकिया या होटल की पेस्ट्री केक में मजा ज्यादा मिलता है। सिनेमा का मजा भी घर में कहां मिलेगा ?'

'लेकिन क्या स्त्री का कोई अधिकार नहीं। वह घर में अकेली क्यों बैठी रहे। मैं तो कहती हूं कि यदि स्त्रियां दो-चार दिन तक हड़ताल कर दें, तो आदमियों को अक्ल आ जाय। देर से आवें तो घर का दरवाजा भी खोलना नहीं चाहिए। वे क्यों नहीं हमारी जरूरतों व इच्छाओं को समझने की कोशिश करते ?

बातें चल रही थीं कि उस घर वाले आदमी आ गये और सब स्त्रियां अपने-अपने घर चली गईं। ×

× अपनी पत्नी द्वारा सुनाई गई रिपोर्ट के आधार पर।

पं० नेहरू व स० बल्देवसिंह को विदा करने के लिए विलिंगटन हवाई अड्डे पर उपस्थित भारतीय महिलाएं

स्त्रियों को पृथक् निवास का अधिकार

जयपुर धारासभा के सदस्य श्री केशरचन्द कासलीवाल एम० ए०, एल० एल० बी० ने धारासभा के आगामी अधिवेशन में 'हिन्दू स्त्री पृथक निवास और परवरिश बिल १९४६' और 'हिन्दू स्त्री का सम्पत्ति में अधिकार बिल १९४६' पेश किये जाने की सूचना दी है। इस बिल के अनुसार विशेष परिस्थितियों में विवाहित हिन्दू स्त्री को अलग रहने और परवरिश के लिए उचित भत्ता प्राप्त करने का अधिकार होगा। दूसरे बिल में हिन्दू स्त्री को सम्पत्ति में अधिकार दिया गया है।

पृथक निवास के लिए निम्न कारणों को आधार माना जायगा:—

१. यदि पति ऐसी घृणित बीमारियों से पीड़ित हो जो पत्नी द्वारा नहीं हुई हों।

२. यदि पति इतना क्रूर हो कि उसके साथ रहने में पत्नी अरक्षित हो।

३. यदि पति पत्नी की इच्छा के बिना भाग जाय या उसकी इच्छा विरुद्ध भाग जाय।

४. यदि पति दूसरी शादी करले।

५. यदि पति वेश्या रखता हो या या आदतन वेश्या के साथ रहता हो।

इस बिल के द्वारा उस विवाहित हिन्दू स्त्री को अपने पति से पृथक रहने और जीवन-खर्च लेने का अधिकार नहीं होगा जो सच्चरित्र न हो और धर्म परिवर्तन करके हिन्दू न रहें।

आठ बच्चों में एक गैरकानूनी

इगलैंड में नैतिक उत्थान संबंधी कार्य पर एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। उसके अनुसार इग्लैंड को आज के नैतिक पतन पर चार चार आंसू बहाने पड़ते हैं। रिपोर्ट से विदित होता है कि इगलैंड और वेल्स में प्रत्येक वर्ष करीब-करीब १ लाख स्त्रियां घर के बाहर गर्भवती होती हैं। जितने बच्चे वहां उत्पन्न होते हैं, उनमें से कम से कम हर आठ बच्चों में एक बच्चा गैरकानूनी ठहराया जा सकता है और वहां बीस वर्ष से पूर्व जितनी महिलायें शादी करती है, उनमें से कम से कम ४० प्रतिशत पहले से ही अपने विवाह के दिन गर्भवती होती हैं। —रामकुमार अग्रवाल

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

समाचार-चित्रावली

श्री राजेन्द्र बाबू का ६३वीं जयन्ती पर दिल्ली में अभिनन्दन।

श्री श्यामाप्रसाद मुकर्जी — हिन्दू महासभा के पुनः सभापति चुने गये हैं।

जनरल फ्रैंको के शासन के विरुद्ध आन्दोलन पुनः प्रारम्भ हो गया।

राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी महिलाओं की सभा में भाषण दे रहे हैं।

श्री चांगकाईशेक ने चीन की राजनीति से सन्यास लेने का विचार प्रकट किया है।

विदर्भ-केसरी श्री ब्रजलाल बियाणी की स्वर्ण-जयन्ती मनाई गई।

सरदार स्वर्णसिंह ने लीग को धमकी दी है कि बहादुर खालसाओं को पंजाब छोड़ने को कौन कह सकता है।

लोकवाणी

सरदार पटेल की गर्जना

विधान-परिषद होकर रहेगी

चाहे आसमान टूट पड़े और जमीन धंस जाय, परन्तु विधान परिषद की बैठक ९ दिसम्बर को, जैसा कि निश्चित किया जा चुका है, अवश्य होगी। परिणाम इसका चाहे कुछ भी हो। चाहे उक्त निश्चित तारीख तक लन्दन सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिनिधि वापिस आयें या न आयें, परन्तु परिषद का कार्य निश्चित तिथि को अवश्य ही प्रारम्भ होगा।

आत्मरक्षा हिंसा से भी

यदि गुण्डे हमला करें तो तुम्हें भागना नहीं चाहिये। अपनी आत्म रक्षा के लिये शिक्षण लो तथा सहायता के लिए पुलिस का मुंह मत ताको। गुंडों का सामना यदि आप कर सकते हैं तो महात्मा गांधीजी की अहिंसा से करें और यदि इसके लिए आवश्यकता पड़े तो हिंसा का भी सहारा लें।

हमलों से अपनी रक्षा करो। भारत में प्रत्येक व्यक्ति को पुलिसमैन बनना। हमें अपनी तथा अपने पड़ोसियों की रक्षा करना सीखना चाहिये। यदि आप अहिंसा नहीं अपना सकते तो सभी प्रकार से आप हिंसा का उपयोग कर सकते हैं, परन्तु कायर होकर मत भागो, मैं कायर से घृणा करता हूं।

लीग द्वारा रक्तपात

जिन्ना ने पाकिस्तान की मांग को पुनः दुहराकर बताया कि वे हिंसा, खून खराबी, तथा तलवार के बल पर ही पाकिस्तान लेंगे। परन्तु यह एक गलत रास्ता था। पाकिस्तान हिंदुओं के ही लिए नहीं बल्कि मुसलमानों के लिए भी अहितकर है। लीग ने १६ अगस्त का दिन 'सीधी कार्यवाई' के लिये निश्चित किया। बंगाल में लीगी सरकार होने के कारण उस दिन छुट्टी कर दी गई। बस इसके बाद ही कलकत्ते में उपद्रव, अग्निकांड व लूट-मार शुरू हो गए।

जब हमने सन ४२ में 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पास किया था तो इसके लिए हमारे पास कोई योजना नहीं थी। हम वायसराय से बातचीत करने के पश्चात ही इसके लिए कोई योजना बनाते। परन्तु हमें तुरन्त ही जेलों में ठूंस दिया गया, परन्तु लीग ने बंगाल में जो अपना प्रस्ताव कार्यान्वित किया है उसके लिये उन्हें कौन गिरफ्तार कर सकता है। वहां उसकी सरकार है?

हम श्री जिन्ना की हां में हां, उनको राजी करने के लिए नहीं मिला सकते। यदि हम ऐसा करते हैं तो भारत की स्वतन्त्रता उनकी इच्छा तथा खुशी पर आधारित होगी। हम यह कह चुके हैं कि यदि लीग विधान परिषद में भाग नहीं लेती तो अन्तःकालीन सरकार के लीगी सदस्यों को अपने पद छोड़ देने चाहियें। लीग लन्दन-वार्ता से अपना मतलब सिद्ध करना चाहती है। कांग्रेस ने ब्रिटिश सरकार के आश्वासनों पर ही लन्दन सम्मेलन में भाग लेना स्वीकार किया है। परन्तु मैं यह बता देना चाहता हूं कि चाहे मियां जिन्ना वापिस आयें या लन्दन ही रहना पसन्द करें, विधान परिषद की बैठक अपनी निश्चित तारीख के अनुसार ही प्रारम्भ होगी।

हमारी नई सरकार

हम सीधे और स्पष्ट व्यवहार में विश्वास रखते हैं। हम जनता की सेवा के लिए सरकार में सम्मिलित हैं। यदि लीग आज हट जाती है तो हम सरकार चलायेंगे। कांग्रेस उस सत्ता को नहीं छोड़ेगी जो उसे सौंपी गई है। मियां जिन्ना कहते हैं कि मौजूदा सरकार सन १९३९ के एक्ट के अनुसार बनी है, परन्तु ब्रिटिश सरकार ने स्वयं घोषणा की है कि भारत की मौजूदा सरकार औपनिवेशिक सरकार की हैसियत में होगी। हमारी सरकार कनाडा और आस्ट्रेलिया की भांति भारत की स्वतन्त्र सरकार के रूप में कार्य करेगी। हम विश्व के राष्ट्रों के साथ कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित करना चाहते है।

लीगी नेता हिंसा और तलवार के बूते पाकिस्तान की बात न करे। यदि लीग चाहे तो हमें युक्तियों से संतुष्ट करके ऐसा कर सकती है। ब्रिटिश-सरकार भारत से जाने की घोषणा कर चुकी है अतः लीग को उनसे पाकिस्तान नहीं मिलेगा, पाकिस्तान तो हम से ही मिल सकता है।

अव्यावहारिक मांग

हाल ही में आबादियों के परिवर्तन की नई पुकार उठी है। सिद्धान्ततः यह पुकार युक्तिसंगत लग सकती है, किन्तु क्या यह किसी प्रकार व्यवहार्य है? क्या सीमाप्रान्त का मुसलमान सिर्फ इसलिये कि वह मुसलमान है, मद्रास के मुसलमान के साथ सुखपूर्वक रह सकता है? पाकिस्तान की मांग पर चाहे जितना धार्मिक रंग चढ़ाया जाय, किन्तु उसका अन्तर्हित उद्देश्य राजनैतिक ही है। ऐसा न होता तो लीग दो केन्द्रों की मांग कभी नहीं करती। पाकिस्तान हो या न हो, हमें भाई-भाई की तरह हिन्दुस्तान में इकट्ठे रहना ही पड़ेगा।

— अली जहीर

राजनीतिज्ञता का दिवाला

आबादी के विनिमय का प्रश्न अविचारणीय और अव्यावहारिक है। यह प्रश्न तो मेरे दिमाग में कभी नहीं आया। प्रत्येक प्रान्त में प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह हिन्दू हो, मुस्लिम हो अथवा अन्य किसी मत का मानने वाला भारतीय हो। पाकिस्तान के पूरी तरह अमल में आने से भी यह चीज नहीं बदल सकती। मेरे लिए तो कोई भी ऐसी चीज भारतीय बुद्धिमत्ता और राजनीतिज्ञता अथवा दोनों का दिवाला निकाल देगी। इस प्रकार के भेदभाव के बारे में कल्पना करना भी भयानक है। इसका अर्थ तो यह है कि हिन्दुस्तान को अनेक धार्मिक क्षेत्रों में नकली ढंग से बांट दिया जाय।

— म० गांधी

सहयोग और सहिष्णुता

हिन्दुस्तानियों को यह निश्चय कर लेना चाहिये कि उन्हें कैसी भी समस्याओं का सामना करना पड़े, उन समस्याओं के हल के लिए उनके उपाय शान्तिपूर्ण और सहयोग की भावना वाले ही होने चाहिएं, फिर चाहे उनमें परस्पर कितना ही मतभेद हो। हमें हिंसापूर्ण उपायों के लिए प्रोत्साहन देना छोड़कर अपना कार्य सहयोग और सहिष्णुता की भावना से करना चाहिए।

— जवाहरलाल

खाद्य तत्वों की कमी

हमारे भारत देश में खुराक की कमी बहुत अधिक है। नेशनल रिसर्च कौंसिल ने बताया है कि प्रत्येक भारतीय को औसत ३००० कैलोरी की आवश्यकता है, जब कि उसे केवल १७५० कैलोरी भोजन प्राप्त होता है। विटामिन के सम्बन्ध में स्थिति और भी खराब है। नेशनल रिसर्च कौंसिल का अनुमान है कि विटामिन के ५००० यूनिट आवश्यक हैं, जब कि औसतन भारतीयों को चावल की खूराक पर ५०० यूनिट प्राप्त होते हैं। लेकिन मेरा विचार है कि १० वर्षों में भोजन की यह कमी दूर हो जायगी।'

— हु० भाभा

स्वतन्त्रता ओझल न हो

यदि बगाल की परिस्थिति शांत होकर अपनी वास्तविक हालत में नहीं आ जायगी तो निश्चय ही हमारी स्वतन्त्रा प्राप्ति का ध्येय पृष्ठभूमि में चला जायगा। प्रांत में फैली हुई बुरी भावनाओं और प्रभावों का मुकाबला करने के लिये हमें संयुक्त स्वयंसेवकों का दल तैयार करना चाहिये। और उसका कर्तव्य होगा कि जहां कहीं भी दंगा हो उसे शांत करे। हमें पता चल गया है कि यूनियन बोर्ड के अध्यक्षों मे से कुछ ने कुछ घटनाओं में नोआखली जिले में खुद अल्पमतों पर आक्रमण करने के लिये संगठित किया था। हमें प्रसनन्ता है कि अगरतल्ला में दोनों जातियों का मेल रहा।

— शरतचन्द्र बोस

मेरी अहिंसा कसौटी पर

निश्चय ही मैं श्रीरामपुर में ही नहीं बैठा रहूंगा। मैं यहां शांत बैठा हूं। यहां मैं आसपास के तथा अन्य लोगों से मिल रहा हूं, बातों का अध्ययन कर रहा हूं एवं बीच अपना स्वास्थ्य सुधार रहा हूं। मेरा अन्तिम ध्येय यह है कि जब सम्भव होगा, आवश्यकतानुसार गांव की पैदल यात्रा करूंगा एवं, को वापस आने के लिये राजी करूं। ऐसी बात तभी कर सकता हूं कुछ मैं जानता हूं उससे अधिक देखूं। मुझे यह स्पष्ट हो गया है केवल मेरे शब्द ही बहुत कम प्रभाव डालते हैं, अविश्वास ने इतनी गहरी जमा ली है कि उपदेश निरर्थक हो जाता है।

बाहरी परिस्थितियों ने मेरे ऊपर कभी प्रभाव नहीं डाला। वर्तमान अन्धकार के कारण आन्तरिक हैं। मैं देखता हूं कि मेरी अहिंसा हिन्दू-मुस्लिम मामले के सम्बन्ध में अभी कोई सुझाव नहीं देती, यह बात तब मुझे जोरों से खटकी जब मैंने नोआखाली की दुर्घटनाओं को जाना। बलात् धर्म परिवर्तन और अपनी बंगाली बहनों के उत्पीड़न से मैं बहुत मर्माहत हुआ हूं। मैं इस सम्बन्ध में कलम या भाषण द्वारा कुछ नहीं कह सकता। मैंने मन ही मन विचारा कि मैं अवश्य ही घटनास्थल पर जाऊं और सिद्धान्तों का परीक्षण करूं जिनके आधार पर जीवित हूं एवं जिन्होंने मेरे जीवन को जीवित रहने योग्य बनाया है। मेरी आलोचना करने वालों के अनुसार अहिंसा निर्बलों का अस्त्र है या सबलों का यह प्रश्न मेरे मन में तब उठा जब मेरी उस मानसिक व्यथा का कोई हल न निकला जो नोआखली दुर्घटना से हुई थी। फलतः मैं अपने सभी कार्यों को छोड़ कर परीक्षा के लिये यहां आ गया।

मैं इस बात को भली भांति जानता हूं कि अहिंसा एक पूर्ण औजार है। यदि मेरे हाथों में पड़ कर वह अपना काम नहीं करती तो कमी मुझ में है। मेरी प्रयोग प्रणाली गलत हो सकती है। मैं दूर से इस गलती का पता न लगा सका। अतः मैं यहां आया और इस सम्बन्ध में खोज करने में लगा हूं। फलतः जब तक मुझे प्रकाश नहीं मिलता मैं अन्धकार में हूं। इसे ईश्वर ही जानें कि वह प्रकाश कब आता है। इससे अधिक मैं कुछ नहीं कह सकता।

— म० गांधी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

'अर्जुन' के ग्राहकों से

'वीर अर्जुन' के ग्राहकों से निवेदन कि पत्रव्यवहार करते समय अथवा रुपया भेजते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखा करें, क्योंकि हजारों ग्राहकों की संख्या में उनका नाम ढूंढ़ना असम्भव है।

— प्रबन्धक

★ वीर ★

अर्जुन

कुतोऽस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार २४ मार्गशीर्ष सम्वत् २००३

विधान-परिषद् की समस्याएं

अब यह करीब-करीब निश्चित है कि पिछले सप्ताह लन्दन में जिस अभिनय का सूत्रपात किया गया था, वह भी असफल हो गया है। मुस्लिमलीग और ब्रिटिश सरकार को उसमें किसी प्रकार की सफलता नहीं मिली और विधान-परिषद में भाग लेने के लिए पं० नेहरू वहां पहले दिन ही पहुंच जावेंगे।

विधान-परिषद् का निर्माण किसी भी राष्ट्र के इतिहास में अत्यन्त महत्व-पूर्ण होता है। स्वातन्त्र्य या स्वराज्य के लिए विधानपरिषद् एक महत्वपूर्ण मंजिल है। इस परिषद् के निर्माण का ही यह अर्थ है कि उस देश को अपना विधान स्वयं निर्माण करने का पूर्ण अधिकार मिल गया। यह अधिकार किसी परतन्त्र राष्ट्र को अत्यन्त कठिन संघर्ष के बाद प्राप्त होता है और राष्ट्रीय भारत ने इस अधिकार को प्राप्त कर लिया है, यह अत्यन्त सौभाग्य की बात है। विधानपरिषद किसी राष्ट्र की सर्वाधिक शक्तिशाली संस्था होती है। वस्तुतः उसी के हाथ में राष्ट्र की समस्त शक्ति निहित होती है और उसे यह सत्ता राष्ट्र की समस्त जनता से प्राप्त करती है। इसका अर्थ यह है कि राष्ट्र का स्वामित्व जनता के पास आ गया है, भारत के प्रभु अब ब्रिटिश सम्राट नहीं रहे। यह महान् परिवर्तन है और इसी कारण विधानपरिषद का महत्व भारतीय इतिहास में बहुत अधिक है। इसे यथा-संभव शीघ्र प्रारम्भ करने के लिए हमारे राष्ट्रीय नेताओं क उत्सुकता का भी यही कारण है।

मुस्लिम लीग ने अभीतक इसके बहिष्कार का निर्णय किया हुआ है। लेकिन सम्भावना यह है कि वह बहिष्कार करने में सफल न होगी और अडगा लगाने या अपने हितों की रक्षा के नाम पर वह इसमें झख मार कर सम्मिलित होगी और इस तरह यह मालूम होगा कि लन्दन का अभिनय करने और इसमें हजारों रु० व्यय करने की कोई आवश्यकता भी न थी। अस्तु —

मुस्लिमलीग के सदस्य मि० जिन्ना और उनके साथी ब्रिटिश राजनीतिज्ञों के संकेत से विधान-परिषद् के कार्य में कितनी भी बाधाएं डालें, विधानपरिषद् के शेष राष्ट्रीय सदस्यों को शान्ति और दृढ़ चित्तता के साथ अपने सामने आने वाली समस्याओं पर विचार कर अपनी नीति निश्चित करनी चाहिए। विधान-परिषद् के सामने आज जो मुख्य समस्यायें हैं, वे निम्नलिखित हैं—

पूर्ण स्वतन्त्र सत्ता—भारतवर्ष की सर्व प्रथम और मुख्य समस्या पूर्ण स्वतन्त्रता की है। ब्रिटिश सम्राट् और ब्रिटिश पार्लमेंट से किसी तरह का भी सम्बन्ध न रख कर हमें स्वतंत्र होना है। इस उद्देश्य को हमें सदा स्मरण रखना चाहिए। इसलिए भारत का नया विधान बनाते हुए हमें अत्यन्त सतर्कतापूर्वक यह ध्यान रखना चाहिए कि हम विधान में किसी भी प्रकार के ब्रिटिश नियंत्रण को स्वीकार न करें।

प्रजातन्त्र का स्वरूप—यह तो निश्चित है कि भारतवर्ष के शासनविधान का स्वरूप प्रजातन्त्रात्मक होगा। वहां किसी तरह राजतन्त्र या कुलीनतन्त्र की कोई सम्भावना नहीं है। लेकिन प्रजातन्त्र का स्वरूप भी तो विवादास्पद है। इंग्लैंड में भी प्रजातन्त्र है, अमेरिका में भी और रूस में भी। इन सब देशों के निवासी अपने-अपने प्रजातन्त्र के स्वरूप को सर्वश्रेष्ठ समझते हैं। मेरठ कांग्रेस ने स्वतन्त्र सर्वसत्ताधारी प्रजातन्त्र के सिद्धान्त को स्वीकार भी कर लिया है। प्रस्ताव की व्याख्या करते हुए पं० जवाहरलाल नेहरू ने अपनी पसन्द भी प्रकट करदी कि यह विधान समाजवादी आधार पर होगा। इस सम्बन्ध में विवेचन करने का यहां न स्थान है और न यह अवसर ही इसके लिए उपयुक्त है, लेकिन यह निश्चित है कि देश का विधान ऐसा अवश्य होना चाहिए जिसमें प्रजातन्त्र की आड़ में सम्पन्न वर्ग देश के शासनचक्र पर अधिकार न करलें। ब्रिटेन में आज ऐसा ही हो रहा है, लेकिन दूसरी ओर रूस का प्रजातंत्र भी आज विधान में कोई भी हो, वहां अधिनायकवाद की तूती बोलती है। फिर रूस के विधान का आधार हिंसा तथा राष्ट्रीय पूंजीवाद है, जिसमें सर्वसाधारण को प्रजातंत्र के वे भी अधिकार प्राप्त नहीं हैं, जो आज भारत में भारतीयों को है। विधानपरिषद के सदस्यों को शासनविधान के स्वरूप का निर्धारण करते हुए ब्रिटेन व रूस के इन दोनों दोषों से बचना चाहिए।

साम्प्रदायिक समस्या — विधान-परिषद के सामने तीसरी प्रमुख समस्या पाकिस्तान की है। ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल ने विधानपरिषद की योजना प्रस्तुत करते हुए यह स्पष्ट कर दिया था कि पाकिस्तान भारत में समय नहीं है, न राजनैतिक कारणों से और न आर्थिक या सामरिक कारणों से ही। फिर भी विधान-परिषद के प्रस्ताव पेश करते हुए मन्त्रिमण्डल ने तीन गुटों की जो शरारतभरी पेशबन्दी की है, उसमें से निकलना भी विधान परिषद के सदस्यों की जिम्मेवारी है। इस सबध में आने वाली कठिनताओं से हम अपरिचित नहीं हैं। मुस्लिम लीग के देशद्रोही नेता कलकत्ता, ढाका या पूर्वीय बंगाल में जो बीभत्स दृश्य उपस्थित करते रहे हैं, उनसे हम भविष्य की अनिष्ट कल्पना कर सकते हैं। लेकिन शासन चक्र हाथ में लेते हुए ऐसी धमकियों से विचलित नहीं होना चाहिये। दृढ़ता और नियन्त्रण — इन दो गुणों के कारण हम सांप्रदायिक आपत्तियों से अपनी रक्षा कर सकते हैं। मेरठ अधिवेशन में राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी ने यह स्पष्ट कर दिया था कि सांप्रदायिकता के साथ किसी तरह का समझौता नहीं करना चाहिए। राष्ट्रीयता और विशुद्ध राष्ट्रीयता की रक्षा हमें प्राणपण से करनी चाहिए। विधानपरिषद् के सदस्यों को अत्यन्त धैर्य और निर्भीकता का परिचय देना चाहिए। उनकी जरा सी जलदबाजी और त्रुटि भारत के भविष्य के लिए एक ऐसी समस्या पैदा कर देगी, जिसका पीछे हल करना कठिन हो जायगा।

रियासती समस्या — विधानपरिषद् के सामने चौथी प्रमुख समस्या रियासती है। राजा अभी तक इस सम्बन्ध में किसी निश्चित नीति का निर्धारण नहीं कर पाये। लेकिन विधानपरिषद् को यह स्मरण रखना चाहिए कि भारत एक और अविभाज्य है। जिस तरह हम हिन्दुस्तान और पाकिस्तान को सहन नहीं कर सकते, उसी तरह छोटे-छोटे ठाकुरों व जमींदारों को भी भारत में कोई स्थान नहीं मिल सकता। हमें यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि रियासती जनता के प्रतिनिधियों को परिषद में आना चाहिए। रियासती प्रजा को अपने-अपने क्षेत्र के शासन में उत्तरदायी शासन का अधिकार प्राप्त होना चाहिए। विधान-परिषद को यह निर्णय भी कर लेना चाहिए कि राजा कोई ऐसा संगठन न कर सकें, जो भारत की उन्नति में बाधक हो। राजा किसी तरह ब्रिटिश सरकार के हाथ में खिलौना न बन सकें, इसकी ओर सतक रहना चाहिए।

ये चार समस्याएं हैं, जिनकी ओर विधानपरिषद के सदस्यों का, जो दिल्ली में उपस्थित हो रहे हैं, ध्यान खींचना चाहते हैं। हमें यह पूर्ण आशा है कि विधान-परिषद अपने सामने आने वाली विपत्तियों को पार करने में अवश्य सफल होगी और भारतीय इतिहास में यह महान् प्रयत्न भारतीय स्वतन्त्रता को निकटतम ला देगा।

श्रद्धेय राजेंद्रबाबू

राजेंद्र बाबू भारत की उन निधियों में से हैं, जिन पर भारत सचमुच गर्व कर सकता है। उनका समस्त जीवन राष्ट्र की सेवा में व्यतीत हुआ है। उनका जीवन एक सच्चे भारतीय देशभक्त का जीवन है, जो सच्चे भारत से — उसकी राजनैतिक आकांक्षाओं, उसकी धार्मिक और सामाजिक संस्कृति से, उसकी वेश-भूषा से, उसकी भाषा से और उसके रहन-सहन से प्रेम करता है। दरिद्र-नारायण की सेवा में रत वह त्यागमूर्ति तपस्वी अत्यन्त प्रतिभाशाली और कार्य-कुशल हैं। वे दो बार भारत के राष्ट्रपति पद पर रह चुके हैं। बिहार भूकम्प के समय राष्ट्र ने उनकी अनन्त शक्ति और कार्यकुशलता का परिचय पाया। आज वे भारतवर्ष की अत्यन्त मुख्य समस्या — अन्न की समस्या का सुलझाने में लगे हैं। सब प्रकार के आडम्बर से शून्य यह महान व्यक्ति आज अपने जीवन के ६२ वर्ष व्यतीत कर ६३वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इस अवसर पर हम समस्त 'अर्जुन परिवार' और उसके लाखों पाठकों की ओर से उनका अभिनन्दन करते हैं और मंगलमय भगवान् से उन्हें चिरायुष्य देने की प्रार्थना करते हैं। हमें विश्वास है कि स्वतन्त्र भारत के भावी निर्माण द्वारा वह न केवल भारत का, अपितु विश्वशान्ति का नेतृत्व भी करने में अपूर्व सहयोग देंगे।

हवाई उद्योग धन्धा

भारतवर्ष आज संसार के प्रधान व्यावसायिक राष्ट्रों में गिना जाता है। विदेशी शासन की सब बुराइयों और भारतीय उद्योग-धन्धों को नष्ट करने के लिये ब्रिटिश पूंजीपतियों द्वारा किये गये पचासों भीषण षड्यन्त्रों के बावजूद यदि भारतीय उद्योग-धन्धे पनप पाये हैं, तो इसके अनेक प्रमुख कारणों में से एक कारण यहां के उद्योगपतियों की व्यावहारिक कुशलता, परिश्रम तथा व्यापारिक प्रतिभा है। पूंजीवाद के समस्त दोषों के बावजूद यह मानने में किसी को संकोच न होगा कि भारतीय व्यवसाय को आज के स्तर पर लाने में इस देश के उद्योगपतियों का विशेष हाथ है। वे अपने निजी हितों की रक्षा के ख्याल से ही, व्यावसायिक जहाज

को सब प्रकार के उपद्रवों से बचाने में सफल हुए हैं। यदि ये धन्धे सरकार द्वारा संचालित होते, तो हमें संदेह है कि इसमें इतनी सफलता मिलती या नहीं, आज भी हमें अपने इस पुराने अनुभव से लाभ उठाना चाहिये। सरकारी मशीनरी इतनी चुस्त और जागरूक नहीं होती, जितनी उद्योगपतियों की व्यापारिक संस्थाएं। पिछले युद्धकालीन अनुभव से यह और भी अधिक स्पष्ट हो गया है, जिस में रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार, स्वार्थपरता और सांप्रदायिकता ने आकर जनता के कष्टों को निरंतर बढ़ाया है। हवाई यातायात के धन्धे में आज भारत को समस्त उन्नत राष्ट्रों का मुकाबला करना है। इसे इन दोषों से बचाकर अधिकतम शीघ्रता से उन्नति करने के लिए आवश्यक है कि हम उद्योगपतियों को इस क्षेत्र में उन्नति करने का पूर्ण अवसर दें। उनकी व्यापारिक प्रतिस्पर्धा और व्यवहार कुशलता से हमें विश्वास है कि यह उद्योग भारत में शीघ्र ही बन जायगा। इसके राष्ट्रीयकरण का अर्थ होगा कि इस धन्धे में योग्यता की अपेक्षा हम हिन्दू-मुसलमान के पेचीदे झगड़े में उलझ जावें, रिश्वत खोरी को प्रोत्साहन दें और इस तरह अन्य देशों की अपेक्षा बिछड़ जावें। पूंजीवाद के दोषों से बचने के लिए सरकार का धन्धों पर नियन्त्रण तो आवश्यक है, परन्तु यह नियंत्रण भी इतना कठोर न हो कि धन्धों के पूर्ण विकास में बाधक बन जावे।

ग्रीस के गृह-युद्ध में

ग्रीस में गृह-युद्ध की जो चिंगारी कुछ सप्ताह पूर्व प्रकट हुई थी, वह बुझने के बजाय लगातार बढ़ती जा रही है। सम्भावना यह प्रतीत होती है कि यह गृह-युद्ध केवल गृहयुद्ध तक सीमित न रहकर अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध बन जायगा। आज से करीब १० वर्ष पूर्व स्पेन में गृह-युद्ध की आड़ में अनेक राष्ट्रों ने अपनी अपनी शक्ति-परीक्षा के लिए संघर्ष किया था। जर्मनी, इटली और रूस के शक्ति-संघर्ष में रूस को असफलता का सामना करना पड़ा था। ग्रीस की सरकार ने जो शिकायत की है, उससे यह प्रकट होता है कि रूस इस युद्ध में स्वयं सामने न आकर ग्रीस के सीमावर्ती राष्ट्रों के द्वारा अपना खेल खेलना चाहता है। बालकन राष्ट्रों की पिछली राजनीति से परिचित पाठक यह जानते हैं कि ग्रीस के सिवाय सभी बालकन राष्ट्रों से उसका विशेष प्रभाव है। केवल ग्रीस में ब्रिटिश प्रभाव है। रूस और ब्रिटेन दोनों एक दूसरे पर यह आक्षेप करते हैं कि वे अपने प्रभावाधीन क्षेत्रों में चुनाव ठीक ढंग से नहीं करते। ग्रीस के चुनाव को लेकर वहां रूस समर्थक दल ने विद्रोह प्रारम्भ कर दिया है और इस दल को रूस के प्रभावक्षेत्र के देशों ने — यूगोस्लेविया और रूमानिया आदि ने सहायता देनी भी शुरू कर दी है। यदि ब्रिटेन ग्रीस सरकार को सहयोग देने लगे, तो ग्रीस के युद्ध को अन्तर्राष्ट्रीय रूप मिलने में देर न लगेगी। देखना है कि संयुक्तराष्ट्रों का नया संघ इस समस्या को कैसे हल करता है?

आबादियों का तबादला

मि० जिन्ना ने पिछले दिनों आबादियों के तब्दील करने का जो नारा छेड़ा है, अदूरदर्शितावश बंगाल व सिन्ध की मुस्लिमलीगी सरकारों ने उस पर अमल करना भी शुरू कर दिया है। बिहार के हजारों मुसलमानों को बंगाल में बसाया जाना शुरू हो गया है। सिन्ध की सरकार ने भी यू० पी० के मुसलमानों को बसाने का ऐलान कर दिया है। तबादले की यह योजना किसी तरह अमल में नहीं आ सकती। आज से २५-२६ वर्ष पूर्व मुसलमानों ने हिजरत का जो आंदोलन किया था, उसकी जो दशा हुई थी, इस तबादले के आंदोलन की भी वही दशा होगी। दक्षिण भारत के मुसलमान न सिंध जा सकते हैं और न सीमाप्रांत के पठानों के साथ मेल खा सकते हैं। यह आंदोलन और भी विफल हो जाय, यदि बिहार व यू० पी० सरकारें यह ऐलान कर दें कि इस तरह भागे हुए मुसलमानों को वापस नहीं आने दिया जायगा। यूरोप में भी तबादले की नीति सफल नहीं हुई और न भारत में हो सकती है।

प्रजातंत्र को धमकी

सं० रा० अमरीका के फेडरलकोर्ट ने अभी एक महत्वपूर्ण निर्णय करके वहां के प्रबल मजदूर संगठन पर सरकार के साथ किये हुए समझौते को तोड़ने के अभियोग में ३५ लाख डालर जुरमाना किया है। अमेरिका का फैडरल कोर्ट वहां के राष्ट्रपति और वहां की सरकार से भी ऊंचा है। उसने निर्णय देते हुए कहा है कि "सरकार से समझौता भंग करके कोयले की खानों में हड़ताल करना बुरी और भयानक चीज है। इसका मतलब है, भूख, सर्दी और निराश्रय। यह प्रजातंत्र को एक धमकी है।" अदालतका यह निर्णय वस्तुतः समस्त संसार के उन मजदूर नेताओं के लिए है, जो अपने वर्ग को सबसे अधिक महत्व देकर राष्ट्र को कुछ न मानते हैं और जनहित की उपेक्षा करते हैं। क्या भारत के कम्यूनिस्ट इससे शिक्षा लेंगे?

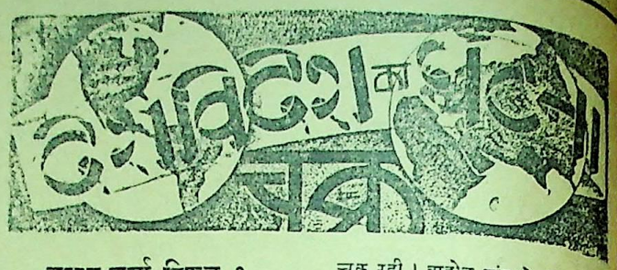

लन्दन-चर्चा विफल ?

गत सप्ताह प्रधानमन्त्री एटली के आश्वासन और साग्रह निमन्त्रण पर पं० नेहरू और सरदार बलदेवसिंह भी लन्दन गये थे। तब यह सम्भावना प्रकट की गई थी, क्योंकि एटली ने विधान परिषद को स्थगित न करने का आश्वासन दे दिया है, इसलिए अब केवल प्रान्तों के 'वर्गीकरण' के सम्बन्ध में तथा अल्पसंख्यकों के भय को दूर करने के लिए केन्द्र और प्रान्तों में संयुक्त सरकारें बनाने पर भी विचार किया जायगा।

तो भी निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता कि लन्दन में वार्तालाप में किस-किस विषय को सम्मिलित किया गया था। 'ग्लोब' के समाचार के अनुसार यह वार्तालाप भंग हो गया है और कोई भी पक्ष झुकने को तैयार नहीं था। प० नेहरू से चर्चा करने के लिए कुछ दिन और रुकने को कहा गया था, परन्तु उन्होंने कहा कि मुझे वापिस लौटने के आदेश प्राप्त हुए हैं, विवादग्रस्त प्रश्नों का निर्णय फेडरलकोर्ट से कराया जा सकता है। प० नेहरू ने सारी बातचीत में इसपर बहुत बल दिया कि विधान-परिषद एक सर्वसत्ता सम्पन्न संस्था होनी चाहिये।

प० नेहरू शनिवार को लन्दन से प्रस्थान कर रहे हैं और रविवार को दिल्ली पहुंच जायंगे।

उपद्रवों की गूंज

यद्यपि अन्य स्थानों पर उपद्रवों का जोर कम हो गया है, परन्तु नौआखाली से अभी निरन्तर निराशाजनक संवाद आ रहे हैं। अभी तक भी सुदूर गावों में हत्याकाण्डों तथा बलात् धर्म परिवर्तन के समाचार प्राप्त हो रहे हैं। वहां के अल्पसंख्यकों को खुले रूप में यह कहा जा रहा है कि सेना हटने दो फिर यहां पाकिस्तान स्थापित किया जायेगा। सेना जिन गुंडों को पकड़ती है, पुलिस उन्हें जमानतों पर छोड़ देती है। यहां के देहातों में हिन्दूमहासभा के कई स्वयंसेवकों की भी हत्या कर दी गयी हैं।

गाजियाबाद के पास डासना में रेलगाड़ी पर आक्रमण करके सामूहिक हत्याएं की गई थीं, उसके सम्बन्ध में तो गाजियाबाद की पुलिस ने कोई गिरफ्तारी नहीं की परन्तु साथ के गावों से पुलिस हिन्दुओं को निःशंक गिरफ्तार कर रही है। कांग्रेसी प्रान्त की पुलिस गांव वालों को मारने-पीटने से भी नहीं चूक रही। अहोड़ गांव के निरपराध २१ जाट युवकों को गिरफ्तार कर लिया गया है। गाजियाबाद प्रदेश की पुलिस प्रायः मुस्लिम है, और प्रान्तीय सरकार की मुस्लिमपक्षपाती नीति का दुरुपयोग किस संकोच किया जा रहा है।

गढ़मुक्तेश्वर के प्रदेश में आतंक अभी तक जारी है। यहां प्रति दिन लीगी मुसलमान और मुस्लिम नेशनल-गार्ड के गुण्डे सशस्त्र होकर चक्कर लगाते हैं तथा जनता को आतंकित करते हैं। परिणामतः बहुतेरे हिन्दू परिवार अपने को अरक्षित समझकर यहां से चले गये हैं और अभी तक नहीं लौटे हैं।

मुस्लिमलीग का 'निवास-परिवर्तन' आन्दोलन प्रारम्भ

ज्ञात हुआ है कि सिन्ध के प्रधानमंत्री सर गुलामहुसेन हिदायतुल्ला ने संयुक्तप्रांत के मुसलमानों को सिन्ध में बसने के लिये खेतिहर प्रदेश बिना मूल्य देने का प्रस्ताव किया है। यह प्रस्ताव सिन्ध असेम्बली के भूतपूर्व स्पीकर सैयद मीरान मोहम्मदशाह स्वयं लेकर लीग के उच्चाधिकारियों से मिल रहे हैं। यह स्मरण रखना चाहिये कि कुछ वर्ष पूर्व सिन्ध में पंजाबी मुसलमान कृषकों को बसाने की योजना तैयार की गई थी, पर सिन्धी मुसलमान कृषकों ने इसका घोर विरोध किया था।

बंगाल की मुस्लिमलीगी सरकार ने बिहार से १६००० मुसलमानों का निर्यात करके हिन्दूबहुल पश्चिमी बंगाल में आश्रय दिया है, यह सम्भावना की जा रही है कि इन्हें यहीं बसा कर हिन्दुओं को अल्पसंख्यक बना दिया जायेगा।

अंजुमन-इस्लाम रियासत (रियासती मुस्लिमलीग) की प्रेरणा से ग्वालियर राज्य के १० हजार मुसलमान ५० और १०० के जत्थों में रियासत को छोड़ कर भोपाल जा रहे हैं। इसी संस्था ने इस प्रयोजन के लिये स्पेशल ट्रेनों की व्यवस्था करने का भी आन्दोलन प्रारम्भ किया है।

ईरान में निर्वाचन या गृहयुद्ध ?

ईरान के प्रधानमन्त्री घावम सुल्तानेह की घोषणा के अनुसार अजरबेजान के अतिरिक्त सर्वत्र शनिवार को निर्वाचन प्रारम्भ हो जायेंगे। अजरबेजान में सामान्य निर्वाचन केन्द्रीय सरकार की फौजों के पहुंच जाने के बाद ही होंगे।

[शेष पृष्ठ १६ पर]

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दक्षिण अफ्रीका से मोर्चा लेने वाली

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित

भारत की अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएं

हम और हमारे पड़ोसी

[प्रो० डी० एस० नाग एम० ए०]

ब्रिटिश शासन के इतिहास में प्रथम बार भारतीय ने एक वैदेशिक मन्त्री का पद ग्रहण किया है। अब तक 'वैदेशिक विभाग' गवर्नर जनरल के अन्तर्गत 'अतिरिक्त विषय' होने के कारण देश के लिये अन्धकूप-सा बना हुआ था। जब-जब केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभा में वैदेशिक नीति पर कोई प्रश्न आया अथवा आपत्ति उठाई जाती थी उसे 'अतिरिक्त-विषय' कह कर टाल दिया जाता था और भारत को यह मालूम ही नहीं होने पाता था कि उसका विदेशों से सम्बन्ध किस प्रकार रखा जाता है और उसकी बुनियादी नीति क्या है। वास्तव में देश के बड़े-बड़े नेताओं को इस बात का पता नहीं चलता था कि भारत के नाम पर विदेशों से क्या-क्या किया जा रहा है। ४० करोड़ जनता का प्रतिनिधित्व ऐसे मनुष्य करते थे जो भारत की जनता से सैकड़ों मील दूर रहते हैं और जिन्हें भारतीय-समस्याओं सांस्कृतिक परम्पराओं ने छुआ तक नहीं था।

द्वितीय महायुद्ध ने हमारी साम्राज्य विरोधी वैदेशिक नीति को और भी पुष्ट किया है। अगस्त प्रस्ताव में कांग्रेस ने स्पष्टतया संयुक्त राष्ट्रों को चेतावनी दी थी कि पराधीन राष्ट्रों को जब तक पूर्ण स्वतंत्रता नहीं मिल जाती, नात्सीवाद के विरुद्ध युद्ध वास्तविक रूप से नात्सीवाद को नष्ट नहीं कर सकता। युद्ध के समाप्त होते ही जो राष्ट्र इस समय जापानियों के कब्जे में हैं, तुरन्त ही स्वतंत्र कर देने चाहिये। समय-समय पर इन्डोनिशिया तथा इण्डोचीन के स्वातंत्र्य आन्दोलन के सम्बन्ध में कांग्रेस ने अपनी सहानुभूति प्रगट की है।

महात्मा गांधी तथा पंडित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में भारत की वैदेशिक नीति वास्तव में पवित्र एवं सहानुभूति पूर्ण रही है और रहेगी। जब तक बापूजी हमारे राष्ट्रीय जीवन का संचालन करते हैं, राष्ट्र की वैदेशिक नीति, साम्राज्य लिप्सा अथवा झूठी और क्रूर नीति से अपवित्र न हो पावेगी। पंडित नेहरू साम्राज्यशाही के कट्टर विरोधी हैं, उनमें अन्तर्राष्ट्रीयता कूट-कूट कर भरी हुई है। वे भारत की 'वैदेशिक नीति' सर्वदा साम्राज्य-विरोधी एवं पराधीन-राष्ट्र-प्रिय बनाये रखेंगे। पंडित नेहरू के नेतृत्व में अन्तःकालीन सरकार, हमें आशा है, ऐसी वैदेशिक नीति का निर्धारण एवं संचालन करेगी जिससे पूर्व एवं पश्चिम के पराधीन राष्ट्रों में नवीन आशा एवं उत्साह का संचार होगा। नीचे हम कुछ ऐसी समस्याओं का उल्लेख करेंगे जो अन्तःकालीन सरकार को तुरन्त ही सुलझानी होंगी।

पेरिस शान्ति सम्मेलन

समाचार पत्रों से ज्ञात होता है कि छोटे छोटे राष्ट्र शक्तिशाली राष्ट्रों के हाथ में कठपुतली बने हुए हैं। इसमें सन्देह नहीं, जब तक बड़े राष्ट्रों के हाथ शक्ति केन्द्रित है, विश्व शांति उनकी एक विशेष जिम्मेदारी है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि छोटे राष्ट्रों का अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में कोई स्थान ही नहीं है। वरन छोटे एवं पराधीन राष्ट्रों के हित की रक्षा करना ही वास्तव में शांति-सम्मेलन एवं संयुक्त राष्ट्र संघ का मुख्य उद्देश्य है।

भारत के विदेश मन्त्री

पं० जवाहरलाल नेहरू

इसके विपरीत संघ के उद्देश्यों की अवहेलना करकेबड़े राष्ट्र अपनी-अपनी शक्ति बढ़ाने में लगे हुए हैं। इस समय भारत की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और विशेष कर पूर्व में उसका विशिष्ट स्थान है। अपनी जनशक्ति, राजनैतिक जागृति, आर्थिक उन्नति एवं सांस्कृतिक श्रेष्ठता के कारण उसकी एक विशेष जिम्मेदारी है। उसे एशियाई राष्ट्रों का नेतृत्व ग्रहण कर पूर्वी देशों के हितों की रक्षा करनी चाहिये। अन्तःकालीन सरकार के अन्तर्गत हमारे वैदेशिक मन्त्री को राष्ट्र मैत्री एवं वैदेशिक सबंधों को दृढ़ करने का अवसर प्राप्त होगा। शान्ति-सम्मेलन में उपस्थित पूर्वी राष्ट्रों के प्रतिनिधियों को संगठित करके भारत को उनके हितों की संगठित रूप से रक्षा करनी चाहिये। दक्षिणी-पूर्वी-एशिया के कुछ राष्ट्रों के प्रतिनिधि साम्राज्यवादी शासकों द्वारा नियुक्त किये गये हैं। ऐसे प्रतिनिधियों का झूठापन साबित करके उनके स्थान पर राष्ट्र के सच्चे प्रतिनिधि बुलाने के लिए भारत को अन्य पूर्वी राष्ट्रों के साथ संयुक्त मांग पेश करनी चाहिये। भारत के इस रवैये से एशियाई एकता को प्रोत्साहन मिलेगा और पूर्व के देशों के साथ हमारे सम्बन्ध और भी मैत्रीपूर्ण बन जायेंगे।

एशियाई सम्मेलन

निकट भविष्य में, भारत में एक एशियाई सम्मेलन होने जा रहा है। इसमें एशिया के सभी राष्ट्र आमन्त्रित

उद्बोधन

ओ मद भरेयौवन उबल !
ओ नींद के माते संभल !
यह जागरण का है समय, यह क्रांतियों का प्रात है !
होने लगा नवयुग उदय, अब स्वप्न तामस राते है !
यह समय सोने का नहीं,
वह वक्त खोने का नहीं,
ओ नींद के माते संभल ! ओ मदभरे यौवन उबल ?

उत्सर्ग की चाहें दिखा !
संसार को राहें दिखा !
सूने पड़े हैं रास्ते ! चारों तरफ सुनसान है !
उठ जा किसी के वास्ते ! सब कह उठें तूफान है !
पद-चिन्ह अपने छोड़ जा !
ये शृंखलायें तोड़ जा !
संसार को राहें दिखा ! उत्सर्ग की चाहें दिखा !

लो देखते ही देखते
तारे कहीं को चल दिये
परवाह मंजिल की नहीं, वह दूर है या पास है !
रणवीर रुकते हैं कहीं, जिनको विजय की आस है !
तू हैं अभी तक सो रहा !
सद्शक्तियों को खो रहा !
तारे कही को चल दिये— लो देखते ही देखते !

पट मन्दिरों के खुल गये !
मन प्रार्थना से घुल गये !
कर्मण्यता की गीतियां, गाने लगी आराधना !
अवलोक अनुपम रीतियां, सुफला हुई है साधना !
तू है कि मानस हीन है !
तू है कि निपट मलीन है !
मन प्रार्थना से घुल गये ! पट मन्दिरों के खुल गये !

बिगड़ी व्यवस्थायें बदल !
उलटी अवस्थायें बदल !
इक बार जो संसार पर- तेरी विहंगम दृष्टि हो !
संहार के संहार पर- नव सृष्टियों की सृष्टि हो !
संसार को तेरे लिये !
कर्त्तार हो तेरे लिये !
उलटी अवस्थायें बदल ! बिगड़ी व्यवस्थायें बदल !

—'शेष'

किये जायेंगे। चीन, इंडोनेशिया, मलाया, इंडोचीन, तिब्बत, बर्मा, लंका इत्यादि के अतिरिक्त मध्यपूर्व के मुस्लिम देशों के प्रतिनिधि भी इस सम्मेलन में सम्मिलित होंगे। रूस के संयुक्तराष्ट्र के एशियाई प्रजातन्त्रों को भी इस सम्मेलन में स्थान दिया गया है। यद्यपि इस सम्मेलन का आयोजन, इंडियन कौंसिल ऑफ वर्ल्ड अफैयर्स ने किया है, फिर भी इन देशों के प्रतिनिधियों से भारत का सम्बन्ध दृढ़ करने का अवसर हमारे वैदेशिक मन्त्री को पर्याप्त रूप से मिलेगा। प्रथम बार पूर्वी राष्ट्रों के प्रतिनिधि एक स्थान पर एकत्रित होकर स्वतन्त्र रूप से अपने राष्ट्र तथा एशियाई जगत् के हितों की चर्चा करने जा रहे हैं। यदि राजनैतिक नहीं तो कम से कम संयुक्त सम्मेलन का मनोवैज्ञानिक प्रभाव एशिया वासियों पर अवश्य और गहरा पड़ेगा।

हमारे राष्ट्रदूत

अब तक विदेशों में हमारे राष्ट्रदूत बहुत कम संख्या में हैं। पूर्व और पश्चिम के ऐसे बहुत से देश हैं, जिनमें भारत के प्रतिनिधि के रूप में कोई नहीं है। जो अब तक नियुक्त किये गये है, उन्होंने राष्ट्र के विरुद्ध जहर फैलाने का ही प्रयत्न किया है। यदि हम विदेशों से वास्तव में सम्बन्ध दृढ़ रखते हैं तो प्रत्येक देश में राष्ट्रीय विचारों के राष्ट्रदूत तुरन्त नियुक्त करने चाहिएं। ये राष्ट्रदूत विदेश एवं भारत के बीच शृंखला का कार्य करेंगे तथा मैत्रीभाव को बढ़ाने का प्रयत्न करेंगे। परन्तु हमारे देश में सुयोग्य एवं ट्रेनिंग पाये हुए राष्ट्रदूत बहुत कम संख्या में हैं। हमारे देश के वैदेशिक विभाग यूनीवर्सिटियों एवं अन्य राजनैतिक संस्थाओं को वैदेशिक मामलों में विशेषज्ञ तैयार करने चाहियें।

मैत्री दल

एक और प्रश्न की ओर हम पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं। विदेशों में भारत के विरुद्ध तथा भारत में कुछ विदेशों के विरुद्ध प्रचार करना ब्रिटिश वैदेशिक नीति का एक आवश्यक अंग रहा है। फलस्वरूप विदेशों में भारत के सम्बन्ध में अनेक भ्रम फैले उदाहरणार्थ अमरीका में करोड़ों रुपया भारत के विरुद्ध प्रचार में अब तक लगता रहा है और आज साधारण अमेरिकन भारत के सम्बन्ध में कुछ गलत धारणायें बनाये हुए हैं। इसी प्रकार भारत में रूस के सम्बन्ध में विरोधात्मक खबरें फैली हुई हैं। हमें वास्तविकता का पता ही नहीं लगता है और इसी कारण कभी-कभी रूस के विरुद्ध धारणायें हम बना बैठते हैं। रूस में भी भारत के सम्बन्ध में कई झूठी बातें प्रसारित की जाती रही हैं। चीन के गृह-युद्ध के सम्बन्ध में हम निश्चय नहीं कर पाते हैं कि कुमिनटांग अथवा कम्यूनिस्ट किस के प्रति हमारी सहानुभूति होनी चाहिये। यदि हमारे राष्ट्र की ओर से इन देशों में मैत्रीदल भेजे जावें तो इन देशों की वास्तविक राजनैतिक परिस्थिति के बारे में हमारी जानकारी बढ़ेगी और हम अपने मार्ग की नीति सही मार्ग पर निर्धारित कर सकेंगे। कम से कम पांच देशों को रूस मध्यपूर्व के मुस्लिम देशों को, दक्षिण पूर्व के देश, चीन और अमरीका — को तुरन्त ही एक-एक मैत्री-दल रवाना कर देना चाहिये। ऐसे मैत्री-दलों का भारत के लिये कितना मूल्य है, यह हम श्रीमती पंडित के प्रचार-कार्य से अनुमान लगा सकते हैं। श्रीमती पंडित की उपस्थिति के कारण साम्राज्यशाही शासकों को संभलकर बोलना पड़ा तथा अनेक ऐसे राष्ट्र जो अब तक भारत के सम्बन्ध में अन्धकार में थे, काफी जानकारी हुई। हमें विश्वास है, अन्तःकालीन सरकार इस ओर अवश्य ध्यान देगी।

प्रवासी भारतीय

लाखों की संख्या में भारतवासी भिन्न भिन्न देशों में प्रवासी की हैसियत से रह रहे हैं। सैकड़ों वर्ष पूर्व सामाजिक एवं आर्थिक कारणों के कारण इन्होंने अपनी जन्मभूमि छोड़ दी थी। विदेशों में जाकर यद्यपि ये उन देशों के औद्योगिकरण में सहायक सिद्ध हुए परन्तु गोरे शासकों ने उनके साथ अब तक राजनैतिक एवं सामाजिक अछूत की तरह बर्ताव किया है। भारत पराधीन होने के कारण प्रवासी भारतीयों की रक्षा करने में असमर्थ था। आज प्रथम बार केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार स्थापित हुई है। पंडित नेहरू के पास आई विदेशों की शुभकामनाओं से प्रतीत होता है, प्रवासी भारतवासी अन्तःकालीन सरकार पर कितनी आशा लगाये बैठे हैं। उनमें एक नवीन आशा की किरण जाग्रत हो उठी है। उन्हें पूर्ण विश्वास है कि राष्ट्रीय सरकार अपनी पूर्ण शक्ति लगाकर प्रवासियों की रक्षा करेगी और राष्ट्र सम्मान की पताका फिर एक बार ऊंची फहरा उठेगी। इस समय विशेषकर अफ्रीका के भारतीयों के हितों की रक्षा करना है। 'घेटो बिल' स्वतंत्रता-प्रेमी भारत पर कलंक है। अन्तःकालीन सरकार, हमें आशा है, तुरन्त ही एक मिशन आफ्रीका रवाना करेगी ताकि आखिरी बार जनरल स्मट्स को चेतावनी दी जा सके। इसी प्रकार न्यूजीलैंड, मारीशस, ब्रिटिशगिनी, बरमुज तथा वहोमा में लाखों की संख्या में भारतवासी पड़े हुए हैं और अनेक सामाजिक एवं राजनैतिक कठिनाइयों को सहन कर रहे हैं। हमें आशा है कि भारत सरकार का प्रवासी-भारतीय विभाग तुरन्त ही प्रवासियों की समस्याओं को हल करने का प्रयत्न आरम्भ कर देगा।

हिन्दी पत्रकारों को चेतावनी

खतरे की घण्टी

[श्री बनारसीदास चतुर्वेदी]

जिस खतरे की हम लोगों को आशंका थी, वह अब हमारे सिर पर आ पहुंची है, यानी पूंजीपतियों द्वारा पत्रकार क्षेत्र में प्रवेश। विलायत में इस बीमारी ने इतना भयंकर रूप धारण कर लिया था कि वहां पर सरकार की ओर से एक शाही कमीशन उसकी जांच के लिए नियुक्त कर दिया गया है। पर हम लोगों ने अभी तक इस बात का अनुमान ही नहीं लगाया है कि भारतवर्ष में यह रोग कैसा गजब ढा सकता है। यहां की जनता में अंधविश्वास पहले से ही काफी मात्रा में मौजूद है और उसके द्वारा सर्वसाधारण के दिमाग में कूड़ा-करकट भर देना अपेक्षाकृत बहुत आसान है।

पूंजीपतियों के इस क्षेत्र में प्रवेश करने से सबसे अधिक खतरा है चार समाजों को।

१. श्रमजीवी समाज
२. साधारण पाठक
३. छोटे-छोटे पत्र
४. स्वाधीनचेता-पत्रकार

मान लीजिये, किसी पूंजीपति के कल-कारखाने में कोई जुल्म होता है या हड़ताल होती है, उसके समाचार पूंजीपतियों के पत्रों में छपने से रहे और यदि छपेंगे भी तो बिल्कुल तोड़-मरोड़ कर। श्रमजीवी समाज के पास इतना पैसा नहीं कि वह अपना पत्र निकाल सकें। साप्ताहिक पत्र निकालने के लिये भी अब पचास-साठ हजार रुपये की जरूरत पड़ती है और इस राशि का इकट्ठा करना श्रमजीवियों के लिये असम्भव ही समझिये। तब 'मारै और रोने न दे' वाला मामला हो जायगा। श्रमजीवी लोग जनता तक अपना रोना भी नहीं पहुंचा सकेंगे।

साधारण पाठक को जो खतरा है वह धीरे-धीरे असर करने वाले विष की तरह का होगा। उसका दुष्परिणाम दस-पन्द्रह वर्ष बाद चल कर निकलेगा। पन्द्रह-बीस वर्ष पहले सिनेमा व्यवसाय ने जो विज्ञापन प्रारम्भ किया था, उसका नतीजा हम लोग अब देख रहे हैं। स्कूल-कालेजों के अनेक विद्यार्थियों को सिनेमा की अभिनेत्रियों के जीवन-चरित्र का जितना ज्ञान है, उतना शायद नेताओं के जीवन के विषय में नहीं! कौन अभिनेत्री किस खेल की भूमिका में उतरी है ('भूमिका में उतरना' एक नया मुहावरा है, जिसके औचित्य-अनौचित्य के विषय में श्रद्धेय पं० अम्बिकाप्रसाद जी बाजपेयी जैसे भाषा-शास्त्रज्ञ ही सम्मति प्रकट कर सकते हैं), किसका प्रेम किसके साथ चेत रहा है, फालतू वक्त में कौन अभिनेत्री क्या किया करती है इत्यादि प्रश्न को साहित्य अथवा इतिहास के पन्ने आने लगें तो बिना किसी प्रयत्न अस्सी प्रतिशत विद्यार्थी फस्ट डिवीजन में पास हो सकते हैं! युवक समाज की इस बदली हुई मनोवृत्ति को ध्यान में रख कर सन् १९६० ईस्वी के किसी हिन्दी-पत्र के हैडिंगों का अनुमान इस प्रकार किया जा सकता है :—

१. मिस फत्तानी अमुक पार्क में प्रेमी के साथ घूम रही हैं—[सचित्र]।

२. पाकिस्तान की मेहतरानी का हिन्दू युवक से प्रेम-सम्बन्ध!

३. सेठ घसीटामल की सातवीं स्त्री में पत्रकारों की जमघट!

४. कलकत्ते की सड़क पर आदमी ने कुत्ते को काट खाया!

५. पांच पैर की गाय और सात सींग का बैल!

६. सेठ लक्ष्मीलाल के पुत्र-जन्मोत्सव पर कवियों को एक-एक हजार का पुरस्कार!

७. होली का हुर्दङ्ग।

८. भारतीय बमवर्षक विमान अफ्रीका की ओर।

९. साहित्यिकों में जूता-पैजार।

१०. प्रधानमन्त्री 'गांधी-छाप' सिगरेट पी रहे हैं — [सचित्र]।

बात दरअसल यह है कि पूंजीपतियों का हित इसी बात में है कि जनता का दिमाग इसी प्रकार की ऊल-जलूल बातों में उलझा रहे। यदि जनता गम्भीर प्रश्नों की ओर ध्यान देने लगी तो फिर वह नवीन सामाजिक व्यवस्था के लिये आन्दोलन शुरू कर देगी। जनता के दिमाग में गोबर भरे जाने की तैयारियां हो रही हैं। और उसे इस बात का खयाल ही नहीं है।

और पहरेदार?

और जनता के पहरेदार पत्रकार क्या कर रहे हैं? उनमें से कितनों का तो यह ख्याल है कि चलो, अच्छा ही है! इस प्रतिद्वन्द्विता में वेतन तो बढ़ेंगे! पर एक खतरे की ओर उन्होंने ध्यान ही नहीं दिया है, वह यह कि यदि अभी हमारे यहां दो सौ पत्र निकलते हैं और उन में एक हजार आदमी काम करते हैं तो पूंजीपतियों के हाथ में पत्र चले जाने पर कुल जमा पन्द्रह-बस पत्र निकलेंगे और उनका काम तीन सौ आदमी

[शेष पृष्ठ २२ पर]

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

रेडियो में एक साल — ६

[श्री चिरंजीत]

★

रेडियो विभाग की जिस दुर्व्यवस्था हिन्दी तथा भारतीय - संस्कृति विरोधी नीति का मैंने अपने पिछले लेखों में उल्लेख किया है, वह राष्ट्रीय दृष्टि से निश्चय ही घातक है। एक गुट विशेष सत्तारूढ़ होकर अपने साम्प्रदायिक और आर्थिक स्वार्थों की पूर्ति के लिये रेडियो विभाग जैसी राष्ट्रीय और सार्वजनिक महत्व की संस्था का अक्षम्य दुरुपयोग किया है। क्या यह दुरुपयोग चलने देना चाहिये? उत्तर है, नहीं। रेडियो, सामूहिक शिक्षा, मनोरंजन और प्रचार का एक महत्वपूर्ण साधन है। इसके सदुपयोग से राष्ट्र का कितना बड़ा हित हो सकता है, यह रूस, अमरीका और इंग्लैण्ड जैसे उन्नत और प्रगतिशील देशों के रेडियो विभागों के उदाहरणों से ज्ञात हो सकता है। भारत में अब राष्ट्रीय सरकार स्थापित हो जाने से और रेडियो विभाग एक लोकप्रिय और वंदनीय नेता के हाथ में चले जाने से हम भी वैसे ही राष्ट्रीय हित की आशा कर सकते हैं। इस सम्बन्ध में एक और बात भी ध्यान में देने योग्य है और वह यह है कि अन्य देशों की भांति अब भारत में भी रेडियो दिनों-दिन अधिकाधिक लोकप्रिय होता जा रहा है। देश में साक्षरता का प्रचार होने से, राष्ट्रीय साधनों से सम्पन्न और उन्नत होने से, छोटे-छोटे प्रान्तों को भी बिजली की सुविधा प्राप्त हो जाने से और विज्ञान की प्रगति के फलस्वरूप बाजार में सस्ते परन्तु बढ़िया रेडियो सेट आ जाने से रेडियो की लोकप्रियता और भी बढ़ेगी, ऐसा मेरा विश्वास है। इस समय सारे ब्रिटिश और रियासती भारत में कुल मिलाकर बारह-तेरह रेडियो स्टेशन हैं; परन्तु भारत सरकार की योजना के अनुसार यह संख्या भविष्य में सैकड़ों तक पहुंच जायेगी। रूस की जनसंख्या लगभग २० करोड़ है और वहां इस समय पांच सौ रेडियो स्टेशन हैं; तो फिर चालीस करोड़ की आबादी वाले हिन्दुस्तान में बारह-तेरह रेडियो स्टेशनों से भला कैसे काम चल सकता है? निश्चय ही भारत में रेडियो स्टेशनों की संख्या बढ़ेगी, जनता में रेडियो की लोकप्रियता बढ़ेगी और इस तरह इस विभाग की उपादेयता और महत्ता बढ़ेगी। अतः यह परमावश्यक है कि अभी से इस विभाग की आंतरिक व्यवस्था को ठीक किया जाये।

इसकी नीति को भाषा और संस्कृति सम्बन्धी भेदभाव, पक्षपात और साम्प्रदायिकता के विष से मुक्त किया जाये। इसके लोकप्रिय होने में जो बाधाएं और त्रुटियां हैं उनका समूल निराकरण कर उसे राष्ट्र की एक आदर्श गौरवपूर्ण संस्था बनाया जाये। इस विभाग में दो मुख्य दोष रहे हैं — एक तो इस पर एक गुट विशेष का एकाधिकार और दूसरे इस गुट की हिन्दी और भारतीय विरोधी नीति। अतः इस विभाग के सुधार और उपचार के लिए इन दो दोषों का निराकरण आवश्यक है। अतः इस दिशा में मैं कुछ सुझाव उपस्थित करता हूं।

रेडियो की हिन्दी-उर्दू सलाहकार समिति ने हाल ही में जो सिफारिशें की हैं, यद्यपि वे सर्वथा ही और सर्वांगी नहीं हैं, तथापि यदि उन्हें अविकल रूप से यह विभाग मान ले और उन्हें ईमानदारी से व्यवहार में लाये तो इसका बहुत हद तक सुधार तथा कल्याण हो सकता है। परन्तु यह काम अविलम्ब होना चाहिये और सब से पहले स्टाफ के परिवर्तन और संगठन पर ध्यान दिया जाना चाहिये क्योंकि जैसा कि मैं पिछले लेखों में सिद्ध कर चुका हूं, रेडियो का सारा का सारा प्रसारकार्य और नीति का अनुसरण स्टाफ पर ही निर्भर करता है। यदि उपयुक्त स्टाफ होगा, तभी सलाहकार समिति की अन्य सिफारिशें और निर्णय व्यवहार में लाये जा सकेंगे। चूंकि इस विभाग में उर्दू जानने वाले स्टाफ का पहले से ही अनावश्यक तौर पर बाहुल्य है, इसलिये अविलम्ब केवल हिन्दी जानने वालों की ही भर्ती करना चाहिये और इस सम्बन्ध में मेरे सुझाव ये हैं—

(१) रेडियो विभाग के हैडक्वार्टर में दो या तीन डिप्टी डायरेक्टर जनरल हैं। उनमें से एक डिप्टी डायरेक्टर जनरल के पद पर अनिवार्यतः तुरन्त ही हिन्दी का कोई उच्चकोटि का गण्यमान्य और प्रभावशाली विद्वान नियुक्त किया जाना चाहिये और हिन्दुस्तानी के प्रोग्रामों की देखरेख और नियन्त्रण का काम इसे सौंपा जाना चाहिये।

(२) स्टेशनों पर, विशेषकर, दिल्ली, लाहौर और लखनऊ के स्टेशनों पर अधिकारी और कर्मचारीवर्ग के महत्वपूर्ण पदों पर (स्टेशन डायरेक्टर, असिस्टेंट स्टेशन डायरेक्टर, प्रोग्राम एक्जीक्यूटिव, प्रोग्राम असिस्टेंट इत्यादि) हिन्दी जानने वाले लोग तुरन्त नियुक्त किये जाने चाहियें और भविष्य में होने वाली नियुक्तियां भी उस समय तक केवल हिन्दी जानने वालों के लिये ही 'रिजर्व' होनी चाहियें जब तक कि दोनों पक्ष निर्धारित अनुपात में नहीं हो जाते। नियम के अनुसार लाहौर, दिल्ली और लखनऊ के स्टेशन डायरेक्टर ऐसे होने चाहियें जो हिन्दी और उर्दू के समानरूप से ज्ञाता हों। नीचे के पदों पर भी यही नियम लागू होना चाहिये। दोनों भाषाओं के जानने वाले लोग पर्याप्त संख्या में मिल सकते हैं परन्तु यह रद्दोबदल यदि एकदम सम्भव नहीं तो मेरा सुझाव यह है कि उर्दू के ज्ञाता तो रहें, परन्तु वे लोग फौरन निकाल दिये जायें जो न उर्दू अच्छी तरह जानते हैं और न हिन्दी। ऐसे लोगों की जगह फौरन हिन्दी के विद्वान नियुक्त कर दिये जायें। हिन्दुस्तानी भाषा, संगीत, नाटक इत्यादि विभागों में अनिवार्यतः एक प्रोग्राम असिस्टेंट हिन्दी का ज्ञाता और एक उर्दू का ज्ञाता होना चाहिये — एक हिन्दी के प्रोग्रामों के लिये जिम्मेदार हो और दूसरा उर्दू के प्रोग्रामों के लिये। ट्रांसमिशन (प्रसार कार्य) के लिये भी इसी प्रकार हिन्दी के ज्ञाता नियुक्त किये जाने चाहिएं।

(३) यदि ऊपर नं० २ में सुझाया गया स्टाफ तुरन्त ही नियुक्त न हो सके, तो दिल्ली, लाहौर, लखनऊ — इन तीनों रेडियो स्टेशनों पर हिन्दी का एक-एक उच्चकोटि का विद्वान लेखक 'स्पेशल आफीसर' के रूप में अविलम्ब नियुक्त कर दिया जाये और एकमात्र हिन्दी सलाहकार रखने की 'तिकड़मबाजी' खत्म कर दी जाये। इन 'स्पेशल अफसरों' को प्रोग्रामों में हिन्दी का उचित अनुपात बनाने, करवाने के लिये विशेषाधिकार प्राप्त होने चाहियें। उचित तो ये होगा कि ये नये अफसर स्टेशन डायरेक्टरों के अधीन न होकर सीधे डायरेक्टर जनरल के अधीन हों।

(४) हिन्दुस्तानी भाषण, संगीत, नाटक, स्कूल ब्राडकास्ट, देहाती प्रोग्राम इत्यादि विभागों के लिये चार-चार विशेषज्ञों या सलाहकारों की समितियां होनी चाहियें जो पखवारे के प्रोग्रामों की रूपरेखा निर्धारित करने और उत्कृष्ट विधि से प्रोग्राम ब्राडकास्ट करवाने में प्रोग्राम असिस्टेंटों का हाथ बंटायें। यह काम अकेले प्रोग्राम असिस्टेंटों के बस का नहीं। प्रोग्राम की रूपरेखा तैयार करने का महत्वपूर्ण काम केवल एक आदमी की जिम्मेवारी पर छोड़ देना कई लिहाज से दोषपूर्ण है। अधिकांश प्रोग्राम असिस्टेंट उर्दू जानने वाले और प्रायः प्रोग्राम एकांगी से होते हैं। एक-एक सलाहकार समिति के होने से यह दोष दूर हो सकता है। वेतन इतना अच्छा होना चाहिये कि दोनों भाषाओं के गण्यमान्य विद्वान सहर्ष इन पदों को स्वीकार कर लें। बड़े-बड़े विद्वानों और विशेषज्ञों का सहयोग मिलने से ही रेडियो विभाग यथार्थरूप से सामूहिक शिक्षा, मनोरंजन और प्रचार का उत्कृष्ट साधन बन सकता है।

(५) प्रत्येक स्टेशन की ओर से 'आफिशल' तौर पर ब्राडकास्ट की जाने वाली चीजों (पत्रों के उत्तर इत्यादि) के लिये अब तक तो केवल उर्दू के लेखक ही रखे जाते हैं, जिसका तात्पर्य यह है कि लाहौर, दिल्ली और लखनऊ स्टेशनों की स्वीकृत सरकारी भाषा केवल उर्दू है। यह चांचली तुरन्त बन्द होनी चाहिये। प्रत्येक स्टेशन पर हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं में पत्र आते हैं। उनका उत्तर भला केवल उर्दू में ही क्यों दिया जाये। जब तक हिन्दुस्तानी नाम की भाषा का पूर्ण रूप से विकास नहीं हो जाता, 'पत्रों के उत्तर और दूसरी 'आफिशल' चीजें हिन्दी और उर्दू में समान रूप से ब्राडकास्ट होनी चाहियें और इनके लिये हिन्दी के लेखक और उद्घोषक भी नियुक्त किये जाने चाहियें। मेरा यह भी सुझाव है कि इस समय 'स्टाफ आर्टिस्टों' पर जो अयोग्यताओं और असुविधायें लदी हुई हैं, वे तुरन्त दूर हो जानी चाहियें। 'स्टाफ-आर्टिस्टों' के असंतुष्ट होने से रेडियो प्रोग्रामों के स्तर को हानि पहुंचती है।

(६) रेडियो की हिन्दी-उर्दू सलाहकार समिति ने अपनी सिफारिशों और अपने निर्णयों में न जाने क्यों समाचारों के बारे में कुछ नहीं कहा। क्या इस लिये कि रेडियो का सर्वसम्मत हिन्दुस्तानी शुद्ध-कोष अभी तक तैयार नहीं हो पाया? खैर इस विवादग्रस्त विषय को छोड़कर मैं समाचार विभाग के स्टाफ में हिन्दी के पत्रकारों की नियुक्ति का सुझाव उपस्थित करता हूं। अब तक तो वहां केवल उर्दू पत्रों से आये हुए लोग ही काम कर रहे हैं। इसका अर्थ क्या यह है कि केवल उर्दू के पत्रकार ही रेडियो ब्राडकास्ट की हिन्दुस्तानी लिख सकते हैं? रेडियो विभाग को अब इस दुराग्रह का परित्याग करना ही होगा। हिन्दुस्तानी के नाम पर शुद्ध उर्दू के प्रचार की कूटनीति का अब पूरी तरह से भण्डाफोड़ हो गया है। वास्तविक हिन्दुस्तानी तो बिना हिन्दी के पुट के समस्त ही नहीं। दूसरे शब्दों में, हिन्दी और संस्कृत का ज्ञाता ही वास्तविक हिन्दुस्तानी लिख सकता है। इस विषय में कहीं भी दो मत नहीं हो सकते। प्रसंगवश यहां मैं 'हिन्दुस्तानी न्यूज सुपर वाइजर' के पद का उल्लेख भी कर दूं। न्याय संगत बात तो यह है कि इस पद पर ऐसा व्यक्ति नियुक्त किया जाये जो हिन्दी उर्दू के अतिरिक्त देश की अन्य प्रांतीय भाषाओं का भी ज्ञान रखता हो और ऐसे विद्वानों की हमारे देश में कमी नहीं। परन्तु यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि इस पद पर 'सत्तारूढ़ गुट' का एक ऐसा व्यक्ति

[शेष पृष्ठ १८ पर]

एकांकी नाटक

वैकुण्ठाचार्य ★

[ले०—श्री पि० वि० राजमन्नार] [अनु०—चोल्ला विष्णु]

★

पात्र

श्रीवैकुण्ठाचार्य — एक ढोंगी साधु।
शिष्य — वैकुण्ठाचार्य का चेला।
शेषाचलम् — शिष्य का छोटा भाई।
रंगडु, वेंकडु, सुब्बय्या—गांव के लोग।
रामाराव, वेंकटराव —शहर के आदमी।

दृश्य पहिला

स्थान — गांव में एक झोंपड़ी।

[झोंपड़ी के आधे भाग पर परदा पड़ा है। सामने चटाईयां बिछी हैं। उस पर गांव के दो आदमी रंगडु और वेंकडु बैठे हैं। बाद में कुछ गांव के, और कुछ बाहर के आदमी आते हैं तथा बैठ जाते हैं। उनमें दो शहरी हैं — नाम रामाराव और वेंकटराव]

रंगडु — (नवागन्तुक को संबोधन करके) कैसे सुब्बय्या ! इतनी दूर !

सुब्बय्या — जानते नहीं हो ? मेरी सास गुजर गई है।

रंगडु — अरे ..... अरे .....रे (आश्चर्य से)

सुब्बय्या — करें क्या !..... अभी आचार्यजी का दर्शन हुआ नहीं ..?

रंगडु — अभी नहीं। इसीलिये तो मैं भी बैठा हूं। परसों मेरा राम गुजर गया था उसकी आत्मा अभी बैकुंठ पहुंची या नहीं ? यह जानने आया हूं।

सुब्बय्या—क्या बैकुन्ठ है जी ! मेरी बरवाली ने इसीलिये भेजा है, आज के लिए एक टिकस ले आ।

रंगडु—दर्शन की बेला हो रही है। जरा सब्र कर (सुब्बय्या झोंपड़ी के पीछे सिगार जलाने चला जाता है)

(रामाराव ने — शहरियों में से एक—आचार्य की महत्ता के बारे में कुछ कथायें सुन रक्खी थी वह अपने मित्र वेंकटराव के साथ इस विषय की जांच शुरू करता है।)

रामाराव—माफ कीजियेगा, इस गांव के लिए हम नए हैं हमने यूं तो श्री श्री आचार्यजी का नाम कई बार सुना है लेकिन उनके बारे में भलीभांति जानते नहीं। यह टिकट क्या है ? और कहां के लिये है ?.....।

रंगडु—और कहां के लिये ? सीधे बैकुन्ठ के लिये। नाम नहीं बता रहा है ? वैकुंठाचार्य।

वेंकटराव— (हंसते हुए) अच्छा ..चार्ज भी लगता है !

रंगडु और अन्य लोग — तोबा-तोबा..... हसो मत। पांच रुपए हैं चार्ज।

रामराव—हां...] टिकट लेकर फिर क्या करना चाहिये।

रंगडु—सुनो बतलाऊं। मान लो कल तुम मर जाओगे, तब तुम्हारे पिता को पांच रुपया देकर एक टिकट खरीदना चाहिए। और उसे तुम्हारे शरीर के साथ जला देना चाहिये, तब समझ लो तुम्हारी आत्मा बे रोक टोक सीधी बैकुंठ पहुंच जायेगी। तीन दिन के बाद हमारे आचार्य जी के पास इस आशय की एक चिट्ठी आ जाती है कि अमुक व्यक्ति वहां पहुंच गया है।

वेंकडु—सावधान हो जाओ..... सावधान परदा हट रहा है।

(एकदम सब खड़े हो जाते है रामराव और वेंकटराव बेबस से उठते है। धीरे-धीरे पर्दा हटाया जाता है। पर्दे के पीछे एक कालीन पर एक गद्दा और गद्दे पर अर्ध-निमलित नेत्रों से श्री श्री वैकुंठाचार्य विराजमान हैं। उनके ललाट, भुजाओं और छाती पर एक सौ ग्यारह नम्बर का तिलक चमकता है। सामने उनका शिष्य हाथ बांधे खड़ा है)।

शिष्य—आचार्य जी समाधिस्थ हैं। अभी जागने वाले हैं। सब लोग सावधान हो जाइये।

आचार्य— (आंख खोल कर) ओ३म् नमोनारायणाय।

रंगडु आदि अपने-अपने कान पकड़ते हैं।

शिष्य—बैठिये, सब बैठ जाइये।

आचार्य—वेंकटेशा ! बैकुंठ से कुछ चिट्ठी पत्री भी आई है ?

शिष्य—हां गुरुदेव पढ़कर सुना दूं ?

आचार्य — (सम्मतिसूचक सिर हिलाता है)

शिष्य — (झोले में से कुछ ताड़ के पत्ते निकाल कर उनमें से एक पढ़ता है।) श्री श्री वेदान्त वेद्य तिरुमंगा चार्य उर्फ वैकुंठाचार्य राम-राम वांचना। उभय कुशलोपरि। आपने जो ५रसों रामपुरवासी राम की आत्मा भेजी थी सो सुरक्षित पहुंच गयी है। उसे तृतीय लोक में जगह दे दी गई है..... कोई है राम का सम्बन्धी ?

रंगडु — मैं हूं स्वामी। आपकी कृपा से वैकुंठ पहुंच गया। नहीं तो कहां वह और कहां वैकुंठ ? स्वामी उसने कितनी चोरियां कीं और कितने ही पाप कर्म किये। उनको देखते हुए उसे नरक ही मिलना चाहिये था। कहां है स्वामी वह पर्चा ? मुझे दे सकते हैं ? घर में रख कर पूज लेंगे।

वेंकटेश — ये लो (दे देता है)।

रंगडु — (अति आदर के साथ) दोनों आंखों पर लगा कर बैठ जाता है।

(शिष्य इसी तरह एक के बाद दूसरा पत्ता पढ़ता रहता है।)

रामाराव — (रंगडु से) कहां एक बार मैं देख सकता हूं... ?

(रंगडु ताड़ का पत्ता देता है। रामाराव और वेंकटराव पढ़ लेते हैं ! और आपस में कुछ बातें करते हैं ! रामाराव चिट्ठी फिर वापिस दे देता है।)

(सिगार फैंक कर सुब्बय्या का प्रवेश)

सुब्बय्या — देर हो रही है स्वामी ! मेरी सास के वास्ते एक टिकस दिला-दीजिये !

शिष्य — सास तुम्हारी है, पर दुनियां क्या जाने नाम बताओ।

सुब्बय्या — हमेशा 'सास' कहकर ही पुकारता हूं। नाम नहीं जानता हूं। नाम कुछ भी रख लीजिये। असल में गर्ज है मेरी घरवाली की वह चाहती है अपनी माता को स्वर्ग भिजवा दूं। इसलिए एक टिकस दिला दे स्वामीजी !

शिष्य — अरे मूर्ख ! अपनी सास को मीरा या सावित्री समझ रक्खा है क्या जो सदेह स्वर्ग में ही चली जायेगी। पांच रुपए लगेंगे पांच रुपए।

सुब्बया — खूब कहा आपने भी। यह क्यों ?

शिष्य — टिकट का चार्ज है।

सुब्बय्या — जैसे रेल और बस वाले लेते हैं !।

शिष्य — बस, अधिक बकवास न करो.....।

रंगडु —लाजमी है दे दो सुब्बय्या।

सुब्बय्या — यह क्या बदकिस्मती ! जब तक जिन्दा थी मैंने पाला पोसा। अब मर कर भी नहीं छोड़ेगी क्या ? धत् तेरी सास की...।

(यह बात होती रहती है। धीरे से रामाराव बाहर खिसक जाता है।)

शिष्य — क्या शोर मचाया है ? बहुत से लोग बैठे हुए हैं तेरी वजह से देर हो रहा है। लाओ रुपए।

सुब्बय्या — मैं कहां से लाऊं रुपए मुझे बेच डालो।

शिष्य—(क्रोध से) अब तू चला जा .....।

सुब्बय्या — फिर तो मेरी सास वैकुंठ जाने के लिए रह गई न ! इतनी चाहती थी क्या बताऊ...। बहुत खर्च किये थे आखिर भुजाएं भी जलानी चाही थीं केवल इसीलिए।

शिष्य — मैं क्या करूं...? उसे तो नरक ही बदा था।

आचार्य— (शिष्य के कान में कुछ कहता है .....।)

शिष्य— तुझ पर आचार्य जी की कृपादृष्टि हुई है। तुम अपनी सास की दहनक्रिया आज कर दो और कल आकर पैसा दे दो। तभी आचार्य जी वकुंठ जाने का प्रबन्ध कर देंगे।

सुब्बय्या— जीते रहो बेटा... कहे रहो। कल परसों किसी न किसी तरह दे दूंगा। लेकिन यह बतादो कि तब तक मेरी सास की आत्मा को नरक जाने से बचाये रखोगे ना.....?

शिष्य— हां, जाओ.....।

(सुब्बय्या चला जाता है। बाद में कई लोग टिकट खरीद लेते हैं। रामाराव फिर प्रवेश करता है।)

रामाराव— (हाथ में ताड़ का पत्ता लेकर) अफसोस-अफसोस।

सब— बात क्या है.....?

(आश्चर्य से)

रामाराव— (साहस के साथ) सुनिये। अभी-अभी मैं बाहर गया था। मैं और ही धुन में जा रहा था। एकाएक आकर यह पत्ता मेरे सामने गिर पड़ा। हाथ में लेकर पढ़ते ही यह मालूम हुआ कि यह चिट्ठी हमारे श्री श्री वैकुंठाचार्य के नाम आयी है।.....

लेकिन कितना अफसोस.....कहते नहीं बनता ..... कल से ..... हमारा और ..... हमारे भाई श्री श्री आचार्य

[शेष पृष्ठ १७ पर]

विश्व-वंद्य महात्मा गांधी की नवीन पुस्तक

★ विद्यार्थियों से ★

प्रकाशित होगई जिसके बारे में श्री श्रीप्रकाश एम० एल० ए० केन्द्रीय ने निम्न सम्मति दी है—

"जैसी स्थिति इस समय देश की हो गई है और जैसी गलत-फहमियां फैलाई जा रही हैं, उनमें ऐसे ग्रन्थों का मूल्य और इनके अध्ययन की विशेष आवश्यकता है"।

सुन्दर जिल्द आकर्षक कवर, पृष्ठ-संख्या ३१५, मूल्य लागत मात्र ४ प्रति के खरीदारों को ६। प्रतिशत कमीशन।

कागज की दुर्लभता के कारण सीमित प्रतियां ही छपी हैं अतः शीघ्रता करें।

श्री गांधी-ग्रंथागार, चावड़ी बाजार, देहली।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आर्य जनता का विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी

शासन व्यवस्था में परिवर्तन की आवश्यकता

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

★

आज से ४० वर्ष पूर्व आर्यसमाज ने भारत के सर्वप्रथम राष्ट्रीय विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की थी। आज राष्ट्रीय युग का अनुकूल वातावरण पाकर भी वह क्यों उन्नति नहीं कर रहा, इसी पर गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता पो० इन्द्र जी ने अनेक आवश्यक परामर्श दिये हैं। आशा है, आर्यजनता विचार करेगी।

विश्वविद्यालय

साधारण पाठशालाओं तथा स्कूलों से विश्वविद्यालय को भिन्न और ऊंचा बनाने वाली विशेषताएं दो हैं। पहली विशेषता यह है कि पाठशाला एक छोटी और परिमित चीज है और विश्वविद्यालय एक विशाल और अपरिमित विस्तार की सम्भावना रखने वाली संस्था है। दूसरी विशेषता यह है कि साधारण शिक्षणालयों को अपनी पूर्णता के लिये अपने से किसी बड़ी संस्था का मुंह देखना पड़ता है, परन्तु विश्वविद्यालय अपने आप में पूर्ण होता है। वह किसी का परिशिष्ट नहीं होता, अन्य संस्थाएं ही उसकी परिशिष्ट होती हैं।

यदि ये दो विशेषताएं न हों तो किसी संस्था को विश्वविद्यालय के नाम से पुकारना विश्वविद्यालय शब्द का उपहासमात्र है। प्रगतिशील विशाल और स्वतन्त्र वातावरण के बिना कोई विश्वविद्यालय अपने लक्ष्य को पूरा नहीं कर सकता। यदि उसके हाथ-पांव बधे रहेंगे तो वह शिक्षा देकर जाति की भावी संतति को शिक्षित बनाने का कठिन और पवित्र काम कैसे पूरा कर सकेगा।

स्वतंत्र प्रबन्ध

संसार की सब प्रख्यात यूनिवर्सिटियों की प्रबन्ध-व्यवस्था पर दृष्टि डाल जाइये, आप देखेंगे कि वह अपने आप में पूर्ण और स्वाधीन संस्थायें हैं। यहां तक कि परतन्त्र भारत की यूनिवर्सिटियां भी अधिक अंशों में बाहर के प्रतिबन्धों से मुक्त हैं। उनके आन्तरिक प्रबन्ध पर बड़े से बड़े नैतिक या सामाजिक बाह्य परिवर्तन का कोई सीधा असर नहीं पड़ता।

विश्वविद्यालय का मुख्य लक्ष्य विद्या की उन्नति विद्या के प्रदान द्वारा राष्ट्र की संस्कृति की रक्षा और भावी संतति को शिक्षित बनाना है। यह कार्य ऐसी संस्थाएं ही कर सकती हैं, जो स्वतन्त्र रूप से अपने लक्ष्य की पूर्ति कर सकें। जिन संस्थाओं पर बाहर के नैतिक, सामाजिक या आर्थिक झोंके प्रभाव उत्पन्न कर सकें, वह विश्वविद्यालय जैसे महान नाम की अधिकारिणी नहीं रहतीं।

गुरुकुल की दूषित व्यवस्था

इस दृष्टि से देखें तो गुरुकुल की वर्तमान प्रबन्ध-व्यवस्था बहुत ही दूषित है। वस्तुतः विश्वविद्यालय एक साम्राज्य के समान है और सम्बद्ध शिक्षणालय उसके प्रान्त अथवा उपनिवेश कहला सकते हैं। गुरुकुल के वर्तमान विधान के अनुसार वह स्वयं एक उपनिवेश है। प्रबन्धव्यवस्था की दृष्टि से वह एक सम्बद्ध संस्था है, स्वतन्त्र विश्वविद्यालय नहीं।

आप वर्तमान शासन-व्यवस्था पर दृष्टि डाल कर देखिये। गुरुकुल का प्रबन्ध विद्यासभा के हाथ में है। विद्या सभा का चुनाव प्रतिवर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा में होता है। गुरुकुल का बजट भी सभा के वार्षिक अधिवेशन में स्वीकार किया जाता है। गुरुकुल विश्वविद्यालय का प्रबन्ध करने वाली विद्यासभा के अधिकारी वही होते हैं, जो आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी हों। स्वभावतः उनका चुनाव भी प्रतिवर्ष होता है। विद्यासभा का केन्द्र विश्वविद्यालय की भूमि में नहीं है, अपितु लाहौर में है। स्पष्ट है कि गुरुकुल एक स्वतन्त्र शासन की इकाई न हो कर एक स्वतन्त्र धार्मिक संस्था का अन्यतम परिशिष्ट है। आर्य प्रतिनिधि सभा के कई विभाग हैं। यथा वेद-प्रचार, शुद्धि, दलितोद्धार पुस्तकालय; इसी प्रकार गुरुकुल भी एक विभाग है।

मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूं कि संसार का कोई विश्वविद्यालय ऐसा नहीं हो सकता, जिसकी प्रबन्ध-व्यवस्था इस प्रकार की हो। जब गुरुकुल की स्थापना की गई थी, तब भविष्य में होने वाले विस्तार की पूरी कल्पना नहीं थी, उस समय के लिये वर्तमान विधान ठीक था। गुरुकुल एक पाठशाला से बढ़ता बढ़ता स्वतन्त्र विश्वविद्यालय के रूप में आ गया, परन्तु उसकी शासन व्यवस्था में आवश्यक परिवर्तन नहीं हो सके। इसी का परिणाम है कि गुरुकुल वस्तुतः विश्वविद्यालय नहीं बन सका और इस लिये बाहर के संसार ने उसे विश्वविद्यालय के रूप में स्वीकार करने में संकोच किया।

परिणाम

वर्तमान दोषयुक्त शासनव्यवस्था के कारण गुरुकुल के प्रबन्ध और दृष्टिकोण में जो निर्बलताएं आती हैं, उनमें से कुछेक निम्नलिखित हैं—

(१) वार्षिक चुनाव के कारण गुरुकुल के प्रबन्ध में आत्म विश्वास और स्थिरता का अभाव रहता है। वर्ष के अन्त में सब अधिकारियों के बदल जाने की सम्भावना होने से संस्था के प्रबन्धकों और कार्यकर्ताओं की मनोवृत्ति स्थिर नहीं होने पाती।

(२) सभा के चुनाव जिन बातों को ध्यान में रख कर किये जाते हैं, शिक्षा की योग्यता का उनमें बहुत गौण स्थान है। सभा के प्रधान, मन्त्री, खजान्ची आदि अधिकारी धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक आवश्यकताओं को दृष्टि में रख कर किये जाते हैं, उन पर प्रान्त की दलबन्दियों का भी असर होता है। शिक्षा के केन्द्र से इन सब बातों का सीधा कोई सम्बन्ध नहीं। एक विश्वविद्यालय का प्रबन्ध करने वाली सभा के सदस्य होने के लिये यह आवश्यक होना चाहिये कि उस का उस विश्वविद्यालय की नीति रीति पर विश्वास हो और शिक्षा को समझने की योग्यता हो। विद्यासभा के अधिकारियों और सदस्यों का चुनाव इस दृष्टि से नहीं किया जाता। सभा के अधिकारी ही विद्यासभा के अधिकारी माने जाते हैं सदस्य होने के लिये केवल इतना पर्याप्त है कि वह व्यक्ति सदस्यों के वोट इकट्ठे कर सके, यह कैसे सम्भव है कि ऐसी दोषयुक्त व्यवस्था के अनुसार प्रतिवर्ष चुने जाने वाली सभा एक विश्वविद्यालय का संचालन कर सके। ऐसी सभा का दृष्टिकोण ही विश्वविद्यालय के अनुकूल नहीं बन सकता। जब हमारा दृष्टिकोण ही दोषयुक्त है तो हमें यह आशा कैसे रखनी चाहिये कि बाहर की दुनिया गुरुकुल को एक साधारण शिक्षण संस्था न मान कर विश्वविद्यालय के रूप में अंगीकार करेगी।

लाहौर से संघर्ष

वर्तमान प्रबन्ध व्यवस्था का गुरुकुल के इतिहास पर जो विषैला असर होता रहा है वह उन लोगों को भली प्रकार विदित है जिनका गुरुकुल से सम्बन्ध रहा है। गुरुकुल का तापमान अपनी गरमी या सरदी से नहीं, अपितु लाहौर की गरमी या सरदी से निश्चित होता रहा। सबसे प्रथम मुख्याधिष्ठाता और आचार्य श्रीस्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज के गुरुकुल में अन्तिम वर्ष यदि कड़वे हो गये थे तो उसका कारण लाहौर से संघर्ष था। आचार्य रामदेवजी को गुरुकुल छोड़ना पड़ा, इसका कारण भी लाहौर की नाराजगी थी। पंडित चमूपति जी को भी बड़ा धक्का सभा के चुनाव का ही लगा। १९४२-४३ में गुरुकुल में जो विक्षोभ रहा, उसका बीजारोपण भी सभा के वार्षिक चुनाव में ही हुआ था। यह गुरुकुल के दुर्भाग्य की बात है कि उसके भाग्यों का निर्णय सभा के वार्षिक चुनाव पर होता है और वह चुनाव केवल गुरुकुल को लक्ष्य में रख कर नहीं होता। चुनाव प्रान्त में चलते हुये अन्य अनेक व्यक्तिगत और सामाजिक धाराओं का परिणाम होता है जब तक गुरुकुल का शासन विधान इसी प्रकार का रहेगा, तब तक यह आशा रखना बिल्कुल व्यर्थ है कि वह एक विश्वविद्यालय का रूप धारण कर सकेगा। यदि गुरुकुल को विश्वविद्यालय बनाना है, तो उसकी प्रबन्ध व्यवस्था में निम्नलिखित परिवर्तन करने में विलम्ब नहीं होना चाहिये।

आवश्यक सुझाव

(१) गुरुकुल का प्रबन्ध करने वाली विद्यासभा अन्य विश्वविद्यालयों की प्रबन्धकर्त्री समितियों के समान सर्वथा स्वतन्त्र संस्था होनी चाहिये, जिसका आर्य प्रतिनिधि सभा के वार्षिक चुनाव से कोई सम्बन्ध न हो।

(२) उसकी सदस्यता के लिये केवल वोट प्राप्त करने की योग्यता ही पर्याप्त न समझी जाये। गुरुकुल-प्रेम, शिक्षा सम्बन्धी योग्यता और अनुभव तथा गुरुकुल के लिये उपयोगिता को मुख्य स्थान दिया जाये।

(३) आर्यसमाज और प्रतिनिधि सभा से सम्बन्ध रखने के लिये यह उपयोगी हो सकता है कि सभा का प्रधान अपने पद के अधिकार से विद्यासभा का भी प्रधान हो, परन्तु इसके अतिरिक्त सभा का अन्य कोई अधिकारी अपने अधिकार से विद्यासभा का अधिकारी नहीं होना चाहिये।

(४) विद्यासभा का केन्द्र स्थान गुरुकुल में होना चाहिये। एक विश्वविद्यालय की समस्याओं को हल करने का स्थान विश्वविद्यालय है, उससे सैकड़ों मील दूर बसा हुआ ऐसा नगर नहीं, जो सरकारी विश्वविद्यालयों का प्रधान केन्द्र होने के कारण गुरुकुल के दृष्टिकोण को समझने में असफल हो।

यदि हम चाहते हैं कि गुरुकुल एक स्वतन्त्र विश्वविद्यालय के रूप में विकसित

हो तो हमें उसके विधान को स्वतन्त्र करने में विलम्ब न करना चाहिये। मैंने इस लेख के आरम्भ में विश्वविद्यालय की साम्राज्य से उपमा दी है। यदि उसे साम्राज्य न मानकर एक ही उपनिवेश मानें तो आजकल उपनिवेशों की समस्या भी उपनिवेशों में ही हल करने का रिवाज है। उनके भी शासनकेन्द्र देश में ही होते हैं, देश के बाहर नहीं। गुरुकुल का केन्द्र गुरुकुल में न होने के कारण उसका विकास रुकता रहा है। एक दिशा में चार कदम आगे चलने पर यदि मई की हवा का झोंका आ गया तो आठ कदम पीछे हट जाना पड़ता है। सब से पुराना स्वतन्त्र और राष्ट्रीय विश्वविद्यालय होने का दावा करता हुआ भी गुरुकुल यदि आज पिछड़ा हुआ दिखाई देता है, तो उसका यही कारण है कि वह स्वतन्त्र रूप में विकसित नहीं हो सका।

सभा ने एक 'गुरुकुल सुधार समिति' बनाई है। वह लाहौर में बड़ी तत्परता से अपना कार्य कर रही है। सभा का उद्देश्य बहुत अच्छा है, परन्तु मैं सुधार सम्बन्धी वर्तमान प्रयत्न से सफलता की आशा नहीं रखता। मुझे प्रतीत होता है कि इस प्रयत्न में भी वे सब न्यूनतायें आ जायेंगी, जो अब तक के प्रयत्नों में आती रही हैं। सब से पूर्व मौलिक परिवर्तन होना चाहिये। उसके परिवर्तन से गुरुकुल का दृष्टिकोण स्पष्ट हो जायगा। दृष्टिकोण में स्पष्टता आये बिना न तो सुधार की दशा ही ठीक प्रकार से निश्चित हो सकती है और न उसकी मात्रा ही।

'सुधार समिति' से मेरा निवेदन है कि वह अन्य प्रश्नों पर लोकमत का संग्रह करती रहे। परन्तु विधान परिवर्तन के प्रस्ताव को स्वीकार करके सभा के सामने उपस्थित कर दे। विधान परिवर्तन का कार्य ऐसा सरल नहीं कि झटपट किया जा सके। पहले उस पर विद्यासभा को विचार करना होगा, फिर आर्य जनता को सम्मति बनाने का अवसर देना आवश्यक होगा और अन्त में उसे आर्यप्रतिनिधि सभा में दो तिहाई बहुमत से स्वीकार कराना होगा। इस मौलिक सुधार का बीजारोप अभी से किया जायेगा, तब यह सम्भावना हो सकती है कि मई के अन्त तक कुछ फल निकल सके।

मैंने पंजाब की आर्य जनता के सामने अपना प्रस्ताव सर्वथा स्पष्टरूप में रख दिया है। मैं यदि यह कहूं कि प्रारम्भ से आजतक का गुरुकुल का आन्तरिक और बाह्य इतिहास जितना मुझे मालूम है, उससे अधिक किसी को मालूम नहीं होगा, तो मुझे आशा है कि मेरे कथन को अत्युक्तिपूर्ण न समझा जायेगा। बाह्य जगत में गुरुकुल से सहानुभूति रखने वाले जो महानुभाव हैं उनकी सम्मतियों की भी मुझे पर्याप्त जानकारी है। आर्य जनता को विश्वास दिलाने के लिये मुझे कुछ अधिक शब्द लिखने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती कि मेरे प्रस्ताव का उद्देश्य गुरुकुल को एक विशाल विश्वविद्यालय के रूप में लाना, राष्ट्रीय सरकारों और अन्य यूनिवर्सिटियों से उचित आदर दिलवाना, और एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था बनाना है। मैं इस आशय का प्रस्ताव गुरुकुल सभा के मन्त्री की सेवा में भेज रहा हूं। मैं उनसे प्रार्थना कर रहा हूं कि वे इसे पूरी रिपोर्ट के साथ देने के लिये स्थगित न कर के सब से प्रथम स्वीकार कर लें और विद्यासभा के पास सर्वप्रथम सुधार के रूप में भेज दें।

———

स्त्री को श्वेत प्रदर

स्त्री को श्वेत पानी की बीमारी भयानक होती है। इस बीमारी को ल्युकोरिया भी कहते हैं। इस बीमारी से पीड़ित होने वाली स्त्री के गुप्त शरीर से समय असमय श्वेत रङ्ग का बदबूदार पानी या लेस निकलता है और धीरे-धीरे उस स्त्री के यौवन को समाप्त कर देता है। उसकी कमर, नाफ, नले, पेट, बल्कि सारे शरीर में दर्द होने लगता है। माहवारी अर्थात् मासिक धर्म भी खराब हो जाता है। यह रोग बड़ा भयानक है। स्त्रियों को इसमें लापरवाही नहीं करनी चाहिए।

श्वेत पानी को रोकने की विधि

नवयुग की जांच से अब पूरी तरह साबित हो चुका है कि इस श्वेत पानी की बीमारी को समूल नष्ट करने की सबसे बढ़िया विधि यह है कि बीमार स्त्री को केवल एक शीशी औषधि 'रोक' सेवन करा दी जाय। इस औषधि के सेवन से ठीक तीसरे दिन श्वेत पानी की बीमारी बिल्कुल ठीक हो जाती है। हजारों वद्य, डाक्टर, हकीम इस औषधि को रोगियों पर सेवन कराके ख्याति प्राप्त कर रहे हैं। यदि आवश्यकता हो तोः—

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४, दिल्ली

के पते पर पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा औषधि 'रोक' की एक शीशी मंगा लीजिये। एक शीशी का मूल्य ३) तीन रुपया डाक व्यय ॥-) आना है। हर धर्म की स्त्रियां सेवन कर सकती हैं।

फोटो कैमरा मुफ्त

यह कैमरा सुन्दर नमूने का सफाई से बना हुआ बिना किसी कष्ट के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है। इसका प्रयोग सरल है यही सही काम करता है और शौकिया काम लेने वाले व व्यवसायी दोनों ही इससे काम ले सकते हैं। यह कीमती मनोहर कैमरों में से है, जो थोड़े ही मूल्य का है। यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और रुपया कमावें। मूल्य बक्स कैमरा पूरा, तमाम फिल्म काड, कैमीकल, सरल प्रयोग सहित नं० ५०१ कीमत ५॥।) वेस्ट, क्वालिटी, नं० ५४५ कीमत ७।), डी लक्स एक्स्ट्रा स्पेशल क्वालिटी नं० ५५० कीमत ६॥), फोल्डिंग नं० १००, कीमत ४५), पैकिंग व डाक व्यय १=) नोट — एक समय में ६ कैमरों के ग्राहक को कैमरा नं० ५५० मुफ्त। स्टाक सीमित है। अभी आर्डर दें अथवा निराश होना पड़ेगा। माल पसन्द न होने पर कीमत वापिस।

इम्पीरियलचैम्बर आफ साईन्स (V.W.D.) पो० बौ० ६१, लाहौर

Imperial Chamber of Science, (V.W.D.) P. B. 61, Lahore.

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हमारा धारावाही उपन्यास

गंगा जल

[ले०— श्री इन्द्र बसावड़ा]

विधवा शोभा अपना अन्धकारमय भविष्य देखकर काली रात में जङ्गल की ओर प्राणत्याग के लिए गङ्गा के तट पर चली गई। उसके भाई अनिल ने करुणा को साथ लेकर उसको खोज लिया। शोभा के ताऊजी भी उसे लेने वहां पहुंच गये। पर उसे लेजा सकने में असमर्थ रहे और क्रुद्ध होकर लौट गये। शोभा के श्वशुर शिरीष बाबू भी वहां पहुंच गये।

[गतांक से आगे]

शिरीष बाबू शोभा के पास एक टूटे स्टूल पर बैठे थे और उनके पास ही एक चटाई पर गोविन्दा महाराज हुक्का गुड़गुड़ाते इधर-उधर की गप्पें लड़ा रहे थे।

शोभा सो गई, ऐसा मालूम होता था।

ताऊजी के विषय में, दोनों वृद्धों ने एक शब्द भी नहीं कहा। केवल शास्त्रों और पुराणों की ही बातें करते रहे। किस तरह शबरी के झूठे बेर रामजी ने खाये थे; अरण्य में, गोदावरी के किनारे, झोंपड़ी में रहते रामजी ने सीताजी को मृग के पीछे पागल न बनने को किस रीति से समझाया था; रावण भी. शंकर का कैसा भक्त था, शंकर और पार्वती के बीच कैसा स्नेह था, इन्द्र के सिंहासन के लिये बलिराजा ने कैसी मुसीबत उठाई थी। कांचन और कामिनी ने कैसी रीति से बड़े बड़े मुनियों का तप भंग किया था— ऐसी-ऐसी अनेक बातें दोनों वृद्ध महाशय कर रहे थे। बीच-बीच में 'नारायण-नारायण' की ध्वनि और हुक्के की गुड़गुड़ाहट इन सब बातों की मानों साक्षी देती थी।

जब करुणा भीतर गई तब गोविन्दा महाराज बोल रहे थे — 'हां तो, भगीरथ राजा गंगा माता को स्वर्ग में से लाया न होता तो फिर सगर के पुत्रों को मोक्ष मिलती ही कैसे ?'

'ओह ! बिस्तर करने हैं बहन ?' करुणा को दरी हाथ में लिए खड़ी देख कर शिरीष बाबू बोले।

'जी हां।'

'लाओ मां, लाओ ! हम किस लिए हैं- हम कर देंगे।'— गोविन्दा महाराज बोले।

'नहीं, मैं ही कर दूंगी न।'

'ऐसा भी हो सकता है ?' गोविन्दा महाराज बोले और बिछौने बिछाने लगे।

'लाओ मैं दूसरी कोटरी में बिस्तर लगाऊं।' ऐसा कह शिरीष बाबू दूसरे कमरे में चल दिये।

बिस्तर लगाने में जब गोविन्दा महाराज मदद कर रहे थे तब करुणा इनकी सादगी पर विचार कर रह थी— 'आज दो दिन से इतने सारे आदमी उनके यहां पड़े कुहराम-सा मचा रहे हैं, पर इनके मुख पर जरा भी संकोच अथवा मलिनता देखने में नहीं आती।

बिस्तर करने के बाद करुणा ने बाहर आकर पूछा—

'आतो हो न जीजी !

'यह आई। जरा पानी का घड़ा अभी भरना है, उसे भर लाऊं।'— राधा बोली।

करुणा ने देखा— अनिल बाबू कोठरा म नहीं थे। कहां होंगे ? उसने विचारा— होंगे यहीं कहीं— और सारे दिन वह काम में लगी होने से थकान के कारण बिस्तरे पर लेट गई, पर उसे नींद नहीं आई। आज सन्ध्या से इतनी रात तक की सारी घटनायें उसकी आंखों के सामने तैरने लगीं। शाम को वह और अनिल बाबू घूमने गये थे, वहीं तो मार्ग में ताऊजी की मोटर आई। अनिल बाबू उनके साथ बातों में लग गये और वह घर की तरफ चली आई।

और अनिल बाबू के आने के बाद जब उसने सुना कि ताऊजी शोभा को ले जाना चाहते हैं और अनिल बाबू किंकर्तव्य विमूढ़ की तरह कुछ बोलते भी नहीं थे, तब उसे अत्यन्त आश्चर्य हुआ था। ऐसा क्यों ? अनिल बाबू शोभा को चाहते हैं, शोभा के प्रति स्नेह रखते हैं और इतना होने पर भी ताऊजी को साफ-साफ कह नहीं देते कि ताऊजी तुम कहते हो वह अशक्य है, यह हो नहीं सकता। अनिल बाबू इस तरह मौन क्यों हो गये ?

और इन्हीं विचारों में वह बिस्तर पर लेटने लगी। सोने का यत्न करने पर भी उसे नींद नहीं आई। जाने क्यों उसका आदर्श नीचे गिर रहा हो, ऐसा उसे लगने लगा। यह अनुभव मानो उसे पहले ही हो गया हो, ऐसे उसका चित्त विह्वल हो उठा। क्या कारण है ? मन में ये विचार तथा विह्वलता !

छिः छिः ऐसे विचार आते ही किस लिए हैं— वह बोल उठी और करवट ले सोने का प्रयत्न करने लगी।

थोड़ी देर बाद उसे विचार आया, जाऊं तो अनिल बाबू कहां हैं। देखूं तो सही ? पर फिर न जाने क्यों वह वहीं बिछौने में पड़ी रही।

अनिल का मन अस्तव्यस्त था। एक अज्ञात अन्तर्वेदना से वह पीड़ित था। जब उसे कुछ भी अच्छा न लगा तब वह गंगा के किनारे आ बैठ गया। उसने देखा, पास ही एक बड़ी चट्टान है। उसके पास ही एक लम्बी सी शिला, गंगा के जल को भेदती आगे बढ़ गई है। अनिल को लगा— बस यही स्थान बैठने योग्य है। वह वहां से उठा और शिला पर जाकर बैठ गया। कल-कल करता गंगा का जल बह रहा था और शिला से टकरा, एक तरफ बह जाता था। थोड़ी देर में वायु भी चलने लगी। शिला पर बैठा बैठा अनिल विचारों में ऐसा तल्लीन हो गया कि उसे आसपास का कुछ भी ज्ञान नहीं रहा। आकाश में चमकते तारों का प्रतिबिम्ब पानी में पड़ रहा था। गंगा की लहरें तारिकाओं को अपने अंचल में छिपाती हुई जैसे माता बालक को लाड कर के उठा ले जाती है, उसी प्रकार मानो ले जाना चाहती थी। आसपास की झाड़ियों में से झिल्लियों का स्वर भी सुनाई देता था। सारा गांव समाधि में पड़ा हुआ शांत था- जुगनू आसपास चमक उठते थे।

पर प्रकृति के इस सुन्दर दृश्य को देखने, उसमें से आनन्द लेने जैसी मनोस्थिति अनिल की आज नहीं थी। आज तो वह चाहता था कि कोई उसके पास आवे, उसके साथ बातचीत करे। और उससे पूछे— 'अनिल बाबू ! क्यों बैठे हो शान्त ? क्या सोओगे नहीं ?' अनिल ने विचारा— आज हृदय में ऐसी इच्छा क्यों ? किसी दिन भी अनुभव न की हुई यह मनोदशा और बेकली क्यों ? इतनी निर्बलता किस लिये ?

फिर भी वह अपनी भावना और लगन पर काबू नहीं पा सका।

रात्रि के सारे दृश्य उसकी आंखों के सामने आकर नाचने लगे।

ताऊजी के दुर्व्यवहार के सामने वह एक क्षण भी नहीं लड़ सका। उनके सामने मोर्चा नहीं ले सका। इन सबका अर्थ करुणा ने क्या लगाया होगा ? और क्या विचारा होगा ? अनिल बाबू ऐसे साहसी हैं ?

और इस विचारसे उसके मन पर चोट लगी। एक अपरिचित लज्जा के आवरण ने उनके हृदय और आत्मा को आच्छादित कर दिया वह सोचने लगा— करुणा यहां आवे, उसके पास बैठे— उसे सांत्वना दे और सब भूल कर उससे कहे— 'अनिल बाबू ! कुछ नहीं, यह तो जीवन है इसमें निर्बलता भी आती है। इसमें लजाने की कोई आवश्यकता नहीं।'

पर करुणा आई नहीं। उसका मन अधिकाधिक क्षोभ अनुभव करने लगा।

एकाएक घड़ा भर रहा हो, ऐसी ध्वनि और इसके बाद उनके कानों में मधुर शब्द पड़े— 'अनिल बाबू !'

'हां, राधा ?'

'हां !'

'क्या करती हो !'

'घड़ा भर रही हूं, यहां बैठे हो ?'

'हां।'

'क्यों ?'

'बस, जरा·····'

'नींद नहीं आती ?'

'हां, अभी नहीं आती।'

'क्यों ?'

'बस·····'

राधा अधिक नहीं बोली। घड़ा भर कर वह जाने लगी।

अनिल ने कहा—'यहीं आती हो क्या ?'

'आती हूं' राधा बोली।

पर हां करने के बाद उसे लगा—रात के बारह बजे जब लगभग सभी सो गये हैं वह अनिल के पास कैसे जाय ? घड़ा भोजनालय में रख बाहर आ वह सोच-विचार में पड़ गई।

थोड़ी देर पीछे वह आगे चलने लगी। कुछ दूर जाकर फिर ठहर गई। एक आवेश और तूफान उसके अन्तस्थल में व्याप्त हो गया।

अन्त में वह आगे बढ़ी और अनिल बैठा था; उस किनारे पर आकर खड़ी हो गई। अनिल ने उसे देखा। 'राधा !' उसने पुकारा।

'अनिल बाबू !'

'आओ न !'

राधा वहां चली गई। अनिल ने कहा—'बैठो।'

राधा बैठ गई।

पर आगे क्या बोले यह किसी को नहीं सूझा। राधा को अपना विगत जीवन एकाएक याद आ गया। वे ही हैं ये अनिल बाबू हैं, जिनको वह चाहती थी। आज वे ही सामने बैठे हैं। रात्रि के इस समय, इस शून्य स्थल में, कल-कल निनादनी गंगा के पास, जोर से बहते प्रवाह के सम्मुख, वह अनिल के पास बैठी है। युगों-युगों से मानो संचित करके रक्खा हुआ यौवन, उसकी सारी लालसायें और पिपासा मूर्तिमान होकर उसके सामने आ खड़ी रहीं।

अनिल को लगा-मानों राधा कांप रही है। उसके शरीर में एक कंपकंपी आकर चली गई। 'राधा यह क्या ?' राधा मन में विचार करती है और अपने हृदय के वेग को मानो संभाल रखने का प्रयत्न करती है।

'राधा !' अन्त में वहां की शांति भंग करता अनिल बोला।

पर राधा एक शब्द भी नहीं बोली।

'उस दिन की बात याद है ?'— अनिल ने पूछा।

तब भी राधा मौन रही।

'तुमने तो जाने क्या का क्या विचारा होगा कि यह अनिल भी विचित्र व्यक्ति है, रात भोजन के लिये आने को कहकर खाये बिना ही चलता बना। तुम ने तो अपने मन में मुझे गालियां भी दी होंगी !'

फिर भी राधा चुप रही।

'पर तुम मेरी जगह होतीं तो कदाचित कहने भी नहीं आतीं, मैं तो तुमसे कहने तो आया था; पर तुम तो मुंह से बताये बिना ही पलायन कर आयीं।'

इन शब्दों ने मानो राधा के हृदय पर चोट की, एकाएक उसकी आंखों में से पानी गिरने लगा।

'अरे, तुम रोती हो?' अनिल राधा के पास आकर बोला—

क्यों? मेरे कहने से तुमको बुरा लगा?'

पर इन शब्दों से राधा की आंखों में से आंसुओं की झड़ी लग गई।

अनिल तो देखता ही रहा—'यह क्या? हंसी में कही हुई बात का यह फल?'

'राधा!, राधा के कंधे पर अपना हाथ रख कर अनिल बोला।

'क्यों! रोने का कारण?' एक क्षण अनिल वैसे ही बैठा रहा।

थोड़ी देर पश्चात वह बोला—'यह सब कहा तो तुम्हारे मन को दुखाने के लिये नहीं राधा।'

'मैं यह थोड़े ही कहती हूं।' आखिर राधा बोली पर .....'

और इसके बाद फिर से उसके नेत्रों से अश्रु बहने लगे।

अनिल ने समझा कि अधिक कुछ बोलना अब योग्य नहीं। वह भी वहीं चुपचाप बैठा रहा। एक शब्द भी न बोला।

राधा भी मौन बैठी रही। अनिल के हाथ का स्पर्श मानों उसे सुखकर लगने लगा। उसे लगा काश यह क्षण ही युग-युग सा हो जाय!

फिर एकाएक लज्जा ने उसके मन को घेर लिया। उसका यह व्यवहार उचित है? छिः छिः राधा! यह क्या?

वह एकाएक बोल उठी — 'अनिल बाबू!'

'हां।'

'देर हो गई है—चलो, सो जाओ।'

'चलो।' अनिल ने कहा और वह उठा।

राधा भी उठी।

दोनों शोभा की कोठरी में आये। करुणा सो गई थी। शोभा की खाट के पास आकर अनिल ने देखा कि उसे नींद आ गई है।

करुणा शोभा की खाट के पास ही जमीन पर सोई हुई थी। उसके पास के बिछौने पर राधा लम्बी लेट गई। उससे थोड़ी दूर पर अनिल का बिस्तर था।

बिस्तर पर बैठ, प्रार्थना कर, अनिल लेट गया। पास-पास ही, अलग-अलग बिछौनों में पड़े हुए दो व्यक्तियों के हृदयों में कैसा तूफान चल रहा था; पर तूफानों के ध्येय सर्वथा भिन्न थे।

अन्त में राधा सो गई। अपने हृदय की सम्पूर्ण लहरों को दबा मन ही मन में, राम का नाम रटती; रामायण की चौपाई को अपनी सहायता के लिए पढ़ती राधा निद्रा में डूब गई।

[अनु० मृदुल] —क्रमशः

स्त्री की कमर टूट जाती है

अगर स्त्री का मासिक धर्म ठीक समय पर न आये या मासिक के दिनों में दर्द हो या माहवारी कम या ज्यादा आती हो तो इस तकलीफ से स्त्री की कमर में बहुत दर्द होता है। ऐसी को एक शीशी दवा कोरस सेवन करा देनी चाहिए। इस दवा के खाने से मासिक धर्म की सब खराबी ठीक हो जाती है। फिर हर महीना बिना किसी कष्ट के ठीक मात्रा में मासिक धर्म होने लगता है। हजारों स्त्रियाँ इस दवा से लाभ उठा रही हैं। एक शीशी दवा कोरस की कीमत दो रुपया आठ आना २॥) है। नीचे लिखे पते से पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा मंगा लीजिए।

पारसल खर्च ॥-) लगेगा।

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना

हिन्दी आफिस नं० ३४, दिल्ली!

फिल्म स्टार

बनने के इच्छुक शीघ्र लिखें, कुछ पढ़ा होना आवश्यक है।

रंजीत फिल्म आर्ट कालेज 18। रावीरोड (V. D.) लाहौर।

श्वेतकुष्ट वनौषधि

महात्मा प्रदत्त श्वेतकुष्ट (सफेदी) की दवा से तीन दिन में पूरा फायदा। यदि सैकड़ों हकीमी, डाक्टर, वैद्यों, विज्ञापनदाताओं की दवा से निराश हो चुके हो तो इसे लगा कर आराम होवें। १५ दिन की दवा का मूल्य २॥)।

सफेद बाल काला

इस तेल से बालों का पकना रुककर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे तो दूना मूल्य वापसी की शर्त लिखा लें। यह तेल सिर के दर्द व सिर में चक्कर आना आदि को आराम कर आंख की रोशनी बढ़ाता है। एकाध बाल पका हो तो २॥) आधा पका हो तो ३॥) और कुल पका हो तो ५) का तेल मंगवा लें।

एजेन्टों की हर जगह आवश्यकता है।

स्तम्भक वटी

एक गोली शाम को खाने से आश्चर्यजनक स्तम्भन करती है। मूल्य १६ गोली १), ६५० गोली २॥), १०० गोली ५) रु०।

पता—अखिलकिशोर राम

नं० १०७ कतरीसराय [गया]

पेनूलाइन वर्क्स

का

आश्चर्यजनक नवीन आविष्कार

वर्थ कन्ट्रोल VETO मलहम

इस दवा की ज्यादा तारीफ नहीं की जा सकती। यह दवा खाने या अन्दर लगाने की नहीं है केवल नाभी पर लगाने से ही गर्भ की रुकावट हो जाती है। किसी किस्म का कोई कष्ट या नुकसान नहीं होता। आपको पूर्ण सन्तोष होगा - मंगा कर परीक्षा कीजिये। १५ बार के प्रयोग के लिए दवा मू० ४) डाकखर्च व पेकिंग ॥=) आना। सारे भारत के सोल एजेण्ट—

ए०एस के० कसेना, रंगमहल (एडी) अलीगढ़ सिटी।

आत्मरक्षा

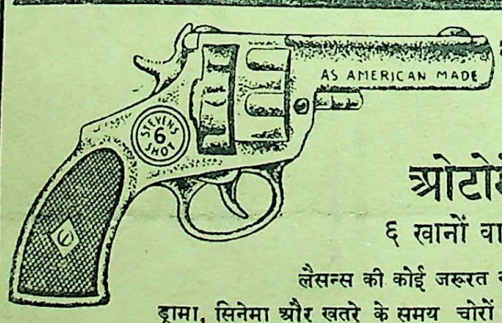

ओटोमेटिक

६ खानों वाली पिस्तौल

लैसन्स की कोई जरूरत नहीं

ड्रामा, सिनेमा और खतरे के समय चोरों को डराने के लिये बड़े काम की है। दागने पर पिस्तौल के मुंह से आग और धुंआ निकलता है। असली रिवाल्वर की तरह मालूम होती हैं। साइज ७॥ इंच×४ इंच और वजन १५ औंस। मूल्य ८) और साथ में १ दर्जन गोलियां (एलार्म डिस्क) मुफ्त। अतिरिक्त १ दर्जन गोलियों का दाम २)। स्पेशल तांबे की बनी ६६६ नं० की पिस्तौल का दाम १०)। वेस्ट के साथ केस २॥), पोस्टेज और पैकिंग का अतिरिक्त १=)। प्रत्येक आर्डर के साथ १ शीशी रिवाल्वर का तेल मुफ्त।

नापसंद होने पर दाम वापस

इम्पोरियल चैम्बर आफ साइंस (V. W. D.) पो० बो० ६१ लाहौर

Imperial Chamber af Science (V.W.D.) P.B.61. LAHORE

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लेबर एम्प्लायमैन्ट एक्सचेंज

महासमर के कारण उद्योगों में मजदूरों का अभाव हो गया। प्रत्येक व्यक्ति युद्ध में जाने के लिए उतावला हो उठा। कुछ धन्धों में तो पुरुष के स्थान पर स्त्री से काम निकाल लिया लेकिन लोहे से टक्कर लेने की ताकत अभी तक स्त्रियों में नहीं आई और इसी से बहुत-सी मिलों में कम उत्पादन से ही संतोष कर लिया। किन्तु अब जमाना बदल गया है और आदमी धड़ा-धड़ लड़ाई से वापस आ रहे हैं। लड़ाई से वापस आने वालों को भूखों मरने से बचाने का भी नैतिक दायित्व सरकार का था और इसी से हाल में एम्प्लायमैन्ट एक्सचेंज जैसी एक जंजीर मिल-मालिक और कारीगर के बीच में डाल दी गई। जिस कारीगर को जगह की जरूरत हो, वह वहां नौकरी दिलाऊ दफ्तर में जाकर लिखवा दे और जिस मिल को आवश्यकता हो वह भी अपनी कारीगरों की मांग अपने लेबर अफसरों द्वारा दफ्तर पहुंचवा दें। इस प्रकार दोनों की स्वाभाविक सहायता होने लगी यद्यपि यह विभाग अभी खुला है, तो भी काफी प्रगति हो चुकी है।

वापसी और नागा

यद्यपि हमने ऊपर बदली कन्ट्रोल सिस्टम का संक्षिप्त विवेचन किया है तो भी यहां हम वापसी के बाबत और भी साफ तौर से कुछ लिख देना चाहते हैं। नागा और वापसी दो चीजें बहुत ही साफ और जाहिर है। कारीगरों को सुविधा देकर इतना स्थायी बनाने की चेष्टा करनी चाहिये कि वे मिल से जाने का नाम ही न ले। रायल लेबर कमीशन ने दुःख प्रकट करते हुए लिखा था कि प्रति मास ५ प्रतिशत नये आदमी ले लिये जाते हैं। ज्यादा रद्दो बदल से मालिक और मजदूर दोनों को ही क्षति पहुंचती है। साधारणतौर पर मैंने अनुभव किया है कि कारीगरों के त्याग पत्र (१) कम वेतन (२) अनुचित व्यवहार (३) कार्य के प्रति अप्रीति (४) अच्छे वेतन पर अन्य मिलों से बुलावा (५) अथवा गृहस्थ के साथ न होने के कारण ही आते हैं। बहुत से कारीगर मिल की ओर से भी पृथक कर दिये जाते हैं। हिसाब प्रायः तीन कारणों से ही दिये जाते हैं–

१. स्वास्थ्य खराब हो जाने के कारण।

२. किसी अनुचित व्यवहार के कारण।

३. कार्य में सिद्धहस्त न होने के कारण।

किसी भी जातू कारीगर को १४ दिन का नोटिस या १३ दिन का वेतन देकर बरी किया जा सकता है। बदली कारीगर के लिए कोई बन्धन नहीं है। हां यह अवश्य है कि नौकरी से हटाने के दूसरे दिन ही हिसाब दे दिया जावे तो अच्छा हो। मेरे विचार से निम्न दशाओं में पूरी जांच के बाद हिसाब दिया जा सकता है—

१. जान बूझकर किसी आज्ञा की अवहेलना करना।

२. बिना सोचे-विचारे अनियम पूर्वक हड़ताल कर बैठना।

३. हड़ताल के लिए अपने आप या दूसरों को भड़काना।

४. कम्पनी की किसी चीज को चुराना।

५. किसी प्रकार की रिश्वत लेना।

६. बराबर नागा करते रहना अथवा अपने कार्य में दिलचस्पी न लेना।

नागा क्यों ?

अब प्रश्न यह रह जाता है कि हम यह भी विचार देखें कि हमारे कारीगर भाई नागा क्यों लगाते हैं और हम उनकी नागा किस प्रकार रोक सकते हैं। सी० पी० की खानों में नागा तीन कारणों से लगती है — (१) खेती के कारण या शादी ब्याह के कारण ७५ प्रतिशत (२) शराब आदि के कारण २० प्रतिशत और — (३) बीमारी के कारण ५ प्रतिशत। बिहार की जूट-मिलों में जून से लेकर दिसम्बर तक सबसे अधिक नागा लगती है। बम्बई लेबर विभाग ने एक बार नागा लगाने वालों के आंकड़े तैयार किए हैं वे 'लेबर इन-इण्डिया' के ४६६ वें पत्र पर दिये हैं और निम्न प्रकार हैं—

अहमदाबाद	५. १८
बम्बई	१३. ६८
शोलापुर	१५. २८

डा० राधाकमल मुखर्जी ने खानों के अन्दर काम करने वाले कारीगरों की नागाअ का विवेचन करते हुए लिखा है कि इसके ये कारण हो सकते हैं —

(१) खेतीहर व्यक्तियों का प्रवेश– जो कि खेती की फसल आते ही वापिस चले जाते हैं।

(२) शराबखोरी

(३) वेतन की कमी

(४) मजदूरों की बहुतायत

'नागा' के आंकड़े तैयार करने के विचार से कई बार इनक्वायरी कमेटियां बैठाई गई हैं। इसके कारण यह भी हो सकते हैं।

(१) बीमारी या चोट के कारण

(२) छुट्टी न मिलने के कारण

(३) त्यौहार आदि के कारण

(४) आने-जाने की असुविधा के कारण।

(५) रातपाली के कारण

(६) मन चले नौजवान बर्सात के दिनों में छुट्टी मना लेते हैं!

(७) गांव जाने के कारण या आरामतलबी में आकर।

और भी बहुत से कारण हो सकते हैं अतएव प्रत्येक मिल मालिक को चाहिये कि वह जांच करावे और फिर उन्हें रोकने की पूरी चेष्टा करे। नागा रोकने के लिए निम्न उपाय करने चाहिए—

(१) छुट्टी अनिवार्य रूप से आवश्यकता पड़ने पर ही ली जानी चाहिये।

(२) त्यौहारों के अवसरों पर अवकाश का सुचारु प्रबन्ध होना चाहिये।

(३) बीमारी के दिनों में सवैतनिक अवकाश सर्विस का विचार रखते हुए मिलना चाहिये।

(४) ज्यादा हाजिर रहने वालों को विशेष पुरस्कार मिलना चाहिये ताकि कारीगरों में अधिकाधिक कार्य करने की भावना जाग्रत हो और नागा कम लगें।

कारीगर के सुख और दुःख का अधिकांश भार लेबर आफीसर की योग्यता पर निर्भर है। वह कारीगरों के मनोविज्ञान को समझने वाला, सत्यनिष्ठ, शान्त और दत्तचित्त समाजसेवी होना चाहिये तभी यह सम्भव है कारीगरों का वास्तविक सुख मिल सके। यह सुनने में आ रहा है कि क्योंकि अधिकांश लेबर आफीसर मिलमालिकों के अपने ही आदमी होते हैं और वे कारीगरों का अधिक ध्यान नहीं रखते। अतएव अब लेबर आफीसरों की नियुक्ति सरकार द्वारा हुआ करेगी। देखें भविष्य क्या लाता है!

मिलों में कारीगरों की भर्ती

[श्री एस० मिलिन्द]

संतान होने की दवा

जिस स्त्री के सन्तान न होती हो केवल ७ रात तक मशहूर दवा मुझाफिज औलाद खिलाओ। इन सात रात में स्त्री के बदन के अन्दर का हिस्सा ठीक ऐसी हालत में आ जाता है कि आठवीं रात ..... स्त्री को गर्भ रह जाता है। इस औषधि की वजह से आज हजारों बहिनों की गोद में बच्चे खेल रहे हैं। जिस स्त्री को सन्तान न होती हो वह नीचे के पते पर पत्र लिख कर दवा मुझाफिज औलाद की शीशी वी० पी० पार्सल द्वारा मंगालें। १ शीशी काफी है जिसका मूल्य दो रुपया आठ आना २॥) है पारसल पर ॥–) महसूल लगेगा।

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४ देहली

महान वाजीकरण व परमपौष्टिक

अनंगप्रभा शाकुती

शक्तियों का हद से ज्यादा उपयोग करने से, वृद्धावस्था से, अथवा किसी भी कारण से आई हुई कमजोरी दूर करती है, पतली धातु को गाढ़ा करता है और रुकावट बढ़ाकर दाम्पत्य जीवन का पूर्ण आनन्द देती है शी० रु० १०) ।

मदनमंजरी फार्मेसी—जामनगर-देहली एजेंट जमनादास कं० चांदनीचौक

मात्र स्त्रियों के लिए—

स्त्रियोंके पुरानेसे पुराने हर एक प्रकारके प्रदर के लिए

पाक ताइ यून

LEUCORRHOEA

अनेक स्त्रियां—युवती और प्रौढ़ आजकल प्रदर जैसे भीषण रोगसे पीड़ित रहती हैं, उसका कारण अनुमानतः सफाई की कमी है : यदि शीघ्र ही इसकी चिकित्सा न की गई तो रोग भयंकर हो उठता है। इससे उनका स्वास्थ्य, शक्ति और सौन्दर्य भी नष्ट हो जाता है, तथा वे निष्क्रिय, आलसी और दुखी हो जाती हैं। चाहे जैसा प्रदर—स्त्रियों को जाने वाले पीले, चिकने या सफेद पानी को बन्द करने के लिए 'पाक ताइ यून' बहुत ही अचूक दवा है। भयंकर से भयंकर स्थिति में भी शीघ्र लाभदायक साबित हो चुकी है। इसका केवल बाह्य प्रयोग किया जाता है। मूल्य प्रति शीशी ३॥) रु०, डाक खर्च ॥≡) आना अलग।

चायनीज मेडिकल स्टोर,
नया बाजार – देहली।

हैड आफिस——एपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई। ब्रांचें—१२ डलहौजी स्क्वायर, कलकत्ताः रीची रोड-अहमदाबाद।

—सेलिंग एजेन्ट्स—

दी नेशनल मेडीकल, स्टोर्स-आगरा। दी जनरल मेडीकल स्टोर्स-अजमेर। दी एलाईड केमिस्टस-जयपुर। श्री सरस्वती स्टोर्स—बीकानेर। मे. गिरधरदास जानकीवल्लभ—उदयपुर। बैद्यराज विश्वनाथ त्रिवेदी-मुजफ्फरनगर। मेसर्स मोहन ब्रादर्स—लश्कर। मेसर्स खरे ब्रदर्स—उरई। मे० गोपीलाल चिरंजीलाल-श्रीमाधोपुर। दी गुजरात मेडीकल स्टोर्स-कानपुर। दी वर्मा मेडीकल स्टोर्स-शिकोहाबाद। मे० धारीवाल ब्रादर्स—जोधपुर। डी० पी० आयुर्वेदिक एन्ड यूनानी दवाखाना मोरेना।

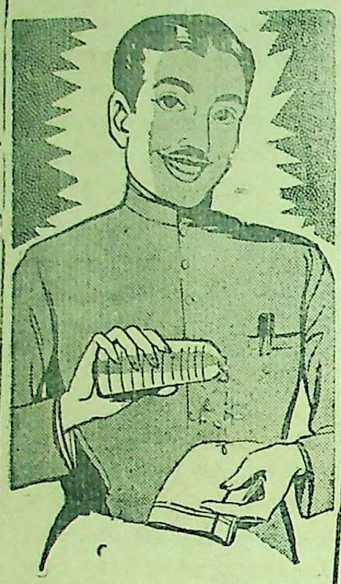

अपने आपको शीतल रखो

गर्मी और थकावट को दूर करने में कोई भी वस्तु इतनी ठण्डक पहुंचाने वाली और आनन्ददायक नहीं है जिसकी कि टाटा के ओ डी कोलोन की शीतल सुगन्धि।

(१) कुछ बूंदों को नहाने के पानी में डाल दीजिये। नहाने में रस मिलेगा।

(२) शरीर को ताजा करने के लिए दाढ़ी बनाने के पश्चात् और रूमाल को सुगन्धित करने के लिए टाटा का ओ डी कोलोन प्रयोग में लाइये।

(३) एक शीशी दफ्तर में रख लीजिए। माथे पर लगाने से गर्मी और थकावट दूर होगी।

(४) यात्रा करते समय शीतल और स्वच्छ रहने के लिये टाटा का ओ डी कोलोन पास रख लीजिये।

आपका आह्लादक साथी
टाटा का ओ डी कोलोन
दी टाटा आयल मिल्स कं० लि०।

TSE.251

बन्द माहवारी (मासिक धर्म)

२४ घन्टे में शुरू

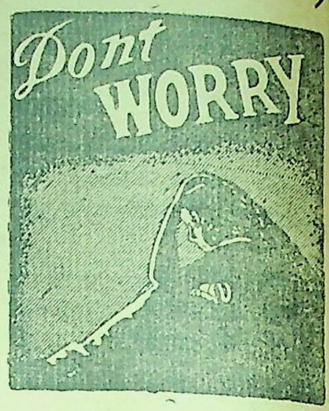

यदि किसी स्त्री की माहवारी रुक गई हो तो हमारी दवा 'कामिनी' से २४ घण्टे में जारी हो जाती है। अगर किसी स्त्री की माहवारी तकलीफ से आती है, रुक-रुक कर आती है। महीने-दो महीने से आती है, तो 'कामिनी' दवा सेवन कर लेने से तमाम खराबियां दूर हो जाती हैं। हजारों स्त्रियां, जिनकी माहवारी रुक गई थी, इस दवा के सेवन करने से २४ घण्टे में साफ होकर आने लगी। जिन स्त्रियों को गर्भ हो वे यह दवा सेवन न करें वरना गर्भ प्रायः गिर जाता है। (एक शीशी एक स्त्री के लिए काफी है)। कीमत दो रुपया आठ आना, डाक-व्यय ग्यारह आना।

अवसीरी दवाखाना कलां महल; (छत्ता हकीम आगाजान) (V.W.D.) नं० ४१ देहली।

दिल्ली में चांदनी चौक फतेहपुरी बाजारके सभी प्रमुख औषधविक्रेता यह दवा बेचते

स्वप्न दोष और प्रमेह

केवल एक सप्ताह में जड़से दूर। दाम ३) डाक खर्चा पृथक।

हिमालय कैमीकल फार्मेसी हरद्वार।

मिर्गी

का २४ घण्टों में खात्मा। तिब्बत के सन्यासियों के हृदय का गुप्त भेद, हिमालय पर्वत की ऊंची चोटियों पर उत्पन्न होने वाली जड़ी बूटियों का चमत्कार, मिर्गी हिस्टीरिया और पागलपन के दयनीय रोगियों के लिये अमृत दायक। मूल्य १०॥) रुपये डाकखर्च पृथक।

पता—एच. एम. आर. रजिस्टर्ड मिर्गी का हस्पताल हरिद्वार।

विजयगढ़ निवासी

भारत विख्यात वैद्यराज बांकेलाल गुप्त प्राणाचार्य्य
भूतपूर्व मैनेजिंग प्रोप्राइटर धन्वन्तरि औषधालय
एवं भूतपूर्व सम्पादक धन्वन्तरि
ने

प्राणाचार्य्य भवन

नामक एक वृहद संस्था २००००० दो लाख के मूल धन से स्थापित की है जिसके लिमिटेड होने के लिये कागजात तैयार हो रहे हैं। शीघ्र ही लिमिटेड हो जायगी। शेयर प्रायः सब बिक चुके हैं। इस संस्था में आयुर्वेदीय, पेटेन्ट और नवीन प्रणाली से प्रस्तुत औषधियां, वैद्यक पुस्तकें, प्रवास मंजूषा चित्र आदि के अतिरिक्त उक्त वैद्यराज जी के सम्पादकत्व में "प्राणाचार्य्य" नामक आयुर्वेदीय उच्च कोटि का सचित्र मासिक पत्र एवं साप्ताहिक पत्र शीघ्र ही प्रकाशित होगा। अभी से ग्राहक बनने से मासिक का ४) वार्षिक और साप्ताहिक का ६) वार्षिक मूल्य लिया जायगा। सर्व साधारण को खेरीज और चिकित्सकों एवं औषधि विक्रेताओं को थोक भाव का सूचीपत्र शीघ्र मंगा लेना चाहिये।

एजेण्टों की आवश्यकता है—

व्यवस्थापक — प्राणाचार्य भवन, विजयगढ़ जि० अलीगढ़

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वैकुण्ठाचार्य

[पृष्ठ १० का शेष]

बी का ..... ऋण ..... चुक जायेगा अफसोस ।

रंगडा और सभी — हाय ! हाय !! अरे !!! अरे ! क्या कहा ? बताओ ..... बताओ (चिल्लाते हैं ।)

रामराव — सुनिये पढ़ रहा हूं ।

'श्री श्री वेदान्त वैद्य तिरुमंगाचार्य उर्फ वैकुन्ठाचार्य के नाम — वैकुण्ठ से हयग्रीवाचार्य का राम-राम बांचना । — आगे हाल यह है कि अब तक जितनी आत्माओं को आपने भेजा था, सो सभी हमारे यहां पहुंच गयी हैं । अब वैकुंठ में तिलभर भी जगह नहीं है । अतः आपसे प्रार्थना है कि अब आत्माओं को भेजना बन्द कर दिया जाय और सनक सनदादि मुनियों नेअपना मत प्रकट किया है कि आप भी स्वयं यहां आ जायं । इसके लिए कल का दिन यानी — आषाढ़ शुक्ल दशमी १२ बजे ठीक समय पर आप वहां पधारें । ऐसी आज्ञा हुई है । यहां सभी वैकुंठवासी आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं ।' ..... हाय ! हम लोग कितने अभागे हैं ?

वेंकटराव — इसमें कोई संदेह नहीं है । अवश्य हम अभागे हैं । धन्य हैं आचार्य जी ..... सचमुच आप श्रीमान जी वैकुंठ में ही रहने योग्य हैं । कर्म-वश इस पापलोक में रह रहे हैं । खैर ... अब पाप-विमोचन हो गया है ... । कल ही आपका मोक्ष-दिवस है !

रंगडु — (आश्चर्य से) कल ही ... कल ही ... ।

(सभी अचरज से आपस में बातें करने लग जाते हैं ।)

आचार्य — वेंकटेश ! यह शोर-गुल क्या है ?

शिष्य — (रामराव से) कहां ! वह चिट्ठी ? इधर दीजिये आचार्य जी मंगाते हैं ।

(रामाराव पत्ता देता है । शिष्य आचार्य के पास पहुंचाता है । आचार्य जी पढ़कर चुप रह जाते हैं ।

शिष्य — श्री श्री आचार्य जी इसके बारे में योगदृष्टि से परिशीलन कर रहे हैं । अब सब जा सकते हैं ।

रामराव — हां हम जाते हैं । लेकिन एक बार विनती है कि कल दोपहर फिर एक बार जरूर आयेंगे । अन्तिम दर्शन कर लेंगे और आपका निर्वाण देखकर हम सभी पवित्र हो जायेंगे । (लोगों से) चलो ... चलो ... ।

आचार्य — (सबके जाने के बाद) अरे ! बड़ी आफत आई । ... उन मक्कारों की करतूत है यह ... । गांव वाले निरे मूर्ख होते हैं । जिस तरह हमारी कल्पित चिट्ठियों को मान बैठे हैं उसी तरह उनकी झूठ-मूठ की चिट्ठी भी मान लीं ..... । अब हमें किस तरह बचना है ? यह एक समस्या हो गई है ... ।

वेंकटेश — गुरुदेव ..... एक उपाय सूझ रही है ... मेरा एक छोटा भाई है (कान में कुछ कहता है ।)

आचार्य — शाबास वेंकटेश ! तुम तो चाणक्य हो । असाध्य को भी साध्य कर दिखाते हो । यदि तुम नहीं होते तो न जाने मेरा क्या ... (पीठ ठोकता है ।)

शिष्य — (मुसकराते हुए) आपकी कृपा है । (आंट में से बीड़ी निकाल कर जलाता है) ... ।

(परदा गिरता है ।)

दृश्य दूसरा

दूसरे दिन । समय दोपहर ।

[वही झोंपड़ी । पर्दा लगा है । सामने गांव वालों का झुंड बैठा है । रंगडु, वेंकडु इत्यादि ... । रामराव और वेंकट राव भी बैठे हैं ।]

रंगडु — (रामराव से) बाबूजी ! आपने हाथ पर जो बांध रक्खा है उसमें कितने बजे हैं ... ?

रामराव — ग्यारह से कुछ ऊपर हुआ है ।

वेंकटराव — बस एक घंटे के अंदर ही आचार्य जी को यह देह छोड़ कर वैकुंठ पहुंच जाना चाहिये । विधि को टालना किसके बस की बात है ... ?

रंगडु — कैसे हो सकेगा ... ? अब तो भगवान के भी बस में नहीं है ... !

(परदा हटते ही अर्द्ध निमीलित नेत्रों से आचार्य जी के दर्शन होते हैं । शिष्य खड़े होकर आगन्तुकों को सम्बोधन करके कहता है ।)

शिष्य — हे भक्तजनो ! सावधान हो जाइये । श्री श्री आचार्यजी समाधिस्थ हैं । मानो हमारे इस पारलोक से दूर हो रहे हैं । थोड़े समय में वैकुंठ में श्री-मन्नारायण तिरुवड़िगलु में पहुंच जायेंगे । आप लोगों के लिए यह अंतिम दर्शन है । आप श्रीमान्जी पहुंचे हुए योगी हैं । आपकी मृत्यु सदा आपके ही हाथ में रहती है । जब चाहे तब देह और आत्मा को अलग कर सकते हैं । तब आपका सिर फूट कर उसमें से एक दिव्य-ज्योति ऊपर उड़ जाती है ।

(सब खड़े होकर अपना अपना कान पकड़ते हैं । कुछ सिर नवाते हैं । कुछ रोते हैं और रामराव तथा वेंकटराव चुपके से देखते रहते हैं । इतने में बाहर से 'ठहरो ठहरो' की आवाज आती है ।)

रंगडु — कौन है वह ..... ?

(सब पीछे घूम कर देखते हैं । वेंकटेशम् का छोटा भाई शेषाचलम् प्रवेश करता है । बहुत बड़ी पगड़ी बांधे है । चौड़ा तिलक लगाये है । पहचानने में नहीं आता ।)

शेषाचलम् — रुको ! रुको !! (हंसता हुआ खड़ा होता है ।)

वेंकडु — रुकना किस लिये ... ? बताओ बात क्या है ।

शेषाचलम् — ठहर जाओ ... । यों ही मत जाओ । आचार्य जी से नाहक ही हाथ न धोओ ... ठहरो ... ठहरो ।

रंगडु — तेरी बोली समझ में नहीं आती ।

शिष्य — कृपा करके शीघ्र बोलिये । श्री श्री आचार्यजी का अवसानकाल समीप आ रहा है ।

शेषाचलम् — नहीं । सुनो ... यह श्रीमन्नारायण ही ने तो भेजा है ... । यदि ऐसा नहीं होता ... अरे ... न जाने क्या ... । मैं जल्दी-जल्दी यहीं आ रहा था ... । सहसा एक गरुड़ 'कृष्ण, कृष्ण' कहता हुआ यह चिट्ठी डाल गया । (पत्ता निकालता है) मैंने उठा कर देखा तो गरुड़ गायब हो गया । ... मेरा दिल धड़कने लगा, पढ़ते ही ... हां ... हां ... हां । क्या बताऊं ... ? धोखा ... धोखा ... चेला जी, आप ही पढ़िये ... देर हो रही है । (पत्ता देता है ।)

शिष्य — (पत्ता लेकर) अरे ... वैकुंठ से ही ... (पढ़ता है) ।

श्री श्री वेदान्त वैद्य वैकुंठाचार्य के नाम वेकुंठम् हयग्रीवाचार्य का राम-राम बांचना । विशेष हाल यह है कि खर और विखर नाम के दो राक्षस मृत्यु लोक में मनुष्य रूप में घूम रहे हैं । और वैकुण्ठ के नाम जाली चिट्ठियां बना कर लोगों को ठगने की कोशिश कर रहे हैं । उनके खातिर आप जैसे भक्तशिरोमणियों को हठात् आत्म-हत्या करने को बाध्य होना पड़रहा है । यह जान कर दुःख हो रहा है । अन्त में हमारी यह सलाह है कि ऐसे दुष्टों की जालसाजी से बचे रहिये ।' कितनी ठगी ... । (सब अवाक् रह जाते हैं ।)

आचार्य — (आंख खोल कर) मेरी योगदृष्टि में भी यही मालूम हुआ है । वही खर-विखर (रामराव और वेंकट-राव को दिखाते हुए । हां ... हां ... हां ।

(रामराव व वेंकटराव दोनों को विस्मय के ही साथ ही साथ भय भी लगता है । सबकी निगाहें उन्हीं पर पड़ी हैं ।)

रंगडु — देखते क्या हो ? मारो जान से इन राक्षसों को ... पकड़ो ... ।

(रामराव वेंकटराव को कुछ लोग पकड़ लेते हैं । पर वे दोनों छूट कर झोंपड़ी से निकल कर भाग जाते हैं ।

वेंकडु — कहां तक जायेंगे ! चलो पकड़ेंगे ... ।

(चिल्लाते हुए सब चल देते हैं । आचार्य वेंकटेश और उसका छोटा भाई शेषाचलम् (खूब हंसते हैं)

आचार्य — बस करो हंसना ... उफ आफत टल गई । ... अब इस गांव में नहीं रहना चाहिये । चलो एक मंजिल तै करें ... क्यों वेंकटेशम् ।

वेंकटेशम — (बीड़ी सुलगाते हुए) ऊं । .....

शेषाचलम् — इस से काम नहीं चलने का ... वैकुंठाचार्य को सचमुच ही वैकुंठ भिजवा दीजिये । बाद में आप सदाशिव ब्रह्म में बदल जाइये । हम अपने हैड आफिस को कैलास में बदल देंगे ..... ।

(परदा गिरता है)

वैद्यरत्न

पं० डी० गोपालाचार्लू

का

जीवामृतम

स्त्री पुरुष और बालकों में पौरुष, बल और चेतना शक्ति का संचार करने के लिए अर्धशताब्दी से विख्यात है

आयुर्वेद आश्रमम लि०

टी० नगर, मद्रास ।

उत्तर भारत के लिए चीफ स्टोकिस्टस्

ए न सा ट्रे डिं ग कं०

चांदनी चौक, दिल्ली ।

स्त्री रोगों की निपुण चिकित्सिका

लेडी डाक्टर **कविराज आर. रानी** ही हैं

आप किसी भी स्त्री रोग में ग्रस्त हों तो निम्नलिखित पते पर मिलिये । वे आपको उसी समय ठीक कर देंगी । इसके अतिरिक्त उनकी तैयार की हुई औषधि 'आशा' एक ऐसी औषधि है जोकि स्त्री के आन्तरिक बाह्य रोगों को दूर करके सन्तान योग्य बना देती है और उसका मूल्य केवल १०) रु० है । डाक व्यय पृथक होगा । औषधालय—

लेडी डाक्टर-**कविराज आर. रानी**

गली नं० १ अर्जुन नगर निकट शाहालमी अड्डा लाहौर ।

रेडियो में एक साल

(पृष्ठ ६ का शेष)

नियुक्त है, जो फारसी और अरबी का तो विद्वान है, परन्तु हिन्दी या अन्य किसी प्रान्तीय भाषा का क ख ग भी नहीं जानता। उसकी देखरेख में रेडियो की हिन्दुस्तानी कैसी होगी, उसकी जानकारी आप प्रतिदिन चार बार देखते ही हैं।

(७) हाल ही में रेडियो विभाग ने अमरीका और इंग्लैण्ड के रेडियो विभागों के आदर्श का अनुसरण करते हुए भारत के प्रत्येक रेडियो स्टेशन पर सुनने वालों की विभिन्न प्रोग्रामों के बारे में पसन्द-नापसन्द का पता लगाने के लिए एक-एक अफसर (Listners Research Officer) नियुक्त किया है। यदि देखा जाय तो इस अफसर का काम बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसके पास सभी रेडियो लाइसेंस होल्डरों के पते रहते हैं। चुनांचे इसके जरिये प्राप्त हुई सुनने वालों की पसन्द-नापसन्द विषयक जानकारी के आधार पर हिन्दी-उर्दू का झगड़ा एक दिन में समाप्त हो सकता है। हाल ही में सुनने वालों की पसन्द और नापसन्द मालूम करने के लिये 'इन्टरव्यूअर' नियुक्त किये जाने थे, जहां हिन्दू लाइसेंस होल्डरों की संख्या मुसलमान लाइसेंस होल्डरों की अपेक्षा कहीं अधिक थी। सुनते हैं कि एक मुसलमान उच्चाधिकारी ने इस बात का प्रयत्न किया कि चार 'इन्टरव्यूअरों' में से दो मुसलमान और केवल एक हिन्दू हो।

(८) हाल ही में प्रत्येक स्टेशन पर एक-एक ऐसा अफसर भी नियुक्त किया गया है जिसका काम है रेडियो स्टेशन की ओर से पत्र-पत्रिकाओं के साथ सम्पर्क रखना और रेडियो के प्रोग्रामों का प्रकाशन करना। यह पद भी बहुत उत्तरदायित्वपूर्ण है। इस पद पर निष्पक्ष हिंदी उर्दू ज्ञाता विद्वान होने चाहिए।

यह तो हुआ रेडियो के भीतर रह कर काम करने वाले स्टाफ के बारे में। परन्तु प्रसार-कार्य बाहर के लोगों के सहयोग के बिना तो सम्भव ही नहीं। बाहर के लोग ही रेडियो पर जाकर गाते हैं, भाषण देते हैं और प्रसार योग्य नाटक और गीत आदि लिखते हैं। स्टाफ में उर्दूवादियों का बाहुल्य और प्रभुत्व होने के कारण यहां भी हिन्दी के लेखकों, कवियों और विद्वानों की उपेक्षा और अवहेलना हुई है, जिसके फलस्वरूप आज तक हिन्दी संसार में रेडियो के विरुद्ध असन्तोष और विक्षोभ की भावना वर्तमान है और अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन को विवश होकर एक बार रेडियो विरोधी आन्दोलन चलाना पड़ा। मैं समझता हूं कि यदि रेडियो के स्टाफ में हिन्दी के जानकारों और लेखकों को अनुपातत: उचित स्थान मिल जाये तो रेडियो प्रोग्रामों में हिन्दी को अपने आप उचित प्रतिनिधित्व मिल जायेगा और फिर रेडियो विभाग द्वारा बाहर के हिन्दी लेखकों और कवियों की अवहेलना और उपेक्षा न होगी। अतः यह परम आवश्यक है कि हिन्दी जानने वाला स्टाफ शीघ्रातिशीघ्र भर्ती किया जाये।

जनता में इधर-उधर रेडियो के बारे में कुछ अनैतिकता का प्रवाह भी फैला हुआ है, जो निराधार नहीं। सभ्रान्त घरानों के लोग अपनी बहूबेटियों को रेडियो पर प्रोग्राम ब्राडकास्ट करने के लिये भेजने से प्रायः हिचकिचाते हैं। इस प्रवाद के मूल कारणों का निराकरण होना ही चाहिये। [समाप्त]

देहली केमिकल वर्क्स, देहली का सोल एजेंट :—

मलोरिन नं० ५०

मौसमी बुखारों के लिए अक्सीर है।

देहली जाम फैक्टरी नयाबांस, चीड़ी मार्केट, देहली।

हिन्दी भाषा में अनुपम अभिनन्दन ग्रन्थ

विक्रम स्मृति ग्रन्थ

सम्राट विक्रमादित्य, कालीदास और उनके काल से सम्बन्धित अनुपम लेखों का अपूर्व संकलन, संस्कृति, साहित्य, काव्यशास्त्र, कला, विज्ञान, इतिहास, दर्शन, राजनीति एवं पुरातत्व पर प्रकांड पण्डितों एवं धुरन्धर विद्वानों की लेखनी से लिखे गए ऐसे गवेषणापूर्वक लेख और कहीं प्रकाशित नहीं हुए। प्राचीन भारत के अतीत गौरव के लिए ग्रन्थ का अध्ययन आवश्यक है। साहित्यार्थ पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ, दीवान बहादुर झावेरी, बम्बई महामहोपाध्याय वी० वी० मिराशी नागपुर, श्री गिरधर शर्मा नवरत्न, झालरापाटन, श्री मैथिलिशरणजी गुप्त, श्री सियारामशरणजी गुप्त, सेठ कन्हैयालालजी पोद्दार, डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० रामकुमार वर्मा, श्री माखनलालजी चतुर्वेदी, डा० सालेटूर, डा० गोरखप्रसाद, डा० ए० एन० उपाध्येय, पं० उदयशंकर भट्ट, डा० धीरेन्द्र वर्मा, पं० हजारीप्रसाद जी द्विवेदी, डा० बाबूराम सक्सेना, डा० सत्यप्रकाश, श्रीयुत एन० एन० घोष, श्रीयुत पी० के० गोडे आदि अनेकानेक प्रसिद्ध विद्वानों ने ग्रन्थ की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। ग्रन्थ अनुपम चित्रों से सुसज्जित है।

थोड़ी सी प्रतियां ही बची हैं। पृष्ठ संख्या ६१० डेमी साइज ११ ६ मूल्य डाक खर्च सहित केवल ३०) रुपये। वी० पी० नहीं भेजी जावेगी।

मैनेजर, आलीजाह दरबार प्रेस, ग्वालियर।

वह पुरुष

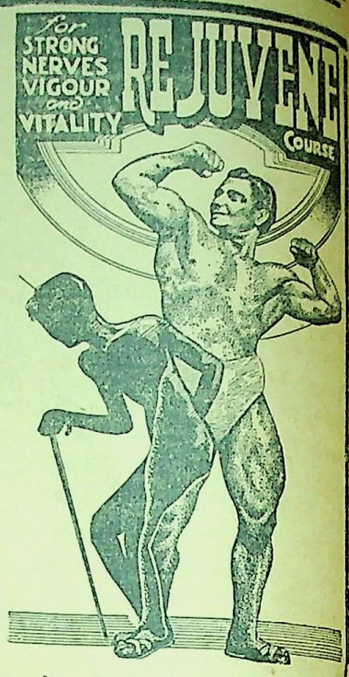

जो शक्तिहीन पुरुष किसी भी कारण से शरीर बल नष्ट कर चुके हों और उनके जीवन को घुन लग चुका हो और विशेष दुख से समय व्यतीत कर रहे हों, ऐसे दुखी पुरुषों को शक्ति प्रदान करने का सुअवसर यह है कि 'रिजोवीन' औषधि को १६ दिन तक सेवन कर लें, उनकी गई हुई शक्ति फिर से लौट आयेगी और अपना समय सुख से आनन्द प्राप्त अवश्य करेंगे। शरीर के प्रत्येक बलहीन भाग की यह दवा अमृत तुल्य है और काया को फिर से बदल कर नया जीवन देती है। सारे भारतवर्ष में इस औषधि का प्रचार है और प्रत्येक वर्ष लाखों दुखी पुरुष इस औषधि द्वारा आनन्द प्राप्त कर चुके हैं। शक्तिशाली पुरुष भी यह दवा सेवन करके अपने जीवन के आनन्द को बढ़ा सकते हैं और यह दवा किसी भी ऋतु में सेवन की जा सकती है। इस कोर्स में दो दवायें होती हैं, एक खाने की, दूसरे मलने की। पूरे कोर्स का मूल्य ५) रुपये, डाक खर्च ॥≦) अलग।

अवसीरी दवाखाना कलां महल पो० नं० ४१ (V.W.D.) देहली।

दिल्ली में चांदनी चौक, फतेहपुरी बाजार के तमाम औषधि विक्रेता यह दवा बेचते हैं।

कांग्रेस का ५४वां मेरठ अधिवेशन

(ले०—श्री० कौशलप्रसाद जैन)

इस पुस्तक में हाल में ही समाप्त होने वाले मेरठ अधिवेशन के पूरे समाचार, स्वागताध्यक्ष, राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी के भाषण, पं० जवाहरलाल नेहरू की सिंह गर्जना, लोह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की चुनौती आदि एकत्रित की गई हैं। प्यारेलाल नगर की झांकी मेरठ का महत्व रोचक संस्मरण आदि विशेष स्तम्भ हैं। १६ आर्ट पेपर पर छपे चित्र हैं करीब १०० पृष्ठ, ऊपर राष्ट्रपति कृपलानी का झण्डे सहित दोरंगा चित्र। मूल्य केवल १)

आज ही अपनी प्रतियें रिजर्व कराइये। ऐसा न हो "बंगाल में हिन्दू संस्कृति के नाश का प्रयत्न" नामक पुस्तक की तरह दूसरे एडीसन की प्रतीक्षा करनी पड़े। जयभारत साहित्य मण्डल २२०६, नई सड़क, देहली।

सन्यासियों की गुप्त बूटियां

इस पुस्तक में सैकड़ों ऐसी जड़ी बूटियों के गुप्त रहस्य प्रकट किये गये हैं, जिनसे सन्यासियों की धाक जमी हुई है। हालांकि इनमें से अधिकांश बूटियां आपको जंगल, खेत बागीचों और पंसारियों की दुकानों पर भी मिल सकती हैं, जिनसे आवश्यकता पड़ने पर स्त्रियां भी सिर से पांव के नख तक के सभी रोगों का इलाज घर में ही कर लिया करेंगी। इस पुस्तक को पढ़ लेने के बाद आप इस युग के धन्वन्तरि समझे जायेंगे। रोगियों का तांता बधा रहेगा। कुछेक बूटियों की सूची—

लाख-लाख रु० के प्रयोग—(१) ऐसी बूटी कि जिसकी लकड़ी कान में लगा देने से सर्प काटे का विष मुख द्वारा निकल जाता है, (२) वह बूटी जिससे गूढ़ गर्भ ५ मिनट में निकल जाता है, (३) मधुमेह की अक्सीर बूटी, (४) दुबले पतले आदमी को मोटा ताजा बना देने वाली बूटी, (५) सात दिन में नपुन्सक को मर्द बनाने वाली बूटी, (६) दमे की अद्भुत बूटी, (७) वह बूटी-जिसके रस में अंगुली डुबाने से तत्काल ज्वर उतर जाता है, (८) गर्भ रोक बूटी, (९) उपदंश को ७ दिन में मिटाने वाली बूटी, (१०) निमोनियां की बूटी, (११) वह बूटी जिससे बन्ध्या के पुत्र पैदा हो। ऐसी ही सैकड़ों बूटियों का वर्णन इसमें है, जिनसे चमत्कार दिखा कर आप सिविल सर्जनों को दंग कर सकते हैं। मूल्य २॥) डाकखर्च ।=)

पता—रसायन फार्मेसी (५) संगरिया (बीकानेर)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

देश विदेश का घटना चक्र

[पृष्ठ ६ का शेष]

तेबरेज रेडियो की घोषणा के अनुसार अजरबेजान की डेमोक्रेटिक पार्टी के मन्त्री ने लोगों को ईरानी सरकार की सेनाओं के विरुद्ध अपनी सेना के साथ मिल कर लड़ाई लड़ने की अनुमति दे दी है। अजरबेजान सरकार ने मजदूरों, सैनिकों और युवकसंघों में हथियार बांट दिये हैं। समस्त अजरबेजान में सभाएं करके जनता को लड़ाई के लिए आह्वान किया जा रहा है। यह प्रचारित किया जा रहा है कि अजरबेजान की सीमा के बाहर जेजान नगर को ईरानी सेनाओं ने हमारी सेनाओं से छीन लिया है तथा ईरानी सेनाएं जनता पर मशीनगनों से गोलियां चला रही हैं।

फ़िलस्तीन के लिये नयी संघ योजना

तेलअवीव के हिब्रू पत्र 'मिशमार' में फिलस्तीन के भविष्य के सम्बन्ध में एक नयी संघ योजना छपी है जो फिलस्तीन सरकार द्वारा ब्रिटिश सरकार के सम्मुख प्रस्तुत की गई बतायी जाती है। इस के मुख्य अंग इस प्रकार हैं:

(१) ब्रिटिश सरकार फिलस्तीन पर १५ साल तक और शासन करे, उसके बाद फिर नये सिरे से फिलस्तीन के भविष्य के सम्बन्ध में चर्चा की जाय। (२) आगामी १८ मास में १ लाख नये यहूदियों को फिलस्तीन में आने की अनुमति दी जाय। (३) फिलस्तीन को शासन की दृष्टि से तीन स्वशासित भागों में बांटा जाय और इन तीनों भागों का एक संघ-शासन स्थापित किया जाय। ये तीन भाग क्रमशः यहूदी, अरब, एवं ब्रिटिश सरकार के क्षेत्र हैं। ब्रिटिश सरकार के क्षेत्र में ईसाईयों के धार्मिक स्थान भी सम्मिलित रखे जांय। (४) ७० प्रतिशत से अधिक अरब बस्ती वाले प्रदेशों में और यहूदियों को आने की आज्ञा न दी जाय। (५) दक्षिणवर्ती नेब प्रदेश में यहूदी बस्ती की आज्ञा दे दी जाय। (६) अरब व यहूदी पुलिस पृथक् पृथक् स्थापित की जाय। दोनों का संचालन एक सर्वोच्च ब्रिटिश पुलिस अफसर के हाथों में रहे। (७) शासनादेश के अन्तर्गत चलने वाले शासन की सहायतार्थ एक धारासभा बनायी जाये जिसमें ४० प्रतिशत यहूदी, ४० प्रतिशत मुस्लिम अरब तथा २० प्रतिशत अरब या अन्य ईसाई सदस्य हैं।

स्पेन का प्रश्न पुनः रंगमंच पर

मित्रराष्ट्रसंघ की राजनीतिक समिति में स्पेन के सम्बन्ध में अमरीकन प्रतिनिधि सीनेटर टाम कौनली ने यह प्रस्ताव उपस्थित किया है कि 'जनरल फ्रांको को त्यागपत्र देकर एक अस्थायी स्पेनिश सरकार को सामान्य निर्वाचन कराने के लिए अवसर देना चाहिये।' इस पर बाद में टिप्पणी करते हुए टाम कौनली ने कहा कि यह कार्य मि० रा० सं० के दबाव से होना उचित नहीं। कूटनीतिक सम्बन्ध विच्छिन्न करने अथवा आर्थिक प्रतिबन्ध लगाने से स्पेनिश जनता अधिक संकटापन्न हो जायेगी। आर्थिक प्रतिबन्धों से अन्ततः स्पेन में आर्थिक व राजनीतिक परिवर्तन होंगे और वह गृह-युद्ध का कारण बनेंगे। अमरीका स्पेन को शान्ति के लिए खतरा नहीं समझता, किन्तु वह भविष्य में उचित कार्यवाही के लिए स्वतन्त्र रहेगा। अमरीका हस्तक्षेप न करने के सिद्धान्त से पूर्णतः सहमत है।

स्पेन ने इस प्रस्ताव के विरोध में ६०० शब्दों का एक पत्र भेजकर अमरीकन वक्तव्यों को अन्यायपूर्ण बताते हुए स्पेनिश जनता के प्रति आपत्तिजनक ठहराया। यह कहा गया है कि स्पेनिश जनता वर्तमान शासन को 'फासिस्ट' नहीं मानती। इस शासन को १९३६ में जनता ने अपने प्रयत्नों से कम्युनिस्ट अत्याचारों के विरुद्ध संग्राम में अपना रक्त देकर स्थापित किया था। इस शासन का औचित्य इस बात से सिद्ध है कि स्पेन में गृह-युद्ध समाप्त हो जाने पर मैक्सिको के अतिरिक्त संसार के सभी देशों ने (जिनमें अमरीका भी सम्मिलित है) उसे स्वीकार कर लिया था। स्पेनिश जनता अपने आन्तरिक शासन में बाह्य हस्तक्षेप का जोरदार विरोध करती है क्योंकि यह गृह-युद्ध को प्रोत्साहन है। वर्तमान सरकार अपनी सत्ता के लिए कभी धुरी-राष्ट्रों पर आश्रित नहीं रही। स्पेन की सेना में विदेशी स्वयंसेवक २ प्रतिशत से अधिक नहीं रहे। स्पेनिश जनता गत १० वर्षों से विद्रोह के लिए भड़काये जाने पर भी सरकार के प्रति अपनी भक्ति प्रदर्शित करती रही है।

दक्षिण-अफ्रीका अपने विस्तार के लिये कटिबद्ध

मित्रराष्ट्र संघ में दक्षिणी अफ्रीका ने यह सुझाव उपस्थित किया था कि दक्षिण पश्चिमी अफ्रीका का प्रदेश दक्षिणी अफ्रीका में मिला दिया जाय पर भारत तथा रूस के सक्रिय विरोध के कारण वह सुझाव अस्वीकार कर दिया गया। अब दक्षिणी अफ्रीका ने ब्रिटिश सरकार के सम्मुख १९०९ के दक्षिण अफ्रीकन ऐक्ट की शर्तों के अनुसार यह मांग की है कि स्वाजीलैण्ड और बसुटोलैण्ड दक्षिण अफ्रीका को सौंप दिये जायें। बसुटोलैण्ड नैटाल के पश्चिम में है और स्वाजीलैण्ड नैटाल के उत्तर में है। परन्तु ब्रिटिश लोकसभा में लार्ड प्रेजीडेण्ट श्री हर्बर्ट मौरिसन ने घोषित किया है कि ब्रिटिश सरकार तब तक कोई निश्चय नहीं करेगी जब तक वहां के यूरोपियन गैरयूरोपियन निवासियों से परामर्श न कर लेगी और पार्लियामेण्ट इस सम्बन्ध में अपने विचार प्रगट करने का अवसर न दे देगी।

क्या निःशस्त्रीकरण होगा ?

अमरीका की निःशस्त्रीकरण उपसमिति ने अपनी बैठक में निःशस्त्रीकरण सम्बन्धी अमरीकन प्रस्ताव को विचार विनिमय का आधार बनाना स्वीकार कर लिया है। उपसमिति ने अमरीकन प्रस्ताव के उस प्रथम वाक्य को सर्वसम्मति से स्वीकार किया है, जिसके अनुसार शस्त्रों में सामान्य नियन्त्रण तथा उनमें कमी करने की आवश्यकता को स्वीकार कर लिया है।

—दिल्ली के चीफ कमिश्नर डब्लू० क्रिस्टी के छुट्टी जाने पर झांसी डिविजन के कमिश्नर खुरशेद अहमद खान आई. सी. एस. की नियुक्ति की सम्भावना की जा रही है।

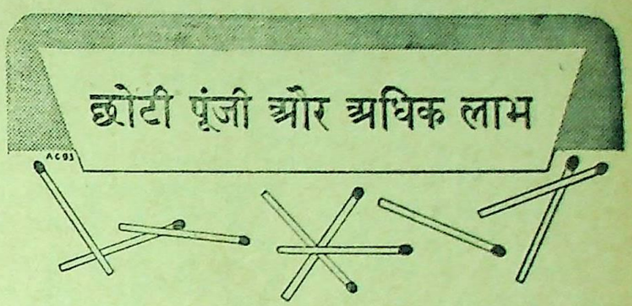

प्रश्न : दियासलाई की ९ तीलियों से ५ त्रिकोण बनाइए।

उत्तर :

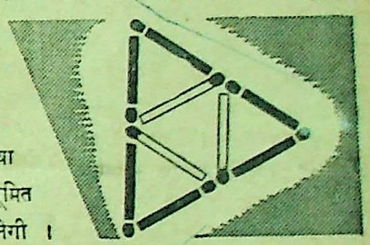

तीलियों को ऐसे रखिये जैसे आकृति में दिखाया गया है। ५ वीं त्रिकोण धूमित तीली की सहायता से बनेगी।

यदि विचार पूर्वक व्यय न किया जाये तो आजकल की परिस्थिति में जब प्रत्येक वस्तु के दाम बढ़े हुए हैं थोड़ी आय में भोजन, कपड़ा और पढ़ाई सम्बन्धी निर्वाह भली प्रकार करना कठिन है। क्यों न गृहस्थी की आय-व्यय का ऐसे ढंग से अनुमान लगाया जावे कि आकस्मिक संकट के समय भी कठिनाई का सामना न करना पड़े ? यदि आप आग्रह युक्त और यथा क्रम बचत करने में प्रयत्न शील होंगे तो कुछ न कुछ पूंजी एकत्रित रहेगी। ऐसी बचत को सुरक्षित रखने के लिये नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स की मद ही सर्वोत्तम है।

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट्स

निम्न लिखित मुख्य लाभ यह हैं:—

(१) आप ५, १०, ५०, १००, ५००, १०००, या ५०००, रु० के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) कुटुम्ब का प्रत्येक व्यक्ति (वयस्क या अल्पवयस्क) ५००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकता है। दो व्यक्ति मिलकर १०,००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है। सरकार द्वारा प्रचलित रुपया लगाने की मदों पर जो ब्याज दिया जाता है यह सब से अधिक दर है।

(४) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।

(५) ये १२ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते हैं (५ रु० का सर्टिफ़िकेट १-१/२ वर्ष पश्चात भी भुनाया जा सकता है)

(६) जिनकी बचत थोड़ी है वह १), ॥), ।) वाले सेविंग्ज स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं, ५ रु० के स्टाम्प्स जमा होने पर एक नेशनल सेविंग्ज सर्टिफ़िकेट मिल जावेगा।

(७) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्प्स डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकृत एजेंटों अथवा सेविंग्ज ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

अपने सेविंग्ज़ ग्रूप में अभी सम्मिलित हो जाइए

—वीतनाम-फ्रेंच संघर्ष के सम्बन्ध में चीनी राजदूत द्वारा नियुक्त प्रतिनिधि-मण्डल ने बताया है कि इन संघर्षों में ५० चीनी नागरिक मारे गये हैं व २३ घायल हुए हैं तथा ३०० चीनी गृह-विहीन हो गये हैं। प्रत्येक ५ घरों में से एक घर नष्ट कर दिया गया है। अनेक चीनी दुकानें लूट ली गई हैं।

—लंका में दक्षिण अफ्रीकन सरकार की ओर से बहुत बड़े परिमाण में भारतीय जूट के बोरे खरीदे गये हैं। दक्षिण अफ्रीका सरकार के प्रतिनिधि आवश्यक निर्यात की अनुमति प्राप्त करने के लिये लंका आये थे और लंका सरकार लाइसेंस जारी करने पर सहमत हो गई है।

—ट्रस्टीशिप कमेटी की उपसमिति में रूस का वह प्रस्ताव ५ के विरुद्ध १० मतों से अस्वीकृत हो गया जिसके अनुसार टांगानिका में 'सुरक्षा-परिषद' की अनुमति के बिना ब्रिटेन को अपनी सेनाएं न रखने देने का सुझाव किया गया था।

—युक्त प्रान्त के पुलिस इन्स्पैक्टर जनरल सर फिलिप मेजर्स रिटायर हो कर जा रहे हैं। इस व्यक्ति ने युक्तप्रान्त के मन्त्रीमण्डल की आज्ञाओं की प्रायः सदा अवज्ञा की तथा इसे युक्तप्रान्त के गवर्नर सर फ्रांसिस वाइली तथा सम्राट प्रतिनिधि लार्ड वैवल का आश्रय प्राप्त था।

—ढाका में उपद्रवों ने पुनः भयंकर रूप धारण कर लिया है। मुस्लिम नेशनल गार्ड वालों ने इण्टरमीजियेट कालेज में घुस कर कालेज के प्रिन्सिपल तथा एक प्रोफेसर की हत्या कर दी है। कौंसिल आफ स्टेट के एक सदस्य की ६० वर्षीया बहन को छुरा भोंक दिया गया है।

—गोरखपुर में २७, २८, २९ दिसम्बर को होने वाले हिन्दू महासभा के २७ वें अधिवेशन के लिये डा० श्यामप्रसाद मुखोपाध्याय सभापति चुने गये हैं।

'सैनिक का स्वप्न-प्रदर्शन'

आजाद हिन्द फौज ड्रामा पार्टी अपने खेल का प्रदर्शन आजकल दिल्ली में कर रही है। रामजस कालेज, दर्यागंज तथा ओडियन थियेटर, नई दिल्ली में पार्टी के ये खेल किये जा रहे हैं। और ६-७ दिसम्बर को यह नाटक रामजस कालेज में ५॥ बजे और ओडियन सिनेमा नई दिल्ली में ८ दिसम्बर को १२॥ बजे खेला जायगा। टिकट गांधी आश्रम चांदनी चौक तथा आजाद हिन्द फौज के दर्यागंज के दफ्तर से मिल सकते हैं।

उद्यम

जनवरी १९४७ में प्रकाशित होने वाले

फल-संरक्षण विशेषांक में

★ सब तरह के फलों के टिकाऊ पदार्थ बनाने की व्यवहारोपयोगी जानकारी पढ़िये।

★ शरबत, जैम, जेली. मार्मलेड आदि तैयार करने की सचित्र और सम्पूर्ण व्यवहारोपयोगी जानकारी खास विशेषज्ञों द्वारा तैयार करवाई गई है।

★ व्यापारियों, महिलाओं, उद्यमी लोगों तथा न्यूज पेपर एजेन्टों की मांग बहुत अधिक बढ़ रही है।

★ अतः आज ही उद्यम का वार्षिक मूल्य ५॥) रु० भेजकर उद्योग-धन्धे व्यापार तथा खेती-बगवानी विषयक अत्यन्त लोकप्रिय मासिक के ग्राहक बनिये।

उद्यम मासिक, धर्मपेठ, नागपुर

देहली केमिकल वर्क्स देहली का **खाजोल** नं० ५० तर खारिश की मुजर्रिब दवा है

सोल एजेण्ट — देहली जाम फैक्टरी, नया बांस, बीड़ी मार्केट, देहली।

भारतीय ऋषियों की खोज का अद्भुत चमत्कार

एक आश्चर्यजनक घटना — रोगी के पति की आप बीती

मेरी स्त्री अनेक दिनों से बीमार थी, आखिर डाक्टरों ने 'तपेदिक' (टी० बी०) रोग बतलाया, 'तपेदिक' का नाम सुनते ही होश-हवास उड़ गये। अन्त में डाक्टरों ने एकस्वर करके दोनों फेफड़े खराब (गल) जाने की बात कहकर मुझे आदेश दिया कि रोगी १०-१५ दिन का मेहमान है। इसको अस्पताल से ले जाओ और किसी अलग कमरे में रख दो। कोई इसके पास न आवे, इसके थूक आदि से बचाव रखो। लाचार होकर उसको घर ले आया।

फिर क्या हुआ—अखबार 'मिलाप' में मैंने आपकी दवा जबरी का 'विज्ञापन' देखा। दिल ने कहा कि जहां सैकड़ों रुपया हकीम डाक्टरों की भेंट चढ़ा चुका हूं, यह भी खर्च करके देख लूं। रोगी ने कहा कि जब डाक्टरों ने यह कह दिया है कि दोनों फेफड़े खराब हो चुके हैं और मैं १०-१५ दिन की मेहमान हूं तो व्यर्थ क्यों खर्च करते हो, मुझे अब परमात्मा पर छोड़ दो। परन्तु दिलने न माना और तुरंत 'जबरी' न० १ का आर्डर दे डाला। पांचवें दिन ही पार्सल पहुंच गया और विधि के अनुसार परमात्मा का नाम लेकर औषधि शुरू करा दी गई। फिर क्या हुआ—वही आश्चर्यजनक चमत्कार। जिस रोगी के बारे में डाक्टरों ने मौत का फतवा दे दिया था, और ६ मास तक बराबर इलाज करने पर भी बुखार न गया था, आसाम बङ्गाल की शक्तिशालीऔषधि 'जबरी' ने दस दिन में ही अपना चमत्कार दिखा दिया, बुखार बिलकुल जाता रहा। जो रोगी चारपाई से उठने लायक न था, शरीर में रक्त का संचार होने लगा और दिल में पहले की सी उमंग पैदा हो गई, दिल में पूर्ण रूप से विश्वास हो गया कि जिस दवा ने इतनी जल्दी ऐसा चमत्कार दिखाया है—क्यों न स्त्री को एक बार वहीं लेजाकर पूर्ण रूप से परीक्षा कराकर आगे को इलाज का प्रबन्ध किया जावे। मेरी स्त्री की भी यही राय हुई। फिर क्या हुआ — जिस रोगी में चारपाई से उठने की शक्ति न थी हजारों मील रेलकी यात्रा करके 'जगाधरी' आ गई। यहांपर पूर्णरूपसे अच्छी तरह परीक्षा करके आगेके लिए औषधियों का प्रबन्ध हुआ, यथार्थमें कार्यालयका सलूक प्रशंसनीय है। रोगीकी तन्दुरुस्ती दिनपर दिन बदलती गई और अब परमात्मा की कृपा से बिल्कुल ठीक हो गई है। मैं ही नहीं—बल्कि मेरा तमाम कुटुम्ब कार्यालय के कृतज्ञ हैं जिसने मेरी स्त्री को काल के गाल से बचा लिया। यह ऋषियों के रक्त से सींचे हुए आयुर्वेद शास्त्र की पूर्ण सफलताका चमत्कार है। उपरोक्त घटना सरदार करतारसिंह इण्डियन मिल्ट्री हस्पताल, करांची के साथ घटी।

पाठक वृन्द—यह एक नहीं। पचासों सैकड़ों ऐसी घटनाऐं हो चुकी हैं और भी देखिये—(१) लाला काशीप्रसाद वैश्य दारानगर (इलाहाबाद), (२) बाबू मुन्नालाल स्टोरकीपर सिम्यावली शुगर मिल पो० बक्सर (मेरठ), (३) बाबू रामसिंह घर नं० ६१ रीटामन्डी (देहरादून), (४) बाबू गजपतराय रिटायर्ड सब रजिस्ट्रार (मथुरा), आदि सैकड़ों सज्जनों का यही कहना है कि आसाम बंगालकी शक्तिशाली औषधि 'जबरी' दवा नहीं, बल्कि यथार्थ में रोगी को काल के गालसे बचाने वाली 'ईश्वरीय शक्ति' है। अब तो परमात्मा की कृपा से मिल्ट्री अस्पताल 'औध' (पूना) रुड़की (यू० पी०) कराची आदि स्थानों में भी 'जबरी' के गुणों का डंका बज रहा है, पचासों रोगी सेवन करके लाभ उठा रहे हैं।

[T. टी. B बी.] तपेदिक-और पुराने ज्वर वालो—

अब भी समझो—यदि आप सब तरफ से हताश हो चुके हैं तो एक बार 'जबरी' क परीक्षा करें।

सैकडों हकीम, वैद्य, डाक्टर अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं, अनेक आदमी तार से आर्डर देते हैं—तार तथा पत्र के लिए थोड़ा सा पता 'जबरी' (जगाधरी) (Jabri Jagadhari) लिख देना ही काफी है। मूल्य इस प्रकार है। 'जबरी' स्पेशल नं० १ अमीरों के लिए, जिसमें साथ साथ ताकत को बढ़ाने के लिए सोना, मोती, अभ्रक आदिकी मूल्यवान भस्में भी पड़ती हैं मूल्य पूरा ४० दिनका कोर्स ७५) रुपया नमूना १० दिन के लिए २०) रुपया 'जबरी' न० २ जिसमें केवल मूल्यवान जडी बूटियां हैं पूरा कोर्स २०) रुपया १० दिन ६) महसूल आदि अलग है। आर्डर में अखबारका हवाला तथा नं० १ या २ साफ साफ लिखें। तुरन्त आर्डर देकर रोगी की जान बचावें, १० दिनमें ही अद्भुत चमत्कार दिखाई देगा। जल्द प्राप्त करने के लिये 'जगाधरी' आर्डर दें।

रायसाहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड बैंकर्स

(३) शिलांग [आसाम] या पंजाब आफिस 'जगाधरी',

'वीर अर्जुन' साप्ताहिक में विज्ञापन देकर लाभ उठाइये

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

चालाक बुड्ढा

एक बार किसी गांव में एक बुड्ढा और एक बुढ़िया रहते थे। उनके कोई सन्तान न थी। उनके पास धन काफी था, जिससे कई चोर उस घर पर ताक लगाये हुए थे।

सौभाग्य की बात कि एक रोज उनके घर में चोर आ ही गये। अब तो दोनों बहुत डरे। चोरों की संख्या थी चार और यह लोग दो ही थे। और फिर वह थे जवान और वह थे बुड्ढे।

यह लोग सोचने लगे अब क्या करना चाहिये? यह तो अपना सब माल ले जायेंगे।

बुड्ढे ने बुढ़िया से कहा 'देखो! अपना एक लड़का होगा — उसका नाम रखेंगे बंशी। दूसरा लड़का होगा, नाम होगा रामू। चोरों को इनकी बातों में मजा आ रहा था। पति-पत्नी आपस में यह बातें कर रहे थे और चोर इनकी बातों को ध्यानपूर्वक सुन रहे थे। वह क्या जाने की यह चालाकी कर रहे हैं?

बुड्ढा इसी तरह कहता जाता कि अपना एक लड़का होगा और उसका नाम रामू रखेंगे। नाम को वह खूब जोर से चिल्लाकर कहता। इसी तरह उसने अपने सब मुहल्लेवालों के नाम चिल्लाकर कह डाले।

अपने-अपने नाम सुनकर सब मुहल्लेवाले जाग गये और लकड़ी ले-लेकर बुड्ढे के घर में जमा हो गये। चोरों को इनकी चालाकी मालूम हो न हुई और बात की बात में चोर पकड़े गये!

इस तरह उनका माल बच गया।

— वागीशचन्द्र

हिन्दुस्तान के दादा

दादा भाई नवरोजजी का नाम अमर है।

देश की सेवा करते-करते वे बूढ़े हो गये।

लोग उनको हिन्दुस्तान के दादा कहने लगे।

दादा ने दुनिया को जताया।

हिन्दुस्तान की ताकत चूसी जा रही है।

हिन्दुस्तान दिन-दिन गरीब और कमजोर होता जा रहा है।

हिन्दुस्तान की आमदनी आदमी के पीछे सिर्फ सात पैसे की रह गई है।

इसमें क्या तो वह खुद खाये?
क्या अपने बच्चों को खिलाये?
क्या उनको पढ़ाये-लिखाये?
बीमारी में क्या करे?
शादी गमी में क्या करे?

दादा ने डंके की चोट कहा—

'जब तक स्वराज्य नहीं होगा, यह चुसाई चलती रहेगी।

हिन्दुस्तान को स्वराज्य चाहिए।
स्वराज्य बिना गति नहीं।'

राजाजी का चित्र

[श्री शरच्चन्द्र]

बूढ़ी माजी अकेली ही खेत में काम कर रही थीं। सारे ही खेत श्मसान की सी शान्ति से खाली पड़े थे। अचानक एक नौजवान वहां घूमता-घामता आ खड़ा हुआ। और बोला — 'क्यों माँ आप अकेली ही क्यों? और ये सब खेत सूखे क्यों? आप तो काम कर रही हैं और सब कहां हैं?'

माजी कहने लगीं — 'बेटा सब किसान तो राजा को देखने गये है।' नौजवान ने पूछा — 'तो माजी आप क्यो नहीं गयीं?'

'अरे, उसे क्या देखना? राजा में ऐसी कौनसी देखने की चीज है? वह तो मूर्ख थे जो देखने चले गये और आज उनका काम भी रह जायगा। मैं रही बच्चों वाली! अगर इस तरह मैं घूमती रहूं तो बच्चों को खाना कौन खिलायेगा?'

नौजवान हंसा। हाथ जेब में डाल एक पौंड का सिक्का निकाला और माजी को देकर कहने लगा —'आप किसानों से कहना कि राजा तो मुझ से यहां आकर मिल गया और सोने पर बनी हुई अपनी तस्वीर याद के लिये दे गया।'

आपने पहचाना वह कौन था? वह था 'ज्योर्ज तृतीय।'

मजदूर

मजदूर। क्या तू गरीब है? नहीं, नहीं।
तेरी पूंजी, तेरे हाथ।
तेरी पूंजी, तेरा काम।
तेरी पूंजी, तेरी मजदूरी।
तेरी पूंजी, तेरी सचाई।
तेरी पूंजी, तेरा एका, तेरा मेल।
तेरी पूंजी, तेरा संघ, तेरा संगठन।
तेरी पूंजी, तेरा भगवान!
मजदूर! तू सच्चाई मत छोड़।
मजदूर! तू दानाई मत छोड़।
मजदूर! तू उम्मीद मत छोड़।
मजदूर! तू मत डर।
तेरा भला होगा, तेरी तरक्की होगी।
तू खुश रहेगा! तू सब को खुश रक्खेगा।
मजदूर तू गरीब नहीं।

—त्रिदेव

—:०:—

उद्योग

[यशपाल आजाद]

यह बात तुम याद करलो,
पुनः करो उद्योग।
यदि तुम सफल न पहले हो तो,
पुनः करो उद्योग।
साहस को दिखलाओ अपने
क्योंकि साहस ही से जीत सकोगे
पुनः करो उद्योग।
बार एक-दो सफल न हो यदि,
पुनः करो उद्योग।
विजय चाहते हो जो तो तुम,
पुनः करो उद्योग!
करने में क्या लज्जा है
यदि न सफलता आवे हाथ
तो क्या करना तुम्हें चाहिए?
पुनः करो उद्योग।
काम कठिन जो जान पड़े तो,
पुनः करो उद्योग।
समय सफलता देगा तुम को,
पुनः करो उद्योग।
इसी नियम को सदा याद रख
पुनः करो उद्योग।

जानवर व पक्षिओं की आयु

१. तीतली २ महीने की।
२. चींऊटी १ साल की।
३. खरगोश ८ साल का।
४. सांप १० साल का।
५. बुलबुल १२ साल का।
६. मेंढक १५ साल का।
७. उकाब ३० साल का।
८. ऊंट ३५ साल का।
९. शेर ५० साल का।
१०. हाथी १०० साल का।
११. तोता १२० साल का।
१२. मगर १५० साल का।

मनुष्यों की आयु

न्युजलेन्ड के ६७ साल की।
स्वीडन के ६३ साल की।
नारवे के ६२ साल की।
केनाडा के ६० साल की।
फ्रान्स के ५७ साल की।
रूस के ४५ साल की।
जापान के ४३ साल की।
मिर्श के ३३ साल की।
हिन्दुस्तान के २७ साल की।

—जगदीशलाल

बाल-बन्धु-समाचार

'बाल-सभा' की स्थापना की जा रही है, जिसका उद्देश्य बाल-बन्धुओं में पारस्परिक मित्र-भाव को बढ़ाना होगा। सभा के नियम एक आने के डाक व्यय के लिए टिकट भेजने पर साथीगण मंगवा सकते हैं।

महेशचन्द्र आर्य आर्यनगर
हापुड़ (युक्तप्रान्त)।

× × ×

हस्तलिखित 'आगे कदम' द्वारा योग्यतानुसार अक्टूबर मास के पुरस्कार निम्नलिखित साथियों को भेज दिये गये हैं—

१. श्री अखिल विनय (ग्वालियर)
२. धन्यकुमार जैन (सागर)
३. सुरेश'चन्द्र' (बूंदी)
४. त्रिलोकीनाथ 'अजान' (कोटा)
५. सुशीलकुमारी शर्मा (इन्दौर)
६. 'उपासक' (सादड़ी)
७. मानराज मेहता (जोधपुर)
८. आर० के श्रीवास्तव (दिल्ली)
९. जानकीबाई (नागपुर)।

'आगे कदम' का कवितांक शीघ्र ही 'युग गान' प्रकाशित होने वाला है। साथी कवि अपने संक्षिप्त परिचय सहित युग के अनुकूल अपनी सुन्दर कृतियां भेजें।

नेमीचन्द्र 'भावुक' विशारद
प्र० मन्त्री हि० प्र० विद्यार्थी सभा,
मिरची बाजार, जोधपुर।

× × ×

मेरी हार्दिक इच्छा है कि बाल-बन्धु मेरे से विदेशी टिकटों को अपने टिकटों से बदलें।

श्याम नाथ मंगल
५४, जसवन्त भवन,
जोधपुर (राजपूताना)।

———

प्रश्न-पहेली

१. तीन वर्ण का इसका नाम।
आता है खाने के काम॥
काला है पर काग नहीं।
मीठा है पर खांड नहीं॥
(जामुन)

२. बिना पेड़, डाली का फल है।
शीतल, स्वच्छ ओ' निर्मल है॥
पत्थर सम कठोर और बलवान।
बादल इसका दाता है॥
(ओला)

३ चार वर्ण का इसका नाम।
विद्या, बुद्धि का है धाम॥
नित्य प्रातः जाओ इसमें।
सांयकाल आ जावो घर में॥
(पाठशाला)

———

खतरे की घण्टी

[पृष्ठ ८ का शेष]

मियों से चल जायगा । शेष सात सौ आदमी हमारे ही पत्रकार बन्धु--महकमे बेकारी में अपना नाम लिखावेंगे ! पत्रकारों की यह मनोवृत्ति बिलकुल वैसी ही है, जैसे किसी नगर में हैजा फैलने पर कोई घनाढ्य व्यक्ति कहे— हमें क्या है ! हमारा मकान तो साफ सुथरे मुहल्ले में है । हम क्यों डरें ? चमरियाने वाले अपनी रक्षा खुद क्यों नहीं करते ? जो पत्र अपने राष्ट्रीय विचारों अथवा ईमान्दारी का भरोसा किये बैठे हैं, वे यह नहीं समझते कि नवीन शिक्षित जनता को किस्सा तोता मैना तथा छबीली भटियारिन के नवीन संस्करण जितने प्रिय होंगे, उतनी 'निकटपूर्व की विकट समस्या' हर्गिज नहीं । और हम यह भी न भूलें कि भगवान महावीर और महात्मा गांधी जी के तमाम प्रयत्नों के बावजूद मानव-समाज की वासनाएं क्यों-की-त्यों प्रबल हैं और जिस समय कोई पत्र अर्द्धनग्न स्त्री-पुरुषों के चित्र देना आरम्भ करेगा और साथ ही चटपटी कहानी तो उसके ग्राहक चाय, सिगरेट के शौकीनों की तरह बढ़ेंगे । जहां राजनैतिक जीवन का संघर्ष समाप्त हुआ और जनता के मस्तिष्क में यह बात आ गई कि अब स्वराज्य हो गया है, बस वहीं साधनायुग के बजाय भोग-काल का प्रारम्भ हो जायगा । उस समय असंयत विचार दावाग्नि की तरह फैलेंगे ।

पत्रकार कहाँ होंगे ?

उस समय पत्रकार कहां होंगे ? जिस प्रकार आजकल अनेक ब्राह्मण पानीपाण्डे हैं, कितने ही रसोइया हैं और महाराज के नाम से प्रसिद्ध हैं और कुछ 'पीर बबर्ची भिश्ती खर' की उपाधि से अलंकृत होकर सेठों के लड़कों को सींच रहे हैं, उसी प्रकार भावी पत्रकार 'चोर नारि जिमि प्रकट न होई' के सिद्धान्तानुसार चाय पीते हुए आपस में कह रहे होंगे— 'भई ! यह तो कैपिटैलिज्म का रोल है, पूंजीवाद का स्वाभाविक क्रमविकास है । इसे हम लोग कैसे रोक सकते हैं ? इससे स्वतन्त्र पत्रकारिता मरती है तो हम क्या करें ? 'मरे को मर जाने दो, घी की चुपड़ी खाने दो' जरा मक्खन टोस्ट की तश्तरी इधर सरकादो और जी ! मघाराम का बिस्कुट हटले पाण्डे [पामर] से अच्छा बनने लगा है । छोड़ो श्रमजीवी पत्रकारों के प्रश्नों को, आज मिस नवीन का नाच देखने चलना है, टैक्सी तैयार है ।'

तो फिर क्या किया जाय ?

प्रश्न बड़ा गम्भीर है । सरकार से इस विषय में कुछ भी आशा करना व्यर्थ होगा और हमारे व्यवस्थापकों को इतनी फुर्सत कहां है कि वे इस प्रश्न की ओर ध्यान दें ? चुनाव हो चुके हैं और पत्रों तथा पत्रकारों का महत्व उनके लिये इस समय नगण्य है । देखिये न, किसी भलेमानस ने असेम्बली में यह प्रश्न नहीं किया कि मैक्सवैल साहब से किस पत्र को कितनी-कितनी रिश्वत विज्ञापनों के रूप में मिली ? कितने हजार कालम-इंच किस-किस पत्र के लिये रिजर्व किये गये थे ।

क्या ही अच्छा होता यदि कोई एम० एल० ए० यह प्रश्न करता है कि फर्स्ट-क्लास के किराये की रकम किस-किस पत्रकार को कितनी-कितनी मिली है ? हमारे बड़े बड़े पत्रकार सरकारी खर्च पर फर्स्ट क्लास में ट्रेविल करते थे और घर पर १९४२ के शहीदों की स्मृति में आंसू भी बहाते थे ?

हमारी समझ में इस समय एक ही बात आती है, वह यह कि श्रमजीवी पत्रकारों का संगठन तुरन्त ही प्रारम्भ कर दिया जावे और उसमें हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी इत्यादि का कोई भेदभाव न रहे ।

छोटे-छोटे पत्रों को इस समय पूर्ण सहयोग से काम लेना चाहिये; क्योंकि उनके ही जीवन को सबसे अधिक खतरा है । पत्रकारों के विषय में एक पाक्षिक बुलेटिन या पत्रिका निकालना तो अब अनिवार्य रूप से आवश्यक हो गया है ।

पूंजीपति पत्र खरीदते जाते हैं और खतरे की घण्टी बज रही है !

पेट भर भोजन करिये

गेसट्टर—(गोलियां) गैस चढ़ना या पैदा होना, पेट में पवन का घूमना, भूख की कमी पाचन का न होना, खाने के बाद पेट का भारीपन बेचैनी, हृदय की निर्बलता दिमाग अशान्त रहना, नींद का न आना, दस्त की रुकावट वगैरह, शिकाहतें दूर करके दस्त हमेशा नियमित साफ लाती है, अन्न पचा कर कड़ाके की भूख लाती है, आंत को ताकत देती है । शरीर में रुधिर बढ़ा कर शक्ति प्रदान करती है । आंत, लीवर तिल्ली और पेट के हर एक रोग की अद्वितीय दवा है ! कीमत रुपया १) तैयार का ३॥: डाक खर्च अलावा ।

पता:-दुरधानुपान फार्मेसी ४ जामनगर देहली एजेंट-जमनादास कं० चांदनी चौक

प्यारी बहिनो

न तो मैं कोई नर्स हूं, न कोई डाक्टर हूं और न वैद्यक ही जानती हूं, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थी स्त्री हूं । विवाह के एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं लिकोरिया (श्वेतप्रदर) और मासिक-धर्म के दुष्ट रोगों में फंस गई थी मुझे मासिक-धर्म खुलकर न आता था, अगर आता था तो बहुत कम और दर्द के साथ, जिससे बड़ा दुख होता था । सफेद पानी (श्वेतप्रदर) अधिक जाने के कारण मैं प्रति दिन बहुत कमजोर होती जारही थी, चेहरे का रङ्ग पीला पड़ गया था, घर के कामकाज से जी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था । मेरे पतिदेव ने मुझे सैकड़ों रुपये की औषधियां सेवन कराईं, परन्तु किसी से रत्ती भर लाभ न हुआ । इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुख उठाती रही । सौभाग्य से एक सन्यासी महाराज हमारे दर्वाजे पर भिक्षा के लिए आये मैं दर्वाजे पर आटा डालने आई तो महात्मा जी ने मेरा मुख देखकर कहा—बेटी तुझे क्या रोग है जो इस आयु में ही चेहरे का रङ्ग रुई की भांति सफेद हो गया है ? मैंने सारा हाल सुनाया । उन्होंने मेरे पति को अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्खा बतलाया, जिसके केवल १५ दिन के सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगों का नाश हो गया । ईश्वर की कृपा से अब मैं कई बच्चों की मां हूं । मैंने इस नुस्खे से अपनी सैकड़ों बहिनों को अच्छा किया है और कर रही हूं । अब मैं इस अद्भुत औषधि को अपनी दुखी बहिनों की भलाई के लिये असल लागत पर बांट रही हूं । इसके द्वारा लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वर ने मुझे बहुत कुछ दे रखा है । एक बहिन के लिये पन्द्रह दिन की दवा तैयार करने पर २॥।=) दो रुपये चौदह आने असल लागत खर्च होती है और महसूल डाक खर्च अलग है ।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोग में फंस गई हो तो वह मुझे जरूर लिखे मैं उनको अपने हाथ से औषधि बनाकर वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी । यह मेरा प्रण है कि मैं किसी बहिन से दवा की कीमत अपनी असल लागत से एक पैसा भी ज्यादा न लूंगी ।

जरूरी सूचना —मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का ही नुसखा मालूम है इसलिये कोई बहिन मुझे किसी और रोग की दवाई के लिये न लिखें ।

प्रेमप्यारी अग्रवाल नं० (३०) बुढलाडा जि० हिसार (पंजाब) ।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बांझ स्त्रियों के लिये

संतान पैदा करने का लासानी नुस्खा

मेरा ब्याह हुए १५ वर्ष हो चुके थे इस समय के बीच कई इलाज कराए मगर कोई फायदा न पहुंचा। अचानक मैं अपनी सहेलियों के साथ तीर्थ यात्रा करने श्री बद्रीनारायण जी चली गई। सौभाग्यवश वहां मुझे एक ऐसे जटाधारी त्यागी महापुरुष महात्मा जी के दर्शन हुए जो सचमुच ही ईश्वर का अवतार दिखाई देते थे। मैंने उनके चरणों का स्पर्श करके अपनी तमाम दुःखभरी कहानी सुनाई। महात्मा जी ने खुश होकर मुझे एक औषधि तन्त्र दिया और आशीर्वाद देकर कहा बेटी, चिन्ता मत करो ईश्वर तुम्हारे हृदय की अभिलाषा पूर्ण करेगा। मैंने घर आकर उस औषधि को तैयार किया और महात्मा जी के कथनानुसार अनुष्ठान किया। ईश्वर की कृपा से मुझे आशा की झलक दिखाई दी और नौ मास के पश्चात जीता-जागता बालक गोद में खेलने लगा। इसके पश्चात मैंने जिस सन्तानहीन बहन को निम्न लिखित औषधि का सेवन कराया, ईश्वर की कृपा से उसी की आशा पूर्ण हुई। महात्मा जी ने औषधि देते समय मुझसे वचन लिया था कि, बेटी, इस दवा से औरों का उपकार करती रहना। महात्मा जी के कथनानुसार मैंने इस औषधि तन्त्र को ट्रैक्टपत्र द्वारा प्रकाशित कर दिया है जिस से और बहिनें इस औषधि को तैयार करके लाभ उठा सकें।

औषधि तन्त्र ये है—असली नैपाली कस्तूरी (जिस पर नेपाल गवनमेंट की मोहर हो) केसर, जायफल, सुपारी दक्खिनी हर एक साढ़े दस मासे, पुराना गुड़ (जो कम-से-कम दस साल का हो) तेरह मासे, लौंग चार अदद, कटियारी सफेद की जड़ (सत्यानाशी सफेद की जड़) सवा तोला, इन सब औषधियों को खरल में डाल कर २४ घण्टे तक खरल करें और पानी इतना मिलावें कि गोलियां बन सकें, फिर जंगली बेर के बराबर गोलियां बना लें। इस के सेवन से गुप्त खराबियां दूर हो जाती हैं और बहनें इस लायक हो जाती हैं कि सन्तान पैदा कर सकें।

रीति—गाय के थोड़े गर्म दूध में मीठा डाल कर प्रातःकाल और सायंकाल एक-एक गोली तीन रोज तक सेवन करें। ईश्वर की कृपा से कुछ रोज में ही आशा की झलक दिखाई देने लगेगी।

नोट—औषधि तन्त्र के अन्दर सफेद फूल वाली सत्यानाशी की जड़ मिलानी आवश्यक है, क्योंकि इसके अन्दर सन्तान पैदा करने के अधिक गुण हैं।

इसके विषय में श्रीमान राधेश्याम जी हापुड़ से लिखते हैं—मेरी समझ में नहीं आता कि आपकी सन्तान पैदा करने वाली औषधि की मैं किन अङ्गों में प्रशंसा करूं। मैं आपको हर्ष के साथ सूचित करता हूं कि आपकी औषधि से मेरी स्त्री को १६ वर्ष के पश्चात बालक की प्राप्ति हुई। मेरा आशीर्वाद है कि आप दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति करती रहें। सरदार हरदन्तसिंह भटिन्डे से सूचित करते हैं कि आपकी सन्तान पैदा करने वाली औषधि एक अद्भुत जादू है। मैं इसकी जितनी प्रशंसा करूं कम है। मैं नहीं जानता था कि आपकी औषधि में इतने गुण भरे हुए हैं। हमारे शहर में आपकी औषधि की घर घर प्रशंसा हो रही है। अब तक करीब-करीब बीस से ज्यादा बहिनें गर्भवती हो चुकी हैं। कृपया तीन तोला शीशी वी० पी० से भेज दें। धन्यवाद।

इसके सिवाय अनगिनत प्रशंसा-पत्र मेरे पास मौजूद हैं अगर कोई देखना चाहे तो मेरे पास आकर देख सकते हैं।

मेरी सन्तान-हीन बहिनो,

आप इसे बेगुण औषधि न समझें। अगर इसको असली चीजें और विधिवार हुए औषधि तन्त्र की रीति से तैयार कर लें तो कोई वजह नहीं कि इससे बीस और पच्चीस वर्ष से बैठी हुई सन्तान हीन बहिनों की गोद में बच्चे खेलते नजर न आवें। अगर कोई बहिन इस औषधि को मेरे हाथों से ही बनवाना चाहें वो मुझे लिख दें। मैं उनको अपने हाथ से ही दवा तैयार करके भेज दूंगी।

मैं अपने धर्म से सच कहती हूं कि मैं किसी बहिन से औषधि की असली लागत से एक पाई भी ज्यादा न लूंगी। जिस बहिन को मेरे ऊपर विश्वास न हो वो बहन मुझे दवा तैयार करने के लिए कदापि न लिखें। एक बहन की औषधि पर पांच रुपये बारह आने, दो बहिनों की औषधि पर नौ रुपये आठ आने, तीन बहिनों की औषधि पर तेरह रुपये चार आने लागत खर्च आते हैं और महसूल डाक खर्च से अलग।

जरूरी नोट—एक बहिन की चौबीस घण्टे दवा पिसवाने पर मेरे २) रुपए लगते हैं और दो और तीन के लिए दवा पिसवाने पर भी दो रुपये खर्च होते हैं। इस लिए अगर दो तीन बहिनें मिलकर दवा तैयार करा लेंगी तो वो फायदे में रहेंगी।

पता:—श्रीमती रतनबाई जैन सदर बाजार थाना रोड, देहली।

प्रमेह रोग समाप्त करो

७ दिन में आराम

यदि किसी पुरुष को पेशाब करने के पहले या पेशाब करने के बाद सफेद रंग का पानी आता हो तो यह बहुत भयंकर बात है। इसे प्रमेह का रोग कहते हैं। धीरे-धीरे यह रोग बढ़ जाता है तो आदमी पौरुषहीन हो जाता है। उसकी शक्ति समाप्त हो जाती है। इस वास्ते जिन पुरुषों को यह शिकायत हो या स्वप्नदोष होता हो तो इस भयंकर रोग से लापरवाही नहीं करनी चाहिये।

प्रमेह का रोग केवल ७ दिन में नष्ट हो जाता है

और केवल ३॥) खर्च होंगे। "जौहरे आजम" इस रोग के लिये अक्सीर प्रमाणित होती है। केवल एक शीशी दवा "जौहरे आजम" से बड़े बड़े पुराने रोगी स्वस्थ हो गए। "जौहरे आजम" प्रमेह के रोग का सबसे अच्छा इलाज है। जिन लोगों को आवश्यकता हो—

मैनेजर, जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४ दिल्ली

के पते पर पत्र लिखकर "जौहरे आजम" की एक शीशी वी० पी० द्वारा मंगा लें। एक शीशी का मूल्य ३॥) तीन रुपया आठ आना है पार्सल का खर्च ॥-) लगेगा।

[टेलीफोन नं० ६२६८]

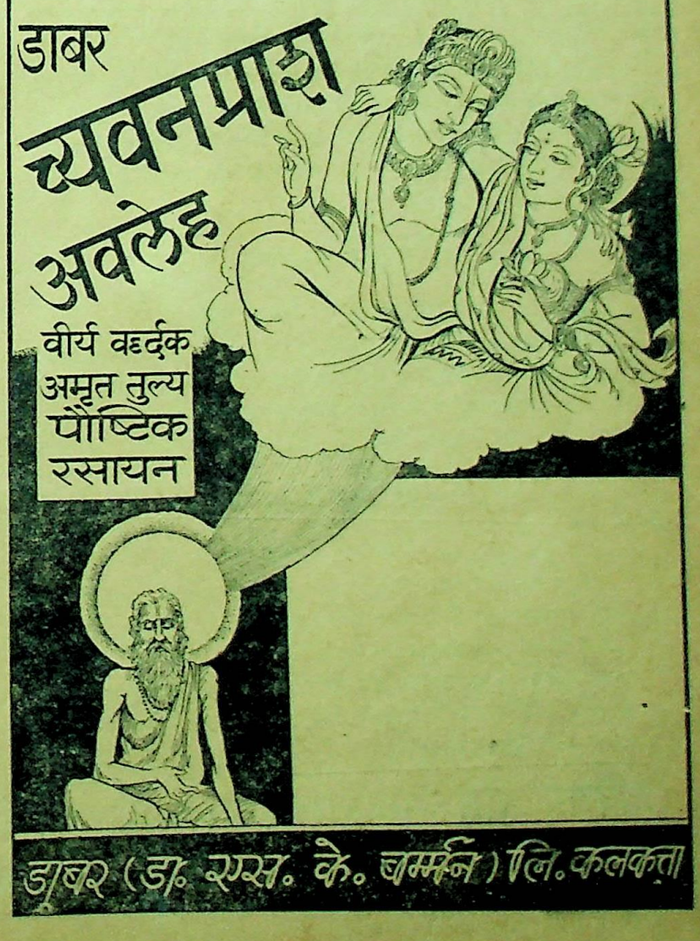

रजि० नं० एल० ४६००

विजय पुस्तक-भण्डार देहली की

जीवनदायिनी सामयिक पुस्तकें

जीवन चरित्र-माला:—सम्पादक—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

पं० मदनमोहन मालवीय

(ले०—श्री राम गोविन्द मिश्र)

महामना मालवीय जी का क्रम बद्ध जीवन वृत्तान्त। उनके मन को और विचारों का सजीव चित्रण। और उनके सम्बन्ध में महापुरुषों के मत। सब कुछ एक ही पुस्तक में। मूल्य १।) डाकखर्च ।=)

श्री सुभाषचन्द्र बोस

(लेखक—श्री रमेशचंद्र आर्य)

यह कांग्रेस के भूतपूर्व राष्ट्रपति का प्रामाणिक और पूरा जीवन-चरित्र है। ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। पुस्तक के अंत में श्री सुभाष बाबू के विचारों का संग्रह भी है। मूल्य ॥=) डाक व्यय ।-)

पं० जवाहरलाल नेहरू

(ले०— पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति)

इस पुस्तक में इन प्रश्नों का उत्तर मिलेगा : — पं० जवाहरलाल जी क्या हैं ?वह जो कुछ भी हैं, वह कैसे बने? वह क्या चाहते और क्या करते हैं? इन प्रश्नों के उत्तर में भारत के इस महापुरुष का सारा चरित्र आजाता है। भाषा, लेखन शैली और भाव के विषय में कुछ लिखना अनावश्यक है। इतना ही बताना पर्याप्त है कि इसमें लेखक की सब विशेषतायें विद्यमान हैं। और १९४५ तक की पं० जी के जीवन की प्रायः सारी ही घटनाओं का वर्णन आगया है। मूल्य केवल १।) डाक व्यय ।=)

मौ० अबुलकलाम आजाद

(ले०—श्री रमेशचन्द्र जी आर्य)

यह भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री मौलाना अबुलकलाम आजाद की जीवनी है जिसे श्री रमेशचन्द्र जी आर्य स्वर्गवासी ने बड़े परिश्रम के साथ लिखा है! इसके पढ़ने से यह भली भांति प्रकट होजाता है कि मौलाना साहब की राष्ट्रीयता दूध की तरह स्वच्छ है और वह अपने मार्ग पर दृढ़ चट्टान की तरह अटल हैं। मूल्य ॥=) डाक व्यय ।-)

महर्षि दयानन्द

ले०—श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति

महर्षि का यह जीवन चरित्र अपने ढङ्ग का पहिला है सब उपलब्ध सामग्री के आधार पर ऐतिहासिक तथा प्रामाणिक शैली पर ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। सत्यार्थप्रकाश के महत्व पर विशेष प्रकाश डाला गया है।

मूल्य केवल १॥) डाक व्यय ।=)

"मैं भूल न सकूं"

[सम्पादक श्री जयंत]

श्रीयुत श्रीनाथसिंह जी, श्री वात्स्यायन 'अज्ञेय' श्री काका कालेलकर जी, कवि सम्राट् श्री अयोध्यासिंह जी उपाध्याय 'हरिऔध' श्री रत्नकुमारी जी माथुर, श्रीमती होमवती जी, श्री विष्णुप्रभाकर जी, श्रीयुत देवीदत्त जी शुक्ल तथा श्री पहाड़ी आदि प्रसिद्ध साहित्यिकों उपन्यास और कहानी लेखकों की शिक्षाप्रद सच्ची कहानियों का संग्रह। प्रत्येक कहानी ऐसी है जिसे एकबार पढ़कर भूलना कठिन है। मूल्य केवल १) डाकव्यय ।-)

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

'जीवन संग्राम'

का

सन्शोधित दूसरा संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय की ललकार एक ही साथ है। श्री पं० जी की इस नई सामाजिक कृति के सम्बन्ध में – ग्वालियर राज्य के प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र "जयाजी प्रताप" ने लिखा है — पराधीन देशों को ऐसी पुस्तकें आशा और क्रियात्मकता का सन्देश देती हैं और इस दृष्टि से यह पुस्तक पठनीय है। 'विक्रम' उज्जैन ने इसके सम्बन्ध में लिखा है -- 'इस पुस्तक की विशेषता और सफलता इसी में है कि इसके लेखक प्रो० इन्द्रजी हैं। पुस्तक हिन्दी भाषी के मनन और संग्रह योग्य है'। मूल्य १) डाक व्यय ।-)

त्याग का मूल्य

यह विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगौर की अमर कृति (उपन्यास) योगा योग का अविकल अनुवाद है। इसी को उपन्यास सम्राट स्वर्गीय प्रेमचन्दजी ने रवि बाबू का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास बतलाया था। ४०० पृष्ठ दोरंगा टाइटल पेज — मूल्य ५) डाकव्यय ।=)

तिरंगा झण्डा

श्री विराज जी रचित तीन एकांकी नाटकों का संग्रह — मूल्य १।) डाकव्यय ।-)

"दिल्ली चलो"

ले० दैनिक वीर अर्जुन के सम्पादक आनन्द विद्यालङ्कार व हरिश्चन्द्र

भारतीय स्वतन्त्रता-संघर्ष के अमर सैनिकों की एक अविस्मरणीय गाथा, कर्नल सहगल के विशेष संदेश सहित। सुभाष बाबू भारत से कैसे भागे, आजाद हिन्द फौज का निर्माण और उसके कारनामे, तथा मुकदमों का पूरा विवरण

मूल्य डाक व्यय सहित २।-)

घर बैठे हुनर सिखाने वाली अनुपम पुस्तकें —

साबुन-विज्ञान

तैल का सब से बड़ा उद्योग साबुन हैं और देश के साधनों को देखते हुये साबुन के उद्योग विस्तार के लिये अभी बहुत बड़ा क्षेत्र पड़ा है। परन्तु इस उद्योग में सफलता प्राप्त करना साबुन बनाने की अच्छी शिक्षा पर निर्भर है। 'साबुन विज्ञान' इस विषय में अद्वितीय पुस्तक है। हर प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के लिये इसे अवश्य पढ़ें। मूल्य २) डाकव्यय ।-)

तैल-विज्ञान

इस पुस्तक में तिलहन से लेकर तैल के चार बड़े उद्योगों की विवेचना सविस्तार तथा सरल ढंग से की गई है। अतः केश तैल, बनास्पति घी, पेण्ट और वार्निस के उद्योग सीखने के लिये 'तैल विज्ञान' पुस्तक अवश्य पढ़िये। मूल्य २) डाकव्यय ।-)

हमारे घर

भट्टी की तरह धधकते हुये भारतीय घरों को शान्ति सदन कैसे बनाया जाय? इस पुस्तक में इसी विषय का चिन्तन है। ॥=) मूल्य डाक व्यय ।-)

आनुपातिक प्रनिनिधित्व (Single Transferable Vote)

(निर्वाचन सम्बंधी नियम) ले० श्री पं० महावीर जी त्यागी मूल्य ।)

विजय पुस्तक भण्डार (वीर अर्जुन कार्यालय के ऊपर) श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

श्री दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिये 'अर्जुन प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली से छाप कर प्रकाशित किया।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वीर अर्जुन

साप्ताहिक

ILLUSTRATED VIR ARJUN WEEKLY

वर्ष १२] दिल्ली, ७ पौष सम्वत २००३, 23th December 1946. [अङ्क ४१]

सम्पादक—
रामगोपाल विद्यालङ्कार
कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार

वार्षिक मूल्य ८)
छः मास का ४)
एक प्रति का मूल्य ≡)

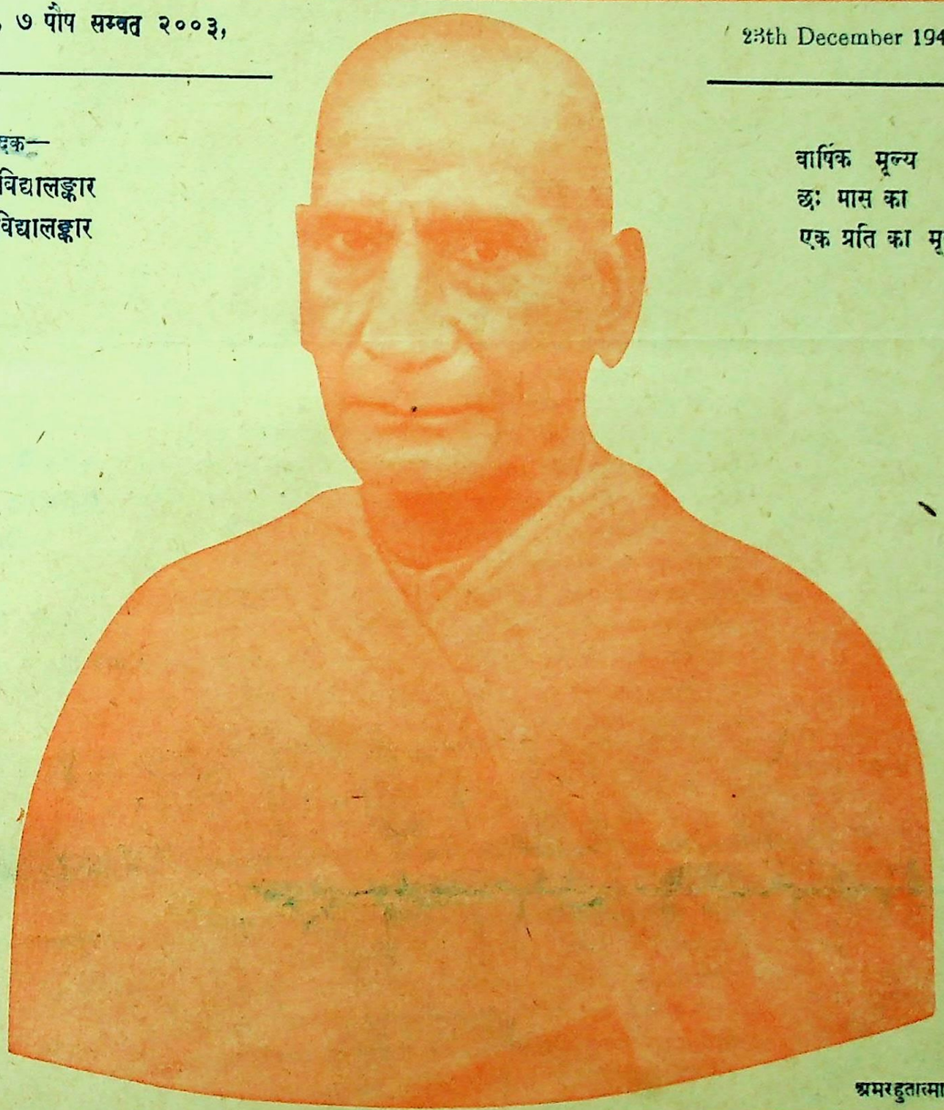

अमरहुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्दजी

पञ्जाब युनिवर्सिटी द्वारा नियत
हिन्दीरत्न, भूषण तथा प्रभाकर
हिन्दी परीक्षाओं की
पाठ्य पुस्तकें
तथा
सर्वोत्तम सहायक पुस्तकों
के लिये
स्मरण रखिये
सूचीपत्र मुफ़्त

पाल एण्ड कम्पनी
हस्पताल रोड, अनारकली, लाहौर।
प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता

अपनी
मानसिक, आध्यात्मिक,
और नैतिक उन्नति के लिये
वर्तमानयुग के महापुरुषों की पुस्तकें
हमसे मंगवा कर पढ़िये,
ताकि उनके
जीवन और अनुभूतियों का सार है।
हमारा शो रूम
आप की रुचि तथा प्रवृत्ति की
सन्तुष्टि करेगा और
आपका पत्र-व्यवहार
प्रिय होगा।

आधुनिका

पुरुष, विपन्न नारी की रक्षा करो

[श्री० कृष्णाकुमारी 'तलवार']

उठो न, प्रभात हो गया। तुम अभी तक सो रहे हो, कितनी गहरी निद्रा में सो रहे हो, जो अभी तक नहीं जागे। राजस्थान तो कभी इतनी देर तक सोया न था। फिर आज जाग क्यों नहीं उठता। क्यों अपने नाम को आज कलंकित कर रहा है। जागो! जागो! उठो! तन्द्रा त्याग दो। देखो मां तुम्हें जगा रही है। तुम्हें झकझोर रही है। तुम्हें निमंत्रित कर रही है। उठो!

क्या तुम नहीं देखते? भारत की कितनी शोचनीय दशा हो रही है। क्या तुम नहीं सुन रहे! आज भारतीय नारी का कितना घोर अपमान हो रहा है। अपमान ही नहीं, उसका सतीत्व लुटा जा रहा है। गुण्डे नारियों निराश्रय कर रहे हैं। उन्हें विधवा बना रहे हैं। इस पर भी उन्हें सन्तोष नहीं, उन्हें जबरदस्ती मुसलमान बना रहे हैं। कलमा पढ़ा कर, उनका सिंदूर, कुंकम जो हिन्दू नारी के सुहाग का चिन्ह है, उसे अपने अपवित्र पैरों से गिराते हैं, उनकी दुर्दशा करके उनका धर्म नष्ट कर रहे हैं। क्या तुम्हारे शरीर में रक्त नहीं, क्या जोश नहीं, क्या इतनी क्षमता या साहस नहीं जो नारी की रक्षा करो, प्रतिशोध ले सको। जो तुम पहले नारी के तनिक से अपमान करने पर, तनिक सी उपेक्षा करने पर उबल पड़ते थे, जोश और आवेश में लहू की नदियां बहा देते थे। कहां गई तेरी वीरता? कहां गया तेरा जोश? तेरे शरीर में अब रक्त नहीं, पानी है। तभी तू शांत बैठा है।

वह राजस्थान जिसमें नारी के अपमान करने के कारण राज्य नष्ट हो गये! पद्मिनी का अपमान करने पर राजस्थान के वीरों की तलवारें तन गई थीं, वह म्यान में न ठहर सकीं। राजपूतों का खून उबल पड़ा था, भृकुटि तन गई थी। जी भरकर खून की होली खेली और हंसते-हंसते अपने प्राण विसर्जन कर दिये। राज्य नष्ट हो गया, रह गई केवल अमर कहानी।

एक दिवस वह था, जब नारी के अपमान करने पर ही महाभारत हुआ था। द्रौपदी का निरादर पांडव न सह सके और प्रतिशोध लेने को तड़प उठे। इसी कारण महाभारत हुआ।

ओ गिरधारी! द्रौपदी की चीत्कार को सुनकर तो आपने स्वयं सतीत्व की रक्षा की थी, किन्तु आज यह उपेक्षा क्यों? क्या आज आपको इतनी नारियों का चीत्कार, उनका क्रन्दन, विनय का स्वर सुनाई नहीं दे रहा? हां तुम भी क्यों आओगे! तुम भी तो पुरुष जाति में से ही हो।

वह दिवस भी था, जब भगवान रामचन्द्रजी ने सीता के लिये कितने कष्ट सहन किये थे और दुष्ट रावण को मार कर सीता को बचाया! क्या आज भारत में कोई ऐसा वीर नहीं, जो नारी को आततायियों के पंजे से छुड़ाये। क्या राजस्थान में ऐसा कोई वीर नहीं जो नारी की रक्षा करे।

इस नारी के ही रक्त से तुम्हारा निर्माण हुआ, इसी से तुम्हारा स्वर गुंजारित हुआ। नारी ने ही तुम्हें जन्म दिया, तुम्हारा पालन किया, अपना रक्त पिला-पिला कर तुम्हें बड़ा किया। रातों जागकर तुम्हारे कष्टों का निवारण किया। उफ! आज तुम उनके कष्टों का निवारण, उनके दुःखों को क्यों नहीं हरते! तुमने स्वयं उसका घोर अपमान किया, उसे दासी बना कर रखा, घर के नौकरों से बढ़कर उसे यातनायें दीं, उसे घुला घुला कर, तिल-तिल मिटने पर विवश किया। उसे पग-पग पर अपमानित किया और अब आततायियों द्वारा क्यों उसका अपमान करा रहे हो?

नारी ने तुम्हारे लिये क्या नहीं किया? भारतीय नारी त्याग की प्रतिमूर्ति, प्रतीक, प्रतिबिम्ब, प्रतिमा है। नारी के रोम-रोम से निकलती हुई त्याग की प्रतिध्वनि क्या हमारे पुरुष वर्ग को नहीं सुनाई देती? प्राचीन काल की सती प्रथा नारी के उत्सर्ग की चरम सीमा थी और वर्तमानकाल में पति के देहान्त के पश्चात वह अपने प्रियतम की स्मृति में अपने आपको तिल-तिल कर, मिटकर, स्वयं जलकर ही अपना जीवन व्यतीत कर देती है। जलना ही तो उसने सीखा है। त्याग ही उसका ध्येय है। उत्सर्ग करना ही तो उसका आदर्श है।

नारी ने भारतीय आदर्शों को ठुकरा कर तुम्हारे अरमान पूर्ण किए। उसने तुम्हें प्रसन्न करने के लिए अपनी आकांक्षाओं को बर्बाद कर दिया। अपनी उमंगों को, अपने मीठे स्वप्नों की चिता जला दी। अपने अरमानों में आग लगा दी। अपनी समस्त इच्छाओं को ठुकरा कर, अपने अधिकारों को खोकर, अपना जीवन पुरुष के लिए अर्पण कर दिया। यह सब क्यों? केवल तुम्हारे लिये।

नारी का स्वभाव ही कोमल है। त्याग, सहनशीलता, क्षमा की वह प्रतीक है। किन्तु तुमने उसकी कोमलता, सहनशीलता का अनुचित लाभ उठाया। अबला कह-कह कर उसका निरादर किया। उसके सब अधिकारों को छीन कर, उसे बहका कर, उसे परतंत्रता की सघन बेड़ियों में बांध दिया। नारी स्नेह चाहती है, वह स्नेह की भूखी है! भोली नारी को बहला कर उसका सर्वस्व छीन लिया। उसकी दशा पर-कटे पक्षी के समान हो गई। अब वह तुम्हारी लगाई हुई प्रत्येक लांच्छना को सहती है। तुम्हारी अवहेलना, उपेक्षा, तुम्हारा निरादर करना सब कुछ मूक होकर सहती है। धीरे-धीरे उसकी मूकता पर ही तुमने उसे अपना खिलौना बना लिया। तुमने उसे पश्चिमी सभ्यता अपनाने को बाध्य किया और उसने तुम्हारी इच्छापूर्ण करने के लिए अपने आदर्शों को ठुकरा दिया।

अर्धांगिनी या मित्र के स्थान पर तुमने उसे दासी बना दिया। चेरी भी अप्रसन्न होकर अन्यत्र कहीं जा सकती है, किन्तु यह नारी गृह छोड़ कर कहीं नहीं जा सकती है। उसे पुरुष ने बरबस अपने पथ की अनुगामिनी बना दिया। अपने पथ पर ही चलने को उसे विवश किया। नारी स्वयं अपनी रक्षा करने में असमर्थ हो गई। झांसी की रानी का आदर्श आज स्वप्न ही है। आज की नारी पराधीन है, वह अपनी रक्षा करे भी तो कैसे करे।

आज की पुरुष जाति में यदि इतनी क्षमता नहीं, इतना शौर्य नहीं, इतना साहस नहीं कि वह नारी की रक्षा कर सके तो उसे नारी को स्वाधीनता देनी चाहिए थी, जिससे वह अपनी और पुरुष की रक्षा कर सकती। जो नारी को नहीं बचा सका, उससे हम भारत की स्वतन्त्रता की क्या आशा करें?

सुनो! सुनो! नारी पुकार रही है। रक्षा के लिए याचना कर रही है। बिलख रही है। भगवान! गजराज की पुकार सुन कर तुम स्वयं ही दौड़े आये थे, किन्तु आज इतनी नारियों की याचना, पुकार क्या तुम को नहीं सुनाई दे रही। यह तुम्हारा मान है या कोई अवहेलना। सुनो! सुनो! ध्यान देकर सुनो। नारी का हृदय-विदारक क्रन्दन, उसकी चीत्कार अभी तक सुनाई दे रही है। भारत के लाल जागो! लाज खाओ! अब भी समय है, अपने कलंक को धो डालो·····।

———

अन्तर्जातीय विवाह

[सत्यपाल]

आजकल जबकि भारत में चारों ओर संघर्ष और द्वेष का राज्य है, अन्तर्जातीय विवाह एकता का सबसे सफल उपाय सिद्ध होगा। इससे अन्य भी अनेक दोष दूर हो सकते है।

भारतवर्ष में दहेज की प्रथा, बहुत पाई जाती है। बंगाल प्रान्त में लड़कियों की संख्या लड़कों की अपेक्षा अधिक है। जात-पात के बंधन के कारण बहुत सी लड़कियां अविवाहिता ही रह जाती हैं। यहां पर दहेज की प्रथा बहुत अधिक है, क्योंकि लड़के कम होने के कारण वह चाहते हैं कि दहेज में अधिक से अधिक धन आवे और जो नहीं दे सकते, वह आत्महत्या कर लेती हैं या मुसलमान बन जाती हैं। दूसरी तरफ पंजाब में लड़के अधिक और लड़कियां कम हैं। यहां पर भी वही हाल है। यदि बंगाल तथा पंजाब मे विवाह होने लगें तो यह दहेज की प्रथा नष्ट हो जायगी तथा जो दुराचार फैलता है, वह भी बंद हो जायेगा। जीव-विज्ञान के अनुसार भिन्न २ खून के मिलने से सन्तानों में विलक्षणता आती है अर्थात् उनके दिमाग अधिक विकसित हो जाते हैं, उनका शरीर भी स्वस्थ रहता है। जितना दूर २ से भिन्न-२ खून मिलेगा, मानव की उतनी ही उन्नति अधिक होती चली जायेगी। प्राचीनकाल के आर्यों की बुद्धि अद्भुत थी। आजकल विवाह पड़ोस घरों में ही हो जाते हैं, जिससे मनुष्य का दिमाग उन्नति नहीं कर सकता है। मुसलमानों में तो शादियां रिश्तेदारों में ही हो जाती है, यही कारण है कि उनमें से अब तक अच्छे मस्तिष्क वाले मनुष्य कम होते हैं। यदि अन्तर्जातीय विवाह होने लग जायें तो इस कमी को भी दूर किया जा सकता है।

हरिजनों या अछूतों की समस्या भी कम विकट नहीं हैं। हम लोग उनको मन्दिरों तथा कुओं पर तो जाने की आज्ञा देते हैं परन्तु उनसे शादी करने में हिचकिचाते हैं। यदि इस प्रकार के बंधन टूट जायें और अन्तर्जातीय विवाह होने लग जायें तो हम अपने हरिजन भाइयों को फिर मिला सकते हैं।

सबसे बड़ी कठिनाई तो विधवा विवाहों में आती है। लड़कियां अधिक होने की वजह से उनसे शादी करने वाला कोई नहीं मिलता। जब क्वांरी ही बहुत मिल जाती हैं तो विधवाओं से कौन विवाह करे! यदि हम तमाम दुनिया की जनसंख्या को देखें तो उसमें स्त्रीपुरुषों का अनुपात बराबर देखने में आता है। अगर इनमें से एक प्रान्त में काफी संख्या में विधवा रह जाती हैं तो दूसरे प्रान्त में युवक भी अविवाहित रह जाते हैं। इसी लिये अन्तर्जातीय विवाहों के अर्थ केवल अन्तर्प्रान्तीय तक ही सीमित नहीं रह जाते हैं परन्तु अन्तर्देशीय भी हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

समाचार-चित्रावली

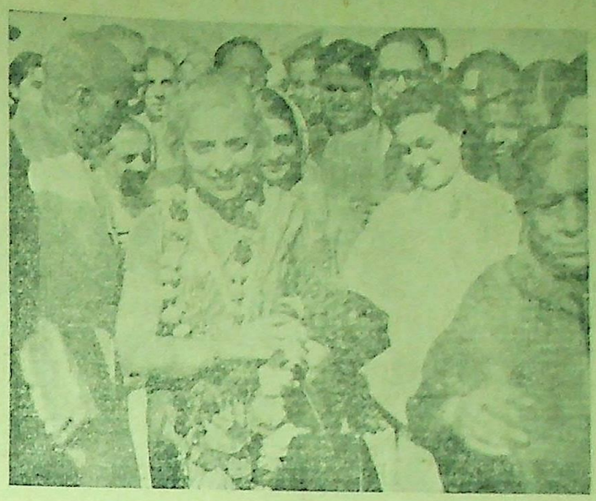

श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित का दिल्ली में स्वागत

अमेरिका में प्रथम भारतीय राजदूत

श्री आसफअली

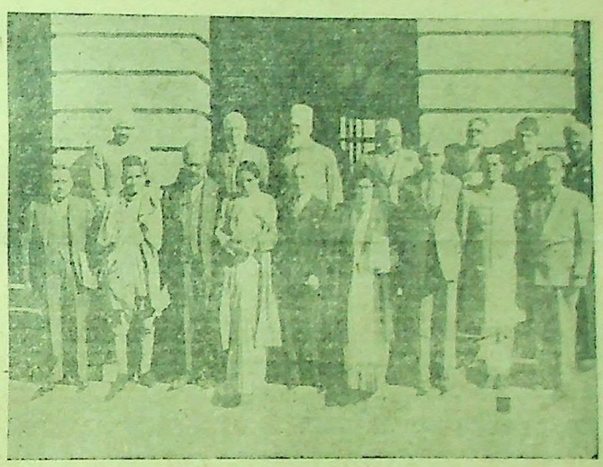

दिल्ली म्यु० संगठन समिति के सदस्य

अ० भा० कांग्रेस के नये प्रधानमन्त्री

आचार्य जुगलकिशोर

अखण्ड भारत का नारा लगा कर लीग को चकित करने वाले

डा० अम्बेडकर

१९४७ की क्रान्ति के कार्यक्रम के प्रस्तोता

श्री जयप्रकाशनारायण

लोकवाणी

भारत शक्तिशाली है

संसार की वर्तमान दृष्टि से, मैं यह सकता हूं कि भारत शक्तिशाली है — राजनीतिक, आर्थिक और व्यापारिक दृष्टि से पर्याप्त शक्तिशाली है। मैं यों भी कह सकता हूं कि भारत सौदेबाजी की अच्छी हालत में है। भारतवर्ष भौगोलिक दृष्टि से ऐसी स्थिति में है कि दक्षिण पूर्वी एशिया में भारत के सहयोग व समभाव के बिना व्यापार व रक्षा के क्षेत्रों में कुछ भी हो सकना कठिन है। भारत की आर्थिक शक्ति बहुत है और वह अपने साधनों के कारण भी शक्तिशाली है। जब शासन-सत्ता का पूर्ण परिवर्तन हो चुकेगा तो भारत आसानी से आगे कूद कर संसार में अपना उचित स्थान पा सकेगा। व्यापारिक दृष्टि से हम पर्याप्त अच्छी हालत में हैं और अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश से भी बराबरी की कार्यवाही कर सकते हैं।

हिंदुस्तान निश्चय ही प्रार्थी के रूप में संसार के सामने नहीं जायगा। यदि आप अमरीका के औद्योगिक सामर्थ्य पर भी विचार करें तब भी मैं कहूंगा कि हिंदुस्तान एक सबल स्थिति में है। यह सम्भव है कि अमरीका की समस्याओं का भारत के साथ सामंजस्य स्थापित करने की आवश्यकता पड़े। फिर भी हम बहुत समय तक अकेले खड़े रह सकते हैं और यदि हम न खड़े रह सकें तब भी संसार में बहुत से हाथ हैं जो हमें थामने को तैयार रहेंगे। हम इंग्लैंड के हाथों का सहारा चाहते हैं। मैं यह बात भली भांति जानता हूं कि मेरे कितने ही देशवासी इंग्लैंड का हाथ थामना नहीं चाहेंगे, क्योंकि अभी उनके हृदयों में विद्वेष और घृणा की अतीत की विरासत मौजूद है, किन्तु मेरी धारणा है कि एक बार हम इस मामले को निबटा लें और अतीत की ओर देखना छोड़ कर भविष्य की ओर अधिक निहारने लगें तो यह विचार जनता के हृदयों से निकल जायगा। उस समय हम एक साथ मिल कर चल सकेंगे।

हम और ब्रिटेन

विधान परिषद जो भी विधान तैयार करेगा, वह स्वतन्त्र भारत का विधान बन जायगा, चाहे ब्रिटेन उसे स्वीकार करे या न करे। ब्रिटिश सरकार सोचती है कि विधानपरिषद का निर्णय उसके लिये अनिवार्य रूप से लागू नहीं है। लेकिन हम विधानपरिषद में इसलिए नहीं गये हैं कि हम अपना निर्णय चांदी की तश्तरी में रखकर ब्रिटिश सरकार के सामने रखें कि वह उसे स्वीकार करे। हमारे आपसी मतभेद हैं, पर उन्हें हम स्वयं दूर करेंगे। उसके लिए हम बाहरी हस्तक्षेप सहन नहीं कर सकते।

ब्रिटेन के साथ हमारा भावी सम्बन्ध कैसा होगा; यह बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि वह हमारे साथ इस समय कैसा व्यवहार करता है। हम संसार के सभी देशों के साथ मैत्री रखना चाहते हैं। ब्रिटेन से भी हम दोस्ती चाहते हैं, बशर्ते वह हमारी स्वतन्त्रता के मार्ग में बाधक न हो। ब्रिटेन के पुराने कारनामों को हम भूल जायंगे।

दस्तन्दाजी और रुकावटों से हमारा कार्य मुश्किल हो सकता है, पर हम स्वतंत्रता के पक्ष में इतने आगे बढ़ गये हैं कि हमें रोका नहीं जा सकता। हम तेजी से अपने मंजिल पर पहुंचना चाहते हैं। इसमें जो रुकावट डालेंगे, वे स्वयं नुकसान उठायेंगे।

— पं० नेहरू

शिक्षा-माध्यम हिन्दी हो

भारत ने बहुत सी क्रान्तियाँ देखी हैं। उसने अतीत में बहुत से देशी और विदेशी शासकों के शासन देखे हैं और उसने व्यापारियों व आगन्तुकों द्वारा अपने वैभव की लूटपाट देखी है, किन्तु भारत ने अपने इतिहास के सुदीर्घ काल में कभी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया और उसके अन्य देशों के साथ पारस्परिक सम्बन्ध लौह-शृंखलाओं द्वारा नहीं, प्रेम और सौहार्द से जुड़े रहे हैं। हम लोग धर्म के नाम पर स्वार्थ की पूजा करते हैं। यही कारण है कि आज हिन्दुओं और मुसलमानों में दंगे, मार-काट व लूटपाट होते हैं। इस प्रकार की बातें किसी धर्म और समाज के सिद्धांतों द्वारा अनुमोदित नहीं हैं। आज तो हम जानवरों के नियम का भी पालन नहीं करते।

मालवीयजी ने विश्वविद्यालय के विधान में खुले और स्पष्ट शब्दों में घोषित किया था कि समय पाकर वह विश्वविद्यालय में हिन्दी को ही शिक्षा का माध्यम बनाकर रहेंगे। पिछले तीस वर्षों में हिन्दी-साहित्य की अभूतपूर्व अभिवृद्धि हुई है और आज यह निर्विवाद है कि उसके भंडार में प्रायः सभी विषयों के उच्चकोटि के ग्रंथ पाये जा सकते हैं। पाठ्य पुस्तकों की कठिनाई भी बहुत हद तक दूर हो चुकी है।

उर्दू का साहित्य हिन्दी के साहित्य से अधिक उन्नत या प्रौढ़ नहीं कहा जा सकता। तो भी उस्मानिया विश्वविद्यालय में उर्दू को शिक्षा का माध्यम मान लिया गया है। जिन विषयों में मौलिक ग्रंथों का अभाव है, उन को अनुवादित कर सहज और सुलभ बनाया जा सकता है। तब कोई कारण नहीं कि हिन्दी में भी वैसा ही न किया जाय।

नागपुर यूनिवर्सिटी हमारे इस विश्वविद्यालय से छोटा है तो भी उसने निश्चय कर लिया है कि वह हिन्दी और मराठी द्वारा ही शिक्षा देगा और परीक्षा लेगा। काशी विश्वविद्यालय भी अपने यहां शिक्षा का माध्यम हिन्दी को बना दे तो इससे शिक्षा के प्रसार और प्रकार में भारी परिवर्तन आ जायगा।

माध्यम तो हिन्दी होना चाहिए, किन्तु प्रौढ़ विद्यार्थी जो विशेष ज्ञान लाभ करना चाहते हैं, अथवा ऐसे लोग जो विदेशी भाषाओं के भण्डार से सुन्दर ग्रन्थों को लेकर हिन्दी भाषियों के लिए उल्था करना चाहते है, अथवा जो व्यापार और सफर के लिए विदेशों में जाना चाहते हैं वे भले ही विदेशी भाषा सीख लें। विज्ञान से लाभ उठाने के लिए भी विदेशी भाषाओं का परिचय आवश्यक है, पर विदेशी भाषा का माध्यम आवश्यक नहीं है।

हमारा देश अन्य देशों के मुकाबले में कई बातों में विशेषता रखता है। हिन्दू समाज न मालूम कितने हजारों वर्षों से समय के थपेड़े खाता रहा है। कितने ही व्यापारियों, और ठगों ने यहां की समृद्धि को लालच और ईर्ष्या-भरी आंखों से देखा है और दबा कर, जोर जबर्दस्ती से फुसला अथवा धोखा देकर उस सम्पत्ति का भाग लेते रहे हैं।

"इस देश ने आज तक किसी भी विदेश पर सैनिक आक्रमण नहीं किया। हिन्दू समाज का प्रभाव संसार के बहुत बड़े भूभाग पर पड़ा। हमारे नाविकों ने दूर-दूर के देशों और टापुओं में जाकर इस देश की सभ्यता, ज्ञान, धर्म और धन का वितरण किया है।

आज भी विदेशों में हमारी संस्कृति के चिन्ह पाये जाते हैं। उन देशों के लोग भारत को अपना तीर्थ-स्थान समझते हैं।

हमारा समाज मौलिक सिद्धान्तों और अपनी संस्कृति के मौलिक आधारों के साथ ज्यों का त्यों खड़ा है। आज चीन के सिवा दूसरा कोई देश नहीं, जो अपनी संस्कृति को अनन्तकाल से आज तक उस तरह सुरक्षित रख रहा हो, जैसा हिन्दू समाज ने किया है। इसका कारण क्या है? हममें ऐसी शक्ति है, जो हमें बचाती आयी है और आगे भी बचाती रहेगी। वह शक्ति पार्थिव साधनों पर अवलम्बित नहीं है, वह मनुष्य की आत्मा से सम्बन्ध रखती है। पूज्य मालवीय जी उसी शक्ति के उदाहरण थे।

—राजेन्द्र बाबू

देश एक ही रहेगा

मुझे पूरा विश्वास है कि संसार की कोई भी सामयिक रुकावटें हमारे देश को एक होने से नहीं रोक सकतीं। अपने विभिन्न धर्मों, जाति भेदों आदि के बावजूद हमें तनिक भी सन्देह नहीं कि हम किसी न किसी रूप में ए. संयुक्त राष्ट्र बन जायेंगे। मैं यह भी कहने में बिल्कुल हिचकिचाहट अनुभव नहीं करता कि लीग को एक-न-एक दिन समझ आयगी और भारत के बटवारे के लिए किया जाने वाला आन्दोलन समाप्त होगा। लीग स्वयं समझने लगेगी कि अखंड भारत ही उसके लिए बेहतर है। जहां तक अंन्तिम लक्ष्य का सम्बन्ध है हम में से किसी को किसी प्रकार का भय तथा आशंका न होनी चाहिए।

—डा० अम्बेडकर

पठान और पंजाबी पृथक-पृथक हैं

पठान और पंजाबी स्पष्टतः दो हैं और पंजाब के साथ सीमा प्रांत के वर्गीकरण का विचार पठान के विरुद्ध विद्रोह है। हमारी जाति की संख्या ३० लाख है। हम सीमा प्रांत के पठानों की संस्कृति, सभ्यता, भाषा, साहित्य, कला, वास्तु विद्या, वैज्ञानिक परिभाषा, इतिहास, परम्परा आदि सब अलग हैं। सारांश यह है कि जीवन सम्बधी हमारा दृष्टिकोण विभिन्न है। अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार भी पठान पंजाबियों से विभिन्न हैं। न्याय, प्रजातन्त्र और दयानतदारी का अनुरोध है कि सीमाप्रांत को वर्गीकरण पर विवश नहीं करना चाहिए और उसे पंजाब के साथ जहां सीमाप्रांत के पठान के लिए कोई सांझी बात नहीं, न मिलाया जाए। ब्रिटिश मन्त्रिमंडल मिशन की १६ मई की घोषणा में यह आता है

— अल्ला नवाज खां

[अध्यक्ष असेम्बली सीमाप्रान्त]

देहली केमिकल वर्क्स देहली का **खाजोल** नं० ५० तर खारिश की मुजर्रिब दवा है
सोल एजेण्ट — देहली जाम फैक्टरी, नया बांस, बीड़ी मार्केट, देहली।

क्या आपकी आंखें दुखती हैं ?
नेत्र रोगों का रामबाण **नेत्र-सुधा** का प्रयोग कीजिये मूल्य ॥)
किशोर-सुधालय ३७३६, सब्जीमण्डी बाजार, देहली।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

★ वीर ★

अर्जुन

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार ७ पौष सम्वत् २००३

दो मुख्य प्रश्न

आज देश के सामने दो महत्वपूर्ण प्रश्न अत्यन्त नग्न रूप में आकर उपस्थित हो गये हैं। पहला प्रश्न यह है कि विधानपरिषद् की सत्ता क्या है? क्या वह पूर्ण स्वतन्त्र है या उसे ब्रिटिश सरकार के मातहत काम करना है और उनके निर्णय को ब्रिटिश पार्लमेंट रद्द कर सकती है? इसी प्रश्न पर विचार करते हुए यह प्रश्न भी उठता है कि विधानपरिषद् के निर्णय को यदि ब्रिटिश पार्लमेंट स्वीकार न करे, तो विधान-परिषद् को क्या करना चाहिए और वह सीमित शक्ति में कर भी क्या सकती है?

ये दोनों प्रश्न विधानपरिषद् की प्रत्येक दिन की बैठक के साथ अधिकाधिक स्पष्ट रूप में सामने आते जा रहे हैं। विधानपरिषद में अनेक वक्ताओं ने उपर्युक्त प्रथम प्रश्न पर विस्तार से विचार प्रकट करते हुए इस स्थापना को पुष्ट किया है कि विधान-परिषद् अपने में पूर्ण स्वतंत्र संस्था है। जब श्री जयकर ने उन सीमाओं और मर्यादाओं की ओर परिषद् का ध्यान खींचा, जिनमें परिषद् का जन्म हुआ है और जिनमें रहकर उसे काम करना है, तब परिषद् के सदस्यों ने इस बंधन की चर्चा को सुनना सहन नहीं किया। सरदार पटेल जैसे उत्तरदायी नेता ने ब्रिटिश सरकार के ६ दिसम्बर के वक्तव्य को स्वीकार करने से इन्कार करने की महत्वपूर्ण घोषणा की। डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी तथा अन्य प्रायः सभी सदस्यों ने इस घोषणा का जिस तरह स्वागत किया, वह भारतीय लोकमत को प्रकट करता है। सर गोपालस्वामी आयंगर ने दूसरे दिन यहां तक कहा कि विधान-परिषद् स्वतंत्र संस्था है और उसे यह अधिकार है कि वह मंत्रिमिशन के गुरुबन्दी वाले अंश को संशोधित कर सकती है।

आज से कुछ समय पहले ब्रिटेन के प्रधान मंत्री मि० एटली ने दो महत्वपूर्ण घोषणाएं की थीं कि भारत की किसी अल्पसंख्यक जाति को वैधानिक प्रगति में 'वीटो' नहीं करने दिया जायगा, दूसरी घोषणा यह थी कि भारतवर्ष को यह भी अधिकार होगा कि वह ब्रिटिश सरकार से संबंध-विच्छिन्न करले, यद्यपि प्रधानमंत्री ने अपनी राय में इसे पसन्द नहीं किया था। इन दोनों घोषणाओं का स्पष्ट अर्थ यह है कि विधानपरिषद् भारत का विधान बनाने में स्वतंत्र है और वह ब्रिटिश सरकार से बंधी हुई नहीं है। ब्रिटेन उसकी पूर्ण स्वतंत्र होने की इच्छा पर न कोई प्रतिबंध लगा सकता है और न किसी अल्पसंख्यक जाति को उसमें बाधा डालने दे सकता है। इसी वातावरण में विधान-परिषद की सृष्टि हुई और कांग्रेस ने उसे स्वीकार किया।

किसी देश की अपनी विधानपरिषद का अर्थ ही यह है कि वह राष्ट्र स्वतंत्र है। अब राष्ट्र को यह स्वीकार करके चलना चाहिए कि वह पूर्ण स्वतंत्र है। एक बार विधानपरिषद बनाने के बाद ब्रिटिश सरकार के लिए उसे वापस लेना अत्यन्त कठिन है और उसके निर्णय को अस्वीकृत करना भी सचमुच उसके लिए दुःसाहस की बात होगी। आज ब्रिटिश सरकार के सर्वोच्च अधिकारी स्पष्ट अपनी घोषणाओं से पीछे मुड़ रहे हैं। फैडरलकोर्ट के निर्णय को भी अमान्य ठहरा कर ब्रिटिश सरकार ने अपनी स्थिति जहां उपहासास्पद बना ली है, वहां मुस्लिमलीग को बुरी तरह बढ़ावा दे दिया है। विधान-परिषद् का अर्थ ही स्वतन्त्र विधान बनाने का अधिकार है, उसे वापस वह लेना भी चाहे, तो हम उसे यों ही नहीं जाने देंगे। यह हर्ष की बात है कि विधानपरिषद और अन्तःकालीन सरकार के अधिकारी बहुत तेजी से अपनी सत्ता और प्रभाव को अधिकाधिक बढ़ाते जा रहे हैं। शासन के लिए आवश्यक दृढ़ता आज पं० नेहरू अपने भाषणों में पर्याप्त रूप से व्यक्त कर रहे हैं। कलकत्ते और बनारस के उनके भाषणों से यह स्पष्ट है कि आज भारत अपने ऊपर आने वाले साधारण या असाधारण संकटों का सामना करने के लिए भी कटिबद्ध है।

विधान परिषद् में भी यह सम्भावना समय समय प्रकट की गई है। सर अल्लादी ने कहा है कि यदि रियासतें स्वतंत्र भारत के सिद्धान्त को स्वीकार करती हैं, तभी वे परिषद् में आ सकती हैं, अन्यथा उनकी कोई हस्ती नहीं। सत्ता के मूल उद्गम के संबंध में भी पर्याप्त चर्चा हुई है और अधिकांश वक्ताओं ने यह विचार प्रकट किया है कि सत्ता का उद्गम न ब्रिटिश नरेश में है और न उद्गम रियासती राजाओं में, वह तो प्रजा में निहित है और इस सिद्धान्त की स्वीकृति ही विधान-परिषद् की सत्ता को अक्षुण्ण कर देती है।

लेकिन इस सैद्धांतिक चर्चा के साथ-साथ यह प्रश्न और भी जोरों से आ खड़ा होता है कि यदि ब्रिटिश सरकार ने अपना रवैया न बदला और विधानपरिषद के निर्णय को मानने से इन्कार कर दिया तो? डा० मुकर्जी ने इस संकट को अत्यन्त अधिक समय मानते हुए कहा है कि इन सप्ताहों की घटनाओं को देखने से यह प्रतीत होता है कि यदि भारत को स्वतंत्र होना है, तो वह वैधानिक उपायों से नहीं होगा। श्री जयप्रकाशनारायण भी अपने क्रांतिकारी कार्यक्रम को अधिक निश्चित शब्दों में देश के सामने रख रहे हैं। (पाठक उसे अन्यत्र पढ़ेंगे)। आज राष्ट्र को निश्चित रूपेण इस संभावना को सामने रख कर सोचना है कि यदि ब्रिटिश सरकार का रवैया दुष्टतापूर्ण रहा, तो उसे क्या कदम उठाना पड़ेगा? हम जानते हैं और ब्रिटिश सरकार भी यह जानती है कि विधान-परिषद को प्रारम्भ करने के बाद उसको भंग करना या उसके निर्णय को ठुकराना आसान काम नहीं है, तो भी हमें बुरे से बुरे की संभावना करके इस प्रश्न पर विचार करना चाहिए। फिलस्तीन और मिश्र में वह जिस नीति को अपनाकर वहां के प्रश्नों को टालती जा रही है, उसको देखते हुए और विशेषकर मुस्लिमलीग के दुर्भाग्यपूर्ण रवैये को देखते हुए सब कुछ सम्भव है और हमें आज यह सोच लेना है कि संकट की घड़ी किसी क्षण भी आ सकती है। इसलिए राष्ट्र को आज से ही अपने भावी संघर्ष की योजनाएं बना लेनी हैं और इसके लिए जिस दृढ़ता की आवश्यकता है, वह महात्मा गांधी के आसामवासियों को दिये गये सन्देश में स्पष्ट है।

लेकिन असाधारण संकट के इन्हीं अवसरों पर ही एकता व अनुशासन और नियम पालन आदि गुणों की आवश्यकता विशेष रूप से होती है। जल्दबाजी, अविवेक तथा अनुशासन भंग से सब बना बनाया काम बिगड़ जाता है। इसलिए इस दृष्टि से प्रत्येक कार्यकर्ता को इन गुणों की ओर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

हिन्दी-प्रेमियों से

जब यह अंक पाठकों के पास पहुंचेगा, अनेक हिन्दी प्रेमी हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आगामी अधिवेशन में सम्मिलित होने की तैयारियां कर रहे होंगे। अनेक महत्वपूर्ण समस्याओं ने आज समस्त देश-वासियों का ध्यान खींचा हुआ है, फिर भी भारत की राष्ट्र-भाषा हिन्दी का प्रश्न किसी तरह उपेक्षणीय नहीं है। हिन्दी के साहित्यकारों और हिन्दी-प्रेमियों दोनों को सम्मेलन में पूर्ण रुचि लेनी चाहिए। आज हिन्दी के सामने तीन मुख्य समस्याएं हैं, जिनकी ओर हम हिन्दी-प्रेमियों का ध्यान खींचना चाहते हैं। ये तीन समस्याएं हैं — हिन्दी हिन्दुस्तानी का प्रश्न, हिन्दी का व्यावहारिक प्रचार और हिन्दी साहित्य में सुरुचि व उत्कृष्टता का स्तर ऊंचा रखना। पहली समस्या पर हिन्दी संसार में बहुत आन्दोलन और तीव्र वादविवाद हो चुका है। आज हमारी सम्मति में इस वादविवाद में न पड़कर व्यवहार में हिन्दी के स्वरूप की रक्षा करने पर अधिक अमल करना चाहिए। वादविवाद की तीव्रता ने इस प्रश्न पर जो कटुता पैदा करदी है, वह भी वाद-विवाद की समाप्ति के साथ साथ शान्त हो जायगी। इसलिए दूसरी और तीसरी समस्या की ओर हमारा समस्त ध्यान केन्द्रित होना चाहिए। हिन्दी का स्कूलों व यूनिवर्सिटियों में शिक्षा के माध्यम तथा उसके अध्ययन को उत्साहित करने, विभिन्न सरकारी महकमों में हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकृत कराने आदि रचनात्मक कार्यों में विशेष परिश्रम की आवश्यकता है। सिद्धांत रूप से तो आज हिन्दी के प्रयोग को सभी स्वीकार करते हैं, लेकिन व्यवहार में उसे लाने के लिए विशेष प्रयत्न करना होगा। आज हिन्दी-साहित्य और विशेषकर कहानी और उप-न्यास क्षेत्र में जिस भ्रष्टाचार को उत्तेजन दिया जा रहा है, उसकी ओर हम अपनी पूर्ण शक्ति के साथ हिन्दी प्रेमियों का ध्यान खींचना चाहता है। आज हिंदी के लेखक, कवि और अन्य कलाकार कुरुचि-पूर्ण साहित्य की रचना कर रहे हैं। राष्ट्र के चरित्र निर्माण का कार्य सरकार नहीं, साहित्यकारों का है। लेकिन आज वे निश्चित रूप से अपने मार्ग से विचलित हो रहे हैं। हमें आशा है कि श्री वियोगी जी के नेतृत्व में सम्मेलन और हिंदी साहित्य-कार जहां साहित्य का स्तर ऊंचा उठाने की कोशिश करेंगे, वहां उसे अधिक सुरुचि-पूर्ण बनाने की ओर विशेष प्रयत्नशील होंगे। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का कार्य केवल परीक्षा लेना नहीं रहना चाहिए, वह अधिक व्यापक और रचनात्मक होना चाहिए, उसमें साहित्यकारों को सुन्दर और स्वस्थ प्रेरणा मिलनी चाहिए। क्या हिन्दी प्रेमी इन पंक्तियों पर ध्यान देंगे।

अफ्रीका में वर्णद्वेष

अफ्रीका में भारतीयों के साथ ही नहीं, वहां के आदिवासियों के साथ भी भीषण अत्याचार हो रहा है। केनिया में उनकी स्थिति और भी खराब है। उनकी संख्या सवा दो करोड़ से अधिक है, लेकिन उन्हें शासन में कोई ऊंचे पद नहीं दिये जाते। ९५ फीसदी केनियन अशिक्षित हैं। ४० लाख केनियनों की शिक्षा के लिए केवल ५०० पौंड स्वीकृत किये गये हैं। ये अंक उन की स्थिति को बहुत स्पष्टता से प्रकट करते हैं। वस्तुतः जनरल स्मट्स में अफ्रीकों के प्रति परम विद्वेष है।

देश का घटना चक्र

विधान-परिषद् के सामने नयी समस्याएं

विधानपरिषद के प्रारंभ के साथ साथ नयी और पुरानी समस्याएं, जो किसी तरह टल रही थीं, अब निश्चित और स्पष्ट रूप में सामने आने लगी हैं। इस सप्ताह विधानपरिषद के सदस्यों के सामने जिन प्रश्नों की प्रमुखता रही, वे निम्नलिखित थे —

१— विधानपरिषद का उद्देश्य
२— गुटबन्दी के नियम की व्याख्या

पं० जवाहरलाल नेहरू ने विधान-परिषद का उद्देश्य-संबंधी प्रस्ताव अत्यन्त ओजस्वी भाषण के साथ प्रस्तुत किया था। इस प्रस्ताव पर किसी विशेष बहस की आशा नहीं थी, लेकिन जब डा० जयकर ने प्रस्ताव की आत्मा से सहमत होते हुए भी इस आधार पर उसे स्थगित करने की राय दी कि इस प्रस्ताव को आज पास कर लेने से मुस्लिमलीग को विधानपरिषद में न आने का एक और बहाना मिल जायगा, तो परिषद में इसके पक्ष विपक्ष में विधान शास्त्रियों का एक मनोरंजक विवाद छिड़ गया। श्री जयकर का कहना था कि लीगी और रियासती प्रतिनिधियों के आये बिना विधानपरिषद को अपने ऐसे उद्देश्य निश्चित नहीं कर लेने चाहिएं कि फिर वे इसी बहाने पर आने से इन्कार करदें और इस तरह बना बनाया खेल हमारी जल्दबाजी से बिगड़ जाय। २० जनवरी तक लीगी कौंसिल की बैठक होनी है, तब तक इस पर निर्णय स्थगित रखा जाय। फिर यह उद्देश्य रियासतों व तीनों गुटों पर भी लागू होता है और अब तक रियासतों के सम्मिलित होने का कोई अवसर भी नहीं आया। डा० जयकर ने अत्यन्त तर्क-संगत रूप से अपना पक्ष पेश किया। डा० अम्बेडकर और श्री हृदयनाथ कुंजरू, फ्रैंक एन्थनी आदि भी निर्णय स्थगित करने के पक्ष में बोले। लेकिन दूसरी ओर श्री श्यामाप्रसाद मुकर्जी, सर गोपालस्वामी आयंगर, श्री कृष्णसिन्हा, सरदार उज्जवल-सिंह आदि बोले। इस प्रस्ताव पर अभी तक मत नहीं लिये गये हैं, क्योंकि इस प्रस्ताव को स्वीकार करने का अर्थ है लीग को खिजा देना, लेकिन दूसरी ओर यह प्रस्ताव पास करके परिषद अपना उद्देश्य और मार्ग स्पष्ट कर लेना चाहती है, लीग का जो रुख है, उससे मेल की आशा नहीं है। म० गांधी ने भी श्री नेहरू के प्रस्ताव को आशीर्वाद दिया है। उन्होंने कहा है कि मुझे निश्चय है कि पं० नेहरू इस प्रस्ताव पर दृढ़ रहेंगे चाहे दूसरे उनकी कितनी ही आलोचना करें। फिर भी अभी तक कांग्रेसी सदस्य यह निश्चित नहीं कर पाये हैं कि श्री जयकर के परामर्श को स्वीकार किया जाय या नहीं।

गुटबन्दी का प्रश्न

विधानपरिषद की सबसे बड़ी समस्या गुटबन्दी की है। इसी के संतोष जनक फैसले पर भारत की वैधानिक गुत्थी सुलझ जायगी। उद्देश्यों की बहस में इस प्रश्न की भी चर्चा विशेष रूप से की गई। पार्लमेंट में भारत पर बहस करते हुए प्रधानमन्त्री मि० एटली ने जो घोषणा की, उसने समस्या को और भी जटिल बना दिया है। उन्होंने कहा है कि ब्रिटिश सरकार ने अपने वक्तव्य की जो व्याख्या की है, उसके विरोधी फैडरल कोर्ट के निर्णय को भी मानने से इन्कार कर देंगे। मि० जिन्ना ने भी फैडरल कोर्ट के फैसले को मानने से इन्कार कर दिया है। सरदार पटेल ने डा० जयकर को बीच में बोलने से रोककर यह घोषणा की कि विधान परिषद ब्रिटिश सरकार की व्याख्या को मानने के लिए किसी तरह बाध्य नहीं है। यही विचार अन्य अनेक वक्ताओं ने भी उपस्थित किये हैं।

अन्य अनेक कांग्रेसी नेता गुटबन्दी के फैसले को फैडरलकोर्ट में ले जाने का प्रस्ताव पेश कर रहे हैं। ब्रिटिश मन्त्रि-मिशन ने १६ मई को जो वक्तव्य दिया था, ब्रिटिश सरकार की नई व्याख्या इसके विपरीत है और उससे बहुत आगे बढ़ जाती है। उसे विधानपरिषद किसी तरह स्वीकार नहीं करेगी। इसके साथ ही किसी एक सम्प्रदाय को सरकार ने यह छूट दे दी है कि वह यदि चाहेगा, तो उसके विभाग पर विधान लागू नहीं किया जायगा। क्या यह छूट गुटबन्दी में अल्पसंख्यकों को भी है या नहीं, यह भी एक पेचीदा प्रश्न है।

आसाम को गांधीजी की राय

आसाम प्रान्त के प्रतिनिधि किसी तरह बंगाल के लीगी प्रतिनिधियों द्वारा अपना भाग्यनिर्णय होने देने के लिए तैयार नहीं हैं। उन्होंने परिषद में भी खुला विरोध किया है। म० गांधी ने आसाम प्रान्त को यहां तक सलाह दी है कि जब गुटों में बंटने का समय आये, तो आसामी प्रतिनिधि विधान निर्मात्री परिषद से यह कहकर अलग हो जावें कि बंगाल किसी भी रूप में आसाम पर अपना प्रभुत्व नहीं जमा सकता।

विधान-परिषद् के उद्देश्य संबंधी प्रस्ताव पर मत ग्रहण बहुत संभवतः २० जनवरी तक के लिए स्थगित कर दिया गया है। शुक्रवार सायंकाल को यह निर्णय भी होने वाला था कि गुटबन्दी के प्रश्न का मामला विधान-परिषद् को सौंपा जाय या नहीं।

श्री जयप्रकाशनारायण का क्रान्ति-कार्यक्रम

इन्हीं सब परिस्थितियों को देख कर भावी संघर्ष की चर्चा फिर से की जाने लगी है। पं० जवाहरलाल नेहरू ने विदेशी व्यापारिक संघ में वायसराय के स्थान पर भाषण देते हुए यह स्पष्ट कर दिया है कि हम ब्रिटेन से सहयोग की आशा रखते हैं, लेकिन संसार को यह समझ लेना चाहिए कि भारत आज शक्तिसम्पन्न है, वह सौदेबाजी करने की स्थिति में है।

श्री जयप्रकाशनारायण ने तो सबकी भांति और भी अधिक ओजस्विता के साथ नये संघर्ष के लिए कार्यक्रम भी प्रस्तुत कर दिया है। इसके अनुसार यदि ब्रिटिश सरकार ने विधानपरिषद के निश्चयों को स्वीकार न किया, तो अन्तिम संघर्ष अनिवार्य हो जायगा और तब सब गिरफ्तार होकर जेलें भरने की अपेक्षा अपने दुश्मनों को गिरफ्तार किया जाय। तब प्रान्तों के प्रधानमन्त्री तुरत गवर्नरों और भारत विरोधी अफसरों को गिरफ्तार कर जेल में डालने के लिए मजिस्ट्रेटों व पुलिस अधिकारियों को आदेश दे सकेंगे। उस समय हम अविलम्ब तमाम सरकारी पदों व संस्थाओं को अपने कब्जे में कर लेंगे और ब्रिटिश पक्षपाती अफसरों को निकाल कर उनकी जगह नये अफसरों को नियुक्त कर देंगे। नई सरकार को अपने कार्यों के लिए टैक्सों का समुचित प्रबन्ध कर देना चाहिए और नई सेना तक संगठित कर लेनी चाहिए। श्री जयप्रकाश-नारायण ने यह भी कहा कि यदि कांग्रेस के १०० चोटी के नेता आमरण अनशन शुरू कर दें, तो भारत उनमें से बहुतों के अवसान से पूर्व ही स्वतंत्र हो जायगा।

नेताजी सचमुच मर चुके

अ० भा० फारवर्ड ब्लाक के नेता श्री शार्दूलसिंह कवीश्वर ने घोषणा की है कि नेता जी का देहान्त हो गया है। उनकी मृत्यु हवाई दुर्घटना से नहीं, लेकिन रूस चीन की सीमा पर मित्र देशीय सैनिक द्वारा गोली मारने से हुई है। यह समाचार वे विश्वस्त सूत्रों से प्राप्त बताते हैं।

—सं० रा० अमेरिका के अध्यक्ष श्री ट्रूमैन ने ४००० शब्दों की एक घोषणा में यह स्पष्ट कर दिया है कि उनकी सरकार चीन की चांगकाई शेक सरकार को स्वीकार करती है और उसे ५० करोड़ डालर आर्थिक निर्माण के लिए देंगी।

उधर पंजाब के सिख भी ब्रिटिश सरकार की नयी व्याख्या से घोर असंतुष्ट हैं। सीमाप्रान्त असेम्बली के अध्यक्ष ने पठानों पर पंजाब के प्रभाव को किसी भी रूप में असह्य बताया है।

इस तरह गुटबन्दी का प्रश्न आज ब्रिटिश सरकार की कूटनीति के कारण अत्यन्त स्पष्टता व तीव्रता के साथ उपस्थित हो गया है। दोनों पक्ष अपनी-अपनी बात पर दृढ़ हैं।

मृत्युंजय श्रद्धानंद की अगाध श्रद्धा

अमर हुतात्मा श्रद्धानन्दजी ने अपने बलिदान से कुछ महीने पूर्व निम्न लिखित घोषणा की थी जिससे उनकी तेजस्विता, निर्भीकता तथा मानवता आदि गुणों पर प्रकाश पड़ता है:—

उस दिन अजमेर की मल्ल-विद्याशाला के प्रो० जी० आर० पांडे ने मुझे लिखा कि वह स्वयंसेवकों का एक ऐसा दल तैयार कर रहे हैं, जो आपके शरीर रक्षक का कार्य करेगा। मैंने उत्तर में उन्हें लिखा कि इस प्रकार की सहायता स्वीकार करना मेरे जीवन भर के सिद्धान्तों के विपरीत है। मेरे लिखने पर भी उन्होंने अपने आठ विद्यार्थियों को इस आदेश के साथ मेरे पास भेज दिया कि वह रात और दिन मेरे शरीर की रक्षा करें। तीन दिन तक उन्होंने मेरे स्थान पर धरना दिया, परन्तु अन्त में उन्हें हार मानकर वापिस जाना पड़ा। प्रति दिन भिन्न-भिन्न विचार के हिन्दुओं की ओर से मुझे ऐसी सहायता के प्रस्ताव मिल रहे हैं। कई तो यहां तक लिखते हैं कि वह सौ सौ आदमियों के दल भेजने को तैयार हैं। आर्य-संतान में विश्वास के ऐसे अभाव को देखकर मैं आश्चर्यित होता हूँ। मैं यह भी समझता हूं कि मेरे शरीर की रक्षा के ऐसे उपाय पर विचार करने में हमारे मुसलमान भाइयों का तिरस्कार है। मुझे धमकियों से पूर्ण संदेश भेजे गये हैं, पर मैंने उनका सदा यही उत्तर दिया है कि मैं भेजने वालों को ऐसा पतित नहीं समझता, जैसा वह स्वयं अपने आपको समझते हैं। मैं अपने खालसा, हिन्दू और आर्यसमाजी भाइयों का उस प्रेम के लिए धन्यवाद करता हूं जो उन्होंने मेरे लिए प्रगट किया है, परन्तु मैं उनसे प्रार्थना करूंगा कि यदि वह मुझ से सच्चा प्रेम करते हैं तो वह मुसलमान भाइयों के प्रति सहिष्णुता दिखायें और मुझे अपने सदा से माने हुए सिद्धान्तों की रक्षा में सहायता दें। परम पिता मेरे रक्षक हैं और मैं जानता हूं कि उनकी रक्षा में विश्वास करने का अभिप्राय मनुष्य जाति के न्याय में विश्वास रखना है।

—श्रद्धानन्द सन्यासी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भारत के लिए सबसे बड़ा खतरा

अंग्रेजों की विभाजन नीति

[श्री दीनदयालु शास्त्री]

आज ब्रिटिश सरकार भारत से चलते-चलते भी चिंगारी सुलगाकर उसे सदा के लिए गृहयुद्ध की आग में भस्म कर देना चाहती है। यह ब्रिटिश नीति नयी नहीं है। अन्य अनेक देशों में भी वह इसी नीति का आश्रय लेती रही है, इसी लिए आज भारतीय राजनीतिज्ञों को ब्रिटिश नीति के सबध में अत्यधिक सतर्क होने की आवश्यकता है।

★

ब्रिटिश भेदनीति के शिकार

श्री डीवेलेरा

संसार के ज्ञात इतिहास में अंग्रेजों का साम्राज्य सब से बड़ा है। दुनिया के हर छोर पर इस के चिन्ह दृष्टिगोचर होते हैं, किन्तु पहले इसमें जितनी स्थायिता थी, उतनी अब नहीं रही है। उसके भिन्न-भिन्न भाग न केवल आज अंग्रेजों से नाराज हैं अपितु उनसे विमुख व पृथक् होने की भी सोच रहे हैं।

अंग्रेजों की राजनीति के दो मुख्य आधार हैं। एक है लचकीलापन और दूसरा है द्वैधीभाव। इस लचकीलेपन ने अंग्रेजों को कनाडा, दक्षिण अफ्रीका, आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैण्ड में सफलता प्रदान की है। इन देशों को औपनिवेशिक स्वरूप देने में अंग्रेजों ने स्पष्टतः समझ लिया था कि ये देश हमारे तभी तक रह सकते हैं जब तक कि वे हमारे साथ अपनापन समझें। इस विचार में वे सफल हुए और कनाडा में फ्रांसीसियों व दक्षिणी अफ्रीका के बोअरों के बावजूद पुरानी कटु स्मृतियों के, अपना स्थायी सहयोगी बना सके। हमारा तो ख्याल यह भी है कि यदि अंग्रेज भेदनीति को उन दिनों अपनाते तो न उन दिनों कनाडा पनप सकता और न ही दक्षिणी अफ्रीका संयुक्त रह सकता। किन्तु भिन्न-भिन्न जातियों से आवासित होते हुए भी आज ये देश संयुक्त हैं। यह अंग्रेज राजनीति का सुन्दर पहलू है।

आयरलैंड

आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैण्ड में अंग्रेजों से इतर जातियां आबाद न थीं। अतः अंग्रेजों को किसी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा। उन्होंने समझा कि ये अपने हैं और अपने ही रहेंगे। अतः अंग्रेजों ने इन दोनों को सहज में ही अपना लिया। बहुत से लोग यह समझते हैं कि अंग्रेजों की यह लचकीली राजनीति इन देशों के गोरेपन के कारण है। हम इस विचार से सहमत नहीं हैं। हमारा यह ख्याल है कि आयरलैंड का दो भागों में विभाजन करना अंग्रेजों को अभीष्ट न होता; यदि वे आयरलैंड में गोरापन देखते। आयरलैण्ड इंग्लैंड का एक दम पड़ोसी है। पिछले सात सौ वर्ष से वह अंग्रेजों से मुक्ति पाने के लिये संघर्ष करता रहा है। प्रकृति के अनुदार अंग्रेजों ने गत महायुद्ध के बाद मान लिया कि अब हम आयरलैंड को अपने साथ नहीं रख सकते। तब उन्होंने भेद नीति से काम लिया और निर्णय किया कि आयरलैण्ड को हम औपनिवेशिक स्वराज्य देते हैं, किन्तु उत्तरी आयरलैंड उसमें शामिल न होगा। यह सत्य है कि उत्तरी आयरलैण्ड के लोग धर्म व परम्परा में दक्षिणी आयरलैण्ड से जुदा हैं, किन्तु कनाडा के फ्रांसीसी व दक्षिणी अफ्रीका के बोअरों की अपेक्षा वे फिर भी अपने देश वासियों के अधिक निकट हैं। सात सौ वर्ष की कटुता ने सन १९२२ में अंग्रेजी राजनीति की उदारता को दबा लिया। परिणाम यह हुआ कि आयरलैण्ड सदा के लिये दो भागों में विभक्त हो गया। आज डी वेलेरा का दक्षिणी आयरलैण्ड अंग्रेजों से सर्वथा मुक्त है किन्तु उसके निवासी रह-रह कर सदा सोचते हैं कि हम खण्ड-खण्ड हो गये, हम बंट गये। आज डीवेलेरा व उनके साथी अंग्रेजों से केवल इसलिये ही नाराज हैं कि उन्होंने उनके प्रिय देश का विभाजन कर दिया। वे सम्भवतः इस विभाजन की समाप्ति के लिये तैयार हैं। हमारा ख्याल है कि यदि धर्म व परम्परा के नाम पर अंग्रेजों ने आयरलैण्ड का विभाजन न किया होता और कनाडा व दक्षिणी अफ्रीका की भांति सयुक्त रख दिया होता तो आयरलैंड व इंग्लैण्ड की कटुता समाप्त हो जाती और इस युद्ध में तथा अन्य परीक्षाओं में इंग्लैण्ड को डी वेलेरा का सहयोग प्राप्त हो जाता।

फिलस्तीन

अंग्रेज राजनीतिज्ञों ने कनाडा व दक्षिणी अफ्रीका में उदार नीति ग्रहण करके अपने साम्राज्य को मजबूत किया था। वे दिन उनकी उठती के थे। पिछले युद्ध के बाद से अंग्रेजों के दिन गिरती के हैं। स्वभावतः वे उदार नीति का परित्याग कर मजबूरी हालत में अपने साम्राज्य के भिन्न-भिन्न भागों को स्वतन्त्र तो कर रहे हैं। किन्तु उनका विभाजन करके जहां उन्हें सदा परेशानी में डाल रहे हैं, वहां अपनी क्षुद्रता भी प्रकट कर रहे हैं। आयरलैंड में सन १९२२ में जो उन्होंने भेदनीति ग्रहण की थी उसे अब वे अपनी राजनीति का स्थिर अंग बना रहे हैं। जो होना चाहिये था अंग्रेज उसके विपरीत जा रहे हैं। आयरलैण्ड के बाद अंग्रेजों ने फिलस्तीन में भेदनीति का अवलम्बन किया था।

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री

मेजर एटली

फिलस्तीन सन १९१८ में पूर्ण अरबी देश था। स्वेज नहर के स्वार्थों के कारण अंग्रेजों ने उस पर अपना दखल जमाया और अरबों के प्रतिवाद के रहते भी यहूदियों को वहां बसाना आरम्भ किया। अन्ततः सन १९३६ में यहूदी फिलस्तीन की आबादी में ३३ प्रतिशत हो गये। उनमें व अरबी जनता में संघर्ष चलने लगा तब अंग्रेजों ने जांच के लिए वहां पर जो कमीशन भेजा उसने सिफारिश की कि फिलस्तीन का हित उसके विभाजन में है। विभाजन भी ऐसा-वैसा नहीं, केवल पन्द्रह लाख आबादी का देश तीन भागों में बांटा जाय। यहूदी व अरबी प्रदेशों के मध्य में एक टुकड़ा अंग्रेजों का रहे ताकि फिलस्तीन में उपद्रव न हो सकें। भला पूछो, कि अंग्रेजों को फिलस्तीन में यहूदियों को लाने की जरूरत क्या थी? यदि स्वार्थवश उन्हें वहां लाये भी तो कनाडा व दक्षिणी अफ्रीका की भांति फिलस्तीन को संयुक्त बने रहने देते। यहूदी व अरब स्वयं परस्पर मिल जाते, किन्तु इससे स्वेज में अंग्रेजों के स्वार्थ सुरक्षित न रहते। सन १९३८ से फिलस्तीन के विभाजन की चर्चा चल रही है। आज सन १९४६ है, इन आठ वर्षों में यहूदियों की कटुता घटी नहीं, उत्तरोत्तर बढ़ी है। उदार राजनीति का तकाजा तो यह है कि अंग्रेज फिलस्तीन से चले जायें। हमारा ख्याल यह है कि ऐसा हो जाने पर एक वर्ष के भीतर ही फिलस्तीन के यहूदी व अरब परस्पर मिल जायेंगे और अपने देश की उन्नति में लग जायेंगे।

मुस्लिमलीग के पृष्ठपोषक

मि० चर्चिल

हमारा देश

फिलस्तीन व आयर्लैंड की विभाजन-नीति हमारे देश में भी पहुंची है। हिन्दुस्तान एक है, अविभाज्य है या वह भिन्न २ जातियों से आबाद एक भूखण्ड है, इसकी चर्चा का यह स्थान नहीं है। वह एक है या अनेक है, इससे शासक अंग्रेज जाति को क्या वास्ता? उसने एक सदी से अधिक काल तक एक इकाई के रूप में उसका शासन किया है। न्याय का तकाजा यह है कि वह अपना बोरिया-बिस्तरा बांधते समय उसे इसी इकाई के रूप में स्वतंत्र छोड़ दें। अंग्रेजों के जाने के बाद हिन्दुस्तान एक रहे या खण्ड २ हो जाय, यह सोचना यहां वालों का काम है। यदि मान भी लें कि शासक अंग्रेजों को ही इसका निर्णय करना चाहिए तो भी कनाडा व दक्षिणी अफ्रीका की भांति अंग्रेज इस देश को मुक्त मानकर स्वतंत्र कर सकते हैं। आखिर उन देशों के फ्रांसीसी व बोअर भी अंग्रेजों से भिड़ते थे। आज भी कनाडा व अफ्रीका में ऐसे दल हैं, जो उपयुक्त देश की कल्पना में अपनी संस्कृति का विनाश देखते हैं, किन्तु स्वल्प होने के कारण कुछ कर नहीं पाते।

हमारे देश की राजनीति में कांग्रेस का यही दुख है। वह अंग्रेजों से समस्त देश को छोड़ने के लिए कहती है। अंग्रेजों के बाद यहां क्या हो ! इसका फैसला करना हमारा काम है। कांग्रेस का यही मन्तव्य है। इसके विपरीत अंग्रेजों की विभाजन-नीति को जान लेने के कारण मुस्लिम लीग का कहना यह है कि देश के विभाजन का सिद्धांत पहले स्वीकृत होना चाहिए, बाद में स्वतंत्र विधान कायम होना चाहिए। हमारी व्यक्तिगत राय में कांग्रेस का दावा विदेशी को पहले हरा करबाद में घर को सुधारने का है, अतः यही अधिक उपयोगी है। लीग की मांग ठीक है यह भी माना जाना चाहिए, किन्तु अंग्रेजों के जाने के बाद। आज इसके निर्णय में देर हो रही है, अतः फिलस्तीन की भांति दो दलों में यहां भी कटुता बढ़ रही है। इसका अन्त कहां होगा ? यह कहना ज्योतिषी बनना नहीं है, यह तो अंग्रेजों की राजनीति को जान लेना मात्र है। अपनी इच्छाओं को व्यक्त कर लेने के बाद भी अंग्रेज हमारे देश को विभाजित करके रहेंगे, हमें तो यही स्पष्ट प्रतीत होता है। इसमें वे न्याय न करेंगे, किन्तु हमारे साथ हुई कटुता को दूसरे रूप में वसूल कर लेंगे, यह तो मानना ही होगा।

मिश्र

अंग्रेजों की यह भेद नीति प्रतिदिन बढ़ रही है, इसका एक अन्य उदाहरण पिछले दिनों स्पष्ट हुआ है। मिश्र व सूडान नील नदी द्वारा परस्पर सम्बद्ध है। धर्म, भाषा व संस्कृति में भी उनमें परस्पर समानता है। सौभाग्य से पिछली शताब्दी में दोनों का शासन भी एक था और अब १८९९ से मिश्र व अंग्रेजों का संयुक्त शासन सूडान में चल रहा है। मिश्र सन १९३६ से स्वतन्त्र है और सूडान मिश्र व ब्रिटेन द्वारा शासित। इन दिनों मिश्र व ब्रिटेन में जो सन्धि-चर्चा चल रही है, उसमें मिश्र का दावा है कि संस्कृति व भाषा की साम्यता के कारण सूडान व मिश्र में साम्यता है, अतः सूडान पर मिश्र का अधिकार होना चाहिए। मिश्र के इस दावे का उत्तर ब्रिटेन के पास नहीं है, किन्तु उसने सूडान के जुम्मादल के कुछ प्रतिनिधियों को एकत्र कर लिया है। इस जुम्मादल का कहना है कि भले ही हमारा धर्म व भाषा एक क्यों न हो, हम मिश्री नहीं हैं, अतः सूडान को मिश्र से पृथक रखना चाहिए। ताज्जुब यह है कि फिलस्तीन, भारत, आयर्लैंड व सूडान के विभाजन के ये सभी दावेदार स्वतन्त्रता का भी दावा करते हैं और अंग्रेजों की दासता नहीं चाहते। क्या करें बिचारे ? दुनिया को दिखलाने के लिए वे स्वतन्त्रता के हामी बनते हैं, किन्तु अपने प्रिय देश का विभाजन स्वीकार कर मित्र-देश के शत्रु अंग्रेजों की नीति को सफल बनाने में सहायक बनते हैं। हमारे लीगियों व सूडान के जुम्मादली नेताओं का यही हाल है। मिश्र व ब्रिटेन की सन्धि-चर्चा कई मास से सफल नहीं हो रही है और शायद सफल होगी भी नहीं। भला सूडान की कपास का मोह ब्रिटेन कैसे छोड़ दे ? नील नदी का जल अनन्तकाल के लिए अपने हाथ में रख कर वह मिश्र को अपना वशवर्त्ती क्यों न रखें ? मिश्र व सूडान के विभाजन की तह में अंग्रेजों का यही प्रयोजन है।

साम्राज्य का अन्त

इनके अतिरिक्त अरबी देशों व अन्य स्थानों में भी अंग्रेज विभाजन नीति को स्थायी बना रहे हैं। इससे वे अपने साम्राज्य को तो स्थायी बना नहीं सकेंगे। हां, जाते २ स्वतन्त्र हो रहे देशों में अपने प्रति स्थायी कटुता को छोड़ जायंगे। हमारी राय में यदि अंग्रेज द्वैधी भाव की जगह अपनी लचकीली नीति का कनाडा व दक्षिणी अफ्रीका की भांति आयरलैंड, फिलस्तीन, भारत व मिश्र में प्रयोग करते तो अधिक अच्छा था। इससे उनका साम्राज्य अधिक स्थायी होता, इन राष्ट्रों में ब्रिटेन के प्रति मोह बढ़ता और ये देश भी संयुक्त रह पाते। अब अंग्रेजी राजनीति उलटे गुल खिला रही है। वह इन देशों के निवासियों को परस्पर लड़ा रही है, इनमें अपने प्रति कटुता बढ़ा रही है और अन्ततः अपने साम्राज्य को भी बखेर रही है। समय है कि अंग्रेज चेतें, अपनी नीति में सुधार करें और इन देशों में विभाजन नीति का त्याग करें। इसमें इन देशों का जहां लाभ है, वहां अंग्रेजों का भी साम्राज्य स्थायी होता है। क्या अंग्रेज ऐसा करेंगे ? लक्षण ऐसे नहीं कि यह हो। यदि ऐसा हो जाय तो एक-दफा बने साम्राज्य सदा कायम रहें। साम्राज्य सदा स्थिर नहीं रहते, इसके भिन्न २ कारण होते हैं। अधीन प्रजा को लड़ाना इनमें प्रमुख कारण होता है। अंग्रेजों की शासन नीति में भी यही कारण रहा है और अब अपने साम्राज्य के बिखरते दिनों में भी वे इस भेद नीति को स्थिर किये जा रहे हैं, यह और अधिक दुःख की बात है। इसका परिणाम जहां अंग्रेजों के लिए बुरा होगा, वहां साम्राज्य से निकल रहे देशों को भी उसका फल भुगतना होगा।

स्वामी श्रद्धानन्द के प्रति

[जगन्नाथ एम० ए०]

तुम सूर्य किरण, हम सब रजकण !
भूला वह स्वर्ण प्रभात नहीं,
जब चमक पड़े थे छूते ही—
हम ! देव, तुम्हारे दिव्य चरण,
तुम सूर्य किरण हम सब रजकण !
तुम चले गए अब रात हुई,
फीकी हम सब की बात हुई।
क्या चमका पाएंगे हमको—
ये छोटे-छोटे तारागण ?
तुम सूर्य किरण हम सब रजकण !
यद्यपि शशि अमृत पिला जाता
पर कण को चमक न दे पाता,
इस मधुर ज्योत्स्ना के बदले—
दो वही जलन, दो वही मरण,
तुम सूर्य किरण हम सब रजकण !

हम शूलों पर चलने वाले

[मदनगोपाल शर्मा बी० ए०]

हम शूलों पर चलने वाले हमसे फूलों का क्या नाता ?
हम हैं वह सुमन कि जिसने मरु की झाड़ी में ही जन्म लिया
जिसको न कभी मलयानिल के मीठे झोंकों ने प्यार किया
जिस पर न कभी गूंजा मधुकर दल और न कोकिल ही कुहुकी
जिसने न कभी मादक सुरभित अभिनव वसंत का स्वप्न लिया
जिसको न मृदुल कोमल किसलय, कलियों ने कभी किया चुम्बन
जिसको न किसी ने भक्ति-भाव से किया देवता के अर्पण
जो कांटों की आंखों का कांटा बनकर पनपा एकाकी
जिसके पाटल-दृग से प्रातः चू पड़ते दो आंसू के कण
जो पतझड़ में ही उगता है, पतझड़ में ही मुरझा जाता
हम शूलों पर चलने वाले···
हमने कब देखा, सागर में तूफान गरजता है कि नहीं
हमने कब देखा, भूनभकंपी वज्र कड़कता है कि नहीं
हमने कब देखा मस्तक पर घनघोर घटाएं घिर आईं
और बादल का दल लरज-लरज भरपूर बरसता है कि नहीं
हमने कब देखा, साबुत भी पतवार हमारा है कि नहीं
हमने कब देखा, नाव छोड़ते समय दूर मंजिल कितनी
है भंवर बीच मंझधार, या कि नजदीक किनारा है कि नहीं
हमने कब देखा, लहरों का दल हमें लीलने को आता
हम शूलों पर चलने वाले हमसे फूलों का क्या नाता ?

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हैदराबाद का नया विधान

[श्री शैलेन्द्रकुमार पाठक]

भारतीय रियासतों में सबसे बड़ी और ब्रिटिश सरकार की लाड़ली हैदराबाद रियासत है। आड़े समय में ब्रिटिश साम्राज्य का साथ जितना निजाम ने दिया है, उतना और कोई भारतीय नरेश नहीं दे सका। गत महायुद्ध में भी सबसे अधिक आर्थिक सहायता निजाम ने ही की है, और यही कारण है कि खास तौर से ब्रिटिश सरकार की कृपा निजाम पर रहती है।

हैदराबाद की जनता निजाम के स्वेच्छाचारी, निरंकुश और पक्षपाती शासन से ऊब उठी है। स्टेट में हिन्दुओं की आबादी ८५ प्रतिशत से कुछ अधिक और मुसलमानों की ११ प्रतिशत के लगभग है। पर सरकारी नौकरी में हिन्दु-मुसलमानों का अनुपात देखकर आश्चर्यचकित हो जाना पड़ता है। आज भी वहां हिन्दुओं को नागरिक स्वाधीनता नहीं है। हिन्दू-संस्कृति का विनाश करने के लिये यह रियासत जो कुछ भी कर सकती थी, वह किया। आर्यसमाज के सत्याग्रह की समाप्ति पर कुछ आश्वासन दिए गए थे — वे फाइलों तक ही सीमित रहे। पर आज की स्थिति और भी गम्भीर हो उठी है। निजाम ने सुधारों की ओट में हिन्दू जनता के तूफानी उत्साह को कुचलने का षड्यंत्र किया है।

इस समय जबकि मैं हैदराबाद की आज की धारासभा का उल्लेख करने जा रहा हूं, तो यह उचित है कि पिछले सुधारों का भी कुछ परिचय दे दूं, जिससे पाठक यह अच्छी तरह समझ लें कि यह प्रतिगामी रियासत जनतंत्र की ओट में कितनी स्वेच्छाचारिता और बेईमानी से काम लेती है। सन् १९३९ में निजामशाही ने एक विधान बनाया था। इसके अनुसार ८८ सदस्यों की एक धारासभा का निर्माण होना था। इनमें से ४२ सदस्य निर्वाचित और हिन्दू-मुसलमानों की संख्या का अनुपात ५०-५० रखा गया, यद्यपि हिन्दुओं की संख्या मुसलमानों से आठगुनी अधिक है।

अब जरा नवीन धारासभा की ओर ध्यान दीजिए। रियासत की धारासभा में १३२ सदस्य होंगे। इनमें ७६ निर्वाचित, ४३ नामजद और १३ सरकार द्वारा नियुक्त किए जायंगे। ११९ सदस्यों की जातिवार संख्या में ५८ हिन्दू होंगे, ५८ मुसलमान, २ ईसाई, १ पारसी।

निर्वाचित सदस्यों का चुनाव निम्न प्रकार से होगा। ३२ सदस्य किसानों से, २० मकान मालिकों से, ४ जागीरों से, ४ मजदूरों से, २ बैंक, २ वकील, २ डाक्टर, ३ व्यवसाय, ३ उद्योग, २ संस्थाओं से, २ मसहदार।

१००) मालगुजारी देने वाला मतदान का अधिकारी है, इसी प्रकार ५) देने वाला किरायेदार भी मत दे सकेगा। चुनाव संयुक्त निर्वाचन प्रणाली के आधार पर किया जायगा। पर इसमें भी एक बात है कि निर्वाचित सदस्य तभी सफल माना जायगा, जब वह अपनी जाति से ५० प्रतिशत से अधिक मत प्राप्त कर लेगा। यदि उसे इतने मत न मिले तो वह असफल माना जायगा। और उसके स्थान पर उसे चुन लिया जायगा, जिसे अपनी जाति से सबसे अधिक मत प्राप्त हुए होंगे। जनता द्वारा निर्वाचित सदस्यों में से दो प्रतिनिधियों को निजाम के मंत्रिमण्डल में स्थान दिया जायगा।

धारासभा में साम्प्रदायिक आधार पर सीटों का विभाजन करने के बाद, संयुक्त निर्वाचन प्रणाली प्रतिशत अनुपात के साथ एक तमाशा सा मालूम पड़ती है—और इस निर्वाचन का फिर कोई महत्व नहीं रह जाता है। वस्तुतः निजाम ने जनतंत्र और सुधार की आड़ में कानूनन अपनी स्थिति को बहुत दृढ़ कर लिया है। अब आप देखिए कि कहां तो ८५ प्रतिशत हिन्दू और कहां ११ प्रतिशत मुसलमान, फिर भी न्यायप्रिय निजाम ने दोनों का कितना ध्यान रखा है? यदि इसे न्याय की हत्या, पक्षपात और जनतंत्र के नाम पर अपनी स्वार्थ-सिद्धि नहीं कहा जायगा; तो फिर इसे क्या कह कर सम्बोधित किया जाय?

अब आप यह देखिए कि धारासभा में ऐसे कितने सदस्य होंगे, जो निजाम सरकार का विरोध कर सकेंगे। रियासत में ऐसे बहुत कम किसान होंगे, जो १००) लगान देते हों। इसलिए इस सचाई से कभी भी इनकार नहीं किया जा सकता कि किसान सीटों से भी जमींदार चुने जायंगे—और इन जमींदारों से जन-हित की बिलकुल आशा नहीं की जा सकती। बैंकर, मकानमालिक, सरदार, उद्योग, व्यापारी सीटों से आने वाले प्रतिनिधि भी जनहित की बात कभी नहीं सोच सकते, क्योंकि निजाम के भय का भूत उनके सिर पर सदैव सवार रहेगा। इस तरह यह स्पष्ट है कि जन प्रतिनिधि किसी भी तरह सभा में अपना बहुमत नहीं बना सकते और फिर धारासभा का यह तमाशा एक नाटक के सिवा और कुछ नहीं रह जाता।

आज एक स्वर से जो लोग निजाम की इस शासन-सुधार योजना का समर्थन और स्वागत कर रहे हैं, हमें उनकी बुद्धि पर तरस आता है। यह समर्थक इसकी गहराई में जाने की ओर ध्यान ही नहीं देते। यह बात भी ध्यान में रखने योग्य है कि निजाम मंत्रिमण्डल जन सभा के प्रति किसी भी रूप में उत्तरदायी न होगा। धारा सभा निजाम के द्वारा दुरुपयोग होने वाले धन पर कोई नियंत्रण नहीं कर सकती। राज्य के खर्चे उसी प्रकार बने रहेंगे। सेना और पुलिस के व्यय के सम्बन्ध में सभा कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकती। निजाम हिन्दुओं के पैसे को मुसलमान संस्थाओं और उर्दू के प्रचार के लिए मनमाना दान दे सकते हैं और इसके लिए धारासभा उन पर कोई अंकुश नहीं रख सकती।

इन सुधारों से निजाम की स्वेच्छाचारिता और निरंकुश शासन प्रणाली में कोई अन्तर नहीं आता बल्कि इससे निजाम की स्थिति और भी दृढ़ है?

मंत्रिमण्डल में दो को छोड़कर सभी सरकारी आदमी होंगे। धारा सभा में जनप्रतिनिधियों का बहुमत कभी नहीं हो सकता तो फिर जनतंत्र कहां रह जाता है। आज निजाम ने स्टेट कांग्रेस से प्रतिबन्ध उठा लिए हैं,— पर फिर भी वहां सभा सम्मेलनों पर रोक है, आज भी वहां पूजा-पाठ पर पाबन्दी है। एक उदाहरण से यह स्पष्ट हो जायगा कि जनतंत्र का ढोल पीटने वाले निजाम कितने बड़े प्रतिक्रियावादी और सामन्तशाही के पोषक हैं।

हैदराबाद के शिक्षा विभाग ने कुछ समय पूर्व एक विज्ञप्ति निकाल कर स्कूलों के प्रधानाध्यापकों को आदेश दिया था कि विद्यार्थी राज्य की कुछ निर्दिष्ट संस्थाओं में कोई भाग नहीं ले सकते, उन्हें ऐसा करने से न रोका गया तो कड़ी कार्यवाई की धमकी दी गई। इन संस्थाओं में महाराष्ट्र-परिषद् और इतिहाद् मुस्लिमीन के साथ-साथ हिन्दी प्रचार की भी संस्थाएं हैं। कारण का उल्लेख करते हुए बताया गया है कि यह संस्थाएं राजनीतिक और साम्प्रदायिक हैं। जब हिन्दी प्रचार सभा को साम्प्रदायिक और राजनैतिक संस्था बता कर उससे सहयोग न करने की विज्ञप्ति जारी की जाती है, तो फिर आप निजाम के जनतंत्र का अनुमान लगा लीजिए।

निजाम हैदराबाद

प्रतिक्रियावादी दीवान मिर्जा इस्माईल भी हैदराबाद पहुँच गए हैं और अपनी स्थिति मजबूत कर रहे हैं। अभी चुनाव स्थगित कर दिए हैं, वे किसी भी क्षण आ सकते हैं – और उनकी रूपरेखा तथा परिणाम क्या होगा, यह कल्पना की जा सकती है। हैदराबाद की जनता को इसका बहिष्कार करना चाहिए, क्योंकि विधान सभा में जो १७ सीटें उन्हें प्राप्त हैं – उन पर प्रतिगामी शक्तियों का अधिकार हो जायगा—और फिर जनतंत्र और सुधार एक ओर जैसे के तैसे धरे रह जायंगे। निजाम का दमनचक्र उसी रफ्तार से चलता रहेगा और निरीह जनता उसमें पिसती रहेगी।

हिन्दी भाषा में अनुपम अभिनन्दन ग्रन्थ

विक्रम स्मृति ग्रन्थ

सम्राट विक्रमादित्य, कालीदास और उनके काल से सम्बन्धित अनुपम लेखों का अपूर्व संकलन, संस्कृति, साहित्य, काव्यशास्त्र, कला, विज्ञान, इतिहास, दर्शन, राजनीति एवं पुरातत्व पर प्रकांड पण्डितों एवं धुरन्धर विद्वानों की लेखनी से लिखे गए ऐसे गवेषणापूर्वक लेख और कहीं प्रकाशित नहीं हुए। प्राचीन भारत के अतीत गौरव के लिए ग्रन्थ का अध्ययन आवश्यक है। साहित्यार्थ प० विश्वेश्वरनाथ रेऊ, दीवान बहादुर झावेरी, बम्बई महामहोपाध्याय वी० व० मिराशी नागपुर, श्री गिरधर शर्मा नवरत्न, झालरापाटन, श्री मैथिलिशरणजी गुप्त श्री सियारामशरणजी गुप्त, सेठ कन्हैयालालजी पोद्दार, डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० रामकुमार वर्मा, श्री माखनलालजी चतुर्वेदी, डा० सालेटूर, डा० गोरखप्रसाद, डा० ए० एन० उपाध्येय, प० उदयशंकर भट्ट, डा० धीरेन्द्र वर्मा, पं० हजारीप्रसाद जी द्विवेदी, डा० बाबूराम सक्सेना, डा० सत्यप्रकाश, श्रीयुत एन० एन० घोष, श्रीयुत पी० के० गोडे आदि अनेकानेक प्रसिद्ध विद्वानों ने ग्रन्थ की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। ग्रन्थ अनुपम चित्रों से सुसज्जित है।

थोड़ी सी प्रतियां ही बची हैं। पृष्ठ संख्या ९१० डेमी साइज ११ ९ मूल्य डाक खर्च सहित केवल ३०) रुपये। वी० पी० नहीं भेजी जावेगी।

मैनेजर, आलीजाह दरबार प्रेस ग्वालियर।

कहानी

हड़ताल

श्री गोविन्ददास विनीत

यह क्या है, पापा !

हरिविलास अपने पिता विलासीराम को 'पापा' कहा करते थे।

'लो, पियो, लो तुम भी पियो, हरी ! दारू है, यह दारू; गम गलत करने वाली, दिन भर की थकान को हरने वाली, लो पियो ।' — विलासीराम ने मिट्टी का छोटा सा सिकोरा बढ़ाते और झुकते हुए कहा।

हरिविलास ने बड़े चाव से उसका एक घूंट खींच लिया। परन्तु तत्काल ही उसे उगल दिया और 'खी-खी सी-सी' करते हुए हाथ से सिकोरा छोड़ दिया। आ···थू···आ···थू ! यह तो बड़ी तीखी है। मैं तो समझा, आप द्राक्षासव ले रहे हैं।'

—हां, हां, आसवमानी हैं दारू, यानी शराब ! पियो, पियो, यकायक नहीं, धीरे धीरे पियो। चटपटी है, मीठी नहीं।' लो, और लो। थोड़ा यह नमकीन भी।'

बाप बेटे के यह चोंचले उन दिनों के हैं, जब हरिविलास केवल चौदह वर्ष के थे। उनकी मां का देहान्त उन्हीं दिनों हुआ था और यह सच बात थी कि विलासीराम ने केवल अपनी पत्नी के दुःख को भुलाने के लिए शराब को एक पेटेंट दवा समझा था। वह कलक्टरी आफिस में क्लर्क थे। दिन झंझटों में कट जाता था, परन्तु रात को सोना उन्हें हराम हो जाता ! उम्र अभी कुल छत्तीस वर्ष की थी।

धीरे-धीरे शराब ने अपना रंग दिखलाया और विलासीराम ने त्याग-पत्र दे दिया, परन्तु बीसियों खुशामदों और रिश्वतों के फलस्वरूप पुत्र हरिविलास को म्युनिसिपल आफिस में एक मामूली सी जगह मिल गई थी। विलासीराम के मरने पर उसी आफिस की बगल में उन्होंने तीन रुपया मासिक पर एक छोटा सा मकान ले लिया था। उम्र हो चुकी थी पच्चीस साल, नयी दुल्हन आये हुए थे दूसरा साल और शराब के अभ्यास को ठीक ग्यारह साल। इसलिये उन पर गृह-रमा की समता में रमानुजा (शराब) का अधिक अधिकार हो चुका था और वह उसका स्नेह निभाने के लिये स्नेहमयी का स्नेह भी बलिदान करने के लिये तैयार थे।

वेतन थोड़ा और व्यय अधिक। फिर भी इधर-उधर से झूंठ-सचके सहारे दस-पांच रुपये महीने में पीटकर गुजर चलती रही। अगर आखिर में बजट से ज्यादा खर्च हो गया तो अगले माह के लिये वादों पर टलता रहा। मगर उनकी दिक्कत कण्ट्रोल और राशनिंग के कारण इतनी बढ़ गयी कि उसे वह किसी भी तरह सभाल न सके। दिमाग में चिड़चिड़ापन और कुछ जनून-सा पहले ही हो चुका था। अब पागल और कुत्तों का काटा। गुस्सा आया। बोतल फोड़ दी, प्याले के टुकड़े कर डाले। नहाये-धोये मान्दर में जा पहुंचे गंगा सिर पर रखली। शराब पीने से तोबा। हजार तोबा ! पत्नी को बड़ी खुशी हुई। उसने मुहल्ले की एक बुढ़ढी ब्राह्मणी को आटा-सीधा देकर कहा— 'माई ! जाओ, दुर्गाजी के मन्दिर में मेरी तरफ से भोजन बनाकर पालो, दुर्गा मां से ऐसी विनती करना कि जिसमें अब वे जन्म भर शराब न छुएं !

वहां मुं० हरविलास ठेकेदार के यहां जा पहुंचे। बोले — 'देखो जी ! अब हमारे नाम से कोई भी शराब लेने क्यों न आये, साफ मना कर देना। वरना अब मैं एक पाई भी न दूंगा। मैंने शराब से तोबा करली। समझे···'

'क्यों दूंगा, मुंशी जी ! और कोई लेने ही क्यों आयगा ? अगर आप···'

'हां' कोई नहीं आ सकता। अच्छा, सिर्फ एक अद्धी बैरल और दे दो। शायद जरूरत·····

ठेकेदार ने शराब दे दी और वह बातों ही बातों में उसका बहुत सा भाग चढ़ा भी गये। शाम को ब्राह्मणी दुर्गाजी का प्रसाद लिये आयी और उधर से नशे में झूमते हुए लाला जी। अभागिनी पत्नी आह करके रह गयी।

× × ×

'तुम इसे न छोड़ोगे ? क्यों' —आज हरिविलास की पत्नी ने मुंह खोल कर उनसे द्वन्द करने का निश्चय कर लिया था।

हरिविलास जो ले रहे थे, धीरे-धीरे मदिरा देवी का जायका; बोतल पर नजर डालते हुए बोले – 'किसे ? इसे ?'

'हां,हां इस घर बार में आग लगाने वाली को ! दुनिया इस जमाने को देखकर अपनी जनम-जनम की आदतों को भी धता बतला चुकी। लोगों ने ईमानदारी और दान-पुण्य तक को विदाई दे दी। मगर आपसे जरा सी बला नहीं छोड़ी जाती। आखिर·····

'हीं···हीं···हीं···हीं··· पागल हुई है दुनिया और तुम। जिसका पल्ला एक बार पकड़ा सो पकड़ा। छोड़ना मर्दों का काम नहीं। तुम्हीं को जो मैं ब्याह कर लाया हूं। अब क्या छोड़ते बनेगा ? हीं···हीं···हीं···हीं··· बोलो, बतलाओ। लोगों को जाने दो, तुम्हीं क्या कहोगी ?'

'देखो मैं तुम्हारे हाहा खाती हूं, अब इन बातों को·····'

'हैं, रहने दो हाहा—दैया। तुम्हारा दुख देखकर मेरे दिल को तपेदिक हो जायगा। जाओ-जाओ अन्दर जाओ।'

'तो तुम इसे छोड़ हो नहीं सकते ?' पत्नी ने समझ लिया कि हरिविलास जो कुछ भी कह रहे हैं, नशे के वश में होकर। अबतक वह सिर्फ शाम को ही पीते थे। आज से सुबह भी उसका आरंभ हो गया है।

'किसे ? इसे ? हैं···हैं···बस छोड़ ही रहा हूं। आज ही···'

'क्या छोड़ रहे हो ? इतने पढ़े लिखे और होशियार होकर·····'

'हां, हां, तभी तो धीरे-धीरे, किसी बहाने से। देखो। माना कि बोतल में शराब एक थी, तो उसका ½ कल सुबह छोड़ा, ½ शाम को छोड़ा, अब रही आधी सो यह देखो,—हरिविलास ने बोतल मुंह से लगाकर बची हुई शराब भी चढ़ाली और बोतल को तड़ से फर्श पर दे मारा। बोले—'आज छोड़ दी।'

'उनकी पत्नी यह सब नाटक देख-देख कर चक-भक सी हो रही थी। बोली– 'अच्छी बात; देखती हूं कब तक···? अगर अब से देखा तो अनशन करूंगी, फिर चाहे जो हो।'

'अनशन नहीं, हड़ताल, अब जमाना हड़ताल का है, सोशल हड़ताल, गुड़···'

'हां, तो जाओ दफ्तर का वक्त हो गया है। चेयरमैन साहब का चपरासी आ रहा है, शायद।'

'चपरासी, और खाना ?'

'तुम्हारी बातों में यह वक्त हो गया, जाओ, वहीं साग-परांउठे भेजे देती हूं। और हां, आज मेरे जेवर सुनार के यहां से लेते आना।'

वह उठी और भीतर चली गयी। हरिविलास भी ज्यों-त्यों कर दफ्तर की तरफ बढ़े।

× × ×

आफिस टाइम चल रहा था। घड़ियां जल्दी-जल्दी उस दिन की लड़ाई तय करने के लिये कागजी मैदान में सफा-दर-सफा कलमी तेग चलाते हुए एक मंजिल सी पार कर रही थीं और हरिविलास ?··· टेबुल पर पैर फैलाये कुर्सी पर सिर लटकाये ले रहे थे मानों गहरी नींद में ही टेलीफोन की घण्टी तीन दफा बजी। आप को कोई खबर नहीं। किशोर बाबू ने अपने कागजों पर से सर उठाते हुए कहा–'अरे रामा !'

चपरासी आ पहुंचा। 'हां, बाबू···' उसने कहा।

'अरे भई ! जरा हरी बाबू को हाथ में करदे। शायद मुहर्रिम की रातों के जागे हुए हैं। वरना दो घण्टे पीछे···'

न जाने बाबू ! उन्हें दिन-पर-दिन क्या होता जा रहा है ? ऐसे कितने दिन कटेगी ? — रामा ने चलते-चलते कहा।

'अरे भैया ? नई बीवी है। यह गहरी नींद कुछ दिन सभी को आती है।' किशोर कहते रहे।

'बाबू ! अरे, ओ बाबू !' — रामा ने जाकर हरिविलास को आवाज दी। सब क्लर्क हस पड़े।

'हैं ! क्या ? क्या मुझे बुला रहा है ? क्या है !–' हरिविलास ने चौंकती सी दशा में पूछा।

'बाबू ! तीन दफा घण्टी बज चुकी पूछिये, तो कौन कहां से पुकार रहे हैं ?'- रामू बोला।

हरिविलास ने हड़बड़ा कर टेलीफोन का आला उठा कर 'एलान' की घण्टी करते हुए उसे कान से लगाया और इधर चपरासी से कहना शुरु किया – 'अरे भाई ! अब तो सब घण्टी ही है, हो चुकी घण्टी। वहां हड़ताल का नम्बर आ गया है, यहां पेट में दंगा मच रहा है।'

हरिविलास को खबर भी न पड़ी कि उसकी घण्टी के उत्तर में कौन कहां से क्या बात कर रहा है। कलेक्टरी की घण्टी थी वह ! खुद कलेक्टर बात करने बैठा था, चेयरमैन से। बुलाया था उसने उनको मिलने के लिए। मगर उत्तर में सुना उसने — 'हड़ताल और दंगा।' टेलीफोन का नम्बर बदल कर सुपरिंडेण्ट पुलिस से बात शुरु कर दी। यहां रामा कुछ कह-कहा कर चल दिया और तब हरिविलास ने 'हैलो-हैलो' चिल्लाना तथा घण्टी पर घण्टी करनी शुरु की। मगर जवाब खामोशी। लाचार आला पटक कर बैठ रहे।

घण्टे ही भर में सारा शहर खाकी वरदी और लाल साफों से भर गया। मोटरों पर मोटरें। लारी पर लारी संगीनों की चमक। खुली हुई दुकानें भी बन्द होने लगीं।

'तुमने हड़ताल का टेलीफोन किया है हरि बाबू ? किधर हड़ताल है ? किधर दंगा है ?'–सुपरिंडेण्ट उनसे पूछ रहा था।

'मैंने ? कब सरकार ! मैंने नहीं'— हरिविलास का नशा भाग चुका था।

वह पुलिस जाब्ते में ले लिये गये। उधर हरिविलास के घर शराब के ठेकेदार का नौकर पहुंचा। उनकी पत्नी ने आकर कहा — 'घर नहीं हैं, क्या काम है ?'

[शेष पृष्ठ १८ पर]

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भारत का भावी शासन विधान (१)

समाजवाद पर आश्रित जनतन्त्र शासन

[प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति]

आज जब कि आदि युग से लेकर भारतीय इतिहास में पहली बार जन प्रतिनिधि मिलकर अखण्ड भारत का विधान तैयार करने में लगे हैं, विधान निर्माताओं और पाठकों के लिए यह लेख विशेष उपयोगी होगा।

जनतन्त्र का अभिप्राय

(१)

पहले हमें यह स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि जनतन्त्र-शासन प्रणाली से हमारा क्या अभिप्राय है ? योरपियन नीति शास्त्र में "Democracy" शब्द का अभिप्राय है — जनता का राज्य (Government of the people) जनता पर किसी एक व्यक्ति का शासन एक तन्त्र कहलाता है और किसी विशेष भाग का राज्य श्रेणीतन्त्र नाम से पुकारा जाता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि जनता का राज्य या जनतन्त्र-शासन केवल एक व्यक्ति या जनता के किसी एक भाग का शासन न होना चाहिए, अपितु सारी जनता का — देश के सब निवासियों का शासन होना चाहिए। एक प्रसिद्ध लेखक के शब्दों में जनतन्त्र-शासन वह है, जो जनता के लिए, जनता द्वारा जनता का शासन हो। "जनतन्त्र-शासन" का यही विस्तृत अर्थ है।

२. जनतन्त्र-शासन के प्रकार

जनतन्त्र-शासन के अनेक प्रकार हैं। वह प्रकार देश और काल की परिस्थितियों के कारण उत्पन्न होते हैं। जैसे— योरप के पुराने एथन्स आदि जगह राष्ट्रों में प्रत्येक बालिग नागरिक सम्मति का अधिकार रखता था। सम्मति देने का प्रकार यह था कि राष्ट्र के सब बालिग नागरिक शहर के चौक में इकट्ठे हो जाते थे और अध्यक्ष तथा न्यायाधीशों के चुनाव से लेकर कानून बनाने और दण्ड की अपील सुनने तक के सब राजकीय विषयों पर सम्मति देते और अन्तिम निश्चय करते थे।

भारत की ग्राम-पंचायतों की प्रथा में भी ऐसे दृष्टान्त पाये जाते हैं कि छोटे ग्रामों में विवादग्रस्त विषयों का निपटारा करने के लिए कभी-कभी ग्राम के सभी बालिग पुरुष एकत्र होकर विचारणीय विषयों पर विचार करते हैं और प्रबन्ध तथा न्याय के प्रश्नों पर अन्तिम निर्णय देते थे। यह सबसे सरल और सीधा जनतन्त्र-शासन है।

परन्तु राष्ट्र या ग्राम की आकार वृद्धि के कारण यह सीधा प्रकार अनुपयोगी हो जाता है। किसी देश के करोड़ों या शहर के लाखों निवासी एक स्थान पर एकत्र होकर कोई विचार या निश्चय नहीं कर सकते। एथन्स तो एक नगर तक परिमित राष्ट्र था। वहां सीधी जनतन्त्र-शासन प्रणाली चल सकती थी, आजकल के विशाल राज्यों में उस प्रणाली का चलना सम्भव नहीं है।

इन दशाओं में वह शासन प्रणाली जन्म लेती है, जिसे प्रतिनिधि सत्तात्मक शासन प्रणाली (Representative Government) कहा जाता है। उस प्रणालीका रूप यह है कि जनताके चुने हुए प्रतिनिधि कानून बनाने तथा शासकों को चुनने का अधिकार रखते हैं। ईसा की १६वीं शताब्दी और २०वीं शताब्दी के व्यतीत भाग में प्रायः सभी सभ्य जातियों में न्यूनाधिक रूप से इस प्रणाली का प्रवेश हो गया है। राजनैतिक दृष्टि से बहुत पीछे पड़ी हुई कुछ जातियों को छोड़ कर शेष सभी सभ्य जातियों ने प्रतिनिधि-सत्तात्मक प्रणाली के सिद्धांत को अपना लिया है और अवस्थानुसार उसे व्यावहारिक रूप भी दे दिया है। अब से २५ वर्ष पूर्व तक सभ्य कहलाने वाले संसार में प्रतिनिधिसत्तात्मक प्रणाली के रूप में, जनतन्त्र-शासन को सर्वोत्कृष्ट माना जाता था।

जनतन्त्र-शासन और बहुपक्ष

हमने देखा कि जनता द्वारा शासन के दो प्रकार हैं – एक तो सीधा जो केवल बहुत छोटे एक नगर या ग्राम तक परिमित-राष्ट्र में ही सम्भव है। दूसरा प्रकार है, प्रतिनिधि सत्तात्मक, जिसका वर्तमान समय में प्रायः सभी सभ्य राष्ट्रों में प्रयोग किया जा रहा है। इन दोनों प्रकारों में जन-सत्ता के प्रकट होने का यही तरीका है कि नागरिक अथवा नागरिकों के प्रतिनिधि एक स्थान पर एकत्र होकर विचारणीय विषयों पर विचार करते और सम्मति प्रकट करते हैं। मतभेद होने पर अन्तिम निर्णय सम्मतियों की अधिकता से किया जाता है। जिस पक्ष में अधिक मत हों, वह स्वीकृत समझा जाता है। कम सम्मतियों वाला पक्ष हार जाता है। सारांश यह है कि जनतन्त्र-शासन में बहुपक्ष का मत विजयी होता है, इसका सारांश यह निकाला जा सकता है कि जनतन्त्र-शासन वस्तुतः बहुमत का शासन है। यह सम्भव है कि सभी विषयों पर मतों का बंटवारा एक ही प्रकार से न हो – परन्तु हरेक प्रश्न का निर्णय उस समय के बहुमत से ही किया जाता है। इस कारण प्रतिनिधि-सत्तात्मक जनतन्त्र-शासन को प्रायः (बहुमत द्वारा शासन) के उपनाम से भी पुकारा जाता है।

प्रजातन्त्र के दोष

हमने देखा कि सामान्य रूप से स्वतन्त्र-शासन प्रणाली का यह रूप बन जाता है कि बहुमत के अनुसार राजकाज चलाया जाता है। इस प्रणाली में अनेक दोष हैं। अनुभव ने बतलाया है कि यदि जनतन्त्र को असावधानतापूर्वक व्यवहार में लाया जाय तो फलतः हुकूमत उस श्रेणी के हाथ में चली जाती है, जो धन और विद्या के बल पर अधिक सफलता से मत संग्रह और मत संगठन कर सके। ऐसे जनतन्त्र का एक ज्वलन्त नमूना अमेरिका में देखा जा सकता है। वैसे, इस प्रकार की शासन-पद्धति का वर्तमान उद्भवस्थान, और सब से बड़ा नमूना इंग्लैंड को माना जाता था, परन्तु गुजरे हुए दो महायुद्धों की प्रतिक्रिया के रूप में कोरे जनतन्त्र की हीनता और समाजवादी प्रजातन्त्र की प्रमुखता ही रहा है, जिस कारण वह अब कोरे व्यक्तिवादी जनतन्त्र का स्पष्ट नमूना नहीं रहा। वह स्थान अब अमरीका ने ले लिया है। अमरीका इस समय कोरे जनतंत्र का सब से बढ़िया नमूना है। यह लगभग सर्वसम्मत सचाई है कि अमरीका की सम्पूर्ण शासन-शक्ति, बहुमत की प्रधानता के सिद्धान्तों के निर्बाध प्रयोग के कारण, सम्पत्तिशाली व्यक्तियों के हाथों में चली गई है। कहते हैं कि वह देश जनतंत्र है, परन्तु वह वस्तुतः धनिक श्रेणी-तन्त्र ही है। इंग्लैंड में दूसरे यूरोपियन महायुद्ध के पश्चात् व्यक्तिवाद के विरुद्ध जो प्रतिक्रिया आरम्भ हुई है उसका अभी अमरीका में बीजपात नहीं हुआ। वहां इस समय भी चुनाव लड़ने वाले दलों का कोई सैद्धान्तिक मतभेद नहीं है। उनके भेदों का मूल कारण व्यापारिक स्वार्थ ही है। यदि केवल आर्थिक समृद्धि को ही उन्नति का चिन्ह माना जाय तो अमरीका का जनतन्त्र इस समय समृद्धि का उच्चतम उदाहरण है, परन्तु यदि समाज के वर्तमान खोखलेपन और आने वाले संकट को दृष्टि में रखें तो अमरीका शायद ज्वालामुखी के मुंह पर खड़ा हुआ है। उसकी वर्तमान स्थिति में वह सब दोष विद्यमान हैं, जो कोरे जनतन्त्र के उग्र प्रयोग में हो सकते हैं। वहां सारी प्रजा का नहीं, प्रजा के बहुमत का भी नहीं, वस्तुतः धनिक श्रेणी का राज्य है, जिसका अंतिम परिणाम केवल एक ही हो सकता है, और वह है भयानक सामाजिक क्रान्ति।

दोष निवारण के उपाय

बहुमत द्वारा शासन में जो दोष आ जाते हैं, संसार अब उनका पर्याप्त अनुभव कर चुका है। मुख्य रूप से वह दोष निम्नलिखित हैं—

(१) अल्पपक्ष का दमन और असन्तोष—जिन देशों में अनेक या अनेक जातियों के लोग रहते हों, उनमें यह दोष विशेष रूपसे दिखाई देता है। जो मतभेद राजनैतिक विचारों के कारण उत्पन्न होते हैं, वह तीव्र होते हुए भी स्थायी नहीं रहते। सिद्धान्तभेद के कारण जो दलबन्दी होती है, उसमें स्थिति के अनुसार परिवर्तन होते रहते हैं, परन्तु धर्म या जाति के भेद के कारण जो दलबन्दी होती है, वह ठोस जाती है। उसमें अल्पपक्ष को बहुपक्ष बनने की आशा नहीं रहती, फलतः अल्प पक्ष में असन्तोष उत्पन्न हो जाता है। यदि उनका उपाय न किया जाय देश में अस्थायी असन्तोष की अग्नि धधकती रहती है, और यदि उसके दमन करने का यत्न किया जाय तो क्रान्ति तक नौबत पहुंच जाती है। जनतंत्र शासन के सामने जो समस्यायें उपस्थित, उनमें सब से अधिक महत्वपूर्ण समस्या अल्पसंख्यक समुदाय की है।

(२) बहुमत द्वारा शासन का एक आवश्यक परिणाम दलबन्द (party system) है। बहुमत को अपने हाथ में लेने के लिए नेता लोग पार्टियों का संगठन करते हैं। प्रतिनिधिसत्तात्मक शासनप्रणाली के पण्डितों का यहां तक कहना है कि दलबदी जनतंत्र शासन की जान है। दलबन्दी के दोष इतने स्पष्ट हैं कि उन पर अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं। दलबन्दी में सिद्धांत गौण हो जाते हैं, पार्टी और उसके व्यक्ति मुख्य। सच और झूठ में कोई तमीज नहीं रहती। सिद्धांतों के स्थान पर नारों, और प्रचार की जगह लोकप्रियता की प्रधानता हो जाती है, न्याय और अन्याय में कोई विवेक न रहता, जिसका अंतिम परिणाम सामाजिक अशांति और क्रांति के सिवा क्या हो सकता है।

(३) जनतंत्र के विरुद्ध जो युक्ति अंग्रेजी के प्रसिद्ध लेखक बर्नार्ड शा ने दी है, वह है कि उसमें सारी शासन-शक्ति 'ऐरा गैरा' महाशय (Mr. Anybody) के हाथ में चली जाती है। इसका अभिप्राय है कि क्योंकि समाज के प्रत्येक व्यक्ति की सम्मति बराबर कीमत रखेगी और क्योंकि समाज में समझदारों की कमी है, इस कारण बहुमत सदा घटिया ही रहेगा; और उस पर आश्रित जनतन्त्र शासन भी घटिया रहेगा।

उपाय

जनतंत्र शासन की न्यूनताओं को पूरा करने के लिये अनेक उपाय निकाले

, पोपुलर इनिशियेटिव, प्लीबिसाइट और रिकाल आदि विस्तृत उपायों के अतिरिक्त सेकण्ड लट, आल्टरनेटिव वोट क्युमुलेटिव वोट, सिंगल वोट, लिमिटिड वोट और प्रपोर्शनल रिप्रैजैण्टेशन आदि चुनाव सम्बन्धी रीतियां भी उल्लेख-योग्य हैं। यह सभी उपाय काम में लाये गये हैं, परन्तु अनुभव ने बतलाया है कि इन सब उपायों से जनतन्त्रशासन के असली दोष नष्ट नहीं हुए। उनका प्रभाव राष्ट्र पर होता ही है। चिरकाल तक का जनतंत्र शासन राष्ट्र को किसी एक प्रबल श्रेणी के हाथों में सौंप देता है, जिसका फल यह होता है कि जिस रोग का उपाय करना अभीष्ट था, वह रोग कभी-कभी बढ़ जाता है।

समाजवादी जनतन्त्र

इन्हीं सब कारणों का परिणाम हुआ कि वर्तमान जनतन्त्र की भूमि इंग्लैण्ड में आवश्यक समझा गया है कि प्रजातन्त्र के पीछे समाजवाद की कलम लगाई जाय। ऐतिहासिक घटनाओं की शृंखला ने ग्रेट ब्रिटेन के निवासियों को बाधित कर दिया है कि वे अपनी राजनीतिक संस्थाओं को समाजवाद के मूलाधार पर कायम करें। मजदूरदल की प्रधानता और इस देश के शिल्पव्यवसाय के राष्ट्रीयकरण का यही अभिप्राय है। इंग्लैंड में मजदूर प्रधानता सर्वथा आकस्मिक नहीं हैं, वह गत आधी शताब्दी की राजनैतिक प्रगति का स्वाभाविक परिणाम है। उस प्रगति ने यह प्रमाणित कर दिया है कि व्यक्तिवाद पर आश्रित जनतंत्र शासन, प्रजा का शासन न रह कर धनिक श्रेणियों का शासन बन जाता है।

भारत के स्वतंत्र शासन को बनाते हुए यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि वह उस प्रजातंत्र को अपना लक्ष्य न बनायें जो अनुभव से दूषित सिद्ध हो चुका है। विचार कर देखें तो दोनों महायुद्ध बिगड़ी हुई प्रजातंत्र पद्धति के ही परिणाम हैं। पहले राजा और राजा की सेनायें लड़ा करती थीं, अब सम्पूर्ण राष्ट्र लड़ते हैं। पहले केवल शासक लड़ते थे, और अब प्रजा लड़ती है! कारण यह है कि शासन का रूप बदल गया, परन्तु भावना नहीं बदली। भावना वहां व्यक्तिगत स्वार्थ की रही, जो एकतन्त्र या श्रेणीतन्त्र राज्य में थी।

यह आवश्यक है कि भारत के भावी शासन विधान का निर्माण जिस जनतन्त्र शासन पद्धति के अनुसार किया जाय, वह समाजवाद के सिद्धान्त पर आश्रित हो।

स्त्री की कमर टूट जाती है

अगर स्त्री का मासिक धर्म ठीक समय पर न आये या मासिक के दिनों में दर्द हो या माहवारी कम या ज्यादा आती हो तो इस तकलीफ से स्त्री की कमर में बहुत दर्द होता है। ऐसी को एक शीशी दवा कोरस सेवन करा देनी चाहिए। इस दवा के खाने से मासिक धर्म की सब खराबी ठीक हो जाती है। फिर हर महीना बिना किसी कष्ट के ठीक मात्रा में मासिक धर्म होने लगता है। हजारों स्त्रियाँ इस दवा से लाभ उठा रही हैं। एक शीशी दवा कोरस की कीमत दो रुपया आठ आना २॥) है। नीचे लिखे पते से पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा मंगा लीजिए।

पारसल खर्च ॥-) लगेगा।

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना
हिन्दी आफिस नं० ३४, दिल्ली!

पेट भर भोजन करिये

गेसहर—(गोलियां) गैस चढ़ना या पैदा होना, पेट में पवन का घूमना, भूख की कमी पाचन का न होना, खाने के बाद पेट का भारीपन बेचैनी, हृदय की निर्बलता दिमाग अशान्त रहना, नींद का न आना, दस्त की रुकावट वगैरह, शिकायतें दूर करके दस्त हमेशा नियमित साफ लाती है, अन्न पचा कर कड़ाके की भूख लाती है, आंत को ताकत देती है। शरीर में रुधिर बढ़ा कर शक्ति प्रदान करती है। आंत, लीवर तिल्ली और पेट के हर एक रोग की अद्वितीय दवा है! कीमत रुपया १।) तीन का ३॥) डाक खर्च अलावा।

पता:-दुग्धानुपान फार्मेसी ४ जामनगर
देहली एजेंट-जमनादास क० चांदनी चौक

स्त्री रोगों की निपुण चिकित्सिका

लेडी डाक्टर **कविराज आर. रानी** ही हैं

आप किसी भी स्त्री रोग में ग्रस्त हों तो निम्नलिखित पते पर मिलिये। वे आपको उसी समय ठीक कर देंगी। इसके अतिरिक्त उनकी तैयार की हुई औषधि 'आशा' एक ऐसी औषधि है जोकि स्त्री के आन्तरिक बाह्य रोगों को दूर करके सन्तान योग्य बना देती है और उसका मूल्य केवल १०) रु० है। डाक व्यय पृथक होगा। औषधालय—

लेडी डाक्टर-**कविराज आर. रानी**

गली नं० १ अर्जुन नगर निकट शाहालमी अड्डा लाहौर।

वैद्यरत्न
पं० डी० गोपालाचार्लू
का
जीवामृतम

स्त्री पुरुष और बालकों में पौरुष, बल और चेतना शक्ति का संचार करने के लिए अर्धशताब्दी से विख्यात है

आयुर्वेद आश्रमम लि०
टी० नगर, मद्रास।

उत्तर भारत के लिए चीफ स्टोकिस्टस्
ए न सा ट्रे डिं ग कं०
चांदनी चौक, दिल्ली।

फोटो कैमरा मुफ्त

यह कैमरा सुन्दर नमूने का सफाई से बना हुआ बिना किसी कष्ट के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है। इसका प्रयोग सरल है यही सही काम करता है और शौकिया काम लेने वाले व व्यवसायी दोनों ही इससे काम ले सकते हैं। यह कीमती मनोहर कैमरों में से है, जो थोड़े ही मूल्य का है। यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और रुपया कमावें। मूल्य बक्स कैमरा पूरा, तमाम फिल्म कार्ड, कैमीकल, सरल प्रयोग सहित नं० ५०१ कीमत ५॥।) वेस्ट, क्वालिटी, नं० ५४५ कीमत ७।), डी लक्स एक्स्ट्रा स्पेशल क्वालिटी नं० ५५० कीमत ६॥), फोल्डिंग नं० १००, कीमत ४५), पैकिंग व डाक व्यय १=) नोट — एक समय में ६ कैमरों के ग्राहक को कैमरा नं० ५५० मुफ्त। स्टाक सीमित है। अभी आर्डर दें अथवा निराश होना पड़ेगा। माल पसन्द न होने पर कीमत वापिस।

इम्पीरियल चैम्बर आफ साइन्स (V.W.D.) पो० बौ० ६१, लाहौर

Imperial Chamber of Science, (V.W.D.) P. B. 61, Lahore.

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हमारा धारावाही उपन्यास

गंगा जल

[ले० — श्री इन्द्र बसावड़ा]

विधवा शोभा के गृहत्याग करने पर उसके भाई अनिल करुणा के साथ उसे ढूंढने चले गये। शोभा एक कुटिया में मिली, जहां राधा तपस्विनी बनकर रहती थी। राधा से अनिल का पहले कभी प्रेम था और करुणा से वह अब प्रेम करता था। राधा को वहां देखकर कुछ दिनों बाद अनिल कुछ विचलित हो उठा। करुणा और राधा दोनों की वह एक साथ अपने मन में तुलना करने लगा।

इधर मोटेराम ब्राह्मण शोभा की मा के गांव जा रहा था।

[गताङ्क से आगे]

थोड़ी देर पीछे शकूर ने कहा — 'महाराज! तुम्हें ब्याह करना है न?' तो किसी विधवा से ·····'

'विधवा से? क्या कहा रे तैंने! मूर्ख! गंवार! निकम्मा! अधर्मी! तुझे खबर नहीं कि हमारी जाति में विधवा का विवाह नहीं होता। भला कभी जाति विरुद्ध काम कर सकता हूं। दूसरे ही दिन लोग जाति में से निकाल दें। इस मोटेराम महाराज की नाक कट जाय, नाक! इस जनेऊ की लाज चली जाय, लाज, समझा?'

'चाहे विधवा कितनी ही छोटी हो?'

'हां-हां, छोटी क्या — बच्ची ही हो, तब भी नहीं। समझा? और शकूर भले ही उसने पहले पति का मुंह भी न देखा हो।"

शकूर बैलों को हांकता टिटकारी देता सुनता रहा।

"हमारी जाति का ही हाल देखा न? गोरधन तेरह वर्ष का था, तब ब्याह हुआ था उसका। पांच वर्ष की थी उसकी बहू। ब्याह होते ही गोरधन आया गांव। गांव में उस समय चल पड़ी महामारी।

और गोरधन गया मर – उसकी बहू हो गई रांड! बहू की चूड़ियां फोड़ डालीं, सिन्दूर का टीका पोंछ डाला। बाल काट डाले।"

"अब कहां है?" शकूर बोल उठा।

अब यहां कहां? उसकी सास उसके पीछे पड़ गई, रोज उसे पीटती। मां का त्रास बढ़ता गया और बढ़ती गई छोकरी की जवानी भी। फिर भला भाई! तुझ से पूछता हूं – छोकरी हो इससे क्या हुआ— उसे क्या मौज नहीं मनानी होती – भाई! सच कहना शकूर! जो होना चाहिए था, वही हुआ – किसी के साथ छोकरी भाग गई।"

"खुदा – तोबाह! तोबाह!" शकूर बोल उठा।

'ऐसा है भाई! मैं तो कहता हूं, जाति कह दे न, तो हम जैसे सत्तर आदमी इकट्ठे होकर ब्याह करने को तैयार हो जायं, पर जहां जाति ही आगे न बढ़े तो फिर अपने से क्या हो? और जाति तोड़ना – जाति से बाहर जाना कोई हंसी खेल नहीं; जो बस कहने से ही हो जाय।'

'तो महाराज!' – अपना माथा खुजलाता हुआ शकूर बोला — 'एक दूसरी बात कहूं?'

'क्या, कह डाल न? अपने से क्या भेद है?'

'हां, इसी से तो कहता हूं कि तुम एक काम नहीं करो?'

'क्या?'

'आप किसी को घर में रख लो।'

'तू तो बिलकुल अहमक रहा।'– मोटेराम जी बोले।

'क्यों?'

'मूर्ख! हमारी कौम में यह भी नहीं होता।'

'नहीं होता — अब तुम तो —'

'अरे! यह नहीं होगा।'

'तो फिर किसी — क्या कहते हैं वह आर-समाजी। आर-समाजी में से ब्याहलो।'

'अरे भाई; पर जाति बाहर तो हो जाऊं न!'

'ओह! तुम्हारी जाति का भी भारी झगड़ा है भई।' अन्त में कुछ न सूझने पर शकूर ने कहा।

'यही तो बड़ा दुख है- दूसरा क्या?'

मोटेराम ने कहा — 'हम जैसे मनुष्य विवाह बिना रह जायं; पर विधवा को नहीं ब्याह सकते! आर्यसमाजी को भी नहीं ब्याह सकते और न घर में रख सकते। नहीं समझा क्या?'

थोड़ी देर तक मौन छाया रहा। गाड़ी उछलती-कूदती आगे बढ़ती रही। मोटेराम महाराज बोरियों पर पड़े रहे और शकूर बीच-बीच में बोलता रहा— 'आ-आ ··· मर रे ···'

शकूर सोच रहा था — यह कैसी कौम और कैसी जात कि जिसमें ब्याह के बारे में, निकाह करने के बारे में ऐसे-ऐसे बन्धन रक्खे हैं? और अपनी कौम में तो चाहे जिसके घर में डाल सकते हैं।

थोड़ी देर बाद मोटेराम जी बोले — 'शकूर! खबर पड़ी क्या?'

'क्या?'

'अपने थानेदार साहब के भाई की लड़की भी विधवा ···?'

'हैं! क्या कहते हो! सच बात है क्या?'

'हां-हां भाई, उस दिन मैं कुएं पर नहा रहा था, उसी समय थाने से जमादार ने आकर कहा— 'मोटेराम महाराज! चलो थाने में बुलाते हैं।' मैं तो गया थाने में। वहां मां साहब ऐसे रो रहीं थीं कि पूछें मत बात। मैं तो भाई! यह दशा देख पसीज गया। पास ही ठुकराइन जी खड़ी थी। उनने कहा— 'मोटेराम जी! इधर आओ! समाचार आये हैं कि राधे बाबू की लड़की शोभा जीजी का सुहाग ·····' मैं भी सुन कर रो पड़ा।'

'खुदा! तोबाह' शकूर बोल उठा।

'फिर शकूर! मां साहब को मैंने खूब समझाया। कहा – 'मां साहब! चिन्ता मत करो। अब क्या होता है? यह संसार तो माया जाल है— माया जाल! — लाओ मांजी! मैं भोजन बना डालता हूं, आप शान्ति से बैठो, और फिर तो मुश्किल से वे शान्त हुईं।'

'क्या उम्र होगी बाई की?' शकूर ने पूछा।

'होगी – सतरह अठारह वर्ष की।'

'या अल्लाह!' अपनी आंख, कान और मुख को हाथों से स्पर्श कर शकूर ने विश्वास डाला। उसके एक सुन्दर युवती की कल्पना की और वह दुःख से दुखी, युवावस्था की सम्पूर्ण ऊर्मियों को दबाती, दीन और असहाय, अलंकार हीन एक युवती की कल्पना करके मानों कांप उठा तथा उसके हृदय में से एक दीर्घ विश्वास निकल पड़ा।

सन्ध्या होने लगी थी। पश्चिम में लाल पीले बादल छा गये थे और थोड़ी देर में हवा वेग से चलने लगी।

'शकूर!'

'महाराज!'

'पानी आयगा क्या?

'मालूम तो ऐसा ही होता है।'

'चल भाई, जल्दी कर।'

'हां, गांव तो यह आया।' कह कर शकूर ने बायें बैल की पूंछ जोर से उमेठी और जैसे ही दोनों बैल दौड़ने लगे, उसने कहा —

'शाबाश! मेरे बेटे शाबाश!'

और थोड़ी देर में वे गांव के निकट आ पहुंचे। जोर से आंधी चलने लगी। बगूला आसपास के वृक्षों के पत्तों को इकट्ठा कर स्तूपाकार में दौड़ता, समेटता सामने से आता दिखाई दिया।

'बगूला!'

'हां, महाराज!'

'मरे भाई!'

'घबराओ मत महाराज! चला जायगा।'

बगूला निकल गया, पर वायु इतने वेग से बहने लगी कि आस-पास के वृक्ष इधर-उधर डोलने लगे — रास्ते की धूल उड़-उड़ कर आंखों में आने लगी।

'भाई शकूर? जल्दी कर।'

'यह पहुंचे महाराज।'

तभी तो थाना दिखाई पड़ा।

'लीजिए महाराज! आ पहुंचे न?'

'हां मेरे भाई! अच्छा हुआ, वे अंधेरा होने से पहले ही पहुंच गये।'

गडरिया मेढ़ों के झुण्ड को वेग से दौड़ा रहा था – गायों का दल भी गले की घंटियों को बजाता गांव की तरफ भाग रहा था। धूल का बादल उड़कर मानों सारे ही गांव को ढक रहा था।

मोटे रामजी गाड़ी में से कूद कर उतरे और बोले—

'राम-राम भैया शकूर।'

'राम-राम महाराज।'

और इधर उधर देखे बिना मोटे राम महाराज अपने घर की तरफ, अपनी धोती ठीक करते तथा हांफते-हांफते चल दिये।

घर पहुंचे तबतक तो आंधी ने प्रचण्ड स्वरूप धारण कर लिया था।

नाजिम साहब के घर के पास, उस छोटी गली में, कच्चा मिट्टी का मकान मोटेरामजी का है। टूटे से दरवाजे का टूटा सा ताला खोल कर मोटेराम महाराज भीतर घुसे। देखते हैं तो घड़े में पानी नहीं। पेट में भूख तो लगी थी; पर रसोई करने के लिए पानी तो चाहिये कि नहीं? यह नन्दू माली की मां भी हरामखोर है, हरामखोर मोटेरामजी बड़ बड़ाने लगे—कितनी बार कहा है कि बाई, दोनों घड़े भर जाया कर; पर मेरी बेटी एक घड़ा ही भरती है। महीने के आठ आने लेती है, वे मुफ्त के लेती है। अभी के अभी नहीं भराऊं तो मेरा नाम मोटेराम नहीं – समझती क्या है मन में!

बाहर आ-दो चार डग चल एक छोटी सी कोठडी के पास खड़े हो मोटे राम जी बोले —

'अरी ओ नन्दू की मां।'

'क्या है?' भर्राई हुई आवाज में स्थूलकाय नन्दू की मां ने जवाब दिया।

'मटकी में पानी की बूंद भी नहीं।'

'तो मैं क्या करूं?'

'मैं क्या करूं?' हाथ को लटका करके मोटेराम जी बोले। इसी समय सामने के छोटे से दरवाजे में नन्दू की मां दिखाई पड़ी। नाक में डली थी उसके नथ; मुख पर का रुद्र भाव और उसकी उस स्थूल काया ने मोटेरामजी के मन में मिश्रित भाव जगाये।

अपने मटके को काबू में रख चुपचाप खड़े, वे बोले—

'यह तो मैं कहता था- नत्थू की मां!'

'क्या कहते थे तुम? देखते नहीं, कैसी हवा चल रही है। थोड़ी देर में ओले पड़ेंगे ओले। और तुम मुझे आवाजें देकर बाहर निकाल रहे हो। शरमाते नहीं — बड़े आये हो तुम।'

'ये तो नन्दू की मां।'

'क्या है नन्दू की मां का? कह डालो न।'

'ओ! तुम तो नाराज हो गई!'

नन्दू की मां मुंह मटका कर खड़ी रही।

'बात यह है कि पानी की बूंद ही नहीं और मुझे ब्राह्मण को अभी भोजन बनाना है।'

'सारा पानी गया कहां?'

जाय कहां? खत्म हो गया।'

'ठीक-ठीक जाओ, भाई!' कहकर नन्दू की मां चली गई।

नन्दू की मां की रसिकता गांव में खूब प्रख्यात थी। वह आज दस वर्ष से अकेली इस गांव में रहती है। नन्दू इसकी लड़की का नाम था; पर नन्दू तो अब ससुराल में थी और नन्दू की मां बिल्कुल अकेली, नाजिम साहब के मकान के पास की गली में, मोटेराम जी के घर से पास ही, एक छोटी सी आठ आने महीना किराये वाली कोठरी में रहती थी। नन्दू की मां अकेली ही इस गांव में आई थी। कोई कहता नन्दू की मां विधवा थी, तो दूसरे लोग कहते-यह पति को छोड़ कर यहां भाग आई थी, तो फिर गांव के कुछ लोग यह भी कहते कि नन्दू के बाप ने इसे लात मारकर निकाल दिया। और खुद एक दूसरी औरत कर लाया। सच्ची बात चाहे जो हो; पर नन्दू की मां गांव में अपनी स्थूल सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध तो थी ही। दस-बारह घर पानी भरकर वह अपना निर्वाह कर लेती थी। सिर में तेल डालती, कभी-कभी तो माथे में रखड़ी गुंथा, गोर से पट्टियां बना, आंख में अंजन लगा, मुख में पान चबा, नाक में लम्बी गोल नथ पहन, चटकदार ओढ़नी ओढ़, घेरवाला लहंगा पहन जब छम-छम-छम करती पानी का घड़ा ले गलियों में से निकलती, तब तो गांव के युवक और विशेष कर तोंदल सेठ लोग उसे एक क्षण देखते रह जाते। एक समय तो सेठ दानमलजी और गोविन्दलाल जी के बीच, नंदू की मां उनके घर पानी भरने आती है या नहीं, इस बात पर शर्त भी हो गई थी और इसमें दोनों की जीत और दोनों की हार हुई थी।

ऐसी नन्दू की मां मोटेरामजी का मन हरण करे तो कुछ आश्चर्य नहीं। मोटेरामजी ने कई बार प्रयत्न किया था कि वह उनके साथ बहुत बातें करे, कुछ हंसे बोले; पर नन्दू की मां अपनी कीमत जानती थी।

मोटेराम जी अपनी कोठरी में गये और टीन की छोटी चिमनी जलाने को दियासलाई की डिबियां ढूंढ़ने लगे। अंधेरा हो गया था और मोटेरामजी अपना हाथ अंधेरे में फैलाकर इधर से उधर चक्कर मारने लगे; पर दियासलाई मिलती नहीं दिखाई दी। एकाएक उनका माथा सामने की दीवार से टकराया और वे क्रोध के आवेश में बड़बड़ाने लगे — 'साली दीवासलाई की माई मरे!' पर दियासलाई को अपनी मां के मर जाने का कोई फिक्र न था वह मिलने को तैयार ही नहीं थी।

तभी नन्दू की मां की आवाज सुनाई दी।

'अरे! रामजी! अब भी घर में दीपक नहीं जलाया।'

'ओ! दीपक मिले तब न! लाओ घड़ा उतार दूं।' ऐसा कह मोटेराम महाराज नन्दू की मां की ओर चले।

'नहीं-नहीं रहने दो। मैं खुद उतार लूंगी।' नन्दू की मां बोली--

'वाह जी! ऐसा भी हो सकता है क्या? लाओ उतार दूं!' कहकर मोटेरामजी नन्दू की मां के पास ही आ गये और उसके माथे से घड़ा उतारने की क्रिया में नन्दू की मां के शरीर के बिल्कुल पास आ खड़े हुये।

घड़ा उतारते हुये महाराज ने नन्दू की मां के हाथ का स्पर्श कर जोर से दबा, अपने स्नेह का प्रदर्शन किया।

'अरे रामजी रे! मेरी लाज ले डारी रे!' ऐसा कह नन्दू की मां ने पानी का घड़ा जमीन पर ही डाल दिया और जोर-जोर से गरजने लगी-'हें! तुम समझते क्या हो अपने मन में! हें··· तुम··· मेरी लाज···'

मोटेरामजी के तो होश उड़ गये। यह क्या हो गया काटो तो खून नहीं।

'मैं तुम्हारे जैसे सत्तर को खा जाऊंगी हां फिर गांव भर को इकट्ठा न करूं···'

मोटेरामजी हाथ जोड़कर बोले—

'म···म···माफ करो नन्दू की मां; मैं तो····मैं तो···'

'क्या 'मैं तो मैं' तो करते हो। तुमने-'

मोटेरामजी का हाथ तुरन्त जेब में गया और एक रुपया निकाल कर तुरन्त उसके हाथ में देकर कहा—

'बन्द कर मेरी मां! कोई सुन लेगा तो।'

रुपया हाथ में आते ही नन्दू की मां का क्रोध न जाने कहां भाग गया। वह पूर्ववत् शान्त हो गई और बोली—

'हटो बीच में से। तुम इतने बड़े भी शरमाते नहीं – मजाक करते हो जो।'

मोटेरामजी दूर हट गये थे और दियासलाई की डिबिया ढूंढ़ने का प्रयत्न कर रहे थे। सामने के कोने में माचिस मिलते ही उन्होंने दीपक जलाया। पानी की रेल पेल देखी थी। सारी कोठरी में कीचड़ ही कीचड़ हो गया।

'देखा', मोटेरामजी बोले—मेरे घर का सत्यानाश।'

'बड़े सत्यानाश वाले आये हैं। करी थी न दिल्लगी।' हंसते-हंसते नन्दू की मां बोली।

'भूल हुई मेरी मां।' मोटेरामजी जनेऊ ठीक करते हुये बोले।

नन्दू की मां दूसरा घड़ा रख दरवाजे में आ खड़ी हुई।

'तुम भी गजब के डरपोक हो तभी तो अब तक कंवारे हो।' कटाक्ष करते नन्दू की मां वहां से चलती बनी।

मोटेरामजी कट गये; पर एक शब्द भी बोल नहीं सके। मन ही मन में वे अपनी मूर्खता पर विचार करने लगे। किस लिये मजाक किया रांड का। सामने की कीचड़-युक्त भूमि देखते भूख लगने से अपने पेट पर हाथ फेरते, मोटेरामजी जहां के तहां बैठे रहे, उनको सूझा नहीं कि अब करूं क्या?

तभी तो बाहर से आवाज आई। मोटेराम महाराज।'

'कौन है रे!' महाराज ने भीतर से पूछा।

'यह तो मैं जमादार।'

'ओह! जमादार बाबू! कैसे आना हुआ साहब?'

'आपको थाने में बुलाते हैं—मां साहब ने याद किया है।'

'यह आया थोड़ी देर में।'

'नहीं, मां साहब ने कहा है कि अरुण भैया आये हैं, इसलिये लेकर ही आना।'

'यह आया।' कहकर मोटेरामजी ने अपने माथे पर फेंटा लपेटा और हाथ में लम्बी लाठी ले जमादार के साथ चल पड़े।

थाने में जा वे कहने लगे—

'राम-राम मां साहब! राम-राम।'

'आये क्या?' माताजी ने पूछा।'

'हां मांजी, क्यों न आऊं। जमादार साहब पहुंचे और मैं आया।'

तभी सामने से एक हृष्ट-पुष्ट युवक, हाफ शर्ट और पेण्ट पहने दिखाई पड़ा।

'ओ हो! अरुण भैया! राम राम।'

अरुण ने सिर हिलाकर राम-राम का उत्तर दिया।

'महाराज! कल अरुण भैया अनिल भैया के पास जाने वाले हैं। तुम भी जाओगे न साथ में।'

'हां, मां साहब! जाऊंगा न··· क्यों नहीं जाऊं?'

और यह कहकर मोटेरामजी ने अपना लाल रूमाल नेत्रों के पास लेजा, अत्यन्त गम्भीर बन कहा--'गजब हुआ मांजी! तुम्हारे कुटुम्ब पर गजब की आफत आ गई मां साहब।'

पर माताजी ने कुछ जवाब नहीं दिया। साग काटते-काटते टप-टप दो आंसू उनके नेत्रों में से गिरने लगे!

अनु० मृदुल] (क्रमशः)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

साहित्य परिचय

परिचय के लिये प्रत्येक पुस्तक की दो-दो प्रतियों का आना आवश्यक है, अन्यथा केवल प्राप्ति-स्वीकार किया जायगा। —सम्पादक

प्रेमी अभिनन्दन-ग्रन्थ—प्रकाशक मन्त्री अभिनन्दन ग्रन्थ समिति, टीकमगढ़ मूल्य १०)

बम्बई की हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर सीरीज के मालिक श्री नाथूराम प्रेमी के अभिनन्दन में यह ग्रन्थ सम्पादित और प्रकाशित हुआ है। प्रेमी जी ने उत्तमोत्तम हिन्दी ग्रन्थों को प्रकाशित करके हिन्दी साहित्य और हिन्दी लेखकों की जो प्रशंसनीय सेवा की है, उसी के उपलक्ष में साहित्य-सेवियों की ओर से यह भेंट समर्पित की गई है। प्रेमीजी इस भेंट के योग्य हैं। साहित्य-सेवियों ने कृतज्ञता प्रदर्शन करके उचित ही किया। ग्रन्थ के सम्पादक-मण्डल में ४६ प्रसिद्ध हिन्दी लेखकों के नाम हैं। ग्रन्थ के प्रकाशन के लिए दानियों की ओर से ६०००) के लगभग रुपया प्राप्त हुआ है। ग्रन्थ की पृष्ठ संख्या ७५१ है।

ग्रन्थ में प्रेमीजी की जीवनी और उनके अभिनन्दन सम्बन्धी संदेशों और लेखों के अतिरिक्त भाषा विज्ञान और साहित्य, भारतीय संस्कृति, जैन-दर्शन, मराठी और गुजराती साहित्य, बुन्देलखण्ड, समाज-सेवा और नारी जगत तथा विविध विषयों पर लेख संगृहीत किये गये हैं। विषयों का चुनाव जिस सिद्धान्त के अनुसार किया गया है, वह स्पष्ट नहीं है। प्रतीत होता है कि इस सम्बंध में सम्पादकों की अपनी रुचि और प्रवृत्ति का विशेष ध्यान रखा गया है।

ग्रन्थ में चौंतीस चित्र हैं, कुछ चित्र लेखों से सम्बध रखते हैं, शेष पुस्तक की उपयोगिता और सुन्दरता को बढ़ाने के लिए दिये गये प्रतीत होते हैं। रूप-रंग बहुत उत्तम है। प० बनारसीदास चतुर्वेदी और श्री यशपाल जी जैसे योग्य और अभ्यस्त प्रकाशकों के प्रबन्ध में जैसा ग्रन्थ प्रकाशित होना चाहिए था, प्रेमी-अभिनन्दन-ग्रन्थ वैसा ही हुआ है।

—इन्द्र।

साकेत सन्त — लेखक — श्री बलदेवप्रसाद मिश्र। प्रकाशक — विद्यामन्दिर लिमिटेड, कनाट सर्कस, नई दिल्ली। मू० ६)

स्व० रवीन्द्र के ध्यान दिलाने पर कुछ कवियों ने उर्मिला आदि उपेक्षित नायिकाओं पर तो अपनी कलम अवश्य उठाई है, लेकिन उपेक्षित नायकों की फिर भी उपेक्षा की गई है। साकेत-सन्त के रूप में भरत का प्रमुख चित्रण करके डा० बलदेवप्रसाद मिश्र ने इस कमी को पूरा करने का प्रयत्न किया है। वस्तुतः रामचन्द्र की भांति भरत का भी जीवन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस पुस्तक के लेखक ने उसे अपनी कल्पना व प्रतिभा के बल पर और भी उज्ज्वल रूप में दिखाया है।

लेखक ने इस पुस्तक में कुछ नई कल्पना की है। भरत को गद्दी दिलाने का षड्यन्त्र राजनैतिक था। भरत के मामा युधाजित् उसे राज्य लेने के लिए तैयार करना चाहते थे, इसीलिए वे उसे अपने घर जाकर उपदेश देते रहे, लेकिन भरत जैसा निर्मोही सन्त इसके लिए तैयार नहीं हुआ। कैकेयी जब अपने उद्देश्य में सफल नहीं हुई, तब स्वयं शव के साथ सती होने लगी, लेकिन भरत ने उसे रोका। उसके बाद जब भरत राम को वापस लाने के लिए गये, तब भरत ने अत्यन्त चतुरतापूर्वक उनकी खड़ावें गद्दी पर रखने की अनुमति लेकर राम से यह स्वीकार ही लिया कि राज्य पर राम का अधिकार है। इस प्रकार बनवास की प्रतिज्ञा पर दृढ़ रह कर — जीतकर भी राम हार गये।

साकेत सन्त केवल साधारण कथा नहीं है। इसमें अनेक स्थानों पर काव्य की प्रतिभा प्रकट होती है। भरत और मांडवी का परस्पर प्रेमालाप तथा एक दूसरे में हिमालय की कल्पना; अयोध्यावासियों, शृंगवेर के जंगलियों तथा तपस्वियों से भरत के सुलझने के प्रसंगों रज तम व सतगुण के प्रकाशन प्रातःवर्णन; आंधीपानी के भीषण उत्पात आदि अनेक स्थलों पर कवि की काव्य-प्रतिभा के दर्शन होते हैं।

भाषा सरल और प्रवाहयुक्त है, यद्यपि अनेक स्थलों पर तर्दय, अस्मर्दय आदि दुरूह शब्द आकर प्रवाह को भग कर देते हैं। सन्त-कीर्तन में भाषा में प्रसाद गुण की आवश्यकता होती है।

माण्डवी जहां प्रेमालाप करती है, वहां उसे क्या मालूम कि यही उसका अपने प्रेमी से अन्तिम प्रेमालाप है। इसके बाद तो भरत का समस्त जीवन ही बदल जाता है और फिर वह सन्त व योगी बन जाता है।

कुछ प्रसंग तो बहुत सुन्दर हैं। कवि के सुन्दर विषय निर्वाचन ने ऐसे अनेक प्रसंग स्थल-स्थल पर ला दिये हैं। उनकी चर्चा में न जाकर उसकी कविता के कुछ नमूने देखिये—

जीवन कुछ फूलों की लीला
जीवन कुछ शूलों की लीला
इन फूलों शूलों में छिपकर,
बैठा जीवन प्राण अजाना
जीवन किसने पहचाना।

संत भरत की मांडवी का वर्णन सुनिये—

सम्मुख है राकेश, चकोरी पर
न उधर निज नयन उठाये।
विकसी प्रभा प्रभाकर की है,
पर न कमलिनी मोद मनाये।
या वसंत आंखों के आगे,
पर कूजित हो विकला स्वर था
अहह! मांडवी को तो
आंखों का मरना भी वर्जित था।

राम को चित्रकूट से वापस लाने में असफल होकर भरत अयोध्या लौट आये, लेकिन उनका जीवन बदल गया। कवि के शब्दों में—

चले जहां से भरत, वहीं मन से फिर आये
जग छोड़ा था, पुनः उसी में गये रमाये।
दिनचर्या में किन्तु दृष्टि का था वह अन्तर,
अवनी अम्बर हुई और अवनी था अम्बर।

कवि प्रातःकाल का वर्णन करता है—

जीवन की नूतन रेखा
जाग्रत हो जग में आई
जब जरा उनींदी होकर
रजनी ने ली अंगड़ाई।

रात का वर्णन देखिये—

हजारों दृग तारे निज खोल,
रो रहा था आकाश अडोल।
हृदय में ले अवनी की आह,
व्यथित थी स्वतः अनिल की आह।

भूचाल—लेखक — श्री रामसिंह। प्रकाशक वही। मूल्य ३॥)

यह एक उपन्यास है। इसमें बिहार के भूकम्प को पृष्ठभूमि मानकर एक कथानक की रचना की गई है। भूकम्प के कारण एक परिवार के सब सदस्य अलग-अलग हो जाते हैं, उधर एक क्रांतिकारी जेल में बैठा घर की दुर्दशा सुनकर चिन्तित हो जाता है और उसी अवस्था में रिहा कर दिया जाता है। अंत में सब बिहार की तत्कालीन आवश्यकता को अनुभव कर सेवा व्रत ले लेते हैं और अचानक सब का परस्पर सुखद सम्मिलन हो जाता है।

सम्पूर्ण उपन्यास में आजकल के प्रगतिवादी अश्लील साहित्य से विद्रोह करता हुआ लेखक अपने पात्रों को बहुत ऊंचे आदर्श पर ले चला है। रमा का पतन दिखाया गया है, लेकिन सुशील की सब प्रलोभनों पर विजय आज के वातावरण में अस्वाभाविक होती हुई भी पाठकों को ऊंची शिक्षा देती है। परन्तु अपनी समस्त पुस्तक में उच्च आदर्शों की रक्षा करता हुआ लेखक कला-पक्ष को अच्छी तरह निभा नहीं पाया है। बीच-बीच में लेखक के उपदेश उसमें उपन्यास का रस पैदा करने में भी कहीं-कहीं बाधा डालते हैं।

साकेत-सन्त और भूचाल दोनों के मूल्य अधिक प्रतीत होते हैं। —कृष्ण

आधुनिक संसार — लेखक — श्रीकृष्णचन्द्र विद्यालंकार, सम्पादक साप्ताहिक वीर अर्जुन। प्रकाशक—हिन्दी भवन, हसनाल रोड, लाहौर। मू० ४), सजिल्द ४)।

आज की दुनिया जिस तेजी से बदल रही है, उसे पूर्ण रूप से समझने के लिए यह पुस्तक लिखी गई है। इस पुस्तक के पांच भाग हैं। पहले भाग में विश्व का संक्षिप्त भौगोलिक परिचय देते हुए नागरिक शास्त्र के सामान्य सिद्धांतों तथा शासन-पद्धति का परिचय दिया गया है। इसी में यह भी बताया गया है कि संसार किस तरह राजतंत्र से समाजवाद की ओर जा रहा है।

दूसरे भाग में भारतवर्ष के वर्तमान शासन-विधान तथा राष्ट्रीय और वैधानिक प्रगति का परिचय दिया गया है। कांग्रेस, मुस्लिम लीग तथा भारत के अन्य राजनैतिक दलों का संघर्ष, कलकत्ता का नरमेध, ब्रिटिश मंत्रिमिशन, अन्तःकालीन सरकार और विधानपरिषद् आदि की चर्चा इसमें की गई है।

तीसरे भाग के १०० पृष्ठों में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक संघर्ष का विस्तृत वर्णन है। बीसवीं सदी के दोनों विश्वयुद्ध और विशेषतः इस युद्ध का वर्णन करते हुए युद्धोत्तरकालीन समस्याओं का विशेष परिचय दिया गया है। रूस, अमरीका और इंग्लैंड के पारस्परिक स्वार्थों का संघर्ष, बलकान राष्ट्रों में क्या हो रहा है; मध्यपूर्व के ईरान, टर्की, ईराक तथा फिलस्तीन की क्या समस्याएं हैं; दक्षिण पूर्वी एशिया में इण्डोनेशिया, मलाया और हिन्दचीन तथा चीन की समस्याएं क्या हैं आदि यह सब लिखने के बाद लेखक ने विश्वशान्ति के नये प्रयत्नों—यूनाइटिड नेशन्स आर्गेनाइजेशन का वर्णन किया है।

चौथा भाग भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। संसार के विभिन्न राष्ट्रों में पुनर्निर्माण की जो नई-नई योजनाएं बन रही हैं तथा अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय दोनों प्रकार की जो आर्थिक प्रवृत्तियां चल रही हैं, उनका सुन्दर परिचय दिया गया है। किस तरह संसार के पूंजीवादी देश भी आर्थिक क्षेत्र में उद्योगधन्धों के राष्ट्रकरण तथा नियंत्रण की प्रवृत्ति को अपनाते हुए युद्ध के परिणामस्वरूप समाजवाद की ओर बड़ी तीव्र गति से जा रहे हैं, यह बताते हुए नई आर्थिक समस्याओं का वर्णन किया गया है। भारतवर्ष की आर्थिक समस्याओं का वर्णन करते हुए अन्न संकट, स्टर्लिंग बैलेंस तथा बम्बई-योजना, सरकारी पुनर्निर्माण योजना आदि का संक्षिप्त परन्तु प्रामाणिक विवेचन किया गया है।

पांचवें भाग में विज्ञान की नवीन प्रगति का परिचय दिया गया है। युद्धकाल में नवीन से नवीने आविष्कारों—परमाणुबम और रेडार आदि का भी

वर्णन देकर इस पुस्तक का पांचवां भाग पूर्ण किया गया है । परिशिष्ट में कुछ आवश्यक जानकारी दी गई है ।

इसमें संदेह नहीं कि पुस्तक अत्यन्त प्रयत्न से लिखी गई है । लेखक स्वयं एक प्रसिद्ध पत्र के प्रधान सम्पादक हैं, इसलिए यह स्वाभाविक है कि अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय समस्याओं पर वे अधिकार-पूर्वक प्रामाणिक सामग्री दें । आज की दुनिया की राजनीति और आर्थिक समस्याओं की जानकारी के उत्सुक प्रत्येक पत्रकार को इस पुस्तक के पढ़ने से विशेष लाभ होगा । --भीमसेन

१००) इनाम

सर्वार्थ सिद्ध यन्त्र —जिसे आप चाहते हैं, वह पत्थर हृदय क्यों न हो इस यन्त्र की अलौकिक शक्ति से आपसे मिलने चली आवेगी। इसे धारण करने से व्यापार में लाभ, मुकदमा, कुर्सी, लौटरी में जीत, परीक्षा में सफलता, नवग्रह की शान्ति, नौकरी की तरक्की और सौभाग्यवान होते हैं । मू० तांबा २॥) चांदी ३) सोना १२) ।

पता— सिद्ध श्मशान आश्रम
न० १५, पो० कतरीसराय (गया)

स्त्री को श्वेत प्रदर

स्त्री को श्वेत पानी की बीमारी भयानक होती है । इस बीमारी को ल्युकोरिया भी कहते हैं । इस बीमारी से पीड़ित होने वाली स्त्री के गुप्त शरीर से समय असमय श्वेत रङ्ग का बदबूदार पानी या लेस निकलता है और धीरे-धीरे उस स्त्री के यौवन को समाप्त कर देता है । उसकी कमर, नाफ, नले, पेट, बल्कि सारे शरीर में दर्द होने लगता है । माहवारी अर्थात् मासिक धर्म भी खराब हो जाता है । यह रोग बड़ा भयानक है । स्त्रियों को इसमें लापरवाही नहीं करनी चाहिए ।

श्वेत पानी को रोकने की विधि

नवयुग की जांच से अब पूरी तरह साबित हो चुका है कि इस श्वेत पानी की बीमारी को समूल नष्ट करने की सबसे बढ़िया विधि यह है कि बीमार स्त्री को केवल एक शीशी औषधि 'रोक' सेवन करा दी जाय। इस औषधि के सेवन से ठीक तीसरे दिन श्वेत पानी की बीमारी बिल्कुल ठीक हो जाती है । हजारों वैद्य, डाक्टर, हकीम इस औषधि को रोगियों पर सेवन कराके ख्याति प्राप्त कर रहे हैं । यदि आवश्यकता हो तोः—

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४, दिल्ली

के पते पर पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा औषधि 'रोक' की एक शीशी मंगा लीजिये । एक शीशी का मूल्य ३) तीन रुपया डाक व्यय ॥-) आना है । हर धर्म की स्त्रियां सेवन कर सकती हैं ।

'कामा' ब्राह्मी आमला केश तैल

भारतीय जड़ी-बूटियों और आधुनिक वैज्ञानिक ढंग से बनने के कारण यह सिर के समस्त रोगों पर तत्काल गुण दिखाता है । बालों का गिरना रोक देता है, उनके प्राकृतिक सुन्दर रंग और चमक को बढ़ाकर उनकी जड़ों की राह मस्तिष्क में पहुंच कर शुष्कता दूर करके तरी प्रदान करता है ।

सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स —
भारत ट्रेडिंग कम्पनी, जयपुर सिटी

M.P. (D)

KAKA LABORATORIES (INDIA)
JAIPUR CITY

एजेन्सी के लिए पूछताछ करें

शीतल और सुरभित
तुम्हारे प्रतिदिन के प्रयोगार्थ

गर्मियों में अपने माथे गर्दन और बाहों पर टाटा का ओ डी कोलोन लगाओ । इसका तीक्ष्ण शीतल स्पर्श आल्हादक है और गर्मी और थकावट को दूर करता है । इसकी कोमल सुगन्धित पहाड़ों से आते हुए वायु के शीतल झोंके के समान है ।

यह तुम्हें ऐसे वैसे जल वायु में शीतल और ताजा रहने में सहायता करती है । सर्वदा टाटा के ओ डी कोलोन की एक शीशी पास रखकर प्रतिदिन प्रयोग करें ।

टाटा का ओ डी कोलोन
दी टाटा आयल मिल्स कम्पनी, लि०

T.S.E. 208

प्यारी बहिनो

न तो मैं कोई नर्स हूं, न कोई डाक्टर हूं । और न वैद्यक ही जानती हूं, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थी स्त्री हूं । विवाह के एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं लिकोरिया (श्वेतप्रदर) और मासिक-धर्म के दुष्ट रोगों में फंस गई थी मुझे मासिक-धर्म खुलकर न आता था, अगर आता था तो बहुत कम और दर्द के साथ, जिससे बड़ा दुख होता था । सफेद पानी (श्वेतप्रदर) अधिक जाने के कारण मैं प्रति दिन बहुत कमजोर होती जारही थी, चेहरे का रङ्ग पीला पड़ गया था, घर के कामकाज से जी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था । मेरे पतिदेव ने मुझे सैकड़ों रुपये की औषधियां सेवन कराईं, परन्तु किसी से रत्ती भर लाभ न हुआ । इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुख उठाती रही । सौभाग्य से एक सन्यासी महाराज हमारे दर्वाजे पर भिक्षा के लिए आये मैं दर्वाजे पर आटा डालने आई तो महात्मा जी ने मेरा मुख देखकर कहा—बेटी तुझे क्या रोग है । जो इस आयु में ही चेहरे का रङ्ग रुई की भांति सफेद हो गया है ? मैंने सारा हाल सुनाया । उन्होंने मेरे पति को अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्खा बतलाया, जिसके केवल १५ दिन के सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगों का नाश हो गया । ईश्वर की कृपा से अब मैं कई बच्चों की मां हूं । मैंने इस नुस्खे से अपनी सैकड़ों बहिनों को अच्छा किया है और कर रही हूं । अब मैं इस अद्भुत औषधि को अपनी दुखी बहिनों की भलाई के लिये अस्ल लागत पर बांट रही हूं । इसके द्वारा लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वर ने मुझे बहुत कुछ दे रखा है । एक बहिन के लिये पन्द्रह दिन की दवा तैयार करने पर २॥।=) दो रुपये चौदह आने असल लागत खर्च होती है और महसूल डाक खर्च अलग है ।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोग में फंस गई हो तो वह मुझे जरूर लिखे मैं उनको अपने हाथ से औषधि बनाकर वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी । यह मेरा प्रण है कि मैं किसी बहिन से दवा की कीमत अपनी असल लागत से एक पैसा भी ज्यादा न लूंगी ।

जरूरी सूचना —मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का ही नुसखा मालूम है इसलिये कोई बहिन मुझे किसी और रोग की दवाई के लिये न लिखें ।

प्रेमप्यारी अग्रवाल नं० (३०) बुढलाडा जि० (हिसार) पंजाब ।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दिल्ली विश्वविद्यालय

एम.ए. में संस्कृत व हिन्दी का नया पाठ्यक्रम

[श्री धर्मराज वेदालंकार]

हाल में ही दिल्ली विश्वविद्यालय ने सन् १९४८ से होने वाली परीक्षाओं के लिए एम० ए० का नवीन संशोधित पाठ्यक्रम प्रकाशित किया है। इस लेख द्वारा हम सर्वसाधारण का ध्यान संस्कृत और हिन्दी के पाठ्यक्रम में किए गये परिवर्त्तनों की ओर दिलाना चाहते हैं।

संस्कृत की परीक्षा संस्कृत के माध्यम से

नये परिवर्तनों के अनुसार सन् १९४८ एम० ए० के छहों प्रश्न-पत्रों का उत्तर विद्यार्थी अपनी इच्छानुसार संस्कृत अथवा आंग्ल भाषा में दे सकता है। यदि किसी विशेष प्रश्न का उत्तर परीक्षक आंग्रेजी में ही चाहे तो वह ऐसा कर सकता है परन्तु सामान्यतः उत्तर दोनों में से किसी भी भाषा में लिखा जा सकता है।

यह परिवर्तन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसका परिणाम यह होगा कि जो विद्यार्थी बचपन से संस्कृत पढ़ते रहे हैं और जिन्हें संस्कृत बोलने और लिखने का अच्छा अभ्यास है, वे एम० ए० की परीक्षा में खूब चमक सकेंगे, अंग्रेजी में प्रवीणता न होने से कोई विद्यार्थी संस्कृत परीक्षा में हानि न उठा सकेगा।

अरबी और फारसी के परीक्षार्थियों को संस्कृत के स्थान पर अरबी और फारसी में उत्तर देने की इजाजत यह नियमावली नहीं देती। इसका कारण सम्भवतः यही है कि एम० ए० के विद्यार्थियों में अरबी फारसी में धारा-प्रवाह बोलने और लिख देने की योग्यता नहीं उत्पन्न होती। पंजाब की शास्त्री परीक्षा में माध्यम संस्कृत है, किन्तु इसी की समकक्ष मुन्शी फाजिल तथा मौलवी फाजिल परीक्षाओं में फारसी, अरबी माध्यम न होकर उर्दू माध्यम है।

हिन्दी, हिन्दी के माध्यम से

हिन्दी के सम्बन्ध में भी नियमावली के २७ वें पृष्ठ पर संस्कृत परीक्षाओं जैसा नियम उपलब्ध होता है कि किसी विशेष प्रश्न को छोड़कर हिन्दी की एम०-ए० परीक्षा में सभी प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दिया जा सकता है। वस्तुतः भारतीय विद्यार्थियों के लिये यह विडम्बना का विषय है कि वे अपनी मातृभाषा को भी किसी विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़ें। इस कलङ्क को धोने का श्रीगणेश दिल्ली विश्वविद्यालय ने किया है।

संस्कृत और हिन्दी के लिये दी गई सुविधाओं का हम स्वागत करते हैं, परन्तु हम इस लेख में उस अन्याय का अवश्य उल्लेख करेंगे, जो हिन्दी के प्रति किया गया है। उर्दू को जो रियायतें दी गई हैं, वह सबकी सब पूरे तौर पर हिन्दी को नहीं दी गई।

हिन्दी के साथ अन्याय

१—हिन्दी के एम० ए० में प्रश्नों का उत्तर हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी में दे सकने की जो स्वीकृति दी गई है और परीक्षक चाहे तो किसी प्रश्न का उत्तर अंग्रेजी में ही देना होगा, परन्तु अंग्रेजी का यह सब अड़ंगा उर्दू के साथ नहीं जोड़ा गया। बी० ए० आनर्स से लेकर फारसी एम० ए० तक अनिवार्य रूप से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एकमात्र उर्दू लिपि में ही देना होगा। पृष्ठ ३६ पर नियमावली का वाक्य है — परीक्षा का माध्यम सब पर्चों में उर्दू ही होगा, जैसा कि उर्दू बी० ए० आनर्स में है।

जब उर्दू की हरेक बात उर्दू में व्यक्त की जा सकती है, फिर हिन्दी ही ऐसी क्या दरिद्र है कि उसकी बात विशेष अवसर पर अंग्रेजी में ही समझाई जावे और हिन्दी में नहीं? हिन्दी के सब विद्वान और प्रेमी इस बात से सहमत होंगे कि उर्दू के समान एम० ए० की परीक्षा में आवश्यक रूप से हिन्दी का माध्यम हिन्दी ही हो।

२— हिन्दी के प्रश्न पत्र में १५ नम्बर का उर्दू से हिन्दी में अनुवाद रखा गया है। उर्दू में इसके स्थान पर फारसी अथवा हिन्दी से अनुवाद लिखा गया है। क्या उर्दू के समान हिन्दी में भी १५ नम्बर का संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद नहीं रखा जा सकता था? अगर उर्दू फारसी से परिपुष्ट हो सकती है तो क्या हिन्दी संस्कृत से नहीं। और फिर हिन्दी के एम० ए को यदि उर्दू जानना आवश्यक है तो क्या उर्दू बोलने वाले के लिये हिन्दी जानना आवश्यक नहीं।

३— उर्दू के एम० ए० के तीसरे प्रश्न-पत्र में अन्य विकल्पों के साथ निबन्ध और सम्पादन का भी विकल्प है, किन्तु हिन्दी में निबन्ध लिखने की छूट किसी भी प्रश्न-पत्र में नहीं दी गई है। कोर्स बनाने वालों ने कदाचित् हिन्दी में गम्भीर लेखन तथा अनुसन्धान की आवश्यकता नहीं देखी। भाषाओं के अतिरिक्त इतिहास आदि अन्य विषयों में भी किसी प्रश्न-पत्र के स्थान पर निबन्ध लिखने की स्वतन्त्रता है।

४—हिन्दी और उर्दू के पहिले तीन प्रश्नपत्रों का विभाग इस प्रकार है—

हिन्दी

१—हिन्दी प्राचीन साहित्य
२—मध्यकालीन साहित्य
३—आधुनिक साहित्य

उर्दू

१—उर्दू पुराना गद्यपद्य
२—आधुनिक गद्य
३—आधुनिक पद्य

इस रूपरेखा से यह स्पष्ट होता है कि उर्दू में आधुनिक साहित्य के दो, किन्तु हिन्दी में केवल एक ही प्रश्न-पत्र है। पहले प्रश्नपत्र में अपभ्रंश दर्पण, पृथ्वीराज रासो, विद्यापति की पदावली जैसी पुस्तकें हैं। इन पुरानी दुरूह पुस्तकों को पढ़ने में सामान्य विद्यार्थी की रुचि नहीं हो सकती। एम० ए० के कोर्स में यदि खड़ी बोली के आधुनिक साहित्य की प्रधानता हो तो विद्यार्थी हिन्दी की ओर अधिक आकृष्ट हो सकते हैं। हिन्दी के दूसरे प्रश्न पत्र में विनय पत्रिका, सूरपञ्चरत्न, केशवकौमुदी और बिहारी सतसई हैं। अच्छा होता यदि उर्दू के समान हिन्दी में भी पुराने साहित्य का एक प्रश्न-पत्र रख कर दूसरे और तीसरे प्रश्न-पत्र में आधुनिक गद्य तथा पद्य रखा जाता।

प्राथमिकता का झगड़ा

इस नियमावली में कहा गया है कि जो विद्यार्थी बी० ए० आनर्स न होकर केवल बी० ए० है, उसे बी० ए० परीक्षा देने से पहिले प्रारम्भिक परीक्षा देनी होगी और इस परीक्षा में बी० ए० आनर्स कोर्स के दो-तीन पर्चे रखे गये गये हैं। इस नियम का सबसे विषम प्रभाव प्राइवेट विद्यार्थियों पर पड़ेगा!

भारतवर्ष के समस्त नगरों में स्त्रीकिन्टों की आवश्यकता है।

अब तक वे एक ही वर्ष में एम० ए० की परीक्षा देकर निश्चिन्त हो जाते हैं, लेकिन अब उन्हें दो बार परीक्षा देनी होगी। आगरा आदि विश्वविद्यालयों में यद्यपि दो वर्ष में परीक्षा होती है, परन्तु पहले साल की परीक्षा में एम० ए० के कोर्स के आधे पर्चे हो जाते हैं, इसलिये विद्यार्थी को आधी-आधी परीक्षा दो बार देने से राहत मिलती है। परन्तु दिल्ली में यह बात नहीं होगी क्योंकि पूर्ण परीक्षा तो दूसरे वर्ष में होगी और पहले वर्ष में बी० ए० आनर्स का टैस्ट होगा जिसके नम्बर एम० ए० की परीक्षा में नहीं जोड़े जाएंगे।

हिन्दी, उर्दू और संस्कृत फारसी में आनर्स करके प्राइवेट तौर पर कितने ही अध्यापक बी० ए० का इम्तहान देते हैं, ये ही ज्यादातर इन विषयों का एम० ए० प्राइवेट रूप में देना चाहेंगे। इनके लिए प्राथमिकता का झंझट अत्यन्त दुःखदायी होगा।

हम हिन्दी-साहित्य सम्मेलन से और विशेषरूप से दिल्ली-प्रान्तीय-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से विशेषरूप से अनुरोध करते हैं कि वह प्रबल आन्दोलन द्वारा हिन्दी के प्रति किए गए अन्याय को दूर करने का यत्न करे। इस अन्याय का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व उन हिन्दी विद्वानों पर है जो यूनिवर्सिटी हिन्दी की फैकल्टी में नियुक्त हैं। उनपर दबाव डालना कोई कठिन बात नहीं है।

[पृष्ठ १० का शेष]

'घर के लिए तो आप बेफिकर रहें, वह बड़े घर में पहुंच चुके। हां, मैं आप से यह पूछने आया हूं कि उन जेवरों को या तो आप वापिस ले लीजिये और आज तक का हिसाब चुकता कर दीजिये या कहिये तो हिसाब करके आपका बाकी रुपया आपको ला दिया जाय।'

हरिविलास की पत्नी आवाक् उसका मुंह ताक रही थी।

काढ़ने की मशीन

यह कसीदा काढ़ने की मशीन (Embriodery machine) हाल में ही ईजाद हुई है जो फूल, पत्ते बेल, सीन सीनरी आदि कपड़े पर बड़ी आसानी से काढ़ती है। स्त्री और लड़कियों के खास मतलब की चीज है। मूल्य मय ४ सुइयों के ३) खर्च ॥=) ।

दीन ब्रादर्स, अलीगढ़, नं० ४।

खिजाब छोड़ें ! चश्मा तोड़ें !!

हमारे विख्यात सुगन्धित 'केश कल्प' तेल के व्यवहार से पके बाल स्थायी रूप से काले होते हैं। बालों का पकना रुक कर, मानसिक शक्ति का विकास होता है। नेत्र की धुन्ध दृष्टि को दूर कर प्रकाशमय बनाता है। मगाकर परीक्षा करें। मूल्य कम पके वालों के लिये २॥) विशेष ३॥) सम्पूर्ण ५) रु०।

केशकल्प भवन पो० परबलपुर (पटना)

फिल्म स्टार

बनने के इच्छुक शीघ्र लिखें, थोड़ा हिंदी या उर्दू पढ़ा-लिखा होना आवश्यक है। रंजीत फिल्म आर्ट कालेज 18 रावीरोड लाहौर।

फौनटेन पैन

ताजा माल आ गिया है। शीघ्र ही मंगालें। जनाना पैन कीमत रु० ४) मरदाना पैन कीमत रु० ५)

एजेण्टों की आवश्यकता है।

हौउस आफ कामर्स, पी० बी० ३४५ (बी.डब्लू.डी.) लाहौर

House of commerce, P.B. 345 (V.W.D.) Lahore.

सन्यासियों की गुप्त बूटियां

इस पुस्तक में सैकड़ों ऐसी जड़ी बूटियों के गुप्त रहस्य प्रकट किये गये हैं, जिनसे सन्यासियों की धाक जमी हुई है। हालांकि इनमें से अधिकांश बूटियां आपको जगल, खेत बागीचों और पंसारियों की दुकानों पर भी मिल सकती हैं, जिनसे आवश्यकता पड़ने पर स्त्रियां भी सिर से पांव के नख तक के सभी रोगों का इलाज घर में ही कर लिया करेंगी। इस पुस्तक को पढ़ लेने के बाद आप इस युग के धन्वन्तरि समझे जायेंगे। रोगियों का तांता बंधा रहेगा। कुछेक बूटियों की सूची—

लाख-लाख रु० के प्रयोग—(१) ऐसी बूटी कि जिसकी लकड़ी कान में लगा देने से सप काटे का विष मुख द्वारा निकल जाता है, (२) वह बूटी जिससे गूढ़ गर्भ ५ मिनट में निकल जाता है, (३) मधुमेह की अक्सीर बूटी, (४) दुबले पतले आदमी को मोटा ताजा बना देने वाली बूटी, (५) सात दिन में नपुन्सक को मर्द बनाने वाली बूटी, (६) दमे की अद्भुत बूटी, (७) वह बूटी-जिसके रस में अंगुली डुबाने से तत्काल ज्वर उतर जाता है, (८) गर्भ रोक बूटी, (९) उपदंश को ७ दिन में मिटाने वाली बूटी, (१०) निमोनियां की बूटी, (११) वह बूटी जिससे बन्ध्या के पुत्र पैदा हो। ऐसी ही सैकड़ों बूटियों का वर्णन इसमें है, जिनसे चमत्कार दिखा कर आप सिविल सर्जनों को दंग कर सकते हैं। मूल्य २॥) डाकखर्च ।=)

पता—रसायन फार्मेसी (५) संगरिया (बीकानेर)

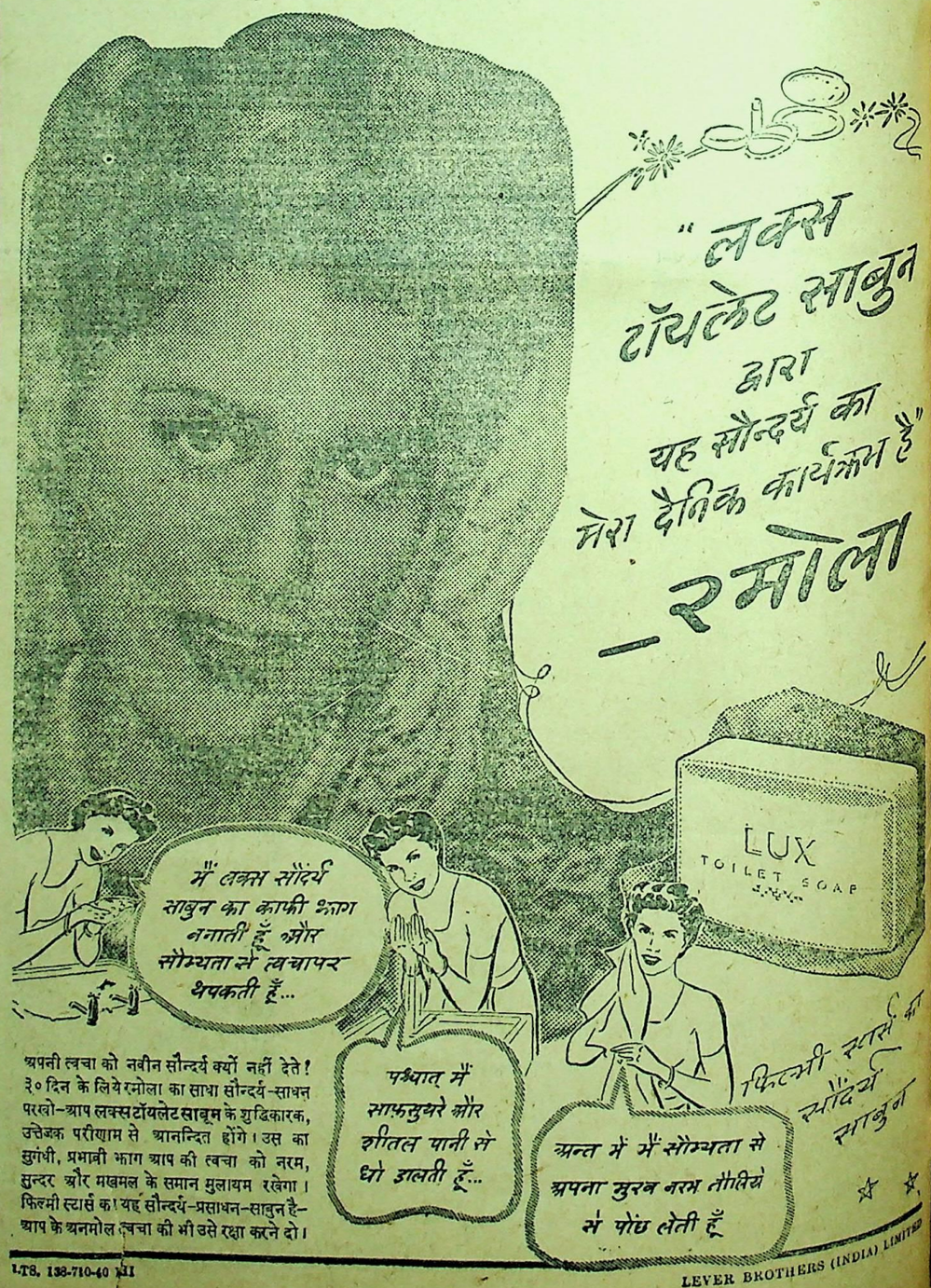

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बाल-कथा

मेरी जीजी

[श्री उमेश]

तुम्हारी तरह मेरी भी एक बड़ी बहिन है, सुशीला। बचपन में हम दोनों साथ खेले पर मैंने उसे कभी जीजी कह कर नहीं पुकारा। कई बार इस बात पर झगड़ा हुआ। वह मुझे ठोसा दिखा कर भाग जाती, मैं उसकी चोटी पकड़ कर खींच लेता 'लेकिन जब सावन-भादों में गगन पर छाई ऊदी घटायें न बरसतीं तो मैं उसकी गुड़िया आंगन में लाकर जलाता और वह उसके सर पर खड़े होकर सीना कूटती। यहां तक कि एक दिन हम दोनों अपने मुंह काले करके छत्तों-छत्तों डंडे बजाते हुए चिल्लाये—

बरसों राम धड़ाके से,
बुढ़िया मर गई फाके से।

उन दिनों न जाने हमारी उन करतूतों में क्या जादू था कि वर्षा होकर ही रहती। फिर तो हमारे मजे आजाते। हम दोनों आस-पास के बागों में जाकर जामुन खाते और कच्चे-पक्के आमों को कुर्ते की झोली में डाल कर घर लाते और नीबू की सफाई करके तराजू बनाने और सदा एक दूसरे से ही दुकानदारी किया करते और आपस में लड़ते। मुझे आज तक इस बात का पश्चाताप है कि मैं सदा अपना दिवाला निकलवाता रहा क्योंकि वह पेड़ पर चढ़ना जानती थी और मैं खड़ा खड़ा उसका मुंह ताकता रहता। वह एक डाल से दूसरी डाल पर बन्दर की तरह कूदती, डालियों को झिंझोड़ कर जामुन-आम गिराती और धम से नीचे कूद कर बहुत सारी अपनी झोली में भर लेती। मैंने उसे एक बार कहा 'मुझे भी पेड़ पर चढ़ना सिखा दे' पर उसने सदा यही कहा—बिल्ली मौसी शेर को सब कला बता देती है, पर पेड़ पर चढ़ना नहीं सिखाती।

'तो तू क्या मेरी मौसी है?'

'तेरी जीजी तो हूं!'

बस इसी बात पर चिढ़ गया और घंटों मुंह फुलाये इधर से उधर घूमता रहा। उसने मुझे मनाना चाहा पर मैंने कहा – 'अच्छा अब तो अपने आप को जीजी नहीं कहेगी!'

'बाबा तू ही मेरा दादा सही!'

'चल तो मोटी २ किताबें पढ़ते हैं।'

'अच्छा न मैं तेरी जीजी न तू मेरा दादा; बस अब प्रसन्न।'

'चल बाग में आम खायेंगे।'

यह सुनते ही मेरे मुंह में पानी भर आया और उसके साथ-साथ नीली छतरी वाले बाग में गया। आस-पास देखा कोई न था। झट वह पेड़ पर चढ़ गई और जामुन तोड़-तोड़ कर नीचे डालने लगी। मैं झोली में भरता गया लेकिन थोड़ी ही देर बाद किसी के परों की आहट सुनाई दी। मैंने आव देखा न ताव, उलटे पांव वहां से भागा। जब मुड़ कर देखा तो माली उसका हाथ पकड़े घर की ओर ला रहा था। मैं तो कमरे में छिप गया लेकिन माली ने माताजी से उसकी शिकायत करदी। अब तो उसकी खूब पिटन्त हुई। वह लाख कहती रही कि भैया भी तो मेरे साथ था, पर माली ने कहा—'यह अकेली थी।' उस दिन का उसका पिटाना मेरे लिये दुखदाई सिद्ध हुआ। उसने मुझसे बोलना ही छोड़ दिया। मैंने उससे क्षमा भी मांगी, उसके सामने रोया भी, लेकिन वह मौन ही बनी रही।

मुंह काला करने के लिये अपनी दवात सामने रखदी, उसकी गुड़िया जलाने को लाया लेकिन — वह····· फिर भी न बोली। जब इसी तरह बहुत दिन बीत गये तो मुझसे न रहा गया, मैं जी कड़ा करके उसके पास गया और कहा 'अगर मैं तुझे जीजी कहूं तब तो बोलेगी?' यह सुनते ही वह ठोसा दिखा कर छत पर भाग गई। मैंने उसकी चुटिया पकड़नी चाही —लेकिन करूं क्या!(?) वह चुटिया ही मुझसे दूर हो गई। अब कभी न पकड़ पाऊंगा — अब तो वह मेरी जीजी हो गई है।

हंसियेगा

राजेन्द्र — भई गेसी यह कैसी गड़बड़ मची हुई है?

गेसी — ला० गरीबराम का हार्ट-फेल हो गया।

राजेंद्र — हार्टफेल हो गया या हो रहा है।

— ओमप्रकाश

× × ×

किसी अनपढ़ ने, अपने पुत्र को किसी तरह मैट्रिक पास करा दी।

एक दिन किसी लड़के ने अनपढ़ के लड़के से कहा कि तेरा पिता बड़ा मूर्ख है आप न पढ़ा, परन्तु तुझको पढ़ा दिया!

लड़के ने उत्तर दिया—अरे मूर्ख! मेरा पिता मूर्ख नहीं! बल्कि मेरा दादा मूर्ख था जिसने मेरे पिता को नहीं पढ़ाया!

— हरिचन्द्र

पहेलियां

तीन अक्षर का मेरा नाम
आती हूं पढ़ने के काम
बनी कागजों से मैं आऊं
सब के मन को मैं भाऊं
(किताब)

— देवेंद्रराज

राज कमल

कपड़ा धोने के लिये बेहतरीन साबुन

स्याकिस्टों की जरूरत है। रेट तथा नियम लिखें तत्काल करें।

मित्तल एंड कम्पनी तीस हजारी, देहली।

'वीर अर्जुन' साप्ताहिक में विज्ञापन देकर लाभ उठाइये

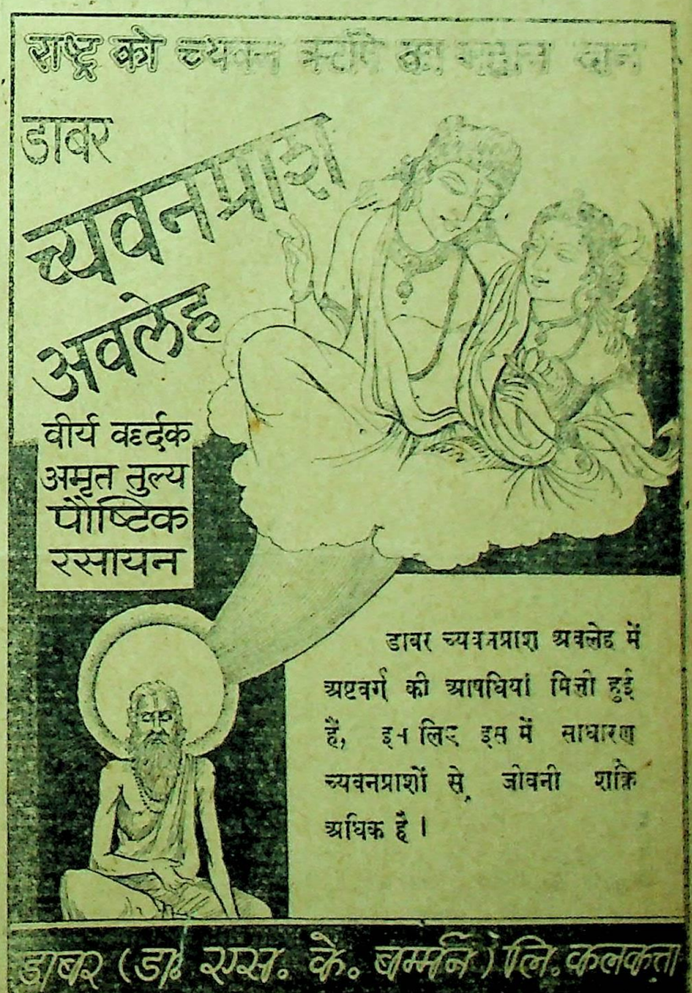

१५ जनवरी १९४६ को **फलसंरक्षण** (चित्र सहित) प्रकाशित होगा !

★ सभी तरह के फलों के टिकाऊ पदार्थ तैयार करने सम्बन्धी व्यवहारोपयोगी जानकारी तथा व्यंगचित्र देखिये।

★ शरबत, जेम, जैली, मामलेड आदि बनाने की सचित्र व सर्वांगपूर्ण जानकारी विशेषज्ञों द्वारा तैयार करवाई गई है।

★ व्यापारियों, महिलाओं, उद्यमी लोगों और न्यूजपेपर एजेण्टों की बहुत अधिक माग है। अतः शीघ्रता कीजिये और उद्यम का वार्षिक मूल्य रु० ५-८-० भेजकर उद्योगधन्धे, व्यापार, खेती बागबान विषयक अत्यन्त लोकप्रिय मासिक-पत्र के ग्राहक बनिये।

★ विशेषांक के लिए बहुत अधिक विज्ञापन आ रहे हैं। विज्ञापनदाताओं द्वारा शीघ्रातिशीघ्र पूर्ण रकम सहित विज्ञापन प्राप्त होने पर उन्हें विशेषांक में प्रकाशित करने का प्रयत्न किया जावेगा। --उद्यम मासिक धर्मपेठ, नागपुर।

देहली केमिकल वर्क्स, देहली का **मलोरिन** नं० ५० मौसमी बुखारों के लिए अक्सीर है।

सोल एजेण्ट :—
देहली जाम फैक्टरी नयाबांस, बीड़ी मार्केट, देहली।

महान वाजीकरण व परमपौष्टिक

अनंगप्रभा याकुती

शक्तियों का हद से ज्यादा उपयोग करने से, वृद्धावस्था से, अथवा किसी भी कारण से आई हुई कमजोरी दूर करती है, पतली धातु को गाढ़ा करता है और रुकावट बढ़ाकर दाम्पत्य जीवन का पूर्ण आनन्द देती है शी० रु० १०)।

मदनमंजरी फार्मेसी—जामनगर-देहली एजेंट जमनादास कं० चांदनीचौक

घर बैठे बी० ए०

घर बैठे डाक द्वारा रत्न, भूषण, प्रभाकर तथा केवल इंगलिश में एफ० ए०, बी० ए० पास करें।

रत्न, भूषण तथा प्रभाकर के प्रवेश-फार्म भेजे जा रहे हैं।

पी० सी० कालेज,
चावड़ी बाजार, देहली।

'अर्जुन' के ग्राहकों से

'वीर अर्जुन' के ग्राहकों से निवेदन है कि पत्रव्यवहार करते समय अथवा रुपया भेजते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखा करें, क्योंकि हजारों ग्राहकों की संख्या में उनका नाम ढूंढ़ना असम्भव है।

— प्रबन्धक

★ १००) रु० इनाम ★

!! विश्व विजय यंत्र !!

सिद्ध यन्त्र। इसके धारण करने से कठिन-से-कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। आप जिसे चाहते हैं, चाहे वह पत्थर दिल को न हो आपके पास चल आवेगी। इससे भाग्योदय, नौकरी, धनकी प्राप्ति, मुकदमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य तांबा का २॥), चांदी का ३), सोने का १५) झूठा साबित करने पर १००) इनाम।

Shri Sukh Santi Ashram
मुहल्ला सालीमपुर अहरा,
पो० बांकीपुर (पटना)।

गरीबों को लक्ष्मी, व्यापारियों को चाँस, इज्जतदारों को इज्जत, नौकरों को उन्नति, सन्तानहीनों को सन्तान, आदि ही तो मनुष्य-जीवन का आनन्द और सच्चा स्वर्ग है।

वह जीवन ही क्या जहां सुख सम्पत्ति न हो

शुभ महा चमत्कारी नवग्रह सिद्ध "यन्त्र" मंगाइये लाभ

प्रत्यक्ष गुण और शीघ्र फल देने की महान शक्ति इसी यन्त्र में है। थोड़ा लिखना—यही इस यन्त्र की उत्तमता और सच्चाई का पक्का प्रमाण है। यह यन्त्र दुष्ट ग्रहों को शान्त कर रोजगार में लाभ, इम्तिहान में पास, मुकद्दमे में जीत, शत्रु पर विजय, राजदरबार में इज्जत, इच्छानुसार नौकरी मिलना, सन्तान लाभ, हर एक बीमारी से छुटकारा, खराब स्वप्न का नाश, दिल पसन्द शादी होना, अचानक आफतों से बचना, स्त्री पुरुष वशीकरण रेस-लाट्री व धन की प्राप्ति वगैरह जो सोचोगे वही कार्य सिद्ध होगा और हर सवाल का जवाब स्वप्न में विधि सहित बतायगा। आप जिस काम का ध्यान करेंगे तुरन्त ही होगा। यदि विश्वास न हो तो कुछ प्रशंसा पत्र देखिये। फायदा न हो तो दाम वापस मगा लो। शास्त्रोक्त न हो झूठा साबित करने से १०००) रु० इनाम। सन्तान के इच्छुक दो सिद्ध नवग्रह यन्त्र मंगायें। स्त्री को दो नीलमणि या पुरुष को दो नीलमणि युक्त कम्पलीट एक नवग्रह सिद्ध यन्त्र का मूल्य २) रु०, चांदी का ३) रु० सोने का ६॥=) रु० एक से अधिक चार कामों के लिये स्पेशल नं० २ मंगावें मू० ५॥=) रु०, चांदी का ६॥=) रु०, सोने का १५॥=) रु०। पांच कामों से अधिक के लिये स्पेशल नं० १ मंगवायें मूल्य ६॥=) रु० चांदी का १०॥=) रु०, सोने का २६॥) रु०। यह बहुत शक्तिशाली है और सब काम पूर्ण होते हैं।

डाक व्यय ॥) आना अलग। ३ यन्त्र एक साथ मगाने से डाकखर्च माफ। विदेश वालों से ५ शिलिङ्ग पेशगी। यन्त्र के लिये किसी प्रकार की पूजा पाट करना न पड़ेगी। हर धर्म वाले के लिए समान लाभदायक है।

श्री आनन्द स्वामीजी की तीन अमूल्य सिद्धियां

विजय शक्ति—१२ से अधिक प्रत्येक कार्य अवश्य पूरे होंगे। कीमत—साधारण १६॥=) २३॥-) चांदी, ३५ =) सोने का। डा० मनीआर्डर खर्च अलग। आश्चर्यजनक दैवी-शक्तियों से भरपूर।

ब्रह्म शक्ति—जगत की सभी शक्ति, भक्ति, मुक्ति, माया, महामाया, महायोग, योगमाया ऐश्वर्य, मृत्युंजय आदि का सम्मिश्रण है। इसकी तारीफ करना मनुष्य-शक्ति के बाहर है। केवल इच्छा करने की देरी होती है। सफलता में सन्देह नहीं। पूर्ण विश्वास रखें, अविश्वास में मनुष्य सच्ची चीज को खो बैठता है। मूल्य-४५) व १११) और रत्नों से जड़ी हुई ४१३) नवरत्नों से जड़ी हुई ७५१) डाकखर्च अलग।

धन कवच—द्वारा मनुष्य कुबेर जैसा धनवान होने का शुभ अवसर प्राप्त करता है और लक्ष्मी उसकी चेरी बन जाती है। घर में तमाम दुष्ट ग्रह शान्ति होकर हर तरह से घर में धन की वर्षा होती है जिससे पुश्त दरपुश्त के लिये गरीबी से छुटकारा मिल जाता है। कीमत ४॥) चांदी का ६॥) तथा सोने का १६)

मंगाने का पता:—श्री आनन्द स्वामीजी महाराज नं० डब्लू ५१० पी० ओ० इच्छरा (लाहौर)
Shri Anand Swami Ji Maharaj No. W 510 P, O. Ichhra (Lahore)

श्वेतकुष्ट वनौषधि

महात्मा प्रदत्त श्वेतकुष्ट (सफेदी) की दवा से तीन दिन में पूरा फायदा। यदि सैकड़ों हकीमी, डाक्टर, वैद्यों, विज्ञापनदाताओं की दवा से निराश हो चुके हो तो इसे लगा कर आराम होवें। १२ दिन की दवा का मूल्य २॥)।

सफेद बाल काला

इस तेल से बालों का पकना रुकता और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे तो दूना मूल्य वापसी की शर्त लिखा लें। यह तेल सिर के दर्द व सिर में चक्कर आना आदि को आराम कर आंख की रोशनी बढ़ाता है। एकाध बाल पका हो तो २॥) आधा पका हो तो ३॥) और कुल पका हो तो ५) का तेल मंगवा लें।

एजेन्टों की हर जगह आवश्यकता है।

स्तम्भक वटी

एक गोली शाम को खाने से आश्चर्यजनक स्तम्भन करती है। मूल्य १६ गोली १), ५० गोली २॥), १०० गोली ५) रु०।

पता—अखिलकिशोर राम
नं० १०७ कतरीसराय [पटना]

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

संतान होने की दवा

जिस स्त्री के सन्तान न होती हो केवल ७ रात तक मशहूर दवा मुहाफिज औलाद खिलाओ। इन सात रात में स्त्री के बदन के अन्दर का हिस्सा ठीक ऐसी हालत में आ जाता है कि आठवीं रात ..... स्त्री को गर्भ रह जाता है। इस औषधि की वजह से आज हजारों बहिनों की गोद में बच्चे खेल रहे हैं। जिस स्त्री को सन्तान न होती हो वह नीचे के पते पर पत्र लिख कर दवा मुहाफिज औलाद की शीशी वी० पी० पार्सल द्वारा मंगालें। १ शीशी काफी है जिसका मूल्य दो रुपया आठ आना २॥) है पारसल पर ॥-) महसूल लगेगा।

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४ देहली

जीवन में मधुर आनन्द उपभोग करने के लिये स्वर्ण मिश्रित गोलियां

मीन मीन गोल्ड

—टानिक पिल्स—

'मीनसीन' में अनेक शक्ति वर्धक तत्वों के अतिरिक्त शुद्ध सोना भी है। इनमें बल और पौरुष बढ़ाने की, धातु पुष्ट कर तथा स्वप्नदोष और जातीय दुर्बलता मिटाने की अपूर्व शक्ति है। 'मीनसीन' के सेवन से आपकी खोई हुई शक्ति, उत्साह, उमङ्ग तथा पुरुषत्व फिर से प्राप्त होगा। मूल्य प्रति शीशी ५), डाकखर्च ॥≥) अलग।

विस्तृत सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये।

चाइनीज मेडीकल स्टोर

नया बाजार — देहली

—सेलिंग एजेन्ट्स—

दी नेशनल मेडिकल, स्टोर्स--आगरा।
दी जनरल मेडिकल स्टोर्स--अजमेर।
दी एडाईड केमिस्टस-जयपुर।
श्री सरस्वती स्टोर्स—बीकानेर।
मे. गिरधरदास जानकीवल्लभ--उदयपुर।
बैद्यराज विश्वनाथ त्रिवेदी-मुजफ्फरनगर।
मेसर्स मोहन ब्रादर्स—लश्कर।
मेसर्स खरे ब्रदर्स—इटई।
मे०गोपीलाल चिरंजीलाल—श्रीमाधोपुर।
दी गुजरात मेडीकल स्टोर्स—कानपुर।
दी वर्मा मेडिकल स्टोर्स-शिकोहाबाद।
मे० धारीवाल ब्रादर्स—जोधपुर।
डी० पी० आयुर्वेदिक एन्ड यूनानी दवाखान, मोरेना।

मिर्गी का २४ घण्टों में खात्मा। तिब्बत के सन्यासियों के हृदय का गुप्त भेद, हिमालय पर्वत की ऊंची चोटियों पर उत्पन्न होने वाली जड़ी बूटियों का चमत्कार, मिर्गी हिस्टीरिया और पागलपन के दयनीय रोगियों के लिये अमृत दायक। मूल्य १०॥) रुपये डाकखर्च पृथक।
पता—एच. एम. आर. रजिस्टर्ड मिर्गी का हस्पताल हरिद्वार।

१००) रुपया इनाम

शिव शक्ति कवच

सिद्धवशीकरण। इसके धारण से जिस स्त्री या पुरुष को आप चाहें, वह वश में हो जायगी। इससे दुर्भाग्य और शत्रु का नाश, नौकरी, सन्तान, धन की प्राप्ति, व्यापार में लाभ, परीक्षा में पास, मुकदमे, जुआ और लाटरी में जीत, कठिन से कठिन रोगों से छुटकारा होकर भाग्योदय होता है। मू० तांबा २॥) चांदी ३) सोने का १५) बेफायदा साबित करने पर १००) रु० इनाम।
श्री शिव शक्ति आश्रम पो० परवलपुर (पटना)

आगामी बसन्त पंचमी पर 'वीर-अर्जुन' का रजत जयन्ती-अङ्क

प्रकाशित होगा। सुन्दर तिरंगे व इकरंगे चित्रों, सरस कहानियों और ओजस्विनी कविताओं तथा विद्वत्तापूर्ण मनोरंजक लेखों का एक साथ संग्रह देखिये!

शुभ-अवसर

अपना माल अधिक-से-अधिक पाठकों तक पहुंचाने के लिए विज्ञापनदाताओं को अपूर्व अवसर है।

व्यवस्थापक, 'वीर अर्जुन', दिल्ली।

स्वप्न दोष और प्रमेह

केवल एक सप्ताह में जड़ से दूर। दाम ३) डाक खर्चा पृथक।
हिमालय कैमीकल फार्मेसी हरद्वार।

३५ साल की अनुभूत अचूक औषधियां

आजन्म गर्भ न रहेगा

गर्भ निवारक के सेवन से आजन्म गर्भ स्थापित नहीं होता। रंग निखर कर सुन्दरता सी आ जाती है। हां, मासिक-धर्म बन्द नहीं होगा। किन्तु फिर गर्भ की आशा न करें। मू० ५) रु०।

नं० २—इससे एक वर्ष तक गर्भ स्थापित नहीं होता मू० ३) डा० म० ॥-)

ब्राह्मी रसायन—दिमागी कमजोरी व याददाश्त की कमी को दूर करने में लासानी है। प्रमेह, स्वप्नदोष, वीर्य की निर्बलता को दूर कर शरीर को पुष्ट करती व चेहरे पर गुलाबीपन ला देती है। मू०१६ दिन के योग्य ३२ गोली ३) डा.म.॥-)

पंडित चन्द्रशेखर वैद्य शास्त्री, ब्राह्मी औषधालय (नं०१) अलीगढ़।

वह पुरुष

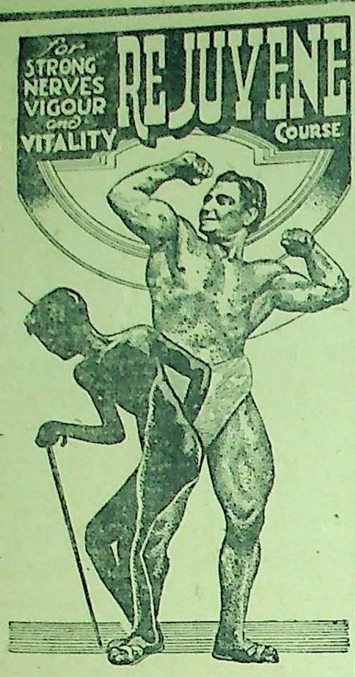

जो शक्तिहीन पुरुष किसी भी कारण से शरीर बल नष्ट कर चुके हों और उनके जीवन को घुन लग चुका हो और विशेष दुख से समय व्यतीत कर रहे हों, ऐसे दुखी पुरुषों को शक्ति प्रदान करने का सुअवसर यह है कि 'रिजोवीन' औषधि को १६ दिन तक सेवन कर लें, उनकी गई हुई शक्ति फिर से लौट आयेगी और अपना समय सुख से आनन्द प्राप्त अवश्य करेंगे। शरीर के प्रत्येक बलहीन भाग की यह दवा अमृत तुल्य है और काया को फिर से बदल कर नया जीवन देती है। सारे भारत-वर्ष में इस औषधि का प्रचार है और प्रत्येक वर्ष लाखों दुखी पुरुष इस औषधि द्वारा आनन्द प्राप्त कर चुके हैं। शक्तिशाली पुरुष भी यह दवा सेवन करके अपने जीवन के आनन्द को बढ़ा सकते हैं और यह दवा किसी भी ऋतु में सेवन की जा सकती है। इस कोर्स में दो दवायें होती हैं, एक खाने की, दूसरे मलने की। पूरे कोर्स का मूल्य ५) रुपये, डाक खर्च ॥≡) अलग।

अवसीरी दवाखाना कलां महल पो० नं० ४१ (V.W.A.) देहली।

दिल्ली में चांदनी चौक, फतेहपुरी बाजार के तमाम औषधि विक्रेता यह दवा बेचते हैं।

प्रमेह रोग समाप्त करो

७ दिन में आराम

यदि किसी पुरुष को पेशाब करने के पहले या पेशाब करने के बाद कभी रंग का पानी आता हो तो यह बहुत भयंकर बात है। इसे प्रमेह का रोग कहते हैं। धीरे-धीरे यह रोग बढ़ जाता है तो आदमी पौरुषहीन हो जाता है। उसकी शक्ति समाप्त हो जाती है। इस वास्ते जिन पुरुषों को यह शिकायत हो या स्वप्नदोष होता हो तो इस भयंकर रोग से लापरवाही नहीं करनी चाहिये।

प्रमेह का रोग केवल ७ दिन में नष्ट हो जाता है

और केवल ३॥) खर्च होंगे। "जौहरे आजम" इस रोग के लिये अक्सीर प्रमाणित होती है। केवल एक शीशी दवा "जौहरे आजम" से बड़े बड़े पुराने रोगी स्वस्थ हो गए। "जौहरे आजम" प्रमेह के रोग का सबसे अच्छा इलाज है। जिन लोगों को आवश्यकता हो—

मैनेजर, जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४ दिल्ली

के पते पर पत्र लिखकर "जौहरे आजम" की एक शीशी वी० पी० द्वारा मंगा लें। एक शीशी का मूल्य ३॥) तीन रुपया आठ आना है पार्सल का खर्च ॥-) लगेगा।

[टेलीफोन नं० ६२६६]

विलायती घड़ियां आ गई

जिन घड़ियों का मुद्दत से इन्तज़ार था और जिनके लिये आप और आप परेशान थे वह घड़ियां बहुत थोड़ी मिकदार में आ गई। यह कलाई की खूबसूरत मजबूत और मुद्दत तक चलने वाली घड़ी एक ऐसा नायाब तोहफ़ा है कि जिसकी मिसाल नहीं मिलेगी। टाइम भी बिल्कुल सच्ची, पुर्जों की मजबूती की गारण्टी चौदह और लम्बे दोनों शेप में मौजूद है। बनाने वाली कम्पनी ने तारीफ यह की है कि फर्श पर गिरने से नहीं टूटती और टाइम बराबर देती रहती है, जरूरतमन्द लोगों को लिख एक घड़ी दी जावेगी। दुकानदारों जो ज्यादा मिकदार में हम अभी सप्लाई नहीं कर सकते। कीमत सफेद पालिस वाली मय स्ट्रैप और केस के सिर्फ २०) सुनहरी २१) डाक खर्च अलग। घड़ियों के बड़े सौदागर

पंजाब नेशनल इन्डस्ट्रीज पो० ब० नं० २९२ नई देहली।

सच्चा नवजीवन प्राप्त करना हो, तो नीचे लिखी औषधियां

ठंड की ऋतु में अवश्य लो !

[१] जवाँमर्द पिल्स यह सुस्त और कमजोर शरीर को मस्त बनाती हैं। स्त्री प्रसंग में शीघ्र वीर्य पतन, मगज, कमर और सब प्रकार की कमजोरी इत्यादि ७ रोज में दूर होती है। पुरुषत्व व स्त्री प्रसंग में वीर्य स्तम्भन शक्ति इतनी तेज बढ़ती है कि खाने वाला 'जवांमर्द' बनता है। धातु गाढ़ी बनाने के लिए प्रथम "बन्धेज चूर्ण" ७ या १४ रोज लेकर जल्दी से इसको लेंगे वे बेहद लुत्फ उठावेंगे। ७ रोज की २॥)

[२] बन्धेज चूर्ण धातु पतली होने से पेशाब में या नींद में जाना, उष्णता, सुस्ती, मन्द स्मरण शक्ति, शरीर का फीकापन इत्यादि जरूर ही दूर होते हैं। ७ रोज में नया व १४ रोज में कितना भी पुराना धातु विकार दूर होकर धातु शर्तिया गाढ़ी होती है। पतले धातु का तो यह खास दुश्मन है। ७ रोज का मूल्य २॥)

[३] कामशक्ति नवजीवन अति स्त्री संग से या हस्तदोष से अपना सत्यानाश करनेवाले को और वृद्धों को भी यह सचमुच नवजीवन देता है। नं० २ व १ के सेवन के साथ ही इस मलहल की मालिश करते रहें तो पूर्ण शक्ति प्राप्त होकर सब दोष दूर होते हैं। २१ रोज के ऊपर पुराने वाली डि० मू० २) झूठी औषधियां लेकर निराश बने हुए सज्जनों को उपरोक्त योजनानुसार तीनों औषधियां बरतने से कामशक्ति कब्जे में रखना कठिन होता है।

[४] परमा (सुजाक) दुश्मन इन गोलियों से सुजाक (गनोरिया) नया या पुराना ७ रोज में ही दूर होता है। फायदा तो दूसरे रोज ही दिखाता है। पेशाब की जलन, तिड़क, पीप का बहना वगैरह पेशाब मार्ग के सब दुष्ट विकारों का व पुराने सुजाक का यह कट्टर दुश्मन है। मूल्य २॥) १ से ४ औषधि का डाक खर्च ॥≡)

लिखें:—मैनेजर, नवजीवन दवाखना, (अ) नागपुर सिटी।

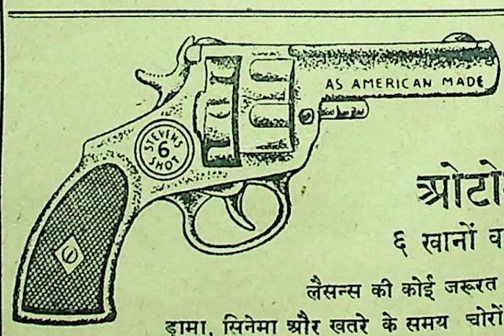

आत्मरक्षा

ओटोमेटिक

६ खानों वाली पिस्तौल

लैसन्स की कोई जरूरत नहीं

ड्रामा, सिनेमा और खतरे के समय चोरों को डराने के लिये बड़े काम की है। दागने पर पिस्तौल के मुंह से आग और धुंआ निकलता है। असली रिवाल्वर की तरह मालूम होती हैं। साइज ७॥ इंच×४ इंच और वजन १४ औंस। मूल्य ८) और साथ में १ दर्जन गोलियां (एलार्म डिस्क) मुफ्त। अतिरिक्त दर्जन गोलियों का दाम २)। स्पेशल तांबे की बनी ६६६ नं० की पिस्तौल का दाम १०)। वेस्ट के साथ केस २॥), पोस्टेज और पैकिंग का अतिरिक्त १८)। आर्डर के साथ १ शीशी रिवाल्वर का तेल मुफ्त।

नापसंद होने पर दाम वापस

इम्पोरियल चैम्बर आफ साइंस (V. W. D.) पो० बो० ६१ लाहौर

Imperial Chamber af Science (V.W.D.) P.B.61. LAHORE

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बांझ स्त्रियों के लिये

संतान पैदा करने का लासानी नुस्खा

मेरा ब्याह हुए १५ वर्ष हो चुके थे इस समय के बीच कई इलाज कराए मगर कोई फायदा न पहुंचा। अचानक मैं अपनी सहेलियों के साथ तीर्थ यात्रा करने श्री बद्रीनारायण जी चली गई। सौभाग्यवश वहां मुझे एक ऐसे जटाधारी त्यागी महापुरुष महात्मा जी के दर्शन हुए जो सचमुच ही ईश्वर का अवतार दिखाई देते थे। मैंने उनके चरणों का स्पर्श करके अपनी तमाम दुःखभरी कहानी सुनाई। महात्मा जी ने खुश होकर मुझे एक औषधि तन्त्र दिया और आशीर्वाद देकर कहा बेटी, चिन्ता मत करो ईश्वर तुम्हारे हृदय की अभिलाषा पूर्ण करेगा। मैंने घर आकर उस औषधि को तैयार किया और महात्मा जी के कथनानुसार अनुपान किया। ईश्वर की कृपा से मुझे आशा की झलक दिखाई दी और नौ मास के पश्चात जीता-जागता बालक गोद में खेलने लगा। इसके पश्चात मैंने जिस सन्तानहीन बहन को निम्न लिखित औषधि का सेवन कराया, ईश्वर की कृपा से उसी की आशा पूर्ण हुई। महात्मा जी ने औषधि देते समय मुझसे वचन लिया था कि, बेटी, इस दवा से औरों का उपकार करती रहना। महात्मा जी के कथनानुसार मैंने इस औषधि तन्त्र को सूचीपत्र द्वारा प्रकाशित कर दिया है जिस से और बहिनें इस औषधि को तैयार करके लाभ उठा सकें।

औषधि तन्त्र ये है—असली नैपाली कस्तूरी (जिस पर नेपाल गवर्नमेंट की मोहर हो) केसर, जायफल, सुपारीदक्खिनी हर एक साढ़े दस मासे, पुराना गुड़ (जो कम-से-कम दस साल का हो) तेरह मासे, लौंग चार अदद, कटियारी सफेद की जड़ (सत्यानाशी सफेद की जड़) सवा तोला, इन सब औषधियों को खरल में डाल कर २४ घण्टे तक खरल करें और पानी इतना मिलावें कि गोलियां बन सकें, फिर जंगली बेर के बराबर गोलियां बना लें। इस के सेवन से गुप्त खराबियां दूर हो जाती हैं और बहनें इस लायक हो जाती हैं कि सन्तान पैदा कर सकें।

रीति—गाय के थोड़े गर्म दूध में मीठा डाल कर प्रातःकाल और सायंकाल एक-एक गोली तीन रोज तक सेवन करें। ईश्वर की कृपा से कुछ रोज में ही आशा की झलक दिखाई देने लगेगी।

नोट—औषधि तन्त्र के अन्दर सफेद फूल वाली सत्यानाशी की जड़ मिलानी आवश्यक है, क्योंकि इसके अन्दर सन्तान पैदा करने के अधिक गुण हैं।

इसके विषय में श्रीमान राधेश्याम जी हापुड़ से लिखते हैं—मेरी समझ में नहीं आता कि आपकी सन्तान पैदा करने वाली औषधि की मैं किन अक्षरों में प्रशंसा करूं। मैं आपको हर्ष के साथ सूचित करता हूं कि आपकी औषधि से मेरी स्त्री को १६ वर्ष के पश्चात बालक की प्राप्ति हुई। मेरा आशीर्वाद है कि आप दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति करती रहें। सरदार हरदन्तसिंह भटिन्डे से सूचित करते हैं कि आपकी सन्तान पैदा करने वाली औषधि एक अद्भुत जादू है। मैं इसकी जितनी प्रशंसा करूं कम है। मैं नहीं जानता था कि आपकी औषधि में इतने गुण भरे हुए हैं। हमारे शहर में आपकी औषधि की घर घर प्रशंसा हो रही है। अब तक करीब-करीब बीस से ज्यादा बहिनें गर्भवती हो चुकी हैं। कृपया तीन दर्जन शीशी वी० पी० से भेज दें। धन्यवाद।

इसके सिवाय अनिगिनत प्रशंसा-पत्र मेरे पास मौजूद हैं अगर कोई देखना चाहे तो मेरे पास आकर देख सकते हैं।

मेरी सन्तान-हीन बहिनो,

आप इसे बेगुण औषधि न समझें। अगर इसको असली चीजें और बताए हुए औषधि तन्त्र की रीति से तैयार कर ले तो कोई वजह नहीं कि इससे बीस और पच्चीस वर्ष से बैठी हुई सन्तान-हीन बहिनों की गोद में बच्चे खेलते नजर न आवें। अगर कोई बहिन इस औषधि को मेरे हाथों से ही बनवाना चाहें वो मुझे लिख दें। मैं उनको अपने हाथ से ही दवा तैयार करके भेज दूंगी।

मैं अपने धर्म से सच कहती हूं कि मैं किसी बहिन से औषधि की असली लागत से एक पाई भी ज्यादा न लूंगी। जिस बहिन को मेरे ऊपर विश्वास न हो तो बहन मुझे दवा तैयार करने के लिए कदापि न लिखें। एक बहन की औषधि पर पांच रुपये बारह आने, तीन बहिनों की औषधि पर नौ रुपये आठ आने, तीन बहिनों की औषधि पर तेरह रुपये चार आने लागत खर्च आते हैं और महसूल डाक खर्च से अलग।

जरूरी नोट—एक बहिन की चौबीस घण्टे दवा पिसवाने पर मेरे २) रुपए लागते हैं और दो और तीन के लिए दवा पिसवाने पर भी दो रुपये खर्च होते हैं। इस लिए अगर दो तीन बहिनें मिलकर दवा तैयार करा लेंगी तो वे फायदे में रहेंगी।

पता:—श्रीमती रतनबाई जैन सदर बाजार थाना रोड, देहली।

भारतीय ऋषियों की खोज का अद्भुत चमत्कार

एक आश्चर्यजनक घटना — रोगी के पति की आप बीती

मेरी स्त्री अनेक दिनों से बीमार थी, आखिर डाक्टरों ने 'तपेदिक' (टी० बी०) रोग बतलाया, 'तपेदिक' का नाम सुनते ही होश-हवास उड़ गये। अन्त में डाक्टरों ने एकसरे करके दोनों फेफड़े खराब (गल) जाने की बात कहकर मुझे आदेश दिया कि रोगी १०-१५ दिन का मेहमान है। इसको अस्पताल से ले जाओ और किसी अलग कमरे में रख दो। कोई इसके पास न आवे, इसके थूक आदि से बचाव रखो। लाचार' होकर उसको घर ले आया।

फिर क्या हुआ—अखबार 'मिलाप' में मैंने आपकी दवा जबरी का 'विज्ञापन देखा। दिल ने कहा कि जहां सैकड़ों रुपया हकीम डाक्टरों की भेंट चढ़ा चुका हूं, यह भी खर्च करके देख लूं। रोगी ने कहा कि जब डाक्टरों ने यह कह दिया है कि दोनों फेफड़े खराब हो चुके हैं और मैं १०-१५ दिन की मेहमान हूं तो व्यर्थ क्यों खर्च करते हो, मुझे अब परमात्मा पर छोड़ दो। परन्तु दिलने न माना और तुरत 'जबरी' नं० १ का आर्डर दे डाला। पांचवें दिन ही पार्सल पहुंच गया और विधि के अनुसार परमात्मा का नाम लेकर औषधि शुरू करा दी गई फिर क्या हुआ—वही आश्चर्य-जनक चमत्कार। जिस रोगी के बारे में डाक्टरों ने मौत का फतवा दे दिया था, और ६ मास तक बराबर इलाज करने पर भी बुखार न गया था, आसाम बङ्गाल की शक्ति-शाली औषधि 'जबरी' ने दस दिन में ही अपना चमत्कार दिखा दिया, बुखार बिलकुल जाता रहा। जो रोगी चारपाई से उठने लायक न था, शरीर में रक्त का संचार होने लगा और दिल में पहले की सी उमंग पैदा हो गई, दिल में पूर्ण रूप से विश्वास हो गया कि जिस दवा ने इतनी जल्दी ऐसा चमत्कार दिखाया है—क्यों न स्त्री को एक बार वहीं लेजाकर पूर्ण रूप से परीक्षा कराकर आगे को इलाज का प्रबन्ध किया जावे। मेरी स्त्री की भी यही राय हुई। फिर क्या हुआ — जिस रोगी में चारपाई से उठने की शक्ति न थी हजारों मील रेलकी यात्रा करके 'जगाधरी' आ गई। यहांपर पूर्णरूपसे अच्छी तरह परीक्षा करके आगेके लिए औषधियों का प्रबन्ध हुआ, यथार्थमें कार्यालयका सलूक प्रशंसनीय है। रोगीकी तन्दुरुस्ती दिनपर दिन बदलती गई और अब परमात्मा की कृपा से बिल्कुल ठीक हो गई है। मैं ही नहीं—बल्कि मेरा तमाम कुटुम्ब कार्यालय के कृतज्ञ हैं जिसने मेरी स्त्री को काल के गाल से बचा लिया। यह ऋषियों के रक्त से सींचे हुए आयुर्वेद शास्त्र की पूर्ण सफलताका चमत्कार है। उपरोक्त घटना सरदार करतारसिंह इण्डियन मिल्ट्री हस्पताल, करांची के साथ घटी।

पाठक वृन्द—यह एक नहीं। पचासों सैकड़ों ऐसी घटनाऐं हो चुकी हैं और भी देखिये—(१) लाला काशीप्रसाद वैश्य दारानगर (इलाहाबाद), (२) बाबू मुन्नालाल स्टोरकीपर सिम्यावली शुगर मिल पो० बक्सर (मेरठ), (३) बाबू रामसिंह घर नं० ६१ रीठामन्डी (देहरादून), (४) बाबू गजपतराय रिटायर्ड सब रजिस्ट्रार (मथुरा), आदि सैकड़ों सज्जनों का यही कहना है कि आसाम बंगालकी शक्तिशाली औषधि 'जबरी' दवा नहीं, बल्कि यथार्थ में रोगी को काल के गालसे बचाने वाली 'ईश्वरीय शक्ति' है। अब तो परमात्मा की कृपा से मिल्ट्री अस्पताल 'औध' (पूना) रुड़की (यू० पी०) कराची आदि स्थानों में भी 'जबरी' के गुणों का डंका बज रहा है, पचासों रोगी सेवन करके लाभ उठा रहे हैं।

[T. B. / टी. बी.] तपेदिक-और पुराने ज्वर वालो—

अब भी समझो—यदि आप सब तरफ से हताश हो चुके हैं तो एक बार 'जबरी' का परीक्षा करें।

सैकड़ों हकीम, वैद्य, डाक्टर अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं, अनेक आदमी तार से आर्डर देते हैं—तार तथा पत्र के लिए थोड़ा सा पता 'जबरी' (जगाधरी) (Jabri Jagadhari) लिख देना ही काफी है। मूल्य इस प्रकार है। 'जबरी' स्पेशल नं० १ अमीरों के लिए, जिनमें साथ साथ ताकत को बढ़ाने के लिए सोना, मोती, अभ्रक आदिकी मूल्यवान भस्म भी पड़ती हैं मूल्य पूरा ४० दिनका कोर्स ७५) रुपया नमूना १० दिन के लिए २०) रुपया 'जबरी' नं० २ जिसमें केवल मूल्य वान जड़ी बूटियां हैं पूरा कोर्स २०) रुपया १० दिन ६) महसूल आदि अलग है। आर्डर में अखबारका हवाला तथा नं० १ या २ साफ साफ लिखें। तुरन्त आर्डर देकर रोगी की जान बचावें, १० दिनमें ही अद्भुत चमत्कार दिखाई देगा। जल्द प्राप्त करने के लिये 'जगाधरी' आर्डर दें।

रायसाहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड बैंकर्स
(२) शिलांग [आसाम] या पंजाब आफिस 'जगाधरी',

'वीर अर्जन' साप्ताहिक में विज्ञापन देकर लाभ उठाइये

भृगुसंहिता का चमत्कार

सुनहरी चान्स

सज्जनों! निकटभविष्य में चांदी, सोना पाट, रूई इत्यादि वस्तुओं में असाधारण तेजी-मन्दी आनेवाली है। अगर आप इस मौके से फायदा उठाना चाहते हैं तो आज ही हमारे यहां से "भाव भविष्य" मंगा कर अवश्य पढ़िये। इसमें आपको महीने भर के हालात रोजाना के टकेवार मिला करेंगे। मूल्य २१) रु० स्पेशल ५१) रु०। नमूनांक सिर्फ ५) रु० में जनवरी के लिए जो मनीआर्डर से आना चाहिए। ऐसा स्वर्ण अवसर हाथ से जाने पर पछताना पड़ेगा।

पता — श्री भृगुप्रकाश कार्यालय, मु० पो० रतनगढ़ (बीकानेर)

भृगुसंहिता का चमत्कार

थोड़ी थोड़ी बचत बड़ी बड़ी समस्याओं की निवृत्ति करती है

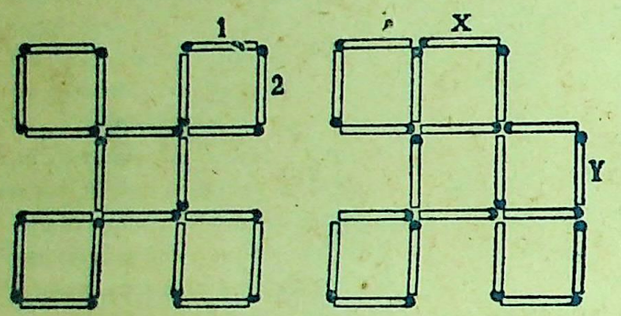

प्रश्न : दिया सलाई की २ तीलियों को दुबारा ऐसे रखिये कि ५ समकोण चतुर्भुज ६ बन जायें।

उत्तर : तीली नं० १ और २ को हटा दीजिये और एक एक तीली 'X' और 'Y' के चिन्ह पर रखिये। इस प्रकार ६ समकोण चतुर्भुज बन जायेंगे।

यदि आप जानते हैं कि "किस प्रकार" सब समस्याओं की निवृत्ति हो सकती है, तो थोड़ी बचत की स्कीम से आपकी आर्थिक समस्याओं की निवृत्ति हो सकेगी। प्रति सप्ताह अथवा प्रति मास थोड़ा बहुत बचाइए और उस बचत से नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स खरीदिये।

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट्स

निम्न लिखित मुख्य लाभ यह हैं:—

(१) आप ५, १०, ५०, १००, ५००, १०००, या ५०००, रु० के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफिकेट्स खरीद सकते हैं।

(२) कुटुम्ब का प्रत्येक व्यक्ति (वयस्क या अल्पवयस्क) ५००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स खरीद सकता है। दो व्यक्ति मिलकर १०,००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स खरीद सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है। सरकार द्वारा प्रचलित रुपया लगाने की मदों पर जो ब्याज दिया जाता है यह सब से अधिक दर है।

(४) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।

(५) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते हैं (५ रु० का सर्टिफ़िकेट १-१/२ वर्ष पश्चात भी भुनाया जा सकता है)

(६) जिनकी बचत थोड़ी है वह १), ॥), ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्प्स खरीद सकते हैं, ५ रु० के स्टाम्प्स जमा होने पर एक नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट मिल जायेगा।

(७) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्प्स डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकृत एजेंटों अथवा सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

अपने सेविंग्ज़ ग्रुप में अभी सम्मिलित हो जाइए

बन्द माहवारी (मासिक धर्म)

२४ घन्टे में शुरू

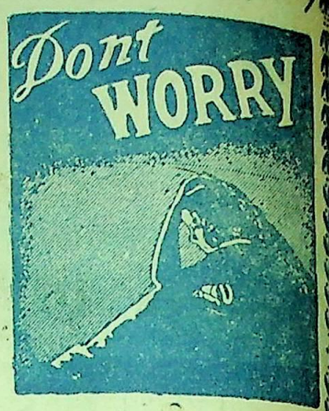

यदि किसी स्त्री की माहवारी रुक गई हो तो हमारी दवा 'कामिनी' से २४ घण्टे में जारी हो जाती है। अगर किसी स्त्री की माहवारी तकलीफ से आती है, रुक-रुक कर आती है। महीने-दो महीने से आती है, तो 'कामिनी' दवा सेवन कर लेने से तमाम खराबियां दूर हो जाती हैं। हजारों स्त्रियां, जिनकी माहवारी रुक गई थी, इस दवा के सेवन करने से २४ घण्टे में साफ होकर आने लगी। जन स्त्रियों को गर्भ हो वे यह दवा सेवन न करें वरना गर्भ प्रायः गिर जाता है। (एक शीशी एक स्त्री के लिए काफी है)। कीमत दो रुपया आठ आना, डाक-व्यय ग्यारह आना।

अक्सीरी दवाखाना कलां महल; (छत्ता हकीम आगाजान)
(V.W.A.) नं० ४१ देहली।

दिल्ली में चांदनी चौक फतेहपुरी बाजारके सभी प्रमुख औषधिविक्रेता यह दवा बेचते हैं

बिजय पुस्तक भण्डार देहली
की
जीवनदायक पुस्तकें

जीवन चरित्र—

(१) महर्षि दयानन्द सरस्वती	मूल्य	१॥)
(२) महामना मालवीय जी	,,	१।)
(३) पं० जवाहरलाल नेहरू	,,	१।)
(४) नेता जी सुभाषचन्द्र बोस	,,	॥=)

अन्य पुस्तकें—

(६) जीवन संग्राम	,,	१)
(७) मैं भूल न सकूं	,,	१)
(८) बृहत्तर भारत	,,	७)
(९) त्याग का मूल्य	,,	५)
(१०) गीतांजलि	,,	१॥।)
(११) दिल्ली चलो	,,	२)
(१२) तिरंगा झण्डा	,,	१।)
(१३) नेता जी सरहद पार	,,	१।)
(१४) एकांकिका	,,	२)
(१५) नीराजना	,,	१)
१६) हमारे घर	,,	॥=)

उर्दू पुस्तकें—

(२०) फन रंगाई धुलाई	(उर्दू)	,,	॥।)
(२१) मोमबत्ती साजी		,,	१)
(२२) बूट पालिश	(अंग्रेजी)	,,	२॥)
(२३) सोडा कास्टिक	(हिन्दी)	,,	१॥)
(२४) फन फिनायल साजी	(उर्दू)	,,	२)
(२५) फन रोशनाई साजी		,,	१॥।)
(२६) देसी रंगों से सस्ती रंगाई		,,	॥)

डाक व्यय ग्राहक के जिम्मे होगा। थोक खरीदने वाले दुकानदारों को उचित कमीशन दिया जाता है। मिलने का पता—

बिजय पुस्तकभण्डार, श्रद्धानन्द बाजार देहली

श्री दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिये 'अर्जुन प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली से छाप कर प्रकाशित किया।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वीर अर्जुन साप्ताहिक

ILLUSTRATED VIR ARJUN WEEKLY

वर्ष १२] दिल्ली, सोमवार १६ पौष सम्वत् २००३, DELHI 30th December 1946. [अङ्क ४२]

बटोही के प्रति

समुद चला चल श्रान्त बटोही, कठिन कुपथ से घबराना क्या ?
गहन विपित्त के सूने पन में
कुटिल कंटीले तपते वन में
मृगजल से नीरस जीवन में
चलना ही तेरा जीवन, फिर चलने से अकुलाना क्या ?
यदपि समक्ष पहाड़ खड़े हैं
सूखे से झंखाड़ अड़े हैं
बाधायें शत कष्ट बड़े हैं
किन्तु दिया जब पैर डगर में, तब मुडना औ' पछताना क्या ?
गृह सुख है बस कल्पित सपना
साथ कौन कब देता अपना
किस हित रोना और कलपना
वर्तमान की चिन्ता कर तू, भूत भविष्यत का गाना क्या ?
वीतराग सा होकर जग से
नाप अवनि औ' अम्बर पग से
विचलित हो मत अपने मग से
पथ औ' मंजिल दोनों तेरे, इन का खोना औ' पाना क्या ?
समुद चला चल श्रान्त बटोही, कठिन कुपथ से घबराना क्या ?

— शेष

अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति

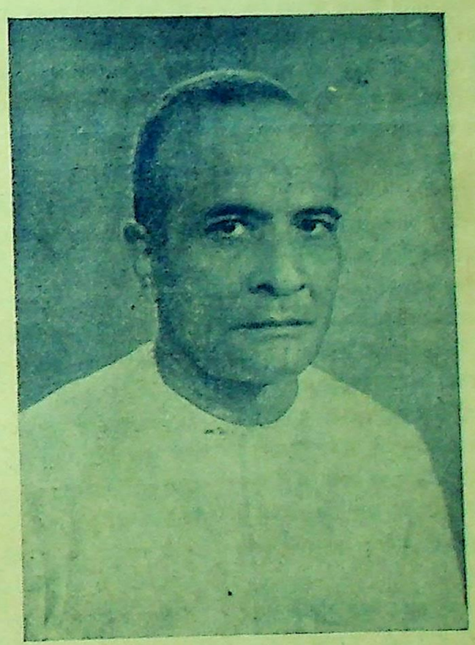

श्री वियोगी हरि

सम्पादक—
रामगोपाल विद्यालङ्कार
कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार

वार्षिक मूल्य ८)
छः मास का ४)
एक प्रति का मूल्य ≡)

पञ्जाब युनिवर्सिटी द्वारा नियत हिन्दी रत्न, भूषण, तथा प्रभाकर हिन्दी परीक्षाओं की पाठ्य पुस्तकें तथा सर्वोत्तम सहायक पुस्तकों के लिये स्मरण रखिये सूचीपत्र मुफ्त

पाल एण्ड कम्पनी
हस्पताल रोड, अनारकली, लाहौर।
प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता

अपनी मानसिक, आध्यात्मिक, और नैतिक उन्नति के लिये वर्तमान युग के महापुरुषों की पुस्तकें हम से मंगवा कर पढ़िये, जो कि उनके जीवन और अनुभूतियों की सार हैं। हमारा शो रूम आप की रुचि तथा प्रवृत्ति की सन्तुष्टि करेगा और आपका पथ-प्रदर्शक सिद्ध होगा॥

आधी दुनिया

लाहौर के सभ्य समाज में तीन दिन

[महेन्द्रप्रताप 'मदन' बी० ए०]

ब्रिटिश ओवरसीज एयरवेज कारपोरेशन की उड़ाका स्त्रियों की नई पोशाक

स्टेशन पर काफी भीड़ थी! बादशाह खान के सरहदी गांधी के दर्शन करने के लिये भीड़ की भीड़ उमड़ी आ रही थी!

रावलपिंडी और लाहौर के बीच कोई छोटा सा स्टेशन था! पर तो भी जन-संख्या बहुत थी। मैंने खिड़की में से सिर निकाल कर उचक कर देखा···कुछ नंगे···और अधिकांश सिरों पर साफा बंधे हुए···उस जनसमुद्र में सब घुले मिले से खड़े थे!

मटमैले से कपड़े, ढीली-ढीली सलवारें या तहमते, सिर पर मोटी सी पगड़ी, वह पंजाब के अपढ़ जाट जिनके हृदय में भी देश प्रेम की भावनायें झूम-झूम पड़ रही थीं, उनके मन भी झूल रहे थे नई-नई लहरियों के बीच!

अनजान, अपढ़ ग्रामीणों के हृदय में, उनका भारत के उस आदर्श नेता के प्रति प्रदर्शित प्रेम, उनकी राष्ट्रीय भावना का प्रत्यक्ष परिचय दे रहा था।

असेम्बली के जलसे में शामिल होने के लिये वह दिल्ली जा रहे थे। राह में प्रत्येक स्टेशन पर ट्रेन कुछ न कुछ लेट हो ही जाती थी।

बादशाह खान हमारे डब्बे से तीन चार डब्बे बाद में थे परन्तु उत्सुक जनता हमारी खिड़कियों पर भी चढ़-चढ़ कर, उचक कर कमल एक बार उनकी झलक पा लेने के लिये छटपटा रही थी! उनका प्रेम, उनकी श्रद्धा देखकर मेरा हृदय गद-गद हो गया! सीधे-सादे यह गांव के जाट···सच यही तो हैं भारत के प्राण!!

लाहौर स्टेशन पर रुकते ही, प्लेटफार्म उनकी जय-जय-कार के शब्दों से गुंजायमान हो गया! यहां भी काफी भीड़ थी!

बादशाह खान कुछ देर के लिये स्टेशन पर उतरे भी, उन्होंने छोटा-सा भाषण भी दिया!

हमें यहीं उतरना था। कुछ काम था लाहौर में! कुली की सहायता से सामान उतरवा कर हम प्लेटफार्म पर खड़े हो गये, ताकि भीड़ छट जाये और हम बाहर जा सकें। खड़े-खड़े लोगों के उत्साह एवं श्रद्धा को जो वह अपने माननीय नेता के प्रति प्रगट कर रहे थे, देखने लगे! कुछ नेगेर के चुने हुए कांग्रेसी कार्यकर्ता व कुछ स्वयं-सेवक व स्वयं-सेविकाएं और अधिकांश विद्यार्थी लाहौर के थे।

एक-एक पर से हमारी दृष्टि खिसकती जा रही थी! कई सिर नंगे थे, कुछ ने सिरपर फैल्टपहन रखी थी। बहुमूल्य सूट थे गलों में रेशमी टाइयां थीं जो उनके चलने से, झुकने से रह रहकर हिल उठती थीं, लहरा उठती थीं! एकाएक मेरी दृष्टि उधर ट्रेन के पास खिड़की का सहारा लिये खड़ी एक स्वयं सेविका पर रुक गयी!

शायद बेचारी जल्दी में आयी थी। चेहरे पर पाउडर ढंग से न लग पाया था और जरूरत से कुछ अधिक ही पुत गया था। लिपस्टिक का रंग भी कुछ गहरा हो अस्वाभाविक सा लग रहा था। रेशमी साड़ी के ऊपर काश्मीर का बना हुआ बहुमूल्य कोट···उसपर···बांह में लगा था छोटा सा तिरंगा झंडा, जो बता रहा था कि वह स्वयं-सेविका है! बेचारी इधर··· भीड़ की गड़बड़ से हट, खिड़की के किनारे क्यों खड़ी थी? बादशाह खान को देखने की चाह तो थी, पर डर था कहीं कीमती साड़ी की तह न खराब हो जाय···सुंदर कोट कहीं·····

मैं मुस्करा कर रह गया! सामने लगे रेलवे के बोर्ड ने स्मरण करा दिया कि यह लाहौर है!

भीड़ घट जाने पर मैं और कामिनी दोनों बाहर आये! कामिनी दिल्ली में पढ़ रही थी। छुट्टियों के बाद उसी को छोड़ने मैं दिल्ली जा रहा था! उसकी लाहौर देखने की बड़ी इच्छा थी सो मैंने कहा, रास्ते में पड़ता है, दिखाता चलूं?

× × ×

मैकलोड रोड का कोई अच्छी चहल-पहल वाला होटल था! टांगे वाले ने इसी को अच्छा बताया था! ठहर तो किसी संबंधी के यहां भी जाते, पर लाहौर की सैर जो करवानी थी कामिनी को! होटल में ऊपर कमरे थे, नीचे रेस्टारेंट!

कोने में रेडियो बज रहा था! मादक संगीत की लहरियां थिरक रही थीं वहां के वातावरण में!

सामान ऊपर कमरे में रखवा कर दोनों चाय पीने नीचे आ बैठे! 'वेटर' को चाय लाने को कह हमने अपने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई!

हमारी बगल वाली मेज पर शायद कुछ कालेज की छात्राएं बैठी थीं!

मेरी आंखें सामने बैठी लड़की के खुले बाल घटा की तरह पीठ एवं कंधे पर फैले हुए थे, महीन ओढ़नी के घोर सुडौल गोरी सुराही सी गर्दन से लिपटे भूमि का स्पर्श कर रहे थे। गर्म बादामी रंग के कोट में से, हल्के गुलाबी रंग की कमीज झांक रही थी! बांये कंधे से उसी रंग का बटुआ लटक रहा था! पाउडर, सेंट, शीशा—छोटा सा सुन्दर रूमाल शायद यही सब कुछ होगा उस बटुये में! चेहरे पर का पाउडर हल्की सी लिपस्टिक··· ओह! इसके विषय में कहना ही व्यर्थ है, यह तो यहां ··· लाहौर में ··· साधारण बात है?

सोच रहा था मैं? कितना लुभावना वातावरण है! आज के नवयुवक के लिए कितना आकर्षण है? कागज के फूल ही सही, पर खिंचाव तो है उनमें! किसके सहारे टिके उसका मन!

'क्या सोच रहे हो भैया!'

'कुछ नहीं! उसके पहनावे ··· व कंधे से लटकते बटवे को देख रहा था मैं' नौकर चाय ले आया था। एक प्याला कामिनी की ओर खिसकाते हुए, मैंने चाय बनाना आरम्भ कर दिया! मन में अनेक विचार उठ रहे थे! आंखें उधर उस किनारे पर बुर्का पहने बैठी लड़की को देख रही थीं। पहन तो बुर्का रखा था, पर नकाब सिर पर उलटी पड़ी थी!!

चारों ओर देखती हुई सहेलियों से बातें करती हुई खिलखिला रही थी। बातचीत का विषय क्या है ··· यह मैंने कान लगा कर सुनने की चेष्टा की! किसी फिल्म के बारे में बात हो रही थी, अभिनय एवं संगीत की आलोचना थी।

कामिनी भी उस ओर देख रही थी।

'क्या देख रही है! क्या तू भी चाहती है ऐसा ···?'

'उंह! मुझे क्या करना है! व्यर्थ की मुसीबत ··· पैसे का दुरुपयोग ···'

उधर कोने वाली मेज पर कुछ और सूटधारी व्यक्ति बैठे थे! सिगरेट के धुंए से रेस्टोरेंट का वातावरण भर रहा था!

जल्दी-जल्दी चाय पीकर बोली कामिनी 'चलो भैया! ओह कितना धुंआ है मेरा तो दम सा घुट रहा है···'

× × ×

आज हमें दूसरा दिन था लाहौर में! प्रायः सब ऐतिहासिक स्थान मुलाकात इमारतें, चिड़िया घर, अजायब घर कामिनी को दिखा चुका था।

दोपहर बीत चुकी थी! सूर्य गगन से खिसक रहा था! लारेंस बाग की एक बेंच पर बैठे हम छिटकी छटा को निहार रहे थे। अच्छी चहल पहल थी। नवेले ढंग से, नवीन फैशन की वेशभूषा से सुसज्जित नर-नारी थे। मानों आपस में होड़ लगी हो, फैशन, नवीनता और सुन्दरता में!

हमारे पास की बेंच पर एक पंजाबी परिवार बैठा था, पति-पत्नि थे। एक सात लड़की थी और एक छोटा बच्चा था नौकर की गोद में!

पहनावे का क्या वर्णन करूं! सब कुछ··· लाहौर में तो वह एक साधारण बात है!

एक भिखमंगिन मांगती हुई उनके पास आई! छाती से एक छोटा मैला कुचैला बच्चा चिपटा! फटे-चीथड़े कपड़ों में लिपटी थी वह!

'बाबू एक पैसा! भगवान भला करेगा।'

पतिदेव उठ खड़े हुए ···'चलें शीला ··· चलें। अभी किरपाराम की दुकान पर भी जाना है ···'चलो कहीं देर न हो जाये ···'

'बाबू तुम्हारे बच्चे जुग जुग जियें! एक पैसा मेरे बच्चे के दूध के लिए मिल जाय ···' कातर स्वर में भिखमंगिन पुकार रही थी!

'हट ··· चल ··· फिजूल में बर्बाद करने को एक पैसा भी नहीं है ···'

वह परिवार उधर पंक्ति में खड़े तांगों की ओर बढ़ गया! निराशा-आशा के बीच डूबती-उतराती भिखारिन कुछ दूर तक उनके पीछे-पीछे गई ···'बाबू··· एक ··· पैसा ···'

[शेष पृष्ठ १७ पर]

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हिंदुस्तानी के नाम पर हिंदी का महा परिहास

श्री वियोगी हरि की राष्ट्र-भाषा निर्माताओं को चेतावनी

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति पद से भाषण देते हुए श्री वियोगी हरि ने अत्यन्त महत्वपूर्ण भाषण दिया। इसके कुछ अंश निम्न लिखित हैं—

सम्मेलन का यह अधिवेशन ऐसे प्रान्त में हो रहा है, जहां हिन्दी बोली नहीं जाती, किन्तु समझ लेते हैं, और जहां की लिपि भी, दुर्भाग्य से, अरबी लिपि का परिवर्द्धित संस्करण है। सिन्धी भाषा पर ऐतिहासिक उतार-चढ़ावों के कारण बाहर की भाषाओं का काफी प्रभाव पड़ा है, पर अन्य अनेक भारतीय भाषाओं की भांति सिन्धी भी प्रकृति से संस्कृत और प्राकृतमूलक है। सिन्धी के विद्वान लेखक श्री भमतमल नारुमल ने अपने सिन्धी भाषा के व्याकरण में, जिसे १८९२ में सिन्ध सरकार ने प्रकाशित कराया था, लिखा है, 'सिन्धी में कुल २०,००० शब्द हैं, जिनमें १२,००० संस्कृत के तद्भव हैं, ३,५०० देशज हैं, २,००० फारसीके और २,५०० अरबी के शब्द हैं। ३,५०० देशज शब्दों में भी बहुत से संस्कृतमूलक शब्द हैं। क्रियाएं, सर्वनाम, संख्यावाचक, विशेषण और अव्यय सब संस्कृतमूलक ही हैं।'

सिन्ध प्रदेश की प्राचीनतम सभ्यता का तो कहना ही क्या! यहां की सांस्कृतिक समृद्धि की साक्षी संसार को आज भी सहस्त्रों वर्ष पुराने मोहनजोदड़ो के भग्नावशेष दे रहे हैं। ऋग्वेद ने, महाभारत ने तथा पुराणों ने इस आर्यावास की महिमा का भूरि-भूरि गान किया है। हमारे सौभाग्य-सूर्य का उदय और अस्त दोनों ही इस प्रदेश ने देखे।

राष्ट्रभाषा का स्वरूप

सबसे पहले मैं राष्ट्रभाषा के स्वरूप के सम्बन्ध में ही कहना चाहता हूं। सम्मेलन का मत स्पष्ट है। वह हिन्दी को, उसके प्रचलित रूप में, राष्ट्रभाषा और नागरी लिपि को राष्ट्र-लिपि मानता है। उसकी इस मान्यता में शुद्ध और पूर्ण राष्ट्रीय दृष्टिकोण रहा है। जहांतक हिन्दी के बोलने का सम्बन्ध है, विभिन्न हिन्दी-भाषी प्रदेशों में भी उसके अनेक रूप प्रचलित हैं। लिखी भी वह कई शैलियों में जाती है। एक शैली उसकी उर्दू भी है, जिसका चलन विशिष्ट जनों में पाया जाता है। स्पष्ट है कि हमने इस विशिष्ट शैली को बहिष्कृत नहीं किया है; ऐसा करने की हमारी कभी मनशा भी नहीं। किन्तु सम्मेलन ने हिन्दी की उस साधारण शैली को राष्ट्रभाषा माना है, जिसमें कबीर, रैदास, जायसी, तुलसी, सूर, मीरां, गुरु नानक, रहीम, रसखान, हरिश्चन्द्र, मैथिलीशरण, प्रसाद, पंत आदि कवियों और संतों ने, तथा राजा शिवप्रसाद, बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, महावीरप्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्र शुक्ल, प्रेमचन्द आदि लेखकों ने राष्ट्र के विचारों और भावों को, भिन्न भिन्न कालों और अलग-अलग परिस्थितियों में, स्वाभाविक रीति से व्यक्त किया है। ये सब मणियां एक ही अखंड सूत्र में पिरोई हुई हैं। भारतीय राष्ट्र की व्यापक भावनाओं को व्यक्त करने की क्षमता रखने वाली संस्कृत और प्राकृतमूलक भाषाएं ही सदा से रही हैं; और हिन्दी ने तो इस दिशा में सबसे अधिक काम किया है। राष्ट्रीय चेतना को जगाने और फैलाने में वह सबसे अधिक समर्थ भाषा सिद्ध हुई है, इसमें कोई सन्देह ही नहीं।

हमारे देश में भाषा कभी वाद-विवाद का विषय नहीं बनी थी। उसपर कभी राजसत्ता का अंकुश नहीं रहा। मुसलिम शासन-काल में भी राज-भाषा फारसीको उसके फलने फूलनेमें दखल नहीं दे सकी। राज-भाषा लोकहृदय और लोक-मस्तिष्क पर थोड़े ही शासन कर सकती है? यह अलग बात है कि हमारे कवियों और लेखकों ने अरबी, फारसी और तुर्की के अनेक शब्दों को सद्भाव से, सहज रीत से, ग्रहण कर लिया। हमारी भाषा में वे घुल-मिल गये, रच-पच गये। इसमें कोई साम्प्रदायिक या राजनीतिक दृष्टि नहीं थी। यह अंगीकार तो 'अयत्नसाधित' हुआ। इस चीज के भीतर अनजताये, प्रेम की भावना काम करती थी। वे यह सोच सोच कर नहीं लिखते या कहते थे कि अमुक शब्द को इसलिए लेना ठीक नहीं कि उसे अमुक जन-समुदाय नहीं समझ सकेगा। यह भी समझे और वह भी समझे, बल्कि शब्दों के बंटवारे में हम काफी उदार भी समझे जायें—इस नीयत से हम लिखेंगे और बोलेंगे, तो वह भाषा स्वभाव-सरल न होकर बनावटी ही होगी। भले ही हमारी मनशा भाषा को सरल या आमफहम बनाने की हो, पर अपने इस अस्वाभाविक प्रयत्न में हम सफल नहीं हो सकेंगे। दो विभिन्न भाषाओं के समानार्थक शब्दों को एकसाथ रखने से भी भाषा के आमफहम बनाने का प्रश्न हल नहीं होगा। साम्प्रदायिक ऐक्य-साधन की धुन में भाषा को जान-मानकर बिगाड़ना किसी भी दृष्टि से समीचीन नहीं। बेमेल शब्दों को कान उमेठ-उमेठ कर जबरदस्ती ऐसी जगह बिठाना, जो उनके लिए मौजूं न हो, एक व्यर्थ का ही प्रयास है। कभी इस तरह सरल, सुबोध और सामान्य भाषा बनी है? इस फेर में पड़कर भाषा को—हिन्दी को भी और उर्दू को भी — अस्वाभाविक और असुन्दर क्यों बनाया जा रहा है? सरल भाषा तो स्वभाव से ही सुन्दर होती है। जिस भाषा में जिस शैली में सौन्दर्य नहीं, लोच नहीं, चमत्कार नहीं, वह लोकहृदय को कैसे आकृष्ट कर सकती है?

भाषा और शैली दोनों विषय-वैशेष का अनुसरण करती हैं। विषय की यथेष्ट व्यंजना लेखक या वक्ता के यथार्थ ज्ञान पर निर्भर करती है। कबीर ने और उनकी कोटि के पारदर्शी संतों ने सरल-से-सरल भाषा में अध्यात्म के ऊंचे और गहरे सिद्धांतों का सफलतापूर्वक निरूपण किया है। पर उनका अनुकरण कौन करे? वे तो भाषा के अधिनायक थे, भावों के सम्राट थे। उनकी निपट सरल-सहज भाषा उस महारस की अनूठी गागर है, जिसे उन्होंने जीवन की सहज साधना से भरा था। पूज्य गांधी जी की भी हिंदी ऐसी ही स्वभाव-सरल होती है। वे भाषा के नियमों का भंग जानबूझ कर नहीं करते। मगर उनके 'हरिजन सेवक' की वर्तमान हिन्दी —नहीं, नहीं, हिन्दुस्तानी को जरा आप देखें। उनमें हिन्दी का बेमेल गठ-बंधन किस भौंडेपन के साथ किया जा रहा है! हिन्दुस्तानी के नाम पर हिन्दी और उर्दू का यह महा परिहास अच्छा नहीं।

यदि समन्वय के विचार से राष्ट्र-भाषा को बिलकुल नये सांचे में ढाला जा रहा हो, तो मुझे इतना ही कहना है कि समन्वयीकरण में भाषा की मूल प्रकृति का हमें पूरा ध्यान रखना होगा। यह व्याख्या कोई खास मानी नहीं रखती कि हमें ऐसी जबान में लिखना चाहिए, जिसमें न संस्कृत के कठिन शब्दों की अधिकता हो और न अरबी-फारसी के मुश्किल लफ्ज इस्तेमाल किए जायें और जिसे सर्वसाधारण समझ लें। विषय को देखते हुए हम जान-मान कर कठिन शब्द नहीं रखेंगे, पर संभव नहीं कि हमारी भाषा में यथास्थान संस्कृत के तत्सम तथा तद्भव शब्द प्रचुरता से उपयोग में न लाये जाय। विदेशी भाषाओं के जो शब्द हमारे नित्य के व्यवहार में आते हैं और घुल-मिल गये हैं वे हिन्दी में हमेशा आदर का स्थान पायेंगे, आवश्यकतानुसार निर्बाध रूप से हम नये शब्दों को भी खपाते रहेंगे। इतना ही नहीं, राष्ट्र-भाषा को अधिक समृद्ध बनाने के विचार से भिन्न-भिन्न जनपदों और प्रांतों के बहु-अर्थगर्भित समर्थ और सुन्दर शब्दों का भी हम उसमें समावेश करेंगे। समन्वय का मैं भी विरोधी नहीं, प्रेमी हूं। किन्तु समन्वय वैसा, जैसा राग में भिन्न-भिन्न स्वरों का। प्रत्येक राग का उसकी अपनी प्रकृति के अनुसार बंधा हुआ सरगम होता है। इस स्वर को यहां इतना स्थान मिला है, तो उस या उन स्वरों को भी उतना ही मिलना चाहिए, अथवा यह स्वर मध्यम लगाया गया है, तो वह भी मध्यम ही लगाना चाहिए — यदि इस न्याय-नीति को लेकर आप सरगम की पुनर्रचना करने बैठेंगे तो उससे कौनसा राग बनेगा? इस नीति से भला कभी सार्वजन्य सिद्ध हुआ है? यही बात भाषा के सम्बंध में भी है।

> जिस प्रयत्न द्वारा हमारी भाषा की प्रकृति का अंग भंग होता हो, उसे असुन्दर और विरूप बनाया जाता हो, उस प्रयत्न का चाहे जो नाम दिया जाये, पर उसे समन्वय या सामंजस्य का प्रयत्न नहीं कहा जा सकता। असली सिर काट कर उसकी जगह बकरे का सिर चिपका देने से दक्ष प्रजापति की जो शकल बनी थी, उसे देख कर तो भगवान रुद्र भी खिलखिला कर हंस पड़े थे! उस विचित्र आकृति को नर और अजा का समन्वय कहने के लिए क्या आप तैयार हैं? इस प्रकार के असामंजस्यपूर्ण कृत्रिम प्रयत्नों से न कभी समन्वय हुआ है और न होगा।

मगर 'प्रेम के मार्ग' का, संतों और सूफियों के ऊंचे निर्मल घाट का जहां वर्णन करेंगे वहीं हम अन्तर के आमने-सामने बोलने वाली सहज भाषा का सहारा लेंगे। शास्त्रीय गम्भीर विषयों के निरूपण में हम दूसरी ही भाषा और शैली का प्रयोग करेंगे। इसी प्रकार दर्शन और विज्ञान की भाषा से राजनीतिक और सामाजिक विषयों की भाषा भी भिन्न होगी। अपने विचारों व भावों को यथार्थ, परिष्कृत और सुन्दर ढंग से प्रकट करने की दृष्टि से कहीं हम संस्कृत के तत्सम शब्दों का उपयोग करेंगे, कहीं तद्भव शब्दों को काम में लायेंगे और कहीं देशज और अन्य भाषाओं के शब्दों को स्थान देंगे। ऐसा होगा हमारी राष्ट्र-भाषा हिन्दी का स्वरूप, और यह रूप निर्धारित भी हो चुका है।

राजनीतिक और साम्प्रदायिक प्रश्न हमारी भाषा पर दबाव नहीं डाल सकेंगे। उस पर राज-शासन नहीं चल सकेगा; उल्टे उसके अन्दर राज्य को जमाने और उलट देने की शक्ति होगी। यह शक्ति बीज रूप से हमारी राष्ट्र-भाषा हिन्दी के अन्दर विद्यमान है। राष्ट्र की भावनाओं को जगाने और एक छोर से दूसरे छोर तक फैलाने

[शेष पृष्ठ ८ पर]

श्री कन्हैयालाल मुंशी

(श्री मुंशी की प्रवृत्तियों का एक अध्ययन)

[श्री मौलिचन्द्र शर्मा]

श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी एक असाधारण प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं। उनकी प्रतिभा सर्वतोमुखी और उर्वर है। उनका चिन्तन निःसीम और फलतः उनका कार्यक्षेत्र भी निःसीम है। किसी भी देश के नेताओं में ऐसे सर्वतोमुखी क्रियाशील विद्वान किसी भी काल में कम ही रहते हैं। हमारे प्रतिभा सम्पन्न देश में भी अनेक नहीं हैं।

यह तो सभी जानते हैं कि श्री मुन्शी भारत के अग्रगण्य, पहली पंक्ति के धारा शास्त्रियों में से एक हैं। मैंने 'वकील' न कहकर धाराशास्त्री इसलिये कहा कि वे केवल वकील ही नहीं, कानून और विधान शास्त्र के पारंगत धुरन्धर विद्वान हैं और यदि अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग किया जाय तो यों कहेंगे कि वे एक उत्तम एडवोकेट ही नहीं 'ज्यूरिस्ट' हैं। भारत के लिये जो विधान आजकल निर्माण किया जा रहा है उसमें आपका कितना भाग है यह छिपा नहीं है। इस महान निर्माण के इतिहास में उनका नाम प्रधान नामों में लिया जायगा।

जब विधान परिषद् आरम्भ हो ही रही थी तो मुझे आपसे देशी राज्यों के विषय में कुछ चर्चा करने का अवसर मिला। मैंने नरेंद्रमण्डल के तथा गत लन्दन गोलमेज कांफ्रेंस के तथा अनेक राज्यों के शासनों के अनुभव प्राप्त किये हैं और समझता हूं कि देशी राज्यों की समस्याएं मुझे अधिकतर ज्ञात होनी चाहियें। मैं चकित हुआ जब मैंने देखा कि श्री मुन्शी सर्वथा एक नया तर्क जो प्रायः अकाट्य था, उपस्थित कर सारी स्थिति को दूसरे धरातल पर ले जा रहे हैं। यह चर्चा बढ़ी तो मैंने सन्तोष से देखा कि वे एक नोटबुक लाए हैं जिसमें भारत की विधान सम्बन्धी प्रायः सारी रचनाएं विषद रूप से उन्होंने पहले ही लिख डाली हैं। उनके सम्मुख एक पूरा चित्र मौजूद है। उसके आधार पर वे आगे चर्चा करेंगे। वास्तविक निर्माण यही तो है।

धाराशास्त्र उनकी आजीविका का प्रधान अवलम्बन चाहे हो परन्तु उनके जीवन का प्रधान अंग वह कभी नहीं है। वह कुछ और ही है।

× × ×

इसी प्रकार उनके राजनीतिक जीवन से भी सब लोग थोड़े या बहुत परिचित हैं। राष्ट्रवादियों में उनका ऊंचा स्थान है। सत्याग्रह, जेल और मिनिस्टरी इन सभी राजनैतिक उतार-चढ़ावों का आप पूरा अनुभव पा चुके हैं। अग्रगामी राजनीतिज्ञों की परम्परा के अनुसार आपने भी जेल में पुस्तकें लिखीं। परन्तु बहुत कम ऐसे मिलेंगे जिन्होंने मिनिस्टरी करते हुए भी उपन्यास या इतिहास लिखे हों और वह मन्त्रित्व भी कैसा; जब कभी बम्बई में हिन्दू-मुस्लिम दंगा होता है तो बहुत लम्बा चलता है। वहां 'मवालियों' के ऐसे दल हैं कि शीघ्र ही दंगों को दबा पाना कभी सम्भव न हुआ। इसमें यदि अपवाद कोई है तो श्री मुन्शी का मन्त्रित्वकाल। जब गृह-विभाग उनके पास था और तीन दिन के भीतर-भीतर दंगा ऐसा शान्त कर दिया गया था कि लोग चकित रह गये थे। यह घटना बम्बई की कहावत बन गई है।

श्री मुन्शी की राजनैतिक प्रवृत्तियों में 'अखण्ड-भारत' का आन्दोलन एक ऐतिहासिक प्रवृत्ति गिनी जाने योग्य है। एक शुद्ध राष्ट्रीय मनस्तल पर पाकिस्तान सदृश बेहूदा और खुले देश-द्रोहात्मक आन्दोलन का यह प्रतिघात था। उस समय 'अखण्ड-भारत' इन दो शब्दों में उन्होंने भारत भर के राष्ट्रवादियों के गूढ़ मनस्ताप का और तज्जन्य भारत की अखण्डता की रक्षा के संकल्प का तेजस्वितापूर्ण प्रतिनिधित्व किया था। परन्तु राजनीति भी श्री मुन्शी का जीवन नहीं है। वह भी उसका केवल एक भाग है।

× × ×

वे एक संस्कारी पुरुष हैं। सहस्त्रों वर्षों से इस देश के मनीषियों ने जो कुछ सोचा, अनुभव किया और भुगता है, उस सब की गूढ़ सांस्कृतिक अनुभूति से उनका शिष्ट हृदय आर्द्र बना है, और पुरुषाओं की ऐतिहासिक भूलों के कारण आपन्न इस लम्बे पराधीनता काल के कठोर आघातों से उनका मन वज्र सा कठोर बना है। वे शत्रुकर्षण हैं, मित्रनन्दन हैं। वे राजनीतिज्ञ हैं। वे उन बिरले नेताओं में से हैं जिनके लिये कहा जा सकता है।

'वज्रादपि कठोराणि,
मृदूनि कुसुमादपि'।

राजनीति में कठोर यही व्यक्ति अपनी सांस्कृतिक प्रवृत्तियों में कुसुम से भी कोमल हैं। श्री मुन्शी की साहित्य सृष्टि दृढ़ काव्य ही नहीं सब काल के महा उर्वर लेखकों में उन्हें स्थान दिलाएगी। अब से पहले उनके लिखे ग्रन्थों की संख्या ५५ से ऊपर जा चुकी है और इसमें जहां उपन्यास, गद्य, कहानी, नाटक आदि हैं, वहां समाज शास्त्र, राजनीति और ऐतिहासिक की खोज तथा वेदान्त और धर्म भी है। उनकी साहित्य सृष्टि उनके चिन्तन के समान ही सर्वतोमुखी हैं।

गुजराती साहित्य में पत्रकारों में महात्मागांधी और श्री मुन्शी प्रधान निर्माताओं में से हैं। इन्होंने वह शैली डाली है जिस पर अब गुजराती गद्य सदा-सदा आगे बढ़ता रहेगा।

इस प्रकार अपने सर्जनों में श्री मुन्शी ने जिन पात्र-पात्राओं का सर्जन किया है उनमें भी अनेक ऐसे हैं जो गुजराती साहित्य में शाश्वत रहेंगे। वे बनावटी पुतलियां नहीं हैं जो थोड़ी देर को तमाशा दिखाकर तिरोहित हो जायं। वे एक सच्चे साहित्य सर्जन के मानस में पलकर पुष्ट हुई शाश्वत प्रतिमाएं हैं जो सदा जीवित रहेंगी और पाठकों को जीवन देती रहेंगी। हमारे देश के लम्बे इतिहास में कितने शत कोटि नर-नारियों ने जन्म लिया होगा, वे सब प्रजापति की भंगुर सृष्टि के मार्ग से इतिहास के अनन्तर तम में लुप्त गए। जीती है व्यास, वाल्मीकि की सृष्टि। और वह शाश्वत है, यादचन्द्रदिवाकरौ जीती रहेगी। इसीलिये तो पुराने लोगों ने कहा था 'कवि प्रजापति वन्दे'। प्रजापति प्रजापति नहीं है कवि प्रजापति है—उसे मैं नमस्कार करता हूं। ऐसे कवि श्री मुंशी हैं। वे गुजराती साहित्य में अमर रहेंगे।

शाश्वत साहित्य प्रांतीय नहीं होता, देशीय और राष्ट्रीय भी नहीं होता, वह सर्व मानवों की थाति होता है। श्री मुंशी का अनुवाद अनेकों भारतीय भाषाओं में हुआ है और होगा। जैसे वे प्रांतीय सीमाओं से बद्ध नहीं हैं, वैसे ही उनका साहित्य भी सार्वजनीन है।

× × ×

जिस मानस से ये सब साहित्य मुक्ता उपजे हैं उसमें कितना रस होगा यह तो अनुमान किया जा सकता है। मुझे उनके निकट सम्पर्क में आने और उनके मानस की सांस्कृतिक गहराइयों तक पैठने के अवसर मिले हैं। इसलिये जानता हूं कि वे रस-सागर हैं। रस उनका जीवन है। जीवन के सब व्यापारों के बीच उनकी रसानुभूति कभी क्षीण नहीं होती। न राजनीति, न दुनियादारी न वेदान्त और संसार के मिथ्यात्व का भय, कोई भी उनकी 'रसिकता' को प्रभावित नहीं कर सकते। इसमें उनकी विदुषी पत्नी श्रीमती लीलावती मुंशी उनकी सहधर्मिणी हैं। जैसा श्री मुन्शी जी ने स्वयं कहा था 'हम दोनों बसन्त के पंछी हैं। जब तक बसंत रहेगा हम अपनी बोलियां सुनाते रहेंगे।' मैं यही कहता हूं कि उनका बसन्त अनन्त है। वह कवि का बसन्त है, जिसमें प्रजापति के संसार की तरह पतझड़ नहीं आती।

श्री के० एम० मुंशी

श्री मुंशी अपने जीवन में इतना जो कुछ कर पाये और कर रहे हैं उसका साधक है उनकी अनथक कार्यशक्ति। १५-१७ घन्टे काम करने के बाद भी आप भी आप उन्हें हंसते, ठिठोली करते और नए काम को उठाने के लिये उद्यत पाएंगे। इतनी क्रियाशीलता बहुत कम देखने में आती है।

कुछ वर्षों से श्री मुंशीजी का बहुत समय 'भारतीय विद्या भवन' नामक एक सांस्कृतिक केन्द्र की स्थापना में जा रहा है। प्रायः ५० लाख की सम्पत्तियुक्त यह संस्था कई कालेजों और विद्यालयों के साथ-साथ काव्य का प्रचार करने में संलग्न हैं। बम्बई में इसने एक बहुत बड़ी कमी को पूरा किया है।

हिन्दी जगत् से श्री मुन्शी का सम्बन्ध घनिष्ठ है। वे अखण्ड भारत की अखंडता का साधन हिन्दी को मानते हैं। पहले जैसे संस्कृत ने इस देश को एक बनाए रखा था, अब और भविष्य में वही काम हिन्दी करेगी। हिन्दी हमारी स्वयंसिद्ध राष्ट्रभाषा है, यह उनकी दृढ़ धारणा है। इसका प्रचार वे देर से करते आ रहे हैं। इसलिए उन्होंने हिन्दी का अभ्यास भी किया है। स्वर्गीय श्री प्रेमचन्द जी के सहयोग से उन्होंने एक मासिक पत्र की सृष्टि भी सार्वदेशिक सेवा के लिए की थी। अब वर्षभर से वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति हैं। उनके सहयोग से बम्बई में हिन्दी के काम को विशेष प्रगति प्राप्त हुई है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि उनका हिन्दी जगत् के साथ सम्बन्ध क्षणिक नहीं नित्य है – वह सदा रहेगा।

श्री मुंशी ६० वर्ष के हो गये हैं, परन्तु उन्हें देखने से कोई यह मानेगा नहीं कि उनकी यह आयु है। उनमें २५ वर्ष के युवा जैसी क्रिया-शक्ति और जीवनी शक्ति है। उनके लिए वर्षों का आवागमन अधिक कार्य के लिए आह्वान का सन्देश लाता है, विराम का नहीं। भगवान् से यही प्रार्थना है कि उन्हें चिरायु करें।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

★ वीर ★

अर्जुन

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

सोमवार १६ पौष सम्वत् २००३

श्री वियोगी हरि का सम्मेलन के अध्यक्ष पद से भाषण

इस वर्ष अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन का ३४ वां वार्षिक अधिवेशन एक अ-हिंदीभाषी और मुस्लिम बहुल प्रान्त—सिंध, में हुआ तथा सम्मेलन अध्यक्ष पद पर भी तपस्वी और गांधीजी के भक्त व्यक्तिको बिठाया गया है। इस कारण हिंदीप्रेमी लोग अत्यन्त उत्कण्ठा से सम्मेलन के अध्यक्षपद से भाषा सम्बन्धी नीति की घोषणा की प्रतीक्षा कर रहे थे। हिंदीप्रेमियों को यह जान कर सन्तोष हुआ कि सम्मेलन के वर्तमान सभापति ने अत्यन्त दृढ़ शब्दों में न केवल सम्मेलन की भाषा सम्बन्धी नीति का समर्थन किया है अपितु 'साम्प्रदायिक ऐक्य-साधन की धुन में भाषा को जान-मान कर बिगाड़ने' वालों की मधुर भर्त्सना भी की है। पूज्य गांधीजी के आन्दोलनों के परिणामस्वरूप जिस नई भाषा 'हिंदुस्तानी' को जन्म दिया गया है, तथा जिस हिंदुस्तानी का आजकल पूज्य गांधी जी के साप्ताहिक पत्र 'हरिजन-सेवक' में प्रयोग किया जा रहा है उसका भी आपने विरोध किया है।

यह एक आश्चर्य का विषय है कि भाषा-विज्ञान के सामान्य नियमों की उपेक्षा करके जिस हिन्दुस्तानी भाषा की सृष्टि की जा रही है उस भाषा का न तो सांस्कृतिक दृष्टि से, न ऐतिहासिक दृष्टि से और न ही अभिव्यञ्जना की दृष्टि से, इस देश से सम्बन्ध है। अभी तक हमारे राष्ट्र की व्यापक भावनाओं को व्यक्त करने का साधन अति प्राचीन काल से संस्कृत और प्राकृत मूलक भाषाएं ही रही हैं। इसलिए राजनीतिक प्रचारकों द्वारा किये जाने वाला भाषा सम्बन्धी यह प्रचार कि 'उत्तरी भारत में बोली जाने वाली भाषा न हिन्दी है न उर्दू है फिर भी जो हिन्दी और उर्दू की मिलावट से बना है — उसे वहां हिन्दुस्तानी कहते हैं और वही वहां की जनभाषा है', वैज्ञानिक सत्य का परिहास है तथा अप्राकृतिक समझौतों द्वारा परिस्थितियों का सामना करने की अपेक्षा उनकी ओर से आंखें मूंदने जैसा प्रयास है। सम्मेलन के सभापति श्री वियोगी हरिजी की यह घोषणा 'भारतवर्ष का कम से कम चार-पांचवां हिस्सा प्रकृति से ही संस्कृत शब्दों को समझता है', और 'हिन्दी की शरीर-रचना में संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्दों का रहना स्वाभाविक है, उन्हें वह छोड़ नहीं सकती' न केवल स्वागत योग्य है अपितु भाषाविज्ञान को ताक पर उठा कर रखने वाले राजनीतिक प्रचारकों को एक उचित उत्तर भी है।

श्री वियोगी हरि ने श्रीनरसिंह चिन्तामणि केलकर का यह वाक्य उद्धृत करके कि 'मराठी और हिन्दी के बीच जो नाता पहले से है, वह संस्कृत भाषा के कारण ही है।' प्रान्तीय भाषाओं से हिन्दी के सम्बन्ध के सहज और स्वाभाविक कारणों पर प्रकाश डाला है। आज जिन प्रदेशों में उर्दू नहीं भी बोली जाती परन्तु राजभाषा के रूप में विद्यमान है वहां भी जनभाषा का जो रूप है वह प्राकृतमूलक होने के कारण हिन्दी के अधिक निकट है। इसके उदाहरणस्वरूप पंजाब में बोली जानीवाली भाषाओं—पंजाबी और मुलतानी आदि को उपस्थित किया जा सकता है। सिन्ध में भी एक लम्बे काल से सिन्धी को अरबी और फारसी का जामा पहनाने का प्रयत्न किया जा रहा है, इस प्रयत्न में राजनीतिक प्रचारकों ने असन्दिग्ध रूप से आंशिक सफलता भी प्राप्त की है, तो भी सिन्धी के जनप्रिय रूप का आज भी गौरव से 'संस्कृत-निष्ठ' और प्राकृतमूलक कहा जा सकता है। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये कि इस समय भारतीय जनता में जागृति की लहर उत्पन्न हो गई है, उसको देशभाषा को कोई भी विदेशी जामा पहनाने से जनता भड़क उठेगी। दक्षिण भारत में हिन्दुस्तानी परीक्षाओं में उर्दू लिपि की अनिवार्यता के कारण परीक्षार्थियों का सम्मिलित न होना, जनभावनाओं के विद्रोह का एक स्पष्ट परन्तु शिष्ट संकेत है।

हिन्दीभाषियों के असंतोष का रेडियो-विभाग भी एक प्रमुख कारण है। पिछले एक लम्बे काल से रेडियो को उर्दू का प्रचार का साधन बनाया जा रहा है और हिन्दीभाषियों के गले के नीचे बलात् अरबी-फारसी निष्ठ उर्दू भाषा को उतारा जा रहा है। यह सब भी तो हिन्दीभाषियों को विद्रोह के लिये प्रेरित करता है। 'सम्मेलन ने जिस सद्भावपूर्ण न्याय की आशा से बहिष्कार आन्दोलन उठाकर सहयोग का हाथ बढ़ाया था उसका सही उत्तर उसे अब तक नहीं मिला।' इसलिये सम्मेलन के सभापति ने यदि भारत की अन्तःकालीन सरकार से यह पूछा कि 'क्या वह इस प्रकार असंतोष बढ़ते रहना राष्ट्र के हित में अच्छा समझती है?' तो उचित ही पूछा है।

यह विशेष प्रसन्नता की बात है कि सभापति महोदय ने केवल राजनीतिक विवादों तक ही अपने अध्यक्षीय भाषण को सीमित नहीं रखा अपितु साहित्य निर्माण के नये क्षेत्रों की ओर भी निर्देश किया है। समालोचना, वैज्ञानिक साहित्य निर्माण, लोक साहित्य तथा प्रान्तीय साहित्यिक आदान-प्रदान की ओर ध्यान आकृष्ट करके हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाने की अपील की है। कहानी और कविता क्षेत्र में गम्भीर तेजस्विता और क्रियाशीलता को अपनी अनुभूतियों द्वारा उपस्थित करने की प्रेरणा की है।

देशी राजाओं से

ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल के मिशन ने आज से करीब आठ मास पूर्व रियासतों को नये विधान में सर्वोच्चसत्ता देने की घोषणा की थी। हमने उसका विरोध करते हुए उन दिनों में ब्रिटिश सरकार की एक शरारत बताया था। हमारा यह विश्वास है कि देशी राज्यों की सत्ता अंग्रेजी नीति का परिणाम था। यदि अंग्रेजों का संरक्षण रियासतों को प्राप्त न होता तो आज उनका विधान प्रजातंत्रीय हो जाता। रियासतों की प्रजा समस्त शासन सत्ता अपने हाथ में आज तक नहीं ले सकी, उसका एकमात्र कारण आज ब्रिटिश सत्ता रही है। वस्तुतः राजसत्ता प्रजा के हाथ में ही रहती है, चाहे वह प्रजातंत्र राष्ट्र हो या राजतंत्र। इटली और यूगोस्लोविया में राजा विद्यमान थे, उन्हें प्रजा ने गद्दी छोड़ने पर विवश किया। ग्रीस की प्रजा ने अपने निर्वासित राजा को फिर से बुला लिया। इंगलैंड का राजा भी अपनी गद्दी पर है तो अपनी प्रजा की सद्भावना के कारण। यह दुःख की बात है कि भारत के देशी राजा इस सीधे-सादे सत्य को समझने की चेष्टा नहीं कर रहे हैं या जानबूझ कर मचल रहे हैं। ब्रिटिश सम्राट से दी गई सनदों की व्याख्या कानूनवेत्ता कुछ हो करें, आज यह एक सर्वसम्मत सत्य है कि प्रजा में ही सर्वोच्चसत्ता रहती है। इसलिए हम भारतीय राजाओं से अपनी पूर्णशक्ति के साथ कहना चाहते हैं कि वे जिस हवा में महल बना रहे हैं, वह उन्हें कहीं का नहीं रहने देगी। यदि वे यह समझते हों कि ब्रिटिश सरकार व लग के साथ मिल कर वे अपनी स्वतंत्र शक्ति और सत्ता को अक्षुण्ण रख सकेंगे, तो वे भूल में हैं। ऐसा करके वे अपना भविष्य और भी अन्धकारमय कर लेंगे। प्रजा की उठती हुई महत्वाकांक्षाओं को रोकना आज न मि० चर्चिल के हाथ में है और न मि० जिन्ना के। आज दूरदर्शिता इसी में है कि वे विधान-परिषद में भेजने के लिए स्वयं प्रजा को अपने प्रतिनिधि चुनने का अवसर दें। भारत की प्रजातंत्रीयता, अखण्ड तथा स्वतन्त्रता को स्वीकार कर स्वयं उसी का एक निष्ठावान सदस्य बनें। यदि वे ब्रिटिश सरकार के हाथों का अब भी खिलौना बने रहे, तो इटली और यूगोस्लाविया के उदाहरणों की पुनरावृत्ति भारत की ६०० रियासतों में होते देर न लगेगी, जबकि इन राजवंशों की सत्ता अतीत इतिहास की वस्तु बन जायगी।

—*—*—

चीन व फ्रांस से शिक्षा

चीन ने अपने नये विधान का निर्णय कर लिया और उसपर अमल भी शुरु हो गया। फ्रांस ने भी अपना चौथा प्रजातन्त्र-विधान बना कर उसे व्यावहारिक रूप दे दिया है। इन दोनों देशों के विधान-निर्माण की प्रगति को जिन पाठकों ने ध्यानपूर्वक पढ़ा है, वे भलीभांति जानते हैं कि विधान के निर्माण में दोनों देशों के सामने पर्याप्त बाधाएं आईं। ये बाधाएं आन्तरिक थीं। फ्रांस की आपसी दलबन्दी ने तीव्र रूप धारण कर लिया और बहुत समय तक फ्रांस किंकर्तव्यविमूढ़ता और दुविधा की स्थिति में रहा। आज भी प्रैजिडेण्ट के चुनाव में पारस्परिक संघर्ष की संभावना की जा रही है। चीन की अवस्था तो और भी बुरी रही। वहां २०५० प्रतिनिधियों में ६—७ सौ कम्यूनिस्ट प्रतिनिधियों ने कोई भाग भी नहीं लिया। पर फिर भी चीन में विधान बन गया और उसपर अमल भी शुरु हो गया। आज भारत के विधान-निर्माताओं को भी इन दो उदाहरणों से शिक्षा लेनी चाहिये और सब प्रकार की बाधाओं को पार करने के दृढ़ निश्चय के साथ अपना कार्य जारी रखना चाहिए। यदि चीन एक तिहाई प्रतिनिधियों के बिना भी अपना विधान बना सकता है, तो भारत भी बना सकता है। विधान बनाते समय बाधाएं तो आती हैं, पर उनसे डर कर विचलित हो जाना हानिप्रद होगा। आज जो विधान-परिषद बनी है, वह बाकायदा वायसराय के आदेश पर बनी है। उसी के निमन्त्रण से वह बुलाई भी गई है, उसे भंग करने की न तो कभी सहन करना चाहिए और न स्वयं कभी इसका अवसर देना चाहिए। यह विधान-परिषद का अधिकार स्वयं एक बड़ा अधिकार है, इस से अलग होकर फिर हम वहीं पहुंच जावेंगे, जहां १९३९ में थे। हमें आशा है कि आगामी सप्ताह दिल्ली में आने वाले कांग्रेस महासमिति के सदस्य इसी दिशा में विचार करेंगे और विधान-परिषद को एक सत्ताशाली संस्था बना कर आवश्यकता पड़ने पर उसी के द्वारा विरोधियों से संघर्ष करेंगे।

कांग्रेस संघ न्यायालय में नहीं जायेगी

कांग्रेस कार्य समिति ने एक लम्बा वक्तव्य दिया है, जिसमें ब्रिटिश सरकार के ६ दिसम्बर के वक्तव्य और उसके बाद पार्लमेंट में हुई घोषणाओं से उत्पन्न परिस्थिति का विवेचन करते हुए यह सम्मति प्रकट की है कि वर्तमान परिस्थितियों में प्रांतीय गुटों के निर्माण के प्रश्न पर संघ-न्यायालय का निर्णय लेना अनुचित, अवांछनीय और कांग्रेस तथा संघ-न्यायालय दोनों की शान के विरुद्ध है।

कार्यसमिति ने आगामी ५ जनवरी को दिल्ली में कांग्रेस महा-समिति की एक आवश्यक बैठक बुलाने का निश्चय भी किया है, जिससे वह नयी परिस्थितियों पर विचार करने के बाद उचित आदेश जारी कर सके।

ब्रिटिश सरकार की ओर से दिये गये अनेक वक्तव्यों की चर्चा के बाद कार्य समिति के वक्तव्य में कहा गया है कि १६ मई की योजना में कोई परिवर्तन या परिवर्धन तथा उसकी कोई व्याख्या न करने का आश्वासन दिये जाने पर भी ब्रिटिश सरकार ने गत ६ दिसम्बर को एक ऐसा वक्तव्य जारी किया है, जो स्पष्ट रूप में कई बातों में मूल योजना से जिसके कि आधार पर अब तक यह सारी प्रगति हुई है, बहुत आगे चला गया है।

कार्यसमिति ने इस बात पर खेद प्रकट किया है कि ब्रिटिश सरकार ने ऐसा रुख धारण किया है, जो उसके अपने आश्वासनों के विपरीत है और जिसने भारत के अधिकांश लोगों के हृदयों में सन्देह उत्पन्न कर दिया है। कुछ दिनों से ब्रिटिश सरकार और भारत स्थित उसके प्रतिनिधियों का रुख इस देश की कठिनाइयों और उलझनों को बढ़ाने की ओर रहा है। विधान-परिषद के सदस्य चुने जाने के बहुत समय बाद अब उनके हस्तक्षेप ने एक ऐसी नई स्थिति उत्पन्न कर दी है, जो भविष्य के लिये खतरे से खाली नहीं है।

यद्यपि कांग्रेस प्रांतीय गुटबन्दी के प्रश्न को संघ-न्यायालय को सौंपने के लिये सदा उद्यत रही है परन्तु अब जब कि अन्य कोई भी पार्टी न तो इसमें सम्मिलित होने और न उसके निर्णय को मानने के लिये ही उद्यत है, और उनमें से एक तो उस योजना के आधार को ही स्वीकार नहीं करती, तब ऐसी स्थिति में संघ-न्यायालय में जाना नितान्त अनुचित है।

राजनीतिक क्षेत्रों में इस सम्बन्ध में अटकलबाजी हो रही है कि कांग्रेस कार्य-समिति अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के द्वारा देश के सामने क्या कार्यक्रम रखेगी। यह अनुमान है कि कांग्रेस दो ही मार्ग अपना सकती है — (१) ब्रिटिश सरकार की ६ दिसम्बर की घोषणा पूर्णतः अस्वीकार कर दे। ऐसा करने में

१६ मई की ब्रिटिश मंत्री योजना की अस्वीकृति स्वतः निहित होगी। (२) या ब्रिटिश सरकार की ६ दिसम्बर की घोषणा कुछ शर्तों के साथ स्वीकार करे। ये शर्तें आसाम और सीमाप्रान्त को अपने भावी कार्यक्रम के सम्बन्ध में पूर्ण स्वतंत्रता दे देना हो सकती है, क्योंकि १६ मई की योजना के अन्तर्गत प्रांतों को पूर्ण शेषाधिकार हैं। इस सम्बन्ध में कांग्रेस एक प्रस्ताव द्वारा अगस्त ४२ में भी अपना मत स्पष्ट कर चुकी है।

बर्मा में पाकिस्तान का चालान

चटगांव के मुस्लिम वाणिज्य संघ के इस प्रस्ताव का कि अराकान के मांगदा क्षेत्र को चटगांव में मिला दिया जाय, उत्तर देते हुए बर्मा की अस्थायी सरकार के सदस्य मि० यू सा ने कहा, कि ऐसा जान पड़ता है कि कुछ बाहरी मुसलमान बर्मा में भी पाकिस्तान भेजना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि बर्मा एक प्रकार का देश होने के कारण यहां की भाषा और धर्म एक हैं; हमारे यहां ऐसी कोई समस्या नहीं है; जैसी भारत में है। मैंने बहुत ही दुख और कुछ कौतूहल के साथ यह समाचार पढ़ा है कि चटगांव का मुस्लिम वाणिज्य संघ मांगदा को पूर्वी पाकिस्तान कह सकने वाले इलाके में मिला लेना चाहता है।

मैं नहीं जानता कि यह केवल चटगांव के मुस्लिम वाणिज्य संघ की इच्छा है या सभी मुसलमानों का ऐसा मत है। परन्तु यह सच है कि कुछ बाहरी मुसलमान बर्मा में भी पाकिस्तान का चालन कर रहे हैं। यदि मांगदा के सम्बन्ध में कोई सवाल है, तो वह बर्मा के लोगों द्वारा उठाया जाना चाहिये, बाहरी मुसलमानों द्वारा नहीं। पूर्वी पाकिस्तान का इलाका एक समय बर्मा के साम्राज्य के अन्तर्गत था। बर्मा की जनता ऐसी समस्याएं नहीं खड़ी करना चाहती। हमारे यहां पहले ऐसी कोई समस्या नहीं रहीं, और हम नहीं चाहते कि कोई हमारे यहां उनकी सृष्टि करे।

युद्ध के बाद समूचे संसार में प्रादेशिक समस्याएं उठ खड़ी हुई हैं। ट्रिएस्ट, राइनलैण्ड तथा प्रशान्त के कुछ द्वीपों को उदाहरण स्वरूप रखा जा सकता है और अब जान पड़ता है कि भारत—बर्मा की सीमा के प्रदेशों का भी झगड़ा उठ खड़ा होगा। परन्तु यदि बर्मा की जनता को प्रदेश-सम्बन्धी झगड़ों में घसीटा गया तो हम यह दावा कर सकते हैं कि आसाम और अण्डेमन हमें लौटा दिये जांय और यह दावा उचित होगा।

पौंड पावने के सम्बन्ध में बातचीत

ब्रिटिश कोषाधिकारियों ने घोषित किया है कि भारत के पौण्ड पावने के सम्बन्ध में प्रारम्भिक बातचीत के लिये जनवरी के मध्य तक ब्रिटिश आर्थिक प्रतिनिधि मंडल भारत जायेगा। आशा की जाती है कि इस बातचीत से दोनों के मध्य उठे विवाद को शान्त करने तथा समस्या को हल करने में प्रारम्भिक सहायता मिलेगी।

चीन में नये विधान का निर्माण

चीन की राष्ट्रीय असेम्बली, जिसकी स्थापना ४० दिन पहले हुई थी, अन्तिम अधिवेशन में भाग लेने वाले १४८५ प्रतिनिधियों द्वारा चीन के संशोधित विधान का मसविदा तीसरे वाचन के साथ सर्वसम्मति से स्वीकृत हो गया है। विधान के मसविदे पर पश्चिमी प्रजातन्त्र तथा सनयातसेन के सिद्धान्तों की छाप है। विधान की घोषणा इसी वर्ष के प्रथम दिन की जायेगी तथा उसे २५ दिसम्बर १९४७ से कार्यान्वित किया जायेगा।

कम्युनिस्टों के बहिष्कार के कारण २०२५ प्रतिनिधियों में से लगभग १४८५ प्रतिनिधियों ने ही अधिवेशन में भाग लिया।

फ्रेंच इण्डोचीन में युद्ध स्थिति

इण्डोचीन में फ्रांस और वीटनाम की सेनाओं की सामान्य मुठभेड़ें अब नियमित युद्ध रूप में परिणत हो गई हैं। फ्रेंच सेनाएं जिस ढंग से वीटनाम के विरुद्ध तोपखाने, विमान और टैंकों का प्रयोग कर रही हैं उससे जान पड़ता है कि वीटनाम सरकार को दी गई स्वाधीनता केवल धोखा मात्र थी और वीटनाम को अब पुनः शक्ति के जोर से विजय किया जा रहा है। इस युद्ध के कारण हनोई से वीटनाम फौजों के हटने का समाचार पेरिस के पत्रों ने बड़े अभिमान से छापा। इससे यह सूचित होता है कि नये समाजवादी फ्रेंच प्रधानमंत्री श्री लियोब्लूं के साथ समझौता करने की नहीं है। नीति में किसी प्रकार के परिवर्तन न होने का यह भी संकेत है कि फ्रेंच राष्ट्रीय असेम्बली ने फ्रांस के सैनिक बजट में कमी करने के सब प्रस्ताव स्थगित कर ४१ अरब फ्रांक का समूचा का समूचा सैनिक बजट स्वीकृत कर लिया है।

इण्डोचीन के भूतपूर्व फ्रांसीसी सेनापति जनरल लेक्लर्क पेरिस से स्थिति

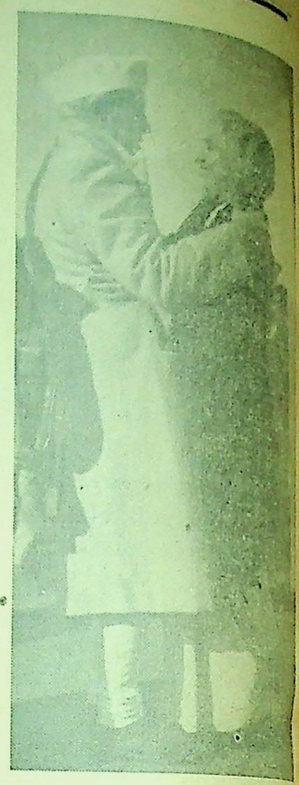

भाई बहन का स्नेह सम्मिलन

का अध्ययन करने के लिये इण्डोचीन में जा रहे हैं। दिल्ली स्थित वीटनामी प्रतिनिधि का कहना है कि इस युद्ध के लिये फ्रांसीसियों ने पहले से तैयारी आरम्भ कर दी थी। हैफांग के एक फ्रांसीसी अफसर ने एक अधिकारपूर्ण गुप्तपत्र प्रचारित किया था। उससे प्रतीत होता है कि गत २१ अक्तूबर को ही आक्रमण की योजना तैयार की थी। पत्र में आदेश देते हुए कहा था—'स्थिति अनिश्चित होने के कारण हमें किसी भी समय अपनी ही ओर से तत्काल हस्तक्षेप करने के लिए विवश होना पड़ सकता है। इसलिए हमें निम्नलिखित व्यवस्था कर लेनी चाहिये — (१) जिन क्षेत्रों में फ्रांसीसी रहते हैं उनमें से वीटनामियों को निकाल कर अपना पूरा अधिकार कर लेना (२) ऐसे प्रमुख स्थानों पर कब्जा करना, जिनसे हम शहर के मालिक बन जायं। (२) लैकट्रे सड़क को साफ करना।

सार पर फ्रेन्च अधिकार

फ्रेंच विदेश कार्यालय ने घोषणा की है कि सार प्रदेश और जर्मनी के बीच में फ्रेन्च कस्टम चौकी सरकारी रूप से स्थापित कर दी गई है। इस पर १,२०० आदमी तैनात हैं।

यहां इस कार्य को सार प्रदेश को आर्थिक दृष्टि से फ्रांस में मिलाने की ओर पहला कदम समझा जा रहा है। यह मान लिया गया है कि फ्रांस के इस कार्य की विदेश मन्त्री सम्मेलन अपने आगामी मास्को अधिवेशन में जर्मनी सम्बन्धी बातचीत के समय पुष्टि कर देगा। चार बड़े राष्ट्रों ने पहले ही इस कार्य के पक्ष में अपनी सम्मति प्रकट की है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ब्रिटेन अन्तःकालीन सरकार को मूर्ख बना रहा है

[एन० पी० एस० के विशेष सम्वाददाता द्वारा]

★

अभी कुछ दिन पूर्व ही भारत में बिलकुल नवीन ढंग के अलग-प्रयुक्त कई हजार वायुयान और लगभग ३००० ग्लाइडर नष्ट कर दिये गये हैं। ग्लाइडरों का तो एक बार भी उपयोग नहीं किया गया।

उदाहरणार्थ, पानागढ़—जो कि कलकत्ता से लगभग १०० मील पर है—और टीटागढ़ में स्पिटफायर, मस्टंग, मास्किटो, डैकोटा, कर्टिस सी ४६, डगलस सी ४७ आदि विभिन्न प्रकार के वायुयान अभी तक वर्षा में बाहर खुले पड़े हुए हैं, परिणामतः उनकी धातु जंग खा कर नष्ट होती जा रही है।

वायुयानों के वे आधुनिकतम प्रकार जिन्हें कभी भारतीय चालकों को नहीं सौंपा गया और जो केवल ब्रिटिश उड़ाकों के लिये सुरक्षित रखे जाते थे टुकड़े टुकड़े कर दिये गये हैं। उनके इंजिनों में वैल्डिंग के वैद्युतिक साधनों से इस प्रकार छेद कर दिये गये कि भविष्य में वे कभी कार्य में पुनः प्रयुक्त हो ही न सकें। थण्डरबोल्ट, वौफाइटर तथा अन्य प्रकार के जो पूर्ण धात्वीय यान औसतन २ लाख रुपया प्रति यान खरीदे गये थे उन्हें पिघाल कर सामान्य धातु के ढेर में परिवर्तित कर दिया गया, जिसका अधिकतम मू० १००) रुपये प्राप्त हुआ। पानागढ़, दमदम, इलाहाबाद, कञ्चनपाड़ा आदि स्थानों से बहुतेरे मारवाड़ियों ने वायुयान और इंजिन खरीदे हैं, जिन्हें वे पिघाल कर धातु में परिवर्तित कर देंगे। एक मारवाड़ी ने ४,००० इंजिन खरीदे हैं जिनका वास्तविक मूल्य तो १० करोड़ रुपये था पर उसे ये चार लाख में दे दिये गये। इसके अतिरिक्त भारत का करोड़ों रुपया उस विशाल कर्मचारीवर्ग पर व्यय किया जा रहा है जो कि वायुयानों के विनाशककार्य का निरीक्षण करता है।

इन अमूल्य पदार्थों को नष्ट करने के पीछे क्या भावना काम कर रही है? दिल्ली-स्थित उड्डयन-विभाग के उन ब्रिटिश अधिकारियों की क्या रहस्यमय योजनाएं हैं? इसका उत्तर यह है: भारत की स्वाधीनता निकट आती-जाती है, यह आशा की जाती है कि भारत-स्थित ब्रिटिश एजेन्ट शीघ्र ही भारत से चले जायेंगे। यह भी समाचार है कि १९४६ के अन्त तक सर फ्रैडरिक टिम्स—जो उड्डयन विभाग के उच्चाधिकारी हैं—भारत छोड़ रहे हैं। जब तक वे कार्यभार सम्भाले हुए हैं, क्यों न वे अपनी सर्वशक्तिमत्ता का उपयोग (अथवा दुरुपयोग) करें और क्यों न वे उन यानों को नष्ट करवा दें जिनकी भविष्य में भारत की राष्ट्रीय उड्डयन सेनाओं को आवश्यकता होगी? इस प्रकार स्वतन्त्र भारत को वे बाधित कर रहे हैं कि वह भविष्य में नये वायुयानों के लिये आर्डर दे और इंगलैंड का जो उड्डयन-व्यवसाय आज सुस्त पड़ा है, उसके लिये सर फ्रेडरिक कुछ कार्य प्रस्तुत कर सकें सर फ्रेडरिक टिम्स भारतके उड्डयन विभाग में लगभग १५ वर्ष से शासन कर रहे हैं, उस शासन की एक कष्टपूर्ण गाथा है। इंगलैंड की आवश्यकताओं को प्राथमिकता देने के प्रतिमापूर्ण कार्यों के लिये आपको 'सर' की उपाधि प्राप्त हुई है। सर फ्रैडरिक एक चतुर और सशक्त व्यक्ति हैं। एक अंग्रेज जो करता है वह सदा ही ठीक करता है, क्योंकि उनका निर्देशक सिद्धान्त सदा से यही था और है: 'सही या गलत—सर्वप्रथम मेरा देश इंगलैण्ड।'

सर फ्रैडरिक जाने के बाद अपने स्थान पर जिन दो व्यक्तियों को नियुक्त करवाना चाहते हैं, वे हैं सर एडवर्ड राइस और कमाण्डर वाट। ये दोनों ही व्यक्ति अपने पदों का उपयोग करने के लिये लालायित हैं जिससे भारतीय उड्डयन विभाग को निम्नतम कोटि का बनाया जा सके तथा उड्डयन की उस बृहत सामग्री को नष्ट किया जा सके जिस का मूल्य इंगलैंड ने भारत के नाम ३ अरब ८० करोड़ रुपये लिख दिया है।

जब अमरीकनों ने भारत छोड़ा तो सर फ्रैडरिक ने अत्यन्त कृपा पूर्वक सम्पूर्ण सामग्री अमरीकनों से ले ली तथा उस सामग्री का मूल्य भी अमरीका को इस रूप में दिया गया कि वह धनराशि अमरीका द्वारा भारत को दिये उधार पट्टे में जमा कर दी गयी। जनता को यह कहा गया कि यह सामग्री तो भारतीय जनता के लिये बेची ही जानी थी, क्योंकि सरकार को इसकी आवश्यकता नहीं थी।

इस प्रकार इस चतुर अंग्रेज ने एक ही पत्थर से दो चिड़ियाओं को निशाना बनाया। इस अमरीकन सामग्री का अधिकांश भाग ब्रिटिश सामग्री के साथ ही नष्ट कर दिया गया है।

इस उपयोगी सामग्री का सम्पूर्ण भाग भारत में अनुत्तरदायी ढंग से नष्ट किया जा रहा है सर्वत्र सामान को बाहर खुले में छोड़ कर, वर्षा में रख कर जान बूझ कर नष्ट किया जा रहा है। एक ओर तो अगणित कारें, ट्रक तथा इन के विभिन्न भाग बाहर पड़े-पड़े नष्ट हो रहे हैं, दूसरी ओर अंग्रेजी कम्पनियों के एजेंट यहां आकर नयी कारों और ट्रकों के लिये आर्डर बुक कर रहे हैं। ये कारें और ट्रक इंगलैंड के कारखानों में अब बन रही हैं।

इंगलैंड भारत का बहुत बड़ा देनदार है, इसलिये भारत यह मांग कर सकता है कि इंगलैंड की जो युद्ध सामग्री भारत में पड़ी है जो और कम के योग्य है वह इंगलैंड को दिये कर्ज की एक आंशिक जमानत के रूप में भारत को दे दी जाय। पर इंगलैंड इस बात को सुनना भी नहीं चाहता क्योंकि वह तो अपने व्यवसाय की रक्षा ही दूसरों के धन से कर रहा है और विश्व के विभिन्न बाजारों पर दूसरों के ही धन से अधिकार किये हुए हैं। इस प्रकार भारत का अरबों रुपये का दुरुपयोग किया जाता है, भारत को हानि पहुंचायी जाती है और इंगलैंड का भला किया जाता है। यह सब दिल्ली स्थित गोरों द्वारा किया जाता है, भारत के इसी नाश कार्य के लिये उन्हें वेतन दिये जाते हैं, उस वेतन का धन भारतीयों से वसूल किया जाता है।

आज छोटे से छोटे देशों में वायुयानों की फैक्ट्रियां हैं। युद्धकाल में भारत को भी इस प्रकार का अवसर प्राप्त हुआ था कि वह वायुयान का निर्माण कार्य आरम्भ कर सके। एक वायुयान-शिल्पी सयोग से भारत में आया और इसके उड्डयन सम्बन्धी अनुसन्धानों ने इस युद्ध में निर्णायक स्थिति उत्पन्न करने में सहायता दी थी, इस विशेषज्ञ की सहायता से एक भारतीय पूंजीपति ने भारतमें वायुयान निर्माण के लिए एक योजना सर फ्रैडरिक के सम्मुख उपस्थित की, परिणामतः वह विदेश विशेषज्ञ नजरबन्द कर दिया गया और साथ ही इस विशेषज्ञ के संपोषकों में से एक उड्डयन का भारतीय विशेषज्ञ भी जेल में भेज दिया गया। १९४२ या १९४३ में लगभग ७० अमरीकन वायुयान-इन्जीनियर भारत में आये, परन्तु भारत सरकार ने उन्हें भारत से बाहर निष्कासित कर दिया। तबसे अब तक भारत ने एक भी वायुयान नहीं बनाया। एबीसीनिया, जिसकी आबादी कठिनाई से १० लाख है, १९३३ से अपना निर्माण-कार्य कर रहा है, परन्तु ४० करोड़ का भारत जानबूझ कर यान-निर्माण-कार्य से रोक दिया गया।

× × ×

विशिष्ट स्वार्थों के कारण भारत को इस क्षेत्र में भी 'अशिक्षित' रखने का प्रयास किया गया। भारत में उड्डयन के लिए जो कुछ किया जाता है वह केवल-मात्र ब्रिटिश उड्डयन व्यवसाय को पोषण देने के लिए, अंग्रेज अफसरों को और उनके आश्रितों को पालने-पोसने के लिए। उड्डयन-विभाग को सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय बनाने के जो भी प्रयत्न किये गये उन्हें पूर्णतया विफल कर दिया गया। कुछ दिन पूर्व इंगलैंड की भारत के प्रति सहानुभूति जागी और उसने भारत की उड्डयन स्थिति का अध्ययन करने के लिए एक मिशन भेजा था और उस 'मिशन ने एक दसमुखी योजना तैयार की जो कि 'टाइम्स आफ इण्डिया' के १.६.४६ तथा ४.८.४६ के अंकों में प्रकाशित हुई थी। इस योजना के अनुसार भारत में एक आधुनिक साजसज्जा से युक्त फैक्ट्री खोलने का विधान था जो कि अंग्रेजों द्वारा ही संचालित होती और जिस पर आगामी पांच वर्ष में 'केवल-मात्र' १ करोड़ २० लाख रुपया व्यय आता। यह सम्पूर्ण योजना एक धोखा मात्र थी जो कि भारतीय आवश्यकताओं के लिये भी अपर्याप्त थी। भारत में ठोस उड्डयन व्यवसाय को स्थापित करने के लिये भारत भर में एक फैक्ट्री स्थापित करना तथा उसे ही एकाधिकार दे देना नितान्त अनुचित है।

× × ×

यदि आज भारत ने सम्पूर्ण युद्ध-सामग्री पर अधिकार नहीं किया तो यही ब्रिटिश लोग ही एक दिन यह बहाना करेंगे कि भारत का आर्थिक स्थिति बहुत अधिक अस्तव्यस्त थी और यही एक बहुत बड़ा प्रमाण है कि अंग्रेजों ने भारत छोड़ने में एक बहुत बड़ी भूल की थी। तब उन्हें भारत का वर्तमान अन्तःकालीन सरकार को बदनाम करने तथा उसे अयोग्य सिद्ध करने के बहाने भी प्राप्त हो जायेंगे।

इस समय जो सामग्री बाहर धूप वर्षा और अन्य अनेक प्रकार से नष्ट की जा रही है उसे तत्काल सुरक्षित करवाने का प्रयत्न करना चाहिये और उसे भारतीय राष्ट्रीय सेनाओं के लिये सुरक्षित रखना चाहिये। बहुत सी सामग्री जो कि सरकारी कार्य के अनुपयुक्त हो नागरिक उपयोग के लिये दे दी जाय। बहुत सी सामग्री को देश के युवकों के लिए सुरक्षित कर देना चाहिये जिससे उन्हें ग्लाइडरों पर कार्य करने के लिये शिक्षण प्राप्त हो सके। कुछ सामग्री का उपयोग देश की आन्तरिक सुरक्षा चौकियों के लिये प्रयुक्त किया जा सकता है।

में हिन्दी का सब से अधिक हाथ रहा है। फिर हिन्दी को खास सम्प्रदाय की भाषा कहने का कौन साहस करेगा ? हिन्दी का उर्दू से न वैर है, न उससे कोई भय; वह तो उसकी ही अपनी एक विशिष्ट शैली है।

'रेडियो' की हिन्दुस्तानी

राष्ट्र-भाषा हिन्दी का रेडियो की हिन्दुस्तानी-नीति से काफी अहित हुआ है। हमारे हजार विरोध-प्रदर्शन करने पर भी उसकी नीति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। सम्मेलन तो अपना निश्चित मत स्पष्ट कर चुका है। 'एक भाषा' का सम्मेलन भी समर्थक है। समन्वय से वह घबराता नहीं। किन्तु राष्ट्र की बहुत बड़ी जन-संख्या में समझी जाने वाली हिन्दी की बलि देकर या उसे बुरी तरह विकृत करके 'एक भाषा' बनाने का वह अन्ध समर्थक नहीं है। समन्वय, न्यायसंगत और स्वाभाविक होना चाहिए। राष्ट्रीयता के तथा भाषा-विज्ञान के स्थिर सिद्धान्तों के आधार पर ही 'एक भाषा' का निर्माण हो सकता है। उस 'एक भाषा' के नाम पर कोई खास बहस नहीं, यद्यपि 'हिन्दी' नाम सब से अच्छा है। हमें तो उसके 'स्वरूप' से मतलब है। यदि सम्मेलन के तर्क-संगत सुझावों के अनुसार एक भाषा-निर्माण का प्रश्न सम्भव न दीखता हो, तो फिर खबरों को हिन्दी और उर्दू में अलग-अलग 'ब्राडकास्ट' किया जाये और इसी प्रकार विभिन्न रेडियो-स्टेशनों से प्रान्त की जन-संख्या के उचित अनुपात से दूसरे प्रोग्राम भी सुनाये जाया करें। रेडियो की वर्तमान हिन्दी घातक नीति का अन्त तुरन्त होना चाहिये। हिन्दी-जगत् में फिर अन्दर ही अन्दर रेडियो-विभाग की इस उपेक्षा नीति से असन्तोष और क्षोभ बढ़ रहा है। क्या भारत-सरकार इस प्रकार असन्तोष का बढ़ते रहना राष्ट्र के हित में अच्छा समझती है ?

एक गलत प्रचार

भारत के उन प्रान्तों में, खासकर दक्षिण में, जहां 'हिन्दी' बोली नहीं जाती, कुछ दिन से यह मत फैलाया जा रहा है कि शुमाली यानी उत्तरी हिन्दुस्तान में यह जबान बोली और बरती जाती है—जो न हिन्दी है और न उर्दू, फिर भी जो हिन्दी और उर्दू की मिलावट से बनी है — उसे वहां हिन्दुस्तानी कहते हैं और वही वहां की आमफहम भाषा है। एक जिम्मेवार सज्जन ने तो यहां तक कह डाला कि हमारे लिए तो संस्कृत-निष्ठ हिन्दी और अरबी-फारसी के लफ्जों से लदी उर्दू ये दोनों ही एक जैसी अजनबी हैं। जबरदस्ती कौमियत कायम करने के लिए भारत राष्ट्र का सब-कुछ बलि कर देने की तैयारी हो

हिन्दुस्तानी उर्दू का ही भद्दा रूप है

[पृष्ठ ३ का शेष]

रही है। इसके अलावा कुछ ऐसे विद्वानों की व्यवस्थाएं भी कर ली गई हैं, जिन्होंने जान या अनजान में ऐतिहासिक और सांस्कृतिक तथ्यों की तोड़-फोड़ की है और कुछ नये आविष्कार भी किये हैं। भाषा-विज्ञान के विद्वानों के मतों की उपेक्षा की गई है। हिन्दी भाषा तथा साहित्य के इतिहास के पन्ने उलटने की आवश्यकता नहीं समझी गई। चूंकि उद्देश्य जबर्दस्त कौमियत कायम करने का रहा है, इसलिए स्वभावतः प्रायः ऐसे पंडितों का सहयोग प्राप्त किया गया है जो राजनीतिक समझौतों और सौदों के बल पर साम्प्रदायिक एकीकरण की सम्भावना में विश्वास करते हैं। इसी हेतु को साधने के लिए नये-नये तर्कों द्वारा तरह-तरह का प्रचार किया जा रहा है। मैं उन तर्कों के अनावश्यक विस्तार में उतरना नहीं चाहता। इतना ही कहूंगा कि हजार प्रचार करने पर भी कोई इस प्रखर सत्य पर पर्दा नहीं डाल सकता कि 'भारतवर्ष का कम-से कम चार-पांचवां हिस्सा प्रकृति से ही संस्कृत शब्दों को समझता है', इसलिए उसकी दृष्टि में संस्कृतमूलक हिन्दी 'अजनबी' हो नहीं सकती। हिन्दी की शरीर रचना में संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्दों का रहना स्वाभाविक है; उन्हें वह छोड़ नहीं सकती। उसकी जिस संस्कृत-निष्ठता पर आज आक्षेप किया जाता है वही तो उसकी लोक-व्यापकता का मूल कारण है। सम्मेलन के पूना-अधिवेशन में श्रीनरसिंह चिंतामणि केलकर ने यह बिल्कुल सही कहा था कि — 'मराठी और हिन्दी के बीच जो नाता पहले से है वह तो संस्कृत भाषा के कारण ही है।' हिन्दी को संस्कृतनिष्ठ' कहना ही गलत है। हिन्दी तो हिन्दी है।

हिन्दी की विशिष्ट शैली उर्दू को जो सीखना चाहते हैं शौक से सीखें। हमारी उनके साथ कोई बहस नहीं। उर्दू के लहलहाते बाग से कितने ही अच्छे खुशबूदार फूल चुने जा सकते हैं। उसमें सैर करने को कौन मना करता है ? यदि बने तो फारसी-साहित्य का भी ज्ञान-लाभ कर सकते हैं। हमारा किसी भी भाषा और उसके साहित्य से विरोध नहीं। किन्तु संस्कृतमूलक या संस्कृतयुक्त भाषा-भाषियों पर उर्दू को और हिन्दुस्तानी के नाम से परिचित नई कौमी जबान को, जो उर्दू का ही एक भद्दा रूप है, लादा नहीं जा सकता।

गांधीजी ने राष्ट्र-भाषा हिन्दी की अनुपम सेवा की है। सम्मेलन उनका सदा ऋणी रहेगा। आज दुर्भाग्य से भाषा के प्रश्न पर हमारा उनके साथ मत-भेद हो गया है। मत-भेद प्रकट करते समय हमारी तर्क-शैली और भाषा में अविनय नहीं आनी चाहिए। हमें यह न भूलना चाहिये कि गांधीजी के त्याग-पत्र का अर्थ सम्मेलन का परित्याग नहीं है। उन्हीं के शब्दों में, उनके सम्मेलन से निकलने का अर्थ 'सम्मेलन की अर्थात् हिन्दी की ज्यादा सेवा करना है।'

राष्ट्र-भाषा विषयक प्रश्न के समाधान के लिए अटूट श्रद्धा, उत्साह और त्याग की आवश्यकता है। सम्मेलन यदि इन शक्तियों को प्राप्त कर लेगा, तो गांधीजी को जीत लेने में उसे देर नहीं लगेगी।

आश्चर्य और क्लेश होता है जब यह देखने में आता है कि हमारे कुछ आधुनिक सुकवि भी यथार्थवादिता की और प्रगतिशीलता की ओट में प्रकारान्तर से हीन उद्दाम वासना को लाक्षणिक रचनाओं द्वारा अनुचित उत्तेजन देते हैं। ऐसी रचनाओं में जो क्षणिक रस उपलब्ध होता है वह तो उन्मादक है। सच्चा आनन्द-रस तो उच्छृंखल चित्त-वृत्तियों के निरोध से उपलब्ध होता है। 'फिसलन' को हम सहज-वृत्ति नहीं कहेंगे। प्रगति तो हमारी ऊंचे चढ़ने में है। प्रियतम की सहज सेज तो 'गगन मंडल' में, अथवा 'सूली' के ऊपर है—किसी गढ़े में वह साजन अपनी सेज लगाने नहीं गया। गढ़े में तो कर्दम-ही-कर्दम है। हां, उत्पत्ति कमल की कर्दम से भले ही हुई हो, पर आनन्द-विकसित तो वह 'ऊपर ही' ऊंचे पर ही हुआ है। किंतु इस आलोचना का यह अर्थ न लिया जाये कि इस कोटि का पुराना अथवा नया साहित्य सारा ही निम्न या हीन श्रेणी का है। मनोविज्ञान का अध्ययन उसमें से भी हम कर सकते हैं। रीतिकाल का शृंगारी साहित्य भी तत्कालीन भारत की विशेष भावनाओं का ही तो एक प्रतीक है।

मैथिलीशरण तथा एक-दो सुकवियों को हम छोड़ दें तो राष्ट्र की गम्भीर तेजस्विता का प्रतिनिधित्व भी लगभग सूना सा ही दिखाई देता है। राष्ट्र के कवि की भावनाओं को क्रियाशीलता से ज्वलन्त प्रेरणा नहीं मिली, फिर वह राष्ट्र की चेतना और अचेतना के साथ एकाकार हो तो कैसे ? किसान और मजदूर के गीत तो उसने रचे हैं, पर खेत और कारखाने की कठोर अनुभूतियां स्वयं प्राप्त करने वह वहां कब गया ? समाज के निम्नस्तर के साथ एकाकार हुए बिना वह युग की वाणी का सच्चा प्रवक्ता नहीं हो सकता।

फिर भी, कुल मिलाकर, हमारे हिंदी साहित्य का कविता-भाग दूसरी कई भाषाओं के मुकाबले काफी समृद्ध है। पद्य-साहित्य की आलोचना के आदि में मैंने जिस ऊंची भूमिका की ओर संकेत किया है, उसे भी छूने का कुछ कवियों ने प्रयास किया है; उसमें वे सफल भी हुए हैं। 'कामायनी' 'यशोधरा' और 'उर्मिला' ('साकेत' की उर्मिला से मेरा आशय है) ये तीनों ऐसी कलाकृतियां हैं, जो स्वर्गंगा के समान चिरकाल तक हमारे जीवन-अंचल पर अपनी दिव्य प्रभा बिखेरती रहेंगी।

हिन्दी साहित्य को भ्रष्टता प्रचार का साधन बनाने की बजाय उच्चस्तर पर लाने की अपील साहित्यकारों से करते हुए श्री हरिऔध जी ने सम्मेलन के सम्बन्ध में कहा—

सम्मेलन ने जिन परिस्थितियों में कार्य किया उनको बहुत अनुकूल नहीं कहा जा सकता। न उसे राज-सत्ता से प्रोत्साहन मिला, न जैसा चाहिए वैसा श्रीमन्तों से, और न देश के हिन्दी विद्वानों से। राज्य से उसे प्रोत्साहन मिल भी नहीं सकता था। उसने सम्मेलन को सन्देह की ही दृष्टि से देखा। श्रीमन्तों ने भी प्रायः उपेक्षा की; हिन्दी के काम को उन्होंने शीघ्र फलदायक नहीं समझा। हमारे विद्वानों ने राजभाषा अंग्रेजी में लिखना शायद अधिक गौरवपूर्ण माना। सम्मेलन को बड़ी विषम परिस्थितियों में से गुजरना पड़ा। सीमित साधनों को लेकर वह अपनी जीवन-यात्रा तय कर रहा है। विरोध और अप्रिय असहकार का सामना उसने विनम्रतापूर्वक किया है। उसने अपने अस्तित्व को विनाश के मुख से बचाया है। उसने कभी भी साहित्यिकता का तथा राष्ट्रीयता का अहित नहीं किया।

सिन्ध-वासियों से निवेदन

सिन्ध की बहिनों और भाइयों से मेरा इतना ही निवेदन है कि आप लोग अपने सिन्धी भाषा के साहित्य को समुन्नत और लोकव्यापी बनाने तथा राष्ट्र-भाषा हिन्दी से अपना साहित्यिक सम्बन्ध स्थापित और दृढ़ करने के लिये देवनागरी लिपि को स्वीकार करलें। सरकारी लिपि भले ही दूसरी लिपि हो, पर आपकी लोक-लिपि तो देवनागरी ही हो सकती है। सिंधी के विद्वान डा० ट्रम्पने, १८७२ में प्रकाशित, अपने सिन्धी भाषा के व्याकरण में लिखा है—

'संस्कृत वर्णमाला ही सिन्धी वर्णमाला के लिए सबसे अधिक उपयुक्त है, क्योंकि सिन्ध भाषा संस्कृत-प्राकृत की सच्ची पुत्री है।' अरबी लिपि को तो १८५३ में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के डायरेक्टरों ने प्रयोग के रूप में यहां चलाया है। सिन्ध के सभी राष्ट्र-प्रेमियों से मेरा अनुरोध है कि वे इस लादी हुई अवैज्ञानिक लिपि का मोह छोड़ दें और उसके स्थान पर अपनी राष्ट्र-लिपि देवनागरी को अविलम्ब स्वीकार करलें। सिन्धी साहित्य की सर्वाङ्गीण उन्नति देवनागरी लिपि के द्वारा ही हो सकेगी।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वैज्ञानिकों की गवेषणा

वनस्पति घी घातक विष है

[श्री० एस० डी० सिंह, बी० एस० सी एफ० आई० आई० एस० टी०]

आज जब कि भारतवर्ष के पूंजीपतियों और सरकारी अधिकारियों के सहयोग से वनस्पति घी के रूप में अत्यन्त विनाशक विष हमारे स्वास्थ्य का निरंतर ह्रास कर रहा है, लेखक की यह चेतावनी अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

भारत सरकार के खाद्य-विभाग के सहायक मन्त्री श्री बी० आर० सेन ने एक सवाल का जवाब देते हुए केन्द्रीय असेम्बली में कहा था कि सरकार आज देश में १६ वनस्पति घी के कारखानों को सहायता दे रही है। उन्होंने यह भी सूचित किया था कि इस बात का पता लगाया जा रहा है और अब तक निश्चय नहीं हो पाया है कि आया यह घी इसके इस्तेमाल करने वालों को वास्तविक नुकसान पहुंचाता है। सचमुच यह एक अफसोस की बात है कि एक विषय जो राष्ट्रीय स्वास्थ्य की दृष्टि से इतने महत्व का है, इस लापरवाही के साथ देखा जाय और उसकी उपयोगिता के सम्बन्ध में एक सन्देहात्मक वातावरण होते हुए भी इस स्कीम को इतनी शीघ्रता से चालू कर दिया जायगा।

हिन्दुस्तान में साधारणतः मूंगफली के तेल से ही यह घी तैयार किया जाता है। इस तरीके में तेल के तेजाब (एसिड) को अधिक मात्रा में कम कर देना, उसके रंग को दूर करना तथा उसे गंध-हीन बनाना आदि शामिल हैं। रासायनिक तथा भौतिक दृष्टि से ये तरीके उतने आपत्तिजनक नहीं हैं, जितना कि अन्तिम तरीका है। इस अन्तिम तरीके में क्या होता है? एसिड, गंध तथा रंगहीन तेल में, १८० से लेकर २०० शतांश (सेंटीग्रेड) के तापक्रम पर 'निकल' धातु के जागृत और बारीक चूर्ण की मौजूदगी में हाई-ड्रोजन गैस प्रवेश कराया जाता है। इस तरीके को प्रयोग में लाने का केवल एक ही मतलब है और वह यह है कि जो तेल पहले जम नहीं सकता था अब घी की तरह जमने लगता है, और इस तरह जमकर तेल घी की तरह दिखलायी देता है। यह वैज्ञानिक सत्य है कि न जमने वाला तेल या घी जमने वाले से अधिक आसानी से हजम हो जाता है। प्रत्यक्षतः इस जमाने वाले तरीके का फल, जिसके खर्च में ७५ फीसदी उन मशीनों वगैरह की कीमत शामिल है, जो उन वनस्पती घी के कारखानों में लगी हैं, यह होता है कि इस खाद्य-पदार्थ का मूल्य बढ़ जाता है और साथ ही खाद्य-पदार्थ की उपयोगिता घट जाती है।

अत्यन्त अवास्थ्यकर

सरकार वनस्पति घी के उद्योग को लम्बा जीवन प्रदान करने का प्रयत्न कर रही है। इस समाचार को पढ़कर कुछ मास पहले कलकत्ता के डा० सुन्दरी मोहनदास ने इसके विरोध में अपनी रोगशैया से अपनी कमजोरी किन्तु सच्ची आवाज उठाई थी। इस घी के सम्बन्ध में कोई जानकारी न रखने वाली जनता के साथ जो धोखा किया जा रहा है उसको उन्होंने थोड़े में बतलाया था। उन्होंने इस विषय पर बम्बई बैक्टीरियोलोजिकल लैबोरेटरी, परेल के डाइरेक्टर जनरल पी० पी० मैकी आई० एम० एम० तथा डा० प्लाइमर के अधिकारी राय को भी उद्धृत किया था। उन लोगों का कहना है कि इस घी के खाने वालों

> के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है और वह सूखा रोग, खराब दांत और कम शारीरिक बढ़ाव के रूप में प्रकट होता है।

उन्होंने कैप्टेन डी० आर० टामस, आई० एम० एस० पंजाब के प्रसिद्ध प्रयोग का भी हवाला दिया था जिसमें उन्होंने यह साबित किया था कि इस घी के खाने वालों का स्वास्थ्य गिर जाता है। बंबई की प्रान्तीय सरकार तथा काश्मीर, कपूरथला, राजपूताना, सेंट्रल इंडिया और अलवर राज्यों का--कानून बनाकर इस घी का इस्तेमाल बन्द करने का प्रयत्न आज एक प्रत्यक्ष बात है।

किन्तु बंगाल सरकार के रासायनिक परीक्षक श्री के० एन० बाग्ची इस घी के प्रयोग के पक्ष में अपने विचारों को लेकर सामने आये और उन्होंने डा० एस० एम० दास के विचारों की कटु-आलोचना की।

वे इस लेख में वनस्पति घी सम्बन्धी डा० बाग्ची द्वारा दिये गये वैज्ञानिक अध्ययन तथा उनके द्वारा उठाये गये सब आलोचनात्मक प्रश्नों के बारे में तथ्यों का जिक्र किया है। उनकी एक बात यह थी कि बंगलौर के इम्पीरियल डेयरी रिसर्च इंस्टीट्यूट तथा अन्य स्थानों पर किये गये अनुसंधानों ने साबित कर दिया है कि 'जहां तक शारीरिक बढ़ाव तथा जनशक्ति से संबंध है, असली घी और वनस्पति घी के पौष्टिक मूल्य में अधिक अन्तर नहीं है।' यह अनुमान गलत है। इसको असत्य सिद्ध करने के लिए मैं पाठकों का ध्यान १९४६ के बंगलौर में साइंस कांग्रेस सप्ताह में 'वनस्पति घी' पर हुए वैज्ञानिक वादविवाद की कार्यवाही के आलोचनात्मक विवरण की ओर आकर्षित करता हूं। अपने देश के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों और साथ ही वनस्पति घी पर प्रमुख अनुसन्धानकर्ताओं की उपस्थिति में इस विषय पर सम्मिलित विचार-विमर्श हुये। यह इस घी के पौष्टिक मूल्य की समस्या के सम्बन्ध में अन्तिम वैज्ञानिक ज्ञान है।

इस बहस में बम्बई के डा० वी० एन० पटवर्धन ने बतलाया कि जानवरों के शारीरिक बढ़ाव तथा जननशक्ति पर इस घी का बिल्कुल उल्टा असर पड़ता है। उनकी खोजों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सब दृष्टिकोणों से, यानी

> शारीरिक बढ़ाव, स्वास्थ्य कायम रखना, सन्तानोत्पत्ति तथा दूध उतरना मक्खन सब से श्रेष्ठ हैं। दूसरी बातों से जो साइन्स कांग्रेस को मालूम हुई, यह पता चला कि इस घी का कुपरिणाम जानवरों (चूहे, खरगोश और सूअर) के जिनको यह घी खिलाया गया था, दूसरे और तीसरे पीढ़ी के सन्तानों में अत्यन्त नाटापन, नपुंसकता और निकृष्ट स्वास्थ्य के रूप में दिखलाई पड़ता है।

वनस्पति तेल अधिक अच्छा

उस बहस में सम्मलित होने वाले वैज्ञानिकों की अन्तिम तथा निर्विरोध राय स्पष्ट और अभ्रामक थी। वे कहते हैं और सलाह देते हैं कि — 'यदि खर्च कर सकते हो तो मक्खन खाओ, नहीं तो बिना इसका ख्याल किये कि कौन अच्छा है, कोई भी खाने वाला तेल खाया करो। राष्ट्रीय दृष्टिकोण से वनस्पति घी, जिसकी प्रसिद्धि आज इतनी विषैली मात्रा तक पहुंच चुकी है, मक्खन घी से केवल निम्नतर ही नहीं है, बल्कि खाने वालों को बहुत हानि पहुंचाता है।' आज से कई वर्षों पहले सन १९३० में इण्डियन इन्स्टिट्यूट आफ साइन्स के श्री पी० रामस्वामी ऐयर ने भी इसी विषय पर हुई बहस में इस वनस्पति घी के प्रयोग के विरुद्ध में इन्हीं विचारों की वकालत की थी।

श्री एम०एन० बाग्ची ने १९२७ ई० में कुछ वैज्ञानिक अनुसंधान करने का दावा किया है और इस नतीजे पर पहुंचे कि कुछ वनस्पति घी तेल जैसे सरसों और तिल इत्यादि, जहां तक शारीरिक वर्धन परिसरों का सम्बन्ध है, मक्खनिया घी से कहीं अच्छे हैं और यह कि शुद्ध घी केवल बीमारों और कमजोर लोगों के लिए ही उपयुक्त है। इस सम्बन्ध में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि हमने शुद्ध घी और तेल का साथ-साथ प्रयोग किया है और घी और तेल में क्या अन्तर है, यह जनता को अच्छी तरह मालूम है। कोई भी वैज्ञानिक अनुसन्धान, जो यह साबित करता है कि मक्खन तेल से निम्न कोटि का है, निश्चय ही भ्रामक है।

क्रम पाचक

वनस्पति घी का द्रवणबिन्दु भी एक अत्यावश्यक विचारणीय बात है। श्री बाग्ची ने भी स्वयं यह साफ-साफ स्वीकार किया है कि हिन्दुस्तानी वनस्पति घी का द्रवण-बिन्दु साधारणतः ३७°८ (यानी हमारे शरीर के साधारण तापक्रम) से अधिक होता है और यही कारण है कि ऐसे तैयार किये हुए तेल कठिनाई से पचते हैं। वास्तव में होना यह है कि वह घी,

> जिसका द्रवण-बिन्दु शरीर के ताप-क्रम से अधिक होता है या तो गलता ही नहीं या शरीर के भीतर जाते ही जम जाता है और इसलिए यह उस घी से, जो पेट के अन्दर पहुंचते ही गल जाता है, कम पाचक होता है। स्वयं मुझे आज तक कोई ऐसा वनस्पति घी नहीं देखने को मिला, जिसका द्रवण बिन्दु ३८°८ से कम हो और बहुत-से ऐसे घी के नमूने के द्रवण-बिन्दु ४५°८ से लेकर ४८°८ तक होते हैं (डा० एन० एन० गाडबोले प्रिंसिपल टेकनालाजी कालेज, बनारस हिन्दू-विश्वविद्यालय की राय के अनुसार)। इतने ऊंचे द्रवण-बिन्दु का वनस्पति घी जानबूझ कर संयुक्त प्रांत के गरम जिलों तथा पंजाब में इसलिए भेजा जाता है कि वह शुद्ध घी की तरह दिखाई पड़े और अनभिज्ञ जनता को धोखा हो।

हिन्दुस्तान में रहने वाले उन विदेशियों को, जो वनस्पति घी के बड़े भारी समर्थक हैं, यह जान लेना चाहिए कि "मारगरिन" (यूरोप तथा इंग्लैंड का वनस्पति घी) का द्रवण बिन्दु ३३°८ से कम होता है और उनके वनस्पति घी के मुकाबले हिन्दुस्तानी वनस्पति घी धीरे-धीरे असर करने वाला एक विष है। यदि हमारे भारतीय उत्पादक इस तर्क को स्वीकार करते हैं और द्रवण-बिन्दु का घटा कर वैज्ञानिक ढंग से निश्चित तापक्रम ३२°८ तक जाने का निर्णय करते हैं, तो इस तरह तैयार की हुई चीज साल के अधिकांश भाग में तेल की ही तरह दिखलायी पड़ेगी और इस तरह तैयार करने का अर्थ ही अनर्थ हो जायगा। एक

बात और, इस प्रकार का वनस्पति घी शुद्ध मक्खनिया घी में खप भी नहीं सकता। अतएव पूंजीपतियों के दुर्भाग्य से वनस्पति घी का एक भारी बाजार लुप्त हो जायगा। यहां पर मैं यह सलाह दूंगा कि इन कारखानों में तेल को परिष्कृत करने के बाद की क्रिया को रोक देना चाहिए, क्योंकि इतना ही शुद्ध किया हुआ तेल घरेलु व्यवहार के लिए काफी अच्छा रहेगा और साथ ही हम वनस्पति घी की ९० फीसदी बुराइयों से बच जायंगे।

जमाने का दूषित तरीका

तेल के जमाने के तरीके में एक और दोष है और वह है तेल में 'निकल' धातु की बुकनी का प्रवेश कराना! औद्योगिक रसायन शास्त्र पर सन १९४४ की छपी और श्री जी० मार्टिन की लिखी पुस्तक में यह साफ-साफ लिखा हुआ है कि वनस्पति घी में 'निकल' अक्सर मौजूद रहता है और फी दस लाख भाग में इसका ०.५ भाग का मौजूद रहना मनुष्य शरीर के लिए हानिकारक होता है। उसी पुस्तक में इस बात पर भी जोर दिया गया है कि 'निकल' का पाया जाना ही शुद्ध घी में वनस्पति घी की मिलावट की जांच करने का एकमात्र विश्वसनीय तरीका है।

वनस्पति घी सब से पीछे

कुछ समय पहले डा० गाडबोले ने जनता की जानकारी के लिए निम्नलिखित सूची पेश की थी, जिसमें घी और खाने वाले तेल, खाद्योपयोगिता की दृष्टि से क्रमानुसार अपने महत्व रखते हैं —

१. मक्खन २. घी ३. नारियल का तेल ४. तिल या सरसों का तेल ५. मूंगफली का तेल ६. सूअर की चर्बी ७. जानवरों की चरबी ८. वनस्पति घी। डा० गाडबोले का कहना है कि वनस्पति घी लाभ पहुंचाने के बजाय निस्सन्देह हानिकारक होता है। हिन्दुस्तान में वनस्पति घी मूंगफली के तेल से तैयार होता है और ऊपर दी हुई सूची में, इस तेल का स्थान खाये जाने वाले तेलों में अन्तिम है। यह जानवरों की चरबी से भी खराब होता है।

अभी समाप्त हुए विश्व-युद्ध के प्रारम्भ में भारतीय सैनिकों को बिल्कुल मक्खनिया घी दिया जाता था। जब यह शुद्ध घी अधिक मात्रा में अप्राप्य हो गया, तो इसके बदले वनस्पति घी दिया जाने लगा। सेना के कागजात में पल्टन के मेडिकल अफसरों के रिपोर्टों को देखा जा सकता है। उसमें यह साफ-साफ कहा गया है कि इस घी के खाने वाले सिपाहियों की पाचन-शक्ति पर इस घी का बहुत बुरा असर पड़ा।

इसके अलावा यह भी दावा किया जाता है कि भारतीय घी में विटैमिन होता है। सन १९४२ में मैंने वनस्पति घी के चार नमूनों का 'रसायनिक-रंग-जांच' (जैसा कि श्री मंच द्वारा लिखित पुस्तक 'बायो-ऐसे' में वर्णन किया गया है) किया था और इन चारों में से किसी में भी विटैमिन 'बी' और विटैमिन 'डी' का चिन्ह भी नहीं पाया गया। बम्बई के श्री साराभाई प्रतापराय का कहना है कि वनस्पति घी में विटैमिन 'ए' का बिल्कुल अभाव होता है। पूर्वोक्त बंगलोर की मीटिंग में यह राय कायम की गई कि कि वनस्पति घी के उत्पादन में परिष्कृत करने तथा जमाने के जिन दो आवश्यक विधियों की शरण ली जाती है, वे ही तेल को शक्तिहीन बनाने के लिए तथा उन्हें जरूरी विटैमिनों, न जमाने वाले गुणों और दूसरे शारीरिक बढ़ाव सम्बन्धी गुणों से रहित करने के उत्तरदायी हैं। इन्डियन इन्स्टीट्यूट आफ साइन्स के फरमेन्टेशन टेकनालोजी विभाग में कुमारी डी० सोजा द्वारा किए गये प्रयोग भी इस बात का समर्थन करते हैं।

मेरा विश्वास है कि हम में से अधिकांश को यह मालूम है कि हमारे साथ के मुख्य अंग फैट, स्टार्च, प्रोटिन, और विटैमिन हैं। फिर भी लोगों की यह जरूर जान लेना चाहिये कि प्रोट्रीन (जो दालों, मांस तथा अण्डों में मिलता है) और विटैमिन (जो सब से अधिक दूध में और तब फलों और हरी तरकारियों में मिलता है) अच्छे स्वास्थ्य के लिये फैट (यानी तेल और घी) और स्टार्च (जो गेहूं, चावल और चीनी इत्यादि में पाया जाता है) से अधिक आवश्यक होते हैं। फैट और स्टार्च हमें शक्ति देते हैं और हमारे शरीर को बढ़ाते हैं, किन्तु केवल प्रोटीन और विटैमिन ही इस बने हुए शरीर को बिमारियों के आक्रमण, बुढ़ापे तथा परेशानियों से रक्षा करते हैं और शरीर को हमेशा तरोताजा रखते हैं।

इन तफसीलों को सामने रख कर, मैं यह मान लूंगा कि हमारी सरकार इस घी के गुण-दोषों के बारे में निर्दोष तथा अनभिज्ञ थी और इसलिए उसने इस सर्वसदृश उद्योग के पालन-पोषण के उपायों तथा साधनों को निकाला है। किन्तु सचमुच यह बड़े दुःख की बात है कि ऐसे स्वतन्त्र विचार वैज्ञानिकों की रायों पर, जो अपनी आत्मा और सत्य के सिवाय किसी और के गुलाम नहीं हैं, पर्दा डाल दिया जाय और निस्सहाय जनता को ऐसे आदमियों द्वारा, जो पूंजीपतियों के हाथ की कठपुतली हैं, फांसी पर लटका दिया जाय।

अस्तु अपनी अन्तःकालीन राष्ट्रीय सरकार से शीघ्र प्रार्थना की जानी चाहिए कि वह इस उद्योग को प्रोत्साहित करने वाली बिल्कुल तैयार स्कीम को कार्यान्वित करने से तुरन्त रोक दे और जनता को उन कारणों को समझा दे, जिनके दबाव में पड़ कर ये स्कीम तैयार की गई और फलतः स्वीकार कर ली गई।

अन्त में मैं इस बात को स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि उन जर्मन वैज्ञानिकों का, जिन्होंने इस तरीके को निकाला, उद्देश्य यह था कि मछली इत्यादि के तेल को साबुन के कारखानों के लिए कच्चे माल के रूप में बदल दें और साधारण वनस्पति तेलों को कल-पुर्जों में डालने लायक बना दें। उनका उद्देश्य इसे घी के रूप में खाद्य-पदार्थ बनाना नहीं थी।

———

★ १००) रु० इनाम ★
!! विश्व विजय यंत्र !!
सिद्ध यन्त्र। इसके धारण करने से कठिन-से-कठिन कार्य सिद्ध होते हैं। आप जिसे चाहते हैं, चाहे वह पत्थर दिल क्यों न हो आपके पास चला आवेगी। इससे भाग्योदय, नौकरी, धनकी प्राप्ति, मुकदमा और लाटरी में जीत तथा परीक्षा में पास होता है। मूल्य तांबा का २॥), चांदी का ३), सोने का १५) झूठा साबित करने पर १००) इनाम।
Shri Sukh Santi Ashram
मुहल्ला सालीमपुर अहरा,
पो० बांकीपुर (पटना)।

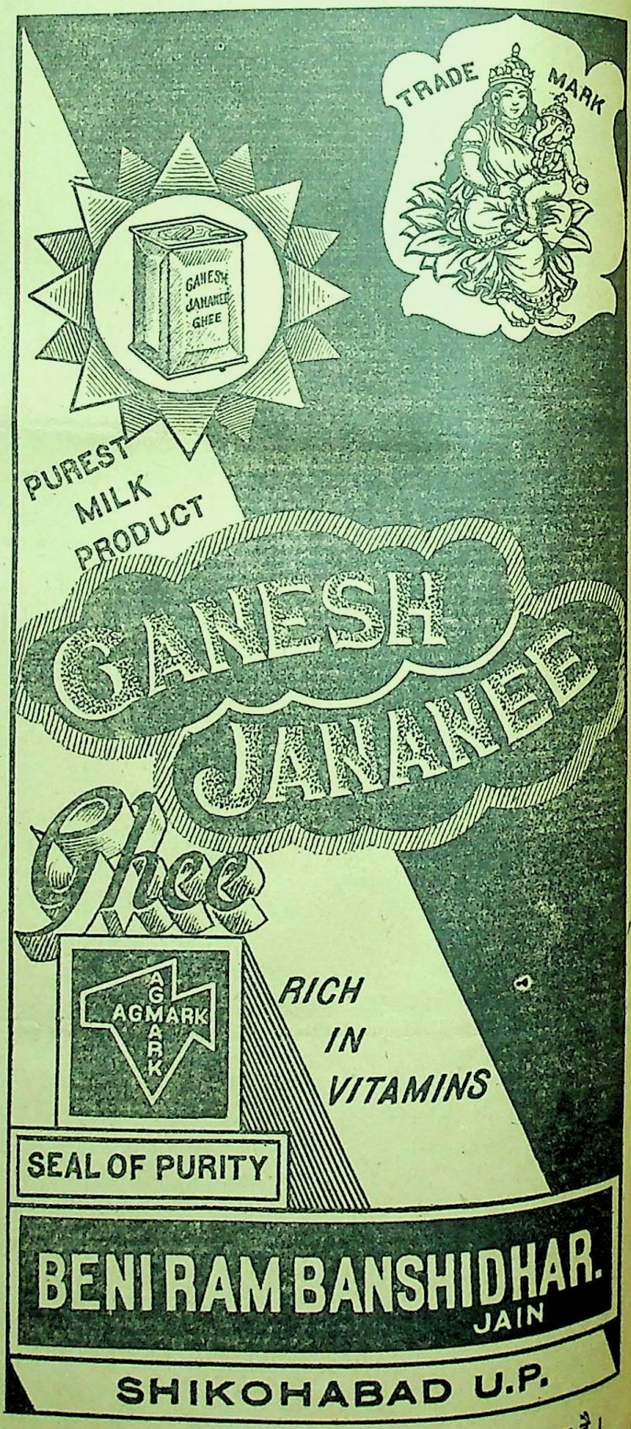

भारतवर्ष के समस्त नगरों में स्टाकिस्टों की आवश्यकता है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मेरे जीवन की झाँकियां

श्रद्धेय मालवीयजी के संस्मरण [३]

[श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति]

★

(१)

मनुष्य को प्रेरित करने वाली दो शक्तियां ऐसी हैं, जो मनुष्य के अन्दर ही निवास करती हैं। एक दिल और दूसरा दिमाग। यह हृदय और मस्तिष्क की शक्तियां कहलाती हैं। इनका छुटपन या बड़प्पन ही मनुष्य को छोटा या बड़ा बनाता है।

इन शक्तियों की मात्राओं के भेद के कारण मनुष्यों को तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है। कुछ मनुष्यों में, और उनमें भी विशेषतया स्त्रियों में हृदय की प्रधानता रहती है।

दूसरी श्रेणी में वह व्यक्ति आ जाते हैं, जिनमें मस्तिष्क की प्रधानता रहती है। तीसरी श्रेणी में हम उन व्यक्तियों को लेते हैं, जिनमें हृदय और मस्तिष्क दोनों का ठीक अनुपात से समन्वय हो। यदि इन तीनों श्रेणियों के दृष्टान्त भारत के वर्तमान इतिहास में से चुनने हों तो वे निम्न लिखित हैं।

हृदय प्रधान—ला० लाजपतरायजी।

मस्तिष्क प्रधान—मि० मोहम्मदअली जिन्ना।

दोनों का समन्वय—महात्मा गांधी।

यह नाम ही अपनी-अपनी श्रेणी की मनोवैज्ञानिक विशेषताओं को प्रकट करने के लिए पर्याप्त हैं। इस कारण श्रेणियों की अधिक व्याख्या न करके मैं इस प्रश्न का उत्तर देने का यत्न करता हूं कि श्रद्धेय मालवीय जी का परिगणन हम किस श्रेणी में करें?

इस प्रश्न का उत्तर किन्हीं युक्तियों के आधार पर न देकर मैं निजी अनुभव के आधार पर ही दूंगा। मेरे निजी अनुभव ने मुझ पर यह असर डाला है कि श्रद्धेय मालवीयजी में हृदय और मस्तिष्क का ऐसा समन्वय था कि उसमें हृदय का अंश कुछ अधिक रहता था, उनका मस्तिष्क कितना बलवान और विशाल था, यह सिद्ध करने के लिए कुछ लिखना मानों सूर्य को दीपक दिखाना होगा। वह वर्तमान भारत के उन अन्यतम गुरुओं मे से थे, जिन्होंने आज के भारतवासियों को राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ाया है। उनके भाषण, उनके लेख और सबसे बढ़ कर उनका हिन्दू विश्वविद्यालय पूज्य मालवीयजी की असाधारण मानसिक शक्ति के परिचायक हैं।

जब मैं यह कहता हूं कि मेरी सम्मति में मालवीयजी का हृदय, मस्तिष्क से भी आंशिक रूप में अधिक बलवान था, तो मेरा यह अभिप्राय नहीं कि उनके मस्तिष्क की शक्ति किसी सामयिक भारतवासी से न्यून थी, अपितु यह अभिप्राय है कि उनके हृदय की शक्ति उनके विशाल मस्तिष्क की शक्ति से भी अधिक बलवती थी।

अब मैं अपनी स्मृति की पुस्तक में से छोटी-छोटी तीन घटनाएं उद्धृत करता हूं। जिन लोगों को पंडितजी के पास निरन्तर रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, उनके स्मृति-ग्रन्थ में सम्भवतः ऐसी हजारों घटनाएं होंगी।

(२)

यह तब की बात है, जब नई राजधानी दिल्ली में प्रवेश के समय लार्ड हार्डिंग के हाथी पर चांदनी चौक में से गुजरते हुए बम फेंका गया था। उस अवसर पर मालवीय जी भी दिल्ली आये हुए थे। दुर्घटना के दो-तीन दिन पीछे पंडित जी इलाहाबाद लौट रहे थे। तीन-चार दिन पीछे पटना में कांग्रेस का बृहद अधिवेशन था। पटना जाने के लिए जब मैं दिल्ली के स्टेशन पर पहुंचा तो देखा कि पंडित जी उसी गाड़ी से जा रहे हैं। मैंने प्रणाम किया, तो पंडित जी ने पूछा — "कहां जा रहे हो"। मेरे यह उत्तर देने पर कि पटना जा रहा हूं, आपने अपने सौम्य स्वभाव के अनुसार कहा – "तुम्हारा सामान कहां है? जिस कम्पार्टमेंट में मैं जा रहा हूं, उसी में आ जाओ।" आम तौर पर मुसाफिरों का रिवाज यह है और उस रिवाज में महापुरुष भी शामिल हैं कि वह अपने कम्पार्टमेंट में यात्रियों की अधिकत पसन्द नहीं करते। इसे आप मनुष्य की सहृदयता की अचूक कसौटी समझें, कि अपने डिब्बे में दूसरे यात्री को निमन्त्रण देने वाला अवश्य ही हृदयवान होना चाहिए आम दुनिया तो उसे बुद्धू समझती ही है। मेरे जीवन में ऐसी बहुत थोड़ी स्मृतियें हैं, जब एक बैठे हुए यात्री ने दूसरे यात्री को बुला कर अपने डिब्बे में बिठाया हो, उनमें से एक यह भी है।

मैं पंडित जी के बच्चे के समान ही था, तो भी शिष्टाचार के अनुसार मुझे पंडित जी की सीट के सामने नीचे की सीट दी गई। दिल्ली से इलाहाबाद तक के सफर में मैंने थोड़ा सा पंडित जी की दिनचर्या का अध्ययन भी किया। प्रातः शौच जाने के समय नित्य-नियम के अनुसार आपने एक धोती को छोड़ कर सब कपड़े उतार डाले। एक छोटे-से सन्दूक में से मिट्टी का ढेला निकाला गया, उसे साथ लेकर पंडित जी लैटरीन में गये। वहां से आने पर एक छोटी सी गगरी में से गंगाजल निकाला गया, उससे हाथों को और मुंह को शुद्ध करके पंडित जी ने माथे पर चन्दन का सुन्दर तिलक लगाया, अपना हिम के समान श्वेत वेष पहिना और प्रयाग के स्टेशन पर उतरने के लिए तैयार हो गये।

इस बीच में कई बार लार्ड हार्डिंग पर बम पड़ने की चर्चा हुई। मैंने देखा, जितनी बार भी यह चर्चा चली पंडित जी का गला भर आया और आंखों में पानी की झलक दिखाई दी उनका कोमल हृदय इस चीज को असह्य समझता प्रतीत होता था कि एक मनुष्य पर अकारण आक्रमण करके उसे घायल कर दिया जाये। वह जितनी बार इस बात को सोचते, उतनी बार ही उनका दिल भर आता था।

तुलना के लिये महात्मा गांधी को लीजिये। ऐसे आक्रमणों की जितनी घोर और बार-बार निन्दा महात्माजी ने की है उतनी शायद किसी जीवित व्यक्ति ने नहीं की, परन्तु मैंने उनकी निन्दा करते हुए महात्माजी के गले या आंखों में से छलकते हुए हृदय के दर्शन नहीं किये। महात्माजी का हृदय और मस्तिष्क सर्वथा संतुलित है। मालवीयजी का हृदय कुछ अधिक स्पंदनशील था। इलाहाबाद पहुंचकर पण्डितजी ने मुझे भी एक दिन के लिए वहीं उतार लिया। अपने यहां ले गये। वह समय मुझे भली प्रकार याद है, जब बैठक के पास घर के अंदर की ओर के बरामदे में लकड़ी की एक चौकी पर बैठकर मैं खाना खा रहा था, और पंडितजी मेरे पास एक कुर्सी पर बैठे बात कर रहे थे। मैं अभी गुरुकुल से निकला ही निकला था। संसार को नहीं समझ पाया था, मैंने बड़े ही सरल भाव से कहा, 'आप भी तो भोजन कीजिये।' पण्डित जी समझ गये कि मैं मालवीय ब्राह्मणों के आचार शास्त्र से सर्वथा अनभिज्ञ हूं। मुस्करा कर उत्तर दिया, 'मैं पीछे खाऊंगा।' कई वर्ष बाद एक बार मैं पंडितजी से प्रातःकाल लगभग १० बजे मिलने गया। आप रायसाहब माधोदास के चांदनीचौक वाले मकान में ठहरे हुए थे। जब मैं पहुंचा तो मालूम हुआ कि पंडितजी अपने हाथ से भोजन बना रहे हैं, क्योंकि प्रयाग से अपनी जाति का रसोइया नहीं लाये। एक घण्टे में असेम्बली का अधिवेशन होने वाला था और पंडितजी को भोजन बनाकर खाना था। वस्तुतः सार्वजनिक जीवन उनके लिये घोर तपस्या थी।

(३)

दूसरी घटना लगभग पच्चीस वर्ष पीछे की है। मैं परिवार सहित कन्या को हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रविष्ट कराने बनारस गया था। गाड़ी लगभग दिन के १२ बजे बनारस पहुंची। गुरुकुल के अनुभव से मेरा ऐसा विचार बना हुआ था कि प्रत्येक बड़ी सार्वजनिक संस्था में अतिथियों के ठहरने का स्थान तो होना ही चाहिये। इसी धारणा से एक बन्द गाड़ी पर सब सामान लादकर हम लोग विश्वविद्यालय जा पहुंचे। पहले महिला आश्रम के द्वार पर पहुंचे। वहां की अधिष्ठात्री पूर्वपरिचिता थीं। सलाह दी कि ठहरने के बारे में आप लोग वाइस-चांसलर साहब से मिलिये। उन दिनों एक काश्मीरी सज्जन विश्वविद्यालय के भाग्यविधाता थे। उनके बंगले पर गाड़ी ले जाकर मैंने अपना कार्ड भेजा तो एक मद्रासी क्लर्क ने आकर पूछा कि क्या काम है? यह उत्तर देने पर कि कन्या को दाखिल कराने आये हैं: कुछ घण्टों के लिये सामान रखने और नहाने धोने के लिये जगह चाहिये, उत्तर मिला कि ऐसा कोई स्थान यहां नहीं है। एक अतिथि-गृह है, परन्तु वह एक राजासाहब के लिए रिजर्व हो चुका है, जो परसों आने वाले हैं। आपके यहां ठहरने से वह खराब हो जायेगा।

यह टका सा जवाब पाकर गाड़ी का मुंह बनारस के रेलवे स्टेशन की ओर मोड़ देते यदि लड़की को विश्वविद्यालय में दाखिल कराना न होता। जुलाई का महीना था। कड़ाके की धूप पड़ रही थी। छोटा बच्चा प्यास से परेशान था। अन्त में लाचार होकर एक प्रोफेसर के यहां अनिमन्त्रित अतिथि बनना पड़ा। उनके यहां सामान रखकर स्नान किया और विश्वविद्यालय के कार्यालय में पहुंच कर आवश्यक पूछताछ की। जब मालूम हुआ कि कार्य पूरा करने के लिए एक-दो दिन ठहरना पड़ेगा, तो निश्चय किया कि पहले बाजार में चलकर खाना खाय, फिर शहर में रहने की जगह तलाश की जाये।

जब विश्वविद्यालय से बाहर जाने लगे तो रास्ते में एक बंगले के द्वार पर पूज्य मालवीय जी का साइन बोर्ड दिखाई दिया। पंडित जी तब कार्य छोड़ चुके थे। मुझे मालूम था कि उनका शरीर बहुत निर्बल हो गया है। नाम देख एक दम मन में विचार उठा कि यदि पंडित जी को असुविधा न हो तो उन्हें प्रणाम करते चलें। अन्दर जाकर देखा तो उनके सेक्रेटरी पंत जी विराजमान हैं। वह बड़े प्रेम से मिले। प्रणाम करने की बात पूछने पर उन्होंने कहा कि इस समय बाबू भोजन कर चुके हैं, शायद ही मिल सकें, उनका आराम करने का समय है। इतना उत्तर देकर पंतजी ने अनुभव किया कि यह उत्तर संसार की दृष्टि से ठीक होता हुआ भी मालवीय-शिष्टाचार के अनुसार उचित नहीं हुआ। सीधा 'इन्कार' मालवीय-शिष्टाचार में वर्जित था। मेरी निराशा को हल्का करते हुए

पंत जी ने कहा, 'ठहरिये, मैं बाबू से पूछ कर आता हूं।'

जब पंत जी पूछकर आये तो उनके चेहरे पर मुस्कराहट थी। चलिये बाबू ने बुलाया है। यह कहते-कहते वह आगे चले।

अन्दर जाकर जो दृश्य देखा तो उससे दिल बैठ सा गया। मैंने पंडितजी को कई वर्षों बाद देखा था, वह सौम्य मूर्ति जो सदा सीधी दिखाई देती थी, थकान, बीमारी और बुढ़ापे के कारण झुक गई थी। सुनने और बोलने में भी कष्ट अनुभव होता था। यह तो शरीर का हाल था, परन्तु जब बातचीत हुई तो मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उस निर्बल शरीर में वही बलवान मस्तिष्क और उससे भी बलवान हृदय विद्यमान है। उस समय की सब बातों का विवरण देने से लेख बहुत लम्बा हो जायेगा। यहां उतना ही अंश देना पर्याप्त है, जिससे पंडित जी की प्रकृति का वास्तविक रूप पहिचानने में सहायता मिले। पंडित जी ने पूछा—

'कहां ठहरे हो?'

यह प्रश्न हिन्दू विश्व-विद्यालय में मुझे बिल्कुल नया प्रतीत हुआ। मैंने उत्तर दिया —

'अभी तो कहीं नहीं ठहरे। सामान एक जगह रख दिया है।'

पंडित जी—क्यूं? क्या ठहरने को कोई स्थान नहीं मिला?'

इस प्रश्न के उत्तर में मैंने संक्षेप से अपनी कहानी सुना दी। सुनाते हुए यह ध्यान रखा कि किसी की शिकायत न होने पाये, फिर भी मेरी कहानी का पंडित जी पर जो असर हुआ उसे देख कर मुझे पछतावा हुआ कि मैंने वह कहानी क्यूं सुनाई? आपकी आंखों में पानी झलकने लगा। आपने नौकर को इशारा करके अपने पौत्र पं० श्रीधर मालवीय को बुलवाया और कहा— 'यह कितने दुःख की बात है कि इन्द्रजी परिवार सहित यहां आयें और ठहरने को कोई स्थान न मिले। इस बंगले के ऊपर के दोनों कमरे अभी साफ करवा कर रहने के योग्य कर दिये जायें और भोजन का प्रबन्ध भी यहीं होगा। यह स्पष्ट था कि जहां पंडित जी का यह आदेश उनकी सहृदयता और विशालता का उज्ज्वल सबूत था, वहां उससे लाभ उठाना हम लोगों की स्वार्थपरायणता और अमानुषिकता का प्रमाण होता। मैंने और मेरी पत्नी ने प्रतिवाद करने के लिये इकट्ठा मुंह खोला तो पंडित जी ने हाथ के एक निश्चयात्मक इशारे से हमें चुप करा दिया और श्रीधर जी को सब प्रबन्ध जल्दी कर देने का आदेश देकर विदा कर दिया।

इस सारी घटना में मालवीय जी महाराज के हृदय का वह स्पन्दन झलक रहा था जो उनके सुदीर्घ परोपकारी जीवन का मुख्य प्रेरक था।

इस प्रसंग को समाप्त करने से पूर्व यह लिख देना आवश्यक है कि हम लोगों ने शाम को श्रीधर जी को सूचना दे दी कि हम लोग बाबू शिवप्रसाद जी के यहां ठहर गये हैं। आप हमारी वहां पर प्रतीक्षा न कीजियेगा।

[४]

अब मैं पंडित जी के अन्तिम दर्शनों का थोड़ा सा वृत्तान्त सुना कर इस प्रकरण को समाप्त करता हूं पंडित जी शरीर की निर्बलता और वृद्धावस्था की अवहेलना करके महात्मा गांधी और अन्य राष्ट्रीय नेताओं तक अपने मुंह से अपना मनोभाव पहुंचाने के लिये १९४६ के मध्य भाग में दिल्ली पधारे थे। आप अपने सुपुत्र पं० गोविन्दकान्त मालवीय के पास ठहरे हुए थे। मैं अपनी दो कन्याओं के साथ उनके दर्शन के लिये उपस्थित हुआ। गोविन्दकांत जी ने बड़े प्रेम से हमारा अभिनन्दन किया और पंडित जी आज्ञा प्राप्त करके, हमें अन्दर ले गये। अन्दर जाकर भारतीय राष्ट्र के उस भीष्म पितामह को मानों शरशय्या पर पड़े हुये पाया। शरीर झुक कर दोहरा हो गया था। चेहरे पर निर्बलता का पूर्ण अधिकार था और बोलने में बहुत कष्ट अनुभव हो रहा था। सिरहाने की ओर गोविन्दकान्त जी खड़े थे और पांयत की ओर राधाकान्त जी। अत्यन्त क्षीण स्वर हो जाने पर भी पंडित जी के होठों के इशारे को गोविन्दकान्त जी समझते प्रतीत होते थे। मैंने देखा कि पंडित जी के हृदय और मस्तिष्क पर शरीर की असमर्थता का बहुत ही कम असर था। वह प्रत्येक बात को बिल्कुल स्पष्टता से समझते और पहले की भांति अनुभव करते थे। उनकी आंखें और होठ हृदय के दर्पण बने हुए थे। हमारे प्रणाम का उसी प्रेम से उत्तर दिया, दिल्ली की परिस्थिति के बारे में वैसे ही कुशल-प्रश्न किये और आत्मरक्षा के लिये तैयार रहने की वैसी ही प्रेरणा की, जैसी बीस वर्ष पहले किया करते थे। मुस्कराये भी और आंसू भी बहाये। जब कन्याओं ने प्रणाम किया तो आपने मुझ से पूछा कि इनके पास आत्मरक्षा का कोई साधन भी है या नहीं। साथ ही राजपूताने का कोई प्रसिद्ध पद बोला, जिसे मैं याद नहीं रख सका। सम्भव है, गोविन्द जी को याद हो। उस समय बड़े से बड़े प्रकृतिवादी को भी मानना पड़ता है कि आत्मा शरीर से अलग और ऊंची वस्तु है। शरीर जर्जरित हो गया था, परन्तु आत्मा युवा थी।

—(:०:)—

प्रमेह रोग समाप्त करो

७ दिन में आराम

यदि किसी पुरुष को पेशाब करने के पहले या पेशाब करने के बाद सफेद रंगका पानी आता हो तो यह बहुत भयंकर बात है। इसे प्रमेह का रोग कहते हैं। धीरे-धीरे यह रोग बढ़ जाता है तो आदमी पौरुषहीन हो जाता है। उसकी शक्ति समाप्त हो जाती है। इस वास्ते जिन पुरुषों को यह शिकायत हो या स्वप्नदोष होता हो तो इस भयंकर रोग से लापरवाही नहीं करनी चाहिये।

प्रमेह का रोग केवल ७ दिन में नष्ट हो जाता है

और केवल ३॥) खर्च होंगे। "जौहरे आजम" इस रोग के लिये अक्सीर प्रमाणित होती है। केवल एक शीशी दवा "जौहरे आजम" से बड़े बड़े पुराने रोगी स्वस्थ हो गए। "जौहरे आजम" प्रमेह के रोग का सबसे अच्छा इलाज है। जिन लोगों को आवश्यकता हो—

मैनेजर, जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४ दिल्ली

के पते पर पत्र लिखकर "जौहरे आजम" की एक शीशी वी० पी० द्वारा मंगा लें। एक शीशी का मूल्य ३॥) तीन रुपया आठ आना है पार्सल का खर्च ॥-) लगेगा।

[टेलीफोन नं० ६२६८]

वह पुरुष

जो शक्तिहीन पुरुष किसी भी कारण से शरीर बल नष्ट कर चुके हों और उनके जीवन को घुन लग चुका हो और विशेष दुख से समय व्यतीत कर रहे हों, ऐसे दुखी पुरुषों को शक्ति प्रदान करने का सुअवसर यह है कि 'रिजोवीन' औषधि को १६ दिन तक सेवन कर लें, उनकी गई हुई शक्ति फिर से लौट आयेगी और अपना समय सुख से आनन्द प्राप्त अवश्य करेंगे। शरीर के प्रत्येक बलहीन भाग की यह दवा अमृत तुल्य है और काया को फिर से बदल कर नया जीवन देती है। सारे भारतवर्ष में इस औषधि का प्रचार है और प्रत्येक वर्ष लाखों दुखी पुरुष इस औषधि द्वारा आनन्द प्राप्त कर चुके हैं। शक्तिशाली पुरुष भी यह दवा सेवन करके अपने जीवन के आनन्द को बढ़ा सकते हैं और यह दवा किसी भी ऋतु में सेवन की जा सकती है। इस कोर्स में दो दवायें होती हैं, एक खाने की, दूसरे मलने की। पूरे कोर्स का मूल्य ५) रुपये, डाक खर्च ॥≡) अलग।

अक्सीरी दवाखाना कलां महल पो० नं० ४१ (V.W.D.) देहली।

दिल्ली में चांदनी चौक, फतेहपुरी बाजार के तमाम औषधि विक्रेता यह दवा बेचते हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हमारा धारावाही उपन्यास

गंगा जल

[ले० — श्री इन्द्र बसावड़ा]

विधवा शोभा के गृहत्याग करने पर उसके भाई अनिल करुणा के साथ उसे ढूंढने चले गये। शोभा एक कुटिया में मिली, जहा राधा तपस्विनी बनकर रहती थी। राधा से अनिल का पहले कभी प्रेम था और करुणा से वह अब प्रेम करता था! राधा को वहां देखकर कुछ दिनों बाद अनिल कुछ विचलित हो उठा। करुणा और राधा दोनों की वह एक साथ अपने मन में तुलना करने लगा। एक रात करुणा ने राधा के साथ प्रेम करते हुए अनिल को अचानक देख भी लिया।

[गतांक से आगे]

प्रातःकाल जल्दी उठ, गंगा में स्नान कर 'नारायण ! नारायण !!' जपते शिरीष बाबू (शोभा के श्वशुर) जब महादेवजी के मन्दिर पूजन करने लगे तब उनका मन अत्यन्त प्रफुल्लित था। पुत्र का शोक मानों हल्का हुआ और उस रिक्त स्थान पर अधिकार ईश्वर-प्रेम ने किया हो ऐसा उन्हें लगा। दो-तीन घण्टे तक, मन्दिर के भीतरी भाग में बैठे बैठे, शंकर के कृष्ण वर्ण लिंग का वे अवलोकन करते, हाथ जोड़ गायत्री मन्त्र जपते रहे। ईश्वर ने ही उनकी पुत्रवधू को बचाया है, यह उनको अब निश्चित रूप में लगने लगा। शंकर की स्तुति कर वे उठे और अनिल के पास जाकर बोले—

'अनिल बाबू ! मैं तो आज लौटता हूं। शोभा जब ठीक हो जाय, तब तुम ले आना।'

'क्यों, आप जा रहे हैं ?' अनिल ने पूछा।

'जरूर जाऊंगा।'

'जैसी इच्छा ··· तो भोजन करके जाओगे न ?'

'हां !'

तभी तो गोविन्दा महाराज आये और बोले — 'क्यों पूजा से निपट गये क्या ?

'हां, नारायण ! नारायण !'

'ठीक, मैं तो सुजानपुर जाता हूं। सांझ को मिलेंगे।'

'पर महाराज !' — शिरीष बाबू बोले 'मैं तो अभी ही जाना चाहता हूं।'

'अरे, ऐसा भी कहीं हो सकता है···' गोविन्दा महाराज ने आग्रह किया ; पर जब शिरीष बाबू ने समझाया कि उनके जाने से वहां सब को सांत्वना मिलेगी; तब गोविंदा महाराज ने आनाकानी नहीं की।

राधा ने जल्दी ही भोजन बना डाला और चूल्हे के पास बैठी-बैठी गम्भीर विचारों में तल्लीन हो गई। रात्रि का दृश्य उसकी आंखों के सामने नाचने लगा — क्या का क्या हो गया एक रात में ? जिन अनिल बाबू के लिए वह व्याकुल रहती थी ; जिन अनिल बाबू को वह चाहती थी, जिनके जाने से एक बार वह शोकातुर और विह्वल हो गई थी, वे ही अनिल बाबू उसे मिले और रात के अन्धकार में ; उस शिला के ऊपर अनिल बाबू ने उसे अपनी बाहुपाश में जकड़ चुम्बन किया ····· पर ओह ! राधा का मुख शर्म से-लज्जा से और एक अज्ञात भय और आशंका से विवर्ण हो गया। उसे वह अच्छा नहीं लगा। चूल्हे के पास बैठी बैठी वह विचारों के भवर में, अधिक से अधिक फंसती गई। वह रात को अनिल के पास गई ही क्यों ? करुणा ने अपने मन में क्या-क्या धारणाएं की होंगी ? छिः मैं चरित्र-हीन हूं — मैं नीच हूं — न जाने कैसे विचार करुणा के मन में मेरे प्रति उत्पन्न हुए होंगे। अब ?

और उसे अपने समस्त जीवन पर धिक्कार होने लगा।

इस तरफ अनिल की मनोस्थिति भी लगभग वैसी ही थी। जिस करुणा के साथ उसकी प्रगाढ़ मैत्री है, उसके साथ उसने लम्बी रात तक अभ्यास भी किया है। जिस करुणा ने अपना समस्त वात्सल्य, स्नेह और प्रेम उसके ऊपर निछावर किया है, जिस करुणा ने उसके दुःख में सुख में निश्चय भाव से अपना सर्वस्व दिया है, उसी करुणा ने अपने मन में क्या क्या सोचा होगा ? उसने सोचा होगा — वे अनिल बाबू ! ऐसे अनिल बाबू — ऐसे। इतने दुर्बल अनिल बाबू ! यह अनिल का चारित्र्य ! रात के समय — एकान्त में अनिल बाबू विधवा लड़की के साथ ऐसा व्यभिचार करते हैं ! और इन सब विचारों ने उसके मन में एक अजब तूफान मचा दिया। वह कुछ भी विचार करने में अशक्त हो गया और फिर भी विचारों का तुमुल आक्रमण उसके मन पर होने लगा। वह करुणा को मानों अपना मुंह भी अब दिखा नहीं सकता, मानों वह उससे दूर-दूर भागना चाह रहा हो, ऐसा उसे लगने लगा।

रात के समय, उस प्रसग के बाद जब करुणा वहां से चली गई और अनिल को भान हुआ, तब उसने देखा कि राधा उसके पास ही बैठी थर-थर कांप रही है। उसके रोम-रोम मानों कंप का अनुभव कर रहे हैं। वह एकाएक खड़ा हुआ और वहां से चलता बना। जब अनिल कुछ भी बोले-चाले बिना शिला पर से जाने लगा, तब राधा से रहा नहीं गया और वह शिला पर औंधे मुंह लोट कर बालक की तरह रोने लगी। दो-एक घण्टे तक वह वहां पड़ी रही और अपने हृदय को खाली करती रही। किस लिए जीवन में यह सब होता है, वह विचारने लगी। क्या यह पाप है ? यह व्यभिचार कहलाता है ? उसे अपने बचपन के दिन याद आये, जब वह बिलकुल छोटी थी और उस छोटे से गांव में पिता के साथ रहती थी। गर्मी के दिनों में, दोपहर के समय जब पिता कहीं बाहर गये होते, तब वह गांव की आम की बाड़ियों में जाकर कच्ची अमियां खाती — कितना सुखद वह बालजीवन था ? और जब वह सयानी हुई, समझदार हुई तब घूंघट निकाल कर वह बहुरानी बन गई थी और तबसे उसका सारा जीवन मानों बदल गया था। छोटी बहू को पति का प्रेम अथवा स्नेह ऐसा प्राप्त नहीं हुआ और इसके बाद तो वह बन गई 'दावे' की राधा — रूपवती राधा — खिलते यौवन के अकथनीय भावों का अनुभव करती राधा ! यदि बाल्यकाल के आनन्द और ऊर्म्मियां सच्चा हैं तो यौवनकाल की लहरें और भाव किस लिए खोटे गिने जाते हैं ? अनिल के लिए जो प्रीति उसके मन में उत्पन्न हुई वह किस लिए खोटी कही जाती है — उसका वह व्यवहार किस कारण पाप समझा जाता है, यह सब विचारने पर भी राधा के मन को शान्ति मिली नहीं। उसे तो यही अनुभव होता रहा, उसने भयंकर पाप किया है। अनिल की देह का स्पर्श और उसका अधर-चुम्बन जहरी डंक की तरह अब उसे त्रासदायी लगने लगा और क्रोधावेश में राधा ने अपना शिर शिला पर पटक दिया।

और दो-एक घण्टे पीछे भी उसे कुछ सूझा नहीं ! तब वह वहां से उठी और अपने बिस्तर में जाकर पड़ गई।

अनिल वहां से उठ गंगा के किनारे-किनारे सकड़ी-सी पगडंडी पर चलता रहा। उसके मन में जो बड़े से बड़ा विचार उठता था वह यह था — करुणा ने क्या धारणा की होगी ? करुणा को मैं कैसे मुंह दिखाऊंगा ?

उस निर्जन मार्ग के ऊपर वह चलता ही रहा। आज दिन तक ऐसे भाव उसके मन में किसी दिन उठे न थे। वह करुणा के साथ रहता था। उसके सान्निध्य में ऐसी वासना उसने कभी भी अनुभव न की थी और आज एकाएक यह भावना क्यों जगी ?

और एकाएक उसकी आंखों के सामने रात्रि का सारा दृश्य आखड़ा हुआ। राधा पास की शैया पर पड़ी थी। उसके यौवन में, उसके अवयवों ने उसके अंग-प्रत्यंग में बिलसते लालित्य ने उसके मनमें कैसी लालसा जगा दी थी ?

इन भावों का पृथक्करण और विश्लेषण करने की अनिल चेष्टा करने लगा। क्या ये भाव झूठे थे ? समाज इन भावों को किसलिये पाप रूप गिनता है ? यदि ये सर्वथा खोटे हैं तो फिर ये किस लिये उत्पन्न होते हैं ? ऐसी भूख मनुष्य हृदय में क्यों पैदा होती है ? किस कारण यह जन्म लेती है ? इन वासनाओं की तृप्ति करना क्या पाप है ? तो मन में पैदा होती इच्छायें और दूसरी तृष्णायें और उसका परिणाम और उपयोग ये भी पाप रूप गिने जाने चाहियें न ?

पर इस तर्क से उसके मन को शान्ति नहीं हुई। चाहे जो हो पर मन तो यही कहता है, पुकार कर कहता है —अनिल ! अनिल ! यह तूने बुरा किया दूर रहने में ही सार है—इनसे दूर भाग। इन स्त्रियों के समुदाय से दूर भाग जाने में ही भलाई है। यह मोह है—मिथ्या है — माया है।

और फिर से उसकी आंखों के सामने करुणा का मुख नाचने लगा। यह सब क्या ? करुणा ! करुणा !! तेरे मन में क्या-क्या विचार उत्पन्न हुये होंगे ?

वह पगडंडी उसे एक भयंकर वन में ले गई। चारों ओर अन्धकार था और वन के भयंकर पशुओं की चीत्कारें सुनाई पड़ती थीं।

आधे घण्टे तक अनिल इस वन में खड़ा रहा, जुगनुओं का प्रकाश देखता रहा, अन्य पशुओं का स्वर सुनता रहा और मन में उठते विचारों की लहरों में बहता रहा; पर अपने मन को किसी भी तरह सान्त्वना नहीं दे सका। अन्त में रात के तीन बजते-बजते वह वापस लौटा। अपने बिस्तर पर जाने की हिम्मत वह नहीं कर सका, उसी शिला पर आकर पड़ गया। आकाश में असंख्य तारे झिल-मिला रहे थे, पास ही कल कल करती गंगा बहती थी — रात्रि स्तब्ध और शान्त थी। शीतल पवन चल रहा था। सब सुन्दर और शांत था; पर अनिल का मन था अशान्त और असुन्दर !

करुणा सवेरे जल्दी उठी, तब उसने देखा, राधा अभी बिछौने में ही है और अनिल कोठरी में नहीं। बाहर आकर वह गंगा के तट पर घूमने लगी। उसने देखा—शिला पर अनिल पड़ा है वह उस

सन १९४६]
करो
करने के बाद सफेद
का रोग कहते हैं।
जाता है। उसकी
शिकायत हो या
करनी चाहिये।
ाता है
स रोग के लिये
आजमं" से बड़े
ा का सबसे अच्छा
नं० ३४ दिल्ली
० द्वारा मंगा लें।
खर्च ॥-) लगेगा।
ोन नं० ६२६८]
UVENE
COURSE
ी यह दवा यौवन
किसी भी ऋतु में
खाने की, दूसरे
।
.D.) देहली।
औषधि विक्रेता

छोटी-सी पग-डण्डी पर घूमने निकल गई।

जब करुणा वापिस लौटी, तब अनिल स्नान करके बरगद के नीचे खड़ा था और राधा भोजनालय के भीतर काम में लगी हुई थी। शोभा की कोठरी में से उसने सुना कि शिरीष बाबू दस बजे के लगभग जाना चाहते हैं और गोविंदा महाराज माथे पर फेंटा बांध, हाथ में लाठी ले सुजानपुर जाने को तैयार हो गये हैं। चुपचाप वह रसोई में गई। राधा अन्यमनस्क सी बैठी है और तवे पर रोटी जल रही है।

'लाओ, मैं रोटियां बेलूं ?' करुणा ने कहा।

राधा कुछ बोली नहीं।

करुणा ने राधा के हाथ से बेलन लिया और रोटी बेलने लगी।

रसोई हो रही थी, पर कोई कुछ बोलता न था। जब भोजन सब तैयार हो गया, तब करुणा भोजनालय से बाहर चलदी और बरगद के नीचे खड़ी होकर उसके खड़खड़ करते पत्तों को देखने लगी।

उसको लगा-यहां आई उसी दिन इस बड़ के वृक्ष के नीचे खड़ी हो, मैंने प्रकृति का दृश्य देखा था, वही दृश्य आज भी है, पर जो सुख और शांति मुझे अनुभव हुई थी उस दिन आज मन में क्यों नहीं ? यह जीवन जगत-मन सारा ही किस लिये परिवर्तन शील है ? और एक स्वप्न द्रष्टा की तरह बड़ के तने से लग कर करुणा गहन विचारों में तल्लीन हो गई।

और चूल्हे के पास, अन्यमनस्क राधा भी विचारों के बहाव में बह रही थी। अब वह क्या करे ? यहां रह सकेगी ? अनिल बाबू को मुंह दिखा सकेगी ?

तभी बाहर से किसी ने आवाज दी—

'तार आया है, तार।'

राधा रसोई में से एकदम बाहर आई और पूछा— 'किस का तार है ?'

'पोस्टमैन ने कहा— 'करुणा का।'

राधा ने पुकारा – 'करुणा जीजी ! करुणा जीजी !!'

भोजनालय में जाकर राधा ने देखा कि करुणा बड़ के तने से लगकर खड़ी है। उसने आवाज दी – 'करुणा जीजी ! तुम्हारा तार आया है।'

करुणा ने कहा— 'आती हूं।'

उतनी ही सावधानी से, उतनी ही शान्ति से करुणा वहाँ से धीमे-धीमे चलती आई। एक क्षण राधा सोचती रही – तार का आना भी करुणा को क्षुब्ध नहीं बनाता ? क्या कारण ?

करुणा ने आर्डर फार्म पर हस्ताक्षर कर तार लिया और लिफाफा फाड़ा।

राधा ने पूछा—'किसका तार है ?'

'भाई का ! मां की तबियत ठीक नहीं।' – करुणा बोली और शोभा की कोठरी की तरफ चलदी। राधा चली गई भोजनालय में।

अनिल शोभा की कोठरी में ही बैठा कुछ पढ़ रहा था। करुणा भीतर आई तब भी उसने पढ़ना बन्द नहीं किया।

करुणा ने तार अनिल के हाथ में रक्खा।

अनिल एकाएक चौंक पड़ा। 'क्या है यह ?' उसने पूछा।

'तार है पढ़ो।' करुणा बोली।

तार पढ़ने के बाद भी अनिल स्तब्ध सा बैठा रहा।

करुणा ने कहा— 'मैं शिरीष बाबू के साथ जाती हूं।'

अब अनिल को भान हुआ कि करुणा जाना चाहती है। उसके भाई का तार है – माता बीमार है। करुणा के लिए जाना आवश्यक है।

एक क्षण वह सोचता रहा—क्या करुणा जायगी ? करुणा सचमुच जाना चाहती है ? वह स्वयं ही – इसी स्थान पर राधा के साथ अकेला ही रहेगा ?'

अन्त में अनिल ने मौन तोड़ा 'अभी ही जाना है ?'

'हां !'

'तो·····' और आगे अनिल कुछ नहीं बोल सका।

'भोजन की तैयारी कराती हूं।' कह-कर करुणा वहां से चलदी।

अनिल वहां विचार करने लगा यह तार कहां से आ मरा एकाएक ? करुणा चली जायगी ? वह बिल्कुल अकेला यहां राधा के पास रहेगा ? और कल रात की घटना फिर उसके मनके सामने नाचने लगी। उसे लगा – क्या करुणा इस घटना से असंतुष्ट होकर उसके पास से जानबूझ कर चली जाना चाहती है ?

और यह विचार आते ही उसे करुणा की ओर क्रोध और रोष के भाव अनुभव होने लगे। दो-चार दिन बाद ही जा सकती है ? आज के आज जाने का क्या कारण ? और ज्यों-ज्यों वह विचार करने लगा, त्यों-त्यों उसे अनुभव होने लगा कि करुणा जान बूझ कर ही उसका तिरस्कार करती, उसे धिक्कारती यहां से चली जाना चाहती है। उसके मन में – करुणा के मन में ईर्षा उत्पन्न हुई है। इस ईर्षा को छिपाने के लिये ही वह यहां से चली जाना चाहती है।

उसके मन ने कहा— अनिल ! करुणा के लिए ऐसे विचार ? करुणा ईर्षा कर सकती है ? पर दूसरे ही क्षण उसने ये विचार अपने मन से निकाल डाले और उसे लगने लगा कि सम्पूर्ण विश्व मानों उसके लिये जाल रच रहा है। उसके जीवन की सखी रूप-मित्र रूप करुणा भी षड्यन्त्र में शामिल है और यह विचार आते ही उसने क्रोधावेश में वह पुस्तक जमीन पर दे मारी।

इस आवाज से शोभा की निद्रा टूट गई। उसने पूछा—

'कौन ?'

'कोई नहीं शोभा !' – अनिल बोल उठा।

इसी समय करुणा ने भीतर आकर कहा—

'अनिल बाबू ! भोजन करने चलते हो ?'

'भूख नहीं है मुझे। तुम खालो।' अनिल ने कोरा उत्तर दिया।

शिरीष बाबू को जब यह समाचार दिया गया कि करुणा भी उनके साथ ही चलने वाली है और करुणा का यह अकस्मात उनके साथ जाना उसकी माता की बीमारी के कारण है तब वे अत्यन्त घबरा गये और नारायण ! नारायण ! करने लगे।

करुणा ने उनसे भोजन करने को आने के लिये कहा, तब वे खाट पर बैठे बैठे माला के मनके फिरा रहे थे।

उनको भोजन कुछ भाया नहीं। करुणा ने भी थोड़ा सा भात खाया।

सारे वातावरण में शोक फैल गया। राधा की मनोदशा भी शोचनीय थी। आग्रह करना भी उसे नहीं सूझा। अन्त में मोटर का हांर्न बजा। सारा सामान मोटर में रख दिया गया और शिरीषबाबू मोटर में बैठे। अनिल बाहर आया और म्लान-वदन, खिन्न चित्त यह सब देखता रहा; पर एक शब्द भी वह बोल नहीं सका। शिरीष बाबू 'नारायण-नारायण' करते अन्त में बोले—

'अनिल बाबू ! तुम हो इसलिये मुझे कुछ चिन्ता नहीं। काम आप सब ठीक ही करेंगे। वहां की चिन्ता करना मत····· और ····· हरि करे सो होय' और यह कहकर उन्होंने अपने दुखते से आंखे पोछ ली।

पर करुणा तो बिल्कुल शान्त थी। उसके मुख से जानना कठिन था कि उसके मनमें क्या विचार उठ रहे हैं। यों बाह्य दृष्टि से तो वह अत्यन्त स्थिर और अविचल दिखाई देती थी। उसने अनिल के मलिन मुख की ओर देखा; पर वह एक शब्द भी नहीं बोली।

मोटर का हांर्न बजा और मोटर चलने लगी; पर अनिल एक शब्द भी नहीं कह सका।

धूल के बादल उड़ाती मोटर कच्ची सड़क पर दौड़ने लगी। अनिल खड़ा खड़ा यह दृश्य देखता रहा और फिर एक दीर्घ निश्वास छोड़ वह शोभा की कोठरी की तरफ चल दिया।

अनु०— मृदुल] —क्रमशः

फिल्म स्टार

बनने के इच्छुक शीघ्र लिखें, थोड़ा हिंदी या उर्दू पढ़ा-लिखा होना आवश्यक है। रंजीत फिल्म आर्ट कालेज 18 रावीरोड लाहौर।

स्त्री को श्वेत प्रदर

स्त्री को श्वेत पानी की बीमारी भयानक होती है। इस बीमारी को ल्युकोरिया भी कहते हैं। इस बीमारी से पीड़ित होने वाली स्त्री के गुप्त शरीर से समय असमय श्वेत रङ्ग का बदबूदार पानी या लेस निकलता है और धीरे-धीरे उस स्त्री के यौवन को समाप्त कर देता है। उसकी कमर, नाफ, नले, पेट, बल्कि सारे शरीर में दर्द होने लगता है। माहवारी अर्थात् मासिक धर्म भी खराब हो जाता है। यह रोग बड़ा भयानक है। स्त्रियों को इसमें लापरवाही नहीं करनी चाहिए।

श्वेत पानी को रोकने की विधि

नवयुग की जांच से अब पूरी तरह साबित हो चुका है कि इस श्वेत पानी की बीमारी को समूल नष्ट करने की सबसे बढ़िया विधि यह है कि बीमार स्त्री को केवल एक शीशी औषधि 'रोक' सेवन करा दी जाय। इस औषधि के सेवन से ठीक तीसरे दिन श्वेत पानी की बीमारी बिल्कुल ठीक हो जाती है। हजारों वैद्य, डाक्टर, हकीम इस औषधि को रोगियों पर सेवन कराके ख्याति प्राप्त कर रहे हैं। यदि आवश्यकता हो तो:—

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४, दिल्ली

के पते पर पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा औषधि 'रोक' की एक शीशी मंगा लीजिये। एक शीशी का मूल्य ३) तीन रुपया डाक व्यय ॥-) आना है। हर धर्म की स्त्रियां सेवन कर सकती हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गुरु गोविन्दसिंह—एक कवि

[ज्ञानी श्री हरनामसिंह 'वल्लभ']

श्री गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज केवल अपने युग के महान् व्यक्ति वा ऐतिहासिक महापुरुष मात्र ही नहीं थे, अपितु वे एक रसिक-ललित साहित्यिक और वीर-साहित्य के महान् प्रणेता भी थे।

विक्रम सवत् १७२३ में गोविंदसिंहजी का प्रादुर्भाव हुआ और ४२ वर्ष के अनन्तर सं० १७६५ में ससार से आपका निर्वाण हुआ। श्री नानकदेव जी की गुरु परम्परा में और सिख जाति के इतिहास में आप दशम गुरुजी के नाम से विख्यात हैं। गोविन्दसिंह जी के प्रपितामह श्री गुरु अर्जुनदेव जी जहांगीर के शासन में बलिदान हुए और उनके बाद पूज्य पिता गुरु तेगबहादुर जी औरङ्गजेब के शासन-काल में हिन्दू धर्म रक्षार्थ दिल्ली में काम आये। गुरु गोविन्दसिंह जी तो एक बहादुर कुल परम्परा की देन थे—भारतीय संस्कृति की रक्षार्थ इससे अधिक वे और क्या करते कि अपने चारों प्रिय पुत्रों और अपनी परम-पवित्र वयोवृद्ध माता तक को भी धर्म रक्षार्थ अर्पण कर दिया (!)।

तलवारों की छाया में गुरु गोविन्दसिंह जी का लालन-पालन हुआ था--इसी लिये दुनिया की कड़ी से कड़ी विपदाओं को सहन कर वे दृढ़ पुरुष बन पाये थे। उनकी पुरुषार्थप्रियता ने न केवल उनके नाम को ही अमिट बना दिया, अपितु सिख और हिंदु समाज के प्रवाह को बदलकर एक नया रूप दे दिया था। उनकी वीरता और लोकप्रियता केवल युद्ध के मैदानों तक ही सीमित नहीं थी प्रत्युत संस्कृत-हिन्दी और पंजाबी-फारसी आदि भाषाओं के साहित्यिक क्षेत्रों में भी उनकी कृतियों की अपनी एक विशेष प्रतिष्ठा है।

श्री गुरु गोविन्दसिंह जी लिखित प्रायः ग्रन्थों की संख्या १५ के आस-पास है। यहां केवल उनके हिन्दी-भाषा के कुछ पद्यों और दो एक रसों के उदाहरण दिये जा सकेंगे। उनकी कविता में प्रायः दो रसों की निर्झरिणी ही प्रवाहित होती दृष्टि-गोचर होती है — एक वीर और दूसरी शृंगार। उनके काव्य ग्रन्थों के कथानक भी प्रायः पौराणिक साहित्य की पृष्ठ-भूमि पर निर्मित हुए हैं। 'दुर्गा-सप्त-शति' के आधार पर गोविन्दसिंह जी ने 'चडी-चरित्र' नामक एक काव्य ग्रंथ की रचा, जिसमें ३३२ सवैये हैं। 'चडी-चरित्र' वीर रस प्रधान अत्यन्त रोचक और अलंकारों से ओत-प्रोत एक धाराबाहिक काव्य ग्रंथ है—जिसके कुछ स्थल उद्धृत हैं—

वीर-रस

कोप कै चण्डि प्रचण्ड चढ़ी इत,
क्रुद्ध कै धूम्र चढ़ै उत सैनी।
बान कृपानन मार मची,
तब देवि लई बरछी कर पैनी।
दौर दई अरि के मुख में,
कट ओट दये जिमि लोह की छैनी।
दांत गगा, जमुना तनु श्याम
सु लोहू बह्यो तिहि माहि त्रिवैनी।

चंड और मुंड दैत्यों ने सन्य सजा कर जब युद्ध शुरू किया, उस समय घोड़ों की टापों से रुदन कर जो धूल उड़ी, उसकी कैसी कलामय विचित्र उपमा दी गई है, इतनी बाहुल्यता से धूल आसमान से उड़ी कि देखने से ऐसा प्रतीत होता था कि वसुन्धरा स्वयं इन्द्रलोक को जा रही है!

कोप चढ़े रन चंड औ' मुंड
सु लै चतुरानन सैन भली।
तब सेस के सीस धरा लरजी,
जनु मध्य तरङ्गनि नाव हली।
खुर बाजन धूर उड़ी नभ को,
कवि के मन ते उपमा न टली।
भव भार अपार निवारन को,
धरती मनु इन्द्र के लोक चली।

अब मां गिरिजा भवानी के युद्ध वर्णन का दृश्य भी देखिये—

चण्डि कुवण्डि के बान छुटे,
इक ते दस सौ ते सहस्रह बाढ़े।
लच्छक छूटिके जाय लगे,
तन दैत्यन माझ रहे गढ़ गाढ़े।
को कवि ताहि सराहि सकै,
अतिसै उपमा जो भई बिन काढ़े।
फागुन पौन के गौन भये,
जनु पात विहीन रहे तरु ठाढ़े।

× × ×

मुण्ड महा रन मध्य हन्यो,
फिर कैबर चण्डि तबै इह कीनो।
लै बरछी कर में अरि के सिर,
कैबर मार जुदा कर दीनो।
लैकै महेश त्रिसूल, गनेश को,
रुण्ड कियो जनु मुण्ड विहीनों।

शत्रु के शीश को बर्छी द्वारा इस प्रकार जुदा कर दिया गया जैसे शङ्कर ने गजानन के रुण्ड को मुण्ड विहीन बना दिया था। कैसी रणरङ्ग से सनी हुई वाणी है और आगे देखिये; चण्डी द्वारा दैत्य के गिरने की उपमा,—भरत के हाथों से शैल समेत हनुमान को पृथ्वी पर डहा देने से देते हुए लिखते हैं—

क्रुद्ध कै युद्ध को दैत्य चली,
नद औन को पैर कै पार पधारयो।
लै करवार औ' ढार सम्हार कै,
सिंह को दौर कै जाय हकारयो।
आवत पेख कै चण्डि कुवंड ते,
बान लग्यो तन मूरछा पारयो।
राम के भ्रात ने ज्यों हनुमान को,
सैल समेत धरा पर डारयो।

× × ×

श्रोनित बिन्दु सों चण्डि-प्रचंडि
सु युद्ध कियो रन मध्य रुहेली।
चा पल में दल मींज दयो,
तिलते जिमि तेल निकारत तेली।
श्रोन परयो धरनी पर ज्यं,
रगरेज की रेनी ज्यों फूट कै फैली।
घाव लसें तन दैत्य के यों,
जनु दीपक मध्य नूस की थैली।

शत्रु दल को तिल की तरह पीस देना, खून का रगरेज की मटकी की भांति टूट कर बिखरना और फिर अस्त्र-शस्त्रों से हुए घावों का फानूस में दीपक की तरह लटकना, कितना प्रचड वीररस का द्योतक है।

चंडि के बान लगे बहु दैत्य को,
फोर के पार भये तन कैसे।
सावन मास किसान के खेत,
उगे मनु धान के अंकुर जैसे।

चंडिका भवानी के बाण दैत्य की देह फोड़ कर इस प्रकार निकल रहे हैं, जैसे सावन के महीने में कृषकों के खेतों में अंकुर धरा को चीर कर ऊपर कढ़ आते हैं। और अन्य उपमायें अवलोकन कीजिये—

सांग सम्हार कर बल धारि कै,
चंडि दई रिपु भाल में ऐसे।
जोर कै फोर गई सिर त्रान को,
पार भई पट फोर अनै से।
श्रौन की धार चली पथ ऊरध
सो उपमा सु भई कहुं कैसे।
मानों महेश के तीसरे नैन ते,
जोति उदीत भई खुल तैसे।

शत्रु-रक्त-धारा ऊर्ध्व पथ पर ऐसे छूटी जारही है, जैसे महेश के त्रिनेत्र से ज्योति तिरछी होकर (कामदेव की ओर) उदय हो रही हो। यहां कवि-कल्पना का चमत्कार देखते ही बनता है।

निम्न-लिखित अंतिम पद में बाखी कर्त्ताजी की वीर-भावना बसन्त के फूलों की भांति लहरा-लहरा कर झूमती हुई दृष्टि-गोचर हो रही है—

देह शिवा ! वर मोह इहै,
शुभ कर्मन ते कबहूं न टरों।
न डरों अरि सों जब जाय लरों,
निश्चै कर अपनी जीत करों।
अरु सिख हो आपने ही मनको,
इह लालच हो गुन तो उचरों।
जब आयु की औधि निदान बनै,
अति ही रण में तब जूझ मरों।

'चंडी - चरित्र' 'दुर्गा-सप्त-शति' का स्वतंत्र अनुवाद है। महारथी, दुष्ट दमन रण-प्रिय, श्री गुरु गोविन्दसिंहजी ने इसका वही अनुवाद किया है, जो वीर रस का द्योतक है। क्योंकि वह स्वयं वीर थे—उनको चंड और मुंड, देवी और दैत्य सब वीर ही दिखाई देते थे।

कवि ने 'चण्डी-चरित्र' में उक्तियों, नई नई उपमाएं देने का कमाल और देवी के युद्धों की कथा को केवल कथा ही समझकर नहीं लिखा बल्कि उसकी प्रत्येक बात का सविस्तार वर्णन कर, उपमाओं से गूंथ कर युद्ध भूमि और उसमें किलोलें करने वाले नर-शार्दूलों के सुंदर हृदय

श्री गुरु गोविन्द सिंह जी

को साक्षात् और साकार-सा कर दिखाया है। 'चंडी-चरित्र' ग्रंथ की अन्तिम पंक्तियों में कवि स्वयं कहता है—

'चंडी-चरित्र' कवित्तन में,
बरन्यों सब ही रस रुद्र-मई है।
एक ते एक रसाल भयो,
नख ते सिख लौं, उपमा सुनई है।

शृङ्गार-रस

एक रूपवती स्त्री वृद्धावस्था को प्राप्त हो गई है परन्तु उसके रूप की शोभा ज्यों की त्यों बनी हुई है। उसके श्वेत केशों का वर्णन कवि करता है —

केसन प्रभा जाति न कही।
जानुक जटन जान्हवी बही।
कैधों सकल दुग्ध सों धोये,
तांते सेत बने कच होये।
× × ×
मुकतन हीरन के बहुत,
उन पर किये सींगार।
तांते तिन की छब भये,
तरुनि! तिहारे बार॥

और एक दृश्य देखिये—

नयन फबत मृग से कजरारे,
केस जाल जनु फांस सवारे।
जाके परै गरे सोई जानै,
बिन बूझे को कहा पछानै।
चंचरीट दुति देख बिकाने,
भवर आज लग फिरत दिवाने।
महादेव तिह नैक निहारे,
अब लग बन में बसत उघारे।

संतान होने की दवा

जिस स्त्री के सन्तान न होती हो केवल ७ रात तक मशहूर दवा मुहाफिज औलाद खिलाओ। इन सात रात में स्त्री के बदन के अन्दर का हिस्सा ठीक ऐसी हालत में आ जाता है कि आठवीं रात ..... स्त्री को गर्भ रह जाता है। इस औषधि की वजह से आज हजारों बहिनों की गोद में बच्चे खेल रहे हैं। जिस स्त्री को सन्तान न होती हो वह नीचे के पते पर पत्र लिख कर दवा मुहाफिज औलाद की शीशी वी० पी० पार्सल द्वारा मंगालें। १ शीशी काफी है जिसका मूल्य दो रुपया आठ आना २॥) है पारसल पर ॥-) महसूल लगेगा।

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना हिन्दी आफिस नं० ३४ देहली

स्त्री रोगों की निपुण चिकित्सिका

लेडी डाक्टर **कविराज आर. रानी** ही हैं

आप किसी भी स्त्री रोग में ग्रस्त हों तो निम्नलिखित पते पर मिलिये। वे आपको उसी समय ठीक कर देंगी। इसके अतिरिक्त उनकी तैयार की हुई औषधि 'आशा' एक ऐसी औषधि है जोकि स्त्री के आन्तरिक बाह्य रोगों को दूर करके सन्तान योग्य बना देती है और उसका मूल्य केवल १०) रु० है। डाक व्यय पृथक होगा। औषधालय—

लेडी डाक्टर--**कविराज आर. रानी**

गली नं० १ अर्जुन नगर निकट शाहालमी अड्डा लाहौर।

'अर्जुन' के ग्राहकों से

'वीर अर्जुन' के ग्राहकों से निवेदन है कि पत्रव्यवहार करते समय अपना रुपया भेजते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखा करें, क्योंकि हजारों ग्राहकों की संख्या में उनका नाम ढूंढना असम्भव है। —प्रबन्ध

काढ़ने की मशीन

यह कसीदा काढ़ने की मशीन (Embriodery machine) हाल में ही ईजाद हुई है जो फूल, पत्ते बेल-सीन सीनरी आदि कपड़े पर बड़ी आसानी से काढ़ती है। स्त्री और लड़कियों के खास मतलब की चीज है। मूल्य मय ५ सुइयों के ३) खर्च ॥=)।

दीन ब्रादर्स, अलीगढ़ नं० ४।

१००) रुपया इनाम

शिव शक्ति कवच

सिद्धवशीकरण। इसके धारण से जिस स्त्री या पुरुष को आप चाहें वह वश में हो जायगी। इससे दुर्भाग्य और शत्रु का नाश, नौकरी, सन्तान, धन की प्राप्ति, व्यापार में लाभ, परीक्षा में पास, मुकदमे, जुआ और लाटरी में जीत, कठिन से कठिन रोगों से छुटकारा होकर भाग्योदय होता है। मू० तांबा २॥) चांदी ३) सोने का १५) बेफायदा साबित करने पर १००) रु० इनाम।

श्री शिव शक्ति आश्रम पो० पत्थलपुर (पटना)

फौनटेन पैन

ताजा माल आ गया है। शीघ्र ही मगालें। जनाना पैन कीमत रु० ४) मरदाना पैन कीमत रु० ५)

एजेण्टों की आवश्यकता है।

हौउस आफ कामर्स, पी० बी० ३४५ (बी.डब्लू.डी.) लाहौर

House of commerce, P.B. 345 (V.W.D.) Lahore.

फोटो कैमरा मुफ्त

यह कैमरा सुन्दर नमूने का सफाई से बना हुआ बिना किसी कष्ट के हर प्रकार के मनोहर फोटो तुरन्त ले लेता है। इसका प्रयोग सरल है यही सही काम करता है और शौकिया काम लेने वाले व व्यवसायी दोनों ही इससे काम ले सकते हैं। यह कीमती मनोहर कैमरों में से है, जो थोड़े ही मूल्य का है। यह कैमरा खरीद कर शौक पूरा करें और रुपया कमावें। मूल्य बक्स कैमरा पूरा, तमाम फिल्म कार्ड, कैमीकल, सरल प्रयोग सहित नं० ५०१ कीमत ५॥।) वेस्ट, क्वालिटी, नं० ५४५ कीमत ७), डी लक्स एक्स्ट्रा स्पेशल क्वालिटी नं० ५५० कीमत ६॥), फोल्डिंग नं० १००, कीमत ४५), पैकिंग व डाक व्यय १=) नोट — एक समय में ६ कैमरों के ग्राहक को कैमरा नं० ५५० मुफ्त। स्टाक सीमित है। अभी आर्डर दें अथवा निराश होना पड़ेगा। माल पसन्द न होने पर कीमत वापिस।

इम्पीरियल चैम्बर आफ साइन्स (V.W.D.) पो० बौ० ६१, लाहौर

Imperial Chamber of Science. (V.W.D.) P. B 61, Lahore.

वैद्यरत्न

पं० टी० गोपालाचार्लु

का

जीवामृतम

स्त्री पुरुष और बालकों में पौरुष, बल और चेतना शक्ति का संचार करने के लिए अर्धशताब्दी से विख्यात है

आयुर्वेद आश्रमम लि०

टी० नगर, मद्रास।

उत्तर भारत के लिए चीफ स्टोकिस्ट्स

ए न सा ट्रे डिं ग कं०

चांदनी चौक, दिल्ली।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लाहौर के सभ्यसमाज में तीन दिन

[पृष्ठ २ का शेष]

एक आदमी ने पैसा उसके सामने फेंक कर कहा 'यह ले' मामूली कपड़े थे। टांकी लगा कोट था। पाजामा पहने था, शायद चपरासी था किसी दफ्तर में! भिखारिन की दीनता भरी आवाज ने उसे पैसा फेंकने पर बाधित कर दिया।

'भैया वह संगीत-सभा भी तो है 'रीगल' में बंगाल के पीड़ित भाइयों के लिए। क्या उसमें नहीं चलना है?'

स्थानीय विद्यार्थी बंगाल की पीड़ित जनता की सहायतार्थ एक संगीत-सम्मेलन कर रहे थे! उसी को देखने को कह रही थी कामिनी। हम उठ खड़े हुए।

जब रीगल के समीप पहुंचे तो देखा अभी काफी समय था। पास ही किरपाराम की दुकान थी! ऊन चाहिए थी कामिनी को थोड़ी सी! सोचा क्या हर्ज है वहीं देख लें!

वह पंजाबी परिवार अभी दुकान में ही था। दो-तीन बड़े-बड़े बंडल बंधे धरे थे! यह सब उन्होंने खरीदा था। साड़ियां, कपड़े, शृंगार की वस्तुएं और भी बहुत कुछ।

'बिल्कुल नयी फेस क्रीम है? एक बार इस्तेमाल करके तो देखिये?'

ललचाये नेत्रों से लड़की ने क्रीम की ओर देखा, माता से पूछा 'ममी, ले लूं?'

'अभी है तो सही ··· क्या करेगी?'

'उं ··· उं ममी ···' कुढ़ते हुए बोली वह!

'अच्छा भई बांध दो यह भी···?'

ऊन हमें कोई पसन्द न आई। उन्हीं के साथ-साथ हम भी बाहर आ गये!

'पापा ··· म्यूजिक कांफ्रेंस है ···?' लड़की ने पिता की ओर देख कर कहा।

'यूं ही, लड़कों का तमाशा है। नाहक पैसे बर्बाद कर क्या करोगी? कल सिनेमा चलेंगे ···।'

टिकट घर की ओर बढ़ते हुए मैं सोच रहा था ··· उस अभागिन भिखारिन के लिए एक पैसा देना भी व्यर्थ था ··· और इतना सब सामान ··· वह फेसक्रीम के लिए लड़की का हठ करना ··· पीड़ितों की सहायतार्थ सम्मेलन की अवहेलना कर सिनेमा को ··· यह सब क्या है? मानव जीवन के कैसे-कैसे पहलू हैं यह? पिछले दिनों किसी समाचार-पत्र में पढ़ा था कि यहां क्रीम पाउडर और शृंगार की अन्य वस्तुओं की अच्छी खपत है! सहस्रों रुपयों का प्रति दिन उलटफेर होता है।

संगीत-सम्मेलन हुआ। सारा कार्यक्रम था भी सुन्दर। देखने सुनने वाले गिने-चुने थे।

यह देख कर मुझे आश्चर्य हुआ। रात हमने ····· कलाकार का नृत्य भी देखा था। वहां तो मानों सारा लाहौर उमड़ आया था। वस्त्रों की सरसराहट, सेंटों की भीनी-भीनी सुगन्धि ··· उस पर सिगरेट के धुएं के गुब्बार।

× × ×

तीसरे दिन प्रातःकाल मैं बोला कामिनी से — 'बहुत कुछ देखा है अब तो आओ प्लाजा में सिनेमा भी दिखा लाऊं ···'

उस दिन एतवार था, इससे प्रातःकाल 'मेटनी शो' १० बजे था। आशंकित स्वर में उसने पूछा — 'वहां तो अंग्रेजी पिक्चर होगी?' हंसते हुए मैं बोला — 'क्या हुआ, समय तो काटना ही है गाड़ी तो शाम को जानी है। चलो वहां की रंगत भी दिखा लाऊं?'

अंग्रेजी चित्रों में होती है पश्चिमी सभ्यता ··· और उसका नग्न प्रदर्शन··· इसी से हिचकी कामिनी! हो सकता है वहां के वातावरण के लिये यह बुरी न हो पर भारत की सभ्यता के अनुरूप तो वह किसी भी दशा में नहीं हो सकती न?

'लड़ाई का कोई खेल है? संगीत भय और रोमांस नहीं है?' तब कहीं जाकर वह चलने को तैयार हुई।

अच्छा जमघट था वहां भी। कालेज के लड़के-लड़कियां! पश्चिमी सभ्यता में डूबे नर-नारी! मानों उसकी नकल करते हुए उन्हें लाज न होकर गर्व हो रहा था।

किन्तु खेल साधारण था। पर कई बार बीच में तालियां पिटीं और कह कहे लगे। कई बार तो ऐसे स्थानों पर जब कि हंसने का कोई कारण भी न था दर्शक हंसे।

मैंने कामिनी से कहा कि साथ बैठा लड़की से पूछे कि यह दृश्य क्या था और वह क्यों हंसी?

पर पूछने पर उत्तर तो बेचारी तब देती जब समझ में उसकी कुछ आया होता। बगलें झांकने लगी। उसकी स्थिति पर मुझे बड़ी दया आयी। सिर से एड़ी तक विदेशी रंग में रंगी वह कृत्रिम गुड़िया! दिखावा ही दिखावा है, सब कुछ, सब झूठ है कृत्रिमता के जाल में··· झूठी चमक-दमक में उलझे वह सब।

शाम को गाड़ी प्लेटफार्म छोड़ रही थी। उधर आकाश में बादलों के बीच पक्षी उड़े जा रहे थे। उन॰ संग उड़ने लगा मेरा मन भी···

वह सीधे-सादे गांव के लोग जो बादशाह खान का स्वागत करने आये थे। उनकी एक झलक पाने के लिए व्याकुल हो रहे थे और यह लाहौर के सभ्य कहलाने वाले प्राणी जिनके चारों ओर चमक-दमक, दिखावे और कृत्रिमता ने ताना-बाना बुन रखा है।

आज का युग प्रगति का युग है। युग परिवर्तन हो रहा है। भारत का भाग्य बदल रहा है। देश आजादी के किनारे पर खड़ा है। भयानक आंधी और तूफान के साथ देश में क्रान्ति उमड़ रही है। चारों ओर गड़बड़ और उथल-पुथल मची हुई है। अकाल पड़ रहे हैं ··· दाने-दाने को मनुष्य तरस रहे हैं लाखों को एक समय भी भरपेट भोजन नहीं मिलता है ··· ऐसे नाजुक समय में... यह सब कुछ ··· आंखें भर आईं मेरी। यह सत्य है कि उनके विचारों में अवश्य क्रान्ति हुई है। राष्ट्रीय भावनायें भरपूर उनके कूट-कूट हृदयों में प्रवेश पाने का प्रयत्न कर रही हैं, पर लाहौर की छात्र-छात्राओं का यह पहनावा, यह पाउडर, लिपस्टिक, क्रीम ··· यह पंजाबी परिवार··· यह बेचारी अभागिनी भिखारिन ··· लाहौर ही क्यों प्रत्येक मुख्य शहर का यह जीवित चित्र है। अब नया जमाना आ रहा है। देश और समय के संग-संग कदम बढ़ाने के लिये उसे अपने विचारों, अपने कार्य, अपने पहनावे ··· सब कुछ में क्या परिवर्तन न करना होगा?

—(:-:)—

बन्द माहवारी (मासिक धर्म)

२४ घन्टे में शुरू

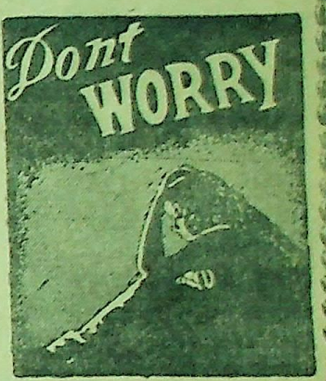

यदि किसी स्त्री की माहवारी रुक गई हो तो हमारी दवा 'कामिनी' से २४ घण्टे में जारी हो जाती है। अगर किसी स्त्री की माहवारी तकलीफ से आती है, रुक-रुक कर आती है। महीने-दो महीने से आती है, तो 'कामिनी' दवा सेवन कर लेने से तमाम खराबियां दूर हो जाती हैं। हजारों स्त्रियां, जिनकी माहवारी रुक गई थी, इस दवा के सेवन करने से २४ घण्टे में साफ होकर आने लगी। जिन स्त्रियों को गर्भ हो वे यह दवा सेवन न करें वरना गर्भ प्रायः गिर जाता है। (एक शीशी एक स्त्री के लिए काफी है)। कीमत दो रुपया आठ आना, डाक-व्यय ग्यारह आना।

अक्सीरी दवाखाना कलां महल; (लत्ता हकीम आगाजान)
(V.W.D.) नं० ४१ देहली।

दिल्ली में चांदनी चौक फतेहपुरी बाजारके सभी प्रमुख औषधिविक्रेता यह दवा बेचते हैं

देहली केमिकल वर्क्स देहली का **खाजोल** नं० ५० तर खारिश की मुजरिब दवा है

सोल एजेन्ट — देहली जाम फैक्टरी, नया बांस, बीड़ी मार्केट, देहली।

T.B. टी.बी. "तपेदिक" और पुराने ज्वर के रोगियो—

अब भी समझो—यदि आप अपनी प्यारी जान को बचाना चाहते हैं तो तुरन्त "जबरी" का सेवन शुरू कर दो। अन्यथा फिर वही कहावत होगी—कि अब पछताए क्या होत है—जब चिड़िया चुग गई खेत—सैकड़ों हकीम, वैद्य, डाक्टर, अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार द्वारा आर्डर देते हैं, तार या पत्र-व्यवहार के लिए थोड़ा-सा पता "जबरी" (जगाधरी) Jabri (Jagadhri) लिख देना ही काफी है। मूल्य इस प्रकार है—

"जबरी" स्पेशल नं० १ अमीरों के लिए जिसमें साथ-साथ ताकत को बढ़ाने के लिए सोना, मोती, अभ्रक आदि की मूल्यवान भस्में भी पड़ती हैं। मूल्य कोर्स पूरा ४० दिन का ७५) रु०, नमूना १० दिन के लिए २०) रु०। "जबरी" नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान जड़ी बूटियां हैं। पूरा कोर्स २०) रु०। नमूना १० दिन के लिए ६) रु० महसूल आदि अलग हैं। आर्डर में पत्र का हवाला तथा नं० १ या नं० २ साफ-साफ लिखें। तुरन्त 'जगाधरी के पते पर आर्डर देकर रोगी की जान बचालें १० दिन में ही अद्भुत चमत्कार दिखाई देगा।

पता—राय साहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड बैंकर्स (३०) शिलांग (आसाम) या पंजाब आफिस "जगाधरी"

स्त्री की कमर टूट जाती है

अगर स्त्री का मासिक धर्म ठीक समय पर न आये या मासिक के दिनों में दर्द हो या माहवारी कम या ज्यादा आती हो तो इस तकलीफ से स्त्री की कमर में बहुत दर्द होता है। ऐसी को एक शीशी दवा कोरस सेवन करा देनी चाहिए। इस दवा के खाने से मासिक धर्म की सब खराबी ठीक हो जाती है। फिर हर महीना बिना किसी कष्ट के ठीक मात्रा में मासिक धर्म होने लगता है। हजारों स्त्रियाँ इस दवा से लाभ उठा रही हैं। एक शीशी दवा कोरस की कीमत दो रुपया आठ आना २॥) है। नं चे लिखे पते से पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा मंगा लीजिए।

पारसल खर्च ॥-) लगेगा।

लेडी डाक्टर जनाना दवाखाना
हिन्दी आफिस नं० ३४, दिल्ली !

विवाहित जीवन

को सुखी बनाने के रहस्य इन पुस्तकों में मिलेंगे-- सोहागरात (सचित्र) १॥) गोरे खूबसूरत बनने के उपाय १॥) गर्भ निरोध (बर्थ कंट्रोल) ॥) पोस्टेज ॥-) अलग। पता-गुलाब ट्रेडिंग क० (ए.) श्यामनगर, अलीगढ़।

कोयला झोंकने वाला

क्या आपने कभी किसी फैक्टरी की भट्ट में अथवा स्टीम इंजिन पर बोयलर में कोयला झोंकने वाले को अपने कार्य में श्रमित देखा है ? निःसंदेह उसका कार्य बड़ा कठिन है परन्तु वह व्यर्थ जाता हो ऐसी बात नहीं है। वह उद्योग और यातायात को निरन्तर गति में रखने वाले पहियों की एक महत्वपूर्ण और आवश्यक कड़ी है।

इसी प्रकार जीवन का पहिया भी महत्वपूर्ण और आवश्यक कड़ियों से युक्त है और उनमें से एक कड़ी स्वास्थ्य और आरोग्यता भी है। हमाम का कर्तव्य शारीरिक शुद्धता प्रदान करना है जिससे अशुद्धता और रोग दूर रहते हैं।

हमाम

भारत का प्रियतम साबुन

टाम्को सेल्स डिपार्टमेंट
७ माल मेनसन्स
दी माल लाहौर।

A TATA PRODUCT

दी टाटा आयल मिल्स कं० लि०

T.S. 282

श्वेतकुष्ट वनौषांध

महात्मा प्रदत्त श्वेतकुष्ट (सफेदी) की दवा से तीन दिन में पूरा फायदा। यदि सैकड़ों हकीमी, डाक्टर, वैद्यों, विज्ञापनदाताओं की दवा से निराश हो चुके हो तो इसे लगा कर आराम होवें। १५ दिन की दवा का मूल्य २॥)।

सफेद बाल काला

इस तेल से बालों का पकना रुककर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे तो दूना मूल्य वापसी की शर्त लिखा लें। यह तेल सिर के दर्द व सिर में चक्कर आना आदि को आराम कर आंख की रोशनी बढ़ाता है। एकाध बाल पका हो तो २॥) आधा पका हो तो ३॥) और कुल पका हो तो ५) का तेल मंगवा लें।

एजेन्टों की हर जगह आवश्यकता है।

स्तम्भक वटी

एक गोली शाम को खाने से आश्चर्यजनक स्तम्भन करती है। मूल्य १६ गोली १), ५० गोली २॥), १०० गोली ५) रु०।

पता—अखिलकिशोर राम
नं० १०७ कतरीसराय [गया]

हिन्दी भाषा में अनुपम अभिनन्दन ग्रन्थ

विक्रम स्मृति ग्रन्थ

सम्राट विक्रमादित्य, कालीदास और उनके काल से सम्बन्धित अनुपम लेखों का अपूर्व संकलन, संस्कृति, साहित्य, काव्यशास्त्र, कला, विज्ञान, इतिहास, दर्शन, राजनीति एवं पुरातत्व पर प्रकांड पण्डितों एवं धुरन्धर विद्वानों की लेखनी से लिखे गए ऐसे गवेषणापूर्वक लेख और कहीं प्रकाशित नहीं हुए। प्राचीन भारत के अतीत गौरव के लिए ग्रन्थ का अध्ययन आवश्यक है। साहित्यार्थ पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ, दीवान बहादुर झावेरी, बम्बई महामहोपाध्याय वी० वी० मिराशी नागपुर, श्री गिरधर शर्मा नवरत्न, झालरापाटन, श्री मैथिलिशरणजी गुप्त, श्री सियारामशरणजी गुप्त, सेठ कन्हैयालालजी पोद्दार, डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० रामकुमार वर्मा, श्री माखनलालजी चतुर्वेदी, डा० सालेटूर, डा० गोरखप्रसाद, डा० ए० एन० उपाध्येय, पं० उदयशंकर भट्ट, डा० धीरेन्द्र वर्मा, पं० हजारीप्रसाद जी द्विवेदी, डा० बाबूराम सक्सेना, डा० सत्यप्रकाश, श्रीयुत एन० एन० घोष, श्रीयुत पी० के० गोडे आदि अनेकानेक प्रसिद्ध विद्वानों ने ग्रन्थ की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। ग्रन्थ अनुपम चित्रों से सुसज्जित है।

थोड़ी सी प्रतियां ही बची हैं। पृष्ठ संख्या ६१० डेमी साइज ११ ६ मूल्य डाक खर्च सहित केवल ३०) रुपये। वी० पी० नहीं भेजी जावेगी।

मैनेजर, आर्यजाह दरबार प्रेस, ग्वालियर।

'फोफो' ब्राह्मी आमला केश तेल

भारतीय जड़ी-बूटियों और आधुनिक वैज्ञानिक ढंग से बनने के कारण यह सिर समस्त रोगों पर तत्काल गुण दिखाता है। बालों का गिरना रोक देता है, उनके प्राकृतिक सुन्दर रंग और चमक को बढ़ाकर उनकी जड़ों की राह मस्तिष्क में पहुंच कर शुष्कता दूर करके तरी प्रदान करता है।

सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स—
भारत ट्रेडिंग कम्पनी, जयपुर सिटी

M.P. (D)

KAKA LABORATORIES (INDIA)
JAIPUR CITY

एजेन्सी के लिए पूछताछ करें

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

साहित्यकार और कला

[श्री कन्हैयालाल मुंशी]

एक समय काका कालेलकर ने मा० गांधी के यह पूछने पर कि 'कला कला के लिए' क्या सिद्धान्त है, मेरी पुस्तक 'पृथिवी वल्लभ' नाम पेश किया था। गांधी जी ने उसे पढ़ने के बाद मुझे एक लम्बे पत्र में लिखा था किन्तु इसमें क्या क्या लिख डाला है। मैंने उनको विनय पूर्वक उत्तर दिया कि यह 'पृथ्वी वल्लभ' आज गुजरात के बच्चे-बच्चे के हाथ में है और हजारों नारियों के हृदय में इसका निवास है। क्या इतने नर नारियों द्वारा वन्दित इस रचना का कुछ भी मूल्य नहीं! मैं तो इसकी भावनाओं द्वारा इतने हृदयों से सम्पर्क रखने पर गर्व अनुभव करता हूं।

बात यह है कि मैं तो सरसता और सौन्दर्य का उपासक हूं। संसार में नैतिकता भी है, बंधन भी हैं और भी अनेक प्रकार की चीजें हैं, पर कला का सर्जक इन सबसे बन्ध नहीं सकता। अगर हम शुद्ध भक्ति से सरसता और सौन्दर्य की सृष्टि करें तभी हमारा जीवन प्रफुल्लित हो सकता है। मैं शुद्ध भक्ति से सरसता और सौन्दर्य की उपासना करता हूं, यही मेरी कामना है।

एक बार बापूजी (महात्मा गांधी) ने मुझे कहा कि तुम अब अपना सब काम बन्द करदो, अपनी पत्नी को वर्धा भेजदो और बच्चों को बनारस विश्वविद्यालय में भेजदो। मैंने कहा बापूजी तुम्हारे चक्कर में किसी की अपनी परसैनिलिटी (व्यक्तित्व) नहीं रहती। मैं और पत्नी तो वसन्त के पक्षी हैं। जब तक वसंत रहेगा, हमारा नृत्य, गान चलता रहेगा और जब वह चला जायगा तो हम भी मर जाएंगे — हमें अमरत्व से कुछ काम नहीं है।

बात यह है कि आज सारा संसार पाशविकता और दुष्टता से परिपूर्ण बना हुआ है – इतनी अधिक पशुता रावण और कुम्भकर्ण के समय में भी नहीं थी। अगर साहित्यकार अपने समकालीन प्रवाहों से ऊपर उठकर वाल्मीकि, गेटे, शेक्सपीयर और कालीदास आदि की सनातन सरसता और कल्पना को अनन्य भक्ति नहीं करेगा तो यह व्यापक पशुता दूर कैसे होगी।

मैं तो भवभूति के शब्दों में इतना ही कहता हूं कि 'कालोह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी'। अगर मेरी साहित्य सृष्टि पर फिर से को मनुष्य के हृदय में कोई स्थान मिल सका तो मैं अपने आपको और अपनी सौन्दर्य वासना को सफल समझूंगा। ×

× श्री मुन्शी के एक भाषण के आधार पर

सभा कार्य में हिन्दी को अपनाइये
पत्रों पर पता हिन्दी में ही लिखें

स्वप्न दोष और प्रमेह

केवल एक सप्ताह में जड़से दूर। दाम ३) डाक खर्च पृथक।

हिमालय केमीकल फार्मेसी हरद्वार।

सन्तान प्रदर

बहनों से निवेदन

यह मैं मानती हूं कि मुसीबत में किसी का भी विवेक स्थिर नहीं रहता, किन्तु इतना मैं अवश्य कहूंगी कि स्त्रियां जन्म से भोली ही नहीं, सरल भी होती हैं, जो झूठे विज्ञापनों में, जिस पर किसी को भी विश्वास नहीं हो सकता व्यर्थ रुपये खर्च करती हैं।

"बहनो"। यह बीसवीं सदी है, इसमें झूठ बोल कर पैसा कमाना बजाय पाप के कला समझा जाता है। अतः मेरा अपनी बहनों से अनुरोध है कि कम-से-कम पर्वत पर बताये हुए महात्माओं के नुस्खों, धर्मार्थ या खानत कीमत पर की दवाइयों को व्यवहार में लाने से लाभ से अधिक हानि ही होती है।

अन्त में आप या आपके निकट सम्पर्क में कोई दूसरी बहन किसी गुप्त रोग से पीड़ित है तो वह मुझसे बिना किसी शर्म या झिझक के खुलासा तौर पर पत्र-व्यवहार करें, सम्भव है कि मैं आपकी कुछ सेवा कर सकूं।

स्त्री रोगों की स्पेशलिस्ट—कमला ओझा, सिरसा (पंजाब)।

हिस्टीरिया मासिक धर्म

१०००) नवजीवन पहेली नं० २ में अवश्य जीतिये।

६००) सर्वशुद्ध पूर्तियों पर तथा ४००) न्यूनतम अशुद्धियों पर।

पूर्तियां भेजने की अंतिम तारीख २३-१-१९४७ है।

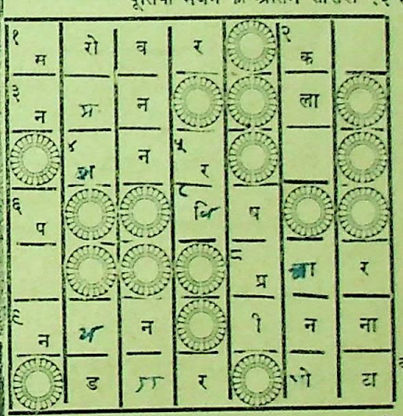

संकेत बायें से दायें:—१. कमल इसमें उगते हैं। २. अनाज का दाना, अति सूक्ष्म वस्तु। ३. प्रातः उठते ही हमें बड़ों को ..... करना चाहिए। ४. बन्दर कपि। ७. जहर, गरल। ८. प्रायः हर चीज की उन्नति इस पर निर्भर रहती है। ९. यदि मनुष्य के यह न हो तो वह किसी भी वस्तु को नहीं देख सकता। १० रुई का ..... बड़ा कठिन है। ११. रास्ता। १२. ऐसा मनुष्य देखने में अच्छा नहीं लगता है।

संकेत ऊपर से नीचे—२. एक जाति विशेष। ५. यह संसार को प्रकाशमय करता है। ६. वायु, हवा।

नियमः—एक नाम से एक पूर्ति की फीस १), दो की १॥), फिर प्रत्येक की ।=) फीस मनीआर्डर द्वारा भेजें जिसकी रसीद पूर्तियों के साथ भेजें। पूर्तियां लिफाफे तथा मनीआर्डर कूपन पर अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें। शुद्ध हल ३-२-४७ के सा० वीर अर्जुन में प्रकाशित होगा।

पूर्तियां व मनीआर्डर भेजने का पताः—

मैनेजर, नवजीवन पहेली कार्यालय, पोस्ट बक्स नं० ६६, अजमेर।

नवजीवन पहेली नं० १ का शुद्ध हलः—बायें से दायें— ६. कल २. कनक, ८. मख, १०. गचपच, १४. शरारत। ऊपर से नीचे—१. नर, २ कर्णक, ३. जीवन, ४. नल, ५. गलगल; ८. मगर, ९ खचरा, ११. परश, १२ चउरा, १३. जयत।

सर्वशुद्ध केवल एक-प्रकाशस्वरूप लखनऊ ६००) रु०। १ अशुद्धि ८ प्रत्येक को ३१) रु०। २ अशुद्धि २५, प्रत्येक को ४) रु०। ३ अशुद्धि १०४, प्रत्येक को ॥)।

देहली एजेण्ट—जमनादास एण्ड कम्पनी चाँदनी चौक,

बुलन्दशहर एजेण्ट—कन्हैयालाल भज्जूमल पंसारी, चौक बाजार,

CCO. Gurukul

सच्चा नवजीवन प्राप्त करना हो, तो नीचे लिखी औषधियां

ठंड की ऋतु में अवश्य लो !

[१] जवाँमर्द पिल्स यह सुस्त और कमजोर शरीर को मस्त बनाती हैं। स्त्री प्रसंग में शीघ्र वीर्य पतन, मगज, कमर और सब प्रकार की कमजोरी इत्यादि ७ रोज में दूर होती है। पुरुषत्व व स्त्री प्रसंग में वीर्य स्तम्भन शक्ति इतनी तेज बढ़ती है कि खाने वाला 'जवांमर्द' बनता है। धातु गाढ़ी बनाने के लिए प्रथम "बन्धेज चूर्ण" ७ या १४ रोज लेकर जल्दी से इसको लेंगे वे बेहद लुत्फ उठावेंगे। ७ रोज की० २॥)

[२] बन्धेज चूर्ण धातु पतली होने से पेशाब में या नींद में जाना उष्णता, सुस्ती, मन्द स्मरण शक्ति, शरीर का फीकापन इत्यादि जरूर ही दूर होते हैं। ७ रोज में नया व १४ रोज में कितना भी पुराना धातु विकार दूर होकर धातु शर्तिया गाढ़ी होती है। पतले धातु का तो यह खास दुश्मन है। ७ रोज का मूल्य २॥)

[३] कामशक्ति नवजीवन अति स्त्री संग से या हस्तदोष से अपना सत्यानाश करनेवाले को और वृद्धों को भी यह सचमुच नवजीवन देता है। नं० २ व १ के सेवन के साथ ही इस मलहल की मालिश करते रहें तो पूर्ण शक्ति प्राप्त होकर सब दोष दूर होते हैं। २१ रोज के ऊपर पुराने वाली डि० मू० २) झूठा औषधियां लेकर निराश बने हुए सज्जनों को उपरोक्त योजनानुसार तीनों औषधियां बरतने से कामशक्ति कब्जे में रखना कठिन होता हैं।

[४] परमा (मुजाक) दुश्मन इन गोलियों से मुजाक (गनोरिया) नया या पुराना ७ रोज में ही दूर होता है। फायदा तो दूसरे रोज ही दिखाता है। पेशाब की जलन, तिड़क, पीप का बहना वगैरह पेशाब मार्ग के सब दुष्ट विकारों का व पुराने मुजाक का यह कट्टर दुश्मन है। मूल्य २॥) १ से ४ औषधि का डाक खर्च ॥=)

लिखें:—मैनेजर, नवजीवन दवाखना, (अ) नागपुर सटी।

सन्तोष पहेली नं. ५ का शुद्ध हल

बायें से दाये — १. राघव ३. रूखना ५. शेर ६. जमुना ७. बकना ८. चाचा ९. समता ११. लोम १२. धागा १३. धोरता १४. पानी।

ऊपर से नीचे — १. राना २. बड़ा ४. नाचना ७. बराना १०. हगानी।

सर्वशुद्ध २० प्रत्येक को २००) रुपये
१ अशुद्धि ५० ,, ,, १०) ,,
२ ,, ७५ ,, ,, ४) ,,
३ ,, १०५ ,, ,, १॥=) ,,
सर्वशुद्ध, १, २ तथा ३ अशुद्धि वालों को इनाम के अलावा क्रमशः ७०) की रिस्टवाच ३०) की फाउन्टेनपेन १२) टेबल ५) के मिलेंगे।

सन्तोष देवी कानपुर, रामसिंहजी इलाहाबाद, किशनस्वरूपजी बरेली तथा नाथूलालजी अछनेरा, इन सब सज्जनों को ६४, ४०, २४, २० पूर्तियां भेजने के क्रमशः ५०) २५), १५) और १०) मिले। सब इनाम १५ जनवरी तक दिये जावेंगे। पहेली नं० ६ आगामी सप्ताह में छपेगी।

सरस्वती पहेली नं० ४ में १०००) रु० अवश्य जीतिये

६००) रु० सर्वशुद्ध हल पर, ३००) रु० न्यूनतम अशुद्धियों पर, ५०) रु० क्रमानुसार ज्यादा से ज्यादा पूर्तियां भेजने वालों को, ५०) रु० किसी महिला के सर्वशुद्ध हल पर ज्यादा दिये जावेंगे, १०) हमारे पास सर्वप्रथम आनेवाली पूर्ति पर दिये जावेंगे। पूर्तियां भेजने की अन्तिम ता० २०-१-४७ है।

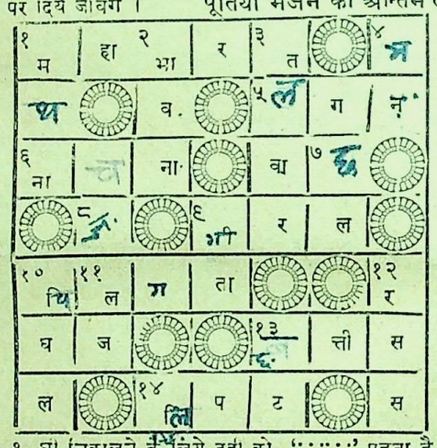

संकेत—बायें से दायें—१. एक पवित्र कथा, २. मनुष्य को प्रत्येक काम स्वं '.....' से करना चाहिये। ६. '.....' (नृत्य) भी एक कला है। ११. अपना बच्चा सबको अच्छा '.....' है। १३. एक संख्या, १४. छोटे बच्चे मारे डरके अपने माता, पिताओं के '.....' जाते हैं।

संकेत—ऊपर से नीचे—१. घी निकालने के लिये दही को '.....' पड़ता है। २. भावना से कर्त्तव्य ऊंचा होता है। ३. एक शस्त्र। ४; हमें अपने देश की सेवा '.....' से करनी चाहिये। ७. मनुष्य अपना काम निकालने के लिये इसका प्रयोग करते हैं। ८. कमल। ९. हिन्दू इसे पवित्र निगाहों से देखते हैं। १०. मोम बहुत जल्दी '.....' जाता है। १२ 'सरस' में गड़बड़ है।

नियम—एक नाम से एक पूर्ती की प्रवेशिका फीस रु) रु० दो पूर्ती की १॥) रु० तीन पूर्ती की २) रु० है। फिर आगे तीस पूर्तियों तक ॥) फी पूर्ती, इकतीसवीं (३१) पूर्ती से फिर ।=) फी पूर्ती हो जाती है। जो मनिअ डर द्वारा भेजी जा सकती है। पूर्तियों के साथ जारी मनीआर्डर रसीद अवश्य भेजें। एक नाम से चाहे जितनी पूर्तियां भेजी जा सकती हैं। पूर्तियों व म० आ० के कूपन पर अपना पता साफ-साफ जरूर जरूर लिखें। इस पहेली का सीलबन्द उत्तर ता० २७ जनवरी १९४७ के (२७-१-४७) सा० वीर अर्जुन में देखें। इस पहेली की पूर्तियां भेजने की अन्तिम ता० २०-१-४७ है। मैनेजर का निर्णय अन्तिम व मान्य होगा। पूर्तियां व फीस भेजने का पता—

मैनेजर, सरस्वती पहेली कार्यालय,
चांदपोल बाजार, कल्यानजी रोड़, जयपुर (राजपूताना)

सरस्वती पहेली नं० २ का सीलबन्द उत्तर—

बायें से दायें—१. शिवाजी, २. यमन, ४. वनचारी, ६. ललकना, ७. इला, ८. यम, ९. लड़का ११. लोबड, १२. गारशाना, १४. दया।

ऊपर से नीचे—१. शिवालय, २. जीवक, ५. ननाल्हना, ७. डकार, ८. लड़ना, १०. अहेरिया, १२. गारी, १३. शाल।

नोट—सर्वशुद्ध हल एक भी नहीं। १ अशुद्धि पर १० व्यक्तियों में, प्रत्येक को १५) रु०। २ अशुद्धी पर १३ व्यक्तियों में, प्रत्येक को ६॥=)। रु०। ३ अशुद्धी पर २२ व्यक्तियों में, प्रत्येक को २।)। रु०।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

देहली केमिकल वर्क्स, देहली का सील एजेण्ट :—

मलोरिन नं० ५०

मौसमी बुखारों के लिए अक्सीर है।

देहली जाम फैक्टरी नयाबांस, बीड़ी मार्केट, देहली।

नवयुकों को खोखला बना देने वाला दुष्ट राग

स्वप्नदोष इस दुष्ट रोग का नाम तो छोटा है, परन्तु काम बहुत भयानक, हृष्ट-पुष्ट शरीर को अन्दर से खोखला बना देता है, दिमाग की सारी शक्ति नष्ट हो जाती है। भारत के कोने-कोने में नवयुवकों ने यह बात मान ली है कि इस दुष्ट रोग को जड़मूल से नष्ट करने वाली यदि कोई दवा है तो बस आसाम बंगाल की शक्तिशाली महौषधि ('स्वप्नदोष नाशक') ही है। जो भारतीय जड़ी बूटियों का एक ऐसा चमत्कार है कि प्रथम दिन से ही जादू के समान असर होता है। एक बार परीक्षा करके देखलें। मूल्य पूरा कोर्स २४ दिनके लिए ६।) रु नमूना आधा कोर्स ३॥) महसूल आदि १) रु० अलगहै। आर्डरमें पत्र का हवाला दें।

पता—रायसाहब के० एल० शर्मा एण्ड संस (३) शिलांग (आसाम) या पंजाब आफिस 'जगाधरी'

खिजाब छोड़ें ! चश्मा तोड़ें !!

हमारे विख्यात सुगन्धित 'केश कल्प' तेल के व्यवहार से पके बाल स्थायी रूप से काले होते हैं। बालों का पकना रुक कर, मानसिक शक्ति का विकास होता है। नेत्र की धुन्ध दृष्टि को दूर कर प्रकाशमय बनाता है। मगाकर परीक्षा करें। मूल्य कम पके बालों के लिये २॥) विशेष ३॥) सम्पूर्ण ५) रु०।

केशकल्प भवन पो० परवलपुर (पटना)

१००) इनाम

सर्वार्थ सिद्ध यन्त्र—जिसे आप चाहते हैं, वह पत्थर हृदय क्यों न हो इस यन्त्र की अलौकिक शक्ति से आपसे मिलने चली आवेगी। इसे धारण करने से व्यापार में लाभ, मुकदमा, कुश्ती, लौटरी में जीत, परीक्षा में सफलता, नवग्रह की शान्ति, नौकरी की तरक्की और सौभाग्यवान होते हैं। मू० तांबा २॥) चांदी ३) सोना १२)।

पता— सिद्ध श्मशान आश्रम नं० १५, पो० कतरीसराय (गया)

इस्लाम की बेहतरीन दवा

मर्ज़ इस्लाम के ने ऐसी बेहतरीन दवा इसकी पहली ही खुराक से मरीज़ को फ़ायदा महसूस होने लगता है। क़ीमत फ़ी शीशी दो रुपये आठ आने अलावा महसूलडाक

स्वप्न दोष की अनुपम दवा

मूल्य २॥) फी शीशी

डाक व्यय अलग

मिलने का पता:—ताराचन्द गुप्त नई सड़क रोशनपुरा देहली।

नसों की निर्बलता तथा शक्तिहीनता के लिए सर्वोत्तम औषधि

मलहम Ointment

पुरुषों की नसों की कमजोरी और उसके फलस्वरूप मन्द काम-वासना को सतेज करने के लिए यह तैल बेजोड़ साबित हो चुका है। इसके लगाने से नसें मजबूत व बढ़िष्ट बनती हैं तथा पूर्ण रूपसे शक्ति प्राप्त होती है। सारांश में दम्पति को सच्चे सुख का अनुभव होता है। मूल्य प्रति पौट ५), डाक खर्च ॥≡) अलग।

विस्तृत सूची पत्र मुफ्त मंगाइये।

चाइनीज मेडिकल स्टोर

नया बाजार — देहली

और बम्बई—कलकत्ता—अहमदाबाद

—सेलिंग एजेन्ट्स—

दी नेशनल मेडिकल, स्टोर्स-आगरा।
दी जनरल मेडिकल स्टोर्स—अजमेर
दी एलाईड केमिस्टस—जयपुर।
श्री सरस्वती स्टोर्स—बीकानेर।
श्री गिरधरदास जानकीवल्लभ—उदयपुर।
वैद्यराज विश्वनाथ त्रिवेदी-मुजफ्फरनगर।
मेसर्स मोहन ब्रादर्स—खरकर।
मेसर्स खरे ब्रदर्स—उरई।
मे० गोपीलाल चिरंजीलाल-श्रीमाधोपुर।
दी गुजरात मेडिकल स्टोर्स—कानपुर।
दी वर्मा मेडिकल स्टोर्स—शिकोहाबाद।
मे० धारीवाल ब्रादर्स—जोधपुर
डी० पी० आयुर्वेदिक एन्ड यूनानी दवाखाना मोरेना

गरीबों को लक्ष्मी, व्यापारियों को चाँस, इज्जतदारों को इज्जत, नौकरों को उन्नति, सन्तानहीनों को सन्तान, आदि ही तो मनुष्य-जीवन का आनन्द और सच्चा स्वर्ग है।

वह जीवन ही क्या जहां सुख सम्पत्ति न हो

शुभ महा चमत्कारी नवग्रह सिद्ध "यन्त्र" मंगाइये लाभ

प्रत्यक्ष गुण और शीघ्र फल देने की महान शक्ति इसी यन्त्र में है। थोड़ा लिखना—यही इस यन्त्र की उत्तमता और सच्चाई का पक्का प्रमाण है। यह यन्त्र दुष्ट ग्रहों को शान्त कर रोजगार में लाभ, इम्तिहान में पास, मुकद्दमे में जीत, शत्रु पर विजय, राजदरबार में इज्जत, इच्छानुसार नौकरी मिलना, सन्तान लाभ, हर एक बीमारी से छुटकारा, खराब स्वप्न का नाश; दिल पसन्द शादी होना, अचानक आफतों से बचना, स्त्री पुरुष वशीकरण रेस-लाट्री व धन की प्राप्ति वगैरह जो सोचोगे वही कार्य सिद्ध होगा और हर सवाल का जवाब स्वप्न में विधि सहित बतायगा। आप जिस काम का ध्यान करेंगे तुरन्त ही होगा। यदि विश्वास न हो तो कुछ प्रशंसा पत्र देखिये। फायदा न हो तो दाम वापस मंगा लो। शास्त्रोक्त न हो झूठा साबित करने से १०००) रु० इनाम। सन्तान के इच्छुक दो सिद्ध नवग्रह यन्त्र मगायें। स्त्री को दो नीलमणि या पुरुष को दो नीलमणि युक्त कप्लाट एक नवग्रह सिद्ध यन्त्र का मूल्य २) रु०, चांदी का ३) रु० सोने का ६॥≡) रु० एक से अधिक चार कामों के लिये स्पेशल नं० २ मंगावें मू० ५॥≡) रु०, चांदी का ६॥≡) रु०, सोने का १५॥≡) रु०। पांच कामों से अधिक के लिये स्पेशल नं० १ मंगवायें मूल्य ६॥≡) रु० चांदी का १०॥≡) रु०, सोने का २६॥) रु०। यह बहुत शक्तिशाली है और सब काम पूर्ण होते हैं।

डाक व्यय ॥।) आना अलग। ३ यन्त्र एक साथ मगाने से डाकखर्च माफ। विदेश वालों से ५ शिलिङ्ग पेशगी। यन्त्र के लिये किसी प्रकार की पूजा-पाठ करना न पड़ेगी। हर धर्म वाले के लिए समान लाभदायक है।

श्री आनन्द स्वामीजी की तीन अमूल्य सिद्धियां

विजय शक्ति—१२ से अधिक प्रत्येक कार्य अवश्य पूरे होंगे। कीमत—साधारण १६॥≡) २३॥-) चांदी, ३५।-) सोने का। डा० मनीआर्डर खर्च अलग। आश्चर्यजनक दैवी-शक्तियों से भरपूर।

ब्रह्म शक्ति—जगत की सभी शक्ति, भक्ति, मुक्ति, माया, महामाया, महायोग, योगमाया ऐश्वर्य, मृत्युंजय आदि का सम्मिश्रण है। इसकी तारीफ करना मनुष्य-शक्ति के बाहर है। केवल इच्छा करने की देरी होती है। सफलता में सन्देह नहीं। पूर्ण विश्वास रखें, अविश्वास में मनुष्य सच्ची चीज को खो बैठता है। मूल्य—४५) व १११) और रत्नों से जड़ी हुई ४१३) नवरत्नों से जड़ी हुई ७५१) डाकखर्च अलग।

धन कवच—द्वारा मनुष्य कुबेर जैसा धनवान होने का शुभ अवसर प्राप्त करता है और लक्ष्मी उसकी चेरी बन जाती है। घर में तमाम दुष्ट ग्रह शान्ति होकर हर तरह से घर में धन की वर्षा होती है जिससे पुश्त दरपुश्त के लिये गरीबी से छुटकारा मिल जाता है। कीमत ४॥।) चांदी का ६॥।) तथा सोने का १६)

मंगाने का पता:—श्री आनन्द स्वामीजी महाराज नं० डब्लू ५१० पी० ओ० इच्छरा (लाहौर)

Shri Anand Swami Ji Maharaj No. W 510 P. O. Ichhra (Lahore)

CCO. Gurukul

क्या आपकी आंखें दुखती हैं ?

नेत्र रोगों का रामबाण **नेत्र-सुधा** का प्रयोग कीजिये मूल्य ॥)

किशोर-सुधालय ३७३६, सब्जीमण्डी बाजार, देहली ।

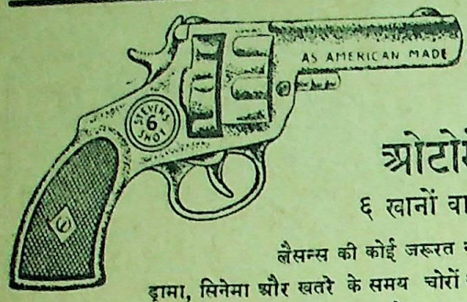

आत्मरक्षा

ओटोमेटिक

६ खानों वाली पिस्तौल

लैसन्स की कोई जरूरत नहीं

ड्रामा, सिनेमा और खतरे के समय चोरों को डराने के लिये बड़े काम की है। दागने पर पिस्तौल के मुंह से आग और धुंआ निकलता है। असली रिवाल्वर की तरह मालूम होती हैं। साइज ७॥ इंच×४ इंच और वजन १५ औंस। मूल्य ८) और साथ में १ दर्जन गोलियां (एलार्म डिस्क) मुफ्त। अतिरिक्त १ दर्जन गोलियों का दाम २)। स्पेशल तांबे की बनी ६६६ नं० की पिस्तौल का दाम १०)। वेस्ट के साथ केस २॥), पोस्टेज और पैकिंग का अतिरिक्त १=)। प्रत्येक आर्डर के साथ १ शीशी रिवाल्वर का तेल मुफ्त।

नापसंद होने पर दाम वापस

इम्पारियल चैम्बर आफ साईंस (V. W. D.) पो० बो० ६१ लाहौर

Imperial Chamber af Science (V.W.D.) P.B.61. LAHORE

प्यारी बहिनो

न तो मैं कोई नर्स हूं, न कोई डाक्टर हूं। और न वैद्यक ही जानती हूं, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थी स्त्री हूं। विवाह के एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं लिकोरिया (श्वेतप्रदर) और मासिक-धर्म के दुष्ट रोगों में फंस गई थी मुझे मासिक-धर्म खुलकर न आता था, अगर आता था तो बहुत कम और दर्द के साथ, जिससे बड़ा दुख होता था। सफेद पानी (श्वेतप्रदर) अधिक जाने के कारण मैं प्रति दिन बहुत कमजोर होती जारही थी, चेहरे का रङ्गपीला पड़ गया था, घर के कामकाज से जी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पतिदेव ने मुझे सैकड़ों रुपये की औषधियां सेवन कराईं, परन्तु किसी से रत्ती भर लाभ न हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुख उठाती रही। सौभाग्य से एक सन्यासी महाराज हमारे दर्वाजे पर भिक्षा के लिए आये मैं दर्वाजे पर आटा डालने आई तो महात्मा जी ने मेरा मुख देखकर कहा—बेटी तुझे क्या रोग है, जो इस आयु में ही चेहरे का रङ्ग रुई की भांति सफेद हो गया है ? मैंने सारा हाल सुनाया। उन्होंने मेरे पति को अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्खा बतलाया, जिसके केवल १५ दिन के सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगों का नाश हो गया। ईश्वर की कृपा से अब मैं कई बच्चों की मां हूं। मैंने इस नुस्खे से अपनी सैकड़ों बहिनों को अच्छा किया है और कर रही हूं। अब मैं इस अद्भुत औषधि को अपनी दुखी बहिनों की भलाई के लिये असल लागत पर बांट रही हूं। इसके द्वारा लाभ उठाना नहीं चाहती क्योंकि ईश्वर ने मुझे बहुत कुछ दे रखा है। एक बहिन के लिये पन्द्रह दिन की दवा तैयार करने पर २॥=) दो रुपये चौदह आने असल लागत खर्च होती है और महसूल डाक खर्च अलग है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोग में फंस गई हो तो वह मुझे जरूर लिखे मैं उनको अपने हाथ से औषधि बनाकर वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी। यह मेरा प्रण है कि मैं किसी बहिन से दवा की कीमत अपनी असल लागत से एक पैसा भी ज्यादा न लूंगी।

जरूरी सूचना —मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का ही नुस्खा मालूम है इसलिये कोई बहिन मुझे किसी और रोग की दवाई के लिये न लिखें।

प्रेमप्यारी अग्रवाल नं० (३०) बुढलाडा जि० (हिसार) पंजाब।

महान वाजीकरण व परमपौष्टिक

अनंगप्रभा याकुती

शक्तियों का हद से ज्यादा उपयोग करने से, वृद्धावस्था से, अथवा किसी भी कारण से आई हुई कमजोरी दूर करती है, पतली धातु को गाढ़ा करता है और रफ्तार बढ़ाकर दाम्पत्य जीवन का पूर्ण आनन्द देती है शी० रु० १०)।

मदनमंजरी फार्मेसी—जामनगर-देहली एजेंट जमनादास कं० चांदनीचौक

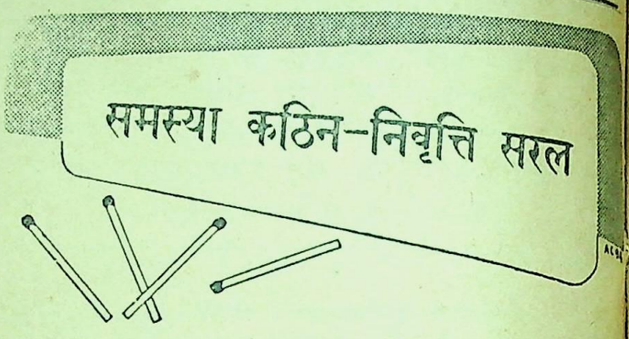

प्रश्न : दियासलाई की चार तीलियों से छोटे से छोटा समकोण चतुर्भुज बनाइए ?

उत्तर : तीलियों के सिरों को ऐसे रखिये कि उनका संकेत उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम की ओर हो जैसा कि चित्र में दिखाया गया है।

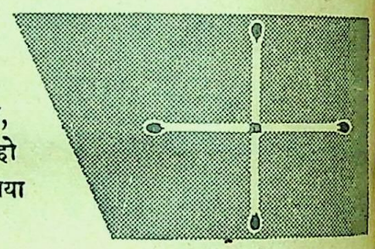

बच्चों की शिक्षा के निमित्त या विवाह में ख़र्च करने और नौकरी से अलग होने पर उपयोग में लाने के लिये रुपया बचाना बहुत से मनुष्यों के लिये इतना सरल नहीं। परन्तु उन मनुष्यों के लिये चिन्ता का कोई कारण नहीं जो थोड़ा रुपया लगाने वालों के हित के लिये प्रचलित नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स की योजना में सेविंग्ज़ ग्रूप के मेम्बर बन कर सम्मिलित हैं। नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स की मद पूर्णतया सुरक्षित है और इस पर सब मदों से अधिक ब्याज मिलता है।

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट्स

निम्न लिखित मुख्य लाभ यह हैं:—

(१) आप ५, १०, ५०, १००, ५००, १०००, या ५०००, रु० के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) कुटुम्ब का प्रत्येक व्यक्ति (वयस्क या अल्पवयस्क) ५००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकता है। दो व्यक्ति मिलकर १०,००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है। सरकार द्वारा प्रचलित रुपया लगाने की मदों पर जो ब्याज दिया जाता है यह सब से अधिक दर है।

(४) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।

(५) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते हैं (५ रु० का सर्टिफ़िकेट १-१/२ वर्ष पश्चात भी भुनाया जा सकता है)

(६) जिनकी बचत थोड़ी है वह १) रु० ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं ५ रु० के स्टाम्प्स जमा होने पर एक नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट मिल जावेगा।

(७) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्प्स डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकृत एजेंटों अथवा सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

अपने सेविंग्ज़ ग्रूप में अभी सम्मिलित हो जाइए

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बांझ स्त्रियों के लिये

संतान पैदा करने का लासानी नुस्खा

मेरा ब्याह हुए १५ वर्ष हो चुके थे इस समय के बीच कई इलाज कराए मगर कोई फायदा न पहुंचा। अचानक मैं अपनी सहेलियों के साथ तीर्थ यात्रा करने श्री बद्रीनारायण जी चली गई। सौभाग्यवश वहां मुझे एक ऐसे जटाधारी त्यागी महापुरुष महात्मा जी के दर्शन हुए जो सचमुच ही ईश्वर का अवतार दिखाई देते थे। मैंने उनके चरणों का स्पर्श करके अपनी तमाम दुःखभरी कहानी सुनाई। महात्मा जी ने खुश होकर मुझे एक औषधि तन्त्र दिया और आशीर्वाद देकर कहा बेटी, चिन्ता मत करो ईश्वर तुम्हारे हृदय की अभिलाषा पूर्ण करेगा। मैंने घर आकर उस औषधि को तैयार किया और महात्मा जी के कथनानुसार अनुपान किया। ईश्वर की कृपा से मुझे आशा की झलक दिखाई दी और नौ मास के पश्चात जीता-जागता बालक गोद में खेलने लगा। इसके पश्चात मैंने जिस सन्तानहीन बहन को निम्न लिखित औषधि का सेवन कराया, ईश्वर की कृपा से उसी की आशा पूर्ण हुई। महात्मा जी ने औषधि देते समय मुझसे वचन लिया था कि, बेटी, इस दवा से औरों का उपकार करती रहना। महात्मा जी के कथनानुसार मैंने इस औषधि तन्त्र को सूचीपत्र द्वारा प्रकाशित कर दिया है जिस से और बहिनें इस औषधि को तैयार करके लाभ उठा सकें।

औषधि तन्त्र ये है—असली नैपाली कस्तूरी (जिस पर नेपाल गवर्नमेंट की मोहर हो) केसर, जायफल, सुपारीदक्खिनी हर एक साढ़े दस मासे, पुराना गुड़ (जो कम-से-कम दस साल का हो) तेरह मासे, लौंग चार अदद, कटियारी सफेद की जड़ (सत्यानाशी सफेद की जड़) सवा तोला, इन सब औषधियों को खरल में डाल कर २४ घण्टे तक खरल करें और पानी इतना मिलावें कि गोलियां बन सकें, फिर जंगली बेर के बराबर गोलियां बना लें। इस के सेवन से गुप्त खराबियां दूर हो जाती हैं और बहनें इस लायक हो जाती हैं कि सन्तान पैदा कर सकें।

रीति—गाय के थोड़े गर्म दूध में मीठा डाल कर प्रातःकाल और सायंकाल एक-एक गोली तीन रोज तक सेवन करें। ईश्वर की कृपा से कुछ रोज में ही आशा की झलक दिखाई देने लगेगी।

नोट—औषधि तन्त्र के अन्दर सफेद फूल वाली सत्यानाशी की जड़ मिलानी आवश्यक है, क्योंकि इसके अन्दर सन्तान पैदा करने के अधिक गुण हैं।

इसके विषय में श्रीमान राधेश्याम जी हापुड़ से लिखते हैं—मेरी समझ में नहीं आता कि आपकी सन्तान पैदा करने वाली औषधि की मैं किन अक्षरों में प्रशंसा करूं। मैं आपको हर्ष के साथ सूचित करता हूं कि आपकी औषधि से मेरी स्त्री को १६ वर्ष के पश्चात बालक की प्राप्ति हुई। मेरा आशीर्वाद है कि आप दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति करती रहें। सरदार हरदन्तसिंह भटिन्डे से सूचित करते हैं कि आपकी सन्तान पैदा करने वाली औषधि एक अद्भुत जादू है। मैं इसकी जितनी प्रशंसा करूं कम है। मैं नहीं जानता था कि आपकी औषधि में इतने गुण भरे हुए हैं। हमारे शहर में आपकी औषधि की घर घर प्रशंसा हो रही है। अब तक करीब-करीब बीस से ज्यादा बहिनें गर्भवती हो चुकी हैं। कृपया तीन दर्जन शीशी वी० पी० से भेज दें। धन्यवाद।

इसके सिवाय अनिगिनत प्रशंसा-पत्र मेरे पास मौजूद हैं अगर कोई देखना चाहे तो मेरे पास आकर देख सकते हैं।

मेरी सन्तान-हीन बहिनो,

आप इसे वेगुण औषधि न समझें। अगर इसको असली चीजें और बताए हुए औषधि तन्त्र की रीति से तैयार कर लें तो कोई वजह नहीं कि इससे बीस और पच्चीस वर्ष से बैठी हुई सन्तान-हीन बहिनों की गोद में बच्चे खेलते नजर ना आवें। अगर कोई बहिन इस औषधि को मेरे हाथों से ही बनवाना चाहें वो मुझे लिख दें। मैं उनको अपने हाथ से ही दवा तैयार करके भेज दूंगी।

मैं अपने धर्म से सच कहती हूं कि मैं किसी बहिन से औषधि की असली लागत से एक पाई भी ज्यादा न लूंगी। जिस बहिन को मेरे ऊपर विश्वास न हो वो बहन मुझे दवा तैयार करने के लिए कदापि न लिखें। एक बहन की औषधि पर पांच रुपये बारह आने, दो बहिनों की औषधि पर नौ रुपये आठ आने, तीन बहिनों की औषधि पर तेरह रुपये चार आने लागत खर्च आते हैं और महसूल डाक इन से अलग।

जरूरी नोट—एक बहिन की चौबीस घण्टे दवा पिसवाने पर मेरे २) रुपए लगते हैं और दो और तीन के लिए दवा पिसवाने पर भी दो रुपये खर्च होते हैं। इस लिए अगर दो तीन बहिनें मिलकर दवा तैयार करा लेंगी तो वो फायदे में रहेंगी।

पता:—श्रीमती रतनबाई जैन सदर बाजार थाना रोड़, देहली।

मिर्गी का २४ घण्टों में खात्मा। तिब्बत के सन्यासियों के हृदय का गुप्त भेद, हिमालय पर्वत की ऊंची चोटियों पर उत्पन्न होने वाली जड़ी बूटियों का चमत्कार, मिर्गी हिस्टीरिया और पागलपन के दयनीय रोगियों के लिये अमृत दायक। मूल्य १०॥) रुपये डाकखर्च पृथक।
पता—एच. एम. आर. रजिस्टर्ड मिर्गी का हस्पताल हरिद्वार।

सन्यासियों की गुप्त बूटियां

इस पुस्तक में सैकड़ों ऐसी जड़ी बूटियों के गुप्त रहस्य प्रकट किये गये हैं, जिनसे सन्यासियों की धाक जमी हुई है। हालांकि इनमें से अधिकांश बूटियां आपको जंगल, खेत बागीचों और पंसारियों की दुकानों पर भी मिल सकती हैं, जिनसे आवश्यकता पड़ने पर स्त्रियां भी सिर से पांव के नख तक के सभी रोगों का इलाज घर में ही कर लिया करेंगी। इस पुस्तक को पढ़ लेने के बाद आप इस युग के धन्वन्तरि समझे जायेंगे। रोगियों का तांता बंधा रहेगा। कुछेक बूटियों की सूची—

लाख-लाख रु० के प्रयोग—(१) ऐसी बूटी कि जिसकी लकड़ी कान में लगा देने से सर्प काटे का विष मुख द्वारा निकल जाता है, (२) वह बूटी जिससे गूढ़ गर्भ ५ मिनट में निकल जाता है, (३) मधुमेह की अक्सीर बूटी, (४) दुबले-पतले आदमी को मोटा ताजा बना देने वाली बूटी, (५) सात दिन में नपुन्सक को मर्द बनाने वाली बूटी, (६) दमे की अद्भुत बूटी, (७) वह बूटी-जिसके रस में अंगुली डुबाने से तत्काल ज्वर उतर जाता है, (८) गर्भ रोक बूटी, (९) उपदंश को ७ दिन में मिटाने वाली बूटी, (१०) निमोनियां की बूटी, (११) वह बूटी जिससे बन्ध्या के पुत्र पैदा हो। ऐसी ही सैकड़ों बूटियों का वर्णन इसमें है, जिनसे चमत्कार दिखा कर आप सिविल सर्जनों को दंग कर सकते हैं। मूल्य २॥) डाकखर्च ।=)
पता—रसायन फार्मेसी (५) संगरिया (बीकानेर)

राष्ट्र को च्यवन ऋषि का महान दान

डाबर

च्यवनप्राश अवलेह

वीर्य वर्द्धक अमृत तुल्य पौष्टिक रसायन

डाबर च्यवनप्राश अवलेह में अष्टवर्ग की आषधियां मिली हुई हैं, इस लिए इसमें साधारण च्यवनप्राशों से जीवनी शक्ति अधिक है।

डाबर (ओ. एस. के. जर्मन) लि. कलकत्ता

जीवनदायिनी सामयिक पुस्तकें

जीवन चरित्र-माला:—सम्पादक—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

पं० मदनमोहन मालवीय

(ले०—श्री राम गोविन्द मिश्र)

महामना मालवीय जी का क्रम बद्ध जीवन वृत्तान्त। उनके मन का और विचारों का स ीव चित्रण। और उनके सम्बन्ध में महापुरुषों के मत। सब कुछ एक ही पुस्तक में। मूल्य १।) डाकखच ।=)

श्री सुभाषचन्द्र बोस

(लेखक—श्री रमेशचंद्र आर्य)

यह कांग्रेस के भूतपूर्व राष्ट्रपति का प्रामाणिक और पूरा जीवन-चरित्र है। ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। पुस्तक के अंत में श्री सुभाष बाबू के विचारों का संग्रह भी है। मूल्य ॥=) डाक व्यय ।-)

पं० जवाहरलाल नेहरू

(ले०— पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति)

इस पुस्तक में इन प्रश्नों का उत्तर मिलेगा : — पं० जवाहरलाल जी क्या हैं ?वह जो कुछ भी हैं, वह कैसे बने ? वह क्या चाहते और क्या करते हैं? इन प्रश्नों के उत्तर में भारत के इस महापुरुष का सारा चरित्र आजाता है। मूल्य केवल १।) डाक व्यय ।=)

मौ० अबुलकलाम आजाद

(ले०—श्री रमेशचन्द्र जी आर्य)

यह भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री मौलाना अबुलकलाम आजाद की जीवनी है। इसके पढ़ने से यह भली भांति प्रकट होजाता है कि मौलाना साह ी राष्ट्रीयता दूध की तरह स्वच्छ है और वह अपने मार्ग पर दृढ़ चट्टान की तरह अटल हैं। मूल्य ॥=) डाक व्यय ।-)

महर्षि दयानन्द

ले०—श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति

महर्षि का यह जीवन चरित्र अपने ढङ्ग का पहिला है सब उपलब्ध सामग्री के आधार पर ऐतिहासिक तथा प्रामाणिक शैली पर ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। सत्यार्थप्रकाश के महत्व पर विशेष प्रकाश डाला गया है।

मूल्य केवल १।) डाक व्यय ।=)

"मैं भूल न सकूं"

[सम्पादक श्री जयंत]

प्रसिद्ध साहित्यिकों उपन्यास और कहानी लेखकों की शिक्षाप्रद सच्ची कहानियों का संग्रह। प्रत्येक कहानी ऐसी है जिसे एकबार पढ़कर भूलना कठिन है। मूल्य केवल १) डाकव्यय ।-)

त्याग का मूल्य

यह विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगौर की अमर कृति (उपन्यास) योगा योग का अविकल अनुवाद है। इसी को उपन्यास सम्राट स्वर्गीय प्रेमचन्दजी ने रवि बाबू का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास बतलाया था। ४०० पृष्ठ दोरंगा टाइटल पेज — मूल्य ५) डाकव्यय ।=)

तिरंगा झण्डा

श्री बिराज जी रचित तीन एकांकी नाटकों का संग्रह — स्वाधीन देश के झण्डे के लिए बलिदान की पुकार। मूल्य १।) डाकव्यय ।-)

"दिल्ली चलो"

ले० दैनिक वीर अर्जुन के सम्पादक आनन्द विद्यालङ्कार व हरिश्चन्द्र

मूल्य डाक व्यय सहित २।-)

प्रेम दूती

श्री बिराज जी रचित प्रेम-काव्य। सुरुचिपूर्ण शृंगार की सुन्दर कवितायें। मूल्य ॥।) डाक व्यय पृथक।

मरना चाहते हो या जीना ? यदि जीना चाहते हो तो

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित

'जीवन संग्राम'

का

सन्शोधित दूसरा संस्करण पढ़िये। इस पुस्तक में जीवन का सन्देश और विजय की ललकार एक ही साथ है। पुस्तक हिन्दी भाषी के मनन और संग्रह योग्य है' ।मूल्य १) डाक व्यय ।-)

साबुन-विज्ञान

'साबुन' के इस विषय में अद्वितीय पुस्तक है। साबुन के सम्बन्ध में हर प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के लिये इसे अवश्य पढ़ें। मूल्य २) डाकव्यय ।-)

तैल-विज्ञान

इस पुस्तक में तिलहन से लेकर तैल के चार बड़े उद्योगों की विवेचना सविस्तार तथा सरल ढंग से की गई है। मूल्य २) डाकव्यय ।-)

नया आलोक नई छाया

उच्च कोटि का साहित्य, रामायण और महाभारत-काल से लेकर आधुनिक-काल तक की कहानियों का नये रूप में दर्शन। श्री विराज जी रचित मूल्य २) डाक व्यय प्रथक।

बृहत्तर भारत

(ले० -- स्वर्गीय श्री प० चन्द्रगुप्त विद्यालंकार)

भारतीय संस्कृति तथा वेद आदि का प्रचार अन्य देशों में किस प्रकार हुआ, भारतीय साहित्य की छाप किस प्रकार विदेशियों के हृदय पर डाली गई यह सब इस अद्वितीय पुस्तक में मिलेगा। पुस्तक बढ़िया ऐण्टिक कागज पर सुन्दर टाइप में सचित्र छपी है। पृष्ठ सं० ५०० से ऊपर। मूल्य सजिल्द ७) डाक व्यय ॥=)

वैदिक वीर गर्जना

(ले० — श्री पं० रामनाथ वेदालंका)

इस पुस्तक में वेदों से चुन-चुन कर वीर भावों को जागृत करने वाले एक सौ से अधिक वेद-मन्त्रों का अर्थ सहित संग्रह किया गया हैं। पुस्तक मनन तथा स्वाध्याय करने योग्य है। मूल्य ॥=) डाक व्यय पृथक।

'तुलसी'

(ले० -- श्री रामेशवेदी आयुर्वेदालंकार)

इस पुस्तक में तुलसी गण के पौदों का वैज्ञानिक विवेचन और उनसे लाभ उठाने के उपाय बतलाये गये हैं। मूल्य २) डाक व्यय पृथक।

सरला की भाभी

सामाजिक उपन्यास

(ले० — श्री पं० इन्द्र विद्यावाचपति)

जिस पुस्तक को प्रकाशित करने के लिए पाठकों का कई वर्षों से आग्रह हो रहा था, वह प्रकाशित हो गई है। कापियें परिमित हैं और मांग बहुत है। शीघ्र आर्डर भेजिये। मूल्य २) डाक व्यय पृथक।

अन्य उपयोगी पुस्तकें

गीतांजलि -- डा० टैगोर की अमर कृति भाषानुवाद मू०		१॥)
नीराजना --	,,	२)
एकांकिका --	,,	१)
नेता जी सरहद पार --	,,	॥=)
हमारे घर --	,,	।)
आनुपातिक प्रतिनिधित्व	,,	१)
मोमबत्ती-साजी (उर्दू)	,,	॥)
फन रंगाई धुलाई (उर्दू)	,,	१॥)
फन रोशनाई-साजी (उर्दू)	,,	

विजय पुस्तक भण्डार (वीर अर्जुन कार्यालय के ऊपर) श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

श्री दुर्गाप्रसाद शर्मा मुद्रक व प्रकाशक ने श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि० के लिये 'अर्जुन प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली से छाप कर प्रकाशित किया।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तो

का सन्देश और
मनन और संग्रह

के सम्बन्ध में हर
डाकव्यय ।-)

ोगों की विवेचना

लेकर आधुनिक-
रचित मूल्य २)

)
स प्रकार हुआ,
ाली गई यह सब
पर सुन्दर टाइप
डाक व्यय ॥=)

ने वाले एक सौ से
तक मनन तथा

ौर उनसे लाभ

ों से आग्रह हो
बहुत है। शीघ्र

१॥)
१)
२)
१)
॥=)
।)
१)
॥)
१॥)

देहली।

काशित किया।"

گورکھ کانگڑی

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

Compiled
1939-2000